

श्रीमन्महाभारत.

या ग्रंथाचिं

मराठी सुरस भाषांतर.

पुस्तक पाचवें.

कर्णपर्व, शल्यपर्व, सौप्तिकपर्व आणि स्त्रीपर्वः

हा ग्रंथ

रा० रा० रामचंद्र भिकाजी दातार,

रा० रा० कृष्णाजी नीलकंठ द्रविड, एम. ए., व

रा० रा० यशवंत गणेश फफे,

यांनी लिहिला

आणि

बाळकृष्णशास्त्री उपासनी

यांनी तपासला.

प्रकाशक—गणेश विष्णु चिपळूणकर आणि मंडळी,
बुधवार पेठ, पुणे.

मुद्रक—रा० केशव रावजी गोंधळेकर, जगद्धितेच्छु छापखाना, पुणे.

(दुसरी आवृत्ति—सके १९३२ साधारणनाम संवत्सरे.)

हा ग्रंथ गणेश विष्णु चिपळूणकर आणि मंडळीचे व्यवस्थापक रा० बालकृष्ण पांडुरंग ठका
यांनी पुणे पेठ शनिवार येथील रा० रा० केशव राधजी गोंधळेकर यांच्या
जगद्धितेच्छु छापखान्यांत छापवून पुणे पेठ बुधवार घर नंबर
१५९ येथे प्रसिद्ध केला.

(या पुस्तकाचे सर्व मालकी हक्क सन १८६७ च्या २५ व्या अंकाप्रमाणे नोंदून
प्रकाशकांनी आपणाकडे ठेविले आहेत.)



नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

ज्या अखिलब्रह्मांडनायकाच्या लीलेनें या जगाची यच्चयावत्
कार्ये घडतात, ज्याच्या कृपेनें ह्या अनिवारः मायामोहाचें
निरसन करितां येतें व अल्पशक्ति जीवांना परमपद
प्राप्त करून घेतां यावें म्हणून जो त्यांस
बुद्धिसामर्थ्य देतो, त्या

परमकारुणिक

श्रीमन्नारायणाच्या चरणीं

त्याच्याच कृपेनें पूर्ण झालेला हा ग्रंथ
अर्पण असो.

। शुभं भूयात् ।

(पहिली आवृत्ति.)

प्रकाशकांचे दोन शब्द.

‘ श्रीमन्महाभारताचें मराठी सुरस भाषांतर ’ या राष्ट्रीय ग्रंथाची जी पुस्तके प्राप्त होत आहेत, त्यांपैकी हें पांचवें पुस्तक होय. यांत कर्ण, शल्य, सौप्तिक व स्त्री हीं पर्वे संपूर्ण आली आहेत. आमचे मंडळीचे मुख्य रा. गणेश विष्णु चिपळूणकर हे कैलासवासी झाल्यामुळे, हा ग्रंथ आतां कशाचा निघतो असें पुष्कळांस वाटत होते व अद्यापही वाटत आहे. त्याचें हें वाटणें अस्थानीं नाहीं हें आम्ही प्रांजलपणें कबूल करितों. कारण, महाभारतासारख्या महत्कार्यांत संकटेंही महत् यावयाचीं. पण ज्या भगवंतांनै हें जहाज समुद्रांत लोटण्याची प्रेरणा केली, तोच तें पैलथडीस नेऊन लावील असा आमचा निश्चय आहे; पूर्ण करणारा तो समर्थ आहे. ‘ कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ’ या त्याच्या आज्ञेप्रमाणें आमचें काम प्रयत्न करण्याचें आहे; तें आम्ही करीत आहों; फलाविषयीं आपण कशाला उगीच वाटघाट करीत बसा? तथापि, ज्यांनै पांडवांस एवढ्या भयंकर संशयांतून—संकटांतून—मारामारींतून—जीवितसंशयांतून वांचवून यश संपादन करून दिलें, आणि ज्याच्या कृपेमुळेच सर्व संकटांतून उत्तीर्ण झालेल्या पांडवांस पुढें ज्ञांतपणें सुखाचा अनुभव घेतां आला, त्याच श्रीभगवंतांनै आम्हासही सर्व संकटांतून तारून पुढील शांतिमुखाचा—शांतिपर्वाचा—आस्वाद घेण्यास जिवंत ठेवून सामर्थ्य द्यावें, अशी आम्ही त्याची करुणा भाकतो. आतांपर्यंत आम्ही इतक्या भयंकर आणि अदृष्टपूर्व संकटांतून मार्ग क्रमीत आलों आहों कीं, एकवार सिंहावलोकन केलें असतां, ज्या संकटकंठकमय मार्गांतून आम्ही हा प्रवास केला, तो पाहून अंगावर रोमांच थरारून उभे रहातात ! आणि असे वाटतें कीं, एवढ्या भयंकर मार्गांतून आम्ही इतके दूर आलों तरी कसे ! अर्थात् भगवत्साहाय्यावांचून हें श्रद्धें नाहीं; व पुढेही त्याचेंच साहाय्य भाकून मार्ग चालूं लागलों म्हणजे परतीरीं पोचल्यावांचून रहाणार नाहीं ! मात्र कधी थोडाबहुत उशीर झाला तर आश्रयदात्यांनीं पूर्वप्रेमांत कमतरता होऊं देऊं नये एवढीच सप्रेम विनंती आहे, ती ते पूर्ण करतील आणि हस्त—नेत्र—दोषाविषयी क्षमा करतील, अशी आशा बाळगून आम्ही पुढील उद्योगास लागण्याकरितां आश्रयदात्यांची रजा घेतों.

विजयादशमी, शके १८२९.

व्यवस्थापक.

अनुक्रमणिका.

कर्णपर्व.

| अध्याय. | पृष्ठ. | अध्याय. | पृष्ठ. |
|--|--------|--|--------|
| पहिला—मंगलाचरण, दुयोधनादिकांचें अश्व- त्थाम्याकडे गमन, दोम्ही सैन्यांचें युद्धार्थ निर्गमन, जनमेजयाची पृच्छा. | १ | २४ वा—कर्णयुद्ध, नकुलाचा पराभव. | ५३ |
| दुसरा—धृतराष्ट्र व संजय ह्यांचा संवाद. | ३ | २५ वा—युयुत्सूचा पराभव, सुतसोम व सौत्रल ह्यांचें युद्ध. | ५७ |
| तिसरा—संक्षेपतः कर्णवधकथन. | ४ | २६ वा—धृष्टद्युम्नाचा पराजय ! शिखंडीचा पराभव ! | ५९ |
| चौथा—धृतराष्ट्राचा विलाप. | ५ | २७ वा—संशतकांचा पराजय. | ६१ |
| ५ वा—कौरवांकडील कोणकोणते वीर पडले ? | ६ | २८ वा—संकुलयुद्ध. | ६३ |
| ६ वा—पांडवांकडील कोणकोणते वीर पडले ? | ९ | २९ वा—युधिष्ठिर व दुयोधन ह्यांचें युद्ध. | ६५ |
| ७ वा—कौरवांकडील कोणकोणते वीर जिवंत आहेत ? धृतराष्ट्रास मूर्च्छा. | ११ | ३० वा—प्रथमादिनसमाप्ति. | ६७ |
| ८ वा—धृतराष्ट्राचा कर्णाविषयी विलाप. | १३ | ३१ वा—कर्ण व दुयोधन यांचा संवाद. | ६९ |
| ९ वा—धृतराष्ट्राचा आणखी विलाप. | १५ | ३२ वा—शल्याची सारध्यार्थ प्रार्थना. | ७३ |
| १० वा—कर्णाला अभिषेक. | २० | ३३ वा—त्रिपुराख्यान. | ७७ |
| ११ वा—व्यूहरचना. | २३ | ३४ वा—त्रिपुरवधोपाख्यान. | ८० |
| १२ वा—क्षेमधूर्तांचा वध. | २५ | ३५ वा—शल्यसारध्वस्वीकार. | ८८ |
| १३ वा—विदानुविंदांचा वध. | २८ | ३६ वा—कर्णाशी शल्याचें भाषण. | ९१ |
| १४ वा—चित्रसेनाचा वध, चित्राचा वध. | ३० | ३७ वा—कर्ण व शल्य ह्यांचा संवाद. | ९२ |
| १५ वा—अश्वत्थामा व भीमसेन ह्यांचें युद्ध. | ३२ | ३८ वा—कर्णाची बढाई ! | ९६ |
| १६ वा—अर्जुन व संशतक ह्यांचें युद्ध. अश्व- त्थामा व अर्जुन ह्यांचें युद्ध. अर्जुन व संशतक ह्यांचें पुनः युद्ध. | ३४ | ३९ वा—कर्णाचा धिक्कार ! | ९७ |
| १७ वा—अश्वत्थाम्याशी युद्ध. पुनः संशतकांशी युद्ध. अश्वत्थाम्याशी पुनः युद्ध. अश्वत्थाम्याचा पराजय. | ३७ | ४० वा—कर्णाचें शल्यास प्रत्युत्तर. | ९९ |
| १८ वा—दंडधाराचा वध. दंडाचा वध. | ३९ | ४१ वा—हंसकाकीयोपाख्यान. | १०२ |
| १९ वा—संकुलयुद्ध. कृष्णाचें भाषण. | ४१ | ४२ वा—कर्णाचें शल्याशी आवेशाचें भाषण. | १०६ |
| २० वा—पांड्याचा वध. | ४४ | ४३ वा—शलयाभिक्षेप ! | ११० |
| २१ वा—संकुलयुद्ध. | ४८ | ४४ वा—कर्णकृत बाहीकनिंदा. | ११० |
| २२ वा—संकुलयुद्ध. | ५० | ४५ वा—कर्ण व शल्य यांचा संवाद. | ११३ |
| २३ वा—सहदेव व दुःशासन ह्यांचें युद्ध. | ५२ | ४६ वा—व्यूहरचना. | ११६ |
| | | ४७ वा—संकुलयुद्ध. | १२० |
| | | ४८ वा—संकुलयुद्ध. | १२१ |
| | | ४९ वा—कर्णाच्या हस्ते युधिष्ठिराचा पराभव. युधिष्ठिराचा धिक्कार. संकुलयुद्ध. | १२४ |
| | | ५० वा—कर्णापयान ! | १२९ |
| | | ५१ वा—भीमहस्ते सहा धार्तराष्ट्रांचा वध. भीम व कर्ण यांचें युद्ध. भीमयुद्ध. | १३१ |

| अध्याय. | पृष्ठ. | अध्याय. | पृष्ठ. |
|---|--------|---|--------|
| ५२ वा-संकुलयुद्ध. | १३५ | ७४ वा-अर्जुनाचें भाषण. | १९५ |
| ५३ वा-संशप्तकवध. | १३७ | ७५ वा-संकुलद्वंद्वयुद्ध. | १९८ |
| ५४ वा-शिल्खडीचा पराजय. सुकेतुवध. कृतवर्मा व धृष्टद्युम्न यांचें युद्ध. | १३९ | ७६ वा-भीमसेन व विशोक ह्यांचा संवाद. | १९९ |
| ५५ वा-अश्वत्थाम्याचा पराक्रम. | १४१ | ७७ वा-शकुनीचा पराभव. | २०२ |
| ५६ वा-संकुलयुद्ध. | १४३ | ७८ वा-कर्णाचा पराक्रम. | २०६ |
| ५७ वा-अश्वत्थाम्याची प्रतिज्ञा. | १५० | ७९ वा-शल्यकृत कर्णप्रोत्साहन. | २०८ |
| ५८ वा-कृष्णकृत समरभूवर्णन. | १५१ | ८० वा-संकुलयुद्ध. | २१४ |
| ५९ वा-अश्वत्थाम्याचा पराभव ! | १५३ | ८१ वा-संकुलयुद्ध. | २१६ |
| ६० वा-भीकृष्णाचें भाषण. | १५६ | ८२ वा-दुःशासन व भीमसेन ह्यांचें युद्ध. | २१९ |
| ६१ वा-संकुलयुद्ध. | १६० | ८३ वा-दुःशासनाचा वध ! | २२१ |
| ६२ वा-संकुलयुद्ध. | १६४ | ८४ वा-नकुलाचा पराजय. | २२४ |
| ६३ वा-धर्माचा पराभव! | १६५ | ८५ वा-संकुलयुद्ध. वृषसेनाचा वध ! | २२७ |
| ६४ वा-धर्मराजाचा शोध. | १६७ | ८६ वा-भीकृष्णाचें उत्तेजनपर भाषण. | २३० |
| ६५ वा-युधिष्ठिर व कृष्णार्जुन ह्यांची भेट. | १७० | ८७ वा-कर्णार्जुनसमागम. | २३१ |
| ६६ वा-युधिष्ठिराचें भाषण. | १७१ | ८८ वा-अश्वत्थाम्याचा दुर्योधनास उपदेश. | २३६ |
| ६७ वा-अर्जुनाचें भाषण. | १७४ | ८९ वा-कर्णार्जुनांचें द्वैरथयुद्ध. | २३९ |
| ६८ वा-युधिष्ठिराचा क्रोध! | १७५ | ९० वा-कर्णार्जुनयुद्ध. पार्यकिरीटपात ! कर्णाच्या रथाच्या चक्राचें प्रसन. | २४६ |
| ६९ वा-कृष्णकृत सत्यासत्यनिर्णय. धर्माधर्म विचाराराचें मर्म. | १७८ | ९१ वा-कर्णाचा वध ! | २५४ |
| ७० वा-युधिष्ठिराचें सांत्वन. | १८३ | ९२ वा-शल्याचें परत येणें. | २५८ |
| ७१ वा-अर्जुनाची प्रतिज्ञा. | १८६ | ९३ वा-कौरवसैन्याचें पलायन. | २५९ |
| ७२ वा-कृष्णाचें प्रोत्साहनपर भाषण. | १८८ | ९४ वा-रणभूमीचें वर्णन. | २६३ |
| ७३ वा-कृष्णकृत अर्जुनपराक्रमवर्णन. अर्जु- नाला उत्तेजन. | १९० | ९५ वा-शिविरप्रयाण. | २६८ |
| | | ९६ वा-युधिष्ठिराचा हर्ष. कथामाहात्म्य. | २६९ |

शल्यपर्व.

| अध्याय. | पृष्ठ. | अध्याय. | पृष्ठ. |
|--|--------|-------------------------------------|--------|
| शल्यसैन्यापत्याभिषेकपर्व. | | ८ वा-भ्यूहरचना. | २१ |
| पहिला-मंगलाचरण. धृतराष्ट्राचा प्रमोह. | १ | ९ वा-संकुलयुद्ध. | २३ |
| दुसरा-धृतराष्ट्राचा विलाप. कथाप्रस्ताव. | ४ | १० वा-संकुलयुद्ध. | २६ |
| तिसरा-कौरवांच्या सैन्यांची पळापळ. | ८ | ११ वा-भीमसेन व शल्य ह्यांचें युद्ध. | २९ |
| चौथा-कृपाचार्याचें भाषण. | ११ | १२ वा-संकुलयुद्ध. | ३२ |
| ५ वा-दुर्योधनाचें भाषण. | १४ | १३ वा-शल्याचें युद्ध. | ३६ |
| ६ वा-शल्य्याभिषेकविचार. | १७ | १४ वा-संकुलयुद्ध. | ३८ |
| ७ वा-शल्यसैन्यापत्याभिषेक. युधिष्ठिरोत्तेजन. | १९ | १५ वा-संकुलयुद्ध. | |

| अध्याय. | पृष्ठ. | अध्याय. | पृष्ठ. |
|--|--------|--|--------|
| १६ वा-शल्य व युधिष्ठिर झांचें युद्ध. | ४३ | ४० वा-सारस्वतोपाख्यान | ११५ |
| १७ वा-शल्याच्या वध! | ४६ | ४१ वा-साम्बतोपाख्यान. | ११६ |
| १८ वा-संकुलयुद्ध. | ५२ | ४२ वा-सारस्वतोपाख्यान. | ११८ |
| १९ वा-संकुलयुद्ध. | ५४ | ४३ वा-सारस्वतोपाख्यान. | १२० |
| २० वा-शालवाचा वध. | ५८ | ४४ वा-कुमाराभिषेकोपक्रम. | १२२ |
| २१ वा-सात्यकि व कृतवर्मा झांचें युद्ध. | ६० | ४५ वा-स्कंदाभिषेक. | १२४ |
| २२ वा-संकुलद्वंद्वयुद्ध. | ६१ | ४६ वा-तारकाचा वध. | १२८ |
| २३ वा-संकुलयुद्ध. | ६४ | ४७ वा-सारस्वतोपाख्यान. | १३३ |
| २४ वा-अर्जुनाचा पराक्रम. | ६६ | ४८ वा-वदरपाचनतीर्थवर्णन. | १३४ |
| २५ वा-संकुलयुद्ध. | ७२ | ४९ वा-इंद्रतीर्थादिवर्णन. | १३७ |
| २६ वा-धृतराष्ट्राच्या अकरा पुत्रांचा वध. | ७५ | ५० वा-जैगीपर्ववृत्तांत. | १३८ |
| २७ वा-सुदं प्रीन व सुशर्मा यांचा वध. | ७७ | ५१ वा-सारस्वतोपाख्यान. | १४३ |
| २८ वा-शङ्खे वि व डळूक झांचा वध. | ७९ | ५२ वा-वृद्धकन्याख्यान. | १४३ |
| | | ५३ वा-कुरुक्षेत्रमाहात्म्य. | १४४ |
| | | ५४ वा-सारस्वतोपाख्यानसमाप्ति. | १४५ |
| | | ५५ वा-समंतपंचकगमन. | १४७ |
| | | ५६ वा-गदायुद्धारंभ. | १४९ |
| | | ५७ वा-गदायुद्ध. | १५१ |
| | | ५८ वा-दुर्योधनवध ! | १५५ |
| | | ५९ वा-युधिष्ठिरविलाप ! | १५७ |
| | | ६० वा-बलदेवक्रोधसांत्वन. | १५९ |
| | | ६१ वा-पांडव व कृष्ण आणि दुर्योधन यांचा संवाद. | १६३ |
| | | ६२ वा-अर्जुनरथज्वलन ! वासुदेवप्रेषण. | १६५ |
| | | ६३ वा-धृतराष्ट्र व गांधारी यांचें सांत्वन. | १६६ |
| | | ६४ वा-दुर्योधनाचा विलाप ! | १७० |
| | | ६५ वा-अश्वत्थाम्यास सैनापत्याचा अभिषेक. | १७३ |
| | | | |

ऋद्दप्रवेशपर्व.

२९ वा-दुर्याधनाचा ऋद्दप्रवेश.

गदायुद्धपर्व.

३० वा-दुर्योधनाचा शोध.
३१ वा-सुबोधनयुधिष्ठिरसंवाद.
३२ वा-युधिष्ठिरसुबोधन संवाद.
३३ वा-भीमदुर्योधनाची युद्धाची तयारी.
३४ वा-बलरामाचें आगमन.
३५ वा-बळदेवतीर्थयात्रा, प्रभासोत्पत्तिकथन.

३६ वा-त्रिताख्यान.
३७ वा-सारस्वतोपाख्यान.
३८ वा-सप्तसारस्वतवर्णन.
३९ वा-सारस्वतोपाख्यान.

सौप्तिकपर्व.

अध्याय.
पहिला-मंगलाचरण. उल्कोपदेशग्रहण.
दुसरा-कृपाचार्यांचा अश्वत्थाम्याला उपदेश.
तिसरा-अश्वत्थाम्याची मसकत.

पृष्ठ.
सौप्तिकपर्व.
१ चौथा-कृपाचार्यांचें भाषण अश्वत्थाम्याचा कौप.
२ ५ वा-विबिंद्वारी आगमन. १०
५ ६ वा-महद्भूतदर्शन, अश्वत्थाम्याचा
७ पश्चात्ताप. १२

| अध्याय. | पृष्ठ. | अध्याय. | पृष्ठ. |
|---|--------|--|--------|
| ७ वा-अश्वत्थाम्याचें ईशस्तवन, शंकराच्या गणांचें दर्शन, अश्वत्थाम्यास शिव-दर्शन व खड्गप्राप्ति ! | १४ | ११ वा-भीमाचें मणिहरणार्थ गमन. | ३० |
| ८ वा-रात्रियुद्ध व सर्वसंहार ! | १८ | १२ वा-अश्वत्थाम्याचा एक अविचार ! | ३२ |
| ९ वा-दुर्योधनाला सौप्तिककथन, दुर्योधन-प्राणत्याग ! | २५ | १३ वा-अश्वत्थामकृत अस्त्रप्रयोग. | ३४ |
| | | १४ वा-अर्जुनकृत अस्त्रप्रयोग. | ३५ |
| | | १५ वा-अर्जुनकृत अस्त्रोपसंहार. | ३५ |
| | | १६ वा-अश्वत्थाम्याला कुष्णशाप, मणि-हरण व द्रौपदीसांत्वन. | ३७ |
| | | १७ वा-कृष्णकथित शिवमाहात्म्य. | ३९ |
| | | १८ वा-कृष्णकथित शिवमाहात्म्य. | ४० |
| १० वा-युधिष्ठिराचा शोक ! | २९ | | |

पेशीकपर्व.

स्त्रीपर्व.

| अध्याय. | पृष्ठ. | अध्याय. | पृष्ठ. |
|--------------------------------------|--------|--|--------|
| जलप्रदानिकपर्व. | | स्त्रीविलापपर्व. | |
| पहिला-मंगलाचरण, धृतराष्ट्राचा शोक. | | १७ वा-गांधारीचा दुर्योधनाविषयी विलाप! | २६ |
| सजयकृत धृतराष्ट्रसांत्वन. | १ | १८ वा-गांधारीचा दुःशासनादिकांविषयी विलाप! | २८ |
| दुसरा-विदुरकृत धृतराष्ट्रसांत्वन. | ४ | १९ वा-गांधारीचा विकर्णादिकांविषयी विलाप! | २९ |
| तिसरा-धृतराष्ट्रविशोककरण. | ६ | २० वा-गांधारीचा अभिमन्यूविषयी विलाप! | ३० |
| चौथा-भूतोत्पत्त्यादिकथन. | ८ | २१ वा-गांधारीचा कर्णाविषयी विलाप! | ३२ |
| ५ वा-संसाररूपक. | ९ | २२ वा-गांधारीचा जयद्रथाविषयी विलाप! | ३३ |
| ६ वा-रूपकाचा स्पष्टार्थ. | १० | २३ वा-गांधारीचा भीष्मद्रोणादिकांविषयी विलाप ! | ३४ |
| ७ वा-संसारनिवृत्त्यर्थे तत्त्वोपदेश. | ११ | २४ वा-गांधारीचा भूरिश्रव्याविषयी विलाप. | ३६ |
| ८ वा-व्यासांचा उपदेश. | १२ | २५ वा-गांधारीचा शोकातिरेक, गांधारीचा श्रीकृष्णास शाप ! | ३७ |
| ९ वा-विदुराचें सांत्वनपर भाषण. | १४ | | |
| १० वा-धृतराष्ट्र निर्गमन. | १५ | | |
| ११ वा-रूप-द्रौणि-भोज-दर्शन. | १७ | | |
| १२ वा-लोहभीमभंग ! | १८ | | |
| १३ वा-धृतराष्ट्रकोपविमोचन. | १९ | | |
| १४ वा-व्यासकृत गांधारीसांत्वन. | २० | | |
| १५ वा-गांधारीकोपशमन, पृथापुत्रदर्शन. | २१ | | |
| १६ वा-गांधारीस रणभूदर्शन. | २४ | | |

चित्रांची सूचि.



पृष्ठ.

कर्णपर्व.

- १ बुद्धिमान् भीमसेन दुःशासनाच्या रक्ताची रुचि घेऊन क्रोधमुद्रेने
आसमंताद्द्वारिणी अवलोकन करीत म्हणाला. २२३
- २ “ हे महाधनुर्धरा पार्था, क्षणभर थांब! हें भूमीत रुतलेलें चक्र मला
वर काढूं दे! ” २९४

शल्यपर्व.

- ३ त्याला बाहेर निघालेला पाहून.....त्यांनीं एकमेकांचे हातांवर
हात मारिले. ९७
- ४ त्यानें डाव्या पायांनं दुयोधनाचे मस्तकावर लाथ मारिली. १९८
- ५ अर्जुन म्हणाला, “ गोविंदा, हे भगवन्, हा रथ अग्नीवांचून
कसा जळला? ” १६९
- ६ कृपाचार्यांनीं राजाज्ञेवरून अश्वत्थाम्यास सेन्यापत्याभिषेक केला. १७४

सौप्तिकपर्व.

- ७ उलूकोपदेशग्रहण. १
- ८ अश्वत्थाम्यानें त्यावर दिव्य अस्त्रांची वृष्टि केली. १३

स्त्रीपर्व.

- ९ श्रीकृष्णानें हातांनीं भीमास मागे ढकलून भीमाचा लोखंडी
पुतळा पुढें केला! १८





श्रीमन्महाभारत.

कर्णपर्व.

(उपपर्व नार्ही.)

अध्याय पहिला.

मंगलाचरण.

ॐ

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

ह्या अखिल ब्रह्मांडांतिल यच्चयावत् स्यावर-
जंगम पदार्थांच्या ठिकाणी चिदाभासरूपानें
प्रत्ययास येणारा जो नरसंज्ञक जीवात्मा, नर-
संज्ञक जीवात्म्यास सदासर्वकाल आश्रय देणारा
जो नारायणनामक कारणात्मा, आणि नर-
नारायणात्मक कार्यकारणमृष्टीहून पृथक् व श्रेष्ठ
असा जो नरोत्तमसंज्ञक सच्चिदानंदरूप पर-
मात्मा, त्या सर्वांस मी अभिवंदन करितों.
तसेंच नर, नारायण व नरोत्तम ह्या तीन
तत्वांचें यथार्थ ज्ञान करून देणारी देवी जी
सरस्वती, तिलाही मी अभिवंदन करितों;
आणि त्या परामकारुणिक जगन्मातेनें लोकाहित
करण्याविषयीं माझ्या अंतःकरणांत जी स्फूर्ति
उत्पन्न केली आहे, तिच्या साहाय्यानें ह्या भव-
बंधविमोचक जय म्हणजे महाभारत ग्रंथाच्या
कर्णपर्वस आरंभ करितों. प्रत्येक धर्मशील पुरु-

षानें सर्वपुरुषार्थप्रतिपादक अशा शास्त्रांचें विवे-
चन करितांना प्रथम नर, नारायण आणि नरो-
त्तम ह्या भगवन्मूर्तींचें ध्यान करून नंतर प्रति-
पाद्य विषयाचें निरूपण करण्यास प्रवृत्त व्हावें
हें सर्वथैव इष्ट होय.

दुर्योधनादिकांचें अश्वत्थाम्याकडे गमन.

वैशंपायन सांगतात:—राजा जनमेजया,
द्रोणाचार्यांचा वध झाल्यानंतर दुर्योधन व कौरव
पक्षाचे इतर राजे मोठ्या उद्विग्न मनानें
द्रोणपुत्र अश्वत्थामा ह्याजकडे गेले. तेथें गेल्या-
वर त्यांचा शोक अनावर होऊन त्यांचें धैर्य
अगदींच खचलें व ते दुःखार्त होऊन आचार्या-
विषयीं शोक करीत अश्वत्थाम्याच्या भोंव-
तालीं बसले. नंतर कांहीं वेळपर्यंत त्यांनीं
शास्त्रवचनांचा विचार करून चित्ताचें म्वास्थ्य
पुनः संपादिलें; आणि प्रदोषकाळीं ते सर्व

भूपाल आपआपल्या मुक्कामास परत गेले. राजा, ते जरी आपआपल्या स्थानी परत गेले, तरी, आतां पुढें मोठा क्षय होणार, असें त्यांच्या मनांत वारंवार येऊं लागले; व ते दुःखानें अगदी विव्हल होऊन त्यांस रात्री श्रौंष आली नाही. दुर्योधनराजा, सूतपुत्र कर्ण, दुःशासन व महाबल शकुनि हे तर विशेषच चिंताक्रांत झाले. त्या रात्रीस कर्ण, दुःशासन व शकुनि हे आपल्या ठाण्यांत न जातां दुर्योधनाच्या तंबूंतच राहिले. त्यांनीं उदारधी पांडवांना जे क्लेश दिले होते, ते त्यांच्या मनांत एकसारखे धोळत होते. आपण घृतांत द्रौपदीला दुःख देऊन तिला समेत ओढून आणिलें ही गोष्ट त्यांच्या चित्ताला अतिशय खाऊं लागली, आणि त्यामुळें त्यांचें मन अत्यंत दुःखानें व्याकुळ झालें. राजा, कपटघृतानें पांडवांस दिलेल्या वनवासादि क्लेशांचें व कचकर्षणादिक द्रौपदीच्या यातनांचें त्यांना त्या रात्रीस एकसारखें स्मरण होऊन कांहीं केल्या चैन पडेना व त्या चिंतेनें त्यांना ती रात्र शंभर वर्षांइतकी लांबच लांब वाटली !

दोन्ही सैन्यांचें युद्धार्थ निर्गमन.

राजा, नंतर एकदांचा प्रभातकाल प्राप्त होऊन स्वच्छ उजेड पडला; तेव्हां सर्वांनीं वर्णाश्रमधर्मास अनुसरून अवश्य अशीं नित्य कर्मे यथाविधि आटोपलीं. नित्यकर्मे केल्यावर त्यांनीं पुनः चित्ताची एकाग्रता करून कर्तव्यकर्तव्यविचार ठरविला; आणि सैन्याची सिद्धता करून व कर्णास सेनापति नेमून त्याच्या हातांत मंगलकंकण बांधिलें. मग त्यांनीं मोठमोठ्या ब्राह्मणांची दधिपात्र, घृत, असता इत्यादिकांनीं पूजा केली; आणि त्यांस गाई, घोडे, सुवर्णाचे अलंकार, उंची वल्लें वगैरे देऊन मागध, पौराणिक, स्तुतिपाठक इत्यादिकां-कडून विजयप्राप्तीविषयी आशीर्वाद मिळत

असतां ते सर्वजण युद्धार्थ बाहेर पडले. इकडे पांडवही पौर्वाण्हिक क्रिया आटोपून युद्धार्थ सिद्ध झाले व तात्काळ आपआपल्या ठाण्यांतून निघाले.

जनमेजया, नंतर कौरव व पांडव ह्यांच्या सैन्यांचें मोठें तुमुल युद्ध सुरू झालें. तीं दोन्ही दळें परस्परांना जिंकण्याच्या इर्ष्येनें एकमेकांवर इतकीं तुटून पडलीं कीं, त्यांचें तें निकराचें रण पाहून अंगावर कांटा उभा राहिला ! राजा, कर्णाकडे सेनापत्य असतां त्या कौरवपांडवांचें तें अद्भुत युद्ध दोन दिवस एकसारखें चाललें होतें. त्यांत कर्णानें शत्रुसैन्याचा अतिशय विध्वंस केला; परंतु अखेरीस धृतराष्ट्रपुत्रांच्या समक्ष अर्जुनानें कर्णास ठार मारिलें ! नंतर संजय लागलाच हस्तिनापुरास गेला व त्यानें रणभूमीवर घडलेलें सर्व वृत्त धृतराष्ट्राजास निवेदन केलें.

जनमेजयाची पृच्छा.

जनमेजय म्हणाला:—हे द्विजवर्या, ज्याला गंगापुत्र भीष्म पडल्याचें वर्तमान एकून व त्याप्रमाणेंच महारथ द्रोणांचा वधवृत्तांत श्रवण करून दुःसह दुःख झालें, त्या वृद्ध धृतराष्ट्राला कर्णाच्या मरणाचें वर्तमान समजलें तेव्हां त्याची काय अवस्था झाली असेल बरें ! महा-मुने, कर्ण हा दुर्योधनाच्या हिताकरितां नित्य झटत असे. धृतराष्ट्राची सर्व भिस्त काय ती कर्णावरच होती. कर्ण सेनापति झाला म्हणजे खर्चात आपल्या पुत्रांस विजय मिळेल असा धृतराष्ट्रास मोठा भरंवसा होता. तेव्हां कर्णवध श्रवण करून धृतराष्ट्र जिवंत कसा राहिला, हेंच मला आश्चर्य वाटतें. ज्या अर्थी कर्णाच्या वधाची वार्ता ऐकून धृतराष्ट्रानें प्राण सोडिला नाही, त्या अर्थी, मनुष्यांना कितीही संकट प्राप्त झालें तरी त्या संकटांत दुःखा-वेगानें मरून जाणें त्यांच्या हातीं नाही, असें माझें मत आहे. हे ब्रह्मवर्या, वृद्ध

भीष्म, त्याप्रमाणेच बालहीक, द्रोण, सीमदत्त, भूरिश्रवा, तसेच दुसरे आससुहृद् व पुत्रपौत्र ह्या सर्वांचे वधवृत्त श्रवण करूनही धृतराष्ट्र पुनः जिवंत राहिलाच ! तेव्हां प्राणत्याग करणे हे दुष्कर होय, ह्यांत संदेह नाही. ह्यास्तव हे द्विजश्रेष्ठा, हे सर्व वर्तमान सविस्तर प्रकारे मला निवेदन करावे. आपल्या पूर्वजांचा तो श्रेष्ठ इतिहास कितीही श्रवण केला तरी माझी तृप्ति होत नाही.

अध्याय दुसरा.

—:०:—

धृतराष्ट्र व संजय ह्यांचा संवाद.

वैशंपायन सांगतात:—राजा जनमेजया, कर्ण पतन पावल्यावर रात्रीस गवल्गणाचा पुत्र संजय हा अत्यंत दीन होत्साता वायुवेगाने अश्व चालवून हस्तिनापुरास प्राप्त झाला. तेथे पोहोचल्यावर तो अतिशय खिन्न मनाने धृतराष्ट्राच्या सदनी गेला. राजा, त्या समयी धृतराष्ट्राच्या घरी फारशी आसस्वकीयांची गर्दी नव्हती. धृतराष्ट्राच्या समीप जाऊन संजयाने अवलोकन केले तों, तो चित्तेने व दुःखाने जस्त होऊन अगदी हताश झाला आहे, असे त्यास आढळले. नंतर त्याने हात जोडून धृतराष्ट्राचा पार्श्व मस्तक ठेविले, आणि नेहमीच्या रितीप्रमाणे त्याची पूजा करून 'अरेरे !' असे उद्गार काढिले व त्यास छटले, "राजा, मी संजय आहे. तूं खुशाल आहेसना ? अरे, स्वतांच्या अपराधानी तूं आपणास संकटांत घाळून घेतले असून अद्यापि तुझी चित्तवृत्ति चांगली आहेना ? विदुर, द्रोण, भीष्म, केशव ह्यांनी तुला पुष्कळ हितांच्या गोष्टी सांगितल्या, पण त्या सर्व तुजपुढे व्यर्थ झाल्या; तेव्हां त्यांच्या संसर्गाने तला पश्चात्ताप होत नाहीना ? तसेंच

राजा, परशुराम,^१ कण्व,^२ नारद^३ वगैरे पुष्कळ थोर पुरुषांनी, तुझे हित कशांने होईल हे तुला संभेमध्ये विशद करून सांगितले, पण तूं त्याचा अंगीकार केला नाहीस, तेव्हां आतां त्याच्या चिंतनाने तुझ्या मनास दुःख होत नाहीना ? बरे; राजा, तुझ्या हिताकरितां झटत असलेले भीष्म-द्रोण आदिकरून तुझे आश व सुहृद् युद्धामध्ये शत्रूकडून मारले गेले, हे मनांत येऊन तरी तुला दुःख वाटते काय ? "

जनमेजया, संजयाने हात जोडून धृतराष्ट्राशी ह्याप्रमाणे भाषण केले, ते ऐकून धृतराष्ट्राने मोठा सुस्कारा टाकिला व दुःखित होऊन तो बोलू लागला.

धृतराष्ट्र म्हणाला:—संजया, काय सांगू

रे ! दिव्यास्त्रवेत्ता शूर भीष्म व महाधनुर्धर द्रोण हे पडल्याचे जेव्हां मी ऐकिले, तेव्हां माझ्या मनास अतिशय दुःख झाले ! बाबा, त्या भीष्माचा काय पराक्रम वर्णावा ? तो पराक्रमी वसुसंभव भीष्म प्रत्येक दिवशी दहा सहस्र कवचधारी रथ्यांना ठार करीत असे; प्रत्यक्ष भार्गवरामानेच त्यास बाळपणी धनुर्विद्या शिकविली व त्यानेच त्या महात्म्यास दिव्य अस्त्रे अर्पण केली; आणि अशा त्या प्रबळ वीराला अर्जुनाने यज्ञसेनाचा पुत्र शिखंडी ह्याच्या करवी—शिसंडीच्या संरक्षणार्थ त्याच्या पाठीमागे उभे राहून—पाडिले, असे जेव्हां माझ्या कानीं आले, तेव्हां तर मला अपार खेद झाला ! तसेच, त्या द्रोणाचे सामर्थ्य तरी लहान होते काय ? त्याच्या प्रसादानेच कुंतीपुत्रांना व दुसऱ्या राजांना महारथत्व प्राप्त झाले. संजया, तो महाधनुर्धर द्रोण आपली प्रतिज्ञा खरी करण्यास उद्युक्त झाला असतां रणभूमीवर धृष्टद्युम्नाने त्याचा वध केला ह्यापुन जेव्हां मी ऐकिले,

१. उद्योगपर्व अध्याय ९६ पहा. २. उद्योगपर्व अध्याय ९७ पहा. ३. उद्योगपर्व अध्याय १२३ पहा.

तेव्हां तर माझी फारच खिन्नावस्था झाली ! संजया, मुक्त, ^१ अमुक्त, ^२ यंत्रमुक्त ^३ व मुक्ता-मुक्त ^४—चारही प्रकारच्या शस्त्रास्त्रांमध्ये सर्व लोकांत ज्यांची बरोबरी करणारा एकही पुरुष नाही, त्या भीष्मद्रोणांची तशी व्यवस्था झाली तेव्हां काय बरे म्हणावे ? वा संजया, ज्याची अस्त्रविद्येत बरोबरी करणारा सर्व त्रैलोक्यांत एकही पुरुष मिळावयाचा नाही, त्या द्रोणाचा वध झाल्याचें ऐकून माझ्या पक्षाच्या वीरांनी पुढें काय बरें केलें ? तसेंच संजया, महात्म्या पंडुपुत्र धनंजयांनै पराक्रम करून संशप्तकांचें सैन्य यमसदनीं पावतें केल्यावर व त्याप्रमाणेंच बुद्धिमान द्रोणपुत्राच्या नारायणास्त्राचा उच्छेद उडविल्यावर जेव्हां सेनांची जिकडे तिकडे पळापळ झाली, तेव्हां मग माझ्या पक्षाच्या वीरांनी काय केलें बरें ? संजया, द्रोणाचार्यांच्या वधानंतर कौरवसैन्याची जी पळापळ उडाली, ती मनांत आणिली ह्मणजे मला असें वाटतें कीं, समुद्रांत तारूं फुटून त्यांतले लोक पाण्यांत बुडूं लागले असतां आपला प्राण वांचविण्याकरितां ज्या प्रमाणें ते धडपड करूं लागतात, त्याप्रमाणेंच द्रोणवधानें शोकसमुद्रांत बुडूं लागलेले ते सैनिक आपला प्राण वांचविण्याकरितां धडपड करून इतस्ततः पळत होते ! असे. संजया, ह्याप्रमाणें आपल्या सैन्याची दाणादाण होऊन कौरववीर दाही दिशांस पळ काढूं लागले असतां दुर्योधन, कर्ण, भोजदेशचा राजा कृतवर्मा, मद्रदेशचा राजा शल्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, माझे अवशिष्ट राहिलेले पुत्र व इतर थोडे ह्यांच्या मुखावर कसकशी कला दगोचर झाली, वगैरे सर्व वृत्तांत जसा घडला असेल तसा मला सांग. त्याचप्रमाणें पांडवांच्या सैन्यांनै

व माझ्या पुत्रांच्या सैन्यांनै जो कांहीं पराक्रम करून दाखविला असेल तोही वर्णन कर.

संजयानें म्हटलें:—हे आर्या, कौरवसैन्यामध्ये तुझ्या अपराधामुळें जें कांहीं घडलें आहे, तें ऐकून तूं दुःख करूं नको. हे महाराजा, दैवघटनेनै ज्या गोष्टी घडून येतात, त्यांच्या योगानें मुज्ज पुरुष दुःखित होत नाहीत. कोणतीही गोष्ट घडणें किंवा न घडणें हें दैवाधीन आहे, ह्यास्तव एखादी गोष्ट घडली अपवा न घडली, तरी तीपासून मुज्ज पुरुषास विषाद वाटत नाही.

धृतराष्ट्र म्हणला:—संजया, मला कोणत्याही प्रकारें विशेष दुःख वाटणार नाही. हें सर्व पूर्वीच दैवानें रेखून ठेविलें आहे, असें मी मानितों. तुला जें कांहीं सांगावयाचें असेल तें सांग.

अध्याय तिसरा.

—:—

संक्षेपतः कर्णवधकथन.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, द्रोणाचार्यांचा वध होतांच, तुझे पुत्र महारथ होते तरी त्यांच्या तोंडचें पाणी पळालें, त्यांची उमेद खचली व ते अगदी मृतवत् झाले ! तेव्हां सर्वच शस्त्रधार्यांची एकच गाळण उडून त्यांनीं माना खाली घातल्या व ते दुःखित होऊन एकमेकांकडे पाहूं लागले. पण त्यांच्या मुखावाटे एकही शब्द निघाला नाही ! राजा, ह्याप्रमाणें त्या वीरांची दीन अवस्था अवलोकन करून तुझ्या सेना भयभीत झाल्या आणि शोकाकुल होऊन पुनःपुनः वर पाहूं लागल्या ! राजेद्रो, द्रोणाचार्य युद्धांत पडले असें पाहून तुझ्या सैन्याच्या हातांतली रुधिरानें माखलेलीं शस्त्रे भराभर गळून पडलीं, आणि तीं अवलोकन करून जणू काय पुढें ओढवणाऱ्या अरिष्टाच्या सूचनेस्तव आकाशांतून उल्कांची

१ बाण वगैरे. २ खड्ग वगैरे. ३ गोळीबार वगैरे.

४ अस्त्र सोडून त्याचा उपसंहार करणें वगैरे.

वृष्टिच होत आहे की काय असें भासलें ! हे महाराजा, ह्या प्रकारें तुझें सैन्य अगदीं निर्वीर्य व हाताश झालेलें दुर्योधनांनो पाहिलें तेव्हां तो ह्मणाला, “ वीरहो, तुमच्या बाहुबलावर भिस्त ठेवून मी पांडवसैन्याला युद्धार्थ आन्हान केलें व हें युद्ध सुरू झालें; परंतु तेंच तुमचें बाहुबल द्रोणाचार्यांच्या पतनामुळे अगदीं नष्टवून दिसत आहे ! अहो, युद्ध करीत असतां योद्ध्यांचा वध होणें हें सार्वत्रिकच आहे ! युद्ध करणाऱ्या पुरुषाला कदाचित् जय मिळेल किंवा कदाचित् धारातीर्थी देह ठेवावा लागेल ! ह्यांत विशेष तें काय आहे ? तेव्हां तुम्ही सर्वत दृष्टि पोहोचवून युद्ध करूं लागा ! अहो, आज ह्या समयी पांडवांची सरशी झाली आहे, एवढ्यावर जाऊं नका; ह्यापुढें आतां आपणांसच विजय प्राप्त होईल अशी खातरी बाळगून निकरानें युद्ध करा. हा पहा महाधनुर्धर महात्मा वैकर्तन कर्ण रणभूमीवर युद्धार्थ संचार करीत आहे; दिव्य अस्त्रांच्या प्राप्तीमुळे याच्याशी युद्ध करण्यास कोणीही समर्थ नाही. समरांगणांत ह्याला पाहिलें ह्मणजे कुंतीपुत्र धनंजय नित्य भयभीत होऊन पळून जातो. सिंहापुढें क्षुद्र मृगाची जी अवस्था, तीच अवस्था ह्या वीरापुढें अर्जुनाची होते ! वीरहो, दहा हजार हत्तींचें बळ एकट्या भीमाच्या ठिकाणी आहे; परंतु त्या महाबलवानाची कर्णानें केवळ सामान्य मानुषयुद्धांतच कशा प्रकारची दान अवस्था करून टाकिली तें पाहिलेंतना ? अहो, कर्णाचा पराक्रम सामान्य नव्हे; त्यानें दिव्यास्त्रवेत्ता शूर मायावी घटोत्कच ह्यास भयंकर शब्द करून आपल्या अमोघ शक्तीनें ठार मारिलें. वीरहो, त्या दुर्धरप्रतापी व अचुक बाणसंधान करणाऱ्या महाबुद्धिमान् कर्णाचें अक्षय बाहुबल आज संग्रामांत अवलोकन करा. त्याप्रमाणें द्रोणपुत्र अश्वत्थामाही आपल्या अमोघ वीर्यानें आज

समरांगण गाजवून टाकील. ह्यास्तव कर्ण व अश्वत्थामा ह्यांचा पराक्रम पाहून जणुं काय विष्णु व इंद्र हेच रणभूमीवर पराक्रम गाजवीत आहेत असें पांडवांना वाटूं द्या. वीर हो, पांडवांना समरांगणांत ससैन्य ठार करण्यास तुम्हां सर्वांपैकीं प्रत्येकजण एकेकटा समर्थ आहे, मग तुम्ही सर्व वीर एकत्र होऊन पांडवांशी युद्ध करूं लागल्यास त्यांचा संहार कराल ह्यांत संदेह तो कसला ? ह्यास्तव आज तुम्ही आपला प्रताप व रणकौशल्य हीं परस्परांना दाखवा. ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें भाषण करून तुझा पुत्र महावीर्यशाली दुर्योधन ह्यानें कर्णाला सैन्यापत्याधिकार देण्याचा आपल्या भ्रात्यांसह निश्चय करून त्याप्रमाणें त्यास तो दिला. तो अधिकार प्राप्त होताच महारथ कर्ण सिंहनाद करून मोठ्या आवेशानें युद्ध करूं लागला. त्यानें सर्व संजयांचा, पंचालांचा, केकयांचा व विदेहांचा मोठा संहार उडविला ! राजा, कर्णाच्या धनुष्याच्या प्रत्यंचेपासून ज्या शतावधि बाणपंक्ति सुरू झाल्या, त्या—एका बाणाचें पुंख व दुसऱ्या बाणाचें अग्र हीं अगदीं एकमेकांशीं भिडलेलीं असल्यामुळे—जणुं काय भृंगांच्या पंक्तिच चालल्या आहेत, असें भासूं लागलें. हे निष्पाप धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें बाणांवर बाण सोडून कर्णानें पंचालांना व पराक्रमी पांडवांना ‘ ताहि भगवन् ’ करून सोडिलें व सहस्रावधि वीरांना रणभूमीवर निजविलें; परंतु अखेरीस त्या कर्णाचा अर्जुनानें वध केला !

अध्याय चौथा.

—:०:—

धृतराष्ट्राचा विलाप.

वैशंपायन सांगतात:—राजा जनमेजया, कर्णाचें वधवृत्त ऐकून अंबिकासुत धृतराष्ट्राला

अपार दुःख झालें व त्यास दुर्योधनच वध पावला असें वाटून तो शोकविह्वल होऊन भूतलावर हत्तीसारखा निश्चेष्ट पडला ! हे भरत-सत्तमा, ह्याप्रमाणें तो राजाधिराज धृतराष्ट्र दुःखाकुल होऊन भूमीवर पडतांशर्णांच ख्रियांनीं एकच दुःखाचा टाहो फोडिला ! राजा, त्या कल्होळानें सर्व पृथ्वी अगदी व्याप्त झाली ! कौरवख्रिया अगाध शोकसागरांत बुडून जाऊन दीनस्वरानें मोठमोठ्यानें आक्रंदूं लागल्या ! गांधारी धृतराष्ट्राच्या समीप गेली व त्याची ती अवस्था पाहून भूमीवर बेशुद्ध पडली ! आणि अंतःपुरांतलें इतर ख्रियांचीही तीच स्थिति होऊन सर्वत्र एकच आकांत झाला !

राजा जनमेजया, नंतर मोठा दुःखाक्रोश करून नेत्रांवाटे अश्रु दाळीत निश्चेष्ट पडलेल्या त्या ख्रियांना संजयानें चार गोष्टी सांगून शुद्धीवर आणिलें व त्यांस धीर दिला. परंतु वाऱ्यानें इतस्ततः हालणाऱ्या केळींप्रमाणें त्या भयानें एकसारख्या कांपत राहिल्या ! नंतर विदुरानें धृतराष्ट्रावर थोडेंसें पाणी शिंपडलें तेव्हां तो हळूहळू शुद्धीवर आला मग संजयानें व विदुरानें त्याचें सांत्वन केलें. नंतर राजानेंही तेथील तो सर्व प्रकार मनांत आणिला व स्त्रीवर्गाची ती अवस्था जाणून तो वेड्यासारखा स्तब्ध बसला ! मग त्यानें बराच वेळ मनन करून पुनःपुनः दुःखाचे सुस्कारे टाकिले; आणि तो आपल्या पुत्रांची निर्भर्त्सना करून पांडवांची स्तुति करूं लागला ! त्यानें वारंवार आपल्या स्वतांच्या व सौबल शकुनीच्या बुद्धीला दोष लाविला, आणि फिरून बराच वेळ विचार करून तो मयानें कांपूं लागला ! नंतर त्यानें पुनः मन आवरून धरिलें व मोठा धीर करून संजयाला विचारिलें.

धृतराष्ट्र ह्मणालाः—बा संजया, तूं जें कांहीं सांगितलेंस, तें सर्व मी ऐकिलें. तर मग

सुता, नेहमीं जयाची आशा करणारा पण आतां जयाविषयीं निराश झालेला माझा पुत्र दुर्योधन यमसदनीं गेला नाहींना ! संजया, आतां तूं जी ही हकीकत सांगितलीस, तीच तूं पुनः सविस्तर रितीनें सांग.

राजा जनमेजया, ह्याप्रमाणें धृतराष्ट्रानें विचारल्यावर संजयानें त्यास सांगितलें कीं, “ राजा, आपले पुत्र, महाधनुर्धर ध्रुते व हातावर शिर घेऊन लटणारे इतर मृतपुत्र यांसहवर्तमान महारथ कर्ण हा मारला गेला ! त्याचप्रमाणें, त्या भाग्यशाली पांडुपुत्र भूमिानें युद्धांत दुःशासनाला मारून क्रोधानें त्याचें रक्त प्राशन केलें ! ”

अध्याय पांचवा.

—:०:—

कौरवांकडील कोणकोणते वीर पडले ?

वैशंपायन सांगतातः—राजा जनमेजया, ह्याप्रमाणें घृतांत श्रवण करून धृतराष्ट्रानें शोकाकुल होऊन संजयास म्हटलें, “ बा संजया, कर्णाचा वध हें माझ्या अल्पायुषी पुत्राच्या दुष्ट राजनीतीचें फल होय. ह्याकरितां कर्णाच्या वधाची वार्ता ऐकून माझे काळीज अगदीं तिळतिळ तुटत आहे ! ह्मणून कौरवांकडील व पांडवांकडील कोण कोण जिवंत आहेत व कोण कोण मेलें हें सांगून तूं माझ्या मनाचा संशय दूर कर व मला शोकसमुद्राच्या तिरास लाव ! ”

संजय ह्मणालाः—राजा धृतराष्ट्रा, महा-प्रतापशाली व अजिंक्य योद्धा भीष्म दहा दिवसांत पांडवपक्षाच्या हजारों वीरांस मारून आपण स्वतः पडला ! त्याप्रमाणेंच महाधनुर्धर द्रोणाचार्य पांचालांकडील रथ्यांचा युद्धांत वध करून दुर्यध झाले, परंतु अखेरीस वध पावले ! राजा, महात्मा भीष्म व द्रोण ह्यांच्या तडाक्या-

तून पांडवांचें जें सैन्य वांचलें होतें, त्यापैकीं अर्धें सैन्य मारून टाकून बैकर्तन कर्णानें धारातीर्थीं देह ठेविला ! महाराज, महाबलिष्ठ राजपुत्र विविशति ह्यानें शेंकडों आनर्त योद्ध्यांना ठार केलें व शेवटीं आपण पडला ! राजा, तीच गति तुझा पुत्र विकर्ण ह्याची झाली ! त्याचे अश्व व आयुधें हीं जरी नाहीशी झालीं, तरी तो शूर आपल्या क्षात्रधर्माकडे लक्ष देऊन शत्रूंच्या समोर जो उभा राहिला होता तो तेथून मुळींच दळला नाही; परंतु दुर्योधनानें द्रौपदीला जे अनेक भयंकर क्लेश दिले होते ते मनांत आणून भीमसेनानें आपल्या प्रतिज्ञेनुसार त्यास ठार मारलें ! अवंतीचे राजपुत्र महारथ विंद आणि अनुविन्द हेही घोर पराक्रम करून अखेरीस यमसदनास चालते झाले ! राजा, जयद्रथाचीही तीच अवस्था झाली ! सिंधुराष्ट्रादिक दहा राष्ट्रे त्या वीराच्या ताब्यांत असून तो तुझ्या आज्ञेत पूर्णपणें वागत असे; परंतु अर्जुनानें त्या जयद्रथाच्या अकरा असौहिणी सैन्यावर आपले तक्षिण बाण सोडून त्याची दाणादाण केली व अखेरीस त्या महावीर्यशाली नरश्रेष्ठाला यमसदनास पाठवून दिलें ! त्याप्रमाणेंच महावेगवान्, युद्धांत पराजित न होणारा आणि पित्याची आज्ञा पूर्णपणें पाळणारा असा दुर्योधनाचा जो पुत्र, त्यास सुभद्रापुत्र अभिमन्यु ह्यानें मारिलें ! तसाच दुःशासनाचा पुत्र दौःशासनि हाही मोठा शूर व पराक्रमी असून युद्धांत शत्रूंना अगदीं नकोसें करून सोडीत असे, पण त्यालाही द्रौपदीपुत्रानें गांठून मृत्युमुखांत लोटिलें ! त्याप्रमाणेंच किरातांचा व सागरतीरीं राहणाऱ्या दुसऱ्या लोकांचा अधिपति धर्मात्मा भगदत्त हा देवराजाचा बहुमान्य प्रिय मित्र असून क्षात्रधर्मांत नित्य रममाण असे; परंतु धनंजयानें मोठा पराक्रम करून त्यास ठार मारिलें ! त्याप्रमा-

णेंच, हे राजा, कौरवांचा दयाद-शूर व महायशस्वी भूरिश्रवा यानें शस्त्राचा त्याग केला असतां सात्यकीनें युद्धांत त्यास वधिलें ! तसाच अंबष्ठराजा श्रुतायु क्षत्रियामध्यें धुरंधर असून मोठ्या धैर्यानें रणभूमीवर संचार करीत असे, पण त्याला धनंजयानें युद्धांत मारिलें ! त्याप्रमाणेंच, शस्त्राखांत निपुण व युद्धामध्यें अजिंक्य आणि पांडवांविषयीं सदादित जळफळणारा तुझा पुत्र जो दुःशासन, त्यास भीमसेनानें ठार मारलें ! त्याप्रमाणेंच राजा, ज्यापाशीं सहस्रावधि अद्भुत गजसैन्य होतें, त्या सुदक्षिणालाही युद्धामध्यें अर्जुनानें वधिलें ! राजा, कोसलदेशाचा राजा मोठा पराक्रमी असून त्यानें युद्धांत शत्रूंकडे शतावधि धोर मारिले, पण त्यास शेवटीं अभिमन्यूनें मोठ्या शौर्यानें ठार केलें ! त्याप्रमाणेंच तुझा पुत्र चित्रसेन ह्यानें महारथ भीमसेनाशीं पुष्कळ युद्ध केलें, परंतु त्यास भीमसेनानें युद्धांत वधिलें ! राजा, तसाच मद्राधिपतीचा शूर पुत्र-ज्याच्याशीं युद्ध करितांना शत्रु भयभीत होऊन जात, तो ढाल-तरवार घेऊन लढत असतां अभिमन्यूच्या हस्ते मरण पावला ! राजा, कर्णपुत्र वृषसेनाचा पराक्रम काय वर्णावा ! तो युद्धामध्यें प्रतिकर्णच वाटे. तो महान् प्रतापी असून अतिशय त्वरेनें अस्त्र-योजना करीत असे; परंतु अभिमन्यूच्या वधानें चवताळून जाऊन अर्जुनानें जी प्रतिज्ञा केली होती त्या प्रतिज्ञेचें स्मरण करून, कर्णाच्या समक्ष त्यानें त्या तेजस्वी वीराला ठार मारिलें ! राजा धृतराष्ट्रा, श्रुतायु राजा नेहमीं पांडवांशीं वैर करीत असे; ह्यास्तव हननप्रसंगीं त्याला त्या वैराची आठवण देऊन अर्जुनानें वधिलें ! त्याप्रमाणेंच शलयाचा पुत्र रुक्मरथ हा मोठा पराक्रमी असून सइदेवाचा मामेभाऊ असतांही सहदेवानें युद्धांत त्यास ठार मारिलें ! वृद्ध राजा भगीरथ व केकयराजा बृहत्क्षत्र हे

दोषेही मोठे पराक्रमी व शूर होते, परंतु त्यांस धारातीर्थी पडावे लागले ! राजा, भगदत्ताचा पुत्र महाबुद्धिमान् व महाबलवान् असतांही युद्धभूमीवर श्येनपक्ष्यासारखा संचार करणाऱ्या नकुलानें तो यमसदनास पोचविला ! तुझा पितामह महाबल व महाशूर बाल्हीक आणि त्याच्याबरोबर असणारे दुसरे बाल्हीकयोद्धे ह्यांस भीमसेनानें मारिलें ! त्याप्रमाणेंच जरासंधाचा पुत्र जयत्सेन हा मोठा वीर्यशाली होता; पण त्या मागघ भूपतीचा महात्म्या सौभद्रानें युद्धांत वध केला ! राजा, तुझे पुत्र दुर्मुख व दुःसह हे महारथ असून पराक्रमाविषयी त्यांची मोठी ख्याति होती; परंतु त्यांस भीमसेनानें गदेच्या प्रहारांनीं ठार मारिलें ! त्याप्रमाणेंच दुर्बिषण, दुर्बिषह व दुर्जय हेही महारथ असून त्यांनीं समरांगणात मोठा पराक्रम गाजविला, परंतु अखेरीस त्यांस यमसदनाची वाट घरणें भाग पडलें ! राजा, त्याप्रमाणेंच कालिंग व वृषक हे दोषे भाऊ युद्धांत मोठे अजिंक्य असे होते; पण ते घोर प्रताप प्रकट करून अखेरीस युद्धांत पडले ! राजा, तुझा अमात्य वृषवर्मा मोठा शूर व विजयशाली होता; पण भीमसेनानें मोठ्या शौर्यानें त्यास ठार मारिलें ! त्याप्रमाणेंच महान् पौरव राजा—ज्यास दहा हजार हत्तींचें बल होतें त्यास—पांडुपुत्र अर्जुनानें समरांगणांत वधिलें ! तसेंच दोन हजार शूर वसाति व विजयशाली शूरेसेन हे सर्व युद्धांत पतन पावले ! त्याप्रमाणेंच कवचें धारण करणारे रणधुरंधर शूर अभीषाह व श्रेष्ठ रथी शिबि ह्यांचा कालिंगांसह वध झाला ! तसेंच राजा, नित्य गोकुळांत वाढलेले व युद्धांत नेहमी क्षुब्ध होणारे ते संशसकांचे जोडीदार अपावृत्तक वीर नारायण गोप्र हे धनंजयाच्या हस्ते युद्धभूमीवर शयन करिते झाले ! त्याप्रमाणेंच सहस्त्रावधि श्रेणि व संशसकांच्या टोळ्या ह्यांची अर्जु-

नाशीं गांठ पडतांच त्यानें त्या सर्वांचा नाश करून टाकिला ! त्याप्रमाणेंच राजा, तुझे मेहुणे वृषक व अचल हे दोन राजे ह्यांनीं तुझ्याकरितां अतिशय पराक्रम गाजविला; परंतु अखेरीस त्यांस अर्जुनानें ठार मारिलें ! तसाच शाल्वदेशाचा महाधनुर्धर राजा उग्रकर्मा हा नांवाप्रमाणेंच पराक्रमानेंही होता; परंतु त्या प्रतापशाली राजाला भीमसेनानें लोळविलें ! त्याप्रमाणेंच हे महाराजा, ओषवान् व बृहंत हे दोषे एकत्र होऊन रणभूमीवर आपल्या मित्राकरितां (दुर्योधनाकरितां) मोठ्या निकरानें लढत असतां यमसदनास चालते झाले ! तसेंच रथिश्रेष्ठ क्षेमधूर्ति ह्यास भीमसेनानें गदेनें ठार मारिलें ! त्याप्रमाणेंच महाबलिष्ठ व महाधनुर्धर जलसंध ह्यानें शत्रुपक्षाचे अनेक वीर रणांत पतन पावला ! तसाच राक्षसांचा अधिपति अलंबुष—ज्याचा रथ गर्दभ जोढल्यामुळें मोठा विचित्र दिसत होता, तो—षटोत्कचानें मोठा पराक्रम करून यमसदनास पाठविला ! त्याप्रमाणेंच, मृतपुत्र राधेय, त्याचे महारथ भ्राते आणि सर्व केकय वीर ह्या सगळ्यांचा अर्जुनानें फडशा पाडिला ! आणि तसेंच हे राजा, मालव, मद्रक, उग्रकर्मा द्राविड, यौधेय, ललित्य, क्षुद्रक, उशीनर, मावेल्हक, तुंडिकेर, सावित्रोपुत्र, प्राच्य, उदीच्य, प्रतीच्य, दाक्षिणात्य इत्यादि सर्व योद्ध्यांना धनंजयानें यमपुत्री दाखविली ! राजा, पायदळांच्या अनेक टोळ्या, लक्षावधि घोडे, रथांचे समुदाय आणि अनेक मोठमोठे हत्ती ह्यांचा युद्धांत नाश झाला ! त्याप्रमाणेंच, श्रेष्ठ कुळांत जन्मास आलले व कुशल पुरुषांनीं वाढविलेले असे अनेक शूर वीर आपले ध्वज, आयुधें, कवचें व वस्त्रालंकार यांसह अन्याहतपणें शौर्ये गाजविणाऱ्या अर्जुनाकडून समरभूमीवर मारिले गेले ! राजा,

संजया, कर्णाला जेव्हां पांडवांनीं मारिलें, तेव्हां तो रणांगणांत एकटाच असून त्याचे साथीदार पळून वीरे गेले नव्हतेना ? बाबा, आपल्या कडिली वीरांना शत्रूकडून कशा रीतीनें वधण्यांत आले, हे तूं पूर्वी सांगितलें आहेसच. पहा, ज्याच्याशीं सामना करण्यास कर्णाला समर्थ नव्हता, त्या सर्व शस्त्रधात्यांमध्ये श्रेष्ठ अशा भीष्माला शिखंडीनें उत्तम बाण मारून रणांत पाडिलें; त्याचप्रमाणें महाधनुर्धर द्रोण-धार्य सर्व आगुधांचा त्याग करून युद्धभूमीवर मरण्यास सिद्ध होऊन बसल्यानंतर द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्न ह्यानें त्यांजवर बहुत बाण टाकिले, आणि अखेरीस खड्ग उचलून त्यानें त्यांस ठार केले ! सारांश हे संजया, भीष्म व द्रोण ह्यांचा पांडवांनीं जो वध केला, तो अन्यायानें व त्यां-ही विशेषेंकरून कपटांनें केला आहे ! भीष्म व द्रोण ह्यांसंबंधानें मीं असेंही ऐकिलें आहे कीं, प्रत्यक्ष वज्रधारी इंद्राकडूनही न्यायानें युद्ध करणाऱ्या त्या दोघां वीरांचा वध झाला नसता ! संजया, मी सांगतो हें अगदीं सत्य आहे ! आतां कर्णाविषयीं विचारशील तर त्याच्या वधाचें मला मोठेंच नवल वाटत आहे. पहा, कर्ण हणजे अगदीं देवेंद्रतुल्य वीर; आणि असें असतां मृत्यूनें त्याला स्वप्न करण्याचें कसें घाडस केले बरे ! पहा, त्याच्या अंगीं नानाप्रकारचीं दिव्य आणि बहुत अस्त्रें सोडण्याचें सामर्थ्य ! त्याला प्रत्यक्ष पुरंदरानें विडुल्लेतेप्रमाणें देदीप्यमान, सुवर्णमंडित व शत्रुसंहारक दिव्य शक्ति कुंडलां-बद्दल दिली; व त्याच्या मात्यामध्ये सुवर्णालंकृत सर्पमुख दिव्यबाण चंद्रनाच्या चूर्णांत शत्रूंचा प्राण घेण्यास सिद्ध होता; आणि असें असतां त्या कर्णाचा अशा प्रकारें अंत व्हावा काय ?

संजया, कर्णाच्या ठिकाणीं केवढा रे वीर-श्रीचा अभिमान ? भीष्मद्रोणादिक महारथांना देखील तो जुमानित नसे ! जमदग्निपुत्र परशु-

राक्षसासून त्यानें महाबोर ब्रह्म-अस्त्र-संपादन केले होते ! द्रोणसृष्टि-वीर-अभिमन्यूच्या शर-प्रहारानीं तस्त होऊन मग्नार-बेऊं लायले. तेव्हां त्या प्रतापशास्त्री-कर्णाचें अभिमन्यूच्या त्या धनुष्यावर तीक्ष्ण बाण टाकून तें भंग केले, ज्याला दहा हजार हत्तींचें सामर्थ्य व वज्राच्या वेगाप्रमाणें वेग, त्या अस्त्रिय भयसेनाला देखील त्या कर्णाचें एकाएकीं विरथ करून त्याचा उपहास केला ! त्यानें बांकदार पेरी असलेल्या बाण्यांचा वर्षाव करून सहदेवाला जिंकून त्यास रथहीन केले, पण अर्जुनाचरणाचा व निष्ठुरपणाचा दोष प्राप्त होईल; ह्या भीतीनें त्यास वधिलें नाहीं ! त्यानें षटोत्कचाच्या सहस्रावधि मार्यांचा विनाश करून त्या राक्षसेंद्राला इंद्राशक्तीच्या योगानें ठार मारिलें ! आणि ह्या त्याचा अपूर्व पराक्रम अवलोकून करून घनंजयासही स्फ्य वाटले व त्याचें कांहीं दिवसपर्यंत त्याच्याशीं द्वैरथयुद्ध करण्याचा विचार सोडून दिला ! संजया, कर्णाची युद्ध करण्याचें टाळण्याकरितां अर्जुनाला ही युक्ति लढवावी लागली ! " हे संशयक वीर पुनःपुनः मला मुख्य रणभूमीवरून एकांकडे ओढून नेतात ह्यास्तव प्रथम मी संशयकांचा नाश करून मग ह्या कर्णाचा वध करावा हें चांगलें ! " असा बहाणा अर्जुनानें केला व त्याचें कर्णाशी युद्ध करण्याचें फुटें लोटिलें ! सारांश, हे संजया, अशी अस्त्रितीय शक्ति ज्या कर्णाच्या ठायीं होती त्या ऋजुसंहारक महान् योद्ध्याला अर्जुनानें रणांत मारिलें हें षडलें तरी कसें ! अरे, जर कर्णाचा रथ भंग झाला नसता, धनुष्य तुटलें नसतें, व अस्त्रांचा नाश झाला नसता, तर त्या वीराचा कसा बरे वध झाला असता ? संजया, कर्णाचें सामर्थ्य किती तरी अगाध ! तो एकदां समर-भूमीवर महान् धनुष्य घेऊन भयंकर शारांची वृष्टि करून दिव्य अस्त्रें सोडून लागला, म्हणजे

शार्दूलाप्रमाणे महावेगवान् अशा त्या वीरशार्दू-
लास जिंकण्यास कोणीही समर्थ नसे ! निःसं-
शय, त्याचें धनुष्य तुटलें, रथ पृथ्वीनें गिळिला,
अथवा त्यास अख्खें आठवतनाशीं झाली, म्हणूनच
तूं सांगत आहेस त्याप्रमाणें कर्णाचा वध झाला
असेल ! ह्यावांचून कर्णाच्या नाशाला अन्य
कारण संभवत नाही.

संजया, जोंपर्यंत मीं फाल्गुनास (अर्जुनास)
ठार मारिलें नाही, तोंपर्यंत मीं पादप्रक्षालन
करणार नाही, अशी ज्या महात्म्या कर्णाची
घोर प्रतिज्ञा; ज्याच्याबरोबर युद्ध करण्याची
पाळी येईल ह्या भीतीमुळें पुरुषश्रेष्ठ युधिष्ठि-
राला तेरा संवत्सरपर्यंत निद्रा प्राप्त झाली नाही;
ज्या वीर्यशाली पुरुषाच्या सामर्थ्यावर भिस्त
ठेवून माझ्या पुत्रानें बलत्कारानें पांडवांच्या
झाला पांडवांच्या देखत समेंत ओढून आणिलें,
व त्या पांचालीला कौरवांसमस्त ' दासभाया '
असें म्हटलें; तसेंच ज्यानें, " हे कृष्णे, आतां
तुझे पति नष्टवत् आहेत, त्या सर्वांची अव-
स्था वांझ्या तिळांप्रमाणें अगदीं तुच्छ झाली
आहे; ह्याकरितां हे सुंदरी, तूं आतां दुसरा पति
कर." असे कठोर शब्द समेंत क्रोधानें काढिले;
त्याचप्रमाणें, " युद्धाविषयीं आत्मश्लाघा कर-
णाऱ्या मीष्मानें किंवा युद्धांत अजिंक्य अस-
णाऱ्या द्रोणानें पक्षपातबुद्धीनें जरी पांडवांना
मारिलें नाही, तरीं दुर्योधना, मीं एकटा त्या
सर्वजणांना मारिन, हें खचित समजून तूं
आपल्या मनाची तळमळ अगदीं नाहीशी कर.
दुर्योधना, अर्जुनाचें गांडीव धनुष्य किंवा त्याचे
ते दोन महान् अक्षय भाते, चंदनचूर्णानें माख-
लेला माझा बाण सों सों करीत उडी टाकीत
चालला ह्यणजे त्यापुढें काय करणार ? " असे
शब्द उल्हासानें दुर्योधनापाशीं उच्चारिले तो
महाबलिष्ठ वीर कर्ण आज अर्जुनानें मारिला
हें खरें काय ! अरे, ज्या कर्णाका गांडीवापासून

सुटलेल्या बाणांच्या भयंकर स्पर्शाची मुळींच
पर्वा वाटत नसे, ज्यानें " हे कृष्णे, तूं आतां
अपति (पतिरहित) आहेस ! " असे शब्द
काढून पांडवांकडे टवकारून पाहिलें, म्वतःच्या
बाहुबलावर भरंवसा अमल्यामुळें ज्याला पुत्रां-
सहित किंवा कृष्णासहित पांडवांचें क्षणभर भय
वाटत नव्हतें, त्याचा वध देवांसहित इंद्राकडून
सुद्धां होईल असें वाटत नाही; मग सैरावेरा
चाल करून येणाऱ्या पांडवांकडून तो होणें हें
तर दुरापास्तच !

संजया, कर्णाचा पराक्रम काय वर्णावा !
त्या अधिरथपुत्रानें प्रत्येवेला स्पर्श केला पुरे,
किंवा तलत्राणें चढविलीं कीं पुरेत, कोणत्याही
पुरुषाची त्याच्यापुढें उभें रहाण्याची छाती होत
नसे ! कदाचित् पृथ्वीवरील सोम, सूर्य व बन्धि
ह्यांची तेनें एक वेळ नष्ट होतील, पण त्या
युद्धांतून पलायन न करणाऱ्या पुरुषेंद्राचा वध
होणें दुप्कर ! अरे, त्याच्या व दुःशासनाच्या
साहाय्यानेंच महामूर्ख दृष्ट दुर्योधनानें वामुदेवा-
चा अखेर केला ! आतां मात्र दुर्योधनाची दशा
मोठी कठीण आहे ! कर्ण व दुःशासन हे धारा-
तीर्थी पतन पावलेले पाहून आतां त्यास मोठा खेद
होत असेल ! विकर्तनपुत्राचा द्वैरथयुद्धांत
अर्जुनानें वध केला असें ऐकून व पांडवांची
सरशी होत चालली असें अवलोकन करून
दुर्योधनानें काय उद्गार काढिले बरें ? वृषसेन
व दुर्मर्षण हे युद्धांत पडले, कौरवसैन्य महारथां
कडून मृत्यु पावूं लागलें व त्याची दाणादाण
उडाली, साहाय्यार्थ आलेले राजेलोक पराक्-
मुख होऊन पळून जाऊं लागले, आणि रथ
वीर धूम पळत सुटले, असें जेव्हां दुर्योधनां
पाहिले असेल, तेव्हां मात्र तो दुराग्रही, अभि-
मानी, मूर्ख व अविचारी दुर्योधन खचित पश्चा
त्ताप पावला असेल !

संजया, अशा ह्या दुर्बल समधी दुर्योधना

च्या मनाची काय बरें स्थिति झाली असेल ? अरे, आपल्या सैन्याची नाउमेद झालेली पाहून त्यानें काय बरें म्हटलें असेल ! ह्या सर्व घोर अनर्थास कारण त्याचा तोच आहे ! त्यानें स्वतःच हा महान् कलहाग्नि चेतविला ! त्याच्या आप्तमुहूर्दांनीं त्यास पुष्कळ मोडा घातला, पण तो सर्व व्यर्थ झाला ! आणि आतां तर समरांगणांत प्रधान वीरांचा नाश घडून आला आहे ! तेव्हां आतां दुर्योधनानें काय उद्गार काढिले असतील बरें ? अरे, भमिसेन दुःशासनास रणभूमीवर ठार मारून त्याचें रक्त प्राशन करीत असतां दुर्योधनाच्या मुखावाटे कोणते शब्द बाहेर पडले असतील बरें ? संजया, गांधारराज शकुनि ह्यासहवर्तमान दुर्योधन सभेमध्ये असें म्हणाला होता कीं, 'कर्ण हा अर्जुनाला मारील !' पण आतां तर त्याच्या उलट होऊन अर्जुनानेंच कर्णाला मारिलें आहे; तेव्हां आतां दुर्योधन काय म्हणत असेल बरें ? संजया, पूर्वी घूत करून पांडवांना वंचिल्यावर ज्याला मोठा आनंद वाटला, तो सौचल शकुनि कर्णाच्या मृत्यूनंतर काय बोलला बरें ? सात्वतांतला महारथ महाधनुर्धर हार्दिक्यपुत्र कृतवर्मा हा कर्णवध श्रवण करून काय बोलला बरें ? धनुर्वेद शिकण्याची इच्छा करणारे ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य हे ज्या बुद्धिमान् द्रोणपुत्राची सेवा करतात आणि जो तरुण, रूपसंपन्न, सुंदर व महाकीर्तिमान् आहे, तो अश्र्वत्थामा कर्णाचा वध झाल्यावर काय म्हणाला बरें ? त्याप्रमाणेंच धनुर्वेदाचा आचार्य असा तो महारथ शारद्वत कृप कर्ण पडल्यावर काय बोलला बरें ? तसाच तो महाधनुर्धर महाबलवान् मद्राधिपति, —युद्धांत शोभणारा महारथ सारथ्यकर्म करीत असलेला सौविर शल्य कर्णाचा वध झाल्याचें पाहून काय बोलला बरें ? आणि त्याप्रमाणेंच हे संजया, ते सर्व दुर्जय राजे—जे कोण युद्धार्थ आले होते—

ते वैकर्तन हा हत झालेला पाहून काय काय झणाले बरें ? बरें असो; संजया, तो पुरुषश्रेष्ठ रथव्याघ्र द्रोण वीर मृत्यु पावल्यानंतर सैन्याच्या कोणत्या भागांवर कोण कोण मुख्य होते ? महारथ मद्रराज शल्याची कर्णाच्या सारथ्यकर्मावर कशी योजना झाली ? सूतपुत्र कर्ण युद्ध करीत असतां त्याच्या रथाचें उजवेकडील चक्र कोणी राखिलें, तसेंच डावे चक्राचें कोणी रक्षण केलें, त्याच्या पृष्ठमार्गी कोणकोणते वीर शत्रुसैन्याचें निवारण करीत होते, कर्णाची विपन्न अवस्था अवलोकन करून कोणकोण क्षुद्र पुरुष पळून गेले व कोणकोण शूर पुरुष त्याच्या मदतीकरितां शेवटपर्यंत टेंक देऊन लढत राहिले, तुम्हीं (कौरवाकडील) सर्व वीर एकत्र व एकजुटीनें लढत असतां कर्ण हा अर्जुनाच्या हस्ते मृत्युमुर्खी कसा पडला, शूर महारथ पांडव मेधाप्रमाणें बाणांचा वर्षाव करीत कर्णावर कसे चालून गेले, आणि तो सर्षमुख दिव्य बाण कर्णाजवळ असतांना तो फुकट कसा गेला, हें मला कथन कर. संजया, आतां माझे जें सैन्य अवशिष्ट आहे, त्यांत मला फारसा जोम दिसत नाही. माझ्या सैन्यांतले जें कांहीं सत्त्व तें सर्व नष्ट झालें, ह्यास्तव उर्वरित राहिलेले सैन्य मला मृतवत्तच मासत आहे ! पहा, ते महाधनुर्धर वीर भीष्म व द्रोण माझ्याकरितां जीव देण्यास तयार झालेले जर रणभूमीवर पतन पावले, तर माझ्या ह्या जीविताचा उपयोग तो कोणता ? अरे, ज्या कर्णाच्या अंगी सहस्र कुंजरांचें बळ होतें, त्या कर्णाला पांडवांनीं वाधिलें ही गोष्ट माझ्या हृदयाला अगदी लागून राहिली आहे ! मीं कितीही विवेक केला तरी हें दुःख माझ्यानें सहन करवत नाही ! बा संजया, द्रोणाचार्य पडल्यानंतर शूर कौरवांचा व पांडवांचा जो रणसंग्राम झाला, तो मला सांग. संजया, कर्णानें

‘फंडकीर्षी कक्षा’ प्रकारें युद्ध केले, आणि त्या-
प्रमाणेंच तो शत्रुसंहारक महान् वीर रणांत कसा
पतन पवला, तें मला सांग !

अध्याय दहावा.

—:०:—

ऋषणांशु अभिषेक.

संजय सांगतो:—हे मारता धृतराष्ट्रा, त्या
दिग्दर्शी महाधनुर्बर द्रोणाचार्य पतन पावले, व
द्रोणपुत्र महारथ अध्वत्यामा ह्याचा संकल्प व्यर्थ
झाला, तेव्हां कौरवांचा सेनासागर एकसारखा
भिकडे घाट सापडेल तिकडे धूम वाहू लागला
असतां, अर्जुन हा आपल्या सैन्याची मुख्यव-
स्थित रचना करून भ्रातृवर्गसमवेत युद्धभूमी-
वर युद्धार्थ उभा राहिला. हे मरतर्षमा, त्या
समयी अर्जुन हा युद्धाला तोंड देऊन उभा
आहे असे जाणून व कौरवसेना पळत आहे
असे अवलोकन करून तुम्हा सुत दुर्योधन ह्याने
मोठ्या शौर्याने त्या सेमेची स्थिरस्थावर केली,
आणि तिची जेवढ्या तेंपे योजना करून तो
स्वतः मोठ्या पराक्रमाने बराच काळपर्यंत पांड-
वांशी लढला; परंतु पांडवांना जय मिळून
त्यांची धरंशी होत गेल्यामुळे त्यांनी मोठ्या
उमेदीने पुष्कळ वेळपवेतो अधिक वीरश्री धरून
युद्ध चालविले. इतक्यांत संघाकाळ झाला,
तेव्हां दुर्योधनाने आपल्या सैन्याला परत माघारें
बोलाविले आणि नंतर कौरवांकडील प्रधान योद्धे
दुर्योधनाच्या टांभ्यांत एकत्र जमून त्यांनी पुढील
कार्तव्याविषयी चाचणीत मसलत ठरविली. दुर्यो-
धनाच्या शिबिरांत ते सर्व वीर उत्कृष्ट आस्त-
रणांनी शोभभाषमान दिग्गजांच्या अशा श्रेष्ठ
सैन्यावर बसले असतां जणू काय देवमंडल
सुवासनांवर अश्लिष्ट झाले आहे असा आस
झाला. नंतर तेथे जमलेल्या त्या महाधनुर्बर
योद्ध्यांना अनुकूलन दुर्योधन राजाने प्रसंगा-

नुरूप व सर्वास प्रिय वाटेल असे अस्थंत मधुर
भाषण केले. तो झगला, “ अत्यंत बुद्धिमान
वीरहो, तुम्ही सर्वजण आपआपला विचार स्वरित
कळवा; अगदी उशीर करू नका. सध्यांची स्थिति
तुम्ही जाणतच आहां; तर अशा ह्या समयी
राजेहो, आपण काय करावे व त्यांतही विशेष-
पतः कोणती गोष्ट करावी हें सांगा. ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, युद्ध
करण्याची इच्छा करित असलेल्या त्या पुरुष-
श्रेष्ठानीं दुर्योधनाचें भाषण ध्रुवण करून, आपा-
पल्या सिंहासनांवरून दंड थोपटणें वगैरे धरश्री-
द्योतक नानाविध कृत्यांनी आपला अभिप्राय
व्यक्त केला. नंतर युद्धांत प्राण देण्यास सिद्ध
झालेल्या त्या वीरांचा हेतु मनांत आणून आणि
दुर्योधन राजाची मुखश्री प्रातःकालीन सूर्याप्रमाणें
तेजःपुंज अवलोकन करून समय जाणणारा
चतुर आचार्यपुत्र अध्वत्यामा म्हणाला, “ नृपहो,
स्वामिभक्ति, देशकालादिकांची अनुकूलता, बल
व राजनीति हीं अर्थसिद्धीची मुख्य साधनें होत.
असें तज्ज्ञ लोकांचें मत आहे. आतां हीं साधनें
अनुकूल असलीं तरी दैवाचें अणस्वी साहाय्य नस-
नासेल तर कार्यासिद्धि होणार नाही. स्वामिभक्ति
वगैरे सर्व साधनें आपणांस अनुकूल असूनही
आपल्या पक्षाचे देवतुल्य पराक्रमी, स्वामिभक्त
रणधुरंधर व प्रबळ असे महान् महान् महारथ
युद्धांत पडले. एवढ्यावरून, दैवाची अनुकूलता
आपणांस नाही असें मनांत आणून तुम्ही कदा
चित् निराश होऊन जयाशा सोडून द्याल, पण
असें करू नका. साधनांची अनुकूलता असून
दैवाची प्रतिकूलता असल्यास जसा कार्याच
नाश होतो, तशीच दैवाची अनुकूलता असून
साधनांची प्रतिकूलता असल्यास कार्याचा नाश
होत नाही. दैवाची अनुकूलता एकदां प्राप्त झाले
झणजे सर्व गोष्टी स्वभावतःच अनुकूल होतात
आणि मग इष्ट कार्य सिद्धीस जाते. तेव्हा

दैव अनुकूल करून देणारी गोष्ट कोणती, ह्याचा विचार केला पाहिजे. राजकारणी पुरुष राजनीतीतील तत्वांचा जर मीट विचार करतील व तदनुरूप वागतील, तर सर्वतोपरी दैव अनुकूल करून घेतां येईल. प्रस्तुत प्रसंगी आपण सर्वांनी मुख्य उद्देशावर लक्ष ठेवून सर्व गुणांनी युक्त असा सेनापति नेमिला पाहिजे. सर्व वीरांमध्ये कर्ण हा श्रेष्ठ असा असून त्याच्या अंगी सर्व गुण वास्तव्य करित आहेत; ह्यास्तव हे दुर्योधना, आपण कर्णावरच सैनापत्याचा अभिषेक करूं या. कर्णाला सेनापति केल्यावर आपण शत्रूंचे निर्दलन करण्यास समर्थ होऊं. कर्ण हा अतिशय बलिष्ठ व शूर आहे. तो सर्व शस्त्रास्त्रांत प्रवीण असून युद्धांत अजिंक्य आहे. तो यमधर्माप्रमाणे असह्य असून युद्धांत शत्रूंना जिंकण्यास समर्थ आहे. ह्याकरितां आपण त्यासच सैनापत्य द्यावें. ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, आचार्य-पुत्रांचे हें भाषण श्रवण करून तुझ्या पुत्राने (दुर्योधनाने) कर्णाविषयी मोठी प्रबळ आशा धारण केली. ‘भीष्म व द्रोण पडले तरी कर्ण हा पांडवांना जिंकील’ अशी दुर्योधनास आधीच आशा वाटत होती, म्हणून त्या आशेला अश्वत्थाम्याकडून पुष्टीकरण मिळतांच त्याचे तें मंगलप्रद, हितावह, सत्य, प्रियकर आणि प्रेम व सत्कार ह्यांनी भरलेले भाषण श्रवण करून दुर्योधनाच्या मनाची अखस्थता दूर-माळी आणि स्वतःच्या पराक्रमाविषयी पुनः विश्वास उत्पन्न होऊन त्यास मोठे धैर्य आले व तो कर्णाच्या म्हणाला, “कर्णा, तुझ्या अंमत्त्वा पराक्रम व तुझे माझ्याविषयी अतिशय प्रेम ही मला विदित आहेत; तथापि मी तुला हिताचे क्वचन सांगतो, तें ऐक आणि नंतर जें तुला रुचेल तें कर हे महात्माहो, तूं अत्यंत ज्ञाता असून तुझ्यावर माझी नेहर्मी सर्व भिस्त आहे. भीष्म व

द्रोण हे माझे सेनापति पतन पावले. ते जरी अतिरथ्य होते, तरी त्या उभयतांच्याहीपेक्षां तुझ्या ठिकाणी अधिक सामर्थ्य आहे. ह्यासाठीं तूं माझ्या सैनापत्याचा अधिकार स्वीकार. कर्णा, मी तुला त्या दोघां वीरांपेक्षां अधिक महत्त्व देतो. फहा, ते दोघेही महाधनुर्धर वृद्ध व अर्जुनाविषयी पक्षपाती होते. राधेया, त्यांस मी जो एवढा मोठा मान दिला, तो केवळ तुझ्या सांगण्यावरून. ना कर्णा, भीष्माच्या दातून ह्या महारणांत दहा दिवसांत पांडुपुत्रांचा नाश होऊं नये हें स्वचित आश्चर्य होय ! ह्यास कारण ‘आपण पांडवांचे पितामह आहों’ हा विचार भीष्मानें मनांत वागवून त्यांचा वध करण्याचें टाळलें, हेंच होय. इकडे पांडव मात्र भीष्माविषयी पितामहत्व विसरले. तूं शस्त्रास्त्रांचा त्याग केला असतां अर्जुनानें शिखंडीला पुढें करून मोठ्या निकराचें युद्ध सुरू करून भीष्मांस पाडिले ! ह्याप्रमाणें तो महाधनुर्धर भीष्म शरतर्फी पडल्यावर तुझ्या सांगण्यावरून मी पुरुषश्रेष्ठ द्रोणाचार्य ह्यांस सैनापत्याधिकार दिला; परंतु त्यांनीही शिष्यत्वबुद्धि मनांत आणूनच पांडवांस राखिले असें मला वाटतें. पण त्या वृद्ध द्रोणाचार्यांनाही धृष्टद्युम्नानें लवकरच मारून टाकिले ! कर्णा, तुझ्या ठिकाणी असा कांहीं असाधारण पराक्रम आहे की, धारातीर्थी पतन पावलेल्या त्या प्रधान वीरांनी सुद्धां तुझ्या पराक्रमाची प्रशंसा केली आहे. विचार करून पाहिलें असतां तुझ्यासारखा समरभूमीवर प्रताप गाजविणारा दुसरा वीर मला दिसून येत नव्हों. स्वचित आह्वांला जय मिळवून देण्यास तूंच तेवढा समर्थ आहेस. पूर्वी, मध्यंतरी व तदनंतर तूं तसेंच आमचें हित केले आहेस. ह्याकरितां त्या त्वां ह्या युद्धांत आमच्या सैन्याचा धुरीण व्हावें, हें योग्य होय. म्हणून सैनापत्याधिकाराचा अभिषेक स्वतःच आपणावर

करून वे. देवांचा सेनानी जसा महाबलिष्ठ स्कंद हा झाला, तसा तं ह्या माइथा सैन्याचा महाबलिष्ठ सेनानी हो. महेंद्राप्रमाणें तूं शत्रु-रूप सर्व दानवगणांचा संहार कर. कर्णा, तूं रणशिरोभार्गी उभा आहेस, असें पाहून महारथ पांडवांची व पंचालांची वेधा उडून दानव जसे विष्णूला पाहतांच पळून जातात तसे ते तुला पाहतांच पळून जातील ! ह्यास्तव, हे पुरुष-व्याघ्रा, तूं महासेनेचें नियमन कर. एकदां तूं सैनापत्याधिकारी आरूढ झालास म्हणजे ताबड-तोब मंदबुद्धि पांडव अमात्यांसह, पंचालांसह व सृंजयांसह पळून जातील ! ज्याप्रमाणें सूर्य हा उदयपर्वतावर आरूढ झाला म्हणजे आप-ल्या प्रतापानें प्रखर अंधकार नष्ट करितो, त्या-प्रमाणें तूं सेनानीपदावर आरूढ होऊन आप-ल्या प्रतापानें शत्रूंना नष्ट करून टाक ! ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्र, भीष्म व द्रोण पडले तरी कर्ण हा पांडवांना जिंकील अशी तुझ्या पुत्राला जी मोठी आशा होती, ती आशा अंतर्त्यामीं वागवून दुर्योधनानें कर्णाला असें छटलें कीं, “ हे सूतपुत्रा, तुझ्या समोर उभा राहून युद्ध करण्याला पार्थ हा कधीही उत्सुक होणार नाही ! ”

कर्ण म्हणाला:—हे दुर्योधना, मीं तुला पूर्वीच सांगितलें आहे कीं, ‘ मीं पुत्रांसहित व कृष्णासहित सर्व पांडवांना जिंकून. ’ मीं तुझा सेनापति होईन ह्याबद्दल संशयच नाही. ह्या-करितां, हे महाराज दुर्योधना, स्वस्थ अस; व पांडव जिंकिलेच असें मान. ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्र, कर्णाचें हें भाषण ऐकून, देवेंद्र जसा देवांसहवर्तमान उठतो तसा दुर्योधन सर्व राजांसह कर्णावर सैना-पत्याचा अभिषेक करण्याकरितां उठला; आणि देवांनीं जसा स्कंदाला सैनापत्याभिषेक केला, तसा त्या दुर्योधनप्रभृति विजयेच्छू सर्व राजांनीं

कर्णावर यथाविधि सैनापत्याभिषेक केला. त्यांनीं प्रथम रेशमी वस्त्रांनीं शृंगारलेल्या उंबराच्या आसनावर कर्णाला बसविलें; आणि तो तेथें सुखानें अधिष्ठित असतां उदकानें भरलेल्या सुवर्णाच्या व मृत्तिकेच्या अभिमंत्रित कलशां-नीं, त्याप्रमाणेंच, ज्यांवर रत्नांचा व मौक्ति-कांचा जडाव केलेला आहे अशा हस्तिदंताच्या पात्रांत आणि गव्यांच्या व गेंड्यांच्या शिंगांत पाणी भरून त्यांनीं, त्याप्रमाणेंच दुसऱ्या मंगलदायक सुगांधि पदार्थांनीं व लतापुष्पादिक वनस्पतींनीं, आणि त्या विधीकरितां शास्त्रा-नुसार मिळवून आणिलेल्या इतर नानाविध वस्तूंनीं त्या राजांनीं कर्णावर अभिषेक केला. नंतर श्रेष्ठ पदावर आरूढ झालेल्या त्या महात्म्या कर्णाची ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व सन्मान्य शूद्र ह्यांनीं स्तुति करून त्याचा गौरव केला. मग त्या शत्रूसंहारक कर्णानें सत्पात्र ब्राह्मणांस दक्षिणा, गाई व संपत्ति दिली व नंतर त्यांनीं त्यास मंगलकारक आशीर्वाद दिले. त्या समर्थी ब्राह्मण व बंदिजन ह्यांनीं कर्णाला म्हटलें कीं, “ हे पुरुषर्षभा, तूं ह्या घोर भ्रंशामांत गोविंदा-सहित व अनुयायांसहित पांडवांस जिंक. राधेया, पंचालांसहवर्तमान सर्व पार्थीना ठार मार. ज्याप्रमाणें सूर्याचा उदय होतांच तो आपल्या उग्र किरणांनीं अंधकाराचा नाश करितो त्याप्रमाणें तूं सैनापत्याधिकारावर येतांच शत्रूंचा नाश करून आपणांस जय संपादन कर. सूर्याचे प्रखर किरण अवलोकन करण्यास जशीं घुबडें समर्थ होत नाहीत, तसे कृष्णासहवर्त-मान पांडव हे तूं सोडलेले बाण अवलोकन कर-ण्यास समर्थ होणार नाहीत. कर्णा, ज्याप्रमाणें वज्रधारी इंद्रासमोर उभे राहण्यास दानव भितात, त्याप्रमाणेंच तूं हातांत शस्त्र घेऊन उभा राहिलास म्हणजे तुझ्यापुढें उभे राह-ण्यास पांचाल व पांडव हे भितील ! ”

राजा धृतराष्ट्र, कर्णावर सैनापत्याभिषेक होतांच त्याची कांति अपरिमित वाढली, व तो तेजानें जणू काय दुसऱ्या सूर्याप्रमाणें झळाळूं लागला ! राजा, दुर्योधनानें कर्णावर सैनापत्याभिषेक केल्यावर त्याला आपण कृतार्थ झालों असें वाटलें. इकडे, मृत्यूनें प्रेरित केलेला तो कर्ण सेनापति होतांच सैन्याची व्यवस्था पाहूं लागला व त्यानें सूर्योदयाच्या समयी सैन्याची रचना जेथच्या तेथें करण्याची आज्ञा दिली. राजा धृतराष्ट्र, नंतर, ज्याप्रमाणें तारकासुराशी युद्ध करितांना देवांनीं परिवेष्टित असलेला स्कंद शोभत होता, त्याप्रमाणें तुझ्या पुत्रांनीं परिवेष्टित असलेला तो कर्ण त्या महासमरभूमीवर शोभूं लागला.

अध्याय अकरावा.

—:०:—

व्यूहरचना.

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, विकर्तनपुत्र कर्ण ह्याजला कौरवांच्या सेनेचें आधिपत्य प्राप्त होऊन त्याचें स्वतः दुर्योधनानें भावाप्रमाणें प्रेमळ भाषण करून अभिनंदन केल्यावर, कर्णानें सूर्योदयाच्या समयी सैन्याची रचना वगैरे यथा-

... । प्रकारें करण्याविषयी आज्ञा दिल्यानंतर त्या महाबुद्धिमान् कर्णानें पुढें काय केलें तें मला सांग.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्र, कर्णाचा अभिप्राय समजतांच तुझ्या पुत्रांनीं आनंदकारक रणवाद्यें वाजवून सैन्याची रचना करण्यास आज्ञा दिली. पुष्कळ रात्र शिष्टक आहे तोंच तुझ्या सैन्यांत जिकडे तिकडे 'सैन्य सिद्ध करा !' 'सैन्य सिद्ध करा !' असा एकदम महाध्वनि उत्पन्न झाला ! युद्धाकरितां मोठ-मोठे हत्ती सज्ज होऊं लागले; ज्यांवर वरूथें (रथांचें संरक्षण करणारीं व योद्ध्यांची जागा दृष्टीस पडूं न देणारीं अशीं एका प्रकारचीं

रथकवचें) चढविलीं आहेत, अशा रथांची सिद्धता होऊं लागली, लडाईकरितां कमरबस्ता बांधून वीर तयार होऊं लागले; लोक अश्वांवर सामानसुमान चढवूं लागले; आणि युद्धाला आतुर झालेले वीर परस्परांना त्वरा करण्यासाठीं आक्रोश करूं लागले, तेव्हां त्या हत्तींच्या, अश्वांच्या व वीरांच्या वगैरे ओरडण्यानें इतका मोठा कलकलट झाला कीं, तो अगदीं स्वर्गमंडळास जाऊन भिडला !

नंतर, आदित्याप्रमाणें देदीप्यामान अशा रथांत आरूढ होऊन सेनापति सूतपुत्र कर्ण आपल्या सुवर्णपृष्ठ धनुष्यानिशीं रणभूमीवर दृगोचर झाला. त्याच्या रथावर श्वेत पताका फडकत होत्या, त्या रथाचे अश्व बगळ्यासारखे शुभ्र होते, त्याच्या ध्वजावर नागकसेचें (हत्तींच्या साखळ-दंडाचें) चिन्ह होतें, त्यावर लहान लहान घंटा लाविलेल्या होत्या, त्यावर शंभर बाणभाते ठेविलेले असून गदा व वरूथ हींही होती, आणि ह्याशिवाय त्या रथावर शतघ्नी नांवाच्या व दुसऱ्या शक्ति असून शूल, तोमर आणि पुष्कळ बाण होते. कर्णानें रणभूमीवर अवतीर्ण होतांच, सुवर्णाचें जाळीदार काम ज्यावर केलें होतें असा आपला शंख वाजविला, आणि आपल्या सुवर्णमंडित मोठ्या धनुष्याचा टणत्कार केला. तो महाधनुर्धर महारथ कर्ण रथारूढ झालेला पाहून जणूं काय सूर्य हा उदयपर्वतावर आरूढ झाला असून तो आपल्या किरणांनीं अंधकाराचा नाश करीत आहे, असें भासलें. तेव्हां त्या विजयशाली कर्णाची ती वीरश्री अवलोकन करून कौरवांना भीष्माच्या, द्रोणाचार्यांच्या किंवा अन्य वीरांच्या मृत्यूचें कांहीं-एक वाटलें नाहीं. नंतर कर्णानें शंखध्वनि करून योद्ध्यांना त्वरा करण्याविषयी इशारा केला आणि तदनुसार कौरवांचें अवाढव्य सैन्य रणांगणात धावत बेऊन सिद्ध झालें.

नंतर, कर्णाने त्या सैन्याचा मकराकार व्यूह रचिला, आणि तो स्वतः पांडवांना भिकण्याच्या हेतूने पुढे सरला. राजा, त्या मकराच्या मुखप्रदेशी कर्ण स्वतः उभा राहिला. त्याच्या नेत्रांच्या जागी शूर शकुनि व महारथ उद्धर हे उभे राहिले, मस्तकप्रांती द्रोणपुत्र अश्रुत्यामा उभा राहिला. मानेच्या ठिकाणी सर्व सख्खे भाऊ उभे राहिले. मध्यभागी मोठ्या सैन्यासह दुर्योधन राजा उभा राहिला. पुढील डाव्या पायाच्या जागी कृतवर्मा उभा राहिला, आणि त्याच्या सभोवती महापराक्रमी नारायण व गोपाळ हे वीर उभे राहिले. पुढील उजव्या पायाच्या जागी अमोघवीर्य गौतम उभा राहिला व त्याच्या सभोवती महाधनुर्धर त्रिगर्त व दासिणात्य हे उभे राहिले. पाठीमागच्या डाव्या पायाच्या ठिकाणी मद्रदेशांतून आणिलेल्या मोठ्या सेनेसहवर्तमान शल्य उभा राहिला. पाठीमागच्या उजव्या पायाच्या ठिकाणी सत्यसंघ सुषेण हा सहस्र रथ व तीनशे हत्ती ह्यांनिशी उभा राहिला; आणि पुच्छाच्या जागी महावीर्यवान् भ्राते चित्त व चित्तसेन राजे हे मोठ्या सैन्यासह उभे राहिले.

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे नरवरश्रेष्ठ कर्णाने समरांगणांत सैन्याची सिद्धता केल्यानंतर अर्जुनाकडे पाहून धर्मराज म्हणाला, “ अर्जुना, हे कौरवांचे सैन्य समरभूमीवर कर्णाने कसे उभे केले आहे, तें पहा. ह्यामध्ये महारथ व इतर वीर सैन्यसंरक्षणाकरितां सिद्ध आहेत. अर्जुना. कौरवांकडील श्रेष्ठ योद्धे पतन पावल्यामुळे, हे सैन्य जरी मोठे अवाढव्य दिसत आहे, तरी तें मला तृणपुत्र भासतें. कारण ह्यांत शिल्प असलेले वीर अगदी कमकुवत व हीनवीर्य आहेत ! अर्जुना, ह्या सर्व सैन्यांत एक महाधनुर्धर कर्ण मात्र खरा पराक्रमी आहे. त्याच्या लढण्यास देव, असुर, गंधर्व, किन्नर

व महोरग ह्यांसहवर्तमान चराचर तिन्ही लोक जरी सिद्ध झाले, तरी त्यांनाही तो महारथ जिकितां येणार नाही. हे महाबाहो अर्जुना, आज तूं त्याचे हनन कर, ह्मणजे तुला जय मिळालाच असें मान. अर्जुना, आज तूं जर कर्णाचा वध करशील, तर द्वादश वर्षेपर्वत तुझ्या हृदयांत खुपत असलेले शल्यच उपटून टाकल्याप्रमाणे होईल ! ह्यास्तव हे अर्जुना, हा उद्देश मनांत आणून तूं आपल्या इच्छेनुरूप सैन्याची रचना कर. ”

राजा, नंतर अर्जुनाने भ्रातृवचनाचा विचार करून स्वसैन्याचा अर्धचंद्राकार व्यूह सिद्ध केला. त्या व्यूहाच्या डाव्या बाजूम भूमसेन उभा राहिला. उजव्या बाजूस महाधनुर्धर धृष्टद्युम्न उभा राहिला. मध्यभागी धर्मराज व अर्जुन हे उभे राहिले. नकुल व सहदेव हे धर्मराजाच्या पृष्ठभागी उभे राहिले. युधामन्यु व उत्तमौजा हे दोन पांचाल्य वीर अर्जुनाच्या रथाची चक्रे राखीत राहिले. अर्जुन हा त्यांस राखीत होता, त्यामुळे त्यांनी अर्जुनास क्षणभर सुद्धां सोडिले नाही. आणि कवचे धारण करून युद्धार्थ सिद्ध असलेले बाकीचे राजे आपआपल्या सामर्थ्याप्रमाणे, पराक्रमाप्रमाणे व साहसाप्रमाणे योग्य अशा स्थानी उभे राहिले. ह्याप्रमाणे पांडवांनी मोठा व्यूह तयार केला.

धृतराष्ट्रा, अशा प्रकारे दोन्ही दळे सिद्ध झाल्यावर तुझ्याकडील महान् धनुर्धरांच्या युद्धाविषयी विचार मनांत आणिला. राजा, रणभूमीवर सूतपुत्र कर्णाने तुझ्या सेनेचा व्यूह सिद्ध केलेला पाहून बंधूसहवर्तमान दुर्योधनाच्या मनांत लागलेच आले की, आतां पांडवांचा वध झालाच ! त्याप्रमाणेच तिकडे पांडवांच्या सैन्याचा व्यूह अवलोकन करून युधिष्ठिरालाही वाटले की, आतां कर्णासहित सर्व कौरव मृत्युमुक्ती पडलेच ! ह्याप्रमाणे दोन्ही पक्षांना आप-

संजया, कर्णाला जेव्हां पांडवांनी मारिले, तेव्हां तो रणांगणांत एकटाच असून त्याचे साथीदार पळून वगैरे गेले नव्हतेना ? बाबा, आपल्या-कडाले वीरांना शत्रूकडून कशा रीतीने वध-प्यांत आले, हे तूं पूर्वी सांगितले आहेसच. पहा, ज्याच्याशी सामना करण्यास कोणीही समर्थ नव्हता, त्या सर्व शत्रूघात्यांमध्ये श्रेष्ठ अशा भीष्माला शिवंडीने उत्तम बाण मारून रणांत पाडिले; त्याचप्रमाणे महापशुघ्न द्रोणाचार्य सर्व आयुधांचा त्याग करून युद्धभूमीवर मरण्यास सिद्ध होऊन बसल्यानंतर दुपदपुत्र धृष्टद्युम्न ह्याने त्यांजवर बहुत बाण टाकिले, आणि अखेरीस खड्ग उचलून त्याने त्यांस ठार केले ! सारांश हे संजया, भीष्म व द्रोण ह्यांचा पांडवांनी जो वध केला, तो अन्यायाने व त्यांत-ही विशेषकरून कपटाने केला आहे ! भीष्म व द्रोण ह्यांसंबंधाने मी असेही ऐकिले आहे कीं, प्रत्यक्ष वज्रधारी इंद्राकडूनही न्यायाने युद्ध करणाऱ्या त्या दोगां वीरांचा वध झाला नसता ! संजया, मी सांगतो हें अगदी सत्य आहे ! आतां कर्णाविषयी विचारशील तर त्याच्या वधाचे मला मोठेंच नवल वाटत आहे. पहा, कर्ण ह्याने अगदी देवेंद्रतुल्य वीर; आणि असे असतां मृत्यूने त्याला स्पर्श करण्याचे कसे घाडस केले बरे ! पहा, त्याच्या अंगी नानाप्रकारची दिव्य आणि बहुत अस्त्रे सोडण्याचे सामर्थ्य ! त्याला प्रत्यक्ष पुरंदराने विद्युल्लतेप्रमाणे देदीप्यमान, सुवर्णमंडित व शत्रुसंहारक दिव्य शक्ति कुंडलांबद्दल दिली; व त्याच्या भात्यांमध्ये सुवर्णालंकृत सर्पमुख दिव्यबाण चंदनाच्या चूर्णांत शत्रूचा प्राण घेण्यास सिद्ध होता; आणि असे असतां त्या कर्णाचा अशा प्रकारे अंत व्हावा काय ?

संजया, कर्णाच्या ठिकाणी केवढा रे वीर-श्रीचा अभिमान ! भीष्मद्रोणादिक महारथांना देखील तो जुमानित नसे ! जमदग्निपुत्र परशु-

रामांपासून त्याने महाधोर ब्राह्म अख संयातून केले होते ! द्रोणप्रभृति वीर अभिमन्यूच्या शर-प्रहारांनी हस्त होऊन माघार घेऊ लागले तेव्हा त्या प्रतापशाली कर्णाने अभिमन्यूच्या त्या धनुष्यावर तीक्ष्ण बाण टाकून ते मग केले. ज्याला दहा हजार हस्तींचे सामर्थ्य व वज्राच्या वेगाप्रमाणे वेग, त्या अभिव्य भीमतेलाख देखील त्या कर्णाने एकाएकी विरय करून त्यांचा उपहास केला ! त्याने बाकदार घेरी असलेल्या बाणांचा वर्षाव करून सहदेवाला भिकून त्यास रयहीन केले, पण अधर्माचरणांचा व भिडुरफणाचा दोष प्राप्त होईल, ह्या भीतीने त्यास वधिले नाही ! त्याने षटोत्कर्षाच्या संहारावधि मार्काचा विनाश करून त्या राक्षसेंद्राला इंद्रशस्त्रीच्या योगाने ठार मारिले ! आणि हा त्याचा अपूर्व पराक्रम अवलोकन करून धनेजयासही म्य वाटले व त्याने कांहीं दिवसपर्यंत त्याच्याशी द्वैरस्यमुद्ध करणांचा विचार सोडून दिला ! संजया, कर्णाची बुद्ध करण्याचे टाळण्याकरितां अर्जुनाला ही युक्ति लढवावी लागली ! " हे संशयक वीर पुनःपुनः मला मुख्य रणभूमीवरून एकाकडे ओढून नेतात ह्यास्तव प्रथम मी संशयकांचा नाश करून मग ह्या कर्णाचा वध करावा हें चांगले ! " असा बहाणा अर्जुनाने केला व त्याने कर्णाची युद्ध करण्याचे पुढे लोटिले ! सारांश, हे संजया, अशी अद्वितीय शक्ति ज्या कर्णाच्या ठायी होती त्या शत्रुसंहारक महान् योद्ध्याला अर्जुनाने रणांत मारिले हें बडले तरी कसे ! अरे, जर कर्णाचा रय भद्र झाला नसता, धनुष्य पुढे नसते, व अस्त्रांचा नाश झाला नसता, तर त्या वीरांचा कसा बरे वध झाला असता ? संजया, कर्णाचे सामर्थ्य किती तरी अगाध ! तो एकदां समरभूमीवर महान् धनुष्य घेऊन मंथंकर शारांची वृष्टि करून दिव्य अस्त्रे सोडू लागला, म्हणजे

शार्दूलप्रमाणे महावेगवान् अशा त्या वीरशार्दू- सुटलेल्या बाणांच्या भयंकर स्पर्शाची मुळींष
लास जिंकण्यास कोणीही समर्थ नसे ! निःस- पर्वा वाटत नसे, ज्याने " हे कृष्णे, तू आतां
शय, त्याचें धनुष्य हुटलें, रथ पृथ्वीनें गिळिला, अपति (पतिरहित) आहेस ! " असे शब्द
अथवा त्यास अख्खें आठवतनाशीं झालीं, म्हणूनच काढून पांडवांकडे टवकारून पाहिलें, स्वतःच्या
तू सांगत आहेस त्याप्रमाणें कर्णाचा वध झाला बाहुबलावर भरंवसा असल्यामुळें ज्याला पुत्रां-
असेल ! ह्यावांचून कर्णाच्या नाशाला अन्य सहित किंवा कृष्णासहित पांडवांचें क्षणभर भय
कारण संभवत नाही.

संजया, जोंपर्यंत मीं फाल्गुनास (अर्जुनास) सुद्धां होईल असें वाटत नाही; मग सैरावैरा
ठार मारिलें नाही, तोंपर्यंत मीं पादप्रक्षालन चाल करून येणाऱ्या पांडवांकडून तो होणें हें
करणार नाही, अशी ज्या महात्म्या कर्णाची तर दुरापास्तच !

षोर प्रतिज्ञा; ज्याच्याबरोबर युद्ध करण्याची पाळी येईल ह्या भीतीमुळें पुरुषश्रेष्ठ युधिष्ठि-
राला तेरा संवत्सरपर्यंत निद्रा प्राप्त झाली नाही; ज्या वीर्यशाली पुरुषाच्या सामर्थ्यावर भिस्त
ठेवून माझ्या पुत्रानें बलत्कारानें पांडवांच्या स्त्रीला पांडवांच्या देखत सभेंत ओढून आणिलें,
व त्या पांचालीला कौरवांसमक्ष ' दासभार्या ' असें म्हटलें; तसेंच ज्यानें, " हे कृष्णे, आतां
तुझे पति नष्टवत आहेत, त्या सर्वांची अव-
स्था वाड्या तिळांप्रमाणें अगदीं तुळ झाली आहे; ह्याकरितां हे सुंदरी, तू आतां दुसरा पति
कर." असे कठोर शब्द सभेंत क्रोधानें काढिले;
त्याचप्रमाणें, " युद्धाविषयीं आत्मश्लाघा कर-
णाऱ्या मीप्मानें किंवा युद्धांत अजिंक्य अस-
णाऱ्या द्रोणानें पक्षपातबुद्धीनें जरी पांडवांना मारिलें नाही, तरी दुर्योधना, मी एकटा त्या
सर्वजणांना मारिन, हें स्वचित समजून तू
आपल्या मनाची तळमळ अगदीं नाहीशी कर.
दुर्योधना, अर्जुनाचें गांडीव धनुष्य किंवा त्याचे
ते दोन महान् अस्य भाते, चंदनचूर्णानें माख-
लेला माझा बाण सों सों करीत उडी टाकीत
चालला ह्मणने त्यापुढें काय करणार ? " असे
शब्द उल्हासानें दुर्योधनापार्शी उच्चारिले तो
महाबलिष्ठ वीर कर्ण आज अर्जुनानें मारिला
हें क्षरें काय ? अरे, ज्या कर्णाला गांडीवापासून

संजया, कर्णाचा पराक्रम काय वर्णावा ?
त्या अधिरथपुत्रानें प्रत्यंचेला स्पर्श केला पुरे,
किंवा तलत्राणें चढविलीं कीं पुरेत, कोणत्याही
पुरुषाची त्याच्यापुढें उभें रहाण्याची छाती होत
नसे ! कदाचित् पृथ्वीवरील सोम, सूर्य व बन्धि
ह्यांचीं तेजें एक वेळ नष्ट होतील, पण त्या
युद्धांतून पलायन न करणाऱ्या पुरुषेंद्राचा वध
होणें दुष्कर ! अरे, त्याच्या व दुःशासनाच्या
साहाय्यानेंच महामूर्ख दुष्ट दुर्योधनानें वासुदेवा-
चा अन्हेर केला ! आतां मात्र दुर्योधनाची दशा
मोठी कठीण आहे ! कर्ण व दुःशासन हे धारा-
तीर्थी पतन पावलेले पाहून आतां त्यास मोठा खेद
होत असेल ! विकर्तनपुत्राचा द्वैरथयुद्धांत
अर्जुनानें वध केला असें ऐकून व पांडवांची
सरशी होत चालली असें अवलोकन करून
दुर्योधनानें काय उद्गार काढिले बरें ? वृषसेन
व दुर्मर्षण हे युद्धांत पडले, कौरवसैन्य महारथां-
कडून मृत्यु पावू लागलें व त्याची दाणादाण
उडाली, साहाय्यार्थ आलेले राजेलोक पराङ्-
मुख होऊन पळून जाऊ लागले, आणि रथी
वीर धूम पळत सुटले, असें जेव्हां दुर्योधनानें
पाहिलें असेल, तेव्हां मात्र तो दुराग्रही, अभि-
मानी, मूर्ख व अविचारी दुर्योधन स्वचित पश्चा-
त्ताप पावला असेल !

संजया, अशा ह्या दुर्घट समक्षीं दुर्योधना-

च्या मनाची काय बरे स्थिति झाली असेल ? अरे, आपल्या सैन्याची नाउमेद झालेली पाहून त्याने काय बरे म्हटलें असेल ! ह्या सर्व घोर अनर्यास कारण त्याचा तोच आहे ! त्याने स्वतःच हा महान् कलहाशि चेतविला ! त्याच्या आससुहृदांनी त्यास पुष्कळ मोडा घातला, पण तो सर्व व्यर्थ झाला ! आणि आतां तर समरांगणांत प्रधान वीरांचा नाश घडून आला आहे ! तेव्हां आतां दुर्योधनानें काय उद्गार काढिले असतील बरे ? अरे, भमिसेन दुःशासनास रणभूमीवर ठार मारून त्याचें रक्त प्राशन करित असतां दुर्योधनाच्या मुखावाटे कोणते शब्द बाहेर पडले असतील बरे ? संजया, गांधारराज शकुनि ह्यासहवर्तमान दुर्योधन सभेमध्ये असे म्हणाला होता कीं, ' कर्ण हा अर्जुनाला मारील ! ' पण आतां तर त्याच्या उलट होऊन अर्जुनानेंच कर्णाला मारिलें आहे; तेव्हां आतां दुर्योधन काय म्हणत असेल बरे ? संजया, पूर्वी शूत करून पांडवांना वंचिल्यावर ज्याला मोठा आनंद वाटला, तो सौवल शकुनि कर्णाच्या मृत्यूनंतर काय बोलला बरे ? सात्वतांतला महारथ महाधनुर्धर हार्दिक्यपुत्र कृतवर्मा हा कर्णवध श्रवण करून काय बोलला बरे ? धनुर्वेद शिकण्याची इच्छा करणारे ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य हे ज्या बुद्धिमान् द्रोणपुत्राची सेवा करतात आणि जो तरुण, रूपसंपन्न, सुंदर व महाकीर्तिमान् आहे, तो अश्र्वत्थामा कर्णाचा वध झाल्यावर काय म्हणाला बरे ? त्याप्रमाणेंच धनुर्वेदाचा आचार्य असा तो महारथ शारद्वत रूप कर्ण पडल्यावर काय बोलला बरे ? तसाच तो महाधनुर्धर महाबलवान् मद्राधिपति, —युद्धांत शोभणारा महारथ सारथ्यकर्म करीत असलेला सौवीर शल्य कर्णाचा वध झाल्याचें पाहून काय बोलला बरे ? आणि त्याप्रमाणेंच हे संजया, ते सर्व दुर्जय ह्याजे—जे कोण युद्धार्थ आले होते—

ते वैकर्तन हा हत झालेला पाहून काय काय झणाले बरे ? बरे असो; संजया, तो पुरुषश्रेष्ठ रथव्याघ्र द्रोण वीर मुत्यु पावल्यानंतर सैन्याच्या कोणत्या भागांवर कोण कोण मुख्य होते ! महारथ मद्रराज शल्याची कर्णाच्या सारथ्यकर्मावर कशी योजना झाली ? सूतपुत्र कर्ण युद्ध करीत असतां त्याच्या रथाचें उजवेकडील चक्र कोणी राखिलें, तसेंच डावे चक्राचें कोणी रक्षण केलें, त्याच्या पृष्ठभागी कोणकोणते वीर क्षत्रुसैन्याचें निवारण करीत होते, कर्णाची विपन्न अवस्था अवलोकन करून कोणकोण क्षुद्र पुरुष पळून गेले व कोणकोण शूर पुरुष त्याच्या मदतीकरितां शेवटपर्यंत टेंक देऊन लढत राहिले, तुम्हीं (कौरवाकडील) सर्व वीर एकत्र व एकजुटीनें लढत असतां कर्ण हा अर्जुनाच्या हस्ते मृत्युमुखी कसा पडला, शूर महारथ पांडव मेघांप्रमाणें बाणांचा वर्षाव करीत कर्णावर कसे चालून गेले, आणि तो सर्पमुख दिव्य बाण कर्णाजवळ असतांना तो फुकट कसा गेला, हें मला कथन कर. संजया, आतां माझे जें सैन्य अवशिष्ट आहे, त्यांत मला फारसा जोम दिसत नाही. माझ्या सैन्यांतले जें कांहीं सत्त्व तें सर्व नष्ट झालें, ह्यास्तव उर्वरित राहिलेले सैन्य मला मृतवतच मासत आहे ! पहा, ते महाधनुर्धर वीर भीष्म व द्रोण माझ्याकरितां जीव देण्यास तयार झालेले जर रणभूमीवर पतन पावले, तर माझ्या ह्या जीविताचा उपयोग तो कोणता ? अरे, ज्या कर्णाच्या अंगी सहस्र कुंजरांचें बळ होते, त्या कर्णाला पांडवांनीं बघिलें हीं गोष्ट माझ्या हृदयाला अगदीं लागून राहिली आहे ! मीं कितीही विवेक केला तरी हें दुःख माझ्यानें सहन करवत नाही ! ना संजया, द्रोणाचार्य पडल्यानंतर शूर कौरवांचा व पांडवांचा जो रणसंप्राम झाला, तो मला सांग. संजया, कर्णां

प्रांतवासीः कस्य प्रकरे युद्धं केले, आभि त्या-
प्रमाणेच तो शत्रुसंहारक महान् वीर रणांत कसा
पतनः पबला, ते मला सांग !

अध्याय दहावा.

—:०:—

कृष्णाचा अभिषेक.

संजय संगतोः—हे भारता धृतराष्ट्रा, त्या
दिक्पती महाभतुर्नर द्रोणाचार्य पतन पावले, व
द्रोणपुत्र कर्णरथ अधत्यामा ह्याचा संकरूप व्यर्थ
संज्ञा, तेव्हां कर्णस्यैवा सेतसागर एकसारखा
अिकडे वट सांगडेळ तिकडे धूम वाहूं लफळ
आला, अर्जुन ह्य आपल्याः सैन्याची सुव्यव-
स्था रचना करून भ्रातृकर्णसमवेत युद्धभूमी-
वर उद्वार उभा साहिल. हे भरतर्षभा, त्या
सैन्यां अर्जुन ह्य युद्धाचा तोड देऊन उभा
आहे असे आपण व कौरवसेना पठत आहे
असे अक्योक्त करून तुम्हा पुत्र दुर्योधन ह्याने
मोठ्या शस्त्रांनी त्या सेनेची स्थापना करून केली,
आणि शिवी अयुधः तेथे येजना करून तो
सकः मोठ्या पराक्रमाने त्याच काळपर्यंत पांड-
वांची लढाई; परंतु पांडवांना जब मिळून
त्यांची सराई होत गेल्यामुळे त्यांनी मोठ्या
उमेदीने फुंकव घेऊपावेतो, अधिक वीर्यी धरून
युद्ध चालविले, इतक्यांत संध्यकाळ झाला,
तेव्हां दुर्योधनाने आपल्या सैन्याचा पस्त माघारे
बोलाविले आणि जंतू कौरवाकडीक प्रधान बोद्धे
दुर्योधनाच्या अण्णांत एकच जमून त्यांनी पुढील
कर्णव्याजिनीः आपसांनी मारलत उरविली. दुर्यो-
धनाच्या शिष्टांत ते सर्व वीर उत्कृष्ट आस्-
राणी शोभयमान दिसल्याच्या अशा श्रेष्ठ
पर्याप्तार कसले असतां जणू काय देवमंडळ
सुखसागर अभिषिक्त झाले आहे असा भास
झाला ! जंतू तेथे जमलेल्या त्या महाभतुर्नर
योद्ध्यांना अनुकूल दुर्योधन राजाने प्रसंगा-

नुरूप व सर्वांस प्रिय बाटेल असे अत्यंत मधुर
भाषण केले. तो झणाला, “ अत्यंत बुद्धिमान्
वीरहो, तुम्ही सर्वजण आप आपला विचार त्वरित
कळवा; अगदी उशीर करू नका. सध्यांची स्थिति
तुम्ही जाणतच आहां; तर अशा ह्या समर्थी
राजेहो, आपण काय करावे व त्यांतही विशेष-
पतः कोणती गोष्ट करावी हे सांगा. ”

संजय सांगतोः—राजा धृतराष्ट्रा, युद्ध
करण्याची इच्छा करित असलेल्या त्या पुरुष-
श्रेष्ठांनी दुर्योधनाचे भाषण श्रवण करून, आपा-
पल्या सिंहासनावरून दंड थोपटणे वगैरे वीरश्री-
द्योतक नानाविध कृत्यांनी आपला अभिप्राय
व्यक्त केला. नंतर युद्धांत प्राण देण्यास सिद्ध
झालेल्या त्या वीरांचा हेतु मनांत आणून आणि
दुर्योधन राजाची मुखश्री प्रातःकालीन सूर्याप्रमाणे
तेजःपुंज अवलोकन करून समय जाणणारा
चतुर आचार्यपुत्र अधत्यामा म्हणाला, “ नृपहो,
स्वामिभक्त, देशकालादिकांची अनुकूलता, बल
व राजनीति ही अर्थसिद्धीची मुख्य साधने होत,
असे तज्ज्ञ लोकांचे मत आहे. आतां ही साधने
अनुकूल असली तरी दैवाचे अण्णी साहाय्य जर
नसेल तर कार्यसिद्धि होणार नाही. स्वामिभक्ति
वगैरे सर्व साधने आपणांस अनुकूल असूनही
आपल्या पक्षाचे देवतुह्य पराक्रमी, स्वामिभक्त,
रणधुरंधर व प्रबळ असे महान् महान् महारथ
युद्धांत पडले. एवढ्यावरून, दैवाची अनुकूलता
आपणांस नाही असे मनांत आणून तुम्ही कदा-
चित् निराश होऊन जयशा सोडून घाल, पण
असे करू नका. साधनांची अनुकूलता असून
दैवाची प्रतिकूलता असल्यास जसा कार्याचा
नाश होतो, तशीच दैवाची अनुकूलता असून
साधनांची प्रतिकूलता असल्यास कार्याचा नाश
होत नाही. दैवाची अनुकूलता एकदा प्राप्त झाली
झणजे सर्व गोष्टी स्वाभावतःच अनुकूल होतात
आणि मग इष्ट कार्य सिद्धीस जाते. तेव्हां

दैव अनुकूल करून देणारी गोष्ट कोणती, ह्याचा विचार केला पाहिजे. राजकारणी पुरुष राजनीतीतील तत्वांचा जर नीट विचार करतील व तदनु रूप वागतील, तर सर्वतोपरी दैव अनुकूल करून घेतां येईल. प्रस्तुत प्रसंगी आपण सर्वांनी मुख्य उद्देशावर लक्ष ठेवून सर्व गुणांनी युक्त असा सेनापति नेमिला पाहिजे. सर्व वीरांमध्ये कर्ण हा श्रेष्ठ असा असून त्याच्या अंगां सर्व गुण वास्तव्य करीत आहेत; ह्यास्तव हे दुर्योधना, आपण कर्णावरच सैन्यापत्याचा अभिषेक करूं या. कर्णाला सेनापति केल्यावर आपण शत्रूंचे निर्दलन करण्यास समर्थ होऊं. कर्ण हा अतिशय बलिष्ठ व शूर आहे. तो सर्व शस्त्राभ्यांत प्रवीण असून युद्धांत अजिंक्य आहे. तो यमधर्माप्रमाणे असह्य असून युद्धांत शत्रूंना जिंकण्यास समर्थ आहे. ह्याकरितां आपण त्यासच सैन्यापत्य द्यावें.”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्र, आचार्य-पुत्रांचे हे भाषण श्रवण करून तुझ्या पुत्रांने (दुर्योधनांने) कर्णाविषयी मोठी प्रबळ आशा धारण केली. ‘भीष्म व द्रोण पडले तरी कर्ण हा पांडवांना जिंकील’ अशी दुर्योधनास आधीच आशा वाटत होती, म्हणून त्या आशेला अश्वत्थाम्याकडून पुष्टीकरण मिळतांच त्याचें तें मंगलप्रद, हितावह, सत्य, प्रियकर आणि प्रेम व सत्कार ह्यांनी भरलेलें भाषण श्रवण करून दुर्योधनाच्या मना वी अस्वस्थता दूर झाली; आणि स्वतःच्या पराक्रमाविषयी पुनः विश्वास उत्पन्न होऊन त्यास मोठें वैर्य आलें व तो कर्णाला म्हणाला, “कर्ण, तुझ्या अंगाचा पराक्रम व तुझे माझ्याविषयी अतिशय प्रेम हीं मला विदित आहेत; तथापि मी तुला हिताचें वचन सांगितें, तें ऐकू आणि नंतर जें तुला रुचेल तें कर. हे महाबाहो, तूं अत्यंत ज्ञाता असून तुझ्यावर माझी नेहमीं सर्व भिस्त आहे. भीष्म व

द्रोण हे माझे सेनापति पतन पावले. ते जरी अतिरथ्य होते, तरी त्या उभयतांच्याहीपेक्षां तुझ्या ठिकाणीं अधिक सामर्थ्य आहे. ह्यासाठीं तूं माझ्या सैन्यापत्याचा अधिकार स्वीकार. कर्णा, मी तुला त्या दोघां वीरांपेक्षां अधिक महत्त्व देतो. पहा, ते दोघेही महाधनुर्धर वृद्ध व अर्जुनाविषयी पक्षपाती होते. राधेया, त्यांस मी जो एवढा मोठा मान दिला, तो केवळ तुझ्या सांगण्यावरून. मा कर्णा, भीष्माच्या हातून ह्या महारणांत दहा दिवसांत पांडुपुत्रांचा नाश होऊं नये हें स्वचित आश्चर्य होय ! ह्यास कारण ‘आपण पांडवांचे पितामह आहों’ हा विचार भीष्मानें मनांत वागवून त्यांचा वध करण्याचें टाळलें, हेंच होय. इकडे पांडव मात्र भीष्माविषयी पितामहत्त्व विसरले. तूं शस्त्राभ्यांचा त्याग केला असतां अर्जुनांने शिखंडीला पुढें करून मोठ्या निकराचें युद्ध सुरू करून भीष्मांस पाडिले ! ह्याप्रमाणें तो महाधनुर्धर भीष्म शरतर्फी पडल्यावर तुझ्या सांगण्यावरून मी पुरुषश्रेष्ठ द्रोणाचार्य ह्यांस सैन्यापत्याधिकार दिला; परंतु त्यांनींही शिष्यत्वबुद्धि मनांत आणूनच पांडवांस राखिले असलें मला वाटतें. पण त्या वृद्ध द्रोणाचार्यांनाही घृष्टयुत्तानें लवकरच मारून टाकिले ! कर्णा, तुझ्या ठिकाणीं असा कांहीं असप्रधारण पराक्रम आहे की, घारातीर्थी पतन पावलेल्या त्या प्रथम वीरांनीं सुद्धां तुझ्या पराक्रमाची प्रशंसा केली आहे. विचार करून पाहिले असतां तुझ्यासारखा सत्तरभूमीवर प्रताप गाजविणारा दुसरा वीर मला दिसून येत नाही. स्वचित आह्यांला जय मिळवून देण्यास तूंच तेवढा समर्थ आहेस. पूर्वी, मध्यंतरी व तदनंतर तूं तसेंच आमचें हित केले आहेस. ह्याकरितां त्या त्वां ह्या युद्धांत आमच्या सैन्याचा धुरीण व्हावें, हें योग्य होय. म्हणून सैन्यापत्याधिकाराचा अभिषेक स्वतःच आपणावर

करून वे. देवांचा सेनानी जसा महाबलिष्ठ स्कंद हा झाला, तसा तूं ह्या माझ्या सैन्याचा महाबलिष्ठ सेनानी हो. महेंद्रप्रमाणें तूं शत्रू-रूप सर्व दानवगणांचा संहार कर. कर्णा, तूं रणशिरोभार्गी उभा आहेस, असें पाहून महारथ पांडवांची व पंचालांची लेश्या उडून दानव जसे विष्णूला पाहतांच पळून जातात तसे ते तुला पाहतांच पळून जातात ! ह्यास्तव, हे पुरुष-व्याघ्रा, तूं महासेनेनें नियमन कर. एकदां तूं सैनापत्याधिकारी आरूढ झालास म्हणजे ताबड-तोब मंदबुद्धि पांडव अमात्यांसह, पंचालांसह व सृजयांसह पळून जातात ! ज्याप्रमाणें सूर्य हा उदयपर्वतावर आरूढ झाला म्हणजे आपल्या प्रतापानें प्रखर अंधकार नष्ट करितो, त्याप्रमाणें तूं सेनानीपदावर आरूढ होऊन आपल्या प्रतापानें शत्रूंना नष्ट करून टाक ! ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, भीष्म व द्रोण पडले तरी कर्ण हा पांडवांना जिंकील अशी तुझ्या पुत्राला जी मोठी आशा होती, ती आशा अंतर्त्यामी वागवून दुर्योधनानें कर्णाला असें छटलें कीं, “ हे सूतपुता, तुझ्या समोर उभा राहून युद्ध करण्याला पार्थ हा कधीही उत्सुक होणार नाही ! ”

कर्ण म्हणाला:—हे दुर्योधना, मी तुला पूर्वीच सांगितलें आहे कीं, ‘ मी पुत्रांसहित व कृष्णासहित सर्व पांडवांना जिंकून. ’ मी तुझ्या सेनापति होईन ह्याबद्दल संशयच नाही. ह्याकरितां, हे महाराज दुर्योधना, स्वस्थ अस; व पांडव जिंकिलेच असें मान. ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, कर्णाचें हें भाषण ऐकून, देवेंद्र जसा देवांसहवर्तमान उठतो तसा दुर्योधन सर्व राजांसह कर्णावर सैनापत्याचा अभिषेक करण्याकरितां उठला; आणि देवांनीं जसा स्कंदाला सैनापत्याभिषेक केला, तसा त्या दुर्योधनप्रभृति विजयेच्छु सर्व राजांनीं

कर्णावर यथाविधि सैनापत्याभिषेक केला. त्यांनीं प्रथम रेशमी वस्त्रांनीं शृंगारलेल्या उंबराच्या आसनावर कर्णाला बसविलें; आणि तो तेथें सुखानें अधिष्ठित असतां उदकानें भरलेल्या सुवर्णाच्या व मृत्तिकेच्या अभिमंत्रित कलशांनीं, त्याप्रमाणेंच, ज्यांवर रत्नांचा व मौक्तिकांचा जडाव केलेला आहे अशा हस्तिदंताच्या पात्रांत आणि गव्यांच्या व गेंड्यांच्या शिंगांत पाणी भरून त्यांनीं, त्याप्रमाणेंच दुसऱ्या मंगलदायक सुगंधि पदार्थांनीं व लतापुष्पादिक वनस्पतींनीं, आणि त्या विधीकरितां शास्त्रानुसार मिळवून आणिलेल्या इतर नानाविध वस्तूंनीं त्या राजांनीं कर्णावर अभिषेक केला. नंतर श्रेष्ठ पदावर आरूढ झालेल्या त्या महात्म्या कर्णाची ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व मन्मान्य शूद्र ह्यांनीं स्तुति करून त्याचा गौरव केला.

मग त्या शत्रूसंहारक कर्णानें सत्पात्र ब्राह्मणांस दक्षिणा, गाई व संपत्ति दिली व नंतर त्यांनीं त्यास मंगलकारक आशीर्वाद दिले. त्या समयीं ब्राह्मण व बंदिजन ह्यांनीं कर्णाला म्हटलें कीं, “ हे पुरुषर्षभा, तूं ह्या घोर संग्रामांत गोविंदासहित व अनुयायांसहित पांडवांस जिंक. राधेया, पंचालांसहवर्तमान सर्व पार्थाना ठार मार. ज्याप्रमाणें सूर्याचा उदय होतांच तो आपल्या उग्र किरणांनीं अंधकाराचा नाश करितो त्याप्रमाणें तूं सैनापत्याधिकारावर येतांच शत्रूंचा नाश करून आपणांस जय संपादन कर. सूर्याचे प्रखर किरण अवलोकन करण्यास जशीं घुबडें समर्थ होत नाहीत, तसे कृष्णासहवर्तमान पांडव हे तूं सोडलेले बाण अवलोकन करण्यास समर्थ होणार नाहीत. कर्णा, ज्याप्रमाणें वज्रधारी इंद्रासमोर उभे राहण्यास दानव भितात, त्याप्रमाणेंच तूं हातांत शस्त्र धेऊन उभा राहिलास म्हणजे तुझ्यापुढें उभे राहण्यास पांचाल व पांडव हे भितील ! ”

राजा धृतराष्ट्र, कर्णावर सैनापत्याभिषेक होतांच त्याची कांति अपरिमित वाढली, व तो तेजानें जणू काय दुसऱ्या सूर्याप्रमाणें झळाळूं लागला ! राजा, दुर्योधनानें कर्णावर सैनापत्याभिषेक केल्यावर त्याला आपण कृतार्थ झालों असें वाटलें. इकडे, मृत्युनें प्रेरित केलेला तो कर्ण सेनापति होतांच सैन्याची व्यवस्था पाहूं लागला व त्यानें सूर्योदयाच्या समयी सैन्याची रचना जेथच्या तेथें करण्याची आज्ञा दिली. राजा धृतराष्ट्र, नंतर, ज्याप्रमाणें तारकामुराशी युद्ध करितांना देवांनीं परिवेष्टित असलेला स्कंद शोभत होता, त्याप्रमाणें तुझ्या पुत्रांनीं परिवेष्टित असलेला तो कर्ण त्या महासमरभूमीवर शोभूं लागला.

अध्याय अकरावा.

—:०:—

व्यूहरचना.

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, विकर्तनपुत्र कर्ण ह्याजला कौरवांच्या सेनेचें आधिपत्य प्राप्त होऊन त्याचें स्वतः दुर्योधनानें भावाप्रमाणें प्रेमळ भाषण करून अभिनंदन केल्यावर, कर्णांन सूर्योदयाच्या समयी सैन्याची रचना वगैरे यथायोग्य प्रकारें करण्याविषयी आज्ञा दिल्यानंतर त्या महाबुद्धिमान् कर्णांन पुढें काय केलें तें मला सांग.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, कर्णाचा अभिप्राय समजतांच तुझ्या पुत्रांनीं आनंदकारक रणवाद्यें वाजवून सैन्याची रचना करण्यास आज्ञा दिली. पुष्कळ रात्र शिल्लक आहे तोंच तुझ्या सैन्यांत जिकडे तिकडे 'सैन्य सिद्ध करा !' 'सैन्य सिद्ध करा !' असा एकदम महाध्वनि उत्पन्न झाला ! युद्धाकरितां मोठ-मोठे हत्ती सज्ज होऊं लागले; ज्यांवर वरूथें (रथांचें संरक्षण करणारी व योद्ध्यांची जागा दृष्टीस पडूं न देणारी अशीं एका प्रकारचीं

रथकवचें) चढविलीं आहेत, अशा रथांची सिद्धता होऊं लागली, लढाईकरितां कमरबस्ता बांधून वीर तयार होऊं लागले; लोक अश्र्वांवर सामानसुमान चढवूं लागले; आणि युद्धाला आतुर झालेले वीर परस्परांना त्वरा करण्यासाठीं आक्रोश करूं लागले, तेव्हां त्या हत्तींच्या, अश्र्वांच्या व वीरांच्या वगैरे ओरडण्यानें इतका मोठा कलकलाट झाला कीं, तो अगदीं स्वर्गमंडळास जाऊन भिडला.

नंतर, आदित्याप्रमाणें देदीप्यामान अशा रथांत आरूढ होऊन सेनापति सूतपुत्र कर्ण आपल्या सुवर्णचूट धनुष्यानिशीं रणभूमीवर दृगोचर झाला. त्याच्या रथावर श्वेत पताका फडकत होत्या, त्या रथाचे अश्व बगळ्यासारखे शुभ्र होते, त्याच्या ध्वजावर नागकक्षेचें (हत्तीच्या साखळ-दंडाचें) चिन्ह होतें, त्यावर लहान लहान घंटा लाविलेल्या होत्या, त्यावर शंभर बाणभाते ठेविलेले असून गदा व वरूथ हींही होती, आणि ह्याशिवाय त्या रथावर शतघ्नी नांवाच्या व दुसऱ्या शक्ति असून शूल, तोमर आणि पुष्कळ बाण होते. कर्णांन रणभूमीवर अवतीर्ण होतांच, सुवर्णाचें जागीदार काम ज्यावर केलें होतें असा आपला शंख वाजविला, आणि आपल्या सुवर्णमंडित मोठ्या धनुष्याचा टणस्कार केला. तो महाधनुर्धर महारथ कर्ण रथारूढ झालेला पाहून जणू काय सूर्य हा उदयपर्वतावर आरूढ झाला असून तो आपल्या किरणांनीं अंधकाराचा नाश करीत आहे, असें भासलें. तेव्हां त्या विजयशाली कर्णाची ती वीरश्री अवलोकन करून कौरवांना भीष्माच्या, द्रोणाचार्याच्या किंवा अन्य वीरांच्या मृत्यूचें कांहीं-एक वाटलें नाहीं. नंतर कर्णांन शंखध्वनि करून योद्ध्यांना त्वरा करण्याविषयी इशारा केला आणि तदनुसार कौरवांचें अवाढव्य सैन्य रणांगणांत धावत येऊन सिद्ध झालें.

नंतर, कर्णाने त्या सैन्याचा मकराकार व्यूह रचिला, आणि तो स्वतः पांडवांना जिकण्याच्या हेतूने पुढे सरला. राजा, त्या मकराच्या मुखप्रदेशी कर्ण स्वतः उभा राहिला. त्याच्या नेत्रांच्या जागी शूर शकुनि व महारथ उल्लूक हे उभे राहिले, मस्तकप्रांती द्रोणपुत्र अश्वत्थामा उभा राहिला. मानेच्या ठिकाणी सर्व सरुले भाऊ उभे राहिले. मध्यभागी मोठ्या सैन्यासह दुर्योधन राजा उभा राहिला. पुढील डाव्या पायाच्या जागी कृतवर्मा उभा राहिला, आणि त्याच्या सभोवती महापराक्रमी नारायण व गोपाळ हे वीर उभे राहिले. पुढील उजव्या पायांच्या जागी अमोघवीर्य गीतम उभा राहिला व त्याच्या सभोवती महाधनुर्धर त्रिगर्त व दाक्षिणात्य हे उभे राहिले. पाठीमागच्या डाव्या पायाच्या ठिकाणी मद्रदेशांतून आणिलेल्या मोठ्या सेनेसहवर्तमान शल्य उभा राहिला. पाठीमागच्या उजव्या पायाच्या ठिकाणी सत्यसंघ सुषेण हा सहस्र रथ व तीनशे हत्ती ह्यांनिशी उभा राहिला; आणि पुच्छाच्या जागी महावीर्यवान् भ्राते चित्र व चित्रसेन राजे हे मोठ्या सैन्यासह उभे राहिले.

राजा धृतराष्ट्र, ह्याप्रमाणे नरवरश्रेष्ठ कर्णाने समरांगणांत सैन्याची सिद्धता केल्यानंतर अर्जुनाकडे पाहून धर्मराज म्हणाला, “अर्जुना, हें कौरवांचें सैन्य समरभूमीवर कर्णाने कसे उभे केले आहे, तें पहा. ह्यामध्ये महारथ व इतर वीर सैन्यसंरक्षणाकरितां सिद्ध आहेत. अर्जुना, कौरवांकडील श्रेष्ठ योद्धे पतन पावल्यामुळे, हें सैन्य जरी मोठें अवाढव्य दिसत आहे, तरी तें मला तृणतुह्य भासते. कारण ह्यांत शिल्क असलेले वीर अंगदी कमकुवत व हीनवीर्य आहेत ! अर्जुना, ह्या सर्व सैन्यांत एक महाधनुर्धर कर्ण मात्र खरा पराक्रमी आहे. त्याच्या लढण्यास देव, असुर, गंधर्व, किन्नर

व महौरंग ह्यांसहवर्तमान चराचर तिन्ही लोक जरी सिद्ध झाले, तरी त्यांनाही तो महारथ जिकितां येणार नाही. हे महाबाहो अर्जुना, आज तूं त्याचें हनन कर, क्षणजे तुला जय मिळालाच असे मान. अर्जुना, आज तूं जर कर्णाचा वध करशील, तर द्वादश वर्षेपैत तुझ्या हृदयांत खुपत असलेले शल्यच उपटून टाकल्याप्रमाणें होईल ! ह्यास्तव हे अर्जुना, हा उद्देश मनांत आणून तूं आपल्या इच्छेनुसार सैन्याची रचना कर. ”

राजा, नंतर अर्जुनानें भ्रातृवचनाचा विचार करून स्वसैन्याचा अर्धचंद्राकार व्यूह सिद्ध केला. त्या व्यूहाच्या डाव्या बाजूस भीमसेन उभा राहिला. उजव्या बाजूस महाधनुर्धर धृष्टद्युम्न उभा राहिला. मध्यभागी धर्मराज व अर्जुन हे उभे राहिले. नकुळ व सहदेव हे धर्मराजाच्या पृष्ठमार्गी उभे राहिले. युधामन्यु व उत्तमौजा हे दोन पांचाल्य वीर अर्जुनाच्या रथाची चक्रे राखीत राहिले. अर्जुन हा त्यांस राखित होता, त्यामुळे त्यांनी अर्जुनास क्षणभर मुद्दां सोडिले नाही. आणि कर्णें धारण करून युद्धार्थ सिद्ध असलेले बाकीचे राजे आपआपल्या सामर्थ्याप्रमाणें, पराक्रमाप्रमाणें व साहसाप्रमाणें योग्य अशा स्थानी उभे राहिले. ह्याप्रमाणें पांडवांनी मोठा व्यूह तयार केला.

धृतराष्ट्र, अशा प्रकारें दोन्ही दळे सिद्ध झाल्यावर तुझ्याकडील महान् धनुर्धरांनी युद्धाविषयी विचार मनांत आणिला. राजा रणभूमीवर सूतपुत्र कर्णाने तुझ्या सेनेचा व्यूह सिद्ध केलेला पाहून बंधूसहवर्तमान दुर्योधनाच्या मनांत लागलेच आले की, आतां पांडवांच वध झालाच ! त्याप्रमाणेंच तिकडे पांडवांचें सैन्याचा व्यूह अवलोकन करून युधिष्ठिरालाहें धाटले की, आतां कर्णासहित सर्व कौरव मृत्युंमुखी पडलेच ! ह्याप्रमाणें दोन्ही पक्षांना आप

आपल्यापरी जयप्राप्तीचा भरंवसा उत्पन्न झाला असतां रणवाद्यांचा गजर सुरू झाला. शंख, भेरी, पणव, आनक, दुंदुभि, ढिंढिम व झंझर हीं वाद्ये चोहोंकडे वाजू लागलीं. दोन्ही सैन्यांत महान् महान् वाद्यांचा एकच घोष सुरू झाला. विजयेच्छु शूर योद्धे सिंहाप्रमाणे गर्जून लागले. घोड्यांचे खिकाळणे, हत्तींचे ओरडणे आणि रथचक्रांचे खडखडणे, ह्यांचा एकच महान् शब्द होऊं लागला. त्या समयीं, ग्यूहाच्या पुरोभागीं चिळखत घातलेला महाघनुर्धर कर्ण उभा आहे असे पाहून द्रोणाचार्यांच्या मृत्यूनें स्मरण सुद्धां कोणास झाले नाही. राजा, दोन्ही दळांत धीर-श्रीनें सळसळणाऱ्या नरवीरांची गर्दी असून, ते मोठ्या शौर्यानें परस्परांना ठार मारण्याची वाट पहात होते. ह्याप्रमाणे उभय सैन्यांची सिद्धता अवलोकन करून व एकमेकांना पाहून कर्ण व अर्जुन हे अगदीं प्रसुब्ध झाले आणि ते सैन्यां-मध्ये संचार करूं लागले. नंतर दोन्ही सेना थैमान करीत एकमेकांवर धावून गेल्या; नंतर युद्धाविषयीं आतुर झालेले ते वीर आपापल्या मुख्य मुख्य स्थानांपासून पुढें सरसावले; आणि मग त्या चतुरंग सैन्यांचे निकराचे युद्ध सुरू होऊन उभय दळांत मोठा संहार होऊं लागला.

अध्याय बारावा.

—:—

क्षेमघूर्तीचा वध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, तीं दोन्ही प्रचंड दळे एकमेकांना भिडलीं तेव्हां त्यांना युद्धाविषयीं अतिशय हुरूप चढला; त्यांतील योद्ध्यांना मोठी वीरश्री आली; घोड्यांना व हत्तींना स्फुरण चढून ते थैमान करूं लागले; आणि त्या सैन्यावर देवदानवांच्या सैन्याप्रमाणे दिव्य तेज झळकूं लागले. ह्याप्रमाणे मोठ्या आवेशाने त्या सेनांची लगट होतांच

कर्ण ५-४

रथ, अश्व, गज व पत्ति ह्यांचा उग्र पराक्रम दिसें लागला. त्यांनीं एकमेकांवर एकसारखे असे प्रहार केले कीं, त्यांच्या योगाने मोठमोठे वीर आपले देह व पातके धारातीर्थी टाकून देऊन स्वर्गलोकीं चालते झाले! महान् महान् योद्ध्यांनीं महान् महान् योद्ध्यांच्या मस्तकांनीं भूतल आच्छादून टाकिले, व त्यामुळे जिकडे तिकडे पूर्णचंद्रबिंबे किंवा सूर्यमंडले पतन पावलीं असून चोहोंकडे पद्मांचा सुगंध चालला आहे असे दाटूं लागले! त्या समयीं वीरांनीं आपल्या अर्धचंद्राकार बाणांनीं, भल्ल बाणांनीं, क्षुप्र बाणांनीं, तरचारींनीं, कुन्हाडींनीं व शूलांनीं प्रतिपक्षांचीं मस्तके उडविलीं. ज्यांचे बाहु पुष्ट व दीर्घ होते, अशा योद्ध्यांनीं आपल्या प्रमाणेंच पुष्ट व दीर्घ अशा बाहुंच्या वीरांचे बाहु तोडून टाकिले व ते धरणीवर पडून हातां-तील शस्त्रांच्या व भूषणांच्या योगें भूगृष्टावर शोभूं लागले. त्या समयीं त्यांचे ते आरक्तवर्ण हात व बोटे इतकीं कांहीं झळकत होतीं कीं, जणूं काय गरुडानें मारून टाकलेले भयंकर पंचमुखी सर्पच तें पडले आहेत असें भासत होते! त्याप्रमाणेंच, पुण्याचा क्षय झाला असतां स्वर्ग-वासी पुरुष जसे विमानांतून खालीं मृत्युलोकीं पडतात तसे शत्रूंच्या प्रहारांमुळे रथ, गज व अश्व ह्यांवरून वीर खालीं भूतलावर पडूं लागले! तसेच दुसरे शतावधि वीर हे बलिष्ठ वीरांच्या मोठमोठाल्या गदा, परिध, मुसळें इत्यादि-कांच्या योगें रणभूमीवर पतन पावले; आणि त्याप्रमाणेंच त्या वीर संप्रामांत रथांनीं रथांचा चुराडा केला; मदोन्मत्त हत्तींनीं मदोन्मत्त हत्तींचा फत्ता उडविला; आणि स्वारांनीं स्वारांना धुळींत मिळविलें! तसाच रथांच्या तडाक्यांत सांपडून माणसांचा नाश झाला; हत्तींच्या तडाक्यांत सांपडून रथांचा विध्वंस झाला आणि घोडेस्वारांचा पायदळानें व पायदळाचा

बोहेस्वास्नी फला उडविला ! राजा धृतराष्ट्र,
त्या वनचोर युद्धांत अशी कांहीं एकच गर्दी
उडविली की, रथ, अश्व व पायदळ ह्यांचा
हत्तीची नाश केला; रथ, अश्व व हत्ती ह्यांचा
पायदळानें संहार उडविला; रथ, पायदळ व
हत्ती ह्यांचा अश्वानीं विध्वंस केला; आणि
मनुष्ये व हत्ती ह्यांचा रथांनीं फला उडविला !
सातशंश, त्या समर्थी दोन्ही पक्षांच्या चतुरंग
दळांचें तुंबळ युद्ध सुरू होऊन हात, पाय, शस्त्रे
वारक ह्यांच्या योगें मोठा संहार होऊं लागला.

राजा धृतराष्ट्र, ह्याप्रमाणें त्या दोन्ही सैन्यांत
निकाराचें युद्ध चाललें असतां भीमसेनास पुढें
करून पांडव हे कौरवांवर चालू करून आले.
त्या वेळीं पांडवांकडे धृष्टद्युम्न, शिशुबी, द्रौप-
दीचे पुत्र, प्रभृत्क, सात्यकि व द्राविड, सैन्या-
सह भेकितान्न, हे प्रमुख वीर असून, पांडव,
चोळ व केरळ हे मोठ्या सैन्यानिशीं व्यूह-
रचना करून युद्धास सिद्ध होते. ह्या सर्व यो-
द्ध्यांची छाती भरदार असून बाहु दीर्घ होते,
ते उंच धिप्सड असून त्यांचे नेत्र विशाल
होते; त्यांचे दंत आरक्त असून त्यांच्या शरी-
रावर आभरणे होती. त्यांच्या अंगी मदनमत्त
गजांप्रमाणें शौर्य असून त्यांनीं नानाप्रकारच्या
रंगांचीं वस्त्रे परिधान केलीं होती व अनेक
सुगंधि द्रव्ये अंगाला लाविलीं होती; त्यांच्या
कमरेस तरवारी असून हातांत पाश होते, त्यांच्या
दिव्यगंधी हत्तींचें निग्रहण करण्याचें सामर्थ्य
असून ते सृष्ट्या जुमानित नव्हते. त्यांच्या
मध्यें द्वैधीभाव मुख्यीच नसून ते एकमेकांना
केव्हांही सोडीत नसत; त्यांच्यापाशीं बाणभाते
असून हातांत धनुष्ये सज्ज होती; त्यांचे केश
दीर्घ असून बाष्पी स्फळ होते; आणि त्यांची
मुद्रा उग्र असून ते मोठे पराक्रमी होते. राजा,
पांडवांकडील पायदळ, बोहेस्वार व दुसरे सर्व
बोहे ह्यांची स्थिति अशा प्रकारची होती. ह्या-

प्रमाणें पांडवांकडील सैन्यानें आपल्या सैन्यावर
(कौरवांवर) चाल केल्यानंतर त्यांच्या पदाच्या
आणखी शूर योद्ध्यांनीं कौरवांवर स्वारी केली.
चेदि, पंचाल, केकय, कारुष, कोसल, कांच्य,
मागध वगैरे सर्व पांडवपक्षीय वीरांनींही कौर-
वांवर हल्ला केला. त्यांचे रथ, अश्व, हत्ती व
उग्र पायदळ हीं श्रेष्ठ प्रतीचीं असून त्यांच्या-
बरोबर नानाप्रकारच, रणवाद्ये वाजत होतां;
आणि त्या वाद्यरवांनीं त्यांस इतका हर्ष झाला
होता की, ते सर्व सैन्य आनंदांत केवळ
नाचत होतां !

धृतराष्ट्र, अशा प्रकारच्या त्या अवाढव्य व
प्रबळ सैन्यासह भीमसेन कौरवांवर चालून
आला. त्या सैन्याच्या मध्यभागी भीमसेन गज-
स्कंधावर आरूढ झालेला असून त्याच्या सभोवतीं
श्रेष्ठ महात त्याच्या संरक्षणार्थ सिद्ध होते.
भीमसेन ज्या श्रेष्ठ हत्तीवर बसला होता त्यावर
आवश्यक असलेले सर्व संस्कार यथाविधि केले
असल्यामुळे तो दिव्य तेजांनें शोभत होता.
उदयपर्वताच्या अग्रभागीं विराजमान झालेला
दिनकर जसा आपल्या अद्वितीय कांतीनें
झळकत असतो, तसा तो वीरपंगव भीमसेन
त्या गजश्रेष्ठाच्या स्कंधदेशीं दिव्य कांतीनें
झळाळत होता. त्याच्या अंगांत उत्कृष्ट प्रतीचें
पोलादी चिलखत असून त्याच्यावर उत्तम
उत्तम रत्नांचा जडाव केलेला होता; ह्यामुळे
शरत्कालांत तारकांनीं व्याप्त असलेलें आकाश
ज्याप्रमाणें दिसतें, त्याप्रमाणें भीमसेनाचा तो
कवचयुक्त देह दिसत होता. त्या वीराच्या
हातांत एक तोमर असून त्याच्या मस्तकावर
सुंदर किरीट होता. त्यानें नानाविध
अलंकार धारण केले असून तो आपल्या
देदीप्यमान तेजांनें शरत्कालीन मध्यान्हीच्या
सूर्यप्रमाणें शत्रूस भाजून काढीत होता. अशा
प्रकारें द्विपक्षंवावर दिव्य कांतीनें झळकत

असलेल्या त्या पांडुपुत्रास दुरून अवलोकन करून, हत्तीवर आरूढ झालेल्या क्षेमधूर्तीने त्यास युद्धार्थ आन्धान केले; आणि मोठ्या उल्लासास, आपल्याहूनही अधिक उल्लासित झालेल्या त्या पांडववीरांवर तो क्षेमधूर्ति चाल करून गेला.

नंतर त्या दोन्ही योद्ध्यांच्या मयंकर हत्तींचे युद्ध जुंपले. त्या समर्थी, वृक्षादिकांनी युक्त असलेले ते दोन महान् पर्वत एकमेकांशी स्वैर धृतीने झगडत आहेत असा भास होऊं लागला. ह्याप्रमाणे ते दोन हत्ती परस्परांशी लढत असतां त्यांजवरिल वीर सूर्यकिरणांप्रमाणे दीप्तिमान अशा आपल्या तोमरांनीं एकमेकांवर प्रहार करून मोठमोठ्याने गर्जना करूं लागले; नंतर त्या दोन्ही वीरांची झुंज सुटली व ते एकमेकांपासून दूर दूर होऊन आपल्या हत्तींसहवर्तमान मंडलाकार भ्रमण करूं लागले; आणि मग त्यांनीं धनुष्ये हातांत घेऊन परस्परांवर बाणवृष्टि करण्यास प्रारंभ केला. ह्याप्रमाणे ते दोन्ही योद्धे एकमेकांवर बाण टाकीत असतां प्रत्येकाचा एकसारखा शब्द होत असून चोहोंकडे दोन्ही पक्षांतील सैनिकांत मोठा हुरूप व आनंद वाढत चालला होता. त्या वेळीं ते दोन्ही वीर सिंहांप्रमाणे गर्जू लागले, आणि त्यांनीं आपापले हत्ती पुनः एकमेकांवर घातले. नंतर ते दोन्ही हत्ती आपापल्या मुंडा वर करून एकमेकांशी झगडूं लागले आणि त्यांवरिल पताका वायुवेगाने एकसारख्या फडकत असतां मोठी विलक्षण शोभा दृगोचर झाली. नंतर त्या गर्दीत त्या वीरश्रेष्ठींनीं एकमेकांशी धनुष्ये सोडून टाकिलीं व ते पुनः आशोक्या देत एकमेकांवर धावून गेले. मग त्यांनीं एकमेकांवर प्रावृद्धारेप्रमाणे शक्ति व तोमरांची वृष्टि केली. इतक्यांत क्षेमधूर्तीने भीमसेनाच्या दक्षःस्वर्णी मोठ्या वेगाने सोमराचा

प्रहार केला व नंतर पुनः पुनः आणखी सहा वेळां त्याच ठिकाणीं तोमरांची वृष्टि केली व मोठ्याने गर्जना चालविली. राजा, त्या समर्थी भीमसेनास फार क्रोध आला व तोमरांनीं विद्ध झालेला तो पांडुपुत्र, प्रखर किरणांनीं प्रदीप्त असून घेधमंडळांने विद्ध झालेल्या मास्कराप्रमाणे शोभूं लागला ! नंतर त्यानें सूर्याप्रमाणे देदीप्यमान असें तें आपल्या हातांतले पोलोदी तोमर नीट नेम करून सभोर शत्रूवर फेंकिलें; तेव्हां तत्काळ त्या कुलुतात्रिपतीनें आपल्या धनुष्याची प्रत्यंचा ओढून दहा बाण मारिले व त्या तोमराचा चुराडा करून टाकिला आणि आणखी साठ बाण मारून भीमसेनाला विंधिलें. तेव्हां भीमसेनानेंही हातांत धनुष्य घेतलें व मेघाप्रमाणे गर्जना करून क्षेमधूर्तीच्या हत्तीवर बाणांचा प्रहार केला. त्या समर्थी त्या बाणवृष्टीनें क्षेमधूर्तीचा तो बलिष्ठ हत्ती भयभीत होऊन कावराबावरा झाला व त्यास आबरून धरण्याविषयी क्षेमधूर्तीनें केलेला सर्व प्रयत्न फुकट जाऊन, द्याच्यानें अस्ताव्यस्त उचळून दिलेल्या मेघाप्रमाणे तो स्वैरधृतीनें पळत सुटला ! तें पाहून भीमसेनाचा प्रबळ हत्ती त्याच्या पाठीस लागला; परंतु इतक्यांत क्षेमधूर्तीनें आपला हत्ती आपल्या तांब्यांत आणिला व त्याच्यावर चाल करून येणाऱ्या भीमाच्या हत्तीवर त्यानें बाणवृष्टि केली. नंतर क्षेमधूर्तीनें नेम करून आपले बांकदार घेण्याचे बाणाने भीमसेनाचे धनुष्य तोडून टाकिलें आणि त्याच्या हत्तीस भ्रमस्वर्णी बाणांनीं विद्ध करून जर्जर केलें. तेव्हां तो भीमसेनाचा महाम् हत्ती खाली पडला. परंतु इतके होण्याच्या पूर्वीच भीमसेनाने आपल्या हत्तीवरून खाली उडी मारिली व त्यानें शत्रूच्या हत्तीवर बाणप्रहार करून त्यास ठार केलें ! ह्याप्रमाणे क्षेमधूर्तीचा हत्ती मृत झाला असतां तो हातांत दख घेऊन

हत्तीवरून खाली उडी मारून भीमसेनावर धावून येत असनां भीमसेनानें त्याजवर गदेचा प्रहार केला व त्या प्रहारासरसा तो सेमधूर्ति गतप्राण होऊन आपल्या हत्तीच्या सर्पीप शस्त्रांसहवर्तमान खाली पडला ! राजा धृतराष्ट्रा, अशा प्रकारें, वज्रानें विदीर्ण झालेल्या पर्वताप्रमाणें किंवा वज्रानें हत झालेल्या सिंहाप्रमाणें त्या पराक्रमी कुलनाधिपतीची अवस्था झालेली पाहून तुझ्या सैन्याची तारांबळ उडाली व त्यास जिकडे वाट मिळाली तिकडे तें पळून गेलें !

अध्याय तेरावा.

—:—

विदानुविदांचा वध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर महाधनुर्धर शूर कर्णानें समरांगणांत पांडवांच्या सेनेवर सन्नतपर्व बाणांचा वर्षाव करण्यास प्रारंभ केला. त्याप्रमाणेंच कर्णाच्या समक्ष महारथ पांडवांनी मोठ्या क्रोधानें बाणवृष्टि सुरू करून कौरवसैन्याचा वध आरंभिला; आणि कर्णानेही लोहारांकरवी पाणी देऊन धार दिलेले सूर्यकिरणांसारखे तेजस्वी बाण पांडवसैन्यावर टाकून त्याचा संहार करण्यास सुरुवात केली. राजा, कर्णाच्या बाणप्रहारांनी विद्ध झालेले पांडवसैन्यांतील हत्ती एकसारखे ओरडूं लागले, त्यांची शक्ति अगदी गलित झाली, त्यांचे देह अगदी मळूळ झाले, आणि ते सैरावैरा दाहां दिशांस भटकूं लागले ! राजा, ह्याप्रमाणें सूतपुत्र कर्णानें पांडवसेनेचा निःपात चालविला असतां त्या धनधोर युद्धांत मोठ्या त्वरेनें नकुल हा कर्णावर धावून गेला; अश्रुत्यामा मयंहर कर्म करीत असतां त्याजवर भीमसेनानें हत्ती केला; आणि कैकेय देशचे राजे विदानुविद ह्यांस सात्यकीनें निवारिळें. त्याप्रमाणेंच चित्रसेन राजानें आपणावर चाल करून येणाऱ्या श्रुतकर्ण्यांशी युद्ध

आरंभिलें. प्रतिविध्य हा सुंदर ध्वज व धनुष्य धारण करणाऱ्या चित्र राजावर चालून गेला, दुर्योधनानें धर्मराज युधिष्ठिर ह्याजवर हत्ती केला, आणि संशप्तकांच्या टोळ्यांवर अर्जुनानें मोठ्या आवेशानें चाल केली. राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें मोठ्या निकरानें युद्ध चालू होऊन मोठमोठे योद्धे मरून पडूं लागले असतां, धृष्टद्युम्नाचें कृपाचार्यांशी व शिखंडीचें कृतवर्ष्यांशी युद्ध जुंपलें; श्रुतकीर्तीनें शल्याला गांठलें; आणि माद्रीचा पुत्र महापराक्रमी सहदेव ह्यानें तुसा पुत्र दुःशासन यावर चाल केली.

इकडे, दोन्ही कैकेय राजांनी प्रखर बाणांची वृष्टि करून सात्यकीला प्रांकून काढिलें; उलट सात्यकीनेंही कैकेय राजांची तीच अवस्था करून टाकिली. राजा, त्या दोघां कैकेय विदानुविद भ्रात्यांनी सात्यकीच्या वक्षःस्थळी फारच बाणप्रहार केले. त्या समयां जणू काय ते दोन हत्ती आपल्या झुंडांनी महान् अरण्यामध्ये आपल्या प्रतिपक्षां हत्तींशी झुंजत आहेत असाच भास होत होता. धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें ह्या वीरांचें युद्ध चालू असतां सात्यकीनें त्या विदानुविदांवर शरांचा भडिमार एकसारखा चालविला होताच; ह्यामुळें त्या शरांनी त्या कैकेय राजांचा चिखवतें अगदी फाटून व तुटून गेलीं होती तरीही त्यांनीं न भीतां नेटानें प्रयत्न करून सत्यकर्म सात्यकीला बाणांनी विद्ध करून टाकिलें ! राजा, ह्या प्रकारें त्या विदानुविदांनी आपल्यापरी मोठा पराक्रम केला खरा; परंतु तो पाहून सात्यकीला नवल न वाटतां त्यानें उलट त्यांजकडे उपहासबुद्धीनें हंसून पाहिले व त्यांजवर चोहों अंगांनी बाणांचा वर्षाव करून त्यांस झांकून टाकिलें. अशा प्रकारें त्या शैनेयां विदानुविदांचें निवारण केलें असतां त्यांनीं तत्काळ पुनः सात्यकीचा रथ बाणांनीं झांकून काढिला. नंतर त्या महाप्रतापशाळी शौरीनें विदानु

विंदाची ती चित्रविचित्र धनुष्ये तोडून टाकिली व त्यांना समरांगणात तीच बाण मारून कुंठित केले. तेव्हां विंदानुविंदांनी दुसरी तसलीच धनुष्ये हांतात घेतली आणि फिरून जलाल बाणांच्या वृष्टीने सात्यकीचा निरोध करून, तो जिकडे जिकडे गेला तिकडे तिकडे त्याच्या मागून त्याजवर बाणांची वृष्टि करित ते चाळले. त्यांनी त्या बाणांचा गर्द वर्षाव असा कांहीं त्वरेने केला की, कंक व मयूर ह्यांच्या पिंसाचे पंख असलेले ते सुवर्णमंडित मोठमोठे बाण दशदिशा प्रकाशित करून खाली पडू लागले ! परंतु त्या महान् युद्धांत बाणांची गर्दी अतिशय झाल्यामुळे अंतरिक्ष आच्छादन जाऊन त्या बाणांचा अंधकार पडला ! नंतर त्या महारथांनी एकमेकांची धनुष्ये तोडून टाकिली. मग त्या युद्धधुरंधर सात्वताने संतप्त होऊन दुसरे धनुष्य हाती घेतले; व त्यास प्रत्यंचा जोडून अनुविंदावर एक तक्षिण क्षुरप्र बाण अशा प्रकारे टाकला की, त्याने अनुविंदाचे तें मोठें शिर लागलेच तुटून शंबरासुराच्या शिराप्रमाणे कुंडलांसहवर्तमान रणभूमीवर शोभत पडले ! राजा, त्या समर्थी कैकेय वीराना फारच भीति वाटली व दुःख झाले !

शूर अनुविंदाची ही अशी अवस्था पाहून, त्याचा भ्राता महारथ विंद ह्याने दुसरे धनुष्य सिद्ध केले व बाणवृष्टि करून सात्यकीचा प्रतिकार केला. नंतर त्याने सहाणेवर धार लावलेल्या साठ स्वर्णपुंख बाणांनी सात्यकीला विंधिले व ' थांब थांब ' म्हणून मोठ्याने आरोळी दिली. मग त्या महारथ कैकेय राजाने ताबडतोब सात्यकीच्या बाहुप्रदेशी व उरःप्रदेशी सहस्रावधि बाण मारिले. त्या बाणांनी रक्तबंबाळ झाल्यामुळे शरविद्ध झालेल्या सत्यविक्रम सात्यकीचा देह त्या प्रसंगी फुललेल्या पळसाप्रमाणे दिसू लागला ! ह्याप्रमाणे महात्म्या विंद राजाने

सात्यकीच्या सर्व शरीरावर बाणांचे प्रहार केले असतां, सात्यकीने किंचित् हास्य करून पंचवीस बाण त्या विंद राजावर टाकिले. नंतर दोघांचे घोर युद्ध होऊं लागले. त्यांत त्यांनी परस्परांची उत्तम धनुष्ये छेदून टाकिली; एकमेकांचे साराथे क्षणांत मारिले; व अधांना यमलोकी पाठवून दिले ! नंतर विरथ झालेले ते दोघे वीर हातांत तरवारी व शतावधि चंद्रज्यांवर काढिले आहेत अशा ढाली घेऊन रणभूमीवर युद्ध करण्यास प्रवृत्त झाले. त्या समर्थी पूर्वी देव व असुर ह्यांच्या युद्धांत महाबलिष्ठ जंभ व इंद्र हे जसे शोभले, तसे ते श्रेष्ठ खड्गधारण करणारे विंद व सात्यकि हे वीर शोभू लागले ! ते मंडळाकार फिरून त्या महान् संग्रामांत एकमेकांवर चाल करून जात आणि एकमेकांना ठार करण्याकरितां अत्यंत प्रयत्न करितां ह्याप्रमाणे क्रम चालू असतां सात्यकीने कैकेय राजाची ढाल छेदून तिचे दोन तुकडे केले; लगेच विंदांही सात्यकीच्या ढालेची तीच व्यवस्था लाविली ! ह्या प्रकारे त्या दोघां वीरांनी एकमेकांच्या ढाली तोडून टाकिल्यावर कैकेय राजा मंडलाकार फिरत सात्यकीवर धावून गेला. तो कांहींसा पुढे जाई व पुनः मार्गे येई; अशा रीतीने त्याने सात्यकीवर चाल केली असतां सात्यकीने त्या शस्त्रबारी विंद राजाच्या कुशीत मोठ्या त्वरेने तरवारीचा असा वार केला की, त्यासरसा तो विंद राजा कवचासह द्विधा भंग होऊन वज्राने भंग झालेल्या पर्वताप्रमाणे एकदम खाली पडला !

ह्या प्रकारे विंदाचा वध केल्यावर शूर महारथ शैनेय सात्यकि युधामन्यूच्या रथावर चढला आणि नंतर दुसरा रथ आणवून व त्याची यथाशस्त्र व यथाविधि सिद्धता करून त्यावर तो आरूढ झाला; आणि बाणवृष्टि करून कैकेयांच्या अवाढव्य सेनेचा त्याने निःपात चाल-

विला. तेव्हां ती सेवा समरंगणांत झत्रूस सोडून देऊन दाही दिशांस वाढ मिळाली तिकडे उचळून गेली !

अध्याय चौदावा.

— १०१ —

चित्रसेनाचा वध.

संग्रह सांगतो:—राज्य धृतराष्ट्रा, विंद व अनुविंद ह्यांस सत्त्वकीर्ने ठार मारिल्यावर समरंगणांत श्रुतकर्णाने मोठ्या संतापाने चित्रसेने राजाला पत्रास बाण मारिले; तेव्हां त्या अमिसाराधिकृति चित्रसेनेने श्रुतकर्णावर बांकदार पेण्यांचे नऊ बाण टाकिले आणि पांच बाणांनी त्याच्या सारख्यास विद्ध केले. ते पाहून श्रुतकर्णा क्षुब्ध झाला आणि त्याने सैन्याच्या अग्रभागी असलेल्या चित्रसेने राजाच्या धर्मस्थली नाराच नंकाचा तीक्ष्ण बाण टाकिला ! राजा धृतराष्ट्रा, महात्म्या श्रुतकर्णाने ह्याप्रमाणे चित्रसेनेस बाणप्रहार करितांच तो अत्यंत विद्ध होऊन मूर्च्छित पडला व त्याचे देहमान सुटले ! नंतर महत्प्रयत्नाने शक्ती श्रुतकर्णाने नव्यद बाणांनी चित्रसेनास आच्छादित केले. नंतर कर्ही वेळाने महाराज चित्रसेने सावध झाला व त्याने मूळ बाणांनी श्रुतकर्णाचे धनुष्य तोडून टाकून नऊ बाणांनी त्यास विद्ध केले. मग श्रुतकर्णाने दुसरे धनुष्य घेतले. ते धनुष्य सुवर्णमंडित असून श्रुतकर्णाने त्या धनुष्याचे आभार करून मोठ्या वेगाने बाणांचे ओष चालू केले आणि चित्रसेने सजास शरणविद्ध करून त्याचे रूप चित्रचित्र बनविले ! तेव्हां तो चित्रचित्र पुष्पमाला धारण करणारा तरुण चित्रसेने राजा सभेत अलंकार घातलेला तरुण पुरुष जसा द्योमतो तसा त्या समरंगणांत शोभू लागला ! नंतर त्या शूर चित्रसेनेने ' थाप, थाप, ' असे झणून

मोठ्या आवेशाने श्रुतकर्णाच्या वंसःस्थलावर नाराच बाण टाकिला आणि त्यासरसा श्रुतकर्णाच्या वंसःस्थलांतून सविचाचा प्रवाह सुरू होऊन, पर्वतांतून जसा कावेचा रस वाहात असतो, तसा तो प्रवाह वाहू लागला ! तेव्हां श्रुतकर्णाचा रक्ताचे खान झाले व त्याचा देह रक्तासारखा लालभडक दिसें लागला. त्या समर्षी त्याची ती अवस्था अवलोकन करून जणू काय रणभूमीवर किंशुक वृक्षच फुटलेला आहे, असे वाटू लागले ! नंतर शत्रूचा निरोध करण्यासाठी प्रक्षुब्ध होऊन श्रुतकर्णाने चित्रसेनाच्या धनुष्याचे दोन तुकडे करून टाकिले आणि तीनशें नाराच बाण बाळून त्यास आच्छादिले. मग त्याने दुसऱ्या एका तीक्ष्ण व धार लावलेल्या मूळ बाणाने त्या महात्म्या चित्रसेनाचे शिरस्त्राण व मस्तक ही उडविली ! त्या समर्षी चित्रसेनाचे ते दीप्तिमान शिर, जणू काय स्वर्गांतून पृथ्वीवर घट्टेने चंद्रबिंबच पडवें तसे पडले ! अभिसाराधिप चित्रसेने राजा ह्याप्रमाणे रणभूमीवर पतन पावतांच त्याचे सैनिक श्रुतकर्णावर मोठ्या आवेशाने धावून आले. तेव्हां धनुष्य श्रुतकर्णा अतिशय क्षुब्ध झाला व मोठ्या क्रोधाने त्या सैन्यावर बाणांची वृष्टि करून, प्रलयकारी श्रेताधिपति थम सर्व भूतांची जखमी अवस्था करून सोडितो तशी त्याने त्या चित्रसेनाच्या सैन्याची अवस्था करून सोडिली ! राजा, तुझ्या नांतवाने (श्रुतकर्णाने) बाणप्रहारांनी जेव्हां रणभूमीवर त्या सैनिकांचा संहार चालू-विला, तेव्हां वज्रज्योत दग्ध होणाऱ्या हत्ती-प्रमाणे ते स्वर् वीर तेपून तत्काल पळून गेले ! आणि ह्याप्रमाणे क्षत्रजयाविषयी निरुत्साह झालेले ते चित्रसेनाचे सैन्य पळत आहे असे अवलोकन करून श्रुतकर्णाने त्याजवर आणखी बाणवृष्टि करून ते धुवणें उचळून दिले !

चित्राचा वध.

राजा धृतराष्ट्र, नंतर प्रतिविंध्याने चित्रावर पांच बाण मारिले; तीन बाणांनी स्मरध्यास विद्ध केले; आणि एक बाण टाकून ध्वज मोडिला. तेव्हा चित्राने, ज्या स्वर्णपुत्राच्या ठिकाणी कंक व मयूर ह्यांची पिसे बसकिली होती, असे नऊ अणकुर्चादार मल्ल बाण प्रतिविंध्याच्या बाहुप्रदेशी व उरःप्रांती मारिले. परंतु इतक्यांत प्रतिविंध्याने चित्राचे धनुष्य तोडून सहाणेवर लादून धार दिलेले पांच बाण त्याजवर सोडिले. नंतर चित्राने तुझ्या नातवावर (प्रतिविंध्यावर) अग्निजालेप्रमाणे भयंकर अशी शक्ति सोडिली. ती शक्ति अत्यंत तीक्ष्ण व जलाल असून तिला सुवर्णाच्या घंटा लाविलेल्या होत्या. आपल्यावर उल्कापाताप्रमाणे एकाएकी ती प्रचंड शक्ति येत आहे असे पाहून त्या प्रतिविंध्याने हंसत हंसत त्या शक्तीचे दोन तुकडे करून टाकिले. राजा, ज्याप्रमाणे प्रलयकाली वज्रपाताने सर्व भूते वस्तू होऊन जातात, त्याप्रमाणे प्रतिविंध्याच्या तीक्ष्ण शरपाताने ती शक्ति वस्तू होऊन व फुटून तिची दोन शकले झाली! ह्याप्रमाणे त्या शक्तीची वाट लागल्यावर चित्राने मोठी धोरली गदा घेतली व ती सुवर्णमंडित गदा त्याने प्रतिविंध्यावर फेंकिली. त्या गदेच्या प्रहाराने प्रतिविंध्याचे अश्व व साराथि वतप्राण होऊन पडले आणि रथाचा चुराडा होऊन तोही त्या महान् संग्रामांत धरणीतळावर धाडकन पतन पावला ! इतक्यांत प्रतिविंध्याने रथांतून स्वार्थ उडी टाकिली आणि स्वर्गदंडांनी विभूषित केलेली शक्ति चित्रावर सोडली ! परंतु ती शक्ति आपणावर येत आहे असे पाहून चित्राचा भीर सुटला नाही व ती आपल्या अंमावर येतक्षणीच तिचा निग्रह करून त्या महाधीर चित्राने ती उलट प्रति-

विंध्यावर टाकिली. तेव्हा त्या महतेजस्वी शक्तीने रणांगणांत त्या शूर प्रतिविंध्यास गांठले व त्याचा उजवा बाहु छेदून टाकून ती स्वतः महीतळी पतन पावली आणि तिच्या योगे तें महीतळ विद्युल्लतेप्रमाणे प्रकाशित झाले. नंतर प्रतिविंध्याने क्रोधायमान होऊन चित्राचा वध करण्याकरितां मुबल तेव्हा तें तस्कळ चित्राच्या शरीरावरून आवरणांचे भेदन करून त्याच्या बसःस्थळी घुसले; अग्निसिंहासने जप्त एखाद्यास दश करून हां हां म्हणतां किंताक शिरले, तसे तें हां हां म्हणतां त्या चित्राचा प्राण केऊन भूमीत क्षिरले ! अग्निसिंहासने तो चित्र राज्या परित्हा तुझ्या असे ते दीर्घ व पुष्ट बाहु अस्ताव्यस्त पडून समरांगणांत मरून पडला ! राजा, ह्या प्रमाणे चित्राची अवस्था अवलोकन करून तुझ्या सेनेतील पराक्रमी वीर मोठ्या आवेष्टने चोहोंकडून प्रतिविंध्यावर धावून गेले; आणि त्यांनी प्रतिविंध्यावर नान्यप्रकारचे बाण व घंटा लाविलेल्या शतघ्नी नायक शक्ति टाकून, मेघ जसे सूर्यास आच्छादितान, तसे प्रतिविंध्यास आच्छादिले. परंतु त्या महान्बाहु प्रतिविंध्याने बाणाने जाळें पसरून, वज्रधारी इंद्राने ज्याप्रमाणे अश्विनी सैन्याची दाणदाण करून टाकिली, त्याप्रमाणे तुझ्या त्या सर्व सैन्याची दाणदाण करून टाकिली ! त्या समयी समरभूमीवर पांढवांनी तुझ्या सैनिकांस ठार मारण्याचा असा क्रम सुरू केला कीं, वाण्याने उघळून विलेल्या मेघाप्रमाणे तुझे सैनिक एकदश दिशांस पळून गेले ! ह्याप्रमाणे तुझ्या सैन्याची दुर्दशा होऊन तें सैरासैरा चोहोंकडे पळू लागले असतां एकटा अधस्तामा मात्र पुढे होऊन एकदम महामलिष्ठ भीमसेनावर चालू करून गेला. तेव्हा त्याची विकराची कण्ट होऊन, पूर्वी देवदेवतां-

च्या युद्धांत वृत्रासुर व इंद्र ह्यांचे जसे भयंकर युद्ध झाले, तसे त्यांचे भयंकर युद्ध जुपले !

अध्याय पंधरावा.

—:०:—

अश्वत्थामा व भीमसेन ह्यांचे युद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, चित्र राजाचा वध होऊन कौरवसैन्याची दाणादाण झाली तेव्हां अश्वत्थामा पुढे होऊन त्याने भीमसेनावर मोठ्या त्वरेने बाण टाकिले व आपल्या अंगी असलेले अपूर्व अस्त्रलाषव दाखविले. नंतर त्याने सर्व मर्मस्थळे घ्यानांत आणून सहाणेवर धार दिलेले नव्वद बाण नेमके भीमसेनाच्या मर्मस्थळी सोडिले. ह्या प्रमाणे तीक्ष्ण बाणांनी अश्वत्थाम्याने भीमसेनास आच्छादित केले असतां, किरणशलाकांनी अनुविद्ध आलेल्या रविबिंबाप्रमाणे रणभूमीवर तो भीमसेन दिसू लागला ! नंतर भीमसेनाने नीट नेम धरून सहस्रावधि बाण अश्वत्थाम्यावर मारिले व मोठा सिंहनाद केला; पण अश्वत्थाम्याने उलट बाण मारून त्या सर्वांचा प्रतिकार केला व हंसत हंसत भीमसेनाच्या ललाटावर एक नाराच नामक बाण टाकून त्यास विधिले ! राजा, वनांत मदोन्मत्त गेंड्याच्या मस्तकावर आदळणारे शृंग तो गेंडा जसे सहज धारण करितो, तसा तो मालपटली रुतलेला बाण त्या भीमसेनाने सहज धारण केला ! राजा, ह्या प्रकारे अश्वत्थामा भीमसेनाच्या नाशाकरितां प्रयत्न करित असतां त्या पराक्रमी भीमसेनाने हंसत हंसत तीन नाराच बाण अश्वत्थाम्याचे भालप्रदेशी टाकिले; तेव्हां तीन शृंगे धारण करणारा पर्वतराज पावसाळ्यांत जलाचे ओष वाहात असतां जसा दिसतो तसा तो त्रिशृंगरूप तीन बाण धारण करणारा ब्राह्मण रक्षाचे ओष वाहात असतां दिसू

लागला ! नंतर द्रोणपुत्राने शंभर बाण टाकून आपल्याकडून भीमसेनाला पीडा दिली; पण वाच्याने जसा पर्वत कंपायमान होत नाही, तसा तो पांडुपुत्र त्या बाणांनी कंपायमान झाला नाही ! त्याप्रमाणेच भीमसेनानेही मोठ्या वीरश्रीने द्रोणपुत्रावर शतावधि तीक्ष्ण बाण टाकिले; पण जलप्रवाहाच्या योगाने जसा पर्वत हाळत नाही, तसा तो अश्वत्थामा त्या बाणवृष्टीने हालला नाही ! ह्या प्रकारे ते दोघे बलिष्ठ महारथ आपआपल्या श्रेष्ठ रथांत आरूढ होऊन एकमेकांना भयंकर शरवृष्टीने आच्छादून टाकित असतां आपल्या दिव्य तेजाने फारच शोभू लागले ! जणू काय ते दोन आदित्य जगाचा क्षय करण्याकरितां संदीप्त झाले असून आपल्या बाणरूप किरणांनी एकमेकांस दग्ध करीत आहेत, असे भासले ! त्या भयंकर संग्रामामध्ये ते दोघे वीर एकमेकांवर चढ करण्याचा प्रयत्न करीत असतां मोठ्या धैर्याने शरांचा वर्षाव करीत युद्धभूमीवर बात्रांप्रमाणे एकमेकांवर धावून जात होते. त्या वेळी त्यांची जी अवस्था दृग्गोचर होत होती, ती पाहून जणू काय त्या उग्र व अजिंक्य वीरांच्या हातांतली धनुष्ये ही त्यांची वक्रे व त्या धनुष्यांपासून सुटणारे शर ह्या त्यांच्या दादा असा भास होत होता ! शिवाय त्या उभयतांच्या समोवार बाणांचे छत झाल्यामुळे ते अदृश्य झाले असून जणू काय मेघमंडलाने अदृश्य झालेले ते सूर्यचंद्रच असावेत असे दिसत होते ! राजा, ह्याप्रमाणे कांहीं वेळ स्थिति राहून नंतर ते दोघेही पराक्रमी योद्धे दृग्गोचर झाले, तेव्हां मेघमंडलाने आच्छादित केलेले मंगळ व बुध मेघपटलांतून मुक्त झाले असतां जसे दिसतात, तसे ते भीम व अश्वत्थामा हे दोघे वीर दिसले. नंतर त्या दोघांचा आणखी त्याच ठिकाणी

निकाराचा संग्राम सुरू झाला असतां अश्वत्थाम्यानें भीमसेनास उजवीकडे घातले; आणि भेष पर्वतावर जशी पर्वण्याची वृष्टि करितात, तशी त्यानें भीमसेनावर बाणांची भयंकर वृष्टि केली. राजा, अशा प्रकारें अश्वत्थाम्याची सरशी झालेली पाहून ते भीमसेनास मुळीच खपले नाही. ताबडतोब भीम त्याच ठिकाणावरून

करून लागला. नंतर ते दोघे वीर मंडलाकार फिरत एकमेकांवर चालून जाऊन कधी पुढें कधी मागे असे प्रसंगानुरूप संचार करित असतां त्यांचें मोठें तुंचळ युद्ध जुंपलें. त्यांनीं नाना-प्रकारच्या मार्गांनीं व मंडळांनीं एकमेकांवर हल्ले केले; आणि मोठ्या आवेशानें बाणांचा ओतघोत मारा करून एकमेकांच्या वधासाठीं पराक्राष्टेचा यत्न केला. त्या प्रसंगां प्रत्येकाची इच्छा रणांगणांत दुसऱ्यास विरथ करावें ही होती. तेव्हां महारथ अश्वत्थाम्यानें मोठमोठ्या अस्त्रांची योजना केली; परंतु अस्त्रांची योजना करूनच भीमसेनानें अश्वत्थाम्याचा प्रतिकार केला ! राजा, त्या वेळीं अस्त्रांचें मोठें घोर युद्ध चालू झालें ! जणू काय जगताच्या प्रलय-कालीं ग्रहांबैच भयंकर युद्ध सुरू आहे असा भास होऊं लागला ! त्या युद्धांनीं परस्परांवर सोडलेले बाण एकमेकांशीं असे लगटले कीं, त्यांच्या आघातांनीं उत्पन्न झालेला प्रकाश दशदिशांच्या ठिकाणीं व्याप्त होऊन तुझ्या सेनेच्या सभोवतार सर्वत्र उजेड पडला ! राजा, त्या समयीं आकाशांत जिकडे तिकडे बाणांची गर्दी होऊन जाऊन, प्रलयकाळीं उल्कांनीं अंतरिक्ष व्याप्त झालें असतां जशी भीति उत्पन्न होते, तशी अत्यंत भीति उत्पन्न झाली ! ब्रह्मभिषासापासून ज्या ठिपण्या चालू झाल्या त्यांनीं आगी लावल्या व त्यांत दोन्ही सैन्ये दहन होऊं लागलीं ! तेव्हां तेंथें सिद्ध

मंडळी प्राप्त झाली आणि म्हणाली, “ अहो, सर्व युद्धांमध्यें हें युद्ध मोठें श्रेष्ठ होय. अन्तःपर्वत नीं युद्धे झालीं तीं सर्वे ह्या युद्धाच्या सोळाव्या कलेचीही बरोबरी करणार नाहीत. ह्यापुढें असलें भयंकर युद्ध कधीही होणार नाही. अहो, हे ब्राह्मणक्षत्रिय (अश्वत्थामा व भीमसेन हे दोघेजण) युद्धकलेमध्ये किती निष्णात आहेत बरें ? अहो, ह्या महापराक्रमी वीरांचें केवढें हें शौर्य ? कायहो ह्या भीमाची शक्ति ! ह्या अश्वत्थाम्याचें अस्त्रनैपुण्य तरी किती सांगावें ! अहो, ह्यांचें केवढें लोकोत्तर वीर्य ? अहो, ह्यांच्या ठिकाणीं केवढें युद्धकौशल्य ? अहो, जणू काय जगताचा संहार करणारे हे प्रति यमचक्रारणभूमीवर झगडत आहेत ! अथवा जणू काय हे दोघे भयंकर पुरुषव्याघ्र प्रत्यस्त रूद्र, रवि किंवा यमच असावेत ! ” राजा धृतराष्ट्रा, सिद्धांच्या मुखांतून हे असे उद्गार पुनःपुनः निघूं लागले; त्या स्थळीं प्राप्त झालेल्या देवांनीं सिद्धनाद केला; आणि त्या दोघां वीरांचा तो अद्भुत व अचिंत्य पराक्रम अवलोकून करून सिद्ध व चारण ह्यांचे समुदाय मोठ्या विस्मयांत पडले ! तेव्हां देव, सिद्ध व मोठमोठे ऋषि त्या ऋद्ध्यांची वाहवा करूं लागले; आणि “ हे महाबाहो द्रोणपुत्रा, शाबास ! हे पांडुपुत्रा भीमसेना, शाबास ! ” असे त्यांनीं उद्गार काढिले.

राजा धृतराष्ट्रा, ते दोघे शूर वीर समरांगणांत एकमेकांशीं लढत असतां त्यांचा जो क्रम चालू होता, तो तसाच पुढें चालला. त्यांनीं एकमेकांना अपकार केले. संसारापेणें ढोळे वटारून ते एकमेकांकडे पाहूं लागले. क्रोधानें त्यांचे नेत्र आरक्त झाले, क्रोधानें त्यांचे ओंठ थडथड हालूं लागले. व त्यांनीं संतापानें दांतओंठ खाण्यास आरंभ केला. त्या महारथांनीं बणांच्या वृष्टीनें परस्परांस आच्छादन-टाकिले. जणू काय त्या लोकोत्तर वीरांच्या धनुष्यांवासानून

शररूप जलाच्या घारा सुरू असून मध्यंतरी शशाघातापासून विद्युल्लतेचा लखलखाट चालला होता। अशा प्रकारे निकाराचे युद्ध चालू असतां त्यांनीं एकमेकांचे ध्वजांवर, सारख्यांवर व अर्धांवर बाणवृष्टि करून त्या सर्वांस विद्ध करून टाकिले. नंतर त्यांनीं अत्यंत क्षुब्ध होऊन परस्परांच्या वधार्थ बाणवृष्टि करण्यास तत्काळ आरंभ केला. त्या दुर्धर्ष वीरांनीं सैन्याच्या अग्रभागीं उभे राहून वज्रासारखे कठोर बाण एकमेकांवर टाकले; आणि त्या बाणांच्या अतिशय वेगामुळे त्या दोघांही वीरांस अतिशय पीडा होऊन ते रथाच्या वीरस्थानीं मूर्च्छित पडले! तेव्हां अश्वत्थाम्याच्या सारख्यानें अश्वत्थामा निश्चेष्ट पडला असें पाहून त्यास रणभूमीतून सर्व सैन्याच्या देखत एकीकडे नेले; व त्याचप्रमाणे भीमसेनाच्या सारख्यानेंही, भीमसेनपुनः पुनः बाणवेदनेनें विव्दळत आहे असें अवलोकन करून त्यासही रणांतून एकीकडे नेले!

अध्याय सोळावा,

—:०:—

अर्जुन व संशप्तक ह्यांचे युद्ध.

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, अर्जुनाचे संशप्तकांबरोबर जें युद्ध झाले, व त्याप्रमाणेच दुसऱ्या राजांचे पांडवांशीं जें युद्ध झाले, त्याचे वर्णन करून मला सांग. तसेंच, हे संजया, अश्वत्थाम्याचे अर्जुनाशीं जें युद्ध झाले, व त्याप्रमाणेच दुसऱ्या राजांचे पांडवांशीं जें युद्ध झाले त्यांचेही वर्णन कर.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, महान् महान् वीरांचा शत्रूंबरोबर जो संग्राम झाला, व ज्यामध्ये पुष्कळ वीरांचा नाश होऊन त्यांचे देह व पातके धारातीर्थी पतन पावलीं, त्या संग्रामाचे मी सविस्तर वर्णन करितों ते श्रवण कर.

राजा, संशप्तकांचे सैन्य म्हणजे केवळ सागराप्रमाणे अवाढव्य होते; पण त्यांत अर्जुनानें प्रवेश केला व त्या शत्रुसंहारक वीरांनें महान् वाच्याप्रमाणे त्या सेनासमुद्रास क्षुब्ध करून टाकिले! नंतर त्यानें संशप्तक वीरांवर धार लावलेले भल्ल बाण टाकले व त्यांच्या योगे त्या वीरांचीं मस्तके तत्काळ तोडून टाकून त्यांनीं ते भूमंडळ आच्छादिले! राजा, त्या समयीं पूर्णचंद्रविंबाप्रमाणे सुंदर, व ज्यांवर उत्कृष्ट नेत्र, भ्रुकुटि व दंतपांक्ति विराजित आहेत, अशीं तीं मुखकमले जणू काय आपल्या नालंबंधापासून वियुक्त होवस्तरीं त्या भूप्रदेशीं विखरून पडलीं आहेत असा भास होऊं लागला! राजा, त्या युद्धांत अर्जुनानें वस्तन्यामारख्या तोषण बाणांनीं शत्रूंचे पुष्कळ बाहु तोडून टाकिले. ते बाहु उत्कृष्ट वळखर, लांब, बळकट, चंदन व अगुरु ह्यांच्या उट्या दिलेले, आयुधे धारण केलेले, तलत्र (एक प्रकारचे चर्मावरण) घातलेले, व पंचमुखी सर्पाप्रमाणे करतलांनें युक्त असे होते; आणि त्याप्रमाणेच अर्जुनानें त्या युद्धांत अश्व, अश्वेतर प्राणी, सारथि, ध्वज, चाप, बाण व रत्नादिकांनीं अलंकृत असे हस्त पुनःपुनः भल्ल बाणांच्या प्रहाराने तोडून टाकिले. राजा, त्या भयंकर रणकंदनांत अर्जुनानें पुष्कळ रथ व रथी, द्विप व द्विपी आणि घोडे व घोडेस्वार हे सहस्रावधि बाणांच्या योगे यमसदनीं पाठविले. राजा, ह्याप्रमाणे अर्जुनानें संशप्तकांचा संहार चालविला असतां त्याजवर संशप्तकांपैकीं महान् महान् वीर अत्यंत क्षुब्ध होऊन वृषभांसारखे डुरकण्या फोडीत धावून आले. त्या समयीं जणू काय ते मदोन्मत्त बैल मोठ्या आवेशाने माज केलेल्या गाईंवर धावून येत आहेत असा भास झाला! आणि त्या वेळीं त्यांनीं आपणांवर प्रहार करणाऱ्या त्या पृथापुत्राव

बाणांचा असा कांहीं वर्षाव चालविला कीं, जसे काय ते आपल्या शिंगांनी त्या नगाधिपतीला ठोंसे मारीत आहेत असे भासले ! राजा, त्या प्रसंगी अर्जुनाचे व संशप्तकांचे जे युद्ध झाले, तें पाहून अंगावर अगदी कांटाच उभा राहात होता ! जणू काय त्रैलोक्य त्रिकण्याच्या हेतूनें दैत्यांचें देवेंद्रांशींच युद्ध चालले आहे, असें तेव्हां वाटले ! राजा, त्या युद्धांत अर्जुनांनो संशप्तकांच्या अस्त्रांचें आपल्या अस्त्रांनीच निवारण केले; आणि त्यांचीं अस्त्रे ह्या प्रकारें क्षीण केल्यावर पुष्कळ बाणप्रहारांनी त्यांस विद्ध करून त्यानें त्यांचा तत्काळ प्राण घेतला ! राजा, संशप्तकांशीं युद्ध करितांना अर्जुनांनो जो कांहीं पराक्रम केला, त्याचें काय वर्णन करावें ? त्यानें शत्रूंकडील रथांचीं चक्रे, आंस, धुऱ्या, जोखड इत्यादिकांचा चुराडा केला; आयुधें व बाणभाते हीं लयाम नेलीं; ध्वज मोडून टाकिले; बंधनरज्जु व अश्व्यांच्या लगामा तोडिल्या; रथधुरीचा अग्रभाग व वरूथ (रथसंरक्षणाकरितां केलेलें एक प्रकारचें पटल) हीं नष्ट केलीं; रथांतील बैठक पाडिली; धुऱ्यांच्या पुढील लांकूड मोडिले; आणि रथांत बसण्याची जागा व आंस ह्यांना जोडणारे सांधे तोडिले. सारांश, ज्याप्रमाणें वारा सुटला असतां तो प्रचंड भेडांचीं छकले छकले करून त्यांची दाणादाण करून देतो, त्याप्रमाणें अर्जुनांनो त्या संशप्तकांच्या सैन्यांचीं छकले छकले करून त्यांची दाणादाण करून दिली ! अर्जुनांचें तें घोर कृत्य पाहून सर्वांस मोठा विस्मय वाटला; व शत्रूंस महाभीति उत्पन्न झाली ! त्या प्रसंगी जयांनो (अर्जुनांनो) सहस्र महाराथांची बरोबरी करणारा असा जो पराक्रम केला, तो अवलोकन करून सिद्ध, देवर्षि व चारण ह्यांचे समुदाय त्याची वाहवा करूं लागले; देवांनीं दुंदुभि वाजविल्या आणि कृष्ण व अर्जुन ह्यांच्या मस्तकांवर

पुष्पांची वृद्धि केेली ! राजा, त्या समयी आकाशवाणी झाली कीं, “ अहो, चंद्र, सूर्य, अग्नि व वायु ह्यांची कांति, धुति, दीप्ति व बळ हीं नित्य धारण करणारे जे वीर ते हे कृष्ण व अर्जुन होत ! अहो, हे एका रथांत बसलेले वीर ब्रह्मा व ईशान ह्यांप्रमाणें अजिंक्य आहेत ! अहो, हे नरनारायण सर्व प्राण्यांमध्ये श्रेष्ठ होत ! ” राजा, धृतराष्ट्रा, अंतरिक्षांत उत्पन्न झालेले हे शब्द श्रवण करून अश्वत्थाम्याला मोठें आश्चर्य वाटले; आणि तो रणांगणांत मोठ्या तयारीनें कृष्णार्जुनांवर धावून गेला. त्या समयी अर्जुन मोठे भयंकर बाण मारीत आहे, असें अवलोकन करून अश्वत्थामा आपला बाणयुक्त हात वर करून हसत हसत हाक मारीत अर्जुनास म्हणाला, “ हे वीरा, ह्या ठिकाणीं हा मी पूज्य अतिथि प्राप्त झालों आहे, वाटत असेल तर तूं आज मला अगदीं मनापासून युद्धरूप आतिथ्य अर्पण कर.”

राजा, अशा प्रकारचें प्रास्ताविक शब्द बोलून द्रोणपुत्रानें अर्जुनाला युद्धार्थ आह्वान केले. तेव्हां अर्जुनाला मोठी घन्यता वाटली व तो जनार्दनास म्हणाला, “ हे जनार्दना, मला सध्या संशप्तकांचा वध कर्तव्य आहे; आणि अश्वत्थामा तर मला आह्वान करीत आहे; तेव्हां आतां प्रथम काय करावें तें सांग. जर तुझ्या विचारास येत असेल, तर मोठ्या आदरानें प्रथम अतिथिसत्कार करीन व मग संशप्तकांना मारीन ! ” राजा, अर्जुनांचें हें भाषण श्रवण करून कृष्णानें अर्जुनास द्रोणपुत्रासमीप नेले. कारण अश्वत्थाम्यानें वीरविधीनें अर्जुनास युद्धार्थ आह्वान केल्यामुळे, वायु जसा यज्ञाकरितां इंद्रास क्षणांत घेऊन जातो, तसा तो माधव अर्जुनास अश्वत्थाम्यासमीप क्षणांत घेऊन गेला !

अश्वत्थामा व अर्जुन हांचें युद्ध.

नंतर कृष्ण अश्वत्थाम्याला अभिषेदन करून अश्वत्थाम्याच्या चित्ताची एकाग्रता पाहून म्हणाला, "अश्वत्थाम्या, अगदी विलंब न करितां तुं सुस्थिर चित्तानें बाण सोड व तुझ्यावर जे भेतीळ ते सहन कर. सेवकांना आपल्या स्वामीच्या ऋणांतून मुक्त होण्याला ही योग्य संधि आहे. महा-ब्राह्मणांचा विवाद सुरू झाला असतां त्यांचा निर्णय जसा सूक्ष्म असतो, तसा क्षत्रियांच्या विवादाचा नसतो. क्षत्रियांचा लडा पडला म्हणजे जय किंवा अपजय ह्यांच्या योगें त्यांचा निर्णय होतो व तो निर्णय सर्व जगास कळव्याजोबा स्पष्ट असतो. ह्यासाठीं तुं केवळ मूर्खपणातून अर्जुनापासून ज्या आतिथ्याची अपेक्षा करित आहस, ते आतिथ्य प्राप्त करून घेण्याकरितां तुं आज मोठ्या सावधानचित्तानें अर्जुनाशीं युद्ध कर."

राजा धृतराष्ट्रा, कृष्णाचें हें भाषण श्रवण करून अश्वत्थाम्याने 'बरें आहे' म्हणून त्यास उत्तर दिलें आणि कृष्णावर साठ बाण व अर्जुनावर तीन बाण सोडिले. तेव्हां अर्जुन अगदी धुबध झाला व त्यानें तीन बाण टाकून अश्वत्थाम्याचें धनुष्य भंगिलें. नंतर अश्वत्थाम्याने पहिल्यापेक्षा अधिक भयंकर धनुष्य धारण केलें आणि तें तत्काळ सज्ज करून त्यानें कृष्णा-र्जुनावर बाणांचा भडिमार चालविला. त्यानें प्रथम वासुदेवावर तीनशें बाण व अर्जुनावर एक हजार बाण सोडिले. नंतर त्यानें सुस्थिर उभें राहून अर्जुनावर नेम धरून सहस्रावधि, लक्षावधि व कोट्यवधि बाणांचा वर्षाव केला. सजा, त्या समयी अश्वत्थाम्याच्या सात्यांतून, धनुष्यापासून, प्रत्यंचेपासून, बाहुंपासून, हस्तांपासून, उरापासून, मुखापासून, नासिकेपासून, नेत्रांतून, कर्णांतून, भस्त्रकांतून, गात्रांतून, लोमांतून, कवचांतून, रथांतून व ध्वजांतून एकसारखे

बाण सुटूं लागले; आणि अशा प्रकारें कृष्णार्जुनांचा मोठ्या बाणजालकामें विद्ध करून त्यानें प्रहृष्ट मनानें महामेघप्रमाणें गर्जना केली. तेव्हां ती गर्जना ऐकून अर्जुन कृष्णास म्हणाला, "हे कृष्णा, माझ्याविषयीं ह्या द्रोणपुत्राची किती दुष्ट बुद्धि आहे, ती पाहिलीसना? अरे, आपणांवर ह्यानें काय तें बाणांचें जाळें पसरिलें, परंतु एवढाच-वरून आपणांस मृत्यु प्राप्त झाला असें हा मानीत आहे. पण त्याची ही समजूत मी आपल्या सामर्थ्यानें व युद्धनैपुण्यानें आतां हाणून पाडितों!" धृतराष्ट्रा, अर्जुनानें असे उद्गार काढून, अश्वत्थाम्यानें टाकलेल्या प्रत्येक बाणाचे तीन तीन तुकडे केले; व सूर्य जसा क्षणांत धुक्याचें निवारण करितो, तसें त्यानें त्या सर्व बाणांचें क्षणांत निवारण केलें.

अर्जुन व संशप्तक हांचें पुनः युद्ध.

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर पुनः अर्जुन संशप्तकांकडे कळला. घोडे, सारथि, रथ, हत्ती, पायदळ व ध्वज ह्यांच्या समुदायांवर अर्जुनानें जलाल बाण टाकून त्या सर्वांना विद्ध केलें. तेव्हां त्या स्थळीं जे कोणी पुरुष आढळले, ते मग कोणत्याही रूपानें असले तरी त्यांचें त्यांस आपण अर्जुनाच्या शरानां आच्छादित झालें अहो असें दिसून आलें. राजा, अर्जुनाच्या गांडीबापासून सुटलेल्या त्या बाणांचें सामर्थ्य कत्रय कर्मणें? नाना-प्रकारचीं रूपे धारण केलेले ते बाण समीप अश्वत्थाम्या किंवा कोसभर लांब गेलेल्या हत्तींना, वीरांना वगैरे ठार करीत. ज्याप्रमाणें वना-मध्ये कुऱ्हाडींनीं तोडलेले मोठमोठे वृक्ष पटापट खाली कोसळतात, त्याप्रमाणें बळ बाणांनीं तोडून टाकलेल्या मदोन्मत्त हत्तींच्या त्या शुंडा पटापट खाली कोसळल्या. ह्याप्रमाणें त्या हत्तींचीं मस्तकें तुटतच त्यांची तीं पर्वतप्राय धडें त्यांवर आरूढ झालेल्या

स्वारांसहित खाली पडलीं. जणू काय त्या समर्थी इंद्राच्या वज्रानें चूर्ण केलेले पर्वतांचे समुदायच खालीं पडत आहेत असा भास झाल. राजा, नंतर अर्जुनानें बाणांचा वर्षाव करून, जे गंधर्वनगरांसारखे (मेघमंडळांसारखे) प्रचंड व ज्यांस शिकवून तरवेज केलेले वेगवान् अश्व जोडिले आहेत, आणि ज्यांत धुरंधर योद्धे आरूढ झाले आहेत अशा रथांचा चुराडा उडवून त्यांतील वीरांचा भूतलावर सडा घातला ! मग अर्जुनानें आपली दृष्टि मोठमोठे घोडेस्वार व पायदळ ह्यांजवर बळवली आणि त्या प्रलय-कवलीन सूर्यानें संशप्तक महार्णवाचें अगाध व दुःशोष्य असें तें उदक प्रखर शरकिरणांनीं शोषून टाकिलें !

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुनानें लागलाच मोठ्या आवेशानें द्रोणपुत्ररूप महागिरि नाराच-रूप वज्रानें पुनः विंधिला. तेव्हां आचार्य-पुत्र पुनः क्षुब्ध होऊन त्यानें आपले बाण अर्जुनाच्या अश्वान्वर, सारथ्यावर व अर्जुनावर सोडिले, आणि त्या वीरांचें पुनः युद्ध सुरू झालें. अर्जुनानें अश्वत्थाम्यावर पुनः नाराच बाण टाकिले व तें पाहून अश्वत्थाम्यानें क्रोधा-मान होऊन अर्जुनावर अखांचा भडिमार चालविल्ल. तेव्हां अर्जुनानें अश्वत्थामरूप सत्पाम्र अतिथीचा योग्य सत्कार करण्याकरितां संशप्तकांना अजीवात सोडून दिलें, आणि मग अश्वत्थाम्याचें व अर्जुनाचें पुनः तुंबळ युद्ध चालू झालें !

अध्याय सतरावा.

—:०:—

अश्वत्थाम्याशीं युद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर शुक्र व अंगिरस ह्यांप्रमाणें सामर्थ्य असलेल्या त्या अश्वत्थामार्जुनांचें मोठ्या निकराचें युद्ध

सुरू झालें. जणू काय ते शुक्र व अंगिरसच नक्षत्रास उद्देशून मोठ्या आवेशानें अकाशांत झडगत आहेत असें भासलें. ते आपल्या देदीप्य-मान शरकिरणांनीं परस्परांस असे संतप्त करूं लागले कीं, त्यामुळें, कधी झालेल्या व फाजील चालणाऱ्या प्रह्लांच्या योगें जशी पीडा होते, तशी त्यांजपासून सर्व लोकांस पीडा होऊं लागली. नंतर अर्जुनानें मोठ्या जोरानें अश्वत्थाम्याच्या दोन्ही भुकुटीच्या मध्यभागीं नाराच बाण मारिल्ल. तेव्हां तो द्रोणपुत्र अश्वत्थामा ऊर्ध्वरश्मि रबीप्रमाणें शोभायमान दिसूं लागला. मग अश्वत्थाम्यानें शतावधि बाणांनीं कृष्णार्जुनांस विद्ध केले. तेव्हां बाणरूप रश्मिजालांनीं संगत झालेले ते दोघे वीर प्रलयकालच्या प्रचंड सूर्यासारखे झळाळूं लागले. पुढें कांहीं वेळानें कृष्णाची उमेद कमी झालीसें पाहून अर्जुनानें चोहोंकडून अखधारांचा वर्षाव करणारी एक शक्ति अश्वत्थाम्यावर सोडिल्ली; आणि वज्र, अग्नि किंवा यमदंड ह्यां-प्रमाणें प्राणसंहारक बाणांची एकसारखी वृष्टि चालविली. तेव्हां अश्वत्थाम्यानें कृष्ण व अर्जुन ह्यांच्या मर्मस्थळीं असे तीक्ष्ण बाण मारिले कीं, त्या बाणांनीं प्रत्यक्ष मृत्यूख-ही व्यथा झाली असती ! राजा त्या अनुल-प्रतापी रौद्रकर्त्या अश्वत्थाम्यानें नेम धरून मोठ्या वेगानें अर्जुनावर शरीर सोडिला असतां अर्जुनानें त्याचा प्रतिकार केला; आणि त्या महापराक्रमी वीराच्या अश्वान्वर, सारथ्यावर व ध्वजावर उत्कृष्ट पुंकांचे व महाकर्षिवान् असे दुप्पट बाण टाकून तो पुनः संशप्तकांच्या सैन्यावर चाल करून गेला.

पुनः संशप्तकांशीं युद्ध.

नंतर अर्जुनाचें व संशप्तकांचें युद्ध फिरून सुरू झालें. त्यांत अर्जुनानें आपणासमोर नेटानें

उभे राहिलेल्या संशप्तकांची धनुष्ये, बाण, प्रत्यंघा बाणभाते, बाहु, हस्त, हस्तांतील शस्त्रे, छत्रे, ध्वज, अश्व, रथांतील आयुधे, वस्त्रे, पुष्प-माला, अलंकार, सुंदर ढाली, आवडती चिलखते व सर्व मस्तके नेमाने बाण मारून तोडून टाकिली. राजा, त्या समर्थी संशप्तकांपैकी जे वीर मोठ्या वेगाने अर्जुनावर धावून आले, त्यांचे शस्त्रास्त्रांनी सुसिद्ध असलेले रथ, अश्व, नाग ह्यांजवर अर्जुनाने बाणांचा असा भडिमार केला की, त्या बाणांनी त्या रथादिकांचा नाश होऊन त्या रथादिकांवर आरूढ झालेल्या वीरांसहित ते बाण रणभूमीवर पतन पावले. तेव्हां रणांगणात भूमितल नरशिरांनी व्याप्त झाले. पूर्णेदु, सूर्य व कमले ह्यांप्रमाणे तेजः-पुंज-किरीट, माला व अलंकार ह्यांनी विराजमान, व भल्ल बाण, अर्धचंद्र बाण व क्षुर बाण ह्यांनी त्रुटित झालेल्या अशा मस्तकांची भू-प्रदेशीं अगदीं गदीं होऊन गेली ! नंतर कर्लिग, वंग, अंग व निषाद ह्या देशांतील वीर अर्जुनास ठार मारण्याच्या हेतूने गजासुरा-सारख्या प्रचंड शक्तीने युक्त असलेल्या हत्तींवर आरूढ होऊन, दैत्यांचा दर्प दूर करणारा अर्जुन अग्रभागी उभा होता त्याजवर तुटून पडले ! तेव्हां अर्जुनाने त्या हत्तींच्या शूंडा तोडल्या; त्यांजवर आरूढ झालेल्या वीरांची कवचे व ढाली भंगिल्या; त्यांचे प्राण घेतले; त्यांच्या ध्वजपताका मोडिल्या; आणि मग ते वीर वज्राने हत केलेल्या पर्वताच्या शृंगांप्रमाणे घडाघड खाली पडले !

अश्वत्थाम्याशी पुनः युद्ध.

ह्याप्रमाणे संशप्तकांची वाट लाविल्यावर अर्जुनाने प्रातःकालीन सूर्याप्रमाणे तेजस्वी बाण पुनः अश्वत्थाम्यावर सोडिले. त्या वेळी, उदय पावणाऱ्या सूर्याला ज्याप्रमाणे वायूने महामेघ-भंडळाने आच्छादित करावे, त्याप्रमाणे अर्जु-

नाने बाणजालकाने त्या अश्वत्थाम्याला आच्छादित केले. तेव्हां अर्जुनाच्या त्या बाणांचे अश्वत्थाम्याने तीक्ष्ण बाणांनी निवारण करून पुनः कृष्णार्जुनास बाणांनी आच्छादिले व मोठी प्रचंड गर्जना केली ! त्या वेळी जणू काय ग्रीष्म ऋतूच्या अंती मेघाने आकाशात चंद्रसूर्यास आच्छादून मोठी गर्जना केल्याचा भास झाला. तेव्हां अर्जुनाने पुढे होऊन अश्वत्थाम्याला व त्याच्या समवेत असलेल्या तुझ्या दुःसत्या सर्व वीरांना सुपुंख बाणांनी विद्ध केले व अश्वत्थाम्याने सोडलेल्या सर्व बाणांचा प्रतिकार करून बाणकृत अंधकार एकदम पळवून लाविला ! राजा, त्या समर्थी सव्यमाची अर्जुन भात्यांतून बाण केव्हां काढीत असे, तो धनुष्याला केव्हां जोडीत असे व शत्रूवर केव्हां सोडीत असे, हे कांहींच कळत नसे; परंतु रथी, नाग, अश्व, पायदळ ह्यांच्या देहांत मचून बाण घुसले असून ते पटापटा मरून पडत आहेत, असे मात्र दृष्टीस पडे ! तेव्हां अगदीं विलंब न करितां अश्वत्थाम्याने दहा उत्तम नाराच बाण धनुष्याला जोडिले व त्याने जणू काय एकच बाणाप्रमाणे ते सर्व सुपुंख बाण सोडिले. त्यापैकी पांच बाणांनी अर्जुन विद्ध झाला व राहिलेले पांच बाण कृष्णाला जाऊन लागले. ह्याप्रमाणे इंद्र-कुबेरसदृश ते सर्वनरवर बाणहत होतांच त्यांच्या देहांतून रुधिराचे प्रवाह वाहू लागले. तेव्हां ते पाहून संपूर्णास्त्रविद्याविशारद अश्वत्थाम्याच्या हस्ते ते पराभव पावून धारातीर्थी पडले असा सर्वांचा समज झाला !

राजा, नंतर कृष्णाने अर्जुनास म्हटले, “ बा अर्जुना, अद्याप तुझ्या हातून ह्या वीरांचा निकाल लागत नाही हे कसे ? अरे, अशी ही चुकी तुझ्या हातून कां व्हावी बरे ? अरे, ह्या वीरांचा वध कर. एखाद्या व्याधीवर औषधोपाय न केल्यास ती जशी अनावर होऊन पीडा

करिते, तशी ह्या अश्वत्थाम्याचा वेळीच निग्रह न केल्यास ह्यापासूनही पीडा झाल्याशिवाय राहाणार नाही, हें लक्षांत असू दे. ” राजा धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुनाने कृष्णास ‘ बरे आहे ’ म्हणून उत्तर दिलें आणि सावधान चित्तानें नेम धरून अश्वत्थाम्यावर क्रोधानें बाण टाकिले. त्या बाणांचीं अग्नें बोकडाच्या कानाच्या अग्रा-प्रमाणें असून अर्जुनानें गांडीव धनुष्यापासून फेंकलेल्या त्या बाणांनीं, चंद्रनाची उठी दिलेले अश्वत्थाम्याचे ते श्रेष्ठ बाहु, तसेंच वक्षस्थळ, मस्तक व अप्रतिम मांड्या हीं विद्ध केलीं, आणि घोड्यांच्या लगामा छेदून टाकून घोड्यां-वर प्रहार केला ! तेव्हां त्या समयीं अश्वत्था-म्याच्या घोड्यांनीं त्याचा रथ रणांगणांतून एकीकडे पुष्कळ दूर नेला !

अश्वत्थाम्याचा पराजय.

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें अश्वत्थाम्याच्या घोड्यांनीं वायुवेगानें अश्वत्थाम्याला रणभूमीतून एकीकडे नेल्यावर, पार्थशरानीं अतिशय विद्ध झालेल्या त्या अश्वत्थाम्यानें नीट विचार करून, पार्थाशीं पुनः युद्ध करावयाचें नाहीं असें ठर-विलें; कारण त्या अंगिरसकुलावतंस अश्व-त्थाम्याचा निश्चय झाला कीं, जिकडे कृष्णार्जुन आहेत तिकडेच जय असावयाचा ! ह्याप्रमाणें मनाचें समाधान करून अश्वत्थाम्यानें घोडे आवरून धरिले; आणि रथ, अश्व व नर ह्यांनीं गजबजून गेलेल्या कर्णाच्या सैन्यांत प्रवेश केला. राजा, अशा प्रकारें अश्वत्थाम्यासारखा अत्यंत विरोधी वीर त्याच्या अश्वानीं रणांगणां-तून काढून एकीकडे नेला असतां जणू काय मंत्रौषधिक्रियांनीं देहांतून व्याधिच काढून नेला असें वाटलें ! राजा, ह्याप्रमाणें अश्वत्थाम्याची वाट लागल्यानंतर मग कृष्ण व अर्जुन हे पुनः संशप्तकांवर चालून गेले. त्या समयीं त्या रथा-

वरील पताका वाच्यानें फडकत असून चक्रांच्या खडखडण्यानें मेघगर्जनेप्रमाणें शब्द होत होता.

अध्याय अठरावा.

—:—

दंडधाराचा वध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर उत्तरेकडे पांडवांच्या सैन्यामध्ये मोठा कोल-हल उत्पन्न झाला; व तो दंडधारानें पांडवां-कडील रथी, नाग, अश्व व पत्ति ह्यांचा वध चालविल्यामुळें उद्भवला आहे, असें त्यांच्या लक्षांत आलें. तेव्हां कृष्णानें ताबडतोब रथ मार्गें वळविला व गरुडाप्रमाणें किंवा वायूप्रमाणें वेगवान् अशा त्या आपल्या अश्वाना हांकीत असतांनाच तो अर्जुनास म्हणाला, “ अर्जुना, मगध देशाचा राजा आपल्या वीर्यशाली द्विरदाच्या योगें मोठा पराक्रमी झालेला आहे. युद्धविद्या व सामर्थ्य ह्यांमध्ये तो भगदत्ता-पेशां मुळींच कमी नाहीं. ह्यास्तव तूं ह्यास आधीं मार व मग पुनः संशप्तकांचा वध कर. ” राजा, हें असें भाषण समाप्त होत आहे तोच कृष्णानें अर्जुनाचा तो रथ दंडधारासमीप आणून भिडविला.

राजा, मगधाधिपति दंडधार हा हस्ति-युद्धांत मोठा पराक्रमी होता. आदित्यादिक नवग्रहांमध्ये केतूच्या ठिकाणीं जसा असह्य प्रताप आहे, तसाच त्याच्या ठिकाणीं होता. ज्याप्रमाणें धूमकेतूच्या योगें सर्व अफाट पृथ्वीला पीडा होते, त्याप्रमाणें त्या सर्व अफाट पांडवसैन्याला त्यापासून पीडा होत होती. त्यानें पांडवांच्या सैन्यांत मोठा दारुण संहार चालविला होता. तो इतका पराक्रमी होता कीं, गजामुराप्रमाणें समर्थ, महान् मेधा-प्रमाणें गर्जणाऱ्या, व शत्रूंचा संहार उडवि-णाऱ्या अशा आपल्या हत्तींवर बसून तो बाण-

वृष्टीच्या बोकें रथ, नाग, अश्व व मनुष्ये ह्यांचे हथारों समुदाय ठार मारीत असे. त्या-प्रमाणेच दंडधाराचा तो अद्वितीय हत्ती वाजी व सारथि ह्यांसहकर्तांच रथांचा व मनुष्यांना पायांखाली तुडवीत असे; आणि कालचक्राप्रमाणे फिरून आपल्या पुढल्या बायांनी व सोडेने दुसऱ्या हत्तींना तो मृत्युमुखी लोटीत असे. त्याप्रमाणेच पोलादी चिखलें व सुंदर अलंकार घातलेल्या वीरांना अश्वसंहित व पाय-दळासहित ठार मारून त्यांना तो दंडधार आपल्या त्या श्रेष्ठ व बलिष्ठ हत्तीकडून देव-नळाप्रमाणे कडकडां तुडवीत असे !

धृतराष्ट्रा, अशा प्रकारच्या त्या हत्तीवर बसून दंडधाराने पांडवसैन्यांत मोठा संहार चालविला असतां, ज्यामध्ये प्रत्येकाच्या टण-स्कारांचे व रथचक्रांच्या नेमीचे घणघणाट होत आहेत; ज्यामध्ये मृदंग, दुंदुभि व पुष्कळ शंख वाजत आहेत; आणि ज्यामध्ये हजारों रथ, अश्व व हत्ती ह्यांची गर्दी आहे, अशा त्या सैन्यामध्ये दंडधाराच्या त्या अपूर्व हत्तीवर अर्जुनाने आपला रथ घातला. तेव्हां दंड-धार अर्जुनावर बारा, कृष्णावर सोळा, व प्रत्येक अश्ववर तीन तीन बाण टाकून मोठ्याने गर्जेला आणि पुनःपुनः मोठमोठ्याने हंसू लागला. तेव्हां अर्जुनाने भल्ल बाण सोडून दंडधाराच्या धनुष्याची दोरी छेदिली, बाण तोडिले, धनुष्य मोडून टाकिले आणि सुंदर ध्वज भंगिला व त्याने दंडधाराच्या हत्तीच्या महातांना व पादरक्षकांना वधिले. तेव्हां ते पाहून त्या मगधाधिपतीला फारच क्रोध आला व त्याने आपला तो शत्रुक मदनोत्त हत्ती वायुवेगाने अर्जुनावर सोडून कृष्णार्जुनांना अत्यंत क्रोध आणण्याकरितां त्यांजवर तोमरांची कृष्टि केली. त्या वेळीं अर्जुनाने गजशुंडे-सारखे शोषणारे ते दंडधाराचे बाहु व पूर्ण-

चंद्राप्रमाणे तेजस्वी असे त्याचे ते मुख ही वस्तुन्याप्रमाणे जलाल बाणांनी एकदम तोडिली, आणि त्याच्या हत्तीवर शतांशधि बाण टाकिले. तेव्हां अंगावर सुवर्णकवच घातलेला तो हत्ती कांचमालेकरांनी चमक-णाऱ्या पार्थबाणांनी व्याप्त झाला असतां, रात्री दावानलाने ज्याच्यावरील वृक्षलता प्रज्वलित झाल्या आहेत अशा पर्वताप्रमाणे शोभू लागला. ह्याप्रमाणे अर्जुनाच्या बाणांनी दंडधाराचा हत्ती ओतप्रोत व्याप्त झाला असतां त्याला दुःसह वेदना होऊं लागल्या; तो मेष-गर्जनेप्रमाणे गर्जे लागला; चालतां चालतां तो मार्गीत चकर खाऊन पडू लागला; व अत्यंत व्याकूळ होऊन वज्रविदारित पर्वताप्रमाणे धाडकून महातासह खाली मरून पडला व त्याच्याबरोबर दंडधाराचेही प्राणोत्क्रमण झाले !

दंडाचा वध.

ह्याप्रमाणे समरांगणांत दंडधार पदतांच त्याचा भाऊ दंड हा कृष्णार्जुनांस मारण्याच्या इच्छेने चाल करून आला. दंडाच्या हत्तीचा वर्ण बर्फासारखा शुभ्र होता, त्यावर सुवर्णाचे हार झळकत होते व त्याचा देह हिमालया-च्या शिखराप्रमाणे प्रचंड होता. नंतर दंडाचे व अर्जुनाचे युद्ध जुंपले. दंडाने सूर्य-किरणांप्रमाणे तेजस्वी अशीं तीन जलाल तोमरें कृष्णावर व पांच अर्जुनावर टाकिली आणि मोठ्याने आक्रोश केला; परंतु अर्जुनाने तसाच आक्रोश करून सुरेंद्र बाणांनी त्याचे दोन्ही बाहु तोडले; व चंदनाची उटी दिलेले, उत्तम अंगदे धारण केलेले, व हातांत तोमरें घेतलेले असे ते भुज हत्तीवरून एकदम खाली पडत असतां जणू काय पर्वताच्या शिखरावरून दोन सुंदर महान् सर्पच खाली पडत आहेत असा भास झाला ! त्याप्रमाणेच अर्जुनाने अर्धचंद्र बाण मारून दंडाचे शिर तोडून पाडले !

आणि त्याबरोबर लगलेंच त्याचें धड रक्त-
बंबाळ होऊन, तेंही, सूर्य ज्याप्रमाणें अस्ता-
चलावरून पश्चिमेस पतन पावतो त्याप्रमाणें,
भूमीवर पतन पावलें! नंतर अर्जुनानें सूर्य-
किरणांसागखे लखलखीत असे श्रेष्ठ बाण
टाकून दंडाचा तो शुभ्रमेघतुल्य महान्
हत्ती विद्ध केला; तेव्हां वज्रानें हत केलेल्या
हिमालय पर्वताच्या शिखराप्रमाणें तो हत्ती
महान् शब्द करीत धरणीवर पडला! तदनंतर
दंडधार व दंड ह्यांच्या सैन्यांत त्यांच्यासारखेच
ने दुसरे प्रबळ वीर हत्तीच्या योगानें
ऋणारे होते, त्यांनीं अर्जुनावर हल्ला केला.
रंतु त्यांचीही वाट दंडधार व दंड ह्यांच्या-
प्रमाणें होऊन ते वीर व त्यांचे ते हत्ती मृत्युमुखी
पतन पावले व त्यामुळें शत्रूच्या त्या अफाट
सैन्याची फळी फुटली! आणि युद्धाची अशी
पर्दी उडाली कीं, हत्ती, घोडे, रथ व पायदळ
यांच्या टोळ्या एकमेकांवर तुटून पडून मोठा
आक्रोश करीत एकमेकांस मारीत अमतां
रणांगणांत मरून पडल्या!

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर देवगण इंद्रास म्हण-
तात त्याप्रमाणें अर्जुनाला त्याच्या सैनिकांनीं
आवरून म्हटलें, “ हे वीरा, ज्याला मृत्यू-
प्रमाणें लोक भीत होते, त्या शत्रूला तूं सु-
दैवानें मारिलें आहेस! जर तूं आज हें मह-
त्कार्य केलें नसतेंस, तर आज आपणांस जो
आनंद झाला आहे तो आपल्या शत्रूस झाला
असता व आपला समूळ उच्छेद झाल्याशिवाय
राहिला नसता! ” राजा, ह्या प्रकारचें पुष्कळ
भाषण सुहृदांनीं केलें तें श्रवण करून अर्जुनाचें
मन मोठें प्रसन्न झालें; आणि तो त्या सुहृद्मंड-
ळीचा यथाशक्ति सत्कार करून पुनः संशप्त-
कांच्या नाशाकरितां तिकडे चालता झाला.

अध्याय एकोणिसावा.

—:०:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, दंडधार
व दंड ह्यांचा वध करून अर्जुन पुनः संशप्तकां-
कडे वळल्यानंतर, अंगारक (मंगळ) ज्याप्रमाणें
वक्रगामी व अतिवक्रगामी झाला अमतां फार
नाश करितो, त्याप्रमाणें त्यानें पुष्कळ संशप्तकां-
वर बाण टाकून त्यांचा फार नाश केला. पार्थाच्या
बाणांनीं हत झालेले वीर, अध्व, रथ व कुंजर
पळें लागले, व्याकूल झाले, सैरावैरा धावूं
लागले, पतन पावले व मेले! त्या समर्थी युद्ध-
भूमीवर शत्रूकडील जे योद्धे अर्जुनाशीं लढत
होते, त्यांजवर अर्जुनानें भल्लबाण, क्षुरबाण,
अर्धचंद्रबाण व वासराच्या दांतांसारखे बाण
सोडून त्यांचे घोडे, घोडेस्वार, सारथि, ध्वज,
धनुष्ये, बाण, हात, हातांतील आयुधे, बाहु व
मस्तकें हीं तोडून टाकिलीं. तेव्हां, माज केलेल्या
धेनुच्या प्राप्तीकरितां एका वृषभावर जसे
दुसरे अनेक वृषभ तुटून पडतात, तसे त्या
अर्जुनावर दुसरे शतावधि व सहस्रावधि शूर
वीर धावून येऊन तुटून पडले. तेव्हां अर्जुना-
चें व त्यांचें जें युद्ध झालें तें पाहून अंगावर
कांटाच उभा राहिला! त्रैलोक्य जिंकून घेण्या-
करितां ज्याप्रमाणें दैत्यांचें इंद्राशीं युद्ध झालें,
त्याप्रमाणेंच तें युद्ध झालें. त्या युद्धांत उग्रा-
युधाच्या पुत्रानें भयंकर सर्पाप्रमाणें तीन बाण
अर्जुनावर टाकिले, पण अर्जुनानें तत्काळ
त्याचें शिर तोडून टाकून धड पृथ्वीवर पाडिलें!
तेव्हां त्या संशप्तकांस फारच त्वेष चढला; व
त्यांनीं चोहोंकडून चवताळून येऊन, वाऱ्यानें
उसळून दिलेले मेघ जसे हिमालय पर्वतावर
वर्षाकालांत जलवृष्टि करितात, तशी त्या संश-
प्तक वीरांनीं अर्जुनावर नानाप्रकारच्या शस्त्रांची
वृष्टि केली. त्या वेळीं अर्जुनानें आपणावर

आलेल्या सर्व अस्त्रांचे अस्त्रांनीच निवारण केले व त्या प्रतिस्पर्धी योद्ध्यांवर बाणांचा वर्षाव करून त्या सर्वांस विद्ध करून टाकिले. त्या समयीं अर्जुनाने बाणप्रहार करून शत्रूंच्या रथांचे विवेणु तोडले, घोडे मारले, सारथि पाडिले, हातांतलीं तूणींरें पंगिलीं, रथ, रथ-चक्रे व ध्वज ह्यांचा चुराडा केला, रथबंधनें, अश्वराशिं व रथांचे आंस हीं कापून टाकिलीं, रथांचे तळ व अश्वबंधनकाष्ठें हीं तोडिलीं, आणि रथांवरील सर्व सामुग्रीचा नाश केला. राजा, अर्जुनाने त्या वेळीं रणांगणांत रथादि-कांचा जो भयंकर विध्वंस केला, तो पाहून जणू काय अग्नि, वायु व जलवृष्टि ह्यांनीं श्रो-मंतांच्या घरांचा विध्वंस केला असतां जो प्रकार दिसतो, तसा प्रकार दिसला ! त्या समयीं अर्जुनाने वज्राप्रमाणें किंवा विद्युल्लतेप्रमाणें प्रखर बाण टाकून हत्तींचीं मर्मस्थले फोडिलीं, तेव्हां वज्रपात झाला असतां किंवा वीज पडली असतां पर्बताच्या शिखरावरील बरें जशीं धाडकन् खालीं पडतात तसे ते हत्ती धाडकन् खालीं पडले ! त्याप्रमाणेंच, अर्जुनाच्या बाणांचा तडाखा सुरू झाला, तेव्हां अनेक घोडे व त्यां-वरील स्वार जिभा बाहेर काढून, आंतडीं तुटून रक्तबंबाळ होऊन, डोळे पांढरे करून व व्याकूल होऊन पटापट मरून पडले ! राजा, सव्यसाचीनें नर, अश्व व नाग ह्यांजवर इतकी बाणवृष्टि केली कीं, त्यांचीं शरीरें ओतप्रोत बाणांनीं व्यास होऊन ते आक्रोश करीत धावू लागले, आणि व्याकूल होऊन अडखळून पतन पावले. राजा, त्या युद्धांत शिळेवर धार लावून तयार केलेले, आणि वज्र, विद्युल्लता किंवा विष ह्यांप्रमाणें घातुक असे अनेक बाण मारून, इंद्राने जसा दानवांचा संहार केला, तसा अर्जुनाने शत्रुसैन्याचा संहार केला. तेव्हां, राजा, बहुमूल्य कवचें व अलंकार अंगावार घातलेले,

नानाप्रकारचीं कवचें परिधान केलेले, व अनेक विष आयुधें घेतलेले असे वीर आपल्या रथां-सुद्धां व ध्वजांसुद्धां रणांगणांत पार्श्वभाषांनीं हत होऊन पडले. राजा, ह्याप्रमाणें अर्जुनाने शत्रुसैन्यांतील वीरांना जिकून धारातीर्थीं पाडिले असतां, ते पुण्यकर्मीं, कुलवान व ज्ञानवान वीर आपले देह भूमीवर ठेवून सत्कर्मांच्या योमें स्वर्गलोकास चालते झाले !

कृष्णाचें भाषण.

धृतराष्ट्रा, नंतर ताबडतोब त्या श्रेष्ठ महा-रथ अर्जुनावर तुझ्या पक्षाकडील नानादेशांचे अधिपति क्रोधायमान होऊन आपआपल्या सैन्यानिशीं धावून गेले. त्यांच्या त्या चतुरंग सैन्यांतील वीरांनीं अर्जुनास ठार मारण्याच्या उद्देशाने त्याजवर विविध अस्त्रांचा भडिमार चालविला; परंतु त्या योधरूप महामेघांनीं बाणरूप जीं जलवृष्टि केली, तिचा तीक्ष्ण बाण मारून अर्जुनरूप वाताने तत्काळ नाश करून टाकिला ! नंतर अश्व, गज, रथ व पत्ति ह्यांनीं व्याप्त असलेला व शस्त्रास्त्रांनीं दुर्भेद्य बनलेला असा तो सेनासागर शस्त्रास्त्रसेतूनें एक-दम ओलांडून जाण्याचा निश्चय करून अर्जुन शत्रुसैन्यावर बाणवर्षाव करीत असतां त्यास कृष्णाने म्हटलें, “ हे अनघा अर्जुना, हा असा खेळत कां बसला आहेस ? अरे, संशसकांचें निर्दलन करून तूं लवकर कर्णवधाचा उद्योग आरंभ. ” राजा, तेव्हां अर्जुनाने कृष्णाचें तें म्हणणें मान्य केलें, आणि उर्वरित असलेल्या संशसकांवर शरवृष्टि करून, इंद्राने जसा दैत्यांचा संहार केला तसा त्यानें मोठ्या आवेशाने त्या संशसकांचा संहार केला. राजा, त्या वेळीं अर्जुना-चें विलक्षण अस्त्रनैपुण्य दृष्टीस पडलें. तो भात्यांतून बाण केव्हां काढितो, धनुष्याला तो केव्हां जोडितो किंवा शत्रूवर तो लागलाच केव्हां सोडितो, हें सावधानचित्ताने पाहाणाऱ्या

लोकांना सुखां समजत नसे. राजा, तें पाहून कृष्णास सुखां आश्चर्य वाटलें. धृतराष्ट्रा, हंसांनी ज्याप्रमाणें सरोवरांत मज्जन करावें, त्याप्रमाणें अर्जुनाचे तें हंसांशुगौर (सूर्यकिरणांप्रमाणें कांतिमान्) बाण शत्रूच्या सैन्यांत प्रवेश करित; अग्नि शत्रूंचा प्राण घेऊन मग रणभूमीवर पतन पावता. त्या समयी तो सर्व प्रकार अवलोकन करून कृष्ण अर्जुनास बोलूं लागला.

कृष्ण म्हणाला:—अर्जुना, ह्या भरतकुलोत्पन्न वीरांचा व ह्या पृथ्वीवरील इतर राजांचा हा महाभयंकर संहार होण्याचें कारण दुर्योधनच होय. हे भारता, मोठमोठ्या धनुर्धरांची रणभूमीवर पतन पावलेली ही सुवर्णपृष्ठ धनुष्यें, त्याप्रमाणेंच त्याचे हे अलंकार व बाणभाते अवलोकन कर. तसेच हिरण्मय पुंखांचे, बांकदार पेऱ्यांचे, तेलपाणी करून चकचकीत बनविलेले, व जणू काय सर्पासारखे दुसऱ्यांचा प्राण घेण्याकरितां मोडिलेले हे नाराच बाण आणि चित्रविचित्र व मुवर्णालंकृत तोमरें इतस्ततः पसरलीं आहेत तीं पहा. तशाच पृष्ठभागीं सोन्याचें कोंदणकाम केलेल्या ह्या खालीं पडलेल्या दाली, हे सुवर्णांनै मदविलेले भाले, ह्या कांषनभूषित शक्ति, जांबूनद सोन्याचे पट्टे बसविलेल्या ह्या अवजड गदा, ह्या हिरण्मय ऋषि (दुधारी तरवारी), हे सुवर्णमंडित पट्टे, सुवर्णखचित दांड्यांच्या ह्या गळून पडलेल्या कुऱ्हाडी, हे परिघ, ह्या गोफणी, ह्या भ्रुशुडी, हे कुणप (एक प्रकारचे भाले), हे पोलादी कुंत (भाले), हीं मोठमोठालीं मुसळें व नानाप्रकारचीं दुसरीं आयुधें हातांत धारण करून जय मिळविण्याकरितां युद्ध करित असतां मरून पडलेले हे जोरदार वीर जणू काय जिवंतच दिसत आहेत हें अवलोकन कर. गदाप्रहारांनीं ज्यांच्या गात्रांचा चुराडा झाला आहे, मुसळांनीं ज्यांचीं मस्तकें फुटलीं आहेत, आणि हत्ती, घोडे,

रथ इत्यादिकांनीं ज्यांना तुडविलें आहे, असे हे सहस्रावधि वीर पहा. शर, शक्ति, ऋषि, तोमर, खड्ग, पट्टे, प्रास, बडगे इत्यादिकांनीं मनुष्यें, गज, अश्व इत्यादिकांचीं शरीरें विदीर्ण होऊन त्यांतून रक्ताचे ओघ चालत असलेल्या ह्या शत्रूंच्या प्रेतांनीं ही रणभूमि कशी आच्छादून गेली आहे, ती पाहिलीसना ? त्याप्रमाणेंच चंदनाची उटी दिलेल्या, अंगदें धारण केलेल्या, उत्कृष्ट अलंकार घातलेल्या, तलत्र परिधान केलेल्या व केयूरें चढविलेल्या बाहूंनीं अंगुलित्राणें घातलेल्या व अलंकार धारण केलेल्या हातांनीं, हत्तीच्या सोंडेप्रमाणें भरदार अशा मांड्यांनीं, आणि मौलीमध्ये श्रेष्ठ रत्नें खोंविलीं आहेत व कर्णांत कुंडलें घातलीं आहेत अशा मस्तकांनीं हें भूमिंतल कसे शोभत आहे तें अवलोकन केलेंस काय ? हे पहा, सुवर्णाच्या लहान लहान घंटा टांगलेले उत्कृष्ट रथ कसे पार भंगून गेले आहेत ! हे पहा, अश्वांच्या अंगांतून रक्ताचे कसे पाट वाहात आहेत ! ही पहा, रथांच्या तळभागांची काय वाट झाली आहे ती ! त्याप्रमाणेंच हे बाणभाते पहा, विविध ध्वजपताका पहा, योद्ध्यांचे महान् महान् शंख पहा, हीं शुभ्र चामरें पहा, हे बाहेर लांब जिभा काढून पर्वतासारखे रणांगणांत पडलेले हत्ती पहा, हीं चित्रविचित्र निशाणें पहा, हे मरून पडलेले गजयोद्धे पहा, हे झूल घातलेले एकत्र जमलेले हत्तींचे समुदाय पहा, आणि हीं हत्तींवर घालण्याचीं चित्रविचित्र आसनें फाटून तुटून गेलीं आहेत तीं पहा ! त्याप्रमाणेंच, जखमी झालेले हत्ती पडले तेव्हां त्यांच्या अंगावरील घंटा कशा पार फुटून गेल्या आहेत त्या पहा ! त्याप्रमाणेंच, ज्यांच्या दांड्यांना वैदूर्य रत्नें जडविलीं आहेत, असे हे अंकुश खालीं पडले आहेत ते पहा, अश्व जोडण्याचे हे सुंदर दंड व

अर्धाच्या छातीवर बांधण्याचे रत्नस्वचीत पट्टे पहा. घोडेस्वारांच्या हातांतील ध्वजांचे शेवटस भरजरी वस्त्रे लावलेली आहेत तीं पहा. चिह्नविचित्र, रत्नजडीत व भरजरी खोगिरे आणि रंकूचमें रणांगणांत पडलीं आहेत तीं अवलोकन कर. राजे लोकांचे चूडामणी, सुंदर सुवर्णहार, छत्रे, चामरें व व्यजनें पडलीं आहेत हीं अवलोकन कर. त्याप्रमाणेंच, सरोवरांत जसे कुमुदांचे व पद्मांचे समुदाय प्रफुल्लित होऊन त्यां सरोवराचा पृष्ठभाग आच्छादित झालेला दिसतो, तसा हा भूप्रदेश—कुंडलांसहित अस्पाण्या, ज्यांवरील श्मश्रु व्यवस्थितपणें राखिली आहे अशा, व चंद्राप्रमाणें किंवा नक्षत्रांप्रमाणें शोभणाऱ्या वीरशिरांनीं आच्छादित झालेला दिसत आहे हें अवलोकन कर. हीं पहा, ह्या रणांगणांत राजे लोकांचीं शिरःकमले कशीं विखरून पडलीं आहेत तीं! जणू काय शरत्कालांत तारागणांनीं विचित्र दिसणाऱ्या व चंद्राचा शुभ्र प्रकाश पडलेल्या आकाशामध्ये दीसिमान् अस्पाणी हीं नक्षत्रमालाच आहे असें वाटतें! अर्जुना, हें सर्व कृत्य ह्या रणांगणांत तूं केलें आहेस व तें तुला अनुरूप आहे! अर्जुना, फार कशाला, हा इतका प्रताप स्वर्गांत त्या इंद्रानें केल्यास त्याचीही धन्यता होईल, मग तुझी होईल ह्यांत वानवा ती कोणती ?

धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें त्या रणभूमीवरील प्रकार कृष्णानें अर्जुनास दाखविला; आणि तो पुढें जात असतां त्यास दुर्योधनाच्या सैन्यांत मोठी गडबड ऐकूं आली. त्यानें शंख, दुंदुभि, मेरी, पणव इत्यादिकांचे शब्द श्रवण केले; आणि रथ, गज, अश्व व शस्त्रे यांचे भयंकर ध्वनि त्याच्या कानांनीं पडले. नंतर कृष्णानें अर्धांना इषारा देऊन वायुवेगानें अर्जुनाचा रथ त्या सैन्यांत नेला, आणि पाहिलें तों, पांडवानें तुझ्या सैन्याला फार पीडा दिली आहे

असें त्यास आढळून आलें व त्या योगें त्यास विस्मय वाटला. राजा आयुष्य समाप्त झालेल्या प्राण्यांना यम जसा ठार मारितो, तसे त्या अस्त्रविद्याविदारद पांडवानें युद्धामध्ये नानाविध बाणांनीं शत्रूकडील ठळक ठळक वीर मारिले होते; आणि गज, बाजी व मनुष्ये ह्यांचीं शरीरे बाणप्रहारांनीं विद्ध करून त्यांस मृत्युमुखांत लोटिलें होतें. राजा, शत्रूकडील महान् महान् वीरांनीं जीं अस्त्रे पांड्यावर सोडिलीं, व ज्या नानाविध शस्त्रांचे प्रहार त्याजवर केले, त्या सर्वांचा प्रतिकार पांड्यानें बाणांनीं केला; व इंद्रानें ज्याप्रमाणें दैत्यांना वधिलें, त्याप्रमाणें पांड्यानें शत्रूला वधिलें.

अध्याय विसावा.

—:०:—

पांड्याचा वध.

धृतराष्ट्र म्हणाला:—संजया, तूं मला ह्या लोकप्रसिद्ध वीरांचें (पांड्य राजांचें) नांव पूर्वीच सांगितलें आहेस, परंतु समरांगणांत त्यानें कोणकोणतीं कामें केलीं, तीं कांहीं सांगितलीं नाहींस; ह्यास्तव त्या महान् योद्ध्याचा पराक्रम तूं आज सविस्तर निवेदन कर; आणि त्याचें युद्धकौशल्य, प्रभाव, प्रमाण, शौर्य व अभिमान हीं सर्व यथास्थितपणें सांग.

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण, अर्जुन व वासुदेव हे सर्व धनुर्विद्येंत मोठे निपुण आहेत, ही गोष्ट तुलाही मान्य आहे; परंतु ह्या सर्व महारथ्यांना पांड्य राजा यःकश्चित् मानीत असे. कोणत्याही राजास आपल्या बरोबरीचा मानण्यास तो राजी नसे. भीष्मद्रोणांशीं आपलें साम्य करणें हें त्यास मुळींच खपत नव्हतें; आणि वासुदेव व अर्जुन ह्यांच्यापेक्षां आपल्या अंगीं न्यूनपणा आहे असें मानण्यास तो बिल-

कूल कबूल नव्हता! असो. सर्व राजांमध्ये श्रेष्ठ अशा तसा महान् शस्त्रधारी पांडच राजानें यमा-प्रमाणें संतप्त होऊन मोठ्या आवेशानें कर्णाच्या सैन्यावर स्वारी केली. तेव्हां कर्णाच्या सैन्यांतील रथ, अश्व व पायदळांतील मोठ-मोठे वीर ह्यांची त्रेधा उडून तें सर्व सैन्य कुंभाराच्या चक्राप्रमाणें गरगरां फिरूं लागलें! वायु ज्याप्रमाणें मेघांना उधळून लावितो, त्याप्रमाणें त्या पांडच राजानें नेमानें बाण मारून कर्णाच्या सैन्यांतील गज, अश्व, सारथि, ध्वज, रथ व आयुधें ह्यांचा नाश करून तें सैन्य उधळून लाविलें! इंद्र जसा वज्रानें पर्व-तांचा चुराडा करितो, तसा पांडचानें गज, गजयोद्धे, पादरक्षक, घोडेस्वार, घोडे, शक्ति, प्रास, तूणीर, आयुधें, ध्वज व पताका ह्यांचा चुराडा करून टाकिला. त्याप्रमाणेंच त्यानें पुलिंद, खस, बालहीक, निषाद, आंध्रक, कुंतल, दाक्षिणात्य व भोज ह्या शूर व रणधुरंधर वीरां-वर बाणवृष्टि करून ह्यांच्या कवचांचा व शस्त्रांचा नाश केला व त्यांस धारातीर्थी पाडिलें; आणि याप्रमाणें पांडचानें कर्णाच्या चतुरंग सैन्याचा रणभूमीवर बाणप्रहारानें संहार चालविला असतां त्या विजयशाली वीरावर युद्धदुर्मद अश्व-त्थामा मोठ्या आवेशानें चाल करून गेला.

नंतर त्यानें मोठ्या गौरवानें हसत हसत पांडच राजास हाक मारून म्हटलें:—हं कमल-नयना भूमिपाला, तूं मोठा कुलीन व ज्ञाता आहेस. तुझें बल व शौर्य अगाध असल्यामुळें तुझी कीर्ति इंद्राप्रमाणें पसरली आहे. तूं आपल्या दीर्घ हस्तांत धनुष्य धारण करून प्रत्यंचेचा टणक्यार व बाणांचा वर्षाव सुरू केलास म्हणजे जणू काय तूं महामेघ शत्रूवर अत्यंत वेगानें जलाची वृष्टिच करीत आहेस असा भास होतो. राजा, तुझ्याशीं युद्ध करण्याला माझ्याशिवाय अन्य वीर योग्य दिसत नाही; कारण तूं एकटा

अनेक रथ, स्रज, अश्व व पत्ति ह्यांचा चुराडा करून टाकितोस. राजा, तुझा हा प्रताप अव-लोकन केला असतां जणू काय अरण्यमध्ये निर्भयपणें संचार करणारा भीमपराक्रमी पंचा-ननच श्वापदांचे कळपच्या कळपच मारून टाकीत आहे, असें वाटतें! राजा, तुझ्या ह्या महान् रथाचा असा कांहीं घोष होत आहे कीं, सर्व पृथ्वी व अंतरिक्ष हीं त्याच्या योगानें दुम-दुमून जाऊन जसा कांहीं वर्षाऋतूच्या अंती मेघच गर्जत आहे असें भासतें! ह्यास्तव, हे पांडचराजा, तुझ्या ह्या अगाध सामर्थ्यामुळें दुसरा कोणी वीर तग धरील असें मला वाटत नाही. म्हणून अशा समयीं त्वां माझ्याशीं युद्ध करावें हेंच विहित होय. ह्याकरितां, भात्यांतून विषारी सर्पाप्रमाणें भयंकर असे बाण बाहेर काढून तूं एकट्या मजवर भडिमार कर; आणि अंधकासुराचें व त्र्यंबकाचें जसें युद्ध झालें, तसें तुझें व माझें युद्ध होऊं दे.

राजा धृतराष्ट्र, ह्याप्रमाणें द्रोणपुत्राचें भाषण श्रवण करून पांड्यराजा मलयध्वज ह्यानें त्यास अनुमोदन दिलें; व नंतर ' आतां तूं माझ्यावर शरवृष्टि सुरू कर ' असें म्हणून अश्वत्थाम्यानें त्या पांड्यराजावर बाण टाकिला असतां तत्काळ त्यानें उलट बाणवृष्टि करून द्रोणपुत्रास विद्ध केलें! तेव्हां अश्वत्थाम्यानें हसत हसत अग्नीच्या ज्वालांप्रमाणें अतिशय प्रखर असे बाण मलयध्वजाच्या मर्मस्थळीं मारिले, नंतर अश्वत्थामा क्रुष्टा नामक दहान्या गतीनें मलय-

१ बाणांच्या गति दहा आहेत. त्यांचें स्पष्टीकरण असे:—(१) उन्मुखी—मस्तकावर बाण मारण्यांत येतो ती. (२) अभिसुखी ज्या गतीनें हृदयावर बाण मारण्यांत येतो ती. (३) तिर्यक्-कुक्षिविदारण करणारी. (४) मंदा—ज्या गतीनें थोडीशी त्वचा मात्र भेदिली जाते ती. (५) गोमूत्रिका—कवच भेदणारी व सव्यापसव्य बाण फेकले जाणारी. (६) ध्रुवा—निश्चयानें नेम साधणारी. (७) स्वलिता-द्वल दाखविण्याकरितां नेम चुकविणारी. (८) यमकाकांता— (पुढे चालू.)

अज्ञापर बाणांचा वर्षाव करू लागला. त्यांनी ती गति घेऊन मोठमोठे सुनीधम, धार दिलेले व भविष्यदक असे नाराच बाण शत्रूवर सोडिले, तेव्हां ते सर्व बाण पांड्यराजानें नऊ निशित (सहाणेवर लावलेले) बाण टाकून छेदिले; आणि आणखी धार बाण सोडून तत्काळ त्यांनी अश्वत्थाम्याच्या अक्षांचा वध केला व त्याच्या धनुष्याची ती अवाढव्य प्रत्यंचाही तोडून टाकिली. राजा धृतराष्ट्रा, नंतर शत्रुसंहारक द्रोणपुत्रानें त्या धनुष्यास दुसरी प्रत्यंचा चढविली, तों इकडे त्याच्या सेवकांनी ताबडतोब त्याच्या रथास उत्कृष्ट अश्व जोडून पुनः त्याचा रथ युद्धार्थ सिद्ध केला. मग अश्वत्थाम्याने पांड्यराजावर सहस्रावधि बाण टाकून दशदिशा व अंतरिक्ष ही बाणांनी व्याप्त करून सोडिली ! त्या समयीं तो महात्मा द्रोणपुत्र बाणांचा एकसारखा भडिमार करित असतां, त्याचे ते बाण कधीही संपणार नाहींत हें पांड्यराजाला माहित असतांही त्या वीरशिरोमणीनें मोठ्या प्रयत्नानें अश्वत्थाम्याच्या त्या बाणांचा विध्वंस केला आणि समरांगणांत रथचक्राच्या दोन रस्त्यांवर निशित बाण टाकून त्यांस ठार मारिलें ! राजा, तेव्हां शत्रूंचें तें युद्धलाघव अवलोकन करून अश्वत्थाम्यानें मंडलाकार बाण फेंकण्यास प्रारंभ केला; आणि पर्जन्याप्रमाणें बाणांची वृष्टि करून पांड्यराजाला झांकून काढिलें ! त्या वेळीं अर्घ्या प्रहराइतक्या अवधीत अश्वत्थाम्यानें, आठ बैल लाविलेले आठ गाडे वाहून नेतील इतकें बाण पांड्यराजावर सोडिले ! राजा, त्या समयीं अश्वत्थाम्याला

(मागील पानावरून पुढें चालू.)

उया गतीनें लक्षांचा भेद करून पुनःपुनः बाण फेंकतां येतात ती. (९) कुष्टा--लक्षाच्या एखाद्या भागावर प्रहार करितां येतो अर्धा. (१०) कुष्टा--उया गतीनें शत्रूंचें मस्तक तोडून त्यास दूर फेंकून देतां येते ती.

इतका शीघ्र चढला होता कीं, जणू काय तो काळाचाही काळ असावा असें भासू लागले ! ज्यांनीं ज्यांनीं त्याच्याकडे दृष्टि फेंकिली, ते सर्व बहुतकरून देहमान विसरून मूर्च्छित पडले ! राजा धृतराष्ट्रा, त्या घनघोर संग्रामांत अश्वत्थाम्यानें शत्रुसैन्यावर अशी बाणवृष्टि केली कीं, जणू काय पर्वत व वृक्ष ह्यांनीं आच्छन्न असलेल्या भूप्रदेशावर शीघ्र ऋतूच्या अंती पर्जन्याचीच वृष्टि होत आहे, असें वाटू लागले ! परंतु असें झालें असतांही पांड्यराजानें वायव्या-खाची योजना करून द्रोणपुत्राची ती बाणवृष्टि संपुष्टांत आणिली व मोठ्या आनंदानें गर्जना करण्यास प्रारंभ केला. ह्याप्रमाणें तो पांड्यराजा गर्जत असतां, चंदनागुरूची पुटें दिलेला व मलयपर्वताच्या चिन्हांनें युक्त असा तो पांड्यराजाचा ध्वज अश्वत्थाम्यानें मोठ्या वीरश्रीनें भंग केला; त्याच्या रथाचे चारही अश्व मारून एका बाणानें सारथि पाडिला; व भेषाप्रमाणें गर्जना करणारे असें त्याचें तें धनुष्य अर्धचंद्र बाणानें तोडून टाकून रथाचे तिलतुल्य तुकडे उडविले; आणि पांड्यराजाच्या सर्व अस्त्रांचें आपल्या अस्त्रांनीं निवारण करून व त्याचीं सर्व आयुधें भंग करून त्यास अगदीं पेंचाटीत घातलें ! राजा धृतराष्ट्रा, त्या समयीं अश्वत्थाम्यानें पांड्यराजाला ठारच मारिलें असतें, परंतु केवळ आणखी युद्ध करण्याची इच्छा मनांत धरून त्यानें ती गोष्ट केली नाहीं !

असो; ह्याप्रमाणें पांड्यराजाचें व अश्वत्थाम्याचें युद्ध चालू असतां इकडे कर्णानें पांडवांच्या गजसेनेवर हल्ला करून पांडवांचें तें अवाढव्य सैन्य पळवून लाविलें. त्यानें पांडवांकडील रथांचे रथ भंग करून त्यांस विरथ केले; आणि हत्ती, घोडे व पायदळ ह्यांजवर बांकदार पेच्यांचे पुष्कळ बाण टाकून त्यांस अगदीं जर्जर करून सोडिले !

राजा धृतराष्ट्र, महापनुर्वर अश्वत्थाम्याने शत्रुसंहारक वरिष्ठेष्ट अशा पांड्यराजाला विरय करून देवळ युद्धालासेने जिवंत ठेविल्या- नंतर, जन्माच्याबरील वीर युद्धांत पतन पावला हेतू असा एक महाबलिष्ठ व शस्त्रा- खांनी सुसज्ज असा हत्ती द्रोणपुत्राच्या शारांनी विद्ध होऊन तत्काळ मोठ्या आवेशाने गर्जना करीत पांड्यराजावर धावून आला. धृतराष्ट्रा, पांड्यराजा मलयध्वज हा हत्तीबरोबर युद्ध करण्यांत मोठा तरबेज असल्यामुळे, सिंह जसा गर्जना करीत पर्वतशृंगावर एकदम आरूढ होतो, तसा तो पांड्यराजा त्या पर्वतशृंगतुल्य द्विपश्रेष्ठावर एकदम आरूढ झाला आणि त्याने मोठ्या आवे- शाने, बळाने व क्रोधाने अंकुशप्रहार करून त्यास क्षीणवीर्य करून सोडिले. नंतर तत्काळ त्या पांड्यराजाने सूर्यकिरणाप्रमाणे उज्ज्वल असे तोमर अश्वत्थाम्यावर टाकून मोठी गर्जना केली आणि 'पडलासरे पडलास !' असे मोठ्या उरुहासाने वारंवार ओरडत त्याने उत्कृष्ट हिरे, उत्तम रत्ने व सुवर्ण यांच्या जडावाने अलं- कारिलेल्या व वस्त्रे, पुष्पे व मौक्तिके ह्यांनी शृंगा- रिलेल्या अशा त्या अश्वत्थाम्याच्या किरीटा- वर मोठ्या वेगाने दुसरे तोमर टाकिले. तेव्हां त्या तोमरप्रहाराबरोबर सूर्य, चंद्र, ग्रह व अग्नि ह्यांप्रमाणे देदीप्यमान असा तो किरीट, वज्राच्या प्रहाराने पर्वताचा कडा जसा धाडकन् धरणीतला- वर पडतो, तसा खाली पडला व फुटून त्याचे तुकडे तुकडे झाले ! राजा धृतराष्ट्रा, पांड्य राजाच्या ह्या कृत्याने अश्वत्थाम्यास अतिशय कोप चढला; नागराजाला पादप्रहार झाला असता तो जसा क्षुब्ध होतो, तसा तो क्षुब्ध झाला; आणि त्याने कालदंडाप्रमाणे अत्यंत भयंकर असे चौदा बाण बाहेर काढिले. त्यांपैकी त्याने त्या हत्तीच्या चार पायांवर चार व शुडेवर एक असे पांच बाण टाकिले; त्याप्रमाणेच

पांड्यराजाच्या दोन बाहूवर दोन व मस्तका- वर एक असे तीन बाण मारिले; आणि राहि- लेले सहा बाण त्याने पांड्यराजाच्या समीप संचार करणाऱ्या सहा महारथांवर सोडिले. राजा, ह्याप्रमाणे अश्वत्थाम्याच्या बाणांचा प्रहार होताच पांड्यराजाचे ते दीर्घ, बळकट, उत्कृष्ट चंदनाची उटी दिलेले व सुवर्ण, रत्ने व हिरे ह्यांचे अलंकार धारण केलेले बाहु भू- तलावर पतन पावले व गरुडाने टाकून दिलेल्या सर्पाप्रमाणे वळवळ करू लागले ! त्याप्रमाणेच पांड्यराजाचे पूर्णशशिबिंबाप्रमाणे शोभणारे आणि क्रोधाने लाल झालेले नेत्र व तरतरित नासिका धारण करणारे असे ते उभयभीती कुंडलांच्या तेजाने शोभणारे मुख, विशाखांच्या अंतर्भागी चंद्रबिंबच झळकावे, तसे झळकू लागले ! राजा, त्या हत्तीवर अश्वत्थाम्याने जे पांच जलाल बाण मारिले होते, त्यांच्या योगाने त्या हत्तीचे सहा भाग झाले; व खुद्द पांड्यराजावर जे तीन बाण टाकले होते त्यांनी त्याचे चार भाग झाले; व जणू काय त्या दहा भागांनी युद्धकुशल अश्वत्थाम्याने दशदेवतांस उद्देशून दहा आहुतीच अर्पण केल्या ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्या युद्धांत पांड्यराजाने अश्व, कुंजर व मनुष्ये ह्यांचा संहार उडवून राक्ष- सांच्या यथेष्ट भोजनाची व्यवस्था केल्यानंतर, स्मशानांतील अग्नि ज्याप्रमाणे प्रेतबलीने तृप्त झाल्यावर सलिलसेचनाने शांत होतो, तसा तो पांड्यराजा शांत झाला ! ह्याप्रमाणे त्या पांड्यराजाचा वध होताच, कृतकृत्य झालेल्या त्या अस्त्रनिपुण द्रोणपुत्रासमीप तुझा पुत्र दुर्यो- धन आससुद्धांसह प्राप्त झाला; व बलीला जिंकल्यानंतर अमरेश्वराने विष्णूचा जसा गौरव केला, तसा त्याने मोठ्या आनंदाने त्या अश्व- त्याम्याचा अत्यंत गौरव केला !

अध्याय एकविंशत्वा.

संकुलयुद्ध.

धृतराष्ट्र म्हणाला:—संजया, अश्वत्थाम्याने पांडवराजाचा वध केला व त्या महापराक्रमी कर्णाने पांडवांचे सर्व सैन्य उधळून लाविले, तेव्हां मग समरांगणांत अर्जुनाने काय केले बरे ? बा संजया, अर्जुन हा मोठा बलवान असून सर्व शस्त्राखांत पारंगत आहे; व कोणत्या समयास काय केले पाहिजे हे त्यास उत्कृष्ट कळत असून, भगवान् शंकराने त्यास वर दिला आहे की, कोणत्याही प्राण्यापासून तुझा पराभव होणार नाही. म्हणून ! संजया, मला त्यां शत्रुसंहारक धनंजयाचे फार भय वाटत आहे. ह्याकरितां त्यानें रणभूमीवर काय काय केले तें मला निवेदन कर.

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, पांडवराजा पतन पावतांच कृष्णाने मोठ्या त्वरेनें अर्जुनाला हिताची गोष्ट सांगितली. तो म्हणाला, “ बा अर्जुना, मला आज युधिष्ठिर राजा व इतर पांडुपुत्र कोठे दिसत नाहीत. ते सर्व युद्धपराङ्मुख होऊन पळून गेले असें वाटते; परंतु ते जर परत आले असते, तर शत्रूंचे हे अबाढव्य सैन्य खर्चात भग्न झाले असतें. पहा, अश्वत्थाम्याच्या संकल्पानुरूप कर्णाने संजयांचा वध केला; आणि त्याप्रमाणेंच अश्व, रथी व नाग ह्यांचा मोठा संहार उडविला ! ” राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें युद्धभूमीवरील सर्व प्रकार वीर वासुदेवाने अर्जुनास निवेदन केला असतां, अर्जुनाने त्या सर्वांचा विचार केला; व धर्मराजाला घोर भीति उत्पन्न झाली आहे, असें पाहून “ हे हृषीकेशा, आतां अगदी विलंब करूं नको; रथ चालव. ” असें त्यानें कृष्णास सांगितले. तेव्हां कृष्णाने अश्वास इशारा करितांच तो अजिंक्य रथ लागलाच चालू होऊन

शत्रूंची येऊन भिडला व पुनः मोठें दारुण युद्ध मातले ! त्या ठिकाणीं फिरून कौरवपोडवांकडील धीरवीर एकत्र मिळाले. त्यांत भीमसेन-प्रभृति पांडव व कर्णप्रभृति कौरव असून त्या सर्वांचा असा कांहीं निकराचा संग्राम सुरू झाला कीं, त्यांच्या योगें यमाच्या राष्ट्रांतील लोकांची संख्या भराभर वाढू लागली ! त्या समयीं ते सर्व वीर परस्परांना ठार मारण्याच्या हेतूनें धनुष्यें, बाण, परिघ, खड्ग, पट्टे, तोमर, मुसळें, भ्रुशुडि, शक्ति, ऋष्टि, कुऱ्हाडी, गदा, प्रास, धार दिलेले भाले, भिदिपाल (गोफणगुंडे) व मोठमोठाले अंकुश घेऊन एकमेकांवर धावून गेले. त्या वेळीं रथचक्रांचा, बाणांचा व प्रत्ये-चेचा असा कांहीं महान् शब्द होऊं लागला कीं, त्याच्या योगानें दिशा, उपदिशा, अंतरिक्ष, स्वर्ग व पृथ्वी हीं सर्व दुमदुमून गेलीं. तेव्हां त्या महान् शब्दानें, युद्धभूमीवर प्राप्त झालेल्या वीरांस अतिशय वीरश्री उत्पन्न झाली; आणि शत्रूस मारून घोर कलहाची समाप्ति करावी असें मनांत आणून ते मोठ्या आवेशानें परस्परांशीं लढू लागले. त्या वेळीं ज्या, तलत्रें, धनुष्यें, गर्जणारे कुंजर, पदाति व पतन पावणारीं मनुष्यें ह्यांचा महान् शब्द सर्वत्र भरून गेला. ते शूर वीर गर्जना करीत एकमेकांशीं लढत असतां नानाविध शस्त्राखांचा असा कांहीं भयंकर ध्वनि उठत होता कीं, तो ऐकून सैनिकांना अत्यंत भीति उत्पन्न झाली, त्यांच्या तोंडचें पाणी पळालें, व ते पतन पावू लागले ! राजा, ह्याप्रमाणें समरांगणांत त्या योद्ध्यांचा महान् घोष चालू असतां व ते योद्धे शस्त्राखांचा वर्षाव करीत असतां अधिरथाचा पुत्र वीर कर्ण ह्यानें बाणांची वृष्टि करून पांडवांकडील पुष्कळ वीरांना धारातीर्थी पाडिले. त्या समयीं त्यानें बाणांचा भडिमार करून अश्व, सारथि व ध्वज ह्यांसमवेत वीस पांचालवीरांना

यमपुरीचा मार्ग दाखविला. तेव्हां तत्काळ पांडवांकडील महान् महान् वीर्यशाली योद्धे मोठ्या झपाट्याने अस्त्रांची वृष्टि करित कर्णावर धावत येऊन त्यांनी त्यास चोहोंकडून वेढिलें. नंतर तेथें मोठें घोर युद्ध चालू झालें. त्यांत कर्णानें सभोंवताली वेदा दिलेल्या पांडवसैन्यावर बाणांचा वर्षाव करून त्याची अशी दाणादाण उडविली कीं, जणू काय हा महान् गजसारसादिक पक्षिगणांनीं व कमलांनीं व्याप्त असलेल्या सरोवरांत प्रविष्ट होऊन तेथें मोठा अनर्थ उडवीत आहे असें भासूं लागलें! पांडवसैन्याच्या मध्यभागी प्रविष्ट झालेल्या राधेयानें भोंवतालच्या पांडववीरांवर उत्तम धनुष्याच्या प्रत्यंचेपासून निशित बाणांची वृष्टि करून त्यांचीं मस्तकें दूर उडवून देण्यास आरंभ केला, तेव्हां वीरांच्या दाली व चिलखतें छिन्नभिन्न होऊन वृथ्वीवर गळून पडूं लागली. राजा, कर्णाचे बाण इतके कांहीं उग्र व जलाल होते कीं, एका बाणासरसाच शत्रूचा निःपात उडे. त्याची बाण टाकण्याची पद्धतिही विचित्र होती. सारथि ज्याप्रमाणें अश्वंवर चाबुकांचे प्रहार करितो, त्याप्रमाणें कवच, देह व प्राण ह्यांचा संहार उडविणारे ते आपले बाण धनुष्याच्या प्रत्यंचेपासून तो असे कांहीं युक्तीनें सोडी कीं, त्यांच्या योगें शत्रूंकडील वीरांचें तलत्र विद्ध होऊन त्यांचे हात एकदम उतरावे! राजा, कर्णाचें व पांडवसेनेचें ह्याप्रमाणें भयंकर युद्ध चाललें असतां, तावडींत सांपडलेल्या मृगगणांना सिंह ज्याप्रमाणें मोठ्या वेगानें मारून टाकितो, त्याप्रमाणें कर्णानें आपल्या बाणांच्या तावडींत सांपडलेल्या पांडवयोद्ध्यांना, सृंज्यांना व पांचालांना मोठ्या वेगानें मारून टाकिलें! तेव्हां पांचालांचा राजा, द्रौपदीचे पुत्र, नकुलसहदेव व युयुधान हे सर्व एकत्र होऊन कर्णावर चाल करून आले;

आणि मोठा घोर संग्राम सुरू झाला. त्या समयीं कौरव, पांडव व पांचाल हे पुनः आपल्या प्रिय प्राणांची पर्वा न धरितां एकमेकांवर प्रहार करूं लागले. त्या वीरांच्या अंगांत कवचें असून त्यांच्याबरोबर शस्त्रास्त्रांची सिद्धता उत्तम होती; आणि त्यांच्या मस्तकांवर शिरस्त्राणें असून अंगावर भूषणें होती. त्या महाबलिष्ठ वीरांपैकीं कित्येकांच्या हातांत गदा, कित्येकांच्या हातांत मुसळें व कित्येकांच्या हातांत परित्र होते. जणू काय कालदंडच अशीं तीं आयुधें हातांत उच घेऊन ते वीर मोठ्या आवेशानें ओरडत, शत्रूंना आह्वान करित व स्वतःची बदाई मारीत मोठ्या वेगानें एकमेकांवर तुटून पडले! नंतर त्यांचें घनघोर युद्ध जुंपलें. तेव्हां ते परस्परांवर असे घाव घालूं लागले कीं, कित्येकांच्या शरीरांतून रक्ताचे पाट चालू झाले; त्यांचीं आयुधें गळालीं; डोळे फुटले; मस्तकें भग्न झालीं, मज्जा बाहेर आली; दांतांच्या कवळ्या उग्रव्या पडल्या; आणि त्यांचीं मुखें रक्तबंबाळ झाल्यामुळे डाळिंबासारखीं लाल दिसूं लागलीं; आणि ते वीर शस्त्रास्त्रांनीं परिवेष्टित होतसात, कंठांत प्राण आणून केवळ जिवंत राहिले आहेत, असें दिसलें! त्या वेळीं त्या महान् युद्धांत कित्येकांनीं संक्रुद्ध होऊन दुसऱ्या वीरांस कुऱ्हाडींनीं तोडिलें; पट्ट्यांचे व तरवारीचे दुसऱ्यांवर वार केले; शक्ति व गोफणगुंडे दुसऱ्यांवर फेंकिले; आणि नगर, प्रास, तोमर इत्यादिकांनीं दुसऱ्यांस विद्ध करून रणांगणांत पाडिलें. राजा, त्या समयीं एकमेकांच्या हस्तें मरून पडलेल्या योद्ध्यांच्या रक्तबंबाळ शरीरांतून रक्ताचा असा कांहीं लोट वाहूं लागला कीं, जणू काय तोडून टाकलेल्या रक्तचंदनाच्या खोडांतून सुस्निग्ध व आरक्त रसच बाहेर पडत आहे, असा भास झाला! राजा, तेव्हां समरभूमीवर असा संमर्द

मातळा की, हजारों रथांनीं हजारों रथांचा
 चुराडा केला; हत्तींनीं हत्ती मारून टाकिले;
 मनुष्यांनीं मनुष्यांस वधिले; व अश्यांनीं
 अश्यांचा विध्वंस उडविला. त्याप्रमाणेंच
 योद्ध्यांनीं क्षुर, मल्ल व अर्धचंद्र बाणांचा भडि-
 मार करून ध्वज, मस्तकें, छत्रें, गजगुंडा,
 मनुष्यांचे भुज वगैरे तोडून टाकिले; आणि
 मनुष्यें, कुंजर, अश्व व रथ ह्यांचा संहार केला.
 राजा, त्या युद्धांत घोडेस्वारांनीं मारिलेले शूर
 वीर, व शुंडा तुटलेले हत्ती हे पताका व ध्वज
 ह्यांसहवर्तमान पर्वताच्या कड्याप्रमाणें रण-
 भूमीवर पतन पावले. राजा, त्या युद्धांत पाय-
 दळांनीं मोठे विलक्षण युद्ध केले. त्यांनीं
 हत्ती, घोडेस्वार व रथ ह्यांवर चाल करून
 पुष्कळांचा संहार उडविला व पुष्कळांस घायाळ
 करून मरणोन्मुख केले. ह्याप्रमाणें पायदळांनीं
 हत्ती व घोडेस्वार ह्यांची चोहोंकडे दुर्दशा
 करून टाकिली असतां उलट घोडेस्वारांनींही
 पायदळांवर हल्ले केले व त्यांस रणांगणांत ठार
 करून टाकिले. राजा, त्या वेळीं रणभूमीवरील
 जो कांहीं हृदयद्रावक देखावा दृष्टीस पडला
 त्याचें काय वर्णन करावें ! रणांगणांत पतन
 पावलेल्या वीरांचीं मुखें व गात्रें कोमेजलेल्या
 कमळांसारखीं व पुष्पमालांसारखीं दिसूं लागलीं.
 हत्ती, घोडे व मनुष्यें ह्यांचे ते सुंदर व अति-
 शय कांतिमान् देह मळकट वस्त्रांप्रमाणें दिसूं
 लागून पहाणाऱ्यांस त्यांपामून अत्यंत चिळस
 वाटूं लागला !

अध्याय बाविसावा.

—:०:—

संकुलयुद्ध.

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर
 तुझ्या पुत्रांने आज्ञा केल्यावरून मोठमोठे महात
 आपआपल्या हत्तीनिशीं मोठ्या क्रोधानें वृष्ट-

द्युम्नाचा वध करण्याच्या इच्छेनें पार्षतावर
 (धृष्टद्युम्नावर) चाल करून गेले. त्या समयीं
 पूर्वेकडील व दक्षिणेकडील देशांतील महान्
 महान् गजयोद्धे आणि त्याप्रमाणेंच अंग, वंग,
 पुंड्र, मागध, ताम्रलिप्तक, मेकल, कोशल, मद्र,
 दशार्ण, निषध व कलिंग ह्या देशांतले गजयुद्धांत
 कुशल असे वीर ह्या सर्वांनीं पांचालांच्या सेनेवर
 शर, तोमर व नाराच बाण यांची पर्जन्यधारे-
 प्रमाणें वृष्टि केली. तेव्हां त्या योद्ध्यांनीं शत्रूंचा
 विध्वंस करण्याकरितां पायांच्या टांचा, अंगठे
 व अंकुश ह्यांनीं प्रेरणा देऊन जे हत्ती पांचाल-
 सैन्यावर घातले त्यांजवर धृष्टद्युम्नानें नाराच
 बाण टाकून त्यांस आच्छादून काढिले. त्यानें
 त्या पर्वतप्राय अशा हत्तींना कोणाला दहा,
 कोणाला सहा व कोणाला आठ असे निशित
 बाण मारून त्या सर्वांस अगदीं विद्ध केले,
 तरी अस्ताव्यस्त न होतां, त्यांनीं धृष्टद्युम्ना-
 च्या भोंवतालीं जो वेढा दिला होता, तो तसाच
 राखिला. तेव्हां, ज्याप्रमाणें सूर्यास मेघांनीं
 झांकून काढावें, त्याप्रमाणें धृष्टद्युम्नास त्या
 हत्तींनीं झांकून काढिले होतें. ह्यास्तव, धार
 दिलेलीं जलाल शस्त्रें हातांत घेऊन पांडववीर व
 पंचालवीर धृष्टद्युम्नास साह्य करण्याच्या हेतूनें
 गर्जना करीत त्या हत्तींच्या समुदायावर चाल
 करून गेले. नंतर त्यांनीं त्या हत्तींवर शस्त्रा-
 खांचा एकसारखा भडिमार सुरू केला आणि
 रणवाद्यें व प्रत्यंचेचे टणत्कार ह्यांच्या तालावर
 ते वीर नृत्य करूं लागले ! ह्याप्रमाणें उभयपक्षांची
 अगदीं लगट उडाली असतां नकुल, सह-
 देव, द्रौपदीपुत्र, प्रभद्रक, सात्यकि, शिखंडी व
 वीर्यवान् चैकितान ह्यांनीं, मेघ जसे पर्वतावर जल-
 वृष्टि करितात, तशीं भोंवतालून त्या कौरव-
 सैन्यावर शरवृष्टि केली. इकडे म्लेच्छांनीं धृष्ट-
 द्युम्नावर सोडिलेले हत्ती चवताळून गेले व
 त्यांनीं आपल्या सोडांनीं मनुष्यें, रथ व हत्ती

ह्यांस ओढून घेऊन पायांखाली तुडवून ठार मारिले; त्याप्रमाणेच त्यांनी कित्येकांना दांत भोसकून वधिले आणि कित्येकांना सोडांनी वर उचलून आपटून मारिले; त्यांनी कित्येकांना दांत भोसकले तेव्हां ते त्या दांतांबरोबर वर उचलले गेले; व मग वरून खाली पडले तेव्हां प्रेक्षकांचीं हृदये फाटली !

ह्याप्रमाणे त्या हत्तींनी अनर्थ चालविला असतां सात्यकीने अग्रभागी. वंगराजाचा हत्ती अवलोकन करून त्यावर उप्रवेगाने नाराच बाण टाकिला; आणि त्याची मर्मस्थळें भेदन करून त्यास खाली पाडिले. राजा, सात्यकीने जो हा बाण त्या हत्तीवर टाकिला, तो त्या वंगराजावरच बसला असता, पण त्याने तो चुकविला; परंतु त्याचा हत्ती रणांगणांत पडतां पडतां वंगराजा त्या हत्तीवरून उडी टाकू लागला, तेव्हां सात्यकीने त्याच्या वक्षस्थळी नाराच बाण मारिला व त्यासरसा तो वंगराजाही भूमीवर पतन पावला ! इकडे पुंडुराजा धृष्टद्युम्नावर चाल करून येत असतां त्याचा तो महान् हत्ती पाहून तो जणू काय चालगारा पर्वतच आहे, असा भास झाला. सहदेवाने त्या हत्तीवर तीन नाराच बाण नेम धरून मारिले आणि त्याच्यावरील पताका, ध्वज, महात व कवच ह्या सर्वांचा विध्वंस करून त्याने त्या हत्तीस वधिले, आणि नंतर तो अंगाधिपतीवर धावून आला. ह्या समयीं नकुलाने सहदेवाला थांबवून धरिले व आपण स्वतः यमदंडाप्रमाणे प्रवर असे तीन नाराच बाण अंगाधिपतीवर व शंभर बाण त्याच्या हत्तीवर टाकिले. नंतर तेथे अंगाधिपति व नकुल ह्यांचा भयंकर संग्राम सुरू झाला. अंगाधिपतीने सूर्यकिरणांप्रमाणे प्रज्वलित अशी आठशें तोमरे नकुलावर टाकिली; परंतु नकुलाने प्रत्येकाची तीन तीन खंडे करून त्या

सर्वांचा विध्वंस उडविला ! नंतर प्रंडुपुत्राने त्या स्नेच्छ अंगाधिपतीचे शिर अर्धचंद्र बाणाने उडविले आणि तो आपल्या हत्तीसहवर्तमान रणांगणांत मरून पडला ! ह्याप्रमाणे गजयुद्धांत निपुण असा तो तरुण अंगाधिपति रणभूमीवर पतन पावला, तेव्हां ताबडतोब सर्व अंगदेशीय गजयोद्धे आपआपल्या हत्तींवर बसून नकुलावर चाल करून आले. त्या समयीं त्यांच्या त्या हत्तींवर पताका फडकत असून त्या हत्तींच्या शुंडा सुंदर दिसत होत्या; आणि तशाच त्यांच्या त्या हत्तींवर भरजरी मृत्ती व झालरी असून ते हत्ती प्रदीप्त पर्वताप्रमाणे वेदीप्यमान् दिसत होते. राजा, अंगदेशीय योद्ध्यांनी नकुलावर चाल करितांच मेकल, उत्कल, कालिंग, निषध व ताम्रलिप्तक ह्या देशच्या वीरांनीही तेंच केले. त्या सर्व वीरांनी नकुलाचा प्राण घेण्याच्या उद्देशाने त्याजवर शर व तोमर ह्यांची वृष्टि चालविली; आणि दिवाकरास ज्याप्रमाणे मेघसमुदाय झांकून टाकितो, त्याप्रमाणे त्यांनी नकुलास झांकून टाकिले. तेव्हां पांडवसैन्याची फारच लगबग उडाली; आणि पांडव, पांचाल व सोमक हे तत्काळ नकुलाच्या साहाय्याकरितां त्याच्या समीप प्राप्त झाले. मग तेथे रथी व गजयोद्धे ह्यांचे घोर युद्ध प्रवर्तले. रथ्यांनी सहस्रावधि बाण व तोमरे हत्तींवर सोडून हत्तींची गंडस्थळे, विविध मर्मस्थाने, दंत व अलंकार हे छिन्नभिन्न करून टाकिले. त्यांपैकीं आठ महान् हत्तींवर सहदेवाने चौसष्ट अत्यंत प्रवर बाण टाकिले; आणि त्यांस तत्काळ त्यांवरील योद्ध्यांसुद्धां रणभूमीवर पाडिले ! त्याप्रमाणेच दुसऱ्या पुष्कळ हत्तींवर कुलदीपक नकुलाने उत्कृष्ट धनुष्याच्या साहाय्याने सरळ गतीने चालणारे नाराच बाण नेम धरून मारिले व त्यांचा संहार उडविला. नंतर पांचाल, शैनेय, द्रौपदेय, प्रभद्रक व शिखंडी

ह्यांनी शत्रुकडील महान् महान् हर्तींवर अशी शरकृष्टि केली कीं, ते द्विरदरूप पर्वत पांडुवीररूप अंबुधरांच्या बाणरूप जलधारांनीं विदीर्ण होऊन जणू काय वज्रप्रहारांनींच फुटून जात आहेत, असें भासूं लागले ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें तुझ्या पक्षाकडील महान् महान् हर्तींचा पांडवांकडील महान् महान् रथ्यांनीं नाश केला, तेव्हां नंदीचें तीर विदीर्ण झालें असतां ज्याप्रमाणें तींतील उदक सैरासैरा धावूं लागतें, त्याप्रमाणें तुझें सैन्य सैरासैरा धावूं लागलें. राजा, ह्याप्रमाणें तुझें सैन्य बेहोष होऊन पळूं लागलें तेव्हां पांडवांच्या सैन्यानें त्याची अगदींच दाणादाण करून सोडिली व पुनः ते वीर कर्णावर चाल करून गेले.

अध्याय तेविसावा.

—:०:—

सहदेव व दुःशासन हांचें युद्ध.

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, सहदेव हा पूर्वी सांगितल्याप्रमाणें अत्यंत क्रोधायमान होऊन शरवृष्टीनें तुझें सैन्य जाळूं लागला असतां त्यावर दुःशासन धावून गेला व मग त्या दोघां भ्रात्यांचें घोर युद्ध चालू झालें; तेव्हां तें पाहून महारथ्यांनीं सिंहानाद केला व ते आपलीं वस्त्रे फडकावूं लागले. राजा, त्या समयीं तुझ्या पुत्रानें क्रोधानें धनुष्य धारण करून त्या महाबलवान् सहदेवाच्या वक्षस्थळावर तीन बाण मारिले. नंतर सहदेवानें तुझ्या पुत्रावर नाराच बाण टाकून त्यास विद्ध केलें व लागलेच आणखी सत्तर बाण त्याजवर व तीन बाण त्याच्या सारथ्यावर सोडिले. तेव्हां दुःशासनानें त्या घोर रणांत सहदेवाचें धनुष्य छेदिलें आणि सहदेवाच्या बाहूवर व उरावर व्याहात्तर बाण मारिले. नंतर सहदेव चवत्सलला व त्यानें त्या भयंकर युद्धांत खड्ग धारण करून तें जोरानें वेग देऊन ताबडतोब

तुझ्या पुत्राच्या रथावर फेंकिलें. तेव्हां त्या खड्गानें दुःशासनचें चाप, प्रत्यंचा व बाण हीं तुटलीं; व मग आकाशांतून सर्प जसा खाली पडावा तसें तें खालीं भूमीवर पडलें. ह्याप्रमाणें दुःशासनाच्या धनुष्याची वाट लाविल्यानंतर सहदेवानें पुनः दुसरें धनुष्य धारण केलें; आणि त्या प्रतापशील वीरानें प्राणान्त करणारा बाण दुःशासनावर सोडिला. तेव्हां तो यमदंडतुल्य जलाल बाण आपणावर येत आहे असें अवलोकन करून तुझ्या पुत्रानें त्याजवर पाजविलें खड्ग हाणून त्याचे दोन तुकडे केले, व तें खड्ग मोठ्या त्वरेनें सहदेवावर फेंकून त्या बलिष्ठ वीरानें दुसरें धनुष्य व बाण हातीं घेतला. इकडे दुःशासनाचें तें खड्ग आपणावर येत आहे असें पाहून सहदेवानें त्याजवर एकदम निशित बाण टाकिले व सहज हंसत हंसत त्याचा विध्वंस उडविला ! नंतर, राजा, त्या घोर संग्रामांत तुझ्या पुत्रानें चौसष्ट बाण ताबडतोब सहदेवाच्या रथावर फेंकिले; परंतु ते वेगानें येत असतां त्यांतील प्रत्येकावर पांच पांच बाण टाकून सहदेवानें त्या सर्वांचा निकाल उडविला. ह्याप्रमाणें तुझ्या पुत्राच्या त्या भयंकर बाणांचें निवारण केल्यानंतर सहदेवानें तुझ्या पुत्रावर पुष्कळ बाण सोडिले; परंतु त्यांतील प्रत्येकावर तीन तीन बाण सोडून तुझ्या पुत्रानें त्या सर्वांचा विध्वंस केला व पृथ्वीलाही भेदन करून जाईल अशी मोठी प्रचंड गर्जना ठोकली ! नंतर दुःशासनानें त्या रणांत पांडुसुताला विद्ध करून त्याच्या सारथ्यावर नऊ बाण सोडिले. तेव्हां, हे राजा, तो प्रतापशाली सहदेव पुनः संतापला व त्यानें मृत्युकालांतकाप्रमाणें घोर असा शर महान् धनुष्याला लावून तें धनुष्य ओढिलें आणि तुझ्या पुत्रावर तो सोडिला ! राजा, त्या समयीं तो शर तुझ्या पुत्राच्या बळकट कवचाचें विदारण करून त्याच्या शरीरांत घुसला; व तो

त्यांतून बाहेर पडून, पन्नग जसा वारुळांत प्रविष्ट होतो, तसा भूगर्भांत प्रविष्ट झाला ! राजा, त्या वेळीं तुझा तों महारथ पुत्र मूर्छित पडला ! आणि त्याची ती अवस्था अवलोकन करून त्याचा सारथि धाबूरून गेला व त्याने आपणावर शत्रूकडील जलाल बाणांची वृष्टि होत असतांही दुःशासनाचा तो रथ एकीकडे नेला ! राजा, ह्याप्रमाणें पांडुनंदन सहदेवानें तुझ्या पुत्राचा पराजय केला, व नंतर त्याची व दुर्योधनाच्या सैन्याची गांठ पडून मग त्यानें दुर्योधनाच्या सैन्याची अगदीं दाणादाण उडविली ! सारांश, राजा, ज्याप्रमाणें मनुष्यानें क्रोधायमान होऊन मुंग्यांच्या समुदायाचें निर्दलन करावें, त्याप्रमाणें त्या सहदेवानें कौरवीसेनेचें निर्दलन केलें !

अध्याय चोविसावा.

—:—

कर्णयुद्ध.

नकुलाचा पराभव.

संज्ञय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, दोन्ही दळांचें समरांगणांत निकराचें युद्ध होऊन पांडुपुत्र नकुल हा मोठ्या आवेशानें कौरवांच्या सैन्याची दाणादाण करित असतां कर्णानें क्रोधायमान होऊन त्याला प्रतिबंध केला. तेव्हां नकुल हंसत हंसत कर्णास म्हणाला, “ कर्णा, बहुत काळांनंतर दैवतांच्या कृपेनें मी तुझ्या दृष्टीस पडलों, ही मोठी उत्तम गोष्ट होय; हा मी तुझ्यासमोर युद्धार्थ सिद्ध आहे. पहा, अधमा, ह्या सर्व अनर्थांचें आणि मूळ वैराचें व कलहाचें कारण तूंच होय. बाबा, तुझ्या अपराधामुळेच आपसांत युद्ध लागून कौरवांपांडवांचा हा आज भयंकर संहार चालला आहे. ह्याकरितां आज

मी तुला रणभूमीवर वधून कृतकृत्य होतों आणि कलहाचें बीज नाहीसें करितों ! ”

राजा धृतराष्ट्रा, नकुलाचें हें भाषण श्रवण करून सूतपुत्र कर्णानें नकुलास उत्तर दिलें, “ नकुला, राजपुत्रास उचित असेंच तुझे हें भाषण आहे; आणि शिवाय तुझ्यासारख्या धनुर्धराला हें अधिकच शोभत आहे ! ना वीरा, तूं आतां मजवर प्रहार कर. तुझा पराक्रम पहावा, अशीच माझी इच्छा आहे. शूरा, रणभूमीवर आधीं पराक्रम गाजव आणि मग त्याची बदाई मार ! बाळा, बडबड करून न दाखवितां शूर पुरुष युद्धांत पराक्रम करितात; ह्यास्तव तुझ्या अंगीं जें कांहीं सामर्थ्य असेल, त्या सर्व सामर्थ्यानें तूं माझ्याशीं युद्ध कर; मी आज तुझा दर्प उतरून टाकितों ! ”

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें भाषण करून कर्णानें तत्काळ नकुलावर बाणांचा भडिमार आरंभिला आणि त्यास ज्याहात्तर बाणांनीं विद्ध केलें. तेव्हां तत्काळ नकुळानें सर्पाच्या विषाप्रमाणें जलाल असे ऐशीं बाण कर्णावर सोडिले; तें पाहून महाधनुर्धर कर्णानें नकुलाचें धनुष्य छेदून टाकिलें; आणि सहाणेवर धार लावून तयार केलेले तीस स्वर्णपुंख बाण सोडून त्यास जर्जर केलें. तेव्हां ते बाण नकुलाचें कवच भेदून आंत घुसले; व सर्प ज्याप्रमाणें भूमीचें भेदन करून भूगर्भातील उदक पितात, त्याप्रमाणें नकुलाच्या देहाचें भेदन करून त्यांतील रुधिर प्याले ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें कर्णानें नकुलाची अवस्था करून टाकिली असतां नकुलानें दुसरें महाप्रचंड हेमपृष्ठ धनुष्य धारण केलें आणि कर्णावर सत्तर व त्याच्या सारख्यावर तीन असे एकंदर ज्याहात्तर बाण टाकिले; आणि क्रोधायमान होऊन प्रखर अशा क्षुरप्र बाणानें कर्णाचें धनुष्य तोडून त्या छिन्नधन्या कर्णावर तीनशें बाण टाकिले व सर्व

जगांत विख्यात अशा त्या महारथाला (कर्णाला) त्या वीर नकुलाने हंसत हंसत जर्जर करून सोडिले! आणि, राजा, अशा प्रकारे पांडुपुत्राने कर्णाची दुर्दशा केलेली पाहून समरांगणातील सर्व रथ्यांना व अंतरिक्षातील सर्व देवतांना मोठा विस्मय वाटला !

नंतर कर्णाने दुसरे धनुष्य धारण करून नकुलाच्या खवाट्यांत पांच बाण मारिले; व ते त्या स्थळीं रुतून राहिले असतां स्वकिरणांनीं भुवनांत प्रभा पसरणाऱ्या सूर्याप्रमाणे तो शोभू लागला. तेव्हां नकुलाने कर्णावर सात बाण टाकिले आणि पुनः त्याच्या धनुष्याची टोंके छेदिलीं. त्या वेळीं कर्णाने दुसरे अधिक वेगवान् असे धनुष्य घेतले आणि नकुलाच्या भोंवतालीं सर्व दिशांस बाणांनीं आच्छादित केले. ह्याप्रमाणे कर्णाने बाणांचा भडिमार चालवून नकुलाला एकदम झांकून काढिले असतां, त्या महारथ पांडुपुत्राने तत्काळ आपल्या बाणांनींच ते सर्व बाण तोडून टाकिले. राजा, नंतर आकाशांत सर्वत्र बाणांचे जाळें पसरून जणू काय काजव्यांचे समुदाय चोहोंकडे पसरत आहेत असे भासले. ह्याप्रमाणे जिकडे तिकडे बाणच बाण होऊन अंतरिक्ष आच्छादून गेले असतां, टोळधाड आली असतां जसा अंधार पडतो, तसा सर्वत्र अंधार पडला. राजा, सुवर्णाने मढविलेले ते बाण एकसारखे सुटू लागले तेव्हां जणू काय आकाशांत कौचपक्ष्यांच्या रांगा उडत आहेत, असे वाटू लागले. अशा प्रकारे सर्व अंतरिक्ष बाणजालाने व्याप्त होऊन सूर्यबिंब अदृश्य झाले असतां प्रकाश, किरण किंवा कोणताही स्थूल-सूक्ष्म जीव वगैरे काहींएक आकाशांतून भूमीवर उतरत नाहीसे झाले. ह्याप्रमाणे उभय वीरांच्या शरसंधांनीं आकाश व्याप्त होऊन मार्ग निरुद्ध झाला असतां ते महात्मे कर्ण व नकुल हे प्रलयकालीन सूर्याप्रमाणे दिसू लागले!

राजा, त्या समयीं कर्णाच्या बाणांनीं सोमकांचा फार नाश होऊं लागला व ते अत्यंत आर्त होऊन पटापट धरणीवर मरून पडू लागले; आणि नकुलाच्या बाणांनीं तुड्या सैन्याची तीच अवस्था होऊं लागून, वाऱ्याने उधळून दिलेल्या मेघांप्रमाणे त्याचा विध्वंस उडाला ! राजा धृतराष्ट्रा, अशा प्रकारे त्या दिव्य शरवृष्टीने उभय दळांत भयंकर संहार होऊं लागला ! राजा, तेव्हां त्यांतील सैनिक आपल्या प्राणांच्या त्राणाकरितां शरवृष्टि चुकवून युद्धचमत्कार पहात एकीकडे उभे राहिले. ह्या प्रकारे कर्णनकुलांनीं आपल्या बाणांनीं समरभूमींतील वीर पळवून लाविल्यांनंतर ते महात्मे एकमेकांवर बाणवर्षाव करू लागले. त्या वेळीं त्यांनीं समरांगणांत नानाविध दिव्य अस्त्रांचा प्रभाव प्रदर्शित केला; व परस्परांना ठार मारण्याच्या इच्छेनें त्यांनीं परस्परांस बाणवृष्टीनें आच्छादिले. तेव्हां नकुलाने कंकपुंख व बर्हिपुंख बाणांनीं सूतपुत्राला विद्ध करून अंतरिक्ष व्याप्त केले आणि कर्णानेही आपल्या जलाल बाणांनीं नकुलास आच्छादून अंतरिक्ष भरून काढिले. राजा, त्या समयीं ते दोघे वीर जणू काय शरगृहांत प्रविष्ट होतसाते मेघाच्छादित सूर्यचंद्रांप्रमाणे कोणालाही दिसत नाहीतसे झाले!

राजा धृतराष्ट्रा, अशी स्थिति प्राप्त झाली असतां कर्णाला अतिशय संताप आला व त्यानें मोठ्या त्वेषाने नकुलावर बाणांचा भडिमार करून त्यास चोहोंकडून आच्छादून टाकिले; परंतु, राजा, मेघांनीं सूर्यांस आच्छादित केले तरी त्यांपासून जशी सूर्यांस व्यथा होत नाही, तशी नकुलाला कर्णाने बाणवृष्टीनें आच्छादित केले तरी त्या बाणांपासून त्याला मुळींच व्यथा झाली नाही. तेव्हां तें पाहून अधिरथपुत्र कर्ण ह्यास मोठें कौतुक वाटले आणि त्यानें समरांगणांत चोहोंकडून शतावधि व सहस्रावधि शरसमुदाय नकुलावर फेंकून आपल्या त्या दिव्य बाणांनीं

मेघमंडळाप्रमाणें सर्व आकाश व्याप्त करून टाकिलें. नंतर कर्णानें महात्म्या नकुलाचें धनुष्य छेदिलें आणि हंसत हंसत त्याच्या सारख्याला स्थानभ्रष्ट करून खाली पाडिलें. मग कर्णानें धार लाविलेले चार बाण टाकून नकुलाच्या रथाचे चारही अश्व मारिले आणि बाणांचा खूप सपाटा चालवून त्याच्या त्या दिव्य रथाचे, पताकेचे, चक्ररक्षकांचे, गदेचे, खड्गाचे, शतचंद्र कवचाचे व इतर सर्व उपकरणांचे तिलप्रायखंड केले ! राजा, अशा प्रकारें नकुल हा हताश्व, विरथ व विगतकवच झाला तेव्हां तो ताबडतोब परिष्व धारण करून युद्धार्थ रणभूमीवर उभा राहिला. नंतर कर्णानें नकुलावर सुतीक्ष्ण व बळकट बाणांची वृष्टि सुरू केली, पण नकुल हा आयुधहीन (धनुष्यहीन) आहे, हें मनांत आणून कर्णानें आपले पुष्कळ बाक्रक्षार बाण नकुलावर टाकले तरी त्यांपासून नकुलास फारशी व्यथा होणार नाही, अशी दक्षता ठेविली. राजा, ह्याप्रमाणें शस्त्रास्त्रनिपुण व महाबलवान् कर्ण नकुलास मारण्यास उद्युक्त झाला असतां, नकुल हा व्याकूळ होऊन एका-एकीं मागें सरला; परंतु इतक्यांत राधापुत्र कर्ण हंसत हंसत त्याचा पाठलाग करीत गेला व त्यानें हातांत सज्ज असलेलें आपलें धनुष्य नकुलाच्या कंठावर जोरानें फेंकिलें. राजा, त्या समयीं अंतरिक्षांत खळें पडलेला चंद्र किंवा इंद्रधनुष्यानें परिवेष्टित असलेला शुभ्र मेघ जसा शोभतो, तसा महाधनुष्यानें कंठदेशीं आसक्त असलेला तो नकुल शोभू लागला ! तेव्हां कर्ण नकुलास म्हणाला, “ नकुला, व्यर्थ कीं रे बडबड केलीस ! आतां माझ्या हातून पुनःपुनः प्रहार सोशीत मृत्युमुखीत पडत असतां फिरून पल्लियाप्रमाणें खुशीत येऊन तमल्या वलगना कर पाहूं ! बा पांडवा, कौरव मोठे बलिष्ठ आहेत ! ह्यास्तव त्यांच्याबरोबर युद्ध करण्याचें सोडून दे !

बाळा, आपल्या बरोबरीचे योद्धे पाहून त्यांच्याशींच त्वां युद्ध करावें हें चांगलें ! जा, आतां खेद करूं नको ! तूं आपल्या घराची वाट धर किंवा जेथें कृष्णार्जुन असतील तेथें जाऊन त्यांचा आश्रय कर ! ” राजा धृतराष्ट्रा, असे उद्गार काढून कर्णानें नकुलास तेथेंच सोडिलें. त्यानें त्या समयीं नकुलास ठारच मारिलें असतें; पण त्या शूरास धर्मतत्त्व पूर्ण विदित असून शिवाय कुंतीचें वचनही आठवत होतें; ह्यास्तव नकुलाचा प्राण न घेतां त्यानें त्यास जाऊं दिलें !

असो; ह्याप्रमाणें कर्णापासून सुटका झाल्या-नंतर नकुल हा अत्यंत लज्जित होऊन युधिष्ठिराच्या रथाकडे चालता झाला. युधिष्ठिराच्या समीप प्राप्त झाल्यावर तो त्याच्या रथावर चढला, व कुंभांत अडकलेल्या सर्पाप्रमाणें दुःखसंतप्त होऊन सुस्कारे टाकीत तडफडूं लागला !

राजा धृतराष्ट्रा, ह्या प्रकारें नकुलाचा पराभव केल्यानंतर कर्ण हा लागलाच पांचालावर चाल करून गेला. त्या समयीं त्याच्या रथावर अनेक पताका फडकत असून रथाला जोडिलेले अश्व चंद्राप्रमाणें शुभ्र होते. राजा, कौरवसेनेचा अधिपति आपणांवर चाल करून येत आहे असें जेव्हां पांचालांच्या रथसमुदायांनीं अवलोकन केलें, तेव्हां पांडवांच्या सैन्यांत एकच कल्होल उडाला ! नंतर त्या बलिष्ठ सूतनंदानें मध्याह्नाच्या समयीस चक्राप्रमाणें संचार करीत करीत पांडवांच्या सैन्यांत फारच संहार उडविला. त्या युद्धांत पांचालांच्या रथसमुदायांचा फारच नाश झाला; कित्येकांच्या रथांचीं चक्रें छिन्नभिन्न होऊन त्यांवरील ध्वजपताकांचा चुराडा उडाला, कित्येकांचे सारथि मेले, कित्येकांचे रथ अश्वहीन झाले व कित्येक रथांचे अक्ष तुटले. ह्याप्रमाणें तुर्दशा झाली असतां ते पंचालवीर आपल्या त्या मोडक्या-तोडक्या रथांतून रणभूमीवरून पलायन करीत

आहेत असें आढळले. त्या वेळीं जिकडे तिकडे एकच लग्नाग उडाली. महान् वणज्यांत सांपडलेल्या हत्तींची गात्रें दग्ध झालीं असतां ते जसे सैरावैरा धावूं लागतात, तसे ते पांचालांचे हत्ती कर्णाच्या बाणाग्नीनें दग्ध होत्साते सैरावैरा धावूं लागले ! त्या युद्धांत कित्येक हत्तींची गंडस्वळे फुटलीं, गुंडा तुटल्या, गात्रें छिन्नभिन्न झालीं, पुच्छें लयास गेलीं, चिलखतें फाटलीं, आणि ते सर्वे रुधिरानें न्हाणिलेले हत्ती महात्म्या कर्णाच्या बाणप्रहारानें मेवांप्रमाणें विस्कळीत होऊन धारातीर्थी पतन पावले ! राजा, त्या भयंकर युद्धांत कित्येक हत्ती नाराच बाण व तोमर ह्यांच्या योगें भयभीत होऊन कर्णावरच धावून गेले; पण शलभ अग्नीवर धावून गेले असतां त्यांची जी वाट लागते तीच वाट त्यांची लागली ! त्या समर्थी कित्येक महान् हत्ती एकमेकांवर प्रहार करून आपसांत झगडूं लागले व त्यांचीं शरीरें छिन्नभिन्न होऊन त्यांतून रुधिराचे प्रवाह वाहूं लागले. तेव्हां जणू काय पर्वताच्या उदरांतून उदकाचेच प्रवाह वहात आहेत असा भास झाला !

राजा धृतराष्ट्रा, त्या भयंकर संग्रामांत मोठ-मोठ्या अश्वानांचीही अशीच दुर्दशा उडाली. कित्येक अश्वानांची उरश्छेदें (उरावरील आवरणें) नाहीतशीं झालीं, शेषट्या तुटल्या, अंगावरची सोन्याची, रुप्याची व कांस्याची भूषणें आणि दुसरे अलंकार गळून पडले, लगामा तुटल्या, चामरें व खोगिरें नाहीतशीं झालीं, बाणभाते पतन पावले, आणि शूर व युद्धांत शोभणारे स्वार मृत्युमुखीं पडून ते सर्वे अश्व व्याकूळ होऊन इतस्ततः धावूं लागले ! राजा, तशीच कित्येक घोडेस्वारांची जी दाणादाण झाली ती विचारूच नको ! त्यांच्या हातांतले प्रास, खड्ग व ऋष्टि नाहीतशा झाल्या; त्यांच्या अंगांत काय तीं चिलखतें असून मस्तकांवर शिरस्त्राणें

मात्र होती; आणि त्यांचे हस्तपादादिक अवयव छिन्नभिन्न झाले असून त्याच विपन्न स्थितीत ते इकडे तिकडे धावत-पळत होते ! धृतराष्ट्रा, पुष्कळ रथांचीही तशीच अवस्था झाली ! त्यांवर आरूढ असलेले रथी पतन पावल्यामुळें त्यांचे ते सुवर्णमंडित रथ त्यांस जोडलेले अश्व भडकल्यामुळें मोठ्या त्वरेनें धावत आहेत असें दिसले. त्यांपैकीं कित्येकांचे अश्व व तुंब तुटले असून चक्रे मोडलीं होती; आणि त्याप्रमाणेंच कित्येकांचे ध्वज व पताका नष्ट झाल्या असून ईषादंड (जोखड बांधण्याचा वासा) व कळस भंगले होते.

राजा धृतराष्ट्रा, त्या घनघोर संग्रामांत सूतपुत्र कर्णाच्या भयंकर शरवृष्टीनें पुष्कळ रथी पतन पावले व पुष्कळ इतस्ततः पळत सुटले ! अनेक रथी विशस्त्र होऊन व अनेक सशस्त्रच असून रणांगणांत मरून पडले ! याप्रमाणेंच पुष्कळ हत्ती त्या रणभूमीवर सैरावैरा भ्रमण करितांना आढळले; त्यांच्या शरीरांवर तारकांचीं जाळीं असून जागोजाग उत्कृष्ट घंटा बांधिल्या होत्या; तशाच त्यांजवर चित्रविचित्र वर्णांच्या पताका फडकत असून ते सर्वे हत्ती चोहोंकडे पळत होते ! राजा, त्या युद्धांत कर्णाच्या चापापासून सुटलेल्या बाणांनीं तुटून पडलेले बाहु, मांड्या, मस्तकें व इतर अवयव हे जिकडे तिकडे दृग्भोचर होत होते. राजा, त्या समर्थी पांडवांकडील जे योद्धे कर्णाशीं लढत होते, त्यांचा कर्णाच्या तीव्र बाणांनीं घोर संहार झाला. तेव्हां रणांगणांत कर्णांनै संजयांवर बाणांचा भडिमास करून त्यांस अगदीं जर्जर केलें, तरी जिवावर उदार झालेले ते संजय कर्णावरच चालून गेले; व अखेरीस, टोळ जसे अग्नीत पडून भस्म होतात तशी त्यांची गति झाली ! राजा, त्या भयंकर रणांत कर्णांनै चोहोंकडे पांडवांचे सैन्य जाळण्याचा असा

कांही सषाटा चालविला कीं, जणू काय तो महाभयानक प्रलयकालीन अग्निच आहे असे वाटूच पांचालाचैकी अवशिष्ट राहिलेल्या महारथ वीरांस त्या प्रबल योद्ध्यापासून पराङ्मुख होऊन पळून जावे लागले! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे पांडवसेनेनें पळ काढिला असतां कर्णाने पाठलाग करून त्या सेनेवर बाणांची दुर्धर वृष्टि केली आणि त्यांची कवचे व ध्वज विदीर्ण करून टाकून त्यांस अगदी 'त्राहि भगवन्' करून सोडिले!

अध्याय पंचविंशत्वा.

—:०:—

युयुत्सूचा पराभव.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, तुझ्या पुत्राचें मोठें सैन्य युयुत्सु हा पळवून लावीत असतां त्याजवर तत्काळ उलूकानें हल्ला करून त्यास “ थांब, थांब ” असे म्हटले. तेव्हां युयुत्सुनें धार दिलेल्या तीक्ष्ण बाणानें महाबल उलूकावर वज्रतुल्य प्रहार केला. त्या वेळीं उलूक खवळला आणि त्याचें व युयुत्सु ह्याचें तुंबळ युद्ध सुरू झालें. त्यांत उलूकानें तुझा पुत्र युयुत्सु ह्याचें धनुष्य अणादार क्षुरप्र बाणानें तोडून त्याजवर बाणप्रहार केला. तेव्हां युयुत्सुनें संतप्त होऊन क्रोधानें नेत्र लाल केले आणि तें छिन्न धनुष्य फेंकून देऊन अधिक वेगवान् असें दुसरें धनुष्य हातांत घेतलें. नंतर त्यानें उलूकावर साठ व सारथ्यावर तीन बाण टाकून पुनः उलूकावर आणखी बाणांचा भाडिमार चालविला. त्या समयीं उलूकानें सुवर्णमंडित असे वीस बाण युयुत्सूवर सोडिले आणि क्रोधायमान होऊन समरांगणांत त्यानें युयुत्सूचा महान् कांचनध्वज युयुत्सूच्या समोर तोडून खाली पाडिला!

१ धृतराष्ट्राचा दासपुत्र. हा पांडवांच्या पक्षास मिळाला होता.

नंतर युयुत्सूचा क्रोध अनावर होऊन त्यानें उलूकाच्या वक्षस्थळी पांच बाण अत्यंत त्वेषानें मारिले. तेव्हां रणांगणांत उलूकानें तेल लावून पाजविलेला भल्ल बाण टाकून युयुत्सूच्या सारथ्याचें शिर उडविलें; व तें आकाशांतून जशी उल्का खालीं पडावी, तसें भूतलावर एकदम पडलें! नंतर उलूकानें युयुत्सूच्या चारही अश्र्वांवर बाणप्रहार करून ते ठार केले आणि पुनः युयुत्सूवर पांच बाण टाकिले. तेव्हां युयुत्सु अतिशयितच विद्ध झाला व तो अखेरीस निरुपाय होऊन दुसऱ्या रथावर चढून एकीकडे सरला! ह्याप्रमाणें युयुत्सूचा पराभव करून उलूक हा पांचाल व संजय ह्यांजवर चालून गेला व त्यानें त्यांजवर निशित बाणांची वृष्टि केली.

राजा धृतराष्ट्रा, तुझा पुत्र श्रुतकर्मा ह्यानें मोठ्या शौर्यानें शतानीकार हल्ला करून अर्ध्या निमेषांत त्याचे अश्व व सारथि ह्यांस ठार मारिलें. तेव्हां त्या महारथ शतानीकानें अश्वहीन रथावर उभें राहून मोठ्या क्रोधानें तुझ्या पुत्रावर अशी गदा झुगारिली कीं, ती त्याच्या रथाचें, अश्र्वाचें व सारथ्याचें चर्ण करून ताबडतोब खालीं पडली व धरणीतलें हादरून जाऊन जणू काय विदीर्णच झालें! नंतर, कुरूकुलाची कीर्ति वाढविणारे असे ते दोघेही विरथ झालेले वीर एकमेकांकडे टोकारून पहात पहात युद्धापासून परावृत्त झाले. राजा, तुझ्या पुत्राची गाळण उडून तो विविशूच्या रथावर चढला आणि शतानीकानेंही त्वग करून प्रतिविंध्याच्या रथावर आरोहण केलें.

सुतसोम व सौबल ह्यांचें युद्ध.

राजा, नंतर सुतसोम व शकुनि ह्यांचें युद्ध सुरू झालें. शकुनीनें क्रोधानें निशित बाण टाकून सुतसोमास विद्ध केलें; परंतु पर्जन्यवृष्टि कितीही झाली अमतां पर्वत जसा कंप

पावत नाही, तसा तो पराक्रमी सुतसोम सौबलाच्य बाणवृष्टीनें मुळीच कंप पावला नाही. रामा, नंतर सुतसोमानें आपल्या पित्याचा अस्यंत वैरी जो शकुनि त्याजवर अनेक सहस्र बाण टाकून त्यास झांकून काढिलें; परंतु शकुनीनें आपल्या बाणांचा उलट भडिमार चालवून ते सर्व बाण तत्काळ छेदिले. ह्याप्रमाणें विचित्र युद्ध करून शत्रूच्या सर्व बाणांचा समरांगणांत निःपात उडविल्यानंतर अस्त्रविशारद सौबलानें क्रोधायमान होऊन सुतसोमास तीन बाणांनीं विधिलें; आणि त्याचे अश्व, ध्वज व सारथि ह्यांजवर बाणांचा वर्षाव करून त्यांचे तिलतुल्य तुकडे उडविले. राजा, त्या समयी सुतसोमाची ती विपन्नावस्था अवलोकन करून प्रेक्षकजनांत मोठा हाहाकार झाला व सर्वजण आक्रोश करूं लागले!

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर हताश्र्व, विरथ व छिन्नध्वज असा तो धनुर्धर सुतसोम श्रेष्ठ धनुष्य धारण करून रथांतून खाली उतरला, व भूमीवर उभा राहून स्वर्णपुंख निशित बाणांचा भडिमार करून त्यानें तुझ्या श्यालकाचा रथ आच्छादून टाकिला. राजा, त्या वेळीं सौबलाच्या रथावर टोळघाडीप्रमाणें जरी बाणांचे ओष येत होते, तरी त्यांच्या योगें त्या महारथाच्या चित्ताला अणुमात्र व्यथा उत्पन्न झाली नाही. त्यानें तत्काळ उलट शरवृष्टि सुरू केली आणि सुतसोमाच्या सर्व बाणांचें चूर्ण करून टाकिलें. राजा, त्या समयी त्या दोन्ही शर वारांचें तें अनुपम युद्धसामर्थ्य अवलोकन करून तेथें असलेले योद्धे व अंतरिक्षांत जमलेले सिद्ध ह्यांस अतिशयित आनंद वाटला; आणि रथांत अधिष्ठित असलेल्या शकुनीशीं पादचारी सुतसोम इतक्या उत्कृष्ट रीतीनें लढत असून अश्रद्धेय व अद्भुत पराक्रम दाखवीत आहे असें पाहून त्यांनीं त्याचे धन्यवाद गाडले!

नंतर शकुनीनें बांकदार पेच्यांचे, महावेगवान् व तीक्ष्ण असे अनेक बाण सोडून सुतसोमाचें धनुष्य छेदिलें व त्याच्या सर्व बाणभात्यांचा विध्वंस उडविला. ह्याप्रमाणें धनुष्यहीन झाल्यावर सुतसोम हातांत खड्ग घेऊन युद्ध करूं लागला. राजा, वैदूर्यरत्नाप्रमाणें देदीप्यमान, हस्तिदंताची मूठ असलेलें, व निर्मल आकाशाप्रमाणें नील कांति धारण करणारें असें तें खड्ग युद्धपटु सुतसोम हा गर्जना करीत फिरवूं लागला तेव्हां जणू काय तो कालदंडच आहे, असें सौबलास वाटलें! राजा, तें दिव्य खड्ग फिरवीत सुतसोमानें मोठ्या आवेशानें चौदाही मंडलें हजारों वेळां केलीं. राजा, ह्या युद्धधुरंधर बलवान् वीरानें भ्रांत, उद्भ्रांत, आविद्ध, आप्लुत, विप्लुत, स्तत, संपात, समुदीर्ण इत्यादि सर्व मंडलें रणांगणांत अनेक वेळां करून दाखविलीं. नंतर पराक्रमी सौबलानें सुतसोमावर पुनः बाणांचा भडिमार सुरू केला. पण ते सर्व बाण आपणावर पडले नाहीत तोंच सुतसोमानें आपल्या खड्गानें त्यांचे तत्काळ तुकडे उडविले!

धृतराष्ट्रा, नंतर शत्रुसंहारक सौबल अतिशयच क्रुद्ध झाला; आणि त्यानें सर्पांच्या विषाप्रमाणें जलाल शर सुतसोमावर टाकिले. परंतु त्या युद्धविद्याविशारद महाबलिष्ठ सुतसोमानें आपल्या खड्गानें त्यांचाही फडशा उडविला. तेव्हां त्याचें तें गरुडतुल्य युद्धलाघव अवलोकन करून सर्वास विस्मय वाटला! राजा, पुढें तो सुतसोम अनुलोम-विलोम मंडलाकार परिभ्रमण करीत असतां, सौबलानें त्याचें तें देदीप्यमान खड्ग मुतीक्ष्ण क्षुरप्र बाणानें तोडिलें. तेव्हां त्या महान् खड्गाचा तुटलेला भाग एकदम खाली पडला व मुठीकडील अर्धा भाग

१ ह्याचें स्पष्टीकरण द्रोणपर्व अध्याय १९१ यांतल भ्रांत या शब्दावरील टीपेंत केले आहे तें पहा.

मात्र सुतसोमाच्या हातांत उरला. परंतु आपले खड्ग तुटले असे तत्काल सुतसोमाच्या ध्यानांत — व त्याने सहा पावले मार्गें सरून हातांत उरलेले खंड सौबलावर मोठ्या जोरांने झुगारिले. तेव्हां तें स्वर्णवज्रविभूषित खड्ग, सौबलाचे धनुष्य व प्रत्यंचा ह्यांस तोडून तत्काळ भूतलावर पतन पावले !

राजा, नंतर सुतसोम हा श्रुतकीर्तीच्या महान् रथावर चढला; आणि सौबलही दुसरें घोर धनुष्य धारण करून पांडवसैन्यावर धावून जाऊन भयंकर संहार उडवू लागला. तेव्हां पांडवांच्या सैन्यांत एकच गहजब झाला आणि त्या प्रबळ, सशस्त्र व दृप्त (गर्वांने चढून गेलेल्या) सैन्याचा महात्म्या सौबलापुढे टिकाव न लागतां अखेरीस तें धाबरून पळत सुटले आणि देवराज इंद्रांने जसें दैत्य सैन्य मर्दन टाकिले, तसें त्या सौबलांने पांडवीय सैन्य मर्दन टाकिले !

अध्याय साव्विसावा.

—:०:—

धृष्टद्युम्नाचा पराजय !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, वनांत सिंहाला अवलोकन करितांच शरभ जसे त्याचे निवारण करितो; तसें कृपाचार्यांने युद्धांत धृष्टद्युम्नाचे निवारण केले. त्या बलिष्ठ गौतमानें पार्षतास (धृष्टद्युम्नास) असें खिळून टाकिले कीं, त्यास एक पाऊलभरही सरतां येईना. कृपाचार्यांचा रथ धृष्टद्युम्नाच्या रथावर तुटून पडलेला अवलोकन करून अखिल प्राण्यांस भीति उत्पन्न झाली; आणि त्या सर्वांनीं, आतां धृष्टद्युम्नाचा खचित नाश होतो, असें मानिले. त्या वेळीं रथी व घोडेस्वार हे अगदीं निराश होऊन म्हणाले, “ अहो, धृष्टद्युम्नांने द्रोणाचार्यांचा वध केला, त्यामुळेच निःसंशय हा

नरश्रेष्ठ कृपाचार्य स्वळला आहे ! आतां ह्या रणधुरंधर महादेदीप्यमान, दिव्यास्त्रविद् महात्म्या शारद्वतापुढे ह्या धृष्टद्युम्नाचा काय निभाव लागणार ! अहो, अशा ह्या दुर्धर प्रसंगीं गौतमानामून धृष्टद्युम्न बचावेल काय ! अहो, ही सर्व सेना ह्या घोर संकटांतून पार पडेल काय ! ह्या ब्राह्मणाच्या तडाक्यांतून येथे प्राप्त झालेले आम्ही सर्व योद्धे जिवंत सुटूं काय अहो, ह्या ब्राह्मणांने हें जें अंतकाप्रमाणें उग्र स्वरूप धारण केले आहे, त्यावरून पहातां आज हा द्रोणाचार्यांप्रमाणें शौर्य गाजविणार ह्यांत संदेह नाही ! पहा, कृपाचार्य हा युद्धकलेत मोठा निपुण व नेमकेच बाण टाकून शत्रूस हां हां म्हणतां रणांत पाडणारा आहे; ह्या शस्त्रास्त्रविद् महापराक्रमी योद्ध्याला सदासर्वकाळ विजय प्राप्त होतो; आणि असा हा वीरशाली वीर अत्यंत क्रोधाघमान होऊन धृष्टद्युम्नाशीं युद्ध करीत असून धृष्टद्युम्न तर आज ह्या भयंकर समरांत युद्धपराङ्मुख झालेला दिसत आहे, तेव्हां आतां होणार तरी कसे ! ”

राजा धृतराष्ट्रा, कृपाचार्य व धृष्टद्युम्न हे एकमेकांशीं झुंजत असतां उभय दळांतील वीरांच्या मुखांतून असे नानाप्रकारचे उद्गार निघालेले ऐकू आले. इकडे शारद्वत कृपाचार्यांने क्रोधाचा मुस्कारा टाकून पार्षताच्या सर्व मर्मस्थळीं इतके बाण मारिले कीं, तो अगदीं निश्रेष्ठ होऊन बेशुद्ध पडला व त्यास पुढें काय करावें हें कांहींएक सुचेनासें झाले. तेव्हां त्याचा साराथि त्यास म्हणाला, “ महाराज, आपण क्षेम आहांना ? युद्धामध्ये असा घोर प्रसंग आपणांवर आलेला मीं कधीं पाहिला नाही ! महाराज, द्विजश्रेष्ठानें आपल्या सर्व मर्मस्थळांवर नेम धरून जे बाण मारिले त्यांनीं आपल्या मर्मांचें विदारण झाले नाही, हा केवळ दैवयोग असें मला वाटतें. समुद्राच्या ओझांनें

विद्वद् झालेली नदी जसा आपला प्रवाह मागे फिरवितो, तसा मी हा आपला रथ जातां ताबडतोब मागे फिरवितो. महाराज, ज्यांना तुम्हांला सर्वतोपरी कुठित करून सोडिले, तो ब्राह्मण तुमच्या हस्ते रणभूमीवर पडेल, असा संभव दिसत नाही. ह्यास्तव अशा प्रसंगी युद्ध-पराङ्मुख होणे हेंच श्रेयस्कर होय.

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर धृष्टद्युम्न अर्तस्वराने म्हणाला, “ बा सारथे, मात्र चित्त अगदी गांगरून गेले आहे; माझ्या सर्व अंगास धाम सुटला असून शरीर अगदी कंपायमान व पुलकित झाले आहे. ह्यास्तव अशा ह्या समयीं कृपाचार्याला चुकवून निकडे अर्जुन असेल तिकडे हळूहळू जावे हेंच विहित दिसते. सारथे, प्रस्तुत प्रसंगी मी अर्जुन किंवा भीम ह्यांस जाऊन मिळालो, तरच आज माझा तरणोपाय आहे अशी मला पूर्ण खात्री वाटते. ” राजा, नंतर सारथ्याने अश्वाना इशारा करून वेगाने रथ चालविला; व जेथे महाधनुर्धर भीम तुझ्या सैन्याशी लढत होता, तेथे तो रथ आणून सोडिला. धृतराष्ट्रा, धृष्टद्युम्नाचा रथ पळ काढून धावू लागला असे पहातांच गौतमाने शतावधि बाणांचा भडिमार करीत त्याचा पाठलाग केला आणि वारंवार शंखनाद करून दशदिशा दुमदुमून टाकिल्या ! राजा, ह्याप्रमाणे धृष्टद्युम्न व कृपाचार्य ह्यांचे घोर युद्ध होऊन, जसे महेंद्राने नमुचीला अगदी जर्जर केले तसेच कृपाचार्याने धृष्टद्युम्नाला जर्जर केले !

शिखंडीचा पराभव !

धृतराष्ट्रा, भीष्माच्या मृत्यूचे कारण जो बलाढ्य शिखंडी, त्याला समरांगणांत हार्दिक्याने (कृतवर्त्याने) गाठले व पुनःपुनः हंसत हंसत त्यास त्याने अडविले. तेव्हां दोघांचे युद्ध सुरू झाले. त्यांत शिखंडीने हृदीकांच्या महारथावर (हार्दिक्यावर) पांच

निश्चित भल्ल बाण टाकून त्याचा खकटा विद्ध केला. नंतर कृतवर्मा खकळला आणि त्याने साठ बाण शिखंडीवर सोडून एका बाणाने त्याचे धनुष्य सहज तोडून टाकिले. तेव्हां द्रुपदाचा पुत्र बलिष्ठ शिखंडी हा दुसरे धनुष्य धारण करून मोठ्या क्रोधाने ‘ थांब थांब ’ असे म्हणत हार्दिक्यावर धावून गेला आणि त्याने सुवर्णपुंख व अतिशयित प्रखर असे नव्वद बाण त्याजवर सोडिले; पण ते सर्व बाण हार्दिक्याच्या चिलखतापासूनच मागे परतून भूतलावर पतन पावले ! ह्याप्रमाणे आपले बाण व्यर्थ झालेले अवलोकन करून शिखंडीने सुतीक्ष्ण क्षुरप्र बाणाने कृतवर्त्याचे धनुष्य तत्काळ छेदिले व भद्रशृंग वृषभाप्रमाणे भासमान होणाऱ्या त्या छिन्नचाप कृतवर्त्याच्या बाहूवर व वक्षस्थळीं त्याने मोठ्या आवेशाने ऐशी बाण टाकिले. राजा, ह्याप्रमाणे कृतवर्मा हा शिखंडीच्या बाणांनी अतिशय विक्षत झाला तेव्हां कुंभाच्या मुखांतून जसे पाण्याचे लोट चालवे तसे त्याच्या गात्रांतून रुधिराचे पाट चालू लागले, आणि त्याचे सर्व शरीर रक्ताने झात होऊन गैरिक (गेरूचे ओघ वहात असलेल्या) पर्वताप्रमाणे आरक्त दिसें लागले. नंतर त्या प्रतापशाली हार्दिक्याला अतिशयित त्वेष आला व त्याने दुसरे धनुष्य धारण करून शिखंडीच्या स्कंधदेशी बाणांचा भडिमार चालू केला. तेव्हां शाखाप्रशाखांनी भरून गेलेला मोठा धोरला वृक्ष जसा शोभतो, तसा स्कंधप्रदेशी बाणसमुदायाने विद्ध झालेला तो शिखंडी शोभू लागला ! नंतर दोघांचे मोठ्या निकराचे युद्ध सुरू झाले; आणि परस्परांनी परस्परांवर अतिशय बाणवृष्टि करून एकमेकांस रक्ताने न्हाणिले. तेव्हां एकमेकांना ठार मारण्यासाठीं झगडणाऱ्या त्या महारथ वीरांस पाहून जणू काय मदोन्मत्त वृषभ तुफान होऊन एकमेकांवर शृंग-

प्रहार करीत आहेत, असा भास होऊं लागला !

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर दोघे वीर आपल्या रथांनीं हजारों मंडलें करूं लागले; व तशांत कृतवर्म्यांनैं सहाणेवर धार लावून सुतीक्ष्ण केलेले सत्तर सुवर्णपुंख बाण टाकून पार्षतास (शिखंडीस) विद्ध केलें; आणि मोठ्या चलाखीनें एक प्राणांतक भयंकर बाण त्याजवर टाकिला. राजा, भोजाधिपति कृतवर्म्यांचा तो जलाल बाण शिखंडीस सहन झाला नाहीं. त्याच्या योगें शिखंडीचें देहमान सुटलें व तो एकदम खालीं पडला; पण ध्वजयष्टीचा आधार मिळाल्यामुळें तो कसाबसा सावरला. राजा धृतराष्ट्रा, ती दुर्धर अवस्था अवलोकन करून, हार्दिक्याच्या बाणानें अतिशयित पीडित झालेल्या व पुनःपुनः संतापानें सुस्कारे टाकणाऱ्या त्या शिखंडीचा रथ त्याच्या सारथ्यानें तत्काळ रणभूमीतून मागे वळवून एकीकडे नेला; आणि ह्याप्रमाणें शूर शिखंडीचा पराभव होताच पाडवसेनेवर चोहोंकडून शत्रुसैन्य तुटून पडलें व त्यानें तिची दाणादाण करून तिला उधळून लाविलें !

अध्याय सत्ताविंशत्वा.

—:०:—

संशप्तकांचा पराजय.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, वाऱ्याची व कापसाच्या ढिगाची गांठ पडली असतां वारा जसा त्या कापसाला चोहोंकडे उधळून लावितो, तशी अर्जुनाची व तुड्या सैन्याची गांठ पडतांच अर्जुनानें तुड्या सैन्याला चोहोंकडे उधळून लाविलें. राजा, त्रिगर्त, शिबि, कौरव, शाल्व, संशप्तक, नारायण नामक सैन्य, त्याप्रमाणेंच सत्यसेन, चंद्रदेव, मित्रदेव, सुतंजय, सौश्रुति, चित्रसेन, मित्रवर्मा आणि भ्रात्यांसह महेश्वास व नानाशस्त्रविशारद पुत्रांसह

त्रिगर्ताधिपति हे सर्व अर्जुनावर चाल करून आलें आणि त्यांनीं त्याजवर बाणांची अतिशय वृष्टि केली. राजा, त्या समयीं ती बाणवृष्टि अवलोकन करून जणू काय समुद्रावर जलाचे ओघ कोसळत आहेत असें वाटलें ! धृतराष्ट्रा, ते सर्व लक्षावधि कौरववीर अर्जुनावर उसळून आले खरे; परंतु गरुडास पाहून पन्नगांची जी अवस्था होते, तीच अवस्था त्या सर्वांची होऊन त्यांचा पूर्ण विध्वंस उडाला ! राजा, अर्जुनापुढें आपला टिकाव लागत नाहीं असें पाहून त्या सर्व योद्ध्यांनीं युद्धापासून पराड्मुख होऊन आपला जीव जगवावयास पाहिजे होता; पण त्यांनीं तसें केलें नाहीं व अशिज्वालेवर उडी टाकणाऱ्या शलभांप्रमाणें अर्जुनावर चाल करून येणाऱ्या त्या सर्व कौरवीय वीरांना मृत्युपंथ अनुसरावा लागला !

राजा, त्या युद्धांत सत्यसेनानें तीन, मित्रदेवानें त्रेसष्ट, चंद्रसेनानें सात, मित्रवर्मानें ज्याहात्तर, सौश्रुतीनें सात, शत्रुंजयानें वीस, सुशर्मनानें नऊ अशा बहुत वीरांनीं अर्जुनावर बाणवृष्टि केली; पण त्या सर्वांना उलट बाण मारून अर्जुनानें विद्ध केलें. पंडुपुत्रानें सौश्रुतीवर सात, सत्यसेनावर तीन, शत्रुंजयावर वीस, चंद्रदेवावर आठ, मित्रदेवावर शंभर, सेनावर तीन, मित्रवर्मावर नऊ व सुशर्मावर आठ बाण टाकिले. त्यानें शत्रुंजय राजाला निशित बाण मारून ठार केलें, सौश्रुतीचें मस्तक शिरस्त्राणासह उडविले व चंद्रदेवावर बाणांचा भडिमार करून त्यास तत्काळ मृत्युमुखांत लोटिलें ! त्याप्रमाणेंच त्यानें महारथ वीर त्याच्याशींच झगडत होते त्यांपैकीं प्रत्येकावर पांच पांच बाण टाकून त्यांचें निवारण केलें; पण इतक्यांत सत्यसेनानें संक्रुद्ध होऊन रणांगणांत कृष्णावर नेम धरून मोठें थोरलें तोमर फेंकिलें व बहुत आवेशानें सिंहनाद केला ! राजा,

सत्यसेनाचें तें स्वर्णभूषित पोलादी तोमर कृष्णा-
च्या उजव्या भुजाचें भेदन करून धरणीत
प्रविष्ट झाले आणि तोमरविद्ध झालेल्या त्या
महात्म्या माधवाच्या हस्तांतून प्रतोद व ह्य-
राक्षि मुटून खाली पडले ! तेव्हां वासुदेवाची ती
अवस्था अवलोकन करून धनंजयाला अत्यंत
क्रोध आला व तो कृष्णास म्हणाला, “ हे
महाबाहो, सत्यसेनाच्या समीप रथ घेऊन
चल, म्हणजे मी त्याजवर तीक्ष्ण शर टाकून
त्यास यमसदनीं पाठवितों ! ” नंतर कृष्णानें
दुसरा प्रतोद घेतला व हयांचे राक्षि
धारण करून पुनः पूर्ववत् रथ चाल-
वून तो सत्यसेनाजवळ आणिला. राजा
धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुनानें सत्यसेनावर
तीक्ष्ण शरांचा भडिमार करून त्यास मोठ्या
पेंचांत आणिले, आणि धार लावून तयार
केलेले भल्ल बाण टाकून त्याचें महत् शिर
कुंडलांसमवेत तोडून रणांगणांत पाडिलें !
ह्याप्रमाणें सत्यसेनाची वाट लाविल्यावर अर्जुना-
नें मित्रवर्मावर निशित बाणांची वृष्टि आरंभिली
आणि त्याच्या सारख्यावर तीक्ष्ण वत्सदंत
(बासराच्या दांतासारखा अणीदार) बाण
टाकिला; व त्या दोघांना धारातीर्थी पाडिलें !
नंतर पुनः अर्जुनानें संशप्तकांवर शतावधि
बाण सोडिले आणि क्रोधानें शतावधि व सहखा-
वधि संशप्तगणांचा संहार उडविला !
राजा, नंतर महारथ अर्जुनानें रौप्यपुंख क्षुरप्र
बाणानें महात्म्या मित्रसेनाचें मस्तक तोडिलें
आणि क्रोधायमान होऊन सुशर्म्याच्या जत्रु-
देशीं (स्ववाट्यामध्यें) बाणप्रहार केले, तेव्हां
होते नव्हते तेवढे सर्व संशप्तक एकत्र होऊन
त्यांनी अर्जुनाला गराडा घातला; व चोहों-
कडून बाणांची वृष्टि सुरू करून त्यांनीं दश-
दिशा दणाणून सोडिल्या. ह्याप्रमाणें संशप्त-
कांनीं धनंजयाला कोडून टाकिलें असतां

इंद्रतुष्य पराक्रम करून दाखविणाऱ्या त्या
अतुलप्रताप पांडववीरानें ऐंद्र अस्त्राची योजना
केली व तत्काळ सहखावधि बाणांचे ओघ
संशप्तकांवर कोसळू लागले. राजा, नंतर ध्वज
व धनुष्ये हीं तुटून पडण्यास प्रारंभ झाला;
रथ, जोखडे, बाणभाते व पताका हीं तुटून
मोडून खाली पडू लागलीं; रथांचे कणे, चाकें,
दोरखडे, अश्रांच्या लगामा, कूवर, वरूथ व
बाण हीं कोसळू लागलीं; घोडे, प्रास, ऋष्टि,
गदा, परिघ, शक्ति, तोमर, पट्टे, शतघ्नी, चक्रे,
बाहु, मांड्या, कंठसूत्रें, अंगदें, केयूरें, हार, अलं-
कार, कवचें, छत्रे, व्यजनें, मुकुट व मस्तकें
हीं पथपट भूतलावर आपटू लागलीं; व त्या
योगें जिकडे तिकडे महान् शब्द उद्भवला !
राजा, त्या समयीं कुंडलांनी युक्त असलेली,
सुंदर नयनांनीं शोभणारीं व पूर्णचंद्राप्रमाणें
कांतिमान् दिसणारीं अशीं शिरें अंतरिक्षांत
उगवलेल्या तारकांच्या समुदायाप्रमाणें रणां-
गणांत सर्वत्र दृष्टीस पडू लागली. त्याप्रमाणेंच
ज्यांवर उत्तम माला व उंची वस्त्रे झळकत
आहेत आणि ज्यांना चंदनाची उटी दिलेली
आहे, अशीं धडे रणभूमीवर सर्वत्र दिसू लागली !
राजा, तेव्हां तें समरांगण गंधर्वनगराप्रमाणें
भयंकर भासू लागले ! ज्याप्रमाणें पर्वत कोसळून
त्यांचीं शिखरें विदीर्ण होऊन इतस्ततः
पडलीं असतां तो भूभाग दुर्गम होतो; त्याप्रमाणें
राजपुत्र व इतर क्षत्रिय आणि त्यांचीं मोठमोठीं
चतुरंग सैन्ये व हत्ती हे इतस्ततः मरून पडल्या-
मुळें तें महीतल दुर्गम झालें ! त्या समयीं तो
महात्मा पंडुपुत्र आपल्या भल्ल बाणांनीं शत्रूंचे
चतुरंगबळ मर्दीत असतां, त्याच्या रथाला
मार्गच मिळेनासा झाला ! जिकडे तिकडे रथ
मोडून पडल्यामुळें त्यांचीं चाकें मार्गांत पडून
मार्गाचा रोष झाला होता ! त्या प्रसंगीं समरां-
गणांत रुधिराचा इतका कर्दम पडला कीं, त्यांत

अर्जुनाच्या रथाची चक्रे रतून गेली आणि मनोमरुतवेगाने चालणाऱ्या त्या अध्यांना तो रथ ओढून नेण्यास महाप्रयास पडले! राजा, ह्याप्रमाणे अर्जुनाच्या हातून भयंकर संहार झाला तेव्हां शत्रूंकडील राहिले-साहिले बहुतेक सैन्य युद्धविन्मुख झाले व त्याने पळ काढिला. असो; हे धृतराष्ट्रा, अशा प्रकारे अर्जुनाने बहुत संशसकगणाना जिंकिले असतां तो विधूम अग्नीप्रमाणे देदीप्यमान भासू लागला !

अध्याय अष्टाविसावा.

—:०:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, युधिष्ठिर हा कौरवसैन्यावर बाणांचा भडिमार करीत असतां स्वतः दुर्योधन राजा मोठ्या धैर्याने त्याच्याशी लढू लागला. तुझा पुत्र महारथ दुर्योधन ह्याने धर्मराजावर मोठ्या त्वेषाने उलट हल्ला केला, तेव्हां धर्मराजाने त्याजवर मोठ्या वेगाने बाण टाकून त्यास 'थांब, थांब' असे म्हटले. परंतु इतक्यांत दुर्योधनाने अत्यंत क्रोधायमान होऊन धर्मराजावर नऊ व सारथ्यावर एक असे दहा भल्ल बाण सोडिले आणि मग मोठ्या निकराचे युद्ध सुरू झाले. त्या समयी युधिष्ठिराने सहाणेवर धार लावून तयार केलेले तेरा स्वर्णपुंख बाण दुर्योधनावर टाकिले; चार बाणांनी त्याच्या रथाचे चारी घोडे मारिले; पांचवा बाण मारून सारथ्याचे मस्तक अंतरिक्षांत उडवून दिले; सहावा बाण टाकून ध्वज मोडिला; सातव्या बाणाने धनुष्य तोडिले; आठवा बाण सोडून भूतलावर खड्ग पाडिले व पुनः पांच बाण टाकून दुर्योधनास अगदी संकटांत घातले. नंतर हताश्र असा तुझा पुत्र रथांतून खाली उडी टाकून भूतलावर उभा राहिला व त्याची ती दीन अवस्था अव-

लोकन करून कर्मा, द्रौणि, कृपाचार्य बगेरे योद्धे त्याच्या मदतीकरितां तेथे एकदम धावून आले. पण इतक्यांत तेथे युधिष्ठिराच्या समीप सर्व पांडुपुत्र प्राप्त झाले; आणि मग मोठे घोर युद्ध प्रवर्तले! राजा, त्या समयी त्या घोर संग्रामांत सहस्रावधि रणवाद्ये वाजूं लागलीं व सर्वत्र रणसंमर्द माजून एकच कलकलाट सुरू झाला. पांचालांचे व कौरवांचे युद्ध जुंपले होते, तेथे पायदळ पायदळावर तुटून पडले; मोठ-मोठे हत्ती एकमेकांशीं भगडू लागले; रथ्यांनी रथ्यांवर हल्ले केले; व घोडेस्वारांनी घोडेस्वारांना गांठले! राजा, त्या घोर संग्रामांत शस्त्रास्त्रांनी युक्त अशा श्रेष्ठ योद्ध्यांचीं नानाविध व अचित्य द्वंद्वे अशीं विलक्षण रीतीनें युद्ध करूं लागलीं कीं, ते पाहून मोठे आश्चर्य वाटले! ते सर्व शूर वीर, परस्परंच्या वधाची इच्छा करून मोठ्या आवेशाने एकमेकांशीं लढले, आणि युद्धसंबंधी जे नियम पाळणे अवश्य होते, ते सर्व नियम योग्य प्रकारे पाळून त्यांनीं मोठ्या खुबीने व चपलतेनें आपले विचित्र युद्धकौशल्य दाखविले. त्यांनीं एकमेकांना समोरासमोर लढून समरांगणांत ठार केले,—पाठीमागे लढून कोणाचाही नाश केला नाही. ते युद्ध थोडा वेळपर्यंत मात्र प्रेक्षणीय वाटले; परंतु पुढे त्याची मर्यादा सुटली व ते वीर उन्मत्तपणाने बेहोष होऊन लढू लागले. त्या युद्धांत रथ्यांनी हत्तींना गांठून त्यांजवर बांकदार पेच्यांच्या निशित बाणांची वृष्टि केली व त्यांस यमसदनीं पाठविले. त्याचप्रमाणे हत्तीही जागोजाग घोड्यां-वर तुटून पडले आणि त्यांनीं पुष्कळ घोड्यांना सोडांनीं ओढून व आपटून क्रूरपणाने ठार मारिले. तसेंच पुष्कळ घोडेस्वारांनीं मोठमोठ्या घोड्यांना गराडा घातला व त्यांजवर हल्ला करून आवेशाने टाळ्या वाजविल्या; तेव्हां ते घोडे बिचकून चोहोंकडे सैरावैरा धावू लागले आणि मग

त्या घोड्यांना व पळणाऱ्या मोठमोठ्या हत्तींना घोडेस्वारांनी पाठीमागून व बाजूंकडून हल्ले करून ठार मारिले. राजा, त्याप्रमाणेच कित्येक मदनमत्त कुंजरांनी बहुत अश्यांचा पाठलाग करून त्यांस दांत भोंसकून वधिले किंवा अतिशय तुडवून मर्दिले ! कित्येकांनी चवताळून जाऊन घोड्यांना व त्यांच्यावरील स्वारांना दांतांनी जखमी केले आणि कित्येकांनी त्यांना मोठ्या जोराने आपटून फेंकून दिले ! इकडे संधि साधून पायदळांने हत्तींवर हल्ले केले व त्यांस अगदी जर्जर करून उधळून लाविले; तेव्हां ते भयभीत होऊन आर्तस्वर करीत दशदिशांस पळून गेले ! राजा, कित्येक ठिकाणी पायदळाचीही अशीच दुर्दशा झाली. पायदळांतील शिपाई आपल्या अंगावरील दागदागिन्यांचा भार टाकून देऊन मोठ्या त्वरेने पळून जात असतां रणांगणांत गजयोद्ध्यांनी ' जय मिळविण्यास हा योग्य प्रसंग आहे, ' असे मनांत आणून त्यांचा पाठलाग केला; युद्धभूमीवर पतन पावलेली त्यांची चित्रचित्र आभरणे आपल्या हत्तींकडून उचलून घेतली; आणि त्या सैनिकांवर चाल करून त्यांस गजदांतांनी विद्ध केले. तेव्हां पायदळांचे व गजयोद्ध्यांचे युद्ध जुंपले. आपल्यावर हत्तींनी हल्ला केला असे पाहून पायदळांने त्यांस उलट गराडा घातला; आणि त्याने मोठ्या आवेशाने गजयोद्ध्यांना ठार मारण्यास प्रारंभ केला. त्या युद्धांत गजयोद्ध्यांनी कित्येक सैनिकांस हत्तींच्या सोंडांनी अंतरिक्षांत फेंकून दिले व ते भूतलावर पडतांना त्यांना सुशिक्षित हत्तींकडून नेमकेच जोराने भोंसकले ! कित्येकांस हत्तींनी एकदम आपल्या दांतांनी नेमकेच विद्ध करून ठार मारिले ! कित्येक सैनिक आपली टोळी सोडून दुसऱ्या टोळीत जाऊन मिळाले; पण ते हत्तींच्या पायांखाली सांपडून त्यांचा चुराडा

झाला ! कित्येक सैनिकांस हत्तींनी आपल्या सोंडांनी पंख्यासारखे गरगर फिरवून रणभूमीवर आपटून यमलोकी पाठविले आणि कित्येक सैनिक दुसऱ्या हत्तींवर चाल करून गेले असतां ते हत्तींच्या तडाक्यांत सांपडून जिकडे तिकडे त्यांची शरीरे अतिविद्ध होऊन छिन्नभिन्न झाली. तेव्हां बाजूस असलेल्या महापराक्रमी रथ्यांनी व घोडेस्वारांनी त्या हत्तींवर हल्ला केला आणि त्यांच्या गंडस्थळांवर, गालांवर व दोन्ही दांतांच्या मधील सोंडेच्या भागावर प्रास, तोमर व शक्ति ह्यांचा भडिमार चालवून त्यांस अगदी जेरीस आणिले असतां त्यांपैकी कित्येक हत्ती भूतलावर पटापटा मरून पडले ! ह्याप्रमाणे दोन्ही दळे एकवटून निकराचे युद्ध चालू असतां, घोडेस्वारांनी पायदळांतील शिपायांवर मोठ्या आवेशाने तोमरे टाकून त्यांस ढाली-मुद्धां भूमीशी खिळिले व ठार मारिले. त्याप्रमाणेच कित्येक हत्ती कवचधारी रथ्यांवर धावून गेले व त्यांनी त्या रथ्यांस रथांतून ओढून अंतरिक्षांत मोठ्या वेगाने फेंकून जमिनीवर आपटिले. इकडे कित्येक रथ्यांनी त्या हत्तींवर नाराच बाणांचा वर्षाव केला, तेव्हां त्यांची दुर्दशा होऊन वज्राने विदीर्ण झालेल्या पर्वताच्या शिखरांप्रमाणे ते धडाधड जमिनीवर कोसळले ! राजा, त्या महान् रणांत योद्ध्यांनी योद्ध्यांना गांठून त्यांजवर मुष्टिप्रहार केले; एकमेकांनी एकमेकांना शेंडी धरून ओढून आणि भूमीवर आपटून व फेंकून ठार मारिले; कित्येकांनी प्रतिस्पर्ध्यांना हात लांब करून ओढून खाली पाडिले व त्यांच्या छातीवर पाय देऊन ते धडपड करीत असतां त्यांची मस्तकें उडविली; कित्येकांनी शत्रूंच्या उरांत शस्त्रे भोंसकली; कित्येकांनी भयंकर मुष्टियुद्ध आरंभले; कित्येकांनी एकमेकांच्या केंसांला हात घालून लढाई सुरू केली; कित्येक एकमेकांना

दंडांनीं हाणूं लागले; आणि कित्येकांनीं एक-मेकांवर नानाविध शस्त्रें चालविलीं. राजा, त्या वेळीं असा कांहीं रणसंमर्द मातला कीं, कोण-कोणाला मारीत आहे, हें कांहींच कळेनासें झालें व वीर पुरुष भाराभर समरांगणांत पडून त्यांचीं शतावधि व सहस्रावधि कबंधें रणभूमीवर उभी राहिलीं आणि त्यांचीं तीं रुधिरस्नात कवचें व वस्त्रें लालभडक रंगविलेल्या वस्त्रांप्रमाणें शोभूं लागलीं !

राजा धृतराष्ट्रा, शस्त्रादिकांनीं परिपूर्ण व दारुण असें हें युद्ध चालू असतां, झपाट्यानें वाहणाऱ्या गंगेच्या प्रवाहाप्रमाणें त्याचा गंभीर शब्द उद्भवला व त्यानें सर्व ब्रह्मांड दुमदुमून गेलें. बाणप्रहारांनीं व्याकूल झालेल्या त्या योद्ध्यांना आपला कोण व परका कोण ही ओळख राहिली नाही; आणि युद्ध करणें हें आपलें कर्तव्य समजून जयाच्या अपेक्षेनें ते लढत राहिले. राजा, त्या समयीं उभय पक्षांकडील वीरांनीं परकीयांना व स्वकीयांनाही ठार मारिलें आणि सर्वत्र एकच अनर्थ झाला ! रणभूमीवर जिकडे तिकडे मोडलेले रथ आणि मरून पडलेले गज, अश्व व नर ह्यांची एकच गर्दी झाल्यामुळें क्षणांत सर्व भूतल अगम्य होऊन सर्वत्र रक्ताचे पाट वाहूं लागले ! त्या युद्धांत कर्णानें पंचालांस व धनंजयानें त्रिगर्तास मारिलें; आणि भीमसेनानें कौरवांचा संहार उडवून हस्तिसेनेचा फडशा उडविला ! राजा धृतराष्ट्रा, कौरवांकडील व पांडवांकडील सेना ह्याप्रमाणें यशःप्राप्तीची हाव धरून एकमेकांशीं लढत असतां अपराह्णकाळीं दोन्ही पक्षांमध्ये हा असा भयंकर नाश झाला !

अध्याय एकोणतिसावा.

—:—

युधिष्ठिर व दुर्योधन यांचें युद्ध.

धृतराष्ट्र विचारितो:—संजया, अतिशय तीव्र व दुःसह असे अनेक दुःखकारक प्रसंग वर्णन करून आणि माझ्या पुत्रांची जी भयंकर हानि झाली ती सांगून तूं जें युद्धाचें यथार्थ स्वरूप माझ्या निदर्शनास आणिलेंस, त्यावरून पाहतां 'कौरव नष्ट झालेच' असें मी निश्चयानें मानितों ! सूता, युधिष्ठिरानें महारथ दुर्योधनास विरथ करून मोठ्या संकटांत घातलें ह्मणून तूं सांगितलेंस; तर पुढें युधिष्ठिर व दुर्योधन ह्यांनीं एकमेकांशीं कसें युद्ध केले आणि अपराह्णकाळीं एकंदर युद्ध कशा प्रकारें झालें, तें सविस्तर सांग. संजया, तुझी वर्णन करण्याची शैली फारच चांगली आहे.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, दुर्योधन राजा विरथ होऊन भूतलावर उभा असतां, इकडे दोन्ही दळे एकमेकांशीं लगट करून मोठ्या निकरानें लढत होती. उभय पक्षांचें चतुरंग सैन्य परस्परशीं झगडत असून त्यापैकीं बहुत वीर एकमेकांच्या हस्ते धारातीर्थी पतन पावत होते. अशा स्थितीत तुझा पुत्र दुर्योधन दुमऱ्या रथावर आरूढ झाला व सविष सर्पाप्रमाणें महाक्रोधानें क्षुब्ध होऊन त्यानें धर्मराज युधिष्ठिरावर दृष्टि फेंकिली आणि मोठ्या त्वरेनें सारथ्यास म्हटलें, " हे सारथे, चल, चल. ज्या ठिकाणीं कवचधारी युधिष्ठिर राजा मस्तकावर धरलेल्या छत्रानें शोभत आहे, त्या ठिकाणीं मला लवकर ने. " राजा धृतराष्ट्रा, महारथ दुर्योधनाची अशी आज्ञा होताच सारथ्यानें तो श्रेष्ठ रथ रणांगणांत धर्मराजाच्या अग्रभागीं चालविला. तेव्हां तें पाहून धर्मराजा मदोन्मत्त कुंजराप्रमाणें क्षुब्ध झाला; व त्यानेंही आपल्या सारथ्यास 'दुर्योधनाकडे रथ

चालव ' ह्मणून आज्ञा केली. नंतर ते दोघेही महाबलिष्ठ वीर भ्राते एकमेकांवर तुटून पडले; व त्या युद्धदुर्मद महाधनुर्धरांनी अत्यंत क्षुब्ध होऊन समरांगणांत परस्परांवर बाणवृष्टि सुरू केली. त्या वेळीं दुर्योधनानें सहाणेवर धार लावून तीक्ष्ण केलेल्या भल्ल बाणानें धर्मराजाचें धनुष्य तोडिलें; परंतु युधिष्ठिरास तो अपमान सहन न होतां त्यानें क्रोधायमान होऊन नेत्र आरक्त केले; आणि हातांतील तें छिन्न धनुष्य फेंकून देऊन दुसरें धनुष्य उचलिलें व सैन्याच्या अग्रमार्गी उभें राहून दुर्योधनाचा ध्वज व धनुष्य हीं दोन्ही तोडून टाकिलीं ! मग दुर्योधनानें आणखी दुसरें धनुष्य धारण केलें व युधिष्ठिरावर बाणवृष्टि आरंभिली. तेव्हां दोघांचा घोर संग्राम सुरू झाला. दोघेही अतिशायंत खवळले व एकमेकांवर एकसारखे बाण टाकू लागले. तेव्हां जणू काय ते दोघे सिंह परस्परांना जिंकण्याच्या इच्छेनें एकमेकांवर तुटून पडले आहेत, असें भासलें. माजलेले बैल जसे डुरकण्या फोडीत एकमेकांवर धावून जाऊन एकमेकांस विद्ध करितात, तसा क्रम त्यांनीं आरंभिला. ते दोघेही महारथ परस्परांचें व्यंग कोठें सांपडतें ह्याजवर दृष्टि ठेवून मोठ्या आवेशानें लढूं लागले; आणि त्यांनीं एकमेकांवर निकराचा भडिमार करून एकमेकांचे देह रुधिरपरिप्लुत करून टाकिले, तेव्हां जणू काय ते पलाशवृक्षच पुष्पित झाले आहेत, असा भास होऊं लागला ! राजा धृतराष्ट्रा, नंतर ते दोन्ही योद्धे वारंवार सिंहगर्जना करूं लागले; त्याप्रमाणेंच त्यांनीं धनुष्यांचे टणत्कार केले व हातांनीं मोठमोठ्यानें टाळ्या वाजविल्या; आणि महान् शंखनाद करून एकमेकांस अतिशय पीडा दिली ! नंतर युधिष्ठिरानें अत्यंत क्रोधायमान होऊन वज्राप्रमाणें दुःसह असे तीन बाण तुड्या पुत्राच्या

वक्षःस्थलावर टाकिले; परंतु तुड्या पुत्रानें तत्काळ उलट पांच स्वर्णपुंव निशित बाण धर्मराजावर सोडून त्यास विद्ध केले. तदनंतर दुर्योधनानें धर्मराजावर भयंकर शक्ति फेंकिली. ती शक्ति अग्नीप्रमाणें देदीप्यमान असून कोणाचाही संहार करण्यास समर्थ अशी होती. ती जलाल शक्ति मोठ्या वेगानें आपणावर येत आहे, असें पाहून धर्मराजांनें एकदम तीक्ष्ण बाण तिजवर टाकून तिचे तुकडे केले व दुर्योधनावरही पांच बाण सोडिले ! तेव्हां घोषावत जाणारी ती स्वर्णदंड शक्ति अग्निज्वालेप्रमाणें दशदिशा प्रकाशमान करीत महान् उल्लेसारखी भूतलावर एकदम पतन पावली ! ह्याप्रमाणें आपली शक्ति विच्छिन्न झालेली अवलोकन करून तुड्या महाबलिष्ठ पुत्रानें नऊ निशित भल्ल बाण टाकून धर्मराजाला अतिशय विद्ध केले; तेव्हां शत्रुसंहारक धर्मराजांनें दुर्योधनाला मारण्याच्या उद्देशानें तत्काळ बाण काढिला व तो धनुष्याला जोडून अशा त्वेषानें तुड्या पुत्रावर सोडिला कीं, तो त्याला मूर्च्छित करून जमिनींत घुसला ! नंतर दुर्योधन अत्यंत कोपला व ताबडतोब गदा उचलून कलहाचा अंत करण्याकरितां धर्मराजावर धावून गेला. तेव्हां तो गदापाणी दुर्योधन दंडधारी अंतकाप्रमाणें आपणावर चालून येत आहे, असें पाहून धर्मराजांनें त्याजवर महान् उल्लेखप्रमाणें प्रज्वलित अशी देदीप्यमान व प्रचंड वेगानें चालणारी भयंकर शक्ति सोडिली ! राजा, तुझा पुत्र रथारूढ असतां त्या शक्तीनें तुड्या पुत्राचें विलखत विदारण करून वक्षःस्थल भेदिलें व त्या सरसा तो अत्यंत व्याकूळ होऊन मूर्च्छित पडला ! राजा धृतराष्ट्रा, दुर्योधनाची ती अवस्था अवलोकन करून भीमसेनाला आपल्या प्रतिज्ञेची आठवण झाली व तो " राजा, तूं ह्याला मारूं नको. " असें युधिष्ठिराला ह्मणाला. तेव्हां

धर्मरान युधिष्ठिर थांबला; परंतु इतक्यांत, व्यसनार्णवांत निमग्न झालेल्या त्या दुर्योधनाच्या साहाय्याकरितां तत्काळ कृतवर्मा त्या स्थळीं प्राप्त झाला; आणि नंतर हेमपट्टांकित गदा धारण करून भीमसेन रणांगणांत त्या कृतवर्म्यावर मोठ्या वेगानें धावून गेला व मग त्यांचें युद्ध जुंपलें; पण अखेरीस त्यांत कौरवांची दाणा-दाण झाली! राजा धृतराष्ट्रा, तुझे पुत्र व पांडव ह्यांचें जयाच्या अपेक्षेनें अपराह्णकाळीं अशा प्रकारें युद्ध झालें!

अध्याय तिसावा.

—:—

प्रथमदिनसमाप्ति.

संजय ह्याणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर तुझ्या पक्षाचे पराक्रमी वीर कर्णाला पुढें करून मागें वळले आणि मग त्यांचा व पांडवांचा देवदानवांच्या संग्रामप्रमाणें घोर संग्राम झाला. त्या समयीं गज, अश्व, रथ, पदाति, शंख व नानाविध शस्त्रपात ह्यांचा शब्द होऊं लागला. तेव्हां योद्ध्यांस फारच त्वेष आला आणि त्यांनीं मोठ्या क्रोधानें आपआपल्या प्रतिस्पर्ध्यांवर हल्ले करून त्यांजवर शस्त्रास्त्र-प्रहार करण्यास आरंभ केला. त्या वेळीं त्या घोर युद्धांत पाजविलेल्या कुऱ्हाडी, तरवारी, पट्टे, विविध बाण व गजाश्वादिक वाहनें ह्यांच्या योगें चतुरंग सैन्य धारातीर्थी पतन पावलें. वीराशिरींनीं सर्व भूतल आच्छन्न होऊन सूर्यचंद्राप्रमाणें देदीप्यमान, शुभ्र दंतांनीं विराजित, सुंदर नेत्रनासिकांनीं चित्ताकर्षक आणि रुचिर मुकुटकुंडलांनीं सुभूषित अशीं अगणित मुखकमलें त्या स्थळीं झोमूं लागलीं. त्या ठिकाणीं शतावधि परिश्र, मुसळें, शक्ति, तोमरें, नखर, मुशुंडि व गदा ह्यांच्या प्रहारांनीं सहस्रावधि कुजर, अश्व व मनुष्ये ह्यांचा संहार

उडून रुधिराच्या नद्या वाहूं लागल्या; आणि समरांगणांत हत झालेल्या व घायाळ पडलेल्या चतुरंग सैन्याचा तो हृदयविदारक भयंकर देखावा पाहून जणू काय पितृपति यमाचें तें प्रलयकालीन राष्ट्रच आहे असें सर्वास वाटलें.

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर तुझ्या सैन्यातील महान् महान् योद्धे तुझ्या देवतुल्य पुत्रांसह असंख्य सेनेसहवर्तमान शिनिपुत्र सात्यकि ह्याजवर चाल करून गेले. त्या समयीं मोठमोठे वीर, अश्व, रथ व द्विप ह्यांनीं गजबजन गेलेली ती कौरवसेना देवासुरांच्या सेनेप्रमाणें अत्यंत भयंकर दिसली व तिच्यामध्ये सागरासारखा गंभीर ध्वनि उद्भवला. नंतर समरांगणांत देवेंद्रा-प्रमाणें पराक्रम गाजविणाऱ्या त्या विष्णुतुल्य कर्णानें दिनकरकिरणांसारखे प्रखर बाण मारून शिनिप्रवीर सात्यकीला समरभूमीवर विद्ध केले. तेव्हां तत्काळ सात्यकीनें विविध बाणांचा भडिमार चालू केला व त्यानें भुजंगाच्या विषाप्रमाणें जलाल अशा अनेक बाणांनीं त्या वीरश्रेष्ठ कर्णाला, त्याच्या सारथ्याला, रथाला व अर्थांना झांकून काढिलें. राजा, ह्याप्रमाणें सात्यकीनें कर्णाला मोठ्या पेंचांत घातलें, तेव्हां तुझ्या पक्षाचे अतिरथ योद्धे चतुरंग सैन्यासमवेत त्या महारथ कर्णाच्या मदतीकरितां एकदम धावून आले; परंतु समुद्रासारख्या त्या अफाट सैन्यावर द्रुपदसुत-प्रमुख पांडववीरांनीं तत्काळ हल्ला केला आणि मग गज, अश्व, रथ व नर ह्यांचा भयंकर क्षय झाला!

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर पुरुषश्रेष्ठ कृष्णार्जुन शत्रुसेनेचा वध करण्याचा निर्धार करून पुढें झाले. त्यांनीं प्रथम आह्निक (ब्रह्मर्षितन वीर) आटपलें, मग भगवान् शंकराची यथाविधि पूजा केली आणि नंतर तांबडतोब तुझ्या सैन्यावर हल्ला केला. त्या वेळीं मेघघर्जनेप्रमाणें गडगड

शब्द करणारा, वाय्याने ध्वजपताका फडफडत असलेला, व शुभ्र अश्व जोडलेला असा तो अर्जुनाचा रथ समीप आलेला पाहून तुझ्या सैन्यांतील वीरांनी भावी अनर्थाबद्दल अनुमान केले. नंतर अर्जुन गांडीवाचा टण-त्कार करीत बाणांचा भडिमार करू लागला; आणि जणू काय रथावर नाचावयासच लागून त्याने अंतरिक्ष व दिशोपदिशा शरवृष्टीने गच्च भरून काढिल्या ! त्या समयी, राजा, वारा ज्याप्रमाणे मेघांचा नाश करून टाकितो, त्याप्रमाणे पंडुपुत्राने शत्रूंच्या विमानतुल्य रथांचा आयुध, ध्वज व सारथि ह्यांसहवर्तमान बाण-वृष्टीने नाश करून टाकिला; पुष्कळ हत्ती व त्यांजवरील महात ह्यांस ध्वजपताका व आयुधे ह्यांसह भूतली पाडिले; आणि तीच अवस्था घोडे, घोडेस्वार व पायदळ ह्यांची करून तुझ्या सैन्यास “त्राहि भगवन्” करून सोडिले ! तेव्हां अंतकाप्रमाणे क्षुब्ध झालेला तो महारथ अर्जुन आपल्या सैन्यास आवरत नाही असे पाहून, दुर्योधन एकटा त्याजवर सरळ घुसणाऱ्या बाणांची वृष्टि करीत धावून गेला. त्याबरोबर तत्काळ अर्जुनाने सात बाण सोडिले आणि दुर्योधनाचे धनुष्य, सारथि, अश्व व ध्वज ह्या सर्वांचा नाश करून एका बाणाने त्याच्या मस्तकावरील छत्र छेदिले; आणि नवा प्राणघातक जलाल बाण दुर्योधनावर टाकिला. परंतु द्रोणपुत्राने तो मध्यंतरीच तोडून त्याचे सात तुकडे केले ! तेव्हां अर्जुनाने द्रोणपुत्राचे धनुष्य छेदिले व त्याच्या रथाचे अश्व ठार केले; त्याप्रमाणेच त्याने कृपाचार्याच्या त्या भयंकर धनुष्याची वाट लाविली, आणि मग तो हार्दिक्याचे धनुष्य छेदून आणि त्याचे अश्व व ध्वज ह्यांचा विध्वंस उडवून दुःशासनावर चालून गेला व त्याचेही धनुष्य भग्न करून नंतर त्याने कर्णाला गाठिले !

इकडे कर्ण सात्यकीशी युद्ध करीत होता तो आपणावर अर्जुन आला असे पाहून एकदम सात्यकीला सोडून अर्जुनावर धावून गेला व त्याने अर्जुनावर तीन व कृष्णावर वीस असे बाण मारून पुनःपुनः तोच क्रम चालविला. राजा, त्या समयी युद्धांत शत्रूंचे निर्दलन करणाऱ्या क्रोधायमान शतक्रतूप्रमाणे कर्णाने कृष्णार्जुनांवर एकसारखी अस्वलित बाणवृष्टि केली, तरी त्यांस किंचित् सुद्धां ग्लानि आली नाही. राजा, ह्याप्रमाणे कर्ण हा कृष्णार्जुनांवर शरवर्षाव करू लागला, तेव्हां सात्यकि पुढे आला व त्याने कर्णावर प्रथम नव्याणव व मग पुनः शंभर असे उग्र बाण टाकिले; आणि नंतर पांडवांच्या सैन्यांतील मोठमोठ्या सर्व वीरांनी कर्णावर बाणांचा भडिमार चालू केला. त्या समयी युधामन्यु, शिखंडी, द्रौपदीचे पुत्र, प्रभद्रक, उत्तमौजा, युयुत्सु, नकुलसहदेव, धृष्टद्युम्न, बलिष्ठ चेकितान व महाधार्मिक युधिष्ठिर हे सर्व रथी-महारथी योद्धे आणि त्याप्रमाणेच चेदि, कारुष, मत्स्य व केकय ह्या देशाची सैन्ये हीं भयंकर हत्ती, घोडे, रथ व पायदळ ह्यांसहवर्तमान कर्णावर चालून आली, व त्यांनी कर्णाला ठार मारण्याचा निश्चय करून समरांगणांत त्याला गराडा घातला आणि कठोर भाषणे करीत नानाविध शस्त्रास्त्रांचा त्याजवर भडिमार सुरू केला !

राजा, ह्याप्रमाणे चोहोंकडून शस्त्रवृष्टि होऊ लागली तरी कर्णाला यत्किंचित् भीतीचा स्पर्श झाला नाही. त्याने उलट जलाल बाण सोडण्यास आरंभ केला, व आपणावर येणारी शस्त्रास्त्रे छेदून टाकून, मारुत जसा वृक्षांचा विध्वंस उडवितो, तसा त्याने शत्रुसैन्याचा विध्वंस उडविला. राजा, त्या वेळीं कर्ण हा क्रोधायमान होऊन रथी, महातांसुद्धां हत्ती, स्वारांसहित घोडे व पायदळ यांच्या मोठमोठ्या

टोळ्या ह्यांचा एकसारखा संहार करित आहे असें दिसूं लागलें आणि ह्याप्रमाणें पांडवांच्या सैन्याचीं आयुधें, वाहनें, देह व प्राण हीं नष्ट होऊं लागलीं, तेव्हां उर्वरित सैन्य युद्धविमुख होऊन पळ काढण्याच्या बेतांत आलें; परंतु इतक्यांत अर्जुनानें स्मित करून कर्णाच्या अस्त्रांवर आपलीं अस्त्रें टाकण्यास प्रारंभ केला व हां हां ह्मणतां भूतल, अंतरिक्ष व सभोवतालच्या सर्व दिशा शरवृष्टीनें व्यापून काढिल्या. त्या समयीं कौरवांच्या सैन्यावर अर्जुनाच्या बाणांचा जो वर्षाव होत होता, तो पाहून जणू काय मुसळांची किंवा परिघांची धारच कोसळत आहे असें भासलें; आणि त्या बाणांपैकीं कित्येकांनीं शतधनीप्रमाणें व कित्येकांनीं उग्र वज्राप्रमाणें शत्रूसैन्याचा भयंकर संहार होऊं लागला ! राजा, त्या समयीं अर्जुनाच्या बाणप्रहारांनीं कौरवांकडील हत्ती, घोडे, रथ व पायदळ हीं सर्व बेहोष झालीं आणि डोळे मिटून भयंकर आक्रोश करित केवळ धारातीर्थीं देह ठेवण्याच्या इच्छेनें तें चतुरंग सैन्य शत्रूशीं लढूं लागलें; पण अवेरीस अर्जुनाच्या दुःसह बाणप्रहारांनीं अत्यंत आर्त झाल्यामुळें तें रणांगणांतून पळत सुटलें !

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें तुझे सैन्य जयाची आशा धरून शत्रूसैन्याशीं झगडत असतां सूर्य अस्ताचलाप्रत प्राप्त होऊन अदृश्य झाला. आणि मग लवकरच चोहोंकडे अंधकार पडल्यामुळें व त्यांतूनही विशेषतः दशदिशा धुळीनें व्यापून गेल्यामुळें, पुढें बरें किंवा वाईट काय झालें, तें कांहींच दिसलें नाहीं; परंतु इतकें खरें कीं, तुझ्या पक्षाचे महाधनुर्धर वीर रात्रीस युद्ध करण्यास भ्याले व ते सर्व योद्ध्यांसहित समरांगणांतून निघून गेले ! राजा, ह्याप्रमाणें कौरवांनीं पळ काढिला असतां पांडव हे विजयी होस्ताते मोठ्या आनंदानें आपल्या

शिविरांत जाण्यास निघाले. त्या समयीं पांडवांच्या सैन्यांत नानाविध वाधांचा घोष सुरू झाला; आणि पांडववीर सिंहनाद करून शत्रूंचा उपहास व कृष्णार्जुनांची प्रशंसा करूं लागले. राजा, अशा प्रकारें कौरवसेनेचा पराभव करून पांडवांनीं आपलीं सर्व सेना एकत्र जमविली, तेव्हां तत्पक्षीय राजांनीं व सैनिकांनीं पांडवांना आशीर्वाद दिले. त्या वेळीं ती सर्व विजयी सेना अवलोकन करून पांडवांनाही मोठा हर्ष झाला; आणि नंतर ते पांडव, सर्व राजे व सैनिक रात्री आपआपल्या मुक्कामास जाऊन तेथें त्यांनीं रात्र घालविली ! राजा धृतराष्ट्रा, नंतर त्या शून्य व भयाण समरभूमीवर राक्षस, पिशाच्चें व श्वापदें ह्यांच्या झुंडीच्या झुंडी प्राप्त होऊन तें रुद्राचें क्रीडास्थानच होय असें सर्वत्र भासूं लागलें !

अध्याय एकतिसावा.

—:०:—

कर्ण व दुर्योधन ह्यांचा संवाद.

धृतराष्ट्र ह्मणाला:—संजया, आपल्याकडील सर्व योद्ध्यांना अर्जुनानें केवळ आपल्या स्वतःच्या इच्छेनेंच वधिलें हें उघड आहे. बाबा, अर्जुनाचा पराक्रम कांहीं सामान्य नव्हे. त्या शस्त्रधारी योद्ध्याची समरांगणांत गांठ पडली असतां प्रत्यक्ष अंतकाचीही सुटका होणें कठीण ! पहा, एकट्या पार्थानें सुभद्रेचें हरण केलें, त्यानें एकट्यानेंच अग्नीची तृप्ति केली, आणि त्यानें एकट्यानेंच अखिल भूमंडल जिंकून सर्व राजांना मांडलिक बनविलें ! अरे, त्या दिव्य धनुर्धराची महती किती वर्णावी ! त्यानें एकट्यानें निवातकवचांचा संहार उडविला, किरातरूपानें स्थित असलेल्या भगवान् शंकराशीं त्यानें एकट्यानें युद्ध केलें, घोषयात्रेच्या प्रसंगीं त्यानें एकट्यानेंच दुर्योधना-

दिक भारतवीरांचा बचाव केला, त्यानें एकट्यानेच शंकराचा प्रसाद जोडिला, आणि त्या प्रतापशाली वीरानें एकट्यानेच सर्व भूपाल जिंकून टाकिले! संजया, अशा त्या महान् वीराशीं झुंजणारे मत्पक्षीय वीर (कौरव) हे निध नव्हत, ते सर्वथा प्रशंसनीयच मानिले पाहिजेत; ह्यास्तव कौरवांनीं जें काय केलें असेल तें निवेदन कर. तसेंच त्या समयीं पुढें दुर्योधनानें काय केलें तेंही सांग.

संजय क्षणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, पांडवसैन्यानें कौरवसैन्याची दाणादाण उडविली तेव्हां कौरवांकडील बहुत वीर रणभूमीवर पडले, पुष्कळांचे हस्तपादादिक अवयव छिन्न-विछिन्न झाले, अनेकांच्या हातांतलीं आयुधें पतन पावलीं व चिलखतें फाटून गेलीं, आणि बहुतांचीं वाहनें नष्ट होऊन चोहोंकडे एकच हाहा:कार उडाला! तेव्हां तुझ्या पक्षाचे राहिले-साहिले योद्धे क्रोधानें जळफळत शिबिराप्रत प्राप्त झाले. राजा, त्या समयीं तत्पक्षीय वीर जणू काय पायांखालीं तुडविलेल्या व दांत पाडून निर्विष केलेल्या सर्पाप्रमाणें भासत होते! असो. सर्वजण गोटांत जमल्यानंतर त्यांनीं फिरून मसलत करण्यास प्रारंभ केला. त्या वेळीं कर्ण हा सर्पाप्रमाणें क्रोधाचे सुस्कारे देत व हात-बोटें मोडीत तुझ्या पुत्राकडे पाहून सर्वास क्षणाला, “अहो, आज अर्जुनानें एका-एकीं बाणवृष्टि करून आपणांस पराभूत केलें ह्याचें कारण त्याची दक्षता, दूरदृष्टि, दृढबुद्धि व समयज्ञता हें असून शिवाय त्यास प्रसंगानुरूप वेळोवेळीं अधोक्षजाकडून स्वकर्तव्याबद्दल उत्तम सूचना मिळत असत हेंही आहे; परंतु, राजा, मी तुला असें खातरीनें सांगतों कीं, उद्यां मी अर्जुनाचे सर्व मनोरथ नष्ट करीन.”

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें कर्णाचें भाषण श्रवण करून दुर्योधनानें ‘ बरें आहे, ’ ह्याणून झटलें व

कौरवपक्षाच्या महान् महान् राजांना विश्रांति घेण्याविषयीं अनुज्ञा दिली; आणि नंतर ते सर्व राजे आपआपल्या तंबूत गेले व रात्रभर स्वस्थ झोप घेऊन पुनः मोठ्या उल्हासानें युद्धाकरितां बाहेर पडले. पुढें ते सर्व योद्धे समरांगणांत प्राप्त होऊन पाहातात तों कुरुश्रेष्ठ धर्मराजानें बृहस्पति व शुक्राचार्य ह्या उभयतांनाही संमत असा एक दुर्जय व्यूह मोठ्या श्रमानें रचिला आहे, असें त्यांस आढळून आलें. तेव्हां अशा ह्या व्यूहाचें भेदन करण्यास वृषभतुल्य स्कंध धारण करणारा, युद्धांत पुरंदराप्रमाणें प्रताप गाजविणारा, मरुद्गणांप्रमाणें बलिष्ठ, कार्तवीर्याप्रमाणें वीर्यावान् असा हा महापराक्रमी वीर कर्णच समर्थ आहे असें मनांत आणून शत्रुसंहारक दुर्योधनानें कर्णाचें स्मरण केलें; व सर्व सैन्याच्या मनांत तेंच येऊन, प्राणसंकटांत बंधुच जसें रक्षण करितो, तसें ह्या समयीं महाधनुर्धर कर्णच आपलें रक्षण करील, असे उद्गार सर्वजण काढूं लागले व सर्वांचें मन कर्णाकडे लागलें.

धृतराष्ट्र क्षणाला:—वा संजया, तुझां सर्वांचें मन कर्णावर लागलें असतां मग दुर्योधनानें काय केलें बरें? थंडीनें कुडकुडलेला प्राणी जशी सूर्यदर्शनाची अपेक्षा करितो, तशी व्यूहाला भ्यालेल्या सैन्यानें कर्णाच्या भेटीची अपेक्षा केली काय? रात्रीस सर्व सैन्य आपआपल्या शिबिरास जाऊन प्रातःकाळीं पुनः युद्धास आरंभ झाला, तेव्हां विकर्तनपुत्र कर्णानें कशा प्रकारें युद्ध केलें? त्याप्रमाणेंच कर्णाशीं सर्व पांडव कसे लढले? संजया, कर्णाचें सामर्थ्य काय म्हणून सांगावें? तो प्रतापशाली वीर एकटा सृजयांसहित पांडवांना ठार करण्यासारखा! त्याच्या बाहूंच्या ठिकाणीं इंद्र किंवा विष्णु ह्यांच्याप्रमाणें युद्धसामर्थ्य! त्या महा-त्याची शस्त्राखें व पराक्रम हीं केवळ भयंकर!

बरें, अर्जुनानें दुर्योधनाला अत्यंत जर्जर केलेले पाहून व त्याप्रमाणेंच इतर पांडवांचा अतिशयित पराक्रम अवलोकन करून त्या महारथ कर्णानें काय केले? संजया, कर्णाच्या आश्रयावरच दुर्योधन इतका उन्मत्त झाला व त्याची भावी नाशावर दृष्टि गेली नाही. अरेरे! मूर्ख दुर्योधनानें पुनः युद्धांत कर्णाच्या बळावर पुत्रांसमवेत व कृष्णासमवेत पांडुपुत्रांना जिंकण्याची उमेद धरिल्ली काय? अरे, कर्णासारखा महान् योद्धा समरांगणांत पांडवांना जिंकण्यास समर्थ झाला नाही ही मोठ्या दुःखाची गोष्ट होय. खचित दैवाची प्रतिकूलता हेंच ह्याचें कारण होय. अरेरे! द्यूतांचें हें भयंकर फळ प्रस्तुत प्राप्त होत आहे! संजया, दुर्योधनाच्या दुष्ट कृत्यांपासून उत्पन्न झालेले दुःखरूप जलाल व घोर असे अनेक शर मला सहन केले पाहिजेतना! वा संजया, त्या द्यूतप्रसंगी कर्णाला सौबल हा मोठा मुत्सद्दी वाटला, नाही बरें? अरेरे! कर्णासारख्या प्रतापशाली वीराच्या इच्छे-नुरूप दुर्योधन हा नेहमी वागत असतां त्या महान् युद्धामध्ये माझ्या पुत्रांचा नित्य पराभव व नाश झालेला मी ऐकितों, समरांगणांत पांडवांचें निवारण करण्यास कोणीही समर्थ होत नाही, व ते खुशाल माझ्या सेनेचा संहार उडवीत आहेत, तेव्हां दैव हें बलवत्तर खरें, असेच म्हटलें पाहिजे!

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, द्यूत वगैरे जीं कारणें तुम्हीं पूर्वीं उपस्थित केलीं तीं सर्व न्याय्यच होतीना? अरे, जी गोष्ट होऊन गेली, तिचा मागून विचार करून तळमळत बसावयाचें हा मानवी स्वभावच दिसतो! परंतु त्यापासून कांहींएक लाभ होत नाही; उलट हानि मात्र होते. कारण ज्या कार्याला आपण अंतरलों, तें तर पुनः साध्य होत नाहीच, पण त्याच्या चिंतेनें आपला नाश

मात्र होतो! राजा, आतां राज्यलाभ आदिकरून मनीषा सिद्धीस जाणें अशक्यच होय; कारण, तुला योग्यायोग्य कृत्य कोणतें हें कळत असतां-ही तूं त्याचा पूर्वीं विचार केला नाहीस. राजा, पांडवांशीं युद्ध करूं नको म्हणून तुला नानाप्रकारें सांगितलें असतां त्याचा तूं अविचारानें अन्वेष केलास आणि तूं पांडवांना उद्देशून बहुविध घोर पापकर्में केलीस; ह्यास्तव, राजा, क्षत्रियांचा हा जो महान् संहार घडत आहे, ह्याचें कारण तूंच होय! असो; राजा, आतां त्या गत गोष्टींचा विचार करण्यांत अर्थ नाही; व्यर्थ शोक करून काय उपयोग! पुढें जो कांहीं घोर नाश झाला, तो सर्व श्रवण कर.

प्रभातीं दुर्योधनाकडे जाऊन त्याला कर्ण म्हणाला:—राजा, आज मी प्रतापशाली अर्जुनाशीं युद्ध करून त्याला वधीन किंवा तो मला वधील. मला व त्याप्रमाणेंच त्यालाही बहुत कार्यें असल्यामुळें हा वेळपर्यंत त्याचा व माझा युद्धप्रसंग घडला नाही. पण आतां मी यथाबुद्धि जें कांहीं सांगत आहे तें हें कीं, रणांत अर्जुनाला मारल्याशिवाय मी माघारा येणार नाही! राजा, आपल्या ह्या सैन्यांतले मोठमोठे योद्धे समरांगणांत पतन पावले असून मी मात्र काय तो इंद्रानें दिलेल्या शक्तीनें रहित होत्साता रणभूमीवर उभा आहे. ह्यासाठीं अशा ह्या समयीं अर्जुन मजवर चालून आल्या-शिवाय रहाणार नाही; म्हणून ह्या प्रसंगीं जें श्रेयस्कर होईल असें मला वाटत आहे, तें ऐक. राजा, माझ्या व अर्जुनाच्या दिव्य आयुधांचें सामर्थ्य अगदीं समान आहे. शत्रूंनीं अस्त्रवृष्टि केली असतां तिचा भेद करण्यांत, लांबवर बाण फेंकण्यांत, नेमकाच शिताफीनें बाण मारण्यांत व अस्त्रांचा वर्षाव करण्यांत सज्यसाची अर्जुनाची व माझी बरोबरी होणार नाही. शारीरबल, मानसिक धैर्य, अस्त्रनैपुण्य, युद्ध-

विक्रम व अचूक शरसंधान ह्यांमध्येही अर्जुनापेक्षां माझ्या ठिकाणी अधिक सामर्थ्य आहे. आणि त्याप्रमाणेच अखिल आयुधांमध्ये वरिष्ठ असें जें विजय नामक धनुष्य तेंही मजपाशीं सिद्ध आहे. राजा, माझ्या ह्या विजय चापाची महती काय वर्णावी! पूर्वी विश्वकर्मानें इंद्राचें प्रिय करण्याच्या हेतूनें हें तयार करून इंद्राला दिलें; तेव्हां त्याच्या साहाय्यानें इंद्रानें अनेक दैत्यसमुदायांस जिंकिलें. राजा ह्या धनुष्याचा केवळ टणत्कार कानीं पडतांच दशदिशांच्या ठिकाणीं दैत्यांची मोठी भेधा उडून जाई! असें हें अपूर्व धनुष्य इंद्रानें परशुरामाला दिलें; आणि नंतर परशुरामानें मला अर्पण केलें. राजा, मी आज अर्जुनाशीं त्या धनुष्यानें युद्ध करणार; आणि समरांगणांत इंद्रानें अखिल दैत्यांचा जसा संहार उडविला तसा मी त्या महापराक्रमी व महाशक्तिमान् अर्जुनाचा संहार उडविणार! राजा, माझ्या ह्या विजय चापापुढें गांडीव चापाची मुळीच प्रतिष्ठा नाही. अरे, भार्गवानें ह्या चापानेंच एकवीस वेळां निःक्षत्रिय पृथ्वी केली! ह्या धनुष्याचें दिव्य व अनुपम सामर्थ्य खुद्द भार्गवानें मला वर्णन करून सांगितलें आहे. ह्यास्तव आज मी हें धनुष्य घेऊन अर्जुनाशीं लढेन आणि त्याला मारून तुला व तुझ्या सर्व बांधवांना प्रमुदित करीन. राजा, एकदां मी अर्जुनाला बघिलें कीं सर्व उर्वीतल निर्वीर झाले म्हणून समज. मग पर्वत, वनें, द्वीपे ह्यांसहवर्तमान समुद्रवलयार्कित पृथ्वी तुझ्या हस्तगत होईल; आणि पुत्रपौत्रांसमवेत तूं तिचा अखंड उपभोग घेशील. राजा, आज मला कोणतीही गोष्ट अशक्य नाही. व त्यांतून तुझे प्रिय करावें हाच माझा मुख्य उद्देश असल्यामुळें, जें जें म्हणून अवश्य तें तें करण्यास मी अगदीं तयार आहे आणि धर्मास अनुसरून आचरण

करणाच्या ब्रह्मनिष्ठ पुरुषास सिद्धि जशी निश्चयानें प्राप्त होते, तशी मी अंगीकारलेल्या या विहित कृत्यास ती निश्चयानें प्राप्त होईल. राजा, अग्नीशीं झुंजण्यास जसा वृक्ष समर्थ होत नाही, तसा रणांगणांत माझ्याशीं झुंजण्यास अर्जुन हा समर्थ होणार नाही; तथापि अर्जुनापेक्षां मजपाशीं काय न्यून आहे, हेंही म्यां तुला विदित करावें हा माझा धर्म होय. राजा दुर्योधना, अर्जुनाच्या त्या धनुष्याची ज्या दिव्य असून त्याचे ते महान् बाणभातेही मोठे दिव्य आहेत. त्याप्रमाणेंच अर्जुनाचा सारथि गोविंद हा जसा आहे, तसा माझा सारथि नाही. अर्जुनाचें तें श्रेष्ठ गांडीव धनुष्य युद्धांत मोठें अजिंक्य व दिव्य असें आहे खरें, परंतु माझे विजय नामक महाधनुष्यही तसेंच प्रतापशाली व श्रेष्ठ आहे. राजा, धनुष्याचा विचार केल्यास मी अर्जुनापेक्षां अधिक बलवान् आहे ह्यांत संदेह नाही; पण अर्जुन हा माझ्यापेक्षां कोणकोणत्या बाबतींत अधिक बलवान् आहे तें श्रवण कर. राजा, अर्जुनाचें सारथ्य करण्यास दाशार्ह हा सिद्ध असून सर्व जगत् त्यास नमस्कार करीत आहे; त्याप्रमाणेंच अर्जुनाचा तो दिव्य व कांचनमांडित रथ अग्निदत्त असल्यामुळें तो सर्वतोपरी दुर्भेद्य असा आहे; तसेंच अर्जुनाच्या रथाचे ते बलिष्ठ अश्व मनोवेगानें पळणारे असून त्याच्या त्या दिव्य ध्वजाच्या ठिकाणीं द्युतिमान् व विस्मयकारक असा वानर अधिष्ठित आहे; आणि सर्व ब्रह्मांडाला उत्पन्न करणारा भगवान् कृष्ण हा त्याच्या त्या रथाचें संरक्षण करीत आहे. राजा, यद्यपि ह्या इतक्या गोष्टी मजपाशीं कमती आहेत, तथापि त्या अर्जुनाशीं युद्ध करण्याची मी इच्छा करीत आहे. राजा, आपल्या पक्षाकडे असलेला हा रणधुरंधर शल्य कृष्णाप्रमाणें सारथ्यकर्मीत फार कुशल आहे. ह्यास्तव तो जर माझे सारथ्य करील, तर तुला

खचित विजय प्राप्त होईल; ह्यासाठी, तो महा-
पराक्रमी शल्य माझे सारथ्य करील व माझ्या
रथावर गात्रपत्र बाणांचा विपुल पुरवठा होईल
आणि उत्तमोत्तम अश्वानी युक्त असे बलिष्ठ
बलिष्ठ रथ नित्य माझ्या मार्गे चालत अस-
तील, अशी सर्व व्यवस्था लाभ, ह्यणजे
माझ्या ठिकाणी अर्जुनापेक्षा अधिक सामर्थ्य
येईल. राजा, कृष्णापेक्षा शल्य हा सार-
थ्यांत अधिक कुशल आहे व अर्जुनापेक्षा
मी युद्धकर्मांत अधिक प्रवीण आहे. राजा,
परवीरघ्न दाशार्ह कृष्ण अश्वविद्येंत जितका निपुण
आहे, तितकाच निपुण महारथ शल्यही त्या विद्येंत
आहे. शिवाय बाहुवीर्यांत मद्रराज शल्याची
बरोबरी करील असा कोणीही नाही, आणि
त्याप्रमाणेंच अश्वविद्येंत कोणताही धनुर्धर
माझ्यापुढे टिकाव काढणार नाही. ह्यास्तव,
माझ्या इच्छेप्रमाणें मला शल्य सारथि मिळेल
व इतर सर्व गोष्टी अनुकूल होतील, तर मी
अर्जुनाला युद्धांत निःसंदेह जिंकून. राजा,
ह्याप्रमाणें सर्व सिद्धता झाल्यावर, इंद्रप्रमुख
देवही माझ्यावर चाल करून येण्यास समर्थ
होणार नाहीत. एकदां तूं माझे मनोरथाप्रमाणें
सर्व गोष्टी घडवून आण, ह्यणजे मी संग्रामांत
काय काय करून दाखवितों तें तुझ्या दृष्टीस
पडेल. राजा फार काय सांगू ? असें झाल्या-
वर माझ्याशीं भिडण्यास मुरामुरही समर्थ
होणार नाहीत; मग मानुषयोनीत जन्म पाव-
लेल्या पांडुमुतांची ती कथा काय ? माझ्या
इच्छेनुरूप सर्व व्यवस्था जमल्यावर आपणाशीं
युद्धास प्रवृत्त झालेल्या पांडवांना मी पूर्णपणें
जिंकलेंच म्हणून समज !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, परम-
प्रतापी कर्णानें ह्याप्रमाणें भाषण केलें तेव्हां
दुर्योधनाला भेटें समाधान वाटलें व तो मोठ्या
गौरवानें बोलू लागला.

दुर्योधन ह्यणाला:—कर्णा, तुझ्या ह्यणण्या-
प्रमाणें मी सर्व कांहीं करितों, ज्यांवर बाणभोते
ठेविले असून ज्यांस अश्व जोडिले आहेत असे
रथ रणांगणांत तुझ्या मार्गे नित्य चालत
राहातील; व त्याचप्रमाणेंच गात्रपत्र शरणांचा तुझ्या
रथावर भरूर पुरवठा होईल; आणि आम्ही सर्व
भपाल तुझ्या पाठीवर स्वत्साहाय्यार्थे सिद्ध राहूं.

संजय सांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणें प्रोत्साहन-
पर भाषण करून तुझा प्रतापशाली पुत्र मद्रां-
धिपति शल्याकडे जाऊन त्याशीं बोलू लागला.

अध्याय वृत्तिसावा,

—:०:—

शल्य्याची सारथ्यार्थे प्रार्थना.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर
तुझा पुत्र दुर्योधन हा मद्राधिपति महारथ शल्य
ह्याजकडे मोठ्या विनयानें गेला व त्यास प्रेम-
पूर्वक म्हणाला, “ हे महाभागा मद्रेश्वरा, तूं
सत्यव्रत असून शत्रूंचा ताप वाढविणारा आहेस
व तुझ्या अंगी रणशौर्य असल्यामुळें तुला
पाहून शत्रूंची अगदी त्रेधा उडून जाते; त्या-
प्रमाणेंच, हे वक्तृत्वकुशला, सर्व महान् महान्
राजांमध्ये कर्णाच्या साहाय्याकरितां मी स्वतः
तुलाच अतिशय पसंत करितों, हेंही तूं ऐकिलें
आहेसच; ह्यास्तव, हे शत्रुपक्षसंहारका अद्वि-
तीय वीरा मद्रेशा, मी तुला हात जोडून
प्रांजळपणें अशी प्रार्थना करितों कीं, हे महारथा,
अर्जुनाचा नाश करण्यासाठीं व माझे हित कर-
ण्यासाठीं तूं सारथ्य करण्याची कृपा कर. जर
तूं सारथ्य करशील तर राधेय कर्म्म हा खचित
माझ्या शत्रूंना जिंकून टाकील. हे शल्या, रण-
भूमीवर वासुदेवाप्रमाणें कर्माचें सारथ्य करण्यास
योग्य असा तुझ्यावांचून दुसरा कोणी दिसत
नाहीं. तेव्हां ब्रह्मदेवानें शंकराचें सारथ्य पत-
करून जसें त्याचें रक्षण केलें, तसें तूं कर्णाचें

सारथ्य पालकरून त्यांचे सर्व प्रकारे रक्षण कर. हे मद्राधिपा, सर्व आपसीमध्ये कृष्ण ज्याप्रमाणे अर्जुनाचे प्रतिपालन करितो, त्याप्रमाणे तू आम राधेयाचे प्रतिपालन कर. अरे, आपल्या पक्षाचे मुख्य वीर काय ते भीष्म, द्रोण, कृप, कर्ण, वीर्यवान् भोज, सौबल शकुनि, अध-त्याबा, तू व मी असे नऊ, आणि आपण तदनुसार आपले सैन्य विभागून त्याचे नऊ भाग केले; परंतु महात्मे भीष्म व द्रोण ह्यांचे भाग आतां राहिले नाहीत. त्या महान् वीरांनी आपआपल्या भागांकडून वास्तविकपणे जो कांहीं शत्रुसंहार करावयाचा त्याहूनही अधिक केला, परंतु त्या दोघांही महाधनुष्यांचा रणांगणांत क्षम्वीनी कवटांने वध केला! असो. हे मद्रराजा, ते दोघेही योद्धे अचाट पराक्रम गाजवून इहलोक सोडून स्वर्गलोकीं चालते झाले व त्याप्रमाणेंच आपल्याकडील दुसऱ्याही पुष्कळ वीरपुंगवांनी आपआपल्या शक्त्यनुरूप प्रताप दाखवून व शत्रुहस्ते वध पावून स्वर्गलोकचा मार्ग आक्रमिला! अशा प्रकारे, हे मद्रेश्वरा, माझ्या सैन्याची दुर्दशा झाली असून आतां त्यांत फारसे वीर राहिले नाहीत. आरंभी पांडवांचे सैन्य आपल्यापेक्षां कमी असतां आपल्या सैन्याची ही अशी दुर्दशा झाली, तेव्हां आतां काय करावें बरें? प्रस्तुत पांडव आपल्यापेक्षां बलिष्ठ झाले असून त्यांच्या ठिकाणी स्वसेखरीच विलक्षण पराक्रम विद्यमान आहे; ह्यास्तव त्यांच्या हातून आपल्या सेनेचा नाश होणारं नाही असा कांहीं तरी उपाय योज. आज कौरवसेनेतील मोठमोठे योद्धे समरांगणांत पांडुतनयांनी वधिले असून एक महाबाहु कर्ण व एक सर्वलोकमहारथ तू असे दोघे मात्र माझ्या हिताकरितां तत्पर आहां. आज कर्णाच्या मनांत अर्जुनाशी युद्ध करावें असे आहे, व कर्णाच्या हस्ते

खचित विजय प्राप्त होईल अशी मला पूर्ण खातरी वाटते. वण त्यांचे सारथ्य करण्यास योग्य असा कोणीही श्रेष्ठ पुरुष ह्या भूतलावर दिसत नाही. म्हणून, अर्जुनाच्या रथावर कृष्ण जसा उत्तम सारथि आहे, तसा तू कर्णाच्या रथावर सारथि हो. राजा शल्या, कृष्ण हा सारथ्य करून अर्जुनाचे संरक्षण करीत असल्यामुळे अर्जुन कसकसे पराक्रम करू शकला, हे सर्व तुला दिसत आहेच. पूर्वी अर्जुनाच्या अंगी असले अद्वितीय शौर्य दृग्भोचर झाले नाही. त्यानें पूर्वी असा शत्रुनाश कधीही केला नव्हता. हल्ली त्याचा जो हा प्रताप व्यक्त होत आहे, तो त्या कृष्णार्जुनांच्या संघशक्तीचा परिणाम होय. ते दोघे आतां एकत्र झाल्यामुळे कौरवांची ही महाधमू प्रत्यही रणांगणांतून विदीर्ण होऊन उध्वस्त होत चाललेली दिसत आहे. हे महाद्युते, प्रस्तुत कर्णाच्या व तुझ्या अशा दोघांच्या मात्र सैन्याचे कांहीं भाग अवशिष्ट आहेत, ह्यास्तव तुम्हीं दोघांनी आपली सैन्ये एकत्र करून एकदम शत्रूंचा नाश करा. ह्या महान् युद्धामध्ये, अरुणाच्या मदतीने सूर्य जसा अंधकाराचा उच्छेद करितो, तसा तू कर्णाच्या मदतीने शत्रूंचा उच्छेद कर. राजा शल्या, प्रातःकालीन सूर्याप्रमाणें द्युतिमान असे तुम्ही कर्णशल्य रणांगणांत शत्रुनाशार्थ उद्युक्त झालां म्हणजे पांडवांकडील मोठमोठे महारथ तत्काळ पलायन करतील. सूर्यास्तांना पाहून अंधकार जसा नष्ट होतो, तद्वत् तुम्हांला पाहून पांचाल व सृजय ह्यांसमवेत सर्व पांडव नष्ट होतील. अरे, ही तुमची जोडी मोठी अपूर्व होय. कर्ण हा रथ्यांमध्ये श्रेष्ठ व मद्राधिपति तू सारथ्यांमध्ये श्रेष्ठ! आजपर्यंत असा हा अपूर्व योग पूर्वी कधी जमला नाही व पुढें कधी जमणारही नाही. ज्याप्रमाणें सर्व

संकटांमध्ये अर्जुनाला कृष्ण संभाळतो, त्या-
प्रमाणे रणांगणांत कर्णाला त्वां संभाळावे हें
उचित होय. हे मद्रेश्वरा, कर्णाचें सारथ्य कर-
ण्यास तूं सिद्ध झालास तर समरांगणांत कर्णा-
वर चालून येण्यास प्रत्यक्ष इंद्रप्रमुख देवांचीही
छाती होणार नाही, मग यःकश्चित् पांडवांची
ती कथा काय ? ह्या माझ्या भाषणावर तूं
पूर्ण भरंवसा ठेव. ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, दुर्यो-
धनाचें भाषण शल्याला मुळीच मानवलें नाही.
त्याच्या योगें तो अतिशय संतापला, कपाळाला
आठ्या घालून व भुंवया चढवून पुनः पुनः हातघोटें
मोडूं लागला, आणि क्रोधानें त्याचे नेत्र
आरक्त होऊन गरगर फिरू लागले ! राजा,
कुल, शील, ज्ञान, विभव व बल ह्यांविषयी
शल्यास मोठा अभिमान होता. ह्यास्तव, तो
दुर्योधनास असें झणाला.

शल्य म्हणतो:—राजा गांधारीपुत्रा, तूं
माझा उग्रड उग्रड अवमान करितोस, ह्यावरून
खचित तुला माझ्या सामर्थ्याविषयी शंका
आहे, ह्यांत संदेह नाही; अरे, नाही तर तूं मला
सारथ्य कर म्हणून कधीही विनदिक्तपणें
बोलला नसतास ! अरे, तूं माझ्यासारख्या वीरा-
पेक्षां कर्णाला अधिक मानितोस व त्याची प्रौढी
गातोस, परंतु मी त्याला माझ्याशीं तुल्य असा
वीर गणीत नाही हें पकें ध्यानांत ठेव. राजा,
ज्या महाबलिष्ठ वीराला म्यां जिकावें असें तुला
वाटत असेल, त्या वीराचें नांव मला मांग,
झणजे त्यास जिंकून मी आपला आल्या
मार्गानें परत जाईन; अथवा, हे करुनंदना, आज
मी एकटाच शत्रूशी युद्ध करितों, झणजे
युद्धांत शत्रूंना भस्म करून टाकण्याचें
सामर्थ्य माझ्या अंगी किती आहे हें
तुझ्या दृष्टोत्पत्तीस येईल ! राजा दुर्योधना, आह्मां-
सारखे पुरुष अंतर्दामी योग्य असा अभिमान

वाळमून आपआपल्या अंगीकृत कार्यांस
प्रवृत्त होत असतात; ह्याकरितां तूं आह्मां-
विषयी शंका घ्यावीस हें सर्वथैव अनुचित
होय. राजा, युद्धसामर्थ्यासंबंधानें तूं माझी
मानखंडना अगदीं करूं नको. हे माझे वज्र-
तुल्य बळकट व सुदृढ बाहू अवलोकन कर;
तसेंच हें माझे देदीप्यमान धनुष्य व सर्पतुल्य
शर पहा; त्याप्रमाणेंच वायुवेगानें चालणाऱ्या
उत्कृष्ट अश्वानीं युक्त अशा ह्या माझ्या युद्धार्थ
सिद्ध असलेल्या रथाकडे दृष्टि टाक; आणि
तद्वतच हेमपट्टिभूषित अशी ही माझी गदा
अवलोकन कर. राजा, मी आपल्या पराक्रमानें
ही सर्व पृथ्वी फोडून टाकीन, सर्व पर्वत इत-
स्ततः फेंकून देईन, व सर्व समुद्र कोरडे पाडींन !
तेव्हां अशा प्रकारें शत्रुनिग्रह करण्यास समर्थ
अशा प्रबळ योद्ध्याला नीच पुरुषाचें सारथ्य कर-
ण्यास तूं सांगत आहेस तें काय म्हणून ! ह्यास्तव,
राजा, नीचकुलोत्पन्न अधिरथपुत्र जो कर्म
त्याचें सारथ्य करण्याच्या कामावर तूं माझी
नेमणूक करूं नयेस, हें चांगलें. पापकुळांतील
पुरुषाचें दास्य करण्यास श्रेष्ठ कुळांत जन्मलेला
मी योग्य नाही. आतां कदाचित् तूं झणशील
की, ‘ हा शल्य प्रस्तुत माझ्या अधीन आहे,
ह्यास्तव मी सांगेन तें ह्यानें ऐकिलें पाहिजे ’ पण हें
तुम्रें झणणें ठीक नाही. सध्या मी तुझ्या
अधीन झालेला आहे खरा, पण तो तुझ्या
सत्तेनें अधीन झालों आहे असें नाही, मी आपण
होऊन प्रेमानें तुझ्या अधीन झालेला आहे.
ह्याकरितां, वरिष्ठ कुळांत जन्मलेल्या मला जर
तूं नीच-कुलोत्पन्न कर्णाच्या दास्यांत टाक-
शील, तर ह्या तीचोच्चधर्मांत उत्पन्न होणाऱ्या
वैपरीत्याचें पातक तुझ्या माधीं बसेल हें पकें
ध्यानांत ठेव. राजा दुर्योधना, ब्रह्मदेवानें
आपल्या मुखापासून ब्राह्मणांमधीं उत्पत्ति केेली,
त्यानें क्षत्रियांस आपल्या बाहूंपासून निर्माणा

केले; वैश्य हे ब्रह्मदेवाच्या मोठ्यापासून उत्पन्न झाले; आणि शूद्र हे पायांपासून निर्माण झाले, अशी स्पष्ट श्रुति आहे. ह्या चार वर्णांपासून अनुलोमज व प्रतिलोमज अशी वर्णविशेष द्विधा सृष्टि झाली आहे. इतर वर्णांचे संरक्षण करणे, संपत्ति मिळविणे व तिचे दान वगैरे करणे हे काम क्षत्रियांनी करावे; यज्ञयाग करविणे, वेदविद्या शिकविणे व निर्भल दानांचा प्रतिग्रह करणे ह्या गोष्टी करून लोकांवर अनुग्रह करण्याकरिता ह्या भूतलावर ब्राह्मणांची स्थापना करण्यांत आली आहे; त्या प्रमाणेच वैश्यांचा आचार झटला झणजे त्यांनी कृषिकर्म करावे, पशु पाळवे व दानधर्म करावे, हा होय; आणि शूद्रांचे स्वकर्तव्य कोणते झणशील तर त्यांनी वरिष्ठ अशा तिन्ही वर्णांची परिचर्या (नोकरी) करावी हे आहे. राजा, सूतांचे विहित कर्म झटले झणजे ब्राह्मण व क्षत्रिय ह्यांची सेवा करावी. सूताची आज्ञा क्षत्रियांनी मानावी हा मुळांच सदाचार नव्हे. मी मूर्खाभिषिक्त राजर्षि असून मोठा कुलीन आहे. मी प्रख्यात महारथ असून माझे दास्य व स्तवन बंदिजनांनी (सूतांनी) करणे हा धर्म होय. ह्यास्तव अशी मोठी योग्यता धारण करणाऱ्या शत्रुबलसंहारक महावीराने म्यां रणांगणांत सूतपत्र कर्णांचे सारथ्य करणे हे सर्वथा अनुचित होय. अशा करण्याने माझा मानभंग होईल. ह्यास्तव, हे गांधारीपुत्रा, आतां युद्ध करण्याची माझी इच्छा नाही, तूं आज मला स्वगृही जाण्यास अनुमोदन दे.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे भाषण करून युद्धपुरंधर शल्य हा संतप्त होतसाता तत्काळ उठला व राजसमूहांतून चालला झाला. तेव्हां मोठ्या गौरवाने व प्रेमाने तुझ्या पुत्राने त्यास थांबवून धरिले व सर्वार्थसिद्धि करून देणारे सामपूर्वक मधुर भाषण

केले. त्या सप्तर्षी दुर्योधन त्यास झपाळा, "हे मद्राज शल्या, तूं जे म्हणालस तें निःसंशयपणे सत्य होय; पण माझा जो कांहीं हेतु आहे, तो घ्यानांत अण. राजा, कर्ण हा तुझ्यापेक्षा अधिक पराक्रमी आहे असें मी म्हणत नाही, अथवा तुझ्या युद्धनैपुण्याबद्दलही माझ्या मनांत शंका येत नाही. मद्राधिपति शल्य हा असत्य असें भाषण करण्यास सिद्ध होणार नाही अशीच माझी खात्री आहे. आजपर्यंत तुझ्या घराण्यांतील श्रेष्ठ पुरुष ऋत (सत्य) भाषणच करीत आले व ह्यामुळेच तुला आर्तार्थिनि (सत्यवत्यांच्या कुळांत जन्मलेला) असें नांव प्राप्त झालें असें मी मानितों. त्याप्रमाणेच, हे मानदा, युद्धामध्ये तूं शत्रूंच्या हृदयांत शल्यवत् पीडा करितोस, म्हणूनच तुला शल्य हें नांव ह्या भूतलावर मिळाले असें सांगतात. हे उदारा धर्मज्ञा शल्या, तूं जे कांहीं पूर्वी म्हटलें आहेस, तदुत्तररूपच मी तुझी प्रार्थना करीत आहे, तर तूं तें सर्व कर. मद्रेश्वरा, तुझ्यापेक्षा वीर्यवान् राधेय हा नाही व मीही नाही. प्रस्तुतच्या युद्धांत माझी तुला अशी विनंति आहे कीं, तूं कर्णाच्या बलिष्ठ अश्वाने नियंत्रण कर. राजा, कर्ण हा धनंजयापेक्षा अधिक गुणी आहे असा माझा समज आहे व तूं वामुदेवापेक्षा अधिक गुणी आहेस असें सर्व लोक मानितात. राजा, कर्ण हा अस्त्रविद्येंत अर्जुनापेक्षा अधिक निपुण आहे आणि तूं अश्वज्ञानांत व बलांत वामुदेवापेक्षा अधिक समर्थ आहेस. हे मद्राधिपा, कृष्णाला अश्वविद्या उपलब्ध आहे खरी; पण त्याच्या दुष्पट ती तुला उपलब्ध आहे. ह्यास्तव मी तुझी योग्यता कृष्णापेक्षाही अधिक मानितों !"

शल्य म्हणाला:—राजा दुर्योधना, भर-

१ ऋत एव अयनं आश्रयः येषां ते ऋतायनाः ।
तेषां गोत्रापत्यं आर्तार्थनिः ।

सैन्यामध्ये ज्या अर्धी तूं मला कृष्णापेक्षां अधिक वर्चस्व देत आहेस, त्या अर्धी मी तुजवर प्रमुदित झालों आहे ! हा पहा अर्जुनाशी युद्ध करण्यास सिद्ध झालेल्या त्या पराक्रमी व विजयशाली राभेयांचें सारथ्य करण्यास मी तयार आहे ! तथापि, राजा, माझी एक अट मात्र आहे. ती ही की, मला जें उचित दिसेल तें मी कर्णाला बोललों असतां तें त्यानें सहन केलें पाहिजे.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, शल्याचें हें भाषण ऐकून कर्णासहित दुर्योधनानें ' बरें आहे ' असें म्हणून त्यास अनुमोदन दिलें.

अध्याय तेहतिसावा.

त्रिपुरारुख्यान.

दुर्योधन म्हणाला:—हे मद्राधिपा शल्या, मी पुनः जें काहीं सांगतों तें श्रवण कर. पूर्वी देव व दैत्य ह्यांचें युद्ध चालू असतांना जें काहीं घडलें, व जें मी पित्याच्या समीप महर्षि मार्कंडेयांपासून ऐकिलें, तें मी तुला सविस्तर निवेदन करितों, तर तूं तें चित्त देऊन ऐक; त्याविषयी कोणत्याही प्रकारची शंका मनांत आणूं नको. राजा, पूर्वी देव व दैत्य हे परस्परांना जिंकण्याच्या उद्देशानें भयंकर युद्ध करीत असतां तारकामुराची देवांना फार भीति पडली. तेव्हां तारकामुराचा नाश केल्याशिवाय आपला हृद्दोग जाणार नाही, असें मानून देवांनीं दैत्यांशीं मोठ्या निकराचें युद्ध आरंभिलें व त्यांत देवांना यश येऊन दैत्यांचा अगदीं मोडही झाला, असें सांगतात. ह्याप्रमाणें दैत्यांची वाताहत झाली असतां तारकामुराचे तीन पुत्र ताराक्ष, कमलाक्ष व विद्युन्माली हे घोर तपश्चर्या करण्यास प्रवृत्त झाले व त्यांनीं ती उत्तम प्रकारें चालवून आपलीं बुष्ट शरीरें अगदीं कुश करून टाकिलीं. राजा, त्या तपो-

नुष्ठानांत त्यांनीं बाह्येंद्रियांचा जय; चित्ताची एकाग्रता, अंतर्बाह्य शुद्धि व समाधियोग हीं इतकीं सिद्ध केलीं कीं, पितामह ब्रह्मदेव त्यांजवर प्रसन्न होऊन वर देण्यास उद्युक्त झाला. त्या वेळीं ताराक्षादि तीनही असुरपुत्रांनीं ब्रह्मदेवापाशीं ' आम्हांस कोणत्याही प्राण्यांपासून केव्हांही मरण येऊं नये. ' म्हणून वर मागितला; पण तेव्हां लोकनायक प्रभु ब्रह्मदेवानें लागलेंच सांगितलें कीं, ' असुरपुत्रहो, कोणत्याही प्राण्यांपासून मृत्यु येऊं नये हें तुमचें मागणें अनुचित होय; जगांत सर्वांमर्त्य कोणालाही नाही, ह्यास्तव तुम्ही येथून चालते व्हा. ह्याशिवाय दुसरा एखादा जो तुम्हांला आवडत असेल तो वर मागा. ' राजा शल्या, नंतर त्या तीनही दैत्यपुत्रांनीं पुनः पुनः खलवतें केलीं व आपल्या मनाचा निश्चय करून ते फिरून सर्वलोकाधिपति ब्रह्मदेवाप्रत जाऊन मोठ्या विनयानें त्यास म्हणाले कीं, " हे पितामहा, तीन पुरांचा आश्रय करून तुझ्या कृपेनें ह्या लोकां सर्व भूमंडलाचें आम्हांस आक्रमण करितां येईल, एक सहस्र वर्षपर्यंत आम्हीं ह्या भ्रमाणें भूमंडलाचें आक्रमण केल्यावर मग आमचीं हीं तीनही पुरें एकत्र होतील व आम्ही सर्वजण एक्या ठिकाणीं जमूं, आणि त्यानंतर ह्या एकरूप झालेल्या तीनही पुरांना एका बाणानें जो देवाधिदेव भग्न करील, त्यापासून आम्हांस मृत्यु येईल, असा वर तूं आम्हांला दे. "

राजा, असुरपुत्रांची ही प्रार्थना ब्रह्मदेवानें लागलीच मान्य केली व ' तुमची इच्छा पूर्ण होईल. ' असा वर अर्पण करून तो स्वर्गास चालता झाला. इकडे ताराक्षादि दैत्यसुतांना मोठा आनंद झाला; त्यांनीं परस्परांमध्ये पुढील कार्याची चर्चा केली व महासुर मयाला तीन पुरें निर्माण करण्याच्या कामावर नेमिलें. राजा, तो महानुद्धिमान् मया-

सुर म्हणजे केवळ विश्वकर्मा, दैत्यदानवांना अत्यंत बंदनीय, व आरंभिलेल्या कार्यांत सदा अविभ्रांत असा असल्यामुळे, उद्दिष्ट हेतूच्या सिद्धीकरितां घोर तपश्चर्या करून त्यानें तिच्या बळवर तीन पुरे रचिलीं. त्या तिहीं-पैकी एक पुर सुवर्णाचें, एक पुर रजताचें, व एक पुर कृष्णलोहाचें होतें. सुवर्णपुर स्वर्गांत होतें, रजतपुर अंतरिक्षांत होतें, व लोहपुर पृथ्वीवर होतें. ह्या तिन्ही पुरांची रचना अशी कांहीं अपूर्व होती कीं, जणू काय त्यांतील प्रत्येक पुर चक्रावरच बसविलेले होतें व त्यामुळे तें यथेष्ट संचार करीत असे ! मद्रराजा, त्या तीनही पुरांपैकीं प्रत्येकाची लांबी व रुंदी शंभर शंभर योजनें असून त्यांत घरे, वाडे, प्राकार, तोरणें वगैरे पुष्कळ होती, त्यांमध्ये मोठमोठ्या वाड्यांची जरी अगदीं दाटी झालेली होती, तरी विस्तृत मार्गामुळे मोकळी जागाही विपुल होती. त्यांमध्ये बहुविध प्रासाद व वेशीही पुष्कळ होत्या आणि त्यामुळे मोठी रम्य शोभा दिसत होती. राजा, त्या मोठ्या पुरांमध्ये निरनिराळे राजे होते. देदीप्यमान सुवर्णपुराचा अधिपति महात्मा ताराक्ष होता. रजतपुराचा स्वामी कमलाक्ष हा होता, व लोहपुर हें विद्युन्मालीचें होतें. राजा मद्रेश्वरा, ह्याप्रमाणें ते तिथे दैत्यराजे पुरप्रासीनें प्रबळ झाले, तेव्हां अस्त्रवीर्यानें सर्व त्रैलोक्य आक्रमून वरचढ बनले व मदांध होत्साते ' प्रजापति ब्रह्मदेव तो कोणता ? ' असें झणूं लागले ! राजा, ह्याप्रमाणें त्या दुर्धर दैत्यराजांचा चोहोंकडे प्रताप गाजूं लागतांच, ज्यांचा देवांनीं पराभव करून टाकिला होता असे कोट्यवधि दैत्यदानव पुनश्च मदोन्मत्त होऊन चोहोंकडून त्यांस येऊन मिळाले आणि महत् ऐश्वर्याची मनीषा धरून दुर्गम अशा त्रिपुरांत त्यांनीं वास्तव्य केले. राजा शल्या, ह्या प्रकारें मय-

निर्मित त्रिपुरांमध्ये सर्वत्र दैत्यदानवांची गर्दी जमली असतां त्या सर्वांची यथास्थित व्यवस्था व दिनचर्या मयासुराकडून चालत असे. ते सर्व असुर मयाच्या आश्रयानें व सल्लामसलतीनें निर्धास्तपणें आपला व्यवसाय करीत अस्त; आणि त्रिपुरांत राहाणारा कोणताही असुर ज्या ज्या गोष्टीची इच्छा करी; ती ती गोष्ट मयासुर आपल्या मायेनें त्यास संपादन करून देत असे.

मद्रेश्वरा, ताराक्षाला हरि नामक महाबलिष्ठ पुत्र होता. त्यानें घोर तप करून पित्तमह ब्रह्मदेवाला तृप्त केले; आणि माझ्या पुरीत अशा प्रकारची एक वापी निर्माण व्हावी कीं, ' जिच्यामध्ये शस्त्रांनीं हत झालेले दैत्यदानव टाकिले असतां त्यांचें संजीवन होऊन ते पूर्ववत् बलिष्ठ व्हावे. ' असा त्यापाशीं वर मागितला. ब्रह्मदेवानें तो वर ताराक्षपुत्राला दिल्याबरोबर त्यानें श्रुतसंजीविनी वापी (विहीर) सुवर्णपुरीत निर्माण केली. नंतर, तिच्यांत जो श्रुत वीर टाकावा तो मृत्युसमयीं ज्या वेषांनं व ज्या रूपानें असेल, त्या वेषांनं व त्या रूपानें तत्काळ पुनः युद्धार्थ प्रकट होऊं लागला. राजा, ह्याप्रमाणें ती वापी प्राप्त होतांच, दैत्यांपैकीं जे कोणी धारातीर्थीं पडत ते पुनः उठत. यामुळे त्यांचा जोर विलक्षण वाढून ते दैत्यदानव सर्व लोकांना गाजूं लागले. राजा, ह्याप्रमाणें असुर महातपःसिद्धीनें संपन्न झाले, तेव्हां त्यांचा अगदीं क्षय होईनासा झाला व त्यामुळे देवांची भीति वाढूं लागली. अशा रीतीनें दैत्य प्रबळ होतांच त्यांची विवेकबुद्धि अस्तंगत झाली व त्यांस लोभमोहांनीं ग्रस्त करून टाकले. पुढें ते अगदीं निर्लज्ज होऊन त्यांनीं सर्व जगभर धुमाकूळ माजविला; व वरप्रासीनें अंध झालेल्या त्या दैत्यांना जेथें जेथें व जेव्हां जेव्हां गणांसह देव आढळले, तेथून तेथून व तेव्हां तेव्हां त्यांनीं त्यांना पळवून लावून

स्वच्छंदानें भ्रम मानेल तें करण्याचा क्रम आरंभिला. त्यांनीं देवांची आवडतीं उद्यानें, ऋषींचे पुण्यकारक आश्रम व जगतीतलावरील सुंदर सुंदर देश ह्यांचा विध्वंस उडविला आणि ते उच्छृंखल होऊन दुष्ट आचरण करूं लागले. ह्याप्रमाणें दैत्यांनीं सर्व त्रैलोक्यास 'त्राहि भगवन्' असें करून सोडिलें, तेव्हां सर्व देवांसमेवेत इंद्र हा त्या त्रिपुराशीं लढण्यास सिद्ध झाला व त्यानें चोहों बाजूंनीं त्या पुरांवर वज्रप्रहार करून तीं पुरें भग्न करण्याचा प्रयत्न चालविला; परंतु पुरंदर इंद्राला त्यांत यश आलें नाहीं. ब्रह्मदत्त वरानें अभेद्य झालेल्या त्या तीनही पुरांवर इंद्राचें वीर्यवान् आयुध जेव्हां व्यर्थ झालें, तेव्हां इंद्रानें भयभीत होऊन आरंभिलेला यत्न तसाच सोडून दिला. व तो आपल्या समागमें असलेल्या अखिल देवांसहर्तमान पितामह ब्रह्मदेवाकडे गेला; आणि त्यानें असुरांपासून होत असलेल्या सर्व दुर्धर यातना त्यास निवेदन केल्या. इंद्रप्रभृति सर्व देव ब्रह्मदेवापाशीं प्राप्त झाल्यावर त्या सर्वांनीं प्रथम त्यास साष्टांग प्रणिपात केले व इत्थंभूत वर्तमान सांगून त्रिपुरनाशार्थ उपाय विचारला.

तेव्हां ब्रह्मदेवानें देवांस म्हटलें:—देवहो, जो कोणी तुमचा अपराध करितो तो माझाही अपराध करितो, असें मी मानितों. दुष्ट दुरात्मे असुर हे नित्य तुमचा द्वेष करीत असल्यामुळें ते माझे नित्य वैरी होत. माझी सर्व भूतां-विषयीं निःसंशय समबुद्धि आहे, हें खरें; तथापि, धर्ममर्यादेचें उल्लंघन करणारांस वधावें हा मी नियम ठेविलेला आहे. अहो, तीं तीनही दुर्गम पुरें एका बाणानें भग्न झाली पाहिजेत,—ह्याशिवाय अन्य उपायांनीं तीं भग्न व्हावयाचीं नाहींत; आणि तीं एका बाणानें भेदन करण्यास शंकरावांचून इतर देव समर्थ

होणार नाहींत. ह्यास्तव, तुझी सर्व देवहो, त्या महासमर्थ, विजयशाली, अंगीकृत कार्यांत अविश्रांत श्रम करणाऱ्या युद्धधुरंधर शंकराची प्रार्थना करून त्याजकडून त्रिपुरनाशाचें काम करून घ्या; त्याच्याच हातून त्या दैत्यांचा वध निश्चयानें होईल.

राजा मद्रेशा, ह्या प्रकारें ब्रह्मदेवाचें भाषण ऐकून, तपश्चर्या व व्रतवैकल्यें करून शाश्वत ब्रह्माचें चिंतन करणारे ते धर्मशील देव ब्रह्मदेवाला अग्रभागीं घालून ऋषींसहवर्तमान पूर्ण मनोभावानें भगवान् शंकराला शरण गेले; आणि त्यांनीं भयप्रसंगीं अभय देणाऱ्या, सर्वांच्या अंतर्त्यामीं अधिष्ठान करणाऱ्या, सर्व त्रैलोक्य-भर व्याप्त असलेल्या, निर्गुण निर्विकार महात्म्या शंकराची उग्र सूक्तांनीं स्तुति केली. राजा, ज्या भगवान् शंकरानें नानाविध विशिष्ट तपश्चर्या करून आपल्या मनोवृत्तीचें दमन केलें, ज्याला आत्मानात्मविचाराचें पूर्ण ज्ञान आहे, व जो आत्म्याला सदासर्वकाळ पूर्ण कर्त्यात ठेवितो, त्या तेजोराशि उमापति महेशास जेव्हां त्यांनीं पाहिलें, तेव्हां भगवंताचें तें मंगलकारक लोकोत्तर रूप अवलोकन करून त्यांच्या मनोवृत्ति स्तब्ध झाल्या व त्यांनीं सर्व विश्व हें एकाच परमात्म्याचें नानाविध भासणारें स्वरूप होय अशी कल्पना केली; आणि त्यांनीं प्रत्येकीं आपल्या मनांत जें भगवत्स्वरूप चिंतिलें होतें, तेंच त्या महात्म्याच्या ठायीं दृग्गोचर झालेलें पाहून सर्वास मोठा चमत्कार वाटला; व जगत्पति शंकर हा सर्वभूतमय आहे अशी पूर्ण खातरी होऊन देव व ब्रह्मर्षि ह्यांनीं धरणीतलावर लोटांगण घातलें. नंतर भगवान् शंकरानें प्रोत्साहन-पर भाषणानें त्यांचें स्वागत करून त्यांस उठविलें आणि बोला बोला असें तो स्मितपूर्वक हणाला. ह्याप्रमाणें व्यंबकाची आज्ञा झाली तेव्हां त्यांच्या मनाला मोठा धीर आला व

त्यांनीं श्रीशंकराची स्तुति करण्यास आरंभ केला.

त्या समर्थी ते ब्रह्मर्षि व देव ह्यणाले:—हे प्रभो देवाधिदेवा शंभो, तूं धनुष्य व वनमाला हीं धारण केलीं आहेस, प्रजापति दक्ष ह्याच्या मखाचा तूंष विध्वंस केलास, सर्व प्रजापति तुझा स्तव करितात, तूं स्तुतीस योग्य असून आजपर्यंत पुष्कळांनीं तुझी स्तुति केली आहे व पुष्कळांकडून प्रस्तुत तुझी स्तुति होत आहे. तुझा वर्ण पिंगट व आरक्त असून तूं मोठा उग्र आहेस, तुझी ग्रीवा नीलवर्ण असून तूं शूल धारण केला आहेस, तुझ्या ठिकाणीं अमोघ पराक्रम वसत आहे, तुझे नेत्र मृगनेत्रांप्रमाणें पाणीदार आहेत, तूं महान् महान् आयुधांनीं युद्ध करितोस, तूं मोठा पवित्र व शुद्ध आहेस, तूं विध्वंस व क्षय करणारा आहेस, तुझे निग्रहण करण्यास कोणीही समर्थ नाहीं, तूं जगाचा संहारकर्ता आहेस, तूं ब्रह्मनिष्ठ असून ब्रह्मस्वरूप आहेस, तुझी सत्ता सर्वत्र चालते, तूं अपरिच्छिन्न असल्यामुळे तुझे नामरूपादिकांनीं वर्णन करणें अशक्य होय, तूं सर्व विश्वाचें नियंत्रण करितोस, चर्म हें तुझे वसन होय, तूं नित्य तपश्चर्येंत रत असतोस, तूं सदा व्रतादिकांचें अनुष्ठान करितोस, कार्तिकेय हा तुझा पुत्र होय, तुला तीन नयन आहेत, तूं मोठमोठीं आयुधें धारण करितोस, तूं शरणागतांचें संकट निवारितोस, तूं ब्रह्मद्वेष्यांचे समुदाय मृत्युमुखीं लोटितोस, तुझ्यापासूनच वनस्पतींचें संरक्षण होतें, नरांचा पालनकर्ता तूंष होस, इंद्रियांचा व यज्ञांचा स्वामी तूंष आणि तुझ्यापाशीं मोठी सेना व अमित विक्रम वास करीत आहे; हे देवाधिदेवा ज्यंबका, मन, वाणी व कर्म हीं सर्व आस्त्री त्वत्पर करीत आहों, तर आम्हांं दीन जनांना अभय देऊन आमचे मनोरथ सिद्धीस ने.

मद्रेश्वरा, ह्याप्रमाणें स्तव श्रवण करून भग-

वान् शंकर प्रसन्न झाला व त्यानें त्या देव-ब्राह्मणांचें स्वागतपूर्वक अभिनंदन करून 'तुमची भीति नष्ट होईल.' असा वर दिला आणि 'आणखी कांय करूं ? बोला.' असें हटलें.

अध्याय चौतिसावा.

—:०:—

त्रिपुरवधोपाख्यान.

दुर्योधन म्हणाला:—हे मद्राधिपा शल्या, ह्याप्रमाणें महात्म्या शंकराकडून पितर, देव व ऋषि ह्यांच्या समुदायांना अभय मिळालें, तेव्हां ब्रह्मदेवानें शंकराचा मोठा सत्कार करून लोकहितकारक भाषण केलें.

ब्रह्मदेव ह्यणाला:—हे देवेश्वरा शंकरा, तुझ्या अनुग्रहामुळेच मी हा प्राजापत्याधिकार चालवीत आहे; आणि ह्या अधिकाराच्या बळावरच मीं दानवांना मोठा वर दिला आहे; पण प्रस्तुत दानवांनीं अमर्याद वर्तन चालविल्यामुळे, पूर्वीं घडलेल्या व पुढें घडून येणाऱ्या गोष्टींवर सत्ता चालविणाऱ्या शंकरा, त्यांच्या वधाकरितां तुझ्यावांचून दुसरा कोणी समर्थ होईल असें मला वाटत नाहीं; म्हणून हे देवाधिदेवा, शरण आलेल्या ह्या देवब्राह्मणांवर कृपा करून तूं ह्या दानवांचा संहार कर. हे मानदा, तुझ्या प्रसादांमुळेच ह्या सर्व जगाला सुख मिळालें आहे; हे लोकेशा, तूंष सर्वांचें आश्रयस्थान आहेस; आणि ह्यांमुळेच आम्हीं हे सर्व तुला शरण आलों आहों.

स्थाणु ह्यणाला:—ब्रह्मप्रभृति देव-ऋषींनो, तुमच्या सर्व शत्रूंचा वध करावा असें माझ्या मनांत येतें; परंतु तमें करण्याला मला एक-द्व्याला उमेद नाही; कारण, सुरद्वेषे दैत्यदानव हे मोठे बलिष्ठ आहेत. ह्यास्तव तुम्हीं सर्व एक होऊन माझ्या अर्घ्या बळाचें साहाय्य घेऊन शत्रूंशीं युद्ध करा व त्यांचा विध्वंस उडवा. अहो,

तुम्हीं एकत्र झाल्यावर तुमचें सामर्थ्य अचाट वाढेल, कारण संघशक्ति ही मोठी अनिवार्य होते.

देव ह्मणाले:—भगवान् शंकरा, आमच्या ठिकाणीं जितकें बल व तेज आहे, त्याच्या दुष्पट बल व तेज त्या असुरांच्या ठिकाणीं आहे, असें आह्मांस वाटतें; कारण, त्यांचें बल व तेज आह्मी पाहिलें आहे.

श्रीभगवान् ह्मणाला:—देवादिकहो, तुहांस पीडा करणारे ते पातकी दैत्यदानव सर्वतोपरी वध्य होत; ह्यास्तव माझ्या अर्ध्या बलानें व तेजानें त्या सर्व शत्रूंचा नाश करा.

देव ह्मणाले:—हे महेश्वरा, तुझे अर्धें बल व तेज धारण करण्यास आह्मी समर्थ नाहीं; ह्यास्तव आमच्या सर्वांच्या अर्ध्या बलतेजानें तूंच शत्रूंना वधून टाक.

श्रीभगवान् ह्मणाला:—देवादिकहो, जर तुहांला माझे बल धारण करण्याला मुळीच सामर्थ्य नसेल, तर तुमच्या बलसाहाय्यानें आपलें बल वृद्धिगत करून मीच ह्यांचा वध करण्यास सिद्ध आहे.

राजा शल्या, ह्याप्रमाणें भाषण ऐकून देवादिकांनीं ' बरें आहे ' असें ह्मटलें; आणि नंतर त्या भगवान् शंकरानें त्या देवादिकांच्या अर्ध्या शक्तीनें आपल्या शक्तीस वृद्धिगत केलें. राजा, तदनंतर शंकराचें बल सर्वापेक्षां अधिक वाढलें व त्यामुळे तेव्हांपासून त्यास महादेव हें नांव प्राप्त झालें.

पुढें महादेव ह्मणाला:—देवहो, मी धनुष्य व बाण धारण करून रथांत अधिष्ठित होईन व तुमच्या त्या दैत्यदानव शत्रूस समरांगणांत ठार करीन. ह्मणून तुम्ही मजकरितां रथ व त्याप्रमाणेंच धनुष्यबाण हीं सिद्ध करा, ह्मणजे मी शत्रूंना आजच्या आज भूतलावर पाडून टाकितों.

देव ह्मणाले:—हे देवेश्वरा शंकरा, सर्व त्रैलोक्यामध्ये जितक्या म्हणून मूर्ति आहेत,

जितक्या सर्वांचें तेज एकत्र करून त्या योगें महाबलिष्ठ असा एक उत्कृष्ट रथ विश्वकर्माकडून अत्यंत चातुर्यानें आह्मी सिद्ध करितों.

राजा शल्या, नंतर महान् महान् देवांनीं रथ सिद्ध केला. त्यांनीं विष्णु, सोम व अग्नि ह्यांची शंकराच्या बाणाच्या ठिकाणीं योजना केली, अग्नीला त्या बाणाच्या शृंगाकार काळ्याच्या ठिकाणीं, सोमाला पात्याच्या ठिकाणीं व विष्णुला पात्याच्या अग्रभागाच्या ठिकाणीं योजिलें. त्या सुरोत्तमांनीं मोठमोठीं नगरें, पर्वत, वनें व द्वीपें ह्यांनीं युद्ध व सर्व प्राण्यांस आश्रयस्थान अशा वसुंधरा देवीची रथाच्या ठिकाणीं योजना केली. त्यांनीं मंदर पर्वताला त्या रथाचा अक्ष (आंस), गंगेला जंघा, दिशा व उपदिशा ह्यांना त्या रथावरील अलंकार, नक्षत्रमंडल हें ईषा (आंस व जूं यांना बांधावयाचें आडवें लांकूड), कृतयुग हें जूं, भुजगोत्तम वासुकि हा त्या रथाचा कुबेर (जूं बांधावयाची दांडी), हिमालय व विंध्य ह्या पर्वतांना अनुक्रमें अपस्कर (मागे बांधावयाची दांडी) व चक्रांचे आधार, आणि उदयास्तपर्वतांना रथाचीं चक्रें बनविलें. त्यांनीं दानवांचा आश्रय जो श्रेष्ठ समुद्र त्याला दुसरा अक्ष व सप्तर्षिमंडलाला परिष्कर (रथाच्या चाकांवरील धावा वगैरे) बनविलें. त्यांनीं गंगा, यमुना, सरस्वती व आकाश ह्यांना धुरा बनविलें, इतर सर्व नद्या व जलाशय ह्यांची बंधादि सामग्रीच्या स्थानीं योजना केली, व अहोरात्र, कला, काष्ठा, ऋतु ह्यांना अनुकर्ष (रथाच्या अघोभागीं असणारी दांडी), आणि देदीप्यमान ग्रहनक्षत्रांना वरूथ (रथावरील चिलखत) बनविलें. त्यांनीं त्रिवेणुतुल्य धर्म, अर्थ, काम ह्या तिहींना रथातील तल्पे (आरोहस्थानें), फलपुष्पांनीं भरलेल्या ओषधीलतांना घंटा, मूर्ध्चंद्रांना दुसरीं चक्रें, आणि दिवस

व सत्र ह्यांना डावीकडील व उजवीकडील सुंदर बाजू बनविले. त्यांनी घृतराष्ट्रप्रमुख दहा नागपतींना दुसरी ईषा, भयंकर व फुसकारणाच्या सर्षांना बंधनरज्जू, आकाशाला जूं, संवर्तक व बलाहक मेघांना जुंवावरील चर्म, त्याप्रमाणेच कालवृष्ट, नहुष, कर्कोटक, धनंजय व इतर दुसरे जे नाग त्यांना अश्वाने मानेवरील केसर, दिशा व उपदिशा ह्यांना रथाला जोडलेल्या अश्वाने लगाम, संध्या, धृति, मेघा, स्थिति, सन्नति आणि ग्रह-नक्षत्रादिकांनी व्याप्त असे अंतरिक्ष ह्यांना रथाचे चमकदार बाह्यावरण, सुर, अनु, प्रेत व वित्त ह्यांचे अधिपति अनुक्रमे इंद्र, वरुण, यम व कुबेर ह्यांना रथाचे अश्व, सिनीवाली (सचंद्र अमावास्या), अनुमति (कलाहीन पौर्णिमा), कुहू (चंद्ररहित अमावास्या), श्रेष्ठ राका (कला-पूर्ण पौर्णिमा) ह्यांना अश्वबंधने, व सिनीवाली आदिकरून तिथींच्या अधिष्ठात्या पितरांना अश्वाने टांचा, नाल, कंटक वगैरे, आणि धर्म सत्य, तप व अर्थ ह्यांना दोरखंडे बनविली. त्यांनी मन हे त्या रथाचा मुख्य आधार, वाग्देवी सरस्वती ही चालण्याचा मार्गच, व नानाप्रकारचे वर्ण ह्या वायुप्रेरित चित्रविचित्र पताका बनविल्या; आणि विद्युत् व इंद्रधनुष्य ही झळाळत असल्यामुळे त्या रथाला अद्वितीय कांति प्राप्त झाली. वषट्कार हा त्या रथावर प्रतोद झाला, गायत्री ही शीर्षबंधन झाली, पूर्वी महात्म्या शंकराच्या यज्ञाला संवत्सरात्मक जो काल सुनिश्चित करून ठेविलेला होता, तो त्याचे धनुष्य झाला, सावित्री ही रौद्रस्वन करणारी मोठी ज्या बनली, कालचक्र हे सुदुर्भेद्य, निर्मल, देदीप्यमान व रत्नखचित दिव्य कवच झाले, श्रीमान् कनकपर्वत जो मेरु तो ध्वजयष्टि बनला, विबुधतेने अलंकृत असे मेघ पताका बनले, आणि ऋत्विजांच्या मय्यंतरीं जणू काय प्रज्वलित असलेले पावकच त्या रथावर आरूढ

होऊन त्यांचे दिव्य तेज फांकू लागले ! राजा मद्रेशा, ह्या प्रकारे सिद्ध केलेला तो रथ पाहून देव अगदीं विस्मित झाले, आणि सर्व त्रिभुवनांतील लोकोत्तर विभूति एकत्र झालेल्या अवलोकन करून देवांना मोठा चमत्कार वाटला व त्यांनी महात्म्या शंकराला तो दिव्य रथ सिद्ध असल्याबद्दल निवेदन केले.

मद्रराज शल्या, ह्याप्रमाणे शत्रूंचा संहार करणारा दिव्य रथ देवांनी सिद्ध केला आहे, असे पाहिल्यावर त्यांत शंकराने आपली महान् महान् आयुधे ठेविली. आकाश हे ध्वजयष्टीच्या जागी योजिले व तिच्या अग्रभागी नंदिकेश्वराला बसविले. नंतर ब्रह्मदंड, कालदंड, रुद्रदंड व ज्वर हे रथावर आरूढ झाले व चारही दिशा रोखून रथाच्या सर्व बाजू राखू लागले. त्या महात्म्या देवश्रेष्ठांचे रथाची चक्रे अथर्वण व अंगिरस ह्यांनी संभाळलीं. ऋग्वेद, सामवेद व पुराणे ही रथाच्या पुढे चालू लागलीं. इतिहास व यजुर्वेद ह्यांनी वृष्टभाग संभाळला. सर्व दिव्य विद्या व वाणी ह्या सर्वोषतालीं उभ्या राहिल्या. आणि त्याप्रमाणे वषट्कार, उक्कार व मंत्रादिक हे सर्व रथाच्या अग्रभागी अधिष्ठित होऊन मोठी अपूर्व शोभा दिसू लागली. नंतर कालरूप रुद्राने युद्धार्थ वषट्काराच्या योगे चित्र-विचित्र भासणारे संवत्सररूप धनुष्य घेऊन आपली स्वतःची छाया हीच त्या धनुष्याला अखंड ज्या लाविली. ह्याप्रमाणे काल हा भगवान् रुद्र, संवत्सर हे त्याचे धनुष्य व काल-रान्नि ही त्या रुद्रधनुष्याची अभंग ज्या झाली; आणि विष्णु, अग्नि व सोम हे त्या रुद्राचा बाण बनले. राजा, हे सर्व जगत् अग्नि, सोम व विष्णु ह्यांचेच विशिष्टरूप आहे, व भगवान् अमित-तेजस्वी रुद्राचा आत्मा म्हटला म्हणजे विष्णु हाच होय; ह्यास्तव रुद्राच्या त्या अपूर्व धनुष्याच्या प्रत्येका केवळ टणत्कारही असुरांना

सहन झाला नाही. शिवाय शंकराने सोमवि-
ष्ण्वश्रिमय अशा त्या बाणावर भृगु व अंगिरस
ह्यांच्या संतापामुळे स्वतःला उत्पन्न झालेला
असल्याची घोष स्थापन केला होता. असो; राजा
मद्रेश्वरा, भगवान् शंकराचे सामर्थ्य काय
वर्णाचे ? त्या नीललोहित, धूम्रवर्ण व कृत्तिवास
जगत्पालकाच्या ठिकाणी सहस्रावधि आदित्यां-
ची कांति झळाळत असून जणू काय तो तेजा-
च्या ज्वालानीं चोहोंकडून आवृत झाला होता.
तो मोठमोठ्या दुर्धर व अढळ वीरानाही च्युत
करण्यास समर्थ असून ब्रह्मद्वेष्यांचा विध्वंसक
व संहारक होता. धर्मशील जनांचे परित्राण
करणे व अधर्मशील जनांचा उच्छेद उडविणे
हेच त्याचे ब्रीद असून, त्याच्या भोंवतालीं
अत्यंत पराक्रमी, भयंकर, मनोवेगाने चाल
करून जाणारे व दुर्धर्ष्य असे गण म्हणजे जणू
काय त्याच्या मनाच्या चतुर्दश वृत्तिच आप-
आपलीं कार्ये करण्यास सिद्ध होत्या. राजा,
ह्या प्रकारे भगवान् शंकर शत्रुमर्दनार्थ रथारूढ
होण्यास तयार झाला, तेव्हां त्याच्या ठिकाणीं
व त्याप्रमाणेच त्याच्या गात्रांच्या ठायीं अधि-
ष्ठित असलेल्या ह्या स्थावरजंगम सर्व विश्वा-
च्या ठिकाणीं मोठी अद्भुत कांति दृग्गोचर
होऊं लागली. राजा, अशा रीतीने त्या लोको-
त्तर रथांत कवचधारी भगवान् शंकर धनुष्य
धारण करून व त्या धनुष्यावर सोमविष्ण्वशि-
संभव दिव्य बाण चढवून अधिष्ठित होण्यास
सिद्ध आहे असे अवलोकन करितांच देवांनीं
देवश्रेष्ठ वायूकडून सुगंधाची समृद्धि करविली
व त्यायोगे आतां अनुकूल वारा वाहात आहे,
अशी खातरी होऊन सर्वांस मोठा आनंद झाला !
नंतर महादेव शंकर त्या दिव्य रथावर आरूढ
झाला तेव्हां देवांना सुद्धां भय उत्पन्न झालें व
सर्व धरणी जणू काय कंपायमान होऊन
हादरून गेली ! राजा, तो भगवान् देवाधिदेव

शंकर रथावर चढण्यास सिद्ध झाला असतां
महान् महान् ऋषि, देवगंधर्वसमुदाय व अप्स-
रांचे समूह ह्यांनी त्याची स्तुति आरंभिली.
मोठमोठे ब्रह्मर्षि व देवगंधर्व त्याचे सामर्थ्य
वर्णन करूं लागले, स्तुतिपाठकांनीं स्तव चाल-
विला आणि नृत्यगायनांत कुशल अशा अनेक
अप्सरा नृत्यगायन करूं लागल्या. तेव्हां
वर देणाच्या खड्गबाणावर श्रीभगवान्
शंकराने मोठ्या प्रसन्न मुद्रें इतस्ततः
नेत्रकटाक्ष टाकून हंसत हंसत देवांना म्हटलें,
'देवहो, माझे सारथ्य कोण करणार ?' तेव्हां
देवसमुदायांनीं उत्तर दिलें, 'हे महादेवा, ज्यास
तूं आज्ञा करशील, तो तुझे सारथ्य करण्यास
सिद्ध आहे, ह्यांत अणुमात्र संदेह नाही.' तेव्हां
फिरून भगवान् शंकर देवांस म्हणाला, 'देवहो,
ज्याचे बळ माझ्याहून अधिक आहे असें
तुम्हांस वाटत असेल, तो कोण हें प्रथम आप-
सांत ठरवून त्याला माझे सारथ्य सांगा. आतां
अगदी वेळ लावू नका, त्वरा करा.' राजा
शल्या, ह्याप्रमाणे भगवान् शंकराचे भाषण
श्रवण करून देवांचे समुदाय ब्रह्मदेवाकडे गेले
व त्यांनीं त्यास सुप्रसन्न करून घेऊन म्हटलें
कीं, "हे ब्रह्मदेवा, दैत्यदानवांचा निग्रह करण्या-
संबंधानें तूं आम्हांस जसे करावयास सांगि-
तलेंस तसे आह्मीं केले आहे. भगवान् शंकर
आम्हांवर प्रसन्न झाला असून त्याच्या इच्छे-
प्रमाणे विचित्र आयुधांनीं सुसंपन्न असा रथही
आह्मीं सिद्ध केला आहे. फक्त त्या रथावर
सारथ्य करण्यास योग्य असा कोणी आह्मांस
आढळत नाही. म्हणून हे देवाधिदेवा, कोणी
तरी सारथि सिद्ध कर. हे विभो, तूं पूर्वीं
आह्मांशीं म्हटलें आहेस कीं, मी तुमचे हित
करीन. तर प्रस्तुत समयीं आतां आमची ही
अडचण दूर करून तूं आपली ती वाणी यथार्थ
करून दाखव. हे पितामहा, भगवान् शंकरा-

करितां जो रथ आसीं तयार केला आहे त्याचें कर्षण काय करावें? तो लोकोत्तर रथ देवांच्या विभूतिमत्तत्वांचा वनविला असून मोठा बलाढ्य व क्षत्रविश्वंसक आहे. दानवांचें घाबें दणाणून देणारा पिनाकपाणि शंकर हा त्या रथावर युद्धार्थ सिद्ध आहे. त्या रथाला चार वेद हे उत्कृष्ट अक्ष जोडिले आहेत. पर्वतांसह पृथ्वी हें त्या रथाचें शरीर होय, आणि नक्षत्रमंडल हे त्या रथाचे अलंकार होत. हे देवाधिदेवा, अशा त्या दिव्य रथावर भगवान् शंकर हा आरूढ झाला आहे, पण त्याला सारथि कोण मिळतो ह्या चिंतेत आक्षी आहों. हे पितामहा, अशा प्रकारच्या दिव्य रथाच्या ठिकाणी जे गुण आहेत, त्यांहून अधिक गुणशाली पुरुष सारथि असल्याशिवाय आपलें उद्दिष्ट कार्य सिद्ध होणार नाही, हें व्यक्त होय. पहा, आक्षी सांगिल्याप्रमाणें अपूर्व असा तो रथ, त्यास लाविलेले ते लोकोत्तर अश्व, त्यावर युद्धार्थ सिद्ध असलेला तो महाबलिष्ठ योद्धा, तीं अश्रुतपूर्व कवचें व आयुधें, आणि तें विलक्षण धनुष्य ह्या सर्वांचा विचार केला म्हणजे तुझ्याशिवाय दुसरा कोणी सारथि आम्हांस सांप्रत योग्य दिसत नाही. हे देवश्रेष्ठा, सर्व गुणांनी संपन्न असा तूच एक असून तुझ्या ठिकाणी मात्र सर्व देवापेक्षां अधिक सामर्थ्य आहे. ह्यास्तव तूं आतां अगदी विलंब न करितां रथावर आरूढ हो आणि त्या बलिष्ठ हयांचें नियंत्रण कर; म्हणजे देवांना जय मिळेल व दैत्यदानवांचा संहार होईल. ” राजा शल्या, ह्या प्रमाणें प्रार्थना करून देवांनी पितामह ब्रह्मदेवाच्या चरणीं लोटांगण घातलें व त्याला प्रसन्न करून घेऊन त्याजकडून शंकराचें सारथ्य करविले, असें आक्षी ऐकितो.

पितामह ब्रह्मदेव म्हणाला:—हे देवहो, तुम्हीं म्हणालां ह्यांत असत्य असें कांहीं एक नाही.

भगवान् कपर्दी शंकर हा युद्ध करित असलां त्याचें सारथ्य करण्यास हा मी सिद्ध आहे, पहा.

राजा शल्या, नंतर जगताची उत्पत्ति करणाऱ्या पितामह ब्रह्मदेवाला देवांनी महात्म्या शंकराचें सारथ्य करण्यास सांगितलें, व लग्नलाच तो पितामह लोकनायक ब्रह्मदेव त्या श्रेष्ठ रथावर आरूढ होण्यास रथासमीप प्राप्त झाला. तेव्हां वायुवेगानें चाल करणाऱ्या त्या रथाच्या अध्वानीं एकदम भूमीवर लोटांगण घालून ब्रह्मदेवाविषयीं अत्यंत आदर व्यक्त केला ! नंतर, आपल्या दिव्य कांतीनें झळकणारा तो भगवान् ब्रह्मदेव रथावर आरूढ होऊन त्याने घोड्यांचे लगाम व चाबूक आपल्या हातांत धारण केला आणि त्यानें त्या वेगवान् घोड्यांस उठवून शंकरास हटलें कीं, आतां रथावर आरूढ हो. तेव्हां तत्काळ भगवान् स्थाणु हा विष्णुसोमाग्निसंभव असा बाण धारण करून रथावर चढला व त्यानें आपल्या धनुष्यानें शत्रूंची हृदये विदीर्ण करून सोडिली. राजा, भगवान् शंकर रथावर आरूढ होतांच पुनः महान् महान् ऋषि, देव, गंधर्व व अप्सरा ह्यांचे समुदाय त्याचा स्तव करूं लागले. त्या समयीं आपल्या तेजांनें तीनही लोकांना प्रदीप्त करून टाकणारा भगवान् शंकर रथावर अधिष्ठित होतसाता फिरून इंद्रप्रमुख देवांना म्हणाला, ‘हे देवहो, हा शंकर दैत्यांना मारणार नाही, अशी चिंता अगदी करूं नका. ह्या माझ्या बाणानें अमुर मेलेच अशी खात्री बाळगा. ’ राजा शल्या, तेव्हां देवांनी “ खचित खचीत ” असे उद्गार काढून “ दैत्य मेलेच ” म्हणून मानिलें आणि भगवंताचें वचन कधीही मिथ्या होणार नाही असा पूर्ण भरंवसा बाळगून त्यांना मोठें समाधान वाटलें. नंतर भगवान् शंकर त्या महान् व अनुपम रथातून सर्वदेवगणांसहवर्तमान युद्धार्थ चालू झाले. त्या

समर्थी स्वाच्या समीप नित्य हजर असणारे पार्षद त्या प्रतापशाली वीराची स्तुति करू लागले, दुसरे मांसाद अर्जिक्य सेवक आनंदाने नाचू लागले, व कित्येक गण सभोवतालीं भ्रवत सुटून एकमेकांवर ओरडू लागले; आणि त्यांप्रमाणेच महान् भाग्यशाली व गुणसंपन्न तपस्वी, देव व इतर पुरुष सर्वतोपरी महा-देवाचा जयव्हावा म्हणून चिंतन करू लागले. ह्याप्रमाणे त्रैलोक्याचे हित करणारा भगवान् देवाधिदेव शंकर युद्धार्थ बाहेर पडला, तेव्हां देवांनाच नव्हे, तर सर्व जगताला आनंद झाला. राजा शल्या, त्या वेळीं ऋषिजन बहुविध स्तवांनीं महादेवास प्रोत्साहन देऊन त्याची वीरश्री पुनःपुनः अधिकाधिक करीत तेथेंच राहिले, व सहस्रावधि गंधर्व नानाप्रकारचीं बाधे वाजवून जयजयकार करू लागले. असो; राजा मद्रेश्वरा, वर देणारा भगवान् ब्रह्मदेव महादेवाचे सारथ्य करण्यासाठीं सिद्ध होऊन रथावर चढला व त्यानें अमुरांवर जाण्याकरितां रथ चालू केला, तेव्हां भगवान् विश्वाधिपति महादेव "उत्तम! उत्तम!" असे उद्गार काढून हसंत हसंत हसणाला कीं, 'हे ब्रह्मदेवा, जिकडे दैत्य आहेत, तिकडे रथ चालव, घोडे मोठ्या सावधगिरीनें हाक, व आज मी रणांगणांत शत्रूंचा नाश करीत असतां माझे बाहुबल अवलोकन कर.' राजा शल्या, ह्याप्रमाणे शंकराचे भाषण श्रवण करितांच, मनोवेगांन व वायुवेगांन चाल करून जाणाऱ्या त्या अध्वाना दैत्य-दानवांनीं रक्षण केलेल्या तीन पुरांकडे जाण्याकरितां ब्रह्मदेवाने इशारा केला व त्या-बरोबर ते अश्व बेफाम होऊन असे पळत सुटले कीं, जणू काय ते अंतरिक्ष पिऊनच टाकीत आहेत असा भास झाला ! असो; त्रैलोक्यास वंदनीय अशा त्या अध्वाना दैत्यदानवांच्या त्या तीन पुरांसन्निध पोंचण्याला फारसा वेळ

लागला नाही. त्यांनीं हां हां म्हणतां भगवान् शंकराचा तो दिव्य रथ त्रिपुरांक्षा अभिमुख नेला व तो तेथें जाऊन थडकतांच नंदिकेश्वरानें असा मोठा शब्द केला कीं, त्याच्या योगानें दशादिशा दुमदुमित होऊन तारकाचे बहुत वंशज व दुसरे दैत्यदानव पटापट मरून पडले ! नंतर त्या त्रिपुरांतील दुसरे दैत्यदानव युद्धार्थ पुढें सरसावले तेव्हां त्रिशूलधारी भगवान् स्थाणु इतका संतप्त झाला कीं, त्याचा तो क्रोध पाहून सर्व भूतें भिऊन गेलीं व सर्व त्रैलोक्य थरथरू लागले. राजा शल्या, नंतर भगवान् महादेवानें धनुष्याला बाण चढविला तेव्हां जी अवस्था झाली ती काय वर्णावी ! त्या समयी घोर चिन्हें दृग्भोचर झालीं. भगवान् शंकराच्या त्या अद्वितीय रथावर सोम, अग्नि व विष्णु हे बाणस्थित असून शिवाय शंकर व ब्रह्मदेव हे योद्धा व सारथि ह्या रूपांनीं स्थित होते. दैत्य-दानवांना अवलोकन करून ह्या पांचहीजणांचा अत्यंत क्षोभ झाला व ह्यामुळे शंकरानें धनुष्याचे आस्फालन केले तेव्हां तो रथ अंतरिक्षांतून एकदम खालीं आला ! राजा, ह्याप्रमाणे तो रथ अधोभागीं आलेला पाहून, भगवान् शंकराच्या बाणाप्रीं विष्णूचें वास्तव्य होतेंच, म्हणून तो तेथून एकदम निघाला व त्यानें वृषरूप धारण करून तो महारथ वर उचलिला. परंतु तितक्यांत मध्यंतरी तो रथ खालीं येत असतां व अमुरसमुदाय मोठी गर्जना करीत असतां अध्वान्या पाठीवर व नंदिकेश्वराच्या मस्तकावर उभें राहून मोठ्या आवेशानें भगवान् शंकरानें मोठी आरोळी दिली आणि दानवांचें पुर नीट निरखून पहात असतां त्यानें वृषभाचे खूर द्विधा केले व अध्वान्यांचे स्तन छाटून टाकिले. राजा, ह्याप्रमाणे अद्भुत कर्म करणाऱ्या बलवान् शंकरानें पीडिल्यामुळे ह्या वेळेपासून बैलांच्या खुरांना गेलीं झालीं व अध्वान्यांचे स्तन

अजीव गेले. असो; नंतर महादेवानें आपलें धनुष्य सज्ज करून त्यास तो बाण लाविला व त्यास पाशुपतास्त्राची जोड देऊन त्रिपुराचें चिंतन करीत तो स्वस्थ राहिला. अशा रीतीनें धनुष्यबाण सिद्ध करून तो त्रिपुराचें अनुसंधान करीत असतां कांहीं कालानें तिन्ही पुरें एकत्र झालीं व तीं तशीं एक झालेलीं पाहून महात्म्या देवांना अत्यंत आनंद झाला आणि सर्व देव, सिद्ध व महान् महान् ऋषि शंकराचा जयजयकार करून त्याची अतिशय स्तुति करूं लागले. इतक्यांत अमुराचें हनन करण्यास उद्युक्त झालेल्या, अवर्णनीय व भयंकर असें शरीर धारण करणाऱ्या दुर्धरप्रतापी महादेवाच्या अग्रभागीं तें त्रिपुर दृगोचर होताच भगवान् लोकेश्वरानें आपल्या दिव्य धनुष्याची प्रत्येका ओढून त्रिभुवनांतील सर्व बळ ज्यांत भरलें होतें असा तो दुःसह बाण त्यावजर टाकिला व त्यासरसा भयंकर हाहाकार होऊन तीं तिन्ही पुरें भूमीवर पडलीं ! आणि त्यांना व त्यांतील सर्व दैत्यदानवांना जाळून टाकून भगवान् महादेवानें त्यांस पश्चिमसमुद्रांत फेंकून दिलें ! राजा मद्रेशा, सर्व त्रिभुवनाचें कल्याण करावें ह्या हेतूनें भगवान् महेश्वरानें संतप्त होऊन ह्याप्रमाणें त्रिपुराला व त्यांतील सर्व दैत्यदानवांना दग्ध केलें. राजा, त्या वेळीं भगवान् शंकराच्या ठिकाणीं जो श्रोधात्रि प्रदीप्त झाला होता, त्यानें सर्व त्रैलोक्य भस्म करून टाकिलें असतें, परंतु शंकरानें आपण होऊनच तो आवरिला व सर्व त्रैलोक्याला वांचविलें. ह्याप्रमाणें त्रिपुराचा व दैत्यदानवांचा विनाश झालेला पाहून देव, ऋषि व इतर सर्व जन ह्यांना स्वास्थ्य प्राप्त झालें, आणि त्यांनीं त्या अद्वितीय वीर्य धारण करणाऱ्या देवाधिदेवाची उत्कृष्ट प्रकारें स्तुति केली. तेव्हां भगवान् शंकरानें त्या देवादिकांना स्वस्थानीं जाण्याची आज्ञा दिली

आणि ते ब्रह्मदेवप्रभृति सर्व देव व ऋषि वगैरे अंगीकृत कार्यांत कृतार्थ होतासे आपआपल्या स्थलीं मोठ्या आनंदानें परत गेले. राजा शल्या, सुरासुरांवर अधिकार चालविणाऱ्या भगवान् लोकेश्वराच्या महेश्वरानें सर्व त्रिभुवनाचें ह्या प्रकारें कल्याण केलें. आतां माझी तुला इतकीच प्रार्थना आहे कीं, त्या अमोघवीर्यशाली लोकेश्वराच्या भगवान् पितामहानें जसें त्या महादेवाचें सारथ्य केलें, तसें तूं या महात्म्या राधेयाचें सारथ्य कर. तुझ्या ठिकाणीं कृष्णापेक्षां, कर्णापेक्षां व अर्जुनापेक्षां अधिक पराक्रम वसत आहे, ह्याची शंकाच नाही. राजा, युद्धकलेमध्ये कर्ण हा शंकराप्रमाणें आहे व राजनीतीमध्ये तर तूं ब्रह्मदेवाप्रमाणें आहेस; ह्यास्तव ब्रह्मदेव व शंकर हे ज्याप्रमाणें अमुरांचा समूळ नाश करण्यास समर्थ झाले, त्याप्रमाणें तुझी दोघे माझ्या शत्रूंचा नाश करण्यास समर्थ व्हाल. म्हणून, हे शल्या, जेणेंकरून आज त्या कर्णाच्या हातून श्वेताश्व अर्जुनाचा वध होऊन पांडवांच्या सेनेचा विध्वंस उडेल असें लवकर कर. हे मद्रेश्वरा, आज तूं जर कर्णाचें साचिन्व (सारथ्य) करशील, तरच आमची राज्याशा, जीविताशा व विजयेच्छा परिपूर्ण होईल. आमचें स्वतःचें, कर्णाचें, राज्याचें व जयाचें भवितव्य आतां तुझ्यावर अवलंबून आहे. ह्यास्तव कर्णाच्या रथाच्या उत्कृष्ट अश्वानें नियंत्रण करण्यास तूं सिद्ध हो. आतां मी तुला दुसरा एक इतिहास सांगतों, तो श्रवण कर. हा इतिहास माझ्या पित्याला एका धर्मनिष्ठ ब्राह्मणानें सांगितला तेव्हां मी तो ऐकिला आहे. कार्यकारणभावानें युक्त असा हा मनोहर इतिहास श्रवण करून तूं आपल्या मनाचा पूर्ण निश्चय ठरव व जें उचित दिसेल तें कर; उर्गाच शंका काढीत बसूं नको.

राजा शल्या, जमदग्नि नांवाचा एक महा-

विख्यात पुरुष भृगुकुलांत होऊन गेला. प्रताप-शाली व गुणसंपन्न असा जो प्रख्यात परशुराम तो त्याचा पुत्र. त्यानें अस्त्रप्राप्तीस्तव तीव्र तपश्चर्या करून भगवान् शंकरास सुप्रसन्न करून घेतलें. परशुरामाची समाधानवृत्ति, इंद्रियनिग्रह, एकनिष्ठता, दृढभक्ति व पूर्ण शांति अवलोकन करून भगवान् महादेव संतुष्ट झाला व परशुरामाचें हृद्गत जाणून तो त्याजपुढें प्रकट होऊन म्हणाला:—परशुरामा, मी तुझ्यावर संतुष्ट झालों आहे, तुझे कल्याण होवो, तुला काय पाहिजे हें मी जाणतो. तूं आपलें मन निर्मल कर म्हणजे तुझ्या इच्छा परिपूर्ण होतील. जेव्हां तूं पवित्र होशील, तेव्हां तुला जीं अस्त्रें हवीं आहेत तीं मी देईन. भार्गवा, अपात्र व असमर्थ अशा पुरुषाला जर अस्त्रांची प्राप्ति झाली, तर त्यांपासून त्याचें हित न होतां उलट तीं अस्त्रें त्यास जाळून टाकितात. राजा शल्या, देवाधिदेव शंकराचें भाषण श्रवण करून जामदग्न्यानें (परशुरामानें) त्या महात्म्यास साष्टांग प्रणिपात केला आणि मोठ्या विनयानें म्हटलें, 'भगवन्, जेव्हां हा दास अस्त्रधारणास योग्य आहे असें आपणांला वाटे, तेव्हांच आपण मजवर अनुग्रह करून माझे मनोरथ सिद्धीस न्यावे.

राजा शल्या, नंतर परशुरामानें अंतरिंद्रियांचा व बाह्येन्द्रियांचा पूर्ण निग्रह करून घोर तप आरंभिलें आणि पूजाअर्चा, होमहवन, जपजाप्य इत्यादिकांच्या योगें बहुत वर्षेपर्यंत शंकराची आराधना करून त्यास प्रसन्न केलें. तेव्हां भगवान् शंकर आपल्या पत्नीसमक्ष परशुरामाचे अनेक गुण वर्णन करून म्हणाला:—हा दृढव्रत परशुराम नित्य माझ्या ठिकाणीं एकनिष्ठ भक्ति करीत आहे. राजा शल्या, ह्या प्रमाणेंच भगवान् शंकरानें परशुरामाचे अनेक गुण देवांच्या व पितरांच्या समक्ष अनेकवार

कथन केले. अशा प्रकारें परशुराम शिवााराधनेंत व्यग्र असतां, इकडे दैत्यांचें प्राक्कल्य फार झालें. ते दर्पमोहादिकांनीं फार उन्मत्त होऊन देवांना अतिशय पीडा करू लागले. तेव्हां देवांनीं एकत्र होऊन त्यांचा नाश करण्याचा निश्चय ठरविला व त्याप्रमाणें त्यांनीं प्रयत्न चालविले, पण त्यांत त्यांना यश आलें नाहीं. तेव्हां मग ते उमापति भगवान् शंकराकडे गेले व त्यांनीं "देवा, आमच्या शत्रूंचा वध कर." अशी भक्तिपूर्वक प्रार्थना केली. त्या समयीं भगवान् शंकरानें दैत्यांच्या क्षयाची प्रतिज्ञा करून परशुरामाला बोलावून आणून म्हटलें, 'हे भार्गवा, देवांचे शत्रु दैत्य हे एकत्र मिळून देवांना पीडा करीत आहेत, ह्यास्तव तूं त्यांना ठार मार म्हणजे त्या योगें सर्व लोकांचें कल्याण होऊन मलाही मोठा संतोष वाटे.' राजा शल्या, हें भाषण ऐकून परशुराम वर देणाऱ्या भगवान् त्र्यंबकास झणाला, 'हे देवाधिदेवा, समरांगणांत दानवांचा वध करण्याइतकी माझ्या अंगीं शक्ति कोठें आहे? कारण, दानव हे युद्धधुरंधर असून अस्त्रविद्येंत निपुण आहेत व मजला तर अस्त्रविद्या मुळींच उपलब्ध नाहीं' तेव्हां महादेव झणाला, 'परशुरामा, तूं जा, माझी तुला आज्ञा असल्यामुळें तूं दानवांचा संहार करशील, सर्व शत्रूंना जिंकशील व तुला सर्व गुण यथास्थितपणें प्राप्त होतील.' राजा, ह्याप्रमाणें भगवद्वाक्य श्रवण करून परशुरामानें ती आज्ञा शिरसा मान्य केली आणि जयप्राप्त्यर्थ पुण्याहवाचनादि करवून तो दानवांशीं युद्ध करण्यास बाहेर पडला. नंतर महाबलवान् व मदोन्मत्त दानवांची गांठ पडतांच परशुराम त्यास म्हणाला, 'मदोत्कट दानवहो, मजशीं युद्ध करण्यास सिद्ध व्हा. महासुरांनो, तुम्हांला जिंकण्यासाठीं देवाधिदेव शंकरानें मला पाठविलें आहे.' राजा शल्या, परशुरामाचें हें भाषण ऐकून दानवांनीं त्याच्याशीं

पुढे करण्यास शारंग्य केल्या व त्यांत परशुरामानें वज्रासारखे भयंकर प्रहार करून दानवांचा निःशक्त उडविला. ह्याप्रमाणें दानवांचा संहार करून परशुराम परत भगवान् शंकरासमीप आला. तेव्हां शंकरानें परशुरामाच्या देहावरून हात फिरवून, त्याच्या देहावर जे शस्त्रांचे वार कोरें झाले होते ते सर्व नाहींतसे केले आणि त्याच्या पराक्रमानें संतुष्ट होऊन त्यास अनेक वर दिले. त्या समर्थी भगवान् शंकर परशुरामास मोठ्या प्रेमानें म्हणाला, 'हे भृगुनंदना, तुझ्या शरीरावर शस्त्रप्रहारांचे जे हे व्रण झाले आहेत त्यांवरून तुझ्या ठिकाणीं अमानुष पराक्रम वसत आहे हे व्यक्त होते. ह्यास्तव आतां तुला जीं दिव्य अस्त्रे पाहिजे असतील तीं तूं मजपासून ग्रहण कर.'

दुर्योधन सांगतो:—राजा मद्रेश्वरा, नंतर परशुरामाला जीं जीं नानाविध अस्त्रे व वर पाहिजे होते, ते ते भगवान् शंकरानें त्याला दिले; व त्यांचा स्वीकार करून तो महातपस्वी परशुराम कृतार्थ होतसाता शंकराची अनुज्ञा घेऊन परत गेला. असो; हा इतिहास मी त्या वेळीं त्या ब्राह्मणापासून ऐकिला. पुढें परशुरामानें शंकरापासून प्राप्त झालेली ती धनुर्विद्या मोठ्या आनंदानें महात्म्या कर्णाला सांगितली. राजा शल्या, जर कर्णाच्या ठिकाणीं कांहीं वैगुण्य असतें, तर त्याला परशुरामानें तीं दिव्य अस्त्रे कर्णाला दिलीं नसतीं, हे निःसंशय होय. शिवाय, मद्रेश्वरा, कर्ण हा सूतकुलांत जन्मलेला आहे असें मला मुळींच वाटत नाही. हा क्षत्रियांच्या कुलांत देवांशानें जन्मला असून त्याच्या कुलाचे ज्ञान ह्याच्या देहघटनेवरून व पराक्रमावरून व्हावें ह्याच उद्देशानें ह्यास टाकून दिलें असावें असा माझा समज आहे. खचित कर्ण हा सूतकुलांत जन्म पावला नाही; कारण, हा सकुंडल, सकवच, दीर्घ-

बाहु व महास्थ असून सूर्यतुल्य पराक्रमी आहे; तेव्हां हा सूतकुलांत उत्पन्न होणें संभवतच नाही. अरे, मृगीपासून कोठें व्याघ्राची उत्पत्ति होईल काय? राजा, ह्या वीराचे हे गज-शुंडेप्रमाणें पीनबाहु व त्याप्रमाणेंच ह्याचें हे शत्रूंशीं झुंजणारें विशाल वक्षस्थळ पहा. राजेंद्रा, खचित हा वैकर्तन कर्ण सामान्य वीर नव्हे. हा महात्मा असून परशुरामाचा शिष्य असल्यामुळें मोठा पराक्रमी आहे!

अध्याय पसतिसावा.

—:—

शल्यसारथ्यस्वीकार.

दुर्योधन ह्याणाला:—राजा शल्या, ह्या प्रकारें त्रिपुरनाशार्थ सृष्टिकर्त्या भगवान् ब्रह्मदेवानें शंकराचें सारथ्य केलें. प्रस्तुत प्रसंगीं रथ्यापेक्षां अधिक पराक्रमी अशा सारथ्याची अपेक्षा आहे; म्हणून, हे नरशार्दूल, तूं समरांगणांत कर्णाचें सारथ्य कर. ज्याप्रमाणें देवांनीं त्या प्रसंगीं मोठ्या प्रयत्नानें शंकराहून बलिष्ठ अशा ब्रह्मदेवाला सारथ्य करण्यास उद्युक्त केलें, त्याप्रमाणें आह्मी मोठ्या प्रयत्नानें कर्णाहून बलिष्ठ अशा तुला सारथ्य करण्यास उद्युक्त करीत आहों, तर तूं अगदीं विलंब न करितां कर्णाचें सारथ्य करण्यास सिद्ध हो.

शल्य म्हणाला:—राजा दुर्योधना, मीही त्या ब्रह्मरुद्रांचें हें लोकोत्तर व अतिमानुष आख्यान पुष्कळांच्या तोंडून ऐकिलें आहे. प्रपितामह ब्रह्मदेवानें शंकराचें सारथ्य पतकरिलें व शंकरानें एका बाणानें त्रिपुरांचा नाश करून असुरांचा विध्वंस उडविला, ही गोष्ट मला विदित आहे व त्याप्रमाणेंच कृष्णालाही विदित आहे. कारण, मागें झालेल्या व पुढें होणाऱ्या सर्व गोष्टींचें यथार्थ ज्ञान कृष्णास नाही असें कसें घडेल? हे भारता, कृष्णानें

अर्जुनाचें सारथ्य स्वीकारलें ह्यांतलें मर्म तरी हेंच होय. 'स्वयंभू ब्रह्मदेवानें जर रुद्राचें सारथ्य करण्यास मागें घेतलें नाहीं, तर मग अर्जुनाचें सारथ्य करण्यास आपण काय म्हणून मागें घ्यावें ?' हाच विचार करून कृष्णानें अर्जुनाचें सारथ्य पतकरिल्लें हें निर्विवाद होय. राजा, यदाकदाचित् सूतपुत्र कर्णानें कुंतीपुत्र अर्जुनाला वधिल्लें, तथापि पांडवसैन्याची वाताहत होईल अशी शंका घेऊं नको; कारण, समरांगणांत अर्जुन पडल्यास कृष्ण स्वतः युद्ध करूं लागेल आणि मग क्रोधायमान झालेल्या त्या शंखचक्रगदाधारी महात्म्या वार्ष्णेयाच्या हस्ते तुझी सेना भस्म होईल. राजा, मग तुझ्या सैन्यापैकी एकही भूपाल त्याजपुढें उभा राहाण्यास समर्थ होणार नाहीं !

संजय सांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणें मद्राधिपति शल्याचें भाषण श्रवण करूनही तुझ्या पुत्राची उमेद खचली नाहीं. त्यानें मोठ्या हिमतीनें उत्तर दिलें, "हे महाबाहो शल्या, कर्णाचें सामर्थ्य सामान्य नाहीं, हें लक्षांत ठेव. रणांगणांत हा प्रतिसूर्यच आहे. हा सर्व शस्त्राध्यांमर्त्ये श्रेष्ठ असून सर्व शास्त्रांत पारंगत आहे. त्याच्या प्रत्यंचेचा महान् व हृदयभेदक शब्द कानीं पडतांच पांडवसेनेची तारंबळ उडून ती दशदिशांस पळून जाते. हे महाबाहो शल्या, रात्रीच्या समयीं घटोत्कच हा शतावधि माया उत्पन्न करून त्यांच्या आड गुप्त असतां कर्णानें त्यास कसें वधिल्लें हें तूं स्वतःच पाहिल्लें आहेस. त्याप्रमाणेंच कर्ण हा अशा प्रकारचीं भयंकर कृत्यें करीत असतां अर्जुनाला किती भय पडलें होतें व तो कौरवसैन्याच्या समोर येण्यास कसा धजेनासा झाला होता हेंही तुला विदित आहेच. तसेंच कर्णानें बलवान् भीमसेनाला धनुष्याच्या अग्रानें टोंचून 'हे मूर्खा, खादाडा,' असें म्हटलें हेंही

तुला आठवत असेलच. मद्रेश्वरा, कर्णाच्या अर्गीं मोठा विलक्षण पराक्रम वास करीत आहे. त्यानें शूर माद्रीपुत्रांना महान् युद्धांत जिंकून ठारच मारिल्लें असतें; परंतु कांहीं विशेष हेतूनें त्यानें त्यांस न वधितां नुसतें जिकिल्लें मात्र. वृष्णिकुलप्रवीर सात्यकि हा मोठा रणधुरंधर योद्धा, पण कर्णानें त्या शूराला युद्धांत जिंकून बलात्कारानें विरथ केलें. त्याप्रमाणेंच धृष्टद्युम्नप्रमुख सर्व वीर व इतर योद्धे ह्यांची रणांगणांत तरी वेळां कर्णानें हंसत हंसत दुर्दशा उडवून दिली आहे. तसेंच या लोकोत्तर महारथाचें सामर्थ्य असें अद्वितीय आहे कीं, हा एकदां संतापला असतां वज्रधर इंद्रालामुद्रां ठार केल्याशिवाय रहाणार नाहीं ! तेव्हां अशा ह्या अतुलप्रतापी कर्णाला युद्धांत पांडव कसे जिकितील ? तशांत, तुझ्यासारखा सारथि मिळाला म्हणजे कांहींच चिंता करण्याचें कारण रहाणार नाहीं ! पहा—तूं सर्व शास्त्रें जाणणारा असून सर्व विद्यांत प्रवीण आहेस. बाहुवीर्यांत तुझी बरोबरी करील असा एकही वीर ह्या भूतलावर नाहीं. तुझ्या ठिकाणीं दुःसह प्रताप वसत असल्यामुळें तूं शत्रूंच्या हृदयांत शल्यवत् पीडा करीत असतोस आणि ह्यामुळेंच तुला शल्य हें नांव पडलें आहे. तुझ्याशीं गांठ पडली तेव्हां सर्व सात्वतांना तुझ्यापुढें हार खावी लागली. तेव्हां तुझ्यापेक्षां कृष्णाच्या ठिकाणीं अधिक बल आहे असें कसें म्हणावें ? असो; आतां, अर्जुन रणांगणांत पडल्यास कृष्ण हा पांडवसैन्याचा पुढाकार घेऊन कौरवसैन्यावर चालून येईल म्हणून जसें तूं म्हणतोस, तसें मीही म्हणतो कीं, कर्ण जर धारातीर्थी पतन पावला तर तूंही कौरवाचें प्रचंड सैन्य घेऊन पांडवांवर चालून जाशील ! राजा शल्या, वामुदेव मात्र रणभूमीवर कौरवसैन्याचें

निवृत्त करील व तूं कांहीं पांडवसैन्याचे निर्दलन करण्यास क्षम्य होणार नाहीस, असें कसें म्हणावें ? राजा, तुजकरितां युद्धामध्ये मी आपल्या भावांप्रमाणें व इतर सर्व भूपालांप्रमाणें धारातीर्थी देह ठेवण्यास सिद्ध आहे !”

शल्य म्हणाला:—हे मानदा दुर्योधना, जसा अर्थां तूं सर्व सैन्यासमक्ष माझी प्रशंसा करून मला कृष्णाहून अधिक पराक्रमी असें म्हणत आहेस, त्या अर्थां मी तुझ्यावर मोठा प्रसन्न झालें आहे. अर्जुनाशी युद्ध करणाऱ्या व्हास्वी राधेयाचें सारथ्य करण्यास तुझ्या इच्छेनुरूप हा मी सिद्ध आहे पहा. पण माझी इतकीच अट आहे की, माझ्या मनाला वाटेल तें मी कर्णाला बोलेल !

संजय सांगतो:—धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें शल्याचें भाषण श्रवण करून कर्णासमवेत दुर्योधनानें सर्व सत्रियांसमक्ष ‘ठीक आहे.’ असें म्हटलें आणि लोच शल्यानें ‘कर्णाचें सारथ्य मी स्वीकारिलें.’ असें आश्वासन दिलें. तेव्हां दुर्योधनास मोठा संतोष झाला व त्यानें कर्णास आलिंगिलें. त्या समयीं बंदीजनांनीं स्तुति चालविली असतां तो पुनः कर्णास म्हणाला की, ‘कर्णा, रथांगणांत महेंद्रानें जसा दानवांचा नाश केला, तसा तूं पांडवांचा नाश करून टाक.’ राजा, अशा प्रकारें शल्यानें सारथ्यकर्म पतकरिल्लें पाहून कर्णाला मोठा आनंद झाला व तो पुनः दुर्योधनाला ह्मणाला, ‘राजा, मद्राजानें सारथ्याधिकार स्वीकारिला खरा, पण तो जें कांहीं बोलत आहे त्यावरून त्याचें अंतःकरण प्रसन्न आहे असें दिसत नाही; ह्यास्तव, तूं फिरून गोड शब्दांनीं त्याला आपलासा करून घे. धृतराष्ट्रा, नंतर महाबुद्धिमान् अस्त्रविद्याप्रवीण व बलिष्ठ असा दुर्योधन मद्राधिपति शल्याला गंभीर वाणीनें म्हणाला, “हे मद्रपते, आज अर्जुनाशी युद्ध करावें अशी कर्णाची इच्छा

आहे, ह्यास्तव आज त्याचें सारथ्य करून त्या त्यास विजय मिळवून द्यावा. आज कर्णाच्या मनांत शत्रूकडील इतर सर्व धीरांस मारून अर्जुनालाही मारावें असें आहे; म्हणून पुनः पुनः माझी तुला अशी प्रार्थना आहे की, तूं कर्णाचें सारथ्य कर. राजा, ज्याप्रमाणें लोकीत्तर सारथि कृष्ण हा योग्य संहामसलत सांगून अर्जुनाचें पालन करित आहे, त्याचप्रमाणें तूंही कर्णाचें सर्व प्रकारें पालन कर.”

संजय सांगतो:—नंतर शल्यानें शत्रुसंहारक दुर्योधनाला आलिंगन दिलें व मोठ्या आमंदाने असें भाषण केलें:

शल्य म्हणाला:—राजा दुर्योधना, जर तुझे असें म्हणणें असेल, तर तुला जें कांहीं प्रिय वाटत असेल तें सर्व करण्यास मी सिद्ध आहे. राजा, जी जी गोष्ट माझ्या हातून होण्यासारखी आहे, ती ती गोष्ट मी अगदीं मनापासून कसूर न करितां करीन व तुझे कार्य पल्यास तेईन. माझी म्हणून तुजपाशी इतकीच अट आहे की, मी हितबुद्धीनें जें कांहीं प्रिय किंवा अप्रिय कर्णाला बोलेल, त्या सर्वांची कर्णानें व त्यां मला क्षमा करावी.

कर्ण म्हणाला:—हे मद्रपते, ठीक आहे. ज्याप्रमाणें शंकराच्या हितासाठीं ब्रह्मदेव उद्युक्त होता, किंवा अर्जुनाच्या हिताकरितां कृष्ण उद्युक्त आहे, त्याचप्रमाणें नेहमी आमच्या हितासाठीं तूं उद्युक्त अस ह्मणजे झालें.

शल्य ह्मणाला:—कर्णा, स्वतःची निंदा किंवा स्तुति अथवा दुसऱ्याची निंदा किंवा स्तुति ह्या चार गोष्टी भल्या मनुष्यास वर्ज्य आहेत. परंतु तुला माझा भरंवसा यावा म्हणून मी तुला स्वतःच्या स्तुतीनें युक्त असें जें कांहीं सांगत आहे, तें नीट ऐकून घे. हे श्रेष्ठ, मी मातलीप्रमाणें इंद्राचें सारथ्य करण्यास योग्य आहे. प्रसंगानुरूप अवधान राखणें, योग्य

रीतीनें अथ चालविणे, पुढील संकटाचा आ-
गाऊ अंदाज करणे, त्याचा उपसर्ग न होण्या-
विषयीं जपणे व तशांतून संकट ओढवल्यास
त्यांतून पार पडणे, ह्या सर्व गोष्टी मला उत्तम
वेत आहेत. ह्यास्तव तूं अर्जुनाशीं युद्ध करीत
असतां तुझ्या अध्वाना मी उत्तम प्रकारें प्रेरणा
देऊन तुझे कार्य पार पाडीन. कर्णा, तूं अगदीं
कमळजी करूं नको.

अध्याय छत्तिसावा.

—:०:—

कर्णाशीं शल्याचें भाषण.

दुर्योधन झणाला:—कर्णा, हा मद्रराज
शल्य तुझे सारथ्य करील; हा सारथ्यकर्मांत
मोठा निपुण आहे. कृष्णाहूनही हा अधिक
युक्तीनें रथ चालवितो. देवराज इंद्राचा सारथि
जसा मातलि, तसा हा रथ चालविण्यांत
कुशल आहे. तो मातलि ज्याप्रमाणें इंद्राच्या
रथाला जोडिलेल्या अध्वानें नियंत्रण करितो,
त्याप्रमाणें आज हा शल्य तुझ्या रथाच्या
अध्वानें नियंत्रण करील. तुझ्यासारखा परम-
प्रतापी वीर रथावर अधिष्ठित असतां व मद्र-
राज शल्यासारखा अद्वितीय पुरुष त्याचें
सारथ्य करीत असतां समरांगणांत तुझा दिव्य
रथ खचित पांडवांचा पराभव करील, ह्यांत
वानवा नाही !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर
प्रातःकाल झाल्यावर दुर्योधन फिरून त्या
पराक्रमी मद्रराज शल्याला रणभूमीवर म्हणाला,
'हे मद्रेशा, कर्णाच्या रथाच्या ह्या दिव्य
अध्वाना समरांगणांत चालव, तुझे पाठबळ
असलें म्हणजे कर्ण हा धनंजयाला जिंकून
टाकील.' राजा धृतराष्ट्रा, दुर्योधनाच्या तोंडचे
हे शब्द ऐकून ' बरें आहे ' असें म्हणून शल्य
रथावर बसला. अशा प्रकारें शल्य सारथ्य

करण्यास सिद्ध होऊन समीप येतांच कर्णानें
आनंदित होऊन त्यास आज्ञाहोवें म्हटलें, 'सूता
शल्य, माझ्याकरितां तूं सत्वर श्रेष्ठ रथ सिद्ध
करून घेऊन ये.' राजा, नंतर शल्यानें कर्णा-
करितां विजयशाली व मेघसमुद्रायाप्रमाणें
महान् असा मंगलदायक उत्कृष्ट रथ यथाविधि
सिद्ध करून कर्णापाशीं आणिला; व 'कर्णा,
विजयी हो' असें म्हणून तो रथ आणिल्याचें
त्यानें कर्णास निवेदन केलें. तो रथ अव-
लोकन करून महारथ कर्णानें त्या रथाची
यथाविधि पूजा केली. धृतराष्ट्रा, तो रथ सामान्य
नव्हता. पूर्वीच ब्रह्मवेत्त्या पुरोहितानें त्या रथा-
वर मंत्रादिकांच्या योगें संस्कार करून तो
पवित्र व श्रेष्ठ बनविला होता.

असो; कर्णानें त्या रथाची पूजा करून
त्यास प्रदक्षिणा केली व नंतर एकाग्र चित्तानें
सूर्याची प्रार्थना केल्यावर समीपभागी प्राप्त
झालेल्या मद्रराज शल्याला 'आतां तूं रथावर
चढ' असें म्हटलें. तेव्हां कर्णाच्या त्या महान्
व बलाढ्य रथावर, पर्वतावर ज्याप्रमाणें सिंह
चढतो, त्याप्रमाणें तो महाप्रतापी शल्य चढला.
ह्याप्रमाणें आपल्या दिव्य रथावर शल्य अधि-
ष्ठित झालेला पहातांच, विद्युद्धान् मेघमंडलावर
सूर्य जसा आरूढ होतो, तसा त्या लोकोत्तर
रथावर कर्ण आरूढ झाला. अशा रीतीनें,
अग्नि किंवा आदित्य ह्यांच्याप्रमाणें प्रखर तेज
धारण करणारे ते दोघे बलाढ्य योद्धे रथावर
अधिष्ठित झाले, तेव्हां जणू काय अंतरिक्षांत
मेघसमुद्रायावर अग्नि व सूर्यच अधिष्ठित झाले
आहेत असें भासूं लागलें ! राजा, ह्याप्रमाणें ते
द्युतिमान् वीर एके रथांत विराजित असतां
बंदीजन त्यांची स्तुति करूं लागले. तेव्हां जणू
काय यज्ञांत सदस्य व ऋत्विक् हे इंद्र व अग्नि
ह्यांचीच स्तुति करीत आहेत, असें वाटूं लागलें.
धृतराष्ट्रा, अशा प्रकारें महारथ कर्ण युद्धा-

ला सिद्ध होऊन आपल्या त्या घोर धनुष्याच्या प्रत्यंचेचा टणत्कार करीत असतां जणू काय खळें पडलेल्या सूर्याप्रमाणें भासूं लागला; व तो त्या दिव्य रथावर असतां त्याच्या हातांतील शर हे जसे काय किरणच वाटून, मंदारपर्वतावर सूर्यच आरूढ झालेला आहे असें वाटलें. असो; नंतर त्या महाबाहु व महापराक्रमी कर्णाला दुर्योधन म्हणाला, “कर्णा, भीष्म व द्रोण ह्यांच्या हातून जें दुष्कर कर्म समरांगणांत घडलें नाहीं, व जें घडावें म्हणून सर्व धनुर्धरांची व माझी इच्छा, तें कर्म तूं आज कर. हे अधिरथा, भीष्म व द्रोण हे अर्जुन व भीमसेन ह्यांस खचित वधितांल असें आम्हांस वाटत होतें, पण त्यांजकडून तें घडलें नाहीं; ह्यास्तव आज तें कर्म तूं कर आणि जणू काय तूं दुसरा देवेंद्रच आहेस असा पराक्रम गाजव. वा कर्णा, आज तूं धर्मराजाला धर किंवा अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव ह्यांना ठार मार. कर्णा, आज तुला जय मिळो; तुझे कल्याण होवो. हे नरश्रेष्ठा, आतां जा; पांडवांचें सैन्य जाळून टाक.” राजा, नंतर हजारों तूर्ये व लाखों नौबदी वाजूं लागल्या, तेव्हां अंतरिक्षांत मेघगर्जनाच होत आहे असें भासलें. नंतर दुर्योधनाच्या प्रोत्साहणपर भाषणास मान देऊन महारथ कर्णानें युद्धविशारद शल्यास म्हटलें, “हे महाबाहो, आतां रथ चालू कर. हा पहा मी आतां धनंजयाला, भीमसेनाला, उभयतां माद्रीपुत्रांना किंवा युधिष्ठिराला ठार करितों ! शल्या, मी आज शेंकडों व हजारों कंकपत्र बाण मारीत असतां माझ्या अंगी बाहुबल कसें काय आहे, तें आज धनंजयानें पहावें. शल्या, मी आज अतिशय जलाल बाण पांडवांवर सोडीन; आणि त्या योगें पांडवांचा विध्वंस उडून दुर्योधनाला जय मिळेल.” शल्य म्हणाला,—हे सूतपुत्रा, तूं पांडवांना

असे वःकश्चित् मानितोसे काय ? अरे त्यांचा पराक्रम सामान्य मानूं नको. ते सर्वशास्त्रपारंगत असून महाधनुर्धर आहेत. ते सर्वजण एकसारखे महाबलिष्ठ असून रणांतून कधीही भाषार घेणारे नाहींत. त्या महाभाग्यवान् पांडवांच्या ठिकाणीं खरें क्षात्रतेज विद्यमान असून ते सर्वतोपरी अजिंक्य आहेत. अरे, त्यांच्या अंगीं इतकें शौर्य आहे कीं, ते प्रत्यक्ष शतक्रतु इंद्राला सुद्धां भय उत्पन्न करितील. राधेया, हें तुझे भाषण लवकरच बंद पडेल. वज्राच्या भयंकर शब्दाप्रमाणें गांडीवाचा भयंकर निर्घोष युद्धभूमी वर तुझ्या कानीं पडेल, तेव्हां मग तूं हे असले उद्गार काढणार नाहींस. त्याप्रमाणेंच, कर्णा, समरांगणांत हत्तींची सेना भीमसेनाच्या हातून निर्दंत होऊन मरून पडलेली जेव्हां तूं पहाशील, तेव्हां मग तुझे हें बोलणें आपोआपच नाहींसें होईल. तसेंच धर्मराज व नकुलसहदेव हे आपल्या तीक्ष्ण बाणांनीं अंतरिक्ष व्याप्त करून मेघांप्रमाणें चोहोंकडे छाया पाडतील, आणि दुसरेही बलाढ्य राजे व वीर सर्वत्र मोठ्या शिताफीनें शत्रूंचा वध करीत आहेत असें तुला आढळेल, तेव्हां मग तुझी ही बडबड अनायासेंच नष्ट होईल.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, मद्राधिपति शल्याचें हें भाषण कर्णाला रुचलें नाहीं व तो त्या महादूर शल्याला ‘रथ पुढें चालव’ असेंच म्हणाला.

अध्याय सदतिसावा.

—:०:—

कर्ण व शल्य ह्यांचा संवाद.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, महाधनुर्धर कर्ण युद्धार्थ सिद्ध आहे असें पाहून कौरवांकडील सर्व योद्ध्यांना मोठा आनंद झाला; व त्यांनीं चोहोंकडे वरिश्रानि आरोक्या देण्यास

प्रारंभ केल्या. त्या समर्थी नगारेनौबदी वाजूं लागल्या, बाणांचा शब्द होऊं लागला व अश्वमज्जादिकांची गर्जना सुरू झाली. राजा, अशा प्रकारें मोठ्या उल्हासानें तुझ्याकडील वीर पांडवांशीं लढण्यास निघाले, त्या समर्थी त्यांनीं असा निर्धार केल्या कीं, समरांगणांत मरणच प्राप्त झाल्यास गोष्ट निराळी, परंतु दुसऱ्या कोणत्याही कारणानें समरभूमीवरून माघारें म्हणून यावयाचें नाही. राजा, ह्या प्रमाणें मोठ्या आवेशानें कर्ण व इतर योद्धे युद्धास निघाले तेव्हां अनेक उत्पात दृमोचर झाले; पृथ्वी कंपायमान होऊन हादरली व त्यामुळें मोठा भयंकर दणदणट झाला। सूर्यप्रभृति सप्तग्रह एकमेकांवर चाल करून जात आहेत असें भासलें। जिकडे तिकडे उल्कापात होऊं लागले व दशदिशा दग्ध होण्यास प्रारंभ झाला. अंतरिक्षांत मेघ नसतांही धडाधड विजा पडूं लागल्या व भयंकर वारे वाहूं लागले; पुष्कळ मृग व पक्षी तुझ्या सैन्याला वारंवार डावी घालूं लागले; आणि त्या योगें, महान् अरिष्ट कोसळणार असें त्यांनीं सुचविलें. त्या प्रमाणेंच कर्णाच्या रथाचे अश्व भूमीवर अडखळून पडले. आकाशांतून हाडांची भयंकर वृष्टि सुरू झाली. आयुधें पेटलीं. ध्वज कंपित झाले आणि अश्वदिक वाहनांच्या नेत्रांतून अश्रु गळूं लागले ! राजा धृतराष्ट्र, हे व असेच दुसरे पुष्कळ घोर उत्पात होऊं लागून कौरवांचा भयंकर संहार उडणार अशीं दारुण दुश्चिन्हें दृष्टिगोचर झालीं. परंतु कौरवांकडील योद्ध्यांचा दुदैवानें घेरून टाकिल्यामुळें त्यांनीं त्या दुश्चिन्हांस मुळीच जुमानिलें नाही; आणि सूतपुत्राच्या प्रयाणकालीं मोठमोठ्या क्षत्रियांनीं ' तूं विजयी हो ' अशा मंगलदायक शब्दांनीं त्यास प्रोत्साहन दिलें. राजा, त्या समर्थी कौरवांकडील वीरांची विवेकबुद्धि इतकी

अस्तंगत झाली होती कीं, त्या सर्वांना पांडव हे आतां जिकलेच असें वाटलें !

इकडे रथारूढ झालेल्या शत्रुसंहारक कर्णाचें तेज फारच वाढलें,—तो अगदीं सूर्याप्रमाणें किंवा अग्नीप्रमाणें देदीप्यमान भासूं लागला, व त्यास असा कांहीं गर्व वाटला कीं, आपण भीष्म व द्रोण ह्यांच्यापेक्षाही अभिक बलवान् व शूर आहों ! नंतर तो अर्जुनाच्या कृत्यांचा विचार करून इतका संतापला कीं, जणू क्रोधाचे सुस्कारे टाकूं लागला आणि अहंपणानें व दर्पानें क्षुब्ध होऊन मद्राधिपति शल्यास म्हणाला, " शल्या, मीं हातांत आयुध घेऊन रथांत अधिष्ठित असतां प्रत्यक्ष वज्रपाणि इंद्रही क्रुद्ध होऊन माझ्या समोर आल्यास मी त्यास भिणार नाहीं ! ज्या अर्थी पांडवांशीं लढत असतां भीष्मादिक महान् महान् वीरांना रणभूमीवर देह ठेवावे लागले, त्या अर्थी पांडवांशीं युद्ध करण्यास प्रवृत्त होतांना माझ्या मनास चंचलता उत्पन्न व्हावी हें उचित होय; पण माझी कांहीं तशी स्थिति झालेली नाहीं ! सर्वथैव वंदनीय अशा त्या भीष्मद्रोणांच्या ठिकाणीं जरी महेंद्राप्रमाणें किंवा विष्णूप्रमाणें सामर्थ्य होतें, जरी ते महान् महान् रथ, अश्व व गज ह्यांचा संहार करण्यास समर्थ होते, आणि जरी ते जणू काय अमरच होते असें ह्यणण्यास प्रत्यवाय नाही, तरी त्यांचाही पांडवांकडून नाश झालेला आपण पहात आहों; तेव्हां प्रस्तुत समर्थी ह्या रणांगणांत मला भीति उत्पन्न व्हावी हें अगदीं साहजिक आहे पण मला कांहीं आज भीति वाटत नाहीं ! मला हेंच मोठें गूढ पडलें आहे कीं, युद्धांत मोठमोठाले बलाढ्य राजे, त्यांचे साराथि, रथ, अश्व वगैरे शत्रूंकडून मरण पावत असतां महान् अस्त्रवेत्ता ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोण गुरु सर्व पांडवांना मारून टाकल्याशिवाय राहिला कसा ?

कोरपणे, द्रोणाच्या ह्या कृत्याचा विचार करून ह्या महान युद्धप्रसंगी मी तुझांस जे कांहीं सांगित्त आहे, ते नीट देखा. असें पहा—अर्जुन ह्या प्रत्यक्ष उग्रस्वरूप काळज होय. तो समाज आत्म्या असतां त्याच्याशीं टक्कर देईल असा काय तो एकटा मीच. माझ्याशिवाय दुसरा कोणीही त्याच्यापुढें तग काढणार नाही! पहा, द्रोणाच्या ठिकाणीं युद्धकला, बल, विवेक, दूरदर्शित्व व महास्वविद्या हीं सर्व सिद्ध असतां त्या महात्म्याला सुद्धां मृत्युमुक्ती पडावें लागले, तेव्हां इतरांची ती कथा काय? मला तर आज असें वाटतें कीं, ते सर्व मरणोन्मुख झालेले आहेत. अहो, ह्या लोकीं कर्म व दैव ह्यांची सांगड असल्यामुळे मोठा विचार करूनही मला कोणतीही वस्तु शाश्वत दिसत नाही. पहा, प्रत्यक्ष द्रोणाचार्याची जर ही गति झालेली आपण पहातो, तर सूर्योदय होईपर्यंत तरी आपण निःसंशयपणें जिवंत राहूं असें कोण ह्मणूं शकेल? खचित मला तर असें वाटतें कीं, अस्त्रे, आयुधे, बल, पराक्रम, नाना-विध कृत्ये किंवा राजनीतियुष्ण ह्यांपैकीं एकही गोष्ट मनुष्यास सुख देण्यास समर्थ नाही. पहा, द्रोणाचार्याची योग्यता काय लहानसान होती? त्यांचें तेज तर प्रत्यक्ष अग्नि किंवा आवृत्त्य ह्यांप्रमाणें होतें, त्यांचा पराक्रम तर प्रत्यक्ष विष्णु किंवा इंद्र ह्यांप्रमाणें होता, व त्यांचें राजनीतियुष्ण तर प्रत्यक्ष शुक्राचार्य किंवा बृहस्पति ह्यांप्रमाणें होतें, तथापि ह्यांपैकीं एकाच्यानेही त्या बलाढ्य वीराचें रक्षण करवले नाही!

“असो; शल्या, प्रस्तुत आपल्या ह्या सैन्याची कशी दुर्दशा झाली आहे ती पहातोसना? धार्तराष्ट्रांचा पराभव झाल्यामुळे जिकडे तिकडे स्त्रिया व कुमार दीनपणानें आक्रोश करित आहेत, तेव्हां अशा ह्या संकटाप्रथें जर कोणी कांहीं

पराक्रम करून क्षत्रविणारा असेल तर तो प्रीति होय! ह्यास्तव आतां अगदीं विलंब व क्वचित् शत्रुसैन्याकडे रथ चालव आणि तो सैन्यासंघ युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, बासुदेव, सात्यकि, संजय, नकुल व सहदेव ह्यांची व माझी रणसंगणांत गांठ पडेल असें कर. राजा शल्या, माझ्यावांचून दुसऱ्या कोणत्याही वीराला त्यांच्याशीं लढण्याला छाती व्हावयाची नाही; म्हणून तूं ताबडतोब हा रथ पांचाल, पांडव व संजय जेथें असतील त्या बाजूला चालू कर. त्यांना मी आज युद्धांत वधीन किंवा मी स्वतः तरी यमसदनाचा मार्ग धरीन. शल्या, त्या शूर वीरांच्या समुदायांत प्रवेश करण्यास मी अगदीं समर्थ आहे, अशी तूं खातरी बाळग. आतां आपल्या प्राणांकडे लक्ष देणें हें मला सर्वथा अनुचित होय. अशा प्रकारें वर्तन करणें म्हणजे दुर्योधनाशीं द्रोह करणेंच होय. ह्यास्तव, द्रोणाप्रमाणें समरांगणांत मरून जावें हेंच मी इष्ट मानितों. कोणाही मनुष्याला, मग तो शहाणा असो किंवा वेडा असो, आयुष्याचा क्षय झाला म्हणजे मृत्यूच्या पेंचांतून सुटतां यावयाचें नाही. म्हणून मी आज पांडवांवर चाल करून जाणारच, मग माझे कांहींही होवो; दैवाचा प्रतिकार करणें सर्वथा अशक्य आहे. हे मद्रेशा, दुर्योधन माझे कल्याण करण्यास सदासर्व-काळ उद्युक्त आहे. म्हणून त्याचे मनोरथ पूर्ण करणें हें माझे कर्तव्य आहे असें मी मानितों; आणि त्यासाठीं मी आपल्या सर्व सुखांना, फार तर काय, मी आपल्या ह्या प्रिय प्राणांनाही मुकण्यास सिद्ध आहे. शल्या, माझा हा दिव्य रथ मोठा बलाढ्य आहे. ह्याला व्याघ्रचर्मचें आवरण असून ह्याचा आंस मुळींच वाजत नाही; ह्यांतील आसनं सुवर्णमय असून ह्याचे त्रिवेणु रुप्याचे आहेत; आणि ह्यास सर्वोत्कृष्ट अश्व जोडलेले असून हा मला परशुरामाकडून

जिळाला आहे. स्वाप्रमाणेच ह्या रथावर असलेली ही मझी चित्रविचित्र धनुष्ये, ध्वज, गदा, भयंकर बाण, खड्ग, दुसरी श्रेष्ठ आयुधे व उग्र ध्वनि करणारा हा शुभ्र शंख अवलोकन कर. ध्वजपताकांनी शोभणाऱ्या, वज्रपाताप्रमाणे शब्द करणाऱ्या, श्वेत ह्यांनी युक्त व दिव्य भात्यांनी विराजमान असणाऱ्या ह्या सर्वोत्तम रथांत बसून मी आज युद्ध करणार व अर्जुनाला मोठ्या निग्रहाने ठार मारणार ! सर्वभक्षक मृत्युही जरी त्यास मोठ्या दक्षतेने राखण्यास तयार झाला, तरी मी त्याचे आज कांही चालू देणार नाहीं. एक तर मी त्यास आज ठार करीन किंवा मी स्वतः भीष्मांप्रमाणे यमसदनाचा मार्ग धरीन ! शल्या, फार बोलण्यांत काय अर्थ ! जरी यम, वरुण, कुबेर, इंद्र हे सर्व महान् महान् देव आपआपल्या गणांसह अर्जुनाचे संरक्षण करण्यास सिद्ध झाले, तरी मी त्या अर्जुनाचा त्या सर्व देवांसह पराभव करीन हें खचित समज !”

संजय सांगतो:—ह्याप्रमाणे त्या युद्धातुर झालेल्या कर्णाच्या वल्गना श्रवण करून मःशःषिपति शल्य मोठ्याने हंसला व धिक्कारपूर्वक उत्तर देऊन त्याने त्याचा निषेध केला.

शल्य म्हणाला:—कर्णा, थांब थांब, असें बदाईचे भाषण करू नको. तुला युद्ध करण्याविषयी कितीही आवेश उत्पन्न झालेला असला, तरी असें अमर्याद भाषण करणें युक्त नव्हे. अरे, तो नरश्रेष्ठ धनंजय कोठें ? आणि तूं नराधम कर्ण कोठें ? त्या अर्जुनाच्या पराक्रमाचा विचार तरी तूं केला आहेस का ? अरे, उपेंद्राने रक्षण केलेली द्वारका म्हणजे देवेंद्राने रक्षण केलेला स्वर्गच होय; आणि असें असतां बलात्काराने तीतून अर्जुनानें सुभद्रेचे हरण केले, तेव्हां हा काय अर्जुनाचा सामान्य पराक्रम ? अर्जुनाचांवन दुसरा कोणता

पुरुष हें वृत्तव करण्यास समर्थ झाला असला बरें ? वा कर्णा, मृगवधासंबंधाने कलह उत्पन्न होऊन युद्ध सुरू झाले तेव्हां त्रिभुवनधीश देवाधिदेव शंकराशी लढण्यास देवेंद्रांप्रमाणे पराक्रम गाजविणाऱ्या अर्जुनाचांवन दुसरा कोणता योद्धा तयार झाला असता ? कर्णा, अर्जुनाचा प्रताप खरोखरीच दुर्धर आहे. सुर, असुर, महोरग, नर, गरुड, पिशाच, यक्ष, राक्षस ह्या सर्वांचा बाणवृष्टीने पराभव करून अर्जुनाने अग्नीला त्याचा हविर्भाग अर्पण करून (खांडवन देऊन) तृप्त केले, तेव्हां हा त्याचा प्रताप किती अगाध आहे बरें ? असो; कर्णा, जेव्हां धृतराष्ट्राच्या पुत्राला शत्रूंनी हरण केले, तेव्हां सूर्यसदृश बाणांचा वर्षाव करून अर्जुनाने शत्रूंना रणांगणांत ठार केले व त्या धृतराष्ट्रपुत्रास सोडवून आणून पुनः कौरवांच्या हवाली केले, ती वेळ तुला आठवतेना ? बरें तेंही असो; कर्णा, कलहप्रिय धृतराष्ट्रपुत्राचे गंधर्वांशी युद्ध सुरू झाले तेव्हां प्रथम तूं तर पळून गेलास ! व मग चित्ररथादिक गंधर्वांनी कौरवांना जेव्हां बांधून नेले; तेव्हां त्या गंधर्वांना जिंकून पांडवांनी कौरवांना सोडविले, त्या वेळची तरी तुला आठवण आहे का ! अरे, अर्जुनाचा तो दिव्य पराक्रम किती वर्णावा ? तुला गोप्रहणप्रसंग स्मरतच असेल. त्या वेळचे कौरवांचे तै सैन्य केवढे अवाढव्य ! त्या समयी त्या सैन्यांत भीष्म, द्रोण, अश्वत्थामा आदिकरून कौरवपक्षाचे महान् महान् योद्धे युद्ध करण्यास तत्पर असतां तुम्ही कौरवांनी त्या अर्जुनाला कांरे जिंकले नाहीं ? आणि उलट त्यानेच तुमची दैना उडविली ती कां ? असो; कर्णा, मला तर असें वाटतें कीं, पुनः आज हें दुसरें महान् युद्ध तुझ्या मृत्युकारितांच घडून येत आहे ! जर का तूं आज शत्रूंना भिऊन पळून गेला नाहीस, तर तूं रणांगणांत

भातांच खचित मृत्युमुक्ती पडलास झणून समज !
 संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें
 मद्राधिपति शल्य हा मोठ्या कळवळ्यानें
 कर्णाच्या अर्जुनाचें अद्वितीय सामर्थ्य कर्ण
 करून सांगत असतां, त्या योगें अतिशय संताप
 उत्पन्न होऊन तो सेनापति शत्रुसंहारक कर्ण
 शल्याला म्हणाला, “ हे शल्या, पुरे पुरे, फार
 बडबड करूं नको. खचित माझे व त्याचें युद्ध
 सुरू झालेंच म्हणून समज. जर आतां ह्या
 युद्धांत त्यानें मला जिंकिलें, तर मग तुझे हें
 भाषण वाजवी होईल. ”

संजय सांगतो:—कर्णाचें हें भाषण ऐकून
 शल्यानें त्यावर अधिक कांहीं उत्तर न देतां
 ‘ बरें, तसेंच होईल ! ’ इतकेंच म्हटलें. नंतर
 कर्णानें शल्याला ‘ रथ चालव ’ असें युद्धावेशानें
 सांगितलें; तेव्हां पांढरे शुभ्र घोडे जोडलेला
 तो रथ साराथि शल्यानें चालू केला. मग, सूर्य
 ज्याप्रमाणें तिमिराचा विध्वंस करीत पुढें जातो,
 त्याप्रमाणें तो बलाढ्य रथ शत्रुसैन्याचा विध्वंस
 करीत पुढें गेला. अशा प्रकारें चाललेल्या त्या
 आपल्या व्याघ्रचर्मपरिवेष्टित आणि श्वेताश्वयुक्त
 रथाकडे पाहून कर्ण संतुष्ट झाला; आणि पांढ-
 वांच्या सेनेकडे अवलोकन करून ईर्ष्यानें
 अर्जुनाची चौकशी करूं लागला.

अध्याय अढतिसावा.

—:—

कर्णाची बढाई !

संजय सांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणें कर्ण
 जेव्हां पांढवांशीं लढण्यास निघाला, तेव्हां
 तुझ्या सैन्याला मोठा आनंद वाटला. पुढें तो
 समरभूमीवर पांढवांच्या सन्निध प्राप्त झाला,
 तेव्हां त्यास पांढवांकडील जो जो वीर भेटला
 त्याला त्याला त्यानें ‘ अर्जुन कोठें आहे ? ’
 झणून विचारिलें; आणि शिवाय असेही सांगि-

तलें कीं, जो कोणी पुरुष आज मला महात्मा
 श्वेतवाहन अर्जुन दाखवील, त्याला मी हवें
 असेल तितकें धन देईन; जर तेवढ्यानें त्याचें
 समाधान झालें नाहीं, तर त्यास मी गाडीभर रत्नें
 अर्पण करीन; आणि इतक्यानेही जर त्यास
 तृप्ति वाटली नाहीं, तर मी शंभर गाई व तित-
 कींच कांस्याचीं दोहनपात्रें देईन. अथवा अर्जुन
 दाखविणाऱ्या पुरुषाला मी शंभर उत्तम गांव
 व कृष्णकेशांनीं युक्त अशीं खेंबरे लावलेला शुभ्र
 रथ अर्पण करीन; जर इतक्यावर तो संतुष्ट
 झाला नाहीं, तर त्याला मी हत्तीसारखे बला-
 द्य असे सहा बैल लावलेला सुवर्णरथ
 आणि रत्नाभरणांनीं अलंकृत व निष्कांचे
 हार धारण करणाऱ्या व गायननर्तनांत कुशल
 अशा शंभर सुंदर स्त्रिया अर्पण करीन; जर
 इतक्यानेही त्याचा संतोष झाला नाहीं, तर
 त्याला मी शंभर हत्ती, शंभर सुवर्णरथ आणि
 बळकट, गुणवान, विनयशील, कार्यक्षम व
 उत्तम शिकाविलेले असे दहा सहस्र उत्तम अश्व
 देईन; अथवा, ज्यांचीं शिंगें सुवर्णांनीं मढविलीं
 आहेत अशा चारशें सवत्स धेनु अर्जुन दाखवि-
 णाऱ्या पुरुषाला अर्पण करीन, इतक्यानें
 जर त्याचें समाधान झालें नाहीं; तर त्याला
 मी ह्याहून अधिक मोठी देणगी म्हणजे रत्न-
 खचित सौवर्ण अलंकारांनीं युक्त असे पांचशें
 अश्व व शिवाय उत्तम प्रकारें शिकवून तयार
 केलेले अठरा दुसरे अश्व देईन; अथवा अर्जुन
 दाखविणाऱ्या पुरुषाला कांबोज देशातील उत्तम
 अश्व जोडलेला सुवर्णमंडित शुभ्र रथ अर्पण
 करीन; जर तितक्यावर त्याचें समाधान झालें
 नाहीं, तर, ज्यांच्या गळ्यांत सुवर्णांचे हार
 शोभत आहेत, ज्यांच्या शरीरावर नानाविध
 हेमभूषणें विराजित आहेत, ज्यांचें जन्म समु-
 द्राच्या परतीरीं झालें आहे, व ज्यांस उत्तम
 महातांकडून शिकवून तयार केलें आहे, असे

सहाय्ये हस्ती मी त्याला देईन; आणि इतक्यानेही जर त्याची तृप्ति झाली नाही, तर मी त्याला अधिक महत्त्वाची देणगी म्हणू मंत्रवसंत्तैः धनदौलतीने युक्त, वने व जलाशय ह्येभ्यो समेषु असलेले, जेथे कसलीही भीति नाही असे सर्व समृद्धीने ओतप्रोत भरलेले काराजेशोकांनीही उपभोग घेण्यास योग्य असे चौदा गांव अर्पण करीन, अथवा अर्जुन दाखविणाऱ्यांचा पुरुषाला गळ्यांत पुतळ्यांचे वगैरे हार शोभणत्या भागध देशांतल्या तरुण शंभर दासी मी देईन; जर एवढ्याने त्याची मनीषा पूर्ण झाली नाही, तर तो पुरुष जे जे काहीं मागेछे ते ते देण्यास मी सिद्ध आहे. फार काय; पुत्र, दारा, उपभोग्य वस्तु वगैरे जे काहीं दुसरें मजपाशी आहे, तेही मी त्याची इच्छा असल्यास देण्यास तयार आहे; आणि जो कोणी मला कृष्णार्जुन दाखवील, त्याला कृष्णार्जुनांस मारून त्यांचे सर्व वित्त मी देईन !

राज्य धृतराष्ट्रा, समरांगणांत कर्णाने अनेकांपाशीं असें भाषण केलें; आणि मग समुद्रापामून उत्पन्न झालेला आपला दिव्य व सुस्वर शंख वाजविला. राजा, कर्णाचें तें भाषण श्रवण करून दुर्योधनाला व त्याच्या अनुयायांना मोठा आनंद झाला. तेव्हां कौरवांच्या सैन्यांत दुंदुभि, मृदंग व इतर वाद्ये वाजूं लागलीं. वीर मोठमोठ्यानें सिंहनाद करूं लागले, हस्तींनी गर्जना चालविल्या, आणि आनंदित झालेले योद्धे आनंदांनें आरोळ्या देऊं लागले. ह्याप्रमाणें जिकडे जिकडे आनंदांचे भरतें येऊन मोठ्या बढाईनें भाषण करणारा तो महारथ वीर कर्ण आतां शत्रुसैन्यावर उडी घालणार, इतक्यांत मद्राधिपति शल्य मोठ्यानें हंसून त्यास असें भाषण बोलला.

अध्याय एकुणचाळिसावा.

कर्णाचा धिकार !

शल्य म्हणाला!—कर्णा, पुत्र किंवा हस्तीसारखे बलाढ्य असे सहा बिल लाविलेले सुवर्णरथ कोणालाही देऊं नको. आज तुला अर्जुन भेटेल. अरे, कुबेराप्रमाणें धन देण्यास तूं प्रस्तुत प्रसंगी सिद्ध झाला आहेस, हा तुझा केवळ मूर्खपणा होय. आज तूं अनायासेच धनजयाला पाहाशील. तूं महामूर्खाप्रमाणें धनाचा व्यर्थ व्यय करित आहेस, पण अपात्र पुरुषाला द्रव्यदान केलें असतां कोणते दोष घडतात, हें तुझ्या लक्षांत कसें येत नाही ! अरे, तूं धनाची जी ही उषळपट्टी मांडिली आहेस तिच्या योगें तुला अनेक यज्ञ करितां येतील ! ह्यान्तव अशी ही उषळपट्टी न करितां नानाप्रकारचे यज्ञ कर. कृष्ण व अर्जुन ह्यांना मारण्याची जी तुझी मूर्खपणाची इच्छा, ती तर व्यर्थच आहे; कारण, युद्धांत कोणत्यानें सिंहाच्या जोडीला मारिल्याचें आह्मी अद्याप कधींच ऐकिलें नाही. ज्या अर्थी तूं भलतीच गोष्ट करावी म्हणून इच्छीत आहेस, आणि तुझा कोणीही निषेध करित नाही, त्या अर्थी तुला कोणी मित्र आहेत असें मला वाटत नाही. बाबारे, जे कोणी तूं आगींत पडत असतां तुझे तत्काळ निवारण करितील, तेच तुझे खरे मित्र होत. तुझा कार्याकार्यविचार सुटला, ह्यावरून तुझी मृत्यूची घटी नजीक आली ह्यांत संदेह नाही. जगावयाची इच्छा असलेला असा कोणता पुरुष असलें हें असंबद्ध व अश्राव्य भाषण मुखावाटे काढील ! गळ्यांत घोडा बांधून केवळ बाहुबलांनें समुद्र तरणें किंवा पर्वताच्या शिखरावरून खाली उडी टाकणें हें जसें अशक्य, तशीच तुझी ही इच्छा घडून येणें अशक्य होय. वा कर्णा, जर आपले बरें होण्याची तूं

इच्छा करीत असशील, तर तूं एकत्र धनजयाशी लडू नको. तुम्हीं स्वपक्षाचे सर्व वर एकत्र होऊन सैन्याची ज्योहरचना करून सुरक्षित व्हा. आणि मग धनजयाशी गांठ घाला. कर्णा, तुम्होघनाचें हित व्हावें म्हणूनच मी हें तुला समगत आहे. त्याचा नाश व्हावा अशी माझी मुख्य इच्छा नाही. जर तुला जिवंत रहाण्याची इच्छा असेल, तर माझ्या ह्या भाषणावर श्रद्धा ठेव.

कर्ण हाणाला:—शल्या, मी आपल्या स्वतःच्याच बाहुबलाच्या जोरावर रणांत अर्जुनाशी गांठ घालण्याची इच्छा करीत आहे; तूं मात्र बरून मित्रासारखें दाखवून पोटांत मला झन्नसारखें भय घालीत आहेस! पण कोणीही—महान्, प्रत्यक्ष इंद्र जरी वज्र उगारून आला, तरी तोही मला माझ्या ह्या निश्चयापासून ढळविण्यास समर्थ होणार नाही, मग इतर यः—कश्चित् मर्त्याची कथा काय ?

संजय सांगतो:—कर्णाचें हें भाषण ऐकून त्यांस अतिशय क्रोध आणण्याच्या हेतूनें ब्रह्माधिपति शल्य पुनः म्हणाला, “ कर्णा, जेव्हां अर्जुमानें मोठ्या वेगानें व शिताफीनें गांडीबाच्या प्रत्यंचेपासून सोडिलेले कंकपत्र तीक्ष्ण शर तुला चोहोंकडून घासून टाकतील, तेव्हां मग अर्जुनाशी युद्ध करण्यास उद्युक्त झाल्याबद्दल तुला पश्चात्ताप होईल! त्याप्रमाणेंच जेव्हां सव्यसाची पार्थ दिव्य धनुष्य धारण करून तीक्ष्ण बाणांच्या वृष्टीनें तुझ्या सैन्याला व तुला जर्जर करील, तेव्हां मग तूं मागून——— लखशील, वा कर्णा, आईच्या मांडीवर लोळणारे अज्ञान बाळ जसें आकाशातील चंद्र हरिण करूं पहाते, तसा तूं रथामध्ये विराजित असलेल्या अर्जुनाला आज जिकू पहात आहेस. कर्णा, अर्जुनाचा पराक्रम किती भयंकर आहे ह्याचा विचार न करितां तूं

आज अर्जुनाशी लढण्याचा बेत केला आहेस, तेव्हां अत्यंत जलाल अशा त्रिशूलावरच तूं आपलीं गात्रे बांधीत आहेस, असें मला वाटते. एखाद्या मूर्ख अलड हारिणानें चवताळलेल्या धिप्पाड सिंहाला युद्ध करण्यास आह्वान करावें तद्वत् तूं आज अर्जुनाला युद्धार्थ आह्वान करीत आहेस. हे सूतपुत्रा, तूं त्या महापराक्रमी राजपुत्राला युद्धार्थ बोलावूं नको. ज्याप्रमाणें अरण्यांत मांस खाऊन तृप्त झालेल्या कोल्ह्यानें सिंहाला युद्धार्थ बोलवावें, त्याप्रमाणें तुझे हें करणें आहे. बाबा, पार्थाशीं तुझी गांठ पडली ह्मणजे तुझा व्यर्थ नाश होईल रे! कर्णा, तूं केवळ ससा, जणू काय नांगराच्या फाळाप्रमाणें दांत असलेल्या त्या मदोन्मत्त महान् हत्तीशीं झगडूं पहात आहेस! तूं पार्थाशीं युद्ध करण्याची इच्छा करीत आहेस, पण तुझे हें कृत्य एखाद्या मृदानें विळांत असलेल्या महाविषारी कृष्णसर्पाला काष्ठानें टोंचून प्रक्षुब्ध करावें तसें आहे. कर्णा, सिंहाची खोडी काढून त्याजपुढें जशी कोल्ह्यानें कुई करावी, तशी तूं त्या अर्जुनाची खोडी काढून त्याजपुढें बदाई मिरवूं पहात आहेस! अथवा महावेगवान् पक्षिराज गरुडाला सर्पानें युद्धार्थ बोलवावें, त्याप्रमाणें तूं अर्जुनाला युद्धार्थ बोलावित आहेस! किंवा चंद्राच्या उदयकाळीं भरती येऊन वाढत चाललेला व ज्यामध्ये लक्षावधि जलचर प्राणी इतस्ततः भ्रमण करीत आहेत असा भयंकर महासागर तूं केवळ बाहुबलानेंच तरून जाण्याची इच्छा करीत आहेस! अथवा, वा कर्णा, तीक्ष्ण शृंगें असलेल्या व दुंदुभीप्रमाणें दुरकणाच्या मदांध बैलालाच स्वतःशीं झगडण्यास बोलावित आहेस, तेव्हां ह्यास काय ह्मणावें? कर्णा, महान् शब्द करणाऱ्या महामेत्तापुढें ज्याप्रमाणें बेडकांनें ओरडावें, त्याप्रमाणें तुझे हें कृत्य आहे! अर्जुनाची योग्यता

वास्तविकपणे भेषाप्रमाणेच होय; कारण तो ह्या लोकीं भेषाप्रमाणे सर्वांच्या इच्छा परिपूर्ण करून लोकांस सुख देणारा आहे. अरे, कुत्र्याने आपल्या घरी राहून वनातील वाघावर भुंकावे, तद्वत् तूं येथून अर्जुनावर भुंकत आहेस. कर्णा, कोल्हा सुद्धां शशकांनीं परिवेष्टित होतसाता स्वतःला सिंहच मानीत असतो, पण हा त्याचा भ्रम सिंहाची गांठ पडतांच क्षणांत नष्ट होतो; तद्वत्, जेथपावेतो तुम्ही व अर्जुनाची गांठ पडली नाही, तेथपावेतो तूंही आपणास महा-पराक्रमी म्हणून खुशाल मान; पण ते कृष्णा-र्जुन एकाच रथावर सूर्यचंद्रांप्रमाणे स्थित असलेले तुझ्या दृष्टीस पडले म्हणजे हा तुम्हा भ्रम तेव्हांच नाहीसा होईल! कर्णा, जोंपर्यंत घोर रणामध्ये गांडीवाचा ध्वनि तुझ्या कानीं पडला नाही, तोंपर्यंतच तुला हें मनास वाटेल तें बरळतां येईल. पण रथांचा प्रणव्रणाट व प्रत्यं-चांचा दणदणट ह्यांनी दशदिशा व्याप्त झाल्या म्हणजे व्याघ्रास पाहाणाऱ्या कोल्हा-प्रमाणे तुम्ही अवस्था क्षणांत होईल! कर्णा, तूं नेहमींचा कोल्हा व अर्जुन हा नेहमींचा सिंह होय. हे मूढा, तूं खऱ्या वीराचा द्वेष करितोस ह्यास्तव मला तूं कोल्हाच वाटतोस. बा कर्णा, ज्याप्रमाणे मूषक व मार्जार, कुत्रे व वाघ, कोल्हा व सिंह, ससा व हत्ती, खोटें व खरें, किंवा विष व अमृत ह्यांमध्ये बलाबलांच्या संबंधाने महदंतर आहे, त्याप्रमाणे तूं व अर्जुन ह्यांमध्ये विहिताविहित कर्मासंबंधाने महदंतर आहे. तुम्ही दोघेही आपआपल्या कर्मांनीं प्रसिद्धच आहां!

अध्याय चाळिसावा.

—:०:—

कर्णाचे शल्यास प्रत्युत्तर.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे

अमितप्रतापी शल्याने कर्णाचा विचार केला, तेव्हां कर्णाला शल्याचा अतिशय संताप आला, आणि त्याला शल्य हें नांव पडण्याचें कारण त्याची कठोर वाणी हेंच असलें पाहिजे असें मनाशीं ठरवून, कर्णानें शल्यास असें म्हटलें.

कर्ण झणाला:— शल्या, गुणवानांचे शुभा जाणण्यास गुणवानच मनुष्य पाहिजे, इतरांस ते जाणतां यावयाचे नाहीत. तूं तर गुणरहित, तेव्हां तुला गुणावगुणांचें ज्ञान कसें असणार? शल्या, महात्म्या अर्जुनाची महान् महान् अस्त्रे, क्रोध, पराक्रम, धनुष्य, शर व प्रताप हीं सर्व मला माहीत आहेत; त्याप्रमाणेच, भूपतींचा नायक जो कृष्ण त्याची महती ही मला जितकी विदित आहे, तितकी ती तुला विदित नाही. आज समरांगणांत गांडीवधारी अर्जुनाला जे मी युद्धार्थ आह्वान करित आहे, तें तरी मी आपल्या स्वतःच्या व अर्जुनाच्या वीर्याचा विचार करूनच करित आहे. शल्या, मजपाशीं असलेला हा लोकोत्तर बाण पाहिलास का? ह्याचे पुंख उत्तम असून हा रक्तप्राशन करणारा आहे; हा मी एकटाच एका भात्यांत ठेविला आहे; ह्यास तीक्ष्ण धार दिलेली असून उत्तम तेल-पाणी केलें आहे; त्याप्रमाणेच हा उत्कृष्ट शृंगारला असून ह्यास मी चंदनाच्या चूर्णांत ठेवून दिलें आहे; मी ह्याची बहुत वर्षे पूजा करित असून हा सर्परूप आहे; ह्याच्या ठिकाणीं भयंकर विष वसत असून ह्याला मनुष्यें, बोट्टे व हत्ती ह्यांचे जमावच्या जमाव ठार करण्याचें सामर्थ्य आहे; ह्याचें रूप मोठें उग्र व घोर असून हा चिखलतें व अस्थि ह्यांचें विदारण करणारा आहे; ह्या बाणाचें बळ इतकें अश्रुतपूर्व आहे कीं, मी क्रुद्ध झाल्यास ह्याच्या योगें महागिरि मेरू सुद्धां भेदून टाकीन; व हा बाण मी अर्जुनावांचून किंवा देवकीपुत्रावांचून अन्यावर कधीही सोडणार नाही, हें तूं खचित

शल्या, शल्या, हा बाळागोष्टी आज कायुजेन-
 यान्त्यांशी युद्ध करीन आणि अतिशय सुख
 झालेच्यो करीं हे कर्म पाहून बला लोक बरेच
 झगळीत. शल्या, सर्व यादवकीरांचे वैभव
 कुण्याच्या ठिकाणी पास करिते व सर्व पांडवांची
 शिवकथी अर्जुनाच्या ठिकाणी प्रतिष्ठित आहे;
 हास्त्य हा दोषांशी एकदां गांठ पडली म्हणजे
 कोण कोरे मग वळे? ते दोषेही पुरुषव्याघ्र
 रयासधे एके ठिकाणी अधिष्ठित होऊन मजशी
 युद्ध करपास जर प्राप्त झाले, तर, शल्या,
 हास्त्य सन्वाचे सार्थकच घडले ह्यांत संदेह
 नाही. शल्या, कृष्णार्जुन हे आतेमामेभाऊ
 होते. कृष्ण हा अर्जुनाचा मामेभाऊ व अर्जुन
 हा कृष्णाचा अतिभाऊ. हे दोषेही भाते नित्य
 किंवा आहेत, पण आज मी ह्यांची एका
 साम्यने, सुवात ओविलेल्या रत्नांप्रमाणे माळ
 करून ह्यांसार मारितो पहा! शल्या, वानर-
 ध्वज अर्जुनाच्या हातांतले गांडीव व गरुडध्वज
 कृष्णाच्या हातांतले चक्र हे भिऱ्यांचे बागुल-
 केव्य होत, पण मला तर त्यांच्या योगे उलट
 अस्त्रंदच होत आहे. शल्या, तूं मूर्ख असून
 शिवाय दुष्टही आहेस; घोर रणांत अवश्य अस-
 पारें जें युद्धनैपुण्य तें तुझ्या ठिकाणी वसत
 तसल्यामुळे प्रस्तुत समयी तुम्ही छाती फाटून
 मारिते तूं पुष्कळ बडबड चाल-
 किल्ले आहेस; अथवा तूं जी कृष्णार्जुनांची
 हक्की ब्रह्मि गात आहेस, त्यांतले कारण तुझे
 तुझच बाहेरत! हे नीचदेशाजा शल्या, सम-
 हांज्यांत आज मी कृष्णार्जुनांना मारिल्यावर
 तुझी बंधूसहवर्तमान ठार करणार! हे क्षत्रिय-
 कुलकुलं दुष्टा पापदेशाजा शल्या, मित्राचा
 कल्लू करून सत्रप्रमाणे तूं त्या उभय कृष्णां-
 त्रिपतीं बाह्य मनांत भय उत्पन्न करीत आहेस
 कृष्ण एके आज मला ठार मारतील किंवा मी
 त्यांज्जर मारीन. बला माझ्या कळाची पूर्ण

खातरी आहे, मला कृष्णार्जुनांचे मिसळण भय
 वाटत नाही; फार काय, आज हन्मसे कृष्ण
 किंवा शोकडों अर्जुन जरी माझ्याशी लढपास
 सिद्ध झाले, तरी तितक्या सर्वांना मी एकदा
 वधीन. तूं आतां निमूट बस आणि माझा परा-
 क्रम पहा. हे कुंदेराजा, स्त्रिया, मुलें, वृद्ध-
 जन व तशांत विशेषकरून मौजेने प्रवास कर-
 णारे लोक हे, नीच मद्रदेशीय लोकांविषयी
 जणू काय विधेचा पाठच असें मानून, ज्या
 गोष्टी वारंवार सांगत असतात, त्या गोष्टी तूं
 मजपासून ऐक. ब्राह्मणांनी ह्या गोष्टी अज्ञात
 पूर्वी राजांपुढे सांगितलेल्या आहेत. आतां त्या
 मी तुला सांगतो. मूर्खा, त्या तूं ऐकून घेऊन
 शांतपणे सहन कर किंवा तुला जर त्यांविषयी
 उत्तर देणें असेल तर दे.

शल्या, मद्रदेशांतला मनुष्य म्हटला म्हणजे
 तो नेहमी मित्राचा द्रोह करावयाचा; तूं आमचा
 द्रोह करीत आहेस, ह्याचें कारण तरी तूं मद्र-
 देशांतला आहेस हेंच होय. मद्रदेशांतल लोक
 अधम व कुत्सित भाषण करणारे असल्यामुळे
 मैत्री ही तेथे माहीतच नाही; मद्रदेशस्थ पुरुष
 हा नेहमी दुष्टपणा करावयाचा; त्यास कधीही
 सत्याची किंवा सरळपणाची ओळखही असा-
 वयाची नाही, व मद्रक पुरुषाच्या ठायीं आ-
 मरण दौरात्म्य रहावयाचें, असें आर्क्षी ऐकिलें
 आहे. शल्या, मद्रदेशांत पिता, पुत्र, माता,
 सासू, सासरा, मामा, जांबई, मुलगी, भाऊ,
 नातू व दुसरे बांधव, त्याचप्रमाणे सोबती,
 पाहुणे आणि दासदासी वगैरे इतर मंडळी, हीं
 सर्वे एके ठिकाणी मिसळतात. शिवाय त्या
 देशांत स्त्रिया कोणत्याही पुरुषांशी स्वे-
 च्छेनें सहवास करितात; मग ते पुरुष
 त्यांच्या ओळखीचे असोत किंवा नसोत! त्या
 दुराचरणी व मांसदांनी पुरुषांच्या घरी त्यांस
 मद्य व मोमांस खावयास सांपडून हंसण्या-

सिद्धांतानुसारं मित्रत्वेन म्हणजे झाले ! शल्या, ज्या देशातील लोक मलतीसलती गाणी गातात, स्वच्छंदनेच बर्बन करितात, व मनास वाटेल तसे एकमेकांना बोलतात, त्या देशांत धर्मबुद्धि कशी वाढविली करील ? मद्रदेशातील लोक मदांध असून अशुभकृत्यांविषयी त्यांची रुपाति आहे. ह्यास्तव त्यांच्याशी कोणी वैरही करू नये व झेपही करू नये. मद्रदेशांत मित्रत्व हे नाहीच. मद्रदेशीय मनुष्य म्हणजे दुष्कृत्यांचा केवळ पुतळाच. मद्रदेशांत जसा आचरणाचा विधिनियेध नाही, तसा त्या देशातील लोकांच्या सहवासामने गांधारदेशातीलही आचारविचार नष्ट होईल. ज्याप्रमाणे, यज्ञांत राजा हाच जर याजकाचे कर्म करणारा असला तर त्या यज्ञाचे फळ व्यर्थ होते, किंवा ज्याप्रमाणे शुद्धाचा संस्कार करणारा विप्र मानहानीस प्राप्त होतो, किंवा ज्याप्रमाणे ब्रह्मद्वेषे पुरुष नेहमी अपयश जोडितात, त्याप्रमाणेच मद्रकांशी संगति ठेवणाऱ्या पुरुषाची अवस्था हेते. म्हणून, हे मद्रदेशीया शल्या, तुझ्याशी मैत्री करण्यास मी सिद्ध नाही. हे वृश्चिका, आतां तुझ्या विषाची मी मुळीच पर्वा करीत नाही. अथर्वण मंत्राने मी त्याचा प्रतिकार करून बसले आहे. विंचू चावून त्याच्या विषवेगाने मनुष्य तडफड करून नाचू लागला म्हणजे शहाणे लोक त्याजवर औषधि-उपचार किंवा मंत्रप्रयोग करीत करून त्याची बाधा दूर करितात हे खरे, पण त्या विंचवाची गांठच पडू दिली नाही म्हणजे सर्वच कारभार आटोपला ! ह्यास्तव, आतां मी तुझा संबंधच तोडतो म्हणजे झाले. शल्या, मी सांगितलेल्या ह्या सर्व गोष्टींचा विचार करून तू मुकाट्याने रहा व आत्माखी जे काही सांगतो ते ऐक.

शल्या, मद्रदेशांत स्त्रिया दारू पिऊन धुंद होतात व बसनादिकांचा त्याग करून नाचत

सुटतात ! तेथे वैवाहिक विधीची स्त्रीपुरुषांचे संबंध स्थित होत नाहीत व तेथील स्त्रिया मन मगनेल त्या पुरुषाला बरितात, तेव्हां तशा प्रकारच्या स्त्रियांच्या उदरीं जन्म घावल्यामुळे तुला धर्म सांगण्याचा अधिकार कसा बघे ? अरे, ज्या स्त्रियांना आपण कोण ही भावना सुद्धा नाही, उंट किंवा गारवे ह्यांप्रमाणे ज्या उभ्यानेच नैसर्गिक क्रिया करितात, त्या तसल्या निर्लज्ज व भ्रष्ट स्त्रियांचा तू पुत्र; तेव्हां तू येथे धर्मोपदेश करण्याचा व्यर्थ अट्टाहास कां करितोस ? शल्या, मद्रदेशांतल्या स्त्रीपाशी कोणी जर मद्य मागितले, तर ती त्या मागणाऱ्याला कुले खाजवीत खाजवीत असे भयंकर उत्तर देते की, मजपाशी कोणीही माझे प्रियकर मद्य मागू नये; मी त्याला फाडिजे तर पुत्र देईन किंवा पतिही देईन, पण मद्य म्हणून देणार नाही ! त्याचप्रमाणे, शल्या, मद्रदेशातील मुलीही मोठ्या निर्लज्ज, केंसाळ व खादाड असून बहुधा अनाचारी असतात, असे आम्ही ऐकिले आहे. शल्या, अशा प्रकारच्या एक का अनेक, किती तरी गोष्टी मी किंवा दुसरा कोणी तुला सांगू शकेल ! अरे, मद्रदेशांतली किंवा सिंधसौवीर देशांतली माणसे म्हणजे केशाग्रापासून नवाग्रापर्यंत दुराचरणाचे पुतळेच होत; पातकी देशांत जन्मल्यामुळे त्यांस स्वेच्छच म्हटले तरी चालेल; ह्यास्तव त्यांना धर्माधर्मविचार कसा कळणार ? आम्ही असे ऐकिले आहे की, क्षत्रियांचा मुख्य धर्म म्हणजे रणांगणांत मरावे व सज्जनांच्या आदरास पात्र व्हावे. ह्यासाठी मी हा देह धारातीर्थी ठेवणार ! युद्धांत मरून स्वर्ग मिळवावा हा तर माझा मूळचाच संकल्प आहे; व ह्याच हेतूने माझा प्रिय मित्र दुर्धोषन ह्याची मी मैत्री जोडिली. प्रस्तुत माझे हे प्रारब्ध व माझ्याजवळ असलेली सर्व काही भ्रनदौष्ट्या ही

त्यां दुर्बोधनाकरितां आहे असें मी समजतो. हे पापदेशाजा; तू तर पांडवांना फिरत झालेला आहेस, खात संदेहच नाही; कारण, शत्रूप्रमाणे तू सर्व विपरीत सल्ला देत आहेस. पण, शल्या, तू ही पक्की खातरी ठेव की, तुझ्यासारख्या शेकडों जणांनी जरी माझे मन फिरविण्याचा प्रयत्न केला, तरी मी खचित युद्धविमुख होणार नाही. पहा, धर्मवेद्या मनुष्याला नास्तिकांनी कितीही अन्यथाबुद्धि सांगितली, तरी त्यांचे मन स्वधर्मापासून भ्रष्ट होईल काय? शल्या, धामाधूम झालेल्या हरिणाप्रमाणे तू आतां खुशाल तळमळत बस; मी तुझी पर्वा करीत नाही. क्षात्रधर्माला अनुसरून वर्तन करणाऱ्या ह्या कर्णाला आतां भीति म्हणून शिक्कारच नाही. क्षत्रियांचे मुख्य व्रत रणांत पडावे. पण माघारे वळू नये, असे आहे. शल्या, माम्ना गुरु परशुराम ह्याने मला जे पूर्वी अंतिम साध्य म्हणून सांगितले आहे, त्यांचे मला विस्मरण झाले नाही. कौरवांचे परित्राण करण्यास व पांडवांना वधण्यास मी सिद्ध झाल्यामुळे, पुरूरव्याच्या अप्रतिम गुणांचे मी अनुकरण करीत आहे अशी तुझी पक्की खातरी असू दे. शल्या, तिन्ही लोकांत असा एकही प्राणी नाही की, जो मला ह्या माझ्या वेतापासून परावृत्त करील. शल्या, ह्या माझ्या प्रतिज्ञेचा नीट विचार कर व गप रहा. व्यर्थ भिडून जाऊन अशी बडबड करू नको. हे अवघा मदका, तुला मारून मी आतां हिंसक प्राण्यांची धन करणार नाही. मित्राच्या कार्यकाळे लक्ष देऊन व तुला मारिल्याने धृतराष्ट्र व दुर्योधन ह्या दोघांनाही बरे वाटणार नाही असे मनांत आणून तुला मी जीवदान देतो; पण, मद्रेश्वरा, जर का तू असले भाषण फिरून बोलशील, तर मात्र वज्रतुल्य गदेने तुझे मस्तकच फोडून टाकीन हें पक्के ध्यानांत

ठेव ! हे पापदेशना शल्या, आज कृष्णार्जुनांनी कर्णाला किंवा कर्णांने कृष्णार्जुनांना रणांगांत ठार मारिले असे लोक पाहातील किंवा ऐकतील ! असो. राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे बोलून कर्णांने पुनः मद्राधिपति शल्याला 'रथ चालव, रथ चालव' असे मोठ्या त्वरेने सांगितले.

अध्याय एकेचाळिसावा.

—:—

हंसकाकीयोपारुख्यान.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, युद्धास आतुर झालेल्या कर्णांचे हें असे भाषण श्रवण करून शल्याने पुनः कर्णाला उत्तर दिले व एक कथा सांगितली. शल्य म्हणाला:—कर्णा, यज्ञयाग करणाऱ्या व संभ्रामांतून पळून न जाणाऱ्या मूर्धाभिषिक्त राजांच्या कुलांत मी जन्मलों असून मी नित्य धर्माप्रमाणे वर्तणारा आहे. अरे, दारू पिऊन बेकाम झालेल्या मनुष्यासारखा तू वाटेल तें बोलत आहेस. परंतु इतका जरी तू बहकला आहेस, तरी तुला स्नेहधर्मांमुळे ताळ्यावर आणावे असा माझा विचार आहे. मी तुला आतां हा एक कावळ्याचा दाखला सांगतो तो आधी ऐक; आणि मग " हे कुलकलंका मतिमंदा, तुला वाटेल तें तू कर. कर्णा, माझ्या मनांत तुझ्याविषयी काहीएक पापबुद्धि नाही, की जिच्याबद्दल मी निरपराधी असतांही तू मला वधावेस. तशांतून, तुझे हिताहित कशांमध्ये आहे हें जर मला कळत आहे, आणि मी तुझ्या रथावर सारथि असून दुर्योधनाच्या कल्याणाची जर अपेक्षा करीत आहे, तर विहिताविहित विचार तुला कळवावा हा माझा अवश्य धर्म होय. कर्णा, कोणता भूभाग सपाट आहे व कोणता उंचसखल आहे, रथ्याच्या हातून होण्यासारखे कोणते कृत्य आहे व कोणते नाही,

त्याप्रमाणेच रथ्याला व ह्यांना नित्य श्रम व त्रास कशापासून होतो; रथ्यानें जें आयुध उचलिलें असेल त्याच्या योगें उद्दिष्ट कार्य सिद्धीस जाईल कीं नाही, मृगपक्ष्यादिकांच्या स्वरांवरून वगैरे भावी परिणामविषयीं काय अंदाज होतो, अश्वाना रथाचा भार वाहून नेतां येईल कीं नाही, शरीरांत घुसलेले बाण उपटून काढून त्यांच्या जखमा कशा बऱ्या कराव्या, कोणत्या अस्त्रावर कोणत्या अस्त्राचा प्रयोग करावा, कोणत्या समयीं कोणत्या प्रकारें लढावें, आणि आधिभौतिक व आधिदैविक कारणें अनुकूल कर्त्री करून घ्यावीं, वगैरे सर्व गोष्टींचा विचार करणें हे मी तुझा सारथि असल्यामुळें माझें कर्तव्य होय; आणि ह्यासाठीं मी तुला फिरून हा एक दाखला सांगतो, तो ऐक.

कर्णा, समुद्राच्या परतीरास एक वैश्य रहात असे. त्याजपाशीं धनधान्यांची समृद्धि होती. तो यज्ञयागादिक करित असे. तो मोठा दाता व क्षमाशील होता. तो वर्णाश्रमधर्म उत्तम रीतीनें पाळित असे. त्याचें आचरण शुद्ध होतें. त्याला पुष्कळ पुत्र होते. तो त्यांवर फार प्रेम करित असे. तो सर्वच प्राण्यांवर ममता करित असे. तो ज्या राजाच्या राज्यांत रहात असे, तो राजाही मोठा धार्मिक होता, व त्यामुळें तो वैश्य निर्भयपणें त्या स्थळीं रहात असे. कर्णा, त्या वैश्याला पुष्कळ पुत्र होते म्हणून मी तुला आतांच सांगितलें. त्या भाग्यवान् वैश्यकुमारांचें उष्टें खाऊन वाढलेला असा एक कावळा तेंथें होता. त्या कावळ्यास ते वैश्यपुत्र सद्बोदीत मांस, भात, दही, दूध, खीर, मध, घृत वगैरे पदार्थ देत आणि त्या उच्छिष्ट अन्नावर पुष्ट होऊन उन्मत्त झालेला तो कावळा आपल्या बरोबरीच्या व आपल्याहून वरिष्ठ अशा पक्ष्यांचा उपमर्द करी.

एके समयीं, कर्णा, समुद्राच्या परतीरीं, जेथें

तो वैश्य रहात होता तेंथें बरेच हंस प्राप्त झाले. ते अतिशय वेगानें उडत असत व त्यांच्या ठिकाणीं गरुडाप्रमाणें दूर अंतर चालून जाण्याचें बळ होतें, त्यांचें नेहमींचें वास्तव्य मानससरोवरीं असून त्यांची चित्तवृत्ति सदा-सर्वकाळ प्रसन्न असे. ते हंस त्या स्थळीं आलेले जेव्हां वैश्यकुमारांनीं पाहिले, तेव्हां त्यांनीं त्या कावळ्याला छटलें कीं, 'हे विहंगमा, आमच्या मते सर्व पक्ष्यांमध्ये तूच अत्यंत प्रबळ आहेस.' कर्णा, त्या वैश्यकुमारांना तरी तितपतच अकल्ल होती, झणून त्यांनीं त्या कावळ्याला अशा प्रकारें चढविलें. वैश्यकुमारांचें हें झणणें ऐकून, आर्षीच अंध झालेल्या त्या बेट्या मूर्ख कावळ्यानें तें खरेंच मानिलें; आणि नंतर, तो उष्टें खाऊन पुष्ट झालेला कावळा सुदूरपाती हंसांच्या समीप गेला आणि त्या हंसांत मुख्य हंस कोणता झणून विचारू लागला. पुढें त्या मतिमंद कावळ्याला त्या हंसांत जो श्रेष्ठ हंस वाटला त्याला तो झणाला कीं, 'आपण उज्ज्वल करू या.' तेव्हां कावळ्याचें तें भाषण श्रवण करून त्या ठिकाणीं प्राप्त झालेले ते सर्वच हंस मोठ्यानें हंसले आणि त्यांनीं त्याचा धिक्कार केला.

ते हंस कावळ्याला झणाले:—कावळ्यां, आम्ही मानसवासी हंस ही पृथ्वी फिरत असतो. आमच्याइतके दूरवर उडून जाणारे दुसरे कोणीही पक्षी नाहीत; झणून सर्व पक्षी आम्हांस अतिशय मान देतात. हे मूर्खा, तू तर यःकश्चित् कावळा, आणि असें असतां मानसवासी, सुदूरपाती व बलिष्ठ अशा हंसांशीं उडूं या झणून गोष्ट काढितोस हें कसें ! अरे, मी तुझ्याबरोबर उडण्यास सिद्ध आहे झणून आम्हांशीं बोलण्यास तुला कांहींच वाटत नाही काय ? कर्णा, हंसांचें हें भाषण ऐकून तो चटून गेलेला कावळा उलटा त्यां-

का कुण्डलानुः उपहास करूं झगळां, आणि अ-
पक्षी जातीस अनुरूपच असें स्वानें भाषण केले.

कावळां झगळां:—हंसहो, मला स्वप्नित
एकरी एक प्रकारची उड्डाणे करितां येतांत.
प्रत्येक उड्डाण शंभर शंभर थोड्यांचे असून
मोठे मोठे व इतरांपासून भिन्न भिन्न असें
मी करितों, त्यांतील कित्येकांचीं नांवें—
उड्डान (वग जाणें), अवडीन (खालीं येणें),
प्रंडीन (सर्वत्र जाणें), डीन (कोणत्याही
प्रकारें जाणें), निडीन (सावकाश जाणें),
सिडीन (गमत गमत जाणें), तिर्यगडीन (वां-
कडेंतिकडे चालणें), विडीन (वेडावीत चाल-
णें), परिडीन (वाटेल तिकडे जाणें), पराडी-
न (मागे वळणें), सुडीन (स्वर्गांत जाणें),
अभिडीन (समोर जाणें), महाडीन (सरळ
चालणें), निर्डीन (निश्चल चालणें), अति-
डीन (झपाट्यानें जाणें), डीनडीनेक, सं-
डीनोड्डान, पुनडीनविडीनक, संपात (ए-
काद्या जागीं उडी घालणें), पक्षसंपात
(एकाद्या जागीं उडी घालून लागलेच
तेवून निघून जाणें), समुदीव (खालीं व
वरतीं जाणें), व्यतिरिक्तक (निव्रतांना
पक्षसंपाताचा बेत दाखविणें व प्रत्यक्ष नि-
राळ्याच प्रकारें जाणें), गतागत व प्रति-
गत वगैरे आहेत. आज हीं सर्व उड्डाणे मी
तुझांला करून दाखवीन, तेव्हां तुझांला
माझा पराक्रम दिसून येईल. मी आतां
ह्या उड्डाणांपैकीं कोणत्या तरी एका उड्डा-
णाचें अंतरिक्षांत उडून जाणार आहे; तर
हंसहो, मी आतां कोणतें उड्डाण करून
दाखविणें तुझांस उचित वाटतें तें सांगा
आणि तुझीं कोणतें उड्डाण करणार तें
जाखसांत ठरवून माझ्याबरोबर या. पक्ष्यां-

१ येथपासून पुढील उड्डाणे हीं एक किंवा
अनेक उड्डाणांचीं मिश्रणे आहेत.

नो, ह्या इतक्या प्रकारच्या निरक्षर्या
गतींनीं तुझांला माझ्याबरोबर अंतरिक्षांत
उडावयाचे आहे ! कर्णा, ह्याप्रमाणें कव-
ळ्याचें भाषण प्रवण करून एक हंस
स्वदखदां हंसून कावळ्याला जें काय झगळां-
ला तें मी तुला सांगतां एक.

हंस झगळा:—कावळ्या, तूं खरोखरीच
एकरी एक उड्डाणे करून दाखविशील; पण
आझाला इतर सर्व पक्ष्यांप्रमाणें काय तें एकच
उड्डाण साधतें व तेंच उड्डाण आधीं करूं.
आम्हांस दुसरें उड्डाण येत नाहीं, तुला
वाटेल तें उड्डाण तूं कर, आमची कांही हर-
कत नाहीं. कर्णा, हंसाचें हें भाषण ऐकून,
त्या उच्छिष्टपुष्ट कावळ्याच्या भ्रमोवतीं जे दुसरे
कावळे जमा झाले होते ते मोठ्यानें हंसले व
म्हणाले, “ कायहो, एकाच उड्डाणानें शंभर
उड्डाणांना हा हंस कसा मागे टाकील ? शंभरां-
पैकीं एका उड्डाणानेंच हा कावळा एक उड्डाण
जाणणाऱ्या हंसाला जिंकिल; कारण कावळा
हा मोठा बलिष्ठ असून त्वरेनें पळणारा आहे ! ”

कर्णा, नंतर तो हंस व कावळा स्वर्धनें अंत-
रिक्षांत उडावयास लागून धावूं लागले. हंस हा
एका गतीनेच चालत होता व कावळा मात्र
शंभर गति दाखवीत होता. ते दोघेही आप-
आपला पराक्रम व्यक्त करून एकमेकांस धक्का
करण्याचा प्रयत्न करीत होते ! कावळ्यानें पुनः
पुनः जीं चित्रविचित्र उड्डाणे करून दाखविलीं, तीं
पाहून इतर कावळ्यांना अनावर आनंद झाला
व ते मोठमोठ्यानें गर्जू लागले. इतर हंस
कावळ्याच्या त्या गति पाहून स्वदखदां हंसले
व त्यांनीं बाकीच्या कावळ्यांचा उपहास केला.
तो उच्छिष्टपुष्ट कावळा जसजसा पुढें जाऊं
लागला, तसतसा इतर कावळ्यांस अधिका-
धिकच हर्ष झाला आणि ते वारंवार हकडे तिकडे
नाचूं वागडूं लागले. वृक्षांवर जावें आणि

खाली यावें; असा त्यांनी क्रम आरंभिला; आणि नानाप्रकारें कावकाव करून, आपल्या पक्षाला आतां जय खास मिळणार असें दर्शविलें. इकडे अंतरिक्षांत कावळ्याबरोबर उडणाऱ्या हंसानें आपली ती मंद गति एकसारखी ठेविली होती आणि त्यामुळें कांहीं वेळपर्यंत तो मार्गें रहात चालला होता. तेव्हां तें पाहून कावळे हंसांना धिक्कारपूर्वक म्हणाले, हंसहो, तुझापैकी अंतरिक्षांत उडत असलेला हा हंस कसा मार्गें पडला हें पाहिलेंतना? कर्णा, कावळ्यांचें तें भाषण ऐकून आकाशगामी हंसानें मोठ्या वेगानें पश्चिमेकडील मार्ग धरिला; व जें मकराचें मुख्य स्थान अशा समुद्रावर तो प्राप्त झाला. तेव्हां कावळाही त्याबरोबर तिकडे गेला. पण दमल्याभागल्यास विश्रांति घेण्याकरितां वृक्ष किंवा द्वीप वगैरे कांहीं नाहीं, असें पाहून त्याचें धाबें दणालें व तो कासावीस झाला. कर्णा, समुद्र म्हणजे तो किती अगाध; नानाविध जलचरांचें तें वसतिस्थान; त्यांत शेंकडें मोठमोठाले प्राणी रहात असल्यामुळें आकाशापेक्षांही तो फार भयंकर; समुद्राइतकें खोल असें दुसरें कांहींही नाहीं; त्यांत चारही दिशांस जिकडे तिकडे पाणीच; व त्याच्या लाटा किती तरी प्रचंड; तेव्हां त्यापुढें यःकश्चित् कावळ्याचा तो पाड काय? असो. अशा त्या भयंकर सागराचें हंसानें कांहीं वेळ आक्रमण केलें तेव्हां कावळ्याला आपल्याबरोबर चालवत नाहीं असें हंसाच्या लक्षांत आलें आणि त्यानें मार्गें वळून कावळ्याची स्थिति नीट निरखून पाहिली व तो कावळ्याची वाट पहात उभा राहिला. नंतर कावळा अगदीं थकून जाऊन हंसाच्या समीप प्राप्त झाला, तेव्हां आतां हा खचित पाण्यांत पडून बुडून मरणार असें पाहून हंसानें सज्जनांचें व्रत मनांत आणिलें व त्याला म्हटलें कीं, ' का-

वळ्या, तूं आम्हांला पुष्कळ प्रकारचीं उड्यां सांगितलीस, पण आतां तूं जें हें उड्याण करीत आहेस तें कांहीं सांगितलें नाहींस; आणि ह्यामुळें मी मोठ्या गूढांत पडलों आहे. कावळ्या, प्रस्तुत तूं जें उड्याण करीत आहेस, ह्याचें नांव काय बरें? सध्या तूं पंखांनीं व चोंचीनें पाणी पुनःपुनः फडफडवीत आहेस! तेव्हां ही तुझी कोणती गति ती सांग पाहूं. कावळ्या, भिऊं नको, ये ये, लवकर ये, हा पहा मी तुझी वाट पहात आहे !'

शल्य म्हणाला:—हे दुष्टा कर्णा, हंसाचे ते शब्द श्रवण करून, हताश होऊन पाण्यावर धडपड करीत असलेला तो कावळा हंसाला म्हणाला, " हंसा, आम्हां कावळ्यांची शक्ति ती किती ! आम्हां कावकाव करीत फिरावें ! मी तुला शरण आलों आहे, तर तूं मला जीवदान देऊन कांठावर घेऊन चल ! " कर्णा, थकून गेलेला तो कावळा धडपड करीत हंसाला ह्याप्रमाणें म्हणत असतां अखेरीस एकाएकी समुद्रांत पडला, व तो आतां मरणार, इतक्यांत हंस त्याला म्हणाला, " कावळ्या, मला एकशें एक उड्याणें करितां येतात, असें जें तूं म्हणाला होतास, त्याचें आतां स्मरण कर. तूं तर पूर्वी फार बदाईचें भाषण केलें होतेस, तुझी शक्ति तर माझ्यापेक्षां अधिक, आणि असें असून तूं इतका दमून समुद्रांत पडलास हें काय ? " कर्णा, असें हें भाषण ऐकून कावळा अगदीं दीन वदनां वर पाहून हंसाला म्हणाला:—हंसा, मीं उष्टें खाऊन उन्मत्त झाल्यामुळें स्वतःला गरुडासारखें मानिलें व पुष्कळ इतर कावळे आणि दुसरे पक्षी ह्यांचा उपमर्द केला. पण आतां माझी धडगत नाहीं. मी तुजपाशीं जीवदान मागतों, तर तूं मला द्वीपाच्या किनाऱ्यावर पोचतें कर. जर मी सुखरूपपणें स्वदेशास गेलों तर मी कोणाचाही अवमान करणार नाहीं ! कसेंही

करून तू मला संकटांतून वाचव ! कर्णा, ह्या-
प्रमाणे कावळ्याने मोठ्या दीनपणाने हंसाची
पुनःपुनः विनवणी केली, तेव्हां हा आतां काव-
कन्न करीत समुद्रांत खचित बुडून मरणार असे
हंसांने पाहून मोठ्या त्वरेने त्यास पावलांनीं वर
काढिले व हळूच आपल्या पृष्ठभागीं धारण
करून पुनः पूर्वस्थळीं हां हां म्हणतां नेले आणि
नंतर तो हंस मनोवेगाने यथोद्दिष्ट देशास
निघून गेला. कर्णा, उच्छिष्टपुष्ट कावळ्याची
ह्याप्रमाणे त्या हंसांने पुरती रग जिरविली,
तेव्हां तो बल, वीर्य इत्यादिकांचा गर्व टाकून
देऊन शांत व विवेकशील बनला.

कर्णा, त्या कावळ्याप्रमाणेंच तुला धार्ते-
राष्ट्रांनीं उच्छिष्टावर वाढविल्यामुळे तूं धुंद
होऊन आपल्या बरोवरीच्या व आपल्याहून
वरिष्ठ अशा जनांचा अवमान करीत आहेस.
कर्णा, विराटनगरीमध्ये द्रोण, अश्वत्थामा, कृप
व त्याप्रमाणेंच भीष्म आदिकरून कौरव तुझे
रक्षण करण्यास सिद्ध असतां तुझ्या हातून त्या
एकट्या अर्जुनाचा वध कां बरे झाला नाही ?
अरे, सिंहांने ज्याप्रमाणे कोळ्यांची दुर्दशा
करावी, त्याप्रमाणे एकट्या अर्जुनांने जेव्हां
तुमची दुर्दशा उडवून तुझ्यांस ' दे माय धरणी
ठाय ' करून सोडिले, तेव्हां तुझे सामर्थ्य कोठें
होतें ? अरे, सव्यसाची अर्जुनांने तुझ्या भ्रात्यांस
वधिलेले पाहून सर्व कौरवांसमक्ष प्रथम तर तूंच
पळून गेलास ! त्याप्रमाणेंच द्वैतवनांत गंधर्वांनीं
जेव्हां तुझ्यावर हल्ला केला, तेव्हां सर्व कौर-
वांना सोडून देऊन प्रथम पळाला तो कोण ?
कर्णा, चित्रसेनप्रभृति गंधर्वांना समरांगणांत
जिकून व ठार मारून दुयोधनाला भार्येसहवर्त-
मान सोडविले तें अर्जुनांनेच. परशुरामाने राज-
दरबारांत सर्व सभासद अधिष्ठित असतां कृष्ण
व अर्जुन ह्यांचा पूर्वीचा पराक्रम वर्णन केलेला

१ विराटपर्व अध्याय ५४ पहा.

आहे; आणि त्याचप्रमाणे भीष्मद्रोण ह्यांच्या
मुखांवाटे राजांसमक्ष कृष्णार्जुन अवध्य आहेत
असे जे नित्य उद्गार निघत असत ते तूं ऐकिले
आहेसच. कर्णा, एक कीं दोन गोष्टींत अर्जुन
तुझ्यापेक्षां बलवत्तर आहे म्हणून सांगूं ? ज्या-
प्रमाणे सर्व प्राण्यांत ब्राह्मण हा श्रेष्ठ होय,
त्याप्रमाणे सर्व बाबतींत अर्जुन हा तुझ्यापेक्षां
श्रेष्ठ आहे. आतां लवकरच उत्कृष्ट रथांत
आरूढ झालेले ते कृष्णार्जुन तुझ्या दृष्टीस
पडतील. कर्णा विवेकसंपन्न कावळ्याने हंसाचा
आश्रय केला, तद्वत् तूं विवेकसंपन्न होऊन
कृष्णार्जुनांचा आश्रय कर. कर्णा, जेव्हां एकाच
रथांत अधिष्ठित झालेले ते रणधुरंधर कृष्णा-
र्जुन तूं पाहाशील, तेव्हां मग तूं ही बढाई
टाकून निमूट बसशील; आणि जेव्हां शतावधि
शरानीं अर्जुन तुझा दुर्प नाहीसा करील, तेव्हां
मग तुला तुझ्यामधले व अर्जुनामधले अंतर
समजून येईल ! कर्णा, कृष्णार्जुन हे देव, दैत्य
व मनुष्ये ह्यांमध्ये प्रख्यात आहेत. त्या तेजस्वी
वीरांपुढे तूं केवळ खद्योताप्रमाणे आहेस.
ह्यास्तव तूं त्यांचा मूर्खपणाने अवमान करून नको.
कर्णा, कृष्णार्जुन हे सूर्यचंद्रांप्रमाणे महादे-
दाप्यमान असून तूं केवळ काजव्याप्रमाणे अल्प
तेजस्वी आहेस हा विचार मनांत आणून कृष्णा-
र्जुनांची मानखंडना करण्याचे सोडून दे; आणि
ते नरसिंह मोठे महात्मे आहेत असे मनांत
वागवून स्वतःची प्रौढी भिरवीत न बसतां
मुक्ताट्याने रहा.

अध्याय बेचाळिसावा.

—:०:—

कर्णाचे शल्याशी आवेशाचे भाषण.

संजय सांगतो:—मद्राधिपति शल्याचे तें
अप्रिय भाषण श्रवण करून महात्म्या कर्णाचा
त्यावर विश्वास बसला नाही आणि तो शल्याला

झणाला, “ शल्या, कृष्णार्जुन कशा प्रकारचे आहेत, तें मला माहीत आहे. अर्जुन व त्याचा सारथि कृष्ण ह्यांची शक्ति व महात्त्वे ह्यांची मला आजमितीस जशी सविस्तर माहिती आहे, तशी तुला नाही. ते कृष्णार्जुन शस्त्रधारण करणारांमध्ये जरी श्रेष्ठ असले, तरी त्यांच्याशी मी निर्भयपणे युद्ध करीन; पण ब्राह्मणश्रेष्ठ जो परशुराम त्यानें मला जो शाप दिला आहे, त्याची मला आज आठवण होऊन त्यामुळे मात्र माझे मन अस्वस्थ होत आहे ! शल्या, परशुरामांनें मला शाप कां दिला तें ऐक. पूर्वीं दिव्य अस्त्राची प्राप्ति व्हावी झणून मी परशुरामाकडे ब्राह्मण आहे असें सांगून राहिलों होतो, तेव्हां देवराज इंद्रांनें केवळ अर्जुनाचें हित करण्याच्या उद्देशानें मला विघ्न केलें. त्या समयीं इंद्र एका भयंकर कीटकाचें रूप घेऊन माझ्या मांडीच्या समीप आला व त्यानें माझ्या मांडीवर मस्तक ठेवून परशुराम गुरु निद्रित असतां माझी मांडी फोडिली. तेव्हां माझ्या शरीरांतून रक्ताचा मोठा प्रवाह वाहू लागला, परंतु परशुराम गुरु रागावेल ह्या भयानें मी आपली मांडी अगदीं ढळू दिली नाही. नंतर परशुराम जागा झाल्यावर तो रक्तौघ त्याच्या दृष्टीस पडला, तेव्हां माझे तें धैर्य अवलोकन करून तो मला झणाला कीं, ‘ तूं कांहीं ब्राह्मण नव्हेस; कोण आहेस तें सांग. ’ तेव्हां शल्या, मी खरोखरी सूत आहे. असें त्यास सांगितलें. तें ऐकून परशुरामास माझा फार राग आला व त्यानें मला शाप दिला कीं, कर्णा, ज्या अर्थी तूं आपली सूतजाति मला न सांगतां हें अन्न तूं मजपासून संपादन केलें आहेस, त्या अर्थी हें तुला वेळीं आठवणार नाही. ह्याचा उपयोग तुला तुझा मृत्युकाल आला नाही तोपर्यंतच होईल; कारण ब्राह्मणाशिवाय अन्याच्या ठिकाणीं ब्रह्म

हें स्थिर रहात नाही ! शल्या, तें दिव्य अन्न आज ह्या घोर संग्रामांत मला मुळीच आठवत नाही; ह्यास्तव, भारतीय वीरांत प्रमुख असा हा महाभयंकर सर्वसंहारक व अत्यंत प्रबळ योद्धा अर्जुन आज पुष्कळ मोठमोठ्या क्षत्रियांस वर्धील व मोठा हाहाकार उडेल, असें मला वाटतें. शल्या, यद्यापि असें वडण्याचा संभव असला, तथापि मी त्या उग्रधनुर्धर, महाप्रतापी, असह्यबल, सत्यसंध व महाभीतिप्रद धनंजयाला मृत्युमुखी लोटीन ह्याविषयी संदेह नाही. मजपाशीं दुसरें एक अन्न सिद्ध आहे, त्याच्या योगें मी रणांगणांत महान् महान् शत्रूंना व त्याचप्रमाणें त्या लोकोत्तर अर्जुनाला वर्धीन. पहा, समुद्र हा मोठा वेगवान् व अगाध आहे, तो किती तरी प्राण्यांना आपल्यामध्ये बुडवून टाकितो; तथापि त्या अगाध व अवाढ्य समुद्राला त्याची मर्यादा दाबून टाकिते; तद्वत्, अर्जुन हा कितीही प्रबळ योद्धा असला व तो समुद्राच्या लाटांप्रमाणें बाणांची वृष्टि करून क्षत्रियांचा संहार करण्यास कितीही उद्युक्त झाला, तरी समुद्राच्या मर्यादेप्रमाणें, त्याजवर बाणांचा वर्षाव करून, मी त्यास आळा घालीन. शल्या, ज्याच्या तोडीचा कोणीही धनुर्धर नर नाही व जो सुर किंवा असुर ह्यांना युद्धांत जिंकिल, अशा त्या महाप्रताप धनंजयाशीं आज मी घोर संग्राम करीन तो पहा. शल्या, आज अत्यंत अभिमानी व युद्धाभिलाषी अर्जुन आपल्या दिव्य अस्त्रांचा भडिमार करीत मजवर चालून आला म्हणजे त्याच्या अस्त्रांचा मी आपल्या श्रेष्ठ अस्त्रांनीं नाश करून त्यास धारातीर्थी पाडीन. आज बाणवृष्टीनें सूर्याप्रमाणें दशादिशा उज्ज्वलित व प्रदीप्त करून टाकणाऱ्या त्या लोकोत्तर अर्जुनाला मेघाप्रमाणें मी बाणांनीं पार झांकून टाकीन. ऊर्ध्वभागी धृत्राचे लोट उखळ

असून जो पेटत चालला आहे अशा अग्नीला ज्याप्रमाणे पर्जन्यवृष्टीने शांत करावे, त्याच-प्रमाणे मी ह्या सर्व लोकांस जाळून टाकणाऱ्या अर्जुनाला बाणवृष्टीने शांत करीन. शल्या, अर्जुन ह्मणजे केवळ क्षुब्ध झालेला भयंकर विषारी सर्पच होय; त्याच्या ठिकाणी अग्नीसारखा महाप्रताप वास करित आहे; पण त्याजवर मी आज मूढ शर टाकून त्याला जर्जर करीन. अर्जुनाचा पराक्रम मोठा अपूर्व आहे, त्याला जिंकणे मोठे अशक्य आहे, तो एकदां बाणांचा वर्षाव करू लागला म्हणजे शत्रूवर बाणरूप झंझावातच सुरू होतो असे म्हटले तरी चालेल; पण असे असले तरी, हिमवान् पर्वताप्रमाणे संक्रुद्ध झालेल्या अर्जुनाची ती बाणवृष्टि मी सहन करीन. शल्या, अर्जुन हा रथाचे मार्ग जाणण्यांत मोठा पंडित असून तो अत्यंत प्रबळ वीर आहे, तथापि मी त्याचे आज समरांगणांत कांहीएक चालू देणार नाही. शल्या, ज्या लोकोत्तर रणधुरंधराने सर्व पृथ्वी जिंकिली व ज्याने खांडवप्रस्थांत देवतांसहवर्तमान सर्व भूतानां जिंकून टाकिले, त्याच्याशी मी युद्ध करीन. शल्या, जो मोठा अभिमानी, अस्त्रविद्यापारंगत, शिताफीने आयुधांचा प्रयोग करणारा व दिव्य अस्त्रांचा वेत्ता, त्या श्वेतहय प्रबळ अर्जुनाबरोबर युद्ध करून वांचेल असा माझ्या-
रिक्त दुसरा कोणता पुरुष आहे बरे ? मी आज त्या अतिरथ अर्जुनावर निशित बाणांची वृष्टि करून त्याचे शिर धडापासून वेगळे करीन ! शल्या, आज समरांगणांत अर्जुनाशी युद्ध करून एक तर मी त्यास जिंकून किंवा मी स्वतः युद्धांत देह ठेवीन. शल्या, त्या वासवोपम अर्जुनाशी एका रथाने युद्ध करील असा माझ्याशिवाय दुसरा कोणीही सोळा नाही. आज त्या महावीराचा पराक्रम यी क्षत्रियभंडळांत मोठ्या आनंदाने रणभूमीवर

वर्णन करीन. त्यां महामुस्तीने अर्जुनाचा पराक्रम मला सांगण्याचे कांहीएक कारण नव्हते. तूं अप्रिय गोष्टी करणारा असून अतिशय निष्ठुर व नीच आहेस; शिवाय क्षमाशील मनुष्याची तूं निंदा करितोस व स्वतः तुझ्या ठिकाणी तर क्षमेचा लेशही नाही. तुझ्या सारख्या शेंकडों मनुष्यांचा मी वधच केला असता, पण माझ्या ठिकाणी सहनशीलता असल्यामुळे आणि देशशालपरिस्थितीचा मी विचार करणारा असल्यामुळे मी ती गोष्ट करण्यास राजी नाहीं. हे पापिष्ठा, तूं जें मला अप्रिय बोललास त्यांत तुझा हेतु पांडवांचे बरे करावे हाच होता. शल्या, तूं फार कुटिल आहेस व ह्यामुळेच मी तुझ्याशी सरळपणाने वागत असतां तूं माझा द्रोह करण्यास उद्युक्त झालास. तूं आज माझ्याशी कपट करून केवळ मितद्रोहच केलास असे मी ह्मणतो. कारण मैत्री ही सप्तपदांत घडते. असो; शल्या, हा मोठा दारुण प्रसंग प्राप्त झाला आहे; कारण दुर्योधन स्वतः युद्धार्थ सिद्ध होऊन आला आहे. अरे, दुर्योधनाची इच्छा सिद्धीस जावी ह्यासाठीं माझा जीव तिळतिळ तुटत आहे, आणि तूं तर त्याचे अहित चिंतीत आहेस ! अरे, जो मनुष्य दुसऱ्यावर प्रेम करितो, त्याला आनंदवितो, त्याला प्रसन्न करितो, त्याला राखितो, त्याला मोठेपणा देतो, आणि त्याचे सुख पाहून संतोष पावतो, त्यास मित्र ह्मणतात. शल्या, मी तुला सांगतो कीं, हे सर्व गुण माझ्या ठिकाणी वसत आहेत आणि हें सर्व खुद्द दुर्योधन जाणत आहे. शल्या, जो मनुष्य दुसऱ्याचा नाश किंवा शासन करितो, त्याला मारण्यासाठीं शस्त्रादिक पाजळतो, त्याला इजा करितो, त्याला रडायला लावितो, त्याला दुःख देतो, आणि पुष्कळ प्रकारांनी पीडा करितो,

त्याला शत्रु क्षणतात. शल्या, मी तुला सांगतो की, हे सर्व दुर्गुण तुझ्या ठिकाणी वसत आहेत आणि ते तू माझ्या प्रत्ययास आणून दिले आहेस ! शल्या, दुर्योधनाची इच्छा सफल होण्याकरिता, तुला आनंदविण्याकरिता, जयप्राप्तीकरिता, माझे स्वतःचे कर्तव्य सिद्धीस नेण्याकरिता आणि ईश्वराचे हेतु परिपूर्ण करण्याकरिता आज मी मोठ्या दक्षतेने कृष्णार्जुनांशी युद्ध करीन, तें पहा. ब्रह्मादिशर आदिकरून ब्रह्माखें, ऐंद्रवारुण, आदिकरून दिव्याखें, व दिव्यधनु आदिकरून भौमाखें तूं अवलोकन कर. ज्याप्रमाणें एक मदोन्मत्त हत्ती दुसऱ्या मदोन्मत्त हत्तीला ठार मारून टाकितो, त्याप्रमाणें मी आज त्या महाप्रतापी अर्जुनाला ठार करून टाकीन. आज मी बलाढ्य व अजिंक्य असें ब्रह्माख मला जय प्राप्त व्हावा म्हणून अर्जुनावर सोडीन व जर का ऐननिकराच्या प्रसंगी माझ्या रथाचें चाक पडलें (जमिनीत रुतलें वगैरे) नाही तर त्या माझ्या अस्त्रापामून खचित अर्जुनाची सुटका होणार नाही. शल्या, हें तूं पकें ध्यानांत ठेव कीं, मी आज दंडधारी यमाला, पाशधारी वरुणाला, गदाधारी कुबेराला, वज्रधारी इंद्राला किंवा दुसऱ्या कोणत्याही आततायी शत्रूला भिणार म्हणून नाही. आज मला त्या अर्जुनाचें किंवा जनार्दनाचेंही भय वाटत नाही. आजच्या घोर रणांत मी त्या दोघांशीही युद्ध करीन.

शल्या, एके प्रसंगी मी आपल्या विजय चापाच्या योगें अस्त्रक्षेपणाचा अभ्यास करित फिरत असतां अज्ञानानें जे घोर व भयंकर बाण सोडिले, त्यांतील एक बाण एका ब्राह्मणाच्या होमधेनूचें वासरूं वनांत निर्जनप्रदेशीं चरत होतें त्याला चुकून लागला व तें मरण पावलें. तेव्हां तो ब्राह्मण मला म्हणाला कीं, ज्या अर्थां तूं उन्मत्तपणानें माझ्या होमधेनूचें वासरूं मारिले आहेस त्या अर्थां युद्धांत

अगदीं ऐनआणीबाणीच्या प्रसंगी तुझ्या रथाचें चाक खाचेंत रुतले ! शल्या, ह्यासाठीं ब्राह्मणाच्या ह्या शापवचनाला मी फार भीत आहे. हे मद्राधिपा, हे सोमवंशीय राजे सुख प्राप्त करून घेण्याला व दुःखाचें निवारण करण्याला समर्थ आहेत. ह्यास्तव, मी त्या ब्राह्मणाला एक सहस्र गाई व सहाशें बैल देण्यास तयार झालों, पण तो ब्राह्मण संतुष्ट झाला नाही. नंतर मी त्या ब्राह्मणाला सातशें उत्तम हत्ती आणि शेंकडों दास व दासी देऊं लागलों, पण त्यानें सुद्धां त्या द्विजश्रेष्ठाची तृप्ति झाली नाही. मग मी चौदा हजार काव्या कपिला गाई श्वेतवत्सानीं युक्त अशा त्याजपुढें उभ्या केल्या, पण त्यानें सुद्धां ब्राह्मणाचें मन प्रसन्न झालें नाही. नंतर मी यच्चयावत् अपेक्षित वस्तुंनीं भरलेलें माझे घर व माझ्या जवळ होतें नव्हतें तेवढें सगळें धन त्यास मोठ्या आदरानें दिलें, पण त्यानें त्याची इच्छा केली नाही. त्या समर्थी मी फारच हताश होऊन मोठ्या दीनपणानें त्याची प्रार्थना केली; तेव्हां तो ब्राह्मण मला म्हणाला कीं, हे सूता, माझे भाषण कधीही अन्यथा होणार नाही. असत्य भाषणानें प्राण्यांचा नाश होईल व त्यामुळें मला पाप लागेल. ह्यासाठीं धर्मरक्षणावर दृष्टि देऊन मी असत्य भाषण करण्यास कधीही राजी नसतो. सूता, ब्राह्मणाच्या योगक्षेमाचें साधन तूं कधीही नष्ट करूं नको. आतां तूं जो माझा अपराध केलास, त्याचें तुला प्रायश्चित्त मिळालेंच आहे. माझे वचन अन्यथा करण्यास ह्या लोकां कोणीही समर्थ नाही; ह्यास्तव आतां ह्या माझ्या शापाचें फल भोगण्याची तयारी ठेव !

शल्या, जरी तूं माझा अधिक्षेप करित आहेस, तरी तुला मी हें वृत्त मित्तबुद्धीनें निवेदन केले आहे. तूं माझा निंदक आहेस

हैं गोष्ठ मी जाणून आहे ह्यास्तव मी जें आतां
संगिन तें तूं मुकाट्यानें ऐक.

अध्याय त्रेचाळिसावा.

—:०:—

शल्याधिक्षेप !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें
शल्यास निरुत्तर करून शत्रुसंहारक कर्ण
पुनः त्यास म्हणाला:—शल्या, जरी तूं मला
दाखला देऊन कितीही सांगितलेंस, तरी इतकें
पकें लक्षांत ठेव कीं, तुझ्या भाषणानें युद्धामध्ये
माझ्या हृदयाला भीतीचा स्पर्श म्हणून व्हाव-
याचा नाही. अरे, इंद्रासहवर्तमान सर्व देव
जरी माझ्याशी युद्ध करण्यास प्राप्त झाले तरीही
मला भय वाटणार नाही, मग कृष्णार्जुनांचें
भय वाटण्याची गोष्ट कशाला पाहिजे? अरे,
केवळ भाषणानें मी म्हणून कधीही भिणार
नाहीं. ज्याला तुझ्या शब्दांनीं समरभूमीवर
भीति उत्पन्न होईल तो कोणी दुसरा असेल,
तो मी नव्हे. शल्या, तूं जे मला वाक्प्रहार
केलेस, त्यांवरून तुझा नीचपणा मात्र व्यक्त
झाला, दुसरें कांहीं नाही. नीचाचें सामर्थ्य
म्हटलें म्हणजे तें इतक्यापुरतेंच. हे दुर्मते, माझ्या
गुणांची प्रशंसा करण्यास तूं असमर्थ आहेस
आणि उलट खूब बडबड मात्र चालविली
आहेस, पण कर्ण हा युद्धप्रसंगीं भिण्याकरितां
जन्मला नाही,—पराक्रम करून दाखवावा व
विजय मिळवावा एवढ्यासाठींच माझा जन्म
आहे. शल्या, तुझ्या ह्या दुर्भाषणास्तव मी तुला
ठारच मारिलें असतें, परंतु तूं माझा सारथि
आहेस. तुझ्या ठिकाणीं माझे प्रेम आहे, व दुर्यो-
धनाचें कल्याण करावें हा माझा हेतु आहे, ह्या
तीन कारणानीं सांप्रत तूं जिवंत आहेस. कर्णा,
दुर्योधनाचें महत्कार्य सिद्धीस नेण्याचा हा
समय आहे, आणि दुर्योधनानें तें कार्य माझ्या-

वर सोंपविलें आहे ह्यामुळें प्रस्तुत समर्थी तुझें
जीवित सुरक्षित आहे. शल्या, मी तुझ्यापाशीं
करार करून चुकलों आहे कीं, तूं मला
कितीही अप्रिय बोललास तरी मी तें सहन
करीन. शल्या, मला तुझ्या साहाय्याची जरूरी
नाहीं. तुझ्यासारखे सहस्र शल्य जरी मला
मदत करूं लागले, तरी त्यांची पर्वा न करितां
मी एकटाच शत्रूंना जिंकान. मित्रद्रोहापासून
पातकाची प्राप्ति होते आणि ह्यामुळेंच तूं
प्रस्तुतकालीं जिवंत आहेस !

अध्याय चवेचाळिसावा.

—:०:—

कर्णकृत वाहीकनिंदा.

शल्य म्हणाला:—कर्णा, मी एकटाच
शत्रूंना जिंकून म्हणून जें कांहीं तूं बोललास,
ती खरोखरी तुझी बडबड होय. मी मात्र
एकटा तुझ्यासारखे सहस्र कर्ण जरी माझ्या
मदतीस आले तरी त्यांस न जुमानितां सम-
रांगणांत शत्रूंना जिंकून !

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्या-
प्रमाणें क्रुद्ध होऊन शल्यानें कठोर भाषण
केलें, तेव्हां कर्णानें पुनः त्याच्या दुपटीनें
कठोर असें भाषण केलें.

कर्ण म्हणाला:—हे मद्राधिपा शल्या,
आतां मी तुला जें सांगणार आहे, तें एकाप्र-
चित्तानें श्रवण कर. हें मी धृतराष्ट्राच्या समीप
ब्राह्मणाच्या तोंडून ऐकिलें आहे. मद्रेश्वरा, धृत-
राष्ट्राच्या गृही ब्राह्मणांकडून नानाविध देशांचे
व बहुत राजांचे मनोहर इतिहास सांगण्यांत
येत असत. तेथें कोणी एका वृद्ध द्विजवर्यानें
पूर्वींच्या कथा सांगितल्या, तेव्हां तो वाहीक व
मद्र ह्या देशांतील लोकांची निंदा करून ह्याणाला,
अहो, हिमवान्, गंगा, सरस्वती, यमुना व
कुरुक्षेत्र ह्या पांचांपासून जे लोक दूर राहातात

आणि सिंधु, क्षतद्रु, विपाशा, इरावती, चंद्रभागा व वितस्था ह्या नद्यांच्या मधील प्रदेशांत जें लोक राहातात, ते वाहीक लोक अपवित्र व धर्मबाह्य असल्यामुळे त्यांच्याशीं संपर्क करूं नये. मला लहानपणापासून स्मरण आहे कीं, ह्या प्रदेशांतील राजवाड्यांच्या द्वारांसमीप मद्यपानगृह व गोवधशाळा म्हणून असावयाचीच ! मी फार गुप्त अशा एका कार्यासाठीं वाहीक देशांत राहिलों होतो. तेव्हां वाहीकांशीं माझा जो सहवास झाला त्यावरून त्यांचा आचार-विचार मला माहीत झाला आहे. शाकल नामक नगर, आपगा नामक नदी व जातिंक नामक वाहीकांचा प्रांत हीं सर्व अतिनिष्ठ आहेत. येथील लोक फार दुराचरणी आहेत. ते भडबुजाकडील भाजके दाणे व गौड्य नांवाचें मद्य सेवन करितात. त्याचप्रमाणें ते गोमांस, लसूण, मांसयुक्त वडे व विकत आणलेला भात वगैरे खातात. त्यांच्या ठिकाणीं सौजन्य म्हणून मुळींच नाही. तेथील स्त्रिया मद्यप्राशन करून नगरामध्ये गृहभित्तीच्या बाहेर उटी किंवा माळा वगैरे कांहींएक धारण न करितां खुशाल गातात व नाचतात. मग त्यांस वस्त्रांचें सुद्धां भान राहात नाही. त्या धुंद झालेल्या स्त्रिया एकदां गाऊं लागल्या म्हणजे अश्लील पद्यें म्हणतात. त्यांचें तें गायन म्हणजे जणू काय दर्भाचें किंवा उंटाचें ओरडणेंच होय. त्या स्त्रिया मैथुनकालीं स्वप्नपुरुषविचार सुद्धां शरीत नाहींत. त्यांचें वर्तन सर्वतोपरी स्वच्छंद निर्मर्याद असतें. त्या बेहोष झालेल्या स्त्रिया कमेकींची थडामस्करी अतिशय करितात. त्या कमेकांना (नवऱ्याचा मारखाऊ.इ.) अबद्र शांनीं हाका मारितात. आणि कोणत्या दिवशीं पें वागावें ह्याचा लवमात्र विधिनिषेध न बाळतां त्या हलकट स्त्रिया आरडतात, खिदळतात नाचतही सुटतात ! शल्या, त्या धुंद स्त्रियांत

राहाणारा कोणी एक अतिशय हलकट वाहीक पुरुष कुरुजांगल देशांत असतां मोठ्या दिलगिरीनें त्या धुंद स्त्रियांपैकीं एकीची आठवण करून जें काय म्हणाला तें ऐक. तो वाहीक म्हणाला:—अरेरे ! ती यौवनभरानें मुसमुसलेली युवती झिरझिरीत वस्त्र परिधान करून खचित माझे स्मरण करित अंथरुणावर तळमळत असेल ! म्हणून मी ह्या कुरुजांगल देशांतून तिच्या भेटीकरितां तिकडे जावें हें उचित होय. आतां मी प्रथम शतद्रु ओलांडीन व नंतर रमणीय अशा इरावतीतून पलीकडे स्वदेशीं जाईन आणि आपल्या प्रियेला भेटेन ! अरेरे ! ज्यांच्या भालप्रदेशांतील हाडें मोठीं स्थूल आहेत, अशा त्या सुंदर स्त्रियांची. व माझी कधीं गांठ पडेल बरें ! त्या रम्य स्त्रियांचे विलास कायहो वर्णावे ! त्यांचे नेत्रप्रांत मनशीळा-प्रमाणें लकाकत असून त्यांच्या नेत्रांत उत्कृष्ट अंजनें शोभत असतात. त्या मनोहर स्त्रिया शाली व चर्में परिधान करून सुखोपभोगार्थ उत्सुक होतसात्या मृदंग, आनक, शंख, मर्दल, इत्यादि वाद्यांच्या स्वरांत व तालांत दंग होऊन मोठमोठ्यानें गातात आणि शिवाय त्यांच्या त्या गायनाला गर्दभ, उंट व खेंचरें ह्यांच्या शब्दांनीं पुष्टीकरण मिळत असतें ! अशा त्या विलासी स्त्रिया शर्मा, पीलु व कण्हेर ह्यांच्या बागांत आरामस्थानीं मला केव्हां भेटतील बरें ? अहो, त्या देशांतील पुरुषांचें तरी काय वर्णन करावें ! वडे, घारगे, ताकांत कालविलेले सातूचे पिंड हे खाऊन पुष्ट झालेले तेथील लोक मार्गांत दुसऱ्या प्रवाशांना भेटले असतां त्यांचीं वस्त्रे ओढून त्यांना कितीही मारीत सुटतात ! सारांश, मद्राधिपा, वाहीक देशांतील स्त्रिया व पुरुष हीं दोन्ही धर्मबाह्य व अत्याचार करणारी आहेत. तेव्हां कोणता विचारी पुरुष क्षणभर तरी त्या देशांत राहाण्यास राजी होईल बरें ? मद्रराजा

शल्या, ब्राह्मणानें दुराचरणी वाहीक लोकांचें हें असें वर्णन केलें. त्या लोकांच्या पापपुण्यांचा सहावा भाग ग्रहण करणारा तूं आहेस; ह्यास्तव तुझ्या ठिकाणीं तदनुरूपच पापपुण्यांचा संघय असला पाहिजे हें उचड आहे.

शल्या, तो ब्राह्मण अशा प्रकारचें भाषण करून त्या अनीतिमान् वाहीकांविषयीं आणखी काय म्हणाला तें ऐक. तेथें त्या भरवस्तीच्या शाकल नगरांत नेहमीं कृष्णचतुर्दशीला रात्रीस दुंदुभि वाजवून एक राक्षसी मोठमोठ्यानें ओरडून असें म्हणत असे कीं, अहो, गाईचें मांस व गौड दारू मनमुराद सेवन करून ह्या शाकल नगरांत मी पुनः वाहीक लोकांचीं गाणीं केव्हां गाईन बरें? अहो, येथील घिप्पाड तरुण स्त्रियांसमवेत मोठ्या थाटानें मला कांदि, मद्य व पुष्कळ भेंडे ह्यांजवर कधीं हात मारायला सांपडेल? अहो, डुकराचें, कोंबड्याचें, गाईचें, गाढवाचें, उंटाचें व भेंड्याचें वगैरे मांस ज्यांस खावयास मिळत नाही, त्यांचें जन्म निरर्थक होय! शल्या, ज्या नगरांतील लहानमोठे सर्व रहिवाशी दारू पिऊन अशा प्रकारचीं गाणीं गातात, त्या नगरांत धर्माचें नांव तरी असेल काय? शल्या, ह्याशिवाय कौरवसभेंत ब्राह्मण जें कांहीं आणखी म्हणाला तें मी तुला आतां सांगतो. शल्या, ज्या प्रदेशांत पीलु वनें आहेत तेथें पंचनद्या वाहातात. त्या पांच नद्यांचीं नांवें शतद्रु, विपाशा, इरावती, चंद्रभागा व वितस्था हीं आहेत. ह्याशिवाय तेथें हिमालयापासून दूर वाहात जाणारी सिंधु नदी ही सहावी आहे. ह्यांच्यामधील भूप्रदेशास आरट्ट देश असें म्हणतात. त्या देशांतील लोक धर्महीन असल्यामुळे तेथें कोणीही जाऊं सुद्धां नये. शल्या, ज्या लोकांचे उपनयनादि संस्कार होत नाहीत, जे शूद्रादिकांपासून अन्यजातीय स्त्रियांच्या ठिकाणीं जन्म पावतात व जे यज्ञा-

दिक क्रिया करीत नाहीत, अशा त्या वाहीक व इतर धर्महीन लोकांनीं देव, पितर व ब्राह्मण ह्यांना उद्देशून कांहीं दानधर्म, श्राद्धतर्पण इत्यादिक केलें असतां ते देवपितर वगैरे त्या दानधर्मादिकांचा स्वीकार करीत नाहीत. तो विद्वान् ब्राह्मण कुरुसभेंत आणखी असेंही म्हणाला कीं, वाहीक लोक काष्ठाच्या कुंड्यांतून व मातीच्या भांड्यांतून अन्न सेवन करितात. त्या भांड्यांना मग जरी सातूचें पीठ किंवा मद्य लागलेलें असलें, अथवा जरी तीं कुत्र्यानें चाटलेलीं असलीं तरी त्यांना कांहींच वाईट वाटत नाही. वाहीक लोक भेंडीचें, उंटाचें व गाढवीचें दूध प्राशन करितात व त्याप्रमाणेंच त्या दुधापासून होणारे घृतादिक पदार्थांही सेवन करतात. त्या अधमांना अभक्ष्य पदार्थ म्हणून कोणताही नाही. त्यांच्यामध्ये जारज संततीचें अतिशय प्रमाण असतें. शल्या, ह्यास्तव आरट्ट देशांतील वाहीकांचा विचारी मनुष्यानें सर्वतोपरी त्याग करणें अवश्य आहे, ही गोष्ट लक्षांत ठेव; व तो ब्राह्मण आणखी जें कांहीं कुरुसभेंत म्हणाला तें ऐक. तो ब्राह्मण म्हणाला कीं, युगंधर नगरांत दूध पिऊन, अच्युतस्थलांत राहून आणि भूतिलयांत स्नान करून कोणता मनुष्य स्वर्गास जाईल बरें? ज्या प्रदेशांत हिमालयांतून निघालेल्या पांच नद्या वाहातात, त्या प्रदेशास आरट्ट नामक वाहीक देश असें म्हणतात. त्या देशांत सुजनानें दोन दिवस सुद्धां राहू नये. विपाशेमध्ये वहि व हीक अशीं दोन

१ युगंधर नगरांत उंटाचें बगैरे दूध विकण्यांत येतें. ह्यास्तव तेथें अपेय दुग्ध प्राशन करण्यांत येण्याचा संभव आहे. अच्युतस्थलांत स्त्रियांचे आन्वारविचार फारच गर्हणीय असल्यामुळे मनुष्याचें पाऊल वांकड्या वाटेंत पडण्याचा अतिशय संभव आहे. आणि भूतिलयांत चांडालांचा व ब्राह्मणादिकांचा एकच पाणवठा असल्यामुळे तेथें स्पर्शास्पर्शविचार नष्ट होऊन जाईल.

पिशाचें कस करितात. वाहीक ही त्या दोन पिशाचांची संतति होय. वाहीक ही प्रजापति ब्रह्मदेव ह्याची संतति नव्हे. त्या हीनकुलांत जन्मलेल्या लोकांना विविध धर्मांचें ज्ञान कसें असेल बरें ? व त्याचप्रमाणें कारस्कर, माहिषक, कालिंग, केरल, कर्कोटक, वीरक, इत्यादिक दुर्धर्मी लोकांशीही संपर्क करूं नये. ह्या प्रकारचें हें असें भाषण एका मोठ्या अवाढव्य राक्षसीनें तीर्थयात्रा करणारा एक ब्राह्मण एक रात्रभर बसतीस राहिला असतां त्यापाशीं केलें. आरट्ट देशांत वाहीक तीर्थाच्या ठिकाणीं अधम ब्राह्मणांची फार पुरातन कालापासून वसति आहे. ते वेदाध्ययन व यज्ञयागादिक क्रिया करीत नाहीत. ते धर्मबाह्य असून शूद्रांपासून अन्य स्त्रियांच्या ठिकाणीं जन्म पावल्यामुळे त्यांनीं दिलेले अन्न वगैरे देवता ग्रहण करीत नाहीत. प्रस्थल, मद्र, गांधार, आरट्ट, खस, वसाति, सिंधुसौवीर, ह्या देशांतील सर्व लोक बहुधा अतिशय निंघ आचरणाचे असतात.

अध्याय पंचेचाळिसावा.

—:—

कर्ण व शल्य यांचा संवाद.

कर्ण म्हणाला:—शल्य, माझ्या बोलण्याकडे नीट लक्ष दे. मी तुला फिरून जें कांहीं सांगत आहे, तें एकाग्र चित्तानें ऐक. पूर्वी आमच्या घरीं एक ब्राह्मण पाहुणा आला होता. तो आमच्या देशांतील आचारविचार पाहून मोठा संतुष्ट झाला व म्हणाला, “ मी हिमालय पर्वताच्या शिखरावर एकटाच पुष्कळ दिवस राहिलों; आणि नंतर, ज्यांत नानाविध धर्म प्रचलित आहेत असे बहुत देश पाहिले. पण माझा समज असा आहे कीं, ह्या ठिकाणच्या प्रजा कोणत्याही प्रकारचें धर्मविरुद्ध कृत्य करीत नाहीत. सर्वांचें मत असें आहे कीं, वेद-

पारग ब्राह्मण जे नियम बाळून देतात तोच धर्म होय. नानाविध देशांतून प्रवास करितां करितां मी वाहीक देशांत प्राप्त झालों आणि तेथें ऐकिलें कीं, वाहीक देशांत मनुष्य प्रथम ब्राह्मण बनतो, नंतर तो क्षत्रिय होतो, त्यानंतर तो वैश्य होतो, मग तो शूद्र बनतो आणि मग तो नापित होतो; ह्याप्रमाणें तो नापित झाला तरी पुनः ब्राह्मण होतो आणि ब्राह्मण झाल्यावर त्याचाच पुढें गुलाम होतो! एकाच कुळांत एक ब्राह्मण व त्याचे इतर बंधु मनास वाटेले तें कर्म करणारे हीनजातीचे बनतात ! गांधार, मद्रक आणि वाहीक हे लोके अगदीं अल्पबुद्धीचे आहेत. सर्व पृथ्वी हिंडल्यानंतर मी वाहीक देशांत गेलों, तेव्हां मला सर्व पृथ्वीवर जी गोष्ट आढळली नाही ती तेथें आढळली. त्या देशांत मला सर्वत्र धर्मसंकर आढळून आला ! ”

वा शल्या, मी तुला आणखी कांहीं जें सांगतों तें नीट श्रवण कर. वाहीकांच्या निंदेनें भरलेला असा हा इतिहास मला एका दुसऱ्या ब्राह्मणापासून कळला आहे. पूर्वी आरट्ट देशांत एक साध्वी रहात असे, एके समयी चोरट्यांनीं तिचें हरण करून तिच्याशीं अनाचार केला. तेव्हां तिनें त्या चोरट्यांना शाप दिला कीं, “ सभर्तृक स्त्रीचें पातिव्रत्य ज्या अर्षीं तुम्हीं नष्ट केलें, त्या अर्षीं तुमच्या कुळांतील स्त्रिया वेश्या होतील ! नराधमहो, ह्या घोर पातकापासून तुमची सुटका होणार नाही ! ” ह्याप्रमाणें तें शापवृत्त निवेदन केल्यावर तो ब्राह्मण पुढें झणाला, “ ह्यामुळेच आरट्ट देशांत बहिणीच्या मुलांना वारसाचा हक्क प्राप्त होतो व पुत्रांना तो प्राप्त होत नाही. कुरु, पंचाल, शाख्य, मत्स्य, नैमिष, कोसल, काश, पौंड्र, कालिंग, मागध, चेदि ह्या देशांतील लोक महाभाग्यवान् असून ह्यांस सनातन धर्माचें यथार्थ ज्ञान आहे. चोहोंकडे अनीतिमान् लोक आढळतात, पण ते

बहुतकरून वाहीकांच्या इतके दुराचरणी नसतात. मत्स्य, कुरु, पंचाल, नैमिष, चेदि वगैरे प्रमुख देशांतील लोक शाश्वत धर्मांचे परिपालन करितात, परंतु मद्रदेशांतील व पांचनदांतील लोक कुटिल असून धर्माचा लोप मात्र करितात.

शल्या, धर्म व आचरण ह्यांतलें रहस्य जाणणारा तो ब्राह्मण ह्याप्रमाणें बोलल्यानंतर अगदीं स्तब्ध बसला ! शल्या, मद्र, आरट्ट व वाहीक ह्या देशांचा तूं राजा असल्यामुळें त्या देशांतील प्रजांच्या शुभानुभक्तीचा षड्भाग तुझ्या पदरीं पडत असतो, ह्यास्तव त्या प्रजांच्या नीतिमत्तेकडे त्वां लक्ष पुरविलें पाहिजे. प्रस्तुतकालीं तुझ्याकडून त्यांचें योग्य परिपालन घडत नसल्यामुळें सर्वत्र देशभर जो अनाचार प्रवृत्त झाला आहे, त्याचें पातक तुझ्याच मार्यां वसत आहे. जो राजा प्रजांचें रक्षण करितो त्यास प्रजांच्या पुण्याचा अंश प्राप्त होतो; व जो प्रजांचें रक्षण करित नाही त्यास त्यांचें पातक मात्र मिळतें ! शल्या, पूर्वीं सर्व देशांत सनातन धर्माचा जिकडे तिकडे उत्कर्ष व प्रशंसा चालली असतां पांचनद देशांतील धर्मलोप अवलोकन करून पितामह ब्रह्मदेवानें त्या देशाचा अगदीं धिक्कार केला. शल्या, पांचनद देशांतील लोक म्हटले म्हणजे कृतयुगांत सुद्धां अधर्माचरण करणारे; त्या वेळीं सुद्धां त्यांचें वर्तन धर्मबाह्य असून त्यांच्यांत शूद्रांपासून अन्य स्त्रियांच्या ठिकाणीं संतति जन्मास येत असे. तेव्हां ब्रह्मदेवानेंही ज्या धर्माची गर्हा केली, त्या धर्माचा अवलंब करणारा तूं लोकांना धर्मोपदेश करण्यास कसा पात्र होशील ? शल्या, ह्याप्रमाणें पांचनदीय लोकांच्या धर्माची हेलना प्रत्यक्ष ब्रह्मदेवानेंही केली. सर्व भूतलावर वर्णाश्रमधर्म यथास्थित चालले असतां ब्रह्मदेवानें ह्या पांचनदांचा असा उपहास केला.

शल्या; मी तुला आणखी इतिहास निवेदन करितों तो श्रवण कर.

कल्माषपाद नामक राक्षस सरोवरांत बुडत असतां म्हणाला, “ भिक्षा मागणें हें क्षत्रियांना लांछन आहे, व्रतादिकांचा त्याग करणें हें ब्राह्मणांना लांछन आहे, वाहीक लोक हें भूतलाला लांछन आहे व मद्रस्त्रिया हें सर्व स्त्रीजातीला लांछन आहे ! ” शल्या, तो राक्षस बुडत होता तेव्हां त्याला हात देऊन कोणी एका राजानें वर काढून विचारलें, तेव्हां तो झणाला कीं, “ स्लेच्छजाति ही सर्व मनुष्यांना लांछन आहे, औष्टिक (तेल काढणारे लोक) हे स्लेच्छांना लांछन आहेत; षंड हे औष्टिकांना लांछन आहेत, राजपुरोहित हे षंडांना लांछन आहेत, आणि ज्या अर्थीं तूं मला सोडीत नाहीस त्या अर्थीं राजयाजक व याज्य आणि मद्रक ह्यांचें जें लांछन तेंच तुझें लांछन होईन ! ” शल्या, इतकें बोलून त्या राक्षसानें पुढें असेंही झटलें कीं, राक्षस किंवा विषवीर्य ह्यांच्या योगें हत झालेल्या मनुष्यांना हें सिद्ध वचन केवळ उत्कृष्ट औषधच होय. शल्या, पंचाल देशांतील लोक वेदांस फार मान देतात, कौरवेष्य हे धर्मानुष्ठानास फार मान देतात, मत्स्य देशांतील लोक सत्यास फार मान देतात, शूरसेन देशांतले लोक यज्ञयागांस फार मान देतात, प्राच्य देशांतील लोक शूरवृत्तीस फार मान देतात, दाक्षिणात्य लोक धर्मसंग्रहास फार मान देतात, वाहीक हे चौरकर्मास फार मान देतात, आणि सुराष्ट्रांतले लोक संकरवृत्ति चाहातात. कृतघ्नता, परवित्तापहार, मद्यपान, गुरुयत्नीगमन, कठोर भाषण, गोधन, रात्रिभ्रमण, बहिर्गैह व परक्लोपभोग हाच ज्यांचा धर्म त्यांना अधर्म तो कोणता ? अरेरे, अशा त्या आरट्ट व पांचनदीय लोकांना धिक्कार असो ! शल्या; पांचाल,

कुरु, नैमिष व मत्स्य ह्या देशांतील लोक धर्म जाणतात, आणि उदीच्य, आंगक व मागध हे लोक फार प्राचीन काळापासून सनातन धर्माचे परिपालन करणाऱ्या लोकांचे अनुकरण करितात. अग्निप्रमुख देवांनी पूर्व दिशेचा आश्रय केला आहे, शुभ कर्म करणाऱ्या यमाने रक्षिलेल्या दक्षिण दिशेचा आश्रय पितरांनी केला आहे, सुरांचा प्रतिपालक बलिष्ठ असा जो वरुण त्याने पश्चिम दिशेचा आश्रय केला आहे, आणि भगवान् सोम ब्राह्मणांसह उत्तर दिशेचे रक्षण करीत आहे. त्याप्रमाणेच राक्षस व पिशाच हे नगाधिराज हिमवानाचे आणि गुह्यक गंधमादन पर्वताचे रक्षण करीत आहेत. शल्या, वाहीकादि देशांचे रक्षण करण्यास कोणीही विशिष्ट देवता तत्पर आहे, असे नाही. भगवान् विष्णु हा सर्वत्र प्राण्यांचे रक्षण करितो, ह्यास्तव वाहीक वगैरे देशांचेही तो निश्चय करून रक्षण करीत आहेच; पण ह्या कार्यासाठी विशिष्ट देवता उद्युक्त नसल्यामुळे वाहीकादिक लोकांचा अधिकार फारच गौण होऊन ते अगदीं मूर्ख बनले आहेत. शल्या, मागध लोकांना केवळ चिन्हांवरून एखादी गोष्ट समजते; कोसल लोकांना एखादी गोष्ट नीट समजण्यास ती प्रत्यक्ष पहावी लागते; कुरु व पंचाल ह्या देशांतील लोकांना एखादी गोष्ट अर्धवट सांगतांच समजते; शाल्वांनी सविस्तर सांगितल्याशिवाय कांहींच समजत नाही; आणि पर्वतावर राहणारे लोक शिबि लोकांप्रमाणे सर्वतोपरी प्रतिमंदच होत ! शल्या, यवन हे सर्वज्ञ आहेत; शूर तर त्यांहूनही अधिक ज्ञाते आहेत; स्लेच्छ हे स्वतःच्या मताने जे उचित दिसले ते करितात; आणि इतर लोक, उचित अशी जी गोष्ट त्यांना सांगावी तितकी मात्र करितात. वाहीक लोकांना हिताची गोष्ट सांगितली असता ती मुळीच मान्य होत नाही

आणि मद्रक तर ह्या सर्वांच्या पलीकडे गेलेले आहेत ! शल्या, तुझी स्थितिही अशाच प्रकारची आहे; सर्व पृथ्वीवर मद्रक हे अतिशय नीच होत. मद्यपान, गुरुस्त्रीगमन, भ्रूणहत्या व परधनापहार हा ज्यांना विहिताचार वाटतो, त्यांना अनाचार तो कोणता ? असो; अशा त्या आरट्ट व पांचनद देशांतील लोकांना धिक्कार असो ! शल्या, ह्या माझ्या सर्व म्हणण्याचा विचार करून निमूट बस. ह्यावर आतां उलट भाषण करू नको. आधीं तुला वधून मग कृष्णाजुनांना वधण्याची पाळी मला येऊ नये !

शल्य ह्याणाला:—कर्णा, ज्या देशाचा तू अधिपति आहेस, त्या अंग देशांत दुःखितांचा त्याग करणे व बायकामुलांचा विक्रय करणे ह्या गोष्टी प्रचलित आहेत. रथ व अतिरथ ह्यांचा वृत्तांत सांगत असतां भीष्माने जे कांहीं तुला सांगितले त्याचा विचार करून तू आपले दोष मनांत आण आणि क्रोध सोडून दे. कर्णा, सदाचरणी ब्राह्मण, सदाचरणी क्षत्रिय, सदाचरणी वैश्य, सदाचरणी शूर आणि सदाचरणी स्त्रिया सर्वत्र असतात. दुसऱ्याची निंदा करण्यांत सुख मानणारे, दुसऱ्याला पीडा करणारे, आणि विषयांत दंग असणारे लोकही सर्वत्र असतात. दुसऱ्याचे दोष वर्णन करून सांगण्यांत प्रत्येकजण सदासर्वकाळ कुशल असतो. कोणालाही स्वतःचा दोष कळत नाही, आणि जरी तो कळला तरी त्यापासून त्याला वाईट वाटत नाही. आपल्या धर्माला अनुसरून वर्तन करणारे राजे सर्वत्र असतात व ते दुःशील मनुष्यांचा सर्वत्र निग्रहही करितात, आणि धर्मशील लोकही सर्वत्र असतात. कर्णा, देशांत सामान्यतः सर्वत्र लोक अनाचार करितात असें कोठेही घडत नाही. ज्यांचे आचरण देवापेक्षांही श्रेष्ठ असे सत्पुरुषही सर्वत्र असतात ! संजय सांगतो:—राजा, नंतर दुर्योधनांने

कर्णाळ मित्रमावाने दोन गोष्टी सांगितल्या, शल्याचीही हात जोडून प्रार्थना केली, आणि त्यांचा जो बाळलह चालला होता त्याचे निवारण केले. ह्याप्रमाणे दुर्योधनाने निवारित केल्यावर कर्ण पुढे कांहींएक बोलला नाही व शल्याही शत्रूच्या अभिमुख झाला. मग कर्णाने मोठ्या आनंदाने 'शल्या, रथ चालू दे' अशी पुनः शल्याला सूचना केली.

अध्याय शेचाळिसावा.

—०:—

व्यूहरचना.

संजय सांगतो:—नंतर, हे भरतश्रेष्ठा, शत्रूच्या सैन्याला दाद देणार नाही असा मोठा बळकट व लोकोत्तर व्यूह पांडवांनी रचिला असून धृष्टद्युम्न हा त्याचे संरक्षण करित आहे, असे कर्णाच्या दृष्टीस पडले. ते पाहून, शत्रूला ताप देणारा तो महायोद्धा कर्ण क्रोधाविष्ट होऊन जण काय थरथर कांपत कांपत सिंहासारखी गर्जना करित पांडवांवर चालून गेला. राजा, त्या वेळी त्या सिंहादाने, रथांच्या दणदणाटाने व रणवाद्यांच्या घोषाने पृथ्वी जणू काय हादरून जाऊन कांपू लागली! धृतराष्ट्रा, मग कर्णानेही पांडवांच्या व्यूहाचा भेद करण्यास योग्य असा दुसरा व्यूह सिद्ध केला. आणि इंद्राने जसा दैत्यांचा मोड करून टाकिला, तसा त्याने पांडवसैन्याचा मोड करून युधिष्ठिरावर बाणवृष्टि चालविली व त्यास डाव्या बाजूला सारिले!

धृतराष्ट्राने विचारले:—संजया, पांडवांकडील व्यूहांत धृष्टद्युम्नादिक प्रबळ योद्धे व भीमसेनादिक पांडव रक्षणार्थ सिद्ध असता त्यांच्याशी टक्कर देण्यास कर्णाने दुसरा व्यूह केला तो कसा बरे? पांडवांकडील सर्व योद्धे महाबनुर्षर असून ते प्रत्यक्ष देवांनाही अजिंक्य

असे होते; मग त्यांच्यावर वरचढ असा व्यूह कर्णाळा कसा करितां आला? संजया, आपल्या सैन्याचे पक्ष व प्रपक्ष कसे बनविले होते? ते पक्षप्रपक्ष बनविल्यावर त्या सैन्याची यथायोग्य योजना कसकशी केली होती? त्याप्रमाणेच पांडवांनीही माझ्या सैन्याशी युद्ध करण्याकरितां आपल्या सैन्याची रचना कशी केली होती? पुढे अत्यंत भयंकर युद्ध सुरू झाले तें कसे? आणि कर्ण हा युधिष्ठिरावर बाणवृष्टि करित चालून गेला, त्या वेळी अर्जुन कोठें होता? संजया, अर्जुन समीप असतां युधिष्ठिरावर चालून जाण्यास कोण समर्थ होईल? ज्या महावीराने पूर्वी एकद्वाने खांडववनांत सर्व प्राण्यांना जिंकले, त्याच्याशी युद्ध करून जिवंत राहाण्याची इच्छा करणारा कर्णाशिवाय दुसरा कोणता वीर आहे बरे?

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, तुला व्यूहरचना कशी केली होती, अर्जुन कशा प्रकारे युद्धास प्राप्त झाला, आणि उभय सैन्यांतील सैनिकांनी आपआपल्या सेनानायक भूपतींच्या आसमंतात उभे राहून युद्ध कसे केले, ते मी आतां सांगतो. शारद्वत कृप, वेगवान् मागध व सात्वतकुलोत्पन्न कृतवर्मा ह्यांनी उजवे बाजूचा आश्रय केला होता. त्यांच्यापलीकडे महारथ शकुनि व उलूक हे हातांत देदीप्यमान प्राप्त असलेल्या गांधार देशांतील बलवान् घोडेस्वारांनिशी कौरवसेनेचे संरक्षण करित होते. शिवाय त्यांच्यासभवेत अजिंक्य अशा पार्वतीय (पर्वतावर राहाणाऱ्या) सैनिकांचा जणू काय टोळधाडीप्रमाणे असंख्य जमाव असून तो पिशाचांप्रमाणे भयंकर दिसत होता. डाव्या बाजूस, संग्रामांतून माघार न घेणाऱ्या चौतिस हजार संशप्तकांचे रथ होते आणि त्या युद्धकुशल महायोद्ध्यांसह तुझे पुत्र कृष्णार्जुनांचा वध करण्याच्या इच्छेने पांडवांशी लढण्यास

तयार होते. संपाप्तकांच्यापलीकडे कांबोज, शक व यवन होते. ते सर्व योद्धे कर्णाच्या आज्ञेप्रमाणे आपापल्या रथांत अधिष्ठित होऊन घोडेस्वार व पावदळ ह्यांसह युद्धार्थ सिद्ध होत्साते महाबल कृष्ण व अर्जुन ह्यांस संग्रामार्थ आह्वान करित होते. राजा धृतराष्ट्रा, सैन्याच्या मध्यभागी सेनापति कर्ण हा चित्रविचित्र रंगांचे, चिल्लखत घालून व बाहुभुषणे आणि माळ धारण करून सैन्याच्या अग्रभागाचे रक्षण करित असतां पुनःपुनः प्रत्येचेचे आकर्षण करितांना शोभत होता; आणि त्याच्या सभोवती त्याचे पुत्र सक्षुब्ध होऊन कौरवसैन्याचे रक्षण करण्यांत निमग्न होते. सैन्यसमुदायांनी परिवृत असलेला व एका मोठ्या बलाढ्य हत्तीवर आरूढ झालेला महाबाहु दुःशासन व्यूहाच्या पृष्ठभागी होता. त्याची कांति सूर्याप्रमाणे किंवा अग्नीप्रमाणे झळाळत होती. त्याचे नेत्र पिंगट वर्णाचे असून त्याचे रूप मोठे आल्हादकारक होते. धृतराष्ट्रा, दुःशासनाच्या मागे स्वतः राजा दुर्योधन होता. त्याच्या भोंवताली चित्रविचित्र अस्त्रे व चिल्लखते धारण करून त्याचे भ्राते आणि अत्यंत वीर्यशाली मद्रक व केकयवीर त्याच्या संरक्षणार्थ सिद्ध होते. त्यामुळे देवांनी परिवेष्टित असलेल्या शतक्रतु इंद्राप्रमाणे तो शोभत होता ! त्या रथसैन्याच्या पाठीमागे अश्वत्थामा व कौरवांकडील दुसरे प्रबळ महारथ असून त्यांच्यामागे शूर स्लेच्छ व नेहमी मद्रोन्मत्त असलेले व तोयवृष्टि करणाऱ्या मेघांप्रमाणे मदवृष्टि करणारे असे मोठमोठे हत्ती होते. त्या हत्तींवर ध्वजपताका झळकत असून त्यांवर आरूढ झालेल्या योद्ध्यांच्या हातांत दिव्य आयुधे असल्यामुळे जणू काय द्रुमवंत पर्वतांप्रमाणेच ते हत्ती शोभत होते. आणि ते हत्ती समरांगणांत भ्रमण करित असतां त्यांचे पाद-

रक्षण करण्यासाठी सहस्रावधि शूर व जिवावर उदार झालेले पदाति वीर हातांत कुऱ्हाडी व तरवारी घेऊन तत्पर होते. सरांश, राजा, त्या व्यूहांत गज, अश्व व रथ हीं जीं सेनेचीं तीन मुख्य अंगें तीं सर्व बलिष्ठ असल्यामुळे देव किंवा दानव ह्यांच्या व्यूहाप्रमाणे तो कौरवसेनेचा व्यूह अत्यंत शोभत होता ! राजा, बृहस्पतीच्या मताप्रमाणे रणधुरंधर कर्णाने रचिलेला तो महाव्यूह जणू काय नाचतच असून त्याच्या योगे शत्रूसैन्याला मोठी भीति उत्पन्न झाली. त्या सैन्याच्या पक्षप्रक्षांतून युद्धास आतुर झालेले महान् महान् हत्ती, घोडे व रथ हे वर्षाकालारंभीच्या बगळ्यांच्या समूहाप्रमाणे जेव्हां एकसारखे बाहेर उसळूं लागले, तेव्हां त्या सैन्याच्या विनीवर कर्ण आहे असे पाहून शत्रुसंहारक महावीर अर्जुनाला युधिष्ठिर राजा म्हणाला, “ हे अर्जुना, समरभूमीवर कर्णाने सैन्याचा हा महाव्यूह सिद्ध केला आहे तो पहा. पक्षप्रक्षांनी युक्त असलेली ही सेना फारच पराक्रमी दिसत आहे. ह्यास्तव, हें अवाढव्य रिपुसैन्य आपला पराभव करणार नाही अशी तोड काढ. ” धृतराष्ट्रा, धर्मराजाचे भाषण श्रवण करून अर्जुन त्याला हात जोडून म्हणाला, “ महाराज, आपण म्हणतां तसा सर्व प्रकार आहे खरा; आतां ह्या व्यूहाचा घात करण्यासाठीं जें उचित तें मी करितों. ह्या व्यूहाचा नाश करण्यास प्रधान वीरांचा वध करणे अवश्य होय, म्हणून आतां मी त्यांचा वध करितों. ”

युधिष्ठिर म्हणाला:—अर्जुना, तर मग स्वतः तूं कर्णावर चालून जा; भीमसेन दुर्योधनावर चालून जाईल. नकुल वृषमेनावर चालून जाईल; सहदेव शकुनीवर चालून जाईल; शतानीक दुःशासनावर चालून जाईल; शिनिपुंगव सात्यकि हार्दिक्यावर चालून जाईल; धृष्टद्युम्न अश्वत्थाम्यावर चालून जाईल; मी स्वतः कृपा-

वर चालून जातो; द्रौपदीचे पुत्र बाकीच्या धर्तारांवर चालून जातील; आणि माझ्या पक्षाचे उरलेले वीर आपआपल्या प्रतिस्पर्धी वीरांवर चालून जातील!

संजय सांगतो:—धर्मराजाचें भाषण ऐकून धनंजयानें 'बरें आहे' असें म्हटलें आणि आपल्या सैन्यसमुदायांस धर्मराजाच्या इच्छे-नुरूप शत्रुसैन्यावर चाल करून जाण्यास आज्ञा दिली व तो आपण स्वतः सैन्याच्या बिनीवर झाला. राजा, त्या समयीं ते कृष्णा-र्जुन अगदीं आद्य अशा रथांत अधिष्ठित होऊन शत्रूवर चाल करून गेले. धृतराष्ट्रा, तो रथ म्हणजे प्रत्यक्ष मूर्तिमंत आद्य अग्निचक्र होय. कारण, सर्व विश्वाचें योगक्षेम चालविणारा जो पुरातन अग्नि, तो ब्रह्मदेवाच्या मुखापासून उत्पन्न झाला असून तोच जलाधीश सोमरस होय. देव आणि ब्राह्मण ह्यांच्या मते हा जलाधीश सोमच पुढें अश्वरूप झाला आणि त्यानें आपली शक्ति चार ठिकाणीं विभागून चार अश्वार्चीं रूपें घेतलीं व ह्याप्रमाणें रथरूप बनून त्यानें क्रमानें ब्रह्मदेव, ईशान, इंद्र व वरुण ह्यांस पूर्वीं वाहून नेलें. असो; ह्याप्रमाणें त्या आद्य रथांतून कृष्णार्जुन कर्णावर चालून गेले तेव्हां त्यांचा तो लोकोत्तर रथ आपणा-वर येत आहे असें पाहून शल्य पुनः त्या युद्धदुर्मद कर्णाला म्हणाला, "कर्णा, हा तो अर्जुनाचा रथ आला पहा! ह्या रथाचे अश्व शुभ्र असून ह्यावर कृष्ण हा सारथि आहे! कर्णा, ज्याचा तूं शोध करित आहेस तो हा शत्रुसैन्याचा संहार उडवीत येत आहे.

अप्रमाणें ह्याचें निवारण करण्याला सर्व सैन्यही समर्थ होणार नाही. हा पहा मेघ-गर्जनेप्रमाणें गंभीर ध्वनि कानीं पडत आहे! निःसंशयपणें हे वामुदेव व धनंजयच असले पाहिजेत! हा पहा धुरळा कसा उडून त्यानें

अगदीं अंतरिक्ष व्यापून टाकिलें. जणू काय चक्रांच्या धावांनीं चिरली गेल्यामुळें ही धरणी थरथरां कांपत आहे! हा पहा तुझ्या सैन्याच्या आसमंतात सोसाट्याचा वारा सुटला! हे पहा हिंसक पशु मोठ्यानें आरडूं लागले! मृग भयंकर आक्रोश करूं लागले! कर्णा, पहा हा कसा घोर व भीतिप्रद केतु मेघपटलाप्रमाणें सूर्य-विंबाला झांकून उभा आहे! हें दुश्चिन्ह अवलोकन करून तर माझ्या अंगावर कांटाच उभा रहात आहे! त्याप्रमाणेंच हे मोठमोठले उन्मत्त वाघ व दुसरे नानाविध पशूंचे कळप-च्या कळप सूर्याकडे टौकारून पहात आहेत! तसेंच हे हजारों घोर कंकपक्षी व गिधाडें जमलीं आहेत पहा! हे सर्व पक्षी एकमेकांकडे पहात असून जणू काय एकमेकांशीं बोलतच आहेत! त्याप्रमाणेंच, हे कर्णा, तुझ्या रथावरील हीं मोठमोठीं रंगीत चामरें जळूं लागलीं आणि ध्वज कांपूं लागला! तसेंच तुझ्या ह्या महान् रथाला जोडलेले मोठमोठाले व महावेगवान् सुंदर अश्व जणू काय अंतरिक्षांत गरुडाप्रमाणें उड्डाण करण्यास समर्थ आहेत, तरी त्यांना कांपरें भरलें! अस्तु. कर्णा, खचित ह्या दु-चिन्हांवरून मला वाटतें कीं, आज रणांगणांत सहस्रावधि राजे मृत्युमुखी पडतील! कर्णा, हा पहा शंखांचा घोर ध्वनि उठून अंगावर कांटा उभा राहिला! व त्याप्रमाणेंच आनकांच्या, मृदंगांच्या, बहुविध बाणांच्या, मनुष्ये, अश्व व गज ह्यांच्या आणि तलत्रावर बसणा-ऱ्या प्रत्येकांच्या फटकांच्यांच्या शब्दांनीं सर्व दिशा दुमदुमून गेल्या! कर्णा, ह्या पहा मोठ-मोठ्या वीरांच्या रथांवर सोन्यारुप्यांच्या भर-जरी वस्त्रांच्या पताका झळकत आहेत, त्यां-वर कारागिरांनीं सोन्याचे चंद्र, सूर्य व तारे काढिले असून त्यांस घांगऱ्या लाविलेल्या आहे-त, आणि वाऱ्यानें हालत असल्यामुळें त्या

चित्रविचित्र रंगांच्या पताका जणू काय मेघ-
मंडळावर चमकणाऱ्या विद्युल्लतेप्रमाणें शोभत
आहेत ! कर्णा, त्याचप्रमाणें वाऱ्यानें फड-
फडणाऱ्या ध्वजांकडे पहा; आकाशांत देवांचीं
विमानें तरंगतांना दिसतात, त्याप्रमाणें ते
रथांवर दिसत आहेत ! कर्णा, महात्म्या पांचा-
लांचे हे सपताक रथ अवलोकन कर; त्या-
प्रमाणेंच हा विजयशाली वीर कुंतीपुत्र अर्जुन
तुझ्यावर चाल करून येत आहे तो पहा; हा
पहा ह्या अर्जुनाच्या ध्वजावर शत्रूंना भीति
उत्पन्न करणारा भयंकर मारुति मोठ्या
थाटानें बसला असून तो आपल्याकडे सर्वांचें
चित्त आकर्षित आहे ! हें पहा बुद्धिवान्
कृष्णाचें चक्र; त्याप्रमाणेंच गदा, शार्ङ्गधनुष्य,
शंख आणि वक्षस्थळीं अत्यंत शोभणारा कौ-
स्तुभ मणि ! हा पहा शार्ङ्गगदाधर अतिवीर्य-
वान् वासुदेव वायुवेगानें चालणाऱ्या शुभ्र
अश्वाना चालवीत इकडे येत आहे ! हा पहा
सव्यसाची अर्जुनाच्या गांडीव धनुष्याच्या
प्रत्यंचेचा टणत्कार ऐकू येऊं लागला ! हे पहा
अर्जुनानें शिताफीनें मारलेले तीक्ष्ण बाण शत्रू-
चें कंदन करू लागले ! हीं पहा आरक्त, विशाल
व विस्तृत अशा नेत्रांनी युक्त व मुख पूर्ण-
चंद्राप्रमाणें शोभणारी अशी पलायन न कर-
णाऱ्या रांजांचीं मस्तकें सर्वत्र पडलीं असून,
त्यांनीं समरभूमि गच्च भरून गेली आहे !
आणि त्याप्रमाणेंच हे हातांत आयुधें घेऊन
शत्रूवर चालून जाणाऱ्या प्रबळ वीरांचे मुवा-
सिक अनुलेपनें फांसलेले द्वारांच्या अडसरां-
प्रमाणें प्रचंड बाहु आयुधांसह तुटून पडत
आहेत पहा ! त्याचप्रमाणें, ज्यांचे नेत्र व
जिव्हा नष्ट झाल्या आहेत असे घोडे व त्यां-
वरील स्वार समरांगणांत पडत आहेत व
पडले आहेत ते अवलोकन कर ! तसेंच हे
पर्वताच्या शिखरांप्रमाणें महान् महान् हत्ती

अर्जुनाच्या अस्त्रप्रहारांनीं छिन्नभिन्न होऊन
भूमीवर कोसळतांना जणू काय पर्वतांचीं शि-
खरेंच कोसळून पडत आहेत असा भास
होतो ! आणि ज्यांतील राजे हत झाले आहेत
असे गंधर्वनगरांप्रमाणें मोठमोठाले रथ घडा-
घड खालीं पडतांना पाहिले म्हणजे जणू काय
हीं क्षीणपुण्य झालेल्या देवांचीं विमानेंच कोस-
ळत आहेत असें दिसतें ! कर्णा, नानाविध
पशूंच्या सहस्रावधि कळपांना ज्याप्रमाणें सिंह
व्याकूळ करून सोडितो, त्याप्रमाणें तुझे हें
सैन्य अर्जुनानें अतिशय व्याकूळ करून टाकिलें
आहे पहा ! हें पहा तुझे चतुरंग सैन्य पांडवां-
वर तुटून पडलें आहे, पण त्यावर उलट चाल
करून पांडव त्याचा नाश करीत आहेत ! हा
पहा मेघांनीं आच्छादिलेल्या सूर्याप्रमाणें अर्जुन
आतां दिसेनासा झाला ! फक्त त्याच्या ध्वजा-
चें अग्र दिसत आहे व प्रत्यंचेचा शब्द ऐकू
येत आहे ! कर्णा, ज्याची तूं चौकशी करीत
आहेस ती शत्रूंचा अर्जुन शत्रूंचा
विजय उडवितेना तुझ्या भावे दृष्टीस पडेल !
आज तुला हे शत्रूंचे शत्रुसैन्य पुरुषव्याघ्र
भास्कर नेत्रे केलें व एक रथांत आरूढ
झालेले दिसते ! शत्रूंचा, ज्याचा सारथि
कृष्ण व ज्याचे धनुष्य गांडीव अशा त्या
अर्जुनाला जर आज तूं वधिलेंस, तर तूं
आमचा राजा होशील ! हा पहा अर्जुन संश-
प्तकांनीं आह्वान केल्यामुळें त्यांच्यावर चाल
करून निघाला ! आतां हा त्यांचें युद्धांत
खचित कंदन करील ! ” राजा धृतराष्ट्रा, ह्या-
प्रमाणें शल्याचें भाषण ऐकून कर्णाला फार
संताप आला व तो शल्याला म्हणाला, “ शल्या,
हा पहा अर्जुन कमा कुद्ध झालेल्या संशप्त-
कांनीं चोहोंकडून घेरून टाकिला ! मेघाच्छा-
दित सूर्याप्रमाणें तो अगदीं अदृश्य झाला !

झाल्या, आतां अर्जुन ह्या षोडशागारांत बुडाल्या म्हणून समज ! ”

शल्य म्हणाला:—कर्णा, वरुणाला उदकानें किंवा अग्नीला इंधनानें कोणी ठार मारील काय ? अथवा वाऱ्याचें निग्रहण किंवा महासागराचें प्राशन कोणी करील काय ? कर्णा, मला अर्जुनाचें सामर्थ्य अशा प्रकारचें वाटतें ! फार कशाला, युद्धांत अर्जुनाला जिंकणें झाल्यास तें इंद्रासहवर्तमान देवांच्यानें किंवा दानवांच्यानहीं होणार नाही ! तुला जर अशी प्रौढी दाखविल्यानें समाधान किंवा सुख वाटत असेल, तर तूं खुशाल तमें कर; पण मी तुला साफ सांगतो कीं, तुझ्या अंगी युद्धांत अर्जुनाला जिंकण्याचें सामर्थ्य नाही. दुसरी एखादी गोष्ट करण्याविषयीं तूं इच्छा धर. कर्णा, जो कोणी अर्जुनाला समरांत जिंकील, तो बाहुबलानें पृथ्वीला उचलील किंवा स्वतःच्या क्रोधाग्नीनें सर्व प्रजा जाळील अथवा स्वर्गांतून देवांना खाली पाडील असें मी मानितों ! पहा, हा महापराक्रमी महाबाहु भीम आपल्या दिव्य कांतीनें झळाळत जणू काय दुसऱ्या मेरु पर्वताप्रमाणेंच उभा आहे ! हा मोठा रागीट व नित्य क्षुब्ध असून रात्रंदिवस वैराचें स्मरण करीत असतो ! हाही कौरवांच्या नाशाची इच्छा करून युद्धांत लढण्यास सिद्ध आहे ! हा पहा महाधर्मनिष्ठ धर्मराज युधिष्ठिर; रणांगणांत ह्याचा पराभव करणें मोठें दुर्घट असून हा शत्रूंचीं स्थानें जिंकून घेण्यांत मोठा पटाईत आहे ! हे पहा नकुलसहदेव जणू अश्विनीकुमारच ! ह्यांना युद्धांत जिंकणें सर्वतोपरी अशक्य होय ! हे पहा द्रौपदीचे पांच पुत्र, जणू पांच पर्वतच होत ! हे सर्व अर्जुनाप्रमाणें शीरकांड असून युद्धासाठी तयार आहेत ! हे पहा धृष्टद्युम्नादिक द्रुपदपुत्र; हे महातेजस्वी, शीरकांड, अभिमानी व खातरीमें शत्रूंना

जिंकणारे आहेत ! हा पहा सप्तद्वार सात्यकि, ह्याच्या अग्नी इंद्राप्रमाणें दुःसह बल असून हा आपल्यावर क्रोधायमान यमाप्रमाणें युद्ध करण्याच्या इच्छेनें धावून घेत आहे ! राजा घृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें कर्ण व शल्य ह्यांचें माषण होत आहे इतक्यांत त्या दोन्ही सेना एकाएकी गंगायमुनांप्रमाणें एकत्र मिळाल्या !

अध्याय सत्तेचाळिसावा.

—:—

संकुलयुद्ध.

घृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, व्यूह करून युद्धार्थें सिद्ध झालेलीं तीं दोन्ही दळे एकमेकांत मिसळल्यानंतर पाथोनें संशप्तकांवर व कर्णानें पांडवांवर कसा हल्ला केला तो प्रकार सविस्तर :

आहेस. संजया, रणेभूमीवर वीर पुरुष जे पराक्रम करून दाखवितात, ते ऐकूं लागलों म्हणजे माझी तृप्तिच कधीं होत नाही.

संजय सांगतो:—राजा, तुझ्या पुत्राचें दुष्ट आचरण हें ह्या सर्व युद्धाच्या बुडारी आहे. हें लक्षांत ठेविलें पाहिजे. असा; त्या वेळीं शत्रूंचें मोठें अवाढव्य सैन्य युद्धार्थें तयार आहे असें पाहून अर्जुनानें आपल्या सैन्याचा व्यूह सिद्ध केला. त्यांत हत्ती, घोडे, रथ व पायदळ हीं अगदीं ओतप्रोत असून त्या महान् सैन्याच्या बिनीवर धृष्टद्युम्नाची योजना केली होती. ज्याच्या रथाच्या अध्यांचा कर्ण पारवताप्रमाणें होता व ज्याची कांति चंद्रसूर्यांप्रमाणें होती, असा तो पार्षतवीर धृष्टद्युम्न हातांत धनुष्य धारण करून उभा असतां प्रत्यक्ष देहधारी यमाप्रमाणें शोभत होता. युद्धास आतुर झालेले सर्व दौपदीपुत्र त्या पार्षताचें संरक्षण करण्यांत तत्पर होते. त्यांच्या अंगांत दिव्य चिलखतें व हातांत दिव्य आयुधें

असून त्यांचा पराक्रम अगदीं शार्वूल्यप्रमाणें होता. त्यामुळे, चंद्राभोवतीं देदीप्यमान तारागणांचा वेढा असतां, जशी शोभा दिसते, तशी शोभा दिसत होती. पुढें संशप्तकांनीं रणांगणांत आपली सेना व्यूह करून उभी केलेली आहे असें नेव्हां अर्जुनांनै पाहिलें, तेव्हां तो क्रोधायमान होऊन गांडीव धनुष्यानें बाणांची वृष्टि करीत त्या सेनेवर चालून गेला आणि अर्जुनास ठार मारण्याच्या इच्छेनें संशप्तकही अर्जुनावर धावून आले. धृतराष्ट्र, संशप्तक हे विजय मिळविण्याच्या दृढनिश्चयानें युद्धार्थ सिद्ध झाले होते; मेलें तरी बेहत्तर, यण रणांतून म्हणून माघारें फिरावयाचें नाहीं, अशी त्यांची शपथच होती; आणि त्यांच्या सैन्यांत नर, अश्व, मत्त गज व रथ ह्यांचा अतिशयच भरणा होता. शूर वीरांच्या समुदायांनीं व सेनापतीनें युक्त अशा त्या संशप्तकांच्या सैन्यानें तत्काल अर्जुनावर बाणवर्षाव करण्यास प्रारंभ केला. नंतर त्यांचें व अर्जुनाचें तुमुल युद्ध झालें. तशा प्रकारचें घोर युद्ध अर्जुन व निवातकवच ह्यांमध्ये मात्र झालें आमच्या ऐकिवांत आहे. त्या समयीं शत्रूंचे रथ, अश्व, ध्वज, गज, पदाति, बाण, धनुष्ये खड्गे, चक्रे, कुन्हाडी, आयुधांसहित उभारलेले भुज, नानाप्रकारचीं शस्त्रास्त्रे आणि महत्त्वाविधि मस्तकें अर्जुनानें तोडून समरांगणांत पाडिली; आणि त्या वेळीं अर्जुनाचा रथ सैन्यरूप महावर्तामध्ये सांपडून जणू काय पाताळाच्या तळींच गेला असें वाटून संशप्तकांनीं मोठमोठ्यानें वीरश्रीच्या आरौळ्या देण्यास प्रारंभ केला. इतक्यांत शत्रूंचा जो वेढा पडला होता त्याचा पुनः भेद करून शत्रूसैन्याचा संहार करीत अर्जुन पुढें झाला आणि त्यानें क्रुद्ध झालेल्या रुद्राप्रमाणें उजवीकडे व घुब्यांशीं शत्रूसैन्यरूप पशूंना ठार मारण्याचा तडाखा मुरू केला ! राजा, नंतर

पांचाल, वेदि व सृंजय ह्यांचा तुझ्या सैन्यद्वारां मोठा दारुण संग्राम झाला. कृष्ण, कृतवर्मा व शकुनि हे आपल्याबरोबर युद्धार्थ उतावीळ झालेलीं प्रक्षुब्ध सैन्ये घेऊन पांडवांच्या रथसैन्यावर प्रहार करण्याच्या उद्देशानें कोसल, काश्य, मत्स्य, कारुष, केकय आणि महाराष्ट्र शूरसेन ह्यांच्यावर मोठ्या आवेशानें तुदून पडले; आणि मग त्या दोन्ही दळांचें अत्यंत अनर्थकारक असें घोर युद्ध होऊन त्यांत बहुत क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र योद्धे धारातीर्षी पतन पावून त्यांचे प्राण, देह व पातकें ह्यांचा नाश झाला आणि त्यांस पुण्य व यश ह्यांची प्राप्ति होऊन ते स्वर्गास गेले ! हे भरतर्षभा, इकडे पांडव, पांचाल, वेदि व सात्यक ह्यांजबरोबर कर्ण निकराचें युद्ध करीत असतां आपले भ्राते व कौरवांकडील दुसरे महान् महान् योद्धे व महारथ मद्रकयांसह दुर्योधन राजाकर्णाच्या साहाय्यार्थ आला व त्यानें कर्णाचें उत्तम प्रकारें रक्षण केलें. त्या समयीं कर्णानें तीक्ष्ण बाणांच्या वर्षावानें पांडवपक्षाच्या त्या प्रचंड सैन्याला वखहीन, आयुधहीन व प्राणहीन केलें आणि मोठमोठ्या रथ्यांना ठार मारून युधिष्ठिरावर चाल केली व स्वर्गलोक आणि दिव्य यश ह्यांची जोड करून घेऊन त्यानें कौरवसैन्यांत जिकडे तिकडे आनंदीआनंद करून सोडिला ! धृतराष्ट्र, मनुष्ये, अश्व व गज ह्यांचा संहार करणारा कौरव व सृंजय ह्यांमध्ये झालेला हा संग्राम केवळ देवदानवांच्या संग्रामाप्रमाणें अत्यंत भयंकर झाला !

अध्याय अठेचाळिसावा.

—:—

संकुलयुद्ध.

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, कर्ण हा पांडवांच्या सैन्यांत प्रवेश करून त्याचा नाश करीत

असतां दुर्योधनाची व त्याची गांठ पडल्यावर मग त्याने काय केले तें मला सविस्तर सांग. संजया, पांडवांकडील कोणकोणत्या योद्ध्यांनी कर्णाचे निवारण केले व कर्णाने कोणकोणत्या वीरांचें मर्दन करून युधिष्ठिरावर बाण सोडिले, तें मला निवेदन कर.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, धृष्टद्युम्न-प्रमुख पांडवांकडील वीर युद्धार्थ सिद्ध आहेत असे पाहून कर्णाने तत्काळ त्या शत्रुकर्षक पांचाल वीरांवर हहा केला. तेव्हां आपल्यावर कर्ण झपाट्याने चाल करून येत आहे असे अवलोकन करून. हंस जसे महासागरावर जातात तसे ते महद्युतिमान् पांचाल वीर त्या महात्म्या कर्णावर गेले. नंतर महस्त्रावधि शंखांचा हृदयभेदक ध्वनि दोन्ही दळांतून बाहेर पडूं लागला; त्याप्रमाणेंच दुंदुभीचा दारुण शब्द, नानाविध बाणांचे प्रहार, गज व अश्व ह्यांची गर्जना, रथांचा व्रणघणाट व वीरांचा सिंहनाद सुरू होऊन मोठी भीति उत्पन्न झाली ! त्या समयीं पर्वत, वृक्ष व समुद्र ह्यांसुद्धां सर्व धरणी, वायु व मेघ ह्यांसह सर्व आकाश आणि सूर्य, चंद्र, ग्रह व नक्षत्रे ह्यांसहवर्तमान सर्व अंतरिक्ष भीतीनें अगदीं कंपायमान झाले आहे असें सर्व प्राण्यांस वाटलें व त्यांची धर्बी अगदीं दणाणून गेली ! आणि ज्या प्राण्यांना कमी धैर्य होतें त्यांनीं तर बहुधा पटापटा प्राणच सोडिले ! त्या समयीं कर्ण तर अत्यंतच चव-ताळला आणि त्यानें लागलेच शस्त्र उचलून इंद्रानें जसा असुरसेनेचा संहार उडविला तसा पांडवसेनेचा भयंकर संहार उडविला ! त्या वेळीं तत्काळ कर्णानें पांडवसैन्यांत घुसून त्याजवर एकसारखी बाणवृष्टि चालविली आणि सत्या-हत्तर महान् महान् प्रभद्रक वीरांना धारातीर्थी पाडिले ! नंतर त्या महारथानें आपल्या रथांत ठेवलेले पंचवीस निशित मुपुंग शर

पंचवीस पांचालांवर टाकून त्यांना वधिले आणि त्याप्रमाणेंच शत्रुसैन्यांचें हृदय विदारण करणाऱ्या सुवर्णपुंख बाणांची वृष्टि करून शतावधि व महस्त्रावधि चेदि वीर ठार मारिले ! राजा, अशा प्रकारें कर्ण युद्धामध्ये अमानुष पराक्रम गाजवित असतां पांचालांच्या रथसमुदायांनी त्यास गराडा घातला. तेव्हां कर्णानें पांच दुःसह बाण नेमके मारून रणांगणांत भानुदेव, चित्रसेन, सेनाबिंदु, तपन व शूरसेन ह्या पांच पांचाल वीरांना वधिले ! राजा, ह्याप्रमाणें शूर पांचालांचा कर्णानें सायकांची वृष्टि करून घोर संहार आरंभिला, तेव्हां पांचालसैन्यांत महान् हाहाकार झाला ! नंतर त्या घोर संग्रामांत पांचालांच्या दहा रथांनी कर्णाला आणखी वेडा घातला; त्या समयीं कर्णानें बाणांनी त्यांचाही तत्काळ विध्वंस उडविला. तेव्हां कर्णाच्या रथचक्रांचे रक्षक कर्णपुत्र सुषेण व सत्यसेन हे जिवाची आशा न धरितां मोठ्या आवेशानें लडूं लागले. त्याप्रमाणेंच कर्णाचा ज्येष्ठ पुत्र महारथ वृषसेन स्वतः कर्णाच्या रथाच्या पृष्ठभागी उभा राहून कर्णाचे संरक्षण करूं लागला. ह्याप्रमाणें कर्ण हा पांडवांच्या सैन्याचा संहार उडवूं लागला असतां धृष्टद्युम्न, सात्याकि, भीमसेन, द्रौपदीपुत्र, जनमेजय, शिखंडी, मोठमोठे प्रभद्रक वीर, चेदि, केकय, पांचाल, नकुलसहदेव आणि मत्स्य हे सर्व चिलखते घातलेले वीर राधेयास ठार मारण्याच्या इच्छेनें त्यावर चाल करून गेले; आणि पाव-साळ्यांत पर्वतावर मेघ जलवृष्टि करितात तद्वत त्यांनीं कर्णावर नानाविध आयुधांचे प्रहार व बाणांची वृष्टि केली. त्या समयीं, पित्याचें संरक्षण करण्याकरितां कर्णाचे पुत्र व तुझ्या पक्षाचे दुसरे वीर ह्यांनीं पांडवसैन्याचें निवारण केले. सुषेणानें भीमसेनाचें धनुष्य भल्ल बाणानें छेदिलें व त्याच्या हृदयाचा सात नाराच

बाणांनीं वेध करून मोठ्यानें आरोळी मारिली. तेव्हां महाप्रतापी भीमानें दुसरें सुदृढ धनुष्य सज्ज केलें व त्याच्या योगें सुषेणाचें धनुष्य तोडून मोठ्या क्रोधानें त्याजवर दहा बाण टाकिले व जणू काय बाणवर्षाव करीत तो नाचूं लागला ! त्या वेळीं भीमानें तत्काळ कर्णाला ज्याहात्तर निशित बाणांनीं विधिलें आणि भानुसेन नामक कर्णपुत्रावर दहा बाण सोडून त्याचे अश्व, सारथि, आयुध व ध्वज ह्यांसह त्याचा शिरच्छेद करून त्यास त्याच्या मित्रांच्या समोर मध्यभागी भूमितलावर पाडिले. त्या प्रसंगी क्षुर बाणानें छिन्न केलेलें व चंद्र-विंबाप्रमाणें कांतिमान् दिग्गारें तें भानुसेनाचें सुंदर मुखकमल जणू काय नुकतेंच नाला-पामून खुडिलें आहे असें भासूं लागलें ! राजा. ह्याप्रमाणें कर्णपुत्राला वधिल्यानंतर भीम पुनः तुझ्या सैन्याला पीडा करूं लागला. त्यानें कृप व हार्दिक्य ह्यांचीं धनुष्ये छिन्नविच्छिन्न करून त्यांनाही अगदीं जर्जर केलें. त्यानें दुःशासनावर तीन व शकुनीवर महा लोखंडी बाण टाकिले आणि उलूक व पतत्रि ह्यांना विरथ केलें. नंतर त्यानें सुषेणावर बाणवृष्टि करून ' तूं आतां मेलामच ! ' अशी मोठ्यानें आरोळी दिली; पण इतक्यांत कर्णानें भीमसेनाचें धनुष्य छेदून त्याला तीन बाण मारिले. मग भीमानें दुसरें धनुष्य धारण करून त्यास उत्तम पेण्यांचा व अत्यंत जलाल असा बाण लाविला आणि तो त्यानें सुषेणावर सोडिला. परंतु आपल्या पुत्राचें रक्षण करावें, ह्या हेतूनें कर्णानें तो बाण छेदून टाकून उलट भीमसेनाचा वध करण्याच्या इच्छेनें त्याजवर ज्याहात्तर तीक्ष्ण शर मर्मस्थळीं मारिले. इकडे सुषेणानें मोठें बळकट धनुष्य धारण करून नकुलाच्या बाहूवर व वक्षस्थळीं पांच बाण सोडिले; तेव्हां नकुलानें सुषेणावर मोठमोठे व

दुःसह असे वीस बाण टाकिले आणि इतकी मोठ्यानें गर्जना केली कीं, त्या गर्जनेनें कर्णही भिऊन गेला ! पण, राजा, त्या महारथ सुषेणानें नकुलावर दहा तीक्ष्णामी शर सोडिले व क्षुरप्र बाणानें त्याचें धनुष्य छेदिलें. तेव्हां नकुल क्रोधानें अगदीं बेफाम झाला व समरांगणांत दुसरें धनुष्य घेऊन त्यानें नऊ बाणांनीं सुषेणाचें निवारण केलें. त्या समयीं त्यानें दशदिशा बाणाच्छादित करून टाकिल्या आणि सारथ्याला ठार मारून सुषेणालाही तीन बाणांनीं विद्ध केलें व त्याच्या सुदृढ धनुष्यावर तीन भल्ल बाण टाकून त्याचेही तीन तुकडे उडविले ! तेव्हां सुषेणाचा क्रोध मनस्वीच वाढला; आणि मग त्यानें लागलेंच दुसरें धनुष्य उचलिलें आणि साठ शरांनीं नकुलाला व सात शरांनीं सहदेवाला विद्ध केलें. तेव्हां त्याचें जें घोर व महान् युद्ध झालें त्याला देवामुरयुद्धांशिवाय अन्य उपमा शोभत नाहीं ! त्या समयीं सात्यकीनें वृषसेनाच्या सारथ्यावर तीन बाण टाकून त्याला वधिलें; एका भल्ल बाणानें त्याचें धनुष्य तोडिलें; सात बाणांनीं त्याचे अश्व मारिले; एका बाणानें त्याचा ध्वज उडविला; आणि तीन बाणांनीं त्याचें वक्षस्थळ विद्ध केलें. राजा, त्या वेळीं वृषसेन हा स्वर्थावर अगदीं मूर्च्छित पडला; पण लवकरच तो सावध होऊन सात्यकीचा वध करण्याच्या इच्छेनें त्याजवर दालतवार घेऊन धावून गेला. तेव्हां तो वृषसेन मोठ्या आवेशानें आपणावर चालून येत आहे असें अवलोकन करून सात्यकीनें दहा वाराहकर्ण बाणांनीं वृषसेनाची ती दालतवार छेदून टाकिली ! इतक्यांत दुःशामनानें त्या रथहीन व आयुधहीन झालेल्या वृषसेनाची ती अवस्था अवलोकन करून त्यास आपल्या रथांत घेतलें व त्या युद्धातुर झालेल्या वीराला तेथून दूर नेलें.

नंतर महारथ वृषसेन हा दुसऱ्या रथावर आरूढ झाला; आणि त्यानें द्रौपदीपुत्रांवर ज्याहात्तर, सात्यकीवर पांच, भीमसेनावर चौसष्ट, सहदेवावर पांच, नकुलावर तीस, शतानीकावर सात, शिखंडीवर दहा, धर्मराजावर शंभर आणि ह्याप्रमाणेंच दुसऱ्या महान् महान् जयेच्छु वीरांवर विपुल शरवृष्टि करून त्यांस अगदीं त्रस्त करून सोडिलें व त्या दुर्धर योद्ध्यांनै रणांगणांत कर्णाच्या पृष्ठभागाचें संरक्षण केलें. नंतर सात्यकीनें नऊ पोलादी बाण टाकून दुःशामनाचा सारथि व घोडे ह्यांस ठार मारिलें व त्याच्या रथाचे तुकडे उडवून त्याच्या भाल-प्रदेशीं तीन बाण सोडिले. मग पुनः यथाविधि मिद्ध केलेल्या दुसऱ्या रथावर दुःशासन आरूढ झाला व तो कर्णाच्या पथकांतून पांडवांशीं युद्ध करूं लागला. नंतर धृष्टद्युम्नानें कर्णावर दहा बाण सोडिले; द्रौपदीच्या पुत्रांनीं ज्याहात्तर बाण सोडिले; सात्यकीनें सात बाण सोडिले; भीमसेनानें चौसष्ट बाण सोडिले; सहदेवानें सात बाण सोडिले; नकुलानें तीस बाण सोडिले; शतानीकानें सात बाण सोडिले; शिखंडीनें दहा बाण सोडिले; धर्मराजानें शंभर बाण सोडिले आणि ह्याप्रमाणेंच दुसऱ्या महान् महान् विजयेच्छु योद्ध्यांनीं त्या महारणांत महाधनुर्धर कर्णावर अतिशय बाणवृष्टि केली. तेव्हां त्या सर्व योद्ध्यांवर प्रत्येकीं कर्णानें दहा दहा जलाल बाण मारून त्यांचा त्यांनै रथांतून पाठलाग केला. राजा. त्या समयीं महात्म्या कर्णाचें अस्त्रवीर्य व बाण टाकण्याची शिताफी पाहून आत्माला मोठा चमत्कार वाटला. कर्ण हा भात्यांतून बाण काढितो केव्हां, धनुष्याला तो लावितो केव्हां आणि शत्रूवर तो सोडितो केव्हां, हें आत्मांस मुळींच समजेना ! पण पटापट शत्रु मरून पडत आहेत असें मात्र दिसे. आकाश. अंतरिक्ष. पृथ्वी व दिशा ह्यांमध्ये

जिकडे तिकडे बाणच बाण होऊन त्या स्थळीं जणू काय आरक्त मेघांनीं नभोमंडळ अदृश्यच झाल्याप्रमाणें भासे ! ह्याप्रमाणें बाणवर्षाव करण्याचा सपाटा चालवीत असतां तो प्रतापशाली कर्ण जणू काय आपल्या रथावर नाचत आहे असें वाटे ! असो; ज्यांनीं ज्यांनीं कर्णावर जितके जितके बाण टाकिले होते, त्यांच्या-त्यांच्यावर त्यांच्या त्यांच्या तिप्पट तिप्पट बाण कर्णानें टाकिले आणि पुनः प्रत्येकावर शंभर शंभर व दहा दहा बाण मारून मोठ्यानें गर्जना केली. तेव्हां त्यांच्या योगें अश्व, सारथि व रथ ह्यांचा चुराडा होऊन त्या महावीरांची फळी फुटली आणि नंतर शरवृष्टीनें प्रबळ शत्रुसैन्याची दाणादाण करून तो शत्रुसंहारक कर्ण निर्भयपणें गजसेनेंत घुसला ! मग संग्रामांतून पराङ्मुख न होणाऱ्या चेदिवीरांचे तीनशे रथ भंग करून कर्णानें युधिष्ठिरावर तीक्ष्ण बाणांची वृष्टि केली. तेव्हां पांडवांकडील महान् महान् वीर सात्यकि, शिखंडी वगैरे धर्मराजाचें रक्षण करण्याकरितां त्याच्या सभोवतीं वेढा देऊन उभे राहिले आणि त्याप्रमाणेंच तुडुया पक्षाचे शूर व मोठमोठे सर्व वीर दुर्धर अशा कर्णाच्या भोंवतीं त्याच्या संरक्षणार्थ दस्तानें उभे राहिले. राजा. त्या समयीं नानाविध वाद्यांचा घोष सुरू झाला आणि महान् महान् शूर वीर सिंहासारखी गर्जना करूं लागले. नंतर युधिष्ठिरप्रभृति धैर्यशाली पांडववीर आणि कर्णप्रभृति धैर्यशाली कौरववीर एकत्र होऊन त्यांचें मोठें तुमुल युद्ध झालें.

अध्याय एकुणपन्नासावा.

—:—

कर्णाच्या हस्तें युधिष्ठिराचा पराभव.

संजय सांगतो:—राजा, नंतर कर्ण हा पांडवांच्या त्या सेनेची दाणादाण करून हजारों

रथ, गज, अश्व व पायदळ ह्यांसह युधिष्ठिरावर चालून गेला. त्या प्रसंगी शत्रूंनी सहस्रावधि नानाविध शस्त्रांन्ने त्याजवर टाकिलीं, पण त्या सर्वांचा त्यानें शतावधि जलाल बाण मारून फडशा उडवून दिला आणि धीटपणानें शत्रूंना बाणविद्ध करून सोडिलें. तेव्हां कर्णानें कित्येक पांडववीरांचीं मस्तकें, बाहु व मांड्या छेदून त्यांस भूतलावर पाडिलें आणि त्यामुळें सैन्यांत दाणादाण होऊन बाकीचे योद्धे पळत सुटले. त्या वेळीं सात्यकीनें द्राविड व निषाद पायदळ फिरून कर्णावर प्रेरिलें आणि मग ते सर्व नरवीर कर्णास ठार मारण्याच्या इच्छेनें त्यावर धावून आले. त्या समर्थी मोठेंच रणकंदन झालें आणि त्यांत कर्णानें पांडववीरांवर बाणांचा भडिमार करून त्यांची शिरस्त्राणें व भुज हे छेदिले. तेव्हां कुन्हाडीनें तोडिलेले शालवृक्षांचें बन जसें एकदम धडाधड भूतलावर पडतें, तसें तें पायदळ छिन्नभिन्न होऊन एकदम धडाधड भूतलावर पडलें. ह्याप्रमाणें कर्णाच्या हस्ते शेंकडों, हजारों, लाखां वीर युद्धांत मरण पावून त्यांचे देह समरभूमीवर पडले. पण त्यांच्या दिव्य प्रतापाची कीर्ति दाही दिशांम पसरली. अशा प्रकारें, धृतराष्ट्रा, क्रुद्ध झालेल्या यमधर्माप्रमाणें कर्ण रणांगणीं भयंकर महार करीत अमतां, व्याधीचा जसा मंत्रौषधींनीं प्रतिकार करावा, तसा त्याचा प्रतिकार करण्याकरितां पांडुपांचालवीरांनीं त्याजवर हल्ला केला; पण अत्यंत भयंकर रोग मंत्रौषधींना जुमानीत नाहीं. तद्वत् कर्णानें त्या पांडुपांचालांना जुमानिलें नाहीं व त्यांचें मर्दन करून पुनः उलट युधिष्ठिरावर चाल केली. परंतु ह्या समर्थी युधिष्ठिराचें संरक्षण करण्यासाठीं पांडु, पांचाल व केकय ह्या सर्वच वीरांनीं एकदम त्याजवर हल्ला केला, तेव्हां मृत्यु जसा ब्रह्मवेत्यांपुढें कुठित होतो तसा तो त्यांपुढें कुठित झाला! त्या समर्थी कर्ण

हा पूर्णपणें आपल्या समीप कक्षांत आलेला पाहून युधिष्ठिरानें क्रोधानें आरक्त नेत्र करून त्यास म्हटलें, “ मूर्खी मृतपुत्रा कर्णा, माझे म्हणणें ऐक. अरे, तूं युद्धांत वेगवान् अर्जुनाशीं स्पर्धा करितोस; व त्याप्रमाणेंच दुर्योधनाच्या इच्छेनुरूप वागून तूं नेहमीं आम्हांला रोष करितोस; पण आज तुझ्या अंगीं जें बलवीर्य व पांडुपुत्रांविषयीं द्रोहबुद्धि असेल, ती सर्व मोठा प्रताप गाजवून आम्हांपुढें व्यक्त कर. अरे, ह्या घोर रणांत आज तुझी युद्धाची सर्व हाव मी नष्ट करून टाकितों. ”

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें भाषण करून युधिष्ठिरानें दहा सुवर्णपुंव लोहमय बाण कर्णावर सोडिले; तेव्हां उलट शत्रुनाशक महाधनुर्धर कर्णानें युधिष्ठिरावर दहा वत्सदंत बाण हंसत हंसत सोडिले. राजा, ह्याप्रमाणें युधिष्ठिराच्या भाषणाविषयीं कर्णानें बाणप्रहाराच्या योगें धिक्कार प्रदर्शित केला, तेव्हां अशीत आहुति टाकिल्यावर तो अग्नि जसा अधिकाधिक भडकत जातो तसा तो युधिष्ठिर क्रोधानें अधिकाच भडकला आणि जणू काय त्याच्या देहांतून अशीच्या ज्वाळाच निघत आहेत असें भासूं लागलें! राजा, त्या समर्थी जणू काय प्रलयकालीं ब्रह्मांडाचें दहन करण्याकरितां हा दुमरा संवर्तांशिक चेतला आहे, असें सर्वास वाटूं लागलें! नंतर युधिष्ठिरानें आपल्या सुवर्णमंडित प्रचंड महाधनुष्याचा टणत्कार केला व पर्वतांचेही विदारण करील असा मोठा तीक्ष्ण शर त्यास जोडिला आणि मृतपुत्राला ठार करण्याच्या हेतूनें धनुष्याची प्रत्येका आकर्षण ओढून तत्काळ तो त्याजवर सोडिला. तेव्हां वज्रपाताप्रमाणें भयंकर शब्द होऊन तो एकाएकीं महारथ कर्णाच्या डाव्या कुशींत घुमला आणि त्याच्या योगें त्याचें देहभान नष्ट होऊन गात्रें विगलित झालीं व हातांतलें धनुष्य खालीं पडून तो रथा-

मध्ये शल्याचा समोर निश्चेष्ट होऊन मूर्च्छित पडला ! तेव्हां कौरवसैन्यांत मोठा हाहाकार उडाला आणि ह्याप्रमाणें धर्मराजाचा पराक्रम अवलोकन करून पांडवसेनेंत जिकडे तिकडे सिंहनाद व आनंदाच्या आरोळ्या सुरू झाल्या. नंतर लवकरच कर्ण सावध झाला व धर्मराजाचा वध केल्याशिवाय रहावयाचें नाहीं, असा त्या क्रूरपराक्रमी महान् वीरानें संकल्प ठरविला. मग त्यानें तत्काळ आपलें सुवर्णमंडित प्रचंड विजय धनुष्य ताणिलें व पाजविलेल्या बाणांचा वर्षाव करून धर्मराजाला झांकून टाकिलें. तेव्हां महात्म्या युधिष्ठिराच्या रथाच्या चक्रांचे रक्षक चंद्रदेव व दंडधर हे दोन पांचाल्य वीर त्या पराक्रमी कर्णानें दोन क्षुर बाणांनीं वधिले. राजा, चंद्राच्या समीप जसे पुनर्वसूचे तारे शोभतात तसे ते दोन धर्मराजाचे देदीप्यमान वीर रथाच्या समीप त्याच्या पार्श्वभागीं शोभत होते. ह्याप्रमाणें त्या दोन वीरांचा कर्णानें नाश केला, तेव्हां युधिष्ठिरानें पुनः तीस बाणांनीं कर्णाला विद्ध केलें; आणि सुषेण व सत्यमेन ह्यांजवर तीन तीन बाण सोडिले; आणि शल्यावर नव्वद व कर्णावर पुनः व्याहात्तर आणि त्याच्या रक्षकांवर प्रत्येकीं तीन तीन सरलगामी बाण टाकिले. तें पाहून कर्ण हंभू लागला व त्यानें धर्मराजाला भल्ल बाणानें विद्ध करून त्याजवर आणखी साठ बाण सोडून मोठ्यानें गर्जना केली. तेव्हां पांडवांकडील वीर अगदीं संतापले व ते धर्मराजाचें रक्षण करण्यासाठीं कर्णावर एकसारखी बाणांची वृष्टि करीत धावून गेले. त्या समयीं सत्यकि, चेकितान, युयुत्सु, पांड्य, धृष्टद्युम्न, शिखंडी, द्रौपदीचे पुत्र, प्रभद्रक वीर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, शिशुपालाचा पुत्र, कारूप, मत्स्यशेष, केकय व कौशिक ह्या सर्व प्रबल योद्ध्यांनीं त्वरा करून वसुषेणावर बाणप्रहार केले आणि

जनमेजय व पांचाल्य ह्यांनींही बाणांचा भडिमार चालवून कर्णावर हल्ला केला. त्या समयीं त्या सर्वांनीं वाराहकर्ण, वत्सदंत, विपाठ, क्षुरप्र, चटकामुख इत्यादि नानाविध अमोघ निशित बाण आणि अनेक प्रकारचीं दुसरीं भयंकर आयुधें कर्णावर सोडिलीं व कर्णाचें हनन करण्याच्या इराद्यानें रथ, अश्व, गज इत्यादिकांसह त्याजवर हल्ला करून त्यास वेढा दिला. तेव्हां कर्णानें ब्रह्मअस्त्राचा प्रयोग केला व दशदिशांना शरवर्षावानें झांकून काढिलें. त्या समयीं कर्णाचें वीर्य हाच कोणी एक भयंकर अग्नि शररूप ज्वालांनीं पांडवसैन्यरूप अरण्य जाळीतच चालला आहे असें भासूं लागलें ! नंतर महाधनुर्धर महात्म्या कर्णानें हंसून मोठमोठ्या अस्त्रांचें संधान केलें आणि धर्मराजाचें धनुष्य शरवृष्टीनें छेदून टाकिलें. नंतर कर्णानें क्षणांत बांकदार नव्वद तीक्ष्ण बाण धर्मराजावर सोडून त्याचें चिखत भेदिलें आणि तें रत्नखचित सुवर्णमय कवच खाली पडत असतां, विद्युलतेनें युक्त अशा वातप्रेरित अभ्रांतून सूर्यकिरण पार गेल्यानें चोहोंकडे जशी प्रभा फांकते, तशी दिव्य प्रभा फांकली ! जण काय धर्मराजाच्या अंगावरून खाली पडलेलें तें चित्रविचित्र चिखलत नक्षत्रादिकांनीं देदीप्यमान भासणारें नभोमंडलच होय असा भास झाला ! ह्याप्रमाणें धर्मराजा कवचहीन झाला तेव्हां त्याचें शरीर बाणप्रहारांनीं रक्तबाल झालें. मग त्यानें तत्काळ पोलादी शक्ति कर्णावर सोडली. तेव्हां ती प्रज्वलित शक्ति आपणावर अंतरिक्षांतून येत आहे असें पाहून कर्णानें सात बाणांनीं ती तोडून टाकून खाली पाडिली. नंतर युधिष्ठिरानें कर्णाच्या हृदयावर, बाहूवर व ललाटावर चार चार तोमरें टाकिली व मोठ्या आनंदानें गर्जना केली. त्या समयीं कर्णाच्या देहांतून रक्ताचे

ओष वाहूं लागले व तो क्रुद्ध झालेल्या सर्पा-
प्रमाणें सुसकारे टाकूं लागला. मग त्यानें भल्ल
बाणांनै धर्मराजाचा ध्वज छेदिला, तीन बाणांनीं
धर्मराजास विद्ध केले, त्याचे बाणभाते तोडिले व
रथाचे तिळाएवढाले तुकडे उडविले. राजा धृ-
तराष्ट्रा, नंतर धर्मराजा दुसऱ्या रथांत आरूढ झाला.
त्या रथाला जोडिलेल्या अश्वानांचा वर्ण हस्ति-
दंताप्रमाणें शुभ्र असून त्यांची पुच्छें काळीं-
कुळकुळीत होती. धर्मराजा ह्या रथांत बसून
मोठ्या कष्टानें युद्धपराड्मुख झाला व पळूं
लागला ! कारण, त्याच्या समीप असलेला
त्याचा सारथि हत झाल्यामुळे कर्णाच्या समोर
तग काढवेळ असें त्यास वाटलें नाहीं. इकडे
कर्णानें युधिष्ठिरावर चाल करून त्याचा पाठलाग
केला; आणि वज्र, छत्र, अंकुश, ध्वज, कूर्म,
अंबुज, आदिकरून लक्षणांनी युक्त अशा
आपल्या सुंदर हस्तानें आपणा स्वतःम पवित्र
करून घेण्यासाठीं त्यानें धर्मराजाच्या स्कंधप्रदेशीं
स्पर्श केला; व आतां तो त्यास बलात्कारानें
धरणार इतक्यांत त्याला कुंतीच्या भाषणाचें
स्मरण झालें. तशांत त्याला शल्यानेंही ह्मटलें
कीं, ' बा कर्णा, तूं त्या राजश्रेष्ठाला धरूं नको.
तूं त्याला धरिलेंस तर तो तुला व मला
तत्काळ भस्म करून टाकील ! ' तेव्हां कर्णानें

युधिष्ठिराचा धिकार

करीत त्यास हंसत हंसत ह्मटलें, " अरे, क्षत्रिय-
कुलांत जन्मास येऊन क्षत्रियधर्म पालन करणारा
वीर भयभीत होऊन प्राण रक्षण करण्याकरितां
घोर समरांत रण सोडून कसा वरें पळूं लागेल ! मला
वाटतें कीं, तूं क्षात्रधर्मांत कुशल नाहींस. तुझ्या
ठिकाणीं ब्राह्म बल असल्यामुळे तूं स्वाध्याय,
यज्ञानुष्ठान इत्यादिकांत निमग्न अमावेंस; ह्यास्तव,
हे कौतेया, तूं युद्ध करूं नको. व वीरपुरुषांच्या
वाटेस जाऊं नको. त्यांना अप्रिय बोलण्याचें
सोडून दे व महासंग्रामापामून निवृत्त हो.

राजा, तुला कोणाला अप्रिय बोलावयाचें अस-
ल्यास ते लोक दुसरे होत; माझ्यासारख्यांना
त्वां अप्रिय भाषण केव्हांही करूं नये. समरां-
गणांत मजसारख्यांशीं अयोग्य भाषण केल्यानें
हें असें फळ मिळतें व याहूनही आणखी वाईट
फळ मिळेल ! ह्यासाठीं, हे युधिष्ठिरा, आतां तूं
स्वगृहीं जा किंवा ज्या ठिकाणीं ते केशवार्जुन
असतील त्या ठिकाणचा मार्ग धर. राजा,
रणांगणांत कोणताही प्रसंग प्राप्त झाला तरी हा
कर्ण तुला वधणार नाहीं ! " ह्याप्रमाणें भाषण
करून त्या महाबलवान् कर्णानें धर्मराजाला
मोडून दिलें; व इंद्रानें असुरसेनेचा नाश केला
तद्वत नाकीच्या पांडवसेनेचा धुव्वा उडविला.

संकुलयुद्ध.

इकडे, कर्णाच्या हातून सुटका झाल्यावर
धर्मराजा मोठा लजित होऊन त्वरेनें मार्गें
वळला व तें पाहून चेदि, पांडव, पांचाल,
मात्यकि, द्रौपदीचे पुत्र व माद्रीपुत्र नकुलसह-
देव हे सर्व त्याच्यामागून माघारे फिरले.
नंतर कौरवसेन्यासहवर्तमान कर्ण हा मोठ्या
वीरश्रीनें त्यांचा पाठलाग करूं लागला. त्या
ममयीं दुंदुभि, शंख, मृदंग, त्याचप्रमाणें धनु-
ष्यांचे टणत्कार व वीरांच्या सिंहगर्जना ह्यांचा
एकच घोष होऊं लागला. इतक्यांत युधिष्ठिर
घाईघाईनें श्रुतकीर्तीच्या रथावर चढला आणि
कर्णाचा पराक्रम पाहूं लागला. तेव्हां पांडवांचें
सैन्य पटापट मृत्युमुखीं पडत आहे असें पाहून
धर्मराजाला अतिशय संताप आला व तो
आपल्या योद्ध्यांना ह्मणाला, ' अरे ! असे
स्वस्थ कां बसलां ? ह्या कौरवसेन्याचा वध
करून टाका. ' ह्याप्रमाणें धर्मराजाची आज्ञा होतां-
च पांडवांकडील भीमसेनादिक सर्व महारथ तुझ्या
पुत्रांवर धावून आले. त्या ममयीं रथ, अश्व,
गज व पायदळ ह्यांचा व शस्त्राह्यांचा मोठा भयं-
कर शब्द होऊं लागला. दोन्ही पक्षांतील महान्

महान् वीर उठा, मारा, चला, पाडा, 'अशी गर्जना करूं लागले आणि घोर युद्ध प्रवृत्त होऊन एकमेकांनी एकमेकांना ठार मारिले. राजा, त्या वेळी बाणांची इतकी वृष्टि झाली की, तिच्या योगे अभ्रपटलाप्रमाणे अंतरिक्ष आच्छादित होऊन चोहोंकडे अंधकार पडला; कोणी कोणाम ओळखेनासे झाले; त्या रण-संमर्दात ध्वज, पताका, छत्रे, मारथि, अश्व, आयुधे इत्यादिकांचा विध्वंस उडाला; आणि मोठमोठाले भूपाल हात, पाय, धड, डोक्यां वगैरे तुटून जाऊन क्षितितलावर मरून पडले ! त्या समयी, पर्वतांच्या कड्यावरून मोठमोठे अजस्र हत्ती वर बसलेल्या योद्ध्यांसुद्धा घडाघड खाली पडत आहेत किंवा पर्वतांची शिखरे वज्रप्रहारांनी भिन्न होऊन एकदम खाली कोसळत आहेत, असे सर्वांना वाटले ! राजा धृतराष्ट्रा, त्या समयी उभय दळांत जे निकरांचे युद्ध झाले त्यांचे काय वर्णन करावे ? हजारों घोडे व त्यांवरील स्वार अंगांवरील कवचे व अलंकार ह्यांची मोडतोड व विध्वंस उडून रणभूमीवर मरून पडले; त्याचप्रमाणे रथ्यांनी रथ्यांवर हल्ले करून बाणप्रहारांनी त्यांस विरथ केले व वधिले; आणि पायदळाच्या हजारों टोळ्या रणांगणांत गतप्राण होऊन पडल्या. तेव्हां विशाल, विस्तृत व आरक्त अशा नेत्रांनी व चंद्र किंवा कमल ह्यांप्रमाणे शोभणाऱ्या मुखांनी युक्त अशा त्या युद्धपटु वीरांच्या मस्तकांनी ती समरभूमि सर्वतोपरी आच्छादून गेली व ज्याप्रमाणे पृथ्वीवर त्याप्रमाणेच अंतरिक्षांत भयंकर शब्द ऐकू येऊ लागला ! राजा, ह्याप्रमाणे शतावधि व सहस्रावधि वीर रणभूमीवर एकमेकांना ठार मारीत असतां एक मोठाच चमत्कार दृष्टीस पडला. त्या समयी अंतरिक्षांत अप्सरांचे समूह विमानांत आरूढ होऊन ते युद्ध पहात होते, त्यांनी गायनवादन आरंभिले व धारातीर्थी

पतन पावलेल्या योद्ध्यांना आपल्या विमानांत घालून स्वर्गास नेले ! राजा, हे आश्चर्य अवलोकन करून त्या युद्धधुरंधर वीरांना अधिकच वीरश्री चढली व प्रत्यक्ष स्वर्गप्राप्तीची इच्छा करून जो तो मोठ्या आवेशाने आप-आपल्या प्रतिस्पर्ध्यांवर प्रहार करूं लागला. त्या प्रसंगी रथ्यांनी रथ्यांशी, पायदळाने पायदळाशी, हत्तींनी हत्तींशी व घोड्यांनी घोड्यांशी मोठे विचित्र युद्ध आरंभिले आणि मोठाच गजवाजिनरक्षय सुरू झाला ! जिकडे तिकडे धूळच धूळ होऊन अंधकार पडला व आपपरांची ओळख नाहीशी होऊन स्वकीय-स्वकीयांचे व परकीय-परकीयांचेच युद्ध मातले. कोणी एकमेकांचे केश ओढून मारू लागले, कोणी एकमेकांना दातांनी चावू लागले, कोणी एकमेकांना नखांनी फाडू लागले, कोणी एकमेकांवर मुष्टि हाणिल्या, आणि कोणी कोणी तर बाहुयुद्धाला आरंभ केला. राजा, अशा प्रकारचा घोर संग्राम चालू होऊन देह, पातके व प्राण ह्यांचा संहार घडू लागला, तेव्हां मनुष्ये, हत्ती व घोडे ह्यांच्या देहांतून रक्ताचे पाट सुरू होऊन त्यांची मोठी नदी बनली आणि रणभूमीवर पतन पावलेले बहुत नर, नाग व हय ह्यांची शरीरे तींतून वाहून गेली. राजा, नर, अश्व, गज ह्यांच्या रुधिरप्रवाहाने उत्पन्न झालेल्या त्या महाघोर सरितेतः सैन्धव मांस-शोणित ह्यांच्या मिश्रणापासून फारच कर्दम मातला आणि तीत चतुरंग सैन्य सांपडून जाऊन मोठीच भीति उद्भवली ! त्या समयी विजयप्राप्तीच्या हविवेळें कितिएकांनी ती नदी ओलांडिली व कितिएक तिच्या कांठावरच कुठित होऊन बसले, कितिएकांनी त्या नदीत उड्या टाकिल्या व परतीरास जाण्याचा प्रयत्न केला, कितिएक धडपड करितां करितां बुडून तळाशी गेले, कितिएक तीत पोहू लागले,

कितीएकांनीं केवळ खान मात्र करून आपले शरीर, चिखलत, आयुषें व वखें हीं लाल करून टाकिल्लीं, कितीएकांनीं त्या रुधिरसरितेंतलें उदक प्राशन केलें, आणि कितीएक अगदीं निर्वीर्य व म्ळन होऊन तीं मरण पावले! राजा, त्या समयीं रथ, अश्व, नाग, नर, आयुषें, आभरणें, वखें, चिखलतें जीं उचवस्त झालीं होतीं व होत होतीं, तीं सर्व व स्थाप्रमाणेंच भूमि, आकाश अंतरिक्ष व दशदिशा हीं सर्व बहुधा आरक्त व लाल दिसत होतीं. त्या वेळीं जिकडे तिकडे रक्ताची दुर्गंधि, जिकडे तिकडे रक्ताचाच स्पर्श, जिकडे तिकडे रक्तच रक्त व तें सळसळत वहात असतां होत असलेला शब्द, ह्या सर्वांच्या योगें सैन्याला बहुधा अतिशय चिळस व विषाद वाटला! अशा त्या भयंकर स्थितींत सात्यकि, भीममेन आदिकरून पांडवपक्षीय महान् योद्ध्यांनीं फिरून उचल करून तुझ्या सैन्यावर हल्ला केला आणि त्यांचा तो आवेश दुःसह आहे असें पाहून तुझ्या सैन्याचें धावें दणाणलें व त्यांनीं माघार घेतली! राजा, एकदां तुमें सैन्य युद्धपराङ्मुख झालें असें दिसून येतांच शत्रूंनीं त्याजवर अशी निकराची गर्दी केली कीं, तत्काळ तुझ्या सैन्यांतील रथ, हत्ती, घोडे व मनुष्ये ह्यांची दाणादाण उडाली; त्यांच्या हातांतील आयुषें व अंगावरील कवचें ह्यांचा शत्रूंनीं विष्वम उडविला; आणि जिकडे तिकडे तुझ्या सैन्यांतील वीर मरून पडूं लागले! राजा, अरण्यांत सिंहांनीं गजयुथावर झडप घातली म्हणजे त्या गजांची जशी दैना उडते, तशी तुझ्या सैन्याची दैना झालेली त्या वेळीं दिसून आली!

अध्याय पन्नासावा.

—:०:—

कर्णापयान.

संजय सांगतो:—ह्याप्रमाणें पांडवांनीं तुझ्या सैन्यावर हल्ला करून त्याचीं अगदीं दाणादाण करून टाकिली, तेव्हां दुर्योधनांनें चोहोंकडून त्यास आवरून धरण्याचा प्रयत्न केला. आसमंताद्वागीं जे योद्धे व सैन्य पळत सुटले होते, त्यास त्यांनें मोठमोठ्यांनें ओरडून 'पळू नका' म्हणून सांगितलें, पण ते योद्धे व सैन्य परत आले नाहीं. तेव्हां मग व्यूहाच्या पक्षप्रपक्षभागीं असलेले सौबल शकुनि व इतर कौरव शस्त्रास्त्रांसहित समरांगणांत भीमसेनावर चाल करून गेले. ह्याप्रमाणें कौरव भूपालांसहवर्तमान भीमसेनावर चालले आहेत असें पाहून कर्णानेंही तोच विचार मनांत आणिला; आणि मद्राज शल्याला 'भीमाच्या रथाकडे आपला रथ चालव' म्हणून सांगितलें; तेव्हां ताबडतोब शल्यानें कर्णाच्या रथाचे ते हंसवर्ण श्रेष्ठ अश्व जिकडे भीम होता तिकडे चालविले. त्याबरोबर ते तत्काळ भीमसेनाच्या रथाजवळ येऊन युद्धार्थ तोंड देऊन उभे राहिले. इकडे, कर्ण आपल्यावर चाल करून येत आहे असें पाहून भीमाला अत्यंत क्रोध उत्पन्न झाला व तो त्याचा वध करण्याचा संकल्प करून सात्यकि व धृष्टद्युम्न ह्यांस म्हणाला, "तुम्ही धर्मात्म्या युधिष्ठिराचें संरक्षण करावे; हा आतांच माझ्या डोळ्यांदेखत मोठ्या प्राणसंकटांतून कमावसा सुटला आहे; दुर्योधनाचा संतोष करावा म्हणून दुष्ट कर्णानें माझ्यासमोर ह्यांचे चिखलत छिन्न-विछिन्न करून ह्याम कवचहीन केलें आहे. मी आज कर्णाला मारून धर्मराजाच्या दुःखाचा अंत करितों. आज मोठ्या निकराचें युद्ध करून एक तर मी कर्णाला वधीन किंवा कर्ण मला वधील, हें मी तुम्हांला निश्चयानें सांगतों.

अहो, आज मी धर्मराजाला ठेव म्हणून तुमच्या हवाली करितों. तुम्ही सर्व मोठ्या उल्हासाने त्यांचे संरक्षण करण्यास झटा. ”

ह्याप्रमाणे भाषण करून, सिंहासारखी मोठी गर्जना करीत व दशादिशा दुमदुमून टाकीत महाबाहु भीमसेन हा अधिरथ कर्णावर चाल करून गेला. तेव्हां भीम आपल्यावर मोठ्या वेगाने चालून येत आहे असे पाहून त्याच्याबरोबर युद्ध करण्यास उत्सुक झालेल्या कर्णाला महापराक्रमी मद्रराज शल्य म्हणाला, “ कर्णा, महाबाहु पांडुपुत्र भीमसेन अत्यंत क्रोधायमान होऊन तुझ्यावर चालून येत आहे पहा. मला वाटते, दीर्घकालपर्यंत सांचविलेल्या क्रोधाचा परिणाम तुझ्यावर घडवून आणण्याचा खचित याचा वेत अमावा. अशा प्रकारचे भीमसेनाचे उग्ररूप मी पूर्वी कधीच पाहिले नाही. फार कशाला, कर्णा, अभिमन्यूच्या किंवा घटोत्कचाच्या वधसमयीही त्यास इतका क्रोध चढलेला मला दिसला नाही. प्रस्तुतकाळीं हा केवळ प्रलयकालीन अशीप्रमाणे भासत आहे. ह्या समयी ह्याजबरोबर सर्व त्रैलोक्य जरी युद्धार्थ सिद्ध झाले, तरी त्या सर्वांचे हा एकटा निवारण करील ! ”

संजय सांगतो:—राजा. ह्याप्रमाणे मद्राधीश शल्य कर्णाशी बोलत आहे तोंच क्रोधाने प्रदीप्त झालेला भीम कर्णाच्या ममीप येऊन धडकला. तेव्हां राधेय कर्ण मोठ्याने हंसून म्हणाला, “ हे मद्रेश्वरा, तू आज भीमामबंधाने जें कांहीं मला छटलेस, तें निःसंशय सत्य आहे. हा मोठा शूर, वीर व कोपिष्ठ आहे; ह्याला आपल्या देहाची सुद्धा पर्वा नाही; कोणत्याही प्राण्यापेक्षां ह्याचे बल अधिक आहे; त्या वेळीं विराट नगरांत अज्ञातवामांत अमतां द्रौपदीचे मनोरथ पूर्ण करण्याच्या इच्छेनें ह्यानें केवळ स्वतःच्या बाहुबलाने गुप्तपणाने गणांसहित कीच-

काला ठार मारिले; आणि तोच हा आज ह्या युद्धाच्या बिनीवर क्रोधाने संतप्त होत्साता माझ्याबरोबर झुंजण्यास उद्युक्त झालेला आहे. अरे त्याच्याबरोबर लढण्यास हातांत दंड धारण करून प्रत्यक्ष यम जरी आला, तरी ह्यास भय म्हणून वाटावयाचे नाही. ह्यास्तव मला वाटते कीं, फार दिवसांपासून मी जो मनोरथ योजिला आहे कीं, युद्धांत अर्जुनाला मी वधीन किंवा अर्जुन मला वधील, तो कदाचित् भीमाच्या समागमाने आजच सिद्धीस जाईल ! कारण, भीमाला जर मी मारिले किंवा विरथ केले, तर मजवर अर्जुन सहजीच चालून येईल आणि मग माझा मनोरथ अनायासेच सिद्धीस जाईल. ह्यास्तव, शल्या, ह्या समयी तुला जें उचित दिमत असेल तें तू त्वरित कर. ” महापराक्रमी कर्णाचे असे भाषण श्रवण करून शल्य त्याला म्हणाला, “ हे महाबाहो कर्णा, तू बलिष्ठ भीमावर चालून जा. भीमाचे निरसन केल्यावर तुझी व अर्जुनाची भेट होईल. कर्णा, फार दिवसांपासून जी तुझी इच्छा आहे, ती आज मिद्धीस जाईल, हें मी खचित सांगतो. ” ह्याप्रमाणे शल्याचे भाषण श्रवण करून कर्ण त्याला पुनः म्हणाला, “ शल्या, युद्धांत अर्जुन मला मारील किंवा मी त्याला मारीन; ह्यासाठीं युद्धांत नीट चित्त घालून जेथें वृकोदर असेल तेथें चल ! ”

संजय सांगतो:—हे प्रजानाथा, नंतर शल्यानें रथ चालविला; आणि ज्या ठिकाणीं भीमसेन कौरवसैन्याला पळवून लावीत होता, त्या ठिकाणीं तो हांहां म्हणतां प्राप्त झाला. राजा, तेथें भीम व कर्ण यांची गांठ होताच दुंदुभीचा व इतर तुर्यादिक रणवाद्यांचा महान् शब्द होऊं लागला. तेव्हां भीमसेनास अधिकच क्रोध चढला आणि त्यानें तीक्ष्ण व ललकक्रीत बाणांची वृष्टि करून कर्णाचे दुर्धर सैन्य चोहोंकडे

पळवून लविले. राजा, त्या समयीं कर्ण व भीम ह्यांचे रणांगणांत फारच घोर व तुंबळ युद्ध सुरू झाले. नंतर क्षणभर भीमाची सरशी होऊन त्यानें कर्णाला मागे हटविले, पण भीम आपल्यावर तुटून पडत आहे असें पाहून कर्णाला अतिशय क्रोध चढला व त्यानें त्याच्या वक्षस्थळीं बाण मारून तत्काळ बाणवर्षावाने पुनः त्याला आच्छादित केले. तेव्हां भीमानें उलट कर्णावर धार दिलेले नऊ बांकदार बाण सोडिले, पण कर्णानें फिरून बाणांचा भडिमार चालवून त्यांचे धनुष्य मध्यें छेदून त्याचे दोन तुकडे केले आणि त्या चापहीन झालेल्या भीमाच्या छातींत असा तीक्ष्ण बाण मारिला की, तो कवचाचा भेद करून एकदम शरीरांत घुमला! धृतराष्ट्रा, असें झाले तरीही भीमसेनाचे अवसान कमी झाले नाही. त्यानें लागलेच दुसरें धनुष्य हातांत घेतलें आणि सूतपुत्र कर्णाच्या मर्मस्थळीं जलाल बाण मारण्यास प्रारंभ केला; आणि तो इतक्या मोठ्यानें गर्जू लागला की, त्याच्या योगें भूमि व आकाश थरथर कांपू लागली! राजा, नंतर कर्णानें भीमसेनावर पंचवीस तीक्ष्ण बाण मारिले. त्या समयीं, वनांत मदनमत्त होऊन धुंद झालेल्या कुंजरावर जणू काय उल्कांचा वर्षावच झाला असें सर्वांना वाटले. त्या वेळीं कर्णाच्या त्या बाणांनीं भीमसेनाचे शरीर अगदीं फाटून गेले. त्यामुळे तो क्रोधानें इतका बेफाम झाला की, त्यानें तत्काळ कर्णाचा वध करण्याकरितां आपल्या धनुष्याला अत्यंत वेगवान्, अत्यंत बळकट व पवेतांचा सुद्धां भेद करणारा असा मोठा उग्र शर जोडून त्या धनुष्याची प्रत्यंचा जोरानें आकर्ण ओढिली व मोठ्या त्वेपानें तो शर कर्णाचे हनन करण्यास्तव त्याजवर सोडिला! धृतराष्ट्रा, बलवान् वायुपुत्र भीमसेनानें सोडिलेला तो बाण वज्रासारखा शब्द करीत—ज्याप्रमाणें पर्वतामध्ये

वज्र घुसतें त्याप्रमाणें—त्या रणभूमीवर कर्णाच्या शरीरांत घुसला आणि त्याच्या योगें तो सेनापति कर्ण रथामध्यें बेशुद्ध व निश्चेष्ट होऊन पडला! तेव्हां तो मूर्च्छित पडला आहे असें पाहून मद्राधिप शल्यानें रणभूमीतून त्याचा रथ काढून एकीकडे नेला! ह्याप्रमाणें कर्णाचा पराभव झाला तेव्हां, पूर्वी इंद्रानें दानवांची जशी दाणादाण करून टाकिली तशी भीमसेनानें त्या कौरवांच्या महान् सेनेची दाणादाण करून सोडिली!

अध्याय एकावन्नावा.

—:—

भीमहस्तें सहा धातराष्ट्रांचा वध.

धृतराष्ट्र विचारतो:— संजया, कर्णासारख्या महाबाहु वीराला रथोपस्थी मूर्च्छित पाडावे, हें भीमानें केवढें दुर्घट कर्म केले? सूता, रणांत एकटा कर्ण संजयांसह पांडवांना मारून टाकील असें पुनःपुनः दुर्योधन मजपाशीं म्हणाला होता; आणि असें अमतां कर्णाचा भीमानें समरांगणांत पराभव केला, तेव्हां मग दुर्योधनानें पुढें काय केले?

संजय सांगतो:— राजा धृतराष्ट्रा, त्या घोर समरांत कर्ण युद्धविमुख होऊन मागे परतला असें जेव्हां दुर्योधनानें पाहिले, तेव्हां तो आपल्या भ्रात्यांना म्हणाला, 'अहो लवकर जा आणि त्या कर्णाचे संरक्षण करा; नाही तर भीमसेनानें उत्पन्न केलेल्या ह्या प्राससंकटांत तो मरून जाईल! राजा, दुर्योधनाची अशी आज्ञा होताच त्याचे भ्राते भीमसेनास ठार मारण्याच्या इच्छेनें क्रोधाग्रयमान होऊन पतंग जसे अग्नीवर तुटून पडतात तसे त्या भीमसेनावर तुटून पडले. श्रुतर्वा, दुर्धर, क्रोध, विवित्सु, विकट, सम, निपंगी, कवची, पाशी, नंद, उपनंद, दुष्प्रधर्ष, सुबाहु, वातवेग, सुवर्चस, धनुग्राह, दुर्मद,

जलसंध, शल, सह, हे सर्व वीर्यशाली महाबल बंधु रथांसह मोठ्या वेगाने भीमसेनावर चालून गेले व त्यांनी त्यास चोहोंकडून वेढून त्याजवर नानाप्रकारच्या बाणांचा भडिमार चालविला. तेव्हां तुड्या पुत्रांनी चालविलेला तो झपाट्याचा मारा अवलोकन करून बलिष्ठ भीमसेनाने तत्काळ त्याचे शंभर रथांचा विध्वंस उडविला. राजा, त्या समयी भीमसेनाने क्रोधायमान होऊन विवित्मूवर एक भल्ल बाण टाकिला व त्यामरसें त्याचे ते पूर्णचंद्राप्रमाणे शोभणारे मस्तक कुंडले व शिरस्त्राण ह्यांसह भूमीवर पतन पावले ! ह्याप्रमाणे तो शूर विवित्मु रणांगणांत पडला असे पाहून त्याचे भ्राते अधिकच चवताळले आणि समरभूमीवर चोहों बाजूनी भीमपराक्रमी भीमसेनावर मोठ्या त्वेषाने धावून गेले. तेव्हां भीमाने पुनः मोठ्या आवेशाने बाणवृष्टि मुरू केली आणि दोन भल्ल बाण टाकून तुझे देवतुल्य पुत्र विकट व सह ह्या उभयतांना ठार करून वाऱ्याने उन्मूलित केलेल्या वृक्षांप्रमाणे त्यांस भूतलावर पाडिले; नंतर भीमाने त्वरा करून एक अत्यंत जलाल बाण क्रोधावर सोडिला; त्यासरसा तो गतप्राण होऊन रणांगणांत पतन पावला आणि चोहोंकडे महान् हाहाकार झाला ! ह्याप्रमाणे तुड्या धनुर्धर पुत्रांचा व योद्ध्यांचा एकसारखा संहार होऊं लागला, तेव्हां तुड्या सैन्याची श्रेष्ठा उडून मोठी दाणादाण झाली. इतक्यांत महाबलिष्ठ भीमसेनाने नंदोपनंदांना यमसदनीं पाठविले ! त्या समयी तुड्या पुत्रांचा धीर अगदीच सुटला व ते भीमाने केलेल्या बाणांच्या भडिमाराने विव्हल होऊन चोहोंकडे पळत सुटले ! तेव्हां प्रलयकालीन यमाप्रमाणे रणांगणांत संकुद्ध झालेल्या भीमसेनाला पाहून आणि तुझे पुत्र तशा प्रकारे धारातीर्थी पडलेले अवलोकन करून सूतपुत्र कर्णाला अतिशय वाईट वाटले; व त्याने पुनः आपल्या हंसवर्ण

अध्याना भीमसेनावर चाल करून जाण्यासाठी इशारा केला. राजा, कर्णाच्या सूचनेप्रमाणे मद्राधिप शल्याने तत्काळ कर्णाचा तो रथ भीमसेनाच्या रथापाशी आणून युद्धार्थ सज्ज ठोकिला व मग

भीम व कर्ण यांचे युद्ध

जुंपून मोठा भयंकर व तुमुल संग्राम मातला. ह्याप्रमाणे फिरून कौरवपांडवांचीं दळे एकत्र होऊन ते दोन महारथ कर्ण व भीम हे एकमेकांशीं लगट करून युद्ध करूं लागले. तेव्हां आतां हे युद्ध कशा प्रकारचे होणार ? अशी मला मोठी चिंता पडली. नंतर तुड्या पुत्रांच्या समक्ष रणांगणांत युद्धविशारद भीमसेनाने कर्णावर बाणांचा भडिमार करून त्यास झांकून टाकिले. त्या वेळीं कर्णाला अत्यंत क्रोध चढला व त्या अस्त्रविद्यानिपुण महावीर कर्णाने नऊ लोहमय बांकदार भल्ल बाण सोडून भीमसेनाला विद्ध केले. तेव्हां भीमपराक्रमी महाबाहु भीमाने कर्णापर्यंत प्रत्यंचा आकर्षण करून पूर्ण वेगाने सात बाण कर्णावर सोडिले; आणि मग तर कर्णाचा संताप अनावर होऊन त्याने सर्पाप्रमाणे सुमकारे टाकीत भीमसेनाला अतिशय बाणवर्षावाने आच्छादित करून टाकिले. उलट भीमानेही महारथ कर्णावर एकसारखा बाणांचा लोट चालविला व कौरवसेनेच्या समक्ष मोठ्याने गर्जना केली. तेव्हां कर्ण फारच क्षोभला व त्याने सुदृढ धनुष्य धारण करून सहापेवर धार दिलेल्या दहा कंकपत्र बाणांनीं भीमसेनास विद्ध करून एका निशित भल्ल शराने भीमसेनाचे धनुष्य तोडून टाकिले. नंतर महाबाहु भीमाने सुवर्णाचे पट्टे बसवून मंडित केलेली घोर गदा हातांत घेतली, तेव्हां जणू काय तो दुसरा यमदंडच आहे असा भास झाला. मग भीमसेनाने कर्णाला ठार मारण्याच्या हेतूने मोठ्याने आरोळी देऊन कर्णावर ती गदा फेंकली, तेव्हां ती वज्रासारखा सों सों

शब्द करीत त्याजवर गेली; पण कर्णानें सर्पा-प्रमाणें भयंकर शरांचा भाडमार करून तिचे तुकडे तुकडे उडवून टाकिले. नंतर भीमानें बळकट धनुष्य धारण करून शत्रुसंहारक कर्णाला बाणांनी आच्छादित केलें. त्या समयीं कर्णभीमांचें अत्यंत भयंकर व निकराचें युद्ध सुरू झालें. तेव्हां जणू काय ते परस्परांना वधण्याच्या इच्छेनें वालिमुग्धीवच पुनःपुनः झगडत आहेत, असा भास झाला ! त्या प्रसंगीं कर्णानें आपल्या बळकट धनुष्याची ज्या आकर्ण ओढून भीमसेनाला पूर्ण वेगानें फेंकिलेल्या तीन बाणांनीं फार विद्ध केलें; तेव्हां त्या अतिविद्ध झालेल्या महाधनुर्धर भीमसेनानें कर्णाचा देह विदारण करून जाण्यास समर्थ असा एक भयंकर बाण कर्णावर सोडिला आणि तो तत्काळ कर्णाचें चिखत व शरीर भेदन करून पन्नग वारुळांत शिरतो त्याप्रमाणें भृगव्हारांत शिरला ! राजा धृतराष्ट्रा, त्या बाणाची वेदना कर्णाला महन झाली नाहीं, व ज्याप्रमाणें शितिकंप झाला असतां पर्वत थरथरां हालतो, त्याप्रमाणें तो विव्हल होऊन रथामध्यें हालू लागला. नंतर कर्णाचा क्रोध अनावर होऊन तो अगदीं नग्नशिवांत पेटला; आणि त्यानें भीमसेनावर पंचवीस बाण सोडिले. त्यानें एकसारखा बाणवर्षाव करून एका बाणानें भीमसेनाचा ध्वज तोडिला, एक भल्ल बाण फेंकून त्याचा सारथि मारिला, नंतर लागलेंच एका वेगवान् बाणानें त्याचें धनुष्य छेडिलें आणि पुढें एका क्षणांत भयंकर पराक्रम करणाऱ्या त्या भीमसेनाला सहज फारमे आयास न पडतां हंसत हंसत विरथ केलें !

भीमयुद्ध.

धृतराष्ट्रा, नंतर विरथ झालेला तो भीमसेन हातांत गदा धारण करून हंसत हंसत वायुवेगानें आपल्या श्रेष्ठ रथांतून तत्काळ उडी

मारून खालीं उतरला, आणि शरत्कालीन मेघांची वारा दाणादाण करून टाकितो त्याप्रमाणें त्यानें तुड्या सैन्याची गदाप्रहारांनीं अगदीं दाणादाण करून टाकिली. त्या समयीं क्रोधायमान झालेल्या शत्रुसंहारक भीमानें गालांवर, नेत्रांवर, गंडस्थळांवर, मस्तकांवर व इतर मर्मस्थानांवर नेमके गदाप्रहार करून मोठे प्रचंड व नांगरांच्या इसाडांप्रमाणें फार लांबलांब दातांनीं झुंजणाऱ्या सातशें मदनोन्मत्त हत्तींना एकदम विद्ध केलें. राजा, त्या समयीं गजसैन्याची मोठीच तारंबळ उडाली व ते हत्ती भयभीत होऊन सरावैरा धावू लागले. तेव्हां महातांनीं पुनः त्यांना आवरून भीमावर सोडिलें; व दिवाकराला मेघ जसे झांकून टाकितो, तसें त्यांनीं भीमसेनाला झांकून टाकिलें. त्या वेळीं, भीमानें भूमीवर उभें राहून इंद्र ज्याप्रमाणें पर्वतांचा वज्रप्रहारानें विध्वंस उडवितो त्याप्रमाणें सातशें हत्तींचा त्यावरील स्वारांमुद्धां व आयुधध्वजांमुद्धां विध्वंस उडविला ! नंतर सुबलपुत्र शकुनि ह्याचे अतिशय बलाढ्य असे वाक्त्र हत्ती भीमसेनावर धावून आले, पण शत्रुसंहारक भीमानें त्या सर्वांचा संहार करून शंभर रथांचा संपूर्ण चुराडा उडविला. शिवाय शेंकडों पायदळ त्याजवर चालून आलें. त्यास त्यानें यमसदनीं पोंचवून तुड्या सैन्याला त्रस्त करून टाकिलें. राजा, ह्या समयीं महात्म्या भीमानें पराक्रमानें व त्याप्रमाणेंच सूर्यानें प्रखर उन्हांनें तुड्या सैन्याला अत्यंत पीडिलें, तेव्हां अशींवर टाकिलेल्या चर्मप्रमाणें तुडें तें सैन्य संकुचित झालें व भीमाशीं लढण्याचा नाद सोडून दशादिशांस पळून गेलें ! नंतर, राजा, चर्माचें कवच ज्यांवर होते असे पांचशें दुमरे रथ मोठा दणदणाट करीत भीमावर चालून गेले व त्यांनीं एकसारखा चोहोंकडून तीक्ष्ण बाणांचा भाडमार चालविला;

पण विष्णूनें अमुरांचा जसा संहार उडविला, तसा भीमानें गदेनें त्या सर्व रथांतले वीरांचा, आयुधांचा व ध्वजपताकांचा संहार उडविला ! मग शकुनीनें महापराक्रमी तीन हजार घोडे-स्वार शक्ति, ऋष्टि, प्रामवेगेरे आयुधांनीं सुसज्ज असे भीमसेनावर पाठविले; परंतु ते आपल्यावर येत आहेत असे पाहून तत्काळ मोठ्या वेगानें भीमसेन उलट त्याजवर तुटून पडला व ते नानाप्रकारचीं मंडळें करीत येत असतां त्यांस त्यानें गदाप्रहारानीं मृत्युमुखीं लोटिलें ! राजा, सौबलाच्या त्या घोडेस्वारांची व भीमसेनाची लगट होऊन त्यांचें जेव्हां घोर युद्ध प्रवृत्त झालें, तेव्हां हत्तींवर पाषाणांची वृष्टि झाली असतां जसा मोठा शब्द होतो, तसा त्या घोडेस्वारांवर भीमाच्या गदेंचे प्रहार होत असतां भयंकर शब्द होत होता. राजा, शेवटीं भीमानें शकुनीच्या त्या उत्तम घोडेस्वारांचा नाश केला आणि मग तो दुसऱ्या रथांत आरूढ होऊन मोठ्या क्रोधानें कर्णावर चालून गेला; कारण इकडे मध्यतरीं समरांगणांत कर्णानें युधिष्ठिरावर चाल करून त्यास बाणाच्छादित केले होते; व त्याचा सारथि मारून त्याजवर सरळ जाणाऱ्या कंकपत्र बाणांचा भडिमार करीत त्याचा पाठलाग चालविला होता. तें पाहून भीमसेनाला अतिशय क्रोध चढला व त्यानें तत्काळ कर्णाला बाणवृष्टीनें झांकून काढिलें. राजा, आपल्या पाठीवर भीमसेन आला असे पाहून कर्णानें धर्मराजाचा पाठलाग करण्याचें सोडून दिलें व मागे वळून भीमसेनाला चोहों बाजूंनीं तीक्ष्ण शरांनीं आच्छादित केले. राजा, ह्याप्रमाणें भीमसेनाच्या रथाला कर्णानें शरवृष्टीनें अदृश्य करून टाकिलेले पाहून, भीमसेनाच्या मागे महाबल सात्यकि होता त्यानें कर्णावर बाणवृष्टि चालविली. तेव्हां कर्ण जरी अगदीं बाणत्रस्त

झाला होता तरी त्यानें सात्यकींवर हल्ला केला आणि मग त्या दोघां महाधनुर्धरांचें तुमुल युद्ध जुंपलें. ते दोघेही मोठ्या निकाराचें युद्ध करूं लागले व त्यांनीं एकमेकांवर प्रखर शर मारण्याचा तडाखा चालविला. त्या समयीं त्यांनीं बाणांचा इतका भडिमार केला कीं, आकाशांत कौंच पक्ष्यांच्या पृष्ठाप्रमाणें आरक्त वर्णाचें एक भयंकर बाणजालच पसरिलें आहे असें दिसूं लागलें. राजा, त्या वेळीं आह्मांला अथवा शत्रूंना, जिकडे तिकडे बाणांचें छत पडल्यामुळें, मूर्खांची प्रभा किंवा दिशा-उपदिशा ह्यांचें ज्ञान मुळींच होत नव्हतें. त्या समयीं कर्णपांडवांनीं जे एकसारखे सहस्त्रावधि शरांचे ओष एकमेकांवर चालविले होते, त्यांच्या योगें सूर्याचें भरमध्यान्हीचें तेजही नष्ट झालें होतें. राजा, ह्याप्रमाणें कर्णानें विलक्षण पराक्रम करून दाखविला तेव्हां त्याच्या मदतीस सौबल, कृतवर्मा, अश्वत्थामा व कृप हे आले, आणि मग त्यांचें व पांडवांचें पुनः घोर युद्ध सुरू झालें. तेव्हां कौरवांना मोठी उमेद आली व त्यांचें जें सैन्य पूर्वीं दाणादाण होऊन पांगट चाललें होतें तें पुनः एकवटून पांडवांशीं मोठ्या त्वेषानें लढूं लागलें. राजा, वर्षाकालारंभी समुद्र क्षुब्ध झाला असतां जसा त्याचा मोठा भयंकर शब्द होतो, तसा ती उभय दळें एकत्र होऊन लढूं लागलीं तेव्हां भयंकर शब्द होऊं लागला ! राजा, तीं सैन्ये अगदीं लगट करून मोठ्या वीरश्रीनें एकमेकांवर भरदोनप्रहरीं तुटून पडलीं तेव्हां त्यांचा जो संग्राम झाला, तसा संग्राम पूर्वीं झालेला आम्ही कधीं ऐकिला नाही व पाहिलाही नाही ! ज्याप्रमाणें सागराच्या लाटा एकमेकांवर उसळतात, त्याप्रमाणें त्या सैन्याच्या टोळ्या एकमेकांवर उसळल्या आणि समुद्राप्रमाणें गर्जेना करीत

एकमेकांत मिळून जाऊन नद्यांच्या संगमा-
प्रमाणें त्या अगदीं एकजीव झाल्या. राजा,
त्या समयीं त्यांचें फारच तुंबळ युद्ध झालें.
दोन्ही सैन्यांतील योद्धे दिव्य पराक्रम गाज-
वून उत्कृष्ट कीर्ति मिळविण्याच्या इच्छेनें एक-
मेकांशीं झगडूं लागले. ते आपापल्या प्रतिस्पर्ध्यां-
चीं नांवें घेऊन त्यांच्या मातृवंशांत किंवा पितृ-
वंशांत कोणी कांहीं रणांत नीच कृत्य किंवा हीन
आचरण केलें असल्यास तें मोठ्यानें ओरडून
सांगूं लागले; आणि अशा प्रकारें ते एक-
मेकांना दरडावीत घोर पराक्रम करीत असतां
माझी तर अशी समजूत झाली कीं, आतां
हे खचित जिवंत रहात नाहीत ! व त्या दोन्ही
सेनांतील त्या महान् महान् संक्रुद्ध वीरांचीं
तीं शरीरें अवलोकन करून माझ्या मनांत
आतां पुढें कमें काय होणार, ह्याविषयीं फारच
मोठी भीति उत्पन्न झाली. अमो; राजा, नंतर
त्या कौरवपांडवसैन्यांतील महारथांनीं एकमेकां-
वर तीक्ष्ण मायकांची वृष्टि करून एकमेकांना
धारातीर्थी पाडण्याचा तडाखा मुरू केला.

अध्याय बात्रज्ञावा.

—:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—हे महाराजा, समरांग-
णांत ते शस्त्रिय वैरामुळें एकमेकांना ठार मार-
ण्याची इच्छा करून एकमेकांवर शस्त्रास्त्रांचे
प्रहार करूं लागले. त्या समयीं रथ, गज,
अश्व व नर ह्यांचे मोठमोठाले समुदाय जिकडे
तिकडे मोठी लगट करून अगदीं निकरानें
लडूं लागले. त्या भयंकर रणांत गदा, परिघ,
कणप, प्रास, भिदिपाल व भुशुंडी ह्या आयु-
धांचे एकसारखे परस्परांवर आघात होऊं लागले.
चोहोंकडून बाणांची वृष्टि इतकी झाली कीं,
ती जणू काय टोळधाडच असें भामत होतें !

हत्तीनीं हत्तींवर, घोड्यांनीं घोड्यांवर, रथ्यांनीं
रथ्यांवर व पायदळानें पायदळावर हल्ले करून
एकमेकांना ठार मारिलें. त्याप्रमाणेंच पायदळ
घोडेस्वारांवर व रथगजांवर, रथ हत्तींवर व
घोड्यांवर आणि वेगवान् हत्ती बाकीच्या तीन
अंगांवर झडपा घालून मोठा घोर संहार मुरू
झाला ! राजा, ते शूर वीर आरोळ्या देऊन
परस्परांचा प्राण घेऊं लागले, तेव्हां जणू काय
ती समरभूमि पशुवधाचीच जागा होय असें
सगळ्यांना भासलें ! त्यावेळीं पृथ्वीवर जिकडे
तिकडे रुधिरच होऊन गेलें ! पर्जन्यकाळीं
भूमीवर इंद्रगोपांच्या रांगा चालत असतां ती
जशी दिमते, अथवा पक्का तांबडा रंग दिलेलीं
पांढरीं वस्त्रें परिधान केलेली तरुण स्त्री जशी
दिमते, त्याप्रमाणें वसुंधरा आरक्तवर्ण दिमत
होती; आणि तिच्यावर जागोजागीं मांसशोषि-
तांचे ढीग पसरले असल्यामुळें जणू काय ती
सुवर्णाचीच बनविलेली आहे, असें भासत होतें.
राजा, त्या रणांगणांत तुटलेलीं मस्तकें, भुज व
मांड्या आणि इतस्ततः विकीर्ण झालेलीं कर्ण-
भूषणें, अलंकार, हार, शूर महेष्वासांचीं शरीरें,
दाली, ध्वज, पताका, हीं सर्वत्र पडलीं
होतीं ! राजा, त्या युद्धांत हत्तींवर हत्तींनीं
हल्ले करून त्यांस आपल्या दांतांनीं विद्ध केलें,
तेव्हां ते विद्ध झालेले हत्ती फारच तेजस्वी
दिग्मू लागले. ज्याप्रमाणें धातुमंडित पर्वतां-
मधून कावेचे प्रवाह चालू असतां ते पर्वत दिग्म-
तान, तसे ते हत्ती अंगांतून रुधिराचे प्रवाह वहात
असल्यामुळें दिग्मू लागले. राजा, त्या हत्तींवर
जीं तोमरें घोडेस्वारांनीं मारिलीं होतीं किंवा
जीं त्यांच्या देहांत घुमावीं म्हणून समोर धरून
भोंसकलीं होतीं, तीं सर्व त्या हत्तींनीं आपल्या
सोंडांनीं उपटून किंवा मोडून टाकिलीं होतीं.
राजा, नाराच बाणांनीं त्या हत्तींवरिल कवचें
छिन्न झाल्यामुळें, हिवाळ्याच्या प्रारंभीं अब्रहीन

पर्वत जसे दिसावे, तसे ते महान महान हत्ती दिसत होते. राजा, कित्येक हत्तींच्या अंगांत सुवर्णपुंख बाण रुतले असल्यामुळे उल्कांनी पेटलेल्या पर्वताप्रमाणे त्यांचे देह प्रज्वलित दिसत होते. राजा, त्या समयी कित्येक हत्ती दुसऱ्या हत्तींनी प्रहार केल्यामुळे मोठमोठ्या सपक्ष पर्वताप्रमाणे नाश पावले; कित्येक हत्ती शरीरांत शल्ये रुतल्यामुळे जखमी होऊन आपल्या कपोलप्रांतांसह व गंडस्थळांसह रणांगणांत तडफड करीत होते; कित्येक नानाप्रकारे भयंकर गर्जना करीत सिंहांसारखे ओरडत होते; व पुष्कळ सैरावैरा धावत होते, व कित्येक दुःखाने आक्रोश करीत होते. तसेच सुवर्णालंकारांनी भूषित केलेले कित्येक घोडे बाणप्रहारांनी विद्ध होऊन समरभूमीवर मरून पडले, कित्येक अगदी हैराण होऊन जगाच्या जागी वमले, आणि कित्येक तर दशदिशांना पळत सुटले ! कित्येक घोडेस्वारांनी आपल्या घोडेघांवर शरतोमरांचा वर्षाव झाला असतांही ते तसेच पुढे चालविले होते. पण त्यांचे देहभान सुटल्यामुळे ते नानाविध चेष्टा करीत व बहुविध चालीने दौडत महीतलावर धडाधड पडू लागले ! राजा, त्या समरांगणांत पायदळाचीही तशीच दुर्दशा उडाली. घायाळ होऊन पडलेली मनुष्ये आक्रोश करीत विव्दळत होती. कित्येक आपल्या आससुहृदांना, कित्येक आपल्या पितृपितामहांना आणि कित्येक तेषां जी दुसरी मनुष्ये धावत होती त्यांना पाहून त्यांच्या प्रख्यात गोत्रनामांचा उच्चार करीत एकमेकांशी त्यांची स्तुति करीत होती. त्यांचे छिन्नभिन्न झालेले हजारों सुवर्णालंकृत बाहु नानाविध प्रकारे चलनवलन करीत होते. कित्येक बाहु वर्तुळाकार गरगर फिरत होते, कित्येक वेड्यावांकड्या रीतींनी धडपडत होते, कित्येक खाली पडत होते, कित्येक वर उडत होते, कित्येक एकदां खाली

आपटले म्हणजे वर उठत नसत, कित्येक एकसारखे थरथर स्फुरण करीतच रहात, आणि कित्येक तर पांच फडांच्या भुजंगांप्रमाणे सळाख्या मारीत होते ! राजा, सर्पांच्या शरीराप्रमाणे मांसल व पुष्ट आणि चंदनाची उटी दिलेले असे ते भुज रुधिरांत माखून गेल्यामुळे केवळ सुवर्णाच्या ध्वजांप्रमाणे अत्यंत देदीप्यमान दिसत होते.

ह्याप्रमाणे घोर रणकंदन चालले असतां चोहोंकडे अगदी एकच गर्दी होऊन आपण कोणाशी लढत आहों हेंही भान न रहातां ते वीर परस्परांवर प्रहार करू लागले. त्या समयी जिकडे तिकडे धूळच धूळ झाल्यामुळे व सर्व सैनिक हातघाईवर येऊन एकसारखे शस्त्राखांचा प्रहार करीत सुटल्यामुळे अंतर्बाह्य तम माजले व आपला कोण आणि परका कोण ही ओळख बुजून जाऊन मोठे भयंकर युद्ध मातले ! राजा, त्या समयी रक्ताच्या मोठ्या नद्या वाहू लागल्या ! वीरमस्तरूप पाषाणांनी त्या अगदी आच्छादित झाल्या, वीरकेशरूप शैवालाने त्यांचे घृष्टभाग हिरवे दिमू लागले, वीरांची हाडे हे जणू काय त्या नद्यांतील मासेच इतस्ततः दिमू लागले, रत्नखचित हेममय धनुष्ये, शर व गदा ह्या जणू काय अंतरिक्षांतील ज्यातींच्या (ग्रहनक्षत्रादिकांच्या) प्रभाच होत असें भासू लागले, मांस व शोणित ह्यांचा चिखल हा जणू काय त्या नद्यांतील कर्दमच होय असे वाटले, आणि त्या नद्यांच्या रक्तरूप उदकाला एकसारखी भरती येत असल्यामुळे सर्वांना मोठे भय पडून गेले व शूरांना मात्र आनंद लोटला ! राजा, यमसदनाला नेऊन पंचविणाच्या त्या भयंकर नद्यांत पुष्कळ पुरुखांनी बुड्या मारून क्षत्रियांना भय उत्पन्न केले व ते आपण स्वतः मरून गेले ! राजा, त्या ठिकाणी हिमक प्राणी अक्रालविक्राल ओरडत चोहोंकडे

भ्रमण करीत असल्यामुळे यमाच्या नगरी-प्रमाणे ती युद्धभूमि भयंकर दिसत होती. त्या रणांगणांत चौहोंकडे वीरपुरुषांची असंख्य कबंधे उठून उभी राहिली; आणि मांसशोणितांचे मनमुराद सेवन करून तृप्त झालेले भूतगण सर्वत्र नाचू लागले ! राजा, कावळे, बगळे व गिधाडे हीं मेद, मज्जा, वसा, मांस व रक्त हीं यथेष्ट खाऊन इतस्ततः खुशाल धावत आहेत, असें दिसू लागले. राजा, मरणाची भीति म्हणून सर्वांना असा-वयाचीच; तथापि शूर वीरांनी ती भीति सोडून देऊन योद्ध्यांचे व्रत कोणते हें मनांत वागविले आणि त्यांनी निर्घास्तपणे प्रताप गाजविण्यास प्रारंभ केला. राजा, त्या भयाण रणभूमीवर जेथे शर व शक्ति ह्या सर्वत्र पसरल्या होत्या व हिंसक प्राण्यांच्या टोळ्यांच्या टोळ्या जमल्या होत्या, तेथे पराक्रमी वीर आपले शौर्य दाखवीत आणि आपले गोत्र, नाम, पितृनाम वगैरे एकमेकांना सांगत फिरतां फिरतां त्यांनी शक्ति, तोमर व पट्टे ह्यांचे प्रहार करून परस्परांना वधण्याचा क्रम सुरू केला, आणि पुनः अत्यंत भयंकर युद्ध होऊं लागून, सागरांत फुटकी नाव बुडून नाश पावते तद्वत् त्या समरांत कौरवीय सेना नाश पावली !

अध्याय त्रेपन्नावा.

—:०:—

संशप्तकवध.

संजय सांगतो:—राजा, अशा प्रकारे घोर संग्राम सुरू होऊन क्षत्रियांचा मंहार चालला असतां, जेथे अर्जुनाचे संशप्तकांचे, कोसलांचे व नारायण नामक सेनेचे कंदन केले, तेथून गांडीवाचा महान् शब्द ऐकू येऊं लागला. राजा, त्या रणांत श्लब्ध झालेल्या जयेच्छु संशप्तकांनी चौहोंकडून अर्जुनाच्या मस्तकावर

जो शरवर्षाव केला, तो सर्व त्यानें मोठ्या हिमतीने व शौर्यानें सहन करून, उलट त्यांच्या श्रेष्ठ रथ्यांवर, धार देऊन जलाल केलेल्या कंकपत्र बाणांचा भडिमार चालविला; आणि त्या रथसेनेत घुसून उत्कृष्ट आयुध धारण केलेल्या मुशर्मांला गांठिले. तेव्हां, राजा, त्या श्रेष्ठ रथ्यांने अर्जुनावर बाणांचा भडिमार केला व त्याप्रमाणेच संशप्तकांनीही त्यास बाणांनी आच्छादून टाकिले. नंतर मुशर्मांनी दहा बाण मारून अर्जुनाला विद्ध केले आणि जनार्दनाच्या उजवे बाहूवर तीन बाण टाकिले. नंतर त्यांने एक बल्ल बाण सोडून अर्जुनाचा ध्वज छेदिला; तेव्हां त्यावर अधिष्ठित असलेला विश्वकर्माने निर्माण केलेला जो महान् वानर-राज मारुति, त्यानें मोठ्यानें गर्जना केली आणि त्या भयंकर गर्जेनें तत्काळ तुड्या सैन्याला धडकी भरून तें निश्रेष्ठ पडले ! त्या समयीं, राजा, तें तुझे सैन्य नानाविध पुष्पांनी भरून गेलेल्या चैत्ररथवनाप्रमाणे दिसू लागले ! नंतर कांहीं वेळांने तें सैन्य सावध झाले; आणि मग, पर्वतावर मेघ जशी जलवृष्टि करितात, तशी तुड्या पक्षाच्या वीरांनी अर्जुनावर बाण-वृष्टि केली; आणि सर्वांनी मिळून अर्जुनाच्या त्या महान् रथाला गराडा घालून त्यास अडविण्याचा यत्न चालविला. त्या समयीं अर्जुन तुड्या वीरांवर तीक्ष्ण बाणांचा भडिमार करून त्यांस ठार मारू लागला, तरी त्यांनी आपला यत्न न सोडितां उलट चवताळून जाऊन अर्जुनाचे अश्व, रथचक्रे व धुरी हीं सर्व कुठित व भंग करून टाकण्याचा उपक्रम आरंभिला. ह्याप्रमाणे तुड्या सैन्यांतील महाम्हावधि वीरांनी अर्जुनाच्या रथाचे निग्रहण केल्यावर सर्वांनी मोठ्यानें सिंहगर्जना केली. त्या वेळीं कित्येकांनी केशवाच्या महान् भुजांना आणि दुसऱ्या कित्येकांनी रथांत अधिष्ठित अमलेल्या

अर्जुनाला मोठ्या आवेशाने धरिले. परंतु नंतर केशवाने त्या भयंकर युद्धांत आपले बाहु गद-गद हालविले आणि दुष्ट हत्ती ज्याप्रमाणे आपणावर अधिष्ठित असलेल्या लोकांना क्षणांत खाली पाडितो, त्याप्रमाणे त्याने त्या बाहुधारकांना क्षणांत खाली पाडिले ! राजा, महारथांनी आपल्यास गराडा घातला आहे, आणि आपला रथ कुंठित केला असून कृष्णालाही शत्रुसैन्याने धरिले आहे, असे जेव्हां अर्जुनाने पाहिले, तेव्हां त्याला अनावर क्रोध चढला आणि त्याने आपल्या रथावर चढलेल्या पायदळास भराभर खाली लोटिले आणि सभोवताली गराडा घालून राहिलेल्या सैन्याला शरवृष्टीने झांकून काढून कृष्णाला म्हटले. " हे महाबाहो कृष्णा, मी जरी सहस्रावधि संशप्तकांना मारीत आहे, तरी ह्या संशप्तकांच्या महान् सैन्याने केवढे दारुण कर्म आरंभिले आहे पहा. हे युद्धपुंगवा, रथाला कुंठित करण्यासाठी हे असे घोर युद्ध चालले असता त्यास तोंड देईल असा माझ्याशिवाय दुसरा कोणताही वीर ह्या भूतलावर नाही. "

राजा धृतराष्ट्रा, असे बोलून अर्जुनाने देवदत्त व कृष्णाने पांचजन्य शंख वाजविला आणि त्याचा शब्द तत्काळ पृथ्वीवर व अंतरिक्षांत भरून जाऊन संशप्तकांचे सैन्य भीतीने गांगरून सरावैरा पळू लागले ! हे महाराजा. नंतर शत्रुसंहारक अर्जुनाने पुनःपुनः नागास्त्रांचे आवाहन करून कौरवसैन्याचे पाय सर्परज्जूनी बांधून टाकिले. तेव्हां जणू काय कौरववीरांच्या पायांत लोखंडी बिड्याच पडल्याप्रमाणे होऊन ते अगदी जागच्या जागी खिळल्यासारखे स्तब्ध झाले. नंतर, ज्याप्रमाणे तारकामुराच्या वधसमयी इंद्राने दैत्यांना ठार मारिले, त्याप्रमाणे पांडुनेदनाने त्या निश्चेष्ट वीरांस ठार मारिले. राजा, अशा प्रकारे अर्जुन त्यांचा संहार उडवू ला-

गला तेव्हां त्यांनी अर्जुनाचा तो श्रेष्ठ रथ अडविला होता तो सोडून दिला व हातांतलीं शस्त्रांखे खाली टाकण्यास आरंभ केला ! राजा, त्या वीरांचे पाय अगदी जखडून गेल्यामुळे त्यांचे चलनचलनही बंद झाले आणि मग त्यांचा बांकदार बाणांनी अर्जुनाने जो विध्वंस उडविला त्यांचे काय वर्णन करावे ? ज्या वीरांना उद्देशून अर्जुनाने नागास्त्र मोडिले होते ते सर्व योद्धे रणांगणांत भुजंगांच्या धुडांनी परिवेष्टित झाले व त्यामुळे त्यांची फारच शोचनीय अवस्था झाली ! नंतर तो सर्व प्रकार अवलोकन करून महारथ मुशर्म्याने तत्काळ सौपर्णास्त्रांचे अभिमंत्रण केले. त्याबरोबर जिकडे तिकडे गरुड उत्पन्न होऊन समरांगणांत मातलेल्या सर्पांवर ते भराभर उड्या घालून त्यांस खाऊ लागले ! तेव्हां त्या नागांची फारच तारंबळ उडाली आणि ज्यांच्या ज्यांच्या म्हणून ते पक्षी दृष्टीस पडले त्यांनी त्यांनी एकदम पळून जाण्याचा मार्ग आरंभिला ! नंतर, राजा, क्षणांत ते कौरवसैन्य पादबंधापासून मुक्त झाले; व मेघजालकापासून मुक्त झालेला भास्कर जसा प्रखर तेजाने प्रजाना तप्त करितो, तसा तो सेनासमूह शत्रूंना तप्त करू लागला ! त्या समयी कौरवांकडील योद्धे अर्जुनाच्या रथावर बाणांचा वर्षाव व शस्त्रांचे प्रहार करू लागले आणि त्यांनी विविध शस्त्रास्त्रांनी चोहोंकडून त्यास विद्ध केले. तेव्हां शत्रुसंहारक अर्जुनाने कौरववीरांनी केलेली ती प्रचंड शस्त्रास्त्रवृष्टि उलट बाणवर्षाव करून भेदून टाकिली आणि फिरून तो आपला प्रताप गाजवू लागला ! इतक्यांत मुशर्म्याने अर्जुनाच्या हृदयांत एक बांकदारबाण मारिला व आणखी तीन बाण शरीराच्या दुसऱ्या भागांवर टाकिले ! तेव्हां अर्जुन अतिशयित विद्ध होऊन आपल्या स्थानी वळवळत पडला असतां कौरवांकडील सर्व वीर अर्जुन भेला !

अर्जुन मेला !' असें मोठमोठ्यांचे ओरडू लागले ! त्या वेळीं शंख, भेरी व अनेक रणवाद्ये वाजू लागलीं आणि सर्वत्र सिंहनाद होऊं लागले ! इतक्यांत अर्जुन सावध झाला व त्यानें ताबडतोब ऐंद्र अस्त्र सोडिलें ! तेव्हां लागलेच चोहोंकडे हजारों बाण उत्पन्न झाले आणि त्यांनीं दशदिशांच्या ठिकाणीं तुझ्या सैन्याला ठार करण्याचा सपाटा चालविला ! राजा, मग जेव्हां लक्षावधि हय व रथ समरभूमीवर उच्छिन्न होऊन पडू लागले, तेव्हां संशप्तकांना व गोपालांना अतिशय भीति उत्पन्न झाली ! त्या समर्थी कोणालाही अर्जुनाला विद्ध करण्याची छाती होईना; आणि अश्वेरीम तुझ्याकडील योद्धे पहात असतां अर्जुनानें तुझ्या सैन्याचा निःपात उडविला व सहस्रावधि वीरांना धारातीर्थी पाडून, धूमरहित झालेल्या अशीप्रमाणें तो शोभूं लागला ! धृतराष्ट्रा. त्या प्रसंगीं अर्जुनानें चौदा हजार योद्धे, दहा हजार रथ व तीन हजार हत्ती ह्यांचा नाश उडविल्यावर फिरून संशप्तकांनीं त्याला गराडा घातला आणि मारावें किंवा मरावें अमा निश्चय करून ते अर्जुनाशीं घोर युद्ध करूं लागले.

अध्याय चौपन्नावा.

—:—

शिखंडीचा पराजय.

संजय सांगतो:—याप्रमाणें संशप्तकांचें व अर्जुनाचें घोर युद्ध सुरू होऊन अश्वेरीम संशप्तकांना अर्जुनानें जेव्हां अगदीं जर्जर करून सोडिलें, तेव्हां, समुद्रावर फुटक्या नावेचा जमा विध्वंस होतो तसा कौंगवमेनेचा आतां अगदीं पूर्ण विध्वंस होणार असें पाहून कृतवर्मा, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण, उलूक, मौबल, दुर्योधन राजा व त्याचे भ्राते हे सर्व रणांगणांत कौरवसैन्याच्या मदतीकरितां मोठ्या वेगानें धावून आले;

आणि मग त्यांचा व पांडवसैन्याचा जो मोठा भयंकर संग्राम सुरू झाला, तो पाहून कांहीं वेळपर्यंत भिड्यांना मोठें भय वाटलें आणि शूरांना मोठा आनंद झाला ! त्या समर्थी रणभूमीवर कृपाचार्यानें एकसारखा बाणांचा भडिमार चालवून टोळधाडीप्रमाणें सृज्यांना झांकून काढिलें. तेव्हां शिखंडीला मोठा क्रोध आला व त्यानें तत्काळ त्या गौतमावर चाल केली आणि त्या द्विजपुंगवावर चोहोंकडून बाणांचा पाऊस पाडिला ! त्या समर्थी महाखवेच्या कृपाचार्यानें शिखंडीप्रेरित त्या सर्व बाणसमूहाचा नाश उडवून उलट मोठ्या क्रोधानें दहा बाणांनीं ममरांगणांत शिखंडीला विद्ध केलें. तेव्हां शिखंडीला पुनः क्रोध चढला आणि त्यानें क्रोधाग्रमान झालेल्या कृपाचार्याला मरळ घुसणारे मात कंकपत्र बाण टाकून घायाळ केलें. त्या वेळीं महारथ कृपाचार्य अतिशयित विद्ध झाला व त्यानें शिखंडीवर तीक्ष्ण शर सोडून त्याचे अश्व, रथ व सारथि ह्यांचा नाश उडविला. तेव्हां ताबडतोब ढाल-तरवार घेऊन महारथ शिखंडी हा अश्वहीन झालेल्या आपल्या रथांतून उडी मारून खाली उतरला व त्यानें कृपाचार्यावर एकदम हल्ला केला. त्या वेळीं शिखंडी मोठ्या आवेशानें आपणावर चालून येत आहे असें पाहून कृपाचार्यानें बांकदार बाणांच्या भडिमारांनें त्यास असें झांकून काढिलें कीं. जणू काय शिखंडीवर शिलावृष्टिच होत आहे असा त्या वेळीं भास झाला व त्यामुळें रणांगणांत शिखंडी निश्चेष्ट उभा राहिला ! राजा, ह्याप्रमाणें कृपाचार्यानें शिखंडीला शराच्छादित करून टाकिलें असें पाहून तत्काळ महारथ वृष्टद्युम्न कृपाचार्यावर उलट चालून गेला; पण वृष्टद्युम्न कृपाचार्याच्या रथावर धावून येत आहे असें पाहातांच महारथ कृतवर्म्यानें मोठ्या आवेशानें त्याजवर चाल करून त्यास अडवून टाकिलें. तेव्हां

कृपाचार्यावर आपल्या सैन्यासह व पुत्रांसह युधिष्ठिरानें चाल केली; परंतु त्यांचा अध-
 त्थाम्यानें प्रतिकार केला. नंतर महारथ नकुल
 व सहदेव हे मोठ्या त्वरेनें पुढें झाले; पण
 त्यांजवर बाणांची वृष्टि करून तुझ्या पुत्रांनें
 त्यांचें निवारण केलें. मग भीमसेन, करुष,
 केकय व संजय हे युद्धाला प्रवृत्त झाले; पण
 त्या सर्वांना समरांगणांत कर्णानें मार्गें हटविलें.
 इकडे पुनः शारद्वत कृपाचार्यानें युद्धामध्ये
 शिखंडीवर मोठ्या वेगानें बाणांचा भडिमार
 चालविला, तेव्हां जणू काय तो त्याला जाळी-
 तच आहे असें मर्वांस वाटलें. तथापि कृपा-
 चार्यानें चोहोंकडून सोडिलेले ते स्वर्णभूषित
 बाण शिखंडीनें पुनःपुनः आपली तरवार गर-
 गर फिरवून तोडून टाकिले; पण इतक्यांत शारद्व-
 तानें आणखी बाण सोडून शिखंडीच्या हातांतील
 शतचंद्र दालीचा भंग केला ! तेव्हां जिकडे
 तिकडे कौरवसैन्यांत आनंदाच्या आरोळ्या
 सुरू झाल्या ! नंतर, धृतराष्ट्रा, चर्महीन झालेला
 तो शिखंडी नुसतें खड्ड घेऊनच कृपाचार्यावर
 धावला; पण त्या वेळची त्याची स्थिति पाहून,
 एखाद्या रोग्यानें जमें मृत्यूच्या जबड्यांत सां-
 डविं, तसा तो शारद्वताच्या हातांत सांपडला
 आहे असें दिसत होतें ! राजा. नंतर कृपा-
 चार्यानें बाणप्रहार करून शिखंडीला
 अगदीं दीन करून सोडिलें, तेव्हां चित्र-
 केतूचा पुत्र सुकेतु हा ताबडतोब त्यास
 साहाय्य करण्याकरितां धावून आला आणि
 त्यानें मोठ्या शौर्यानें कृपाचार्याच्या रथावर
 पुष्कळ जलाल बाणांची वृष्टि केली. तेव्हां
 सुकेतूचें व कृपाचार्यांचें युद्ध जुंपलें; आणि
 ह्याप्रमाणें कृपाचार्य सुकेतूशीं झुंजण्यांत व्यग्र
 झाला असें पाहून शिखंडी लगलाच युद्ध-
 पराङ्मुख होऊन पळून गेला !

सुकेतुवध.

राजा, इकडे सुकेतु व कृपाचार्य ह्यांचें युद्ध
 चालू असतां सुकेतूनें गौतमावर प्रथम नऊ बाण
 सोडून त्यास विद्ध केलें; नंतर त्यानें त्यावर
 सत्तर बाण टाकिले; आणि मग फिरून तीन
 बाण सोडिले; आणि शेवटीं बाणांचा भडिमार
 करून त्यानें गौतमाचें सशर धनुष्य तोडिलें,
 एका बाणांनें त्याचा सारथि मारिला, आणि
 सर्व मर्मस्थळीं त्यास विद्ध केलें ! तेव्हां कृप
 फारच खवळला व त्यानें नवें बळकट धनुष्य
 धारण करून सुकेतूच्या सर्व मर्मस्थळीं तीस
 बाण टाकिले ! राजा, त्या योगें सुकेतूचीं सर्व
 गात्रें विव्हेळ झालीं; आणि भूमिकंप झाला
 असतां वृक्ष जसा कंपायमान होऊन धाडकन्
 पडतो, तसा तो सुकेतु कंपायमान होऊन
 आपल्या रथांत धाडकन् पडला ! राजा धृ-
 तराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें सुकेतु हा विव्हेळ होऊन पडत
 आहे इतक्यांत गौतमानें त्याजवर क्षुरप्र बाण
 सोडिला व शिरस्त्राण, देदीप्यमान कुंडलें व
 किरीट ह्यांनीं युक्त असें तें त्याचें मस्तक छेदून
 टाकिलें ! राजा, सुकेतूचें तें मस्तक श्येनाच्या
 मुखांतील मांसपिंडाप्रमाणें प्रथम भूमीवर पडलें
 व मग त्याचा तो देह पडला ! राजा, ह्याप्रमाणें
 सुकेतूचा नाश झाला तेव्हां त्याचें सैन्य अति-
 शय भयभीत झालें व तें गौतमाशीं लढाई न
 करितां त्यास सोडून देऊन दशदिशांस
 पळून गेलें !

कृतवर्मा व धृष्टद्युम्न यांचें युद्ध.

राजा, इकडे धृष्टद्युम्नाला रणभूमीवर महारथ
 कृतवर्म्यानें अडवून ठेवून मोठ्या दांडगाईनें
 ' थांब थांब ' असें म्हटलें, तेव्हां रणांगणांत
 त्या उभयतांचें घोर युद्ध सुरू झालें. त्या समयीं
 जणू काय ते दोन क्रुद्ध श्येन पक्षी मांसपिंडा-
 करितां झगडत आहेत असें भासलें. तेव्हां
 धृष्टद्युम्न फार क्रोधायमान झाला व त्यानें कृत-

वर्माच्या वक्षस्थळावर नऊ बाण मारिले. त्या समयीं त्या बाणांनीं अतिशय विद्ध होऊन कृतवर्म्यानें पार्षतावर बाणांचा भडिमार चालविला आणि त्याचे अश्व व रथ ह्यांस बाणा-च्छादित करून टाकिले. राजा, पाऊस कोमळत असतां मेघांनीं आच्छादित झालेला सूर्य जसा दृग्गोचर होत नाही, तसा तो धृष्टद्युम्न बाणवृष्टीनें आच्छादित झाल्यामुळे दृग्गोचर झाला नाही. नंतर धृष्टद्युम्नानें उलट बाणांचा भडिमार चालू केला आणि आपल्या सुवर्णालंकृत बाणसमूहानें कृतवर्म्याच्या बाणसमूहाचा भेद करून बाणप्रहारांमुळे ऋणयुक्त झालेला तो धृष्टद्युम्न रणभूमीवर आपलें दिव्य तेज बाहेर टाकू लागला ! नंतर सेनापति धृष्टद्युम्नानें अतिशय संतप्त होऊन कृतवर्म्यावर एकदम भयंकर बाणवृष्टि आरंभिली; परंतु कृतवर्म्यानें उलट सहस्त्रावधि बाणांचा भडिमार करून रणांगणांत धृष्टद्युम्नाच्या शरवृष्टीचें निवारण केलें. ह्याप्रमाणें आपण केलेली बाणवृष्टि व्यर्थ झाली असें पाहून धृष्टद्युम्न कृतवर्म्याच्या समीप येऊन त्याच्याशीं युद्ध करू लागला आणि मोठ्या त्वेपानें त्यानें एक धार दिलेला भल्ल बाण टाकून त्याचा सारथि यमसदनीं पाठविला. अशा प्रकारें धृष्टद्युम्नानें कृतवर्म्यास सारथिहीन केलें. तेव्हां कृतवर्मा मोठा बलिष्ठ होता तरी त्यास बलवान् धृष्टद्युम्नानें जिंकलें; आणि मग कौरवमैन्यावर आणखी बाणवृष्टि करून धृष्टद्युम्नानें तत्काळ त्याचा निरोध करण्याचा उद्योग आरंभिला; पण तुझ्या सैन्यांतील योद्धे मिहामारखी गर्जना करीत धृष्टद्युम्नावर चालून आले आणि मग पुनः घोर युद्धाम प्रारंभ झाला !

अध्याय पंचावस्त्रावा.

—०:—

अश्वत्थाम्याचा पराक्रम.

संजय सांगतो:—इकडे सात्यकि व द्रोणपुत्राचे शूर पुत्र हे युधिष्ठिराचें संरक्षण करीत आहेत असें पाहून अश्वत्थाम्यानें मोठ्या उल्हासानें युधिष्ठिरावर हल्ला केला. त्यानें त्या समयीं सहाणेवर धार देऊन जलाल केलेल्या स्वर्णपुंख भयंकर बाणांची मोठ्या शिताफीनें वृष्टि चालविली आणि आपल्या रथानें नानाविध मंडळें करीत व बाणक्षेपणाविषयीं अपूर्व कौशल्य दाखवीत तो युधिष्ठिरादिकांच्या समीप प्राप्त झाला. राजा, नंतर त्या महास्त्रवेत्त्या द्रोणपुत्रानें दिव्यास्त्रांनीं अभिमंत्रित केलेल्या बाणांनीं अंतरिक्ष व्यापून टाकिलें आणि युद्धभूमीवर धर्मराजाला बाणाच्छादित केलें. राजा, त्या वेळीं सर्वत्र अश्वत्थाम्याचे बाणच बाण होऊन गेल्यामुळे सर्व समरांगण बाणरूप बनून तेथें दुसरें कांहींएक दृष्टीस पडत नव्हतें. अंतरिक्षांत जिकडे तिकडे स्वर्णपुंख बाणांचें जाळें पसरलें असल्यामुळे जणू काय तेथें भरजरीचें झतच ताणलें आहे, असें भासत होतें! आणि त्यामुळे अंतरिक्षाचा वरील भाग देदीप्यमान बाणांनीं आच्छन्न होऊन अघ्रांच्या छायेप्रमाणें भूतलावर छाया पडली होती! राजा, त्या वेळीं आह्मांला मोठा चमत्कार वाटला तो हा कीं. अंतरिक्षांत बाणजालकाच्या वरतीं जे प्राणी भ्रमण करीत होते, त्यांस त्या बाणपटलाच्या खालीं येण्याला मुळीच मार्ग मिळत नव्हता! राजा, अश्वत्थाम्यानें ही जी अपूर्व शरवृष्टि करून दशदिशा व्याप्त करून टाकिल्या त्याचा परिणाम असा झाला कीं, सात्यकि, धर्मराज, त्याप्रमाणेंच इतर योद्धे व सैनिक हे जरी विजयप्राप्त्यर्थें झटत होते, तरी त्यांच्यानें कोणताही पराक्रम होईना! द्रोणपुत्राचें

हस्तलाघव अवलोकन करून युधिष्ठिरादिक महाराथांना मोठा विस्मय वाटला व मध्यान्ह-कालच्या प्रखर सूर्याकडे ज्याप्रमाणे कोणा-लाही पहावत नाही, त्याप्रमाणे त्या युधिष्ठिरादिक सर्व क्षत्रियांना अश्वत्थाम्याकडे पहा-वेनासे झाले ! राजा नंतर अश्वत्थाम्याने पांडवसैन्याचा संहार चालविला, तेव्हां सात्यकि, युधिष्ठिर, पांचाल व द्रौपदीपुत्र हे सर्व महारथ वीर एकत्र झाले आणि त्यांनी मरणाची भीति सोडून देऊन त्या भयंकर अश्वत्थाम्यावर हल्ला केला. त्या वेळी पहिल्याने सात्यकीने सत्तावीस शिलीमुख, व मागून सात स्वर्णभूषित नाराच बाण मारून अश्वत्थाम्याला विद्ध केले. नंतर युधिष्ठिराने व्याहात्तर, प्रतिविध्याने सात, श्रुतकर्म्याने तीन, श्रुतकीर्तीने सात, सुतसोमाने नऊ व शतानिकांने सात असे बाण मारून अश्वत्थाम्याला विद्ध केले आणि त्याचप्रमाणे दुसऱ्याही पुष्कळ शूर वीरांनी चोहोंकडून अश्वत्थाम्यावर बाणांचा भडिमार चालविला. राजा, ते पाहून अश्वत्थाम्याला अतिशय संताप आला व त्याने सर्पासारखे सुसकारे टाकीत सात्यकीवर पंच-वीस, श्रुतकीर्तीवर नऊ, सुतसोमावर पांच, श्रुतकर्म्यावर आठ, प्रतिविध्यावर तीन, शतानिकावर नऊ, युधिष्ठिरावर पांच आणि त्या-प्रमाणेच इतर पराक्रमी वीरांवर प्रत्येकी दोन दोन बाण टाकून त्यांस विद्ध केले व श्रुत-कीर्तीचे धनुष्य जलाल बाणांनी छेदिले ! राजा, नंतर महारथ श्रुतकीर्तीने दुसरे धनुष्य धारण केले आणि पहिल्याने तीन व मागा-हून दुसरे पुष्कळ तीक्ष्ण बाण सोडून अश्व-त्थाम्याला विद्ध केले. तेव्हां द्रोणपुत्राने पुनः चोहोंकडे बाणांचा वर्षाव चालविला आणि पांडवांचे सर्व सैन्य बाणाच्छादित करून टाकिले. मग अश्वत्थाम्याने धर्मराजाचे धनुष्य छेदिले व त्यावर हंसत हंसत तीन बाण सोडिले.

तेव्हां धर्मपुत्र युधिष्ठिराने दुसरे प्रचंड धनुष्य धारण करून अश्वत्थाम्याच्या भुजांवर व छातीवर सत्तर बाण टाकून त्यास विद्ध केले. इतक्यांत युधिष्ठिरावर अश्वत्थाम्याने बाण टा-किल्यामुळे क्षुब्ध झालेल्या सात्यकीने तीक्ष्ण अर्धचंद्र बाणाने अश्वत्थाम्याचे धनुष्य भंगून मोठ्याने गर्जना केली ! तेव्हां आपले धनुष्य तुटले असे पाहून त्या महाशक्तिमान् अश्व-त्थाम्याने तत्काळ शक्ति फेकून शैनेयाच्या (सात्यकीच्या) रथावरील सारथि धारातीर्थी पाडिला ! नंतर प्रतापशाली द्रोणपुत्राने दुसरे धनु-ष्य घेऊन शैनेयाला शराच्छादित केले व त्यामुळे युद्धभूमीवर सारथिहीन झालेल्या त्या सात्यकी-च्या रथाचे घोडे बेफाम होऊन हवे तसे धावत सुटले ! तेव्हां युधिष्ठिराचे सैन्य त्या महाधनुर्धर अश्वत्थाम्यावर मोठ्या त्वेषाने निशित बाणांचा वर्षाव करित चाल करून गेले; परंतु आपणा-वर येणाऱ्या त्या क्रोधायमान वीरांचा त्या द्रोणपुत्र अश्वत्थाम्याने हंसत हंसत विध्वंस उडविला ; राजा, ज्याप्रमाणे अरण्यांत अग्नि भडकला असता तो त्या अरण्यांतील तृणा-दिकांना क्षणांत भस्म करितो, त्याप्रमाणे शर-रूप ज्वालांनी चेतलेल्या त्या अश्वत्थामारूप अग्नीने पांडवसेनारूप तृणादिकांचे भस्म करून टाकिले ! याप्रमाणे पांडवांचे ते सैन्य अश्वत्थाम्याने भस्म केले असता, ज्याप्रमाणे नदीच्या मुखाशी तिमि नामक मत्स्याने जलाचा क्षोभ करावा, त्याप्रमाणे त्या अश्वत्थाम्याने पांडवसैन्याचा क्षोभ करून टाकिला ! राजा, त्या समर्थी द्रोण-पुत्राचा तो अद्वितीय पराक्रम अवलोकन करून सर्वांना असे वाटले की, आतां द्रोणपुत्राच्या हस्ते सगळे पांडव मेल्ले ह्यांत संशय नाही ! तेव्हां द्रोणाचा शिष्य महारथ युधिष्ठिर हा संतप्त होतसाता अश्वत्थाम्याला म्हणाला, “ बा अश्वत्थामन्, तुझ्या ठायी ममता अथवा कृतज्ञता

अगदीच नाही हें कसे ? हे पुरुषव्याघ्रा, तूं आज मलाच ठार मारण्याची इच्छा करित आहेस हें काय ? अरे, ब्राह्मणांनं दान, अन्य-यन व तपश्चर्या करावी; धनुष्य धारण करून दुसऱ्याचा प्राण घेणें हें क्षत्रियांचें विहित कर्म होय. ह्यासाठीं तूं केवळ नांवाचा ब्राह्मण होय. हे महाबाहो, हा पहा तुझ्या समक्ष मी कौरवांना युद्धांत जिकितों, तुझ्या अर्गी जो कांहीं पराक्रम असेल तो तूं व्यक्त कर. तूं ब्राह्मणाधम आहेस, ह्यांत तिळमात्र संदेह नाही ! ” धृतराष्ट्रा, धर्मराजाचें भाषण श्रवण करून द्रोणपुत्र अश्वत्थामा हंसला व युधिष्ठिर जें कांहीं बोलला तें सत्य आहे असा विचार करून त्यानें कांहींच उत्तर दिलें नाही. नंतर, क्रोधायमान झालेला यम ज्याप्रमाणें प्राण्यांचा संहार करण्यास उद्युक्त होतो, त्याप्रमाणें पांडवसैन्याचा संहार करण्यास उद्युक्त होऊन अश्वत्थाम्यानें धर्मराजाला बाणाच्छादित केलें; आणि त्याबरोबर धर्मराजा तत्काळ त्या प्रचंड सेनेला सोडून देऊन युद्धविमुख होऊन रणांतून निवून गेला; आणि धर्मराजा युद्धांतून निवृत्त झाला असे पाहून महात्मा द्रोणपुत्रही तेथून चालता झाला ! राजा, धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें त्या घोर रणांत धर्मराजांनं अश्वत्थाम्यापासून आपली सुटका करून घेतली; पण तो क्रूर कर्म करून तुझ्या सैन्याचा नाश करण्याकरितां पुनः तुझ्या सैन्यावर चालून आला !

अध्याय छपन्नावा.

—:o:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—इकडे पांचाल, चेदि व केकय ह्यांसह भीमानें कर्णावर हल्ला केला असतां स्वतः कर्णानें त्या सर्व वीरांवर बाणांचा वर्षाव करून त्यांचें निवारण केलें. नंतर त्यांनं

भीमसेनाच्या डोक्यादेखत समरांगणांत चेदि-कारूप व संजय ह्यांच्या महारथांना बाधिलें. तेव्हां महारथ कर्णाला सोडून देऊन भीमसेनानें कौरवांच्या सेनेवर हल्ला केला; आणि तृणराशीला जाळून टाकणाऱ्या अग्नीप्रमाणें तो त्या कौरवसेनेला जाळून टाकूं लागला ! इकडे कर्णानेंही संग्रामांत सहस्त्रावाधि महाधनुर्धर पांचाल, केकय व संजय ह्यांना ठार मारिलें. राजा, त्या समर्थी महारथ अर्जुनानें संशप्तकांचा संहार उडविला; वृकोदरानें कुरुसेनेचा फडशा पाडिला आणि कर्णानें पांचाल वीरांचा विध्वंस उडविला ! त्या वेळीं ते तीन अग्निमुक्त भयंकर योद्धे क्षत्रियांना दग्ध करूं लागले असतां समरांगणांत अखेरीस ती तिन्ही सैन्ये नष्ट झाली; आणि ह्या घोरसर्व अनर्थाला मूळ कारण पाहूं लागलें असतां तुझी दुष्ट सल्ला हेंच होय ! असो; नंतर दुर्योधन फारच क्रुद्ध झाला आणि त्यानें नऊ बाणांनीं नकुलाला व त्याच्या चारही अर्थांना विद्ध करून क्षुरबाणांनं सहदेवाचा कांचनध्वज छेदिला. तेव्हां वीरशिरोमणि नकुल व सहदेव हे फारच खवळले आणि समरांगणांत तुझ्या पुत्रावर नकुलानें सात व सहदेवानें पांच बाण टाकिले. त्या समर्थी दुर्योधनाला अनावर संताप आला व त्यानें तत्काळ त्या दोन्ही वीरांच्या वक्षस्थळीं पांच पांच बाण मारिले आणि दुसरे दोन भल्लबाण सोडून त्या दोघांचीही धनुष्ये छेदिली व एकाएकी त्यांजवर एकवीस बाण टाकून त्यांस विद्ध केलें ! तेव्हां समरभूमीवर ते दोघे प्रतापशाली योद्धे नकुलसहदेव इंद्रधनुष्याप्रमाणें सुंदर व श्रेष्ठ धनुष्ये धारण करून दुर्योधनाशी लढण्यास सिद्ध झालेले पाहून जणू काय ते दुसरे देवच आहेत असें भासलें ! नंतर, राजा, पर्वतावर महामेघ जशी वृष्टि करितात, तशी घोर वृष्टि ते शूर भ्राते दुर्योधनावर करूं लागले ! तेव्हां तुज्जा पुत्र महारथ

दुर्योधन हा फारच क्षोभला आणि त्यानें एक-सारखा बाणवर्षाव चालू करून त्या महेश्वास पांडुपुत्रांना कुंठित करून टाकिलें ! त्या समयीं तुझ्या पुत्राचें बाणनिक्षेपणाविषयीं असें कांहीं लोकोत्तर कौशल्य दृष्टीस पडलें कीं, तेव्हां त्याच्या धनुष्याचें मंडल व त्यापासून एकसारखे चोहोंकडे बाहेर पडत असलेले बाण मात्र दिसत असत ! राजा, दुर्योधनानें अशा प्रकारें बाणांचा भडिमार करून सूर्यकिरणांप्रमाणें दश दिशा व्याप्त केल्या व त्या योगें सर्व आकाश बाणाच्छादित होऊन जिकडे तिकडे अंधःकार पडला ! ह्याप्रमाणें दुर्योधनाचा प्रताप अवलोकन करून माद्रीपुत्रांना तो जणू काय प्रलयकालीन यमच आहे असें वाटलें आणि आतां माद्रीपुत्र खचित मृत्यूच्या जबड्यांत सांपडले असें सर्व महारथ्यांना वाटलें. नंतर, राजा, पांडवांचा सेनापति पार्शत धृष्टद्युम्न हा जेथें सुयोधन राजा शेर पराक्रम करीत होता तेथें आला व त्यानें शूर नकुलसहदेवांच्या पुढें होऊन दुर्योधनावर सायकांचा भडिमार चालवून त्याला मागें हटविलें. राजा, तेव्हां तुझ्या अतुलप्रातापी पुत्राला फारच क्रोध आला व त्यानें सूड उगविण्याचे हेतूनें मोठ्यानें हंसून प्रथम धृष्टद्युम्नावर पंचवीस बाण टाकिले आणि मग पुनः पांसष्ट बाणांचा वर्षाव करून व मोठ्यानें गर्जेना करून एका जलाल क्षुरप्र शरानें समरांगणांत धृष्टद्युम्नाचें बाणासह धनुष्य व तलत्राण हीं छेदिलीं ! राजा, त्या समयीं त्या परमप्रातापी पांचाल वीरानें तें छिन्न धनुष्य फेंकून दिलें आणि मोठ्या त्वरेनें दुसरें मोठें बळकट धनुष्य धारण केलें. तेव्हां त्याला इतका क्रोध चढला होता कीं, त्याचे नेत्र रुधिरासारखे आरक्त दिसूं लागले व तो अगदीं अग्नीसारखा पेटला ! राजा, नंतर दुर्योधनाच्या शरप्रहारांनीं विद्ध झालेल्या महेश्वास धृष्टद्युम्नानें दुर्योधनाला वषण्याच्या

इराद्यानें त्याजवर सहाणेवर धार देऊन तीक्ष्ण केलेले पंधरा नाराच बाण टाकिले, तेव्हां ते कंक-पुंख आणि मयूरपुंख जलाल बाण लागलेच मोठ्या वेगानें सर्पासारखे फणाणत दुर्योधनाच्या हेममय कवचाचें भेदन करून त्याच्या शरीरांत घुसले व तेथून तत्काळ बाहेर पडून मोठ्या जोरानें भूगह्वरांत शिरले ! राजा, त्या समयीं तुझा पुत्र अतिविद्ध होऊन, वसंत ऋतूंत प्रफुल्लित झालेला मोठा थोरला पळस जसा आरक्त दिसतो, तसा आरक्त दिसूं लागला ! नंतर राजा, धृष्टद्युम्नाच्या बाणप्रहारांनीं जर्जर झालेला तो कवचहीन दुर्योधन राजा अतिशय क्षोभला व त्यानें एका भल्ल बाणानें धृष्टद्युम्नाचें धनुष्य छेदून टाकिलें ! मग तुझ्या पुत्रानें पुनः त्वरा करून धनुष्यहीन झालेल्या त्या धृष्टद्युम्नाच्या भालप्रदेशीं दोन्ही भिवयांच्या मध्ये दहा बाण मारिले. लोहारानें पाणी देऊन पाजविलेले ते दहा बाण धृष्टद्युम्नाच्या कपाळांत रुतले असतां जणू काय मधुप्राशनाच्या इच्छेनें प्रफुल्लित कमलावर भ्रमरच अधिष्ठित आहेत असा भास झाला. नंतर महात्म्या धृष्टद्युम्नानें तें मोडकें धनुष्य फेंकून दिलें आणि दुसरें धनुष्य व सोळा भल्ल बाण हातांत घेऊन प्रथम पांच भल्ल बाणांनीं दुर्योधनाचे अश्व व त्याचा सारथि वधिला; नंतर एक भल्ल बाण सोडून त्याचें सुवर्णमंडित धनुष्य तोडिलें आणि उरलेल्या दहा भल्ल बाणांचा वर्षाव करून सोपस्कर रथ, छत्र, शक्ति, खड्ग, गदा व ध्वज ह्यांचा विध्वंस उडविला ! राजा, ह्याप्रमाणें दुर्योधन कवचहीन, आयुधहीन व रथहीन झाला आणि त्याचा सुवर्णलंकृत, चित्रबिचित्र, गजचिन्हित व मंगलदायक ध्वज तुटला असें सर्व राजांनीं अवलोकन केलें, तेव्हां कौरवसैन्यांत मोठी धांदल उडाली व तत्काळ त्याचे भ्राते त्याच्या संरक्षणार्थ आले; आणि धृष्टद्युम्नाच्या समक्ष

मोठ्या धीटपणानें दंडधारानें दुर्योधनाला रथांत घेऊन एकीकडे नेलें.

इकडे कर्णाचें व सात्यकीचें युद्ध चाललें होतें, त्यांत कर्णानें सात्यकीला जिंकलें व तो महाबल योद्धा तत्काळ दुर्योधन राजाला सोडविण्याकरितां द्रोणहंत्या धृष्टद्युम्नावर बाणांची वृष्टि करीत चालून आला. इतक्यांत सात्यकि पुनः युद्धभूमीकडे माघारा वळला व त्यानें बाणांचा भडिमार करीत लागलाच कर्णाचा पाठलाग केला. राजा, त्या समयीं, एक दांताळ हत्ती दुसऱ्या हत्तीचा पाठलाग करीत धावत आहे कीं काय असें भासलें. तेव्हां, राजा, हत्ती पांयांच्या मध्य-तरां दोन्ही सैन्यांतील महान् महान् वीरांचें भयंकर युद्ध चालू झालें. त्या वेळीं कौरवांकडील किंवा पांडवांकडील एकही योद्धा युद्ध-पराङ्मुख झाला नाही; आणि ते वीर मोठ्या निकरानें लढूं लागले! नंतर कर्णानें तत्काळ पांचालां-वर हल्ला केला; आणि मग मध्यान्हाच्या समयीं दोन्ही दळांमध्ये नर, वाजी व गज ह्यांचा भयंकर संहार करणारा घोर संग्राम सुरू झाला ! तेव्हां आपणांवर कर्ण येत आहे असें पाहून, पक्षी जसे झाडावर चालून जातात, तसे सर्व विज-येच्छु पांचाल वीर त्यावर तत्काळ चालून गेले आणि ते सर्व मोठ्या नेटानें कर्णाचा पराभव करण्यास झटत असतां कर्णानें क्रुद्ध होऊन आपणावर चाल करून आलेल्या त्या सर्व पांचालांवर बाणांचा भडिमार केला. राजा, त्या समयीं व्याघ्रकेतु, सुशर्मा, चित्र, उग्रायुध, जय, शुक्र, रोचमान व अजिंक्य सिंहसेन हे आठ महान् महान् पांचाल वीर आपल्या रथांतून नरश्रेष्ठ कर्णावर बाणांचा वर्षाव करीत त्याच्या नजीक आले व त्यांनीं त्यास चोहों-कडून वेढा दिला. तेव्हां रणांगणास शोभ-विणारा तो कर्ण अतिशय संतापला आणि त्यानें

त्या आठांवर दुरूनच आठ तीक्ष्ण बाण सोडून त्यांस त्रस्त केलें. नंतर त्या प्रतापशाली राषे-यानें युद्धकलेंत पटाईत अशा हजारों योद्ध्यांना त्या रणभूमीवर ठार मारिलें. त्या समयीं क्रोधायमान झालेल्या कर्णानें जिष्णु, जिष्णुकर्मा, देवापि, भद्र, दंड, चित्र, चित्रायुध, हरि, सिंह-केतु, रोचमान, महारथ शलभ आणि दुसरे पुष्कळ चेदि महारथ ह्यांना वधिलें. राजा, कर्णानें जेव्हां ह्या महारथांचा प्राण घेतला तेव्हां त्याच्या देहावर रक्ताच्या चिळकांड्या उडून रुद्राच्या देहाप्रमाणें त्याचा देह भयंकर व भव्य दिसूं लागला. त्या समयीं कर्णानें शत्रुसैन्यांतील मातंगांवर बाणांचा उग्र भडि-मार केला कीं, त्यांच्या योगें ते भयभीत होऊन चोहोंकडे पळत सुटले व त्यामुळें रणां-गणांत जिकडे तिकडे सर्व वीर घाबरून गेले. अग्रेसरीस त्या मातंगांना रणांगणांत पाठलाग करणाऱ्या कर्णाचे ते बाण सहन होईनातसे झाले आणि ते युद्धभूमीवर आपले देह धाडकन् टाकून नानाप्रकारचा आर्त स्वर करीत वज्र-प्रहारानें भिन्न झालेल्या पर्वतांप्रमाणें एकदम पडूं लागले ! तेव्हां कर्णाच्या मार्गांत जिकडे तिकडे रथ, गज, अश्व व नर ह्यांचा खच पडून सर्व भूतल झांकून गेलें ! त्या वेळीं त्या घोर समरांत कर्णानें जें भयंकर कर्म केलें तशा प्रकारचें भयंकर कर्म समरभूमीवर भीष्म, द्रोण किंवा दुसरे कोणतेही तुड्या पक्षाचे वीर ह्यांच्या हातून घडलें नाही ! त्या युद्धांत कर्णानें हत्तीचा, घोड्यांचा, रथांचा व नरांचा फारच भयंकर संहार केला ! ज्याप्रमाणें मृगां-मध्ये मिह निर्भयपणें मंचार करितो, त्या-प्रमाणें पांचालांमध्ये कर्ण हा निर्भयपणें मंचार करीत होता; आणि ज्याप्रमाणें भयभीत झालेल्या मृगांना सिंह हा चोहोंकडे पळवून लावितो, त्याप्रमाणें पांचालांच्या रथममुद्रायांना कर्णानें

चोहोंकडे उषळून लाविलें ! सिंहाच्या जवळ्यांत सांपडल्यावर मृग जसे कधीही जिवंत रहात नाहीत, तसा कर्णाच्या तडाक्यांत सांपडल्यावर कोणताही महाराथ जिवंत राहिला नाही ! आणि अग्नीत पडलेले प्राणी जसे जळून खाक होतात, तसे कर्णरूप दावाग्नीत पडलेले संजय जळून खाक झाले ! राजा, त्या युद्धांत कर्णानें जो पराक्रम केला त्याचें काय वर्णन करावें ! त्यानें चेदि, कैकेय व पांचाल ह्यांच्या शूरमान्य अशा बहुत वीरांना ' मी कर्ण आहे ' असे सांगून जेव्हां वधिलें, तेव्हां त्याचा तो लोकोत्तर पराक्रम पाहून माझ्या मनाला तर असे वाटलें कीं, आतां एकही पांचाल्याला हा कर्ण युद्धांत जिवंत ठेवीत नाही ! धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें सूतपुत्रानें पुनः पुनः युद्धांत पांचालांचा संहार उडविला, तेव्हां धर्मराज युधिष्ठिरास अतिशय संताप येऊन त्यानें एकदम कर्णावर हल्ला केला आणि मग धृष्टद्युम्न, दौपदीपुत्र व दुसरे पुष्कळ शतावधि वीर ह्यांनी कर्णाच्या रथाला वेढा घालून त्यास कोंडून टाकिलें ! त्या समयीं शिखंडी, सहदेव, नकुल, नाकुलि, जनमेजय, शैनेय, पुष्कळ प्रभद्रक वीर आणि सेनापति धृष्टद्युम्न ह्या प्रवळ वीरांनीं रणांगणांत कर्णावर बाणवृष्टि चालविली व तें पाहून उलट कर्णही त्यांजवर अस्त्रांचा वर्षाव करूं लागला. त्या समयीं राजा, गरुड जसा पन्नागांवर उड्या घालितो तसा तो एकटा कर्ण त्या बहुत चेदिपांचालपांडववीरांवर उड्या घालूं लागला आणि मग त्यांचें देवदानवांच्या युद्धप्रमाणें घोर युद्ध जुंपलें ! त्या युद्धांत ते सर्व महान् धनुर्धर एकत्र होऊन कर्णावर बाणांचा प्रचंड भडिमार करीत अमतां, कर्णानें एकट्यानें त्यांजवर उलट बाणवर्षाव केला; आणि दिवाकर ज्याप्रमाणें एकटा अंधकाराचा विध्वंस उडवितो त्याप्रमाणें त्यानें

एकट्यानें त्या प्रचंड शत्रुसैन्याचा विध्वंस उडविला ! राजा, ह्याप्रमाणें कर्ण हा पांडवांशी लढत असतां भीमसेनानें क्रोधाद्यमान होऊन कुरुसैन्यावर सर्व दिशांस यमाच्या दंडाप्रमाणें तीक्ष्ण शरांचा वर्षाव चालू केला. त्या समयीं तो महाधनुर्धर भीमसेन एकटा समरांगणांत वाहीकांवर, केकयांवर, मत्स्यांवर, वासात्यांवर, मद्रांवर व सैधवांवर शरवृष्टि करूं लागला, तेव्हां तो अत्यंत शोभला. त्या युद्धांत भीमानें गजांवर त्यांच्या मर्मस्थानीं अशी बाणवृष्टि केली कीं, तिच्या योगें ते गज अधिरूढ असलेल्या वीरांमुद्धां हत होऊन भराभर रणांगणांत पडूं लागले आणि त्यामुळें सर्व पृथ्वी कंपित झाली ! त्या वेळीं हत्तींप्रमाणेंच इतर सैन्याचीही दुर्दशा उडाली. रणांगणांत घोडे व त्यांवरील स्वार आणि पायदळ हीं बाणहत होऊन रक्त ओकून मरून पडलीं. त्याप्रमाणेंच भीमानें हजारों रथ्यांना बाणांच्या भडिमारांनें आयुधहीन करून समरभूमीवर पाडिलें, तेव्हां जखमी झालेल्या त्या सर्वे योद्ध्यांनीं भीमाच्या भयानें प्राण सोडिले ! राजा, त्या समयीं रणांगणांत रथी, सारथि, घोडेस्वार, पदाति, घोडे व हत्ती ह्या सर्वांवर भीमसेनाच्या बाणांचा वर्षाव होऊन त्यांचा संहार झाला, तेव्हां सर्वे वमुधा त्यांनीं आच्छादिली गेली ! त्या घोर रणांत दुर्योधनाचें सर्व सैन्य भीमाच्या भयानें थिजून गेलें व त्या जखमी झालेल्या सैन्याच्या ठायीं उत्साह किंवा हालचाल कांहीएक न उरतां त्याची अगदीं दीन अवस्था झाली ! राजा, शरद्वृत्तमध्ये समुद्र जसा अगदीं निश्चल अमतो, तसें तुझे तें सैन्य अगदीं निश्चल झालें ! जरी तुझ्या सैन्याच्या ठिकाणीं क्रोध, पराक्रम व शक्ति हीं परिपूर्ण होती, तरी त्याचा दर्प भीमसेनाच्या हस्ते नष्ट झाल्यामुळें तें सैन्य अगदीं

निस्तेज व फिकें पडलें ! ह्याप्रमाणें संग्राम माजून दोन्ही सैन्ये परस्परांस वधीत असतां शरीरावर जिकडे तिकडे रुधिरच रुधिर होऊन त्यांनीं जणू काय रुधिरांत स्नानच केलें आहे असा भास झाला ! अशा प्रकारें दोन्ही दळांत संहार चालू असतां रणांगणांत कुद्ध होऊन कर्णानें पांडवसेनेवर व भीमानें कौरवसेनेवर चाल केली; आणि ते दोघेही योद्धे शत्रुसैन्यास पिटाळून लावीत असतां फारच शोभले.

राजा, इकडे अर्जुनाचा आणि संशप्तकांचा भयंकर व अद्भुत संग्राम चालू असतां वीर-शिरोमणि अर्जुनानें संशप्तकांच्या पुष्कळ टोळ्यांना ठार मारिल्यानंतर वामुदेवाला म्हटलें, “हे जनार्दना, मी ज्याच्याशी युद्ध करीत आहे तें हें संशप्तकसैन्य नाश पावले आहे. हे पहा संशप्तकांचे महारथ आपआपले सैन्यसमुदाय बरोबर घेऊन पळत आहेत; मृगांना जसा सिंहाचा शब्द सहन होत नाही, तसे ह्यांना माझे बाण सहन होत नाहीत ! कृष्णा, ह्या महारणामध्ये मंजयांच्या अवाढव्य सेनेची दाणादाण झालेली दिसते; कारण बुद्धिमान् कर्णाचा हा गजकक्षांकित ध्वज धर्मराजाच्या सैन्यामध्ये आनंदानें फडकतांना दिसत आहे ! कृष्णा, दुसरे महारथ युद्धांत कर्णाला जिकण्यास समर्थ नाहीत; कर्णाच्या अंगी कमें काय बल व पराक्रम आहे हें तूं जाणतच आहेस; ह्यास्तव ह्या संशप्तकांना मोडून देऊन, ज्या स्थळीं कर्णानें आपल्या सैन्याची दाणादाण उडविली आहे तिकडे जावें हें मला उचित दिसते. ह्यासाठीं जें तुला योग्य दिसेल तें तूं कर.”

धृतराष्ट्रा, अर्जुनाचें तें भाषण श्रवण करून गोविंदांनं हंसून म्हटलें, ‘बा अर्जुना, तूं कौरवांचा लवकर वध कर.’ राजा, नंतर गोविंदांनं अर्जुनाच्या रथाला लाविलेल्या हंसवर्ण हयांना इशारा करितांच ते कृष्णार्जुनांस घेऊन तुझ्या

महान् सैन्यांत घुसले आणि केशवानें प्रेरिलेले ते सुवर्णालिंकृत श्वेत अश्व आंत प्रविष्ट झाल्या-बरोबर तुझ्या सैन्याची दाणादाण होऊन तें चारही दिशांस पळूं लागलें ! राजा, ज्या रथाचा मेघगर्जनेप्रमाणें घणघणाट चालला होता आणि ज्याच्या ध्वजावर मारुति अधिष्ठित होता, अमा तो अर्जुनाचा रथ, वरील ध्वजपताका फडकत फडकत विमान जसें अंतरिक्षांत शिरतें, तसा त्या कौरवसेनेंत शिरला. राजा, ते केशवार्जुन तुझ्या त्या महान् सैन्याची फळी फोडून आंत घुसले व क्रोधानें अगदीं आरक्त नेत्र करून इतस्ततः पाहूं लागले, तेव्हां त्यांच्या ठिकाणीं अत्यंत तेज दृग्गोचर झालें ! राजा, कर्णानें म्हणजे कर्णाच्या ध्वजानें आह्वान केल्यामुळें त्या स्थळीं प्राप्त झालेले ते युद्धविशारद कृष्णार्जुन जणू काय रणरूप यज्ञांत ऋत्विजांनीं यथाविधि हवन केल्यामुळें प्रकट झालेले अश्विनीकुमारच होत असें वाटलें ! ते नरशार्दूल कौरवसैन्यावर आधींच संतापलेले होते, आणि ते जेव्हां मग प्रत्यक्ष कर्णाच्या सैन्यांत शिरले, तेव्हां तर महान् अरण्यांत पारध्यांनीं आरडाओरड करून चवताळून टाकिलेल्या हत्तीप्रमाणें अधिकच संतापले ! असो, धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुन हा रथसमुदाय व अश्वसेना ह्यांचें मंथन करून सैन्यामध्ये कालपाश धारण करणाऱ्या यमाप्रमाणें संचार करूं लागला ! ह्याप्रमाणें समरांगणांत अर्जुनानें तुझ्या सेनेवर दगारा बसविला, तेव्हां तुझ्या पुत्रानें पुनः अर्जुनावर हल्ला करण्याविवयीं संशप्तकांना आज्ञा केली.

नंतर एक हजार रथ, तीनशें हत्ती, चौदा हजार घोडेस्वार आणि धनुष्य धारण करून नेमकेच बाण मारणारे युद्धविशारद व शूर असें दोन लक्ष पायदळ ह्यांसहवर्तमान संशप्तकांचे महारथ वीर चोहोंकडून अर्जुनावर धावून

आले व त्यांनीं एकसारखा बाणांचा भडिमार करून त्यास झांकून टाकिलें. तेव्हां अर्जुनानें उलट संशप्तकांवर शरवृष्टि चालवून त्यांचा असा नाश केला कीं, जणू काय तो पाशापाणि यमच घोर संहार करीत आहे असें दिसलें आणि त्यामुळे अर्जुनाचें तेज अधिकच वाढलें ! राजा, नंतर अर्जुनानें विद्युल्लोतेप्रमाणें देदीप्यमान व सुवर्णाच्या अलंकारांनीं सुशोभित अशा बाणांची एकसारखी वृष्टि करून सर्व आकाश अगदीं खचून भरून काढिलें, तेव्हां सर्वत्र सर्पांचेच आवरण पडलें आहे, असें भासलें ! राजा, त्या समर्थी तो महाशक्तिमान् कुंतीपुत्र सुवर्णाच्या पुंखांचे व जलाल अग्रांचे बांकदार बाण दाही दिशांस सोडून सर्व अंतरिक्ष बाणाच्छन्न करीत असतां टणत्कारांच्या शब्दानें पृथ्वी, आकाश, समुद्र, पर्वत व दशदिशा तडातड फुटतच आहेत असा भाम होत होता ! राजा, महारथ अर्जुनानें ह्याप्रमाणें बाणांचा भडिमार करून संशप्तकांच्या सैन्यांतील दहा हजार राजे मारिले व मग तो लागलाच व्यूहाच्या प्रपक्षाप्रत आला. राजा, त्या वेळीं त्या प्रपक्षाचें संरक्षण कांबोजराज सुदक्षिण हा करीत होता. तेव्हां अर्जुनानें त्या प्रपक्षावर मोठ्या त्वेषानें मल्लवर्षाव करून आपल्यावर धावून येणाऱ्या शत्रुसैन्याचीं आयुधें, हात, बाहु, मस्तकें वगैरे तोडून टाकिली आणि इंद्रानें जसा दानवांचा संहार उडविला, तसा त्यांचा घोर संहार उडविला ! राजा, त्या वेळीं हातपाय इत्यादि अवयव छिन्न झालेले व हातांतील आयुधें गळून गेलेले ते संशप्तक वीर, सोसाट्याच्या वाऱ्यानें खांद्या तुटून भग्न झालेल्या वृक्षांप्रमाणें रणांगणांत कोसळून पडले ! राजा, ह्या प्रकारें संशप्तकांच्या रथ, गज, वाजी व नर ह्यांच्या समुदायांचा अर्जुनानें भयंकर संहार केला, तेव्हां सुदक्षिणाचा धाकटा भाऊ अर्जुनावर बाणवर्षाव करीत चालून आला; पण अर्जुनानें त्याजवर

दोन अर्धशेंद्र बाण सोडून त्याचे परिघतुल्य बाहु कापून काढिले व एक क्षुर बाण सोडून त्याचें पूर्णचंद्राप्रमाणें दीप्तिमान् असें शिर छेदिलें ! त्या समर्थी त्या कांबोज वीराच्या देहांतून रक्ताचे पाट वाहूं लागले व मनशिळाचा पर्वत वज्रानें भग्न झाला असतां त्याचें शिखर जसें खालीं कोसळतें, तसा तो आपल्या अश्वारूढ एकदम खालीं कोसळला ! ह्याप्रमाणें तो सुंदर, धिप्पाड, कमलनेत्र व कांचनस्तंभप्रमाणें देदीप्यमान असा कांबोज योद्धा हत होऊन छिन्नभिन्न झालेल्या हेमगिरीसारखा रणांगणांत पतन पावला असें जेव्हां दिसलें, तेव्हां पुनः घोर व अत्यंत आश्चर्यकारक तुंबळ संग्राम सुरू झाला ! राजा, त्या समर्थी लडणाऱ्या वीरांची बहुविध अवस्था झाली. प्रत्येकाच्या अंगांत बाण घुसून कांबोज, यवन व शक हे योद्धे आपआपल्या अश्वसहवर्तमान हत होऊन रणांत पडले, तेव्हां जिकडे तिकडे सर्व रक्तमय होऊन लाल झाले ! रथांचे अश्व व सारथिहे मेले, घोड्यांवरील स्वार पडले, हत्तविरचे वीर भग्न झाले आणि हत्तीं मेल्यामुळे त्यांवरील वीर हताश झाले. अशा प्रकारें त्या घोर संग्रामांत दोन्हीं दळे झुंजत असतां फारच भयंकर जनसंहार घडला ! अशा रीतीनें कौरवसैन्याच्या पक्षप्रपक्षांचा अर्जुनानें वध केला, तेव्हां त्या बलिष्ठ धनुर्धरावर तत्काळ अश्वत्थाम्यानें हल्ला केला.

राजा, त्या समर्थी अश्वत्थाम्यानें आपलें तें सुवर्णमंडित प्रचंड धनुष्य व सूर्यकिरणांप्रमाणें देदीप्यमान असे ते भयंकर बाण धारण करून संतापानें व सूड उगविण्याच्या इच्छेनें आपसकून डोळे लाल केले, तेव्हां जणू काय प्रलयकालीं किंकर नामक दंड धारण करून क्रुद्ध झालेला मूर्तिमंत यमच पुढें उभा आहे, असें सर्वास भासलें ! नंतर त्या लोकोत्तर योद्ध्याच्या धनुष्यापासून बाणांचे ओघ पांडव सैन्यावर येऊं लागले व

ते त्वस सहन न होऊन त्याची मोठी दाणा-
दाण झाली ! राजा, नंतर अश्वत्थाम्याने
दाशार्ह कृष्णाला रथांत अवलोकन करितांच
पुनः तीक्ष्ण बाणांचा भडिमार चालविला आणि
रथामध्ये अधिष्ठित झालेल्या कृष्णार्जुनांस चोहों-
कडून बाणाच्छादित करून टाकिले ! मग
अश्वत्थाम्याने जलाल बाणांचा आणखी वर्षाव
करून त्या उभयतां कृष्णार्जुनांस अगदी
निश्चेष्ट केले आणि ते दोघे स्थावरजंगम
विश्वाचे प्रतिपालक महापुरुष बाणाच्छन्न झाले
असे पाहून जिकडे तिकडे मोठा हाहाःकार
उडाला ! त्या समयीं तत्काळ सिद्धचारणांचे
संघ त्या स्थळीं सभोवतीं मिळाले आणि
' लोकांचें कल्याण होवो ! ' असे त्यांनीं ध्यान
चालविलें ! राजा, अश्वत्थाम्याने कृष्णार्जुनांना
शरवर्षावांने झांकून काढिलें तेव्हां त्याचा जसा
पराक्रम मी पाहिला, तसा पराक्रम मी पूर्वीं
कर्णही पाहिला नव्हता ! राजा, तेव्हां अश्व-
त्थाम्याने पुनः पुनः केवळ टणत्कार केला
म्हणजे शत्रूंची मोठी त्रेधा उडून जाई व त्यांस
तो सिंहवच भामे ! समरांगणांत अश्वत्थामा
सव्यापसव्य बाणवर्षाव करीत असतां त्याच्या
प्रत्यंचेची जी हालचाल होत असे, ती पाहिली
म्हणजे केवळ भेद्यमंडलावर विद्युल्लताच नृत्य
करीत आहे असे दिसे. राजा, अर्जुन हा
तशा प्रकारचा त्वरित शरवृष्टि करणारा व
सुदृढहस्त वीर असतांही त्या समयीं द्रोणपुत्राला
अग्रभागीं अवलोकन करून त्याचें भान नष्ट
झालें व त्यास आपण अगदीं निर्बल आहों
असे वाटलें. आणि त्या रणांत अश्वत्थाम्याचा
तो उग्र पराक्रम पाहून त्याजकडे कोणालाही
पाहावेनासे झालें. ह्याप्रमाणें अश्वत्थामा व
अर्जुन ह्यांचा घोर संग्राम होत असतां क्षणो-
क्षणीं द्रोणपुत्राचा प्रताप वाढत चाललेला व पार्थ
प्रतापहीन झालेला पाहून कृष्णाला मोठा क्रोध

आला व तो संतापाचे सुसकारे टाकीत अणु
काय नेत्रांनीं दशदिशा जाळीत युद्धामध्ये
वारंवार अश्वत्थाम्याकडे व अर्जुनाकडे पाहूं
लागला ! तेव्हां संतप्त झालेला कृष्ण अर्जुनाला
ममतेनें म्हणाला, " पार्था, मला हा आज
मोठा चमत्कार वाटतो कीं, आजच्या ह्या
संग्रामांत द्रोणपुत्रानें तुझ्यावर सरशी केली !
वा अर्जुना, तुझे बाहुबल व युद्धसामर्थ्य पूर्व-
वत् आहेना ? तूं गांडीव धारण करून रथात
अधिष्ठित आहेसना ? तूं युद्धनिपुण आहेस
खरा, परंतु तुझे भुज किंवा मुष्टि हीं भग्न झालीं
नाहींतना ? वा अर्जुना, ह्या युद्धांत अश्वत्था-
म्याचें वीर्य वाढत चाललेलें मी पाहतों; तेव्हां
तूं ' तो गुरुपुत्र आहे ' असा विचार तर केला
नाहींसना ? अर्जुना, अश्वत्थामा हा गुरुपुत्र
असला तरी तूं त्याची उपेक्षा करूं नको;
हा काल उपेक्षा करण्याचा नाही ! " धृतराष्ट्रा-
ह्याप्रमाणें कृष्णाचें भाषण श्रवण करितांच अर्जु-
नानें चौदा भल बाण उचलिले व जलदी करून
त्यानें अश्वत्थाम्याचें धनुष्य तोडिलें आणि
रथ, ध्वज, छत्र, पताका, शक्ति व गदा ह्या
सर्वांचा विखंड उडविला ! नंतर त्यानें अगदीं
विलंब न करितां अश्वत्थाम्याच्या खवाट्यांत
वत्सदंत बाणांचा भडिमार केला, त्याबरोबर
तो मूर्च्छित पडून ध्वजयष्टीवर सांवरून राहिला !
राजा, ह्याप्रमाणें अर्जुनानें अश्वत्थाम्याची विपन्न
अवस्था केली, तेव्हां त्याच्या सारथ्यानें तो
वेशुद्ध पडला असे पाहून त्याचें अर्जुनापासून
संरक्षण करण्याकरितां त्यास रणांगणांतून एकी-
कडे नेलें ! नंतर शत्रुसंहारक अर्जुनानें दुर्यो-
धनाच्या देखत तुझ्या सैन्यांतील शतावधि व
सहस्रावधि वीर वधिले ! राजा, अशा प्रकारचा
हा घोर संहार उभय दळांमध्ये झाला व
ह्या सर्व अनर्थांचें कारण तुझी दुष्ट सल्ला हेंच
होय ! राजा, कुंतीपुत्रानें संशप्तकांना, वृको-

दरानें कुरूंना आणि कर्णानें पांचालांना रणांगणांत हां हां क्षणातां ठार मारून जिकडे तिकडे मोठा हाहाकार उडवून दिला ! अशा प्रकारें महान् महान् वीर रणांत पतन पावल्यानंतर चोहोंकडे अगणित कबंधें उठून उभी राहिली ! राजा, मध्यंतरी संग्रामांत युधिष्ठिरावर भयंकर प्रहार झाल्यामुळें त्यास अतिशय वेदना प्राप्त होऊन तो एक कोसभर रण सोडून एकीकडे गेला व तेथें त्यानें विसावा घेतला !

अध्याय सत्तावन्नावा.

—:०:—

अश्वत्थाम्याची प्रतिज्ञा.

संजय सांगतो:—हे भरतश्रेष्ठा, नंतर दुर्योधन कर्णाजवळ जाऊन त्याला व मद्राधिप शल्याला व त्याप्रमाणेंच दुसऱ्या राजांना क्षणाला, “ हे वीरहो, हें स्वर्गद्वार आपल्याला आपण होऊन अनायासें मोकळें मिळालें आहे ! कर्णा, जे भाग्यवान् क्षत्रिय असतात त्यांना मात्र अशा प्रकारचें युद्ध करावयाची संधि प्राप्त होते ! शूर योद्ध्यांना जर त्यांच्या बरोवरीचे दुसरे शूर योद्धे लढण्यास मिळाले, तर तें त्यांना इष्टच असतें; ह्यासाठीं तशा प्रकारची ही संधि आपणांस प्राप्त झाली आहे, हें तुम्ही लक्षांत ठेवा. ह्या समयीं समरांगणांत जर तुम्ही पांडवांना ठार माराल, तर सर्वोपभोगांनीं समृद्ध अशी ही पृथ्वी तुम्हांस प्राप्त होईल; आणि जर तुम्ही शत्रूंच्या हस्ते धारातीर्थी पतन पावाल, तर तुम्हांस वीरलोक मिळेल ! ” राजा, दुर्योधनाचें हें भाषण श्रवण करून क्षत्रियश्रेष्ठांना मोठा आनंद झाला व त्यांनीं वीरश्रीच्या गर्जना करण्यास प्रारंभ केला. इतक्यांत चोहोंकडे रणवाघेंही वाजूं लागली आणि दुर्योधनाच्या सैन्याला मोठें स्फुरण चढलें. त्या समयीं अश्वत्थाम्यानें तुझ्या वीरांना

अतिशय आनंद होईल असें भाषण केलें. तो क्षणाला, “ वीरहो, सर्व सैन्याच्या समक्ष आणि तुम्ही सर्व योद्धे पहात असतां धृष्टद्युम्नानें माझ्या पित्यानें शत्रून्यास केला असतां त्यास वाधिलें ! तेव्हां त्याच्या त्या दुष्ट कृत्याचा सूड घेण्यासाठीं व मित्र दुर्योधन ह्याचे मनोरथ सिद्धीस नेण्यासाठीं मी जी खरोखरी प्रतिज्ञा करीत आहे, ती श्रवण करा. भूपालहो, धृष्टद्युम्नाला ठार मारिल्याशिवाय मी आपल्या अंगांतलें हें त्रिल्लवत काढणार नाही ! आणि माझी प्रतिज्ञा खोटी झाल्यास माझा स्वर्गलोक अंतरेल ! अर्जुन, भीमसेन किंवा दुसरा जो कोणी योद्धा रणांत धृष्टद्युम्नाचें रक्षण करील, त्याला मी समरांगणांत बाणांनीं वधीन ! ”

धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें अश्वत्थामा बोलल्यानंतर सर्व भारती सैन्य युद्धासाठीं धावून गेलें ! त्या समयीं कौरवांनीं पांडवांवर व पांडवांनीं कौरवांवर हंला केला. तेव्हां महारथाचें फारच भयंकर व मोठ्या निकराचें युद्ध जुपलें ! पुढें कुरुमंजयांमध्ये घोर संग्राम सुरू होऊन जसा काय प्रलयकालचा जनक्षयच चालू आहे असें दिसूं लागलें ! राजा, त्या वेळीं समरभूमीवर घोर संग्राम सुरू होऊन परस्परांचा संहार होऊं लागला असतां त्या महान् नरवीरांना पाहण्यासाठीं देव व अप्सरा यांसह सर्व भूतें एकत्र जमलीं. राजा, त्या वेळीं रणांगणांत त्या शूर वीरांनीं आपआपलीं कर्मे उत्तम प्रकारें पार पाडून जो प्रताप गाजविला, तो अवलोकन करून अप्सरांना फार आनंद झाला. त्यांनीं त्या लोकोत्तर वीरांवर दिव्य माला, विविध व दिव्य सुगंध आणि दिव्य नानाविध रत्ने ह्यांची वृष्टि केली आणि समीरणानें तो सुगंध एकूण एक वीरश्रेष्ठांना पावता केला; व अशा प्रकारें वायुच्या सेवेनें अधिक उत्तेजित झालेले ते सर्व योद्धे परस्परांना वधीत असतां अस्वे-

रीस आपण स्वतः धरणीवर पडले! राजा, त्या धनघोर समरांत महान् महान् वीर, दिव्य माला व चित्रविचित्र सुवर्णपुंख बाण ह्यांनी सर्व क्षितितल आच्छादित झाल्यामुळे तें नक्षत्र-समूहानें चित्रविचित्र झालेलें नभोमंडलच होय असें भासूं लागलें! राजा, त्या समयी अंत-रिक्षांत 'शाबास! शाबास' असे शब्द उठले, जिकडे तिकडे रणवाद्यें वाजूं लागलीं, त्यांत आणखी प्रत्यंचेचे व रथांच्या धावांचे विविध स्वन मिसळले, आणि शिवाय त्यांत वीरांच्या सिंहनादांची भर पडतच होती; ह्यास्तव रणांगणांतील त्या महान् कोलाहलानें अतिशय भीति उत्पन्न केली!

अध्याय अष्टावन्नावा.

—:०:—

कृष्णकृत समरभूवर्णन.

संजय सांगतो:—राजा, अर्जुन, भीमसेन व कर्ण हे संतप्त होऊन युद्ध करित असतां वीरपुरुषांमध्ये हा अमा महान् संग्राम झाला! द्रोणपुत्राचा पराजय केल्यावर व दुसऱ्या महा-रथांना जिकिल्यावर अर्जुन कृष्णाला म्हणाला, "हे महाबाहो कृष्णा, पांडवांचें सैन्य कसें पळून जात आहे तें पहा. हा कर्ण समरांगणांत महारथांचा कसा संहार करित आहे, तें अवलोकन कर. हे दाशार्हा, मला धर्मराज युधिष्ठिर कोठें दिसत नाही व त्याचा ध्वजही मला आढळत नाही. जनार्दना, आतां दिवसाचा हा तिसरा भाग मात्र अवशिष्ट राहिला आहे. येथें धार्तराष्ट्रांपैकी कोणीही माझ्याशीं समरभूमीवर लढत नाही; म्हणून तूं माझ्या बऱ्याकरितां जेथें युधिष्ठिर असेल तिकडे चल. हे वाष्पण्या, युधिष्ठिर व भीमसेन हे खुशाल आहेत असें पाहून नंतर मी शत्रूंशीं रण करीन." राजा धृतराष्ट्रा, मग वीभत्सच्या इच्छेप्रमाणें कृष्णानें तत्काळ तो

रथ चालू केला; आणि जेथें युधिष्ठिर व महारथ संजय हे तुझ्या सैन्याशीं मारूं किंवा मरूं हा दृढ संकल्प करून लढत होते तेथें ते कृष्णार्जुन प्राप्त झाले. तेव्हां त्या ठिकाणीं जनक्षय चालला असतां ती संग्रामभूमि अवलोकन करून कृष्ण अर्जुनाला म्हणाला, "अर्जुना, पृथ्वीवर दुर्योधनाकरितां क्षत्रियांचा जो हा भयंकर क्षय चालला आहे, तो पहा. अर्जुना, धारातीर्थी पतन पावलेल्या योद्ध्यांच्या हातांतून गळून पडलेलीं हीं सुवर्णपृष्ठ धनुष्यें व महामूल्यवान् बाणभाते अवलोकन कर; त्याचप्रमाणें हे बांकदार पेऱ्यांचे सुवर्णपुंख बाण व धार देऊन तेलपाणी केल्यामुळे कात टाकलेल्या भुजंगमांप्रमाणें दिसणारे हे नाराच शर पहा; तशीच हीं हस्तदंती मुठीचीं व सोन्याचे कोंदणकाम केलेलीं खड्डें आणि आंतून सुवर्णमय अशीं चर्में वीरांच्या हातांतून गळून पडलीं आहेत तीं अवलोकन कर; तसेच हे सुवर्णांच्या पट्ट्या बसविलेले प्रास, हेमालंकृत शक्ति, जांबूनदाच्या पत्र्यांनीं मढविलेल्या प्रचंड गदा, सुवर्णमय ऋष्टि, हेमभूषित पट्टे, रत्नखचित हिरण्मय दंडांनीं युक्त अशा कुन्हाडी, पोलादी भाले, मोठमोठालीं मुसळें, चित्रविचित्र शतघ्नी शक्ति, प्रचंड परिघ, चक्रे, तोमरें आणि दुसरीं नानाविध आयुधें वीरांच्या हातांतून समरभूमीवर पडलीं आहेत तीं पहा! अर्जुना, हे सर्व विजयेच्छु पराक्रमी योद्धे ह्या महारणांत जरी मरून पडले आहेत, तरी ह्यांच्यासमवेत ह्यांचीं शस्त्रां विद्यमान असल्यामुळे मला हे जिवंतच भासतात! अर्जुना, त्याप्रमाणेच गदांच्या प्रहारांनीं गात्रें चूर्ण झालेले, मुसळांनीं डोकीं फुटलेले आणि हत्ती, घोडे व रथ ह्यांनीं तुडविलेले सहस्रावधि वीर मरून पडले आहेत ते अवलोकन कर. त्याप्रमाणेच, हे पार्या, शर, शक्ति, ऋष्टि, पट्टे, परिघ, पोला-

दाचे भयंकर भाले व कुऱ्हाडी ह्यांच्या प्रहारांनी छिन्नभिन्न होऊन मृत झालेल्या व रुधिराच्या चिळकांब्या उडणाऱ्या हय, गज व नर ह्यांच्या शरीरांनी ही रणभूमि कशी झांकून गेली आहे पहा ! तसेच येथे चंदनाची उटी दिलेले, अंगदे धारण केलेले, हेमालंकारांनी भूषविलेले, तलत्राणांनी युक्त व केयूरांनी मंडित असे भुज इतस्ततः पडले असल्यामुळे पृथ्वी कशी दिसत आहे ती अवलोकन कर. त्याप्रमाणेच ह्या रणांगणांत अंगुलित्वाणांनी युक्त असे महान् महान् योद्ध्यांचे अलंकारिलेले हात, हत्तीच्या शुंभेप्रमाणे पुष्ट व बळकट अशा मांड्या, कुंडलांनी व उत्तम चूडामणींनी शृंगारलेलीं मस्तके ह्यांचा अगदी खच पडल्यामुळे ह्या वसुंधरेला कांहीं विलक्षण शोभा प्राप्त झाली आहे ! त्याप्रमाणेच ह्या समरभूमीवर हात, हाय व माना तुटून जाऊन नुसती जी वीरांची रक्ताने माखलेली घडे पडली आहेत, त्यांवर दृष्टि दिली झणजेही रणभूमि खचीत ज्वालारहित अशा शांत अग्निनी युक्त असलेले केवळ यज्ञकुंडच होय असा भास होतो ! अर्जुना, ह्या स्थळीं सुवर्णाच्या घंटा लाविलेले अनेक सुंदर भद्र रथ व बाण-प्रहारांनी आंतडीं लोंबून मरून पडलेले घोडे अवलोकन कर. त्याप्रमाणेच, अर्जुना, हे रथांचे कणे, बाणांचे भाते, पताका, नानाविध ध्वज, रथ्यांचे मोठमोठे श्वेत शंख, चामरें, जिभा काढून पडलेले हे पर्वततुल्य हत्ती, त्यांजवरील चित्रविचित्र निशाणें, तसेच हे हत झालेले हयगज, हत्तींचे हौदे व अंबाच्या, चर्म व शाली, हत्तींच्या अंगांवरील फाटून तुटून गेलेलीं भरजरीचीं मनोहर वस्त्रे व झुली, मोठमोठाले हत्ती खाली पडल्यामुळे फुटून गेलेल्या अनेक घंटा, भूमीवर पडलेले हे वैदूर्यदंड, सुंदर अंकुश, घोडेस्वारांच्या हातांत

असलेले सुवर्णमय चाबूक, घोड्यांचीं सुवर्णा-लंकृत व रत्नखचित खोगिरे, भूपतींच्या मस्तकांवरील रत्ने, मनोहर कांचनमाला, छत्रे, चामरें व पंखे हे येथे गळून पडले आहेत पहा. त्याप्रमाणेच, अर्जुना, रुधिराचा कर्दम मातलेल्या ह्या धरणीवर जिकडे तिकडे चंद्र व नक्षत्रे ह्यांप्रमाणे कांतिमान्, मनोहर कुंडलांनी विराजित व झोंकदार केशकलापांनी सुंदर शोभणारीं हीं वीरांचीं मुखकमले विकीर्ण झालीं आहेत तीं अवलोकन कर. अर्जुना, तसेच हे जखमी होऊन रडत आरडत चोहोंकडे समरांगणांत पडलेले योद्धे पहा. हे अद्यापि कुडीत प्राण धरून आहेत आणि ह्यांचे आससुहृद् हातांतील शस्त्रां टाकून देऊन ह्यांच्या समीप एकसारखे विलाप करीत ह्यांची नानाप्रकारें शुश्रूषा करण्यांत निमग्न आहेत. अर्जुना, तसेच हे दुसरे महापराक्रमी वीर दुसऱ्या शूरवीरांना बाणाच्छादित करून विजय मिळविण्याच्या इच्छेनें क्षुब्ध होऊन पुनः युद्धाला जात आहेत, त्यांजवर दृष्टि दे. त्याप्रमाणेच, अर्जुना, हीं मनुष्ये कशीं जिकडे तिकडे धावपळ करीत चाललेलीं आहेत तीं पहा. अरे, रणांत पतन पावलेल्या ह्यांच्या नातलगानीं ह्यांजपाशीं उदक मागितल्यामुळे तें आणण्यासाठीं तीं इतक्या लग्नगानें चाललीं आहेत. अर्जुना, हीं पहा बहुत मनुष्ये पाणी पाणी करीत हिंडतांना पटापट मरत आहेत ! कितीएक पाणी घेऊन आलेलीं शूर मनुष्ये तृषार्ता झालेल्या आप्तांना बेशुद्ध पाहून तें पाणी फेंकून देऊन आक्रोश करीत एकमेकांकडे धावत आहेत ! कितीएक तान्हेलेले योद्धे पाणी पितांपितांच प्राण सोडीत आहेत पहा ! त्याप्रमाणेच कितीएक बंधुवत्सल वीर आपल्या प्रिय बांधवांना सोडून ह्या महान् समरभूमीवर युद्ध करण्याकरितां चोहोंकडे धावत आहेत ! आणि त्याप्रमाणेच

दुसरे कितीएक योद्धे दांतओठ चावीत आणि भुंवया चढवून क्रोधमुद्रेनें सभोंवतालीं पहात चालले आहेत !

राजा, ह्याप्रमाणें भाषण करून, जिकडे युधिष्ठिर होता तिकडे कृष्ण रथ घेऊन निघाला व जातांना अर्जुनानेही नृपतिदर्शनार्थ फार उत्सुक होऊन 'गोविंदा, चल, चल.' असा त्यास पुनःपुनः तगादा केला. धृतराष्ट्रा, माधवांनं ती युद्धभूमि पार्याला दाखवून मग युधिष्ठिराकडे जाण्याची त्वरा केली, व तो हळूच अर्जुनाला झगाला, "बा पांडुपुत्रा, तो पहा तेथें धर्मराजा युधिष्ठिर असून त्याजवर दुसरे भूपाल चाल करून गेले आहेत; तसाच तो पहा कर्ण जसा काय रण-रंगावर अग्निच चेतला आहे ! तो पहा महाधनुर्धर भीम युद्धार्थ परत येत आहे; आणि पांचाल, संजय व पांडव ह्यांचें केवळ मुखच असे जे धृष्ट-द्युम्नादिक प्रबल योद्धे ते त्याच्यामागून येत आहेत. हें पहा कौरवांचें अफाट सैन्य पांड-वांनीं परत येऊन एका क्षणांत उधळून दिलें ! अर्जुना, हा पहा कर्ण पळत सुटलेल्या कौरव-चमूला आवरून धरण्याविषयीं झटत आहे. तसाच तो यमाप्रमाणें वेगवान् व इंद्राप्रमाणें प्रतापशाली महाधनुर्धर द्रोणपुत्र अश्वत्थामा तिकडेच चालला आहे ! अर्जुना, रणांगणांत त्वेषानें चाललेल्या त्या अश्वत्थाम्यावर महा-रथ धृष्टद्युम्नानें हा हला केला पहा ! अरे, इकडे संजयांचा रणभूमीवर नाश होऊं लागला पहा !" राजा, ह्याप्रमाणें रणांगणांतलीं सर्व स्थिति त्या महापराक्रमी वामुदेवानें अर्जुनाला निवेदन केली; आणि मग तेथें मोठा घोर संग्राम सुरू झाला. नंतर उभय दळें मारूं किंवा मरूं अशा निर्धारानें एकवटून दोहोंकडील वीर सिंहासारखी गर्जना करूं लागले आणि मग दोन्ही सैन्यांत मोठी भयंकर प्राणहानि झाली;

व ह्या सर्व अनर्थांचें मुख्य कारण म्हटलें झणजे तुझी दुष्ट सल्ला हेच होय !

अध्याय एकुणसाठावा.

—:०:—

अश्वत्थाम्याचा पराभव.

संजय सांगतो:—नंतर पुनः कौरव व संजय हे मोठी लगट करून निकरानें लढूं लागले. त्या समयीं पांडवांकडे युधिष्ठिर व कौरवांकडे कर्ण हे प्रमुख होते. राजा, तेव्हां कर्णानें पांड-वांशीं फार भयंकर युद्ध चालविलें आणि त्यांत अतोनात प्राणहानि होऊन यमाच्या राष्ट्राची वृद्धि झाली व प्रेक्षकांच्या अंगावर कांटा उभा राहिला ! राजा, तो तुंबळ व घोर संग्राम प्रवृत्त होऊन रक्ताच्या नद्या वाहूं लागल्या आणि शूर संशसकांचा महान् संहार घडून त्यांचें अगदीं थोडें सैन्य अवशिष्ट राहिलें. तेव्हां धृष्टद्युम्न, सर्व भूपाल व पांडव हे कर्णावरच चालून गेले; परंतु युद्धास उतावीळ झालेल्या त्या विजयेच्छु वीरांना, नदीच्या प्रवाहास पर्वत ज्याप्रमाणें अडवून धरितो, त्याप्रमाणें एकट्या कर्णानें समरांगणांत अडवून धरिलें. राजा, नंतर कर्णाची व त्या महारथ्यांची लढाई होऊन, पर्वतापुढें जलाचे ओव फुटून जशी त्यांची चोहों-कडे दाणादाण होऊन जाते, तद्वत् त्या महा-रथ्यांची कर्णापुढें मोठी दाणादाण झाली ! राजा, त्यांचा त्या समयीं फार घनघोर संग्राम झाला व तो पाहून अंगावर अगदीं कांटाच उभा राहिला ! तेव्हां धृष्टद्युम्नानें बांकदार बाणानें राधेयाला समरांगणांत विद्ध केलें व त्यास 'थांब थांब' असें म्हटलें. त्या वेळीं तत्काळ महारथ कर्णानें मोठ्या क्रोधानें आपल्या श्रेष्ठ विजय चापानें बाणांचा भडिमार करून धृष्ट-द्युम्नांचें धनुष्य तोडून टाकिलें, व त्याजवर नऊ सर्पतुल्य जलाल बाण सोडिले; तेव्हां लागलेच

ते बाण त्या महात्म्या धृष्टद्युम्नाच्या सुवर्णमय कवचांत घुमून रुधिराच्या ओघांत माखून जाऊन इंद्रगोपांच्या रांगांप्रमाणे शोभू लागले ! तेव्हां महारथ धृष्टद्युम्नांन आपल्या हातांतले ते तुटक धनुष्य फेकून दिले व दुसरे धनुष्य धारण करून कर्णाला सत्तर बांकदार पेऱ्यांच्या प्रखर शरानीं विद्ध केले. राजा, नंतर कर्णांन शत्रूंना ताप देणाऱ्या धृष्टद्युम्नाला जलाल बाणांनीं झांकून काढिले; तेव्हां द्रोणशत्रु महाधनुर्धर धृष्टद्युम्नांन निशित बाणांची कर्णावर वृष्टि केली. ते पाहून पुनः कर्णांन सुवर्णालंकृत एक बाण अशा त्वेषांन धृष्टद्युम्नावर टाकिला कीं, जणू काय तो दुसरा यमदंडच होय असें वाटले ! परंतु तो भयंकर बाण मोठ्या वेगाने धृष्टद्युम्नावर जात आहे असें पाहून सात्यकींन मोठ्या शिताफींन बाणवृष्टि करून मध्यंतरीच त्याचे शतावधि तुकडे उडविले ! राजा, मग कर्णांन सात्यकींवर चोहोंकडून बाणांचा भाडिमार चालवून त्यास अगदीं अडविले व समरांगणांत सात नाराच बाणांनीं त्यास विद्ध केले. तेव्हां उलट सात्यकींन कर्णावर सुवर्णमंडित बाण सोडण्याचा सपाटा लाविला आणि मग त्या उभयतांचे असें कांहीं भयंकर व अश्रुतपूर्व युद्ध जुंपले कीं, ते पाहाण्याला किंवा त्यांचे वर्णन ऐकण्यालाही भय वाटू लागले ! राजा, त्या वेळीं समरभूमीवर कर्णसात्यकींनीं जो कांहीं विलक्षण पराक्रम करून दाखविला, तो पाहून, त्या ठिकाणीं जे प्राणी जमले होते त्यांच्या अंगावर अगदीं कांटाच उभा राहिला !

राजा, इकडे मध्यंतरीं अश्वत्थाम्यांन महाबलवान् धृष्टद्युम्नावर हल्ला केला व त्या शत्रुसंहारक व विजयशील वीराला शत्रूंच्या नगरांना जिकणाऱ्या अश्वत्थाम्यांन क्रोधायमान होऊन म्हटले कीं, ' हे ब्रह्मघ्ना, थांब थांब, माझ्या हातून तूं आज जिवंत सुटणार नाहीस ! ' राजा,

असें बोलून अश्वत्थाम्यांन मोठ्या त्वरेन अत्यंत तीक्ष्ण व धार देऊन जलाल केलेले भयंकर बाण सोडण्याचा सपाटा लाविला व धृष्टद्युम्नास हां हां क्षणतां बाणाच्छादित करून टाकिले ! राजा, त्या समयीं ते दोघेही महारथ एकमेकांना ठार मारण्याविषयीं अतिशय प्रयत्न करू लागले आणि त्यांचे फारच निकरांचे युद्ध प्रवर्तले. राजा, समरांगणांत धृष्टद्युम्नाला पाहून द्रोणाला जशी भीति पडली व तो केवळ आपला मृत्युच होय असें जसें त्याला वाटले, तशीच ह्या समयीं समरभूमीवर आपल्या समोर अश्वत्थाम्याला पाहून धृष्टद्युम्नाला भीति पडली व तो केवळ आपला मृत्युच होय :

धृष्टद्युम्नाला माहीत होतें कीं, आपल्याला रणांगणांत शस्त्रापासून मुळीच भय नाही, म्हणून तो मोठ्या वेगाने अश्वत्थाम्यावर धावून गेला ! त्या वेळीं जणू काय प्रलयकालीं कालावर कालच धावून गेला असें भासले ! राजा, त्या समयीं धृष्टद्युम्न आपल्यावर चाल करून आला असें पाहून अश्वत्थामा नखाशिखांत संतापाने पेटला व तो क्रोधाचे सुसकारे टाकित धृष्टद्युम्नावर उलट धावून गेला ! राजा, परस्पराना अवलोकन करितांच त्यांचा विलक्षण क्षोभ झाला आणि मग आपल्या समीप प्राप्त झालेल्या धृष्टद्युम्नाला प्रतापशाली द्रोणपुत्र मोठ्या त्वरेन म्हणाला, ' हे पांचालाधमा ' मी तुला आज यमसदनीं पाठवून देतो. तूं पूर्वीं द्रोणाला वधून जे घोर पातक केलेंस, त्याचे अत्यंत दुःखदायक असें फळ आज तुला प्राप्त होईल ! जर ह्या दुर्धर समयीं अर्जुन तुला साहाय्य करण्याला प्राप्त झाला नाही, अथवा तूं जर प्राणसंरक्षण करण्याकरितां रणांगणांतून पळून गेला नाहीस, तर मी म्हणतो त्याप्रमाणे निश्चयाने घडेल ! ' राजा, अश्वत्थाम्याचे हे भाषण श्रवण करून

प्रतापशाली धृष्टद्युम्नानें त्यास म्हटलें, 'हे अश्व-
त्थामन्, तुझा पिता रणांगणांत निकरानें लढत
असतां ज्या माझ्या खड्गानें त्यास उत्तर दिलें,
तेच माझे हें खड्ग ह्या प्रसंगीं तुला उत्तर देईल !
जर त्या महाप्रतापी द्विजवर्षे द्रोणाचार्यालाही
मीं रणांत ठार मारिलें, तर तुझ्यासारख्या
केवळ नामधारी द्विजाला ठार मारण्याइतका
मीं पराक्रमी नाहीं असें कसे घडेल ?' राजा
धृतराष्ट्रा, असें म्हणून सेनापति धृष्टद्युम्न अतिशय
चवताळला आणि त्यानें एका निशित बाणानें
अश्वत्थाम्यास विद्ध केले. तेव्हां अश्वत्थाम्यानें
संकुद्ध होऊन धृष्टद्युम्नावर बांकदार पेऱ्यांचे बाण
सोडण्यास आरंभ केला व त्यानें दशदिशा
अदृश्य करून टाकिल्या. राजा, त्या समयीं
अंतरिक्ष, दिशा व सभोंवतालचे योद्धे हीं सर्व
सहस्रावधि शरांनीं आच्छन्न होऊन दिसत
नाहींतशीं झालीं. तेव्हां धृष्टद्युम्नानेही रणास
शोभविणाऱ्या अश्वत्थाम्यावर कर्णाच्या समक्ष
प्रचंड शरवृष्टि केली व त्यास बाणांनीं झांकून
काढिलें ! नंतर कर्णानेही शत्रुसेन्यावर
हल्ला केला आणि त्यानें एकट्यानें पांचाल,
पांडव, द्रौपदीचे पुत्र, युधामन्यु व महारथ
सात्यकि ह्यांस मोठ्या पराक्रमानें चोहोंकडे
माणें हटविलें आणि त्यामुळें तें पाहून सर्वांस
मोठें आश्चर्य वाटलें ! इकडे धृष्टद्युम्नानें युद्धांत
अश्वत्थाम्याचें धनुष्य छेदिलें, तेव्हां अश्वत्था-
म्यानें तें तुटलेलें धनुष्य फेंकून देऊन दुसरें
धनुष्य धारण केलें आणि मोठ्या त्वेषानें सर्प-
तुल्य भयंकर बाणांचा भडिमार करून धृष्टद्यु-
म्नाचें धनुष्य, शक्ति, गदा, ध्वज, हय, सारथि
व रथ ह्यांचा निमिषांत विध्वंस उडविला !
राजा, नंतर त्या चापहीन, रथहीन, अश्वहीन
व सारथिहीन झालेल्या धृष्टद्युम्नानें सूर्यासारखें
देदीप्यमान प्रचंड खड्ग व शतावधि चंद्र
बसविलेली ढाल हातांत घेतली; पण असा

चमत्कार झाला कीं, धृष्टद्युम्न हा तीं ढालतरवार
घेऊन रथांतून खालीं उतरला नाहीं तोंच त्याची
तीं ढालतरवार दृढायुध अश्वत्थाम्यानें नेमकेच
शिताफीनें भल्ल बाण सोडून तत्काळ तोडून टा-
किली ! ह्याप्रमाणें, राजा, धृष्टद्युम्नाचा रथ नष्ट
झाला, अश्व मेले, धनुष्य तुटलें आणि शस्त्रास्त्रांचा
भडिमार होऊन त्याचा देह छिन्नविच्छिन्न
झाला, तथापि इतकें करूनही जेव्हां बाण-
वृष्टीनें अश्वत्थाम्याच्या हातून तो धारातीर्थीं
पडेना, तेव्हां अश्वत्थाम्यानें आपलें धनुष्य
टाकून दिलें व तो लागलाच तसाच धृष्टद्युम्ना-
वर धावून गेला; आणि, राजा, ज्याप्रमाणें पन्न-
गोत्तमावर झडप घालण्याकरितां गरुड मोठ्या
आवेशानें उडी टाकितो, त्याप्रमाणेंच महात्त्या
अश्वत्थाम्यानें मोठ्या आवेशानें धृष्टद्युम्ना-
वर झडप घालण्याकरितां उडी टाकिली !

राजा धृतराष्ट्रा, इतक्यांत माधव अर्जुनाला
म्हणाला, 'अर्जुना, धृष्टद्युम्नाला ठार मारण्या-
करितां अश्वत्थाम्यानें केवढा भयंकर यत्न
चालविला आहे तें पहा. आतां तो धृष्ट-
द्युम्नाला वधील ह्यांत संदेह नाहीं. ह्यासाठीं, हे
महाबाहो अर्जुना, द्रोणपुत्ररूप मृत्यूच्या जब-
ड्यांत सांपडलेल्या धृष्टद्युम्नाला मुक्त कर.' राजा,
ह्याप्रमाणें भाषण करून प्रतापवान् वासुदेवानें
जेथें अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नाशीं लढत होता
तिकडे अश्वाना प्रेरिलें. राजा, नंतर वासु-
देवाचा इपारा होतांच ते चंद्रासारखे दीप्ति-
मान् अश्व जणू काय अंतरिक्ष भराभरा पिऊन
टाकीत अश्वत्थाम्याच्या रथासन्निध येऊन
पोहोंचले. तेव्हां महाबल अश्वत्थाम्यानें ते
महापराक्रमी कृष्णार्जुन उभयतां तेंथें प्राप्त
झाले असें पाहून धृष्टद्युम्नाला ठार मारण्या-
साठीं पराकाष्ठा चालविली व आतां हा धृष्ट-
द्युम्नाचे पंचप्राण बाहेर ओढणार, इतक्यांत
महाबल्लिष्ठ अर्जुनानें अश्वत्थाम्यावर बाणांचा

भडिमार आरंभिला ! राजा, नंतर ते गांडीव धनुष्यापासून सुटलेले हेममय घोर शर सर्प जसे वारुळांत शिरतात तसे तत्काळ अश्वत्थाम्याचे देहांत शिरले आणि त्यांच्या योगें विव्हल होऊन अश्वत्थामा समारांगणांत धृष्टद्युम्नाला सोडून देऊन लागलाच आपल्या रथावर आरूढ झाला व त्यानें बळकट धनुष्य धारण करून अर्जुनावर बाणांची वृष्टि सुरू केली. राजा, धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें अश्वत्थाम्याच्या कचाट्यांतून धृष्टद्युम्नाची सुटका झाल्याबरोबर सहदेवानें त्या प्रबल योद्ध्याला रथामध्ये घातलें आणि समारांगणांतून एकीकडे नेलें. राजा, नंतर अश्वत्थामा व अर्जुन ह्यांचें युद्ध सुरू झालें. राजा, अश्वत्थाम्यानें आपल्यावर बाणांचा भडिमार चालविला असें अवलोकन करून उलट अर्जुनानेही अश्वत्थाम्यावर बाणवर्षाव चालू केला. तेव्हां अश्वत्थाम्याला अनावर क्रोध चढला व त्यानें अर्जुनाच्या बाहूवर व उरावर बाण मारिले. त्या समयीं अर्जुन अतिशय क्षुब्ध झाला व त्यानें यमदेंडाप्रमाणें भयंकर असा नाराच बाण अश्वत्थाम्याच्या स्कंधप्रदेशावर टाकिला आणि त्यामुळें तो महाद्युतिमान् द्रोणपुत्र शरवेगानें कळवळून जाऊन समारांगणांत आपल्या रथावर वीरस्थानीं मूर्च्छित पडला ! राजा, नंतर कर्णाने रणांगणांत वारंवार अर्जुनाकडे डोळे फाडून पहात पहात त्याच्याशीं द्वैरथयुद्ध करण्याच्या इच्छेनें आपल्या धनुष्याच्या प्रत्येके टणत्कार केले. इतक्यांत अश्वत्थामा अधिकच विव्हल झाला असें पाहून त्याच्या मारण्यानें त्वरा करून त्याचा रथ रणांगणांतून एकीकडे नेला ! राजा, ह्याप्रमाणें धृष्टद्युम्नाची मुक्तता व अश्वत्थाम्याची दुर्दशा झालेली अवलोकन करून पांचालांस जयप्राप्तीविषयी मोठी आशा उत्पन्न झाली व ते मोठमोठ्यानें सिंहनाद करूं लागले ! जिकडे

तिकडे सहस्रावधि दिव्य वाद्यें वाजूं लागलीं आणि सर्वत्र आनंदाचा गजर झाला ! राजा धृतराष्ट्रा, तेव्हां अर्जुन कृष्णाला म्हणाला कीं, 'आतां संशप्तकांकडे रथ घेऊन चल. कारण, त्यांचा वध करणें हें माझे मुख्य कर्तव्य होय !' नंतर, राजा, ज्यावर अनंत पताका लाविल्या होत्या असा तो रथ कृष्णानें वायुवेगानें—किंबहुना मनोवेगानें—संशप्तकांप्रत नेला.

अध्याय साठावा.

—:०:—

श्रीकृष्णाचें भाषण.

संजय सांगतो:—राजा, संशप्तकांकडे जात असतां मध्यंतरीं कृष्णानें धर्मराज युधिष्ठिराकडे बोट दाखवून अर्जुनास म्हटलें, " अर्जुना, तो तुझा भ्राता युधिष्ठिर पहा; त्यास ठार मारण्याकरितां महाधनुर्धर प्रबळ कौरव त्याचा पाठलाग करीत आहेत; आणि तें पाहून अतिशय क्षुब्ध झालेले युद्धधुरंधर बलवान् पांचाल वीर त्या महात्म्याचें रक्षण करण्यासाठीं त्याच्या साहाय्यार्थं धावत आहेत. तसाच हा सर्व जगताचा राजा दुर्योधन अंगांत चिलखत चढवून रथसन्यासहवर्तमान धर्मराजाच्या पाठीस लागला आहे. हे पहा धर्मराजाला ठार मारण्याची इच्छा करणाऱ्या ह्या बलवान् दुर्योधनाबरोबर त्याचे भ्राते तिकडेच चालले आहेत व ते सर्व युद्धकलेंत मोठे निष्णात असून त्यांच्या केवळ स्पर्शानेंसुद्धां महाविषारी सर्पांच्या विषाप्रमाणें मृत्यु आल्याशिवाय राहाणार नाही ! त्याप्रमाणेंच, हे पुरुषव्याघ्रा, दात्याकडे जसे याचक जातात, तसे हे कौरवांकडील द्विप, अश्व, रथ व नर त्या युधिष्ठिराचा प्राण घेण्याकरितां त्याच्याकडे जात आहेत पहा ! सात्याकि व भीम ह्यांनीं त्यांस मार्गें हटविलें, तरी इंद्र व अग्नि ह्यांनीं वारंवार मार्गें हटविलें असतांही अमृत

हरण करण्यासाठी दैत्य जसे पुनःपुनः पुढे झालेच, तसेच ते युधिष्ठिराच्या वधाकरितां पुनःपुनः पुढे होतच आहेत ! अर्जुना, कौरवांकडे अफाट सैन्य असल्यामुळे पुनःपुनः हे महानुर्ध्वर बलवान् महारथ वीर धनुष्यांच्या प्रत्यंचांचे आस्फालन करीत, सिंहांप्रमाणे गर्जतच शंख फुंकीत, पावसाळ्यांत जसे जलाचे ओष समुद्रावर चालून जातात तसे धर्मराजावर चालून जात आहेत ! अर्जुना, प्रस्तुत युधिष्ठिराची स्थिति मोठी अनुकंपनीय होय ! दुर्योधनाच्या कचाट्यांत तो इतका सांपडला आहे कीं, जणू काय तो मृत्यूच्या मुखांतच उभा आहे ! अर्जुना, यज्ञ-कुंडांतिल प्रज्वलित अग्नींत आहुति दिल्या-प्रमाणे त्याचे आतां भस्म होण्यास अगदी विलंब लागणार नाही ! अर्जुना, धार्तराष्ट्राची सेना व्यूह करून यथायोग्य रीतीने उभी असल्यामुळे प्रत्यक्ष इंद्रही त्या दुर्योधनाच्या बाणप्रहारांत सांपडल्यास त्याची मृत्का होण्यास कठीण पडेल ! अर्जुना, एकदां दुर्योधन मोठ्या त्वेषाने बाणांचा भडिमार करू लागला म्हणजे त्या क्रोधायमान अंतकाचा तो वेग रणांत सहन करील असा कोणता पुरुष आहे बरे ? अरे, दुर्योधनाने, अधत्थाम्याने, शास्त्रत कृपाने व कर्णाने सोडिलेल्या बाणांचा वेग इतका दुर्धर असतो कीं, तो पर्वतांचाही भंग करून टाकील ! अर्जुना, युधिष्ठिराचा पराक्रम कांहीं मामान्य नव्हे, तथापि त्या शत्रूंना पीडा देणाऱ्या पांडु-पुत्राला कर्णाने युद्धांतून परत जाण्यास लाविले ! अर्जुना, कर्ण हा मोठा बलवान् नेमकेच बाण मारणारा, युद्धकलेंत पटाईत व शस्त्रा-खात प्रवीण आहे; शिवाय त्याला महाबल-वान् कौरवांचे साहाय्य आहे, तेव्हां तो रणा-गणांत युधिष्ठिराला पीडा देईल ह्यांत संदेह नाही. अर्जुना, पूर्वी हा तत्त्वज्ञेता युधिष्ठिर समरभूमी-वर कर्णादिक वीरांशी लडत असतां कर्णादि-

कांनीं घोर पराक्रम करून ह्याला मोठ्या संकटांत पाडले होते ! हे भरतसत्तमा, युधिष्ठिरा-ची काया उपवासादिकांनीं अगदी क्षीण झाली आहे; अरे, हा ब्रह्मचिंतनांत मोठा बलिष्ठ आहे, पण क्षात्रविद्येंत तितका प्रवीण नाही; आणि असें असतां ह्या वीराची कर्णाशी गांठ पडल्यामुळे आतां ह्या प्राणसंकटांतून हा युधिष्ठिर कसा मुक्त होईल ह्याची मला चिंता वाटते ! अर्जुना, जयेच्छु कौरव मोठमोठ्यानें गर्जना करून व महान् महान् शंख वाजवून, युधिष्ठिराला मारा ! युधिष्ठिराला मारा ! म्हणून कसे ओरडत आहेत ते पाहिलेसना ? मला तर असें वाटते कीं, ज्या अर्थी हा कोपिष्ठ व प्रतापशाली भीमसेन शत्रूंकडील हा सिंहानाद निमूटपणे सहन करीत आहे, त्या अर्थी आज युधिष्ठिर स्वचित वांचत नाही ! हा पहा कर्ण महाबलादच कौरवांना युधिष्ठिरावर हल्ला कर-ण्यास सांगत आहे व हे महारथ तदनुरूप स्पर्णाकर्ण, इंद्रजाल व पाशुपत ह्या अस्त्रांचे आवाहन करून धर्मराजाला शस्त्रजालांनीं झांकून काढीत आहेत ! ह्यास्तव, प्रस्तुत समयी धर्मराजाची ही विपन्न अवस्था मनांत आणून त्याला मदत करण्याकरितां धनुर्धरश्रेष्ठ पांचाल-पांडव कसे मोठ्या वेगाने तिकडे जात आहेत ते पहा. जर ते ह्या वेळीं त्वरा करून त्यास हात द्यावयाम गेले नाहीत, तर तो स्वचित ह्या आपत्सागरांत वृद्ध जाईल आणि मग पांडव-पांचालांचे सर्व बल व्यर्थ होईल ! अर्जुना, हा पहा धर्मराजाचा ध्वज दिसत नाहीसा झाला ! कर्णाने बाणांचा भडिमार करून तो तोडून टाकिला ! अरे नकुल, सहदेव, सात्याकि, शिवंदी, धृष्टद्युम्न, भीम, शतानीक, पांचाल व चेदि हे सर्व पहात अमतां कर्णाने हे कृत्य केले ! हा पहा कर्ण रणांत बाणांचा वर्षाव करून कमलिनीचा विध्वंस उडविणाऱ्या हत्तीप्रमाणे

पांडवसेनेचा विव्ंस उडवीत आहे ! हे पांडु-
 नंदना, तुझ्या सैन्यांतले हे रथ पळून चालले
 पाहिलेस काय ? अरे, ही पहा ह्या महारथाची
 कशी त्रेधा उडाली आहे ! तसेंच हे पहा आपल्या
 सैन्यांतील हत्ती कर्णाने बाणप्रहारांनी
 विद्ध केल्यामुळे आर्तस्वर करित दशदिशांस
 पळत आहेत ! त्याप्रमाणेच शत्रुसंहारक कर्णाने
 उधळून दिलेला हा रथसमुदाय चोहोंकडे एक-
 सारखा धावत सुटला आहे ! अर्जुना, गजकक्षेचें
 चिन्ह असलेला कर्णाचा हा श्रेष्ठ ध्वज जिकडे
 तिकडे फिरत चालला आहे पहा ! हा पहा
 कर्ण तुझ्या सैन्याचा विव्ंस उडवून शतावधि
 शरांचा वर्षाव करित भीमसेनावर धावून गेला !
 अर्जुना, ज्याप्रमाणे महान् रणांत इंद्राने दैत्यां-
 वर शस्त्रप्रहार चालविला असतां त्यांची दाणा-
 दाण उडून ते पळून गेले, त्याप्रमाणे कर्णाच्या
 शरप्रहारांनी दाणादाण होऊन हे पांचाल महा-
 रथ पळून जात आहेत ! अर्जुना, हा पहा कर्ण
 युद्धांत पांचाल व पांडुसंजय यांना जिंकून सभो-
 वार सर्व दिशांकडे न्याहाळून पहात आहे.
 माझा तर असा समज आहे कीं, तो तुझीच वाट
 पहात आहे ! अर्जुना, हा पहा कर्ण आपले
 श्रेष्ठ धनुष्य आस्फालीत असतां किती शोभत
 आहे ! जणू काय दैत्यांना जिक्रियावर मुर-
 संघांनी परिवृत असलेला हा देवेंद्रच होय असें
 मला भासते ! हे पहा कौरवांचे वीर कर्णाचा
 पराक्रम पाहून मोठमोठ्याने गर्जत आहेत व
 त्यामुळे चोहोंकडे पांडवांची व संजयांची तारं-
 बळ उडाली आहे ! हा पहा कर्ण महारणांत
 पांडवांना अगदी भयभीत करून आपल्या सर्व
 सैनिकांना चेंव आणण्यासाठी त्यांना म्हणत
 आहे कीं, ' कौरवहो, तुमचें कल्याण होवो.
 आतां तुम्ही फार त्वरा करून अशा मोठ्या
 निकराने चाल करा कीं, एकही संजय तुमच्या
 हातांतून जिवंत सुटणार नाही ! तुम्ही

सर्व अगदी एकत्र होऊन हल्ला करा; आम्ही
 तुमच्या मागून येतो.' अर्जुना, हा पहा
 असें बोलून कर्णाने मागून बाणांचा भडिमार
 चालू केला ! अर्जुना, हा कर्ण पहा; ह्याच्या
 मस्तकावर कांतिमान् शंभर ताड्यांचें देदीप्य-
 मान श्वेत छत्र शोभत असल्यामुळे जणू उदय-
 पर्वतावर चंद्रबिंबच उगवले आहे ! हा पहा
 कर्ण तुझ्यावर नेत्रकटाक्ष फेंकित आहे; आतां
 हा मोठ्या वेगाने समरांगणांत तुझ्यावर खचित
 धावून येईल ! अर्जुना, हा पहा कर्ण प्रचंड
 धनुष्य धारण करून रणांत सर्पविषाप्रमाणे
 भयंकर बाण सोडीत आहे ! अर्जुना, हा पहा
 कर्ण तुझा वानरध्वज अवलोकन करून मागे
 वळला; आतां हा तुझ्याशी युद्ध करण्यास
 खचित येईल ! पण, अर्जुना, प्रज्वलित अग्नी-
 च्या मुखांत उडी घालणाऱ्या शलभाची जी
 गति होते तीच गति ह्याची होईल ! तुझ्यावर
 कर्ण हा एकटाच चालून येत आहे असें पाहून
 त्याच्या संरक्षणासाठीं दुर्योधन रथसैन्य बरोबर
 घेऊन मागे वळला पहा; ह्या दुष्ट दुरात्म्याला
 ह्या सर्वासहवर्तमान मोठ्या प्रयत्नाने ठार
 मारून यश, राज्य व उत्तम सुख ह्यांची त्वां
 जोड करून घ्यावी ! तुम्ही दोघेही योद्धे मोठे
 बलिष्ठ व कीर्तिमान् असल्यामुळे तुमचें युद्ध
 म्हणजे देवदानवांच्या युद्धाप्रमाणे फार भयंकर
 होईल; ह्यासाठीं तुम्हां दोघांचा घोर संग्राम
 माजून त्यांत तुम्हा पराक्रम सर्व कौरवांच्या
 दृष्टीस पडावा ! अर्जुना, तूं क्षुब्ध झालास व
 त्याप्रमाणेच कर्णही क्षुब्ध झाला, आणि मग
 तुम्हां दोघांचें युद्ध लागलें, म्हणजे क्रुद्ध झालेला
 दुर्योधन पुढें कांहींएक करणार नाही !
 अर्जुना, तूं विहित कर्म करण्यास उद्युक्त
 आहेस; आणि कर्ण हा धर्मराज युधिष्ठिराचा
 अपराधी आहे, असा विचार करून, जें समयास
 उचित असेल तेंच तूं आतां कर. अर्जुना, तूं

युद्ध करितांना नीट दक्षता ठेवून महारथ कर्णावर चालून जा. हे पहा बलाढ्य व वीर्य-शाली पांचशे श्रेष्ठ रथ, पांच हजार हत्ती, दहा हजार घोडेस्वार व लक्षावधि पायदळ अगदी जूट करून एकमेकांच्या संरक्षणासाठी अवश्य तितकी काळजी घेत तुझ्यावर चालून येत आहे. हा पहा ह्या सर्व सैन्याच्या अग्र-भागीं अश्वत्थामा आहे. म्हणून ह्या सर्व सैन्या-चा तू त्वरित नाश करून टाक. अर्जुना, प्रथम ह्या रथसैन्याचा संहार उडव आणि मग महाबलिष्ठ, लोकविरुद्धात व महाधनुर्धर जो कर्ण त्यावर मोठ्या आवेशाने चालून जाऊन त्याला आपले सामर्थ्य दाखव. अर्जुना, हा पहा कर्ण क्रोधायमान होऊन पांचालांवर धावत सुटला! हा पहा धृष्टद्युम्नाच्या रथा-समीप त्याचा ध्वज दिसू लागला! आतां हा फार थोड्या अवधीत पांचालांजवळ येऊन भिडेल असें मला वाटते!

“अर्जुना, आतां मी तुला एक प्रिय वार्ता निवेदन करितों. हा पहा धर्मराज युधिष्ठिर सुरक्षित व खुशाल आहे! हा पहा महाबाहु भीमसेन मार्गे वळून सैन्याच्या विनीवर अधिष्ठित झाला व त्याच्यासमवेत मंजुयांचें सैन्य व सात्यकि आहे! हा पहा भीमसेन व महात्मे पांचाल ह्यांनीं निशित शरांचा भडिमार करून कौरवांना वधण्याचा सपाटा मुरू केला! हे पहा कौरवांचें सैन्य विमुख होऊन पळत सुटलें! ह्या पहा भीमाच्या शरप्रहारांनीं कौरवसेनेच्या अंगांतून रक्ताच्या धारा वाहू लागल्या! हा पहा जिकडे तिकडे रक्ताचा कर्दम माजून पिकें जळून गेलेल्या क्षेत्राप्रमाणें समरभूमीवर मोठी विपन्न दशा दिसू लागली! अर्जुना, हा पहा सर्वाप्रमाणें खवळलेला वीरश्रेष्ठ भीमसेन मार्गे वळून कौरवांच्या सैन्याची दाणादाण उडवीत आहे! ह्या पहा कौरवसेनेच्या चंद्र, सूर्य व तारे

ह्यांनीं अलंकृत केलेल्या पिवळ्या, तांबड्या, काळ्या व पांढऱ्या पताका आणि छत्रे सर्वत्र पडत आहेत! हे पहा सुवर्णाचे, रजताचे, पितळेचे व इतर धातूंचे नानाविध ध्वज पटापट खाली पडत आहेत! तसेंच हे पहा हत्तीघोडे रणांगणांत मरून पडत आहेत! त्याप्रमाणेंच हे पहा घीट पांचालांनीं नानाप्रकारचे बाण मारून विद्ध केलेले अनेक रथी आपआपल्या रथांतून खाली पडत आहेत! तसेंच हे वेगवान् पांचाल वीर धार्तराष्ट्रांच्या नरहीन झालेल्या हत्तींवर, घोड्यांवर व रथांवर चालून जात आहेत पहा! हा पहा ह्या दुर्धर्ष नरव्याघ्रांनीं जिवावर उदार होऊन भीमसेनाच्या आश्रयानें कौरवसेनेचा घोर संहार आरंभिला! हे पहा पांचाल वीर मोठमोठ्यानें गर्जत व शंख फुंकीत बाणांचा भडिमार करित रणांगणांत शत्रूंवर धावून जात आहेत! ह्या पांचालांचा केवढा प्रताप आहे तो अवलोकन कर! हे पहा पांचाल-जम कुद्ध झालले! सह हत्तींच्या शरीरांचे लचके तोडितात तसे-कौरवांच्या शरीरांचे लचके तोडीत आहेत! हे पहा पांचाल वीर स्वतः निःशस्त्र असतां सशस्त्र शत्रूंच्या हातांतील शस्त्रे हिमकावून घेऊन त्यांनींच शत्रूंना विनहरकत टार करीत असून आनंदानें ओरडत आहेत! हीं पहा शत्रूंचीं मस्तकें व भुज भग्न होऊन पडत आहेत. हे पहा पांचालांचें चतुरंग सैन्य सर्वत्र विजयीच होत चाललें आहे! मानससरोवरांतून आलेले हंस जसे मोठ्या वेगानें गंगेंत प्रवेश करितात, तसे हे पांचाल मोठ्या वेगानें कौरवसेन्यांत प्रवेश करून त्याची अगदीं दुर्दशा उडवीत आहेत! पांचालांच्या निवारणाकरितां ऋषकर्णादिकांनीं अगदीं पराकाष्ठा केली, परंतु अखेरीस भीमाच्या अस्त्रांपुढें त्यांचें कांहीं न चालतां त्यांचा अगदीं मोड झाला व शेवटीं धृष्टद्युम्नादिकांनीं सहस्रावधि शत्रूंचा संहार केला! हा पहा

शत्रूंनी पुनः पांचालांम चोहोंकडून गराडा दिव्हा ! पण ही पहा वायुपुत्र भीमानें कौरवांवर उडी घालून बाणांच्या भडिमारांन त्या अफाट सैन्याची पुनः अधिक देना करून सोडिली ! हे पहा भीमसेनाच्या भयानें कौरवांचे रथ कसे गांगरून गेले ! हे पहा भीमानें नाराच बाण मारून भद्र केलेले हत्ती म्वाली पडत आहेत ! जण काय ही वज्रधर इंद्रानें भद्र केलेलीं पर्वतांचीं शिखरांचे कोमळत आहेत ! हे पहा भीमसेनानें बांकदार पेन्यांच्या बाणांनीं विद्ध केलेले महान् महान् हत्ती मेरावेग पळत अमन आपल्याच सैन्याला पायांम्वाली तुडवीत आहेत ! अर्जुना, आतां आपणांस स्वचित विजय मिळणार असें समजून रणांगणांत भीमसेन मोठमोठ्यांनें मिहामारग्वी भयंकर गर्जना करीत आहे. हें पाहिलेंमना ! हा पहा निपादांचा राजा नैपादि क्रोधायमान होऊन भीमसेनाला टांग मारण्याच्या इच्छेन आपल्या श्रेष्ठ हत्तींवर वृषभ तोमरांचा वर्षाव करीत दंडधारी यमाप्रमाणें भीमसेनावर धावून आला ! हे पहा त्याचे तोमरांमहवर्तमान हात भीमसेनानें गर्जना करून अशिः व सूर्य ह्यांप्रमाणें देदीप्यमान अशा जलाद दहा नाराच बाणांनीं तोडून टाकिले व त्यास शेवटीं मृत्युमुखी लोटिले ! अर्जुना, हा पहा भीम नैपादीला वृषभ मागे वळला व दुमन्या हत्तींवर प्रहार करूं लागला ! हे पहा ह्या घनःशाम हत्तींवर महात आरूढ आहेत. त्यांजवर वृकोदरांन शक्ति व तोमरें ह्यांचा भडिमार चालविला आहे ! हा पहा तुझ्या वडील भ्रात्यांनै निशित बाणांचा वर्षाव करून प्रत्येक वेळीं ध्वजपताकांसहित सात सात हत्ती वधण्याचा सपाठा लाविला ! हे पहा बाकीचे हत्ती प्रत्येकावर दहा दहा नाराच बाण सोडून भीमसेनानें वाधिले ! अर्जुना, हा क्रोधायमान भीमसेन पुनः इकडे येऊन इंद्राप्रमाणें पराक्रम

गाजवूं लागल्यामुळें आतां धार्तराष्ट्रांच्या गर्जना अगदीं ऐकूं येईनातशा झाल्या ! हें पहा तीन अक्षोहिणीं कौरवसैन्य एकत्र होऊन भीमसेनावर चालून आलें, परंतु तें सर्व संकुद्ध झालेल्या भीमसेनानें मागे दडपिलें. अर्जुना, मध्यान्ह्यांच्या सूर्याकडे दुखत्या डोळ्यांच्या मनुष्यांना जसें पाहावत नाही तसें ह्या भीमसेनाकडे ह्या दुर्वल राजांना मुळींच मान वर करून पाहावत नाही ! अर्जुना, ज्याप्रमाणें मिहाला पाहून मृगांची गाळण उडते, त्याप्रमाणें भीमाला पाहून ह्या भूपाळांची गाळण उडाली आहे ! व युद्धभूमीवर ह्याप्रमाणें भीमसेनाच्या शरवृष्टीमुळें त्यांस आतां सुखाची—जयाची—आशाच करणें नको !”

संजय सांगतोः—राजा, ह्याप्रमाणें कृष्णानें जें काहीं मागितलें तें श्रवण करून, आणि भीमसेनानें जें दुष्ट कर्म केलें तें पाहून, कौरवांचें जें सैन्य अवशिष्ट राहिलें होतें त्याचा अर्जुनानें संहार केला. राजा, नंतर त्यांनै मंशसकांचा विध्वंस उडविण्यास प्रारंभ केला. तेव्हां त्यांपैकी पुष्कळ वीर दाही दिशांस पळून गेले व बाकीचे धारातीर्थी पतन पावून इंद्राच्या आतिश्यास पात्र होऊन सुखी झाले ! त्या समयीं पार्थानें बांकदार पेन्यांचे बाण सोडून कौरवांचें चतुरंग सैन्य ठार केलें !

अध्याय एकसष्टावा.

—:०:—

संकुलयुद्ध.

धृतराष्ट्र विचारतोः—संजया, भीमसेन व युधिष्ठिर हे परत येऊन पांडवांनीं व सृजघांनीं माझ्या सैन्याचा संहार उडविण्यास प्रारंभ केला व माझे सैन्य वारंवार विघ्न होऊन पळून जाऊं लागलें तेव्हां मग कौरवांनीं काय केलें तें मला सांग.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, रणांगणांत महाबाहु भीमसेन परत आला असे पाहून प्रतापशाली सूतपुत्र कर्णाला मनस्वी क्रोध चढला व तो आरक्त नेत्र करून भीमसेनावर चालून गेला. तेव्हां त्याने पाहिले तों कौरवांची सेना भीमसेनाला भिऊन युद्धविमुख होत्साती पळत आहे, असे त्यास आढळून आले; म्हणून त्याने प्रथम मोठ्या यत्नाने ती सेना आवरून धरिली आणि तिचा योग्य बंदोबस्त करून मग तो युद्धदुर्मद पांडवांवर चाल करून गेला. त्या समर्थी कर्ण आपल्यावर आला असे पाहून पांडवांकडील महारथांनी रणांगणांत बाणांचा भडिमार करीत त्याजवर हल्ला केला. त्या वेळी भीमसेन, सात्यकि, शिखंडी, जनमेजय, बलवान् धृष्टद्युम्न व सर्व प्रभद्रक वीर कर्णाला ठार मारण्याच्या इच्छेने संक्रुद्ध होऊन जयाची आशा करीत तुड्या सैन्यावर चोहोंकडून तटून पडले. राजा, तेव्हां तुड्या सेनेतील महारथ वीरही तत्काळ पांडवांना ठार करण्याच्या इराद्याने शत्रूवर धावून गेले आणि मग ती ध्वजपताकादिकांनी युक्त अशी दोन्ही चतुरंग दळे एकवटली, तेव्हां ते अवाढव्य सैन्य फारच अद्भुत दिग्गज लागले! राजा, त्या वेळी शिखंडीने कर्णावर हल्ला केला, धृष्टद्युम्नाने महामेनेने युक्त अशा दुःशासनावर हल्ला केला, नकुलाने वृषसेनावर, युधिष्ठिराने चित्रसेनावर व सहदेवाने उलूकावर हल्ला केला, सात्यकीने शकुनीवर हल्ला केला, द्रौपदीपुत्रांनी कौरवांवर हल्ला केला. महारथ द्रौणपुत्राने मोठ्या दक्षतेने अर्जुनावर हल्ला केला. महेष्यास युधामन्युवर कृपाने हल्ला केला, बलवान् कृतवर्म्याने उत्तमोजावर हल्ला केला, आणि महाबाहु भीमसेनाने तुड्या पुतांवर व बाकीच्या कौरवमेनेवर हल्ला केला व त्याने एकट्याने त्या सर्व सेनेला मागे हटवून टाकिले! राजा धृतराष्ट्रा. नंतर कर्ण हा धीट-

पणाने समरभूमीवर संचार करीत असतां भीष्माचे हनन करणाऱ्या शिखंडीने बाणांचा भडिमार करून त्यास कुठित केले. तेव्हां कर्ण फार संतप्त होऊन दांतओठ खाऊं लागला आणि मग त्याने शिखंडीच्या भुंवयांच्या मध्यंतरी तीन बाण मारून त्यास विद्ध करून टाकिले! राजा धृतराष्ट्रा, कर्णाने शिखंडीला जे हे तीन बाण मारिले, ते त्याच्या भालप्रदेशी तसेच रुतून राहिले व त्यामुळे जणू काय रुप्याच्या पर्वतावर तीन शृंगेच वाढली आहेत अशी मोठी शोभा दिसली! राजा, ह्याप्रमाणे कर्णाने शिखंडीला अतिशयित विद्ध केले तेव्हां शिखंडीने उलट समरांगणांत नव्वद धार दिलेले बाण कर्णावर सोडिले. ते पाहून महारथ कर्णाने तीन बाण मारून शिखंडीचे घोडे व सारथि ह्यांस वधिले व एक क्षुरप्र बाण सोडून त्याचा ध्वज छेदून टाकिला! राजा, नंतर महारथ शिखंडी हा अश्वहीन झालेल्या रथांतून उडी मारून खाली उतरला आणि त्या शत्रुसंहारक वीराने क्रोधायमान होऊन कर्णावर शक्ति सोडिली! तेव्हां कर्णाने तीन बाण मारून शिखंडीची ती शक्ति तोडिली आणि पुनः त्याजवर नऊ निशित बाण सोडिले. राजा, त्या समर्थी ते बाण आपल्यावर येत आहेत असे पाहून शिखंडीने ते बाण चुकविले व आधीच अतिशयित जवमी झालेला तो नरोत्तम शिखंडी रणभूमीतून तत्काळ एकीकडे झाला! नंतर कर्णाने पांडवांच्या सैन्याची दाणादाण केली; व ज्याप्रमाणे मोमाट्याचा वारा कापमाला दाही दिशाम उधळून टाकितो, त्याप्रमाणे त्याने शत्रुसैन्याला पार उधळून दिले!

राजा, इकडे धृष्टद्युम्नाचे व दुःशासनाचे युद्ध लागले होते, त्यांत धृष्टद्युम्नाने दुःशामनाच्या वक्षस्थळी तीन बाण मारिले अमनां दुःशामनाने उलट एक बांकदार पेण्यांचा मुवर्ण

पुंन भल्ल बाण मोडून धृष्टद्युम्नाचा डावा बाहु विद्ध केला. तेव्हां धृष्टद्युम्नाला फार क्रोध चढला व त्याने तत्काळ एक भयंकर बाण दुःशामनावर फेंकिला ! त्या समयी धृष्टद्युम्न-प्रेरित तो महावेगवान् शर आपल्यावर येत आहे असे पाहून त्याजवर तुझ्या पुत्राने तीन बाण मोडिले व त्याचा तत्काळ विध्वंस उडविला ! नंतर दुःशामनाने सुवर्णमंडित मनरा भल्ल बाण धृष्टद्युम्नाच्या वक्षस्थळी व बाहूवर मारिले आणि त्याबरोबर तो पार्ष्ण धृष्टद्युम्न अनिशय क्षुब्ध झाला व त्याने अत्यंत जलाल असा क्षुरप्र बाण टाकून दुःशामनाचे धनुष्य तोडिले व त्यामुळे सर्व सैन्य मोठ्याने ओरडू लागले ! राजा. नंतर तुझ्या पुत्राने दुसरे धनुष्य धारण केले व हंसत हंसत चौहोकडून बाणांचा भडिमार करून धृष्टद्युम्नाला जागच्या जागी खिळून टाकिले ! राजा, तुझ्या शर पुत्राचा तो पराक्रम पाहून योद्ध्यांना रणांगणांत तो मोठा चमत्कार वाटला आणि सिद्ध व अप्सरांचे समुदाय ह्यांनी तर ते अनिशयच नवल मानिले ! राजा. त्या समयी तो महाबल धृष्टद्युम्न त्या प्राणमंकरांतून मुक्त होण्यासाठी प्रयत्न करित होता; परंतु त्या बाणांच्या वेदघातांत बाहेर पडलेला तो आम्हांला दिमला नाही; मिहाने ज्याप्रमाणे हत्तीला एका जागी खुंटवून ठेवावे, त्याप्रमाणे दुःशामनाने त्याम एका जागी खुंटवून ठेविले ! राजा. नंतर मेनापति धृष्टद्युम्नाला मोडविण्याकरिता पांचालांनी रथ, गज व अश्व ह्यांमहवर्तमान तुझ्या पुत्रावर हल्ला केला आणि मग उभय दळांचा असा कांही शोग संग्राम सुरू झाला की, त्यांत जणू काय प्रलयकालाचाच प्राणिमंहाग होऊन लागला !

धृतराष्ट्रा, इकडे वृषमेनाने नकुलाला पांच लोहबाणांनी विद्ध केले व पुनः पित्याच्या समीप अमनां त्याने आणखी तीन बाण नकुला-

वर मोडले. मग शर नकुलाने हंसत हंसत एक अनिशय प्रवर नाराच बाण टाकून वृषमेनाला हृदयप्रदेशी फार विद्ध केले. तेव्हां बलवान् नकुलाच्या त्या शराने वृषसेन फारच पीडित झाला व त्याने उलट वीस बाण शत्रूवर मोडिले; पण ते पाहून नकुलानेही लागलेच पांच बाण वृषमेनावर टाकिले ! राजा, त्या समयी ते दोघेही वीर फार खवळले व एकमेकांवर हजारों बाण मोडून त्यांनी एकमेकांस बाणांनी झांकून काढिले ! तेव्हां त्या दोघांही योद्ध्यांची सैन्ये फुटली व मेरावेरा धावू लागली ! इनक्यांत कौरवांची मेना पळू लागली असे पाहून कर्ण त्या ठिकाणी प्राप्त झाला व त्याने मोठ्या हिंमतीने त्या सैन्याम आळा घातला. इकडे कर्ण परतल्यानंतर नकुल हा कौरवांवर चालून गेला व कर्णाचा पुत्र वृषसेन हा रणांगणांत नकुलाला मोडून तत्काळ कर्णाच्या रथासमीप येऊन त्याच्या रथाचे चक्र संभालू लागला !

इकडे, क्रुद्ध झालेल्या उलूकाला रणांगणांत प्रतापशाली महदेवाने मार्गे हटविले आणि त्याचे चारही घोडे व मारथि ह्यांस यमसदनीं पाठवून दिले ! नंतर उलूकाने आपल्या रथांतून खाली उडी टाकिली व आपल्या पित्याला संतोषविणाऱ्या त्या महावीराने ताबडतोब त्रिगर्ताच्या सैन्यावर हल्ला केला. इकडे, सात्यकीने धार देऊन जलाल केलेल्या वीस नाराच बाणांचा भडिमार करून शकुनीला विद्ध केले व हंसत हंसत भल्ल बाणाने त्याचा ध्वज तोडिला ! तेव्हां क्रोधायमान झालेल्या प्रतापी शकुनीने रणांगणांत सात्यकीच्या चिलखताचा भेद केला व उलट त्याचा कांचनध्वज छेदिला ! नंतर सात्यकीने जलाल बाणांचा भडिमार करून शकुनीला विद्ध केले; आणि मारथ्यावर तीन बाण टाकिले व तत्काळ अश्रांवर बाण मोडून त्याम यमसदनीं पाठविले !

तेव्हां शकुनि एकदम रथांतून उडी मारून खाली आला व महात्म्या उलूकाच्या रथावर चढला. त्या समयीं तत्काळ उलूकानें त्यास युद्धशाली सात्यकीपामून सुरक्षित रावण्यासाठीं रणांतून एकीकडे नेलें ! तेव्हां सात्यकीनें कौरवसेनेवर मोठ्या अपेक्षांनें हल्ला केला आणि त्यामुळे तें सैन्य फार लवकर फुटलें व सात्यकीच्या बाणप्रहारांनीं जर्जर होऊन दशदिशा धुंडालीत नष्ट झालें ! इकडे तुड्या पुत्रानें भीमसेनाला रणांत मागें हटविलें; पण भीमानें त्या लोकेश्वर दुर्योधनाला क्षणांत अश्वहीन, रथहीन, मृतहीन व ध्वजहीन करून टाकिलें व त्यामुळे पांडवमेन्याला मोठा आनंद झाला ! तेव्हां दुर्योधन भीमसेनाच्या दृष्टीआड गेला आणि मग सर्व कौरवसैन्यानें भीमसेनावर चाल केली. राजा, त्या समयीं भीमसेनाला ठार मारण्याच्या इच्छेनें तुझे सैन्य मोठमोठ्यानें आरोळ्या देऊं लागलें आणि दोन्ही सैन्ये निकरानें लढूं लागलीं. तेव्हां युधामन्यूनें कृपाला बाणविद्ध करून त्याचें धनुष्य तांबडतोव छेदिलें. त्या वेळीं शस्त्रधरश्रेष्ठ कृपानें दुमरें धनुष्य हातांत घेतलें आणि त्यानें युधामन्यूचा ध्वज, मारथि व छत्र हीं तोडून भूमीवर पाडिलीं. तेव्हां मग महारथ युधामन्यु स्वतः रथ घेऊन रणांगणांतून एकीकडे गेला !

राजा धृतराष्ट्रा, इकडे उत्तमौजानें घोर पराक्रमी भयंकर हार्दिक्यावर (कृतवर्म्यावर) बाणांचा एकदम भडिमार करून. मेघ ज्याप्रमाणें पर्वताला आच्छादित करितो, त्याप्रमाणें हार्दिक्याला आच्छादित केलें ! त्या समयीं त्या दोघांचें जसें तुंबळ व घोर युद्ध झालें. तसें युद्ध मीं पूर्वीं कधींही पाहिलें नव्हतें. राजा, तेव्हां हार्दिक्यानें उत्तमौजाच्या हृदयांत असे बाण मारिले कीं, त्यामुळे तो तत्काळ रथांत वीरस्थानीं खालीच बसला ! मग सारथ्यानें उत्तमौ-

जाची ती दुर्दशा अवलोकन करून तत्काळ त्याम एकीकडे नेलें आणि मग सर्वच कौरवसैन्य भीमसेनावर तुटून पडलें ! तेव्हां दुःशामन व शकुनि ह्यांनीं प्रचंड गजसेनेसह वर्तमान भीमसेनास वेढा घातला व त्याजवर लहान लहान बाणांची विपुल वृष्टि चालविली. त्या समयीं भीमसेनानें शतावधि बाणांचा क्रुद्ध दुर्योधनावर भडिमार करून त्यास मागें हटविलें व मोठ्या त्वेषानें गजसेनेवर हल्ला केला ! त्या वेळीं कौरवांची ती गजसेना एकाएकीं भीमसेनावर उमळून आली; पण भीमसेनानें तत्काळ संक्रुद्ध होऊन दिव्य अस्त्रांचें आवाहन केलें आणि मग तुंबळ संग्राम सुरू होऊन कौरवांच्या हत्तींना पांडवांच्या हत्तींनीं इतके प्रहार केले कीं, जणू काय त्या समयीं देवेंद्र हा वज्रानें अमुरांचाच विध्वंस करित आहे, असें भासलें ! राजा, त्या समयीं वृकोरदानें कौरवांच्या गजसेनेस वशीत अमतां बाणांचा भडिमार करून टोळघाट जशी वृशाला आच्छादिते तसें सर्व अंतरिक्ष आच्छादिलें. तेव्हां कौरवांकडील हत्तीचे हजारों कळप भीमसेनावर धावून आले; परंतु त्या सर्वांची भीमसेनानें अगदीं वाताहत करून टाकिली ! राजा, त्या वेळीं सुवर्णाच्या जालकांनी व रत्नवचित अलंकारांनीं शृंगारलेले ते प्रचंड हत्ती रणांगणांत विद्युल्लतेनें युक्त अशा मेघांप्रमाणें शोभत अमतां भीमसेनानें त्यांचा घोर मंहार आरंभिला व मग ते मंत्रांवर दशदिशांम पळूं लागले ! राजा, त्या समयीं कित्येक हत्तींचीं वक्षस्थळें विदारित होऊन ते समरभूमीवर पतन पावले आणि पतन पावलेल्या व पडणाऱ्या सुवर्णालंकृत गजानीं तीं सर्व भूमि आच्छन्न होऊन जणू काय तिजवर विदीर्ण झालेले पर्वतच इतस्ततः विखरले आहेत असें भासूं लागलें ! राजा, त्या वेळीं महादेदीप्यमान रत्नांनीं भडित असलेले ते गजयोद्धे रणांत

पडले अमतां जणू काय तेथें क्षीणपुण्य ग्रहच पनन पावले आहेत असें भामलें ! राजा, त्या समर्थी भीमसेनाच्या शरप्रहारांनीं शतावाधि हत्तींची गंडम्यळें भंग होऊन, मस्तकें फुटून व शूंडा तुटून त्यांची मोठी दुर्दशा उडाली ! त्या वेळीं धातूंनीं चित्रविचित्र शोभणाऱ्या पर्वताप्रमाणें ते भीमसेनाच्या बाणांनीं विद्ध झालेले महान् महान् रक्तत्रवाळ हत्ती भयार्त होऊन रक्त ओकत धरणीवर पडले ! राजा, तेव्हां बाणांचा भडिमार करणाऱ्या त्या वृकोदराचे चंद्रनाची उठी दिलेले ते भुज रणभूमीवर केवळ महाभुजंगांप्रमाणें भामले व त्याच्या प्रत्यंचेचा शब्द केवळ वज्रनिर्घोषाप्रमाणें होत अमल्यामुळें रणांगणांतील हत्तींची मोठी त्रेधा उडून ते मलमूत्र विमर्जन करीत फार पळत सुटले ! राजा, त्या समर्थी त्या एकट्या बुद्धिमान् भीमसेनाचें तें घोर कर्म अवलोकन करून जणू काय रुद्र हा सर्व प्राण्यांचा संहार उडवीत आहे असा भाम झाला !

अध्याय वासष्टावा.

संकुलयुद्ध.

मंजय सांगतो:-नंतर, ज्यास शुभ्र अध जोडिले आहेत व ज्यावर नारायण मारथ्य करीत आहे. अशा श्रेष्ठ रथांतून श्रीमान् अर्जुन रणांगणांत प्राप्त झाला; आणि येतांच, वारा जमा समुद्रास क्षुब्ध करितो. तसें त्यानें तें अधादिकांनीं ओतप्रोत भरलेले तुम्रें सैन्य क्षुब्ध करून सोडिलें ! राजा, त्या समर्थी कौरवसैन्यांत फारच धांदल उडाली; व अर्जुनाचें आपल्याकडे अवधान नाही अशी संधि पाहून, क्रोधायमान झालेला दुर्योधन आपणावर मूढ धेण्याच्या इच्छेनें चालून येणाऱ्या युधिष्ठिरावर अर्घ्या सैन्यासह एकदम तुटून पडला आणि त्यास

मागें रेटून त्यानें तेहेतीस क्षुरप्र बाणांच्या भडिमारांनें विद्ध करून टाकिले ! तेव्हां कुंतीपुत्र युधिष्ठिराला मनस्वी क्रोध चढला आणि त्यानें तीस भल्ल बाण दुर्योधनावर मोठ्या आवेशानें टाकिले ! त्या समर्थी युधिष्ठिराला ठार मारण्याच्या इच्छेनें कौरवांकडील वीर त्याजवर धावून गेले, पण त्यांचा दृष्ट हेतु तत्काळ ध्यानांत आणून कुंतीपुत्राचें संरक्षण करण्याकरितां पांडवांकडील महारथ एकदम त्याच्यासमोवतीं जमले. त्या वेळीं नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न व भीमसेन हे आपल्या बरोबर असौहिणी सैन्य घेऊन धर्मराजाच्या समीप आले व त्यांनीं युधिष्ठिरास वेदून राहिलेल्या कौरवांच्या महारथांवर बाणांचा भडिमार चालविला. तेव्हां त्या सर्व महाधनुर्धरांवर कर्णानें भयंकर शरवृष्टि आरंभिली व त्यांस जागच्या जागीं खिळून टाकिलें. नंतर त्या धृष्टद्युम्नादिक प्रबल पांडवयोद्ध्यांनीं शरतोमरांचा एकसारखा वर्षाव करून कर्णाला मागें हटविण्याची पराकाष्ठा केली; पण तेव्हां राधेयानें असा अद्वितीय प्रताप गाजविला कीं. त्याजकडे मानवर उचलून पहाण्याचीही कोणाची छाती झाली नाही ! अखेरीस त्या सर्व पांडवीय महाधनुर्धरांवर सर्वशस्त्रास्त्र-विशारद कर्णानें बाणांचा घोर भडिमार करून त्यांस मागें हटविलें ! राजा, नंतर प्रतापवान् महर्देवानें तान्त्रडतोव शीघ्र अस्त्राचें आवाहन केलें आणि दुर्योधनावर वीस बाण मारिले ! राजा, त्या समर्थी अंगांतून रुधिराचे ओघ वहात असलेल्या मातंगाप्रमाणें तो पर्वततुल्य अदळ योद्धा रणांगणांत शोभला ! तेव्हां तुझ्या पुत्राच्या देहांत जलाल व तीक्ष्ण बाण रुतलेले अवलोकन करून महारथ कर्णास मोठा क्रोध चढला व त्यानें तत्काळ अस्त्राचें अभिमंत्रण करून युधिष्ठिराच्या व धृष्टद्युम्नाच्या सैन्यावर बाणांची वृष्टि चालवून त्याचा घोर संहार

आरंभिला ! तेव्हां महात्म्या सूनपुत्रानें बाण-
प्रहारांनीं जर्जर करून सोडिल्ले तें धर्मराजाचें
सैन्य भराभर पळून गेलें ! राजा, त्या समर्थी
सूनपुत्राच्या धनुष्यापासून असा कांहीं अपूर्व
बाणवर्षाव झाला कीं, पहिल्यानें सुटलेल्या
बाणांच्या पुंखांवर मागून सुटलेल्या बाणांचे
फाळ मटासट आपटावयास लागून त्या एक-
मेकांच्या संवर्षणानें मोठा अग्नि भडकला !
राजा, नंतर कर्णानें टोळधाडीप्रमाणें शरांचे
ओघ दशदिशांस शत्रूंवर सोडिले व ते शत्रूंच्या
अंगांत मोठ्या वेगानें घुमले ! राजा, त्या समर्थी
रक्तचंदनाची उठी दिलेले व रत्नवचितसुवर्णा-
लंकारांनीं भूषविलेले कर्णांचे ते बाहु मोठ्या
सपाट्यानें बाणक्षेप करित अमतां इतके एक-
सारखे मार्गें—पुढें होत होते कीं, त्याची ती
लोकोत्तर अस्त्रक्रिया अवलोकन करून सर्वांम
मोठें नवल वाटलें ! राजा, ह्याप्रमाणें दाही
दिशा बाणांनीं अत्यंत व्याप्त करून टाकिल्या-
नंतर कर्णानें धर्मराज युधिष्ठिरावर बाणांचा
जबर भडिमार करून त्यास अगदीं आर्त
करून सोडिलें ! तेव्हां युधिष्ठिर फारच चवता-
ळला आणि त्यानें लागलेच पन्नास निशित
बाण कर्णावर टाकिले ! राजा, त्या समर्थी त्या
उभयतांनीं झपाट्याची शत्रुवृष्टि चालवून घोर
युद्ध आरंभिलें, तेव्हां चोहोंकडे अंधकार पडला
आणि तुझ्या सैन्याचा युधिष्ठिरानें भयंकर
विध्वंस उडविण्यास प्रारंभ केला; तेव्हां तुझ्या
सैन्यांत महान् हाहाकार होऊं लागला ! राजा,
त्या वेळीं धर्मात्म्या युधिष्ठिरानें महाणेवर धार
देऊन तीक्ष्ण केलेले अनेक प्रकारचे कंकपत्र बाण,
भल्ल बाण, शक्ति, ऋष्टि, मुसळें इत्यादि आयु-
धांची शत्रुसैन्यावर प्रचंड वृष्टि केली व शत्रूंना
अगदीं 'त्राहि भगवन्' करून सोडिलें ! आणि
राजा, तेव्हां त्या पांडुपुत्रानें निकडे निकडे
म्हणून क्रोधमुद्रेनें अवलोकन केलें तिकडे तिकडे

तुझे सैन्य जागच्या जागीं नाश पावले ! राजा,
तें पाहून कर्णाला जो क्रोध आला तो काय
वर्णावा ? तो अगदीं संतापून जाऊन दांतओठ
चावूं लागला आणि धर्मराजाचा सड घेण्या-
करितां मोठ्या आवेशानें नाराच, अर्धचंद्र व
वत्सदंत बाणांचा भडिमार करित समरांगणांत
युधिष्ठिरावर धावून गेला ! तेव्हां युधिष्ठिरानेही
सुवर्णपुंख जलाल बाणांचा कर्णावर वर्षाव केला;
पण इतक्यांत हंसत हंसत कर्णानें पुनः धार
दिलेल्या कंकपत्र बाणांनीं व तीन भल्ल बाणांनीं
युधिष्ठिराचें वक्षस्थळ भेदिलें व त्यामुळे तो
अतिशयित विव्हल होऊन रथांत मटकन् खालीं
वमला आणि 'सूता, रथ एकीकडे ने !' असें
मोठ्यानें म्हणाला ! राजा, तेव्हां दुर्योधनप्रभृति
सर्वे कौरव मोठमोठ्यानें गर्जना करून 'धर्म-
राजाला धरा, धर्मराजाला धरा !' असें ओरडत
चोहोंकडून त्याजवर धावले; पण इतक्यांत
मनराशें केकय योद्धे पांचालांसमवेत कौरव-
सैन्यावर तुटून पडले आणि मग मोठा घोर संग्राम
चालू होऊन जनक्षय सुरू असतां महाबल भीम
व दुर्योधन ह्यांचें भयंकर युद्ध जुंपलें.

अध्याय त्रेसष्टावा.

—:—

धर्माचा पराभव !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, मग कर्णा-
नेही केकयांच्या महारथांवर शरांचें जालें पस-
रण्यास प्रारंभ केला व जे महाधनुर्धर त्या-
च्याशीं तोंड देऊन लढूं लागले त्यांस त्यानें
उधळून लाविलें ! राजा, ते केकय वीर राधे-
यांचें निवारण करण्यास झटत असतां कर्णानें
त्यांचे पांचशें रथ यमसदनीं पाठविले ! तेव्हां
युद्धांत राधेयाचा दुर्धर पराक्रम अवलोकन
करून कर्णाच्या बाणांनीं जर्जर झालेल्या केक-
यांनीं राधेयाशीं लढण्याचा नाद सोडून दिला

व ते भीमसेनाला जाऊन मिळाले. तेव्हां कर्णाने बाणांचा भडिमार करून पांडवांच्या रथमेनेची पार दाणादाण उडविली व नंतर तो एकटा आपल्या रथांतून युधिष्ठिरावर चालून गेला. राजा, त्या समर्थी युधिष्ठिर हा मोठ्या विपन्न अवस्थेत होता. बाणप्रहारांनी घायाळ झाल्यामुळे दोन्ही अंगांम नकुल व सहदेव हे त्याच्या संरक्षणार्थ यत्न करीत होते व तशा स्थितीत बेशाद्व अमलेल्या तो धर्मराज युधिष्ठिर हळूहळू मैत्र्याच्या गोटाचा मार्ग आक्रमीत होता. राजा. अशा प्रकारे युधिष्ठिर हा रणांगणांतून युद्ध-पराङ्मुख होऊन परत जात असतां दुर्योधनाचे हित करावयाचे ह्या इच्छेने कर्णाने त्या घायाळ पांडुपुत्रास गांठले व त्याजवर तीन जळाल बाण सोडिले ! तेव्हां धर्मराजा स्वःतःचे दुःख विमरला व त्याने तत्काळ उलट कर्णाच्या वक्षस्थळावर आणि सारथ्यावर मिळून तीन व चार हयांवर चार बाण मारिले ! राजा, ते पाहून शत्रुसंहारक माद्रीपुत्र नकुलसहदेव युधिष्ठिराच्या रथाची चक्रे राखीत होते ते. कर्णाने धर्मराजाला वधुं नये ह्मणून कर्णावर धावून गेले आणि त्यांनी मोठ्या निकराने कर्णावर पृथक् पृथक् बाणांचा भडिमार चालविला. तेव्हां त्या दोघां महात्म्या शत्रुसंहारक पांडुपुत्रांवर कर्णाने धार दिलेले दोन भल्ल बाण सोडिले व त्यांस विद्ध केले; आणि त्यानें समरांगणांत हस्तिदंताप्रमाणे शुभ्र मनोवेगाने पळणारे व कृष्णवर्ण पुच्छांचे ते युधिष्ठिराच्या रथाचे घोडे ठार मारिले आणि आणखी एका भल्ल बाणाने हंसत हंसत त्यांचे शिरस्त्राण खाली पाडिले ! राजा. त्याप्रमाणेच प्रतापशाली कर्णाने धीमान् नकुलाचेही घोडे मारिले आणि त्यांचे धनुष्य व रथाची धुरी हीं छेदून टाकिली ! तेव्हां ते युधिष्ठिर व नकुल हे दोघे भ्राते अतिशय विव्हल होऊन रथहीन व अश्वहीन झाले व तेव्हां सहदेवाच्या रथावर

चढले ! त्यांची ती अनुकंपनीय अवस्था अवलोकन करून शत्रुसंहारक मातुल शल्य कर्णास म्हणाला:—बा राधेया, आज तुला पृथापुत्र अर्जुनाशी युद्ध करावयाचें आहे तें सोडून देऊन तूं विनाकारण संतप्त होऊन युधिष्ठिराशी लढत आहेस तो काय म्हणून ! बा, अशा रीतीने शस्त्रात्रांचा पुरवठा कमी पडला. तुझे चिखलत फाटून तुटून गेले, बाण संपले, भाते नाहीतसे झाले. मारथि व घोडे थकले व तूं शत्रूंकडून बाणच्छन्न झालास, आणि मग का जर तुझी अर्जुनाशी गांठ पडली, तर मग खचित तुझी उपहामास्पद स्थिति होईल ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे शल्य मामाने कर्णाला सांगितले तरी कर्णाने क्षुब्ध होऊन युधिष्ठिरावर बाणवृष्टि करण्याचा सपाटा चालू ठेविलाच आणि त्या माद्रीपुत्रांना शरविद्ध करून अखेरीस त्यानें मोठ्यानें हंसून बाणांच्या भडिमारांनें धर्मराजाला युद्धविमुख होण्यास भाग पाडिले ! तेव्हां शल्य मोठ्यानें हंसून पुनः कर्णाला म्हणाला:—कर्णा, तुझा युधिष्ठिराला ठार मारण्याचा निश्चय दिमतो; पण हें तुझे अनुचित कृत्य होय ! अरे, ज्याचा वध तुझ्या हातून घडेल अशा भिस्तीनें दुर्योधन तुला सतत एवढा मान देत आला, त्या अर्जुनाला तूं मार; तुला युधिष्ठिराला मारून लाभ तो कोणता आहे ? अरे, हा पहा कृष्णाजुनांच्या शंखांचा व त्याप्रमाणेच अर्जुनाच्या धनुष्याचा घोर ध्वनि पर्जन्यकाळांतील घनगर्जनेप्रमाणे कानी पडू लागला ! हा पहा अर्जुनांनें शरवर्षाव करून कौरवांच्या महान् महान् रथांचा नाश आरंभिला ! ही पहा त्यानें आपली सर्व सेना समरांगणांत बाणांनीं व्याप्त केली ! हे पहा युधामन्यु व उत्तमांजा ह्या शूरांच्या पृष्ठांचे रक्षण करीत आहेत. हा पहा शूर सात्याकि ह्याच्या रथाचें डावें चाक व धृष्टद्युम्न उजवें चाक संभाळीत

आहे ! भीमानें तर दुर्योधन राजाशी युद्ध आरंभिलें आहे; ह्यासाठी आज आपणां मर्वांच्या देवत तो त्यास वधणार नाही. अशी व्यवस्था आपण केली पाहिजे. कर्णा, पहा—रणांगणाला शोभविणाऱ्या दुर्योधनास भीमसेनानें कसें प्राप्तिलें आहे ! ह्यास्तव असें कर कीं, आतां त्याची भीमसेनापासून सुटका होईल ! जर त्याची व तुझी गांठ पडली आणि त्याची मुक्तता झाली, तर तूं मोठें आश्चर्यकारक कृत्य केलेंस असें होईल; म्हणून तूं त्याला मदत कर आणि त्यास प्राणसंकटांतून सोडव ! माद्रीपुत्र नकुलमहदेव व युधिष्ठिर ह्यांस मारण्यांत अर्थ तो कोणता बरे ?

राजा धृतराष्ट्रा, शल्याचें हें भाषण राधेयाला मानवलें; व तो प्रतापशाली कर्ण, भीमसेनाच्या अगदीं कचाट्यांत दुर्योधन सांपडला आहे असें पाहून त्याला सोडविण्यासाठी शल्याच्या म्हणण्याप्रमाणें अजातशत्रु धर्मराज युधिष्ठिर व नकुल-सहदेव ह्यांस सोडून दुर्योधनाकडे निघाला; तेव्हां मद्रराजानें प्रेरिलेले ते अश्व जणू काय अंतरिक्षांतून चौखूर दौडत तत्काळ दुर्योधनाच्या सन्निध कर्णरथाला घेऊन प्राप्त झाले ! राजा, ह्याप्रमाणें कर्ण हा तिकडे गेला तेव्हां इकडे धर्मराज युधिष्ठिर, नकुल व सहदेव हे ताबडतोब महावेगवान् रथांतून आपल्या शिबिराप्रत निघून गेले ! तेथें गेल्यावर तो वायाळ व लज्जायमान झालेला युधिष्ठिर राजा रथांतून खाली उतरला व सुंदर शय्येवर निजला. मग देहांत रुतलेले बाण वगैरे काढल्यावर अंतर्यामी अतिशयित तळमळणाऱ्या त्या पथापुत्रानें महारथ माद्रीपुत्रांस म्हटलें:—पांडवहो, तुम्ही अगदीं विलंब न करितां भीमसेनाच्या सैन्याला जाऊन मदत करा. वृकोदरानें केवळ मेघाप्रमाणें गर्जना करीत युद्ध आरंभिलें आहे ! राजा धृतराष्ट्रा, नंतर तो महारथ नकुल दुमन्या रथांत आरूढ

झाला व मग ते दोघे पराक्रमी व शत्रुसंहारक भ्राते नकुलमहदेव अत्यंत वेगानें चालणाऱ्या रथांतून सैन्यासहवर्तमान भीमसेनाप्रत आले !

अध्याय चौसष्टावा.

—:०:—

धर्मराजाचा शोध.

संजय सांगतो:—राजा, इकडे अश्वत्थामा हा बरोबर पुष्कळ रथांचा समुदाय घेऊन अर्जुन जेथें होता तेथें एकाएकी चालून गेला; पण तो आपल्यावर चालून येत आहे असें पाहून कृष्णमव शूर अर्जुनानें—समुद्राला जशी त्याची मर्यादा अडवून धरिते तसें त्याला मोठ्या आवेशानें अडवून धरिलें. तेव्हां प्रतापशाली द्रोणपुत्र फारच क्षोभला व त्यानें कृष्णार्जुनांवर बाणांचा भडिमार करून त्यांस झांकून टाकिलें. तें पाहून पांडवांकडील महारथांस व एकंदर सर्व कौरवसैन्यास मोठें आश्चर्य वाटलें ! नंतर अर्जुनानें हंसत हंसत दिव्य अस्त्रांचें आवाहन केलें; पण अश्वत्थाम्यानें तत्काळ त्याचा समरांगणांत प्रतिकार केला. राजा, त्या समयी अश्वत्थाम्याला ठार मारण्याकरितां अर्जुनानें जीं जीं अस्त्रें त्याजवर सोडिलीं त्या त्या सर्वांचा महाधनुर्धर अश्वत्थाम्यानें विध्वंस उडविला ! राजा, तेव्हां अश्वत्थामा व कुंतीपुत्र ह्यांचा घोर अस्त्रमग्नम चालू असतां आम्हांला अश्वत्थामा म्हणजे आ पसरून उभा अमलेला माक्षात् यमच होय असें भासलें ! त्या वेळीं अश्वत्थाम्यानें सरळ चाल करून जाणाऱ्या बाणांचा वर्षाव करून दशदिशा व्यापून टाकिल्या व वामुदेवाच्या उजव्या भुजाला तीन बाणांनीं विद्ध केलें ! तेव्हां अर्जुनानें त्या महात्म्या अश्वत्थाम्याचे सर्व अश्व ठार मारिले व रणभूमीवर जणू काय सर्व पृथ्वीचा समावेश करील अशी मोठी प्रचंड रुधिरनदी प्रवृत्त

केली! राजा, ती नदी फारच भयंकर असून वीराला परलोकामध्ये पांचविण्याचे उत्तम साधन होते आणि तिच्यामध्ये रणांत अर्जुनाच्या शरप्रहारांनी हत झालेले अश्वत्थाम्याचे सर्व रथी रथांसह वहात चालले होते! राजा, त्या समयी द्रोणपुत्र व अर्जुन ह्यांचे दारुण व निकराचे युद्ध चालले अमतां भयंकर संहार उडाला! कितीएक रथांचे अश्व व सारथि हत होऊन रथ उघडे पडले; कितीएक अश्व वीरहीन उधळू लागले; कितीएक गज वीर रणांगणांत मेल्यामुळे मेरावरा धावत सुटले; आणि कितीएक वीर हत्ती पडल्यामुळे हाताश झाले! राजा, त्या घोर युद्धांत दोघाही वीरांनी मोठा उग्र प्रताप गाजविला! अर्जुनाने बाणांचा वर्षाव करून कौरवांचे बहुत रथी व घोडेस्वार ठार मारिल्यामुळे घोडे उधळू लागले; तेव्हां त्या विजयशाली पांडुपुत्रावर वीर्यवान् अश्वत्थामा तत्काळ चालून आला व त्याने आपल्या सुवर्णमंडित प्रचंड धनुष्याच्या योगीं त्याच्यासभोवती तीक्ष्ण शरांची वृष्टि करून त्यास अगदी बाणाच्छादित करून सोडिले आणि मोठ्या निष्ठुरपणाने त्याच्या वक्षस्थळी बाणप्रहार केले! राजा, द्रोणपुत्राच्या त्या शरांनी अर्जुन फारच विद्ध झाला व त्याने तत्काळ गांडीव धनुष्याने बाणांचा भडिमार करून अश्वत्थाम्याचे धनुष्य छेदून टाकिले! तेव्हां अश्वत्थाम्याने समरांगणांत वज्रतुल्य परिघ धारण केला व तो अर्जुनावर सोडिला; पण तो सुवर्णभूषित परिघ आपणावर येत आहे असे पाहून अर्जुनाने बाणांचा वर्षाव करून हंमत हंमत तत्काळ तो तोडून टाकिला. तेव्हां वज्रप्रहारांनी फोडून टाकिलेला पर्वत जमा धाडकन् पडतो तसा तो धाडकन् रणांगणांत पडला. राजा, ते पाहून महारथ द्रोणपुत्राला मनस्वी क्रोध चढला व त्याने ऐंद्र अस्त्रांचे

अभिमंत्रण करून मोठ्या त्वेषाने अर्जुनावर बाणांचा भडिमार चालविला! तेव्हां अर्जुनाने ते अवलोकन करून आपले गांडीव धनुष्य उचलिले आणि महेंद्राने उत्पन्न केलेल्या श्रेष्ठ अस्त्रांचे आवाहन करून अश्वत्थाम्याच्या ऐंद्र अस्त्राचा त्याने विध्वंस उडविला आणि क्षणांत अश्वत्थाम्याचा रथ बाणांनी झांकून टाकिला! त्या समयी अश्वत्थाम्याने पांडवप्रेरित बाणौघाचा भेद करून उलट मोठ्या शौर्याने एकदम कृष्णावर शंभर व अर्जुनावर तीनशे क्षुप्र बाण जोराने फेंकिले! तेव्हां अर्जुनाने गुरुपुत्राच्या मर्मस्थळी शंभर बाण मारिले आणि तुड्या सैन्याच्या डोळ्यादेखत त्याचे अश्व, सारथि व धनुर्ज्या ह्यांजवर जबर बाणवृष्टि केली! नंतर अर्जुनाने पुनः अश्वत्थाम्याच्या जिव्हाळी बाणांचा वर्षाव केला व त्याच्या सारथ्यावर भल्ल बाण सोडून त्यास रथांतून खाली पाडिले! तेव्हां अश्वत्थाम्याने स्वतः अश्वाने नियंत्रण केले व लागलाच बाणांचा भडिमार चालवून कृष्णार्जुनांस बाणांनी झांकून टाकिले! राजा, त्या समयी अश्वत्थाम्या स्वतः सारथ्यही करित होता व अर्जुनार्शी लढतही होता! आणि ह्यामुळे त्याचा तो अद्भुत पराक्रम पाहून सर्व योद्ध्यांनी त्याचे फार फार धन्यवाद गाडले! राजा, नंतर अर्जुनाने मोठ्याने हंसून रणामध्ये द्रोणपुत्राच्या अश्वाने रश्मि तत्काळ क्षुप्र बाणांनी छेदिले आणि त्यांजवर बाणांची अतिशय वृष्टि केली; तेव्हां त्या बाणांचा वेग त्या अश्वामे सहन न होऊन ते उधळू लागले. ते पाहून तुड्या सैन्याला मोठी धास्ती पडली व मोठा हाहाकार उडाला व अशा प्रकारे पांडवांनी कौरवमैनेला जखम घालून विजयप्राप्तीच्या आशेने जलाल बाणांचा चौहोंकडे त्यावर भडिमार चालविला असतां ते एकसारखे पळत भुटले! राजा, नंतर समरांगणांत

कौरवांची अफाट सेना पांडवांनीं जयाच्या आशेनें, पुनःपुनः नानाविध रीतींनीं युद्ध करणाऱ्या तुझ्या पुत्रांच्या समक्ष, सौबल शकुनीच्या समक्ष व कर्णाच्या समक्ष, उधळून लाविली; आणि तुझ्या पुत्रांनीं जरी तिला आवरून धरण्याचा प्रयत्न केला, तरी चोहों-कडून पांडवांच्या बाणप्रहारांनीं जजेर झाल्या-मुळें ती म्हणून थांबली नाही! राजा, तेव्हां तुझ्याकडील योद्धे जिकडे तिकडे पळू लागल्यामुळें तुझ्या पुत्रांचें तें मोठें सैन्य घाबरून अगदीं व्याकुल झालें आणि कर्णानें 'थांबा, थांबा' म्हणून कितीही कंठशोष केला तरी महात्म्या पांडवांच्या हातून त्याचा वध होऊं लागल्यामुळें तें रणांगणांत उभें राहिलें नाही! व ह्याप्रमाणें कौरवांच्या सैन्याची अगदीं दाणा-दाण झालेली पाहून, 'आतां आपणांस खचित जय मिळणार' अशी पांडवांनीं गर्जना केली!

धृतराष्ट्रा, तेव्हां दुर्योधन मोठ्या प्रेमानें कर्णाला म्हणाला, "बा कर्णा, ही आपली प्रचंड सेना पांचलांनीं कशी आर्त करून सोडिली हें पाहिलेंसना? अरे, तूं येथें असतांही भीतीनें गांगरून ही धूम पळत आहे! ह्या-सार्थी प्रस्तुत समयी जें उचित तें तूं कर. हे वीरा, हे बहा पांडवांनीं उधळून दिलेले सहस्त्रा-वधि योद्धे समरांगणांत 'कर्णा, कर्णा' असेंच ओरडत आहेत!" राजा, ह्याप्रमाणें दुर्योधनाचें भाषण श्रवण करून त्या बलिष्ठ कर्णानें हंसत हंसत मद्राधीपाला म्हटलें. "शल्या. माझ्या बाहूंची शक्ति व अस्त्रांचें सामर्थ्य पहा. आज मी पांडवांसहवर्तमान सर्व मृजयांना युद्धांत ठार करितों. हे नरशार्दूला, आतां रथ चालू कर, आपल्यास खचित यश मिळेल!" असें बोलून प्रतापशाली मृतपुत्रांनं पुरातन व श्रेष्ठ असें विजय धनुष्य हातांत घेतलें आणि तें सज्य करून त्याचें पुनःपुनः आम्फालन केलें.

नंतर त्यानें शपथा घेऊन व खात्री देऊन, जे योद्धे युद्धविमुख होऊन पळून चालले होते त्यांची समजूत घातली; आणि त्यांस आश्वासन देऊन परत फिरविल्यावर, त्या महा-बल व अमेयपराक्रमी वीरानें भार्गवास्त्राची योजना केली. राजा, नंतर समरांगणांत कर्णाच्या त्या विजय धनुष्यापासून कोट्या-वधि बाण सुटूं लागले आणि त्या घोर व देदीप्यमान अशा कंकपुंख व मयूरपुंख शरांनीं सर्व पांडवसेना आच्छादित होऊन सर्वत्र घन अंधःकार पडला! राजा, त्या समयी पांचालांच्या सैन्यांत त्या बलिष्ठ भार्गवास्त्राच्या योगें मोठा घोर अनर्थ होऊं लागला व त्यामुळें भयंकर हाहाः-कार उद्भवला! राजा, तेव्हां सहस्त्रावधि हत्ती, घोडे, रथ व नर चोहोंकडे धडाधड पृथ्वीवर मरून पडूं लागले व त्यामुळें सर्व पृथ्वी हाद-रून जाऊन थरथरां कांपूं लागली! राजा, त्या वेळीं पांडवांचें तें सर्व अवाढव्य सैन्य घाबरून गेलें आणि एकटा महावीर कर्ण मात्र धुम्र-रहित अग्नीप्रमाणें शत्रूंचें भस्म करीत शोभूं लागला! राजा, त्या समयी चेदि व पांचाल ह्यांचा कर्णानें विश्वंम आरंभिला; तेव्हां वण-व्यांत सांपडलेल्या हत्तीप्रमाणें ते चेदिपांचाल वीर चोहोंकडे बेहोष होऊन देहभान विस-रले आणि ते वाघांप्रमाणें मोठमोठ्यांनं गर्जूं लागले! राजा, त्या घोर मंग्रामांत अम्बे-रीम त्यांची भयाने फारच त्रेधा उडाली; आणि ते इतका आक्रोश करूं लागले कीं, जणू काय प्रलयकालीं सर्व प्राणी आर्तस्वर काढीत आहेत असा भाम झाला! राजा, कर्णानें जेव्हां त्यांचा संहार आरंभिला तेव्हां पशुपक्ष्यादिकांना मुद्धां फार भय वाटलें! त्या मृतपुत्रांनं जेव्हां मृजयांची घोर हत्या चालू केली, तेव्हां ते वारं-वार कृष्णार्जुनांना मोठमोठ्यांनं हाका मारूं लागले! जणू काय तेव्हां प्रेतराजाच्या नगरी-

तील तीं प्रेते भयभीत होत्मातीं प्रेतराजालाच आवाहन करीत आहेत अमा भाम झाला ! राजा, ह्याप्रमाणें पांडुमुंजयांच्या सेनेत घोर हाहाकार झालेला श्रवण करून व कर्ण हा त्यांत भार्गवास्त्रानें घोर अनर्थ करीत आहे, असें पाहून अर्जुन वामुदेवाला म्हणाला, 'हे महाबाहो कृष्णा, ह्या भार्गवास्त्राचा उग्र प्रताप अवलोकन केलास काय ? ह्या अस्त्राचा रणांत प्रतिकार अगदी अशक्य होय ! तमाच ह्या महारणांत हा कर्ण, किती खवळला आहे तो पहा. ह्यानें केवळ यमाप्रमाणें दारुण कर्म आरंभिलें आहे ! हा पहा हा एकमारुवा घोड्यांना इशारा करीत माइयाकडे टोकारून पहात आहे ! आतां मला कर्णापुढून पळूनही जाणें शक्य नाहीं ! युद्धांत मनुष्य जिवंत राहिला तर त्यास जय किंवा अपजय प्राप्त होईल; परंतु तो जर मेलाच, तर मग त्याचा नाशच झाला; मग त्याला जय मिळण्याची आशा तरी आहे का ?' राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें अर्जुनाचें भाषण श्रवण करून कृष्णानें त्या महाबुद्धिमान् धर्मजयाशीं समयोचित भाषण केलें. त्या समयीं कृष्ण म्हणाला, 'पार्था, कर्णानें युधिष्ठिराला अतिशय वायाळ केलें आहे. ह्यामाठीं प्रथम तूं त्याची भेट घेऊन त्याला आश्वासन दे आणि मग कर्णाला वधण्याच्या उद्योगास लाग.' राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें भाषण करून कृष्णानें युधिष्ठिराची भेट घेण्यामाठीं अर्जुनाचा रथ तिकडे चालविला; आणि मन्वंतरिं कर्ण हा अधिक दमून गेला म्हणजे त्यास अल्प आयामानें मारितां येईल असें त्यानें अंतर्दामीं योजिलें ! राजा. नंतर तत्काळ अर्जुन हा बाणविद्ध झालेल्या धर्मराजास पहाण्याच्या इच्छेनें रथांतून जात असतां त्यानें सर्व सैन्य नीट निरखून पाहिलें. पण त्यांत त्याला धर्मराज युधिष्ठिर कोठेही दिसला नाहीं !

अध्याय पांसष्टावा.

—:०:—

युधिष्ठिर व कृष्णार्जुन ह्यांची भेट.

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें दिव्य धनुष्य धारण करणाऱ्या धनंजयानें द्रोणपुत्र अश्वत्थाम्याचा पराजय करून मोठा दुर्घट प्रताप गाजविल्यावर शत्रूंनीं त्याच्यापुढें अगदीं हात टेकले, तेव्हां तो आपलें सैन्य अवलोकन करण्याकरितां तेथून निघून पांडवसैन्याच्या समीप येऊन पहातो तों त्यांतील योद्धे आप-आपल्या योद्ध्यांनिशीं कौरवसैन्यांशीं लढत आहेत असें त्याच्या दृष्टीपडलें. राजा, तेव्हां तो विजयशाली सन्यसाची अर्जुन आपल्या मन्निध प्राप्त झाला असें पाहून त्या शूरवीरांस मोठा आनंद झाला आणि नंतर त्या महात्म्या पृथापुत्रानें त्या स्थळीं युद्धाला तोंड देऊन उभ्या असलेल्या त्या अनेक रथ्यांच्या पूर्व पराक्रमाची प्रशंसा केली. मग त्यानें तेथें 'युधिष्ठिर कोठें आहे ?' म्हणून चौकशी केली; पण त्यास सुगावा लागला नाहीं. तेव्हां तो मग मोठ्या त्वरेनें भीमाजवळ गेला आणि त्यानें धर्मराज युधिष्ठिर कोठें आहे म्हणून त्यास विचारिलें. तेव्हां भीम म्हणाला, 'अर्जुना, कर्णाच्या बाणप्रहारांनीं अत्यंत विव्हल होऊन धर्मराज येथून युद्धविमुख होऊन निघून गेला; आतां तो बहुधा कचित्तच जिवंत असेल !' राजा धृतराष्ट्रा. तेव्हां अर्जुन भीमाला म्हणाला, 'भीमा, तूं राजाची खुशाली काढण्यासाठीं तेथून त्वरित जा. स्वचित्त तो कर्णाच्या बाणप्रहारांनीं अतिशयित विद्ध झाल्यामुळें विसावा घेण्यासाठीं शिविरांत गेला असेल. भीमा, धर्मराजाच्या कुशलतेविषयीं तूं अगदीं शंका घेऊं नको. पहा, त्या महाशाक्तिमान् वीरावर द्रोणाचार्यानें अगदीं जलाल शरांचा भयंकर वर्षाव केला असतांही द्रोणाचार्यांच्या वधापर्यंत तो जयाची

आशा बाळगून निवंत राहिला! ह्यास्तव तो महापराक्रमी पांडवाप्रणी युधिष्ठिर आज कर्णाच्या बाणांनी युद्धभूमीवर प्राणसंकटांत पडला असेल इतकेंच; ह्यासाठीं तूं त्याची कुशलवार्ता काढण्यासाठीं त्वरित शिबिरांत जा. मी येथें रहातो व शत्रुसमुदायांना अडवून धरितों.' राजा धृतराष्ट्रा, तेव्हां भीमसेन म्हणाला, 'हे महाबलवंता, राजाचा समाचार काढण्यास तूं स्वतःच जा. मी जर आतां येथून गेलों, तर शत्रूकडील महान् महान् योद्धे 'भीम भित्रा आहे' म्हणून डांगोरा पिटतील!' राजा धृतराष्ट्रा, तेव्हां अर्जुन भीमसेनास म्हणाला, 'हे भीमसेना, माझ्या अग्रभागीं संशप्तक लढण्यास सिद्ध असल्यामुळें आज त्यांना वधिल्याशिवाय शत्रुसैन्याच्या पुढून मला निघून जातां येत नाही.' राजा, त्यावर भीमसेन अर्जुनाला म्हणाला, 'अर्जुना, आज समरभूमीवर मी सर्व संशप्तकांशी एकटा युद्ध करितों; तूं आतां खुशाल शिबिरांत जाऊन धर्मराजाचें क्षेमवृत्त काढ. राजा धृतराष्ट्रा, सत्यपराक्रमी भीमसेनाचें तें भाषण श्रवण करून महात्मा धैर्यशाली कपिध्वज अर्जुन हा युधिष्ठिराची भेट घेण्यास निघाला व त्यानें वृष्णि-कुलावतंस अनंतवीर्य कृष्णाला म्हटलें, 'कृष्णा, हा सैन्यसागर सोडून देऊन आपला रथ शिबिराकडे चालव. केशवा, अजातशत्रु युधिष्ठिराला भेटण्याची मला फारच उत्कंठा झाली आहे.'

संजय म्हणाला:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर सर्व दाशाहर्षीमध्ये अग्रगण्य असा तो कृष्ण अश्वाना इषारा करण्याच्या वेळीं भीमाला म्हणाला:—'भीमा, तूं जें कृत्य करण्याचें पतकरिलें आहेस, तें तुला मुळींच अशक्य नाही. मी आतां जातो, तूं आज पार्थाच्या शत्रूंना (संशप्तकसमुदायांना) ठार मार.' राजा धृतराष्ट्रा, मग गरुडाप्रमाणें धावणाऱ्या अशा त्या अश्वाना मोठ्या वेगानें चालवून, जेथें युधिष्ठिर राजा होता

तेथें कृष्णानें अर्जुनाचा रथ नेला. नंतर ते उभयतां पुरषोत्तम कृष्णार्जुन हे रथांतून खाली उतरले व त्यांनीं एकटा युधिष्ठिर जेथें शक्येवर पडून राहिला होता तेथें जाऊन त्यास अभि-वंदन केलें. राजा, त्या क्षमामूर्ति नरशार्दूल वीरश्रेष्ठ धर्मराजाच्या सन्निध जेव्हां ते कृष्णार्जुन गेले, तेव्हां जणू काय अश्विनीकुमार मोठ्या आनंदानें इंद्राच्या भेटीसच प्राप्त झाले आहेत असें वाटलें! नंतर, सूर्यानें जसें अश्विनीकुमारांचें अभिनंदन केलें किंवा बृहस्पतीनें जसें महासुर जंभाच्या वधानंतर शक्रविष्णूंचें अभिनंदन केलें, तसें त्या धर्मराजानें कृष्णार्जुनांचें अभिनंदन केलें; आणि अर्जुनानें कर्ण हा खचित रणांगणांत वधिला असें मानून प्रेमानें व आनंदानें सद्ब्रतित होऊन धर्मराजानें कृष्णार्जुनांशीं मोठ्या गौरवाचें व मनोरम असें भाषण केलें.

अध्याय सहासष्टावा.

—:०:—

युधिष्ठिराचें भाषण.

युधिष्ठिर म्हणाला:—कृष्णार्जुनहो, मी तुमचें स्वागत करितों. तुमच्या भेटीनें मला फारच आनंद झाला आहे. तुम्हां दोघांस कांहीं एक इजा न होतां तुमच्या हातून कर्णाचा वध झाला हें फार चांगलें झालें! अहो, कर्णाचें वर्णन काय करावें! सर्व शस्त्रांवांत विशारद असा तो कर्ण युद्धांत अगदीं सर्पाप्रमाणें शुब्ध होत असे. सर्व कौरवांचा तोच पुढारी असून त्यांचें सर्व सुख व बल तोच होता. धनुर्धर वृषसेन व सुषेण हे त्याच्या संरक्षणार्थ सतत तत्पर असत. प्रत्यक्ष भारीवाणें त्याच्यावर अनुग्रह करून अन्न दिल्यामुळें त्यास विलक्षण मामर्ष्य प्राप्त झालें होतें; आणि त्यामुळेच तो सर्व लोकांत अजिंक्य व श्रेष्ठ असा बनला होता. तो लोकमान्य महारथ धार्तराष्ट्राचा

शत्रुसैन्यांचा संहारक अमून अहितचिंतकांच्या सहन होत नाही ! अर्जुना, ज्याच्या भयाने शत्रुसैन्यांचा संहारक अमून अहितचिंतकांच्या तेरा वर्षेपर्यंत मला रात्रीची झोंप आली समुद्रायांचा विध्वंसक होता. तो नित्य दुर्यो- नाही व दिवसासही कशापामून सुव वाटले धनाच्या कल्याणाकरिता व आमच्या दुःखा- नाही, त्याच्या द्वेषाने मी अगदीं नखशिखांत कारितां तत्पर असे. घोर गणांत प्रत्यक्ष इंद्र- पेटले आणि त्याच्या हातून मी आतां मर- प्रमुख देवांचीही त्याच्या वाटेम जाण्याची णार अशी जेव्हां वेळ आली, तेव्हां वाधीणस ज्ञानी नव्हती. त्याचा प्रताप अगदीं अग्नी- पक्ष्याप्रमाणे मी पलायन करून हा येथे येऊन मार्गवा व बल अगदीं वायुमार्गवे होते. पाताल- पडले ! माझा सर्व वेळ त्याच्याविषयीं चिंतन येकाप्रमाणे तो गंधीर (खोल), मुहूर्तांचा तो करण्यांत गेला. मी युद्धांत कर्णाचा नाश आनंदवर्धक आणि माझ्या मित्रांचा तो अंतक कसा करू शकेन, हाच मला एकसारखा घोर होता; ह्यांमनव घोर युद्धांत त्याम टार मारून लागला होता. जागेपणीं व झोंपेंत मला जिकडे मुद्देवाने तुम्ही सुवस्वरूपणें मजप्रत आलां हें तिकडे कर्णच सदा दिमत होता. मला हें सर्व पाहून, जणू काय माझ्यापुढें दैत्याम मारून जगत् कर्णरूपच भासत होतें. अर्जुना, कर्णाच्या दोन देवच प्राप्त झाले आहेत असें मला भासतें. भीर्ताने मी जेथे जेथे गेलों, तेथे तेथे कृष्णार्जुनहो. आज त्या प्रतापी वीराने माझ्याशीं मला कर्णच माझ्यापुढें उभा आहे असें दिसले. फार भयंकर युद्ध केले. युद्धांत त्याचें तें घोर आणि शेवटीं त्या महाशूर कर्णानेच मला कम पाहून. जणू काय सर्व प्राण्यांचा संहार- हय व रथ यांसह जिकले व ह्या ठिकाणीं कतां प्रत्यक्ष यमच माझ्याशीं झगडत आहे जिवंत येऊ दिले ! परंतु आज रणास शोभ- असें मला वाटले. त्यानें माझा ध्वज छेदिला विणाऱ्या कर्णानें जर मला ह्याप्रमाणें अगदीं आणि पार्ष्णि (पाठ राखणारा) व मारथि जखमी करून टाकिले आहे, तर मग ह्या ह्यांम वधिले; आणि युयुधान, धृष्टद्युम्न, नकुल- माझ्या जीविताचा तो उपयोग काय ? आणि महदेव, शिवंडी, द्रौपदीचे पुत्र व पांचाल ह्या राज्य मिळवून तरी मला काय करावयाचें आहे ? सर्वांसमक्ष त्यानें माझे घोडे मारिले. आज अर्जुना, भीष्म, द्रोण किंवा कृप ह्यांच्याशींही वीर्यशाली कर्णानें प्रथम युयुधानादिक पांडव- लढत असतां जें दुःख मला प्राप्त झालें नाही, वीरांना व दुमऱ्या पुष्कळ सैन्यसमूहांना तें दुःख ह्या महारथ सूतपुत्राशीं लढत असतां आज माझ्या वांट्यास यांचे काय ? अर्जुना, आरंभिला; पण मी जरी त्याच्याशीं लढण्याची आज मी तुला तुझे क्षेम विचारित आहे ह्याचें अगदीं पराकाष्ठा केली. तरी त्यानें मला अखे- तरी कारण हेंच. अमो; आतां तूं कर्णाला कशा रीम जिकिले. नंतर त्यानें माझा पाठलाग केला प्रकारें वधिलेस तें सर्व वृत्त सविस्तर सांग. व माझ्या मरक्षकांचा पराभव करून तो मला अर्जुना, इंद्राप्रमाणें बलवान, यमाप्रमाणें परा- पुष्कळ दुरुत्तरे बोलला व निःसंशयपणें त्यानें क्रमी व परशुरामाप्रमाणें अस्त्रविद्याप्रवीण अशा माझा अवमान केला. आज मी जो जिवंत राहिलों, त्या कर्णाचा तूं कसा बरें नाश केलास ? अरे, त्याचें श्रेय त्या पराक्रमी भीमसेनाला आहे. तो सर्व प्रकारच्या युद्धांत निष्णात व जगत्प्र- अहो. फार बोलण्यांत हांशील तें कोणतें ? रूयात महारथ धनुर्धरांमध्ये श्रेष्ठ व जगांत एक आज कर्णानें माझ्याशीं जें वर्तन केले तें मला अद्वितीय पुरुष होता; धृतराष्ट्र व त्याचे पुत्र

हे जे त्यास इतका मान देत आले ह्याचें कारण त्याच्या हातून तुझा वध घडेल अशी त्यांची पूर्ण श्रद्धा होती हेंच होय; आणि असें असतां तूं त्याचा वध केलास तो कसा बरें ? अर्जुना, दुर्योधनाचें तर मत असें होतें कीं, सर्व कौरव-वीरांत जर कोणी तुला मारण्यास समर्थ असला तर तो एकटा कर्णच; तेव्हां त्याला तूं ज्या युक्तीनें मारिलेस ती युक्ति कोणती ती सांग पाहूं. अर्जुना, अशा त्या योद्ध्याचें त्याच्या सह-दांच्या डोळ्यांदेखत तूं मस्तक उडविलेस म्हणजे खरोखरी सिंहानें रुरूचें मस्तक उडवावें तसेंच हें तूं कर्म केलेस ह्यांत संदेह नाही. अर्जुना, तुला शोधण्याकरितां त्या सूनपुत्रांनं समरभूमी-वर दशदिशा धुंडाळिल्या, व रणांगणांत जो तुझा पत्ता लावून देईल त्याला हत्तीप्रमाणें बळकट असे सहा बैल देण्यास जो तयार झाला, तो दुष्ट कर्ण प्रस्तुतकालीं तुझ्या कंकपत्र बाणांनीं विद्ध होत्सताता रणभूमीवर मरून पडला आहे काय ? अर्जुना, तूं रणांगणांत कर्णास मारिलें ही गोष्ट मला फारच आवडली; कारण तो चट्टून जाऊन गर्वांनं व शौर्याच्या अहंपणांनं एकसारखा तुझा शोध करीत फिरत होता; आणि तुझा सुगावा लागवा म्हणून दुम-व्यांस सुवर्णाचा उत्तम रथ, हत्ती, घोडे व बैल देण्यास तयार झाला होता; आणि शिवाय तो नीच तुझी नेहमीं स्पर्धा करीत असे. अर्जुना, जो नेहमीं शौर्याच्या घमेडीनें कौरवसभेंत वाटेल तशीं बदाई मारीत असे आणि ज्यावर दुर्योधनाचें अतिशय प्रेम होतें, त्या पातकी कर्णाला तूं आज रणांत मारिलेसना ? अर्जुना, तुझ्या धनुष्यापासून सुटलेल्या आरक्त बाणांच्या प्रहारांनीं सर्व गात्रं छिन्नविच्छिन्न होऊन तो पापी कर्ण आज धारानीर्थी पतन पावून त्या दुर्योधनाचे जणू काय दोन्ही बाहु तुट-

लेना ? अर्जुना, राजसभेंत दुर्योधनाला प्रसन्न करून घेण्याकरितां कर्ण हा मोठ्या घमेडीनें .. अर्जुनाला मी मारीन ! ” म्हणून जे मुखे-पणाचे उद्गार काढीत असे ते अखेरीस खोटे ठरलेना ? अरे, जोपर्यंत अर्जुन जिवंत आहे, तोपर्यंत मी मुलींच पाय धुणार नाही म्हणून ज्यानें नित्य नियम पाळला होता, तो कर्ण आज मृत झालाना ? अरे, ज्या दुष्ट दुरात्म्यानें कौरवसभेंत मोठमोठे वीर अधिष्ठित असतां द्रौपदीला म्हटलें कीं, “ द्रौपदि, ह्या दुबळ्या, नीच व हीनवीर्य पांडवांना तूं कां बरे सोडीत नाहीस ? ” आणि तशीच ज्यानें प्रतिज्ञा केली कीं, “ कृष्णार्जुनांचा वध जर मी केला नाही तर मी युद्धांतून परत येणार नाही ! ” तो पापबुद्धि कर्ण तुझ्या बाणांनीं भग्न होऊन भूतलावर पडलाना ? अर्जुना, संजयकौरवांचा जो हा घोर संग्राम झाला आणि ज्यामध्ये मला शेवटीं ही विपन्न अवस्था भोगावी लागली त्याची तुला माहिती लागल्यामुळें तर तूं आज कर्णाला मारिलेस नाहीना ? अर्जुना, त्या महामूर्खावर गांडीव धनुष्याच्या योगें जलाल बाणांची वृष्टि करून त्याचें तें कान्तिमान् मस्तक युद्धामध्ये तोडून तें तूं धडापासून निरालें केलेस काय ? अर्जुना, मला तर असें वाटतें कीं, माझ्यावर कर्णांनं बाणांचा भडिमार केला तेव्हां मीं तुझे स्मरण करून ‘ अर्जुना, तूं ह्या कर्णाला मार ’ म्हणून जें ध्यान केले, तें माझे ध्यानच तूं कर्णाच्या वधानें सफल करून दाखविलेस ! अर्जुना, ज्याच्या आश्रयामुळें चट्टून जाऊन दुर्योधन आमचा धिक्कार करीत असे, त्या कर्णाला, आज ठार करून तूं त्या दुर्योधनाला लंगडा पाडिलासना ? अर्जुना, ज्यानें पूर्वीं सर्व कौरवां-ममक्ष सभेमध्ये आम्हांला पंड असें म्हटलें, त्या दुष्ट व खुनशी कर्णाला तूं आज युद्धांत गांठून वधिलेस काय ? पूर्वीं जो नीच सुत-

पुत्र सौचलाने जिंकलेल्या द्रौपदीला देवील फरफरां ओदीत आण म्हणून बोलावयास चुकला नाही, त्याला तू आज ठार केलेंसना ? अरे, पितामह भीष्माने अर्धरथ म्हटल्याबद्दल ज्या मूर्ख धनुर्धराला राग आला व ज्यानें सर्व भूमंडळावर श्रेष्ठतम अशा त्या भीष्माची हेलना केली, त्या कर्णाला तू वधिलेंसना ? बारे, माझ्या हृदयांत संतापापासून उत्पन्न झालेला व मानखंडनारूप वायूनें अधिक चेतविलेला प्रखर अग्नि भडकलेला आहे, तर “ आज मी युद्धांत कर्णाला मारिलें ” असें मजपाशीं बोल व तो अग्नि विझव. अर्जुना, कर्णवधाची वार्ता मला मोठी दुर्लभ वाटते; ह्यासाठीं तू कर्णाला कशा प्रकारे मारिलेंस ते सांग. हे प्रवीरा, वृत्रामुराचें इंद्राकडून वधवृत्त कळण्याकरितां भगवान् विष्णु हा जशी चिंता करीत होता, तशीच चिंता मी कर्णवधाचें वृत्त तुजपासून कळण्याकरितां नित्य करीत आहे !

अध्याय सदुसष्टावा.

—:०:—

अर्जुनाचें भाषण.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्र, ह्या प्रमाणें धर्मशील, विजयशाली व धैर्यवान् युधिष्ठिर राजानें कर्णाविषयीं जे कांहीं संतापाचे उद्गार काढिले, ते श्रवण करून त्याला महात्मा अनंतवीर्य अतिरथ अर्जुन असें बोलला.

अर्जुन म्हणाला:—हे धर्मराजा, मी आज संशप्तकांशी युद्ध करीत असतां कौरवांकडील प्रमुख वीर अश्वत्थामा हा सर्पतुल्य भयंकर शरांचा भडिमार करीत एकाएकीं माझ्या अग्रभागीं प्राप्त झाला आणि त्यानें मेघघर्जेनें प्रमाणें षणषण्णट करणाऱ्या माझ्या रथाभोवतीं आपल्या सैन्याचा वेढा दिला. तेव्हां मी पांचशें कौरव-

वीरांना ठार मारिलें व मग खुद्द अश्वत्थाम्यावर चाल केली. राजा, त्या वेळीं मला पाहातांच, द्विपेंद्र ज्याप्रमाणें सिंहावर उडी घालितो, त्याप्रमाणें त्यानें मोठ्या निकरानें मजवर उडी घातली; आणि मी जो कौरवसैन्याचा संहार चालविला होता, तो बंद पाडण्याचा यत्न केला. तेव्हां कौरवांकडील त्या प्रबळ व अढळ अशा द्रोणपुत्र अश्वत्थाम्यानें सहाणेवर धार देऊन विषाप्रमाणें किंवा अग्नीप्रमाणें जलाल केलेले बाण माझ्यावर व जनार्दनावर मारून आम्हांस अगदीं आर्त करून सोडिलें. राजा तो योद्धा माझ्याशीं झुंजत असतां त्याच्याबरोबर आठ-आठ बैलांच्या आठ गाड्या बाणांनीं भरलेल्या होत्या ! तितके सर्व बाण त्यानें माझ्यावर सोडिले, पण मी उलट बाणवृष्टि करून, वारा जसा मेघसमुदायाचा विध्वंस उडवितो, तसा त्या सर्वांचा विध्वंस उडविला ! धर्मराजा, नंतर अश्वत्थाम्यानें आणखी अनेक बाणांचे समूह मोठ्या त्वेषानें कर्णापर्यंत प्रत्यंचा ओढून मजवर सोडिले आणि आपल्या अंगीं जितकें अस्त्रनेपुण्य व बळ होते तितक्या सर्वांचा मोठ्या निकरानें उपयोग करून त्यानें पावसाळ्यांतील सजल मेघांप्रमाणें मजवर बाणांचा पाऊस पाडिला ! राजा, त्या समयीं तो भात्यांतून बाण केव्हां काढी, धनुष्याला ते केव्हां जोडी, शत्रूवर सोडी ते उजव्या हातानें की डाव्या हातानें, कौरू कांहींच समजत नसे; आणि तो समरांगणांत एकसारखा बाणांचा भडिमार करीतेव्हां त्याचें तें ताणलें धनुष्य मंडलाकार गरगर फिरत आहे, इतकें मात्र दिसे ! राजा, त्या वेळीं अश्वत्थाम्यानें माझ्यावर व वासुदेवावर पांच पांच निशित बाण टाकून आम्हां दोघांना विद्ध केलें ? परंतु मी लागलेंच एका निमिषांत तीस वज्रतुल्य तीक्ष्ण बाण त्याजवर सोडिले आणि ते

त्याच्या देहांत घुसून तो क्षणांत साळपक्ष्यासारखा दिसूं लागला ! राजा, ह्या प्रकारें मीं अश्रुत्याम्यास शरविद्ध केलें असतां त्याच्या देहांतून रक्ताचे पाट वाहूं लागले आणि मग मीं त्याप्रमाणेंच बाकीच्या योद्ध्यांवर बाणांचा भडिमार केल्या- नंतर त्यांचीही वाट तीच होऊन ते देखील रक्तांत अगदीं न्हाले, तेव्हां नाइलाज होऊन अश्रु- त्यामा कर्णाच्या रथसेनेंत शिरला. राजा, अशा प्रकारें अश्रुत्याम्याची शक्ति कुंठीत होऊन तो कर्णाश्रयास गेला, तेव्हां कर्णानें त्याच्या त्या पराजय पावलेल्या सैन्याची स्थिति अवलोकन केली असतां त्यांतले वीर अगदीं भयभीत झाले असून हत्ती व घोडे अगदीं पळत सुटले आहेत असें त्याच्या दृष्टीस पडलें. राजा, नंतर त्या निग्रही कर्णानें पन्नास श्रेष्ठ रथांसह एकदम मजवर चाल केली, परंतु मी त्या सर्व रथांचा तत्काळ विध्वंस उडवून आणखी पुढे युद्ध न करितां तुला भेटण्यासाठीं जलदीनें येथें निघून आलों. धर्मराजा, तेव्हां पांडवसेनेची फारच भयप्रद स्थिति झाली. ज्याप्रमाणें सिंहाला पाहून गाई अगदीं गतप्राण होतात, त्याप्रमाणें सर्व पांचाल कर्णाला पाहून अगदीं गतप्राण झाले. प्रभद्रक तर अगदीं कर्णाच्या कचाट्यांतच सांपडले. जणू काय ते मृत्यूच्या विवृत तोंडांतच उभे राहिले ! कर्णानें तत्काळ त्यांच्या सतराशें रथांचा नाश करून त्यांस यम- सदनीं पाठविलें आणि एकसारखा घोर संहार आरंभिला. राजा, हा त्याचा क्रम आढीं तेथें जाईपर्यंत चालू होता. आह्मांला त्यानें पाहिल्या- नंतर मात्र मग ती स्थिति बदलली, परंतु तेव्हां आढीं असें ऐकिलें कीं, अश्रुत्याम्यानें तुला गांठून घायाळ केलें व मग कर्णानेंही तुझ्यावर क्रूर दृष्टि फेंकिली, ह्यामुळें तूं रणांतून निवृत्त झालास. असो; धर्मराजा, दुष्ट कर्णा- पासून पराङ्मुख होऊन येथें आल्यासारखा

तुला विसावा तरी मिळाला काय ! राजा, नंतर कर्णानें अपूर्व भार्गवास्त्र सोडून जो कांहीं अनर्थ केला तो मग माझ्या दृष्टीस पडला. प्रस्तुत संज- यांमध्ये दुसरा एकही योद्धा असा नाही कीं, जो आज त्या महारथ कर्णापुढें टिकाव घरील. ह्यासाठीं त्याच्या नाशाकरितां मलाच उद्युक्त झालें पाहिजे. आतां शैनेय सात्यकि व बृष्टयुञ्ज ह्यांनीं माझ्या रथाचीं चक्रे राखावीं, शूर युधा- मन्यु व उत्तमौजा ह्यांनीं माझ्या पृष्ठभागाचें संरक्षण करावें, आणि मी बलाढ्य रथांत अधि- रूढ होऊन शत्रुसैन्यांत प्रवेश करावा, हेंच इष्ट होय. इंद्रानें जसें वृत्राला गांठिले तसें आज मी रणांगणांत कर्णाला गांठीन व त्या- च्याशीं लढेन; पण तो आज माझ्या दृष्टीस कसा पडतो हीच काळजी आहे. राजा, चल, आणि मी विजयप्राप्तीकरितां कर्णाशीं किती निकराचें युद्ध करितों तें पहा. राजा, प्रस्तुत रणांगणांत प्रभद्रक कर्णाशीं लढत आहेत, पण ते जणू काय मदोन्मत्त बैलांच्या शिंगांच्या कचाट्यांतच सांपडले आहेत ! राजा, रणभूमी- वर मध्या आठ हजार राजपुत्र स्वर्गलोकाच्या प्राप्तीकरितां युद्ध करीत आहेत. ह्यासाठीं आज जर मीं घोर युद्ध करून मोठ्या आवेशानें कर्णाला त्याच्या बांधवांसुद्धां वधिलें नाहीं, तर प्रतिज्ञाभंगाचें घोर पातक मला लागेल ! म्हणून, धर्मराजा, मी आतां तुझा निरोप घेतों; तूं मला विजयप्राप्त्यर्थ आशीर्वाद दे. हे पहा कौरव भीमसेनाला ग्रासीत आहेत ! मी आतां त्वरित रणांगणांत जाऊन कौरवांच्या सर्व सैन्याला व कर्णाला ठार मारितों.

अध्याय अडसष्टावो.

—:—

युधिष्ठिराचा क्रोध !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्र, ह्याप्रमाणें

महानीर्थशाली कर्ण अद्याप जिवंत अमून प्रताप गाजवीत आहे, असें जेव्हां युधिष्ठिरास कळले, तेव्हां त्या अमितबल धर्मराजाला अर्जुनाविषयी फारच क्रोध आला व कर्णाच्या शरांची संतप्त झालेला तो ज्येष्ठ पांडुपुत्र अर्जुनाला म्हणाला की, “अर्जुना, तुझे संन्यसऱ्या चोहोंकडे पळत अमून त्याची अगदीं गर्हणीय स्थिति झाली आहे, आणि अशा स्थितीत तूं भीमाला सोडून देऊन कर्णाचा वध न करितां आपला जीव राखण्याकरितां येथें आलास; तेव्हां मला असे वाटतें कीं, पृथेच्या उदरीं तूं जन्मास न येतास तर फार चांगलें झाले असतें ! अर्जुना, तूं द्वैतवनांत काय बोललास तें तुला आठवतेंना ? ‘खरोवरी मी एकटा रथावर आरूढ होऊन कर्णाला ठार मारीन ;’ असें तूं तेव्हां म्हणालास आणि आज कर्णाच्या भीतीनें गांगरून जाऊन भीमसेनाला रणांत टाकून येथें पळून आलास ह्याला काय म्हणायें ? जर त्या वेळीं ‘मी कर्णाशीं युद्ध करूं शकणार नाही’ असें मला तूं द्वैतवनांत साफ सांगितलें अमत्तेंस. तर आर्षीं सर्व प्रसंगास अनुरूप अशी सगळी व्यवस्था करून मगच ह्या कृत्यास तयार झालें असतों ! अर्जुना. ह्याप्रमाणें तूं त्या समयीं विहित गोष्ट करण्याची सोडून दिलीस आणि उलट माझ्याशीं कर्णवधाची प्रतिज्ञा केलीस व आज ती प्रतिज्ञा पूर्ण न करितां तसाच मजकडे निघून आलास; तेव्हां आम्हांला भरशत्रूच्या मध्यें आणून खडकावर आपटून आमचे तुकडे तुकडे उडवून टाकिलेस ते कां बरें ? अर्जुना. तुझ्यापासून आमचें बहुत कल्याण होईल व आमचे मनोरथ मिळीस जातील, ह्या आशेनें आर्षीं तुम्हें पुष्कळ आशीर्वाद दिले; पण ते सर्व विफल होऊन, फलार्थीं जनांना ज्याप्रमाणें फलांनीं भरलेला वृक्ष न मिळतां केवळ पुष्पांनीं भरलेला वृक्ष मिळावा. त्याप्रमाणें आमची अवस्था

झाली ! अर्जुना, ज्याप्रमाणें आमिषाच्या रूपानें गळ हातीं यावा किंवा अन्नाच्या रूपानें विषाची प्राप्ति व्हावी, त्याप्रमाणें राजाच्या रूपानें आम्हांस हा विनाश मात्र भोगणें आला ! अर्जुना, आज तेरा वर्षेपर्यंत सतत आशेनें आह्मी तुझ्यावर अवलंबून राहिलों आणि शेतांत बीं पेरल्यावर देव वेळच्या वेळीं पाऊस पाडील असा भरंवसा ठेवून जसें स्वस्थ बसावयाचें तसे आम्ही तूं पराक्रम करशील असा भरंवसा ठेवून स्वस्थ बसलों; पण अखेरीस तूं आम्हांस सर्वास नरकांत लोटलेंस ! मूर्खा अर्जुना, तूं जन्मास येऊन सात दिवस झाल्यावर आकाशावाणीनें कुंतीला सांगितलें कीं, “हे कुंति, हा तुझा पुत्र इंद्राप्रमाणें प्रताप गाजवील व सर्व शूर शत्रूंना वधील ! ह्याच्या ठिकाणीं दिव्य तेज असल्यामुळे हा खांडववनांत देवांच्या समुदायांना व इतर सर्व प्राण्यांना जिंकिल. हा मद्र, कलिग व केकय ह्या देशांना हस्तगत करील आणि सर्व राजांमध्ये कौरवांना वधील. ह्याच्यापेक्षां श्रेष्ठ असा धनुर्धर पुढें व्हावयाचा नाही. ह्याला कोणताही प्राणी केव्हांही जिंकणार नाही. हा मोठा इंद्रियनिग्रही होऊन सर्व विद्यांत नैपुण्य मिळवील आणि केवळ आपल्या इच्छेनें सर्व भूतांना स्वाधीन करून घेईल. कुंति, हा तुझा महात्मा पुत्र कांतीनें चंद्राप्रमाणें, वेगानें वायू-प्रमाणें, स्थैर्यानें मेरूप्रमाणें, शांतीनें पृथ्वी-प्रमाणें, तेजानें सूर्याप्रमाणें, लक्ष्मीनें कुबेरा-प्रमाणें, शौर्यानें इंद्राप्रमाणें व शक्तीनें विष्णू-प्रमाणें होऊन अदिती पुत्र जो विष्णु त्याच्या-प्रमाणें शत्रूंचा नाश करील. हा तुझा वीर्य-शाली पुत्र आपल्या आससुहृदांच्या जयाकरितां व शत्रूंच्या नाशाकरितां प्रख्यात होऊन ह्याच्यापासून पुढें एक शूर वराणें स्थापन होईल !” अर्जुना, ह्याप्रमाणें शतशृंग पर्वताच्या माथ्यावर अंतरिक्षांत महान् महान् तपस्यांना

ऐकू जाईल अशा प्रकारें आकाशवाणी झाली आणि त्याप्रमाणें कांहीं घडून तर आलें नाहीं; तेव्हां देवही असत्य भाषण करितात असें निःसंशय ठरलें; नाहीं बरें ? अर्जुना, त्या-प्रमाणेंच दुसरे मोठमोठे ऋषिवर्य नेहमीं तुझा असाच गौरव करीत आले; आणि ह्यामुळें, दुर्योधनाचा उत्कर्ष होईल व कर्णाला तूं इतका घाबरून जाशील असें मला केव्हांही वाटलें नाहीं. अरे, दुर्योधन पूर्वांच म्हणून गेला होता कीं, युद्धांत महाबलिष्ठ कर्णाच्या समोर उभें राहाण्याची अर्जुनाची छाती होणार नाहीं; आणि ते दुर्योधनाचे शब्द मी आपल्या मूर्खपणामुळें खोटे मानिले व त्यामुळेंच मी आपल्याला ह्या भयंकर दुःखांत घालून घेऊन ह्या शत्रूंच्या समुदायामध्यें ही अगाध नरकाची जोड मिळविली ! अर्जुना, मी कर्णाशीं मुळींच युद्ध करणार नाहीं म्हणून तूं मला तेव्हांच सांगितलें असतें तर बरें झाले असतें. कारण मग संजय, केकय व इतर आप्तमुहूद ह्यांना मी युद्धाकरितां व्यर्थ बोलाविलें नसतें. सध्याच्या ह्या स्थितींत कर्णाशीं, दुर्योधनाशीं अथवा जे दुसरे योद्धे आम्हांशीं लढण्यास आले आहेत त्यांच्याशीं युद्ध करितांना आज आतां मला कांहींच करितां यावयाचें नाहीं. कृष्णा, आतां मी सर्वतोपरी मृतपुत्र कर्णाच्या कव्हांत सांपडलों, तेव्हां माझे जिणें आज व्यर्थ होय ! अरे, कौरव, माझे इष्टमित्र किंवा जे दुसरे वीर येथें युद्धार्थ सिद्ध आहेत, त्यांपुढें ही माझी केवढी दुःमह विटंबना ! अर्जुना, आज जर तुझा तो पुत्र महारथ अभिमन्यु जिवंत अमता, तर त्यानें खचित शत्रूंचा निःपात उडविला अमता आणि मग माझा आज युद्धांत खचित पराभव झाला नसता ! किंवा घटोत्कच जर समरांत मुरक्षित राहिला अमता. तर मला जयाची आशा होनी !

मला तर असें वाटतें कीं, मीं जीं दुष्ट पातकें पूर्वीं केलीं त्यांच्या प्राचल्यामुळेंच तूं इतका तृणप्राय निर्वीर्य झालास व त्या दुरात्म्या कर्णांनं माझी अशी मानखंडना केली आणि ज्यास कोणी बांधव नाहींत अशा एखाद्या दीन मनुष्याप्रमाणें मला शोचनीय अवस्था प्राप्त झाली ! अरे, जो एखाद्याला आपत्तीत सोडून देईल, त्याला काय बांधव किंवा प्रिय सुहृद असें म्हणावें ? आपत्ति प्राप्त झाली असतां ती दूर करण्यास झटणें हेंच आपत्तांचें व सुहृदांचें कर्तव्य होय, असें फार प्राचीन काळापासून ज्ञाने पुरुष सांगत आले आहेत व त्यांनीं त्याप्रमाणें नित्य वर्तनही केले आहे. अर्जुना, तूं कर्णाला भ्यालास हें खरोखरी मोठे आश्चर्य होय; कारण तुझा रथ प्रत्यक्ष त्वष्ट्यांचें निर्माण केल्यामुळें त्याच्या ठिकाणीं दिव्य सामर्थ्य वाम करीत आहे; त्याचा आंस घांसत अमतां मुळींच वाजत नाहीं; आणि शिवाय त्याच्या ध्वजावर मारुति अधिष्ठित आहे; त्याचप्रमाणें तुझ्या हातांतली तरवार सुवर्णाच्या पट्यांनीं अलंकृत असून तुझें हें गांडीव धनुष्य सहा हात लांबीचें आहे; आणि शिवाय तुझ्या रथावर केशव हा तुझें सारथ्य करीत आहे; तेव्हां तूं कर्णाला भिऊन पळून आलास. हें खचित मोठें नवल नव्हे काय ? अर्जुना, तूं आपलें गांडीव धनुष्य जर केशवाला दिलें असतेंम आणि त्याचें सारथ्य जर तूं केलें असतेंम, तर वज्रधर इंद्रानें वृत्ताला जमें वधिलें तमें केशवानें त्या उग्र कर्णाला रणांत केव्हांच वधिलें असतें ! अर्जुना, अर्जुनही जर तुला त्या भयंकर कर्णाला युद्धांत जर्जर करण्याची शक्ति नसेल, तर जो कोणी भुपाळ अस्त्रविद्येंत तुझ्यांपक्षां अधिक प्रवीण असेल, त्याला तूं आपल्या हातांतलें हें गांडीव धनुष्य आज देऊन टाक. म्हणजे तो तरी कर्णाला

रणांत मारून टाकील; व आधीच स्त्रीपुत्रांनी
विहीन झालेल्या आणि राज्य व मुख्खांस पार
अंतरलेल्या आम्हांला—पातकी पुरुष हेच ज्याचे
अधिकारी अशा—त्या अगाध नरकांतून सोड-
वील ! हे दुरात्म्या, तूं संग्रामांतून पळून
आलास ह्याच्यापेक्षां तूं कुंतीच्या उदरी जन्मा-
सच आला नसताम किंवा पांचवे महिन्यांत
गर्भपात होऊन नष्ट झाला असताम तर फार
चांगलें झालें असें ! अर्जुना, तुझ्या गांडीव
धनुष्याला, बाहुवीर्याला, अमंस्क्यात बाणमु-
दाण्यांना, अजन्मित मारुतीला आणि अशिदत्त
रथाला धिक्कार असो.

वेळीं कोणीही मला दिसत नाही; तेव्हां हें
खड्ग बाहेर काढण्याचें प्रयोजन कोणतें ?
तुझ्या चित्ताला काहीं भ्रंश तर झाला नाहींना ?
तूं मनांत तरी काय आणिलें आहेस ? ” या-
प्रमाणें कृष्णानें विचारलें, तेव्हां युधिष्ठिराकडे
पहात व क्रोधानें सापासारखे सुसकारे टाकीत
अर्जुन कृष्णाला म्हणाला, “ कृष्णा, दुस-
ऱ्याला गांडीव धनुष्य दे म्हणून जो मला
आज्ञा करील, त्याचें मस्तक मी उडवीन ! ”
अमा मी गुप्तपणें नियम केलेला आहे. प्रस्तुत
प्रसंगी धर्मराजांनं ‘ गांडीव धनुष्य दुसऱ्यास
दे ’ म्हणून तुझ्या समक्ष मला आज्ञा केली
आहे; ह्यास्तव ही दुःसह आज्ञा सहन न
करितां मी ह्या धर्मशील युधिष्ठिर राजाला ठार
करणार ! आपली प्रतिज्ञा पूर्ण करण्यासाठीं मी
हें खड्ग हातांत घेतलें आहे. ह्यांनं युधिष्ठिराला
वधून मी सत्याचा उतराई होईन आणि शोक
व चिंता नष्ट करीन ! कृष्णा, माझा हा असा
मानस आहे; ह्या वेळीं म्यां काय करावें ह्या-
विषयीं तुझे काय मत आहे तें सांग. तुला
ह्या जगताचें सर्व भूतभविष्य विदित आहे; ह्या-
करितां तूं जसें सांगशील तसें मी करीन ! ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, अर्जु-
नाचें हें म्हणणें ऐकून कृष्णानें त्याचा धिक्कार
केला व पुढें ह्मटलें, “ हे पुरुषव्याघ्रा अर्जुना,
तुला हा भलत्याच समयी क्रोध चढलेला पाहून
मला तर असे वाटतें कीं, तूं वृद्धांची सेवा कधीं
केली नाहीं. ज्याला धर्माचीं सूक्ष्म तत्त्वे
समजतात. तो पुरुष, तुझ्यासारखा सर्व धर्म-
लोपाच्या भीतीनं प्रस्तुत प्रसंगी जें करण्यस
उद्युक्त झाला आहे, तमलें कृत्य कधींही करणार
नाहीं ! जो मनुष्य (?) अगदीं निषिद्ध व (२)
वज्य अमली तरी विहित, अशा दोन प्रकारच्या
कर्मांनील भेट जाणीत नाहीं व त्यांची सळ-
मिमळ करिना. त्याला अधम ह्मटलें पाहिजे.

अध्याय एकुणसत्तरावा.

—:—

कृष्णकृत सत्यासत्यनिर्णय.

संजय सांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणें युधिष्ठि-
राचें भाषण श्रवण करून श्वेतवाहन कुंतीपुत्र
अर्जुनानें क्रोधायमान होऊन युधिष्ठिराला ठार
मारण्याच्या उद्देशानें हातांत खड्ग घेतलें. तेव्हां
त्याची ती क्रोधमुद्रा अवलोकन करून त्याचा
विचार काय आहे हें चित्तज्ञ केशवानें तत्काळ
साडिलें; आणि अर्जुना, हातांत खड्ग कशाला
घेतलेंम ? अमा त्यास प्रश्न केला. नंतर कृष्ण
त्याला आणखी ह्मणाला. “ धनंजया, ज्याचा तुला
वध करावयाचा आहे असें ह्या स्थलीं तर काहींच
दिसत नाहीं. निरुडे त्या कौरवांना तर धीमान्
भीमसेनानें प्राप्त टाकिलें आहे; आणि तुझे तर
येथें परत येण्याचें कारण धर्मराजाचें कुशल-
वृत्त काढावें हेंच होतें व आतां तुझी आणि
धर्मराजाची भेट होऊन तो कुशल आहे असें तुला
दिसेल आलें; तेव्हां खरोखरी तुला आनंद व्हाव-
याचा तो एकीकडे राहून हें तूं वेड्यासारखें
भलतेंच काय मनांत आणिलें आहेस ? अर्जुना,
तूं ज्याचा वध केला पाहिजेम. अमा ह्या

शिष्यांनीं धर्मतत्त्वे प्रतिपादन करण्याविषयी गुरूंची प्रार्थना केली असतां त्या गुरूंनीं संक्षेपांनीं व विस्तारानें जे सिद्धांत त्या शिष्यांना सांगितले, ते तुला माहीत नाहीत. कार्याकार्य-निर्णयासंबंधानें पंडितांचे जे सिद्धांत आहेत, त्यांचें ज्याला ज्ञान नाही, तो पुरुष अमाच तुझ्याप्रमाणें भांबावून जाऊन वेड्यासारखी भलतीच गोष्ट करण्यास तयार होतो ! अर्जुना, कार्याकार्य विचार करितां येणें मुळींच सुलभ नाही. त्याला श्रुतीचें यथार्थ ज्ञान अवश्य आहे; पण तें तर तुला अगदींच नाही. कारण, तूं धर्मज्ञ ह्मणून जें कृत्य करण्यास सिद्ध झाला आहेस, तें केवळ तुझ्या अज्ञानाचेंच निदर्शक होय ! अर्जुना, तूं मोठा धार्मिक ना ? मग प्राण्यांचा वध करणें हा धर्म किंवा अधर्म सांग पाहूं ? मला तर अहिंसा हा परम धर्म वाटतो ! एक वेळ असत्य भाषण केलें तरी चालेल पण प्राणिहिंसा ही सर्वथा निषिद्ध होय ! आणि असें जर आहे, तर दुसऱ्या एखाद्या सामान्य पुरुषाप्रमाणें ज्येष्ठ भ्रात्याला व तशांत धर्मज्ञ राजाला वधण्यास उद्युक्त होणें हें सर्वथा अनुचित नव्हे काय ? हे नरश्रेष्ठा मानवा अर्जुना, जो आपल्याशीं युद्ध करित नाही, जो युद्धापामून पराङ्मुख आहे, जो पळत सुटला आहे, जो शरण आलेला आहे, जो आपल्यापुढें हात जोडून उभा आहे, व ज्याची विचारशक्ति सुटली आहे, त्याचा वध करणें हें सज्जनांना मान्य नाही; आणि ह्या सर्व गोष्टी तुझ्या ज्येष्ठ भ्रात्याच्या ठिकाणीं विद्यमान आहेत; ह्यास्तव तूं जी गोष्ट करावयास तयार झाला आहेस ती गोष्ट करण्याचें सोडून दे. अर्जुना, आधीं तूं जो हा पूर्वीं नियम केल्यास, तोच मुळीं चुकीचा आहे. ह्यासाठीं तूं मूर्खपणानें अधर्ममूलक कर्म करित आहेस, ह्यांत संदेह नाही. अर्जुना, धर्माचीं तत्त्वे फार सूक्ष्म व अगाध आहेत;

ह्यास्तव त्यांचें नीट मनन न करितां एकदम तूं वंदनीय अशा पुरुषाला ठार मारण्याच्या हेतूने त्यावर धावून जात आहेस ह्याला काय म्हणावें ? अर्जुना, आतां मी तुला धर्माचें हें गूढ तत्त्व निरूपण करून सांगतो. हें तुला पूर्वीं भीष्मानें, युधिष्ठिरानें, विदुरानें अथवा भाग्यवान् कुंतीनें कदाचित् सांगितलें अमेलेच. ह्यासाठीं, धन-जया, मी आतां जें कांहीं सांगेन तें सावधान चित्तानें ऐक. बाबारे, जो सत्य सांगेल तो साधु, सत्यापेक्षां अधिक श्रेष्ठ असें कांहीएक नाही; परंतु सत्यास अनुसरून वर्तन करितांना सत्याच्या तत्त्वांवर अनुसंधान ठेवून त्याचा यथा-योग्य निर्णय ठरविणें हें फार अवघड आहे. एखादी गोष्ट सत्य जरी असली, तरी ती बोलतां येणार नाही व एखादी गोष्ट असत्य जरी असली तरी ती बोलतां येईल; आणि अशा स्थितीत असत्य हें सत्य व सत्य हें असत्य असा त्यांचा व्युत्क्रम होईल. पहा—विवाह-कालीं. संभोगसमयीं, प्राणसंक्रांत, सर्व माल-मिळकत, घरदार वगैरे जाण्याचा प्रसंग आला असतां, व ब्राह्मणाचें हित साधत अमेळ तर मनुष्यानें असत्य भाषण केलें तरी चालेल. ह्या पांच प्रसंगां असत्य भाषणाच्या योगें घातक लागत नाही. अज्ञ पुरुष सत्यासत्यविवेकांतील हें मर्म न जाणतां केवळ सत्यालाच तेवढे धरून बसतात आणि तदनुसार वागतात. ह्यास्तव, सत्यासत्यांचें रहस्य ज्याला कळेल तोच धर्मज्ञ होय. म्हणून बलाकासारख्या मुज्ज पुरुषानें अंधवधासारखें दारुण कर्म करून मोठें पुण्य जोडिलें; व कौशिकामारख्या अज्ञ पुरुषानें सरित्संगमी चोरट्यांना खरा पत्ता सांगण्यासारखें धार्मिक कर्म करूनही महापाप संपादिलें, तर त्यांत आश्चर्य तें कमलें ?

अर्जुनानें विचारिलें:—भगवंता कृष्णा, बला-कानें व कौशिकानें जें काय केलें तें मला नीट सांग.

वासुदेव म्हणाला:—अर्जुना, पूर्वी बलाक नांवाचा कोणी एक व्याध होता. तो स्त्रीपुत्रांच्या उपजीविकेकरितां मृगांचा वध करित असे,— मृगांची हत्या करवी असा त्याचा वास्तविक हेतू मुळाच नव्हता. तो नेहमी स्वधर्माप्रमाणें वर्तन करून वृद्ध मातापितरांचा व आश्रित जनांचा चरितार्थ चालवी. तो सद्गोदीत खरें बोले आणि कोणाचेंही अनिष्ट चिनीत नसे. तो एकदां मृगया करण्यास निघाला असतां त्याला एकही मृग मिळाला नाही. तेव्हां त्याला अनेगीस एक हिंसक प्राणी पाणी पितांना दृष्टीस पडला. तो अंधळा असल्यामुळे केवळ वामावरच इतर प्राण्यांची हत्या करित असे. तसेच मावज जरी बलाकानें पूर्वी कधी पाहिलें नव्हतें. तरी त्यानें तें मारिलें. आणि त्याच्या हातून त्या अंध श्रापदाचा वध होताना आकाशांतून त्यावर पुष्पवृष्टि मुरू झाली. अप्परंगांच्या गायनवादानांच्या मनां- हार स्वरांनीं अंतरिक्ष दुमदुमून गेलें आणि त्या बलाक व्याधाच्या नेण्याकरितां स्वर्गांतून विमान उतरतें! अर्जुना. त्या हिंसक प्राण्यानें तपश्चर्या करून सर्व प्राण्यांचा वध करण्याविषयी वर मिळविला होता; आणि ह्यामुळेच ब्रह्मदेवानें त्यास अंध केले होतें. अशा प्रकारें सर्व प्राण्यांचा वध करण्याविषयी निश्चय करणाऱ्या त्या ऋर श्रापदाला बलाकानें जेव्हां वधिलें. तेव्हां बलाक प्राणिहत्याच्या पातकांत न पडतां उलट स्वर्गाम गेला! तेव्हां धर्माचें तत्त्व किती गूढ आहे तें मनांत आण. असो: आतां तुला कौशिकाची कथा सांगतो. कौशिक नांवाचा कोणी एक तपस्वी होता. त्याला श्रुतीचें फारमें ज्ञान नव्हतें. नद्यांच्या संगमावर गांवाच्या जवळच तो रहात असे. नेहमी खरें बोलावयाचें असें त्याचें व्रत असे. ह्यामुळे सत्यवक्ता अशी त्याची प्रख्याति झाली होती. एका प्रसंगी

चोरट्यांच्या भीतीनें कांहीं लोक त्या वनांत आले. इकडे चोरट्यांनीं संतापून जाऊन त्या लोकांचा एकसारखा शोध सुरू केला. फिरतां फिरतां ते चोरटे सत्यवादी कौशिकाजवळ आले व त्यांनीं 'महाराज, पुष्कळसे लोक इकडून कोणत्या मार्गानें गेले तें सांगा बरें? असा त्यास प्रश्न केला. आणि त्यास आणखी असें म्हटलें कीं, 'आम्हीं तुम्हाला खरें विचारीत आहों; जर तुम्हाला माहीत असेल तर तुम्ही आम्हांला खरें सांगा.' अर्जुना, तेव्हां कौशिकानें त्या चोरट्यांना खरें सांगितलें. तो म्हणाला, 'अहो, ह्याच वनांत लतावृक्षांची गर्द झाडी आहे, तीत ते आहेत!' अर्जुना, ह्याप्रमाणें त्या चोरांना कौशिकानें त्या लोकांचा स्वरा मार्ग दाखविला; आणि नंतर त्या चोरट्यांनीं त्यांना गांठून निर्दयपणानें त्यांचा वध केला असें म्हणतात. अर्जुना, कौशिकानें हें जें सत्य भाषण केले, तें सत्य असलें तरी दुरुक्तच होय. त्या महान् अधर्माचरणांमुळे, कौशिकाला भयंकर नरकांत पडावें लागलें! कारण, त्यास धर्माचीं सूक्ष्म तत्त्वे माहीत नसल्यामुळे, अर्धवट शिकलेला मूर्ख मनुष्य जसा धर्माचें रहस्य भ्रतः जाणित नाही व त्यांत संशय उत्पन्न झाला असतां वृद्धांकडून त्याचें निराकरण करून घेत नाही आणि शेवटीं नरकवासाला पात्र होतो, तशीच त्याची अवस्था झाली! असो: अर्जुना. आतां सत्यासत्यविवेकाचें किंवा धर्माधर्मविचाराचें मर्म कोणेंत तें सांगतो तें एक. कित्येक प्रसंगी धर्माचें तत्त्व मनांत येणें मोठें कठीण पडतें; ह्यामाठी त्याचें वरोबर ज्ञान होण्यास तर्काची मदत घ्यावी लागते. पुष्कळ लोक असें म्हणतात कीं, धर्माचें तत्त्व श्रुतीतच आहे. ह्यावर मी असें म्हणतो कीं, धर्माचें तत्त्व श्रुतीत आहे हें खरें; पण सर्वच गोष्टी श्रुतीत सांगून त्यांचा

तेथें उहापोह केलेला नाही. धर्माचें मूल तत्त्व प्राण्यांचा उत्कर्ष व्हावा हेंच होय; आणि ह्याच तत्त्वाच्या अनुरोधानें श्रुतींत धर्माची व्याख्या केली आहे. प्राण्यांच्या उत्कर्षाचें विज्ञ अहिंसेंत म्हणजे परपीडा न करण्यांत आहे. म्हणून, ज्यांत अहिंसा घडेल म्हणजे दुसऱ्यास पीडा होणार नाही, तोच धर्म होय असा सिद्धांत समज. हिंसा करणाऱ्या पुरुषांच्या हातून दुसऱ्याला पीडा होऊं नये हाच धर्माचा हेतु होय. धर्म शब्दाचा अर्थच बंधन असा होतो; व हें बंधन एक किंवा दोन अशा मर्यादित व्यक्तींना नसून सर्व प्रजांना आहे. ह्यासाठीं धर्माचें यथार्थ लक्षण मनांत आणिताना त्याची धारकता म्हणजे समाजाला बांधून टाकण्याची शक्ति विचारांत घेतली पाहिजे. तेव्हां एखाद्या नियमाच्या ठिकाणीं अशा प्रकारची धारकता आहे, हें कसें जाणवें? तर त्यावर उत्तर हेंच कीं, एक तर तो नियम श्रुतींत सांगितलेला असावा किंवा तो अहिंसा-तत्त्वाशीं विरुद्ध नसल्यामुळे तो श्रुतींतून निघतो असें तर्कांनीं घेतां यावें. जर ह्या दोहोंपैकीं एकही गुण विवक्षित नियमवाक्याच्या ठायीं विद्यमान नसेल, तर तो नियम वेदबाह्य होय. कित्येक लोक केवळ जनरीतींवर हवाला देऊन श्रुतिबाह्य नियमांचा स्वीकार किंवा श्रुतिप्रणीत नियमांचा अन्वेष करितात. पण हें त्यांचें करणें सर्वथैव अनुचित आहे; ह्यासाठीं त्यांच्याशीं बोलूं मुद्धां नये. कोणत्याही धार्मिक नियमाला वेदवचनाचा अशा प्रकारें प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्ष रीतींनीं आधार अमला पाहिजे. जर त्याला तसा आधार नसेल तर तो नियमच नव्हे. अशा प्रसंगीं त्या नियमाचें उल्लंघन करण्यास कोणतीही हरकत नाही; किंबहुना अशा समयीं त्या नियमाचें बेलाशक उल्लंघन करणें हेंच श्रेयस्कर होय. कित्येक लोकांचा मूल व्रत

(नियम) करण्यांत हेतु एक असतो व मग ते दुसऱ्याच हेतूनें त्या व्रताचें समर्थन करूं लागतात; परंतु त्या योगें त्यांच्या पदरीं दांभिकपणा येऊन ते त्या व्रतफळाला अंतरतात, असें ज्ञात्यांचें मत आहे. प्राणमक्रंटांत, विवाहकालीं, सर्व जातीचा नाश होण्याचा प्रसंग आला अमतां किंवा थट्टामस्करां करितांना असत्य भाषण केलें, तरी त्यापामून पाप लागत नाही. धर्माचें तत्त्व यथार्थपणें जाणणाऱ्या लोकांना त्यांत कांहीं अधर्मच वाटत नाही. एखाद्याला चोरांनीं गांठलें, तर त्या समयीं खुशालखोट्या शपथा घेऊन त्यांच्यापामून सुटका करून घेतली पाहिजे. होतां होईल तों चोरांना धन मिळूं देणें वाजवी नाही; कारण पापी (नीच, दुष्ट वंगरे) लोकांना धन दिलें असतां ते दात्याला नरकांत पाडील ! आणि ह्यासाठींच धर्मपालनाकरितां असत्य भाषण केल्यानें तो मनुष्य असत्यवादी ठरणार नाही ! अर्जुना, हें धर्माधर्मविकेकांतलें मर्म मीं आज तुला तुझें हित व्हांवें म्हणून विशद करून सांगितलें आहे. आतां मला सांग वरें युधिष्ठिराचा वध करणें प्रशस्त कीं अप्रशस्त ?

अर्जुन म्हणाला:—कृष्णा, एखादा महाबुद्धिमान् व दृग्दर्शी पुरुष जशी केवळ हिताची मला देईल, तशीच तूं ही मला दिला आहेस. तूं माझ्या मातापितरांच्या जागीं आहेस. तुझा मला मोठा आधार आहे. तुझ्यावर मीं सर्वस्वी अवलंबून आहे. तुला ज्याचें ज्ञान नाहीं असें तिन्ही लोकांत कांहींएक नाहीं. ह्यासाठीं मला तूं प्रत्यक्ष धर्ममूर्तिच वाटतोस. तुला धर्माचें यथार्थ तत्त्व विदित आहे; म्हणून धर्मराज युधिष्ठिरामा मारावें हें मला उचित दिसत नाहीं. तथापि मीं केलेल्या ह्या प्रतिज्ञेच्या संबंधानें आणखी एक गोष्ट माझ्या मनांत घोळत आहे ती तुला सांगतो. हे दाशार्हा, ' तूं आधारी

आहेस' असें जर कोणी भीमसेनाला म्हणाला, तर त्याला ठार मारण्याची जशी भीमाची प्रतिज्ञा आहे, तशीच ही माझी प्रतिज्ञा होय. 'तुझ्या-हून बळानें किंवा अस्त्रांनी जो कोणी वरिष्ठ असेल त्यास तूं हें गांडीव धनुष्य दे; म्हणून तुझ्या समक्ष धर्मराजा मला पुनःपुनः म्हणाला. ह्यासाठी माझ्या प्रतिज्ञेप्रमाणें मी त्यास ठार मारिलें पाहिजे; परंतु जर का मी त्यास ठार मारिलें, तर मी क्षणमात्र मुद्धां जिवंत रहाणार नाही; तेव्हां ह्या पातकाची जोड न होतां आत्मघात टळावा म्हणून मला धर्मराजाचा वध करितां येत नाही, हें उघडच आहे; तथापि मी धर्मराजाला वधण्याचें मनांत आणिलें ह्यापासूनही माझे सर्व वीर्य अष्ट होऊन माझी विवेकबुद्धि नाश पावेल ह्याला उपाय काय? तेव्हां लोकांत माझी प्रतिज्ञा तर खरी व्हावी आणि धर्मराज व मी ह्या दोघांपैकी कोणाचाही अंत होऊं नये, अशी कांहीं तरी तोड काढ!

वामुदेव म्हणाला:—अर्जुना, धर्मराजांनें तुला 'गांडीव दुसऱ्याम दे' म्हणून कां म्हटलें, ह्याचा तूं नीट विचार कर. तो अगदीं थकून गेला असून घायाळ व विव्हाळ झालेला आहे. सूतपुत्रानें तीक्ष्ण बाणांच्या भडिमारांनें रणांगणांत त्यास अगदीं जर्जर केल्यामुळें अतिशयित संतापून जाऊन त्यानें तुला असें अनुचित भाषण केलें. .. प्रस्तुत समर्थी जर अर्जुनाला क्षुब्ध केलें नाहीं, तर अर्जुन हा कर्णाला रणांत वधणार नाहीं!" हाच विचार युधिष्ठिराच्या मनांत प्रबळ झाला, आणि तुझ्या-शिष्याय दुसऱ्या कोणा वीराला कर्णाला वधण्याची शक्ति नाहीं. हेही तो जाणून आहे; म्हणूनच धर्मराजा माझ्या समक्ष ते कठोर शब्द बोलला ह्यांत संदेह नाहीं. अर्जुना, धर्मराजाची अशी समजूत आहे की, पांडवांचा नाश करण्यास सतत उद्युक्त असलेल्या नित्यदुर्धर-

पराक्रमी कर्णाशी आज रणांत युद्धरूप द्यूतच केलें पाहिजे. ह्या द्यूतांत एकदां कर्ण पडला कीं कौरवांचें क्षणांत निर्दलन झालेंच म्हणून समजावें. म्हणून ह्या सर्व अंतस्थ हेतूंचें मनन करून तूं धर्मराजाला वधण्याचा विचार सोडून दे आणि आपली प्रतिज्ञाही खरी कर. आतां, धर्मराजा जिवंत असूनही मृत कसा होईल ह्याविषयीं तुला उत्कृष्ट युक्ति सांगतो ती ऐक. अर्जुना, सन्मान्य पुरुष जोंपर्यंत मान मिळविता, तोंपर्यंतच ह्या जीवलोकांत तो जिवंत असतो. एकदां त्याचा अवमान झाला कीं तो जिवंत असूनही मेल्याप्रमाणेंच झाला! अर्जुना, धर्मराजाला भीम, नकुल, सहदेव व तूं—तुम्ही चौघेही बंधु आणि सर्व शूर व वृद्ध पुरुष नित्य मान देता; ह्यासाठी, जर त्याचा यत्किंचित् अवमान झाला, तर तो मेल्याच म्हणून समजण्यास हरकत ती कोणती? अर्जुना, तूं युधिष्ठिराला अहो न म्हणतां अरे म्हण (युधिष्ठिराची तूं निंदा कर) म्हणजे त्या सन्मान्य पुरुषाला तूं मारिल्याप्रमाणेंच झालें! अर्जुना, ही जी मी तोड काढिली आहे, हिला आधार अथर्वागिरसी नामक श्रेष्ठ श्रुतीचा आहे. हितेच्छु पुरुषांनीं नेहमीं बेलाशक ह्या श्रुतीला प्रमाण मानून वर्तन करावें. गुरूला अहो न म्हणतां अरे म्हणणें म्हणजे वध न करितां वध करणें होय. ह्यासाठीं तूं धर्मराजाला मी सांगत आहे असें म्हण. म्हणजे त्याला हे तुझे अनुचित शब्द ऐकून मृतप्राय दुःख होईल; नंतर तूं त्याच्या पायांवर मस्तक ठेव आणि त्याचें सांत्वन करून त्याची क्षमा माग. अर्जुना, तुझा भ्राता धर्मराजा मोठा बुद्धिमान असल्यामुळें, धर्माचें मर्म तेव्हांच त्याच्या लक्षांत येईल आणि तो तुझ्यावर बिलकूल राग करणार नाहीं. असो; अर्जुना, ह्याप्रमाणें तूं कर, म्हणजे तुझी असत्यापासून

सुटका होईल व भ्रातृवधापासूनही सुटका होईल; आणि मग उमेदीनें तूं कर्णाला ठार मार.

अध्याय सत्तरावा.

—:०:—

युधिष्ठिराचें सांत्वन.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें प्रिय सखा जनार्दन ह्यानें जी युक्ति सांगितली ती अर्जुनाला फार आवडली; आणि नंतर, जे तो पूर्वीं कधींही बोलला नव्हता, ते फार कठोर शब्द धर्मराजाला बोलला.

अर्जुन म्हणाला:—राजा, रणांगणापामून कोसावर दूर रहावयाचें व अमें भाषण करावयाचें, हें तुला मुळींच शोभत नाहीं! भीमानें जर मला दोष दिला, तर तो शोभेल; कारण तो रणांगणांत मोठमोठ्या योद्ध्यांशीं लढत तरी आहे! हा वेळपर्यंत त्यानें युद्धभूमीवर शत्रूंना वेळच्या वेळीं जर्जर केलें अमून पुष्कळ शूर राजांना, मोठमोठ्या रथ्यांना, उत्तम उत्तम हत्तींना, पराक्रमी घोडेस्वारांना व अगणित दुसऱ्या वीरांना वधिलें आहे. ह्याशिवाय तो युद्धांत सहस्र हत्तींना व दशसहस्र कांबोज व पार्वतीय योद्ध्यांना ठार मारून, सिंह जसा मृगांना ठार मारून गर्जना करितो, तशी मोठमोठ्यानें गर्जना करित आहे! राजा, भीमानें जो अचाट पराक्रम चालविला आहे, तो तुझ्या हातून कदापि होणार नाहीं. त्यानें रथांनुन खाली उडी टाकून हातांत गदा घेऊन तिनें समरांगणांत अश्व, रथ व द्विप ह्यांचा संहार उडविला आहे, श्रेष्ठ खड्गानें हत्ती, घोडे, रथ व पायदळ ह्यांना वधिलें आहे, आणि रथाच्या अवयवांनीं व धनुष्यानें जणू काय सैन्याचें भस्मच उडविलें आहे! राजा, तो इंद्रतुल्य पराक्रमी वीर इतका बलाढ्य आहे की, तो केवळ पायांग्वालीं तुडवून व दंडांनीं

बडवून शत्रूंना यमसदनीं पाठवितो! त्याच्या ठिकाणीं यमाप्रमाणें किंवा कुबेराप्रमाणें अगाध सामर्थ्य वसत असल्यामुळे तो मोठ्या शौर्यानें शत्रूंच्या सेनेला ठार करितो! तेव्हां त्या बलशाली भीमसेनानें माझी निंदा केली तर चालेल, पण ज्या तुला स्वतःचें संरक्षण करण्यासही नित्य सुहदांची जरूर लागते, त्या तुला माझी निंदा कशी करितां येईल बरें? पहा, तो भीम महाराथांना, मोठमोठ्या गजाना, ह्यांना व पायदळांतील शूर वीरांना वधून कौरव-सैन्यांत एकटा घुसला आहे; त्याप्रमाणेंच त्यानें कलिंग, वंग, अंग, निषाद व मागध देशांतील सैन्यांचा संहार उडवून, शिवाय सदासर्वकाळ मदोन्मत्त असलेल्या व नीलमेघांप्रमाणें भव्य दिमणाऱ्या शत्रूंकडील अनेक हत्तींचा विध्वंस उडविला आहे; तसाच तो रथांत अधिरूढ होऊन जरूर त्या समर्थी समरांगणांत पावसाच्या मरीप्रमाणें बाणांचा भडिमार करित असतो; आणि आजच त्यानें बाणांच्या प्रहारांनीं समरभूमीवर आठशें हत्तींच्या गंडस्थळांचे व शूंडांप्रांचे तुकडे उडविले; तेव्हां त्यानें जर मला नांवें ठेविलीं तर हरकत नाहीं. राजा, महान् महान् द्विजांचें बल वाणींत असतें व क्षत्रियांचें बल बाहूंत असतें, अमें म्हणतात. राजा, तूं बोलण्यांत पटाईत अमून अत्यंत निष्ठुर आहेस आणि ह्यामुळे तुला आपल्या-प्रमाणेंच मीही दुर्बल आहे अमें वाटतें! राजा, मी आपल्या स्त्रिया, पुत्र, जीवित व देह ह्यांची पर्वा न करितां नित्य तुझ्या बऱ्यासाठीं झटत आहे आणि अमें असतां तूं ह्याप्रमाणें वाक्प्रहार करित आहेस; तेव्हां तुझ्यापासून मला सुख मिळेल अमें वाटत नाहीं. तुझ्यासाठीं महाराथांचा मी वध करित असतां. तूं द्रौपदीच्या शयनावर पडून माझी निर्भत्सना करावी हें मला उचित दिमत नाहीं; यावरून मला

तू अतिशय निर्दय वाटतोस. युद्धामध्ये सत्यप्रतिज्ञा भीष्मानें आपल्याला मृत्यु कोणापासून आहे हें स्वतः सांगितलें, तेव्हां तुझ्या हितासाठीच मी त्या महात्म्या शिखंडीचें संरक्षण करण्याचें पतकारिलें व त्याच्या हस्ते भीष्माला रणांगणांत पाडिलें. राजा, असें जरी आहे, तरी आतां तुला राज्य मिळावें हें मला उचित दिसत नाही; कारण तूं मोठा भयंकर घृताकार आहेस. नीच लोक जें दुराचरण करितात तें स्वतः करून तूं आतां आम्हांकडून शत्रूंना जिंकण्याची हाव धरिली आहेस. राजा. घृतामध्ये बहुत दोष आहेत व त्यापासून पातकें लागतात असें महर्ष्यांनीं सांगितलें. तें सर्व ऐकूनही तूं नीच लोकांप्रमाणें घृतास प्रवृत्त झालास व त्यामुळे आपल्याबरोबर आम्हां सर्वांनाही नरकांत पाडिलें! राजा. तुझ्या घृतामुळे आमचें सर्व सुख नष्ट झालें. तूं स्वतःच हें सर्व महत्संकट उत्पन्न केलेस आणि आतां आम्हांस दुःशब्द बोलत आहेस! राजा. आमच्या हस्ते हत होऊन हें शत्रुसैन्य हानपाय वेगरे तुटून विलय करित रणांगणांत कर्मे पडलें आहे पहा! ह्या सर्व घातुक कर्मांला कारण तूं आहेस. तुझ्यामुळेच कोरव दापी झाले आणि त्यांचा आज वध होत आहे! हे पहा दोन्ही सैन्यांतील चारही दिशांकडले महान् महान् योद्धे समरांगणांत लोकोत्तर प्रताप गाजवून मरून पडले आहेत! राजा. तूं जुगारी, तुझ्यामुळेच राज्याचा नाश व तुझ्यामुळेच हा मोठा भयंकर अनर्थ उद्भवला! ह्यासाठी. हे मंदभाग्या. आतां क्रूर वाक्प्रतोदांनीं तूं आम्हांस आपली फटके देऊन व्यर्थ क्षुब्ध करू नको!

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्र. मद्यमाची अर्जुन बुद्धीचें म्यर्थ करून हे असे कठोर व हृदयभेदक शब्द धर्मराजाला बोलला खरा; पण त्या धीमान् धर्मभीरु पांडुपुत्राला

आपण केलेल्या त्या दुष्कर्मांबद्दल लागलाच फार खेद झाला आणि त्यानें पश्चात्तापानें तळमळून जाऊन दुःखाचे सुसकारे टाकीत एकदम पुनः म्यानांतून खड्ग बाहेर काढिलें! तेव्हां तें पाहून तत्काळ कृष्ण त्यास म्हणाला:— अर्जुना, फिरून आकाशासारखी लकलकणारी ही तरवार म्यानांतून कां बरें बाहेर काढिलीस? माझ्या ह्या प्रश्नाचें पुनः उत्तर दे म्हणजे तुझे मनोरथ सिद्धीस जाण्यासाठीं जरूर तो उपाय मी तुला सांगेन. राजा, ह्याप्रमाणें कृष्णाचें भाषण ऐकून, अनुतापानें विव्हल झालेला अर्जुन फिरून म्हणाला:—कृष्णा, आज मी बलात्कारानें आपला हा देह ह्या तरवारीनें कापून टाकणार! कारण, ह्याच्या योगें मी मोठें दुष्ट कर्म केले!

धृतराष्ट्र, अर्जुनाचे ते उद्गार श्रवण करून तो महाधर्मनिष्ठ कृष्ण त्याला ह्मणाला, “ हे अर्जुना, तूं जें कांहीं धर्मराजाला बोललास, त्याच्या योगानें तुझ्या मनाला हा इतका विषाद वाटला तो कां? हे अरिघ्ना, तूं अगदीं आत्महत्या करण्यास मिद्ध झाला आहेस; पण, अर्जुना. मत्पुरुषांनीं ह्या मार्गाचें अवलंबन कर्थाही केलेले नाही. अरे, तूं जर आज अधर्म घडूं नथे ह्मणून खरोखरीच तरवारीनें ज्येष्ठ भ्रात्याचा वध केला असतास, तर मग तुर्मी काय अवस्था झाली असती व मग तूं आज काय बरें केले असतेंस? अर्जुना, धर्म हा मोठा सूक्ष्म व दुर्बोध आहे. अज्ञ जनांस त्याचें नीट स्वरूप कळणें फारच अशक्य! ह्यासाठी. मी जें कांहीं सांगतो, तें चांगलें लक्षपूर्वक ऐक. अरे, प्रस्तुत प्रसंगीं तूं आत्महत्या करण्यास तयार झाला आहेस, पण ह्यापासून तुला भ्रातृवधोपक्षांही घोर पातक लागून अधिक भयंकर अशा नरकांत पडावें लागेल! ह्मणून आतां तूं आपल्या स्वतःच्या गुणांची

प्रौढी मिरव, हणजे आत्महत्या केल्याप्रमाणे होईल !” राजा धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुनांनै कृष्णाचें हणणें मान्य केलें व धनुष्य वांकवून आत्मश्लाघा करण्याच्या उद्देशानें महाधर्मनिष्ठ युधिष्ठिराला झटलें:—धर्मराजा, माझ्यासारखा धनुर्धर एका पिनाकी शंकरावांचून दुसरा कोणीही नाही. तोही माझ्या सामर्थ्याची वाहवा करितो. मी एका क्षणांत सर्व चराचर विश्वाचा संहार उडवीन. राजा. मीच दिशा-दिशांच्या ठिकाणी राज्य करणाऱ्या राजां-मुद्धां सर्व दिशा जिंकून तुझे आधिपत्य सर्वत्र स्थापिलें. माझ्या पराक्रमामुळेच दक्षिणायुक्त राजसूय शेवट्यास गेला व ती दिव्य सभा तुला प्राप्त झाली. माझ्या हातामध्ये धार दिलेले बाण आणि बाण जोडलेलें धनुष्य नेहमीं मज्ज व ताणलेलें असतें. माझ्या पायांवर रथांची व ध्वजांची चिन्हें आहेत. माझ्यासारखा वीर युद्धार्थ प्रवृत्त झाला अमतां त्याला जिंकण्यास कोणीही समर्थ नाही. उत्तरेकडील, पश्चिमेकडील, पूर्वेकडील व दक्षिणेकडील सर्व योद्ध्यांचा मी अगदीं उच्छेद करून टाकिला आहे. आतां संशप्तकांचें मात्र मैन्य अवशिष्ट आहे. मी एकट्यानें अर्धें मैन्य ठार मारिलें. राजा, देवांच्या सेनेप्रमाणें प्रतापशाली अशी ही भारती सेना माझ्या हस्ते रणांत मरून पडली आहे. अश्वज्ञ वीरांना मी अश्वानांच मारितां. आणि त्यामुळेच माझ्या हातून हें त्रैलोक्य भस्म झालें नाही. ज्यांच्याशीं युद्ध करावयाचें त्यांच्या पात्रापात्रतेचा जर मी विचार केला नसता, तर आज हें सर्व विश्व कधीच नष्ट झालें असतें ! कृष्णा, आतां ह्या विजयशाली रथांत बसून ताबडतोव सूनुत्राला वधण्यास जाऊं चला. राजाच्या मनाला आज पूर्ण विश्रंति मिळेल; कारण मी बाणप्रहारांनी रणांत आज कर्णाला वधीन. राजा धृतराष्ट्रा,

असें बोलल्यावर फिरून अर्जुन युधिष्ठिराला हणाला:—धर्मराजा, आज मी कर्णाला मारीन किंवा कर्ण मला मारील; ह्यास्तव आज एक तर कर्णमाता पुत्रहीन होईल किंवा कुंती पुत्रहीन होईल ! युधिष्ठिरा, मी तुला खचित सांगतो की, आज मी कर्णाला ठार केलें नाहीं तर अंगांतील कवच काढणार नाहीं !

संजय सांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणें भाषण करून अर्जुनांनै पुनः महाधर्मनिष्ठ युधिष्ठिरा-पुढें आपलीं शस्त्राखें व धनुष्य टाकून दिलें आणि तत्काळ तो म्यानांत तरवार घालून लज्जायमान होत्समाता खालीं मान करून हात जोडून उभा राहिला व हणाला:—धर्मराजा, रागावूं नको, प्रसन्न हो, क्षमा कर; मी असें कां बोललों ह्याचें कारण पुढें तुला विदित होईल, मी तुला नमस्कार करितां ! राजा धृतराष्ट्रा, प्रतापी अर्जुनांनै ह्याप्रमाणें भाषण करून. शत्रूंच्या पराक्रमाला सहन करणाऱ्या धर्मराजाच्या समोर उभें राहून पुनः झटलें, “ धर्मराजा, माझ्या ह्या बोलण्याचें कारण लांबणीवर न पडतां लवकरच व्यक्त होईल. हा पहा मी रणांगणांत भीमाला विश्रंति देण्याकरितां व कर्णाला ठार मारण्याकरितां येथून निघालों. राजा, तुझे बरें करण्यासाठींच माझे हें जीवित आहे, अशी तूं खरोखरी पक्की खातरी बाळग. ” राजा धृतराष्ट्रा, असें बोलून अर्जुनांनै युधिष्ठिराचे पाय धरिले आणि नंतर तो पराक्रमी वीर युद्धाला जाण्यासाठीं निघाला. तेव्हां अर्जुनाच्या त्या कठोर भाषणाच्या योगें मंतस हात्समाता धर्मराज युधिष्ठिर शय्येवरून उठला आणि मोठ्या भिन्न मनांनै हणाला, “ अर्जुना, मीं मोठें अनुचित कर्म करून तुह्यां सर्वांना घोर संकटांत पाडिलें ! ह्यासाठीं ह्या अधम कुलांगाराचें मस्तक आज तूं तोडून टाक ! अर्जुना, मी मोठा नीच अमून नीच कुत्यांत

अगदीं निमग्न झालेला आहे; माझी अकाल नष्ट झाली असून मी अगदीं म्याड व आळशी आहे; आणि मी मोठा निर्दय व वृद्धांचा अपमानकर्ता आहे; तेव्हां सतत ह्या दुष्टाची आज्ञा पाळून तुला लाभ तो कोणता? ह्यासाठी हा पहा मी नीच आजच वनांत जातो! तू माझ्याव्यतिरिक्त खुशाल रहा! महात्मा भीमसेन राज्यपदाला योग्य आहे! मी पडलों घंट, तेव्हां मला राज्याची उठाठेव कां असावी? अर्जुना, तू रागाने जें हें बोललास तें आणखी सहन करण्यास मी ममर्थ नाही. आतां भीमच राजा होवो! माझी जर आज इतकी मानखंडना झाली, तर मला आतां जगून तरी काय कर्तव्य? राजा धृतराष्ट्रा, असे बोलून युधिष्ठिर एकदम ती शय्या सोडून लग्नागनीं वनांत जाण्यासाठी निघाला; पण तितक्यांत कृष्णाने त्याच्या पायांवर मस्तक ठेवून हात जोडून झटलें:—धर्मराजा, मत्स्यबंध अर्जुनाची गांडीव धनुष्यासंबंधाने काय प्रतिज्ञा आहे. हें प्रसिद्ध असल्यामुळे तुला विदित असेलच! जो कोणी त्यास 'तू हें गांडीव दुसऱ्यास दे' असें ह्मणेल, त्याला वधण्याचा त्याचा संकल्प आहे; आणि तूच हें असें त्याला ह्मणालास, तेव्हां अर्जुनाने आपली ती प्रतिज्ञा खरी करण्यासाठी माझ्या सह्याचाने हा तुझा अवमान केला आहे. गुरुजनांचा अवमान करणे ह्मणजे त्यांचा वधच करणे होय. ह्याकरितां. हे महाबाहो युधिष्ठिरा, अर्जुनाची प्रतिज्ञा सत्य व्हावी ह्मणून मी व अर्जुन अशा आर्क्षी दोघांनीं जो तुझा अवमान केला आहे. त्याजबद्दल आर्क्षी तुला शरण येऊन तुझी क्षमा मागत आहेत; तर तू आर्क्षींस आमच्या अपराधाची क्षमा कर. आज त्या पातकी राधेयाच्या रक्ताचे भूमि प्राशन करील हें तू पक्कें समज; आतां राधेय मेलाल ह्मणून खुशाल मान; ज्याच्या वधानी तू इच्छा करीत आहेस.

त्याचें जीवित आतां उरलेंच नाही! राजा धृतराष्ट्रा, धर्मराज युधिष्ठिराने आपल्या पर्दां लीन झालेल्या कृष्णाचें हें भाषण श्रवण करून मोठ्या लग्नागनीं त्यास उठाविलें आणि नंतर हात जोडून झटलें:—कृष्णा, तू झटलेंस त्याप्रमाणें माझ्या हातून मर्यादेचें उल्लंघन झालें खरें; गोविंदा, तू आज मला ताळ्यावर आणून महान् प्रसंगांतून सोडविलेंस! अच्युता, आज तुझ्यामुळेच आर्क्षी उभयतां भावी घोर अनर्थांतून मुक्त झालों. कृष्णा, समुद्रांत पडलेल्या मनुष्याला जसा नावेचा आश्रय मिळावा, तसा आज आर्क्षीं दोघांना तुझा आश्रय मिळाला! नाहीपेशां बुद्धिभ्रष्ट झालेले आर्क्षी दोघेही ह्या दुःखशोकाणवांत बुडून जाऊन सर्वस्वी नष्ट झालों असतों! अच्युता, आज तू योग्य मार्ग दाखविल्यामुळे अमात्यांसमवेत व गुरुजनांसमवेत आर्क्षीं तू भयंकर संकटांतून पार पाडिलेंस!

अध्याय एकाहत्तरावा.

—:—

अर्जुनाची प्रतिज्ञा.

संजय सांगतो:—राजा, युधिष्ठिराच्या पायांवर मस्तक ठेवून अर्जुन रडूं लागला असतां युधिष्ठिराने त्यास उठाविलें व प्रेमाने त्यास आलिंगन देऊन तोही त्याच्याबरोबर रडूं लागला! राजा, नंतर ते दोघेही पराक्रमी भ्रान्ते पुष्कळ वेळ रडले आणि अशा प्रकारें दुःखमुक्त होऊन एकमेकांवर पूर्ववत् प्रसन्न झाले. मग धर्मराजाने अर्जुनाला पुनः आलिंगिलें आणि मोठ्या प्रीतीने त्याच्या मस्तकाचे अवघ्राण करून वारंवार आश्चर्याने चकित होऊन महाधनुर्धर अर्जुनाला झटलें:—हे महाबाहो अर्जुना, कर्णाने सर्व सैन्याच्या समक्ष, मी त्याच्याशीं लढण्याची पराक्राघा करीत असतां माझे कवच. ध्वज, धनुष्य, शर, शक्ति व ह्य

ह्यांजवर बाणांचा भडिमार करून त्या सर्वांचा विध्वंस उडविला, ह्यामुळे मी अगदी दुःखाने आर्त झालों आहे, मला आतां जगण्यांत अर्थ ऋटत नाही. अर्जुना, जर तूं त्यास आज युद्धांत ठार मारिलें नाहीस, तर मी खचित प्राण देणार ! मला जगून तरी काय करावयाचें आहे ? राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें धर्मराजाचें भाषण श्रवण करून अर्जुनानें त्याला उत्तर दिलें:—राजा, मी आज सत्याची, तुम्ही, भीमाची, नकुलाची व सहदेवाची शपथ घेऊन सांगतो कीं, मी आज समरांगणांत कर्णाला वधीन किंवा स्वतः हत होऊन भूतलावर पडेन ! आज मी खरोखरी अशीच प्रतिज्ञा करून शस्त्रास हात घालीत आहे ! राजा धृतराष्ट्रा, अर्जुनानें ह्याप्रमाणें युधिष्ठिराला सांगितलें व मग कृष्णाला ह्मटलें:—कृष्णा, आज रणांत मी कर्णाला वधीन ह्यांत संदेह नाही; पण मला त्या दुरात्म्याच्या वधाकरितां तुझ्याकडून समयोचित सहा मिळावी. तुझे कल्याण असो.

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें अर्जुनाचें भाषण श्रवण करून कृष्ण अर्जुनाला ह्मणाला, “ हे भरतश्रेष्ठा, त्या महाबल कर्णाला मारण्यास तूं समर्थ आहेस. हे महारथा, मीही नेहमीं हाच विचार करित आहे कीं, तूं रणांत त्या कर्णाचा कसा वध करशील ? ” राजा धृतराष्ट्रा, नंतर मतिमान् कृष्ण पुनः धर्मराजाला म्हणाला, “ युधिष्ठिरा, अर्जुनाच्या मनाला अधिक उमेद येईल असें कर व त्या दुरात्म्याच्या वधाकरितां ह्यास आज अनुज्ञा दे. हे पांडुपुत्रा, तुला कर्णानें बाणांचा भडिमार करून अगदीं आर्त करून टाकल्याचें मी व ह्या अर्जुनानें ऐकिलें ह्मणून आर्त्ता उभयतां तुमैं कुशलवृत्त जाण-प्याकरितां येथें आलों. राजा, सुदवान तूं सुर-क्षित आहेस व शत्रूंच्याही हस्तगत झाला

नाहींस. हे अनघा, आतां तूं अर्जुनाला प्रोत्सा-हन देऊन जयप्राप्त्यर्थ आशीर्वाद दे. ”

युधिष्ठिर ह्मणाला:—अर्जुना, ये वे, मला आर्त्तान्न दे; तूं जें मला बोललास तें अगदीं उचित व हितकरच होतें; व ह्यास्तव त्या सर्वांची मीं तुला क्षमा केली आहे. धनंजया. माझी तुला अनुज्ञा आहे, तूं कर्णाला ठार मार, अर्जुना, मी तुला जें कांहीं निष्ठुरपणें बोललों, त्याबद्दल रागावूं नको !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुनानें युधिष्ठिराचे पाय धरिले व पायांवर मस्तक ठेविले; तेव्हां युधिष्ठिरानें अर्जुनाला उठविलें आणि तो दुःखांत झाला आहे असें पाहून त्यास आर्त्तान्न दिलें व मस्तकाचें अव-घ्राण करून पुनः म्हटलें:—हे महाबाहो धनंजया, तूं मला अतिशयच मान दिलास; तुला विजय-श्री व विपुल वैभव प्राप्त होवो !

अर्जुन म्हणाला:—धर्मराजा, बलांनें गर्विष्ठ झालेल्या त्या पातकी राधेयाला आज मी रणांत गांठून शरांचा भडिमार करून त्याला व त्याच्या अनुयायांना वधीन. त्या दुष्ट कर्णानें आकर्ण धनुष्य ओढून बाणप्रहारांनीं तुला जर्जर केले, त्याचें हें दारुण फळ त्याला आज प्राप्त होईल ! राजा, आज मी कर्णाला ठार मारिन व मग तुला समरांगणांतून भेटण्यास येईन, हें खचित सांगतो. आज जर माझ्या हातून समरभूमीवर कर्ण पडला नाही, तर मी खचित परत येणार नाही, हें मी तुझ्या पायांची शपथ घेऊन सांगतो.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, अर्जुनाची ही प्रतिज्ञा श्रवण करून युधिष्ठिराचें मन मोठें प्रसन्न झालें आणि त्यान अभिनंदनपर भाषण केलें. त्या वेळीं युधिष्ठिर म्हणाला:—अर्जुना, तुला अक्षय्य कीर्ति, यथेष्ट आयुष्य, पूर्ण जय व विपुल वीर्य हीं मिळून तुझ्या हातून शत्रूंचा संहार घडो ! देवता तुमैं भाग्य वाढवोत !

आणि माझ्या इच्छेनुरूप तुला सर्व कांहीं प्राप्त होवो! आतां तूं युद्धाला जा व कर्णाला त्वरित मार; आणि वृत्रासुराला मारून इंद्रानें जसा विजय मिळविला, तसा तूं कर्णाला मारून विजय मिळव!

अध्याय बहत्तरावा.

—:०:—

कृष्णाचें प्रोत्साहनपर भाषण.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें धर्मराज युधिष्ठिर प्रमत्त झालेला पाहून अर्जुनाला मोठा आनंद झाला व तो सूतपुत्राच्या वधार्थ तयार होऊन कृष्णाला म्हणाला:—कृष्णा, फिरून माझा तो बलाढ्य रथ सिद्ध कर, त्याला उत्तम अश्व जोड व त्याजवर सर्व शस्त्रांही सामग्री तयार ठेव. आतां विलंब करून उपयोग नाही; म्हणून त्वरा करून, अश्व-शिक्षकांनीं शिकवून तयार केलेले ते अश्व फिरून आणण्यास सांग आणि त्याजवर रथोपकरणें घालून ते रथाला लाव व कर्णाला ठार मारण्याच्या उद्देशानें आतां त्वरित शत्रूंवर चल.

राजा धृतराष्ट्रा, महात्म्या फाल्गुनाचें असें भाषण श्रवण करून कृष्णानें दारुकाला अर्जुनाच्या इच्छेप्रमाणें सर्व व्यवस्था करण्यास सांगितलें; आणि नंतर दारुकानें व्याघ्रचर्मचें कवच असलेला तो अर्जुनाचा शत्रुसंहारक रथ सज्ज करून तेथें आणिला व रथ तयार आहे म्हणून अर्जुनास कळविलें. तेव्हां महात्म्या दारुकानें अश्व जोडून तयार करून आणिलेला तो रथ पाहून अर्जुनांनें धर्मराजाचा निरोप घेतला, ब्राह्मणांकडून पुण्याहवाचन करविलें. आणि मग तो त्या श्रेष्ठ रथावर आरूढ झाला. नंतर महाबुद्धिमान् धर्मराजानें अर्जुनाला मंगल-दायक आशीर्वाद दिले आणि मग अर्जुन कर्णावर चालून गेला. राजा धृतराष्ट्रा, अर्जुन

कर्णावर चालून येत आहे असें जेव्हां प्राण्यांनीं अवलोकन केलें, तेव्हां त्यांना असें वाटलें कीं, महात्म्या अर्जुनाच्या हातून आतां कर्ण भेलाच, ह्यांत संदेह नाही! राजा, त्या समयीं जिकडे तिकडे सर्व दिशा स्वच्छ दिसूं लागल्या; चाप, शतपत्र व क्रौंच हे अर्जुनाला उजवी घालूं लागले; आणि पुं नामक पुष्कळ पक्षी मोठ्या आनंदानें शुभ व मंगल ध्वनि करून अर्जुनाला युद्ध करण्याविषयीं त्वरा कर म्हणून मुचवूं लागले! राजा, त्याप्रमाणेंच कंक, गृध्र, बक, श्येन व कावळे अर्जुनाच्या रथाच्या अग्रभागीं मांसमेवन करण्याच्या हेतूनें जलद धावूं लागले; आणि ते भयानक विहंगम आपल्या पुढें पळत चालले आहेत असें पाहून अर्जुनाला त्या शुभ शकुनांच्या योगें कर्णाच्या वधाविषयीं व क्रौरवांच्या संहाराविषयीं फारच भरंवसा उत्पन्न झाला; तथापि अर्जुन हा कर्णावर चालून जात असतां त्याला अतिशय ग्राम सुटला आणि हें महत्कृत्य कसें पार पडेल अशी मोठी चिंताही पडली! त्या समयीं अर्जुनाची ती मर्चित स्थिति अवलोकन करून कृष्ण अर्जुनास म्हणाला, “ अर्जुना, संग्रामांत वाणांचा भाडिमार करून तूं आजपर्यंत ज्यांना जिंकलेस, त्यांना जिकण्याला तुझ्यावांचून दुसरा कोणीही मनुष्य ह्या लोकीं समर्थ झाला नसता, मीं आजवर पुष्कळ शूर पुरुष पराक्रमानें जणू काय प्रतिद्वंद्व असे पाहिले. पण ते समरांत तुझी गांठ पडली अमतां धारातीर्थीं देह ठेवून श्रेष्ठ गतीस पावले! अर्जुना, भीष्म, द्रोण, भगदत्त, अवंतीचे विद्वानुविद, कांबोजाधिपति मुद्राक्षिण, महाबलशाली श्रुतायुष व अच्युतायुष असल्या लोकोत्तर वीरांवर चाल करून सुराक्षित राहिल असा तुझ्यावांचून कोण आहे बरे! तुझ्यापाशीं दिव्य अस्त्रें, विलक्षण सामर्थ्य, बाण सोडण्याची हातोटी, युद्धांत लागणारे बुद्धिस्यैर्य,

ज्ञानोत्पन्न विनय, बरोबर नेम धरणें, अचूक बाण सोडणें आणि दूरवर लक्ष पुरविणें, इत्यादिक गोष्टी यथास्थित असल्यामुळें तूं ह्या स्थावरजंगम विश्वासुद्धां देवांना व गंधर्वांना ठार करशील! अर्जुना, ह्या पृथ्वीवर तर तुझ्याप्रमाणें धुरंधर योद्धा एकही नाही! जे कित्येक पराक्रमी धनुर्धर क्षत्रिय आहेत त्यांमध्ये व देवांमध्ये सुद्धां तुझ्या बरोबरीचा कोणीही वीर मी पाहिला नाही व ऐकिलाही नाही! अर्जुना, तुझ्यासारखा एकही योद्धा ह्या जगतांत नसण्याचें कारण हें कीं, ज्या ब्रह्मदेवांने हे प्राणी उत्पन्न केले, त्यानेच हें तुझे प्रचंड गांडीव धनुष्य उत्पन्न केलें हें होय. अर्जुना, यद्यपि असा सर्व प्रकार आहे, तथापि तुला पथ्यकारक अशी गोष्ट सांगणें हें माझे कर्तव्य होय. हे महाबाहो, कर्णाची योग्यता मात्र लहानसहान आहे असें समजू नको. खरोखरी तो रणाचें भूषणच होय! कर्ण हा मोठा बलवान्, अभिमानी, अल्लविद्याप्रवाण. भाग्यवान्, विचित्र युद्ध करणारा व देशकालज्ञ महारथ आहे. अर्जुना, फार कशाला, तो तुझ्या बरोबरीचा अथवा तुझ्याहून अधिक आहे, असेंही म्हणण्यास हरकत नाही! ह्यास्तव. तुला मोठ्या दक्षतेनें घोर संग्रामांत त्याच्याशीं युद्ध करून त्यास वधिलें पाहिजे. अर्जुना, कर्णाच्या अंगीं अग्नीप्रमाणें तेज, वायूप्रमाणें वेग, यमाप्रमाणें क्रोध व मिहाप्रमाणें बळ आहे. तो आजानुबाहु असून त्याची छाती भरदार आहे. त्याची उंची आठ हात आहे. तो मोठा अजिंक्य, शूर व सुंदर आहे. त्याच्या ठिकार्णी योद्ध्याचे सर्व गुण आहेत. मित्रांना तो सुख देणारा आहे. तो नित्य पांडवांचा द्वेष करितो; आणि कौरवांच्या हितार्थ उद्युक्त असतो; तुझ्याशिवाय कोणीही त्यास वधण्यास समर्थ नाही. फार कशाला, इंद्रप्रमुख देवांच्या हातूनही तो अव-

ध्यच आहे. ह्यासाठीं, अर्जुना, तूं त्या बलादच वीराला आज ठार मार. अर्जुना, कर्ण हा इतका शक्तिमान् आहे कीं, मांसभोगितांनी युक्त अशा प्राण्यांकडून, फार काय, प्रत्यक्ष देवांकडूनही-त्यांनीं सर्वांनीं एकत्र होऊन कितीही दक्षतेनें युद्ध केलें तरी-त्यासहवर्तमान कर्णाचा पराभव होणें अशक्य आहे! ह्यासाठीं, अर्जुना. तूंच हें आज महत्कार्य कर. अर्जुना, त्या दुष्ट दुरात्म्याला पांडवांशीं विरोध करण्यापासून काहींएक हित नाही; तथापि तो पातकी सदासर्वकाळ पांडवांचा घात करण्याची इच्छा करितो; ह्याकरितां आज त्याला तूं जिवंत ठेवूं नको. अर्जुना, तो महारथ वीर दुर्जय्य आहे खरा, तथापि तूं त्याला यमाच्या स्वाधीन करण्यास योग्य आहेस; ह्याकरितां त्याचें आज हनन कर आणि धर्मराजाविषयीं आपलें प्रेम दाखव. अर्जुना. मला माहीत आहे कीं. तुझ्या ठिकार्णी अमाध सामर्थ्य असल्यामुळें सुरांना व अमुरांनाही तूं अजिंक्य आहेस. ह्यास्तव. जो मदांध दुरात्मा नित्य पांडवांना धिक्कारितो, व ज्यामुळें दुर्योधनाला मी प्रबळ आहे असें वाटतें. त्या पापमूलक सूत्रपुत्र कर्णाला तूं आज ठार मार. अर्जुना, कर्ण हा केवळ वाध आहे. त्याच्या हातांतील खड्ग ही त्या व्याघ्राची जिन्हा होय; धनुष्य हें त्याचें तोंड होय; बाण ह्या त्याच्या दंष्ट्रा होत व वेग ह्या त्याचा दर्प होय! अर्जुना, मी तुला आज्ञा करितों कीं, आपल्या बळानें व पराक्रमांनें सिंह जसा हत्तीला वधितो, तसा तूं त्याला रणांत वध. अर्जुना, ज्याच्या पराक्रामामुळें दुर्योधन तुझ्या पराक्रमाला धिक्कारितो, त्या वैकर्तन कर्णाला तूं आज संग्रामांत ठार कर.



अध्याय त्र्याहात्तरावा.

—:०:—

कृष्णकृत अर्जुनपराक्रमवर्णन.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुन हा कर्णाळा ठार मारण्याच्या निश्चयाने शत्रुसैन्यावर चाल करून जात असतां अमितवीर्यवान् कृष्ण फिरून त्याला म्हणाला, “ अर्जुना, अश्व, नर व गज ह्यांचा भयंकर संहार सुरू होऊन आज सतरा दिवस झाले, आरंभी तुझे सैन्य पुष्कळ होते, परंतु शत्रूंची लढता लढतां तें अगदीं थोडें उरलें आहे, त्याप्रमाणेंच कौरवांचें सैन्यही अफाट होते, परंतु तुझी व त्याची गांठ पडून त्याचाही रणकंदनांत फडशा झाला आहे. हे पहा तुझ्या सैन्यांतले भपाळ, संजय व पांडव वीर तुझ्यासारखा प्रतापशाली सेनापति असल्यामुळे एकत्र मिळून कसे व्यवस्थितपणानें कौरवांशी लढत आहेत! हा पहा पांचाल, पांडव, मत्स्य, कारुष व वेदि ह्या शत्रुसंहारक योद्ध्यांची तुझ्या पाठबळावर भिस्त ठेवून शत्रूंचा कमाघार नाश केला आहे! हीं दोन्ही सैन्ये मोठी प्रबळ व पराक्रमी आहेत. रणांगणांत निकराचें युद्ध चालू असतां कौरवांना जिकील असा कोण आहे बरें? तमेंच पांडवांकडील महारथाचें संरक्षण तूं करीत आहेस. ह्यास्तव त्यांनाही जिकण्याची कोणाला शक्ति नाही; कारण अर्जुना. तुझे सामर्थ्य मोठें अगाध आहे ह्यांत अगदीं संदेह नाही. सुर, असुर व नर ह्या सर्वांसहवर्तमान तिन्ही लोक एकत्र होऊन तुझ्याशीं लढण्यास सिद्ध झाले तरी तूं एकटा त्यांना जिकशील; मग कौरवांच्या सैन्याची पर्वा ती काय? हे पुरुषशार्दूला, तुझ्यावांचून दुसऱ्या कोणत्या इंद्रतुल्य पराक्रमी वीरानें भगदत्त राजाला जिकिलें असतें बरें? त्याप्रमाणेंच तुझ्या ह्या अफाट सेनेचा तूं संरक्षणकर्ता असल्या-

मुळें कोणीही भपाळ वर डोळा करून हिजकडे पहाण्यास समर्थ नाही. त्याप्रमाणेंच नित्य तुझे पाठबळ असल्यामुळें रणांगणांत शिखंडी व धृष्टद्युम्न ह्यांनीं भीष्म व द्रोण ह्यांस वधिलें! अर्जुना, जर असें नसतें तर इंद्राप्रमाणें अत्यंत प्रतापशाली अशा त्या महारथ भीष्मद्रोणांस युद्धांत जिकण्यास कोण समर्थ झाला असता बरें? भीष्म, द्रोण, कर्ण, कृप, अश्वत्थामा, सौमदत्ति, कृतवर्मा, जयद्रथ, शल्य व दुर्योधन राजा हे सर्व योद्धे शस्त्राखांत पारंगत, युद्धांतून पराङ्मुख न होणारे, अक्षौहिणीचे अधिपति व समरांगणांत अतिशय पराक्रम गाजविणारे असे असल्यामुळें तुझ्यावांचून दुसरा कोणता पुरुष त्यांना जिकिता बरें? अर्जुना, तूं शत्रुसैन्याच्या अनेक टोळ्यांचा विध्वंस करून त्यांचे अश्व, रथ व गज ह्यांची वाताहत उडविलीस आणि बहुविध देशांतून युद्धार्थ आलेल्या भयंकर वीरांना धारातीर्थी पाडिलेंस; त्याप्रमाणेंच गोवास, दासमीय, वसाति, प्राच्य, वाटधान व अभिमानी भोज ह्या सर्व प्रसुब्ध क्षत्रियांची आणि तुझी व भीमाची समरांगणांत गांठ होऊन त्यांचें तें अश्वगजांनीं गजबजून गेलेलें सर्व सैन्य नाश पावले! अर्जुना, भयंकर पराक्रम करणारे उग्र तुषार, यवन, खश, दार्वाभीसार, दरद, शक, माठर, तंगण, आंध्रक, पुलिंद, उग्रपराक्रमी किरात, म्लेच्छ, पर्वतीय व सागरतीर्ती वसति करून राहिलेले योद्धे हे सर्व युद्धक्रियेमध्ये निपुण, महाबलिष्ठ व मोठ्या त्वेषाने युद्ध करणारे असल्यामुळें ह्यांनीं दुर्योधनाला विजय मिळवून देण्याच्या इच्छेनें तुझ्या सैन्याशीं गदाप्रहारांनीं तुंबळ युद्ध चालविलें, तेव्हां तुझ्यावांचून दुसरा कोणीही त्यांस जिकण्यास समर्थ झाला नसता! अर्जुना, कौरवांचें प्रचंड व बलिष्ठ सैन्य व्यूह करून उभें राहिलें आहे असें पाहून, जर तूं संरक्षण करण्यास

पाठीवर नसतास तर कोणता पुरुष त्याजवर चालून गेला असता बरें! सागराप्रमाणें अफाट व धुळीनें व्याप्त झालेल्या त्या कौरवसैन्याचा क्रोधायमान झालेल्या पांडवांनीं जो संहार उडविला, त्याचें कारण तरी तुझा त्यांना आश्रय आहे हेंच होय. मागधांचा अधिपति महाबल जयत्सेन ह्यास अभिमन्यूनें युद्धांत मारल्याला आज सात दिवस झाले. नंतर त्या मागधराजाच्या पाठीमागून त्याच्या संरक्षणासाठीं चालत असलेल्या दहा हजार भयंकर हत्तींचा भीमानें गदाप्रहार करून संहार केला; आणि त्यानें दुसरे शतावधि हत्ती व रथ ह्यांचा मोठ्या आवेशानें नाश करून टाकिला. त्या समयीं कौरवदळांत महान् भीति उत्पन्न झाली आणि अखेरीस हत्ती, घोडे व रथ ह्यांसहवर्तमान त्या सर्व सैन्याचा भीमसेनाच्या हस्ते नाश होऊन त्या सर्वांनीं यमपुरीचा रस्ता आक्रमिला !

“अर्जुना, त्या समयीं सैन्याच्या बिनीचा पांडवांनीं निःपात उडविला तेव्हां भीमानें पांडवांवर भयंकर बाणांचा वर्षाव चालू केला आणि मग त्या महान् अखेचेच्यानें चेदि, काशि, पांचाल, करुष, मत्स्य व केकय यांना शरानीं आच्छादित करून मृत्युमुखीत लोटून दिलें ! त्या वेळीं भीष्माच्या धनुष्यापासून सुटलेल्या त्या सरळ चालणाऱ्या रुक्मपुंख व शत्रुदेहविदारक बाणांनीं अंतरिक्ष अगदीं ओतप्रोत व्याप्त झालें. त्या समयीं त्यानें बाणांचा असा कांहीं भडिमार आरंभिला कीं, तो एकेका तडाक्यास सहस्रावधि रथांचा सत्पा उडवू लागला. तेव्हां त्यानें एक लक्ष महाबलिष्ठ नर व गज हे एकत्र होऊन लढत असतां त्यांस ठार मारिलें. त्या समयीं भीष्माचें व त्या तुझ्या सैन्याचें मोठें विचित्र युद्ध झालें. तेव्हां तुझ्या वीरांनीं नऊ प्रकारच्या गतींनीं युद्ध केलें; परंतु अखेरीस त्या सर्व गतींचा कांहीं उपयोग होत नाही

असें पाहून त्यांनीं त्या सोडून दिल्या व दहाव्या गतीचा अंगीकार करून कौरवांच्या गजांवर, अश्वंवर व नरांवर हल्ला करून त्यांस बाणविद्ध केलें. त्या समयीं भीष्मानें समरांगणांत पुनः पांडवसेनेवर बाणांचा भडिमार केला आणि ह्याप्रमाणें दहा दिवसपर्यंत तुझ्या सैन्याशीं झगडत असतां भीष्मानें तुझ्या पक्षाचे अनेक रथ वीरहीन केले आणि पुष्कळ हत्ती व घोडे बघून समरांगणांत रुद्राप्रमाणें किंवा उपेंद्राप्रमाणें आपलें उग्र रूप दाखविलें ! स्वा समयीं भीष्मानें पांडवांचें सैन्य अगदीं पेंचाटीत घातलें व त्याचे अगदीं तुकडे तुकडे उडविले. तेव्हां त्यानें चेदि, पांचाल व केकय भूपाळांस ठार मारिलें आणि रथ, अश्व व गज ह्यांनीं गजबजून गेलेल्या पांडवसेनेला जाळून टाकण्याचा क्रम आरंभिला. अर्जुना, आपण जर नावेप्रमाणें साहाय्य केलें नाहीं, तर हें मंदमति दुर्योधन स्वचित आपत्सागरांत बुडून जाईल असा विचार करून भीष्मानें जेव्हां भयंकर पराक्रम करण्यास मुरुवात केली, तेव्हां सूर्याच्या प्रदीप्त किरणांप्रमाणें दुःसह असें तें त्याचें तेज पाहून महान् महान् आयुधें धारण करणाऱ्या अगणित मृंजयपदातींना व दुसऱ्या राजांना त्याकडे वर मान करून पाहवनासें झालें; तथापि तो विजयशाली महावीर रणांगणांत परिश्रमण करीत असतां ते मृंजय व पांडव मोठी पराकाष्ठा करून त्याजवर चालून गेले, पण अखेरीस भीष्मानें त्या सर्वांची दाणादाण करून टाकून आपलें एकवीरत्व सर्वांच्या निदर्शनास आणिलें ! अशा त्या अद्वितीय योद्ध्याला अखेरीस शिखंडीनें तुझ्या साहाय्यामुळे गांठलें, आणि त्या महाव्रत पुरुषश्रेष्ठवर बांकदार पेन्यांच्या बाणांचा भडिमार केला; व शेवटीं वृत्रामुराची इंद्रापुढें जी अवस्था झाली तीच अवस्था त्या महावीराची तुझ्यापुढें झाली !

अर्जुना, तो हा पितामह भीष्म शरशय्येवर पडला आहे पहा !

“नंतर महारथ द्रोणानें पांच दिवसपर्यंत प्रताप गाजवून शत्रूसैन्याचा विध्वंस उडविला. त्या समयी त्यानें अमेघ व्यूह मिद्ध करून पांढवाकडील अनेक महारथांना वधिलें व जयद्रथाचें कांही काळपर्यंत संरक्षण केलें. त्या भयंकर योद्ध्यानें यमाप्रमाणें उग्र रूप धारण करून रात्रियुद्धांत शत्रूंवर अमा कांही बाणांचा भडिमार केला कीं, त्यांच्या योगें तें शत्रूसैन्य जळून ग्वाक झालें ! परंतु, अर्जुना, अखेरीस त्या प्रतापशाली भारद्वाजाची धृष्ट-द्युम्नाशीं गांठ पडून त्याला समारांगणांत देह ठेवावा लागला ! अर्जुना, जर त्या समयी तूं कौरवांकडील कर्णप्रभृति महारथांचें निवारण केलें नसतंस, तर खचित द्रोणाचा नाश झाला नमता. तेव्हां तूं एकट्यानें कौरवांचें सर्व सैन्य थांबवून धरिलेंस आणि ह्यामुळेंच धृष्ट-द्युम्नाला द्रोणाचा वध करितां आला ! अर्जुना, जयद्रथ राजाच्या वधप्रसंगीं तूं जो कांहीं पराक्रम केलास, तसा पराक्रम समारांगणांत तुझ्यावांचून दुसरा कोणता क्षत्रिय करील बरें ! त्या वेळीं देखील तूं प्रचंड कौरवसेनेचें स्तंभन केलेंस व शूर वीरांचें हनन करून आपल्या अस्त्रबलानें व वीर्यबलानें जयद्रथाला मारिलेंस. अर्जुना, जयद्रथाला तूं जें वधिलेंस, तें केवळ सर्व भूपतींना मोठें नवलवाटत आहे ! पण मला मात्र त्यांत कांहीं विशेष वाटत नाही. माझी तर अशी ममज आहे कीं, ज्यांचा तुझ्या हातून क्षणांत नाश व्हावयाचा त्यांनीं तुझ्याबरोबर एक दिवसभर जर टिकाव धरिला, तर ते खचित बलिष्ठच अमले पाहिजेत.

“असे; भीष्म व द्रोण हे पतन पावले तेव्हां कौरवांच्या सैन्याचें सर्वस्वच नष्ट झालें असें मी मानितों. आज ही कौरवसेना भयं-

कर दिसत आहे खरी, परंतु तिच्यामधले महान् महान् योद्धे व अश्व, गज आणि रथ नष्ट झालेले आहेत. सूर्य, चंद्र किंवा नक्षत्रें हीं अस्तंगत झालीं असतां आकाश जसें उदास दिसतें तसें हें कौरवसैन्य आज उदास दिसत आहे. पूर्वी इंद्रानें प्रताप गाजवून जशी असुरसेना उध्वस्त करून टाकिली, तशीच तूं आपल्या प्रतापानें ही कौरवसेना उध्वस्त करून टाकिली आहेस. अर्जुना, कौरवांच्या सैन्यांत अश्व-त्यामा, कृतवर्मा, कर्ण, कृप व शल्य असे पांच महारथ काय ते अवशिष्ट आहेत. आज तूं त्यांचा वध कर आणि द्वीपें, नगरें, आकाश, जल, पाताल, पर्वत व महावनें ह्यांसहवर्तमान सर्व पृथ्वी धर्मराजाला मिळवून दे. पूर्वी विष्णूनें दैत्यदानवांचा वध करून ज्याप्रमाणें इंद्राला तिन्ही लोकांचें आधिपत्य मिळवून दिलें, त्याप्रमाणें तूं कौरववीरांचा वध करून अमितवीर्यवान् युधिष्ठिराला ह्या वसुंधरेचें आधिपत्य मिळवून दे. अर्जुना, विष्णूनें दैत्यदानवांचा संहार केला तेव्हां देवांना जसा आनंद झाला, तसा तुझ्या हातून शत्रूंचा संहार होऊन आज पांचालांना आनंद होवो. अर्जुना, द्रोणाचा-यांच्या ठिकाणीं तुझी भक्ति असल्यामुळें जर तूं अश्वत्याम्यावर कृपा करीत असशील, कृपा-चार्यांच्या ठिकाणीं पूज्यबुद्धि ठेवून त्याला मारण्याला जर तूं तयार नसशील, आपल्या मानेचे बंधुवर्गांविषयीं सन्मानबुद्धि धारण करून तूं कृतवम्याला वधण्यास जर राजी नसशील, अथवा मद्राधीश शल्य राजा आपला मातुल आहे असें मनांत आणून त्याला वधाचें असें जर तुझ्या मनांत येत नसेल, तर निदान पांड-वांविषयीं दुष्ट बुद्धि धारण करणाऱ्या त्या दुरात्म्या कर्णाला तरी आज तूं तीक्ष्ण बाणांचा भडिमार करून ठार मार. अर्जुना, हें तुझे कृत्य विहित आहे; ह्यांत कांहीएक दोष नाही. ह्याम

आह्वां सर्वांची अनुज्ञा आहे; ह्यांत कांहींएक पाप नाही. हे अनघा अर्जुना, दुर्योधनांनै रात्रींच्या समर्थी तुझ्या मातेला पुत्रांसहवर्तमान जाळण्याचा जो प्रयत्न केला व तुह्यांला घृतार्थ जें प्रवृत्त केलें, त्या सर्वांला मूळ कारण हा दुष्ट कर्णच होय. दुर्योधनाला नेहमीं असें वाटतें कीं, 'कर्ण आहे ह्यणूनच आपला बचाव आहे!' अर्जुना, मूर्ख दुर्योधन संतप्त होऊन तेव्हां मला सुद्धा बांधण्यास उद्युक्त झाला ! दुर्योधनाची अशी खातरी आहे कीं, कर्ण हा खचित सर्व पांडवांना जिंकील. अर्जुना, दुर्योधनाला तुझे सामर्थ्य किती आहे हें माहीत आहे, तथापि कर्णाच्या बलावर विश्वास ठेवून त्यानें तुझ्याशीं हें युद्ध आरंभिलें; कारण कर्ण नेहमीं दुष्ट दुर्योधनास उमेद देण्यासाठीं 'मी सर्व पांडवांना व दाशाहं कृष्णाला मारीन' असें त्याजपाशीं ह्मणत असतो. अर्जुना, आज समरांगणांत कर्ण गर्जत आहे, ह्यासाठीं त्याचा तूं वध कर. दुर्योधनानें तुह्यांस उद्देशून जीं जीं पापें केलीं, त्या सर्वांचें आदिकारण हा दुष्टबुद्धि कर्ण होय. अर्जुना, दुर्योधनाच्या सहा क्रूर महारथांनीं अभिमन्यूला जेव्हां वधिलें, त्या वेळेचें स्मरण झालें ह्यणजे माझा जो संताप होतो, तो काय सांगूं ? अर्जुना, त्या समर्थी अभिमन्यूनें लहानसहान पराक्रम केला नाही. त्यानें द्रोण, अश्वत्थामा, कृप व इतर वीर ह्यांची दुर्दशा उडविली, हत्तीवरील योद्धे वधिले, महारथांना रथहीन केलें, घोड्यांवरील स्वार ठार मारिले, आणि पायदळाला आयुधहीन करून धारातीर्थी पाडिलें ! अर्जुना, तो बेलाच्या खांद्याप्रमाणें भरदार खांद्याचा बलाढ्य योद्धा कौरवांशीं लढत असतां महारथांना नजर करून आणि अश्व, नर व गज ह्यांचा संहार उडवून बाण-प्रहारांनीं शत्रुसैन्य जाळूं लागला, तेव्हां त्याच्या त्या लोकोत्तर शौर्यामुळें कुरुकुलाची व यदु-

कुलाची कीर्ति वृद्धिगत झाली ! अर्जुना, अभिमन्यूचा तो अलौकिक पराक्रम अवलोकन करून कर्णानें वास्तविक स्तब्ध रहावयास पाहिजे होतें, परंतु तशांतही तो त्याच्या नाशाकरितां झटतच होता, ही गोष्ट मनांत येऊन नखशिखांत माझा देह पेटतो, हें मी तुला शपथपूर्वक सांगतों ! अर्जुना, तशा समर्थीही कर्ण हा अभिमन्यूवर चालून गेला, पण रणांत अभिमन्यूनें त्याच्यावर बाणांचा असा कांहीं भडिमार चालविला कीं, त्यामुळें त्याच्यानें अभिमन्यूच्या समोर उभें राहावेना. त्याच्या देहांतून रक्ताचे ओष बाहूं लागले व तो घायाळ होऊन मूर्च्छित पडला ! नंतर सावध झाल्यावर कर्णानें आपली ती स्थिति अवलोकन केली, तेव्हां त्याला मोठा क्रोध येऊन तो संतापाचे सुसकारे टाकूं लागला आणि जीविताविषयीं निराश होऊन आतां रणांगणांतून निघून जावें हेंच त्यास श्रेयस्कर वाटलें; व तो बाणप्रहारांनीं विव्हल होऊन अगदीं धकून गेल्यामुळें तसाच तेंपें राहिला. इतक्यांत द्रोणानें अभिमन्यूचें धनुष्य तोडून टाकण्याविषयीं समयोचित सूचना केली ती ऐकून कर्णानें तत्काळ अभिमन्यूचें धनुष्य छेदिलें आणि मग त्या निःशस्त्र वीरावर बाकीचे पांच कुटिल महारथ बाणांचा भडिमार करीत धावून आले व त्यांनीं अभिमन्यूला ठार मारिलें तें पाहून सर्वांना अतिशय दुःख झालें ! पण त्या समर्थी देखील दुष्ट कर्ण व दुर्योधन ह्यांना मोठा आनंद झाला व ते मोठ्यानें हंमले ! अर्जुना, कौरवसभेंत कौरवांच्या व पांडवांच्या समक्ष कर्णानें द्रौपदीला जें कटोर भाषण केलें, तें तुला आठवत असेलच. त्या वेळीं कर्ण द्रौपदीला ह्मणाला, "द्रौपदी, पांडवांचा पूर्ण नाश होऊन ते आतां कायमचे नरकांत पडले ! ह्यास्तव, सुंदरी, तूं आतां अन्य पति कर ! हे मंजुभाषिणी कमलनयने, तूं आतां दुर्योधनाची दाम्नी होऊन

त्याच्या मंदिरांत प्रविष्ट हो ! कृष्णे, आतां पांडव मेलेंच ! आतां त्यांची तुझ्यावर कांहीं-एक सत्ता उरली नाही ! हे पांचालि, खचित तूं दासभार्या अमून स्वतः दासी झाली आहेस ! आज पृथ्वीवर दुर्योधन काय तो एकटा राजा ! इतर सर्व राजे त्याची सेवा करून त्याचें योगक्षेम चालवितात ! ही पहा सर्व पांडवांची एकसारखी गति झाली ! हे सर्व दुर्योधनाच्या वीर्यापुढें फिके पडून एकमेकांकडे टकमकां पहात आहेत ! हे सर्व पंड खचित नरकांतच छेळत आहेत ! आतां ह्यांना दासांप्रमाणें दुर्योधनाची सेवा करावी लागेल ! ”

अर्जुनाला उचेंजन.

“ अर्जुना, तो अत्यंत दुष्ट बुद्धीचा कर्ण धर्मोद्धर्ष-विचार न करितां त्या समयीं ह्या प्रमाणें द्रौपदीला जें कांहीं बोलला, तें सर्व दुर्भाषण तूं ऐकिलें आहेसच. ह्यास्तव तूं आज आपले सुवर्णमंडित व महाणेवर धार देऊन जलाल केलेले प्राणघातक शर त्याजवर सोड व त्याला वधून त्याची बडबड कायमची नष्ट कर. आज तुझ्या गांडीव धनुष्यापासून सुटलेले सुवर्णपुंख भयंकर नाराच बाण विद्युल्लत-सारखे झळाळत कर्णाच्या देहांत शिरोत आणि त्याला भीष्माच्या व द्रोणाच्या भाषणाचें स्मरण होवो ! आज तुझे बाण कर्णाचें कवच भेदून त्याचें रक्त प्राशन करोत आणि त्याला मर्भस्थळीं विद्ध करून यमसदनी मोठ्या वेगानें पाठवोत ! अर्जुना. आज कर्णाला रथांतून खाली पडतांना पाहून बाणप्रहारांनीं जर्जर करून सोडलेल्या राजांमध्ये मोठा हाहाकार उद्भूत त्यांना अगदीं देन्य येवो; आणि सर्व बंधुवर्ग हे कर्ण निरायुध होतमाता रणांगणांत रक्तबंबाळ होऊन लोळत पडला आहे असें पाहून हळहळत पडोत ! अर्जुना. तुझ्या भल्ल बाणांचें भय झालेला कर्णाचा हस्तिकक्ष ध्वज

कंपायमान होऊन भूमीवर पडो व तुझ्या शतावधि शरानीं छिन्न झालेला अश्वहीन व वीरहीन असा कर्णाचा सुवर्णमंडित रथ अवलोकन करून भयभीत होतसाता शल्य पळून जावो ! आणि अर्जुना, ह्याप्रमाणें तुझ्या हातून कर्णाचा वध झाला असें पाहून आज दुर्योधन हा राज्याविषयी व स्वतःच्या जीविताविषयी निराश होवो !

“ अर्जुना, हे पांचाल वीर कर्णावर कसे धावून चालले आहेत ते पाहिलेस काय ? कर्णानें तर तीक्ष्ण बाणांचा भडिमार करून ह्यांचा अगदीं संहार चालविला आहे, तरी ते पांडवांना विजय मिळावा ह्मणून एकसारखे झटत आहेत ! हे पहा पांचाल, द्रौपदेय, धृष्टद्युम्न, शिखंडी, धृष्टद्युम्नाचे पुत्र, शतानीक, नकुलाचा पुत्र, खुद नकुल, सहदेव, दुर्मुख, जनमेजय, सुधर्मा व सात्यकि हे अगदीं कर्णाच्या तडाक्यांत सांपडले आहेत. अर्जुना, रणांगणांत कर्णानें पांचालांचा जो संहार आरंभिला आहे, त्यामुळें तुझे बंधुवर्ग कसा भयंकर आक्रोश करित आहेत तो ऐकिलास का ? पांचाल हे कांहीं झाले तरी भिऊन रणांगणांतून पळून जाणारे नाहीत; कारण ते महाधनुर्धर तुंबळ युद्ध करित असतां मरणाची मुळीच पर्वा करित नाहीत. अरे, ज्या एकट्यांनें सर्व पांडव-मैन्याला ओतप्रोत बाणांनीं व्यापिलें, त्या भीष्माची गांठ पडल्यावर सुद्धां जे युद्धपराङ्मुख झाले नाही, ते महारथ पांचाल कर्णाची गांठ पडून त्याशीं युद्ध करित असतां पळून जातील असें कसें होईल ? अर्जुना, पांचाल हे मोठे शूर आहेत. द्रोणाचार्यांनें त्यांचा प्रत्येक दिवशीं संहार उडविला आणि त्यांच्या रथसेनेंत घुसून तो यमाप्रमाणें आपला प्रताप गाजवूं लागला; तथापि पांडवांना विजयश्री प्राप्त व्हावी ह्या उद्देशानें जे पांचाल त्या सर्व धनुर्धरांमध्ये

श्रेष्ठ अशा द्रोणाचार्यावर तुटून पडले, व ज्यांनी द्रोणाच्या प्रज्वलित अस्त्राशीस न जुमानितां युद्धांत कौरवांना जिंकण्याचा नित्य मोठ्या नेटानें उद्योग चालविला, ते पांचाल कर्णाला भिऊन पळून जातील असें कर्णी तरी संभवेल काय ? अर्जुना, शूर कर्णानें आपल्यावर धावून आलेल्या वेगवान् पांचालांना शरप्रहारांनीं विद्ध करून, प्रज्वलित अग्नि जसा पतंगांचा प्राण घेतो तसा यानें ह्या पांचालांचा प्राण घेतला पहा ! अर्जुना, हे पहा आणखी पांचाल कर्णावर चाल करून गेले, पण त्यांचाही कर्णाकडील योद्धे खचित मोड करतील ! पांडवांसाठीं प्राण देण्यास मिद्ध झालेल्या त्यां पांचाल वीरांची कर्णानें पुनः दुर्दशा करून टाकिली पहा ! हा पहा, शतावधि पांचालांना हा कर्ण मृत्युमुखांत लोटूं लागला; आतां जर तूं त्यांच्या संरक्षणाकरितां पुढें झाला नाहीस, तर कर्णप्रतापरूप अगाध महासागरांत त्या भारतीय महाधनुर्धरांना नौकादिकांचा आश्रय न मिळाल्यामुळें ते खास बुडून जातील ! अर्जुना, ऋषिश्रेष्ठ भार्गव परशुरामापासून कर्णानें जें महाभयंकर अस्त्र मिळविलें, त्याचें हें उग्र रूप दृग्भोचर होऊं लागलें ! हें पहा तें दारुण अस्त्र पांडवांच्या महासैन्यास वेढा देऊन त्यास जालून टाकून स्वतःच्या तेजांनें प्रज्वलित झालें ! हे पहा कर्णाच्या धनुष्यापासून सुटलेले शर भ्रमरांच्या समुदायांप्रमाणें तुझ्या सैन्यावर येत असून तुझ्या सैन्याची देना उडवीत आहेत ! अर्जुना, हे पहा भार्गवास्त्रापुढें पांचाल वीरांनीं हात टेंकले व ते दशदिशांस पळून जाऊं लागले ! अर्जुना, कौरवांविषयीं नित्य कोपाविष्ट असलेला भीमसेन चोहोंकडून संजयांनीं परि-वेष्टित होत्साता कर्णाशीं लढत आहे व कर्ण त्याजवर जलाल बाणांचा भडिमार करीत आहे

पहा. अर्जुना, ह्या वेळीं तूं जर कर्णाची उपेक्षा केलीस, तर देहांत प्रविष्ट झालेला रोग जसा उपेक्षा केली असतां अखेरीस प्राण घेतल्याशिवाय रहात नाहीं, तसा तो कर्ण पांडव, संजय व पांचाल ह्यांचा प्राण घेतल्याशिवाय रहाणार नाही ! जो कर्णाशीं युद्ध करून सुरक्षित आपल्या गृहीं परत येईल असा युधिष्ठिराच्या सैन्यांत तुझ्यावांचून दुसरा कोणताही वीर मला दिसत नाहीं; ह्यासाठीं तूंच आज जलाल बाणांची वृष्टि करून कर्णाला ठार मार आणि आपली प्रतिज्ञा सिद्धीस नेऊन यदा मिळव. अर्जुना, कर्णासहवर्तमान सर्व कौरवांना युद्धांत जिंकण्यास तूं समर्थ आहेस. तुझ्याशिवाय अन्याच्या हातून हें कृत्य खचित होणार नाही हें मी तुला शपथपूर्वक सांगतो; ह्यासाठीं, अर्जुना, महारथ कर्णाला ममरांगणांत वधून तूं कृतार्थ व सुखी हो. "

अध्याय चौ-याहत्तरावा.

—:—

अर्जुनाचें भाषण.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, कृष्णानें ह्याप्रमाणें प्रोत्साहनपर भाषण केलें तें श्रवण करून अर्जुनाला मोठी उमेद आली; व आपल्या हातून कर्णवधाचें महत्कृत्य कसें पार पडेल अशी जी त्याला चिंता पडली होती, ती नाहीशी होऊन तत्काळ त्याला स्फुरण चढलें; आणि तो प्रत्यंचेवरून हात फिरवून व कर्णावर धनुष्य रोवून लागलेंच त्याचें आस्फालन करूं लागला. राजा, त्या समयीं

अर्जुन ह्यणाला:—केशवा, मला सर्व आधार तुझा आहे. घडलेल्या व घडणाऱ्या सर्व कृत्यांचा वास्तविक कर्ता तूंच होस. ह्यासाठीं तुझ्या प्रसादानें आज मला विजयश्री वरील ह्यांत मुळीच संदेह नाही. गोविंदा, सर्व त्रैलोक्य एकमतून

महाभारती युद्धार्थे सिद्ध झाले, तरी त्या सर्वाला घोर संग्रामांत मी तुझ्या साहाय्याने ठार करीन; मग यःकश्चित् कर्णाची ती पर्वा काय? जनार्दना, पांचालांचें सैन्य पळत आहे, रणांगणांत कर्ण मोठ्या शौर्याने लढत आहे, व त्याप्रमाणेच इंद्राच्या अशनीसारखे कर्णाने सोडिलेले हे भार्गवास्त्र दशदिशा जाळून फस्त करीत आहे, तरी आतां ह्या संग्रामांत मी कर्णाला मारून असा कांहीं लोकोत्तर प्रताप गाजवीन कीं, ही पृथ्वी आहे तोंपर्यंत हिजवरील सर्व प्राणी आजच्या ह्या घोर युद्धाची कथा नित्य सांगत राहातील! कृष्णा, आज मी ह्या गांडीबाच्या घोर कर्णावर बाणांचा अतिशय भडिमार करीन व त्यास मृत्युमदर्नी पाठवीन! खचित आज धृतराष्ट्र राजा अरेरे, मूर्ख दुर्योधनाला राज्याभिषेक करून मी मोठी चुकी केली! असा आपल्या स्वतःला दोष देऊन हळहळू लागेल! खचित आज राज्य, मुक्क, लक्ष्मी, राष्ट्र, नगर व पुत्र ह्या सर्वांना धृतराष्ट्र अंतरेल आणि मोठाच अनर्थ उद्भवेल! कृष्णा, जो राजा गुणवंताचा द्वेष करितो व निर्बुद्धी पुरुषाला अधिकार देतो. तो सर्वांचा त्वरित क्षय बडवून आणवून मग रडत बसतो! कृष्णा, आंब्यांची मोठी थोरली राई आहे, ती जर एखाद्यानें तसेडून टाकिली, तर त्यास अतिशय दुःख झाल्याशिवाय राहिल काय; खचित आज सूतपुत्राचा मी वध केला ह्मणजे दुर्योधनाची सर्वच आशा नाहीशी होईल; मग त्याला राज्याची आशा राहाणार नाही व जीविताचीही आशा राहाणार नाही. कृष्णा, आज मी बाणप्रहरांनी कर्णाचे तुकडे उडविले ह्मणजे दुर्योधनाला तुझ्या सामक्यांचें स्मरण होईल! आतां मी शकुनीला शररूप फासे, कर्णरूप फासे ठेवण्याची पिशाची व रथरूप फट हीं सर्व दाखवितों! आज मी

जलाल बाणांच्या भडिमारांने कर्णाला वधून, धर्मराजा फार दिवस जी घोर चिंता करीत आहे ती एकदांची नाहीशी करून टाकितों! कृष्णा, आज मी सूतपुत्राला ठार मारिलें ह्मणजे युधिष्ठिराला मोठा आनंद होईल व तो सुप्रसन्न चित्ताने सदोदीत सुख भोगील! केशवा, आज मी कर्णावर असा दुर्धर व अप्रतिम बाण सोडीन कीं, तो तत्काळ कर्णाचा प्राण घेईल! कृष्णा, ज्या दुष्टाने माझा वध करण्याकरितां असा पण केला आहे कीं, 'मी तोंपर्यंत अर्जुनाला मारिलें नाही तोंपर्यंत पायच भुणार नाही', त्या कर्णाचा देह मी आज बांकदार बाणांच्या वृष्टीनें रथांतून खाली पाडीन आणि त्याचा तो पण मिथ्या करीन. कृष्णा, ज्याला सर्व पृथ्वीवर मीच काय तो वीर असे वाटते व ह्या घमंटीनें जो इतर वीरांचा उपमर्द करितो, त्या अघम कर्णाचे रक्त आज ही भूमि प्राशील! कृष्णा, धृतराष्ट्राच्या मान्यतेनें कर्ण हा आपल्या गुणांची बदाई मारीत 'कृष्णे, तुझे पति आतां मेले!' ह्मणून जें कांहीं बोलला, तें सर्व आज माझे हे तीक्ष्ण बाण मिथ्या ठरवितील आणि सर्वांप्रमाणें शुब्ध होऊन त्याचें रक्त पितील! कृष्णा, आज मी मोठ्या चलाखीनें विजेसारखे देदीप्यमान नाराच बाण गांडीवापासून सोडीन ते कर्णाला खचित परम गतीला पांचवितील! कृष्णा, त्या समयी कौरवसभेंत पांडवांची हेलना करून कर्ण द्रौपदीला जें कांहीं क्रूर भाषण बोलला, त्याचा त्याला आज पश्चात्ताप होईल! कृष्णा, पांडव हे षंड आहेत कीं मर्द आहेत ह्याचा निर्णय आज दुरात्म्या कर्णाच्या वधानें षडेल! कृष्णा, 'धृतराष्ट्रपुत्रहो, तुझाला पांडुपुत्रांपासून मी बचावीन' अशी कर्णाची ती आत्मश्लाघा माझे धार दिलेले हे बाण मिथ्या करून दाखवितील! कृष्णा, कौरवहो, पांडवांचा पुत्रादिकांसहवर्तमान ठार मारून

त्यांचा सर्व उद्योग मी समाप्त करितों !' अशी ज्यानें फुशारकी मिरविली, त्या कर्णाला मी आज सर्व धनुर्धरांच्या समक्ष ठार मारिन ! कृष्णा, ज्याच्या बाहुबलावर विसंबून मूर्ख दुर्योधनानें आमचा नित्य अपमान केला, त्या कर्णाचा आज युद्धांत वध करून मी धर्मराजाला संतोषवीन ? माधवा, मी आज प्रथम नानाविध शरांचा मोठ्या आवेशानें शत्रूंवर असा कांहीं भडिमार करीन कीं, ते अगदीं त्रस्त होऊन बाणप्रहारांनीं पटापट धारातीर्थीं पडूं लागले ह्मणजे रथकुंजरादिकांनीं मही अगदीं चित्तविचित्र होईल आणि मग तेथें त्या घोर संग्रामांत प्रतापशालीं कर्ण हा प्राप्त झाला असतां बाणवृष्टीनें मी त्याचा प्राण घेईन ! कृष्णा, आज मी कर्णाला वधिलें ह्मणजे धृतराष्ट्राचे पुत्र व तत्पक्षीय भूपाळ वाचरून जाऊन सिंहाला भिऊन पळत सुटणाऱ्या मृगांप्रमाणें दशादिशांस पळून जातील ! गोविंदा, आज मी मुहूदांसह व पुत्रांसह कर्णाला युद्धांत वधिलें ह्मणजे दुर्योधन राजा स्वतःला दोष लावून हळहळूं लागेल ! कृष्णा, आज कर्णाला हत झालेला पाहून मूढ श्रेण्यासाठीं धडपडणारा दुर्योधन राजा 'सर्व धनुर्धरांमध्ये अर्जुनच श्रेष्ठ' असें जाणील ! कृष्णा, आज मी कर्णाचा वध करून पुत्र, पौत्र, अमात्य व सेवक ह्यांसहवर्तमान धृतराष्ट्र राजाला सर्व राज्यांत निराश्रित करून सोडीन ! केशवा, आज चक्रांग (बगळे) व द्रुमरे नानाविध मांसाद पक्षी माझ्या बाणांनीं छिन्नभिन्न करून टाकिल्ल्या कर्णाच्या गात्रांवर खुशाल मंचार करतील ! कृष्णा, मी आज समरभूमीवर सर्व वीरांच्या देखत जलाल अशा विपाठ व क्षुर बाणांनीं कर्णाचें मस्तक छेदून त्याच्या देहाचे तुकडे तुकडे उडविले ह्मणजे युधिष्ठिराची महान् चिंता दूर होईल व त्याच्या चित्ताला स्वास्थ्य

मिळेल ! कृष्णा, आज मी बंधुवर्मासमवेत राधेयाला ठार मारिलें ह्मणजे धर्मपुत्र युधिष्ठिराचें मन प्रसन्नता पावेल ! कृष्णा, आज मी कर्णाबरोबर त्याचे जे नीच अनुयायी आहेत त्यांजवर देवील अग्नीप्रमाणें प्रस्तर व सर्पाप्रमाणें भयंकर असे शर टाकीन व सुवर्णाची चिलखते चढविलेल्या आणि जडाबाचीं कुंडले धारण केलेल्या योद्ध्यांनीं हें महीतळ झांकून काढीन ! हे मधुसूदना, आज अभिमन्यूच्या सर्व शत्रूंची शिरे व गात्रे जलाल बाणांनीं छेदून त्यांची मी छकलें उडवीन आणि कौरवहीन पृथ्वी करून ती धर्मराजाला देईन किंना अर्जुनरहित मेदिनी होऊन तिजवर तुला भ्रमण करावें लागेल ! कृष्णा, आज कर्णाचा वध करून सर्व धनुर्धरांच्या कौरवांविषयीं जो माम्ना संताप होत आहे त्याच्या, वगांडीवापासून सोडिल्ल्या शरांच्या ऋणांतून मी मुक्त होईन ! कृष्णा, माझ्या मनाला तेरा वर्षे जी तळमळ लागलेली आहे, ती आज एकदांची संपेल ! कृष्णा, इंद्रानें शंभुरामुराला जसें वधिलें तसें मी आज कर्णाला वधिले ह्मणजे मित्रकार्यासाठीं उद्युक्त झालेल्या सोमकांच्या महारथांना कृतार्थता वाटेळ; आणि मी कर्णाला वधून जय मिळविला ह्मणजे सात्यकीला माझ्याविषयीं किती कौतुक उत्पन्न होईल हें सांगतांच येत नाहीं ! कृष्णा, आज मी कर्णाला व त्याच्या महारथ पुत्राला रणांत ठार मारिलें असतां भीमाला, नकुलाला, सहदेवाला व सात्यकीला अतिशय आनंद वाटेळ ! कृष्णा, आज घोर रणांत मी कर्णाला मारून पांचाल, धृष्टद्युम्न व शिखंडी ह्यांच्या ऋणांतून उत्तीर्ण होईन ! आज क्रोधायमान झालेला अर्जुन समरांत कौरवांचा व कर्णाचा संहार उडवील तो सर्व वीरांच्या दृष्टीस पडेळ ! आणि मग मी पुनः तुझ्याजवळ स्वतःची थोरवी सांगेन !

कृष्णा, ह्या लोकीं धनुर्विद्येत किंवा पराक्रमांत माझी बरोबरी करणारा कोणी तरी आहे काय ? तसाच माझ्यासारखा शांत व कोपिष्ठ असा तरी दुसरा कोणी आहे काय ? मज महाधनुर्धराशी मुर, अमुर व इतर सर्व प्राणी एकत्र होऊन लढण्यास प्राप्त झाले असतांही मी आपल्या बाहुबलाने त्या सर्वांना जिंकून ! स्वधित मी मोठ्या बलादच योद्ध्यांपेक्षांही बलादच आहे ! गांडीव धनुष्यापासून बाणांचा भडिमार करून, हिमकाच्या शेवटी तृणराशीवर पतन पावलेल्या अग्नीप्रमाणे सर्व कौरवांना व बाल्हिकांना सैन्यासह मी एकट्या मोठ्या आवेशाने जाळून टाकीन ! हीं पहा माझ्या हातांवर बाणचिन्हे लिहिलेलीं असून हे बाण लावून आकर्ण ओढिलेले दिव्य धनुष्यही दृग्गोचर होत आहे ! ह्याप्रमाणेच माझ्या पायांवर ध्वजांची व रथांची चिन्हे आहेत, तेव्हां माझ्यामारख्या लोकोत्तर वीराला युद्धांत जिंकण्यास कोण समर्थ होईल ?

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, तो अद्वितीय अर्जुन ह्याप्रमाणे कृष्णाला ह्मणाला व क्रोधाने रक्तवत् आरक्त नेत्र करून तत्काळ भीमाला सोडविण्याकरितां आणि कर्णाचे मस्तक उडविण्याकरितां रणांमध्ये घुसला.

अध्याय पंचाहत्तरावा.

—:०:—

संकुलद्वंद्वयुद्ध.

धृतराष्ट्र विचारतो:—बा संजया, पांडवसंजय व कौरव ह्यांनी अगदी ल्याट करून अतिशय दारुण व अगाध संग्राम चालविला असतां तेथे रणांगणांत अर्जुन प्राप्त झाल्यावर मग त्याचे व कर्णाचे जे युद्ध जुंपले त्याचे सविस्तर वर्णन कर.

संजय सांगतो:—मोठमोठ्या ध्वजांनी

शोभायमान असलेलीं तीं दोन्ही प्रचंड सैन्ये जेव्हां अगदीं एकवटून लढूं लागलीं, तेव्हां उष्णकाळच्या अखेरीस मेघांचे समुदाय जशा भयंकर गर्जना करितात, तशीं दुंदुभीच्या ध्वनींच्या योगें भयंकर गर्जना करूं लागलीं. त्या समयीं त्या दोन्ही दळांतील प्रचंड गज ह्मणजे जणू काय मेघच; शस्त्रास्त्रें ह्या जलधारा; वाद्यें, रथांच्या धावा व टाळ्या हे मेघध्वनि; सुवर्णमंडित आयुधे हीं वीज; आणि शर, खड्डे व नाराच बाण ह्या जणू काय पर्जन्याच्या सरीच असें भासत होते ! राजा, त्यांनीं समरभूमीवर खड्गादिकांच्या योगें एकसारखा क्षत्रियसंहार चालविला होता व त्यामुळें रणांगणांत रुधिराचे ओघ मोठ्या वेगाने वहात होते ! राजा, अकाळीं भयंकर पर्जन्यवृष्टि झाल्यानें जसा प्राण्यांचा संहार होतो, तसा त्या वेळीं उभय सैन्यांत प्राण्यांचा मोठा संहार झाला ! त्या समयीं तीं दोन्ही दळे मोठ्या विचित्र रीतींनीं युद्ध करित होतीं. कोठें कोठें अनेक रथी एकत्र होऊन एका रथ्याला चोहोंकडून घेरीत व त्यास यमसदनीं पाठवून देत; कोठें कोठें एकच रथी एकाच रथ्याला जर्जर करून ठार मारी; कोठें कोठें एक रथी अनेक बलादच रथ्यांनाही मृत्युमुखांत लोटी; कोठें कोठें एकटा रथी दुसऱ्या रथ्यावर हल्ला करून त्यास त्याच्या सारथ्यासुद्धां व अश्वसुद्धां ठार करी; आणि कोठें कोठें एकटा गजयोद्धा बहुत रथ्यांवर व घोडेस्वारांवर चाल करून त्यांस वधी ! अशा प्रकारें कौरवपांडवांचें तुंबळ युद्ध चाललें असतां अर्जुन तेथें आला; आणि कौरवांवर एकसारखा बाणांचा पाऊस पाडीत, सारथि व अश्व ह्यांसह रथ्यांना, घोड्यांसह वर्तमान स्वारांना व पायदळांच्या अनेक टोळ्यांना ठार मारण्याचा सपाटा लावून त्यानें सर्व कौरवसेनेची मोठी प्रेधा उडवून दिली ! त्या घोर संग्राम-

मांत कृप व शिखंडी हे एकमेकांशी लढू लागले; दुर्योधनाला सात्यकीने गांठिले; श्रुत-श्रुत्याचें अश्वत्थाम्याशी युद्ध जुंपले; युधामन्यु चित्रसेनावर चालून गेला; महान् संजय वीर उत्तमौजा हा कर्णपुत्र सुषेणाशी लढा करून झगडू लागला; क्षुधार्ते सिंह ज्याप्रमाणें मोठ्या वृषभावर धावून जातो, त्याप्रमाणें सहदेव शकुनीवर चालून गेला; नकुलपुत्र तरुण शतानीक व कर्णपुत्र तरुण वृषसेन हे एकमेकांवर बाणांचा भडिमार करू लागले; विचित्र युद्ध करणारा बलाढ्य माद्रीपुत्र नकुल ह्याने कृतवर्म्यावर चाल केली; पांचालांचा अधिपति सेनानायक धृष्टद्युम्न ह्याने कर्ण व त्याचें सैन्य ह्यांशी युद्ध आरंभिले; दुःशासनानें संशप्तकांच्या प्रचंड भारतीय सेनेसहवर्तमान युद्धांत असह्य-प्रतापवान् दुर्धर भीमसेनावर हल्ला केला; आणि मग अतिशय निकराचें घोर रणकंदन चालू झाले. त्यांत उत्तमौजानें मोठ्या वीरश्रीने कर्णाच्या पुत्राचें मस्तक उडविलें आणि तें भूतलावर पतन पावले, तेव्हां पृथ्वी व अंतरिक्षांत महान् ध्वनि उद्भवला ! राजा, तेव्हां सुषेणाचें मस्तक रणांगणांत पतन पावलेले पाहून कर्णाला मनस्वी दुःख झाले व त्याने तत्काळ मोठ्या क्रोधानें धार दिलेल्या जलाल बाणांचा वर्षाव करून उत्तमौजाचा, ध्वज व हय ह्यांचा विध्वंस उडविला ! इतक्यांत उत्तमौजा तीक्ष्ण बाणांची वृष्टि करीत कृपाचार्याच्या ममीप गेला आणि लखलखात खड्डानें पृष्ठरक्षकांचा प्राण घेऊन व कृपाचार्याचे घोडे मारून शिखंडीच्या रथावर चढला. तेव्हां कृप हा रथहीन झाला आहे असे पाहून शिखंडीने त्याजवर बाण सोडण्याचें मनांत आणिलें नाहीं. पण तितक्यांत अश्वत्थामा कृपाचार्याच्या रथाजवळ आला; व चिखलांत रुतलेल्या त्रैलाला जसे वर काढावे, तसे त्याने कृपाचार्याला त्या प्राणसंकटांतून वर

काढिले ! इकडे, राजा, हेमकवच धारण केलेल्या वायुपुत्र भीमानें जलाल बाणांचा भडिमार करून मध्यान्हीच्या ग्रीष्मकालीन सुर्वाप्रमाणें तुझ्या सैन्याला अगदीं प्रस्त करून सोडिले !

अध्याय शहात्तरावा.

—:०:—

भीमसेन व विशोक ह्यांचा संवाद.

संजय सांगतो:—नंतर त्या तुंबल युद्धांत कौरवांकडील बहुत योद्ध्यांनी भीमसेनाला गराडा घालून त्याजवर बाणांचा वर्षाव आरंभिला; तेव्हां भीमसेन सारख्याला म्हणाला, 'सूता, जिकडे धृतराष्ट्राचे पुत्र असतील तिकडे माझा रथ मोठ्या वेगानें घेऊन चल. मी आतां त्या धृतराष्ट्रपुत्रांना यमसदनीं पाठवून देतो ! भीमसेनाची अशी आज्ञा होतांच सारख्याने लागलाच मोठ्या वेगानें तो रथ तुझ्या पुत्रांच्या सैन्यासमीप नेला. तें पहातांच तुझ्या सैन्यांतले इतर हत्ती, घोडे, रथ व पायदळ ह्यांनीं चोहोंकडून तें धावून घेऊन भीमसेनाच्या त्या महावेगवान् श्रेष्ठ रथावर सर्व जाजूनीं सुवर्णपुंख बाणांचा एकसारखा भडिमार सुरू केला. पण महात्म्या भीमसेनानें उलट सुवर्णपुंख बाणांचा वर्षाव करून, आपणांवर येत असलेले ते सर्व बाण छेदिले आणि त्यामुळे भीमसेनाच्या बाणांनीं दोनदोन तीनतीन तुकडे झालेले ते शत्रूंकडील सर्व बाण भूतलावर पतन पावले. ह्याप्रमाणें कौरवांकडील सर्व बाणांचा विध्वंस उडवून रथ, गज, अश्व व नर ह्यांना भीमसेनानें एकसारखा ठार मारण्याचा सपाटा चालविला; तेव्हां वज्रप्रहारानें हत झालेले पर्वतच खालीं कोसळत आहेत असें वाटले व त्या महान् क्षत्रियांत जिकडे तिकडे एकच कलहोळ उडाला ! मग, पक्षी जसे चोहोंकडून वृक्षावर चालून जातात, तसे ते सर्व कौरववीर त्या

भीमसेनावर चालून गेले आणि मग पुनः भयंकर रणकंदन मातले! राजा, ह्या वेळीं तुझे सैन्य जेव्हां भीमावर तुटून पडले, तेव्हां त्या अनंत-वीर्यावान् भीमसेनानें पराक्रमाची अगदीं पराकाष्ठा केली. जणू काय प्रलयकालीं सर्व प्राण्यांचा अंत करणारा काळच त्रैलोक्य जाळण्यास उद्युक्त झाल्य आहे असें त्या समर्थी भासले; आणि आ पसरून धावून आलेल्या धमाच्या तोंडांत ज्याप्रमाणें भूतगण प्रविष्ट व्हावे, त्याप्रमाणें भीमसेनापुढें तुझ्या सैनिकांची अवस्था होऊन त्यांच्यानें तग काढवेनासा झाला; व सोसाट्याच्या वाऱ्यानें उधळून दिलेल्या भेषसमुदायाची जशी दाणादाण उडते, तशी भीमसेनानें उधळून दिलेल्या तुझ्या सैन्याची दाणादाण उडून तें सर्व भयभीत होतसातें दशादिशांस पळून गेलें! तेव्हां बुद्धिमान् बलिष्ठ भीमसेन मोठ्या आनंदानें पुनः सारख्याला म्हणाला, “सूता, ते एकवटून आपणावर येत असलेले रथ व ध्वज आपले आहेत किंवा शत्रूंचे आहेत हें नीट पहा बरें. मी युद्धांत गर्क असल्यामुळे मला त्याचा निश्चय होत नाही. कदाचित् माझ्या हातून आपल्याच सैन्यावर बाणांची वृष्टि होईल, ह्यासाठीं नीट न्याहाळून पहा. विशोका, मी तिकडे तिकडे पाहार्तो, तिकडे तिकडे मला शत्रूंचेच सैन्य दिसत आहे. सर्वत्र शत्रूंचेच रथ व ध्वजाग्रे अवलोकन करून मला फार भय वाटतें! पहा धर्मराजा दुःस्वार्त असून अर्जुन अद्यापि आला नाही; ह्यासाठीं माझ्या जिवाला फारच तळमळ लागली आहे. सारथे विशोका, मला अतिशय दुःख होतें तें हें कीं, धर्मराजा मला शत्रूमध्ये सोडून आपण निघून गेला! ह्यावरून तो जिवंत आहे कीं मृत झाला हेंही मला समजत नाही! अर्जुन जर परत येता, तर कांहीं तरी समाचार कळला असता; पण तोही अद्याप आला

नाहीं, तेव्हां तो तरी खुशाल आहेना, अशी मला अधिकच चिंता वाटत आहे! असो; विशोका, असें जरी आहे, तरी शत्रूंचें हें बलाढ्य सैन्य आज रणांगणांत म्यां मोठ्या आवेशानें वधिलें असतां आज तुला व मला दोघांनाही मोठा आनंद होईल. ह्याकरितां तूं माझ्या रथावरील सर्व बाणभाते तपासून पहा आणि प्रत्येकांत कोणकोणत्या जातीचे व कोणकोणत्या प्रमाणांचे किती किती बाण शिल्लक आहेत तें मला नीट सांग.”

विशोक म्हणाला:—वीर! भीमसेना, आपल्या रथावर साठ हजार मार्गण बाण आहेत. त्याप्रमाणेंच क्षुर व भल हे प्रत्येकीं दहा दहा हजार आहेत; नाराच बाण दोन हजार आहेत, व प्रदर बाण तीन हजार आहेत. भीमा, आपल्या रथावर जो शस्त्रास्त्रांचा सांठा अवशिष्ट आहे, तो वाहून नेण्याला सहा बैलांचा रणगाडा कांहीं समर्थ होणार नाही! ह्यासाठीं, हे प्राज्ञा, गदा, खड्गें, प्रास, मुद्गर, शक्ति, तोमरें, वगैरे जीं तुझीं आयुधें, त्यांपैकीं सहस्रावधि जरी तूं शत्रूवर टाकिलीस, तरी कांहीं हरकत नाही. आयुधें संपतील अशी तूं मुळीच भीति बाळगूं नको.

भीमसेन म्हणाला:—सूता विशोका, आजच्या ह्या भयंकर संग्रामांत तूं माझा पराक्रम अवलोकन कर. मी आज शत्रूवर अत्यंत वेगवान् बाणांचा भडिमार करून हीं सर्व समरभूमि आच्छादून टाकीन आणि अंतरिक्षभर बाणांचें छत पसरून सर्वत्र अंधकार पाडीन व जणू काय ही यमपुरीच होय असें सर्वांच्या प्रत्यासास आपण देईन! सूता, आज लहानथोर सर्व पार्थिवांना एक तर हा भीमसेन युद्धांत पडला असें दिसेल, किंवा ह्या एकट्यानें रणांगणांत सर्व कौरवांना जिंकिलें असें त्यांच्य निदर्शनास येईल! बाबारे, आज एक तर सर्व कौरव रणांगणांत पडतील, किंवा सर्व लोव

माझ्या बालपणापासून ह्या वेळपर्यंतच्या सर्व पराक्रमांचें स्मरण करून नित्य माझे वर्णन करीत रहातील! एक तर एकदा मी त्या सर्वांना वधीन किंवा ते सर्व मला वधीतील! मृता, ज्यांच्या कृपेनें उत्तम कर्म करण्याचें सामर्थ्य येते त्या देवांनीं मात्र आज मजवर प्रसन्न होऊन मला पराक्रम करण्याची शक्ति द्यावी. मृता, यज्ञांत आह्वान केलें असतां इंद्र जसा तथें त्वरित प्राप्त होतो, तसा ह्या समर्थी येथें शत्रुसंहारक अर्जुन प्राप्त झाला तर चांगलें होईल. विशोका, ह्या भारती सेनेची कशी दाणादाण उडाली पहा. अरे, हे भूपाळ पळून कां बरे जाऊं लागले! खचित महाबुद्धिमान् नरश्रेष्ठ सव्यसाची अर्जुनानें ह्या सैन्यावर मोठ्या वेगानें बाणांचा भडिमार करून त्यास बाणांनीं झांकून काढण्याचा क्रम आरंभिल्यामुळें ही सर्व धावपळ उडाली आहे ह्यांत मंदह नाही! विशोका, हे पहा रणांगणांत ध्वज, गज, हय व नर हे एकसारखे पळत आहेत! तसेच हे पहा रथ व त्यांवरील वीर हे शर व शक्ति ह्यांनीं हत होतसाते धूम ठोकून पळत आहेत! मृता, ही पहा कौरवसेना धनंजयाच्या कांचनमंडित मयूरपुंख वज्रतुल्य बाणांनीं कशी प्रसन्न होऊन मृत्युमुखी पडत आहे व वारंवार तिच्या मदतीला बाहेरून अधिक अधिक भरती होत आहे! मृता, ते पहा रथ, अश्व व गज उधळत चालले असून त्यांखालीं पायदळाच्या टोळ्यांचा अतिशय चुराडा उडत आहे! वणव्यांत मांडलेल्या हत्तींप्रमाणें वेफाम होऊन हें सर्वच कौरवसैन्य हाहाकार करीत पळत मुटलें पहा! विशोका, रणांगणांत हे प्रचंड हत्ती कशी महान् गर्जेना करीत आहेत ती अवलोकन कर!

विशोक म्हणाला:—भीमसेना, अर्जुन इकडे आला, ह्यांत संशय तो कमला? अरे, क्षुब्ध झालेल्या अर्जुनानें गांडीवाचा जो टणत्कार

चालविला आहे. त्याचा घोर शब्द तुला ऐकूं येत नाही काय! अरे, तुझे कान शाबूत आहेतना? भीमा, तुझे आज सर्व मनोरथ सिद्धीस गेले! तो पहा गजसैन्यांत मारुति दिसें लागला! ती पहा गांडीवाची प्रत्यंचा नीलवर्ण मेघापासून उसळणाऱ्या विबुल्लतेप्रमाणें स्फुरण पावत आहे! तो पहा अर्जुनाच्या ध्वजाप्रावर आरूढ झालेला वानर आसमंतात् पहात आहे! ती पहा त्या मारुतीला पाहून रणांगणांत शत्रुसैन्याची कशी त्रेधा उडाली! अरे, मला स्वतःला मुद्धां त्याजकडे पाहून भय उत्पन्न झालें! तो पहा अर्जुनाचा चित्रविचित्र किरीट किती झळकत आहे! तो पहा त्या किरीटावरील दिव्य मणि दिवाकराप्रमाणें तळपत आहे व अर्जुनाच्या वगलेंतला भयंकर शब्द करणारा देवदत्त शंख शुभ्र मेघांप्रमाणें दिसत आहे! तो पहा प्रतोदधारी जनार्दन शत्रूंच्या सेनेतून रथ घेऊन इकडे येत आहे! त्याच्या वगलेंत सूर्याप्रमाणें कांतिमान्, वज्राप्रमाणें बळकट नाभि अमलेंलें, वस्तन्याप्रमाणें जलाल धार दिलेंलें, युद्धकुलाची कीर्ति वादविणारें व त्यामुळें सदासर्वकाळ यादव ज्याची पूजा करितात असें ते चक्र शोभत आहे! भीमसेना, त्या पहा अर्जुनानें क्षुर बाणांचा भडिमार करून महान् महान् हत्तींच्या मरळ वृक्षांमारुत्या प्रचंड दुंडा छेदून टाकिलेल्या खाली पडत आहेत! ते पहा आणखी अर्जुनाच्या बाणांनीं हत झालेले मोठमोठे हत्ती व त्यांवरील योद्धे वज्रानें तोडून टाकिलेल्या पर्वताप्रमाणें धडाधड खाली आदळत आहेत! तमास, हे कांतेया, चंद्राप्रमाणें अत्यंत तेजस्वी असा तो कृष्णाचा श्रेष्ठ पांचजन्यशंख अवलोकन कर; त्याप्रमाणेंच त्याच्या वक्षःस्थलावरील तो देदीप्यमान कौस्तुभ मणि व कंठी विराजणारी ती वनमाला पहा! भीमा, ह्यावरून खचित तो महारथ अर्जुनच शत्रूंच्या सैन्याची

दाणादाण उडवीत उत्कृष्ट शुभ्र अश्र जोडलेल्या व कृष्ण मारुथि अमलेल्या रथांत आरूढ होऊन इकडे येत आहे. भीमसेना. गरुडाच्या पंखां-
 पामून उत्पन्न झालेल्या प्रचंड वाऱ्याने मोठ-
 मोठाळीं अरण्ये उत्पन्न होऊन कोमळनात, तमें
 हें इंद्रतुल्य महापराक्रमी अर्जुनाच्या शरप्रहारां-
 नीं विदीर्ण झालेंतें कौरवांचें चतुरंग सैन्य
 कोमळत आहे पहा ! अर्जुनांनें महात बाणांचा
 वर्षाव करून रणामध्ये हे चारशें रथी, अश्र व
 मारुथि ह्यांमह शर मारिले पहा ! त्याप्रमाणेंच
 त्यांनें मातशें हत्ती आणि अनेक रथ. अश्र व
 पदाति ह्यांचा हा नाश उडविला तो अवलोकन
 कर ! भीमा, हा पहा वलिष्ठ अर्जुन कौरवांचा
 मंहार करीत 'चित्रा' नभशत्रुप्रमाणें तुझ्या
 मंनिघ येत आहे; आतां तुझे हेतु मिद्धीमि गेले
 ह्यांत संदेह नाही. आतां तुझे शत्रु मेळच ! तूं
 आतां चिंता करूं नको. तूं दारायु हो व तुझे
 बल वृद्धिगत होवो.

भीमसेन म्हणाला:— मृता विशोका. अर्जुन
 प्राप्त झाला अशी जीप्रिय वार्ता तूं मला मांगि-
 तलीम. त्यामुळे मी प्रमन्न झालें आहे. मी
 तुला चांदा उत्तम गांव. शंभर दामी व
 वीम रथ देईन.

अध्याय सत्याहत्तरावा.

—:०:—

शकुनीचा पराभव.

संजय मागतो:— इकडे. रथांचा घणघणाट
 व रणांगणांत लढणाऱ्या योद्ध्यांचीं मिहगर्जना
 श्रवण करून अर्जुन कृष्णाला म्हणाला. 'कृष्णा,
 आतां अध्याना जलद चालव.' तेव्हां कृष्ण
 अर्जुनाला म्हणाला, 'हा पहा मी हां हां म्हणतां
 जेथें भीमसेन आहे तेथें रथ घेऊन जातो.'
 राजा, असें म्हणून कृष्णांनें सुवर्ण, मौक्तिकें व
 रत्नें ह्यांच्या अलंकारांनीं शृंगारलेले असे शुभ्र

अश्र ज्याम जोडिले होते असा तो अर्जुनाचा
 रथ जलद चालविला. तें पाहून, अत्यंत क्रोधाय-
 मान झालेला देवेंद्र वज्र हातांत घेऊन
 जंभामुगाला वधून विजय मिळविण्याकरितांच
 निघाला आहे असा भास झाला ! राजा धृ-
 राष्ट्रा. नंतर अर्जुनाचा तो रथ तत्काळ कौरव-
 सेनसमीप प्राप्त झाला तेव्हां त्याजवर शत्रू-
 कडील रथ, अश्र. गज व पदाति ह्यांचे समुदाय
 चवताळून एकदम धावून आले; आणि त्यांनीं
 बाणांच्या शळ्यांनीं, रथांच्या घणघणाटांनीं व
 घोड्यांच्या टापांनीं सर्व भूमंडल व दाही दिशा
 दुमदुमून मोडिल्या ! राजा. त्या समयीं अर्जु-
 नाचें व त्या कौरवसेन्याचें मोठें घनघोर युद्ध
 झालें व त्यांत बहुत वीरांच्या देहांता, प्राणांचा
 व पातकांचा मंहार उडाला ! जणू काय त्या
 वेळीं त्रलोक्यमिळविण्यासाठीं विजयश्रेष्ठ देवा-
 धिदेव विष्णु व अमुर हेच लढत आहेत असें
 भासलें ! राजा. त्या भयंकर संग्रामांत शत्रूंनीं
 जीं लहान मोठीं शस्त्रां अर्जुनावर टाकिलीं
 तीं सर्व त्या किराटमाली पांडुपुत्रांनें तोडिलीं;
 आणि उलट शत्रूंवर धार दिलेल्या क्षुर, अर्ध-
 चंद्र व भल्ल बाणांचा भडिमार करून पटापटा
 त्यांचे वाहु उतरले व मस्तकें छेदिलीं ! राजा,
 त्या वेळीं छत्र, चामरें, ध्वज, अश्र, गज, रथ
 व पत्तिगण हे अनेक प्रकारांनीं उत्पन्न व विरूप
 होऊन रणांगणांत पडूं लागले, तेव्हां जणू काय
 वाऱ्यांनें उन्मूलित झालेल्या वृक्षांचीं बनेच भू-
 तलावर कोमळत आहेत असें वाटलें ! राजा,
 ज्यांवर ध्वज, पताका व वीर हे विराजत होते,
 असे ते प्रचंड हत्ती सुवर्णपुख शरांनीं विद्ध
 होतमाने भूतलावर पतन पावले तेव्हां जणू
 मोठमोठाले पर्वतच प्रज्वलित झाले आहेत असें
 दिसें लागलें ! ह्याप्रमाणें वज्रतुल्य उत्तम शरांचा
 भडिमार करून अश्र, गज व रथ ह्यांचा नाश

उडविल्यावर, पूर्वी बलाचा वध करण्याकरितां इंद्र जमा त्याजवर चालून गेला, तसा अर्जुन हा कर्णाचा वध करण्यासाठीं तत्काळ त्याजवर चालून गेला. तेव्हां, राजा, मगर जमा समुद्रांत प्रवेश करितो, तसा त्या महाबाहु शत्रुसंहारक पुरुषव्याघ्र अर्जुनांनं तुड्या सैन्यांत प्रवेश केला. त्या समयीं तुड्या सैन्याला मोठी वीरश्री चढली आणि तुड्या सैन्यांतले रथ, गज, अश्व व नर हे चोहोकरून धावून येऊन अर्जुनावर तुटून पडले! आणि ते सर्व कौरवदळ अर्जुनावर चालून आले तेव्हां मोठा भयंकर ध्वनि उत्पन्न झाला; जणू काय खवळलेल्या समुद्रच गर्जन आहे असें तेव्हां वाटले! त्या समयीं रणांगणांत तुड्या सैन्यांतले ते प्रतापशाली महारथ योद्धे आपल्या प्राणांची मुळीच पर्वा न करितां मोठ्या त्वेषानें अर्जुनावर धावून आले व त्यांनीं अर्जुनावर एकसारखा बाणांचा वर्षाव सुरू केला. तेव्हां, सोमाद्याचा वाग जमा मेवांची दाणादाण उडवितो तशी अर्जुनांनं उलट शत्रूंवर बाणवृष्टि करून त्यांची दाणादाण उडविली! परंतु इतक्यांत ते सर्व महाधनुर्धर वीर एकत्र होऊन पुनः आपल्या रथांतून अर्जुनावर बाणांचा वर्षाव करीत चालून आले आणि त्यांनीं त्यास जळाल बाणांनीं विद्ध केले. ते पाहून अर्जुनाला अतिशय संताप चढला आणि त्यानें हजारों रथ, वाजी व हत्ती ह्यांस बाणप्रहारांनीं हत करून यममदनीं पाठविले! राजा, अर्जुनाचा असा भयंकर पराक्रम अवलोकन करून तुड्या सैन्यांतल्या महारथांना अतिशय भीति पडली व ते आपआपल्या रथांतून एका-मागून एक चालेनें झाले! कौरवांकडील ते महारथ मोठ्या निकरानें अर्जुनाशी उठून अमनां अर्जुनांनं त्यांपैकीं चारशें महारथांना जळाल बाणांच्या भडिमारांनं यमलोकीं पाठविले! ह्याप्रमाणें नानाविध निशित शरांचा वर्षाव करून

अर्जुनांनं समरांगणांत कौरवांकडील महारथांचा संहार आरंभिला, तेव्हां त्यांची उमेद अगदीं नष्ट झाली व ते अर्जुनाला सोडून देऊन दशदिशांस पळून गेले! सैन्याच्या बिनीवर आरंभीच जेव्हां ही धावपळ सुरू झाली, तेव्हां पर्वताच्या कड्यावर समुद्राचा प्रचंड ओष आदळून फुटला अमनां जमा महान् शब्द हातो तसा महान् शब्द त्या पळणाऱ्या सैन्यांत होऊं लागला! असा; अशा प्रकारें कौरवसैन्याला तीक्ष्ण बाणांनीं अत्यंत विद्ध करून त्याची दाणादाण उडविल्यावर अर्जुन कर्णाच्या सैन्याच्या अग्रभागीं प्राप्त झाला. त्या समयीं, राजा, पूर्वी गरुड सर्पावर चालून गेला तेव्हां जशी त्यानें गर्जना केली, तशी शत्रूंवर चाल करितांना अर्जुनांनं प्रचंड गर्जना केली; आणि तो महान् शब्द श्रवण करून महाबल भीमसेन अतिशय आनंदित झाला व त्यास अर्जुनाला भेटण्याची उत्कट इच्छा उत्पन्न झाली. राजा, अर्जुन रणांगणांत आला असें कानीं पडतांच प्रतापशाली भीमसेनाची वीरश्री अत्यंत वाढली व त्यानें आपल्या जिवाकडे न पहातां शत्रूंचा संहार उडविण्यास प्रारंभ केला. त्या समयीं तो प्रतापवान् वायुपुत्र वायुवेगांनं वायुमारुतीं झडप घालीत शत्रूंमध्ये मंचरू लागला आणि त्यामुळे तुझें मन्य जर्जर होऊन, फुटलेलीं नाव जशीं समुद्रांत बुडून नष्ट होत, तसें विदीर्ण होऊन नष्ट झाले! तेव्हां भीमानें मोठ्या चलाखीनें शत्रूंवर उग्र बाणांचा भडिमार करून त्यांचे हस्तपादादिक अवयव छेदिले व त्यांस यममदनीं पाठविले! त्या वेळीं भीमाचें तें अमानुष बल अवलोकन करून सर्वांना तो प्रलयकालीन यमच वाटला व त्याच्यापुढे सर्व योद्धे भयभित होऊन व्याकूल पडले! राजा, ह्याप्रमाणें त्या बलिष्ठ कौरवसैन्याची भीमसेनांनं दुर्दशा उडविली तेव्हां दुर्योधन राजा महा-

धनुर्धर योद्ध्यांना व सर्व मैत्रिकांना म्हणाला, वीरहो, तुम्ही सर्व मिळून भीमाचा वध करा. एकदा भीमाचा वध झाला म्हणजे सर्व पांडव-मैत्र्य वधिलेच असें मी समजतो ! 'दुर्योधनाची ती आज्ञा कारवाकडील सर्व योद्ध्यांना मान-वली आणि त्यांनी चोहोंकडून बाणांचा वर्षाव करून भीमसेनाला आकून काढिले ! त्या वेळी अनेक हत्ती आणि जथेच्छु नग व रथी हे वृकादरावर धावून गेले व त्यांनी त्याम चोहों-कडून घेऊन टाकिले. ह्याप्रमाणे जेव्हां त्या शूर-कांगवांनी भीमसेनाला सर्व बाजूंनी वेढा घातला. तेव्हां जणू काय चंद्राला नक्षत्रांनीच वेढिले आहे किंवा पूर्णचंद्राच्या सभोवती खेळच पडले आहे असें वाटू लागले ! त्या समयी भीमसेनाचा तो पराक्रम पाहून रगांगणांत प्रत्यक्ष नगश्रेष्ठ अर्जुनच तळपत आहे असें सर्वांस भासले ! त्या वेळी कारवाकडील वीरांचे व भीम-सेनांचे मोठे तुंचळ युद्ध सुरू झाले. तेव्हां कारवा-कडील सर्व शूर भूपाळांनी वृकादराला ठार मार-ण्याच्या हेतूने संतापांत डोळे लाळ करून त्याजवर भयंकर शरवृष्टि केली. पण भीमसेनांने त्या महासैन्यावर वांकदार पेच्यांच्या बाणांचा भडिमार चालवून तिची फळी फोडली; व तिचे विदारण करून. मामा जसा उदकांत लावि-लेल्या जाळ्यांतून निमटून जातो तसा तो पांडु-पुत्र शत्रूंच्या त्या वेढ्यांतून निमटून गेला ! त्या समयी भीमानें समरांगणांतून पराङ्मुख न होणारे दहाहजार हत्ती. दोन लक्ष दोनशें मनुष्ये. पांच हजार घोडे व शंभर रथी वधिले आणि शोणिताची नदीच उत्पन्न केली ! राजा, त्या भयंकर रुधिर-नदीचे काय वर्णन करावे ? रुधिर हें त्या नदीतले उदक होय; रथ हे भोवरे होत; हत्ती ह्या मुमरी होत; मनुष्ये हे मामे होत; अथ हे नक होत; केश हे शेवाळ व हिरवे गवत होय; व छिन्न भुज हे महान् महान्

सर्प होत ! राजा, त्या नदीतून पुष्कळ रत्नांचे समुदाय वहात चालले होते ! तिच्यामध्ये वीरांच्या मांड्या ह्या जणू काय सुसरीच होत्या; मज्जा हाच चिखल झाला होता; मस्तके हे दगड होते; धनुष्ये ही काश तूणाप्रमाणे दिमत होती; बाण हे लव्हाळ्याप्रमाणे दिमत होते; गदा व परिघ ही पश्यादिकांची बस-ण्याचीं स्थळे होती; छत्रे व ध्वज हे हंस होते; उत्तम शिखराणें हा फेंस होता; हार ही कमले होती; धूलिकण हे त्या कमळांतले रजःकण होते; पुष्पमाळा ह्या लाटा होत्या; आर्यजन हे तिच्यातील जलचर होते; भीरुजनांना ती नदी अत्यंत दुस्तर होती; योद्धे हे तिच्यातील मगर होते; आणि अशा प्रकारची ती लोकोत्तर नदी पितृलोकाप्रत वहात चालली होती ! राजा, भीमसेनांने ती भयंकर नदी एका क्षणांत निर्माण केली ! ज्याप्रमाणे उग्र वैतरणी नदी अज्ञ जनांना उतरून जातां येत नाही, त्या-प्रमाणेच ती घोर व दुस्तर रुधिरसरित् भिड्या जनांना अधिक भीति उत्पन्न करणारी असल्या-मुळे त्यांना उतरून जातां येण्यासारखी नव्हती ! राजा, तो महारथ पांडुपुत्र भीमसेन कारवमैत्र्यांत जिकडे जिकडे घुमला, तिकडे तिकडे त्यानें शतावधिव सहस्रावधि योद्ध्यांना ठार मारिले ! राजा, ह्याप्रमाणे समरभूमीवर भीमसेनाचा विलक्षण पराक्रम अवलोकन करून दुर्योधन राजा शकुनीला म्हणाला, " मामा, युद्धांत महाबल भीमसेनाला कसे तरी करून जिकः भीमसेन एकदा जिकला गेला म्हणजे पांडवांचे प्रचंड मैत्र्य जिकलेच म्हणून समज." धृतराष्ट्रा, नंतर प्रतापवान् शकुनि भ्रात्या-मह भीमसेनाशीं घोर संग्राम करण्यासाठीं निघाला; आणि समुद्राची सीमा जशी समुद्राला अडवून धरिते, तसें त्यानें त्या महापराक्रमी भीमसेनाला अडवून धरिले ! राजा, त्या समयी

शकुनीने एकसारखा जलाल बाणांचा भडिमार भीमसेनावर चालविला, पण भीमसेनाने त्यास न जुमानितां उलट बाणांचा वर्षाव करून शकुनीला मार्गे हटविले! तेव्हां शकुनीने भीमाच्या डाल्या कुशीवर व वक्षस्थळीं धार दिलेल्या मुवर्णपुंख बाणांची वृष्टि केली आणि त्यामुळे ते कंकपिच्छ व मयूरपिच्छ बाण महात्म्या भीमसेनाचे कवच भेदून त्याच्या शरीरांत घुमले व त्यांच्या योगें तो पांडुपुत्र अतिशय विद्ध झाला ! नंतर भीमसेनाने एक मुवर्णमंडित बाण मोठ्या क्रोधाने शकुनीवर सोडिला, परंतु महाबल शकुनीने तो बाण आपल्यावर येत आहे असे पाहून उलट नेमकाच बाण मारून त्याचे सात तुकडे केले ! ह्याप्रमाणें भीमसेनाचा बाण फुकट जाऊन भूमीवर पडला तेव्हां त्यास अत्यंत क्रोध चढला व त्यानें हंमत हंमत एका भल्ल बाणानें सौबलाचे धनुष्यच छेदून टाकिले ! तेव्हां पराक्रमी सौबलानें तें छिन्न धनुष्य फेंकून दिले आणि तत्काळ दुसरे धनुष्य धारण करून त्यापामून वांकटार पेण्यांचे मोळा भल्ल बाण भीमसेनावर टाकिले ! त्यांपैकी दोन बाण त्यानें मारण्यावर सोडिले; सात बाण खुद्द भीमसेनावर टाकिले ! एक बाण सोडून ध्वज तोडिला; दोन बाणांनीं छत्र विदारिले आणि चार बाणांनी चारी घोडे विद्ध केले ! तेव्हां प्रतापशाली भीमसेन फारच चवताळला आणि त्यानें मुवर्णाचा दंड अमलेली पोलादी शक्ति समरांगणांत शकुनीवर तत्काळ सोडिली ! भीमानें मोठ्या वगाने सोडिलेली ती शक्ति नागिणीच्या जिद्धेप्रमाणें चपळाई करून तांबडतोव महात्म्या शकुनीवर आली, परंतु शकुनीने तीच मुवर्णमंडित पोलादी शक्ति झेलून धरून उलट मोठ्या क्रोधानें भीमसेनावर भिरकावून दिली ! तेव्हां ती शक्ति वीर्यशाली भीमसेनाच्या उजव्या बाहेरें विदारण करून अंतरिक्षांतून च्युत झालेल्या विद्युत्ते-

प्रमाणें भूगहारांत द्रविष्ट झाली ! त्या समयीं चोहोंकडे धार्तराष्ट्रांनीं एकच गर्जना आरंभिली; पण भीमाला तें मुळीच सहन झालें नाहीं; त्यानें स्वतःच्या प्राणांची पर्वा न धरितां तत्काळ दुसरे सज्ज धनुष्य धारण करून मोठ्या जलद्रीनें सौबलाच्या मेन्यावर बाणांचा भडिमार चालविला आणि क्षणांत समरांगणीं सर्व शत्रुसैन्य बाणाच्छादित करून टाकिले ! राजा धृतराष्ट्रा, त्या वेळीं भीमसेनानें सौबलाचे चारही अश्व, सारथि व ध्वज ह्यांचा भल्ल बाणांनीं विध्वंस उडविला, तेव्हां सौबलानें त्वरा करून त्या अश्वहीन झालेल्या रथांतून खाली उडी टाकिली व तो क्रोधानें आरक्त नेत्र करून मुसकोरे टाकीत भीमसेनावर एकसारखा चोहोंकडून बाणांचा भडिमार करूं लागला. तें पाहून प्रतापवान् भीमसेनानें तत्काळ त्या बाणांचा प्रतिकार केला आणि पुनः सौबलाचे धनुष्य छेदून त्याजवर तीक्ष्ण शरांची वृष्टि आरंभिली ! राजा, ह्याप्रमाणें त्या शत्रुसंहारक शकुनीला बलवान् भीमसेनानें अतिशयित विद्ध केले; तेव्हां ते दुःसह शरप्रहार त्यास सहन झाले नाहींत व तो तत्काळ वायाळ होऊन भूतलावर मरणोन्मुख पडला ! तेव्हां तुड्या पुत्रानें सौबलाची ती भयंकर अवस्था मनांत आणून रणांगणांत भीमसेनाच्या देखात त्यास रथांत घालून एकीकडे नेले ! राजा, शकुनीची ह्याप्रमाणें अवस्था झालेली पाहून धृतराष्ट्र अतिशयित वाचरले व ते युद्धविमुख होताना भीमसेनापामून आपला बचाव होण्याकरितां चोहोंकडे पळून गेले ! अशा प्रकारें दुयेंधन राजा शकुनि मामाच्या प्राणरक्षणाकरितां वेगवान् अश्व जोडिलेल्या अशा रथांतून भयभीत होताना रणांगणांतून पळून गेला, तेव्हां तें पाहून तुड्या मेन्यांतले इतर वीर आपल्या प्रतिपक्ष्यांशीं युद्ध करावयाचें सोडून देऊन चोहोंकडे पळत सुटले ! ह्याप्रमाणें सर्व

कौरवसैन्य युद्धांतून मोठ्या वेगाने माघारें घावूं लागले, तेव्हां भीमानें त्याजवर एकसारखा बाणांचा भडिमार चालवून त्यास वधण्याचा क्रम आरंभिला; पण इतक्यांत कर्णाची व त्या सैन्याची गांठ पडली आणि तें कर्णाच्या छत्रा-खाली पुनः पांडवांशीं युद्ध करू लागले. राजा, फुटण्या तारवांतले लोक द्वाीपाप्रत पोचले असतां जशी त्यांस शांतता वाटते; तशी त्या कौरव-सैन्यास महाबल कर्णाची भेट झाल्यामुळे मोठी शांतता वाटली; आणि त्यास पुनः मोठा धीर येऊन तें मुप्रसन्न मनानें ' मारू किंवा मरू ' असा निश्चय ठरवून पांडवांशीं लढण्यास सिद्ध झाले !

अध्याय अठ्ठ्याहत्तरावा.

—:—

कर्णाचा पराक्रम.

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया. रणांगणांत भीमसेनाने कौरवसैन्याचा मोड केला; तेव्हां मग दुर्योधन, शकुनि, विजयशाली कर्ण, कृप, कृतवर्मा, अश्वत्थामा, दुःशामन किंवा दुसरे माझ्या पक्षाचे वीर काय म्हणाले ! संजया. भीमसेन हा एकटा माझ्या सर्व योद्ध्यांशीं लढला हें मला मोठें आश्चर्य वाटत आहे ! संजया, राधेयाने शत्रूंशीं युद्ध करितांना आपली प्रतिज्ञा पाळिलीना ? संजया. शत्रुसंहारक कर्ण हा सर्व कौरवांचें मुख. आश्रय. प्रतिष्ठा व जीविताची आशा होय ! ह्यामाठीं अभितवीर्यवान् पांडुपुत्र भीमसेनाने कौरवांचें दळ भंग केलेले पाहून मग युद्धांत अधिरथ-पुत्र राधेयाने काय केले बरे ? तसेच. कौरव सेनेची ह्याप्रमाणे दाणादाण व विध्वंस उडाला असतां माझे पराक्रमी पुत्र व त्याप्रमाणेच इतर सर्व महारथ भूपाळ ह्यांनीं तरी जें काय केले

तें सर्व मला निवेदन कर. संजया, तूं ह्या कार्मी मोठा कुशल आहेस.

संजय सांगतो:—तिमरे प्रहरीं प्रतापशाली मृतपुत्राने भीमसेनाच्या देवत सर्व सोमकांना ठार मारिले व तें पाहून भीमसेनानेही कौरवांच्या अत्यंत बलिष्ठ सैन्याला वधण्याचा मपाटा मुरू केला ! तेव्हां कर्ण शल्याला म्हणाला. ' मला पांचालांजवळ घेऊन चल. ' राजा. नंतर मद्राधिपांने कर्णाच्या रथाचे महा-वेगवान् श्वेत अश्व मोठ्या जल्दीने चालविले आणि चेदि. पांचाल व करुष ह्यांच्या सैन्यां-समीप पास होऊन तो रथ त्या प्रचंड सैन्यांत घातला; आणि कर्णाने जेथें जेथें तो रथ नेण्यास मांगितले. तेथें तेथें त्याने मोठ्या आनंदाने तो रथ नेला. राजा. त्या समयीं तो व्याघ्रचर्मावि-गुंठित मेघतुल्य कर्णरथ आपल्या सेनेत परिभ्रमण करीत आहे असे पाहून पांडुपांचालांना मोठें भय पडले. त्या वेळीं, पर्वताचा कडा कोसळत असतां जमा भयंकर ध्वनि उत्पन्न होतो; तसा त्या महान् रणांत कर्णाच्या रथाचा घणघणाट मुरू झाला. नंतर कर्णाने प्रत्येचेचे आकर्ण आकर्षण करून शतावधि व सहस्रावधि जलाल बाणांची पांडवसेनेवर वृष्टि चालविली, तेव्हां कर्णाचे तें विलक्षण शौर्य अवलोकन करून पांडवांकडील महाधनुर्धर महारथ योद्धे त्याज-वर एकदम चाल करून आले व त्यांनीं त्यास चेहोंकडून वेदा घातला ! त्या समयीं कर्णाला ठार मागण्याच्या हेतूने शिखंडी, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, नकुल. सहदेव. मात्यकि व द्रौपदीचे पुत्र ह्यांनीं त्यास चोहों बाजूंनीं गराडा घालून त्याजवर बाणांचा वर्षाव आरंभिला. त्या वेळीं दृग् मात्यकीनें पार दिलेले वीस बाण कर्णाच्या खवाट्यांत मारिले; तसेच शिखंडीनें पंचवीस, धृष्टद्युम्नाने सात, द्रौपदीच्या पुत्रांनीं चौसष्ट, सहदेवाने सात आणि नकुलाने शंभर बाण

मारून कर्णाला भमरांगणांत विद्ध केलें; आणि त्याप्रमाणेंच बलिष्ठ भीममेनानें क्रोधायमान होऊन बांकद्वार पेऱ्यांचे नव्वट् बाण कर्णाच्या जत्रुप्रदेशीं मारिले. राजा. तेव्हां महाबल राधेयानें हंसत हंसत आपल्या धनुष्याचा टणत्कार करून शत्रूवर जलाल बाणांचा भडिमार चालविला व त्यास अगदीं जेरीस आणून प्रत्येकावर पांच पांच बाण सोडिले. नंतर कर्णानें सात्यक्रीचें धनुष्य व ध्वज हीं छेदिलीं आणि त्याला वक्षस्थळीं नऊ बाणांनीं विद्ध केलें. मग त्यानें क्रोधायमान होऊन भीममेनावर तीस बाण टाकिले आणि एका भल्ल बाणांनं सहदवाचा ध्वज तोडिला व तीन बाणांनीं त्याचा सारथि ठार केला ! नंतर डोळ्यांचें पातें लवतें न लवतें इतक्या वेळांत त्या प्रतापशाली कर्णानें द्रौपदीपुत्रांना रथहीन करून सोडिलें व तें पाहून सर्वांना मोठा चमत्कार वाटला ! मग बांकद्वार पेऱ्यांच्या शरांचा भडिमार करून कर्णानें शिखंडी, भीममेन, सात्यकि, महदेव वगैरे सर्व वीरांना मागें हटविलें आणि मग त्यानें शूर पांचालांना व चेदीच्या महारथांना बाणप्रहारांनीं जनेर करून सोडिले ! राजा. नंतर कर्णानें चेदिपांचालांना ठार मारण्याचा सपाटा चालविला. तेव्हां चेदि व मत्स्य हे तशा प्राणसंकटांतूनही कर्णावर तुटून पडले आणि त्यांनीं त्या लोकोत्तर वीरवर बाणांचा भडिमार आरंभिला. त्या समयीं महाग्रथ मृतपुत्रानें उलट त्या चेदिमत्स्यांवर जलाल बाण टाकून त्यांस वधण्याचा सपाटा चालविला. तेव्हां त्यांच्यानें तग काढवेनामा होऊन. मिहाला भिऊन श्वापदें जशीं पळून जानात तसे ते चोहोंकडे पळून गेले ! समरांगणांत प्रतापशाली मृतपुत्रानें एकट्यानें विजयप्राप्त्यर्थं पराक्राष्टा करीत अमणान्या पांडवांकडील धनुष्यर योद्ध्यांचें विलक्षण सामर्थ्यानें शरवर्षाव करून निवारण केलें. हा मला केवळ

अद्भुत चमत्कार वाटला ! महात्म्या कर्णाचें तें हस्तलाघव अवलोकन करून सर्व देव, सिद्ध व चारण ह्यांना मोठा संतोष झाला व महाधनुर्धर धार्तराष्ट्रांनीं त्या अतुलवीर्यांनू महारथामर्णाला फारच बहुमानानें पूजिलें ! नंतर. उन्हाळ्यांत तृणामध्ये चतलेला महान् अग्नि जसा त्या तृणाला दग्ध करितो, तसें त्या कर्णानें शत्रुसैन्य दग्ध केलें ! तेव्हां पांडवांच्या सैन्याला टिकाव काढवेनामा झाला व ते पांडवीय योद्धे रणांत महारथ कर्णाला पाहून युद्धविमुख होत्माते पळत मुटले ! पण तशांतही पांचाल हे कर्णाशीं महाघोर संग्राम करू लागले, परंतु कर्णाच्या त्या लोकोत्तर धनुष्यापासून त्यांच्यावर तीक्ष्ण बाणांची वृष्टि मुरू झाली तेव्हां त्यांचाही धीर मुटून जाऊन ते मोठमोठ्यांनं ओरटूं लागले व त्यामुळें पांडवांचें तें प्रचंड सैन्य वाचरून गेलें ! राजा, त्या समयीं पांडवांची अशी खातरी झाली कीं, रणांगणांत कर्ण तेवढा एक वीर खरा ! नंतर पुनः शत्रुसंहारक कर्णानें लोकोत्तर पराक्रम गाजविला आणि त्यामुळें पांडवांपैकी कोणालाही त्याच्याकडे वर मान करून पहाण्याची छाती होईनाशी झाली ! तो प्रकार असा कीं, पांडवांनीं कर्णावर मोठ्या त्वेषानें हल्ला केला. प्रचंड पर्वताशीं पाण्याच्या लोटाची गांठ पडली अमतां जसा तो लोट फुटून त्याची वाताहत होते, तशी कर्णापुढें त्या पांडवसैन्याची वाताहत झाली ! त्यासमयीं कर्ण हा धूमरहित अशीप्रमाणें रणांगणांत पांडवांच्या आवादव्य सेनेला जाळूं लागला ! त्यावेळीं त्यानें बाणांचा नेमकाच भडिमार करून शत्रुसैन्यांतील वीरांचीं मस्तकें, मकुंडल कर्ण, बाहु, हस्तिदंताच्या मुठी असलेलीं खडगें, ध्वज, शक्ति, हय, गज, विविध रथ, पताका, पंखे, आंस, धुऱ्या व लहानमोठी चाकें ह्या सर्वांचा मोठ्या शौर्यानें विध्वंस

उडविला ! त्यावेळीं कर्णानें जे हत्ती व घोडे वधिले त्यांच्या मांसशोणितांचा कर्दम मातून पृथ्वीचा पृष्ठभाग दिमेनामा झाला आणि गज, अश्व, पदाति व रथ उर्व्वमन होऊन जिकडे जिकडे पमगल्यामुळे, सर्व भूप्रदेश उंचमग्नल दिमूं लागला आणि सर्वत्र विपरीत देखावा दृग्मांचर झाला ! त्या रणमर्मदांत कर्णानें अस्त्र-प्रभाव प्रकट करून कांचनमंडित बाणांचे असे छत पसरिले की, त्या घोर अंत्रकागांत आपल्या-कडील योद्धे कोणते व शत्रूंकडील योद्धे कोणते हेही समजेना ! कर्णानें अशा प्रकारें दिव्य पराक्रम गाजवून पांडवांच्या महागथांना बाणांनी अगदीं झांकून काढिले : आणि त्यांनीं जरी पुनःपुनः वर डोके काढण्याचा मोठ्या शौर्यानें प्रयत्न केला, तरी क्षुब्ध झालेला सिंह जसा मृगमंघांना ठार मारूं लागला म्हणजे ते चोहों-कडे पळून जातात तसें ते पांडववीर कर्णाच्या शस्त्रप्रहारांनीं रणांगणांत पडूं लागले तेव्हां चोहोंकडे पळून गेले ! ह्याप्रमाणे कर्णानें ममगंगणांत रथश्रेष्ठ पांचालांची देना उडवून त्यांना अगदीं 'ब्राहि भगवन् ' करून सोडिल्यानंतर, लांडगा जसा पशूंना ठार मारितो तसें त्यानें ते मैन्य ठार मारिले ! ह्याप्रमाणे कर्णानें पांडव-सेनेची दुर्दशा उडविल्यावर महाधनुर्धर धार्तराष्ट्र मोठी भयंकर गर्जना करीत त्या स्थळीं प्राप्त झाले. दुयेंधन राजालाही कर्णाचा तो दिव्य पराक्रम पाहून मोठा आनंद झाला व त्याच्या आज्ञेनें सर्वत्र नानाविध वाद्ये वाजूं लागली ! राजा. इतक्याउप्परही पराजित झालेले ते महाधनुर्धर पांचाल वीर ' मारूं किंवा मरूं ' असा निश्चय करून कर्णाशीं लढण्यास पुनः सिद्ध झाले. पण तत्काळ कर्णानें त्यांशीं घोर समर आरंभून त्यांचा पुनःपुनः मोड करून टाकिला ! त्या वेळीं कर्णानें पांचालांचे वीम व बेदीचे शंभर रथी क्रोधाने बाण सोडून ठार

केले आणि रथांतील वीरस्थाने, अध्यांचे पृष्ठ-भाग व गजांचे स्कंधप्रदेश शून्य करून पाय-दळाला उधळून दिले; तेव्हां त्या शत्रूपीडक महावीराकडे मध्यान्हीच्या सूर्याप्रमाणे कोणा-मही पहावेनासे झाले आणि तो शूर धनुर्धर कालामारखा झळकूं लागला ! प्राणिगणांचा वध करून महाबलवान् यम जसा शोभतो तसा तो महाबलवान् कर्ण पांडवांच्या चतुरंग बलाचा वध करून लोकोत्तर वीरानें शोभूं लागला ! त्या अद्वितीय कर्णानें सोमकांचा अशा प्रकारें वध केल्यावर पांचालांनीं मोठा विलक्षण पराक्रम करून दाखविला; कर्णानें त्यांना वध-ण्याचा सपाटा चालविला असतांही ते घोर मंत्रामांत कर्णापासून यत्किंचित् मार्गे न सरतां एकसारखे त्याच्याशीं अंजत राहिले ! तेव्हां दुयेंधन, दुःशामन, कृप, अश्वत्थामा, कृतवर्मा व महाबल शकुनि ह्यांनीं त्या पांडवसैन्यावर हल्ला केला आणि त्यांपैकीं शतावधि व मह-त्रावधि वीरांना ठार मारिले ! तेव्हां कर्णाचे दोन पुत्रही ममगंगणांत पांडवांशीं लढत होते. त्या मत्स्यप्रतापी उभय बंधूंनीं मोठ्या क्रोधाने पांड-वांचें सैन्य इतस्ततः पुष्कळ वधिले. राजा, त्या ममर्था मोठा घोर मंत्राम झाला ! त्यांत शूर पांडव, धृष्टद्युम्न, शिखंडी व द्रौपदीचे पुत्र ह्यांनीं अगदीं क्षुब्ध होऊन तुड्या सैन्याचाही मोठा संहार उडविला ! असा; ह्याप्रमाणे भीमाच्या हस्ते तुड्या सैन्याचा व कर्णाच्या हस्ते पांड-वांच्या सैन्याचा मोठा नाश झाला !

अध्याय एकुणपेक्षावा.

—:०:—

शल्यकृत कर्णपात्सादन.

मंजय मांगतो:—हे महाराजा, इकडे अर्जुनानेही कौरवांचे चतुरंग दळ वधिले व महान् रणामध्ये मृतपुत्र कर्ण क्रोधायमान

झालेला अवलोकन करून शत्रुसैन्याशीं मोठें दारुण युद्ध आरंभिलें आणि महीतलावर शोणित ची केवळ नदीच उत्पन्न केली ! हत सैन्याचें मांस, मज्जा व अस्थि ह्यांचा त्या नदी-मध्ये चिखल मातला होता; मनुष्यांचीं मस्तकें हे त्या नदीतले पाषाण होते; आणि हत्ती व घोडे हे त्या नदीचे तिर होते ! शूर योद्ध्यांच्या अस्थिसंच्यांनीं ती रुधिरनदी अगदीं व्याप्त झालेली होती; तेथें कावळे व गिधाडें हीं ओरडत असल्यामुळें जणू त्या नदीचा आक्रोश चालला होता; तिच्यामध्ये जीं छत्रें वहात होती तीं पाहून हंस व नावाच तिजवर चालत आहेत असें दिसत होतें; त्या नदीतून प्रचळ योद्धे जणू महान् महान् वृक्षांप्रमाणें वहात चालले होते; योद्ध्यांचे हार ही त्या नदीतलीं कमळें होती; उंची शिरोभूषणें हा त्या उदकावरील फेन होता; आणि धनुष्ये व शर ह्या ध्वजपताकाच होत्या ! त्या नदीतून मनुष्यांचीं फुटकीं तुटकीं मस्तकें इतस्ततः वाहत होती; तिच्यामध्ये ढाली व चिलखतें हीं गरगर फिरत होती; आणि रथ हे तराफेच तरंगत होते ! राजा, अशी ती भयंकर नदी विजयशील पुरुषांना अनायामें उतरून जाण्याम योभ्य होती व भीरुजनांना अगदींच मुद्दुस्तर होती ! असा; शत्रुसंहारक नरवीर अर्जुनानें अशा प्रकारची शोणितसरित् चालू केल्यानंतर तो कृष्णाला असें भाषण बोलला.

अर्जुन म्हणाला:—कृष्णा, हा पहा रणागणांत सूतपुत्राचा ध्वज दिसत आहे. हे पहा भीमसेनादिक पांडववीर त्याच्याशीं लढत आहेत. हे पहा कर्णाला भिडून पांचाल पळत सुटले ! हा पहा दुर्योधन राजा कर्णानें पराभूत केलेल्या पांचालसैन्याला उधळून लावीत अमतां श्वेतछत्रामुळें कसा शोभत आहे तो ! आणि तसेच हे पहा कृप, कृतवर्मा व महारथ अश-

त्यामा कर्णाच्या पाठबळावर त्या दुर्योधनाचें संरक्षण करीत आहेत. कृष्णा, जर आपण ह्या कौरववीरांचें हनन केले नाही, तर हे खचित सोमकांना बधिर्तील ! हा पहा तो मोठ्या कुशलतेनें घोड्यांचे लगाम चालविणारा शल्य कर्णाच्या रथावर कसा शोभत आहे ! कृष्णा, मला असें वाटतें कीं, त्वां आतां त्या महारथ सूतपुत्राच्या समीप माझा हा रथ घेऊन चलावें; आज मी सूतपुत्राला समरांगणांत ठार मारिल्याशिवाय कधींही परत येणार नाहीं ! जनार्दना, जर आज माझ्या हातून कर्णाचा वध घडला नाही, तर तो आपल्या डोळ्यांदेखत सर्व पांडवांना व महारथ सृंजयांना ठार करील ह्यांत संदेह नाही !

संजय सांगतो:—नंतर महाबाहु कृष्णानें तत्काळ अर्जुनाचा रथ कौरवसैन्यावर चालविला आणि अर्जुनानें कर्णाशी द्वैरथयुद्ध करावें ह्या उद्देशानें तो रथ महाधनुर्धर कर्णाच्या रथाशीं अगदीं भिडविला; तेव्हां समारांगणांत अर्जुन प्राप्त झाला असें पहातांच चोहोंकडे पांडवसैन्याला मोठा धीर आला. राजा, त्या समयीं समरभूमीवर अर्जुनाच्या रथाचा जो व्रणव्रणाट चालला होता, तो ऐकून जणू काय इंद्राच्या वज्राचा किंवा मेघांच्या समुदायाचाच शब्द होत आहे असें वाटत होतें. राजा, ह्याप्रमाणें अनुलवीर्य सत्यविक्रम पांडुपुत्र अर्जुन आपल्या रथातून दणाणत तुझ्या सैन्याला जिकीत कर्णाच्या सन्निध जात अमतां त्याच्या रथाचे ते श्वेत अश्व, कृष्ण मारथि व ध्वज अवलोकन करून मद्रराज शल्य कर्णाला म्हणाला, “कर्णा, ज्याची तूं चौकशी चालविली आहेस, तो ह्या श्वेताश्व कृष्णमारथि अर्जुनाचा रथ शत्रूंचा संहार करीत आपल्या समीप प्राप्त झाला पहा ! हा पहा कुंतीपुत्र अर्जुन गांडीव धनुष्याचा टण्कार करीत उभा आहे ! बाबोर, जर आज

तू त्याला वधिलेंस, तर स्वचित आपलें कल्याण झालेंच म्हणून समज. कर्णा, जिच्यावर चंद्र व नक्षत्रें चमकत असून जिला किकिणी व पताका लाविलेल्या आहेत, अशी ती अर्जुनाच्या धनुष्याची प्रत्यंचा अंतरिक्षांतल्या विद्युत्प्रमाणें कशी झळकत आहे ती पाहिलीसना ! हा पहा अर्जुनाच्या ध्वजाप्रावर मारुति असून तो चोहांकडे पहात आहे व त्याला अवलोकन करून वीरांची त्रेधा उडाली आहे ! त्याच-प्रमाणें अर्जुनाच्या रथावर त्याचा सारथि जो कृष्ण अधिष्ठित आहे, त्याची शंख, चक्र, गदा व शार्ङ्ग धनुष्य हीं आयुधें पहा ! हा पहा गांडीव धनुष्याचा टणत्कार ऐकू येत आहे ! हे पहा त्या कुशल धनुर्धराचे जलाल बाण शत्रूंचा मंहार उडवूं लागले ! हीं पहा रणांतून पळून न जाणाऱ्या योद्ध्यांची मस्तकें विशाल, विस्तृत व आरक्त अशा नेत्रांनी व पूर्णचंद्रतुल्य मुखांनी महीतलाला आच्छादित करून कशी शोभत आहेत तीं ! हे पहा मुग्धि पदार्थाची उठी दिलेले शूर वीरांचे परिघतुल्य बाहु आयुधांसह वर्तमान वर उडून खाली पडत आहेत ! हे पहा स्वारांसहित घोडे जिह्वा तुटून व नेत्र फुटून भूतलावर मरून पडले आहेत व पडत आहेत ! हे पहा सुवर्णाच्या अलंकारांनी शोभणारे पर्वताच्या शिखरांसारखे प्रचंड हत्ती अर्जुनाच्या शरप्रहारांनी गंडस्थळांचें विदारण होऊन पर्वताप्रमाणें धडाधड भूतलावर कोमळत आहेत ! तसेच हे महान् महान् भूपाळ क्षीणपुण्य देव जसे विमानांतून खाली पडतात तसे हत्तींवरून खाली पडत आहेत ! कर्णा, सिंहाने ज्याप्रमाणें हजारों नानाविध पशूंना व्याकूळ करून सोडोवें, त्याप्रमाणें अर्जुनानें कौरवांचें हें सैन्य अगदी व्याकूळ करून सोडिलें आहे तें पाहिलेंस काय ! दुर्धर अर्जुन मोठमोठ्या वीरांचा ह्मण करून आतां तुला

वधण्याकरितां इकडे चालून येत आहे ! ह्या-माठीं तूं आतां एकदम त्याजवर चालून जा ! अर्जुनानें शत्रूंना मारण्याचा सारखा तडाखा लाविल्यामुळें कौरवांची अगदी त्रेधा उडाली असून अर्जुनाच्या भयानें जिकडे तिकडे पळ काढीत आहेत ! ह्यास्तव अर्जुन आतां बाकी-च्या सैन्याकडे दुर्लक्ष करून तुला ठार मारण्यामाठीं इकडे त्वरेनें धावून येत आहे, असें मीं त्याच्या शरीराच्या उठावावरून मानितों ! कर्णा वृकोदराला तूं जी पीडा केलीस, तिच्या योगानें संतप्त झालेला अर्जुन आतां तुझ्या-शिवाय दुसऱ्या कोणत्याही वीराशीं लढण्याची इच्छा करणार नाही ! तूं धर्मराजाला विरथ करून अति वायाळ केलेस, व त्याप्रमाणेंच शिवंदी सात्यकि, धृष्टद्युम्न, द्रौपदीचे पुत्र, युधामन्यु, उत्तमोजा, नकुल, सहदेव ह्यांनाही जर्जर करून सोडिलेंस, हें कळल्यामुळें आतां बलाढ्य व शत्रुसंहारक अर्जुन एका रथानें तुझ्यावर तुटून पडेल ! आतां तूं जर उशीर करशील तर क्रोधानें आरक्त केलेला हा अर्जुन सर्व भूपाळांना ठार मारण्याकरितां आपल्या सैन्यावर चालून येईल; ह्यासाठीं तो दूर आहे तोंच तूं त्याचें निवारण कर ! बाबारे, तुझ्याशिवाय दुसरा वीर त्याजवर चालून जाण्यास समर्थ होणार नाही ! कर्णा, समुद्राची सीमा त्याचा निरोध करिते, तसा क्रोधा-यमान अर्जुनाचा निरोध करण्यास समर्थ असा तुझ्यावाचून एकही वीर ह्या लोकांत मला आढळत नाही. ह्या समयीं अर्जुनाच्या पृष्ठ-भागी किंवा पार्श्वभागी कोणीही वीर त्याचें संरक्षण करित नाहीत,—तो एकटाच तुझ्यावर येत आहे; म्हणून तूं ही संधि साधून त्याचा वध कर व कार्यभाग सिद्धीस ने ! रणांत कृष्णा-र्जुनाशीं युद्ध करण्याला तूं एकटा समर्थ आहेस. हे राधेया, अर्जुनाचा वध करणें हें

कार्य तुझ्याव्यतिरिक्त दुसऱ्या कोणाकडूनही होणार नाही; ह्याकरितां तूं आतां पुढें हो ! भीष्म, द्रोण व द्रौणि ह्यांच्याप्रमाणें तूं प्रतापशाली आहेस; म्हणून घोर संग्रामांत आपल्यावर चालून येणाऱ्या धनंजयाचें तूं निवारण कर. अर्जुन हा केवळ जीभ काढून खावयास आलेल्या सापाप्रमाणें, डुरकण्या फोडणाऱ्या बेलाप्रमाणें किंवा अरण्यांतील वाघाप्रमाणें भयंकर आहे; ह्यासाठीं तूं त्याला ठार मार. हे पहा महारथ धार्तराष्ट्र व भूपाल अर्जुनाच्या भीतीने निराश होतसाते धूम पळत आहेत; युद्धांत त्यांचें भय दूर करील असा तुझ्याशिवाय दुसरा कोणीही योद्धा नाही ! हे सर्व कौरव रणांगणांत तुझ्या आधारावर विसंबून लढत आहेत; 'प्रसंगीं आपलें संरक्षण कर्ण हा करील !' अशी त्यांची तुझ्यावर मोठी भिस्त आहे; म्हणून वैदेह, अंबष्ठ, कांबोज, नमःजित् व गांधार ह्या अजिंक्य योद्ध्यांना जिकितांना तूं जें काहीं धैर्य दाखविलेंस, तें धैर्य तूं आतां दाखव; आणि अर्जुनावर चालून जा. हे महाबाहो कर्णा, तूं मोठ्या वीरश्रीनें कृष्णार्जुनावर चाल करून त्यांचें निवारण कर. "

कर्ण म्हणाला:—शल्या, तुझा नेहमीचा स्वभाव कायम आहे; तथापि ह्या वेळीं तुझे भाषण मला प्रिय वाटतें. तुला धनंजयाची फार भीति पडली आहे; पण तशी भीति पडण्याचें मुळीच कारण नाही. शल्या, युद्धकळेंत निपुण अशा ह्या वीराचें (माझे) बाहुसामर्थ्य तूं आज अवलोकन कर. मी आज एकटा पांडवांचें हें प्रचंड सैन्य व कृष्णार्जुन ह्यांना समरांगणांत निजवीन. शल्या, आज जर मी युद्धांत त्या दोन वीरांना वधिलें नाहीं, तर रणांगणांतून परत जाणार नाही, हें पक्कें लक्षांत ठेव. शल्या, युद्धांत जय अमक्यालाच मिळेल हें निश्चयानें सांगणें अवघड आहे; ह्यासाठीं मी इतकेंच

म्हणतों कीं, एक तर त्या दोघांच्या हस्ते मी रणांत मरून पडेन, किंवा मी त्या दोघांना ठार करून विजयी होईन !

शल्य म्हणाला:—कर्णा, महारथांचें म्हणणें असें आहे कीं, रथश्रेष्ठ अर्जुन हा एकटा असतां देखील युद्धांत अजिंक्य आहे; मग त्याच्या संरक्षणार्थ कृष्ण हा त्याच्या समीप असल्यास त्याला जिकण्यास येथें कोण समर्थ होईल बरें !

कर्ण म्हणाला:—शल्या, मला जें विदित आहे, त्यावरून मी असें सांगतों कीं, ह्या भूतलावर अर्जुनासारखा उत्कृष्ट रथी कधीही झाला नाही ! तेव्हां अशा ह्या लोकोत्तर योद्ध्याशीं महान् संग्राम करून मी तुला आज आपला पराक्रम दाखवितों तो अवलोकन कर. शल्या, हा पांडुपुत्र अर्जुन रणांगणांत श्वेतहय जोडिलेल्या रथांतून परिभ्रमण करीत आहे; कदाचित् तो आज मला मारील किंवा मी त्याला मारीन. जर का त्यानें मला मारिलें, तर माझ्या मृत्यूबरोबर ह्या सर्व कौरवांचा अंत झाला म्हणून समज. शल्या, ह्या राजपुत्र अर्जुनाच्या हातांना घाम किंवा कंप म्हणून कधीही माहीत नाही. ते मोठे पुष्ट असून त्यांजवर घट्टे पडलेले आहेत. ह्याचीं आयुधें मोठी बळकट असून तो मोठा कुशल व जलद बाण सोडणारा आहे. ह्याची बरोबरी करील असा कोणीही वीर नाही. जसा एक ध्यावा, तसे हा एकदम अनेक कंकपत्र घेऊन तत्काळ त्यांची योजना करिते ते अमोघ बाण कोसावर जाऊन तात; तेव्हां असल्या ह्या अपूर्व दुसरा योद्धा ह्या पृथ्वीवर कोण वनांत त्या वेगवान् अतिरथ कृष्णाच्या साहाय्यानें अशी तेथें अशीपासून गांडीव

जोडिलेला व महान् घोष करणारा उग्र रथ, मोठमोठे दोन अक्षय्य व दिव्य बाणभाते आणि उत्कृष्ट आयुधे हीं मिळविलीं व कृष्णानें आपलें चक्र मिळविलें! त्याप्रमाणेंच अर्जुनानें इंद्र-लोकीं त्या सर्व असंख्यात कालकेय दैत्यांना वधिलें व तेथें देवदत्त शंख मिळविला! तेव्हां अशा त्या लोकोत्तर योद्ध्यापेक्षां अधिक पराक्रमी असा ह्या पृथ्वीवर कोणता वीर सांपडेल? शल्या, ज्या शूर धनुर्धरानें प्रत्यक्ष महा-देवांशीं घोर युद्ध करून अस्त्रप्रताप दाखविला आणि त्याम संतुष्ट करून त्याजपासून त्रे-लोक्याचा संहार करण्यास समर्थ असें महा-भयंकर पाशुपत अस्त्र संपादन केलें, त्याचा महिमा काय वर्णवा? शल्या, पृथक् पृथक् लोकपालांनीं एकत्र होऊन युद्धामध्ये अमेय शक्तीचीं प्रचंड अस्त्रे अर्जुनास दिलीं व त्यांच्या योगें त्यानें कालकेयादिक सर्व असुरांना रणांत तेव्हांच ठार मारिलें! त्या-प्रमाणेंच विराटपुरीमध्ये आह्मी सर्व एकत्र होऊन गोधनें आणण्यास गेलों असतां त्यानें एका रथानें रणांत आह्मां सर्वांचा पराभव करून गोधनें परत नेलीं व महारथांचीं वस्त्रे हिरावून घेतलीं! ह्याकरितां, शल्या, अशा प्रकारें वीर्य व गुण ह्यांनीं युक्त, कृष्णासह रणांगणांत युद्धार्थ उभा असलेल्या व भूपाळां-मध्ये श्रेष्ठ अशा त्या लोकोत्तर योद्ध्याला जर मी युद्धासाठीं आह्वान केलें, तर माझ्या ठिकाणीं लोकांत इतरत्र न आढळणारें विलक्षण वीर्य वसत आहे असें मानण्यास हरकत नाहीं! शल्या, तो अतुलबल व अनंतवीर्य-युक्त असा अर्जुन केशव ज्याचें संरक्षण करण्यास आह्मां आह्मी आहो. त्या अर्जुनाच्या सामर्थ्या-बारे? शिवाय तिन्ही लोक-यत्न करूं लागले असतां अर्जुन गण सहस्रावधि वर्षांत

वर्णिले जाणें अशक्य होय, तो महात्मा शंख, चक्र व खड्ग धारण करणारा विजयशाली वामुदेव त्याच्या रथावर सारथ्य करीत आहे; ह्यासाठीं त्या दोघांना एका रथावर अवलोकन करून मला फार भय पडलें आहे! शल्या, रणांगणांत जितके धनुर्धर आहेत त्यापेक्षां अर्जुन हा प्रबळ आहे व नारायण तर चक्रयुद्धांत अजिंक्यच आहे; तेव्हां अशा ह्या जोडीपुढें प्रत्यक्ष हिमालय पर्वतही स्वस्थानापासून चलित होईल, पण हे दोन वीर अणुरेणु ढळणार नाहीत! शल्या, कृष्णार्जुन हे दोघेही महारथ शूर व बलिष्ठ असून दृढायुध व वज्रासारखे कठीण आहेत; तेव्हां त्यांजवर माझ्याशिवाय दुसरा कोणता योद्धा चाल करून जाईल बरें? शल्या, अर्जुनाशीं युद्ध करावें म्हणून माझा जो संकल्प, तो आतां फार थोड्या अवकाशांत सिद्धीस जाईल; आतां मी तत्काळ मोठें अद्भुत व विचित्र युद्ध त्यांच्याशीं करीन! आज कदाचित् त्या युद्धांत मी त्यांना मारीन किंवा ते मला मारतील, हें खास समज!

संजय सांगतो:—शत्रुसंहारक कर्णानें शल्याला ह्याप्रमाणें बोलून रणामध्ये मेघाप्रमाणें मोठ्यानें गर्जना केली! नंतर तुझा पुत्र दुर्योधन तेथें आला व त्यानें त्याचें अभिनंदन करून त्यास प्रोत्साहन दिलें. तेव्हां कर्ण हा दुर्योधन, कृप, कृतवर्मा, सहानुज गांधारपति, गुरुमुत अश्वत्थामा, आपला धाकटा भाऊ, त्याप्रमाणेंच गजवीर, अश्ववीर व पदाति ह्या सर्वांस म्हणाला, “वीरहो, तुम्ही सर्व कृष्णा-र्जुनांवर चाल करा; त्यांना चोहोंकडून कोंडा; आणि सर्व बाजूंनीं त्यांजवर ताबडतोब मोठ्या वेगानें बाणवृष्टि चालवा; म्हणजे तुमच्या बाण-प्रहारांनीं ते अतिशय घायाळ झाल्यावर मी त्यांस आज सहज वधीन!” तेव्हां ‘बरें आहे’

असे म्हणून ते सर्व भूपाळ मोठ्या त्वरेने अर्जुनावर त्याच्या वधार्थे चाल करून गेले आणि त्या सर्व महारथांनी कर्णाच्या आज्ञेप्रमाणे समरांगणांत अर्जुनावर अगणित बाणांचा भडिमार चालविला ! राजा, त्या समयी, महासागर जसा नद व नद्या ह्यांना ग्रस्त करून टाकितो, तसे समरांगणांत अर्जुनाचे त्या सर्व वीरांना ग्रस्त केले ! त्या वेळी अर्जुन हा आपले दिव्य शर धनुष्याला केव्हां जोडी व केव्हां सोडी हे शत्रूंना मुळीच दिसत नसे. परंतु त्यांच्या शस्त्रप्रहारांनी शकले उडून कौरवांकडील नर, अश्व व कुंजर हे रणांगणांत पटापट पडत असत ! राजा, त्या वेळी अर्जुनाचे जे दिव्य तेज झळाळत होते, त्याचे काय वर्णन करावे ? त्या समयी अर्जुनास पाहून जणू काय प्रलयकालीन सूर्यच तळपत आहे असा भास होत होता. अर्जुनाचे बाणांचा जो भडिमार चालविला होता ते जणू काय त्या सूर्याचे किरणच असून गांडीव धनुष्य हे त्या देदीप्यमान सूर्याचे मंडलच होते ! ह्यास्तव, राजा, दुखऱ्या डोळ्यांच्या मनुष्यांना जसे सूर्याकडे पाहावत नाही, तसे त्या कौरवसैन्याला अर्जुनाकडे पाहावले नाही ! कौरवांकडील महारथ जे जलाल बाण अर्जुनावर सोडीत, ते सर्व तो पृथापुत्र हंसत हंसत उलट बाणांचा मोठ्या वेगाने भडिमार करून छेदीत असे ! राजा, ज्याप्रमाणे सूर्य हा ग्रीष्म ऋतूत सर्व जलाशयांचे उदक सहज आकर्षण करून घेतो, त्याप्रमाणे अर्जुनाचे कौरवांकडील वीरांचे सर्व बाण सहज आकर्षण करून घेऊन ते मेन्य जाळून टाकण्यास प्रारंभ केला ! तेव्हां कृप, कृतवर्मा, स्वतः तुझा पुत्र दुर्योधन व महारथ अश्वत्थामा, हे पर्जन्य पर्वतावर उदकाची वृष्टि करितो त्याप्रमाणे अर्जुनावर बाणांची वृष्टि करीत धावून आले, परंतु अर्जुनास ठार मारण्या-

करितां उद्युक्त झालेल्या त्या सर्व धनुर्धरांनी मोठ्या प्रयत्नाने घोर संग्रामांत जे तीक्ष्ण शर अर्जुनावर सोडले, त्या सर्वांचा त्या पांडुतनयाने तत्काळ शरवर्षाव करून विध्वंस उडविला व उलट प्रत्येकावर तीन तीन बाण टाकून त्याने त्यांस वक्षस्थळी विद्ध करून सोडिले ! तेव्हां अश्वत्थाम्याने पुनः धनंजयावर दहा, अच्युतावर तीन व चार घोड्यांवर चार असे प्रखर बाण सोडिले आणि ध्वजस्थित मारुतीला तर नाराच शरांनी झांकून काढिले ! अश्वत्थाम्याचे ते कृत्य अवलोकन करून अर्जुनाचे धैर्य रतिमात्र कमी झाले नाही. त्याने तांबडतोब तीन बाण सोडून अश्वत्थाम्याचे प्रस्फुरण पावणारे ते धनुष्य तोडून टाकिले, त्याप्रमाणेच एका क्षुर बाणाने सारथ्याचे मस्तक छेदिले, चार बाण टाकून चारही घोड्यांना मारिले आणि पुनः तीन बाण सोडून अश्वत्थाम्याचा ध्वज खाली पाडिला ! त्या समयी अश्वत्थामा अतिशय चवताळला आणि त्याने हातांतले ते त्रिशूल आयुध भूतलावर फेंकून देऊन मणि, वज्र व सुवर्ण ह्यांनी शृंगारलेले व तक्षकाच्या देहाप्रमाणे कांतिमान् असे दुसरे बहुमोल धनुष्य—पर्वताच्या तटावरून एखादा महान् भुजंग उचलून घ्यावा तसे—उचलून घेतले व त्यास प्रत्यंचा जोडून ते सज्ज केले; आणि त्या गुणशाली द्रोणपुत्राने कृष्णाजुनांशी अगदी लगत करून त्यांजवर प्रचंड शरांचा भडिमार आरंभिला ! ते पाहून कृप, कृतवर्मा, दुर्योधन व इतर महारथ ह्यांनी बाणांचा वर्षाव करून अर्जुनाशी मोठा घोर संग्राम सुरू केला आणि सूर्याला ज्याप्रमाणे मेघांनी झांकून काढावे, त्याप्रमाणे त्यांनी कृष्णाजुनांस बाणांनी झांकून काढिले ! त्या वेळी कार्तवीर्याप्रमाणे उग्र प्रताप गाजविणाऱ्या अर्जुनाचे कृपाचे धनुष्य व बाण आणि त्याप्रमाणेच त्याचे अश्व, सारथि व ध्वज ह्यांज-

वर बाणांचा भडिमार केला; आणि पूर्वी इंद्राने जसे बलीला जेरीस आणिले तसे त्याने त्या कृपाला जेरीला आणिले! तेव्हां कृपास आयुधहोन करून घोर रणकंदनांत त्याचा ध्वज पाडिल्यावर त्यावर अर्जुनाने अशी काही बाणवृष्टि केली की, पूर्वी त्याने भीष्माला जसे सहस्रावधि शारांनी विद्ध करून सोडिले तसेच ह्या प्रसंगी कृपालाही सहस्रावधि शारांनी विद्ध करून सोडिले! राजा, मग प्रतावान् अर्जुनाने तुझा पुत्र मोठमोठ्याने गर्जना करीत लढत होता त्याजवर शरवर्षाव आरंभिला व त्याचे धनुष्य आणि ध्वज ही तोडून कृतवर्म्यांचे अंध वधिले व त्याचा रथ धुळीम मिळविला ! नंतर त्याने मोठ्या त्वरेने कौरवसैन्यांतले हत्ती, घोडे व रथ आणि त्याप्रमाणेच त्यांजवरील वीर, साराथि व ध्वज ह्यांचा संहार उडविला; आणि मग कौरवांच्या सैन्यांत एकच हाहाकार होऊन, पाण्याचा बंधारा फुटला असता ते पाणी जसे इतस्ततः मोठ्या वेगाने धावू लागते तसे ते कौरवांचे प्रचंड सैन्य विस्कळित होऊन मोठ्या वेगाने चोहोंकडे धावू लागले! मग केशवाने तत्काळ अर्जुनाचा रथ एका बाजूम वळवून त्या भयभीत झालेल्या शत्रूंना आपल्या उजवीकडे घेतले; परंतु इतक्यांत त्वरेने एकीकडे वळलेल्या त्या अर्जुनावर—वृत्तहंत्या देवेंद्रावर जसे असुर धावून आले तसे—पुनः युद्धार्थ उत्सुक झालिले दुसरे कौरववीर ध्वज फडकत असलेल्या उत्कृष्ट रथांतून धावून आले! पण त्या समर्थी शिखंडी, शैनेय, नकुल व सहदेव हे अर्जुनावर धावून येणाऱ्या त्या कौरववीरांवर चालून गेले आणि निशित शारांचा भडिमार करून त्यांनी त्यांना मागे हटविले व मोठ्याने गर्जना करीत त्यांची दाणादाण उडवून दिली! राजा, नंतर रणागणांत कौरव व सृजय ह्यांचे निकराचे युद्ध

सुरू झाले! त्या समर्थी दोन्ही दळांतील क्रोधायमान वीरांनी सरळ चालणारे प्रखर शर एकमेकांवर सोडण्याचा सपाटा लाविला, तेव्हां जणू काय देवदानवांचे तुंबळ युद्ध मातले आहे असा भास होऊ लागला! त्या वेळी जय मिळविण्यासाठी व स्वर्गास जाण्यासाठी उतावीळ झालेली ती दोही पक्षांकडील चतुरंग सैन्ये एकमेकांवर तुटून पडून मोठमोठ्याने गर्जू लागली आणि बाणांचा भडिमार चालवून परस्परांना जखमी करू लागली, तेव्हां त्या महात्म्या शूर सैनिकांनी परस्परांवर इतकी बाणवृष्टि केली की, त्या घोर संग्रामामध्ये अंतरिक्षांत बाणांचे छत लागून चोहोंकडे अंधकार पडला आणि दिशा, उपदिशा व सूर्याची प्रभा ह्या सर्व अंधकारांत गडप झाल्या!

अध्याय ऐशींचा.

—:०:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, इकडे कौरवांकडील प्रबळ वीरांनी भीमावर हल्ला करून त्यास अगदी प्राणसंकटांत घातले असता त्याला त्यांतून सोडविण्यासाठी अर्जुन हा कर्णाचे सैन्य सोडून तिकडे गेला; व कौरवांचे जे योद्धे भीमावर तुटून पडले होते, त्यांजवर बाणांचा भडिमार करून त्याने त्यांस यमलोकीं पाठविले! राजा, त्या वेळी अर्जुनाने चोहोंकडे इतके बाण सोडिले की, त्यांनी सर्व नभोमंडल व्याप्त होऊन अदृश्य झाले व खाली महीतलावर तुझ्या सैन्याचा फडशा पाडिला! राजा, त्या समर्थी अंतरिक्षांत चोहोंकडे जे बाणसमूह भ्रमण करीत होते, ते पाहून जणू काय पक्ष्यांचे थवे आकाशांत फिरत आहेत असे वाटू लागले; आणि अशा प्रकारे सर्व अंतरिक्ष बाणांनी भरून काढून अर्जुन हा शत्रु-

सैन्याचा वध करीत असतां जसा काय तो कौरवसैन्याचा काळच होय असें सर्वास भासलें ! राजा, त्या वेळीं अर्जुनानें कौरवांवर भल, क्षुरप्र व पाजविलेले नाराच बाण सोडून त्यांची गात्रें व मस्तकें छेदिलीं आणि हातपाय तोडून, कवचें फाडून व मस्तकें उडवून ज्या वेळीं त्यांनं चोहाकडे वीरांचीं कलेवरे रणांगणांत पाडण्याचा क्रम आरंभिला त्या वेळीं पडलेल्या व पडत असलेल्या घडांनीं सर्व रणभूमि आच्छादित झाली ! राजा, तेव्हां धनंजयाच्या शरांनीं कितीएक शकट, रथ, अश्व व गज हे छिन्न-भिन्न होऊन त्यांचा अगदीं चुराडा उडाला आणि कितीएक गात्रहीन व व्यंग झाले; आणि त्यामुळें महावैतरणीप्रमाणें समरभूमि दुर्गम, उंचसखल व भयंकर दिसें लागली ! राजा, त्या समयीं इषा, चक्रें, अक्ष, भल, तमेच अश्वहीन व साश्व योद्धे, आणि त्याप्रमाणेंच ससारथि व असारथि रथ ह्यांनीं सर्व महीतल झांकून गेलें ! त्या वेळीं, राजा, ज्यांच्यावर चिलखतें घातलीं होतीं, जे नित्य युद्धासाठीं मदनमत्त असत, ज्यांवर सुवर्णाचे अलंकार विराजित होते, ज्यांवर अंगांत हेममय कवचें घातलेले वीर शोभत होते, आणि ज्यांना क्रूर महातांनीं मांड्या व आंगटे ह्यांनीं ताडण करून क्षुब्ध व क्रोधायमान केलें होतें, असे चौदाशे मुंद्र हत्ती अर्जुनानें जलाल बाणांच्या भडिमारांनीं रणांगणांत वधिले ! राजा, त्या वेळीं धनंजयाच्या बाणांनीं विद्ध झालेल्या त्या महान् महान् कुंजरांनीं ती भूमि आस्तूत झाली तेव्हां जणू काय निजवर प्रचंड पर्वताचीं मोठमोठालीं शिखरेंच पतन पावली आहेत असें वाटलें ! राजा, त्या समयीं अर्जुनाचा रथ त्या रणभूमीतून परिभ्रमण करीत असतां जिकडे जिकडे जाई, तिकडे तिकडे त्याला—सूर्याचे—किरण जसे भेघांतून मार्ग

काढतात तसा.—रणभूमीवर पतन पावलेल्या त्या मदस्त्राव करणाऱ्या भेघतुल्य हत्तीतून मार्ग काढावा लागे ! राजा, ह्याप्रमाणें अर्जुनानें मनुष्यें, गज, अश्व व रथ ह्यांचा अनेक प्रकारांनीं विध्वंस उडवून व युद्धनिपुण वीरांचे देह, शस्त्रें, कवचें व यंत्रें ह्यांनीं रणांतला मार्ग बंद करून मग गांडीव धनुष्याचा महाभयंकर टणत्कार आरंभिला, तेव्हां जणू काय अंतरिक्षांत घोर घनगर्जना सुरू झाली असें वाटूं लागलें ! त्या समयीं धनंजयाच्या शरप्रहारांनीं जर्जर झालेली ती कौरवमेना भयभीत होत्साती समुद्रावर वादळांत सांपडलेल्या मोठ्या नौकेप्रमाणें फुटून गेली आणि मग तिची फारच दुर्दशा उडाली ! राजा, त्या वेळीं अर्जुनानें गांडीव धनुष्याच्या योगें नानाविध प्राणघातक बाणांचा शत्रुमेन्यावर भडिमार चालविला, तेव्हां ते अग्नि, उल्का व विद्युत्पात ह्यांप्रमाणें तुड्या मेन्याला जाळूं लागले आणि महान् पर्वतावर रात्रीच्या समयीं कळकांच्या बेटाला आग लागली असतां तेंथें जसा ज्वाळांचा भडका होतो तसा तुड्या सैन्यांत अर्जुनाच्या शरांनीं एकच भडका झाला ! राजा, ह्याप्रमाणें अर्जुनानें तुड्या सैन्याचा बाणप्रहारांनीं चुराडा उडवून, जाळूनपोळून व विध्वंस उडवून नाश केला तेव्हां ते मोठ्या अरण्यांत वणव्यांत सांपडलेल्या श्रापदांप्रमाणें दशदिशांस पळून गेलें ! राजा, ह्या प्रकारें मध्यमाची अर्जुनानें कौरवांना जाळून टाकिलें तेव्हां रणांगणांत उद्विग्न झालेल्या कौरवमेन्यानें भीममेनाला सोडून देऊन पळ काढिला आणि मग विजयी अर्जुन भीमसेनाच्या सन्निध जाऊन क्षणभर तेंथें स्वस्थ गहिला. तेव्हां तेंथें अर्जुनानें धर्मराजाचें स्वास्थ्य व कुशलवृत्त भीमसेनास निवेदन केल्यावर त्या उभय भ्रात्यांची पुढील कार्यावढल मसलत झाली; आणि मग भीमसेनाची आज्ञा बेऊन

अर्जुन हा रथाच्या घणघणाटांनै अंतरिक्ष व महीतल दुमदुमून टाकीत पुनः युद्धार्थ निघाला. राजा, त्या समयी लागलाच दुःशामनापेक्षां लहान अशा तुड्या दहा महाबलाद्वय शूर पुत्रांनी त्याला वेदा दिला. उल्का जशा हत्तीला जर्जर करून सोडितात, तद्वत् त्या धार्तराष्ट्रांनी बाणांच्या भडिमारांनै अर्जुनाला जर्जर करून सोडिले आणि हातांतलीं धनुष्ये आकर्ण ओडीत ते शूर कौरववीर जणू काय नाचूच लागले ! राजा, तेव्हां कृष्णानें अर्जुनाचा रथ एकीकडे बळवून त्या धार्तराष्ट्रांना आपल्या उजवीकडे बातलें आणि आतां हे अर्जुनाच्या हस्तें तत्काळ मृत्युमुखी पडलेच ' असा आपल्या मनाशीं निधीर करून ठेविला ! राजा, त्या समयी त्या शूर धार्तराष्ट्रांना अर्जुन हा माथारा वळलासें वाटलें व ते लागलेच त्याच्यावर चाल करून आले ! परंतु अर्जुनानें त्यांजवर नाराच व अर्धचंद्र बाणांचा वर्षाव करून त्यांचे ध्वज, चाप व बाण तत्काळ तोडून टाकिले आणि आणखी दहा भल्ल बाणांनीं क्रोधानें आरक्तनेत्र झालेली व दांतभोंठ चावीत असलेली त्यांचीं तीं मस्तकें भूतलावर तोडून पाडिलीं व त्यामुळें जणू काय पृथ्वीवर कमलेंच प्रफुल्लित झालेलीं आहेत असें सर्वास वाटलें ! असो; राजा, ह्याप्रमाणें सुवर्णमंडित बाहुभूषणें धारण केलेल्या त्या दहा कौरवांना दहा सुवर्णपुख भल्ल बाणांनीं मोठ्या वेगानें ठार मारून शत्रुसंहारक अर्जुन हा पुढें चालता झाला !

अध्याय एक्यायशींवा.

—:०:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ज्याच्या ध्वजावर कापिश्रेष्ठ माकडि अधिष्ठित होता असा

तो अर्जुन भीमसेनास भेटून महावेगवान् रथांतून पुढें चालला असतां त्याजवर कौरवांकडील नव्वद रथ्यांनीं हल्ला केला; आणि “आम्ही जर रणांतून पळून जाऊं तर शाश्वत नरकांत पडूं !” अशी घोर शपथ घेऊन त्या नरव्याघ्र संशप्तकांनीं समरभूमीवर त्या नरव्याघ्र अर्जुनाला चोहोंकडून गराडा घातला ! राजा, इकडे कृष्णानें अर्जुनाच्या रथाचे महावेगवान्, सुवर्णालंकृत व मौक्तिकांच्या जालकांनीं आच्छादित असे ते श्वेत अश्व संशप्तकांकडे लक्ष न देतां थेट कर्णाच्या रथावर चालविले, तेव्हां त्या रथाच्या भोंवतालीं वेदा देऊन त्याजवरोबर धावणाऱ्या संशप्तकांनीं एकसारखा अर्जुनावर बाणांचा भयंकर वर्षाव चालविला ! राजा, त्या समयीं अर्जुनानें त्वरेनें तत्काळ त्या नव्वद संशप्तकांवर धार दिलेल्या बाणांचा भडिमार करून त्यांचीं धनुष्ये छेदिलीं व त्यांस त्यांच्या सारथ्यांमुद्धां ठार मारून त्यांचे ध्वज खाली पाडिले ! राजा, त्या समयीं ते संशप्तक वीर अर्जुनाच्या नानाविध बाणांनीं हत होत्साते भूतलावर पडले. तेव्हां जणू काय स्वर्गांतून क्षीणपुण्य झालेले सिद्धच विमानांसहित भूतलावर पडले असें सर्वास वाटलें ! राजा, नंतर त्या भरतश्रेष्ठ अर्जुनाच्या सभोंवतीं कौरवांकडील धीट अशा रथ, गज, अश्व व नर ह्यांनीं पुनः वेदा घातला आणि त्याजवर शक्ति, ऋष्टि, तोमर, प्रास, गदा, खड्गें व बाण ह्यांची वृष्टि करून त्यास अडवून धरिले ! राजा, त्या वेळीं कौरवयोद्ध्यांनीं सभोंवार अंतरिक्षांत बाणांचे जें छत उभारलें होतें त्याचा उलट बाणांचा भडिमार चालवून—सूर्य जसा अंधःकाराचा नाश करितो तसा—अर्जुनानें नाश केला ! तेव्हां दुर्योधनाच्या आज्ञेवरून म्लेच्छांनीं आपले तेरा हजार उन्मत्त हत्ती अर्जुनावर दोन्ही बाजूंनीं घातले आणि त्याजवर कर्मा; नाराच

व नालीक बाण, तोमर, प्राप्त, शक्ति, मुमलें, भिदिपाल इत्यादि शस्त्रास्त्रांचा भयंकर भडिमार करून त्यास जेरिस आणिलें! पण त्या म्लेच्छ सैनिकांनीं स्वतः व हत्तींच्या शुंडांनीं जी अनुपमेय शस्त्रास्त्रवृष्टि अर्जुनावर चालविली होती, तिचा त्या पांडुपुत्रानें धार दिलेल्या अर्धचंद्र व भल्ल बाणांनीं लागलाच विध्वंस उडविला; आणि वज्रप्रहारांनीं जसा पर्वतांचा नाश करावा, तसा त्या लोकोत्तर वीरांनीं नाना-प्रकारचे उत्कृष्ट बाण टाकून त्या सर्व हत्तींचा त्यांवीरल वीरांमुद्धा व ध्वजपताकांमुद्धा एक-दम नाश केला! त्या समर्थी, राजा, सुवर्णांचे हार ज्यांच्या गळ्यांत शोभत होते असे ते अर्जुनाच्या हेमपुंस शरांनीं विद्ध झालेले प्रचंड हत्ती अग्निज्वाळांनीं भडकलेल्या पर्वतांप्रमाणें रणभूमीवर दिसें लागले! राजा, त्या समर्थी मनुष्ये, गज व अश्व ह्यांनीं एकत्र गर्जना केली, पण ती सर्व गांडीवाच्या घोषांत नष्ट झाली! असो. अखेरीस बाणप्रहारांनीं जर्जर झालेले हत्ती व वीरहीन झालेले घोडे बेफाम होऊन दशादिशांस पळून गेले आणि हजारों रथ वीरहीन व अश्वहीन होतसाते जण काय भेषसमुदायांप्रमाणें जागोजाग दृग्गोचर झाले! राजा त्या वेळीं रणांगणांत अश्वहीन झालेल्या योद्ध्यांची फारच दुर्दशा उडाली! ते अर्जुनाला भिडून इतन्मतः पळू लागले, पण ते जिकडे जिकडे गेले तिकडे तिकडे अर्जुनाच्या बाणांनीं त्यांचा पिच्छा पुरविला आणि अखेरीस त्यांना इहलोकची यात्रा सोडून देऊन धारातीर्थीं देह देवाचे लागले! राजा, ह्या प्रमाणें त्या समर्थी अर्जुनांन असे कांहीं अपूर्व बाहुबल व्यक्त केले कीं. त्यांनीं एकट्यांनीं रणांत गज, अश्व व रथ ह्यांना जिंकून टाकिलें! राजा, नंतर पुनः कौरवांकडील महान् गजमैत्र्यांन, अश्वसैन्यांन व रथसैन्यांन अर्जुनाला गराडा

घातला असें भीमसेनांन पाहिलें, तेव्हां तो पांडु-तनय जे कितीएक उर्वरित रथी त्याजयाशीं लडत होते त्यांस सोडून देऊन मोठ्या वेगांन अर्जुनाच्या रथासमीप प्राप्त झाला; आणि ज्यांतील महान् वीर आधींच अर्जुनांन वधिले होते असें तें अवशिष्ट सैन्य उधळून लावून तो फिरून अर्जुनाला जाऊन भेटला. राजा, त्या समर्थी अर्जुनाच्या हातून जें प्रबळ अश्वसैन्य शिल्लक राहिलें होतें त्याच्याशीं भीमसेनांन घोर संग्राम करून त्या सर्वांचा त्यांन गदा-प्रहारांनीं अंत केला! राजा, त्या लोकोत्तर वीर्याशाली भीमसेनांन तत्काळ मनुष्ये, हत्ती व घोडे ह्यांवर गदा फेंकून त्यांचा संहार आरंभिला तेव्हां जण काय नर, गज व अश्व ह्यांना भक्षण करणारी व कोट, नगरें, वाडे व वेशी ह्यांना भंगणारी अतिशय भयंकर व दारुण अशी ती काळरात्रिच आहे असें भासूं लागलें! राजा भीमसेनांन त्या घोर गदेनें पोलादी चिलखतें घातलेले बहुत घोडे व घोडे-स्वार ह्यांजवर प्रहार केले, तेव्हां ते मोठमोठ्यांन ओरडत व दांतओठ म्वात रक्तचंचाल होऊन भूतलावर पडले आणि त्यामुळे हाडें, मस्तकें व हानपाय छिन्नविच्छिन्न झालेल्या त्या सैन्यावर मांसभक्षक अनेक हिंस्र पशु चरूं लागले आणि ते रक्त, मांस व चरबी हीं यथेच्छ सेवून तृप्त झाले! राजा, अशा प्रकारें गदाधर भीमसेन दहा हजार घोडे व अगणित पायदल ह्यांचा संहार उडवून इतन्मतः परिभ्रमण करूं लागला तेव्हां जण काय कालदंड धारण करून यमच आपणां-वर चालून आला आहे असें तुझ्या मैत्रिकांस वाटलें! नंतर, राजा, मांजलेल्या कुंजराप्रमाणें शुक्ल झालेला तो पांडुतनय भीमसेन—मगर जसा मागसांत घुमता तसा—कौरवांच्या गजसैन्यांत घुमला आणि तें आलौडन करून त्यांन आपल्या प्रचंड गदेनें तें सर्व सैन्य क्षणांत यमसदनीं

पाठविलें! राजा, त्या वेळीं ते मद्रोन्मत्त हत्ती बाणविद्ध होत्साम्नाते आपणांवर अधिष्ठित अमलेल्या वीरांमुद्धां व ध्वजपताकांमुद्धां जिकडे तिकडे रणांगणांत पडूं लागले तेव्हां जणू काय मपक्ष पर्वतच भूतलावर धडाधड कोमळत आहेत असे आम्हांस भासलें! राजा, ह्याप्रमाणें महाबल भीमसेन गजमेनेचा वध करून पुनः स्वरथावर चढला आणि अर्जुनाच्या पृष्ठभागी प्राप्त झाला. राजा, त्या समयीं कौरवांचें तें प्रचंड सैन्य अगदीं दीन होऊन माघारें वळण्याच्या वेतांत आलें; परंतु त्याजवर बहुधा चोहोंकडून शस्त्रास्त्रांचा भडिमार चालू असल्यामुळें तें तेंच थांबलें. तेव्हां कौरवसैन्याची ती दुर्दशा अवलोकन करून अर्जुनांनें प्राणघातकी बाणांचा त्याजवर वर्षाव आरंभिला आणि तें सर्व चतुरंग सैन्य बाणाच्छादित झालें, तेव्हां केमरांनी युक्त असलेलीं कदंबपुष्पें जशीं शोभतात, तें तें शोभूं लागलें! राजा, त्या समयीं अर्जुनाच्या शरप्रहारानीं पटापट कौरवसैन्य ममरांगणांत पडूं लागलें अमतां सर्वत्र एकच हाहाकार उडाला आणि गरगर फिरणाऱ्या प्रज्वलित कोलिताप्रमाणें तें सैन्य इतस्ततः भ्रमण करूं लागलें! राजा, तेव्हां कौरवांच्या अवाढव्य सेनेशीं अर्जुनांनें जें तुंबळ युद्ध केलें त्यांत कौरवांकडील एकून एक सर्व रथी, गज, अश्व व नर बाणविद्ध होत्साम्नाते जणू काय प्रज्वलित झाले आहेत असे वाटलें; आणि त्यांचीं चिखलें बाणांनीं फाटून जाऊन त्यांच्या देहांतून रुधिराच्या धारा उसळूं लागल्या तेव्हां जणू काय तें फुललेल्या अशोकचिंच वन होय असा सर्वास भास झाला! अमो, राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें सव्यमाची अर्जुनाचा दिव्य प्रताप अवलोकन करून कौरवांकडील सर्व वीर कर्णाच्या जीविताविषयी निराश झाले आणि रणांगणांत अर्जुनाचे बाणप्रहार आपणांस दुःसह

होत असा पूर्ण निर्धार ठरवून व आपणांस आतां अर्जुनांनें जिकिलेंच असे मानून ते मागे वळले; आणि अर्जुनाच्या बाणांच्या भडिमारांत आपले देह धारातीर्थीं टेवीत भयभीत होत्साम्नाते कर्णाला ममरभूमीवर सोडून देऊन आरडत ओरडत दशदिशांम पळून गेले! राजा, मग त्यांजवर शतावधि बाण सोडीत अर्जुनांनें त्यांचा पाठलाग केला आणि तें पाहून भीमसेनप्रमुख सर्व पांडवीय योद्ध्यांना मोठा आनंद झाला! राजा, नंतर तुझे पुत्र कर्णाच्या रथामर्माप त्याच्या आश्रयार्थ गेले व ते सर्व प्राणसंकटरूप अगाध मागारांत बुडत आहेत असे पाहून कर्ण हा त्यांना जणू काय द्वीपच झाला! राजा, गांडीवाला भिऊन पळून गेलेले कौरवयोद्धे कर्णाच्या आश्रयार्थ गेले अमतां जणू काय दांत पाडून निविप केलेले ते मर्पच होत असे सर्वास भासलें! राजा, कर्मे करणारे जीव मृत्यूला भ्याल्यावर पुण्याचाच आश्रय करितात, तद्वत् महात्म्या अर्जुनाला भ्यालेल्या त्या सर्व कौरववीरांनीं कर्णाचाच आश्रय केला; तेव्हां कर्ण हा त्यांची ती विपन्न अवस्था पाहून "वीरहो, भिऊं नका; निर्भयपणें मजजवळ या!" असे त्यांस म्हणाला. राजा, ह्याप्रमाणें तुझ्या सैन्याची अर्जुनांनें वाताहत केली असे पाहून शत्रुसंहार करण्याच्या इच्छेनें कर्णानें आपल्या धनुष्याचें आस्फालन आरंभिलें आणि संतापानें मुसकारे टाकीत त्या महाधनुर्धर कर्णानें अर्जुनाच्या वधाचा निश्चय ठरविला. नंतर अधिरथपुत्र कर्ण हा अर्जुनाच्या देवत प्रचंड धनुष्याचा टणत्कार करीत पुनः पांचालांवर धावून गेला; परंतु तें पाहून तत्काळ रक्तासारखे लाल डोळे करून पांचाल वीरांनीं क्षणांत कर्णाला बाणांच्या प्रचंड वृष्टीनें झांकून काढिलें; तेव्हां, राजा, कर्णानें उलट हजारों बाण पांचालांवर सोडिले व त्यांना ठार मारून रणांगणांत पाडिलें! राजा, त्या समयीं दूर्यो-

धनाच्या कल्याणाकरितां अत्यंत प्रयत्न करणाऱ्या मृतपुत्रानें पांचालांना वधण्याचा जेव्हां क्रम आरंभिला, तेव्हां पांचालांच्या सैन्यांत एकच हाहाकार प्रवर्तला !

अध्याय व्यायशीवा.

—:०:—

दुःशासन व भीमसेन ह्यांचें युद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, कवचधारी अर्जुनानें कौरवांचा मोड करून त्यांची दाणा-दाण उडविली, तेव्हां वारा जसा मेघममुदायांचा नाश करितो तसा कर्णानें प्रचंड बाणवृष्टीनें पांचालांचा नाश केल्या ! राजा, त्या वेळीं कर्णानें जनमेजय नामक पांचालाच्या सारथ्यावर अंजलि कर नांवाचे बाण मारिले व त्याला रथावरून खाली पाडून त्या रथाचे अश्व बधिले ! नंतर त्यानें शतानीक व मुनसोम ह्यांवर भल्ल बाणांचा भडिमार केल्या व त्यांची धनुष्येही छेदून टाकिली ! मग त्यानें सहा बाणांनीं धृष्टद्युम्नाला विंधिलें आणि तत्काल मोठ्या वेगानें त्याचे अश्व ठार मारिले ! नंतर त्यानें सात्यकीचे घोडे बधिले आणि कैकेयराजाचा पुत्र विशोक ह्याम यमसदनीं पाठविलें ! राजा, तेव्हां कैकेयाचा सेनापति उग्रकर्मा हा विशोकाम कर्णानें बधिलें असें पाहून मोठ्या आवेशानें कर्णावर तुरुन पडला आणि त्यानें अत्यंत उग्र वेगाच्या शरांचा एकसारखा वर्षाव करून कर्णाचा पुत्र प्रसेन ह्यास जर्जर केले ! राजा, त्या समयीं कर्णानें तीन अर्धचंद्र बाण मोठ्यानें हंमून उग्रकर्मावर सोडिले आणि त्याचे दोन बाहु व मस्तक हीं तोडिलीं; तेव्हां कुन्हाडीनीं तोडलेल्या शालवृक्ष जसा भूतलावर कामळतो. तसा तो उग्रकर्मा शीर्षभूजांनीं वियुक्त हातासाता रथांतून धाडकून खालीं समरांगणांत कामळला ! राजा, कर्णपुत्र प्रसेन हाही मोठा प्रतापशाली होता; त्याजवर

उग्रकर्मानें प्रचंड शरवृष्टि चालविली असतांही त्यानें हाताश्व सात्यकीवर सरळ चालणारे निशित बाण सोडून त्यास अगदीं बाणाच्छादित करून टाकिलें व तो बाणांचा भडिमार करीत जणू काय नाचूच लागला; परंतु इतक्यांत त्याजवर सात्यकीनें उलट बाण मारिले व त्यामुळे तो गतजीवित होऊन भूतलावर पडला ! राजा, आपला पुत्र प्रसेन हा रणांत पडला असें पाहून कर्णाला मोठा संताप उत्पन्न झाला व त्यानें शिनिश्रेष्ठ सात्यकीला वधण्याच्या हेतूनें “ शिनेया, मेलास ! मेलास ! ” असें मोठ्यानें ओरडून त्याजवर जलाल बाण सोडिला ! पण तितक्यांत शिखंडीनें सात्यकीवर येणाग तो बाण तीन बाणांनीं छेदिला व दुसरे तीन बाण सोडून त्यानें कर्णाला विद्ध केले ! तेव्हां कर्णानें दोन क्षुर बाणांनीं शिखंडीचे धनुष्य व ध्वज हीं तोडिलीं आणि सहा बाणांनीं शिखंडीला विद्ध करून धृष्टद्युम्नाच्या पुत्राचें मस्तक उडविलें ! राजा, त्याप्रमाणेंच महात्म्या कर्णानें त्या समयीं मृतसोमावर एक जलाल बाण टाकून त्यास विंधिलें; आणि मग तेथे जो वनघोर संग्राम सुरू झाला त्यांत कृष्ण हा अर्जुनास म्हणाला की, “ अर्जुना, आतां कर्णाच्या हातून सर्व पांचाल मृत्युमुखीं जाणार ! ह्यामाठीं आतां विलंब न करितां कर्णावर हल्ला कर व त्यास ठार मार ! ” राजा, कृष्णाचें हें भाषण श्रवण करून अर्जुन हा मोठ्यानें हंसला आणि त्यानें लागलाच कृष्णाला आपला रथ कर्णाच्या रथावर चालविण्यामाठीं सांगितलें. राजा, तेव्हां कर्णानें पांचालांचा जो वध चालविला होता तो बंद करण्यामाठीं व त्याचें त्या प्राणमंकरांतून परित्राण करण्यामाठीं अर्जुनानें कर्णावर चाल केली आणि भयंकर शब्द करणाऱ्या गांडीवाचें आस्फालन करून ज्येष्ठे तळहानांवर तडाखे सुरू केले आणि अगाणित

बाणांची जिकडे तिकडे वृष्टि करून एकदम बाणांचें छत्र उभारिलें व सर्वत्र अंधःकार पाडून शत्रुसैन्यांतले हत्ती, घोडे, रथ व ध्वज ह्यांचा निःपात उडविला ! राजा, तेव्हां गांडीवाचें मंडल करून अर्जुनांनै दशादिशांस बाणांचा भडिमार आरंभिला असतां त्या भयंकर समयीं अंतरिक्षांत सर्वत्र प्रतिध्वनि संचरित झाला आणि पक्ष्यांना उर्ध्वप्रदेशीं अवसर न मिळून ते सर्व पर्वतांच्या गुहांतून लपून बसले ! राजा, त्या समयीं अर्जुनाच्या पृष्ठभागाचें रक्षण करीत महापराक्रमी भीमसेन हा आपल्या रथांतून अर्जुनाच्या मागून येत होता तो अर्जुनास येऊन मिळाला; आणि मग ते दोघे पांडुपुत्र कर्णावर त्वरेंने चालून गेले व त्यांनीं अतिशय लगट करून शत्रूंशीं युद्ध आरंभिलें ! राजा, मध्यंतरी त्या महाबलाढ्य मृतपुत्रांनै सोमकांना अगदीं पेचाटीत घालून त्यांच्याशीं घोर युद्ध चालविलें व त्यांस अगदीं जर्जर करून त्यांचे रथ, अश्व व गज ह्यांच्या समूहांस आणि सर्व दिशांस बाणांनीं झांकिलें ! राजा, तेव्हां कर्णावर उत्तमोजा, जनमेजय आणि क्रुद्ध झालेले युधामन्यु व शिवंडी हे धृष्टद्युम्नासह मोठ-मोठ्यांनै गर्जना करीत धावून आले व त्यांनीं बाणांचा भडिमार करून कर्णास विंधिलें ! त्या पांच पांचाल महारथांनीं कर्णावर मोठ्या निकरानें हल्ला केला तरी ते—इंद्रियांचे विजय जसे आत्मवेत्त्या मनुष्याला मनोनिग्रहापासून दळवूं शकत नाहीत तसे—कर्णाला स्वरथापासून दळवूं शकले नाहीत ! तेव्हां कर्णानें उलट बाणवृष्टि करून त्यांचीं धनुष्यें, ध्वज, वाजी, सारथि व पताका ह्यांचा चुराडा उडविला आणि पांचावर पांच बाण सोडून त्यांना विद्ध केले व तो सिंहासारखा गर्जू लागला ! राजा, त्या वेळीं कर्ण हा शत्रुसैन्यावर बाणांचा भडिमार करीत असतां त्याच्या धनुष्येचा जो टणत्कार चालला

होता, त्याच्या योगें वृक्ष व पर्वत ह्यांसमवेत सर्व पृथ्वी भन्न झाली असें वाटलें आणि त्यामुळें सर्व जनता घाबरून गेली ! राजा, कर्णाचें धनुष्य म्हणजे दुसरें इंद्रधनुष्यच होतें. त्या प्रचंड धनुष्याचें आकर्ण आकर्षण करून कर्ण हा जेव्हां शत्रूंवर बाणवर्षाव करूं लागला, तेव्हां जणू काय रणांगणांत परिवेषानें युक्त असा दुमरा सूर्यच तळपत आहे असें भामूं लागलें ! त्या समयीं कर्णानें बारा जलाल बाण सोडून शिवंडीला विंधिलें, नंतर त्यांनै सहा बाण उत्त-मोजावर टाकिले, तीन बाणांनीं युधामन्यूला विद्ध केले आणि त्यांनै सोमक (जनमेजय) व धृष्टद्युम्न ह्यांजवर तीन तीन बाण सोडिले ! राजा, त्या वेळीं त्या घोर संग्रामांत सूतपुत्रानें त्या पांचही महारथांचा पराभव केला; आणि आत्मज्ञानी मनुष्यापुढें जसे पंच-इंद्रियार्थे व्यर्थ होऊन त्यांचें कांहींएक चालत नाहीसें होतें, तसें कर्णापुढें त्यांचें सर्व शौर्य व्यर्थ होऊन त्यांचे सर्व प्रयत्न कुंठित झाले आणि मग कौरव-सैन्यास मोठा आनंद झाला ! राजा, ह्याप्रमाणें कर्णप्रतारूप सागरांत ते पांचही महारथ बुडाव्यास लागून, तारवें फुटलेल्या व्यापाऱ्यांप्रमाणें जेव्हां त्यांचा समूळ विध्वंस होण्याचा समय येऊन ठेपला, तेव्हां जणू काय त्यांस बळकट अशीं नवीन तारवें प्राप्त करून देऊन त्यांचा उद्धार करावा म्हणून द्रौपदीचे पुत्र त्या पंच-मानुष्यांच्या साहाय्यार्थे सुव्यवस्थित रथांतून त्यांच्या समीप प्राप्त झाले. तेव्हां तत्काळ सात्यकीनें जलाल बाणांचा भडिमार करून कर्णाचे सर्व बाण तोडून टाकिले आणि कर्णाच्या देहाचें लोहबाणांच्या प्रहारांनीं विदारण करून तुझ्या ज्येष्ठ पुत्रावर आठ बाण सोडिले ! राजा, त्या समयीं त्याजवर कृप, कृतवर्मा, दुर्योधन व स्वतः कर्ण हे चौघे वीर तीक्ष्ण बाणांची वृष्टि करूं लागले आणि मग त्या सात्यकीचें व ह्या

चौघांचें जें युद्ध मातलें तें पाहून जणू काय दिक्-
पालांशींच दैत्यांचा राजा लढत आहे, असा
भाम होऊं लागला ! राजा, त्या वेळीं सात्यकीनें
पूर्ण ताण देऊन प्रत्येचेचें आस्फालन करीत
शत्रूंचा इतक्या अपरिमित शरांचा वर्षाव केला
कीं, शरत्कालिन मध्यान्हीच्या रवीप्रमाणें
त्याजकडे कोणासही पहावेना ! राजा, तेव्हां
कवचें घातलेले ते महाबलादच शिखंडिप्रभृति
पांचाल महारथ पुनः रथांत आरूढ होऊन एक-
दम सात्यकीच्या संरक्षणार्थ त्या स्थळीं प्राप्त
झाले; व इंद्राच्या साहाय्यार्थ उद्युक्त झालेले
मरुद्गण ज्याप्रमाणें शत्रूंची युद्ध करितात, त्या-
प्रमाणें त्यांनीं कौरवांशीं युद्ध केलें ! तेव्हां, राजा,
पूर्वीं देवदेत्यांचें जमें दारुण युद्ध झालें, तमं
कौरवपांडवांचें दारुण युद्ध झालें आणि त्यांत
रथ, गज व अश्व ह्यांचा भयंकर संहार पडला !
राजा, त्या वेळीं दोनही दळांतील चतुरंग सैन्यें
नानाविध शस्त्रास्त्रांनीं परिघेष्टित झालीं आणि
एकमेकांच्या हस्तें विद्ध होतसातीं आर्त स्वरांनं
आक्रोश करीत धारातीर्थीं देह ठेवूं लागली !
राजा, अशा प्रकारें घनघोर संग्राम चालू असतां
तुझा पुत्र शूर दुःशासन हा बाणांचा भडिमार
करीत भीमसेनावर धावून गेला; पण तो आप-
ल्यावर चालून आला असे पाहातांच महारुरूवर
ज्याप्रमाणें सिंहांन उडी घालावी, त्याप्रमाणें
वृकोदरानें तत्काळ त्यावर उडी घातली !
राजा, त्या समयीं त्या बलादच योद्ध्यांचें मोठें
दारुण युद्ध जुंपलें ! जणू काय ते शंबरशक्रां-
प्रमाणें एकमेकांवर क्रोधाग्रयमान होऊन प्राणांचे
जुगार खेळूं लागले ! त्यांनीं परस्परंघोर प्राण-
घातकी उग्र शरांचा अनिशय मारा चालविला
आणि ते इतक्या आंघोशांनं लढूं लागले कीं,
जणू काय ज्यांच्या गंडस्थळांतून एकमारग्या
मदस्त्राव चालला आहे असे कामशांत्यर्थ आंधळे
ललेले दोन मदोन्मत्त हत्ती माज केलेल्या

हत्तिणींकरितां झगडत आहेत असें वाटूं लागलें !
राजा, तेव्हां भीमसेनानें त्वरा करून दोन क्षुर
बाण सोडिले आणि दुःशासनाचें धनुष्य व ध्वज
हीं तोडून त्याच्या भालप्रदेशावर एक बाण
मारिला आणि मग त्याच्या सारथ्याचें मस्तक
छेदून भूतलावर पाडिलें ! राजा त्या समयीं
दुःशासनानें दुसरें धनुष्य घेतलें व भीमसेनावर
बारा बाण सोडून स्वतः रथ चालविला आणि
सरळ जाणाऱ्या बाणांचा भडिमार करून भीम-
सेनास आच्छादिलें; आणि मग त्यानें सूर्य-
किरणांप्रमाणें देदीप्यमान सुवर्ण व रत्नें ह्यांनीं
मुशोभित, इंद्राच्या वज्राप्रमाणें सुदुःसह व भीम-
सेनाचें शरीर भेदन करण्यास समर्थ असा भयं-
कर बाण भीमसेनावर टाकिला ! राजा, त्या
बाणानें भीमसेनाचा देह विदीर्ण झाला आणि
सर्व गात्रें निर्वीर्य होऊन तो शूर पांडुपुत्र हात
पसरून मूर्च्छित पडला ! राजा, त्या वेळीं तो
भूतलावरच पडला असता, परंतु रथाचा आधार
मिळाला म्हणून तमं झालें नाहीं. असो; कांहीं
वेळांनं तो पुनः सावध झाला व त्यानें
मोठ्यानें गर्जना केली.

अध्याय त्र्यायशीवा.

—:०:—

दुःशासनाचा वध !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, तेव्हां
राजपुत्र दुःशासन व भीमसेन ह्यांचें फार भयं-
कर युद्ध सुरू झालें ! त्या समयीं रणांगणांत
दुःशासनानें भीमसेनाच्या धनुष्यावर एक बाण
साडून तें छेदून टाकिलें आणि मग साठ बाण
मारून सारथ्याला विधिलें ! नंतर त्यानें प्रथम
भीमसेनावर मोठ्या वेगानें नऊ बाण सोडिले
आणि मग मोठ्या त्वरनें एकसारखा जलाल
बाणांचा वर्षाव आरंभिला ! राजा, तेव्हां तो
शूर पांडुपुत्र अतिशय चवताळला व त्यानें

भयंकर शक्ति तुझ्या पुत्रावर सोडिली ! त्या वेळीं ती अतिशय शक्ति प्रज्वलित अशा उल्लेखप्रमाणें आपल्या प्राण घेण्यास चालून येत आहे असे पाहून महात्म्या दुःशासनानें कर्णापर्यंत प्रत्यंचा ओढून एकामागून एक दहा जलाल बाण तिजवर टाकून तिचा चुराडा उडवून दिला ! तेव्हां तुझ्या पुत्राचें तें अघटित कर्म अवलोकन करून सर्व योद्ध्यांना मोठा आनंद झाला व सर्वांनी त्याचे धन्यवाद गाडले ! राजा, नंतर दुःशासनानें तत्काळ उलट भीमसेनावर एक तीव्र बाण सोडून त्याम गाढ वेध केला आणि त्यामुळे भीमसेन संतापून जाऊन नखशिखांत पेटला व डोळे फाडीत दुःशामनाला म्हणाला कीं, 'हे वीरा, तूं मला आज अत्यंत विद्ध केलें; पण आतां मी तुला जो गदाप्रहार करीन तो मीम म्हणजे झाले !' राजा धृतराष्ट्रा, संतप्त झालेल्या भीमसेनानें ह्याप्रमाणें आरडून भाषण केल्यावर लागलीच दुःशामनाच्या वधाकरितां आपली भयंकर गदा हातांत घेतली आणि तो फिरून त्याम म्हणाला, 'हे दुष्टा, आज मी ममरांगणांत तुझे रक्त प्राशन करीन !' राजा, नंतर तुझ्या पुत्रानें भीमसेनाचें तें भाषण श्रवण करून जणू काय मूर्तिमंत मृत्यूच अशी प्रचंड शक्ति मोठ्या वेगानें त्याजवर सोडिली, पण ती दारुण शक्ति आपल्यावर येत आहे असे पाहून भीमसेनानें मोठ्या क्रोधानें आपली भयंकर गदा तिजवर फेंकिली; तेव्हां ती त्या शक्तीचें एकदम विदारण करून दुःशासनाच्या मस्तकावर जाऊन आपटली ! त्या समयीं राजा, हत्तीच्या गंडस्थळांतून जसा मदन्नाव होतो तसा त्या शूर वीराच्या मस्तकांतून रुधिरस्त्राव सुरू झाला ! इतक्यांत त्या घोर रणकंदनांत भीमसेनानें दुःशासनावर दुसरी गदा फेंकिली आणि तिच्या आघाताबरोबर दुःशासन हा दहा धनुष्यांइतक्या अंतरावर रणांगणांत धाडकन

जाऊन पडला ! राजा, भीमसेनाच्या त्या गदाप्रहारानें दुःशासनाची फारच दुर्दशा झाली; गदेचा वेग सहन न झाल्यामुळे तो धरथरा कांपू लागला; गदेच्या प्रहारानें त्याचें चिखलत, आमरणें, अंबर व माला हीं विच्वस्त झालीं; आणि दुःसह वेदनांनीं तळमळून जाऊन तो अगदीं गडबडां लोळू लागला ! राजा, त्या तुंबळ युद्धांत भीमसेनाच्या गदाप्रहारांनीं दुःशासनाचे घोडे व सारथि ह्यांचा वध झाला आणि रथाचा अगदीं चुराडा होऊन गेला ! ह्याप्रमाणें दुःशासनाची विपन्न अवस्था अवलोकन करून सर्व पांचालांना आनंदाचें भरतें आलें व ते मोठमोठ्यांनीं सिंहगर्जना करूं लागले ! अशा रीतीनें दुःशासनाला धरणीवर पाडिल्यावर भीमसेन हा आनंदानें इतका गर्जू लागला कीं, त्याच्या योगें दशदिशा दुमदुमून गेल्या व आसमंताद्वागीं लढत असलेले सर्व भूपाल मूर्च्छित पडले ! राजा, नंतर भीमसेनही आपल्या रथांतून लागलाच खाली उतरून मोठ्या वेगानें दुःशासनावर धावून गेला; आणि मग तेथें आसमंताद्वागीं महान् महान् वीरांशीं अत्यंत तुंबळ युद्ध करित असतां, तुझ्या पुत्रांनीं पूर्वीं कौरवसभेंत जे जे दुर्वर्तन केलें तें सर्व आठवून तो अचित्यकर्मा महाबलवान् भीमसेन अतिशय संतप्त झाला ! त्या समयीं दुःशासनाला आपल्या समोर अवलोकन करून भीमसेनाच्या डोळ्यांपुढें त्या रजस्वला द्रौपदीचें केशग्रहण व वस्त्रहरण हें मूर्तिमंत उभें राहिलें आणि पांडवांनीं माना एकीकडे वळविल्या असतां त्या साध्वीला दुष्ट कौरवांनीं जीं दुःखें दिलीं त्यांचीही त्याला एकदम आठवण झाली ! राजा, त्या वेळीं भीमसेनाचें मन संतापानें तळमळें व घृताभिधार केलेला अग्नि ज्याप्रमाणें धडधड पेटतो त्याप्रमाणें तो क्रोधानें एकदम पेटला ! राजा, मग तो कर्ण, दुर्योधन, कृप, अश्वत्थामा

कृतवर्मा ह्यांस म्हणाला, समस्त वीरहो, आज हा हात उपटून काढितो !' राजा, असे म्हणून, दुष्ट दुःशामनाला मी ठार मारितो; तुम्हांत प्राणोत्क्रमण करण्याच्या बेतांत आलेल्या त्या मर्त्य अमेल तर ह्याचें संरक्षण करा ! दुःशामनाला भीमसेनातें मोठ्या आवेशानें आप- राजा धृतराष्ट्रा, मग अत्यंत बलिष्ठ असा टिलें आणि त्याचा तो हात उपटून आपल्या भीमसेन मोठ्या वेगानें एकदम दुःशामनावर वज्रतुल्य हातानें त्यास त्या वीरांमध्ये वधिलें ! वला; आणि मिह जमा महान् गजाला पक- राजा. त्या ममयी रणांत पतन पावलेल्या त्या धरितो, तसें त्यानें ठार मारण्याच्या उद्देशानें वीरांचें वक्षस्थळ विदारून भीमसेन त्यांतले कोंबट शामनाला कर्ण व दुर्योधन ह्यांच्या समस्त कोंबट रुधिर प्याला आणि मग त्यानें खड्याचा डून धरिलें; व त्याजकडे क्रूर मुद्देनें अवलो- वार करून त्याचें मस्तक धडापासून निराळें क करून त्यानें मोठ्या दक्षतेनें त्याच्या नर- केलें ! राजा, आपली प्रतिज्ञा खरी करून दाख- णावर पाय दिला आणि त्याचे प्राण घेण्या- विषयाम मिद्ध झालेला तो बुद्धिमान् भीमसेन रितां लखलखीत व जलाल खद्द हातांत घेऊन पुनःपुनः दुःशामनाच्या रक्ताची रुचि घेऊन वशिखांत क्रोधानें थरथरणागा तो पाटुपुत्र क्रोधमुद्देनें आसमंताद्द्वाराी अवलोकन करीत मसेन दुःशामनाला म्हणाला. ' हे दुःशात्म्या. करीत म्हणाला:- अहो. ह्या शत्रुशोणिताची र्णदुर्योधनांमहवर्तमान मोठ्या आनंदानें तूच रुचि किती अर्ध म्हणून मांगावी ! मातेचें दुग्ध आम्हांम ' गायेर गाय ' असें म्हणाल्याम ! मधु, वृत, मधुपासून उत्कृष्ट गीतीनें मिद्ध केलेलें तर. राजसूय यज्ञांत अवभृथस्नानानें द्रौप- मद्य, उत्तम उदक, दद्यापासून किंवा दुधापासून चे जे केश पवित्र झाले, ते तूं कोणत्या हातानें काढलेस, हे ह्या भीमसेनाम सांग पाहूं ?' राजा क्रादलें लोणी किंवा मुगा, अमृत वंगेर जे तराष्ट्रा, भीमसेनाचे ते अत्यंत दारुण शब्द दुसरे गोड रम आहेत ते सर्व ह्या रुधिरमापुढें वण करून दुःशामनानें भीमसेनाकडे निरग्व- अगदीं तूच्छ आहेत ! असो; राजा, नंतर घोर कर्म करणागा तो संतप्त भीमसेन मृदुस्मित करून हिलें आणि संतापांन जळकळं लागून कौरव- पुनः म्हणाला:-- वा दुःशामना, काय करूं रे ! मिकांमसक्ष डोळे गरगरां फिरवीत तो भीम- मृत्युनेच तुझे रक्षण केलें ! नार्हापेक्षां आणवी नाम म्हणाला:-- हे भीमा, हा पहा हत्तीच्या तुझा समाचार घेतला अमना ! राजा, असें बोलून डिप्रमाणें पुष्ट, महत्वावधि गाईचें दान कर- पुनःपुनः दुःशामनाचें रक्त पिण्याम धावून ारा आणि क्षत्रियांचा त्रिंश्वम उटविणारा जाणाऱ्या आनंदित भीमसेनाला त्या वेळीं ज्यांनीं मा हा माझा हात-ह्यांनच मी याज्ञमेनीचे ज्यानी पाहिलें ते सर्व भयभीत होत्सोत धडाधड शा मुख्य मुख्य कौरव व तुमचे मभामद मृतलावर पतन पावले ! तमंचे जे कोणी व्यथित यांच्या समक्ष ओढिले ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्या- हाऊन रणांगणांत पडले नाहीत त्यांच्या हातांतून यांमाणें राजपुत्र दुःशामन ह्याचें तें बापण श्रवण शस्त्रे गळाली आणि ते शत्रूकून जाऊन मोठ- करून भीमसेनानें दुःशामनाचें वक्षस्थळ पीडित मोठ्यानें ओरडूं लागले व त्यांनी डोळे मिटून ळें व त्याचे दोन्ही हात जोगनें धरून मोठ्यानें मभावनालाचा कानोमा घेतला ! राजा, त्या वेळीं र्जना केली आणि सर्वे योद्ध्यांना म्हटलें:-- ज्यांनी ज्यांनी भीमसेनाला दुःशासनाचें रक्त वीरहो, ज्याला सामर्थ्य अमेल त्यानें ह्या वेळीं पितांना पाहिलें ते सर्व भयभीत होत्सोते दुःशामनाचें रक्षण करावें ! मी आतां ह्याचा "स्वचित हा मनुष्य नव्हे !" असे उद्गार काढीत

पळून गेले! राजा, भीमसेनाचें तें उग्र रूप व रुधिरप्राशन अवलोकन करून लोक “ खचित हा राक्षस आहे ! ” असें म्हणत चित्रसेनासह धूम ठोकून निवृत्त गेले ! राजा, ह्याप्रमाणें चित्रसेन राजपुत्र युद्धविमुख होऊन रणांगणांतून पळून जाऊं लागला तेव्हां युधामन्यूनें मेन्यासह त्याजवर हल्ला केला आणि त्यानें मोठ्या शौर्यानें तत्काळ सात जलाल बाण त्याजवर टाकिले ! राजा, त्या समयीं तो राजपुत्र चित्रसेन पायांखालीं तुडविलेल्या सर्पाप्रमाणें उमळून माथारा वळला व त्यानें त्या पांचालवीरावर तीन व त्याच्या सारख्यावर महा बाण सोडून त्यास विद्ध केले ! तेव्हां तो शूर युधामन्यु फारच चवताळला आणि त्यानें उत्तम नेम धरून एक सुपुंख, अणीदार व धार दिलेला जलाल बाण आकर्ण ओढून चित्रसेनावर टाकिला व त्याचें मस्तक उडविलें ! राजा, ह्याप्रमाणें चित्रसेन हा धारातीर्थी पडतांच त्याचा धाता कर्ण हा क्रोधायमान होऊन मोठ्या शौर्यानें पांडवीय सेनेवर हल्ला करून तिला उधळून लावूं लागला; पण इतक्यांत त्या अभितवीर्यावान् वीराला तत्काळ नकुलानें अडवून धरिलें !

राजा धृतराष्ट्रा, इकडे खुनशी दुःशासनाला भीमसेनानें तेंच मारिले आणि पुनः त्याच्या रुधिरानें ओंजळ भरून सर्व वीरांच्या समक्ष तो मोठ्यानें म्हणाला:—हे पुरुषाधमा (दुःशासना) ! हें पहा तुझ्या नरड्याचें रक्त मी पीत आहे ! पुनः मोठ्या आनंदानें ‘ गायरे गाय ’ असें म्हण पाहू ! अरे, त्या समयीं ‘ गायरे गाय ’ असें म्हणून जे आम्हांपुढें नाचले, त्यांच्यापुढें आतां आम्ही तेच शब्द उच्चारून नाचत आहों ! नीचा दुःशासना, प्रमाणकोटीस माझे शयन, मला कालकूटाचें भोजन, कृष्णसर्पाकडून मला दंश, लक्षामृहांत आमचा दाह, घृत करून आमचें राज्यहरण, आमचा वनवास,

द्रौपदीचें केशग्रहण, रणांत शस्त्रास्त्रांचे आम्हांवर प्रहार, स्वगृही आमचे हाल व विराटनगरीतल्या आमच्या नानाविध यातना, ह्या सर्वांना कारण वास्तविक तूंच आहेस ! तुझ्याच सल्ल्यावरून शकुनि, दुर्योधन व कर्ण ह्यांनीं ही सर्व मसलत उभारिली ! दुःशासना, तुझ्यासारख्या दुष्ट पुत्रांच्या मसलतीस अनुमोदन देऊन मूर्ख धृतराष्ट्रानें जें तुम्हांस उत्तेजन दिलें, त्यामुळच आम्हांला बहुविध दुःखें भोगावीं लागलीं व सुखाचा कधीं लेशही प्राप्त झाला नाही ! राजा धृतराष्ट्रा, भीमसेन ह्याप्रमाणें उद्गार काढून नंतर अर्जुनासमीप आला व तेंच त्यानें फिरून तेच उद्गार मोठ्या आनंदानें कृष्णार्जुनांजवळ काढिले. राजा, त्या वेळीं त्याचें सर्व शरीर रुधिरानें माखलें अमून त्याच्या तोंडांतून रक्त थवथवां भूमीवर गळत होतें ! तेव्हां तो शूर भीमसेन पुनः क्रोधायमान होऊन ह्मणाला:—कृष्णार्जुनहो, दुःशासनाला उद्देशून रणांत मीं जी प्रतिज्ञा केली होती, ती मीं आज सिद्धीस नेली ! आतां मीं ह्या रणभूमीवर दुसरा यज्ञपशु जो दुर्योधन त्यास आणि त्याचें मस्तक पायांखालीं तुडवून सर्व कौरवांसमक्ष समाधान पावेन ! असे; राजा धृतराष्ट्रा, इतकें बोलून रुधिरानें माखलेला तो पांडुपुत्र भीमसेन मोठ्या आनंदानें गर्जू लागला, तेव्हां जणू काय वृत्रासुराला वधून महात्मा इंद्रच गर्जत आहे असें सर्वांस भासलें !

अध्याय चौऱ्यायशींवा.

—:०:—

नकुलाचा पराजय.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, भीमसेनाच्या हस्ते दुःशासन मरण पावला, तेव्हां दुःश्वानें अगदीं तळमळून जाऊन त्याचे महापराक्रमी व रणांतून पराङ्मुख न होणारे दहा

महारथ भ्राते निषंगी, कवची, पाशी, दंडधार, अर्जुनाला सामोरा जा. कर्णा, दुर्योधनानें सर्व धनुर्धर. अलोलुप, सह. पंड, वातवेग व सुवर्चस. हे योग क्रोधरूप विषानें मळाळत भीमसेनावर भयंकर बाणवृष्टि करीत धावून आले. आणि त्यांनीं त्यास बाणांनीं झांकून मागें हटविले. तेव्हां तो भीम अतिशयित संतापला आणि क्रोधानें इंगळासारखे आरक्त नेत्र करून अंत-काप्रमाणें शोभूं लागला ! नंतर, राजा, सुवर्णाचीं बाहुभूषण धारण केलेल्या त्या दहा धात-गष्टांवर भीमसेनानें दहा सुवर्णपुंख महावगवान् भल्ल बाण सोडिले आणि त्या सर्वांस यमसदनीं पाठविले; तेव्हां कर्णाच्या समक्ष तुझें मन्य भयभीत होऊन पळून गेले ! अशा प्रकारें, राजा, अंतक ज्याप्रमाणें प्राण्यांचा मंहार करिता, त्याप्रमाणें भीमानें कौरवसैन्याचा मंहार केल्या तेव्हां कर्ण देखील घाबरून गेला; व त्याची ती शूर मुद्रा भयानें काळवंडलेली अवलोकन करून रणशाली मद्रार्थाश शल्यानें काल्यास अनुरूप असें भाषण केलें.

शल्य म्हणाला: कर्णा, पिउं, नका; असें भिणें तुझ्यासारख्याला उचित नाही. हे पहा भीमसेनाच्या भयानें आत झालेले भूपाळ पळत सुटले आहेत; दुर्योधन तर आपल्या भ्रात्यांच्या परणानें विव्हल होऊन मूर्च्छित पडला आहे; आणि महात्मा भीमसेन दुःशामनाचें रक्त पिउं लागतांच दुःस्वानें गांगरून गेलेले इतर उर्वरित धातंगष्ट व कृपप्रभृति वीर दुर्योधनाच्या भोव-तार्थी जमून त्याचें मातवन करीत आहेत ! कर्णा, प्रस्तुत समर्थी पांडवांचें तेज फारच वाढले आहे; जणू काय आपली मातय वस्तु आपल्याला प्राप्त झाली. असें ते मानीत आहेत. हे पहा अर्जुन आदिकरून शूर पांडुपुत्र युद्धा-करितां तुझ्यावरच चालून येत आहेत, ह्यामाठीं, कर्णा, ह्या समर्थी तूं अमा निर्वाय न होतां आपले शस्त्रनेत्र प्रकट करून मांड्या जैयानें

अशी दाल व आकाशाप्रमाणे झळकणारे खड्डा धारण करून तो पश्यामागवा अंतरिक्षांतून डकडे विकडे झडपा घालू लागला ! गजा, त्या ममयी विचित्र रीतींनी युद्ध करणाऱ्या त्या नकुलाने हां हां म्हणतां कौरवमेन्यांतले रथ, अश्व व गज हे खड्डाप्रहारांनी अश्वमेधांतल्या पशुप्रमाणे ठार मारिले आणि महान् महार उडविल्या ! गजा, तेव्हां त्या एकट्या जयेच्छु पांडुनयाने अनेक देशांहून आणिलेल्या दान हजार युद्धप्रवीण व उत्तम चेदनाची उशी धारण केलेल्या मन्यप्रतिज्ञ वीरांना वधिले ! गजा, ते पाहून वृषमेनाने त्या नकुलावर चोहोंकडून एकमागवा बाणांचा भडिमार केला आणि त्यांच्या योग्य तो पांडुपुत्र विद्ध होतनाता अनिशय चवताळला व आपल्याला भीममेनाने पाटबळ आहे हे मनांत आणून त्या घोर रणकंदनांत अनिशय प्रताप गाजवू लागला ! गजा, तेव्हां कर्णपुत्राने नकुल हा कौरवांचे अनेक नग, अश्व, गज व रथ ह्यांचा विध्वंस उडवीत अमतां त्याजवर मोठ्या क्रोधाने अठरा बाण टाकून त्यास अत्यंत विद्ध केले ! गजा, त्या ममयी नकुल हा पुनः अनिशय शोभल्या व अमिपाच्या लोभांने श्यन पर्षा पंख पमरून जशी मोठ्या आवेशाने उडी घालितो, तशी त्याने कर्णात्मजावर धावून जाऊन एकदम उडी घातली ! गजा, त्या वेळी वृषमेनाने उलट त्या महापराक्रमी नकुलावर जलाल बाणांचा वर्षाव गेला; परंतु नकुलाने वृषमेनाचे ते सर्व बाणममुदाय फुटत घालविले व तो खड्डाचर्मामहित चित्रविचित्र रीतींनी रणांगणांत मंचार करू लागला ! राजा, नंतर त्या घोर संघ्रामांत प्रथम कर्णपुत्राने नकुलावर भयंकर शरवृष्टि करून त्याच्या हातांतले महस्त्रतारकांनी युक्त असे चर्म तन्काळ छेदिले आणि मग आणगी महा निशित बाण जोराने टाकून त्याच्या हातांतले ते तीक्ष्ण धारेचे, प्रचंड भार मोमणारे शत्रूंचा अंत करणारे, सर्पामागवे प्राणघातकी व अत्यंत घोर असे विक्रोश व पोत्यादी खड्डा, तो आवेशाने परजान अमतां, तोडून त्यांचे वक्षस्थळ देदीप्यमान तीक्ष्ण बाणांनी अनिशय विद्ध केले ! राजा, ह्याप्रमाणे वृषमेनाने इतर योद्ध्यांच्या हातून न घडणारे व थोरसे अत्यंत मान्य असे दारुण कर्म रणांत करून दाखविले. तेव्हां बाणप्रहारांनी विद्ध झालेला तो महात्मा अश्वहीन नकुल त्वरा करून भीममेनाच्या रथांत अर्जुनाच्या ममक्षसिंह जमा पर्वताच्या शिखरावर उडी मारून चढतो तसा-चढला; आणि मग ते पाहून क्षुब्ध झालेल्या वृषमेनाने एकाच रथांत अधिष्ठित असलेल्या त्या भीममेन-नकुलांवर त्यांचे विदारण करण्याच्या उद्देशाने जोगाची शरवृष्टि आंगभिली ! गजा, ह्याप्रमाणे नकुलाचा रथ भंग करून वृषमेनाने बाणवर्षावाने त्यांचे खड्डे छेदून टाकिले; तेव्हां बाकीचे प्रधान कौरववीर एकत्र होऊन नकुलावर धावून आले व तो भीममेनाच्या रथावर चढला असे पाहून त्यांनी त्या दोघांही पांडववीरांवर अनिशय निकराने बाणांचा भडिमार केला ! राजा, मग त्या कौरववीरांचे व भीमार्जुनांचे जुंजळ युद्ध सुरू झाले ! अशीच आह्वान करून त्यास वृतादिकांच्या अभिधागने प्रज्वलित करावे, त्याप्रमाणेच जणू काय त्या कौरवयोद्ध्यांनी भीमार्जुनांचे आह्वान करून शरवृष्टीने त्यांस प्रज्वलित केले होते; ह्यांमन्य मर्मांतली कौरवमेनेचा गाराडा पाहून त्या मेनेवर व वृषमेनावर त्या क्षुब्ध झालेल्या भीमार्जुनांनी बाणांचा अनिशय भडिमार चालविला ! इतक्यांत अर्जुनाच्या रथावर ध्वजप्रदेशी मारुनि अधिष्ठित होता, तो अर्जुनाला म्हणाला, अर्जुना, नकुलाची काय अवस्था झाली आहे ती पाहिलीमना ! हा कर्णपुत्र वृषमेन आपल्याला अनिशय पीडा करीत आहे; ह्यामाठी तू

त्याजवर चालून जा !' राजा, नंतर मारुतीचे ते भाषण श्रवण करून अर्जुनाने तत्काळ आपला ग्थ भीमसेनाच्या रथाजवळ नेला; व ह्याप्रमाणे अर्जुन हा आपल्या मन्त्रिषु प्राप्त झाल्या असे पाहून नकुलाने त्यास म्हटले:— अर्जुना, ह्या कर्णपुत्र वृषमेनाच्या त्वरित नाश कर !' राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे एकाएकी रणांगणांत नकुलाने अर्जुनाला असे ममक्ष म्हटले तेव्हां अर्जुनाने कृष्णाला आपला ग्थ एकदम अपाठ्याने वृषमेनाकडे चालव म्हणून मांगितले !

अध्याय पंचायशीवा.

—:—

संकुलयुद्ध.

मंजय मांगतो:— राजा धृतराष्ट्रा, नंतर थोड्याच वेळांत नकुलाच्या पगजयांचे वर्तमान पांडवसैन्यांत पसरले. नकुल हा ग्थहीन झाला, त्याचे धनुष्य व खड्ग हीं भंग झालीं, शत्रूंनी बाणांचा भडिमार करून त्यास जख्म केले, व अखेरीस वृषमेनाच्या अस्त्रप्रभावापुढे त्याला हातच टेकावे लागले, असे जेव्हां पांडवांकडील प्रबळ योद्ध्यांस ममजले, तेव्हां त्यांची फारच लग्नग उडाली; व तत्काळ द्रुपदराजाचे पांच पुत्र, मात्यकि व द्रौपदीचे पांच पुत्र असे एकंदर अकरा महान् महान् योद्धे शत्रूंना ठक्कर देऊन त्यांचा नाश करण्याकरितां, ज्यांच्यावरील उत्तम सारथि भरभाव चाललेल्या अश्वानि नियंत्रण करीत आहेत, ज्यांच्यावरील ध्वजपताका वाऱ्याने फडाडत आहेत, आणि ज्यांच्या दणदणटाचा प्रचंड ध्वनि होत आहे, अशा रथांतून शस्त्रास्त्रांमह फार त्वरेने वृषमेनावर धावून गेले; आणि त्यांनीं भयंकर मर्षाप्रमाणे प्राणघातकी बाणांचा एकमाग्या भडिमार करून तुड्डया सैन्यांतील चतुरंग वीरांचा संहार आरंभिला ! राजा, तेव्हां कौरवांकडील

प्रमुख ग्थी कृप, हार्दिक्य, अश्वत्थामा, दुर्योधन, शकुनिमुत्, वृक, क्राथ व देवावृष हे हत्ती किंवा मेघ ह्यांच्याप्रमाणे दणदणट करणाऱ्या रथांतून बाणांची शोर वृष्टि करीत त्यांजवर एकदम चालून गेले आणि त्यांनीं पांडवांच्या त्या एकादश वीरांवर अत्यंत ज्वलल बाण मोडून त्यांस जागच्या जागी म्बिल्ले ! राजा, ते पाहून पांडवांकडील कुलिंद योद्ध्यांनीं नवीन मेघांप्रमाणे श्यामवर्ण व गिगिशिखरांप्रमाणे प्रचंड असे आपले महावेगवान् गज कौरवयोद्ध्यांवर घातले; आणि मग, जे हिमालय पर्वतावर वाढलेले, ज्यांवरील शस्त्रास्त्रांची व इतर सर्व व्यवस्था उत्तम होती, ज्यांवर युद्धार्थ आतुर झालेले गणकुशल योद्धे अधिष्ठित होते व ज्यांवर सुवर्णाचीं जालीं पसरलीं होती असे ते मदनमत्त हत्ती मविद्युत् मेघांप्रमाणे शोभूं लागले ! राजा, त्या ममर्षी कुलिंदराजाच्या पुत्रांने प्रथम दहा पोलादी बाण मोडून कृप, त्याचा सारथि व त्याचे अश्व ह्यांना विधिले; परंतु नंतर त्याजवर कृपाने भयंकर बाणांचा भडिमार करून त्यास हत केले व तो लागलाच हत्तीमहवर्तमान रणभूमीवर पडला ! राजा, मग कुलिंदपुत्राचा शकटा भाऊ सूर्यकिरणांप्रमाणे दृढीप्यमान् अशा पोलादी तामरांचा भडिमार करीत कृपाच्या रथावर चालून गेला आणि तो मोठ्याने गजना करून कृपाशी लढत असतां गांधारपतीने त्याचे शिर उडविले ! राजा, नंतर मोठे तेवळ युद्ध जुंपले व त्यांत कुलिंदाचा नाश झाला, तेव्हां तुड्डया सैन्यांतील महारथ मोठ्या आनंदाने मोठमोठ्यांने शंख वाजवूं लागले व ते मधनुष्य वीर बाणांचा वर्षाव करीत शत्रूंवर चालून गेले ! राजा, तेव्हां पुनः कौरव व पांडुसंजय ह्यांचे अत्यंत निकराचे युद्ध सुरू झाले व त्यांत शर, खड्ग, शक्ति, ऋष्टि, गदा व कुन्हाडी ह्यांचे दोन्ही दळांतील वीरांनीं एकमे-

कांवर प्रहार चालविल्यामुळे अश्व, गज व नर एका गजारूढ वीरगने रथांत अधिष्ठित अस-
 ह्यांचा भयंकर प्राणनाश प्रवर्तला. आणि दोन्ही लेल्या दुर्जय क्राथाधिपतींवर शश्वषीव आरं-
 चतुरंग दळे परस्परंच्या हस्ते भूतळावर मरून भिल्या आणि मग त्यामुळे तो क्राथराज अश्व,
 पडू लागली आणि राहिले माहिले सैनिक दश- मारथि, शरामन व ध्वज ह्यांमहित विद्व होऊन
 दिशांस पळून गेले. तेव्हां जणू काय प्रचंड सोमाट्याच्या वाऱ्याने भग्न केलेल्या प्रचंड वृक्षा-
 वाऱ्याने विद्युल्लतेने युक्त असे मेघममुदायच भग्न प्रमाणे धाडकनू खाली पडला ! राजा. त्या
 करून दशादिशांस उधळून लाविले. असे मर्त्यां ममर्था त्या गजारूढ पार्वतीय वीरगवर वृकांने
 वाटले ! राजा. नंतर भोजाधिप कृतवर्म्याने शता- अतिशयित विधिः
 निकाच्या अनेक महागजांवर. रथांवर. अश्व- परंतु त्या पार्वतीय वीरगने आपला महान् गज
 वर व पायदळावर हल्ला केला आणि त्याने उलट त्याजवर घालून त्याच्या चार पायांखाली
 त्यांवर बाणांचा भयंकर वर्षाव आरंभिला; तेव्हां त्याला. त्याच्या अश्वाना व रथाला तुडवून
 ते गतप्राण होऊन पटापट धरणीतलावर. पतन त्या मर्त्याचा चुगडा उडविला ! राजा. तेव्हां
 पावले ! राजा. इतक्यांत अश्वत्याम्याने सर्व त्या प्रचंड हत्तीवर व त्याजवरील स्वारावर बभ्रु-
 आयुधे व ध्वजपताका ह्यांनी युक्त अशा तीन मुतांने भयंकर बाणांचा भडिमार केला व त्याम
 मर्ती हत्तींवर प्रचंड शस्त्रघृष्टि केली; आणि त्यांम थार करून. इंद्र जमा अशनिपातांने प्रचंड गिरी
 ठार करून. इंद्र जमा अशनिपातांने प्रचंड गिरी भूतलावर पाडितो तसे त्यांने त्या तीनही
 महागजांना शारगर्ताशी पाडिले ! राजा. तेव्हां कुलिंदपुत्राचा दुसरा भाऊ. फारच शोभला व
 त्यांने तुड्या पुत्राच्या वेशभ्यर्ती जलाल बाणांचा भडिमार केला; पण तुड्या पुत्रांने लागलाच
 उलट तीक्ष्ण शरांचा वर्षाव करून त्यांचे शरीर उलट तीक्ष्ण शरांचा वर्षाव करून त्यांचे शरीर
 व द्विप ह्यांम वधिले ! राजा. तेव्हां तो प्रचंड द्विप व त्यावरील तो राजपुत्र. ह्यांच्या देहांतून
 चोहोंकडे उद्याप्रमाणे परजन्यकाळच्या आरंभी चोहोंकडे उद्याप्रमाणे परजन्यकाळच्या आरंभी
 वज्रांने भग्न झालेल्या गैरिक (कावेच्या) पर्व- वज्रांने भग्न झालेल्या गैरिक (कावेच्या) पर्व-
 तांतून आरक्त उदकाचे प्रवाह चालतात तेमे- तांतून आरक्त उदकाचे प्रवाह चालतात तेमे-
 रक्ताचे प्रवाह चालू झाले ! राजा. इतक्यांत रक्ताचे प्रवाह चालू झाले ! राजा. इतक्यांत
 कुलिंदपुत्र दुसऱ्या हत्तीवर चढला आणि मग तो कुलिंदपुत्र दुसऱ्या हत्तीवर चढला आणि मग तो
 हत्ती क्राथ. त्याचा मारथि. त्याचे अश्व व रथ हत्ती क्राथ. त्याचा मारथि. त्याचे अश्व व रथ
 ह्यांजवर तुटून पडला ! परंतु तितक्यांत क्राथांने ह्यांजवर तुटून पडला ! परंतु तितक्यांत क्राथांने
 त्याजवर भयंकर बाणवर्षाव केला व त्यामुळे त्याजवर भयंकर बाणवर्षाव केला व त्यामुळे
 वज्रहत पर्वताप्रमाणे तो महान् गज आपल्या वज्रहत पर्वताप्रमाणे तो महान् गज आपल्या
 अधिपतीसह रणांगणांत पतन पावला ! पण अधिपतीसह रणांगणांत पतन पावला ! पण
 राजा, इतक्यांत पर्वतावर वादलेल्या दुसऱ्या राजा, इतक्यांत पर्वतावर वादलेल्या दुसऱ्या
 कमल छेदिले !

वृषसेनाचा वध.

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर कर्णाच्या पुत्रांन तीन पोळादी बाण शतानिकावर, तीन अर्जु- नावर, तीन भीमावर. मात नकुल्यवर व बाग जनादेनावर सोडिले. आणि त्या ममर्षी त्यांचें तें अमानुष कर्म अवलोकन करून काँगवांस मोठा आनंद झाल्या व ते त्यांचे धन्यवाद गाऊं लागले ! परंतु, राजा, तेंथंहीं धनंजयाचा पराक्रम जाणणार जे कित्येक दूर दृष्टि योद्धे होते त्यांचा ममज निराळाच झाल्या व त्यांनीं 'अरेरे, आतां हा स्वचित होमकुंडांत पडल्या' असेंच मानिले ! राजा, नंतर शत्रुसंहारक पुरुषश्रेष्ठ अर्जुन ह्यानें सर्व मंत्र्या- मंत्र्य माद्रीमुत नकुल हा अश्वहीन झालेला अवलोकन करून आणि कृष्ण हा बाणप्रहारांनीं अतिशय वायाळ झाल्या आहे असे पाहून कर्णाच्या अग्रभागीं वृषसेन उभा होता त्याज- वर सहस्त्रावधि बाणांचा भाडिमार करीत एकदम चाल केली; पण त्या वेळीं तो महारथ वीर- शिरोमणि मोठ्या त्वेषाने आपल्यावर धावून येत आहे असें त्यांनांत आणून कर्णपुत्र वृषसेन - पूर्वीं नमुचि जमा महेंद्रावर तुटून पडल्या तमा- त्या पांडुपुत्रावर तुटून पडल्या; आणि त्यांन रणांगणांत अर्जुनावर एक निशित बाण टाकून त्याम विधिलें व नमुचिनें इंद्राम विद्ध केल्यावर जशी भयंकर गर्जना केली, तशी त्यांन त्या ममर्षी भयंकर गर्जना केली ! राजा, नंतर पुनः वृषसेनानें अर्जुनाच्या डाव्या खांद्यावर उग्र बाणांचा भाडिमार करून कृष्णावर नऊ बाण सोडिले आणि फिरून दहा बाणांनीं अर्जुनाला विधिलें ! राजा, तेव्हां अर्जुनाला कांहींसा क्रोध आला आणि त्यांन वृषसेनाला ठार मारण्याचा निश्चय ठरविला ! मग त्यांन धनघोर रणकंदनांत सेतापाने कपाळाला तीन आंठ्या पडतील इतक्या धुंवया चढविल्या आणि

कर्णमुताला वधण्याच्या हेतूनें समरांगणांत त्या- वर जलाल बाणांचा वर्षाव आरंभिला ! राजा, त्या वेळीं प्रत्यक्ष यमाचाही संहार करण्यास ममर्षे अशा त्या अर्जुनानें आरक्त नेत्र करून मोठ्यानें हंमत हंमत दुर्योधन आणि अश्वत्थामा आदि- करून इतर सर्व योद्धे ह्यांच्या ममक्ष कर्णाला निश्चिंत सांगितले: कर्णा, आज तुझ्या डोळ्यां- देवत मी रणांगणांत ह्या पगकमी वृषसेनाला निशित बाणांच्या प्रहारांनीं यममदनी पाठवितों ! हे मृतपुत्रा, तुह्मी सर्वांनीं माझ्या पुत्राला वधिलें ही तुह्मी फार निच गोष्ट केली असे लोक बोल- तात; कारण तो वीर त्या ममर्षी एकटा असून त्याच्या ममर्षी मी किंता दुमरा कोणी वीर त्याच्या आश्रयासाठीं तेंथं नव्हता ! कर्णा, अशा प्रकारचें दुराचरण करण्यास मी भिद्ध नाही. मी तुम्हा सर्वांच्या देवत ह्या वृषसेनाला वधीत आहे ! ह्याकरितां, रथ्यांनो, आतां तुह्मी त्याचा वचाव करा, मत्वा कर्णा, प्रस्तुत ममर्षी प्रथम मी ह्या वृषसेनाला ठार मारितों आणि मग तुला ठार मारितों ! कर्णा, सर्व कलहांचें आदिकाण तूच असून तुला दुर्योधनानें आश्रय दिल्यामळें तूं फार मदान्मत्त झाल्या आहेस; ह्यासाठीं आज रणांत मोठ्या आवेशानें मी तुला ठार मारितों; व ज्या अधमाच्या अविचारानें हा मोठा भयंकर प्राणिक्षय घडला त्या दुर्योधनाला भीमसेन ठार मारिल ! राजा धृतराष्ट्रा, असें म्हणून अर्जुनानें आपल्या धनुष्याच्या प्रत्यंचे- वरून हात फिरविला आणि रणांगणांत वृष- सेनावर नेम धरून त्यास वधण्याकरितां एक- मार्खी शरवृष्टि चालू केली ! राजा, त्या ममर्षी अर्जुनानें प्रथम निःशंकपणें दहा बाण वृषसेनाच्या ममंस्थळीं टाकिले आणि मग आणखी चार जव्याळ क्षुर बाण सोडून त्यांचें धनुष्य, बाहु व मस्तक हीं छेदिलीं ! राजा, त्या- ममर्षी, पर्वताच्या शिखरावरून वाऱ्यानें भय

झालेला प्रचंड मुपुष्पित शालवृक्ष जमा खाली
धाडकन् कोसळता. तमा तो अर्जुनाच्या शरांनी
छिन्न झालेला वाहुहीन व शीर्षहीन वृषमेन
स्थांतून धरणीतलावर धाडकन् कोसळला !
राजा. ह्याप्रमाणे रणांत आपल्या ममक्ष आपल्या
पुत्राचा अर्जुनाच्या हस्ते वध झाला असे पाहून
कर्णाला अनावर क्रोध चढला आणि त्याने एक-
दम आपल्या रथांतून कृष्णार्जुनांवर हल्ला केला !

अध्याय शायशीवा.

—:—:—

श्रीकृष्णाचें उत्तेजनपर भाषण.

मंजय मांगतो: -धृतराष्ट्रा. स्वळलेल्या ममु-
द्राने तीरावर चालून जावे तद्वत् तो देवांना मुद्धां
दुर्निवार्य असा योद्धा कर्ण गर्जना करीत आप-
णावर चालून येत आहे असे पाहून पुरुषोत्तम
दाशार्ह कृष्ण मोठ्याने हंसून अर्जुनाला म्हणाला.
.. अर्जुना, ज्यावर शल्य मारुथि आहे व ज्याला
श्वेत अश्व जोडिले आहेत. अमा हा कर्णाचा रथ
समीप आला पहा. धनंजया. आतां तुझा
कोणाशी युद्ध करावयाचें आहे ह्याचें नीट मनन
कर आणि चित्त मुष्यिग देव. अर्जुना. कर्णा-
च्या रथावर सर्व प्रकारची मारुथी करी मज्ज
आहे ती अवलोकन कर. हा पहा श्वेत अश्व
जोडिलेल्या ह्या रथावर कर्ण उभा आहे. ह्या
रथावर नानाविध ध्वजपताका करी फडकत
आहेत पहा. ह्यावर घागऱ्यांच्या किती तरी
माळा लोबत आहेत ! ह्याम जोडिलेले हे श्वेत
अश्व इतक्या वेगाने हा रथ वाहून आणीत
आहेत की, जणू काय आकाशांतून विमानच
चालत आहे ! तमाच हा महात्म्या ! कर्णाचा
नागकक्षांकित ध्वज पहा. जणू काय हा आका-
शांत पडलेल्या इंद्रधनुष्याप्रमाणे शोभत आहे !
हा पहा दुयोधनाचें प्रिय करण्याची इच्छा कर-
णारा कर्ण आपल्या समीप येऊन ठेपला ! हा

पहा पजेन्यधारांप्रमाणे शरधारा आपल्यावर
मोडीत आहे ! हा पहा मद्राधीश शल्य रथा-
च्या अग्रभागी अधिष्ठित आहे ! हे पहा ह्यानें
अनुत्प्रतापी रोष्याच्या अश्वानें नियमन चाल-
विलें आहे ! हा पहा दंडुभीचा व शंखांचा भयं-
कर ध्वनि ऐकूं येऊं लागला ! अर्जुना. चोहोंकडे
बहुविध मिहगर्जना होत आहेत. त्या ऐकि-
ल्याम काय ! हा पहा सर्व ध्वनीहूनही अधिक
अमा कर्णाच्या विजय धनुष्याच्या प्रत्यंचेचा
ध्वनि स्पष्ट ऐकूं येत आहे. हे पहा पांचाल
महारथ आपआपल्या मण्यांमह फाटाफूट होऊन
पळें लागले ! महान् अरण्यांत चवताळलेल्या
मिहाला पाहून मृग जमे धावत सुटतात, तसे
हे धावत सुटले पहा. व्यास्तव, अर्जुना, आतां
विलंब लावून उपयोग नाही. तुझ्या अंगी जें
कांही मारुथ्य अमेलतें प्रकट करून तूं ह्याला
मारु ! तुझ्याशिवाय दुमन्या कोणाला कर्णा-
ची शरवृष्टि मारुवणार नाही. त्याच्याशीं
लढण्यास एकदा तूंच मात्र समर्थ आहेस.
अर्जुना. मुर. असुर व गंधर्व ह्यांसहित स्थावर-
जंगम तिन्ही लोक जरी तुझ्याशी लढण्यास सिद्ध
झाले तरी त्या मयीना तूं जिंकल्याशिवाय
राहाणार नाहींम. हे मला माहीत आहे. अर्जुना.
ज्या भयंकर. उग्र व महात्म्या व्यंक्क कपर्दी
शंकराकडे लोकांना नुमती मान वर करूनही
पाहावत नाहीं-मग त्याशी युद्ध करण्याची
गोष्ट तर एकीकडेच राहिली ! त्या सर्व प्राण्यांचें
कल्याण करणाऱ्या प्रत्यक्ष महादेवाशी युद्ध
करून तूं त्यांचें आगधन केलेंस. आणि त्यामुळे
सर्व देवांनी तुला वर दिले. तेव्हां तुझी योग्यता
किती वर्णावी ! अर्जुना. इंद्रानें जसे नमुचीला
वधिले. तसे तूं आज त्या देवाधिदेव विश्व-
धारी शंकराच्या प्रमादानें कर्णाला वध. पार्था,
मदा तुझे कल्याण होवो आणि युद्धांत तुला
जय मिळो ! "

अर्जुनानें म्हटलें:-कृष्णा, मला जय स्वामिळेल; जयविषयी मला यत्किंचित् वानवा नाही; कारण, सर्व लोकांमध्ये श्रेष्ठ असा जो तूं त्या तुझी प्रसन्नता मी जेडिली आहे. हे महाराथा कृष्णा, आतां घोडे चालव. आज हा अर्जुन ममरांत कर्णाला वधिल्याशिवाय स्वचित् माघारा येणार नाही. गोविंदा, आज माझ्या शरांनीं कर्णाच्या देहाचे तुकडे तुकडे झालेले तुला दिसतील किंवा कर्णानें मला वधिलें असें तुला आढळेल! कृष्णा, सर्व त्रैलोक्याम भ्रांत करून सोडणारें असें हें वीर युद्ध मुरू झालें म्हणून ममज. आतां ह्या युद्धाचे वीर पृथ्वी आहे तों लोक सांगत राहतील!

संजय सांगतो:-राजा, ज्याला क्लेश म्हणून कधीही मारीत नाहीत अशा त्या कृष्णाला अर्जुन ह्याप्रमाणें म्हणाला: आणि मग, एका हर्तानें दुसऱ्या हर्तावर जमें चालून जातें तसा तो अर्जुन रथांतून कर्णावर चालून गेला! त्या वेळीं अर्जुनानें कृष्णाला लवकर घोडे चालव, उशीर होऊं लागला असा फार नेट लाविला; आणि मग कृष्णानें विजयप्राप्त्यर्थ आशीर्वाद देऊन त्याच्या इच्छेनुरूप मनोविगानें घोडे चालविले व क्षणांत तो रथ कर्णाच्या अग्रभागीं येऊन उभा राहिला!

अध्याय सत्यायशीवा.

...:-

कर्णाजूनसमागम.

संजय सांगतो:-इकडे, राजा, आपला पुत्र वृषमेन अर्जुनाच्या हस्ते मरण पावला असें पाहून कर्णाला मनस्वी शोक आला व त्याबद्दल अर्जुनाचा मूढ ध्यावा म्हणून तो अत्यंत तळमळू लागला! नंतर, पुत्रशोकामुळे त्याच्या नेत्रांतून अश्रुप्रवाह वहात होतें ते त्यानें पुमिले; आणि लागलाच तो शू वीर रथांतून अर्जुना-

बरोबर युद्ध करण्याकरितां त्याच्या अभिमुख प्राप्त झाला व त्यानें कौधानें आरक्त नेत्र करून त्याम युद्धार्थ आव्हान केलें! राजा, मग त्या दोन्ही योद्ध्यांचे ते स्पर्हतुल्य व व्याघ्रचर्मा-वगुंठित महान् रथ त्या स्थळीं एममेकांशीं भिडले. तेव्हां जणू काय ते दोन आदित्यच एकत्र झाले आहेत असें सर्वांस वाटलें! त्या वेळीं राजा, ते दोघेही महान्मे श्रेताश्च शत्रुसंहारक दिव्य वीर अंतर्गिहांत एकत्र झालेल्या सूर्यचंद्रांप्रमाणें शोभू लागले व त्यांना पाहून सर्वे मैन्ये अगदीं विस्मित झालीं! तेव्हां त्रैलोक्य जिंकण्यासाठीं इंद्र व विरेचनपुत्र बलि हे एकमेकांशीं मोठ्या दक्षतेनें झगडत आहेत असें भामू लागलें! ते दोन्ही रथ एकमेकांवर उड्या घालीत असून त्यांच्या वीरवणाघातानें, प्रत्येकांच्या टणत्कारानें व तलत्राणावरील आघातध्वनीनें आणि त्याप्रमाणेंच बाणांच्या मणमणानें व वीरांच्या सिंहगर्जनांनीं अंतर्गिश्च व्याप्त झालेले पाहून व तेंच त्यांचे वीर परम्परांशीं अगदीं भिडले असें अवलोकन करून भूपाळांना मोठा चमत्कार वाटला! राजा, कर्णाच्या वीरजावरील हर्तांचा साम्यदंड व अर्जुनाच्या वीरजावरील मार्गति ही जेव्हां एकमेकांवर जणू झडपा घालीत आहेत असें पुनःपुनः आढळू लागले, तेव्हां त्या दोन्ही रथांची ती विलक्षण लढ झालेली अवलोकन करून सर्वे पार्थिव सिंहनाद करून दोन्ही धनुर्धरांचे एकमाग्वे धन्यवाद गाऊं लागले! राजा, त्या समयीं त्या दोन्ही वीरांचे द्वैतयुद्ध पाहून महेश्वावधि योद्ध्यांचीं दंड टांकले व वस्त्रे फडकाविलीं! त्या वेळीं कर्णाला उत्तेजन देण्याकरितां कौरवांनीं चौहोंकडे वाद्यघोष मुरू केले व शंभू फुंकिले; आणि इकडे धनेजयाला वीरश्री चटण्याकरितां पांडवांनीं रणवाद्ये व शंभू ह्यांच्या शब्दांनीं दशदिशा दुमदुमून सोडिल्या! मागंश, राजा, ते कर्णाजून

एकमेकांशीं भुंजत अमतां शूरांचे बाहुध्वनि, सिंहगर्जना, बाघांचे घोष, इत्यादिकांनीं जिकडे तिकडे मनस्वीच दणदणट होऊन गेल्या ! राजा, कर्णाजिनांचें काय वर्णन करावें ? रथांत अधिष्ठित असलेल्या त्या दोघांही नरवर महारथांच्या हातांत प्रचंड धनुष्ये अमून त्यांच्या रथांत शर-शक्ति, इतर आयुधे व ध्वज हीं होती; त्यांच्या अंगांत चिलवतें अमून कमरेम खड्डे होती; त्यांजपाशीं दिव्य शंख अमून उत्कृष्ट बाणभाने होते; त्यांच्या रथांना श्वेत हय अमून ते दोघेही वीर अन्यंत देव्णें होते; त्यांच्या शरीरांवर रक्तचंदनाची उठी अमून ते दोघेही मानलेल्या वृषभांप्रमाणें धृष्ट दिमत होते; त्यांच्या हातांतलीं धनुष्ये विद्युल्लोनें महिन अशा इंद्र-धनुष्यांप्रमाणें झळाळत अमून नानाविध शस्त्र-संपत्तीनें ते लढत होते; त्यांच्या मस्तकांवर चामरें झळकत अमून पार्श्वभागीं व्यजनवायु चालला होता; त्यांच्यावर श्वेत छत्रे शोभत अमून त्यांच्या रथांवर शल्य व कृष्ण हे त्यांचें मारथ्य करीत होते; त्या दोघांही वीरांची स्वरूपें ममान अमून त्यांचे खांदी मिहामारखे भगदार होते; त्यांचे बाहु दीर्घ अमून त्या दोघांनींही आरक्त नेत्रे केलें होते; त्यांच्या गळ्यांत मुक्तांचे हार विलसत अमून त्यांची छाती भगदार होती; ते दोघेही अन्यंत बलवान् अमून एकमेकांना वधण्यामाठीं झटत होते; ते परस्परांना जिकण्यास उद्युक्त झाले अमून गोठ्यांतल्या मदनोन्मत्त बलांप्रमाणें एकमेकांवर उमळ्या घेत होते; ते दोघेही पर्वतांप्रमाणें भव्य अमून मद गाळणाऱ्या हत्तींप्रमाणें क्षुब्ध झाले होते; ते सर्पांच्या पारांप्रमाणें चपळ अमून यमाप्रमाणें भयंकर होते; त्यांच्या ठिकाणीं सूर्यचंद्राप्रमाणें कांति अमून इंद्रवृत्रांप्रमाणें ते खवलून जाऊन भुंजत होते; महाप्रहांप्रमाणें ते चवताळलेले अमून जणू काय

जगाच्या नाशार्थ उद्युक्त झाले होते; ते दोघेही वीर देवांश अमून त्यांचें बल वरून देवांप्रमाणेंच होतें; ते दोघेही योद्धे महाप्रतापी अमून ममरांगणांत नानाविध शस्त्रे धारण करून मोठ्या वीरश्रीनें लढत होते व जणू काय ते सूर्यचंद्रच यदच्छेनें युद्धाम प्रवृत्त झाले होते ! राजा, ते दोघेही व्याघ्रतुल्य योद्धे एकमेकांशीं ल्याट करून झगडत आहेत असे जेव्हां तुझ्या मैनिकांनीं पाहिले, तेव्हां त्यांना अतिशय आनंद झाला; परंतु जय कोणाला मिळेल हे कोणाला देखाळ सांगतां येईना व सर्वच संशयांत पडले ! ते दोघेही वीर उत्कृष्ट आयुधे धारण करून रणांत अगदीं पराकाष्ठेचा पराक्रम करीत आहेत, दोघेही बाहुशब्दानें सर्व अंतराल व्यापीत आहेत, दोघांचाही प्रताप व मामर्थ्य सर्वांस विश्रुत आहे, दोघेही समरभूमीवर शंवर व इंद्र ह्यांप्रमाणें विलक्षण युद्धकौशल्य व्यक्त करीत आहेत, दोघेही महश्वाजुनांप्रमाणें किंवा दाशरथि रामांप्रमाणें अपूर्व बल दाखवीत आहेत, आणि दोघेही शंकरांप्रमाणें किंवा अमोघवीर्ये विष्णुंप्रमाणें मोठ्या आवेशानें भुंजत आहेत, असें जेव्हां मिद्धाचरणांच्या समुदायांनीं पाहिले, तेव्हां त्यांना अतिशय विस्मय वाटला ! नंतर, राजा, तुझे पुत्र आपआपल्या सैन्यांसहवर्तमान तत्काळ रणाम शोभविणाऱ्या महात्म्या कर्णाच्या सभोवतीं जमले; आणि त्यांप्रमाणेंच धृष्टद्युम्नादिक पांडवीय वीर त्या लोकोत्तर अर्जुनाच्या आममंताद्वागीं गराडा घालून उभे राहिले ! त्या समर्थी कौरवपांडव हे आपआपल्या तर्फे कर्णाजिनांम इर्इस घालून जुगारच खेळत होते ! कौरवांनीं रणांत कर्णाला पणास लाविलें होतें ! व पांडवांनीं अर्जुनाला लाविलें होतें; आणि तीं दोन्ही दळे त्या द्यूतपरिषदेचे सभासद वनून त्या द्यूतांत कोण हरतें हें पाहाण्यास मिद्ध झालीं होती ! राजा, त्या दोघां वीरां-

पैकी कोणी तरी हरणार व कोणी तरी जिंकार, हें अगदीं निश्चित होतें; तरी त्यांनीं जो द्युतसंग्राम चालविला होता, त्यावरून अमुक-च विजयी होईल हें कांहीं सांगतां येण्यामारखें नव्हतें ! अशा प्रकारें ते कर्णार्जुन मोठ्या त्वेषानें लढून आपला दिव्य प्रताप गाजवीत होते, एकमेकांना ठार मारण्याकरितां एकमेकांवर चव-ताळून उड्या घालीत होते, आणि जणू काय इंद्रवृत्ताप्रमाणें परस्परांचे प्राण घेण्यास उद्युक्त झाले असून, भयंकर रूप धारण करणाऱ्या प्रचंड धूमकेतूसारखे एकमेकांशीं झगडत होते. राजा, त्या समयीं अंतरिक्षामध्ये जे प्राणी युद्धप्रेक्षणार्थ जमले होते, त्यांच्यांत कर्णार्जुना-संबंधानें मोठा वादविवाद चालला होता; त्यांत कोणी कर्णाला नावें ठेवीत होते व कोणी अर्जुनाला नावें ठेवीत होते; आणि कोणी कर्णाची प्रशंसा करीत होते व कोणी अर्जुनाची प्रशंसा करीत होते. सर्वांनीं आपापसांत जीं कांहीं चर्चा चालविली होती, तीवरून त्यांचें सर्वांचें ऐक-मत्य असें मुळींच दिसलें नाहीं. देव, दानव, गंधर्व, पिशाच, उरग व राक्षस ह्यांनीं कर्णार्जुनांच्या युद्धविषयीं आपसांत एकमेकांशीं विरुद्ध असे पक्ष अंगिकारले होते. अंतरिक्ष हें कर्णाविषयीं आणि पृथ्वी ही घनंजयाच्या जया-विषयीं मातेप्रमाणें चिंता करीत होती. त्या-प्रमाणेंच गिरि, सागर, नद्या, इतर जलाशय, वृक्ष, ओषधि हीं सर्वे एक होऊन पृथ्वीप्रमाणें अर्जुनाच्या अभीष्टचिंतनांत निमग्न होती; आणि असुर, यातुधान व गुह्यक हे कर्णाकडले व मुनि, चारण, सिद्ध; वैनतेय, पक्षी, रत्नें, निधि, सर्वे वेद, इतिहास, उपवेद, उपनिषदे, त्यांचीं रहस्ये, त्यांचे संग्रह, वामुकि, चित्रसेन, तक्षक, मणिक, सर्प, काद्रवेय, काद्रवेयसंतति आणि विषारी नाग हीं सर्वे अर्जुनाकडील झालीं होती. हे महाराजा, ऐरावत व त्याची

प्रजा, कामधेनु व त्यांची प्रजा आणि वैशालीचे पुत्रपौत्र भोगी (सर्प) ह्यांनीं अर्जुनाचा व क्षुद्र सर्पांनीं कर्णाचा पक्ष घेतला होता. लांडगे, हिंसक पशु, शुभ मृग व पक्षी हे सर्वे पार्थाच्या जयाविषयीं अपेक्षा करीत होते; आणि त्याप्रमाणेंच वसु, मरुत्, साध्य, रुद्र, विश्वेदेव, अधिनीकुमार, अग्नि, इंद्र, सोम, पवन व दशदिशा हीं घनंजयाकडलीं असून सर्वे आदित्यांनीं कर्णाचा पक्ष स्वीकारिला होता. वैश्य, शूद्र, मृत आणि इतर सर्वे संकरजाति ह्या सर्वांचा कल कर्णाकडे असून, आपल्या गणांमुद्धां व मेवकांमुद्धां देव व पितर आणि त्याप्रमाणेंच यम, कुबेर व वरुण, तमेच ब्राह्मण, क्षत्रिय, यज्ञ व दक्षिणा ह्यांनीं अर्जुनाचा आश्रय केला होता. प्रेत, पिशाच, क्रव्याद (हिंसक) प्राणी, कस्तूरीमृग, राक्षस, जलजंतु, कुत्री व कोल्ही ह्यांनीं कर्णाचा पक्ष घेतला होता. देवांपि, ब्रह्मापि व राजपि ह्यांचे समुदाय अर्जुनाकडले झाले होते; आणि तुंबुरुप्रभृति गंधर्वे देखील अर्जुनाचेंच हित चिंतीत होते !

राजा, त्या दिव्यप्रतापी कर्णार्जुनांचा संग्राम पाहाण्यामाठीं मंडळी फारच जमली होती. प्रापेचे पुत्र, मौनीचे पुत्र, गंधर्वांचे समुदाय व अप्सरांचे समूह हे लांडगे, पक्षी, हत्ती, घोडे, रथ व पायदळांतील मनुष्ये ह्यांजवर आणि मोठमोठे ब्रह्मनिष्ठ ऋषि हे वायु व मेघ ह्यांजवर आरूढ होऊन युद्धचमत्कार अवलोकन करण्या-करितां त्या स्थळीं प्राप्त झाले होते. देव, दानव गंधर्वे, नाग, यक्ष, विहग, वेदवेत्ते मर्हापि, स्वधामुक् पितर, तप, विद्या आणि अनेक प्रकारच्या गुणांनीं व शक्तींनीं युक्त अशा ओषधि आकाशांत गोळा होऊन त्यांनीं मोठी गजबज चालविली होती; आणि त्याप्रमाणेंच तेथें अंतरिक्षांत ब्रह्मापि व प्रजापति ह्यांसहवर्त-मान ब्रह्मदेव आला असून शंकरही आपल्या

वाहनावर आरूढ होऊन आला होता. राजा, ते कर्णधनंजय एकमेकांशीं भिडून युद्ध करू लागले तेव्हां 'अर्जुन हा कर्णाला जिंको' असे इंद्र म्हणाला; व 'कर्ण हा अर्जुनाला जिंको' असे सूर्याने म्हटले. राजा, तेव्हां 'माझा पुत्र कर्ण हा समरांगणांत अर्जुनाला मारून विजयी होवो' असा आशीर्वाद सूर्याने दिला; आणि 'माझा पुत्र अर्जुन हा युद्धभूमीवर आज कर्णाला वधून जय मिळवो' असे उद्गार इंद्राने काढिले. राजा, अशा प्रकारें भिन्न पक्ष घेतलेल्या त्या दोघांही देवश्रेष्ठामध्ये मोठा विवाद चालू झाला. राजा, त्या कर्णार्जुनांच्या विजया-संबंधानें देवदानवांनीं निरनिराळे पक्ष अंगिकारिले होते. ते महात्मे कर्णार्जुन परस्परांशीं लढण्यास सिद्ध झाले तेव्हां देवाधि, चारण, सर्व देवगण व सर्व भूतें ह्यांसहवर्तमान सर्व त्रैलोक्य थरथर कांपूं लागले! सर्व देवांनीं अर्जुनाचा पक्ष घेतला आणि सर्व अमुरांनीं कर्णाचा पक्ष घेतला. ह्याप्रमाणें कौरवपांडवांकडील श्रेष्ठ महारथ कर्ण व अर्जुन ह्यांपैकीं कोण विजयी होणार, ह्याजबद्दल जेव्हां विलक्षण विवाद उत्पन्न झाला, तेव्हां देवांनीं स्वयंभू प्रजापति ब्रह्मदेव ह्याची प्रार्थना करून त्यास विचारिलें, 'ह्या कुरुपांडवयोद्ध्यांपैकीं कोण विजयी होईल बरें? देवा, ह्या दोघांही नरसिंहांची बरोबरी होवो! हे स्वयंभो, कर्णार्जुनांच्या विवादानें सर्व जग संशयांत पडलें आहे; ह्यास्तव ह्यांपैकीं खरोखरी कोण विजयी होईल, हें तूं आह्मांला सांग. देवा, हे दोघे समसमान पराक्रम करतील, असें म्हटलेंस तरी चालेल.'

राजा घृतराष्ट्रा, देवांच्या मुखावाटे निघालेले हें भाषण श्रवण करून महाबुद्धिमान् देवेंद्रानें ब्रह्मदेवाला प्रणिपातपूर्वक तें सर्व निवेदन केलें आणि म्हटले, " भगवन्, आपण पूर्वीच

सांगितलें आहे कीं, कृष्णार्जुनांना सदासर्वदा विजय मिळावयाचाच; तर आतां आपल्या प्रसादानें तसेंच घडून यावें आणि ह्या दासाचे मनोरथ सिद्धीस जावें." राजा, नंतर ब्रह्मदेव व शंकर हे देवेंद्राला म्हणाले, " हे त्रिदशेश्वरा, ह्या महात्म्या अर्जुनाला जय मिळेल ह्यांत संदेह नाही. अरे, ज्यानें खांडववनांत अग्नीला संतोषविलें आणि स्वर्गास येऊन तुला मदत केली, त्याला जर जय मिळाला नाही, तर तो कोणाला मिळेल? इंद्रा, कर्ण हा दानवांच्या पक्षाचा आहे, तेव्हां त्याचा पराभव करणें अवश्य होय. असें केल्यानें देवांचें कार्य षडेल ह्यांत संशय नाही. हे त्रिदशाधिपा, सर्वांना स्वकार्य साधणें हे अत्यंत महत्वाचें आहे. शिवाय महात्मा धनंजय नेहमीं सत्याविषयी व धर्मविषयी तत्पर आहे, ह्यास्तव त्यालाच निश्चयानें जय मिळेल. हे शतलोचना, ज्यानें भगवान् वृषभध्वजाला संतुष्ट केलें, व ज्याचें सारथ्य लौकनायक विष्णु स्वतः करित आहे, त्याला कसा बरें विजय प्राप्त होणार नाही? इंद्रा, अर्जुनाचें सामर्थ्य अगदीं अद्वितीय आहे; तो मोठा बलिष्ठ व शूर असून त्याच्या ठिकाणीं इंद्रियनिग्रहशक्ति पूर्णपणें वसत आहे; त्यानें उत्कृष्ट तपश्चर्या केली असून अस्त्रविद्येंत पूर्ण प्राविण्य संपादिलें आहे; त्या देदीप्यमान् पुरुषाच्या अंगां सर्व गुण विद्यमान् असून संपूर्ण धनुर्वेद त्यास उत्तम अवगत आहे; शिवाय तो ज्या कार्यास उद्युक्त झाला आहे, तें देवांचें कार्य होय. पांडवांनीं वनवासादिक भोगून अतिशय क्लेश सोशिले, परंतु स्वकर्तव्यापासून ते विमुख झाले नाहीत. अर्जुनाच्या ठिकाणीं उत्तम तपस्सिद्धि वसत असल्यामुळें तो कोणतेंही कार्य निश्चयानें सिद्धीस नेईल. त्याचें महात्म्य इतकें आहे कीं, अनुकूल किंवा प्रति-कूल अशा देवांचेही तो कांहीएक चालूं देणार

नाहीं, आणि असें झाले म्हणजे सर्व लोकांचा भयंकर नाश निश्चयानें घडून येईल ! देवेंद्रा, एकदां हे कृष्णार्जुन खपळले म्हणजे जगांतील सर्व स्वास्थ्य संपलेच म्हणून समज ! ह्या दोन पुरुषश्रेष्ठांपासून नेहमीं जगताची उत्पात्ति होते. नरनारायण नामक जे पुराण ऋषिश्रेष्ठ ते हेच होत. ह्याकरितां ह्या दोन प्रतापशाली नियंत्या पुरुषांचें कोणाकडूनही नियमन होणें अशक्य. ह्यांची बरोबरी करणासा प्राणी स्वर्गांत किंवा मृत्युलोकीं कोणीही सांपडावयाचा नाही. देवर्षे व चारण ह्यांसहर्षतमान सर्व लोक आणि तसेच देवगण व सर्व भूतेंहीं ह्या दोघांच्या मार्गें असतात; आणि ह्यांच्याच प्रभावानें सर्व जगाचें योगक्षेम चाललें आहे. आतां कर्णाविषयीं म्हण- शील तर त्या विकर्तकपुत्र नरश्रेष्ठ शूर वीराला विजय न मिळतां तो कृष्णार्जुनांस मिळणें इष्ट. कर्णानें वसुलोकीं किंवा मरुलोकीं अथवा द्रोणभीष्मांबरोबर नाकलेकीं रहावें ! ”

ब्रह्मदेव व शंकर ह्यांचें हें असें भाषण श्रवण करून सहस्त्राक्ष इंद्रानें त्यांच्या त्या अनुशासना- बद्दल मोठी आदरबुद्धि व्यक्त केली आणि सर्व देव व इतर प्राणी ह्यांस म्हटलें, “ देवादिकहो, भगवान् ब्रह्मदेव व शंकर ह्यांनीं काय सांगि- तलें तें तुम्हीं ऐकिलेंच आहे. सर्व कांहीं त्यांनीं सांगितल्याप्रमाणेंच घडून येईल. तुम्हीं अगदीं निश्चित असा. ” राजा, इंद्राचें भाषण श्रवण करून सर्व देवांना व प्राण्यांना मोठा विस्मय वाटला व त्यांनीं इंद्राचा मोठा गौरव केला. नंतर देवांनीं पुष्पवृष्टि आरंभिली व मोठ्या आनं- दानें नानाविध मंगलवाचें मुरू केलीं, आणि ते देव, दानव व गंधर्व हे सर्व त्या नरशार्दूलांचें तें द्वैरथयुद्ध अवलोकन करण्यासाठीं तैथेंच थांबले. राजा, त्या वेळीं त्या दोघांही महात्म्या योद्ध्यांच्या रथांना श्वेत दिव्य अश्व असून त्यांवर ते वीरश्रीच्या योगें अतिशय झळाळत

होते. तैथें रणांगणांत जे वीर कृष्णार्जुनांभोंवतीं जमले होते आणि तसेच जे कर्णशल्यांभोंवतीं जमले होते त्या सर्वांनीं पृथक् पृथक् शंख वाजविण्यास प्रारंभ केला; आणि मग पर- स्परांची स्पर्धा करणाऱ्या त्या कर्णार्जुनाचें शक्र- शंबराप्रमाणें घोर युद्ध चालू झालें व त्या योगें भीरुजनांची पांचावर धारण बसली ! राजा, प्रलयकालीं अंतरिक्षांत राहुकेतु जसे निर्मल दिसतात, तसे त्या दोन्ही वीरांच्या रथांवरचे ध्वज निर्मल दिसूं लागले ! कर्णाच्या ध्वजा- वरील हत्तीचा रत्नखचित बळकट साखळदंड इंद्रधनुष्याप्रमाणें विशाल व सर्पाप्रमाणें भयं- कर दिसत होता; आणि अर्जुनाच्या ध्वजावरील मारुति यमाप्रमाणें आ करून बसला असून आपल्या भयंकर दाढांनीं व दिव्य कांतीनें सूर्याप्रमाणें लोकांचे डोळे दिपवीत असून त्यांस घाबरवून सोडीत होता ! राजा, गांडीव धारण करणाऱ्या अर्जुनाच्या ध्वजावर अधिष्ठित अस- लेल्या मारुतीच्या मनांत युद्ध करण्याची इच्छा उत्पन्न झाली व तो आपलें स्थान सोडून मोठ्या वेगानें कर्णाच्या ध्वजावर येऊन बसला व गरूड जसा सर्पाला फाडितो तसें त्यानें आपल्या दांतांनीं व नखांनीं मोठ्या आवेशानें कर्णाच्या ध्वजावरील हस्तिकक्षेला फाडून टाकिलें ! त्या वेळीं, राजा, घागऱ्या लाविलेली ती हस्तिकक्षा यमपाशाप्रमाणें क्षुब्ध होऊन नणू त्या कपि- श्रेष्ठावर चालून गेली; आणि मग द्युतप्रसंगीं ठरल्याप्रमाणें त्या दोन्ही वीरांचें घोर द्वैरथयुद्ध चालू झालें तेन्हां प्रथम त्या ध्वजांचेंच युद्ध जुंपलें ! नंतर, राजा, त्या दोन्ही वीरांच्या रथांचे हय एकमेकांच्या स्पर्धनें एकमेकांवर हिंसूं लागले. मग सारथिही परस्परांकडे डोळे फाडून पाहूं लागले; परंतु त्यांत अखेरीस कृष्णानें दृष्टिपातरूप शरांनीं शल्यास जिंकून टाकिलें ! इतक्यांत कर्णार्जुनांनीं एकमेकां-

कडे कुद्ध दृष्टीने पाहून जण काय युद्ध आरंभिले, पण त्यांतही कुंतीपुताचाच विजय झाला. तेव्हां कर्ण म्मित करून शल्याला म्हणाला, “शल्या, यदाकदाचित् आज अर्जुनानें मला जर युद्धांत वधिले, तर तूं रणांत पुढे खरोखर काय करशील तें मला सांग!” तेव्हां शल्यानें उत्तर केले, “कर्णा, जर तुला आज अर्जुनानें रणांत वधिले तर मी एका रथानें त्या उभयतां कृष्णाजुनांना ठार मारीन!”

संजय सांगतो: इकडे अर्जुनांनही तोच प्रश्न कृष्णाम विचारिला, तेव्हां कृष्ण मोठ्यानें हंमून त्यास म्हणाला, “अर्जुना, मी जें हें तुला सांगत आहे, तें अगदीं खरें आहे. बाबोर, कर्णानें जर तुला वधिले तर मर्ये हा स्वस्थानापामन भ्रष्ट होईल. किंवा महाभाग वारून जाईल, अथवा अग्नि उष्णतेचा त्याग करील हें खचित समज. अर्जुना, कर्णाच्या हस्ते तुझा वध घडणें हें सर्वथा असंभवनीय होय. ह्याउपरही जर का हें घडले तर सर्व त्रैलोक्याचा प्रलयच होईल! पण तशांतही मी केवळ वाहुबलांन कर्ण व शल्य ह्यांना ठार मारीन ह्यांत संदेह नको!” राजा, ह्याप्रमाणें कृष्णाचें भाषण श्रवण करून कपिश्वज अर्जुन मोठ्यानें हंमला आणि कधीही क्लेश न पावणाऱ्या कृष्णाला म्हणाला, “कृष्णा, कर्ण व शल्य ह्यांचा नाश करण्याइतकें माझ्या एकट्याच्या अंगीं सामर्थ्य आहे. हा पहा मी आज ज्वजपताकामह, रथ, बाजी व शल्य ह्यांमह, लज व कवच ह्यांसह आणि शक्ति, शर व धनुष्य ह्यांमह कर्णाला बाणांच्या भडिमारांनें छिन्नभिन्न करून त्याचे तुकडे उडवितों! कृष्णा, आतां ह्या गोष्टीस फार वेळ नको. अरण्यांत हत्ती जसा वृक्षाचा चुराडा करितो, तसा मी आतांच्या आतांच रथ, अश्व, शक्ति, कवच व आयुधें ह्यांसहवर्तमान कर्णाचा चुराडा

करितों! कृष्णा, आज कर्णाच्या भार्यांना वंधव्य प्राप्त झालें! आज खचित त्यांना अनिष्ट स्वप्नेही पडलीं असतील! खचित कर्णाच्या स्त्रिया गतभर्तृका झालेल्या आज तूं पाहाशील! कृष्णा, माझा संताप अर्जुन कमी होत नाही! ह्यांन पुरीं जें कांहीं केले तें माझ्या डोळ्यांपुढें उभें आहे! अरे, ह्या मूर्खानें द्रौपदीला मभेंत ओढून आणावें काय? ह्यांन कांहीं तरी दृग्दर दृष्टि दिली पाहिजे होती कीं नाही! आम्हांला हा किती तरी हंसला! आणि ह्यांन आमची किती तरी पुनःपुनः मानखंडना केली! अमो; कृष्णा, मद्योन्मत्त वारण जसा फुललेल्या वृक्षाचा समूळ नाश करितो, तसा मी आज ह्याचा समूळ नाश करितों! हे मधुसूदना, आज कर्णाला मी ठार मारिलें म्हणजे ‘मुद्वेवानें तूं विजयी झालाम’ अमे मधुर शब्द आज तुझ्या कानीं पडतील! कृष्णा, आज तूं मोठ्या आनंदानें अभिमन्यूच्या मातेचें व आपल्या आतेचें म्हणजे कुंतीचें सांत्वन करण्यास समर्थ होशील! आणि, कृष्णा, आज तूं अमृततुल्य शब्दांनीं दुःखाकुल धर्मराज व द्रापदी ह्यांचें समाधान करशील!”

अध्याय अठ्ठाव्याशीवा.

—:०:—

अश्वत्थाम्याचा दुर्योधनास उपदेश.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, कर्णाजुनांचें युद्ध पहावयास आकाशांत देव, दैत्य, नाग, निद्ध, यक्ष, गंधर्व, राक्षस, अप्सरा, ब्रह्मर्षि, राजर्षि व गरुड आदिकरून श्रेष्ठ पक्षी ह्यांचे समुदाय जमल्यामुळें त्यास मोठी विस्मयकारक शोभा प्राप्त झाली होती. त्या समयीं गायन, वादन, स्तुति, नृत्य, हसणेंखिदळणें, इत्यादिकांच्या मधुर शब्दांनीं सर्व अंतरिक्ष दुमदुमून गेल्यामुळें तें पाहून मनुष्ये अगदीं स्तब्ध झालीं आणि त्यांस

विलक्षण चमत्कार वाटला ! तेव्हां दोन्ही सैन्यांना मोठा आनंद व हुरूप उत्पन्न झाला आणि त्यांनी शंख फुंकून व रणवाद्यें सुरू करून मिहाप्रमाणे गर्जण्यास प्रारंभ केला. त्या शब्दांने सर्व भूतल दणाणून सोडून दशदिशा व्याप्त केल्या आणि मग दोन्ही दळें एकमेकांवर तुटून पडून भयंकर संग्राम चालू झाला ! राजा, त्या समयीं समरांगणांत रथ, गज, अश्व व नर ह्यांची एकत्र गर्दी उडाली; जिकडे तिकडे शर, खडग, शक्ति व ऋष्टि ह्यांचे दारुण प्रहार होऊं लागले; भीरुजनांचें धावें दणाणलें; शर संहार घडूं लागून सर्वत्र हत देहांचे दोंग पडले; जिकडे तिकडे रुधिराचा कंदम मातला; आणि युद्ध पाहून जणू काय देवदानवांचेंच युद्ध चालू आहे असें भासलें ! अशा प्रकारे तुंबळ व दारुण संग्राम चालू असतां कवचें धारण केलेले धनंजय व कर्ण ह्यांनीं परस्परोंवर सरळ जाणाऱ्या निशित बाणांचा इतका भयंकर वर्षाव केला की, त्यांनीं दाही दिशा व प्रतिपक्ष्यांचीं सैन्ये बाणांनीं झांकून काढिलीं आणि मग त्या शरच्छायेत कोणासच कांही एक दिमेंनामें झालें ! तेव्हां दोन्ही सैन्यांतले वीर भ्याले आणि त्यांपैकी कांहींनीं कर्णाचा व कांहींनीं अर्जुनाचा आश्रय केला. पण इतक्यांत अमा चमत्कार घडला की, पूर्वपश्चिम वायुंप्रमाणें त्या दोघांही वीरांनीं परस्परोंचीं अस्त्रे नष्ट केलीं; आणि त्यामुळें, घनांधकारांत सूर्यचंद्रांचा उदय झाला असतां ज्याप्रमाणें त्यांची अद्वितीय प्रभा फांकेते, त्याप्रमाणें त्या उभयतां कुरुपांडवयोद्ध्यांची अद्वितीय प्रभा भासली ! मग त्या दोन्ही सैन्यांतील वीरांना त्यांच्या मना-नायकांनीं 'पळू नका पळू नका' म्हणून मांगितलें; आणि मग ते सर्व वीर जेथच्या तेथें—पूर्वीं मुर व अमुर हे जसे वासव व शंवर ह्यांच्या भोंवतालीं उभे राहिले होते तसे—कर्णार्जुनांच्या

भोंवतालीं लढत उभे राहिले ! राजा, त्या समयीं दोन्ही सैन्यांत मृदंग, भेरी, पणव व आनक ह्यांचा प्रचंड शोर ध्वनि चालला असून शिवाय योद्ध्यांचा सिंहाद एकसारखा होत होता; त्यामुळें अंतरिक्षांत मेघगर्जना चालू असतां सूर्यचंद्र जसे शोभतात, तसे ते कर्णार्जुन रणांगणांत शोभत होते ! त्या वेळीं त्या उभय वीरांचें तेज पाहून प्रेक्षकांच्या चित्तावर कांहीं लोकोत्तरच परिणाम घडे. ते दोघेही बलाढ्य वीर आपआपल्या महाधनुर्मंडलांच्या केंद्रांत उभे असून, सहस्रावधि जलाळ बाण त्या मंडलांपासून बाहेर पडत असत; ह्यामुळें जणू काय ते दोन सूर्य आपल्या दुःसह किर्णानीं स्थावरजंगम जगताला प्रलयकाळीं जालूनच टाकीत आहेत असें भासत होतें ! राजा, कर्णार्जुन हे दोघेही अजिंक्य, दोघेही यमाप्रमाणे शत्रूंचा संहार करणारे, दोघेही एकमेकांस ठार मारण्याला तत्पर, दोघेही शर संग्रामांत न भिणारे आणि दोघेही गणकुशल असे होते. ते दोघे एकमेकांशीं लढत असतां जसे काय महेंद्र आणि जंभव परस्परोंशीं झुजत आहेत, असें वाटलें ! त्या दोन्ही महाधनुर्धरांनीं एकमेकांवर मोठमोठीं अस्त्रे सोडिलीं आणि त्यांनीं भयानक शरांचा भडिमार करून असंख्य नर, अश्व व गज ह्यांचा संहार उडविला ! ह्याप्रमाणें त्या बलाढ्य पुरुषश्रेष्ठानीं दोन्ही सैन्यांतील चतुरंग दळांचा विध्वंस आरंभिला, तेव्हां—मिहानें अनर्थ उडविला असतां वन्य पशु जसें मोगवंग पळूं लागतात तशीं—तीं चतुरंग दळें भयभीत होतानाहीं दशदिशांस पळूं लागलीं आणि मग चोहोंकडे एकच हाहाकार उडाला ! नेत्र दुःखांघन, कृतवर्मा, शकुनि, कृप व अश्वत्थामा हे पांच महारथ बाणांचा वर्षाव करीत कृष्णार्जुनांवर धावून गेले व त्यांनीं त्यांस विद्ध

केले. तेव्हा धनंजयानेही त्यांजवर बाणांचा भडिमार आरंभिला आणि त्यांची धनुष्ये, बाणभाते, ध्वज, हय, रथ व सारथि ह्यांचा एकदम नाश करून कर्णावर अत्यंत तीक्ष्ण असे वारा बाण टाकिले! इतक्यांत, राजा, अर्जुनाचा प्राण घेण्याकरितां मोठ्या त्वरेनें कौरवांकडील शंभर रथ त्याजवर धावून आले, आणि त्याप्रमाणेंच शक, तुषार व यवन ह्यांच्या घोडेस्वारांनीं कांचोज देशातील बलाढ्य योद्ध्यांसह अर्जुनाला वधण्याच्या उद्देशानें त्याजवर मोठ्या त्वेषानें हल्ला केला! पण अर्जुनानें त्यांवर उलट क्षुर बाणांची वृष्टि आरंभिली आणि त्यांची मस्तकें छेदून, श्रेष्ठ आयुधें धारण केलेल्या त्या वीरांना त्यांच्या हातांतील बाणांसुद्धां धरणीवर पाडिले! त्या समयी जे हय, कुंजर, रथ व नर अर्जुनाशीं लढत होते, त्या सर्वांचा घोर मंहार करून त्यांना अर्जुनानें मृत्युमुग्धीं लोटिले, तेव्हां कौरवमेनेत मोठा आकांत उडाला; व आकाशातील प्रेक्षकसमूह अतिशय आनंदित होऊन देवांनीं मंगलवाद्यें वाजविली आणि जिकडे निकडे 'शाबाम! शाबाम!' अशा शब्दांनीं सर्व नभोमंडल व्याप्त झाले; व अंतर्गिशांतून शुभ पुष्पांची व सौमंभिक पदार्थांची वृष्टि चालू होऊन ती भूतलावर वायुच्या योगें अर्जुनाच्या मस्तकावर येऊन पोचली, तेव्हां देव व मनुष्ये ह्यांच्या दृष्टीममोर घडलेला तो अद्भुत चमत्कार अवलोकन करून सर्व प्राण्यांस मोठा विस्मय उत्पन्न झाला! राजा, तें पाहून तुझा पुत्र दुर्योधन व मृतपुत्र कर्ण ह्यांम मात्र व्यथा किंवा आश्चर्य वाटले नाही आणि त्यांनीं मात्र आपला पहिला निश्चय ठाम ठेविला! त्या समयी अध्वत्थाम्यानें दुर्योधनाचें सांत्वन करण्यासाठीं त्याचा हातधरून म्हटले, 'दुर्योधना, कृपा करून माझ्या भाषणाकडे लक्ष दे. आतां

शांतता धारण कर व पांडवांशीं जें हें वैर आरंभिलें आहेस, तें संपव. धिक्कार असो या कलहाला! अरे, ज्या वैरांत ब्रह्मदेवासारखा महाज्ञानी व अखवेत्ता जो माझा पिता तो हत झाला आणि तसेंच भीष्मप्रभृति महारथ यमसदनीं गेले, तें वैर आतां पुढें चालविण्यांत कोणता लाभ होणार? अरे, मी आणि माझा मातुल कृप हे तर अवश्य आहों; ह्याकरितां तूं आतां पांडवांशीं मरुय करून ते आणि तुझी मिळून हें राज्य करा. अरे, धनंजय हा माझ्या सांगण्यावरून युद्ध बंद करण्यास राजी होईल व जनार्दन तर केव्हांही विरोधाची इच्छा करीत नाही; कदाचित् तूं म्हणशील कीं, वार्कचे पांडुपुत्र युद्ध संपविण्यास नुषी होणार नाहीत, तर तोही प्रकार तमा नाही; कारण, प्राणिमात्रांचें हित व्हांवें व रक्तपात घडूं नये, हेंच युधिष्ठिराला सदासर्वकाल प्रिय असून, भीम व नकुलसहदेव हे त्याच्या अगदीं आज्ञेत आहेत. ह्यासाठी, दुर्योधना, प्रस्तुत समयी तूं जर पांडुपुत्रांशीं गोडी करशील तर तुझ्या इच्छेनेंच सर्व प्रजांचें कल्याण घडेल! राजा, आतां जे कोणी बंधुवर्ग अवशिष्ट राहिले आहेत, त्यांस स्वस्थानी जाण्यास अनुज्ञा दे व सैनिकांना युद्ध बंद करण्यास सांग. दुर्योधना, ह्या प्रसंगीं माझे हें म्हणणें जर तूं मान्य केले नाहीस, तर तूं रणांत शत्रूंच्या हस्ते खचित पतन पावशील व मग हळहळशील! राजा, अर्जुनानें एकट्यानें कसा काय प्रताप गाजविला हें तूं व सर्व जगानें पाहिलेंच आहे; असला हा अद्वितीय पराक्रम इंद्राला, यमाला, कुबेराला किंवा फार कशाला—प्रत्यक्ष भगवान् ब्रह्मदेवाला सुद्धां— करितां येणार नाही! दुर्योधना, इंद्रादिक देवांच्यापेक्षाही अर्जुनाच्या ठिकाणीं सद्गुणांचें अधिक वास्तव्य आहे; मीं जर त्याला काहीं सांगितलें, तर तो खचित त्याचा अना-

दर करणार नाही. राजा, निःसंशयपणें तो तुझ्या आज्ञेत वागेल; ह्यासाठी तूं आतां पांडवांचें वैर मोड. दुर्योधना, माझीही तुझ्याविषयी सदोद्गीत अत्यंत बहुमानबुद्धि आहे; म्हणून मी हें फार प्रेमानें तुला सांगत आहे. राजा, तुझ्या मनांत पांडवांशीं साम करण्याचें आलें म्हणजे मग मी कर्णाचेंही मन वळवून त्यास युद्धापाम्न निवृत्त करण्यास सिद्ध आहे. राजा, ज्ञाते लोकांच्या मते चार प्रकारांनीं मित्र बनवितां येतात. त्यांतील पहिला प्रकार म्हणजे कित्येक पुरुष स्वभावतःच मित्र अमतात; दुसरा प्रकार असा कीं, कित्येक पुरुष गोड बोलण्यानें व मन वळविण्यानें मित्र होतात; तिसरा प्रकार, घनादिकांच्या देणग्यांनीं मित्र बनविणें; आणि चौथा प्रकार, शौर्यानें जस्त्रेस आणून मैत्री जोडणें. राजा, पांडवांना मित्र बनविणें झाल्यास तुला ही चारी माधनें अनुकूल आहेत. वीग, जन्मतः पांडव व तुम्ही हे बांधव आहां; ह्यासाठी त्यांशीं गोडीनें वाग आणि आपल्या कार्यभाग साध. राजा, तूं एकदां प्रमत्त होऊन पांडवांचा मित्र झालास म्हणजे सर्व जगाचें तूं निरुप-भेय कल्याण करशील !”

अश्वत्थाम्यानें मोठ्या काकुळतीनें दुर्योधनाला ह्याप्रमाणें हितबुद्धि सांगितली; पण नेत्र कांहीं वेळ विचार करून दुर्योधनानें दुःखाचा मुसकारा टाकिला व मोठ्या विव्रतेनें म्हटलें, “द्रोणपुत्रा, तूं म्हणतोस तें खरें; परंतु मी जे कांहीं तुला सांगत आहे तें ऐकून घे. ह अश्व-त्यामन्, दुष्टवृकोदरानें वाधामारुती दुःशामनावर झडप घालून त्यास ठार मारिल्यावर जे कांहीं उद्धार काढिले, ते माझ्या मनांत एकमाखें घोळत आहेत; तूंही ते ऐकिले आहेसच. तेव्हां आतां गोडीनें तंटा कमा मिटेल वरें ! शिवाय, आपल्याला साम करण्याचें कांहीं प्रयोजनही दिसत नाही; कारण, वारा कितीही प्रचंड

असला तरी तो जसा महागिरी मेरूपुढें निर्वीर्य होतो, तशीच स्थिति प्रस्तुत प्रसंगीं अर्जुनाची होईल. अर्जुनानें कितीही पराक्रम गाजविला, तरी त्याचें कर्णापुढें कांहींएक चालणार नाही, हें तूं पक्कें ध्यानांत ठेव. शिवाय पांडवांचा आतां मजवर भरंवसाही बमणार नाही; कारण त्यांच्या तरी मनांत वैराचीं कारणें नित्य घोळत असतीलच. ह्याशिवाय, हे गुरुपुत्रा, आतां युद्ध करूं नको म्हणून तूं कर्णाला सांगावेंस हें देखील मला उचित दिसत नाही; कारण आज अर्जुन अतिशय थकून गेला असल्यामुळे कर्ण त्यास तेव्हांच बधील.” राजा, तुझ्या पुत्रानें अश्वत्थाम्याला पुनःपुनः ह्याप्रमाणें सांगितलें; आणि त्याचें मन वळविल्यावर आपल्या मैत्रिकांना आज्ञा दिली व म्हटलें, “वीरहो, स्थिर-चित्तानें शत्रूंवर चाल करून वाणांचा भडिमार चालवा; असे स्वस्थ कां आहां !”

अध्याय एकुणानवदावा.

कर्णाजिनांचें द्वैशयुद्ध.

मंजय सांगतोः—राजा धृतराष्ट्रा, तुझा पुत्र दुर्योधन ह्यानें ह्या वेळेस तरी दुःख विचार करावयास पाहिजे होता; पण त्यानें तसें न करितां आपल्या मैत्रिकांस शत्रूंवर चालून जाण्यास आज्ञा दिली आणि मग शत्रु व भेरी ह्यांचा प्रचंड वाप मुरू होऊन ते नगवीर श्रेत-हय कर्णानेन एकमेकांशीं मोठ्या निकरानें भिडले ! त्या ममर्था त्या प्रचळ योद्ध्याचा जो संग्राम मुरू झाला, तो पाहून जणू हिमालय पर्वतावरचे दोन मदान्मत्त हत्ती, माजाम आलेल्या हत्तिणीकरितां, लांब वाढलेल्या मुळ्यांनीं एकमेकांवर प्रहार करित झगडत आहेत, असें भासूं लागले ! राजा, त्या महाराथांच्या युद्धाचें काय वर्णन करावें ! ज्याप्रमाणें एका

मेवानें दुमच्या मोठ्या मेवावर महन चाल करानी, किंवा एका पर्वतानें दुमच्या पर्वतावर उडी टाकावी, त्याप्रमाणें ते दोधे वीर धनुष्यांच्या टणत्कारांनी व रथांच्या वणवणाटांनी दशदिशा व्याप्त करून बाणांचा भयंकर वर्षाव करीत एकमेकांवर उड्या टाकूं लागले ! त्या बलाढ्य वीरांनी परस्परांवर जी लोकोत्तर शरवृष्टि चालविली होती, ती अवलोकन करून जण काय -- ज्यांच्यावर मोठमोठी शिवेंग, वृक्ष, वनस्पति, आपवि आणि नानाविध झेर ह्यांचे वास्तव्य आहे, असें-मोठे प्रचंड पर्वतच एकमेकांवर आढळून परस्परांवरील शिवगदिकांचा चुगडा करीत आहेत, असें भासत होतें ! राजा, त्या वेळीं त्या उभयतां कुरुपांडवपौरांचें जें भयंकर युद्ध झालें, तें पाहून इंद्र व ब्रह्मि हेच एक भेकांशी झुंजत आहेत, असें वाटलें ! तेव्हां त्यांनी परस्परांवर जो बाणांचा भडिमार केला तो खचित त्यांनी म्हणूनच मोशिला, इतरांना तो सुक्रीच महन झाला नमना ! त्या समयीं स्वतः त्यांच्या व त्याप्रमाणेंच त्यांच्या मारश्यांच्या आणि अश्यांच्या शरभिन देहांतून इतके रुधिरांचे पाट वाहूं लागले कीं, त्यांचे ते रय तत्काळ शोणिताचे केवळ हृदय वनेले; आणि त्यांतील सर्व उपकरणे हीं त्या हृदांतील त्रिपुल कमले, दगड, गोटे, मत्स्य, कूर्म व पक्षिगण ह्यांजप्रमाणें शोभूं लागून त्या रुधिराशयांवर वाच्याच्या योगें लाडा उमळण्यास प्रारंभ झाला ! राजा, अशा प्रकारें ध्वजपताकांनी शोभणारिते दोन्ही रथ अगदीं लगट करून एकमेकांवर उड्या टाकीत असतां, त्यांतील योद्ध्यांनी शौर्याची अशी कांही पराकाष्ठा केली कीं, जण काय ते दोन इंद्रतुल्य महारथ परस्परांवर वज्रतुल्य शरांचा वर्षाव करीत महेंद्रवृत्रांप्रमाणें एकमेकांशीं झगडत आहेत असें भासूं लागलें ! राजा, त्या समयीं त्या कुरुपांडवयोद्धांचें तें

लोकोत्तर युद्ध पाहून विचित्र कवचें, आभरणें, वस्त्रें व आयुधे ह्यांनी युक्त अशीं तीं उभय पक्षांकडील प्रचळ चतुरंग भयें आश्चर्यानें अगदीं चकित झालीं व त्यांना अतिशय कंप सुटला ! राजा, हीच अवस्था अंतरिक्षांत जमलेल्या प्रेक्षकगणांची झाली; पण इतक्यांत, एक मद्रो-न्मत्त हत्ती जमा दुमच्या मद्रोन्मत्त हत्तीवर उडी घालितो, तशी अर्जुनानें कर्णाला ठार मारण्याच्या हेतूनें जेव्हां त्यावर उडी घातली, तेव्हां तें पाहून आकाशगत कित्येक प्रेक्षकांस युद्ध पाहाण्याची अधिक लालमा उत्पन्न झाली व त्यांनी मोठ्या आनंदानें मिहनादपूर्वक वस्त्रे फडकावून व हात हालवून अर्जुनास प्रोत्साहन दिलें ! राजा, त्या वेळीं मोमक पुढें सरले; आणि त्यांनीं -- अर्जुना, कर्णाला ठार मार; आतां त्यांचें मस्तक उडव; विलंब लावूं नको एकदां दुर्योधनाची राज्यतृष्णा लयास ने. " असें मोठ्यानें अर्जुनाला सांगितलें ! राजा, तें ऐकून आपलेही बहुत वीर पुढें सरले आणि कर्णाला म्हणाले, -- कर्णा, जा जा, अर्जुनावर उडी घाल, आणि त्याजवर सुतीक्ष्ण शरांची वृष्टि करून त्यास यमसदनीं पाठव व पांडवांना पुनः कायमचें वनवासान्त धाडून दे ! "

राजा, नंतर कर्णानें प्रथम अर्जुनाला दहा प्रखर बाणांनीं विंधिलें, तेव्हां तें पाहून अर्जुनाला हेमूं आलें व त्यानें तत्काळ दहा उग्र जलाल बाणांनीं कर्णाचे वक्षस्थळ विद्ध केलें ! तेव्हां त्यांची फारच झटापट सुरू झाली आणि त्यांनीं परस्परांवर सुपुंगु बाणांचा भडिमार आरंभिला ! त्या समयीं त्यांचा फारच रण-संमर्द मातला आणि मोठ्या वीरश्रीनें परस्परांचे देह विद्राग्न करीत ते एकमेकांवर अतिशय तुटून पडले ! तेव्हां अर्जुनानें एकदां दोन्ही भुजांवर व गांडीवावर हात फिरविला ! आणि आपल्या त्या भयंकर धनुष्याच्या योगें कर्णावर

नाराच, नालीक, वराहकर्ण, क्षुर, आंजलिक, अर्धचंद्र, वगैरे बाणांची अशा घोर वृष्टि केली की, ते सर्व पार्थशर इतस्ततः आकाशांत मर्वत्र पसरले, आणि सायंकाळीं पक्ष्यांचे समुदाय जसे खालीं मान वांकवून वृक्षावर आपल्या घराट्यांत प्रवेश करितात, तसे कर्णाच्या रथावर व कर्णाच्या देहांत प्रवेश करूं लागले ! परंतु राजा, पुढें असा चमत्कार झाला कीं. विजयशाली अर्जुनांनं जे हे बाण मोठ्या क्रोधांनं भुंवया चढवून कर्णावर टाकिले होते. ते सर्व कर्णांनं उलट बाण सोडून तेव्हांच भग्न केले आणि अर्जुनाचा तो सर्व प्रयत्न व्यर्थ दवडिला ! तें पाहून अर्जुनांनं कर्णाचा वध करण्याकरितां त्याजवर शत्रुमंहारक आश्रय अस्त्राची योजना केली आणि त्याच्या योगें पृथ्वी, नभोमंडल, दिशा व सूर्याचा मार्ग हीं सर्व अग्निज्वालांनीं प्रदीप्त होऊन कर्णाचा देह पेटला ! तेव्हां रणांगणांत कौरववीरांची फारच दुर्दशा उडाली. त्यांच्या शरीरावरील वस्त्रे भटकलीं आणि त्यामुळें, अरण्यांत वेळेंच वनपेटले म्हणजे जसा भयंकर शब्द होतो. तसा अतिभयंकर शब्द होऊं लागला व ते सर्व वीर प्रावरून मोठ्या जलदीनं जिकडे वाट मांडली निकडे पळून गेले ! राजा. त्या समयीं अर्जुनाच्या त्या आश्रय अस्त्राचा नाश करण्यासाठीं रणांगणांत कर्णांनं वारुणास्त्र सोडिले आणि तत्काळ त्याच्या योगें त्या अग्न्याचा विध्वंस उडविला ! तेव्हां प्रथम मोठ्या वेगांनं चोहोंकडे अंतर्दिशांत मेघसमुदाय धावून आले आणि त्यांनीं सर्व दिशा झांकून काढून मर्वत्र अंधकार पाडिला व मग पर्वताप्रमाणें प्रचंड अशा त्या मेघांतून चोहोंकडे उदकाची अशा मुसळधार सुरू झाली कीं, तमलाही तो प्रचंड अग्नि त्या वृष्टींनं क्षणांत विवृत गेला ! राजा. त्या वेळीं सर्व अंतरिक्ष व दशदिशा मेघाच्छन्न झाल्या;

आणि जिकडे तिकडे निविड काळोख पडून कांहींएक दिसेनासें झालें ! नंतर कर्णाच्या त्या मेघास्त्राचा अर्जुनांनं वायव्यास्त्रांनं प्रतिकार केला आणि सर्व मेघ उधळून लाविले ! पुढें त्या शत्रुमंहारक अर्जुनांनं गांडीव धनुष्य, त्याची प्रत्यंचा व बाण ह्यांजवर अतिप्रभाव वज्रास्त्राचें अतिमंत्रण केले आणि महेंद्राला अत्यंत प्रिय असें तें वज्रास्त्र कर्णावर सोडिलें ! राजा. तेव्हां गांडीव धनुष्यापासून वज्रतुल्य वेगवान् असे महत्यावधि क्षुर, आंजलिक, अर्धचंद्र, नालीक, नाराच व वराहकर्ण बाण उमळून बाहेर पडूं लागले; व त्या महाप्रभाव, अतिशय प्रखर व गृध्रपुंख अशा वेगवान् बाणांनीं कर्णाच्या गांठून त्याचीं सर्व गांठिं, हय, धनुष्य, रथचक्रें, जूं व ध्वज ह्यांचा विध्वंस उडविला; आणि गरुडानें व्रत केलेल्या सर्गाप्रमाणें ते सर्व जळाल बाण मळमळत मोठ्या त्वरेंनं भूमिंत घुमले ! राजा. त्या समयीं कर्णाचा सर्व देह बाणविद्ध झाला आणि त्याच्या गात्रांतून रुधिराचे लोट बाहेर पडूं लागले व तो क्रोधांनं अगदीं नयशिलांत पेटला ! राजा. तें पाहून त्या महेंद्रास्त्राचा (वज्रास्त्राचा) मंहार करण्यासाठीं महात्म्या कर्णांनं अत्यंत बळकट ज्या अमलेळें आपले धनुष्य वांकवून, समुद्रामाग्वें गंभीर घोष करणारं भार्गवास्त्र मज्ज केलें आणि अर्जुनांनं सोडिलेले ते वज्रतुल्य बाणांचे समुदाय उडून टाकून अर्जुनाचा तो भयंकर प्रयत्न वाया दवाडिला; व मोठ्या क्रोधांनं जळाल बाणांचा भडिमार चालवून महेंद्राप्रमाणें प्रताप गाजविणाऱ्या त्या कौरववीरांनं भार्गवास्त्राच्या योगें घोर रणकंदनांत पांडवांचे रथ, नाग व पदाति ह्यांचा अत्यंत नाश केला; आणि महापणवर धार देऊन जळाल केलेल्या रुक्मपुंख बाणांचा एकसाग्वा वर्षाव करून त्यांनं पांचाल्यांपैकी

प्रमुख योद्ध्यांना रणांगणांत शरविद्ध करून मोडिले ! तेव्हां त्या पांचालांनी व मोमकांनी क्रोधायमान होऊन सर्व बाजूंनी कर्णावर तीक्ष्ण बाणांचा भडिमार आरंभिला; पण सूतपुत्राने उलट मोठ्या वीरश्रीने त्यांजवर एकमागवे बाणांचे लोट मोटून त्यांम अगदी जखम केले व त्यांचे अनेक रथ, कुंजर व अश्व ह्यांम जलाल बाणांनी विधिले, तेव्हां ते छिन्नभिन्न होतसात रडत आरडत रणांगणांत मरून पडले ! राजा, त्या वेळीं तो भयंकर मंहार अवलोकन करून जणू काय क्षुब्ध झालेल्या महाशक्तिमान् मिहाने घोर अरण्यांत प्रचंड हत्तीचे कळपच मारून टाकिले. अमा भाम झाला ! ह्याप्रमाणे त्या शूर कर्णांनी पांचालांकडील प्रमुख वीरांचा मोठ्या त्वपाने वध केला तेव्हां त्यांचे तेज फारच वाढले; व तो अंतरिक्षांतील चंडकिरण भास्कराप्रमाणे आपल्या दिव्य कांतीने झळाळू लागला ! त्या ममयीं तुझ्या मेन्यांतील वीरांना कर्णांचा जय झाला असे वाटले, आणि ते मोठ्या आनंदांने मिहामागवे गर्जून लागले; व त्या सर्वांनी मानिले कीं, कृष्णार्जुनांना कर्णांनी अगदी दीन करून मोडिल्यामुळे त्यांची आतां धडगत दिमत नाही !

ह्याप्रमाणे शत्रूंना महन न होणारं असे ते महारथ कर्णांचे लोकोत्तर शौर्य पाहून आणि अर्जुनांचे ते महेंद्रास्त्र ममरांगणांत कर्णांनी उच्छिन्न केले असे अवलोकून भीमाचा अगदी संताप झाला ! त्याचे नेत्र क्रोधाने इंगळा-मागवे लाल दिसू लागले; आणि तो हातबोटें मोडीत व संतापाने मुसकारे टाकीत मत्स्यप्रतिज्ञ अर्जुनाला म्हणाला. .. हे विजयशीला पार्था, हा पातकी अथम मृतात्मज कर्ण, आज मोठ्या शौर्याने तुझ्यासमक्ष रणभूमीवर अनेक प्रमुख पांचालांचा वध करू शकला, हे झाले तरी कसे ! अरे, ज्या तुझ्यापुढे पूर्वी देवांचे किंवा काल-

केयांचे काहीएक चालले नाही, ज्या त्वां साक्षात् शंकराशीं बाहुयुद्ध केले, त्या तुला यःकश्चित् सूतपुत्राने दहा बाणांनी प्रथमच विद्ध करावे आणि तूं मोडिलेल्या त्या निशितबाणांचा विश्वंस उडवावा, हे मला ग्वचित आज मोठें नवल वाटते ! अर्जुना, अमा निर्वाय होऊं नको ! द्रौपदीला ह्या अधमाने जे क्लेश दिले, त्यांचे स्मरण कर ! अरे, 'पांडव हे पंड आहेत' म्हणून जे ह्याने कठोर व हृदयभेदक उद्गार काढिले, ते तूं कमा विसरलास ! ह्या दुष्टबुद्धि नराथम सूतपुत्र कर्णाला कसलीच भीति राहिली नव्हती काय ! अमो; आज तें सर्व तूं आटवून ह्या नीचाला ममरांगणांत ठार मारून टाक ! आतां उपेक्षा करण्यांत अर्थ नाही ! हे मत्स्यसाचिन्, आतां तूं काय म्हणून कर्णाला तत्काल वधीत नाहीस ! बाबारे, आतां अगदी विलंब करूं नको; विलंब करण्याचा आज ममय नाही ! ज्या धैर्याने तूं सर्व प्राण्यांना जिंकलेस आणि अग्नीला खांडववन अर्पण केलेस, त्या धैर्याने तूं आज कर्णाला ठार मार; हा पहा मीही ह्या आपल्या गदने त्या अधमाचे चूर्ण करून टाकीतों ! " राजा, इतक्यांत कृष्णही अर्जुनाला म्हणाला, " अर्जुना, तुझ्या बाणांची कर्णांनी कशी वाताहत उडविली हे पाहिलेसना ! अरे, या रणकंदनांत कर्णांनी आपल्या अस्त्रांनी तुझ्या ह्या अस्त्राचा भंग करून टाकावा, हे झाले तरी कसे ? तुझ्या-मारखा अमोघ वीर आज अमा कसा अगदीं भ्रांत होऊन गेला ! हे कौरव आनंदांने गर्जत आहेत. इकडे तुझे लक्ष नाही काय ! त्या सर्वांना असे वाटत आहे कीं, आतां कर्णापुढे अर्जुनाचा पगक्रम कुंठित झाला; आतां तूं कोण-तेही अस्त्र सोडीसना, तें कर्णांनी तोंडिलेच म्हणून हे समजतात ! ह्यासाठी, वा अर्जुना, असे औदार्यान्वय धरूं नको ! ज्या धैर्याने प्रत्येक युगामध्ये तूं नामस अस्त्रांचा संहार करून मदो-

मत्त राक्षस, क्षत्रिय किंवा दैत्य यांचा रणांगणांत विखंम उडविलास त्याच धैर्यानें तूं आज कर्णाशीं युद्ध करून त्यास ठार मार ! अर्जुना, हें वे माझे सुदर्शन चक्र आणि ह्याच्या ह्या वस्त-यासारख्या धारेनें—इंद्रानें जसें वज्रानें नमुर्चाचें मस्तक तोडिलें तसें—तूं आज मोठ्या वेगानें ह्या कर्णाचें मस्तक तोड ! अर्जुना, हें कृत्य तुला मुर्लीच अवघड नाही. तुझ्या ठिकाणीं इतकें शौर्य आहे कीं, किरातरूपी भगवान् शंकराला तूं आपल्या अलौकिक प्रतापानें संतुष्ट केलेंस; म्हणून प्रस्तुत प्रमंगी तूं आपल्या तो तसला प्रभाव पुनः प्रगट करून कर्ण व त्याचे अनुयायी ह्यांस ठार मार; आणि ही समुद्रवलयं-कित समृद्ध पृथ्वी गांवे व शहरें ह्यांसह शत्रु-रहित करून धर्मराजाला अर्पण कर व दिव्य यश जोड ! ”

कृष्णाचें हें भाषण श्रवण करून त्या अति-बलिष्ठ महात्म्या अर्जुनानें सूनपुत्राच्या वधाचा निश्चय ठरविला. राजा, त्या समयीं भीमसेन व कृष्ण ह्यांनीं जे जे उद्गार काढिले होते. त्या सर्वांचें अर्जुनानें नीट मनन केलें; आणि आपली सर्व यथास्थित तयारी आहे कीं नाही व आपण येथें काय म्हणून आलों आहों. ह्या सर्वांचें उत्तम चिंतन केलें आणि मग केशवाम म्हटलें, “ केशवा, आतां मी अनिशय घोर महास्त्र प्रकट करीत आहे; ह्याच्या योगें भूत-पुत्राचा वध व सर्व जनतेचें कल्याण होईल ! तर मला ब्रह्मदेव, शंकर, इतर देव, वेदवेंत मुनि व तूं ह्या सर्वांनीं अनुज्ञा द्यावी. ” राजा, कृष्णाला असें म्हणून मध्यमाची अनंतर्वाय अर्जुनानें भगवान् ब्रह्मदेवाला नमस्कार केला; आणि अंतर्वाची ध्यान करून श्रेष्ठ व दुर्धर असें ब्रह्मास्त्र कर्णावर मोडिलें. पण राजा, असा चमत्कार झाला कीं, कर्णानें त्याचा तत्काळ अंत केला व मोठ्या शौर्यानें अर्जुनावर

वर्षाकालीन जलधारेप्रमाणें घोर शरवृष्टि केली ! ह्याप्रमाणें अर्जुनाचें तें ब्रह्मास्त्रही रणांत कर्णाच्या हस्ते व्यर्थ झालें असें जेव्हां प्रबळ भीमसेनानें पाहिलें, तेव्हां त्यास अनावर क्रोध चढला व तो नवशिखांत संतप्त होतसाता मत्स्यसंघ अर्जु-नाला म्हणाला, “ अर्जुना, सर्व लोक तुला महान् ब्रह्मास्त्र जाणणारा असें म्हणतात ना ! ह्याकरितां तूं दुसरें अस्त्र योज. ” राजा, भीम-सेनानें हें भाषण श्रवण करून अर्जुनानें दुसरें अस्त्र योजिलें आणि गांडीव धनुष्याच्या योगें सूर्यकिरणांप्रमाणें देदीप्यमान व सर्पांप्रमाणें प्राणघातकी अशा बाणांचा एकसारखा भयंकर मारा चालविला आणि दाही दिशा बाणाच्छन्न करून सोडिल्या ! त्या समयीं प्रलयकालच्या अशीप्रमाणें किंवा सूर्याप्रमाणें प्रज्वलित असे ते अर्जुनानें सोडिलेले हजारों मुक्तापुंज बाण क्षणांत चोहोंकटून कर्णाच्या रथावर आले व त्यांत तो आच्छादित होऊन अदृश्य झाला ! नंतर अर्जुनानें भयंकर शूल, कुडाटी, चक्रे व शतावधि नागच बाण ह्यांचा शत्रूवर भडिमार आरंभिला आणि त्यांच्या योगें ममरभूमीवर निकडे निकडे कांगवांचे वीर पटापट मरून पडूं लागले ! राजा, त्या समयीं रणांगणांत शत्रु कडील कोणा एका वीराचें मस्तक छिन्न होऊन खाली पडलें ते दुसऱ्या एका वीराचें पाहिलें, तेव्हां तो वावरून जाऊन तत्काळ भूतलावर गतप्राण होऊन पडला ! त्याप्रमाणेंच अर्जुनाच्या बाणानें दुसऱ्या एक कुरुवीराचा हत्तीच्या मोडे-मारुवा पुष्ट बाहु तुटला व तो खड्गामहवर्तमान खाली पडला ! दुसऱ्या एका वीराच्या अंगांतले चिलघव व डावा बाहु क्षुर बाणांच्या प्रहागनें छिन्न झाला व तो घर्णावर कोमळला ! ह्या-प्रमाणें कांगवंमन्यांतले सर्व प्रमुख योद्ध्यांची अर्जुनानें प्राणघातक भयंकर बाणांच्या भडि-मारांने वाट लाविली आणि दुर्योधनाचें सर्व मन्य

नामशेष करून मोडिले! राजा. इकडे विक- कौरवांचा अंत करील! राजा धृतराष्ट्रा, ह्या-
 र्तेनपुत्र कर्णानेही रणांगणांत हजारी बाण प्रमाणे कौरववीरांचा आक्रोश श्रवण करून
 पांडवांवर मोडिले व ते पावसाच्या मरीप्रमाणे कर्णाने मोठ्या दक्षनेने अर्जुनावर एकसारखा
 मळाळत त्यांजवर आले! त्या समयी त्या अचूक बाणवर्षाव आरंभिला; तेव्हां ते बाण
 अतुल्यप्रतापी महाबलवान् कुरूवीराने कृष्ण, पांडुपांचालवीरांची मर्मस्थले भेदून त्यांच्या
 अर्जुन व वृकोदर ह्यांजवर प्रत्येकी तीन तीन देहांत घुमले व त्यांम त्यांनी रणांगणांत गत-
 बाण मोडिले! व तो प्रचंड स्वरांने रणांगणांत प्राण करून पाडिले! राजा. सर्व धनुर्धरांमध्ये
 गर्ज लागला! राजा, तेव्हां कर्णाच्या बाणांनी श्रेष्ठ अशा त्या महाबलिष्ठ व शत्रूंचा संहार
 विद्ध झालेल्या अर्जुनाने भीमाकडे व कृष्णाकडे करणाऱ्या महाशत्रूवच्या कर्णाजुनांनी परस्परंवर
 पाडिले तो तेही आपल्याप्रमाणेच शरविद्ध व आपल्या प्रतिस्पर्धीं मैन्यांवर घोर शरवृष्टि
 झालेले त्याला दिसले आणि त्यामुळे त्याम करून भयंकर अनर्थ चालविला अमतां त्यांचे
 अनावर क्रोध चढून त्याने तत्काळ पुनः अठरा ते युद्ध अवलोकन करण्याकरितां—मुद्दंदांकडून
 बाण शत्रूवर मोडिले! त्यांपकीं एका बाणाने त्याने व महान महान वेद्यांकडून मंत्रोपधीच्या योमाने
 कर्णाचा वज्र तोडिला. चार बाणांनी शल्याला व शल्यहीन व व्यथाहीन झालेला—धर्मराज युधि-
 र्तेन बाणांनी कर्णाच्या विधिने आणि दहा बाणांनी ष्ठिग सुवर्णांचे कवच धारण करून त्या स्थळीं
 सुवर्णकवच धारण केलेल्या सभापतींचे मस्तक त्वरित आला आणि तेथे समरांगणांत धर्म-
 उडवून टाकिले. तेव्हां तो राजपुत्र मस्तकहीन, राजाला पाहून सर्व प्राण्यांना मोठा आनंद
 बाहुहीन, वाजिहीन, सागधिहीन, धनुहीन व आला! त्या वेळीं, राजा, जणू राहूपामून मुक्त
 धनुहीन होत्याता जन्मही व मृत होऊन, कुन्हा झालेला समग्र चंद्रच विमल होत्याता आका-
 ईने तोडलेल्या शालतरुप्रमाणे रथांतून धाडकून शांत उदित झाला आहे असे सर्वास भासले!
 समरभूमीवर पडला! नंतर राजा, अर्जुनाने पुनः राजा, ते दोन महाशूर शत्रूसंहारक प्रमुख
 कर्णावर बाणांची वृष्टि केली! त्याने तीन, आठ, वीर कर्णाजुन हे परस्परंशीं लढत अमतां
 दोन, चार व दहा असे बाण कर्णावर टाकून त्यांचे ते युद्ध पाहाण्यासाठीं अंतर्दृष्टीं व भूप्र-
 त्याम विद्ध केले आणि मग कौरवांकडील देशी जे लोक जमले होते, ते अगदी स्वस्थ-
 आयुधांगहित चारशे गज, आठशे रथ, हजार पणाने त्यांचे ते युद्ध पहात होते! राजा, त्या
 अश्रु व त्यांजवरचे वीर आणि आठ हजार समयी धनंजय व कर्ण हे एकमेकांवर बाणांचा
 पायदळ ठार मारिले व मरळ चालून जाणाऱ्या प्रचंड वर्षाव करीत अमतां त्यांच्या धनुष्यांचा
 बाणांचा भडिमार चालवून रथ, मृत व वज्र टणत्कार फारच भयंकर चालू झाला व तित-
 ह्यांममेत कर्णाच्या अदृश्य करून टाकिले! त्यांत अर्जुनाची प्रत्येका आकर्षण ओढतां
 राजा, त्या समयी कर्णाच्या मर्भावती जें ओढतां एकाएकी तुटली आणि त्याबरोबर
 कौरवमैन्य होते, त्याचा अर्जुनाच्या शरांनी प्रचंड कडकडाट झाला! तेव्हां ती संधि साधून
 संहार होऊ लागला. तेव्हां त्यांनील वीर कर्णाने प्रथम तत्काळ शंभर क्षुद्र बाण अर्जुना-
 मोठमोठ्यांने ओरडून म्हणू लागले की, कर्णा, वर मोडिले; व मग त्याने एकसारखा तडाखा
 अर्जुनावर बाणांचा वीर वर्षाव करून त्याम चालविला; आणि धार देऊन तेलपानी केलेले
 त्वरित विद्ध कर; नाही तर आतां हा सर्व व कात टाकलेल्या मर्षाप्रमाणे भयंकर असे

साठ बाण वामुदेवावर टाकिले. नंतर त्याने पुनः आठ बाण अर्जुनावर मोडिले; आणि मग आणखी सहस्रावधि जलालबाणांचा भीमसेनावर भडिमार चालवून त्याला सर्व मर्मस्थळीं विद्ध केले! राजा, ह्याप्रमाणे कर्णांनीं कृष्ण व अर्जुन व त्याप्रमाणेंच अर्जुनाचा भ्रज ह्यांजवर बाणांचा वर्षाव करून मग पार्थाचे अनुयायी व सोमक ह्यांजवर बाणांचा भडिमार चालविला; पण त्यांनीं तत्काळ उलट जलालबाणांची कर्णांवर वृष्टि करून, आकाशांत सूर्याला ज्याप्रमाणें भेष झांकून शकितान त्याप्रमाणें रणांगणांत कर्णाला झांकून टाकिले व ते त्याजवर बाणांचा भडिमार करीत धावून आले! परंतु इतक्यांत, अस्त्रविद्यापारंगत सून पुत्रांनीं, आपणावर धावून येणाऱ्या त्या पांडवीय वीरांवर अगणित बाण मोडिले; व त्यांमजगच्या जागीं ग्विलून टाकून, त्यांनीं मोडिलेल्या सर्व शरांचा विश्वंम उडविला आणि त्यांचे रथी, वाजी व हत्ती ह्यांचा मंहार केल्या! राजा, नंतर कर्णांवर आणखीही दुमरी चलावून पांडवैमन्ये धावून आलीं. पण त्यांवर त्या सूनपुत्रांनीं असा कांहीं योग शरवर्षाव केल्या कीं, त्यांच्या योगें त्यांचीं शरीरे विक्षिर्ण होऊन मोठमोठ्यांचे गडद ओगडून त्यांनीं धागतीथीं देह ठेविले! राजा, ज्याप्रमाणें महाचक्रवान क्षुब्ध मिहानें घोड्यांच्या प्रचंड टोळ्यांचा वध करावा, त्याप्रमाणें त्या ममयीं त्या कुर्वांगनें त्या पांडवैमन्याचा वध केल्या! राजा, नंतर पुनः दोन्ही दळांत योग गणकंदन माजले. कर्णांनीं पुनः प्रमुख पांचालयोद्ध्यांचा भयंकर शरवर्षावांन नाश केल्या आणि अर्जुनांनही बहुत कौरवांना ममभूमिंवर भिजविले! राजा, तें पाहून नुड्या मेनिकांम वाटले कीं, आतां कर्णच विजयी झाला व ते आनंदांन शक्या बाजवून मोठमोठ्यांचे मिहनाद करूं लागले:

आणि ह्याप्रमाणें नुड्या मैन्यांन कर्णाविषयीं जगघोष चालविला तेव्हां त्या घनघोर संग्रामांत कृष्णार्जुन हे सर्वस्वी कर्णाच्या कचाट्यांत मांपडले असें सर्वांनीं मानिले! राजा, त्या वेळीं कर्णाच्या शरांनीं जखमी झालेला अर्जुन अनिशय खचळला आणि त्यानें आपल्या धनुष्याची प्रत्यंचा बांकवून तत्काळ बाणांचा भडिमार सुरू केल्या; व कर्णांनीं जे बाण त्याजवर मोडिले होते, त्या सर्वांचा विश्वंम उडवून तो आणखी शरवर्षाव करीत कौरवांवर चालून गेला! राजा, त्या ममयीं अर्जुनांन धनुष्याच्या प्रत्यंचेवरून एकदां हात फिरविला; आणि दोन्ही हातांनीं उणत्कार करीत असा कांहीं बाणवर्षाव आरंभिला कीं, त्याच्या योगें एका एका अंतरिक्षांत बाणांचे उत उभारले जाऊन भूतलावर कांहीं एक दिसेनासें आले. राजा, त्यावेळीं अर्जुनांन कर्ण, शक्य व इतर सर्व कौरव ह्यांजवर अंतानात बाण मोडिले; आणि त्यांचे देह अमर्दी शरविद्ध केले! राजा, तेव्हां अंतरिक्षांत बाणांची इतकी गर्दी झाली होती कीं, त्यांत पक्षी मुद्धां फिरत नव्हते; त्या ममयीं तेथे फक्त वाग तेवढा ताहान होता आणि तो अंतरिक्षांत जमलेल्या भूतगणांच्या अंगावरून सार्थी येत असल्यामुळे त्याचा दिव्य मुग्ध मुट्या होता! असा; राजा, नंतर अर्जुनांन हंसत हंसत दहा बाण शक्यावर टाकिले आणि त्यांचे चिळखत अनिशय विदारिले; मग त्यानें नेमकेच प्रथम बाग व मागाहून मात उग्र बाण कर्णांवर मोडून त्यांम विचिये; आणि मग त्या अति शयित वेगवान बाणांनीं कर्णांचीं मथे गात्रे भिन्न होऊन त्यांतून रक्ताचे पाट वाहूं लागले. तेव्हां जणू काय इमशांतान रथिगनें न्हालेल्या शंकर गैत्रमुहूर्तावर (मंत्र्याकार्की गक्षम वेळेवर) कींटाच करीत आहे असें भासूं लागले! राजा, नंतर त्या वामचतुल्य अर्जुनावर कर्णांनीं

तीन बाण सोडून त्याम विद्ध केले; आणि अच्युतास ठार मारण्याच्या इराद्याने त्याच्याही देहांत सर्षामारगे मळमळत जाणारे पांच प्रज्वलित बाण घुमविले! तेव्हां कर्णाने मोठ्या वेगाने मोडिलेले ते सुवर्णालंकृत बाण पुरुषोत्तमांचे कवच विदारून त्याच्या देहांत शिरले व तेथून तत्काळ बाहेर पडून भूगह्वरांत जाऊन पाताळांतल्या भोगावतीचे खान करून पुनः माघारे आले; पण अर्जुनाने त्यांनील प्रत्येकावर दहा दहा भल्ल बाण नेमकेच सोडून त्या एकेकाचे तीन तीन तुकडे केले आणि मग ते तक्षकाच्या पुत्राच्या (अश्वमेनाच्या) पक्षाचे पांच प्रचंड मर्प (ते पांच बाण) अर्जुनाच्या अस्त्रांनी छिन्नभिन्न होतमाने भूतलावर पतन पावले! राजा. नंतर अर्जुनाची दृष्टि कृष्णाच्या शरीराकडे गेली; आणि कर्णाच्या मर्पशरानीं कृष्णाचा देह विदीर्ण झाल्या असे जेव्हां त्याने पाहिले, तेव्हां अर्शाने जशी तृणाची रामपेटने तमा त्याचा देह क्रोधाने अगदी पेटव्या आणि त्याने निश्चयाने प्राणांचा घात करितील असे प्रज्वलित बाण आकर्षण ओढून कर्णाच्या मर्मस्थळी टाकिले व त्यामरमा त्या वेदनांनी तो कौरव-वीर कांपू लागला; परंतु त्या ममयी त्याच्या ठिकाणी प्रसंगानुरूप धैर्यबल असल्यामुळे तो रथांतून खाली मात्र पडला नाही! राजा. त्या वेळी अर्जुनाचा कोप अनावर वाटला व त्याने इतकी शरवृष्टि केली की, तिच्यामुळे जिकडे तिकडे बाणच बाण होऊन त्यांत दिशा, उपदिशा, सूर्याची प्रभा व कर्णाचा रथ हीं सर्व अगदी अदृश्य झाली व सर्वत्र दाट धुकेंच पसरले आहे असें दिसें लागले! तेव्हां त्या शत्रुमंहारक पृथापुत्राने कर्णाच्या रथाची चक्रे व बाजू राखणारे. त्याप्रमाणेंच त्या रथाच्या पुढे धावणारे व पाठ राखणारे वगैरे जे शेलके वीर दुर्योधनाने नेमिले होते. या सर्व बलिष्ठ

वीरांना रणांगणांत ठार मारिले! त्या समयी सव्यसाची अर्जुनाने कौरवांकडील एकंदर दोन हजार महान् महान् वीर रथ, अश्व व सारथि ह्यांसहवर्तमान क्षणांत यमसदनीं पाठविले! ते पाहून, राजा, तुझे पुत्र व उरलेले कौरव-योद्धे कर्णाला, आणि रणांत पडलेल्या व जखमी झालेल्या मुलांना व पितरांना समरभूमीवर सोडून रडत आरडत पळून गेले! तेव्हां कर्णाने सभोवार पाहिले तों भयभीत झालेले कौरव पळून गेल्यामुळे त्यास सर्व दिशा शून्य दिसल्या! तथापि त्या वीराच्या मनाला यत्किंचित् धास्ती वाटली नाही व तो तसाच मोठ्या वीरश्रीने अर्जुनावर चालून गेला!

अध्याय नव्वदावा.

—:०:—

कर्णाजुनयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा, नंतर अर्जुनाच्या शरवर्षावामुळे वाताहत होऊन पळून गेलेले कौरव अर्जुनाच्या बाणांच्या मान्याच्या पलीकडे जातांच तेथें थांबले, तों अर्जुनाने सोडिलेले विद्युलतेसारखे देदीप्यमान् अस्त्र मोठ्या वेगाने सभोवतालीं अधिकाधिक भडकत चालले आहे, असे त्यांस दिसून आले! राजा, अर्जुनाने अत्यंत क्षुब्ध होऊन कर्णाला ठार मारण्याकरितां मोठ्या त्वेषाने तें अस्त्र त्याजवर टाकिले, तेव्हां तें त्या घनघोर संग्रामांत अतिशय भडकून कौरवांना जाळीत आकाशभर व्याप्त झाले. तेव्हां कर्णाने त्याच्यावर सुवर्ण-पुंज घोर शरांचा एकसारखा भडिमार आरंभिला आणि त्याचा तत्काळ नाश करून टाकिला! त्या समयी महात्म्या कर्णाने आपल्या अमोघ धनुष्याच्या सुदृढ प्रत्यंचेचे आस्फालन करून शरांचे लोटच्या लोट शत्रूवर चालू केले आणि परशरामापाम्न मिळविलेल्या

शत्रुसंहारक महाप्रताप भूर्ताथर्वण अस्त्रांचें अभि-
मंत्रण करून सहाणेवर पाजविलेल्या घोर
बाणांचा भडिमार सुरू केला व तें अर्जुनाचें
अस्त्र भंगून टाकिलें ! नंतर अर्जुन व कर्ण
ह्यांचा तुंबळ संग्राम सुरू झाला; आणि मदोन्मत्त
हत्ती आपल्या दंतांच्या प्रहारांनीं जसे एक-
मेकांशीं झुंजूं लागतात, तसे ते दोघेही वीर्य-
शाली वीर एकमेकांवर घोर शरवृष्टि करून
अतिशयित लढू लागले ! तेव्हां जिकडे तिकडे
अगदीं बाणच बाण होऊन गेले आणि त्या
कुरुपांडववीरांनीं सर्व अंतरिक्ष बाणांनीं अगदीं
खच्चून काढिलें ! त्यामयीं आकाशांत बाणांचें
मोठें छतच लागलें आहे असें कौरवमोमकांस
दिमलें आणि सर्वत्र बाणांनीं निविड अंध-
कार पडल्यामुळे त्यांस कोणीही प्राणी दृग्गो-
चर झाला नाही ! त्या वेळीं, राजा, नानाविध
अस्त्रांत प्रवीण असे ते दोघेही महाधनुर्धर एक-
सारखे अगणित बाण सोडून समरभूमीवर
चित्रविचित्र युद्धमार्ग दाखवीत अमतां पराक्रम,
अस्त्रज्ञता, युक्ति, शक्ति व शौर्य ह्यांत केव्हां
केव्हां कर्णाची व केव्हां केव्हां अर्जुनाची
सरशी दिसे ! ह्याप्रमाणें समरांगणांत ते
दोघेही वीर दारुण युद्ध करीत असतां, योद्ध्यांची
दृष्टि कोण कोठें चुकतो हें पाहाण्यांत
गर्क झाली; आणि अन्य वीरांना दुःसह अमा-
तो त्या उभयतांचा प्रताप जेव्हां त्यांनीं अव-
लोकन केला, तेव्हां ते सर्व अगदीं चकित होऊन
गेले ! त्या समयीं राजा, अंतरिक्षांत जमलेल्या
प्रेक्षकजनानाही तें युद्ध पाहून मोठें कौतुक
वाटलें आणि त्यांनीं ' शात्राम कर्णा ! शात्राम
अर्जुना ! ' असे धन्यवाद गाऊन सर्वत्र आकाश-
भर त्यांची स्तुति आरंभिली ! राजा, ह्याप्रमाणें
कौरवपांडववीरांचें निकरांचें युद्ध चालून गय,
वांजी व कुंजर ह्यांच्या आघातांनीं महीतल
अगदीं हादरून गेलें असतां, तिकडे अर्जुनाचा

शत्रु अश्वसेन नामक नाग खांडववनांतून मुटून
पृथ्वीच्या तळीं पाताळांत मोठ्या क्रोधानें जाऊन
राहिला होता तो. त्या दुष्ट अर्जुनाचा सूड उग-
विण्यास ही संधि योग्य आहे, असें मनांत
आणून एकदम मोठ्या वेगानें उसळी मारून
भूतलावर आला आणि कर्णाजुनांच्या घोर
रणांत शररूप धारण करून एकाएकीं कर्णाच्या
बाणभात्यांत प्रविष्ट झाला ! राजा, त्या वेळीं
समरांगणांत सर्वत्र बाणांचे लोट चालू होते व
त्यांनीं सर्व नभोमंडल व्याप्त झालें अमून तशांत
आणवी ते दोघेही प्रचळ गोद्वे बाणांचा भडि-
मार करीतच अमल्यामुळें त्यांत कोठेंही वाव
म्हणून उरल्या नव्हता ! ह्यास्तव जिकडे तिकडे
बाणपटलांनें सर्वत्र अतिशय अंधकार होऊन
दुमरें कांहींएक दिसेनांनें झालें. तेव्हां कौरव व
सोमक अत्यंत भ्याले ! अग्नेरीम ते दोघेही
लोकोत्तर धनुर्धर जिवावर उदार होऊन अतुल
प्रताप गाजवीत रणांगणांत अगदीं थकून जाऊन
एकमेकांकडे डोळे वटारून पाहू लागले, तेव्हां
आकाशांत जमलेल्या अप्सरांच्या ममुद्रायांनीं
चंद्रनोदकांचें त्यांजवर मिचन केलें आणि त्यांना
चामरांनीं व पंक्त्यांनीं वाग घातल्या; व सूर्य
आणि इंद्र ह्यांनीं आपलीं हस्तकमले त्यांच्या
मुखांवरून फिरवून त्यांचा परिश्रम दूर केला !

पार्थिकरीटपात !

राजा, नंतर फिरून त्या दोंघांचें तुंबळ
युद्ध सुरू झालें आणि त्यांत कर्णावर अर्जुनांनें
शरांचा मनस्थी मार्ग करून त्यास अगदीं
गांगरून सोडिलें, तेव्हां त्याची अशी खातरी
झाली की, आतां आपल्याच्यानें अर्जुनावर
मरशी होत नाही; आणि अग्नेरीम, शरप्रहारांनीं
वायाळ होऊन रक्तवंचाळ झालेल्या त्या
कर्णानें अर्जुनाला वधण्याकरितां निर्वाणीचा
म्हणून जो एक भयंकर, जलाल व बांकदार
बाण फार दिवसांपामून मुवर्णाच्या भात्यामध्यें

चंद्रनाच्या चूर्णांत नित्य पूजा करून रावून ठेविला होता, तो ऐरावताच्या वंशांत जन्मलेला, शत्रुघातक, मर्षमुख, उग्र, प्रज्वलित व निशित असा बाण धनुष्याला जोडिला आणि त्या वीर्यशाली कर्णाने रणांगणांत अर्जुनाचे मस्तक उडविण्यासाठी तो नेम धरून ओढिला ! राजा, तेव्हां दिशा, उपदिशा व आकाश हीं पेटलीं; शतावधि भयंकर उल्का पतन पावल्या; आणि तो मर्ष धनुष्याला लाविला आहे असें पाहून इंद्रादिक लोकपालांमध्ये मोठा हाहाकार प्रवर्तला ! राजा, कर्णाने धनुष्याला तो बाण लाविला तेव्हां त्यांत अश्वमेन नाग योगबलांने प्रविष्ट झाला आहे हें कर्णाला कांहीं माहीत नव्हतें; परंतु महस्त्रनेत्र महेंद्राने ती गोष्ट जाणून, आपला पुत्र आतां खाम मेला म्हणून मानिलें व त्याचे सर्व धैर्य नष्ट होऊन त्याचीं सर्व गात्रे अगदीं गळून गेलीं ! पण इतक्यांत कमलोद्भव ब्रह्मदेवाने इंद्राला म्हटलें, ' बा इंद्रा, असा घाबरूं नको; विजयश्री अर्जुनालाच वरील !'

इकडे कर्णाने तो भयंकर बाण धनुष्याला जोडून नेम धरून ओढिला आहे असें पाहून महात्मा मद्राधीश शल्य त्याला म्हणाला. " कर्णा, हा बाण अर्जुनाच्या मानेचे भेदन करणार नाही. ह्यास्तव नीट विचार करून अर्जुनाचे मस्तक छेदून टाकील अशा प्रकारे बाणाचे संधान कर !" राजा, तेव्हां क्रोधाने आरक्त नेत्र करून तो महावेगवान् मृतपुत्र कर्ण शल्याला म्हणाला, " शल्या, कर्ण हा दोन वेळां बाणसंधान करीत नाही; असें केल्याने माझ्यासारख्यांना कुटिल योद्धे हें नांव प्राप्त होईल !" राजा, असें म्हणून कर्णाने बहुत वर्षेपर्यंत मोठ्या काळजीने पूजा करून ठेविलेला तो बाण अर्जुनावर सोडिला; आणि त्याने अर्जुना, आतां तूं खचित मेलास '

अशी धिक्कारपूर्वक मोठ्याने गर्जना केली ! राजा, कर्णाच्या हातांतून सुटलेला तो बाण अग्नीप्रमाणे किंवा सूर्याप्रमाणे झळाळत सारखा अंतरिक्षांतून अर्जुनावर येत आहे असें पाहून तत्काळ मोठ्या लग्नगीने कृष्णाने तो अर्जुनाचा श्रेष्ठ रथ सहज आपल्या पायांने खाली दाबून थोडामा भूमीत रोंविला ! त्या समयीं अर्जुनाच्या रथाचे ते चंद्रकिरणासारखे शुभ्रवर्ण व सुवर्णालंकृत अश्व गुडघे टेंकून उभे राहिले आणि ते पाहून अंतरिक्षांत एकदम जिकडे तिकडे मोठमोठ्याने मधुमूदनाचे धन्यवाद सुरू झाले ! कृष्णाने मोठ्या शिताफीने अर्जुनाचा तो रथ भूमीत दडपला असें पाहून सर्वत्र मिहनाद होऊं लागून चोहोंकडून कृष्णावर पुष्पवृष्टि झाली ! इकडे कर्णाने टाकिलेला तो बाण बुद्धिमान् अर्जुनाच्या मानेवर न लागतां इंद्राने दिलेल्या त्या बळकट किरीटाला मात्र लागला; आणि त्यायोगे, स्वर्ग, पृथ्वी, अंतरिक्ष व जल ह्या सर्वांमध्ये महाप्रख्यात असें ते अर्जुनाचे शिरोभूषण खाली पडलें ! राजा,

अशा प्रकारे व्यालाख, उत्कृष्ट अस्त्रशिक्षा व क्रोध ह्या सर्वांचे एकीकरण होऊन कर्णाच्या हस्ते अर्जुनाच्या मस्तकावरील जो मुकुट पतन पावला. त्याची महती केवढी होती हें काय मांगावे ! त्याचे तेज केवळ सूर्य, चंद्र किंवा अग्नि ह्यांप्रमाणे दुर्धर होतें; त्यास सुवर्ण, मौक्तिके, हिरे आदिकरून रत्ने ह्यांचा जडाव केलेला होता; तो मुकुट खुद्द इंद्राकरितां मोठ्या तपश्चर्येने व प्रयत्नाने प्रत्यक्ष महाशक्तिमान् ब्रह्मदेवाने तयार केला होता; त्याचा घाट अतिशय मुंदर अमून तो शत्रूंना भीति उत्पन्न करणारा व धारण करणाऱ्याला अत्यंत सुख देणारा असा होता; त्याचा दिव्य सुगंध फैलावत अमून तो देवांच्या शत्रूंना वधण्याची इच्छा करणाऱ्या अर्जुनाला इंद्राने मोठ्या प्रेमाने अर्पण

केला होता; आणि शंकर, वरुण, इंद्र व कुवेर ह्यांजकडून पिनाक, पाश, वज्र व उत्तम बाण ह्यांच्या योगें किंवा महान् महान् देव ह्यांजकडून तो भरी होण्यास अशक्त होता! राजा, असें अमतांही कर्णानें तो किरीट त्या नागशाराच्या योगानें पाडून टाकिला! त्या दुष्ट हेतु धारण करणाऱ्या अमत्यप्रतिज्ञ त्वेषवान् नागानें तो अत्यंत अद्भुत, महा-मूल्यवान् व सुवर्णलंकृत किरीट पार्थाच्या उत्त-मांगापासून हरण केला! अर्जुनाच्या किरीटावर कर्णशाराचा जेव्हां प्रहार झाला, तेव्हां, सुवर्णा-च्या तारामंडळानें व्याप्त अमलेला व ज्याच्या-वर नागविषानें ज्वालांचे लोट चालले आहेत असा तो देखीप्यमान किरीट—आरक्तमंडल सूर्य जसा अस्ताचलावरून खाली पडतो तसा—अर्जुनाच्या मस्तकावरून खाली क्षितितलावर पडला! ज्याप्रमाणें महेंद्र हा आपल्या वज्रानें—ज्यांवर अंकुर व पुष्पे अतिशय आहेत अशा वृक्षांनीं व्याप्त अमलेल्या—श्रेष्ठ गिगिशिवराला खाली पाडितो, त्याप्रमाणें त्या अश्वमेन नागानें त्या शरसंधानानें—बहुत रत्नांनीं व्याप्त अशा—त्या श्रेष्ठ पार्थमुकुटाला मोठ्या त्वेषानें पार्थाच्या मस्तकावरून खाली रणांगणांत पाडिलें! राजा, किरीट खाली भूतलावर पडल्या तेव्हां, वादळाच्या योगें पृथ्वी, भ्रुंग, अंतरिक्ष व उदक हीं जशीं क्षुब्ध होऊन भयंकर शब्द होतो तसा अनिपश भयंकर शब्द सर्व ब्रह्मांडभर झाला आणि सर्व-लोक घाबरून जाऊन व्यथित होताने धडा-धड टेंचलून पडूं लागले! त्या समयीं, उंच पर्वतांचें नीलशृंग ज्याप्रमाणें शोभते, त्याप्रमाणें तो तरुण व नीलवर्ण अर्जुन किरीटावांचूनही शोभला! नंतर त्यानें आपले श्वेत वस्त्र मस्तका-वर गुंडाळून त्यांत आपले केस झांकून टाकिले; आणि मग, उदयपर्वतावर सूर्यकिरणांचा प्रकाश पडला असतां जशी उत्कृष्ट शोभा दिवते, तशी

त्याच्या मस्तकावर त्या श्वेत शिरोभूषणाची कांति पडून उत्कृष्ट शोभा दिवली! सारांश, राजा अर्जुनानें खांडववनांत ज्या उग्रमुखी सर्पिणीला वधिलें, त्या सर्पिणीचा पुत्र अश्व-मेन नांवाचा सर्प होता, त्यानें अर्जुनाचा वध करण्यासाठीं सूर्यपुत्र कर्णाच्या बाणाचा आश्रय केल्यावर कर्णानें तो शररूप सर्प रथावर अधि-ष्ठित अमलेल्या अर्जुनावर सोडिला; परंतु त्या शरानें अर्जुनाच्या ग्रीवेचा भंग न होतां, प्रत्यक्ष ब्रह्मदेवानें इंद्राकरितां तयार केलेला अत्यंत दिव्य व दिवाकरकिरणांप्रमाणें अतिशय कांति-मान् असा मुकुट अर्जुनाच्या मस्तकावर विरा-जमान होता, तो मात्र खाली पडला! आणि अश्वमेन सर्पाचा तो सृष्ट घेण्याचा प्रयत्न पाहून मग अर्जुनानें त्याला टार मारून यममदनीं पाठविलें! असा.

कर्णानें सोडिलेला तो देखीप्यमान नागशर अर्जुनाच्या सुवर्णलंकृत किरीटाला खाली पाडून जाळून टाकिल्यावर मागे वळला; व त्यानें पुनः कर्णाच्या बाणभात्यांत प्रवेश करण्याची इच्छा केली. पण, राजा, कर्णानें जेव्हां आपल्याला ओळखिलें असें त्या अश्वमेन नागानें पाहिलें, तेव्हां तो अश्वमेन नाग कर्णाला म्हणाला, “कर्णा, तूं मला अर्जुनावर सोडिलेस स्वर्ग, पण सोडितांना तूं मला नीट ओळखिलें नव्हतंस; त्यामुळे मला अर्जुनाचे मस्तक हरण करितां आलें नाहीं. कर्णा, आतां तूं मला ओळखिलें आहेस; ब्यास्तव आतां रणांत तत्काळ तूं मला अर्जुनावर सोड; म्हणजे मी त्या तुझ्या व माझ्या गिःपाचा क्षणांत नाश करीन!” राजा, अश्वमेनाचे ते शब्द श्रवण करून मृतपुत्रानें त्यास विचारिलें, “अरे उग्ररूप धारण करणाऱ्या तूं कोण आहेस?” तेव्हां त्या सर्पानें कर्णा-ला उत्तर दिलें, “कर्णा, मी अर्जुनाचा शत्रु अश्वमेन नाग आहे. माझ्या मानेचा अर्जुनानें

वध केल्यामुळे त्या अपराधाचा मूड घेण्यासाठी मी ठपून बसलों आंहे. अरे, प्रत्यक्ष वज्रधर इंद्रही जरी अर्जुनाचें संरक्षण करण्यास उद्युक्त झाला, तरी त्यास मी यमसदनीं पाठविल्या-शिवाय राहाणार नाहीं, ह्याकरितां माझी तुला इतकीच प्रार्थना आहे कीं, तूं मला पुनः अर्जुनावर टाक ! ”

कर्ण म्हणाला:—हे नागा, आज रणांगणांत कर्ण हा दुमऱ्याच्या बलावर भिस्त ठेवून जयाची आशा करण्यास मिद्ध नाहीं. अरे, एकचसा काय, पण शंभर अर्जुन जरी मला वधावयाचे अमले, तरी मी एका बाणाचें दोन वेळां संधान करणारा नाहीं. बा नागा, अर्जुनाचा वध व्हावा हीच तुझी इच्छा ना? ठीक आहे. मजजवळ दुसरे त्यालशर आहेत, त्यांचें मी उत्तम दक्षतेनें व मोठ्या त्वेषानें संधान करून आज अर्जुनाला ठार मारीन; तूं त्याची काळजी करूं नको, खुशाल जा! राजा, ह्याप्रमाणें कर्णाचें भाषण ऐकून रणांगणांत नागराज अश्रमेन ह्याला फार क्रोध आला व तो तें भाषण सहन न करितां स्वतःच उग्र स्वरूप धारण करून पार्थाच्या वधाकरितां त्याजवर चालून गेला ! तेव्हां कृष्ण रणभूमीवर अर्जुनाला म्हणाला. ‘ अर्जुना. तूं ह्या आपल्या दावेदार सर्पाला ठार मार ! ’ राजा. त्या समयीं महाप्रताप्र गांडीवधारी अर्जुनानें कृष्णाला विचारिलें. ‘ कृष्णा. आज माझ्यावर स्वतः चालून येऊन जण काय गरुडाच्या मुखांत उडी टाकणारा हा सर्प कोण वरें ! ’ तेव्हां कृष्ण म्हणाला. ‘ अर्जुना. तूं धनुष्य धारण करून खांडववनांत अग्नीला संतुष्ट केलेंस, त्या वेळीं हा सर्प अंतरिक्षांत अमून ह्याचा देह ह्याच्या मातेनें गुप्त राखिला होता; हा व ह्याची माता ही एकच समजून तूं ह्याच्या मातेला वधिलेंस, ह्यासाठीं तें वेर आठवून तो आज स्वतःच्या वधाकरितां तुझी खचित् प्रार्थना करीत

आहे ! हा पहा आकाशांतून पतन पावणाऱ्या प्रज्वलित उल्केप्रमाणें तुझ्यावर आला ! ह्यास्तव तूं आतां त्याचा वध कर !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर अर्जुनानें सर्पाकडे वळून मोठ्या क्रोधानें सहा पाजविलेले जलाल बाण त्या सर्पावर टाकिले. तेव्हां आकाशांतून तिरप्या रेषेनें अर्जुनावर चालून येणारा तो सर्प छिन्नभिन्न होऊन भूतलावर मरून पडला ! राजा, ह्याप्रमाणें अर्जुनाच्या हातून नागराजाचा वध झाल्यावर त्या महाशक्तिमान् लोकनायक कृष्णानें आपल्या बाहुबलानें भूतलांतून अर्जुनाचा तो रथ लागलाच पुनः उचलून वर काढिला; परंतु नरवीर कर्णानें तितकीच संधि साधून तिरप्या नजरेनें दहा मयूरपिच्छ जलालबाण अर्जुनावर सोडिले; तेव्हां अर्जुनानें अगदीं नेम धरून बारा तीक्ष्ण वराहकर्ण बाण व सर्पाच्या विषाप्रमाणें, वेगवान् व महाभयंकर असा एक नाराच बाण आकर्ण धनुष्य ओढून कर्णावर टाकिला ! राजा, त्या समयीं तो श्रेष्ठ बाण कर्णाचें चित्तविचित्र कवच विदारून त्याच्या शरीरांत घुसला; आणि त्याचें रक्त प्राशन करून रुधिरांत माखलेल्या पुंमामहित बाहेर पडून भूगह्वरांत प्रविष्ट झाला. तेव्हां त्या बाणप्रहारानें कर्णाला अतिशय क्रोध उत्पन्न झाला—जणू काय काठीनें सर्पासच बडविले असें तेव्हां वाटलें ! नंतर त्यानें घोर विषाप्रमाणें भयंकर बाण तत्काळ अर्जुनावर सोडण्यास प्रारंभ केला ! त्यानें त्या समयीं बारा बाण जनार्दनावर आणि नव्याण्णाव बाण अर्जुनावर सोडिले; आणि पुनः एका घोर बाणानें अर्जुनाचें विदारण करून मोठ्यानें हंसून गर्जना केली ! राजा, कर्णाचें तें हंसणें अर्जुनाला सहन झालें नाहीं आणि त्यानें तत्काळ त्याच्या मर्मस्थळावर नेम धरून शंभर जलाल बाण मारिले; आणि इंद्रानें जसें बळ

दैत्याला विदारिले, तसे त्याने कर्णाला विदारिले ! राजा, नंतर आणखी अर्जुनाने यमाच्या दंडा-प्रमाणे प्राण घेणारे नव्वद् उग्र बाण कर्णावर सोडिले आणि त्यांच्या योगाने विद्ध झालेला तो कुरुवीर वज्रविदारित पर्वताप्रमाणे कंप पावला; व उत्कृष्ट रत्ने, उत्तम हिरे आणि सुवर्ण ह्यांनी अलंकारिलेले त्याचे ते शिरोभूषण आणि अर्जुनाने शरपाताने छेदून टाकिलेली त्याची ती उत्तम कुंडले भूमीवर गळून पडली व मग अर्जुनाने त्याजवर बाणांचा आणखी भडिमार करून त्याचे महामूल्यवान् व उत्तम कारागिरांनी मोठ्या प्रयत्नाने बहुत दिवस खपून बनविलेले ते देदीप्यमान चिखलन क्षणांत छेदून त्याचे तुकडे तुकडे उडविले !

राजा, ह्याप्रमाणे कर्ण हा कवचहीन झाला तेव्हां अर्जुनाने त्याजवर मोठ्या क्रोधाने चार उत्कृष्ट प्रतीचे जळाल बाण सोडिले; आणि मग वात, पित्त, कफ व उ्वर ह्यांनी अत्यंत पीडित झालेल्या रोभ्याप्रमाणे तो कर्ण अतिशय तडफडू लागला; नंतर अर्जुनाने आपल्या त्या महाधनुष्याच्या मंडलांतून अवधानपूर्वक मोठ्या वेगाने जळाल बाणांचा असा अचूक मारा चालविला की, त्याच्या योगे कर्णाची मर्मस्थळें भिन्न होऊन तो अगदी वायाळ झाला ! अशा प्रकारे नानाविध शेर शर मोठ्या त्वेपाने सोडून अर्जुनाने कर्णाला अगदी नव्यशिखांत बाणविद्ध केले, तेव्हां त्याच्या देहांतून एकसारखे रुधिराचे प्रवाह वाहू लागले; आणि ते पाहून, विदीर्ण झालेल्या कावेच्या पर्वतांतून आरक्त उदकच एकमार्गें वाहू पडून आहे असा भास झाला ! नंतर अर्जुनाने आणखी नवीन, बळकट, सरळ चाल करून जाणारे व यमदंडाप्रमाणे प्राणघातक असे पोलादी बाण कर्णाच्या वक्षस्थळावर टाकिले. आणि कार्तिकेयाने जसे कौच पर्वताचे विदारण केले, तसे

त्याने त्यालोकोत्तर वीराच्या हृदयाचे विदारण केले ! त्या समर्थी कर्णाची फार भयंकर अवस्था झाली; त्याची मूठ सुटली, त्याच्या हातांतले ते इंद्रचापतुल्य दिव्य धनुष्य व श्रेष्ठ बाण खाली पडले. आणि तो आपल्या वीरासनावरून घसरून रथांत मूर्च्छित पडला ! राजा, त्या समर्थी अर्जुनाने कर्णाला ठारच मारिले असे; परंतु कर्ण हा अशा प्रकारे विपन्न स्थितीत अमतां त्यास ठार मारणे हे त्या शूर आर्याला प्रशस्त वाटले नाही ! राजा भूतराष्ट्रा, त्या वेळी कृष्णाने अर्जुनाला मोठ्या लग्नाचीने विचारिले, “ अर्जुना, तू वेडा तर नाहीसना ? अरे, शत्रु दुर्बल झाले म्हणजे ज्ञानी लोक केव्हांही त्यांचा नाश करण्याला क्षणभर देखील विलंब लावीत नाहीत ! बाबारे, शत्रूंचा वध करणे तो विशेषकरून ते संकटांत अमतांचे केल्या पाहिजे ! राहाण्याने अशा स्थितीत शत्रूंचा नाश केल्यास त्याजकडून धर्माचरण होऊन शिवाय त्यास कीर्तिही मिळते ! ह्यास्तव, अर्जुना, तुझा बलाढ्य शत्रु जो कर्ण त्याला एकदम वधण्याची त्वरा कर ! बाबारे, तो ताजातवाना झाला म्हणजे पुनः पूर्ववत् तुझ्यावर उडी घालील; म्हणून, इंद्राने जसे नमुचीला बघिले, तसे तू ह्या कुरुवीराला वध ! ” राजा, नंतर अर्जुनाने कृष्णाला ‘ बरे आहे ’ म्हणून म्हटले; आणि तत्काळ जनार्दनाची पूजा करून पूर्वी शंवरामुराला मारणाऱ्या इंद्राने जमा वलीवर बाणांचा भडिमार केला, तसा त्या कर्णावर जळाल बाणांचा भडिमार केला ! त्या समर्थी अर्जुनाने कर्णावर, त्याच्या अर्थावर व त्याच्या मार्गश्यावर वत्सदंत बाणांची अनिशय वृष्टि करून त्यांना अगदी बाणांनीं स्वचून काढिले व मोठ्या आवेशाने सुवर्ण-पुंगव बाण त्रिकडे त्रिकडे सोडून दशदिशा बाणांनीं आच्छादिल्या ! राजा, त्या वेळी वत्सदंत

शरानीं नखशिखांत ओतप्रोत व्याप्त झालेल्या तो भरदार छातीचा कर्ण अतिशयित फुललेल्या अशोक, पलाश किंवा शालमलि वृक्षाप्रमाणे अथवा चंदनकाननाने युक्त अशा पर्वताप्रमाणे दिमूं लागला ! समरभूमीवर कर्णाच्या देहांत त्या समयी इतके बाण रुतले होते की, ज्या-वरील शिखरे व दऱ्या वृक्षांनी अगदी व्याप्त झाल्या आहेत किंवा ज्याच्यावर कर्णकारवृक्षांची राई अत्यंत पुष्पित झालेली आहे, अशा मोठ्या प्रचंड पर्वताप्रमाणे तो दिमत होता ! तथापि इतके झाले तरी कर्णाने फिरून नानाविध बाणांचे लोट अर्जुनावर सोडण्याचा सपाटा चालविलाच होता; आणि त्यामुळे, सायंकाळी सूर्य हा अस्ताचलावर मावळण्यासाठी जात असतां त्याचे विंज जसे दिमते, तसा तो रक्त-बंबाळ कर्ण शररूप किरणांचा मधोवार भडि-मार करीत असतां दिमला ! तेव्हां पुनः कर्णा-र्जुनांचे भयंकर युद्ध मुरू झाले; त्यांत प्रथम कर्णाने कृष्णार्जुनांवर घोर सर्पाप्रमाणे जलाल बाण सोडिले; पण अर्जुनाने नंतर चोहोंकडे इतके जलाल बाण सोडिले की, अर्जुनाच्या त्या बाणांनी कर्णाच्या बाणांचे तुकडे उडवून त्यांचा पर्ण विंजम उडविला !

कर्णाच्या रथाच्या चक्रांचे प्रसन.

राजा, नंतर कर्णाने मोठी छाती करून, खवळलेल्या सर्पाप्रमाणे भयंकर बाण शत्रूंवर सोडिले. त्या समयी त्याने दहा बाण अर्जुनावर व सहा बाण कृष्णावर टाकिले. तेव्हां महामति अर्जुनाने त्या महान् युद्धांत इंद्राच्या वज्रा-प्रमाणे अत्यंत दारुण शब्द करणारा व सर्प-विष किंवा अग्नि ह्यांप्रमाणे प्रखर असा एक पोलादी बाण एका भयंकर प्रचंड अस्त्राचे अभि-मंत्रण करून कर्णावर सोडण्याचे मनांत आणिले; तो कर्णाचा वधसमय प्राप्त झाला असे पाहून प्रत्यक्ष काल अदृश्यरूपाने कर्णाच्या सर्पाप

आला; व त्याने विप्रकोपामुळे आतां कर्णाचा वध होणार हे दर्शविण्याकरितां कर्णाला म्हटले, 'कर्णा, पृथ्वीने तुझ्या रथाचे चाक गिळिले !' नंतर, राजा, महात्म्या भार्गवाने जे अस्त्र कर्णाला दिले होते, ते त्याम आठवेनासे झाले; व तित-क्यांत त्याच्या त्या मृत्युसमयी त्याचा रथ घण-घणाट करीत जात असतां त्याचे डावे चाकही भूमीने गिळिले; व मग समरांगणांत तो सूतपुत्र फारच विह्वल झाला ! राजा, ब्राह्मणशापाने कर्णाच्या रथाचे चक्र भूमीत रुतले तेव्हां तो रथ पार बांधिलेल्या सुपुष्पित वडाच्या किंवा पिंपळा-च्या वृक्षाप्रमाणे कांही भूमीत व कांही वर असा दिमूं लागला; आणि त्याची गति कुंठित होऊन त्याजवर अधिरूढ अमलेल्या वीराला परशु-रामाच्या शापाने त्याजपासून संपादिलेल्या अस्त्रा-चे विस्मरण झाल्यामुळे तोही फार घाबरून गेला ! राजा, इकडे आपण अर्जुनावर जे सर्प-तुल्य भयंकर बाण सोडिले होते, ते सर्व अर्जु-नाने तोडून टाकिले असे जेव्हां कर्णाने पाहिले, तेव्हां त्याच्या मनास फारच विषाद उत्पन्न झाला; आणि त्याच्या मनांत ती सर्व दुःसह आपत्परंपरा उभी राहून भयाने त्याचे चित्त गांगरून गेले ! राजा, नंतर त्याने हातबोटें मोडून निंदापूर्वक असे उद्गार काढिले, "अहा, धर्मवत् पुरुष नेहमी असे सांगत आले की, धार्मिक पुरुषाला धर्म हा निश्चयाने राखितो. बरे, आम्हांविषयी म्हणाल तर आम्ही नित्य आमच्या बुद्धचनुरूप व शक्त्यनुरूप धर्माचरण करण्यास झटत आहो, आणि असे असतांही आम्हां धर्मशील जनांचे धर्म हा रक्षण न करितां आमचे उलट हननच करीत आहे; तेव्हां धर्मापासून सदासर्वकाळ कत्याण होतें असें मला वाटत नाही !" राजा, कर्ण हा असे उद्गार काढीत असतां त्याजवर अर्जुनाने बाणां-चा भडिमार चालविला होताच; त्यामुळे तो

स्वस्थानापामून चलित झाला आणि इकडे रथाचे अश्व व सारथि ह्यांनाही अडवळल्यामुळे हिंसके वसले ! तेव्हां कर्णाची सर्व मर्मस्थळे बाणविद्ध झाली होती, ह्यास्तव त्याच्या अंगी पहिल्या-सारखी शक्ति राहिली नव्हती आणि त्यामुळे तो आपला पुनःपुनः धर्मात्माच दूषणे देत वसला होता ! असे; नंतर कर्णाने हाताच्या ठिकाणी अतिशय घोर असे तीन शर कृष्णाला व सात शर अर्जुनाला मारिले; आणि ते पाहून तत्काळ अर्जुनाने सरळ चालून जाणारे, इंद्राच्या बज्राप्रमाणे अनर्थ करणारे व अग्नीप्रमाणे जाळून टाकणारे असे सतरा अतिशय तीक्ष्ण बाण कर्णावर सोडिले. ते बाण कर्णाच्या देहांत घुसून मोठ्या वेगाने बाहेर आले व भूतलावर पडले. तेव्हां कर्ण अगदी कंपित झाला व त्याने आपल्या अंगी जितकी शक्ति होती तितकी सर्व प्रकट करून मोठ्या स्थिरपणाने ब्रह्मास्त्राचे निमंत्रण केले ! तेव्हां, राजा, कर्णाच्या त्या ब्रह्मास्त्रावर अर्जुनाने ऐंद्रास्त्र योजिले. त्या समयी त्या शत्रुसंहारक वीराने गांडीव, त्याची प्रत्यंचा व बाण ह्यांजवर ऐंद्रास्त्राचे अभिमंत्रण केले; आणि इंद्राप्रमाणे बाणांचा असा भडिमार आरंभिला की, ते महातेजस्वी उग्र बाण एकामागवे कर्णाच्या रथावर आदळू लागले ! परंतु त्या सर्व बाणांचा महारथ कर्णाने उलट बाण मोडून संहार उडविला. तेव्हां कृष्ण अर्जुनाला म्हणाला, 'अर्जुना, राधेयाने ह्या सर्व बाणांचा चुगडा उडविला; ह्यास्तव दुसरे प्रचंड अस्त्र माड.' नंतर, राजा, अर्जुनाने ब्रह्मास्त्राचे सम्यक् अभिमंत्रण करून कर्णावर शरांचा भयंकर वर्षाव चालवून त्यास झांकून काढिले, पण उलट कर्णाने अतिशय जलाल बाण मोडून अर्जुनाची प्रत्यंचाच छेदिली ! मग अर्जुनाने आपल्या गांडीवाला दुसरी, तिसरी, चौथी, पाचवी, सहावी, सातवी, आठवी, नववी, दहावी,

अकरावी अशा एकामागून एक—कर्णाने शतावधि बाण मारून जशजशा त्या प्रत्यंचा तोडिल्या; तसतशा नवीन शंभर प्रत्यंचा लाविल्या. परंतु इतक्या शंभर प्रत्यंचा अर्जुनापाशी असतील असे काही कर्णाला माहीत नव्हते ! राजा, नंतर अर्जुनाने नवी प्रत्यंचा लावून पुनः अस्त्राचे निमंत्रण केले आणि सर्प-तुल्य भयंकर शरांचा कर्णावर भडिमार चालवून त्यास अगदी आच्छादून टाकिले ! राजा, तेव्हां देखील कर्णाने अर्जुनाच्या धनुष्याच्या प्रत्यंचा छेदण्याचे काम चालविलेच होते; परंतु अखेरीस अर्जुनाने इतक्या जलदने बाणवृष्टि आरंभिली की, त्याच्या प्रत्यंचेवर कर्णाची दृष्टि उरत नाहीशी झाली व त्यामुळे मग प्रत्यंचेचे छेदन बंद पडले ! नंतर कर्णाने मोठा चमत्कार करून दाखविला. तो असा की, त्याने अर्जुनाच्या अस्त्राचा प्रतिकार करण्याकरितां दुमरीच असे योजण्याचा क्रम सुरू केला; आणि त्यांत त्याने अर्जुनावर भयंशी केली ! त्या समयी अर्जुन हा कर्णास्त्राने अतिशय पीडित झाल्या असे पाहून कृष्ण त्याला म्हणाला, 'अर्जुना, पुनःपुनः ती ती अस्त्रे सोड आणि कर्णाला मागे हटव.' राजा, नंतर शत्रुसंहारक अर्जुनाने अग्नीमारवा प्रवृत्त व सर्पविपासारखा भयंकर असा एक पोलादी बाण घेऊन त्याजवर एका प्रचंड अस्त्राचे अभिमंत्रण करून तो बाण त्याने कर्णावर सोडण्याचा विचार केला. तो मी मद्यां मांगितल्याप्रमाणे कर्णाच्या रथाचे चाक्र पृथ्वीने गिळिले !

राजा धृतराष्ट्रा, त्या वेळी तो मृतपुत्र तावड-ताव रथांतून खाली उतरला आणि दोन्ही हातांनी ते चक्र उचलून मोठ्या नेटाने वर काढू लागला ! राजा, त्या समयी कर्णाने चक्र गिळून टाकणारी ती पृथ्वी सप्तद्वीप, पर्वत, जल व अरण्ये ह्यांसह वर्तमान चार अंगुले वर

उचलिली, तरी त्याच्या रथाचें तें चक्र वर निघालें नाहीं ! तेव्हां कर्णाला अतिशय क्रोध चढला व त्याच्या नेत्रांतून अश्रुधारा वाहू लागल्या आणि अर्जुन अगदी खवळला आहे असे पाहून तो त्याम म्हणाला, “ हे महाधनुर्धरा पार्या, क्षणभर थांब ! हें भूमीत रनलेलें चक्र मला वर काढ दे ! अर्जुना, दुर्दैवानें माझ्या रथाचें हें डावें चाक्र पृथ्वीत शिरलें आहे हें अवलोकन कर आणि कांहीं वेळ तूं आपले हेतु सिद्धीस नेऊं नको ! वा वीरा, ह्या वेळीं मी अगदी विपन्न अवस्थेंत आहे, तेव्हां जर तूं मजवर बाणक्षेपण करशील, तर तुझें तें वर्तन निघ होईल ! क्षुद्र जनांप्रमाणें दुराचरण करणें तुला योग्य नाहीं ! कौतेया-युद्धकालेमध्ये तुझी गणना विशिष्ट पुरुषांत आहे, म्हणून तुझ्या हातून अधिक प्रशस्त असेच कर्म घडलें पाहिजे ! अर्जुना, धर्मयुद्ध करणारे शूर माधु पुरुष कैसे पिंजारलेल्या. युद्धाम विमुक्त झालेल्या, शरण आलेल्या, शस्त्र टाकून दिलेल्या, याच-नेस उद्युक्त झालेल्या, ज्याला वाप नाहीं अशा, कवचहीन झालेल्या, व आयुष्य गळून किंवा भंगून पडलेल्या वीरावर अथवा त्याप्रमाणेंच ब्राह्मणावर कधीही शस्त्रप्रहार करित नाहीं ! हे पांडवा, सर्व जगांत तूं अत्यंत शूर व धार्मिक आहेस; युद्धाचे धर्म तुला पूर्ण विदित आहेत; श्रुतांचे रहस्य तूं उत्कृष्ट जाणिलें आहेस; तुला दिव्य सत्रांचें उत्तम ज्ञान आहे; आणि कार्त-वीर्यासारखा तूं अनुलवीर्यवान् आहेस ! ह्यामाठी, हे महाभुजा, मी हें चक्र भूमीतून वर उचलून काढीपर्यंत तूं माझ्यावर शरवृष्टि करूं नको ! तूं रथावर अधिष्ठित आहेस व मी भूमीवर मोठ्या संकटांत आहे, इकडे तूं लक्ष दे ! अर्जुना, मी तुला किंवा वामुदेवाला भीत नाहीं. तूं क्षत्रिय असून महान् कुलाचें विवर्धन करणारा आहेस;

ह्यास्तव मी तुला इतकीच विनंति करितों की, क्षणभर तूं मला क्षमा कर ! ”

अध्याय एक्याणवावा.

— ० : —

कर्णाचा वध !

संजय सांगता:—तेव्हां रथावर अधिष्ठित असलेला कृष्ण त्याला म्हणाला, “ कर्णा, आतां ह्या स्थळीं तुला धर्माचें स्मरण होत आहे, हें तरी मोठें भाग्यच होय ! पण, बहुधा नीच पुरुष संकटांत बुडाले म्हणजे दवाला दोष लावितात. ते आपल्या दुष्कर्मांना दोष लावीत नाहींत. वा राधेया, दुर्योधन, दुःशासन, शकुनि व तूं ह्या तुझीं सर्वांनीं एक होऊन एकवत्त्वा द्रौपदीला जेव्हां सभेत आणिले; तेव्हां मात्र तुझ्या हृदयांत धर्माचा उजेड पडला नाहीं ! त्याच-प्रमाणें, कर्णा, कौरवसभेत शकुनिनें जाणूनबुजून अक्षविद्येंत अज्ञान अशा धर्मराजाला कपटानें जिकलें, त्या वेळीं तुझा धर्म कोठें गेला होता ? त्याप्रमाणेंच, कर्णा, वनवासाचीं बारा वर्षे व अज्ञातवासाचें तेरावें वर्ष हीं संपल्यावरही पांडवांचें राज्य पांडवांना तुझी परत दिलें नाहीं, तेव्हां तुझा धर्म कोठें गेला होता ? बरे, दुर्योधनांनं तुझ्या सल्ल्यानें भीमसेनाला विषाक्त चारिलें व सर्प डसविले, तेव्हां तुझा धर्म कोठें गेला होता ? त्याप्रमाणेंच, राधेया, वारणावतांत लाक्षागृहामध्ये पांडव निद्रित असतां त्या लाक्षागृहाला तूं बत्ती लाविलीस, तेव्हां तुझा धर्म कोठें गेला होता ? त्याप्रमाणेंच, कर्णा, रजस्वला द्रौपदी सभेमध्ये दुःशासनाच्या तावडींत सांपडली असतां तूं दांत काढून हंसलास, तेव्हां तुझा धर्म कोठें गेला होता ? त्याप्रमाणेंच, कर्णा, पूर्वीं नीचानीं द्रौपदीला विनाकारण क्लेश दिले आणि ते तूं जवळ असूनही निमूटपणें पाहिलेस, तेव्हां तुझा धर्म कोठें गेला होता ? त्याप्रमाणेंच



३ महाधनुर्धरा पार्था शरणस्य शरणो देवमानसः कथितः प्रकृतः
सत्यं वचनं कथयति तं शरणं कर्णपत्रं कर्णपत्रं

र्णा, कृष्णे. पांडवांचा आतां नाश झाला व शाश्वत नरकांत पडले, ह्यासाठीं तूं आतां सरा पति कर ! असें जेव्हां तूं गजगामिला म्हटलें आणि तिचा धिक्कार केला. म्हां तुझा धर्म कोठें गेला होता ? त्याप्रमाणेंच, र्णा, तूं फिरून शकुनीचा आश्रय करून राज्येभानें पांडवांना घृतासाठीं बोलाविलें, तेव्हां झा धर्म कोठें गेला होता ! त्याप्रमाणेंच, कर्णा, हीं पुष्कळ महारथांनीं एक होऊन रणांगणांत भिमन्वु वाळाला कोंडून ठार मारिलें, तेव्हां झा धर्म कोठें गेला होता ! चावारे, जर ह्या र्माकडे तुझी त्या वेळीं लक्ष दिलें नाही, तर तातां व्यर्थ कंठशोष करण्यांत काय हंशील ! र्णा, आज तूं कितीही धर्माचरण केलें, री तुझी आज जिवंतपणें सुटका व्हावयाची ाही ! पहा—नव राजाच्या पुष्करांनीं घृतांत नकिलें, परंतु त्यांनीं पुनः स्वपराक्रमानें राज्य यश मिळविलें; तसेंच हे सर्व पांडव बाहुलानें व सोमकांच्या साहाय्यानें आपलें राज्य रत मिळविण्यासाठीं लोभ धरून मोठमोठ्या तंत्रना संग्रामांत ठार मारतील; व नित्यधर्मा र पूर्ण भिस्त ठेऊन धार्तराष्ट्रांचा विध्वंस करील आणि आपले मनोरथ मिद्धीम नेतील !”

संजय सांगतो, हे भारता, ह्याप्रमाणें कृष्णाचें भाषण श्रवण करून कर्णानें लाजून मान खाली घातली; आणि तो क्रोधानें दांतओठ चावीत धनुष्य उचलून मोठ्या आवेशानें व शौर्यानें अर्जुनाशीं लढूं लागला ! राजा, त्या समर्थीं वामुदेव हा नरवीर अर्जुनाला म्हणाला, 'हे महाबला, दिव्यास्त्रानेंच कर्णाला ठार मारून टाक !' राजा, कृष्णाचे हे शब्द अर्जुनाला मानवले व त्याला अनिश्चय क्रोध चढला; आणि कृष्ण हा कर्णाला जें कांहीं बोलला होता त्याचें त्यास स्मरण होऊन त्याचा देह मंतापानें नखशिखांत पेटला व त्याच्या सर्व रामरंगानून

क्रोधाच्या अगदीं ज्वाळा निघूं लागल्या ! राजा, त्या समर्थीं अर्जुनाची ती तशी अद्भुत स्थिति अवलोकन करून कर्णानें अर्जुनावर ब्रह्मास्त्र सोडिलें व त्याजवर बाणांचा भडिमार करून पुनः रथानें चाकवर उचलण्याचा यत्न केला ! तेव्हां अर्जुनानेही ब्रह्मास्त्रच सोडून कर्णावर उग्र शरवृष्टि केली आणि कर्णाचें ब्रह्मास्त्र व्यर्थ दवडिलें ! नंतर अर्जुनानें आपणाला प्रिय असें दुमरें आश्रय अस्त्र कर्णावर सोडिलें तेव्हां तें अशीमारखें भडकलें ! तेव्हां कर्णानें त्यावर वारुणास्त्र टाकिलें व त्याचा उपशम केला ! कर्णानें वारुणास्त्राचें अभिमंत्रण केलें असतां जिकडे तिकडे भेवच भेव उत्पन्न झाले व त्यांनीं सर्वत्र अंगार पडून कांहीं एक दिसेनामं झालें; तेव्हां वीरशाली अर्जुनानें लागलेच न गडबडतां वायव्यास्य मोडिलें व राधेय हा पहात अमतां त्यानें उत्पन्न केल्या त्या सर्व भवांची दणादणा करून त्यांम उधळून लाविलें ! नंतर पांडुपुत्राला वधण्याकरितां कर्णानें प्रज्वलित अशा अशीमारखा एक भयंकर शर हातांत घेतला व धनुष्याची पूजा करून तो शर त्या धनुष्याला लाविला; तो, राजा, पर्वत, जल व अरण्य ह्यांमहवर्तमान सर्व पृथ्वी हारूं लागली आणि प्रचंड वाग सुटून जिकडे तिकडे दगडगोटे उडूं लागले व दशदिशा धुळीनें भरून गेल्या ! हे भारता, तेव्हां अंतरिक्षांत देवांमध्ये मोठा हाहाकार उडाला आणि सप्तपुत्रांनीं तो बाण धनुष्याला जोडिला असें पाहानांच पांडवांचा धीर सुटून ते अगदीं घाबरून गेले ! राजा, नंतर कर्णानें इंद्राच्या वज्राप्रमाणें झळाळणाग असा तो जलाल बाण अर्जुनावर सोडिला, तेव्हां तो अर्जुनाचें हृदय विदारून-प्रचंड नाग जमा सळाळत वारूळतां घुमतो तसा—आंत घुसला आणि त्याच्या योगें महात्मा अर्जुन अतिशयित विद्ध होऊन धर-

थर कांपला व त्याच्या हातांतून गांडीव धनुष्य गळून खाली पडलें ! राजा, त्या समर्थी जणू काय धरणीकंप होऊन महान् पर्वतच थरथर हालला असें वाटलें ! ह्याप्रमाणें अर्जुनाची विपन्न अवस्था केल्यावर ती संधि साधून कर्णानें पुनः रथांतून खाली उडी टाकिली व फिरून भूमीत रुतलेलें चाक वर काढण्याचा यत्न आरंभिला ! राजा, त्या वेळीं महाबलवान् कर्णानें मोठ्या जोरानें दोन्ही हातांनीं तें चाक वर उचलण्याचा प्रयत्न केला, पण त्याचें देव प्रतिकूल झाल्यामुळें त्याचा तो प्रयत्न सिद्धीस गेला नाहीं ! इतक्यांत इकडे महात्मा अर्जुन पुनः सावध झाला व त्यानें दुसरा कालदंडच असा एक भयंकर प्रांजलिक बाण हातांत घेतला ! राजा, तेव्हां वामुदेव पुनः अर्जुनाला ह्मणाला, “अर्जुना, हा शत्रु पुनः रथावर आरूढ झाला नाहीं तो त्याचें बाणानें मस्तक उडव ! ” तेव्हां ‘ वरें आहे ’ असें ह्मणून अर्जुनानें कृष्णाच्या सूचनेम मान दिला; व एक प्रज्वलित बाण धारण करून, कर्णाच्या रथाचें चाक भूमीत रुतलेलें आहे तोंच त्याच्या महान् रथाची सूर्याप्रमाणें शुभ्र व देदीप्यमान हस्तिकक्षा व ध्वज हीं तोडून टाकिलीं ! राजा, कर्णाच्या त्या ध्वजाचें काय वर्णन करावें ? ज्याच्यावर हत्तीचें प्रचंड दोरखंड लोंबत होतें, अशा त्या कर्णध्वजावर सुवर्ण, मौक्तिकें, रत्नें व हिरे ह्यांचें शिल्पकलेंत अत्यंत निपुण अशा कारागिरांनीं चित्रविचित्र कोंदणकाम केलें होतें; त्या सुवर्णलंकृत ध्वजाचा घाट मोठा सुंदर अमून, तो जेथें जेथें असेल तेथें तेथें तुझे सैन्य नित्य विजयी व्हावयाचेंच असा अबाधित नियम चाललेला होता; तो वंदनीय ध्वज सन्निध प्राप्त झाला म्हणजे शत्रूंना महान् भीति उत्पन्न होई; आदित्याप्रमाणें देदीप्यमान असा तो ध्वज सर्व जगांत प्रसिद्ध होता;

आणि त्याची कांति भानु किंवा चंद्र ह्यांप्रमाणें रमणीय होती ! राजा, अशा प्रकारचा तो कर्णाचा अद्वितीय ध्वज अर्जुनानें अतिशय धार दिलेल्या सुवर्णपुंज अग्निमुल्य प्रज्वलित क्षुरप्रबाणानें भंग करून पाडिला, तेव्हां त्याजबरोबर कौरवांचें यश, दर्प, त्यांचे प्रियतम उद्दिष्ट हेतु व त्यांचीं कार्ये हीं सर्व भंग होऊन समाप्त झालीं व महाभीतीनें त्यांचीं अंतःकरणें विदीर्ण होऊन जिकडे तिकडे महान् हाहाकार उडाला ! राजा, ह्याप्रमाणें कुरूकुलवातंस अर्जुनानें हां हां ह्मणतां रणांत कर्णाचा ध्वज तोडून पाडिला तेव्हां तुझ्या सैनिकांपैकीं कोणालाही आतां कर्णाला जय मिळेल अशी आशा उरली नाहीं, आणि ते सर्व हताश होतसाते हळहळू लागले नंतर मोठ्या त्वरेनें अर्जुनानें महेंद्राच्या वज्रासारखा किंवा अग्नीच्या दंडासारखा भयंकर व रवीच्या किरणांसारखा तेजस्वी असा एक प्रांजलिक शर बाणभात्यांतून काढिला; आणि तो मर्मस्थळांचा भेद करणारा, रुधिर व मांस ह्यांनीं माखलेला, वैश्वानर किंवा सूर्य ह्यांसारखा प्रखर, महामूल्यवान्, नर, अश्व व गज ह्यांचे प्राण घेणारा, तीन हात लांब असलेला, ज्याला सहा पिसें पुंजस्थानीं लाविलीं होतीं असा, सहस्रनेत्र इंद्राच्या वज्राप्रमाणें बळकट, प्रलयकालच्या अग्नीप्रमाणें आ करून खाऊन टाकण्यास तयार, पिनाक धनुष्य व सुदर्शन चक्र ह्यांप्रमाणें दारुण व प्राण्यांचा समूळ घात करणारा असा बाण-- देवसंघानाही जो दुर्निवार्य, सर्वांना जो नित्य वंदनीय व सुरासुरांनाही जो जिंकणारा अशा त्या महाधनुर्धर महात्म्या अर्जुनानें रणांगणांत मोठ्या आवेशानें उचलिला, असें पाहून सर्व स्थावरजंगम जग थरथर हालूं लागलें आणि ‘ सर्व जगत्सुखी असो ! ’ असे ऋषींनीं मोठ्यानें उद्गार काढिले ! राजा, नंतर त्या गांडीवधन्या अर्जुनानें तो अतुलवीर्यवान् शर धनुष्याला

जोडिला आणि त्याच्यावर महान् अस्त्रांचें अभि-
मंत्रण करून तो आकर्ण ओढिला व आतां
शत्रूवर सोडावयाचा, तों मोठ्या त्वरेनें त्यानें
गांडीव धनुष्याला ह्मटलें, ' बा गांडीवा, महान्
अस्त्राच्या शक्तीनें अभिमंत्रित केलेला हा प्रचंड
बाण शत्रूच्या देहाचें व प्राणांचें हरण करो !
जर मी तपश्चर्या केली असेल, गुरुजनांना
संतोषविलें असेल आणि आप्तेष्टांचा हितबोध
ऐकिला असेल, तर त्या सर्व पुण्याच्या योगानें
सदासर्वकाळ जपून ठेवलेला हा माझा जलाल
शर माझा प्रचंड शत्रु जो कर्ण त्याचा वध करो ! '

राजा धृतराष्ट्रा, असें बोलून धनजयानें तो
घोर बाण कर्णाच्या वधाकरितां त्याजवर
सोडिला आणि अथर्वागिरसी कृत्येप्रमाणें
(प्राणघातक देवतेप्रमाणें) भयंकर व युद्धांत
प्रत्यक्ष मृत्यूलाही दुःसह असा तो बाण अग्नी-
च्या ज्याळेप्रमाणें कर्णावर जात असतां अर्जुन
मोठ्या आनंदानें ह्मणाला कीं, ' ह्या बाणानें
मला विजयी करावें आणि कर्णाला यमसदनीं
पाठवावें ! ' राजा, नंतर तो बाण कर्णाचे प्राण
घेण्याकरितां मोठ्या वेगानें त्याजवर धावून
जात असतां त्याच्या योगें दशदिशा व अंत-
रिक्ष हीं पेटलीं; आणि अखेरीस, महेंद्राच्या
वज्रानें जसें वृत्रामुराचें मस्तक उडविलें, तसें
अर्जुनाच्या त्या बाणानें कर्णाचें मस्तक उड-

राजा, ह्याप्रमाणें महेंद्रपुत्र अर्जुनानें श्रेष्ठ
प्रतीच्या आजलिक बाणावर महास्त्राचें अभि-
मंत्रण करून त्याच्या योगें तिमरे प्रहरी विकर्तन-
पुस्त कर्णाचें मस्तक छेदून टाकिलें ! तेव्हां तें
प्रथम भूतलावर पडलें आणि मग त्याचें तें धड
खालीं कौसळलें ! राजा, प्रातःकालच्या सूर्य-
बिंबाप्रमाणें तेजस्वी आणि शरदृत्तूनील मध्या-
न्हीच्या सूर्याप्रमाणें देदीप्यमान असें तें कर्णाचें
मस्तक रणभूमीवर कौरवसैन्याच्या अग्रभागीं
पतन पावले, तेव्हां जणू काय आरक्तवर्ण सूर्यच

अस्ताचलावरून खालीं पडला असें वाटलें !
राजा, त्या समयीं अत्यंत उदार अशा कर्णा-
च्या त्या उत्तमांगानें कर्णाचा तो नित्य सुख
भोगणारा व अतिशय सुंदर असा देह मोठ्या
कष्टानें सोडिला ! ज्याप्रमाणें एखाद्या धनिक
पुरुषाला सर्व प्रकारच्या संपत्तीनें सुसमृद्ध
असें आपलें प्रिय गृह सोडून देण्यास अवघड
वाटतें, तसें कर्णाच्या मस्तकाला, आपण ज्याच्या
योगें विलास भोगिले असें तें कर्णाचें शरीर
सोडून देतांना फार अवघड वाटलें ! असो.
राजा, प्रतापशाली कर्णाचें मस्तक भूतलावर
पडल्यानंतर, बाणप्रहारांनीं आधींच छिन्नभिन्न
होऊन गेलेलें त्याचें धिप्पाड शरीरही प्राण-
हीन होतसातें रणांगणांत पडलें; आणि ज्या-
प्रमाणें कावेच्या पर्वताचें शिखर वज्रानें हत झालें
असतां खालीं कोसळून त्यांतून आरक्तवर्ण
उदकाचे प्रवाह चालतात, त्याप्रमाणें कर्णाच्या
त्या देहव्रणांतून रुधिराचे प्रवाह एकसारखे चालू
झाले ! राजा, इकडे कर्ण हा धारातीर्थी पडतांच
त्याच्या शरीरांतून एक ज्योति निघाली व ती
अंतरिक्षांत सूर्यामध्ये जाऊन मिळाली, आणि
हा चमत्कार सर्व मानव वीरांनीं रणांगणांत
अवलोकन केला !

ह्याप्रमाणें अर्जुनानें कर्णाचा वध केला असें
पाहातांच पांडवांनीं मोठमोठ्यानें शंख वाज-
विण्यास आरंभ केला ! त्याप्रमाणेंच कृष्णार्जुन
हे मोठ्या प्रसन्न अंतःकरणानें शंखनाद करूं
लागले ! आणि मोमकांनींही कर्णाला समर-
भूमीवर मरून पडलेला पाहून सिंहासारख्या
गर्जना चालविल्या ! राजा, त्या वेळीं पांडव-
सैन्यांत जिकडे तिकडे आनंदानें वाद्यघोष होऊं
लागला; योद्ध्यांनीं हात वर करून वस्त्रें फड-
काविलीं; आणि आनंदानें त्यांचे देह स्फुरण
पावून ते सर्व तत्काळ आपापल्या सैन्यासह
अर्जुनाच्या समीप आले ! राजा, त्या समयीं

अर्जुनाच्या बाणप्रहारांनी कर्णाचा वध होऊन तो भूतलावर मातीत पडला आहे असे जेव्हां कित्येक वीरांनी पाहिले, तेव्हां ते आनंदाने ' बरे झाले ! बरे झाले ! ' असे ओरडत व एकमेकांना मिठ्या मारीत अगदी नाचूच लागले ! असो; राजा, प्रचंड वाऱ्याने जसे पर्वतांचे शिखर कोसळून पडावे, किंवा यज्ञाची समाप्ति झाली म्हणजे जमा अग्नि शांत व्हावा, तसे कर्णाचे ते छिन्न झालेले मस्तक अस्तंगत सूर्यबिंबाप्रमाणे रणांगणांत शोभत होतें ! त्याणि त्याचा नव-शिखांत बाणविद्ध आणि रुधिराघानें परिप्लुत असा तो देह प्रकाशकिरणांनी परिवृत अशा सूर्यबिंबाप्रमाणे झळकत होता ! असो. राजा, ज्या कर्णरूप रवीनें शररूप किरणांनीं पांडवीय सेनेला दग्ध केले, त्याच कर्णरूप भास्करास अखेरीस अर्जुनरूप बलिष्ठ कालानें अस्तंगत करून टाकिले ! राजा, अस्तास जाणारा सूर्य ज्याप्रमाणें प्रभा घेऊन नाहीसा होतो, त्याप्रमाणें अर्जुनानें कर्णावर टाकलेला बाण कर्णाच्या त्या मरणादिवशीं तिसरे प्रहरिं खुशाल कर्णाचें जीवित घेऊन कौरवांकडील सर्व सैन्यासमक्ष नाहीसा झाला ! आणि ह्याप्रमाणें शूर कर्ण रणांत पतन पावल्यावर मद्राधीश शल्य त्याचा भयध्वज रथ घेऊन रणांगणांतून निघून गेला; व बाणप्रहारांनी अत्यंत विद्ध झालेले कौरव भयभीत होत्साते अर्जुनाचा देदीप्यमान ध्वज अवलोकन करीत दूर पळून गेले !

अध्याय व्याण्णवावा.

-:०:-

शल्यार्थे परत येणे.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें कर्णाजुनांचा घनघोर संग्राम होऊन त्यांत कर्णाच्या रथाचें चाक भूमीनें गिळिल्यावर तो पादचारी कर्ण निकरानें युद्ध करीत अत्तता

अर्जुनाच्या हस्ते मरण पावला असें अवलोकन करून, आणि त्याप्रमाणेंच बाणप्रहारांनी कौरवांची सैन्ये नष्ट झालीं असें पाहून, शल्य हा कर्णाचा तो मोडकातोडका व ध्वजरहित रथ घेऊन रणांगणांतून मागे वळला; आणि दुर्योधनाच्या समीप प्राप्त झाला, व त्याने त्यास सर्व वृत्त निवेदन केले ! तेव्हां, राजा, युद्धांत कर्ण पडला आणि हत्ती, घोडे, रथ व नर ह्यांचा भयंकर संहार उडाला असें श्रवण करून दुर्योधनाचे नेत्र अश्रूंनी भरून आले; आणि तो अत्यंत खिन्न होत्साता मोठ्या दैन्याने पुनःपुनः दुःखाचे सुसकारे टाकू लागला ! राजा, अर्जुनाच्या हस्ते कर्ण मरण पावला असें म्हणण्यापेक्षां तो केवळ देवघटनानुसार रणांत पडला असेंच मला वाटते ! कर्णाचा देह रणभूमीवर पतन पावला तेव्हां जणू काय अंतरिक्षांतून रथच यदृच्छेनें भूतलावर पतन पावला असें सर्वांना भासले ! असो; राजा, तो शूर कर्ण नवशिखांत बाणविद्ध होऊन धरणीवर पडला असतां व त्याच्या सर्व गात्रांतून रुधिराचे पाट वाहात असतां बहुत वीरपुरुष त्यास पाहाण्यासाठीं तेथें येऊन त्याजमोवतालीं उभे राहिले ! राजा, त्या समर्थी जे पुरुष तेथें होते, त्यांची मनोवृत्ति भिन्नभिन्न प्रकारची झाली. अर्जुनादिक पांडवीय योद्ध्यांना मोठा आनंद वाटला; भीरुजन अतिशय घाबरले; कौरवांकडील वीर अत्यंत खिन्न झाले; आणि जे केवळ प्रेक्षक होते, त्यांना फार विस्मय वाटला ! सारांश, त्या वेळीं शत्रूंकडील, तुझ्याकडील किंवा उदासीन असे जे पुरुष त्या स्थळीं प्राप्त झाले होते, ते आपापल्या प्रकृत्यनुसार सुखदुःखादिक विकार पावले ! राजा, महावीर्यशाली कर्णाचें कवच, अलंकार, वस्त्रे व आयुधे ह्यांचा विध्वंस उडवून त्यास अर्जुनानें रणांगणांत ठार मारिले, असें जेव्हां कौरवसैन्यांनी ऐकिले, तेव्हां भयान

अरण्यांत म्होरक्या बेल ठार झाला असतां गाईचे कळप जसे हताश होऊन सैरावैरा धांवत सुटतात तशीं तीं कौरवसैन्ये सैरावैरा धावत सुटलीं ! राजा, त्या समयीं भीमानें तर प्रचंड गर्जना करून अंतरिक्ष व पृथ्वी अगदीं दणाणून सोडिली, तो मोठ्या आवेशानें बदाई मारीत नाचू लागला, आणि त्यामुळें आतां भूमंडळ विदीर्ण होणार असें भासून सर्व धार्तराष्ट्र अतिशयित भयभीत झाले ! राजा, त्याप्रमाणेंच त्या वेळीं सोमकांनीं व संजयांनीं शंख वाजविले आणि इतर क्षत्रियांनीं मोठ्या आनंदानें एकमेकांस आलिंगन दिलें ! राजा, सिंहाणें जसा हत्तीचा वध करावा, तसा अर्जुनानें रणांगणांत कर्णाशीं घोर संग्राम करून त्याचा वध केला आणि त्या नरश्रेष्ठानें आपली प्रतिज्ञा सिद्धीस नेऊन कर्णाचें वैर कायमचें संपविलें ! राजा, नंतर मद्राधिप शल्य भयभीत होत्साता भग्नध्वज रथ घेऊन दुर्योधनाच्या समीप आला आणि नेत्रांतून अश्रु ढाळीत त्यानें मोठ्या कष्टानें दुर्योधनाला निवेदन केलें कीं, “ दुर्योधन राजा, तुझ्या सैन्यांतील रथ, गज, अश्व व नर ह्यांचा संहार उडाला ! रणांगणांत तुझ्या सैन्याची जी अवस्था झाली ती पाहून मला केवळ तें यमाचेंच राष्ट्र होय असें वाटलें ! राजा, तुझ्या सैन्यांत पर्वताच्या शिखरांप्रमाणें प्रचंड असे गज, अश्व व नर ह्यांनीं एकमेकांना तुडविल्यामुळें फारच नाश झाला ! राजा, कर्ण व अर्जुन ह्यांचे जसे युद्ध झालें तसे युद्ध आजपर्यंत कधीच झालें नाही ? कर्णानें कृष्णार्जुनांना व त्याचप्रमाणें तुझ्या सर्व शत्रूंना अगदीं ग्रासून टाकिलें; परंतु खचित देव हें पांडवांना अनुकूल झाल्यामुळें त्यानें पांडवांचें संरक्षण केलें व आमचा संहार उडविला ! राजा, तुझा कार्यभाग सिद्धीस नेण्यासाठीं जे वीर तुझ्या बाजूनें लढत होते, त्यांचाही शत्रूंनीं मोठ्या त्वेषानें

वध केला ! राजा, तुझ्या पक्षाचे योद्धे बल, वीर्य, शौर्य, तेज व इतर गुण ह्यांमध्ये यम, कुवेर व इंद्र ह्यांप्रमाणें संपन्न असल्यामुळें अगदीं अवध्य असे होते, तथापि त्या सर्वांना पांडवांनीं रणांगणांत ठार मारिलें ! हा सर्व देवाचा खेळ आहे ! ह्याविषयीं शोक करण्यांत अर्थ नाही ! मनाचा धीर खचू देऊं नको ! नेहमीं जयच मिळेल असा काय भरंवसा आहे ? ” राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें मद्राधीशाचें भाषण श्रवण करून आणि आपल्या हातून जीं जीं दुष्टकृत्ये घडलीं होती तीं तीं मनांत आणून दुर्योधनाला अतिशय खेद वाटला व तो पुनःपुनः दुःखाचे सुसकारे टाकीत मूर्छित पडला !

अध्याय त्र्याणवावा.

—:—

कौरवसैन्याचें पलायन

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, कर्णार्जुनांचा घोर संग्राम होऊन त्यांत दारुण समय प्राप्त झाला, शरवर्षावरूप भयंकर अग्नीनें कुरुसंजयांचें सैन्य दग्ध होऊन पळून जाऊं लागलें. आणि अवेरीस बाणप्रहारानीं त्याचा पूर्ण विध्वंस उडाला, तेव्हां मग त्या सैन्याची अवस्था काय झाली बरें ?

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, त्या वेळीं गज, अश्व व नर ह्यांचा रणभूमीवर जो महान् क्षय झाला, तो सावधान चित्तानें श्रवण कर. कर्णाला ठार मारून अर्जुनानें जेव्हां सिंहासारखी गर्जना आरंभिली, तेव्हां तुझे पुत्र फारच घाबरले आणि तुझ्या सैन्यांनीं एकदम पळ काढिला ! राजा, त्या समयीं तुझ्याकडील क्रोधाताही वीर त्या सैन्यांना आवरून भरण्यास किंवा शौर्यानें पांडवांवर चालून जाण्यास धजला नाही ! त्या वेळीं कौरवसैन्यांचा महान् आधार जो कर्ण तो अर्जुनाच्या हस्ते रणांत पडतांच,

कौरवांकडील योद्ध्यांची, अगाध समुद्रांत तारूंक फुटलें असतां त्यामध्ये बसलेल्या वणिगजनांची जशी अवस्था होते तशी अवस्था झाली; आणि ते जीव घेऊन सरावैरा पळत सुटले ! राजा, सेनानायक कर्ण हा पतन पावल्यावर, शस्त्रप्रहारांनीं घायाळ झालेले कौरववीर फारच भयभीत झाले आणि अगदीं दीन होत्साते 'आतां आम्हांस कोण तारील ! आतां आम्हांस कोण तारील !' असा आक्रोश करीत, सिंहत्रस्त मृगांप्रमाणें, भग्नशृंग वृषभांप्रमाणें किंवा दांत पाडिलेल्या सर्पांप्रमाणें वाट मिळाली तिकडे धूम ठोकून धावूं लागले ! राजा, स्वयसाची अर्जुनांनै पराजित केल्यावर, ज्यांतील महान् महान् वीर रणांत पडले होते व निशित बाणांनीं ज्यांची अगदीं कत्तल होऊन पूर्ण वाताहत झाली होती, तीं तशीं सैन्यें सायंकाळीं परत गोटांत गेली ! राजा, सूतपुत्राच्या वधानंतर तुझ्या पुत्रांची तर फारच दुर्दशा उडाली ! त्यांच्या अंगांतील कवचें फाटून तुटून गेलीं; हातांतील आयुधें गळून पडलीं; भयानें त्यांची धारण पांचावर बसल्यामुळें आपण कोणत्या दिशेस पळत आहों हेंही भान त्यांस उरलें नाहीं; आणि गडबडीनें आपापल्याच सैन्यांचा नाश करीत व परस्परांकडे दीनमुद्रेनें पहात, अहो, खचित अर्जुन माझाच पाठलाग करीत आहे ! अहो, खचित वृकोदर माझ्याच पाठीवर आला ! असें मानून घाबरले व बेशुद्ध होऊन धडाधड पडले ! राजा, मग त्या तुझ्या पुत्रांची व त्यांच्या सैन्यांची जी अवस्था झाली ती काय वर्णावी ! त्यांपैकी कित्येक महारथ गजांवर, कित्येक हयांवर, कित्येक रथांवर आणि कित्येक तर पायदळांतील सैनिकांच्या खांद्यांवर वगरे बसले आणि मोठ्या वेगानें पळून गेले ! राजा, ते योद्धे पळत असतां त्यांची अशी त्रेधा उडाली कीं, त्यांतील

गजांनीं रथांचा, महारथांनीं घोडेस्वारांचा व घोड्यांच्या समुदायांनीं पायदळटोळ्यांचा पायांनीं तुडवून चेंदामेंदा केला ! राजा, हिंसक पशु व चोरटे ह्यांनीं गजबजन गेलेल्या अरण्यांत व्यापारी लोकांच्या वगैरे तांड्याचा आश्रय नाहींसा झाला म्हणजे प्रवासी जनांची जी दुर्धर अवस्था होते, तीच अवस्था कर्णाच्या वधानंतर तुझ्या योद्ध्यांची झाली ! त्या समयीं, राजा, वीरहित झालेले गज किंवा हस्तरहित झालेले नर जसे अगदीं दीन होतात, तसे तुझे वीर झाले; आणि त्या सर्वांना भीतीनें प्रत्येक वस्तूंत अर्जुन दिसूं लागला ! पुढें भीमसेनाच्या भयानें कौरवांकडील वीर पळत असलेले पाहून दुर्योधनानें मोठ्या दुःखानें 'हाय ! हाय !' असे उद्गार काढिले व आपल्या सारथ्याला ह्मटलें, " बा सूता, माझ्या हातांत धनुष्य सज्ज असल्यामुळें भीमसेन माझ्या वाटेस जाणार नाहीं; ह्याकरितां सर्व सैन्यांच्या पिछाडीस माझा रथ सावकाश चालव. बा सारथे, आज भीमसेन जर माझ्याशीं युद्ध करण्यास प्राप्त झाला, तर त्यास मी खचित वधीन. समुद्र कितीही अफाट असला तरी तो जसा सीमेचें अतिक्रमण करूं शकत नाहीं, तसा तो महाधनुर्धर भीमसेन माझें अतिक्रमण करूं शकणार नाहीं ! सूता, आज मी त्या मानी भीमास, त्या कृष्णार्जुनांस व त्याचप्रमाणें दुसऱ्या महान् महान् पांडववीरांस ठार मारीन आणि कर्णाच्या ऋणांतून उतराई होईन ! "

राजा धृतराष्ट्रा, आर्ये वीराला साजेल असें त्या कुरुराज दुर्योधनाचें तें भाषण श्रवण करून सूतानें दुर्योधनाच्या रथाचे ते सुवर्णाचे शृंगार चढविलेले अश्व हळूहळू चालविले; आणि तें पाहून, ज्यामध्ये रथ, अश्व व गज मुळीच नव्हते असें कौरवांचे पंचवीस हजार पायदळ एकदम युद्धाला तोंड देऊन उभे

राहिले ! राजा, त्या समर्थी भीमसेन व धृष्ट-
द्युम्न हे फारच संतापले व त्यांनी चतुरंग
सैन्यानिशी बाणांचा भडिमार करीत एकदम
त्याला वेढा दिला ! राजा, मग दोन्ही दळांचे
भयंकर रणकंदन सुरू झाले ! त्या समर्थी
कौरवांकडील कित्येक वीर भीमसेन व धृष्टद्युम्न
ह्यांची नावे घेऊन त्यांच्याशी लढू लागले;
आणि त्यामुळे भीमसेनास फारच क्रोध चढून
तो रथांतून लागलाच खाली उतरला व हातांत
गदा धारण करून त्याने त्या कौरवसैन्याशी युद्ध
आरंभिले ! राजा, तेव्हां भीमसेन हा रथांतून
खाली उतरला ह्याचें कारण असे की, त्या
समर्थी कौरवांचे पायदळ मात्र त्या भीमसेन-
धृष्टद्युम्नांशी लढत होते, ह्यास्तव पादचारी
होऊन केवळ बाहुबलाने शत्रूंनी युद्ध करावे
हेंच त्या युद्धधर्मज्ञ कुंतीपुत्राला प्रशस्त वाटले !
त्या वेळी भीमसेनाने सुवर्णालंकृत प्रचंड गदेने
दंडपाणि यमाप्रमाणें तुझ्या सर्व योद्ध्यांवर प्रहार
चालविले; परंतु तुझेही ते सर्व सैन्य पराक्रमी
असल्यामुळे जिवाची आशा न धरितां समरां-
गणांत—टोळ जसे अग्नीवर तुटून पडतात तसे—
भीमसेनावर तुटून पडले; आणि मग मोठा घन-
घोर संग्राम माजून बेहोष होऊन झुजत अस-
लेले ते सर्व कौरववीर—प्राणिसमुदाय जसे
यमदंडाने मरण पावतात तसे—एकाएकी भीम-
सेनाच्या गदेने मरण पावले ! राजा, तेव्हां
महाबलवान् भीमसेन श्येय पक्ष्यासारखा अंत-
रिक्षांत गरगर घिरट्या घालू लागला आणि
त्याने गदेचे प्रहार करून तुझे पंचवीस हजार
सैन्य मृत्युमुखी लोटिले ! ह्याप्रमाणें तुझ्या
नरसैन्याचा संहार उडविल्यावर सत्यपराक्रमी
भीमसेन धृष्टद्युम्नाला पुढे करून तेथेंच उभा
राहिला; इतक्यांत कौरवांच्या उर्वरित रथ-
सेनेवर वीर्यशाली अर्जुनाने हल्ला केला आणि
नकुल, सहदेव व महारथ सात्यकि हे तत्काळ

मोठ्या वीरश्रीने व वेगाने शकुनीवर चालून
गेले ! नंतर नकुल, सहदेव व सात्यकि ह्यांनी
जलाल बाणांचा भडिमार करून सौबलाचे बहुत
घोडेस्वार ठार मारिले आणि मग ते मोठ्या
त्वरेने खुद्द सौबलावर धावून जाऊन तेथे मोठा
भयंकर रणसंग्राम मातला ! राजा, इकडे तुझ्या
उर्वरित रथसेनेवर अर्जुनाने तिन्ही लोकांत
प्रख्यात अशा गांडीव धनुष्याचा टणत्कार
करीत हल्ला केला; तेव्हां त्याचा तो श्वेत अश्व
जोडिलेला रथ, त्यावरील कृष्ण सारथि आणि
त्यांत आरूढ असलेला अर्जुन ह्यांस पाहातांच
तुझ्या सैनिकांचे धाबे दणाणले व त्यांनी
तत्काळ पळ काढिला !

याप्रमाणें कर्णाच्या वधानंतर कौरवपांडवांचे
पुनः युद्ध चालू झाले, त्यांत पांचालांचा महा-
रथ महात्मा धृष्टद्युम्न ह्याने बाणांचा भडिमार
करून पंचवीस हजार वीरांना रथहीन केले;
व त्या सर्व पादचारी सैन्याला यमसदनी पाठ-
वून व भीमसेनाला पुढे करून तो रणांगणांत
तत्काळ प्रकट झाला ! राजा, तेव्हां तो शत्रु-
संहारक महाधनुर्धर भाग्यशाली धृष्टद्युम्न, ज्याला
पारव्यांच्या वर्णाप्रमाणें वर्ण असलेले अश्व
जोडिले होते व ज्यावर कांचनाचा ध्वज झळ-
कत होता अशा रथांत आरूढ होऊन समरांग-
णांत प्राप्त झाला असे पाहातांच तुझे सैन्य पुनः
भ्याले व पळत सुटले ! राजा, इकडे दोघे
माद्रीपुत्र सात्यकीसह सौबल शकुनीशी लढत
होते, त्यांस आणखी चेकितान, शिखंडी व
द्रौपदीचे पुत्र हे जाऊन मिळाले; आणि मग त्या
सर्वांनी तुझ्या प्रचंड सैन्याचे हनन करून
आपले शंख वाजविले; व उरलेसुरले जे तुझे
सैन्य युद्धविमुख होऊन पळून जाऊं लागले,
त्यांचा, चवताळलेल्या बेलांचा पाठलाग जसे
दुसरे बैल करितात तसा, त्यांनी पाठलाग
केला ! राजा, ह्याहीउपर जे तुझे रथसैन्य

अवशिष्ट राहिले होते, त्यावर महाबलिष्ठ सव्यसाची अर्जुनाने मोठ्या क्रोधाने चाल केली आणि त्यावर गांडीव धनुष्याने शरांचा एकदम भडिमार चालविला ! त्या समयी जिकडे तिकडे अंधःकार पडला; आणि त्यामुळे, आधीच घुळीने व्यास झालेल्या त्या महीतलावर कांही-एक दिसेनासे झाले ! राजा, तेव्हां तुझ्या पक्षाचे सर्व योद्धे घाबरले व ज्यांना जिकडल्या मार्ग सांपडला तिकडे ते पळून गेले ! ह्याप्रमाणे कौरवसैन्याचा अगदी मोड झाला तेव्हां तुझा पुत्र दुर्योधन याने जे शत्रु आपल्यावर चालून आले होते त्यांवर एकदम हल्ला केला आणि त्याने इतर पांडवांस-बलीने जसे देवांना तसे-युद्धार्थ आह्वान केले ! नंतर ते सर्व पांडववीर एकत्र जमून मोठ्याने गर्जना करित दुर्योधनावर धावून आले आणि मग तेथे दोन्ही सैन्यांचा तुंबळ संग्राम माजला ! राजा, त्या समयी पांडवांकडील वीरांनी वारंवार कारवांची निंदा करित त्यांजवर नानाविध शस्त्रास्त्रांचा मारा चालविला होता; आणि दुर्योधनही मोठ्या धैर्याने रणांगणांत त्यांजवर जलाल शरांचा भडिमार करित होता ! त्या वेळीं दुर्योधनाने पांडवांच्या सैन्याशी सर्वथा घोर युद्ध करून त्यांस अगदी जर्जर केले व मोठ्या क्रोधाने त्यांपैकी शतावधि व सहस्रावधि वीर ठार मारिले ! राजा, त्या वेळीं मला मोठा अद्भुत चमत्कार दिसला तो हा कीं, तुझा पुत्र एकटा असून, त्या सर्व एकत्र जमून आलेल्या पांडुसैन्याशी लढत होता ! त्या समयी राजा, दुर्योधनाने आपल्या सैन्याची फारच शोचनीय अवस्था अवलोकन करून व ते अगदी पळ काढण्याच्या बेतांत आहे असे पाहून त्यास धांववून धरिले; व तो महासमयज्ञ कुरुवीर त्यास वीरश्री येण्यासाठीं म्हणाला, “ वीरहो, मला असे एकही स्थळ दिसत नाही कीं, जेथे तुझी भयभीत होतसाते पळून गेल्याने

पांडवांपासून तुमची सुटका होईल ! ह्यासाठी तुम्ही पळून जावे ह्यांत कोणता लाभ ? बाबांनो, अशा ह्या प्रसंगी तुम्ही दूरवर दृष्टि घ्या ! पहा-- पांडवांचे सैन्य अगदी धोड आहे व कृष्णाजुन तर शरप्रहारांनी अगदी घायाळ झाले आहेत ! ह्यासाठी मी आज सर्व पांडवांना वधून निश्चयाने जय मिळवीन ! बाबांनो, जर का आतां तुम्ही भग्न होऊन पळ काढाल, तर पांडवांचा तुम्ही अपराध केला असल्यामुळे पांडव तुमचा पाठलाग करून तुम्हांस कधीही वधिल्याशिवाय राहाणार नाहीत ! वीरहो, आपल्यासारख्या क्षत्रियांना रणांत मरणे हे श्रेयस्करच होय ! बाबांनो, क्षात्रधर्माने युद्ध करणाऱ्या वीरांना संग्रामांत मृत्यू येणे हे सुखावहच आहे ! कारण, जो रणांत देह ठेवितो त्याला दुःखाचा अनुभव प्राप्त होत नाही; इतकेंच नव्हे, तर तो मेल्यानंतर शाश्वत सुख भोगितो ! ह्या स्थळीं विद्यमान असलेल्या सर्व योद्ध्यांनो, माझे भाषण सावधान श्रवण करा ! अहो, जर यम हा सर्वासच मारितो, त्यास शूराची पर्वा नाही व भिड्याचीही नाही, तर मग माझ्यासारख्या क्षात्रधर्मी पुरुषांनी युद्ध करून मरावे हाच मार्ग हिताचा नव्हे काय ? अहो, असा कोण मूर्ख असेल कीं, त्याला अशा वेळीं जीव घेऊन पळून जाणे हेच श्रेयस्कर वाटेले ? अहो, पळून जाऊन त्या क्रुद्ध भीमसेनाच्या कचाटीत सांपडण्यापेक्षा वाडवडिलांनीं जो धर्म घालून दिला आहे त्याचें परिपालन करणे हेच उत्तम ! बाबांनो, क्षत्रियाला पलायन करण्यापासून फार घोर पातक लागते; इतकें भयंकर पातक त्याला दुसऱ्या कोणत्याही दुराचरणापासून लागत नाही ! कौरवहो, फार कशाला, युद्धधर्मापेक्षा अधिक श्रेयस्कर असा स्वर्गप्राप्तीचा दुसरा मार्गच नाही, हे तुम्ही पकें लक्षांत ठेवा ! ह्यासाठी, वीरांनो, आतां विलंब न

करितां धारातीर्थीं देह ठेवा व तत्काळ स्वर्ग-
सुख भोगा ! ”

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, तुझा
पुत्र ह्या प्रकारें उत्तेजनपर भाषण करित
असतांही, शरप्रहारांनीं अतिशयित घायाळ
झालेले ते सर्व सैनिक तिकडे लक्ष न देतां
चारी दिशांस पळून गेले !

अध्याय चौऱ्याऱ्याणवावा.

—:०:—

रणभूमीचें वर्णन.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, कर्णा-
च्या वधानंतर कौरवांचें अवशिष्ट सैन्य रणां-
गणांतून पळून जाऊं लागलें, तेव्हां पुनः
युद्धकरितां त्यांचें मन वळविण्यासाठीं तुझा
पुत्र दुर्योधन ह्यानें जो प्रयत्न केला तो पाहून
मद्राधिप शल्य भीतीनें अगदीं गांगरून गेला !
आणि तो दुर्योधनाशीं असें बोलला.

शल्य म्हणाला:—दुर्योधना, हीं रणभूमि
कशी भयंकर दिसत आहे तीं पहा ! हा पहा
येथें गज, अश्व व नर ह्यांचा कसा अगदीं
खच पडला आहे ! गंडस्थळांतून सदीदीत मद
गाळणोर पर्वतप्राय हत्ती येथें समरभूमीवर
जिकडे तिकडे बाणप्रहारांनीं छिन्नभिन्न होत्साते
किती पडले आहेत ते पहा ! त्यांपैकीं कित्येक
दुःसह शरवेदनांनीं तडफडत आहेत व कित्ये-
कांनीं प्राण सोडिले आहेत ! त्यांच्या शरीरां-
वरील चिखलें, आयुधें, ढाली व खड्डें हीं
इतस्ततः विकीर्ण झाल्यामुळें जणू काय प्रचंड
पर्वत वज्रप्रहारांनीं भिन्न होऊन त्यांजवरील
पाषाण, महाद्रुम व वनस्पति हीं चोहोंकडे
विखरलीं आहेत ! आणि त्याप्रमाणेंच ह्या पहा
त्या हत्तींच्या देहांवरील घंटा, अंकुश, तोमरें,
ध्वज व सुवर्णाच्या जाळ्या इकडे तिकडे पस-
रल्या असून, त्यांच्या देहांवर शरानीं ज्या

जखमा झाल्या आहेत, त्यांतून एकसारखे
रुधिराचे पाट वाहात आहेत ! राजा दुर्योधना,
तशीच ह्या अश्व्यांची स्थिति अवलोकन कर !
हे पहा कित्येक अश्व किती आर्त होऊन घापा
टाकीत आहेत व रक्त ओकत आहेत ! कित्येक
गरगरां डोळे फिरवीत किती दीन स्वरांनें ओरडत
आहेत ! कित्येक क्षुब्ध होऊन जमिनीचा चावा
घेत आहेत ! आणि कित्येक फारच आर्त
शब्द करित आहेत ! त्याप्रमाणेंच, राजा,
गज व वाजी ह्यांजवरून बलात्काराने खालीं
पाडिलेल्या ह्या वीरसमुदायांकडे दृष्टि टाक !
हे पहा त्यांपैकीं कित्येक मृत झाले आहेत व
कित्येकांच्या कंठांत प्राण आले आहेत ! राजा,
ह्या समरभूमीवर रथ, गज, अश्व व नर ह्यांचा
जो चुराडा झाला आहे, व त्यांत कित्येकांच्या
देहांत जी धुगधुगी उरली आहे, त्या सर्वांचा
विचार केला असतां हीं भयंकर रणभूमि ह्याजे
केवळ वेतरणीच होय असा भास होतो ! त्या-
प्रमाणेंच, राजा, रणभूमीच्या ह्या दुसऱ्याभागीं
हत्तींची कत्तल उडून त्यांच्या प्रचंड शुंडा व पुष्ट
अर्शा दुसरीं गात्रें विखरली आहेत तीं पहा !
तसेच येथें कित्येक हत्ती थरथरत पडले आहेत
तेही पहा ! त्यांचे दांत मोडले असून त्यांच्या
तोंडांतून रक्ताचे पाट वहात आहेत व ते अत्यंत
आर्त स्वरांनें गर्जना करित आहेत ! तसेच येथें
महारथांचे समूह किती तरी नष्ट झाले आहेत,
ते अवलोकन कर ! त्यांच्या रथांचीं चक्रे,
धुरा व जोखडें बाणांनीं भग्न झालीं असून
त्यांचे सारथि मरून पडले आहेत ! त्या रथां-
वरील ध्वजपताका व बाणभाते हीं समरभूमीवर
पसरलीं असून हे सर्व महारथसुवर्णाच्या जालां-
नीं परिवेष्टित होत्साते अतिशय विद्ध होऊन
सर्वत्र पडल्यामुळें सर्व महीतल जणू काय मेघ-
मंडळानेंच आच्छादित झालें आहे असें दिसतें !
राजा, ह्या ठिकाणीं पतम पावलेल्या विजयक.

शील गजयोद्ध्यांच्या, रथयोद्ध्यांच्या, अश्व-
योद्ध्यांच्या व पदातीच्या देहांवरील चिलखते,
आभरणें, वस्त्रें व आयुधें हीं नष्ट झाल्यामुळे
रणांगणांत अभ्रभागीं पडलेले हे वीर जणू काय
विघ्नविलेले निखारेच होत असें भासतें ! तसेंच,
राजा, येथें हे शरप्रहारांनीं विद्ध झालेले सह-
स्त्रावधि महान् महान् योद्धे रणांगणांत पडले
असून इतस्ततः अवलोकन करीत आहेत त्यां-
जकडे नजर टाक ! जणू काय हे रणभूमीवर
रात्रीच्या समयीं अंतरिक्षांतून ग्रहनक्षत्रादिक
देदीप्यमान तेजोगोलपतन पावले असून त्यांच्या
योगें हें महीतल तळपतच आहे असा भास होतो !

राजा, कर्णार्जुनांनीं बाणांचा भडिमार करून
कौरव व संजय ह्यांचे जे महान् महान् वीर हस्त-
पादादिक अवयव तोडून समरांगणांत मूर्च्छित
पाडिले, त्यांपैकीं कित्येकजण पुनः सावध
होत आहेत ते पहा ! जणू काय विघ्नविलेल्या
इंगळांनीं पुनः पेटच घेतल्याप्रमाणें ते दिसत
आहेत ! ह्या स्थळीं राजा, ज्याप्रमाणें प्रचंड
सर्प खालीं मान करून वारळांत प्रवेश करितात,
त्याप्रमाणें कर्णार्जुनांच्या हस्तांतून सुटलेले बाण
हत्ती, घोडे व मनुष्ये ह्यांचे देह विदारण करून
व त्यांचे तत्काळ प्राण घेऊन भूगह्वरांत प्रविष्ट
झाले ! राजा, येथें समरांगणांत कर्णार्जुनांच्या
बाणप्रहारांनीं पतन पावलेलीं मनुष्ये, अश्व,
गज, आणि मोडून व चूर्ण होऊन पडलेले रथ
ह्यांच्या योगें ह्या भूतलाचा पृष्ठभाग स्पष्ट दिसत
सुद्धां नाही ! राजा, हे पहा येथें किती तरी सु-
व्यवस्थित रथ मोडून पडले आहेत ! कर्णार्जुनांनीं
स्यांजवर भयंकर बाण सोडून-त्यांवर उत्कृष्ट
आयुधें, ध्वजपताका व इतर सर्व सामग्री उत्तम
असतांही स्यांजवरील योद्ध्यांना वधिले व
त्यांचे तुकडे उडविले ! हे पहा त्यांवरील सारथि
मरून पडले आहेत, हीं पहा त्यांचीं बंधनें
तुटलीं आहेत, हीं पहा त्यांचीं बाके, कणे,

जोखडे व त्रिवेणु हीं भंगलीं आहेत, हीं पहा
त्यांवरील आयुधें गळलीं आहेत, ह्या पहा
त्यांवरील उपयुक्त जिनसा नाहीतशा झाल्या
आहेत, हे पहा त्यांचे तुंबे मोडून गेले आहेत,
हे पहा बाणभाते व रज्जु तुटले आहेत, आणि
हीं पहा त्या रथांतील रत्नखचित आसनें भंग
झालीं आहेत ! राजा, अशा ह्या रथांनीं आच्छा-
दित असलेली ही रणभूमि पाहून जणू काय
शरत्कालीन मेघसमुदायांनीं अंतरिक्षच अदृश्य
केलें आहे असें भासतें ! त्याप्रमाणेंच, राजा,
ज्यांवर शस्त्रास्त्रादिकांची सामग्री यथास्थित सिद्ध
आहे, अशा ह्या सुव्यवस्थित राजरथांकडे पहा !
ह्यांस महावेगवान् अश्व लाविलेले असून त्यां-
तील राजे धारातीर्थीं पतन पावल्यामुळे त्यांचे
अश्व बेफाम होऊन रथांना घेऊन उघळत
चालले आहेत ! त्याप्रमाणेंच हे पहा नर, रथ,
अश्व व गज ह्यांचे समुदाय एकसारखे जलदीन
पळत आहेत आणि त्यामुळे एकंदर सैन्याची
मोठी दुर्दशा उडाली आहे ! राजा, तसेच रणां-
गणांत पडलेले हे सुवर्णालंकृत पट्टे, तशाच धार
दिलेल्या कुऱ्हाडी, जलाल शूल, मुसळें, मुद्गर,
झगझगीत नग्न खड्गें, उत्तम सुवर्णाचे पत्रे बसवि-
लेल्या गदा, धनुष्ये, सुवर्णाचीं बाहुभूषणें,
सुवर्णपुंख बाण, देदीप्यमान ऋष्टि, विमल व
विकोश प्राप्त, सुवर्णासारखे लखलखणारे दंड,
छत्रें, पंखे, फुटलेले व गळलेले शंख, नानाविध
हार, झुली, ध्वज, पताका, वस्त्रें, आभरणें,
किरीट, शुभ्र मुकुट, माला, इतस्ततः पडलेलीं
चामरें, मोती व पोंवळीं ह्यांचीं तेजस्वी पेंडीं,
शिरपेंच, दंडांतलीं कडीं, श्रेष्ठ बाहुभूषणें,
गेळ्यांतल्या पुतळ्यांच्या माळा, सोन्याचा सर,
उत्तम रत्नें, हिऱ्यामोत्यांच्या जडावाचे नग
आणि लहानमोठीं रत्नें किती पडलीं आहेत
पहा ! सारांश, राजा, ह्याप्रमाणेंच नानाविध
वस्तु, सुखाल अत्यंत उचित अशीं गात्रें, चंद्र-

तुल्य मुखांनी युक्त अशीं मस्तकें, देह, भोग, दास, दासी व मनोहर विलास हीं सर्व सोडून, आपली धर्मनिष्ठा गाजवून आणि शुद्ध यश जोडून बहुत योद्धे हां हां म्हणतां स्वर्गलोकीं चालते झाले ! ह्यास्तव, राजा दुर्योधना, आतां जे कोणी उर्वरित वीर युद्धविमुख होत्साते रणांगणांतून निघून जात आहेत, त्यांना जाऊं दे आणि तूही माघारा फिरून शिबिरास चल ! बाबा, हा पहा सूर्य अगदीं अस्तास गेला ! ह्या सर्व अनर्थांचें कारण तूंचे !

राजा धृतराष्ट्रा, दुर्योधनाला इतकें बोलून शोकानें व्याप्त झालेला शल्य स्तव्य राहिला, तों दुर्योधनाचें दुःख अनावर वाढून त्यानें 'हे कर्णा ! हे कर्णा !' असा एकच आक्रोश आरंभिला; आणि अखेरीस तो नेत्रांवाटे अतिशय अश्रु ढाळीत बेशुद्ध पडला ! राजा, तेव्हां अश्रुत्थामा आदिकरून सर्व योद्धे दुर्योधनासमीप गेले आणि त्यांनीं त्याला पुनःपुनः आश्वासन दिलें ! राजा, ह्या समर्थीं पांडुपुत्र अर्जुन हा समरभूमीवर होताच; ह्यास्तव त्याचा तो अतितेजःपुंज महान् ध्वज आपल्याचकडे येत आहे कीं काय, हे पाहाण्यासाठीं त्यांचें लक्ष पुनःपुनः त्याचकडे लागलेंच होतें; आणि शिवाय त्यांनीं रणभूमीवर नर, गज व अश्व ह्यांच्या रुधिराचा कर्दम माजलेला जेव्हां पाहिला, तेव्हां तीं जणू काय सर्वदेहभर भरजरीचीं लाल वस्त्रें व आरक्त पुष्पमाळा धारण करून आपल्या दिव्य कांतीनें झळकणारी कोणी स्त्रीच होय असें त्यांस भासलें ! राजा, ह्याप्रमाणें रुधिराच्या ओघामुळें त्या रणभूमीचें स्वरूप आच्छन्न झालेलें जेव्हां त्या कौरववीरांनीं पाहिलें, तेव्हां त्या अतिशय रौद्रसमर्थी, ते सर्व वीर जरी रणांगणांत देह ठेवण्याचा निश्चय करून स्वर्गलोकीं जाण्यास सिद्ध झाले होते तरी त्यांची तेथें उभें राहा-

ण्याची छाती होईना आणि कर्णाच्या वधानें शोकग्रस्त होतासोत " हे कर्णा ! हे कर्णा ! " असा आक्रोश करीत व सायंकाळीं आरक्त सूर्यबिंबाचें अवलोकन करीत मोठ्या त्वरेनें ते आपल्या शिबिरांत निघून गेले ! असो; राजा, इकडे गांडीव धनुष्यापासून सुटलेले कितीएक सुवर्णपुंख निशित बाण कर्णाच्या देहांत घुसून त्याच्या देहाचें विदारण करून बाहेर पडून निघून गेले; तेव्हां त्यांचे पुंख रुधिरांत माखलें होते आणि कितीएक देदीप्यमान बाण त्याच्या त्या कांतिमान देहांत तसेच रतून राहिल्यामुळें जणू काय तो सहस्ररश्मि सूर्यच होय असें भासत होतें ! राजा, कर्ण हा सूर्याचा पुत्र असून शिवाय तो महान् सूर्योपासक होता; ह्यासाठीं रणनदीमध्ये वीरशोणितोदकांत स्नान केलेल्या त्या कर्णाच्या शवाला भक्तानुकंपी भगवान् आरक्तवर्ण सूर्य करस्पर्श करून पुत्रमरणावहल स्वतः स्नान करण्यासाठीं महान् समुद्राप्रत जात आहे असें जाणून आपणही आतां येथे राहाणें हें उचित नव्हे असें देव व ऋषि ह्यांच्या समुदायांनीं ठरविलें आणि ते आपआपल्या स्थानीं निघून गेले ! आणि मग इतर जनही आपल्या इच्छेनुरूप अंतरिक्षांत किंवा भूप्रदेशीं चालते झाले ! राजा, ह्याप्रमाणें कुरुपांडवांकडील प्रधान वीर जे कर्णाजून त्याचें तें अद्भुत व घोर युद्ध पाहून सर्व जनांना मोठा विस्मय वाटला व ते त्याची प्रशंसा करीत निघून गेले !

इकडे रणांगणांत शहरप्रहारांनीं कर्णाच्या चिलखताचें विदारण होऊन त्याच्या देहांतून जे रुधिराचे लोट चालले होते त्यांनीं त्याचीं वस्त्रें आरक्त होऊन तो अगदीं नक्कशिखांत लाल दिसत होता ! जरी त्या समर्थीं त्याच्या कुडींत प्राण उरला नव्हता, तरी त्याच्या देदीप्यमान कांतीनें त्याम अजून मोडिलें

नव्हते! अद्यापि तो शूर वीर मुतस सुवर्णाप्रमाणें तेजस्वी आणि सूर्यकिंवा अग्नि ह्यांप्रमाणें दीप्तिमान् दिमत अमल्यामुळें जिवंतच आहे, असें सर्व प्राण्यांस वाटत होतें! राजा, सिंहाला पाहून जशी मृगांची त्रेधा उडते, तशी त्या हनवीराच्या प्रेतालाही पाहून सर्व योद्ध्यांची त्रेधा उडत होती! राजा, तो पुरुषशार्दूल गत-प्राण होऊन पडला असतांही तो जीवमान आहे असेंच सर्वांना भासलें; कारण, त्या महारणधुरंधराच्या देहाला कोणतीच विकृति अद्यापि प्राप्त झाली नव्हती! राजा, रणभूमीवर शयन केलेल्या त्या विकर्तनपुत्राचा वेष मोठा सुंदर असून त्याच्या मानेवर मनोहर केश-कलपांनी युक्त असे रम्य मस्तक विराजत होतें आणि त्यामुळें त्याच्या मुखाची प्रभा पूर्ण-चंद्राप्रमाणें इतस्ततः फांकली होती! राजा, त्याप्रमाणेंच त्याच्या देहावर नानाविध अलंकार शोभत असून तप्तसुवर्णाप्रमाणें तळपणारी अंगदें बाहुप्रदेशीं झळकत होती! अशा प्रकारचा तो रणांत पडलेला कर्णदेह अवलोकन करून, जणू काय शाखाप्रशाखांसह महान् वृक्षच भूतलावर पतन पावला आहे असें वाटलें! आणि, राजा, कर्णाच्या त्या दिव्य देहावर उत्कृष्ट सुवर्णाची कांति झळाळत असल्यामुळें जणू काय अग्नीच्या ज्वाळाच चालल्या आहेत असें भासत होतें! असो; राजा, अखेरीस अर्जुनानें त्या कर्णरूप प्रखर अग्नीवर शररूप जलवृष्टि करून त्याचा उपशम केला आणि त्यास परम गति प्राप्त करून दिली! राजा, कर्णाचा प्रताप काय वर्णावा? त्यानें रणांगणांत शत्रूंशीं घोर युद्ध केलें आणि मोठें उज्वल यश मिळविलें! त्यानें बाणांचा भडिमार चालवून दशदिशा अगदीं प्रतप्त केल्या, पण अखेरीस अर्जुनाच्या दिव्य शौर्यापुढें त्याचें कांहीएक न चालून त्यास पुत्रा-महवर्तमान धारातीर्थीं पडावें लागलें! राजा, त्या

लोकोत्तर कुरुवीरानें पांडवांना व सर्व पांचालांना अख्खतेजानें अगदीं 'त्राहि भगवन्!' करून सोडिलें, शत्रूंवर जलाल बाणांचा पाऊस पाडून त्यांचा घोर संहार उडविला, आणि श्रीमान् सूर्याप्रमाणें सर्व जगत् तापविलें; परंतु शेवटीं आपल्या वाहनामुद्धां व पुत्रामुद्धां तो रणशय्येवर निद्रित झाला! राजा, कर्णाच्या दातृत्वाचें किती तरी वर्णन करावें! ज्याप्रमाणें कल्पवृक्षाचा नाश झाला असतां पक्षिसमुदायांचा महान् आश्रय नाहीसा होतो, त्याप्रमाणें कर्णाच्या नाशानें याचकांचा महान् आश्रय नाहीसा झाला! राजा, कर्णाकडे कोणीही याचना करो, त्याला तो कधीं 'नाहीं' असें न म्हणतां 'देतो' असेंच म्हणे! थोर लोक त्याला नेहमीं भला म्हणूनच म्हणत! त्या महात्म्यानें आपलीं सर्व संपत्ति ब्राह्मणांच्या हवाली केली होती! फार कशाला, तो ब्राह्मणांना आपलें जीवित सुद्धां देण्यास तयार असे! तो महान् योद्धा सदासर्वकाळ स्त्रियांना प्रिय असून महान् दाता होता! असा तो लोकोत्तर पुरुष अर्जुनाच्या अस्त्राग्नीनें दग्ध होत्साता परलोकास गेला! राजा धृतराष्ट्र, तुझा पुत्र दुर्योधन ह्यानें कर्णाच्या आश्रयावर सर्व भिस्त ठेऊन पांडवांशीं हासर्व कलह केला, पण अखेरीस तो प्रतापशाली वीर स्वर्गास गेल्यामुळें त्याच्याबरोबर तुझ्या पुत्रांची सुखाशा, जयाशा व आधार हीं सर्व अस्तंगत झालीं! राजा, कर्ण रणांगणांत पडतांच नद्या स्तब्ध होऊन वाहतनाशा झाल्या, सूर्य मावळला, सोमपुत्र बुध ग्रह ह्याचें अग्नीप्रमाणें किंवा सूर्याप्रमाणें प्रखर तेज होऊन तो तिर्यग्गतीनें गमन करूं लागला, अंतरिक्ष अगदीं फाटलें, पृथ्वी मोठ्यानें गर्जू लागली, सोसाट्याचे तुफानवारे चालू झाले, सर्व दिशा धुरानें व्याप्त होऊन पेटल्या, महासागर खवळून भयंकर

घोष करूं लागले, काननांसहित पर्वत कंपाय-
मान झाले, सर्व प्राण्यांना विलक्षण भीति
उत्पन्न झाली, बृहस्पति हा रोहिणी नक्षत्राच्या
समीप येऊन अर्क किंवा चंद्र ह्याप्रमाणे तेज
टाकूं लागला, अंतरिक्ष अंधःकाराने भरलें, पृथ्वी
थरथरूं लागली, अग्नीप्रमाणे पेटलेल्या उल्का
खाली कोसळूं लागल्या, आणि राक्षस व इतर
रात्रिचर ह्यांस मोठा आनंद झाला ! राजा, ज्या
वेळी चंद्रप्रकाशाप्रमाणे उज्वलित असें कर्ण-
शिर अर्जुनानें क्षुर बाणानें तोडून पाडिलें,
त्या वेळी अंतरिक्षांत एकाएकी देवांमध्ये देखील
हाहाःकार उडाला ! राजा, रणांगणांत देव,
गंधर्व व मनुष्ये ह्या सर्वांना जो अत्यंत प्रशंस-
नीय, अशा त्या कर्णाला जेव्हां अर्जुनानें
वधिलें, तेव्हां वृत्रासुराला वधिल्यावर इंद्राला
जसें लोकोत्तर तेज चढलें, तसें त्या पांडु-
वीराला तेज चढलें ! नंतर, राजा, मेघ-
समुदायाप्रमाणे गंभीर ध्वनि करणाऱ्या,
शरदृप्तंतल्या मध्याह्नीच्या दिवाकराप्रमाणे
देदीप्यमान पताकांनी शोभणाऱ्या, भयंकर
शब्द करणाऱ्या ध्वजानें युक्त, हिम, चंद्र, शंख
किंवा स्फटिक ह्याप्रमाणे शुभ्र आणि महेंद्राच्या
अश्वप्रमाणे अश्व जोडिलेल्या रथांत अधिष्ठित
असलेले ते महेंद्रासारखे प्रतापवान्, आणि सुवर्ण,
मौक्तिकें, रत्ने, हिरे व प्रवाळ ह्यांच्या अलं-
कारांनी विराजमान असे अग्नि-दिवाकरांसारखे
तेजःपुंज नरवीर पुरुषश्रेष्ठ कृष्णार्जुन मोठ्या
वेगानें रणांगणांतून जाऊं लागले, तेव्हां जणू
काय ते महाशूर विष्णुवासवच एका रथांत
आरूढ अमून झळाळत आहेत असें सर्वास
वाटलें ! राजा, त्या समयी अर्जुनानें मोठ्या
त्वेषानें गांडीवाच्या प्रत्येचेचा टणत्कार, टाळ्यां-
चा गजर व बाणांचा सणसणाट ह्यांनी शत्रूंना
अगदी कलाहीन केले; आणि मग ते गरुडध्वज
व कपिध्वज अमितप्रभाव कृष्णार्जुन सुवर्णाच्या

जाळ्यांनी परिवृत होत्साते मोठमोठ्याने गर्जत व
शत्रूंच्या स्त्रियांचें काळीज दुभंग करीत पुढें चालले
व त्यांनी हिमाप्रमाणे शुभ्र असे शंख एकदम
मोठमोठ्याने वाजविण्यास प्रारंभ केला ! राजा,
या वेळी पांचजन्य व देवदत्त ह्या दोन्ही
शंखांचा असा कांहीं प्रचंड घोष होऊं लागला
की, त्याने आकाश, पृथ्वी व दशदिशा हीं सर्व
दुमदुमून गेली ! राजा, तेव्हां त्या कृष्णार्जु-
नांचा शंखनाद श्रवण करून सर्व कौरव वाच-
रले, तुझी सेना अगदी भयभीत झाली;
आणि युधिष्ठिराला मोठा आनंद वाटला ! या
शंखस्वनानें नद्या, पर्वत, गुहा व वने हीं
सर्व दणाणून गेली आणि सर्वत्र अगदी मूर्ति-
मंत भीति भामूं लागली ! तेव्हां कौरवसैन्यास
मुळीच तग निघेना व तें सर्व मद्राधिप शल्य
व कौरवाधिप दुर्योधन ह्यांस रणभूमीवर सोडून
देऊन पळून गेले ! इकडे त्या महान् रणांत
अतिशय शोभणाऱ्या धनंजयापाशीं सर्व भूत-
समुदाय जमा झाले आणि त्या दिवाकरसदृश
कृष्णार्जुनांचें त्यांनी मोठ्या प्रेमानें अभिनंदन
केलें ! राजा, त्या समयी त्या दोन्ही शत्रुसंहा-
रक पुरुषश्रेष्ठांचीं शरीरे कर्णाच्या शारांनी अगदीं
विद्ध झालीं अमून त्यांत ते बाण तसेच रुतन
राहिले होते; त्यामुळें, समरभूमीवर त्या कृष्णार्जु-
नांना पाहून जणू काय अंधःकाराचा विष्वस
उडविल्यावर अंतरिक्षांत स्वच्छ सूर्यचंद्रच
आपल्या किरणशलाकांनी विराजत आहेत,
असे वाटत होतें ! राजा, नंतर त्या उभयतांनीं
आपल्या देहांतील बाण काढून टाकिले; आणि
मग ते दिव्यपराक्रमी कृष्णार्जुन आपसुद्धांनीं
पारिवेष्टित होत्साते आपल्या शिबिरास पुनः
गेले ! राजा, तेव्हां त्यांना पाहून जणू काय
सदःस्थांनीं आह्वान केलेले भगवान् विष्णु व
वामव हेच तेथें प्राप्त झाले असें सर्वास वाटलें !
मग कर्णाचा वध करून परत आलेल्या त्या

कृष्णार्जुनांचा देव, गंधर्व, मनुष्य, चारण, महर्षि, यक्ष व महोरग ह्यांनीं अतिशय जय-जयकार केला आणि त्यांनीं त्यांस मोठ्या आदरानें पुनून त्यांच्या गुणांचें अतिशय वर्णन केलें ! तेव्हां कृष्णार्जुनांनाही मोठी धन्यता वाटली; आणि बल देत्याचा वध केल्यानंतर विष्णु व वासव ह्यांना जमा आनंद झाला, तसा सुहृद्गणांसहवर्तमान त्या कृष्णार्जुनांना अतिशय आनंद झाला !

अध्याय पंचाणवावा.

—:०:—

शिविरप्रयाण.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, विकर्तन-पुत्र कर्ण रणांत पतन पावल्यावर कौरवांची फारच त्रेधा उडाली व ते सहस्त्रावधि वीर भय-भीत होत्साते इतस्ततः अवलोकन करीत चारी दिशांस पळून गेले ! राजा, त्या समयी जे वीर त्या घनघोर मंत्रामांत बाणप्रहारांनीं अतिशय घायाळ झाले होते, त्यांची तर फारच दुर्दशा उडाली ! हे महाराजा, ह्याप्रमाणें तुझ्या सैन्याचा जेव्हां अगदींच धीर सुटला, तेव्हां चोहोंकडे तुझ्या योद्ध्यांनीं रणांगणांतून आपापली सैन्ये मागें परतविण्याचा विचार ठरविला ! आणि ज्या सैन्यांना दुर्योधन युद्धासाठीं प्रवृत्त करीत होता तीं सर्व अत्यंत दुःखित व उद्विग्न सैन्ये अखेरीस मागें परतलीं ! इकडे दुर्योधनानेंही त्या कुरुयोद्ध्यांचा व कुरुसैन्यांचा हेतु मनांत आणून तदनुरूप आपला विचार बदलला व शल्याचा अभिप्राय घेऊन त्यांनें सर्व सैन्ये मागें वळविलीं ! राजा, तेव्हां लागलाच कृतवर्मा तुझ्या नारायण नामक सैन्याच्या अवशिष्ट रथांसह शिविरास गेला; तसेच शकुनीनें सहस्र गांधार योद्धे बरोबर घेतले व शिविराचा रस्ता धरला; त्याप्रमाणेंच शारद्वत कृप हा महामेघ-

तुल्य कुंजरसेना घेऊन त्वरेनें शिविरास गेला; नंतर शूर अश्वत्थामा पांडवांचा जय झाला अमें पाहून पुनःपुनः दुःश्वाचे सुस्कारे टाकीत शिविरास चालता झाला; इकडे सुशर्माही संश-प्तक सेनेचा जो प्रचंड भाग अवशिष्ट राहिला होता तो बरोबर घेऊन भयभीत मुद्रेनें इतस्ततः पहात शिविराकडे वळला; तसाच दुर्योधन राजा-देखील अत्यंत खिन्न होत्साता आपल्या प्रताप-शाली बांधवांच्या मृत्यूमुळें हळहळत शिविरास गेला; आणि तो महारथ शल्यही छिन्नध्वज रथांतून दशदिशांकडे दृष्टि टाकीत शिविरास प्राप्त झाला ! नंतर, राजा, भयानें कासावीस झालेले दुसरे अनेक महारथ लज्जेनें खालीं माना घालून व देहभान विसरून शिविरास गेले आणि तसेच रुधिर ओकत व भयानें थरथरां कांपत सर्वच कौरववीर घायाळ होऊन शिविरास चालते झाले ! राजा, त्या समयी कौरवांकडील महारथांपैकीं कित्येकजण अर्जुनाची व कित्येकजण कर्णाची वाहवा करूं लागले ! तेव्हां सर्वच कौरव भ्याले व त्यांनीं वाट मिळाली तिकडे पळ काढिला ! राजा, त्या वेळीं त्या घोर रणांगणांत जे तुझे सहस्त्रावधि वीर होते, त्यांपैकीं एकाच्याही मनांत युद्धाची इच्छा शिल्लक राहिली नाही ! कर्णाचा जेव्हां वध झाला तेव्हां सर्वच कौरव निराश झाले ! मग त्यांना जीवित, राज्य, स्त्रीपुत्र किंवा संपत्ति ह्यांपैकीं कसलीच आशा उरली नाही ! अखेरीस, राजा, शोकाकुल झालेल्या तुझ्या पुत्रानें मोठ्या श्रमानें सर्व महारथांस एकत्र जमविलें; आणि त्यांस 'आतां छावणींत जा' म्हणून सांगितलें. तेव्हां त्यांनीं दुर्योधनाची ती आज्ञा शिरसा-मान्य केली; आणि मोठ्या विषण्ण मनानें ते आपापल्या शिविरास निघून गेले !

अध्याय शहाण्णवावा.

—:०:—

युधिष्ठिराचा हर्ष.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे कर्णाचा वध होऊन कौरवसैन्य पळून गेलें तेव्हां कृष्णानें अर्जुनाला आलिंगन दिलें व मोठ्या आनंदानें म्हटलें:—बा धनंजया, वज्रधारी इंद्रानें वृत्राला वधिलें, तद्वत् तूं कर्णाला वधिलेस! बाबा, आतां वृत्रवधाप्रमाणें हें कर्णवधाचें घोर वृत्तही मनुष्ये एकमेकांस कथन करतील! अर्जुना, युद्धांत महाप्रतापी इंद्रानें वज्राच्या योगें वृत्राला मारिलें आणि तूं ह्या गांडीव धनुष्याच्या योगें जलाल शरांची वृष्टि करून रणांत कर्णाला मारिलेस! चल, आतां तुझा तो जगद्विरुध्यात दिव्य पराक्रम बुद्धिमान् धर्मराजाला निवेदन करण्यास जाऊ! अर्जुना, बहुत दिवसांपासून कर्णाला संग्रामांत ठार मारण्याची तूं इच्छा करित होतास; ह्यासाठीं कर्णाचें वधवृत्त तूं आज धर्मराजाला सांगितलेस म्हणजे तूं अनुष्णी होशील! अर्जुना, तूं व कर्ण एकमेकांशीं घोर संग्राम करित असतां तो तुंबळ संग्राम पाहाण्यासाठीं पूर्वी धर्मराज तेंथें प्राप्त झाला होता; परंतु त्याच्या देहांत अतिशय खोल शर रुतले होते म्हणून तो रणभूमीवर उभा राहाण्यास समर्थ झाला नाहीं आणि ह्यास्तव तो शिविरांत जाऊन तेंथें पडून राहिला!

राजा धृतराष्ट्रा, कृष्णाचें हें भाषण श्रवण करून अर्जुनानें त्यास 'बरें आहे' असें म्हटलें आणि मग यदुपुंगवानें अर्जुनाचा तो रथ तत्काळ मागें वळविला आणि तो निव्रतांना सैनिकांस म्हणाला, 'वीरहो, मोठ्या सावधान चित्तानें शत्रूंना तोंड देऊन उभे असा! तुमचें कल्याण होवो!' राजा धृतराष्ट्रा, नंतर केशवानें धृष्टद्युम्न, युधामन्यु, नकुल, सहदेव, वृकोदर व युयुधान ह्यांस म्हटलें, 'योधहो, आम्ही कर्ण-

वधाचें वृत्त धर्मराजाला निवेदन करण्यास जात आहों; ह्यासाठीं आम्ही परत येईपर्यंत तुम्ही सर्वे नीट लक्ष ठेवून शत्रूंशी युद्ध करा!' राजा धृतराष्ट्रा, कृष्णाचें तें भाषण ऐकून धृष्टद्युम्नादिक सर्वे शूर योद्ध्यांनीं कृष्णार्जुनांना धर्मराजाकडे जाण्यासाठीं अनुमोदन दिलें व मग गोविंद अर्जुनाला घेऊन धर्मराजास जाऊन भेटला; आणि तो राजशार्दूल धर्मराज युधिष्ठिर भरजरीच्या श्रेष्ठ शक्येवर पडला असतां त्या कृष्णार्जुनांनीं मोठ्या आनंदानें त्याचे पाय धरिले! राजा, त्या समर्थी कृष्णार्जुनांची ती प्रमुदित मुद्रा अवलोकन करून धर्मराजाच्या नेत्रांतून आनंदाश्रु वाहूं लागले व कर्णाचा खचित वध झाला असें मानून तो तत्काळ उठला आणि त्यानें प्रेमपुरस्सर त्या कृष्णार्जुनांस पुनःपुनः आलिंगन देऊन त्यांस सकल वृत्त विचारिलें! तेव्हां कृष्णार्जुनांनीं कर्णाच्या वधाचें यथास्थित सर्व वर्तमान त्यास निवेदन केलें आणि मग किंचित् हास्य करित हात जोडून कृष्णानें हतरिपु धर्मराजाला म्हटलें:—धर्मराजा, सुदैवानें अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव व तूं स्वतः हे तुम्ही सर्वे कुशल आहां! हा अंगावर कांडा उभा करणारा जो महान् वीरक्षयकारी भयंकर संग्राम घडला त्यांतून तुम्हीं मोकळे झालां हें चांगलें झालें! ह्याकरितां आतां ह्यापुढें जीं कृत्ये केलीं पाहिजेत तीं करण्यास उद्युक्त व्हा! राजा, सुदैवानें महारथ मृतपुत्र कर्ण रणांत पडला आणि तुला विजयश्रीनें वरिलें! धर्मराजा, तुझें भाग्य खचित थोर होय; कारण, ज्या पुरुषाधर्मानें घृतांत जिकलेल्या द्रौपदीची विटंबना केली, त्याचें शोणित आज भूमीनें प्राशिलें! राजा, तो तुझा शत्रु प्रस्तुत मार्तीत लोळत पडला असून त्याच्या सर्वे देहांत नख-शिखांत बाण रुतले आहेत व अगणित बाण-

प्रहारांनीं त्याचीं सर्व गात्रें छिन्नभिन्न झालीं आहेत ! हे महाभुजा युधिष्ठिरा, आतां तुला कोणीही शत्रु राहिला नाही; ह्यास्तव तूं आह्वांसहवर्तमान विपुल भोग भोगण्यास सिद्ध हो !

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें महात्म्या केशवाचें भाषण श्रवण करून धर्मराजाला मोठा आनंद झाला व ' महान् भाग्य ! महान् भाग्य ! ' असे प्रथम उद्गार काढून मग तो दाशाहं कृष्णाला म्हणाला, " हे महाबाहो देवकीनंदना, तुझ्या टिकणीं अशक्य असें काय आहे बरें ? तुझ्यासारखा सारथि व अर्जुनासारखा यत्नवान् अमे पुरुष एकत्र झाले असतां त्यांच्या हातून कर्णवधासारखीं लोकोत्तर कार्ये घडणें हें स्वाभाविकच आहे ! कृष्णा, हें सर्व तुमची बुद्धि व कृपा ह्यांचें फळ होय ! " राजा धृतराष्ट्रा, नंतर धर्मराजांनै यदुपुंगवांचा अंगदालकृत उजवा भुज धरिला व केशवार्जुनांस म्हटले, " कृष्णार्जुनांनो, नारदानें मला तुमची सर्व कथा सांगितली आहे ! तुम्ही महात्मे प्राचीन ऋषिश्रेष्ठ धर्मात्मे नरनारायण देव आहां. महाबुद्धिवान् तत्त्ववेत्ते कृष्णद्वैपायन व्यासही मला असेंच वेळोवेळीं सांगत आले आहेत. कृष्णा, हा धनंजय नित्य शत्रूवर चालून जातो व केव्हांही माघार घेत नाही, ह्याचें इंगित तुझा प्रसाद हेंच होय ! कृष्णा, जेव्हां तूं अर्जुनाचें सारथ्य पतकरिलेंस. तेव्हांच आमचा पराजय न होतां आम्हांला जय मिळणार ! असा आह्वां सिद्धांत ठरविला ! गोविंदा. भीष्म. द्रोण, महात्मा कर्ण, गौतम कृप, दुमरे शूर वीर व त्यांचे अनुयायी ह्यांचा वध किंवा पराजय होणें हें लहानसहान कृत्य नव्हे; माझ्या मतें तुझ्या बुद्धीमुळेच हें सर्व घडून आलें ! "

राजा, धर्मराज युधिष्ठिर इतकें बोलून सुवर्णालंकृत रथावर आरूढ झाला. त्या रथास श्वेतवर्ण अश्व जोडले असून त्या अश्व्यांची

पुच्छें काळीं होतीं व ते मनोवेगानें पळणारे होते. त्या रथावर धर्मराज चढतांच त्याचे भोंवतालीं त्याची सेना जमा झाली; आणि मग तो महाबाहु युधिष्ठिर कृष्णार्जुनांशीं प्रेमपूर्वक भाषण करीत रणभूमि अवलोकन करण्यासाठीं निघाला आणि पुढें कृष्णार्जुनांशीं बोलत बोलत जात असतां रणांगणांत नरवीर कर्ण भूमीवर पडला आहे असें त्यानें पाहिलें ! ज्याप्रमाणें कदंबाच्या पुष्पाभोंवतीं सर्वत्र केसर व्याप्त असतात, त्याप्रमाणें त्या समयीं कर्णाच्या देहाला सभोंवतीं शतावधि शर व्याप्त होते; आणि जणू काय अत्तरांत भिजविलेल्या सहस्रावधि सुवर्णदंड मशाली त्याच्या देहाच्या सभोंवतीं प्रज्वलित आहेत, असें भासत होतें ! राजा, त्या वेळीं कर्णाचें कवच बाणप्रहारांनीं अगदीं फाटून तुटून गेलें होतें व कर्णाच्या समीप त्याचा पुत्रही मरून पडला होता ! तेव्हां धर्मराजांनै त्या पितापुत्रांस अवलोकन केलें, तरी ते कर्णवृषसेन हेच होत अशी त्याची खातरी पटेना ! म्हणून त्यानें त्यांस पुनःपुनः निरखून पाहिलें आणि मग मात्र त्याची ते कर्णवृषसेनच होत अशी पूर्ण खातरी झाली ! राजा, मग तो धर्मराज पुनः कृष्णार्जुनांची प्रशंसा करूं लागला आणि म्हणाला, " गोविंदा, तुझ्यासारख्या महाप्राज्ञ शूरवीरानें संरक्षण करण्याचा पतकर घेतल्यामुळे मी आज भ्रात्यांसह पृथ्वीचा राजा झालों ! अतिमानी नरवीर जो राधेय, त्याच्या वधाचें वर्तमान श्रवण करून तो दुष्ट दुर्योधन आतां अगदीं निराश होईल ! रणांगणांत कर्ण पडला असें कानीं पडतांच दुर्योधनाला आतां जीविताची त्याप्रमाणेंच राज्याचीही आशा राहाणार नाही ! हे पुरुषर्षभा, केवळ तुझ्या प्रसादामुळेच आह्मी कृतार्थ झालों ! गोविंदा, खचित थोर भाग्यामुळेच आज तुला विजयश्रीनें वरिलें !

थोर भाग्यामुळेच आज आपला शत्रु कर्ण हात झाला ! आणि आज थोर भाग्यामुळेच अर्जुनाला विजय मिळाला ! हे महाभुजा, तेरा वर्षेपर्यंत आम्हांस झोप कशी ती माहीत नाही व रात्रंदिवस आम्ही तळमळत होतो; पण तुझ्या कृपेमुळे आज आम्हांला स्वस्थ झोप येईल !

संजय सांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणे धर्मराजांनै कृष्ण व अर्जुन ह्यांची पुनःपुनः फारच प्रशंसा केली ! धृतराष्ट्रा, कर्ण व त्याचा पुत्र हे दोघेही अर्जुनाच्या बाणांनीं रणांगणांत मरून पडलेले जेव्हां धर्मराजांनै पाहिले, तेव्हां त्यास आपण पुनः जन्मलो असे वाटले ! तेव्हां महान् महान् महारथ मोठ्या आनंदानै त्याच्या सर्माप प्राप्त झाले आणि त्यांनीं त्याचा मोठा गौरव केला ! राजा, तेव्हां भीम, नकुल, सहदेव, वृष्णींचा महारथ सात्यकि, धृष्टद्युम्न, शिखंडी व पांडुपांचालमंजय हे सर्व धर्मराजाच्या सन्निध आले व त्यांनीं त्यास बहुमानपुरस्सर वंदिले ! त्या सर्वांनीं धर्मात्म्या धर्मराज युधिष्ठिराचा जयजयकार केला आणि ते सर्व विजयी व कृतार्थ असे महान् महान् योद्धे कृष्णार्जुनांची अनुरूप शब्दांनीं स्तुति करून मोठ्या हर्षानै आपआपल्या शिबिरास गेले ! ह्याप्रमाणे अंगार कांडा आणणारा असा हा भयंकर क्षात्रक्षय घडून आला; आणि ह्या सर्वांचे कारण तुझी अनुचित सल्ला हेच आहे; ह्यासाठीं आतां हळहळण्यांत अर्थ नाही !

कथामाहात्म्य.

वैशंपायन सांगतात:—राजा, जनमेजया, ह्याप्रमाणे संजयापासून अप्रिय वृत्त श्रवण करून अंबिकासुत धृतराष्ट्र हा मुळे तुटलेला वृक्ष जसा धाडकन् पडतो तसा भूमीवर निश्चेष्ट पडला; आणि त्याजबरोबर त्याची स्त्री राज्ञी

गांधारी ही देखील भावी अनर्थ मनांत येऊन खाली पडली व कर्णाच्या मृत्यूबद्दल अत्यंत शोक करूं लागली ! राजा, तेव्हां विदुरानै गांधारीला व संजयानै धृतराष्ट्र राजाला सावरून धरिले आणि मग त्या उभयतांनीं धृतराष्ट्राचै सांत्वन केलें. मग विदुरसंजयांनीं धृतराष्ट्राला व कुरुस्त्रियांनीं गांधारीला उठाविले आणि देव हे प्रबळ आहे व भवितव्याला मागे टाकणे अशक्य होय, असे मनांत आणून धृतराष्ट्राला अत्यंत खेद झाला व तो पुनः शोकाकुल होतसाता मूर्च्छित पडला. राजा जनमेजया, नंतर विदुरसंजयांनीं पुनः त्याचै सांत्वन केलें तेव्हां तो शून्यहृदय होतसाता स्तब्ध बसला ! राजा, महात्मे धनंजय व कर्ण ह्यांचे हे भयंकर युद्ध म्हणजे महान् यज्ञच होय ! जो पुरुष ह्या युद्धाचै वर्णन, पठन किंवा श्रवण करील, त्यास उत्तम रीतीनै सिद्धांस नेलेल्या यज्ञाचै फल प्राप्त होईल ! राजा, विद्वान् पुरुष असे सांगतात कीं, भगवान् सनातन विष्णु हाच यज्ञ होय; आणि अग्नि, वायु व चंद्रसूर्य हेही यज्ञच होत; ह्यास्तव जो पुरुष मत्सर न करितां हा इतिहास श्रवण किंवा पठन करील, तो सुखी होऊन श्रेष्ठ लोकाम जाईल ! राजा, जे पुरुष ह्या दिव्य व पुण्यकारक ग्रंथाचै सदोदीत भक्तिपूर्वक परिशीलन करितील, त्यांस धन, धान्य व यश ह्यांची निःसंशयपणे प्राप्ति होईल ! ह्याकरितां जो मनुष्य नेहमीं प्रेमपूर्वक हा ग्रंथ ऐकेल त्याला सर्व सुखे मिळतील ! आणि त्या नरश्रेष्ठावर भगवान् विष्णु, ब्रह्मदेव व शंकर हे प्रसन्न होतात ! राजा, ह्या ग्रंथाचै निदिःध्यमन केल्यास ब्राह्मणाला वेदपठनाचै फल मिळेल, क्षत्रियाचै बल वाढून तो युद्धांत विजयी होईल. वैश्यांना अतिशय धन मिळेल

आणि शूद्रांचें आरोम्य वाढेल ! राजा, ह्या सर्व मनोरथ पूर्ण होतात ! आणि, जनमेजया,
 ग्रंथांत भगवान् सनातन परमात्मा विष्णु ह्याचे ह्या कर्णपर्वाचें श्रवण केलें असतां सवत्स
 गुण वर्णिले अमल्यामुळें, ह्याच्या परिशीलनांत अशा कपिला धेनुंचें वर्षभर नित्यदान केल्या-
 भगवान् व्यासांनीं कथन केल्याप्रमाणें मनुष्याचे प्रमाणें पुण्य जोडिलें जातें !

—> कर्णपर्व समाप्त. <—





श्रीमन्महाभारत.

शल्यपर्व.

अध्याय पहिला.

मंगलाचरण.



नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

ह्या अखिल ब्रह्मांडांतील यच्चायावत् स्थावर-जंगम पदार्थांच्या ठिकाणी चिदाभासरूपानें प्रत्ययास येणारा जो नरमंज्ञक जीवात्मा, नर-संज्ञक जीवात्म्यास सदासर्वकाल आश्रय देणारा जो नारायण नामक काण्णात्मा, आणि नर-नारायणात्मक कार्यकारण मृष्टीहून पृथक् व श्रेष्ठ असा जो नरोत्तममंज्ञक मच्चिदानंदरूप पग-मात्मा, त्या सर्वांस मी अभिवंदन करितों; तसेंच, नर, नारायण व नरोत्तम ह्या तीन तत्त्वांचें यथार्थ ज्ञान करून देणारी देवी जी सरस्वती, तिलाही मी अभिवंदन करितों; आणि त्या परमकारुणिक जगन्मातेनें लोकाहित करण्याविषयीं माझ्या अंतःकरणांत जी स्फूर्ति उत्पन्न केली आहे, तिच्या साहाय्यानें ह्या भव-

बंधविमोचक जय म्हणजे महाभारत ग्रंथाच्या शल्यपर्वास आरंभ करितों. प्रत्येक धर्मशील पुरुषानें सर्वपुरुषार्थप्रतिपादक अशा शास्त्राचें विवेचन करितांना प्रथम नर, नारायण आणि नरोत्तम ह्या भगवन्मूर्तींचें ध्यान करून नंतर प्रतिपाद्य विषयाचें निरूपण करण्यास प्रवृत्त व्हावें हे सर्वथैव इष्ट होय.

धृतराष्ट्राचा प्रमोह.

जनमेजय विचारतो:—वैशंपायन मुने, ह्याप्रमाणें अर्जुनानें समरांत कर्णाचा वध केल्या-नंतर मग जे थोडेबहुत कौरव अवशिष्ट राहिले, त्यांनीं पुढें काय केलें? द्विजवर्या, कौरवांचा महान् योद्धा कर्ण हा समरभूमीवर पाहून पांडवांचें धैर्य, वीर्य, उत्साह, बल वगैरे सर्व

वृद्धिगत झाली असतां, समयावर दृष्टि देऊन दुर्योधन राजानें रणापामून निवृत्त होण्याचा विचार योजिला, किंवा त्यानें पांडवांशी जो संग्राम आरंभिला होता तो तमाच पुढें चालविला, हें ऐकण्याची माझी मनीषा आहे, तर तें सांगा. माझ्या पूर्वजांचें श्रेष्ठ चरित्र ऐकत असतां माझी तृप्तिच होत नाही !

वेशपायन सांगतातः—राजा जनमेजया, कर्णाच्या वधानें धृतराष्ट्रपुत्र दुर्योधन हा अगदीं शोकमागरीत बुडून गेला आणि त्याची सर्व आशा नष्ट झाली ! त्या समयीं त्यानें 'हे कर्णा, हे कर्णा !' असा फिरून फिरून एकसारखा आक्रोश आरंभिला. तेव्हां त्याची ती दुःखाकुल अवस्था पाहून, जे कोणी राजे रणांगणांत अवशिष्ट होते ते मोठ्या कष्टानें त्यास स्वशिबिरांत घेऊन गेले ! नंतर तेथें त्या भूपाळांनीं शास्त्रनिश्चित अनेक मिद्धांत मांगून त्याची समजूत घातली, तथापि त्याच्या मनांत कर्णाचें वधवृत्त एकसारखें घोळत असल्यामुळे त्याच्या चित्ताला मुळीच स्वस्थता वाटेना ! अखेरीस त्यानें "देव खचीत बलवान् आहे, काय होणें असेल तें होईल !" असा आपल्या मनाशी निर्धार ठरविला; आणि युद्ध करण्याचा निश्चय करून तो पुनः बाहेर पडला ! नंतर राजा धिराज दुर्योधनानें मद्राधिप शल्यवर मैनापत्याचा यथाविधि अभिषेक केला; आणि शल्य मैनापति व उर्वरिन भूपाळ ह्यांमहवर्तमान तो पांडवांशी युद्ध करण्यास निघाला ! नंतर, हे भरतश्रेष्ठा, कौरव व पांडव ह्यांचें देवापुरांप्रमाणें अतिशय दारुण व तुंबळ युद्ध झालें ! त्यांत शल्यानें मध्याह्न-कालपर्यंत भयंकर कंदन केलें, परंतु अखेरीस धर्मराजानें त्यास सैन्यामुद्धां ठार मारिलें ! तेव्हां तें पाहून बंधुहीन झालेला दुर्योधन राजा रणांगणांतून पळाला आणि शात्रूंच्या भयानें घोर वृद्धांत दडून बसला ! मग

त्याच दिवशीं तिसरे प्रहरीं भीमसेन व पांडवांकडील महान् महान् वीर ह्यांनीं त्या वृद्धाला गराडा घातला व युद्धार्थ आम्हान देऊन भीमसेनानें दुर्योधनाला वृद्धाच्या बाहेर बोलाविलें आणि त्याच्याशीं घोर युद्ध करून त्यांत त्यास ठार मारिलें ! राजा जनमेजया, ह्याप्रमाणें कौरवांशी महाधनुर्धर दुर्योधन हा भीमाच्या हस्ते रणभूमीवर पतन पावतांच कृप, कृतवर्मा व अश्वत्थामा हे तिथे कौरवांकडील अवशिष्ट योद्धे रात्रीच्या समयीं मोठ्या त्वेषानें निघाले व त्यांनीं पांचालसोमकांचा मंहार उडविला ! नंतर दुसऱ्या दिवशीं सकाळीं संजय शिबिरांतून निघाला आणि दुःखशोकांनीं ग्रस्त होतसाता मोठ्या दीनमुद्रेंने कौरवपुरीत प्रविष्ट झाला ! राजा जनमेजया, मग तो शोकावेगानें थरथर कांपणारा मृत संजय दुखानें हात वर करीत रडत आरडत राजवाड्यांत शिरला; आणि "अहो, महात्म्या दुर्योधनाच्या वधानें आपण सर्व ठार बुडालों हो बुडालों ! खचीत देव मोठें बलिष्ठ, पराक्रम हा व्यर्थ होय ! अहो, कौरव हे इंद्रासारखे पराक्रमी, पण पांडवांनीं त्या सर्वांना ठार मारिलें !" असा आक्रोश करूं लागला ! तेव्हां कौरवपुरीतील जनांनीं संजयाची ती विपन्न स्थिति अवलोकन करून आणि त्याच्या तोंडून युद्धाचें घोर वर्तमान ऐकून फारच आक्रांत केला ! राजा, त्या समयीं सर्व लोक अतिशय रडूं लागले ! चोहोंकडे आबालवृद्धांत मोठा कव्हांळ उडाला ! सर्वांचीं मुखें म्लान झालीं ! आणि दुर्योधन मेल्या असें श्रवण करून जो तो धाय मोकलून रडूं लागला ! राजा, त्या समयीं त्या दुःखकारक वार्तेनें सामान्य जनांचीच मनें विदीर्ण झालीं असें नव्हे, तर मोठमोठे विचारी व धैर्यशाली पुरुषही गांगरून जाऊन अनावर दुःखानें अत्यंत पीडित होतसाते नष्टचित्त होऊन वेड्यासारखे

इतस्ततः धातुं लागले ! असो; नंतर तो दुःखा-कुल झालेला संजय धृतराष्ट्र राजाच्या महालांत शिरला, तों तेथें नृपतिश्रेष्ठ प्रज्ञाचक्षु अनाथ धृतराष्ट्र राजा आसनावर स्थित असून त्याच्या भर्भोवतीं त्याच्या मुना, गांधारी व विदुर आणि त्याप्रमाणेंच इतर आसमुहूत् व दुमरी हितचिंतक मंडळी अधिष्ठित आहे, आणि त्याचें मन कर्णाच्या वधामुळें आतां पुढें काय होईल ह्या विचारांत अगदीं निमग्न आहे, असें त्यानें पाहिलें ! राजा, त्या वेळीं संजयाची मनोवृत्ति दुःखभरानें व्याप्त असल्यामुळें त्याच्या मुखांतून स्पष्ट शब्दही निघतना ! तथापि अखेरीस रडत रडत मोठ्या कष्टांनं ' हे नरशार्दूल भरतश्रेष्ठा, हा मी संजय तुला प्रणिपात करीत आहे, असें तो कमेंबसें धृतराष्ट्र राजाला म्हणाला ! राजा, नंतर त्यानें युद्धाचें वृत्त निवेदन केले. तो म्हणालाः—राजा, मद्राधिप शल्य, सौबल शकुनि, त्या कपटी द्यूतकाराचा (शकुनीचा) महापराक्रमी पुत्र उलूक, सर्वे मंशाप्तक. कांबोज, शक, म्लेंच्छ, पार्वतीय, यवन, प्राच्य, दक्षिणात्य, उदीच्य, प्रतीच्य वगैरे सर्व महान् महान् योद्धे, राजे व राजपुत्र हे सगळे ममरांगणांत पडले आणि त्याप्रमाणेंच भीममेनानें आपल्या प्रतिज्ञेप्रमाणें दुर्योधनाला ठार मारिलें अमून आतां तो भग्नोर्दुःखी राजा रक्तानें मावून धुळीत पडला आहे ! त्याप्रमाणेंच, राजा, धृष्टद्युम्न, अपराजित शिखंडी, उत्तमौजा, युधामन्यु, प्रभद्रक, पांचाल व चेदि ह्या सर्वांचा अंतझाला ! तुझे सर्व पुत्र पडले ! द्रौपदीचेही सर्व पुत्र नष्ट झाले ! आणि कर्णाचा प्रतापशाली शूर पुत्र वृषसेन वधिला गेला ! त्याप्रमाणेंच, राजा, मर्वे मनुष्यें, हत्ती, घोडे व रथी हे युद्धांत पडले, आणि अखेरीस शिविरांत फारच अल्प सैन्य शिल्लक राहिलें ! राजा, ममरांगणांत कौरव-पांडवांचा घोर संग्राम होऊन परम्परांच्या हम्मनं

परस्परान्चा अंत झाला आणि कालानें ग्रस्त करून टाकिलेल्या ह्या विस्तीर्ण जगांत बहुधा स्त्रिया मात्र अवशिष्ट राहिल्या ! राजा, पांडवांकडील सात वीर व कौरवांकडील तीन वीर काय ते ह्या भयंकर रणकंदनांतून जगले; आणि ते कोणते म्हणशील तर पांच पांडव भ्राते हे पांच व कृष्ण आणि सात्यकि असे एकंदर सात पांडवांकडील, आणि कृप, कृतवर्मा व विजयशाली अथल्यामा हे एकंदर तीन कौरवांकडील, असे दहाजण मात्र जिवंत उरले ! राजा, ह्या भयंकर युद्धाकरितां दोन्ही पक्षांकडे ज्या प्रचंड अशाहिणी मेना जमल्या होत्या, त्यांपैकी हे इतके दहा रथी मात्र अवशिष्ट राहिले अमून बाकीचे सर्व सैन्य मृत्युमुखी पडले ! राजा, हा कालाचा खेळ होय ! त्यानेंच दुर्योधनाला व ह्या कलहाला पुढें करून सर्व जगताचा हा असा संहार उडविला !

वैशंपायन सांगतातः—राजा जनमेजया, संजयाच्या मुखांतून निघालेले हे दारुण शब्द श्रवण करून धृतराष्ट्र राजाचें कालीज फाटलें व तो भूतलावर मूर्च्छित पडला ! त्याच्या मागोमाग महाभाग्यवान् विदुरही शोकाकुल होऊन खाली पडला आणि तदनंतर धृतराष्ट्राची पत्नी गांधारी व बाकीच्या सर्व कुरुस्त्रिया एकदम पटापट धरणीवर पतन पावल्या ! त्याप्रमाणेंच सर्व राजमंडल देखील वेशुद्ध होऊन भूतलावर पडलें व देहभान विसरून जाऊन दुःखभरानें निश्चेष्ट होत्सातें बडबड करूं लागले ! तेव्हां जणू काय महान् पडद्यावरील तीं चित्रेंच होत असें दिसूं लागले ! राजा, नंतर कांहीं वेळानें, पुत्रदुःखानें मूर्च्छित पडलेल्या धृतराष्ट्र राजाच्या देहांत थोडथोडें चलनचलन उत्पन्न झालें आणि मग लवकरच तो शुद्धीवर येऊन दुःखानें लटलट कांपत कांपत चोहोंकडे मान वळवून विदुरास म्हणालाः—

बा महाप्रज्ञा पंडिता विदुरा, प्रस्तुत समयी तूंच मला मोठा आधार आहेस ! बाबा, माझे एकूणएक सर्व पुत्र मृत्युमुखी पडून आज माझी अशी अगदी अनाथ अवस्था व्हावीना ! राजा जनमेजया, धृतराष्ट्राच्या मुवांतून हे उद्गार बाहेर पडत आहेत तों पुनः त्याची चित्तवृत्ति बदलली व शोकाची लाट उमळून तो फिरून नेशुद्ध पडला ! तेव्हां तें पाहून, जे कोणी आसमुह्य तेथे होते त्यांनीं लागलेच गार पाणी त्याच्यावर शिंपडिलें व ते त्याला पंख्यांनीं वारा घालूं लागले ! राजा, नंतर पुष्कळ वेळानें धृतराष्ट्र राजा फिरून देहभानावर आला व पुत्र-दुःखानें विव्हल होतसाता कुंभांत टाकलेल्या सर्पाप्रमाणें एकसारखे सुस्कारे टाकीत स्तब्ध बसला ! जनमेजया, त्या समयी धृतराष्ट्राची ती दीन अवस्था पाहून संजय देखील रडूं लागला आणि मग भाग्यशाली गांधारी व इतर सर्व स्त्रिया अनावर आक्रोश करूं लागून मोठाच कलहोळ उद्भवला ! राजा, मग धृतराष्ट्राला पुष्कळ वेळपर्यंत वारंवार मूर्च्छा यावी व काहीं वेळानें तो फिरून सावध व्हावा, असें चालले होते ! अमेरीस त्यानें विदुराला सांगितलें कीं, ' विदुरा, भाग्यशाली गांधारी व ह्या सर्व स्त्रिया आणि त्याप्रमाणेंच हे सर्व आस-सुहृत् ह्यांनीं येथून जावें; ही मंडळी येथे अमल्या-मुळें माझे मन फारच अस्वस्थ झाले आहे ! ' राजा जनमेजया, धृतराष्ट्राचें भाषण श्रवण करून विदुरानें पुनःपुनः कांपत कांपत त्या सर्व स्त्रियांची व आसमुह्यदांची हळूहळू समजूत घालून त्यांस तेथून जाण्यास सांगितले व नंतर ती सर्व मंडळी धृतराष्ट्र राजाची ती विपन्न स्थिति अवलोकन करून तेथून निघून गेली ! राजा जनमेजया, नंतर संजयानें धृतराष्ट्र राजाकडे पाहिलें, तों तो अगदीं आर्त झाला असून स्फुंदत स्फुंदत पुनःपुनः दुःखाचे सुस्कारे

टाकीत आहे, असें त्याच्या दृष्टीस पडलें ! मग त्यानें हात जोडून मधुर भाषण करण्यास आरंभ केला; व शोकातुर झालेल्या त्या कुरुपतीला त्याच्या योगें बराच विवेक उत्पन्न झाला !

अध्याय दुसरा.

—०:—

धृतराष्ट्राचा विलाप.

वैशंपायन सांगतात:—राजा जनमेजया, धृतराष्ट्राच्या समीप ज्या स्त्रिया वगैरे होत्या त्या तेथून निघून गेल्यानंतर अंबिकासुत धृतराष्ट्राचा शोक कमी न होतां उलटा अत्यंत वाढला आणि तो मोठमोठ्यानें विलाप करूं लागला ! राजा, त्या वेळीं तो संतापानें अगदीं पेटला व क्रोधानें कढत कढत सुस्कारे टाकीत आणि वारंवार दुःखानें हात चालवीत चित्तमध्यें निमग्न होऊन असे उद्गार काढूं लागला !

धृतराष्ट्र म्हणाला:—संजया, हें किती दुःखकारक वर्तमान तूं मला सांगितलेंस ! अरे, रणांत पांडवांपैकीं एकही न पडतां ते सर्व कुशल राहिले आणि माझे सर्वच पुत्र पडले हें झालें तरी कसें ? संजया, माझे हें हृदय खचीत वज्रसारमयच आहे आणि त्यामुळेच हें घोर वृत्त श्रवण करून त्याचे सहस्रावधि तुकडे झाले नाहीत ! संजया, माझ्या पुत्रांचें वय, त्यांच्या बाललीला व त्या सर्वांचा हा अशा प्रकारें झालेला अंत हीं सर्व मनांत घेऊन माझे चित्त अगदीं व्याकूल होतें ! बारे, मला नेत्र नसल्या-मुळें मी त्यांचीं स्वरूपे पाहिलीं नाहीत; तरी पुत्रवात्सल्यामुळें मी त्यांजवर नित्य प्रेम करीत आलों ! बा अनघा, त्यांचें बालपण संपून ते ज्वानीत आले व तदनंतर ते प्रौढ होऊन आपला मध्यकालांतील (तारुण्यांतील) कार्यभार वाहूं लागले, असें जेव्हां मी ऐकिलें तेव्हां मला फार आनंद झाला ! परंतु, संजया, आज

ते सर्व धारातीर्थी पतन पावले आणि त्यांचें तें वीर्य, शौर्य, ऐश्वर्य वगैरे व्यर्थ झालें असें श्रवण करून आतां माझी सर्व शांति गेली व माझ्या शोकाला पारावार राहिला नाही ! ये ये, बाळा राजेंद्रा दुर्योधना, मला भेट दे ! अरे, आतां मी अगदींच अनाथ झालोंरे ! बाळा महाबाहो, तूं मला सोडून गेलाम, पण आतां माझी वाट काय ! अरे, किती तरी भूपाल तुझ्या साहाय्यार्थ तुझ्या पक्षाला येऊन मिळाले होते आणि अखेरीस त्या सर्वांना सोडून यः-कश्चित् दुष्ट राजाप्रमाणें रणांगणांत हत होऊन तूं शयन केलेंस, ह्यास काय म्हणावें ? अरे, आज-पर्यंत आप्तसुहृदांना तूं आश्रय दिलास आणि आज माझ्यासारख्या वृद्धाला व आंधळ्याला सोडून कोठें चाललास ? बाळा, तुझें तें प्रेम, तुझी ती कृपा व तुझी ती आदरबुद्धि आज कशी अस्त-गत झाली ! अरे, रणांत तुझा आजवर कधीही पराजय झाला नाही, आणि आज तर तुला पांडवांनीं वधिलें हें संभवावें तरी कसें ! बाळा, मी उठलों असतां आतां मला ' बाबा, बाबा, ' असें कोण बरें म्हणेल ! अरे आतां मला ' महाराज, महाराज, ' अशी सतत कोण बरें हाक मारील ! अरे, आतां मला पुनःपुनः ' लोक-नाथा, लोकनाथा ' असे शब्द कोण बरें उच्चा-रील ! बाळा, आतां मला प्रीतीनें आळिगन देऊन व माझ्याकडे सद्गदित नेत्रांनीं पाहून ' कुरुराज, आज्ञा करा ! कुरुराज, आज्ञा करा ! ' असें मला कोण बरें पुनः म्हणेल तें मला नीट सांग पाहू ! बाळा, तुझ्या तोंडून मी असेही शब्द ऐकिले आहेत कीं, " ह्या अफाट पृथ्वीवर जितकी माझी सत्ता आहे तितकी धर्मराजाची नाही ! कौरवेश्वरा, भगदत्त, कृप, शल्य, आवन्त्य, जयद्रथ, भरिश्रवा, सोमदत्त, महाराज बालिहक, अश्वत्थामा, भोजाधिप, महाबल मागध, बृहद्वल, काशीराज, मौबल

शकुनि, लक्षावधि म्लेच्छ, शक व यवन, कांबोज देशाचा राजा सुदक्षिण, त्रिगर्ताचा अधिपति, पितामह भीष्म, भारद्वाज, गौतम, श्रुतायु, अयुतायु, वीर्यवान् शतायु, जलसंध, ऋष्यशृंगाचा पुत्र, राक्षस अलायुध, महाबाहु अलंबुष, महारथ सुबाहु, हे व ह्याप्रमाणेंच दुसरे पुष्कळ राजे हे सर्व माझ्याकरितां प्राणांची व घनाची पर्वा न करितां पांडवांशीं युद्ध कर-ण्यास तयार आहेत. ह्यामाठीं त्यांच्या मध्य-भागीं अधिष्ठित होऊन भ्रात्यांनीं परिवेष्टित होत्साता मी रणभूमीवर पांडव, पांचाल, चेदि, द्रौपदीचे पुत्र, सात्यकि, कुंतिभोज व घटोत्कच राक्षस ह्यांच्याशीं युद्ध करीन ! नृपशादूला, हे सर्व पांडवीय योद्धे माझ्यावर धावून आले असतां समरांगणांत क्रोधायमान झालेल्या मी एकटा देखील त्यांचें निवारण करण्यास समर्थ आहे; मग पांडवांशीं वर करणारे हे सर्व वीर माझ्यासमवेत असल्याम पांडवांच्या पराभवा-विषयीं वानवा ती कसली ? अथवा, राजा, माझ्या पक्षाचे हे सर्व योद्धे पांडवांच्या अनु-यायांशीं लढून त्यांम युद्धांत वधितील आणि कर्ण व मी असे आम्ही दोघे एकल होऊन पांडवांना ठार मारूं ! राजा, नंतर सर्व परा-क्रमी भूपाल माझ्या आज्ञेत वागतील आणि त्यांचा नायक जो महाबलवान् कृष्ण तो अंगांत चिलखत घालणार नाही ! " मना संजया, ह्याप्रमाणें दुर्योधन माझ्याशीं अनेक वेळां बोलला असतां, त्याच्या सामर्थ्याचा विचार करून मी तर आपल्या मनाशीं रणांत पांडव मेले असेंच ठरविलें होतें; परंतु आज स्थिति अशी झाली कीं, त्या पांडवांच्या मध्यभागीं उभें राहून मोठा पराक्रम गाजवीत असतां समरांगणांत माझेच पुत्र मृत्युमुखी पडले ! तेव्हां हा सर्व दैवाचा खेळ आहे, दुसरें काय ? संजया, प्रतापशाली लोकनायक भीष्म जेव्हां

शिखंडीशीं लढत अमतां पडतो म्हणजे जणू काय कोल्हाकाडून सिंहाचा वध होतो, तेव्हां हे सर्व देवच नव्हे का ? अरे, द्रोणाचार्याची केवटी शक्ति ! तो ब्राह्मण सर्व शस्त्रास्त्रविद्येत निष्णात ! आणि असें अमतां युद्धांत पांडवांनीं त्याला वधावें, तेव्हां ही देवघटना म्हणूं नये तर दुसरे काय म्हणावें ? अरे, दिव्यास्त्रवेत्ता महाबलिष्ठ कर्ण युद्धांत पडला; आणि त्याप्रमाणेंच भरिश्रवा, मोमदत्त व बाल्हिक ह्यांची गति झाली, तेव्हां हे सर्व देवदुर्वलमिन्न होय ह्यांत संदेह नाही ! अरे, गजयुद्धांत प्रवीण अमा भगदत्त व त्याप्रमाणेंच महाशूर जो जयद्रथ तोही जर युद्धांत मारला गेला तर हे दुर्दैव नव्हे तर दुसरे काय ? अरे, मुद्रक्षिण, पुरुकुलोत्पन्न जलसंघ, श्रुतायु व अयुतायु ह्यांसारखे महान् महान् योद्धे जर रणांत पडले, तर हे खर्चीत दुर्दैवच होय ! संजया, महाबल पांडव म्हणजे सर्व शस्त्रधरांमध्ये अग्रगण्य, आणि असें अमतां पांडवांनीं त्यांमं संग्रामांत ठार मारिले, तेव्हां हे घडवून आणणारे दुर्दैवच नव्हे का ? अरे, शूर बृहद्बल, महाबलवान् मागध, तसाच धनुर्धरांचा केवळ ध्वजच अमा तो पराक्रमी उग्रायुद्ध, आवंत्य, त्रिगर्ताधिप व संशप्तक ह्या सर्वांनाही जेथें मृत्युमुखीं पडावें लागले, तेथें देव बलवान् म्हणावें किंवा दुसरे कांहीं बलवान् म्हणावें ? संजया, अलंबुष, अलायुध राक्षस व ऋष्यशृंगाचा पुत्र आर्ष्यशृंगी ह्यांचाही जर वध झाला, तर हे देवच नव्हे का ? अरे, नारायण व गोपाल नामक महान् महान् युद्धधुरंधर मेन्ये व त्याप्रमाणेंच सहस्रावधि म्लेच्छ वीर जर रणांत पडले, तर ह्याला देवाचाच खेळ असें म्हणूं नये काय ? संजया, सौबल शकुनि व त्याप्रमाणेंच त्याचा महाबलवान् पुत्र कैतव्य (उलूक) हे वीर आपल्या सेनासहवर्तमान रणांगणांत हत झाले, तर ह्याला

देव म्हणूं नये, तर दुसरे काय ह्णावें ? सूता, हे सर्व योद्धे व तमेच दुसरेही पुष्कळ युद्धविशारद, अस्त्रविद्यापारंगत व परिघतुल्य बाहु धारण करणारे राजपुत्र व राजे जर रणांगणांत पतन पावले, तर तो खर्चीत देवाचाच परिणाम होय ! संजया, माझ्या पशाला जे बहुत क्षत्रिय घेऊन मिळाले होते, त्यांचें सामर्थ्य काय वर्णावें ? ते सर्व अतिशय शूर व महाधनुर्धर असून ते अस्त्रविद्याप्रवीण व रणांत शत्रूंवर मोठ्या त्वेषानें चाल करून जाणारे असे होते, नानाविध देशांहून प्राप्त झालेल्या त्या सर्व रणशूरांच्या टिकाणीं केवळ महेंद्रतुल्य प्रताप वसत होता; आणि असें असतांही ते सर्व युद्धांत पतन पावले, तेव्हां हे खर्चीत देवच, दुसरे काय ? संजया, माझे प्रतापशाली पुत्र, पौत्र, भ्राते, मित्र वगैरे सर्व धारातीर्थीं पडले, तेव्हां ही सर्व देवार्चाच लीला होय ह्यांत संदेह नाही; निःसंशयपणें, मनुष्यजेव्हां जन्मास येतो तेव्हांच तो आपल्याबरोबर वरें किंवा वाईट देव घेऊन येतो ! ज्या मनुष्याचें देव वरें असतें, तो भाग्यवान् पुरुष मुक्क भोगितो; व ज्याचें देव वाईट असतें तो अभागी पुरुष दुःस्वाचा वाटेकरी होतो ! संजया, माझे देव विपरीत असल्यामुळें आज माझे सर्व पुत्रादिक नष्ट होऊन मी सर्वतोपरी हा अमा अनाथ झालें ! अरे, आतां मी हा अमा वृद्ध शत्रूंच्या हस्तगत झालें म्हणजे माझी वाट काय होईल ? बाबा, ह्यापुढें आतां वनवामाशिवाय दुसरे कांहींही मला वरें दिसत नाही ! अरे, संग्रामांत सर्व स्वकीयांचा संहार घडल्यामुळें आतां मला आसमुहदांचा वगैरे कांहींच पाश उरला नाही; ह्याकरितां पंख तोडून टाकिलेल्या पक्ष्याप्रमाणें दीन अवस्था प्राप्त झालेल्या मला आतां वनवासच प्रशस्त होय ! संजया, आतां दुर्योधन मेला, शल्य युद्धांत पडला, दुःशासन, विविश, विकर्ण

वगैरे महाबल पुत्रांचीही तीच गति झाली. तेव्हां भीमसेन हा मला अतिशय कठोर शब्द बोलेल ते माझ्यानें कसे सहन होतील बरें ! संजया, ज्या एकट्यानें माझे शंभर पुत्र वधिले, तो भीमसेन आतां पुनःपुनः दुर्योधनाचें वधवृत्त मजपुढें बोलू लागला म्हणजे दुःखशोकांनीं व्याप्त झालेल्या मला त्याचे ते कूर शब्द मुळींच ऐकवणार नाहीत !

कथाप्रस्ताव.

वैशंपायन सांगतातः—राजा जनमेजया, ह्याप्रमाणें बंधुहीन झालेला तो वयोवृद्ध धृतराष्ट्र राजा अगदीं क्षुब्ध झाला आणि पुनःपुनः दुःसह पुत्रशोकांनें मूर्च्छित पडूं लागला ! राजा, अशा रितीनें पुष्कळ वेळपर्यंत त्यानें विलाप केले आणि अखेरीस दुःस्वानें दीर्घ व कडत कडत असे मुस्कारे टाकित व आपणावर गुदरलेल्या भयंकर अनर्थाचें मनन करीत अंतर्बाह्य दुःस्वानें व्याप्त होऊन त्यानें संजयाला युद्धाचे सविस्तर वर्णन करण्यास सांगितलें.

धृतराष्ट्र विचारतोः—संजया, भीष्म व द्रोण हे समरांगणांत पडले व त्याप्रमाणेंच कर्णाचाही अखेरीस वध झाला, तेव्हां माझ्या पक्षाच्या योद्ध्यांनीं आपला सेनापति कोण केला बरें ? संजया, माझ्या सैनिकांनीं समरभूमीवर ज्याला ज्याला म्हणून सेनापति नेमिलें, त्याचा त्याचा पांडवांनीं फार थोड्या काळांत नाश केला हें पाहून मला मोठें आश्चर्य वाटतें ! संजया, तुझी सर्वे पाहात अमतां अर्जुनांनें भीष्माला भयंकर रणांत शरपंजरी पाडिले ! पुढें तीच गति द्रोणाची झाली आणि तुझा सर्वांच्या समक्ष पांडवांनीं त्याचा वध केला ! संजया, पुढें प्रतापवान् कर्णाचा मुद्धां ह्याच प्रकारें अंत झाला ! तेव्हां तरी सर्व राजांममंवेत तुझी रणांगणांत कर्णाच्या समीप अमतां अर्जुनांनें कर्णाला ठार मारिले ! संजया, महात्म्या विदुरांनें मला पूर्वीच सांगितलें होतें

कीं, दुर्योधनाच्या अपराधामुळें सर्व प्रजा नष्ट होईल ! संजया, आणखी तो असेही म्हणाला होता कीं, कित्येक मूर्ख पुरुष ह्या जगांत कित्येक गोष्टी डोळ्यांनीं धडधडीत पहात असतांही त्यांम त्यांचा उमज पडत नाही, ह्यास काय म्हणावें ? संजया, तेव्हां विदुर मला जें कांही म्हणाला, त्याचा त्या समर्थी म्यां मूर्खानें विचार केला नाही; आणि अखेरीस त्या सत्यवादी, दूरदृष्टि व महाधर्मशील विदुराचें तथ्य वचन आज माझ्या अनुभवामयेत आहे ! संजया, बुद्धत्याचें पाऊल खोलांतच पडावयाचें; ह्यास्तव माझ्यापुढें हा सर्व दुःखभार ओढवला असल्यामुळें मी त्या वेळीं विदुराच्या सांगण्याचा अनादर केला आणि त्याच अपराधाचें हें आतां घोर फळ मला प्राप्त झालें आहे ! असो; जावा, जें कांही रणभूमीवर घडून आलें असेल. तें सर्व पुनः विस्तृतपणें निवेदन कर !

संजया, रणांगणांत कर्ण पतन पावल्यावर कौरवांच्या सैन्यांच्या त्रिनीवर कोण होता ? नंतर कृष्णार्जुन हे कौरवांवर चालून आले तेव्हां त्यांच्यावर उलट चाल कोणी केली ? संजया, मद्रराज शल्य ज्या वेळीं पांडवांशीं लढण्यास उद्युक्त झाला, त्या वेळीं रणांगणांत त्याच्या रथाची उजवे व डावे हीं चक्रे व त्याप्रमाणेंच त्याचा पृष्ठभाग कोणकोण राखीत होते ? वा संजया, तुझी सर्वे समरभूमीवर एकत्र होऊन निकरांनें लढत अमतां मंत्रांमांन पांडवांनीं महारथ मद्राधिप शल्याला व माझा पुत्र दुर्योधन ह्याला कसे वरें वधिले ? संजया, रणभूमीवर भारतीय वीरांचा जो महान् संहार घडला आणि तमाच त्यांत माझा पुत्र दुर्योधन हाही ज्या प्रकारें मारिला गेला, तें सर्व वर्तमान जसें घडलें असेल तसें सविस्तर निवेदन कर; व त्याप्रमाणेंच सर्व पांचाल व त्याचे अनुयायी,

तसेच वृष्टद्युम्न, शिवंडी व द्रौपदीचे पांच पुत्र ह्यांच्या वधाचें वृत्त सांग! आणि त्याप्रमाणेच पांडव, कृष्ण, मात्यकि, कृप, कृतवर्मा व अश्व-त्यामा हे सर्व युद्धांतून कसे जिवंत राहिले ह्या सर्वांचें यथास्थित निरूपण कर; व रणांगणांत कोणकोणाचा संग्राम कमकमा झाला हें सर्व प्रस्तुत समर्थी ऐकण्याची मी इच्छा करीत आहे, तर तूं ही माझी इच्छा सिद्धीस ने! मंजया, तूं ह्या कामांत मोठा निष्णात आहेस!

अध्याय तिसरा.

—:०:—

कौरवांच्या सैन्यांची पळापळ.

मंजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्र, कौरवांच्या व पांडवांच्या सैन्यांनी एकमेकांशी घोर युद्ध करून जो भयंकर क्षय उडविला. त्याचें आतां मी सविस्तर वर्णन करितों; तर तूं तें सावधान चित्तानें ऐक. राजा, महापराक्रमी अर्जुनानें कर्णाचा वध केल्यानंतर तुझी सैन्ये एकसारखी पळत सुटली, तेव्हां दुर्योधनानें त्यांस युद्धार्थ फिरून रणांगणांत जमविलें; तरी तीं भयभीत होऊन पळून गेलीच! राजा, ह्याप्रमाणें कौरवसैन्यांनी पळून जावें व कौरवाधिपतीनें त्यांस प्रोत्साहन देऊन पुनः युद्धार्थ उद्युक्त करावें, असा कितीएक वेळां क्रम चालला; पण त्यांत यश न येतां शेवटीं कौरवसैन्ये पळूनच गेली! राजा, इकडे ग्णभूर्मावर कर्ण पडला आणि घोर संग्रामांत महान् महान् वीरांचा संहार घडला. तेव्हां अर्जुन एकसारखा सिंहनाद करूं लागला! राजा, त्या समर्थी तुझ्या पुत्रांची अगदीं पांचांवर धारण बसली आणि सैन्यांची एकच पळापळ उडाली. तेव्हां त्यांस आवरून धरण्याला किंवा रणांगणांत शौर्यानें पांडवांवर चालून जाण्याला कोणत्याही वीरास घोर झाला नाही! राजा, सूतपुत्र कर्ण

हा कौरवांचा द्रौपतुल्य महान् आधार होता! ह्यास्तव अर्जुनानें जेव्हां त्यास वधिलें, तेव्हां तुझ्या योद्ध्यांची अशी कांहीं विपन्न दशा झाली कीं, त्या वेळीं जणू काय ते नौका फुटल्यामुळें निराश्रित झालेले वणिग्जनच अगाध महासागराच्या परतीरास जाण्याचा प्रयत्न करीत आहेत, असें भासूं लागलें! राजा, कर्णाच्या वधानंतर कौरवदळे अतिशयच भयलीं व अर्जुनाच्या शरप्रहारांनीं अत्यंत घायाळ झालीं! त्या समर्थी, सिंहानें त्रस्त केलेल्या मृगाप्रमाणें त्यांची अगदीं दीन अवस्था झाली; व तीं अनाथ होऊन, आतां ह्या घोर प्रसंगांत आपलें कोण बरें संरक्षण करील अशा विवंचनेंत पडलीं! राजा, सव्यसाची अर्जुनानें तुझ्या सैन्यांना जिकलें तेव्हां शिंगें तोडिलेल्या बैलाप्रमाणें किंवा दांत पाडिलेल्या सर्पाप्रमाणें तीं अगदीं दीन होऊन सायंकाळीं परत आप-आपल्या शिविरांत गेलीं! राजा, सूतपुत्र कर्णाचा वध झाल्यावर तुझ्या सैन्यांची जी दुर्दशा उडाली तिचें काय वर्णन करावें? त्या समर्थी तुझ्या सैन्यांतेल. महान् महान् योद्धे मरण पावले असून, राहिल्यासाहिल्या योद्ध्यांचीं शरीरें जलाल बाणांनीं छिन्नभिन्न होऊन त्यांचा अगदीं विध्वंस उडाला होता! राजा, कर्ण पडला तेव्हां तुझे पुत्र भयभीत होत्साते पळून सुटले! शरप्रहारांनीं त्यांचीं चिलखनें फाटून गेलीं व भयानें त्यांचें देहभान नष्ट झालें! पळत असतां आपण अमुक दिशेस जात आहों हेंही त्यांस अवधान राहिलें नाही! बेहोष होऊन पळत असतां त्यांनीं स्वस्थीय वीरांना सुद्धां ठार मारिलें! अर्जुनाच्या भयानें त्यांस इतकें त्रस्त केलें कीं, त्यांस जिकडे तिकडे पांडवच दिसूं लागले! “अहो, खरोखर माझ्याच मार्गें अर्जुन आला! माझ्याच मार्गें भीमसेन आला!” असें ते मानूं लागले! आणि

त्यांच्या मनाचें धैर्य अंगदीं सुटून ते धडाधड खाली पडले व मूर्च्छित झाले ! राजा, त्या वेळीं कित्येक महारथ घोड्यांवर, कित्येक हत्तीं-वर रथांत, आणि कित्येक पायदळाच्या स्क्रंधावर वगैरे बसून मोठ्या वेगानें धावत सुटले ! तेव्हां त्यांची अशी धांदल उडाली की, हत्तींनी रथ मोडिले. महारथांनीं घोडेस्वार मारिले व अध्वसमुदायांनीं पायदळांस तुडविले ! आणि वन्य पशु व चोरटे ह्यांनीं गजबजलेल्या अरण्यांत ज्याप्रमाणें व्यापाऱ्यांच्या तांड्यापामून दूर राहिलेल्या मनुष्यांची वाताहत होते. त्याप्रमाणें कौरवांच्या त्या सैन्याची अतिशयित वाताहत झाली ! राजा, त्या समयीं कित्येक हत्तींवरील वीर मेले, कित्येक हत्तींच्या शूंड तुटल्या, आणि जिकडे तिकडे भयानें मर्वत्र पार्थ व भीमसेन हे दिगं लागले ! राजा, नंतर भीमसेनाच्या भीतीनें हीं सर्व सैन्ये पळत आहेत असें मनांत आणून दुयोधन राजा आपल्या सारख्याला हाहाकारपूर्वक म्हणाला, “ वा सूता, त्वरा कर, त्वरा कर, रथाचे घोडे लवकर चालव ! माझा रथ ह्या सैन्यांच्या अगदीं मागें असल्यामुळे हीं सर्व सैन्ये भयभीत होऊन पळत आहेत ! ह्यासाठीं मला लवकर पुढें जाऊं दे ! ह्या सैन्यांच्या पृष्ठभागीं हातांत धनुष्यबाण धारण करून मी युद्धार्थ सिद्ध आहे, असें भीमसेनाच्या दृष्टीस पडलें म्हणजे माझ्यावर चालून येण्याची त्याची छाती होणार नाही; आणि तोच प्रकार अर्जुनाचा होऊन, प्रचंड सागराचें जसें त्याच्या मर्यादेपुढें कांहींएक न चालतां त्यास माघार घ्यावी लागते, तशी त्या भीमार्जुनांस माझ्यापुढें माघार घेऊन मागें वळावें लागेल ! सारथे, आतां मी कृष्णार्जुन व अभिमानी भीमसेन आणि त्याप्रमाणेंच प्रमुख प्रमुख शत्रु ह्यांना वधून कर्णाच्या ऋणांतून उतराईं होईन. ”

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें दुयोधनांन

शौर्याला व आपल्या श्रेष्ठ कुलाला साजेसें जें भाषण केलें, तें श्रवण करून त्याच्या सारख्यानें सुवर्णाच्या अलंकारांनीं शृंगारिलेल्या अशा त्या घोड्यांना हलूच इशारा करितांच तो रथ वेगानें चालूं लागला आणि मग गज, अश्व व रथ ह्यांनीं हीन झालेले पुष्कळ शूर वीर आणि पंचवीस हजार पायदळ हळूहळू पांडवांशीं लढण्यास पुढें सरलें ! राजा, नंतर कौरवांच्या व पांडवांच्या सैन्यांचें भयंकर युद्ध सुरू झालें ! त्या समयीं भीमसेन व धृष्टद्युम्न हे क्रोधायमान होऊन चतुरंग सैन्यानिशीं त्या शत्रूसैन्यांवर तुटून पडले आणि त्यांनीं शरांची घोर वृष्टि आरंभिली ! तेव्हां कौरवांकडील योद्ध्यांनींही त्या भीमसेन-धृष्टद्युम्नाशीं मोठ्या निकराचें युद्ध चालविलें आणि त्यांची मोठमोठ्यानें नावें घेऊन त्यांस त्यांनीं चोहोंकडून वेढून टाकिलें ! राजा, त्या वेळीं भीमसेनाला फारच संताप आला व तो त्या कौरवांशीं मोठ्या आवेशानें लढू लागला ! राजा, तेव्हां त्या महाधर्मशील भीमसेनाला रथांतून कौरवांशीं लढणें उचित वाटलें नाहीं; व ते जसें भूतलावर उभे राहून लढत होते, तसेंच आपणही लढावें असें मनांत आणून तो गदिसहवर्तमान रथांतून खाली उतरला आणि केवळ बाहुबलाचा आश्रय करून तो शत्रूंशीं घोर युद्ध करूं लागला ! राजा, त्या समयीं भीमसेनानें आपल्या सुवर्णमंडित प्रचंड गदेचे कौरवांवर इतके भयंकर प्रहार चालविले की, जणू काय तो दंडपाणि यमधर्मच प्राण्यांचा एकसारखा संहार करीत आहे असें सर्वास भासलें ! राजा, ह्याप्रमाणें भीमसेनाच्या हस्ते कौरवांकडील महान् महान् वीर रणांगणांत पतन पावले तेव्हां कौरवांकडील पायदळाला मनस्वी क्रोध आला; आणि टोळांनीं जशी अग्नीवर उडी घालवी, तशी त्यानें रणांत भीमसेनावर उडी घालून त्याशीं घोर युद्ध चालविलें ! राजा,

तेव्हां ते कौरवांकडील शूर पदाति वीर मोठ-
मोठ्यांनै आक्रोश करूं लागले, परंतु भीमसेन
त्यांजवर खड्गांनै व गदेनै प्रहार करीत श्येन-
पक्ष्याप्रमाणें झडपा घालूं लागला, तेव्हां एकाएकीं
अग्रमार्गीं काळ प्राप्त झाला अमतां जशी प्राणि-
समुदायांचीं भयंकर अवस्था होऊन ते सर्व
मृत्युमुखीं पडतात, तशीच कौरवांकडील त्या
सर्वे पायदळाची अवस्था होऊन ते सर्व मृत्यु-
मुखीं पडले! राजा, ह्याप्रमाणें सत्यपराक्रमी
भीमसेन तुझे पंचवीस हजार पायदळ ठार
मारून नंतर धृष्टद्युम्नाला पुढें करून उभा राहिला.
राजा, इकडे वीर्यशाली धनंजयानें, कौरवांचें
जें रथमैन्य पळून जात होतें त्याचा पाठलाग
केला; आणि त्याप्रमाणेंच नकुल, सहदेव व
महाबल सात्यकि ह्यांनीं मोठ्या वीरश्रीनें शकुनी-
वर हल्ला करून त्याच्या सैन्यास प्राणसंक-
टांत घातलें! राजा, त्या समयीं त्यांनीं शकु-
नीचे अनेक घोडेस्वार जलाल शरानीं ठार
मारिले आणि नंतर तत्काळ खुद्द शकुनीवर
चाल केली व मग मोठें तुंबळ युद्ध जुंपलें!
राजा, इकडे अर्जुन सर्व तेलोक्यांत प्रग्यात
अशा गांडीव धनुष्याचा टणत्कार करीत कौर-
वांच्या रथमैन्यांत प्रवेश करितो आहे. तों
आपल्यावर श्वेतहय व कृष्णमारुथि अर्जुन
चालून आला इतकें पाहतांशणींच तुझ्या
सैन्यानीं घाबरून जाऊन पळ काढिला! परंतु
इतक्यांत रथहीन व अश्वहीन झालेले पंचवीस
हजार पायदळ योद्धे बाणांचा भडिमार करीत
अर्जुनावर धावून आले व त्यांनीं त्यास वेदा
दिला. पण तितक्यांत ताबडतोब भीमसेनासह-
वर्तमान पांचालांचा महारथ धृष्टद्युम्न ह्यानें
त्यांजवर हल्ला केला व त्या सर्वांचा विध्वंस
उडविला! राजा, ह्याप्रमाणें तो महाधनुर्धर,
शंभुसंहारक व विजयशाली पांचालराजपुत्र धृष्ट-
द्युम्न हा, ज्यास पारावतवर्णाचे अश्व जोडिले

होते व ज्यावर कोविदाराचा उत्तम ध्वज झळ-
कत होता अशा रथांतून समरभूमीवर परि-
भ्रमण करीत आहे, असें जेव्हां तुझ्या योद्ध्यांनीं
पाहिलें तेव्हां ते भयभीत होतसाते पळून गेले!
राजा, इकडे यशस्वी नकुलसहदेवांनीं सात्यकी-
सह त्वरेनें अस्त्रवृष्टि करणाऱ्या शकुनीवर हल्ला
करून त्यास व त्याच्या सैन्यास अगदीं जर्जर
करून सोडिलें, तों चेकितान, शिखंडी व द्रौप-
दीचे पुत्र ह्यांनीं तुझ्या प्रचंड सेनेचा वध करून
आपआपले शंख वाजविले! राजा, त्या वेळीं
तुझे बाकीचे सैन्य धूम ठोकून पळून जाऊं
लागलें, पण बैलांची झुंज होऊन पळ काढ-
णाऱ्या बैलांचा जसे जय मिळविलेले बैल
मोठ्या त्वेषानें पाठलाग करितात, तसा तुझ्या
त्या सैन्याचा त्या चेकितानादिक पांडवीय
वीरांनीं पाठलाग केला! इतक्यांत, राजा, तुझ्या
पुत्राचें कांहीं अवशिष्ट सैन्य अद्यापि पांडवांशीं
लढण्यास सिद्ध आहे असें पाहून अर्जुनास
मनस्वी क्रोध आला आणि त्यानें तत्काळ
बाणांचा भडिमार करून ते सर्व झांकून टाकिलें!
राजा, त्या वेळीं अंतरिक्षांत धूळ उधळून चोहों-
कडे अंधकार पडला आणि सर्व महीतल बाणांनीं
व्याप्त होऊन कांहींच दिमेनासें झालें आणि
कौरवमैन्य फारच भिऊन सर्व दिशांस पळून
गेलें! राजा, ह्याप्रमाणें तुझ्या सर्व सैन्याचा
मोड झाला तेव्हां कुरुराज दुर्योधन हा फारच
चवताळला व अगदीं बेहोष होऊन आपल्या
व शत्रूंच्या अशा दोन्ही सैन्यांवर मोठ्या
आवेशानें चाल करून गेला! राजा, बलीनें
ज्याप्रमाणें पूर्वी देवांना युद्धार्थ आह्वान केलें
होतें, त्याप्रमाणें त्या समयीं दुर्योधनानें सर्व
पांडवांना युद्धार्थ आह्वान केलें; आणि मग
तो मोठमोठ्यानें गर्जत असतां त्याजवर सर्व
पांडव नानाविध शस्त्रांखांची वृष्टि करीत व
पुनःपुनः त्याला निंदीत एकदम धावून आले!

राजा, तेव्हां दुर्योधनानेही मोठ्या शौर्याने त्यांजवर शरवर्षाव आरंभिला आणि त्यांचा असा मोड करून टाकिला की, तो त्याचा पराक्रम पाहून आत्मांस मोठे आश्चर्य वाटले ! कारण, सर्व पांडवांनाही त्या एकट्या दुर्योधनाला त्या समर्थी मार्गे हटवितां आले नाही ! असो; नंतर राजा, जवळच आपले सैन्य पळून जाण्याच्या वेतांत होते, ते दुर्योधनांनो नीट न्याहाळून पाहिले, तेव्हां ते अतिशय घायाळ झाले आहे असे त्याच्या नजरेस आले ! राजा, नंतर तुझ्या त्या पुत्रांनो समयावर लक्ष देऊन त्या सर्व सैन्याला थांबवून धरिले आणि त्यांतील योद्ध्यांना वीरश्री आणण्याकरितां तो म्हणाला:—वीरहो, पर्वतांवर किंवा भूमीवर असा एकही प्रदेश मला आढळत नाही की, जेथे तुम्ही गेल्यांनो तुमची पांडवांपासून सुटका होईल ! तर मग तुम्ही रणांगणांतून पळून गेल्यांनो लाभ तो कोणता ! अहो, प्रस्तुत समर्थी पांडवांचे सैन्य अगदी थोडे असून कृष्णार्जुन अतिशयित घायाळ झालेले आहेत; ह्यासाठीं जर आपण येथे युद्धास तोंड देऊन उभे राहिलों, तर खर्चात आपण विजयी होऊं ! जर तुम्ही येथून भग्न होऊन पळून जाल, तर तुम्ही पांडवांचे अपराधी असल्यामुळे ते तुम्हांस पाठलाग करून ठार मारतील हें पक्के समजा ! म्हणून, वीरहो, पळून जाऊन मृत्युमुखी पडण्यापेक्षा आपण लढाई करून धारतीर्थी पतन पावलों तर ते श्रेयस्कर नाही का ? अहो, क्षात्रधर्माने युद्ध करून संग्रामांत मरण आलेले फार उत्तम ! कारण, अशा प्रकारें मृत झालेल्या प्राण्याला दुःख मुळीच होत नाही व शिवाय मेल्यावर त्यास सद्गति प्राप्त होते ! ह्या स्थळी प्राप्त झालेल्या सर्व क्षत्रियांनो, जर तुम्ही येथून पळून गेलां तर तुमचा शत्रु जो भीमसेन त्याच्या कचाटीत सांपडलांच म्हणून समजा ! ह्यासाठीं,

वाडवडिलांनी आचरिलेल्या मार्गांचे तुम्हीं उल्लंघन करूं नये हें सर्वथैव इष्ट होय ! अहो, रणांगणांतून पळून जाण्यापेक्षा अधिक भयंकर असे क्षत्रियाला पातक नाही ! कौरवहो, क्षत्रियाला युद्धधर्मापेक्षा अधिक श्रेयस्कर असा दुसरा कोणताही स्वर्गास जाण्याचा मार्ग नाही ! अहो, जो लोक मिळण्यास अत्यंत काळ लागतो, तो लोक युद्धधर्माने वागणाऱ्या पुरुषाला युद्धापासून तत्काळ प्राप्त होतो !

राजा धृतराष्ट्रा, कौरवांकडील महारथांनी दुर्योधनाचे ते भाषण शिरसा मान्य केले; आणि हार घेऊन पळून जाणें नापसंत ठरवून ते सर्व क्षत्रिय तत्काळ पांडवांशी तोंड देऊन लढण्यास सिद्ध झाले ! राजा, नंतर पुनः दोन्ही दळांत देवदानवांप्रमाणें मोठे दारुण युद्ध सुरू झाले ! राजा, त्या समर्थी दुर्योधनांनो सर्व कौरवसेनेसहवर्तमान युधिष्ठिरप्रमुख सर्व पांडवांवर हल्ला केला; व मग मोठा भयंकर संग्राम प्रवर्तला !

अध्याय चौथा.

—:०:—

कृपाचार्यांचे भाषण.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, मग रणांगणांत महान् महान् योद्ध्यांचे रथ व त्याप्रमाणेंच कित्येक रथांवरील सारथि बसण्याचीं आसनें मोडून पडलीं, तसाच जिकडे तिकडे हत्तींचा व पायदळांतील सैनिकांचा संहार उडाला, आणि ती समरभूमि रुद्राच्या क्रीडास्थानाप्रमाणें अतिशय भयंकर दिसूं लागली ! राजा, तेव्हां लक्षावधि भूपाळ समरांगणांत पडून नामशेष झाले आणि त्यामुळे दुर्योधनाच्या हृदयाला दुःखाची धडकी बसून तो युद्धापासून पराङ्मुख झाला, व अर्जुनाचा तो लोकोत्तर पराक्रम अवलोकन करून तुझ्या सर्व सैन्याचा धीर अजीबात सुटला ! राजा, त्या समर्थी

तुझ्या सैन्यांत मोठा हाहाकार उडाला व आतां पुढें काय करावें ह्या विवंचनेंत प्रत्येक वीर पडला ! इतक्यांत पांडवांनीं तुझ्या सैन्याचा घोर नाश आरंभिला व त्यामुळें सर्व वीर मोठ-मोठ्यानें आक्रोश करूं लागले ! राजा, त्या वेळीं समरभूमीवर रणसंमर्द चालू असतां महान् महान् राजांचीं आभरणें भूतलावर पडलीं ! आणि तो सर्व हृदयविदारक देखावा पाहून वयोवृद्ध व उत्तमशील संपन्न अशा कृपाचार्याला मनस्वी करुणा उत्पन्न झाली व तो दिव्यतेजस्वी आणि उत्कृष्ट वक्ता ब्राह्मण दुर्योधन राजाच्या समीप येऊन त्यास मोठ्या द्दीनतेनें म्हणाला:—दुर्योधना, मी जें तुला सांगत आहे, तें नीट ऐकून घे; आणि जर तें तुला रुचेलें, तर तूं त्याप्रमाणें वाग. राजेंद्रा, युद्धधर्म हाच क्षत्रियांला श्रेयस्कर मार्ग आहे, त्याहून अधिक श्रेयस्कर असा दुसरा कोणताही मार्ग नाही. क्षत्रियश्रेष्ठा, क्षत्रिय हे नित्य युद्धधर्माचाच आश्रय करून युद्ध करितात. बाचारे, क्षात्रधर्माचें आचरण करणाऱ्या पुरुषांला पुत्र, भ्राता, पिता, भाचा, मामा, आप्त इत्यादिकांशीं देखील युद्ध केलें पाहिजे ! रणांगणांत वेह ठेवणें हा क्षत्रियांचा महान् धर्म होय व रणांतून पळून जाणें हा त्यांचा महान् अधर्म होय ! बाबा, जे कोणी जीव जगविण्याकरितां युद्धविमुख होतसाते पळून जातात त्यांस घोर नरकांत दिवस कंठावे लागतात ! ह्यास्तव, राजा, मी तुला कांहीं हिताची गोष्ट सांगतां, ती श्रवण कर. राजा, ह्या घोर युद्धांत भीष्म व द्रोण पडले, महारथ कर्णाचाही अंत झाला, जयद्रथ व तुझे भ्राते मारले गेले. आणि तुझा पुत्र लक्ष्मण ह्याचीही तीच वाट लागली; तेव्हां आतां असे कोण अवशिष्ट आहेत कीं, ज्यांसाठीं तुला कांहीं तरी कर्तव्य अवश्य आहे ? राजा, ज्यांवर सर्व भार टाकून त्वां निष्कंठक राज्याची इच्छा धरिली. ते सर्व शूर वीर रणांत देह

ठेवून ब्रह्मनिष्ठांच्या गतीला गेले ! आणि आपण तर येथें गुणसंपन्न महारथांनीं वियुक्त होतसाते पुष्कळ राजे लोकांना मृत्युमुखांत लोटून अनुचित कर्म करीत आहों; ह्यास्तव आपल्याला पुढें दुःखांत दिवस कंठावे लागतील ! राजा, आज सर्व महारथ जिवंत असते तरी देखील अर्जुनाचा पराभव घडला नसता ! कारण, त्या महाबाहूचा शास्ता कृष्ण हा अमल्यामुळें देव देखील त्याचा पराजय करण्यास असमर्थ आहेत ! राजा, क्रौरवसेना केवढी अफाट; पण ती जेव्हां इंद्रधनुष्याप्रमाणें कांतिमान् व इंद्रध्वजाप्रमाणें अतिशय उंच अशा वानराधिष्ठित अर्जुनध्वजाच्या समीप प्राप्त झाली, तेव्हां तिची कशी त्रेधा उडाली ती तूं पाहिलीसना ! दुर्योधना, भीमाचा सिंहनाद, कृष्णाचा पांचजन्यध्वनि व अर्जुनाचा गांडीवनिर्घोष हे कानीं पडतांच अंतःकरणें विदीर्ण होऊन किती बरें मूर्च्छा येते ! दुर्योधना, गांडीव धनुष्याची प्रत्यंचा दृष्टीस पडली म्हणजे जणू काय महान् वीज लवत आहे किंवा अलातचक्र (कोलितानें वर्तुल) गरगरां फिरत आहे असें वाटून आपले डोळेच दिपून जातात ! राजा, सुवर्णालंकृत असें तें अर्जुनाचें प्रचंड धनुष्य एकदां संचलित झालें म्हणजे जणू काय दशदिशांच्या ठायीं मेघसमुदायांवर विद्युलताच नृत्य करीत आहे असा भास होतो ! राजा, अर्जुनाच्या रथाला जोडिलेले ते वेगशाली श्वेत अश्व चंद्राप्रमाणें किंवा काशतृणाप्रमाणें आपली प्रभा इतस्ततः प्रसृत करीत एकदां चालूं लागले म्हणजे जणू काय अंतरिक्ष पीतच आहेत असें भासतें ! आणि वायूनें ज्याप्रमाणें मेघमंडळाला प्रेरणा द्यावी, त्याप्रमाणें कृष्णानें त्या अश्वाना प्रेरणा दिली म्हणजे सुवर्णालंकारांनीं शृंगारलेले ते अश्व हां हां म्हणतां अर्जुनाचा रथ समरांगणांत घेऊन येतात ! राजा, शिशिर ऋतूंत भयंकर अग्नीनें जसें गवताला

जाळून टाकावे, तसे त्या अस्त्रविशारद अर्जुनाने तुझे ते सर्व सैन्य जाळून टाकिले! राजा, महद्वा-
सारखा दिव्यपराक्रमी असा तो धनंजय जेव्हा
आपल्या सैन्यांत घुसला, तेव्हा जणू काय तो
चार दांतांचा हत्तीच होय असे आपणांस
घाटले! राजा, नंतर त्याने आपल्या सर्व सेनेची
जी दाणादाण व नासाडी उडविली आणि
तिच्या योगे आपल्याकडील भूपाळांना जी
भीति उत्पन्न झाली, ती पाहून जणू काय हत्तीच
कमलिनीचा विश्वंस करीत आहे असे सर्वांस
भासले! तो धनुष्याच्या टणत्काराने जेव्हा
कौरववीरांची घादल उडवू लागला, तेव्हा
जणू काय सिंहच गर्जना करून हरणांच्या
कळपांची पळापळ उडवीत आहे असे दिसें
लागले! आणि सर्व लोकांत अत्यंत श्रेष्ठ असे
ते दोन कवचधारी महाधनुर्धर वीरशिरोमणि
कृष्णार्जुन सर्व लोकांत अत्यंत शोभले! राजा,
हा अतिघोर संग्राम सुरू होऊन आज मतरा
दिवस झाले व ह्यांत दोन्ही पक्षांकडील अग-
णित योद्धे समरांगणी पडले! राजा, शरदृत्-
तल्या भेधसमुदायांना वारा उधळून लावितो,
तद्वत् शत्रूंनी तुझी सैन्ये उधळून लाविली आणि
त्यांचा जिकडे तिकडे भयंकर संहार झाला!
राजा, महासगरांत वान्याने पालथी पाडिलेली
नौका जशी हालते, तशी तुझी सेना मव्यसाची
अर्जुनाने हालवून सोडिली! दुर्योधना, जयद्र-
थाच्या वधसमर्थी तुझा तो सूतपुत्र कर्ण कोठे
होता? तसाच तो अनुयायांसह द्रोण कोठे
होता? तसाच मी कोठे होतो? तू कोठे होतास?
हार्दिन्य (कृतवर्मा) कोठे होता? दुःशामन
कोठे होता? व त्याप्रमाणेच तुझे ते इतर भ्राते
कोठे होते? राजा, आपल्या बाणांच्या आटो-
क्यांत जयद्रथ आला असे पाहून अर्जुनाने
तुझे ते भ्राते, मामा, साहाय्यकर्ते व संबंधिजन
ह्या सर्वांचा पराभव करून व त्यांच्या मस्तकां-

वर पाय देऊन त्यांच्या देखत जयद्रथाला ठार
मारिले, तेव्हा ह्यावरून आपल्या शौर्याची व
कर्तृत्वाची परीक्षा झाली नाही का? ह्यास्तव,
राजा, आपण आतां करणार तें काय? अरे,
ह्या भूतलावर असा कोण पुरुष आहे की, तो
अर्जुनाचा पराभव करील? अरे त्या महाधनु-
र्धराची दिव्य व विविध अस्त्रे आणि त्याप्रमाणेच
त्याच्या गांडीवाचा तो निर्घोष ह्याच्या योगे
आमचे सर्व धैर्य अस्तंगत होते! राजा,
तुझ्या ह्या सेनेचा नायक हत झाल्यामुळे ही
सेना चंद्रहीन रात्रीप्रमाणे अगदी निस्तेज झाली
आहे! सुकून गेलेल्या नदीचे कांठावरील वृक्ष
हत्तीने मोडून टाकिले असतां ती जशी अति-
शय उदास दिसते, तशी ही सेना उदास दिसत
आहे! राजा, प्रस्तुत समर्थी ह्या सेनेचा अधि-
पति अस्तंगत झाल्यामुळे ही जणू काय नेत्र-
हीनच झाली आहे; ह्यास्तव जर आपण ह्यापुढे
युद्ध चालविले तर महाबाहु अर्जुन हा खुशाल
हिंजमध्ये यथेष्ट संचार करील; व अशी जसा
गवताच्या गंजी जालितो तसा तो ही सेना
जाळून टाकील! दुर्योधना, मात्यकीचा व भीम-
सेनाचा वेग इतका दुरधर आहे की, तो पर्वत
विदारिल किंवा समुद्र कोरडे पाडील! राजा,
भीमसेनाने सभेमध्ये जें म्हटलें होतें, तें बहु-
तेक खरे करून दाखविलें व जें राहिलेसाहिले
असेल तें तो लवकरच खरे करील! दुर्योधना,
कर्ण हा सेनापति असतांना अर्जुनाने पांडवांच्या
सेनेचे कसे संरक्षण केले व त्यामुळे तें व्यह
करून उभे राहिलेले सैन्य किती प्रबळ झाले,
हे तू पाहिलेंच आहेस! राजा, तुम्ही पांडवां-
कडे कांहीं एक दोष नसतां विनाकारण जी
अनुचित कर्मे करून त्यांस पीडा दिली,
त्यांचेच हे फल तुम्हांस प्राप्त झाले! राजा, तूं
केवळ स्वार्थाकरितां मोठ्या खटाटोपांने ही सर्व
मंडळी जमविलीस आणि त्यांना व स्वतःला

प्राणसंकटांत घालून घेतलेंस ! राजा, झालें तें झालें; आतां तूं आपला स्वतःचा तरी जीव जगव ! बाबां, जर हा जीव जगेल, तर सर्व कांहीं अनुकूल होईल ! पहा, भाडेंच जर फुटलें, तर त्यांतिल पदार्थ वाहून गेल्याशिवाय राहिल काय ? ह्यामाठी, दुर्योधना, आतां दूरवर दृष्टि दे ! बाबा, पडत्या पक्षानें किंवा बरोबरीच्या पक्षानें संघिच करणें प्रशस्त ! जो पक्ष वृद्धिगत होत असेल, त्यानें मात्र युद्धास प्रवृत्त व्हावें, असें बृहस्पतीचें मत आहे ! ह्यामाठी तूं प्रस्तुत काळीं संघी करावा हेंच श्रेयस्कर नव्हे काय ? कारण, जे पूर्वी आपण बलांन व शक्तीनें पांडवांपेक्षां प्रबळ होतो, ते आपण आतां पांडवांपेक्षां न्यून झालों आहां; म्हणून आतां आपण पांडवांशीं संघी करावा हेंच योग्य आहे ! राजा, ज्याला आपलें हित कशांत आहे हें समजत नाही, किंवा जो तें जाणत असूनही त्याचा अवमान करितो, त्याची मोठी हानि होते व तो राज्यादिकांला तत्काळ अंतरतो ! दुर्योधना, आपण जर युधिष्ठिराची प्रार्थना करून राज्य संपादिलें, तर त्यापासून आपलें जें कल्याण होईल, तसें कल्याण आपण पांडवांशीं युद्ध करून त्यांत पराभव झाल्यावर होणार नाही ! राजा, धर्मराज युधिष्ठिर मोठा दयाळू आहे. तो विचित्रवीर्यपुत्राच्या (धृतराष्ट्राच्या) व कृष्णाच्या सांगण्यावरून तुला राज्याधिकार देईल ! राजा, विजयशाली युधिष्ठिर, अर्जुन व भीममेन ह्यांस हर्षिकेश कृष्ण जें सांगेल तें ते निःसंशयपणें करतील ! राजा, कौरवेश्वर धृतराष्ट्राच्या वचनाचा अनादर कृष्ण केव्हांही करणार नाही ! आणि कृष्ण जें सांगेल, तें पांडुपुत्र निश्चयानें करीलच ! राजा, ह्यास्तव पांडवांशीं युद्ध न करितां त्यांच्याशीं गोडी करावी हेंच सर्वथा प्रशस्त ! राजा, माझ्या मनांत तुझ्याविषयीं कांहीं दुष्ट

बुद्धि वसत आहे, किंवा मी प्राणरक्षणार्थ झटत आहे, म्हणून मी तुला असें सांगतो, असें मानू नकोः—जो मार्ग मला खरोखरी हितावह वाटतो, तोच मी तुला सांगत आहे. ह्याचा जर तूं अनादर करशील, तर तुला मरण प्राप्त झाल्यावर मग तूं मला स्मरशील ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें वृद्ध शारद्वत कृपाचार्य दुर्योधनाला म्हणाला व पुष्कळ रडला; आणि अखेरीस दीर्घ व उष्ण सुस्कारे टाकीत हुंदके देत असतां त्याचें देहभान नष्ट झालें !

अध्याय पांचवा.

—:०:—

दुर्योधनाचें भाषण.

संजय सांगतोः—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें कृपाचार्यानें मोठ्या काकुळतीनें भाषण केलें तें श्रवण करून दुर्योधनानें दुःखाचा मोठा उष्ण सुस्कारा टाकिला आणि तो स्तब्ध राहिला ! राजा, नंतर महात्म्या शत्रुसंहारक दुर्योधनानें क्षणभर मनन केलें आणि मग तो कृपाचार्याला म्हणालाः—शारद्वता कृपाचार्य, सुहृदानें जें कांहीं सांगावयास पाहिजे तें सर्व तूं मला सांगितलें आहेस; त्याप्रमाणेंच, तूं जिवाची आशा न ठेवितां भयंकर युद्ध करून माझ्याकरितां जें करणें विहित होतें, तें सर्व केलें आहेस; आणि अतिशय पराक्रमी अशा महारथ पांडवांशीं युद्ध करितांना तूं त्यांच्या सैन्यांची दुर्दशा उडविलीस, तीही सर्व लोकांनीं पाहिली आहे ! शारद्वता, मित्रांन जें जें कांहीं सांगणें अवश्य, तें सर्व तूं मला विदित केलेंस; तरी आसन्नमृत्यु प्राण्याला जसें औषध रुचत नाही, तसें तुझें हें भाषण मला मुळींच रुचत नाही ! हे विप्रवर्या, तुझें भाषण हेतु व कारणें ह्यांनीं युक्त असल्यामुळें मोठें न्याय्य व हितकर असें आहे; परंतु, हे महाबाहो, मला मात्र

ते पसंत पडत नाही ! कृपाचार्या, तुझे म्हणणें आतां आपण पांडवांशीं सख्य करावें हेंच ना ? पण ती गोष्ट कशी घडेल ? पहा, ज्या युधिष्ठिराला आम्हीं राज्यभ्रष्ट केले, तो आतां पुनः आमच्यावर कसा विश्वास ठेवील बरें ? अरे, ज्या महाधनाढ्य भूपतीला आम्हीं अक्षय्यतांत जिंकिलें, तो आतां पुनः माझे भाषण कसे खरें मानील बरें ? त्याप्रमाणेंच, हे द्विजश्रेष्ठा, निरंतर पार्थाच्या हितासाठीं तत्पर असा कृष्ण आमच्याकडे शिष्टाई करण्याकरितां आला असतां आम्हीं त्यास फसविलें हा आमचा केवढा अविचार बरें ? तेव्हां आतां फिरून कृष्ण माझ्या शब्दावर कसा बरें भरवसा ठेवील ? ब्रह्मवर्या, मभेमध्ये प्राप्त झाल्यावर द्रौपदीनें जे विलाप केले ते कृष्ण विमरला असेल असें तुला वाटतें काय ? मला तर असें वाटतें कीं, द्रौपदीचे ते विलाप व पांडवांचे तें राज्यहरण ह्या दोन्ही गोष्टी कृष्णाच्या मनांत नित्य घोळत असतील ! ब्राह्मणा, कृष्णार्जुन हे दिसायला मात्र पृथक् पृथक्, पण वास्तविकपणें ते एकजीव असून सदांमर्वकाळ एकमेकांच्या आश्रयानें राहतात, असें जें मी पूर्वी ऐकिलें होतें, तें मी आज प्रत्यक्ष पाहत आहे ! कृपाचार्या, रणांगणांत अभिमन्यु पडला हें वर्तमान ममजल्यापामून कृष्णाला धड झोंप येत नाही.—तो एकमागखा दुःखानें तळमळत आहे; तेव्हां तो आपल्या अपराध्यांना म्हणजे आम्हांला कशी क्षमा करील बरें ! शारद्वता, अभिमन्युच्या वधामुळें अर्जुनाची शांति अगदीच नष्ट झाली आहे; तेव्हां मीं जरी त्याची प्रार्थना केली, तरी तो माझ्या हितासाठीं कसा झटेल बरें ? कृपाचार्या, मध्यम पांडव भीमसेन हा मोठा भयंकर व प्रबळ आहे, त्यानें तर घोर प्रतिज्ञा केली आहे, तेव्हां तो तुटेल तरी वांकावयाचा नाही ! ब्राह्मणा, आतां राहिले ते दोघे जुळे पांडुपुत्र नकुलमह-

देव ! ते दोघेही शूर वीर कवचें घालून व खड्डें घेऊन यमाप्रमाणें मला वधण्याची वाट पहात आहेत ! त्याप्रमाणेंच धृष्टद्युम्न व शिखंडी हेही मला पाण्यांत पाहात आहेत, तेव्हां त्यांच्याकडून माझ्या हिताविषयीं कसा प्रयत्न होईल बरें ? द्विजश्रेष्ठा, दुःशासनानें द्रौपदी ही रजस्वला व एकवस्त्रा अशी असतांना तिला मभेमध्ये फरफरां ओढीत आणून सर्वांच्या समक्ष तिची विटंबना केली ही गोष्ट ते प्रतापी पांडव कशी विसरतील बरें ? ब्रह्मवर्या, वस्त्रहीन अशा द्रौपदीची ती दीन मुद्रा अद्यापि पांडवांच्या दृष्टीपुढें आहे; ह्यास्तव त्यांना युद्धापामून कोणीही परावृत्त करूं शकणार नाही ! कृपाचार्या, ज्या वेळीं आम्हीं द्रौपदीला क्लेश दिले, त्या वेळेपामून त्या दुःखित द्रौपदीनें भूमीवर शयन करून माझ्या नाशाकरितां आणि आपल्या भन्यांच्या अर्थसिद्धीकरितां घोर तपश्चर्या चालविली आहे व ही तिची घोर तपश्चर्या वैराच्या समाप्तीपर्यंत अशीच चालणार आहे. कृपाचार्या, काय त्या द्रौपदीची थोरवी मांगावी ! वासुदेवाची सख्खी बहीण मुभद्रा ही आपला मान व गर्व टाकून द्रौपदीची दाम्नी बनून तिची नित्य शुश्रूषा करीत आहे ! द्विजवरा, ह्याप्रमाणें कलहाशीची ज्वाला जी इतकी भडकली ती आतां शांत होणें अशक्य होय ! आतां पांडवांशीं संधि होईल हें मनांत मुद्दां आणूं नको ! आपल्या हातून अभिमन्युचा वध घडल्यामुळें धर्मराजा आपणांशीं तह करण्यास कसा तयार होईल ? बरें, मीं तरी आजवर ह्या समुद्र-वल्यांकित पृथ्वीचा उपभोग घेऊन ह्याच्यापुढें केवळ पांडवांच्या कृपेनें राज्याचा कसा उपभोग घ्यावा ! अरे, निरंतर ज्यानें सूर्याप्रमाणें सर्व राजांवर आपला प्रताप गाजविला, त्या म्यां युधिष्ठिराच्या मागून किंकराप्रमाणें कसें अनुवर्तन करावें ? अरे, ज्यानें स्वतः पुष्कळ भोग

भोगिले व इतरांनाही बहुत संपत्ति अर्पण केली, त्या म्यां आतां नीच लोकांसहवर्तमान नीच वृत्तीनें कमे दिवस कंठावे बरे ? कृपाचार्या, तूं जी कांहीं मोठ्या काकुळतीनें मला हिताची गोष्ट मागितलीस, तिचा मी द्वेष करित नाही; परंतु इतकेंच मागतो कीं, हा समय मात्र मंधि करण्यास योग्य असा नव्हे ! हे शत्रुतापना, ह्या वेळीं अतिशय उचित अशी गोष्ट म्हणशील तर उत्तम प्रकारें युद्ध करणें हीच होय ! ब्राह्मणा, ह्या समर्था पंडत्व पतकरणें हें सर्वथा अनुचित; ह्यामाठीं आम्हीं निकारनें युद्ध करावें हेंच विहित ! शारद्वता. मी पुष्कळ यज्ञयाग केले, ब्राह्मणांना विपुल दक्षिणा दिल्या. सर्व मनोरथ सिद्धीस नेले. वेद ऐकिले, आणि शत्रूंच्या मन्त्रकांवर उभाही राहिलों ! मी आपल्या नाकरांना समृद्ध केले. दीनजनांना संकटांतून उद्धरिलें. परराष्ट्रे जिंकिलीं, स्वराष्ट्रांचें परिपालन केले, विविध भोग भोगिले. धर्म, अर्थ व काम हे जोडिले. पितरांच्या ऋणांतून उत्तीर्ण झालों, आणि क्षात्रधर्मही उत्तम प्रकारें पाळिला ! तथापि मला सुख म्हणून कोठें प्राप्त झाले नाही ! तेव्हां राष्ट्र व यश ह्यांची मला पर्वा ती कोणती ! ह्या लोकांनीं कीर्ति संपादन करणें हेंच कर्तव्य; आणि ती तरी युद्धानेंच मिळवावी. दुसऱ्या मार्गांनीं मिळविणें अयोग्य ! ह्यास्तव. ब्राह्मणश्रेष्ठा. पांडवांपाशीं मी हे अमले हीन उद्धार काढण्यास तयार नाही ! हे रणशूरा. क्षत्रियानें घरांत मरवें हें सर्वथा निंद्य; घरांत अंधरुगावर पडून मरणें हा क्षत्रियाला मोठा अवघड आहे ! अरे, जो मनुष्य महान् महान् यज्ञ करून अरण्यांत किंवा संभ्रामांत आपला देह ठेवितो, तो प्रतिष्ठा जोडितो ! आणि जो मनुष्य जरेंनें व दुखण्याबाहण्यानें आर्त होऊन दीनासारखा रडत आरडत आपल्या आक्रोश करणाऱ्या आसांमध्ये मरण पावतो, तो खचीत

पुरुषच नव्हे ! कृपाचार्या, मी आतां पांडवांशीं घोर युद्ध करून, जे पुरुष विविध भोगांना सोडून देऊन श्रेष्ठ गतीला पोचले आहेत त्यांमध्ये जाऊन बसेन ! अरे जे महाबुद्धिमान् शूर पुरुष सदाचरण ठेवितात, संभ्रामांतून निवृत्त होत नाहीत, आपली प्रतिज्ञा खरी करून दाखवितात, यज्ञयागादि करितात, व शास्त्रयज्ञांत स्वतःची आहुति देऊन पवित्र होतात, त्या सर्वांना निःसंशयपणें स्वर्गांत स्थान मिळते ! असे पुरुष समरांगणांत लढत असतां अप्सरांचे समुदाय खचीत त्यांजकडे अभिलाषाबुद्धीनें पहात असतात, आणि हे वीर धारा तीर्थां देह ठेवून स्वर्गास गेले ह्याजने त्याच्या मेवेमाठीं त्याजभोवतीं अप्सरा जमल्या असून त्यांस मोठा आनंद झाला आहे व सुरसभेंतही त्यांचा मोठा जयजयकार चालला आहे असें निश्चयानें त्यांच्या पितरांच्या दृष्टीस पडतें ! कृपाचार्या, ज्या मार्गांनें देव व संभ्रामांतून विमुख न होणारे शूर पुरुष गेले, त्याच थोर मार्गांचें आपण अवलंबन केले पाहिजे ! पहा, वृद्ध पितामह भीष्म, महाबुद्धिमान् गुरु द्रोण, त्याप्रमाणेंच जयद्रथ, कर्ण, दुःशासन इत्यादि सर्व थोर योद्ध्यांनीं ह्याच मार्गांचें अवलंबन केले नाही काय ? अरे, माझा कार्यभाग घडवून आणण्याकरितां अनेक शूर राजे रणांत हत झाले व अनेकांचे देह बाणप्रहारांनीं भंग होतसाते रक्तांत माखून भूमीवर पडले ! द्विजश्रेष्ठा, ते शास्त्राखवेत्ते शूर पुरुष व त्याप्रमाणेंच जे कोणी यथाशास्त्र यज्ञाराधन करितात ते पुरुष मेल्यानंतर हक्कांनें इंद्राच्या सदनांत स्थान मिळवितात ! ब्रह्मन्, त्या महापुरुषांनीं जो मार्ग स्वतः घालून दिला आहे, तो जर्री अवघड असला, तरी त्यापामून सुख होईल ह्यांत संदेह नाही; कारण जे पुरुष ह्या मार्गांचें मोठ्या शौर्यानें अवलंबन करितोले ते अखेरिस सद्-

तीस जातील ! कृपाचार्या, हा देह जगवावा व राजवैभव भोगावें ही गोष्ट कबूल न करण्यास ह्याशिवाय आणखीही कारणे आहेत. ती कोणती ह्यणशील तर, ज्या शूरांनी माझ्यासाठी धारातीर्थी अपले देह ठेविले, त्यांच्या उपकारांचा विचार केला ह्यणजे त्यांच्या ऋणाची फेड केल्यावांचून मी राज्यवैभव भोगावें हें उचित नव्हे ! आजे, भ्राते व मित्र ह्यांचा घात करून जर मी आपले हे प्राण राखण्याच्या भरीस पडलों, तर खचीत लोक मला हंसतील ! अरे, आसमुहदांचा व भावांबंधूंचा वियोग सोमून राज्य मिळविणें—व तेंही विजय प्राप्त झाला ह्यणून नव्हे, तर विशेषकरून शत्रूंना पदर पसरून मिळविणें ह्यापेक्षा अधिक हीन असें कृत्य तरी कोणतें ? मला तर हें कृत्य अगदीं लाजिरवाणें वाटतें ! ह्यासाठी, ज्यानें या सर्व जगताला जिंकून त्यावर आपलें आधिपत्य स्थापिलें, तो मी उत्तम प्रकारेंकरून शत्रूंशीं लढेन व नंतर स्वर्ग मिळवीन ! ह्यावांचून अन्य उपायाची मला गरज नाही !

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें दुर्योधनाचें भाषण श्रवण करून सर्व क्षत्रियांनीं त्याची मोठी वाहवा केली व त्याचे धन्यवाद गाइले ! तेव्हां पराभव झाल्याबद्दल जें त्यांस दुःख झालें होतें, तें ते तत्काळ विसरले; आणि प्रताप गाजविण्याची इर्षा धरून मोठ्या वीरश्रीनें त्या सर्वांनीं लढण्याचा निश्चय ठरविला ! राजा, नंतर त्या कौरववीरांनीं आपल्या घोड्यांना थोडा विसावा दिला; आणि मग युद्धाच्या उत्कट इच्छेनें रणभूमीपामून दोन योजनांहून थोडें कमी इतक्या अंतरावर दूर जाऊन, तेथें हिमालयाच्या पायथ्याशीं सुंदर, पवित्र व रमणीय अशा पठारावर मोकल्या जागीं तळ दिला व मरस्वतीच्या कांठीं लल उदकांत स्नानें करून ते तिचें पाणी प्याले ! राजा, ते सर्व वीर युद्धार्थ पुनः सिद्ध

झाले; ह्याचें कारण त्यांना तुझ्या पुत्रानें चेंव आणिला हेंच होय ! असो; नंतर त्यांनीं आपल्या मनाची भीति घालविली व त्याप्रमाणेंच इतरांनाही त्वेष उत्पन्न केला; आणि कालानें प्रेरित केलेले ते सर्व कौरवयोद्धे पुनः युद्धाची वाट पाहात बसले !

अध्याय सहावा.

—:०:—

शल्यभिषेकविचार.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें हिमालयाच्या पायथ्याशीं पठारावर युद्धासाठीं आतुर झालेल्या त्या सर्व कौरवसेनेचा तळ पडला असतां त्या स्थळीं सर्व महान् महान् योद्धे मिळाले. तेथें शल्य, चित्रसेन, महारथ शकुनि, अश्र्वत्थामा, कृपाचार्य, सात्वत कृतवर्मा, सुषेण, अरिष्टसेन, वीर्यवान् धृतसेन, जयत्सेन वगैरे सर्व भूपाळ जमले व त्यांनीं रात्र तेथें घालविली. राजा, रणांगणांत कर्ण पडल्यावर विजयशाली पांडवांचा इतका दरारा बसला कीं, तुझ्या पुत्रांच्या मनाला स्वास्थ्य ह्यणून मिळालेच नाही; पण ते ह्या स्थळीं हिमालयाच्या पठारावर आले तेव्हां मात्र त्यांस पुनः वीरश्री उत्पन्न झाली. राजा धृतराष्ट्रा, नंतर युद्ध करण्याचा निर्धार करून ते सर्व कौरव दुर्योधन राजाकडे गेले व त्याची यथाविधि पूजा करून शल्याच्या समक्ष त्यास ह्यणाले:—राजा दुर्योधना, तूं कोणी तरी सेनापति करून शत्रूंशीं लढण्यास सिद्ध व्हावें हें उचित होय. राजा, तूं सेनापतीची नेमणूक केलीस ह्यणजे तो आमचें संरक्षण करील व आझी शत्रूंना समरांगणांत जिंकूं !

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर दुर्योधन रथांत अधिष्ठित होता तो तसाच अश्र्वत्थाम्याच्या समीप प्राप्त झाला. राजा, त्या द्रोणपुत्र अश्र्वत्थाम्याचें

काय वर्णन करावें ? तो रथवराप्रणी युद्ध-कल्लेत मोठा निपुण होता; युद्धांतले नानाविध हेतु त्यास उत्तम अवगत होते; रणांगणांत जणू काय तो प्रतियमच होता; त्याचे सर्व अवयव सुंदर असून त्याचें मस्तक शिरोभूषणानें आच्छादित होतें; त्याची मान शंखाप्रमाणें त्रिवलीनें युक्त होती; तो मोठें गोड भाषण करीत असे; त्याचे नेत्र प्रफुल्लित कमलपत्राप्रमाणें दीर्घ व सतेज होते; त्याचें मुख वाघाच्या मुखाप्रमाणें उग्र होतें; मेरु पर्वताप्रमाणें तो भव्य होता; त्याचा खांदा, नेत्र, गति व स्वर हीं शंकराच्या नंदीप्रमाणें होती; त्याचे बाहुपृष्ठ व दीर्घ असून त्याचे सांधे मोठे बळकट होते; त्याची छाती फार रुंद व भरदार होती; त्याचें बल व वेग हीं गरुड व वायु ह्यांप्रमाणें होती; त्याची कांति सूर्याप्रमाणें व बुद्धि शुक्राप्रमाणें होती; त्याचें तेज, रूप व मुख हीं चंद्राप्रमाणें मोहक होती; त्याचें शरीर जणू काय सुवर्णकमलें एकत्र सांधून बनविलें होतें; त्याची कमर, मांड्या व पोटाच्या अगदीं वाटोळ्या गरगरीत होत्या; त्याचीं पावले, बोटें व नखें सुंदर होती; जणू काय ब्रह्मदेवांन कोठें काय गुण आहेत ह्याचे पुनःपुनः स्मरण करून तो देह मोठ्या प्रयत्नानें घडविला होता; त्याच्या ठिकाणीं सर्व लक्षणें विद्यमान असून त्यास सर्व श्रुति उत्तम येत होत्या; तो शत्रूंना मोठ्या आवेशानें जिक्रीत असे; शत्रु कितीही बलवान् असले तरी त्यांची त्याच्या-पुढें मात्रा चालत नसे; त्याला धनुर्वेदाचे चारही पाद व दहाही अंगें उपलब्ध होती; त्यास चारही वेद व इतिहास सांग विदित होते; अयोनिसंभव महातपस्वी द्रोणाचार्यानें ज्यंवाकाची उग्र व्रतांनीं एकाग्र आराधना केली, तेव्हां त्यापासून अयोनिसंभव स्त्रीच्या ठिकाणीं त्याचें जन्म झालें; त्याचें कर्म लोकोत्तर होतें; त्याचें सौंदर्यही ह्या भूतलावर अलौकिक होतें; तो सर्व

विद्यांत पारंगत होता; तो सद्गुणांचा केवळ सागरच होता; आणि त्याच्या ठायीं अव-गुणांचा तर लेशही नव्हता ! राजा धृतराष्ट्र, अशा त्या सर्वतोपरी महासमर्थ अश्वत्थाम्याच्या समीप तुझा पुत्र आला व त्यास म्हणालाः— हे गुरुपुत्रा, तूं आज आम्हां सर्वांना महान् आधार आहेस ! ह्यास्तव, कोणाला सेनापति केल्यानें आपणाला रणांत पांडव जिंकितां येतील तें सांग म्हणजे तुझ्या आज्ञेनुसार मी सेनापति नेमितां.

अश्वत्थामा म्हणालाः—राजा दुर्योधना, या शल्याला तूं सेनापति कर. ह्याचें कुल, रूप, तेज, यश, वैभव व इतर सर्व गुण मोठे थोर असल्यामुळें सेनापत्याला हा सर्वतोपरी पात्र आहे. अरे, ह्याचें आपल्याविषयीं किती प्रेम आहे म्हणून सांगूं ! ह्यानें तुझ्याविषयीं कृत-ज्ञता बाळगून आपल्या भगिनीच्या पुत्रांना सोडून दिलें आणि आपण ह्या पक्षाला येऊन मिळाला ! ह्याची सेना अफाट असून हा कार्तिकेयाप्रमाणें पराक्रमी आहे ! राजा, ह्याला जर तूं सेनापति करशील, तर देवांनीं अजिंक्य कार्तिकेयाला सेनापति करून जसें दानवांना जिंकिलें, तसें आपण पांडवांना जिंकूं !

राजा धृतराष्ट्र, अश्वत्थाम्याच्या मुखांतून हे शब्द बाहेर पडतांच सगळे भूपाळ शल्याच्या-भोंवतीं गराडा घालून उभे राहिले व त्यांनीं मोठमोठ्यांचें शल्याचा जयजयकार चालविला ! राजा, त्या समयीं त्यांनीं युद्ध करण्याचा जो निश्चय केला होता, तो त्यांचा निश्चय अगदीं सुद्ध झाला व त्यांचा आवेश मनस्वी वाढला ! राजा, नंतर दुर्योधन रथांतून भूमीवर उतरला; आणि भीष्म व द्रोण ह्यांजप्रमाणें रणांत शौर्य गाजविणारा तो मद्राधिप शल्य रथांत अधिष्ठित होता त्यास हात जोडून म्हणाला, “ बा मित्रवत्सला शल्या, आतां तुझ्या मित्रांना ही

मोठी उत्कृष्ट संधि प्राप्त झाली आहे; अशा ह्या समर्थीच सुद्धा पुरुष मित्र किंवा अमित्र ह्यांची परीक्षा करितात! शल्या, तूं मोठा शूर आहेस; ह्यास्तव तूं ह्या सैन्याचा अधिपति हो! तूं समरांगणांत प्रविष्ट झालास म्हणजे पांडवांचे धैर्य नष्ट होईल आणि त्यांचे अमात्य व पांचाल हे गतवीर्य होत्साते स्तब्ध बसतील! राजा धृतराष्ट्रा, दुर्योधनाचे भाषण श्रवण करून वानपटु मद्रराज शल्य दुर्योधनाला म्हणाला:—राजा दुर्योधना, मी जें करणें म्हणून तूं इच्छितोस, तें मी करण्यास सिद्ध आहे. हे कुरुराजा. माझे प्राण, राज्य व धनदौलत हीं सर्व तुझ्या बऱ्याकरितां खर्ची घालण्यास मी राजी आहे.

दुर्योधन म्हणाला:—हे अतुलप्रतापी मातुला, मी तुला सेनापति नेमीत आहे. म्हणून, हे वीरश्रेष्ठ, स्कंदानें ज्याप्रमाणें समरांगणांत देवांचा प्रतिपाल केला, त्याप्रमाणें तूं आमचा प्रतिपाल कर! आतां, स्कंदावर जसा देवांच्या सैन्यापत्याधिकाराचा अभिषेक झाला, तसा तुजवर कौरवांच्या सैनापत्याधिकाराचा अभिषेक होवो; आणि महेंद्राकडून जसा दानवांचा संहार पडला, तसा तुझ्याकडून रणांत पांडवांचा संहार पडो!

अध्याय सातवा.

—०:—

शल्यसैनापत्याभिषेक.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, दुर्योधनानें ह्याप्रमाणें जें भाषण केलें, तें श्रवण करून मद्राधीश शल्यानें त्यास उत्तर दिलें कीं, “हे महाबाहो वाक्यविशारदा दुर्योधना, कृष्णार्जुन हे रथावर अधिष्ठित असतां तुला फार पराक्रमी असे वाटतात, पण त्या उभयतांना बाबुलामध्यें माझी कधींही बरोबरी करितां येणार नाही. राजा, मी एकदां क्षुब्ध झालों

म्हणजे मुर, अमुर व मानव ह्यांसहवर्तमान सर्व पृथ्वी जरी माझ्याशीं लढण्यास उठली तरी तिच्याशीं धोर युद्ध करीन; मग पांडवांची ती पर्वा काय? अरे, मी पांडवांना व त्याप्रमाणेंच त्यांच्या साहाय्यार्थ प्राप्त झालेल्या मोमकांनाही जिंकून! मी तुझ्या सैन्याचें धुरीणत्व पतकरण्यास तयार आहे, —त्याची तुला शंका नको! राजा, आतां मी असा व्यूह रचितों कीं, त्याचें शत्रूंना बिलकूल भेदन करितां येणार नाही! दुर्योधना, ह्या माझ्या भाषणावर तूं पूर्ण भरंवसा ठेव! हें सर्वतोपरी सत्य आहे!” राजा धृतराष्ट्रा, शल्य ह्याप्रमाणें दुर्योधनास म्हणाला, तेव्हां दुर्योधनानें तत्काळ सेनेच्या मध्यभागीं शल्यावर सैनापत्याचा मोठ्या आनंदानें यथाशास्त्र व यथाविधि अभिषेक केला; आणि लागलाच तुझ्या सेनेंत जिकडे तिकडे महान् सिंहनाद सुरू होऊन मोठमोठ्यानें वाघें वाजूं लागली! राजा, नंतर महारथ मद्रक व कौरव हे मोठमोठ्यानें ओरडूं लागले व त्यांनीं रणांगणाम शोभविणाऱ्या शल्याची स्तुति आरंभिली! ते म्हणाले:— राजा शल्या, दीर्घायुषी व विजयी हो; आणि आपल्याबरोबर युद्ध करण्याकरितां जे शत्रु जमून आले आहेत त्यांचा संहार उडीव! मद्रेश्वरा, तुझ्या बाहुबलाच्या आश्रयानें सर्व महाबलवान् धार्तराष्ट्रांना अखिल पृथ्वीचें निष्कंटक राज्य प्राप्त होवो! राजा, रणभूमीवर मुर, अमुर व मानव हे सर्व जमून तुझ्याशीं युद्धास प्रवृत्त झाले असतां त्यांस सुद्धां जिकण्यास तूं समर्थ आहेस! मग मृत्युवश असे जे संजयसोमक, त्यांना तेव्हांच जिंकिलील ह्यांत संदेह तो कोणता? राजा धृतराष्ट्रा, बलशाली मद्रराज शल्याचा त्या कौरवमद्रकांनीं ह्याप्रमाणें गौरव के, तेव्हां धीरोदात्त पुरुषाप्रमाणें त्यास मोठी धन्यता वाटली. त्या समर्थी

शल्य म्हणाला:—राजा दुर्योधना, आज मी रणांगणांत सर्व पांचाल व पांडव ह्यांना ठार मारिन, किंवा धारातीर्थी देह ठेवून स्वर्गास जाईन! आज मोठ्या धैर्याने संचार करितांना लोक मला पाहातील. आज सर्व पांडव. कृष्ण, सात्यकि, पांचाल, चेदि, द्रौपदीचे पुत्र. धृष्टद्युम्न, शिखंडी व सगळे प्रभद्रक ह्या सर्वांच्या दृष्टीस माझा पराक्रम, माझे महाधनुर्बल, अचूक बाणसंधान, अस्त्रवीर्य व बाहु हीं पडतील! आज पांडव, मिद्ध व चारण ह्यांनी माझ्या बाहुंमध्ये किती पराक्रम आहे व माझ्या ठिकाणी किती अस्त्रसंपत्ति वास करीत आहे हे पहावे! आज पांडवीय महारथांनी माझा अतुल्य प्रताप अवलोकन करून त्यांच्या प्रतिकारार्थ त्यांना ज्या कांहीं गोष्टी कर्तव्य असतील त्या कराव्या! मी आज पांडवांची सैन्ये दशदिशांस उधळून लावीन; आणि भीष्म, द्रोण व कर्ण ह्यांच्याहीपेक्षा अधिक पराक्रम गाजवून तुझ्या कल्याणामाठी रणभूमीवर परिभ्रमण करीन!

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें कौरवांच्या सैन्यांच्या अधिपतीच्या जागी शल्याची जेव्हां नेमणूक होऊन त्याजवर सैन्यापत्याधिकाराचा अभिषेक झाला, तेव्हां कौरवांच्या योद्ध्यांना कर्णवधामुळे जी चिंता पडली होती ती सर्व नष्ट झाली व त्यांची मने प्रसन्न होऊन त्यांस विलक्षण वीरश्री चढली; आणि आतां पांडव हे मद्राधिपतीच्या हातांत सांपडून मृत्युमुखांत पडलेच असे त्यांनी मानिले! राजा, ह्याप्रमाणें कौरवसेनेला पुनः रणोत्साह उत्पन्न झाला व मृग तिनें राज्ञीस स्वस्थपणानें सोंप घेतली!

युधिष्ठिरोत्तेजन.

राजा धृतराष्ट्रा, इकडे पांडवांनी तुझ्या सैन्यांची सिंहगर्जना श्रवण केली, तेव्हां राजा

युधिष्ठिरानें सर्व क्षत्रियांसमक्ष कृष्णाला म्हटले:—माधवा, धर्तराष्ट्रानें मद्राधिप शल्याला सेनापति केले अमून सर्व सैन्यांमध्ये त्या महाधनुर्धरावर सैन्यापत्याधिकाराचा अभिषेकही करण्यांत आला; ह्यास्तव, ह्या सर्वांचा विचार करून जें उचित दिसेल तें करण्याची व्यवस्था कर! कृष्णा, आमचा शास्ता व संरक्षक तूंच आहेस! ह्यासाठी आतां पुढे काय करावयाचें तें सांग. राजा धृतराष्ट्रा, नंतर वासुदेव धर्मराजाला म्हणाला:—युधिष्ठिरा, मी आर्तायनीला (शल्याला) यथास्थितपणें जाणत आहे! तो मोठा वीर्यवान् व तेजस्वी असून मोठा पुण्यशील व महात्मा आहे! तो मोठा विचित्र योद्धा असून अचूक बाण मारण्यांत मोठा कुशल आहे! राजा, भीष्म, द्रोण किंवा कर्ण ह्यांच्या मारखाच केवळ तो आहे असे नाही, तर त्यांच्याहून तो विशेष सामर्थ्यवान् आहे असें मला वाटते! मी पुष्कळ विचार करून पाहिला परंतु तो युद्ध करूं लागला म्हणजे जो त्याची वरोवरी करील असा मला कोणीही वीर आढळत नाही! धर्मराजा, शल्य हा शिखंडी, अर्जुन, भीम, सात्यकि व तसाच धृष्टद्युम्न, ह्यांच्यापेक्षाही रणांगणांत अधिक बलवान् आहे! मद्राधिपतीच्या अंगी सिंह किंवा हत्ती ह्यांप्रमाणें महान् शक्ति असून, प्रलयकालीं क्रोधायमान झालेला अंतक जसा प्राण्यांमध्ये संचार करितो, तसा तो शत्रूंमध्ये निर्धास्तपणें संचार करील! हे पुरुषव्याघ्र युधिष्ठिरा, आज तुझ्याशिवाय दुसरा कोणताही वीर त्याच्याशी युद्ध करण्यास समर्थ नाही! धर्मराजा, धुब्ध झालेल्या मद्रेश्वर शल्याला जो रणांगणांत वधील असा एकटा तूंच होस! तुझ्याशिवाय दुसरा कोणताही योद्धा ह्या लोकीं अथवा देवलोकीं त्याच्याशी लढण्यास योग्य नाही! राजा, प्रत्येक दिवशीं तुझ्या सैन्याशी युद्ध

करून त्याला तो क्षुब्ध करितो; म्हणून शंकरा-
मुराला जसे इंद्राने वधिले तसे त्याला तू
रणांत वध! राजा, शल्य हा अजिंक्य आहे,
व ह्यामुळेच धार्तराष्ट्राने त्याला सेनापति नेमिले
आहे; पण जर का तो युद्धांत पडेल, तर
तुला स्वर्गीत विजय मिळाला ह्याणून समज! राजा,
तो एकदां रणांत पतन पावला म्हणजे मग हें
सर्व प्रचंड कौरवसैन्य नष्टच झाले म्हणून
मान! धर्मराजा, प्रस्तुत समर्थी माझे हें भाषण
ऐकून तू महारथ मद्रराजावर चाल करून जा;
आणि वासवाने जसे नमुचीला मारिले तसे तू
त्याला मार! युधिष्ठिरा, शल्य हा मामा
आहे, असे मनांत आणून आतां त्याच्यावर
दया करणे प्रशस्त नव्हे! क्षात्रधर्मावर लदा
ठेवून त्या मद्राधिपतीचा नाश कर! धर्मराजा,
भीष्मद्रोणरूप सागराच्या परतीराम पोंचून, इत-
केंच नव्हे, तर कर्णरूप पाताळाचा तळ काढून
तू शल्यरूप गोप्पदांत सपरिवार बुडू नको!
तुझ्या ठिकाणी जें तपोबल व क्षात्रबल असेल,
तें सर्व आज रणांगणांत दागव व त्या महारथ
शल्याला यमसदनीं पाठीव!

राजा धृतराष्ट्रा, शत्रुसंहारक कृष्णाने इतके
भाषण केल्यावर त्याची पांडवांनी पूजा केली
व मग तो संध्याकाळीं शिविराम गेला! तद-
नंतर धर्मपुत्र युधिष्ठिराने सर्व भ्रात्यांना व
पांचालसोमकांना आपआपल्या डेऱ्यांस जाण्यास
अनुज्ञा दिली, आणि मग विशल्य हत्तीप्रमाणे
त्यांनी स्वस्थ झोंप घेऊन ती रात्र घालविली!
इकडे पांडव, पांचाल व इतर सर्व महारथ
कर्णाच्या वधामुळे हर्षित होऊन त्या रात्रीस
स्वस्थ निजले व सूतपुत्राला ठार मारून विजय
मिळविल्यामुळे पांडवांचे तें अफाट व प्रबळ
सैन्य जणू काय अगाध सागराच्या परतीराम
पोंचल्याप्रमाणे प्रमुदित होऊन अगदीं निश्चित
व प्रसन्न झाले!

अध्याय आठवा.

व्यूहरचना.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, रात्र
संपल्यावर इकडे दुर्योधनाने सर्व कौरवांना
म्हटले—महारथहो, आतां सज्ज व्हा! राजा
धृतराष्ट्रा, दुर्योधनाची ती आज्ञा श्रवण करून
कौरवसेना लागलीच तयार झाली, ताबडतोब
सैनिकांनीं रथ जोडिले, कित्येकजण इकडे
तिकडे धावू लागले, हत्तींवर वस्त्राभरणें
युद्धासामग्री घालून त्यांची सर्व सिद्धता कर-
ण्यांत आली, पायदळाने आपली सर्व तयारी
केली, सहस्रावधि वीरांनीं रथांत आस्तरणें
घातलीं आणि रणवाद्यांचा महान् शब्द
चालू होऊन रणार्थ आतुर झालेल्या योद्ध्यांना,
सैनिकांना व गजार्थांना मनस्वी वीरश्री चढली!
राजा, नंतर कौरवांचीं सर्व सैन्ये रणभूमीवर
जाण्यास सिद्ध होऊन आपापल्या स्थानीं
उभी राहिलीं आणि मग मारूं किंवा मरूं
असा संकल्प ठरवून त्यांनीं समरभूमीचा मार्ग
धरिला. राजा, मग महारथांनीं सेनापति मद्र-
राज शल्य याच्या आज्ञेप्रमाणे सर्व सैन्यांचे
विभाग केले आणि ते त्या त्या विभागांसह शल्यानें
निर्दिष्ट केलेल्या जागीं जाऊन युद्धार्थ उभे
राहिले. राजा, ह्याप्रमाणे सर्व व्यवस्था ठरवून
याकिल्यावर तुझे सर्व सैनिक, कृप, कृतवर्मा,
अश्वत्थामा, शल्य, शकुनि व बाकीचे अवशिष्ट
भूपाळ हे सर्व तुझ्या पुत्रापाशीं आले व त्यांनीं
आपसांत ठराव केला कीं, कोणीही एकेक-
ट्यानें पांडवांशीं विलकूल युद्ध करूं नये; जो
कोणी एकटा पांडवांशीं लढेल किंवा जो कोणी
लढणाऱ्याला एकटा सोडील त्यास पांचही
महापातके व उपपातके लागतील! सर्वांनीं
मिळून एकमेकांचा बचाव करित पांडवांशीं

युद्ध करवें व ह्यांत कोणीही ह्यगय करूं नये ! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें करार करून ते सर्व महारथ मद्रराजाच्या आज्ञेनें आप-आपल्या स्थानीं जाऊन नंतर त्यांनीं तत्काळ शत्रूवर हल्ला केला !

राजा धृतराष्ट्रा, त्याप्रमाणेंच इकडे पांडवांनींही त्या महान् युद्धाकरितां आपल्या मैत्र्याचा व्यूह सिद्ध केला व चोहोंकडून कौरवांशीं युद्ध करितां यावें अशी योजना करून ते कौरवांवर मोठ्या वेगानें चालून गेले. हे भरत-श्रेष्ठा, खवळलेल्या समुद्राप्रमाणें तें प्रचंड सैन्य गर्जत असून त्याचा विस्तारही समुद्राप्रमाणें अवाढव्य होता ! आणि त्यांत रथगजादिक इतस्ततः भ्रमण करीत असल्यामुळे त्या सेना-सागरावर जणू काय महान् महान् लाटाच उसळत होत्या !

धृतराष्ट्र विचारितोः—संजया, द्रोण, भीष्म व कर्ण हे युद्धांत कसे पतन पावले, हें मी ऐकिलें. आतां मला आणांकी शल्य व दुर्योधन हे रणांगणांत कसे पडले तें निवेदन कर. संजया, धर्मराजानें शल्याला व भीमसेनानें महाबाहु दुर्योधनाला रणांत कसे वधिलें तें सांग.

संजय सांगतोः—राजा धृतराष्ट्रा, समरांगणांत नर, गज व अश्व ह्यांचा जो भयंकर संहार उडाला, तो मी आतां तुला निरूपण करितों, तर तूं सावधान चित्तानें ऐक. राजा, द्रोण व भीष्म हे हत झाले, आणि सूतपुत्र कर्ण हा वधिला गेला, तेव्हां तुझ्या पुत्रांनीं शल्याला सेनापति केलें; आणि मग त्यांना पुनः उभे चढून, आतां शल्य हा खचित सर्व पांडवांना रणांगणांत ठार मारील अशी त्यांना मोठी आशा उत्पन्न झाली ! राजा, त्यांच्या मनांत ही आशा उद्भवल्यामुळे त्यांना फिरून मोठा धीर आला आणि त्यांनीं रणांगणांत मद्रराज शल्याचा आश्रय करून पुनः आपण

सनाथ झालें असें मानिलें ! राजा, कर्ण हा रणांत ठार झाला असतां इकडे पांडवांनीं महान् सिंहनाद आरंभिला, तेव्हां कौरववीरांचें धावें दणाणलें होतें; परंतु पुढें शल्याकडे सेना-पत्य येऊन सर्व व्यवस्था यथास्थित झाली, तेव्हां कौरवसेनेला पुनः वीरश्री उत्पन्न झाली; आणि मग प्रतापी शल्यानें तुझ्या सैनिकांची अजीवात भीति उडवून टाकिली व कौरवसेनेचा सर्वतोपरी उत्कृष्ट व बळकट असा व्यूह निर्माण करून त्यानें समरभूमीवर पांडवांवर चाल केली ! राजा, त्या वेळीं महारथ मद्राधिपति शल्य हा श्रेष्ठ रथांत आरूढ असून त्याच्या रथास सिंधु देशांतले अश्व जोडिले होते; त्याच्या हस्तांत, ज्याच्यापासून सुटलेला बाण कितीही बळकट पदार्थांचें मोठ्या आवेशानें क्षणांत भेदन करील, असें मोठें विचित्र धनुष्य नाचत होतें; त्याच्या रथावर कुशल सारथि अधिष्ठित असून त्याच्या योगें तो रथ अधिकच शोभत होता; आणि अशा त्या दिव्य रथावर शत्रुसंहारक शूर शल्य युद्ध करण्यास सिद्ध आहे असें पाहून तुझ्या पुत्रांची सर्व भीति नाहीशी होऊन त्यांस मोठी जयाशा उत्पन्न झाली ! राजा, ती कौरवसेना शत्रूवर चाल करून निघाली तेव्हां अंगांत चिळखत घातलेला शल्य हा त्या सेनेच्या अग्रभागीं विनीवर उभा राहिला; आणि त्याच्या सभोवतीं बलाढ्य मद्रक वीर व अजिंक्य कर्णपुत्र हे गराडा घालून उभे राहिले ! त्यांच्या डाय्या बाजूस त्रिगर्तासहवर्तमान कृतवर्मा उभा राहिला आणि उजव्या बाजूस शक व यवन ह्यांसहवर्तमान कृपाचार्य उभा राहिला ! पाठीमागें कांबोजांनीं परिवेष्टित असा अश्वत्थामा उभा राहिला; आणि महान् महान् कुरुवीरांनीं रक्षित असलेला दुर्योधन राजा मध्यभागीं अधिष्ठित झाला ! आणि तेथें रणांगणांत सौबल शकुनि

व त्याचा पुत्र महारथ कैतव्य (उलूक) हेही महान् अश्वसैन्य व इतर सैन्य घेऊन युद्ध करण्याकरितां सिद्ध राहिले !

राजा धृतराष्ट्रा, इकडे शत्रुसंहारक महाधनुर्धर पांडवांनींही आपल्या सेनेचे तीन विभाग केले व त्यांची व्यवहाराच ना करून ते कौरवसैन्यांवर चालून गेले ! धृष्टद्युम्न, शिखंडी व महारथ सात्यकि हे शल्याच्या सैन्याचा वध करण्याच्या इच्छेनें रणांगणांत त्याजवर धावले आणि स्वतः युधिष्ठिर राजा आपल्या सैन्यासह शल्यास ठार मारण्याच्या हेतूनें खुद्द त्याजवर चाल करून गेला ! शत्रुसंहारक महेषवास अर्जुनानें कृतवर्मा व संशसकगण ह्यांजवर मोठ्या आवेशानें हल्ला केला ! आणि भीमसेन व महारथ सोमक हे युद्धांत शत्रूंचा संहार उडविण्याच्या इच्छेनें कृतवर्म्यांवर चालून गेले ! नकुल व सहदेव ह्यांनीं आपआपल्या सैन्यांसह शकुनि व उलूक ह्यांजवर व त्यांच्या सैन्यांवर हल्ला केला आणि त्याप्रमाणेंच तुडुंयाकडले सहस्रावधि वीर नानाप्रकारचीं आयुधें धारण करून समरभूमीवर मोठ्या त्वेषानें पांडवांवर तुटून पडले !

धृतराष्ट्र विचारितोः—संजया, महाधनुर्धर भीष्म, द्रोण व त्याप्रमाणेंच महारथ कर्ण हे समरभूमीवर पडल्यानंतर कौरवांचीं दळे थोडथोडी शिलक राहिली होती. तशांत पुढें पांडातिविर सैन्य

जगन्नाथ शास्त्री यांच्या यादू.

संजय सांगतोः—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर युद्धार्थ सिद्ध झालेल्या आपली व पांडवांची कसकशी स्थिति होई आणि प्रत्येक पक्षांचे किती किती सैन्य शिलक होतें, तें श्रवण कर. राजा, त्या समयी कौरवांकडे अकरा हजार रथ, दहा हजार मातशें हत्ती, दोन लक्ष घोडे

आणि तीन कोटी पायदळ होतें; व पांडवांकडे सहा हजार रथ, सहा हजार हत्ती, दहा हजार घोडे आणि दोन कोटी पायदळ होतें. राजा, इतकेंच काय तें दोन्ही पक्षांमिळून सैन्य अवशिष्ट असून तें सर्व युद्धास सिद्ध झालेलें होतें. राजा, कौरवांकडील सैन्य मी आतांच तुला सांगितलें त्याप्रमाणें निरनिराळे विभाग करून शल्य सेनापतीच्या आज्ञानुसार जय मिळविण्याच्या इच्छेनें क्षुब्ध होऊन पांडवांवर चालून गेलें, व शूर पांडवही विनयशाली नरव्याघ्र पांचालांसह जयप्राप्त्यर्थे रणांगणांत कौरवांवर तुटून पडले ! राजा, अशा प्रकारें तीं दोन्ही सैन्ये एकमेकांना ठार मारण्याच्या उद्देशानें अगदीं प्रातःकालीं एकमेकांशीं भिडलीं; आणि मग त्यांमध्ये अत्यंत भयंकर व दारुण असें युद्ध जुंपून परस्परांनीं परस्परांना ठार मारण्याचा क्रम आरंभिला !

अध्याय नववा.

—:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतोः—राजा धृतराष्ट्रा, नंतर कौरव व संजय ह्यांचे फारच घोर व दारुण युद्ध सुरू झालें ! त्या समयी जणू काय तें देव व दानव ह्यांचेच युद्ध चालू आहे असें भामलें ! तेव्हां मनुष्ये, रथ, हत्तीचे व घोड्यांचे समुदाय आणि सहस्रावधि गजवीर व अश्ववीर मोठ्या शौर्यानें परस्परांशीं लढूं लागले ! भयंकर हत्ती एकमेकांवर चालून जात असतां जी महान् गर्जना करीत ती ऐकून जणू काय अंतरिक्षांत प्रावृट्कालाच्या आरंभी मेघांचेच गडगडाट होत आहेत असा भास होई ! त्या वेळीं हत्तींच्या प्रहारांनीं कित्येक रथी रथांसुद्धां भंग होऊन भूतलावर पडले ! मदोन्मत्त हत्तींनीं उधळून लाविल्यामुळें कित्येक घोडे

रणांगणांत सैरावैर, धावत सुटले ! कितीएक युद्धनिपुण रथ्यांनी घोड्यांच्या समुदायांना व पादरक्षक घोड्यांना वाणांच्या भडिमारांनै परलेकीं पाठविलें ! युद्धामध्ये कसलेले असे कितीएक घोडेस्वार महारथांच्या सभोवतीं गराडा घालून त्यांजवर प्राप्त, शक्ति व ऋष्टि ह्यांचा घोर वर्षाव करून रणांगणांत त्यांस मारीत धावूं लागले ! कित्येक धनुर्धारी योद्धे महारथांना वेदा देऊन पुष्कळजण एकेकट्याला गांठून त्यांस यमसदनीं पाठवूं लागले ! कित्येक महारथ हर्तींना व दुसऱ्या महारथांना चोहों-कडून अडवून धरून त्यांजवर शस्त्राखवृष्टि करूं लागले व ते दुरून एकेकटे लढत असतां त्यांस त्यांनीं ठार मारिलें ! त्याप्रमाणेंच रथी क्रोधाय-मान होऊन हर्तींवर वाणांचा भयंकर भडि-मार करीत असतां ते हर्ती त्या रथ्यांस गराडा घालून त्यांचा संहार उडवूं लागले ! त्या समर्थी हर्तींनीं हर्तींवर व रथ्यांनीं रथ्यांवर उड्या घालून त्यांचा शक्ति, तोमरें व वाण ह्यांनीं चुराडा केला ! रणांगणांत रथ, अश्व व गज ह्यांनीं पायांखालीं तुडवून पायदळाचा घोर संहार उडविला आणि त्यामुळ जिकडे तिकडे मोठा हाहाकार झाला ! तेव्हां चामरांनीं सुशोभित असलेले घोडे इतस्ततः अत्यंत वेगानें धावूं लागले, तेव्हां जणू काय हिमालयाच्या पठारावर भेदिनींचें प्राशन करीत हंसच धावत आहेत असें सर्वांस भामलें ! राजा, त्या वेळीं घोड्यांच्या त्या टापांनीं चित्रविचित्र झालेली ती रणभूमि जणू काय नखाप्रांनीं विक्षत झालेल्या सुंदर स्त्रीप्रमाणें शोभायमान दिसें लागली ! घोड्यांच्या टापांच्या आवाजांनै, रथांच्या चाकांच्या षण्णघणाटांनै, पायदळाच्या आक्रोशांनै, हर्तींच्या गर्जनै, रणवाद्यांच्या घोषानै आणि शंखांच्या नादांनीं भूमि इतकी दणाणून गेली कीं, जणू काय वज्रपातांनीं ती

हादरून जाऊन भयंकर शब्द करीत आहे असें वाटलें ! राजा, नंतर एकसारखा धनु-प्यांच्या प्रत्यंचांचा महान् ध्वनि चालू झाला ! जिकडे तिकडे देदीप्यामान् शस्त्रांचे प्रचंड लोट उसळूं लागले; आणि योद्ध्यांच्या अंगां-तील चिल्लखतांची विलक्षण दीप्ति सर्वत्र पसरून कसलेच ज्ञान होईनासें झालें ! त्या समर्थी मोठमोठ्या हर्तींच्या शुंडांप्रमाणें प्रचंड असे बहुत वीरबाहु छिन्न होऊन तडफड करीत भयं-कर वेगानें वाटोळे फिरून नानाविध चेष्टा करूं लागले ! तेव्हां धरणीतलावर वीरांचीं मस्तकें घडाघड कोसळूं लागलीं असतां जणू काय ताडांवरून ताडफळेंच खालीं आदळत आहेत असें ऐकूं येऊं लागलें ! त्या वेळीं रक्तवंचाळ झालेली वीरशिरे पृथ्वीवर इतस्ततः पसरल्यामुळें जणू काय कांचनपद्मच यथाकालीं भूतलावर प्रफुल्लित झालीं आहेत असें दिसत होतें. तेव्हां रणांगणांत शस्त्रास्त्रांनीं विद्ध होऊन गतप्राण झालेल्या मस्तकांच्या मुखांतील नेत्र अगदीं टकटकीत दिसत असल्यामुळें जणू काय ती रणभूमि पुंडरीकांनींच आच्छादित आहे, असें भासत होतें ! तेथें चंद्रनाची उठी दिलेले व बाहुभूषणें धारण केलेले मोठेमोठे भुज सर्वत्र पडले असल्यामुळें जणू काय इंद्राचे महान् महान् ध्वजच विराजत होते ! त्या स्थळीं घोर संग्रामांत मोठमोठ्या भूपाळांच्या तुटलेल्या मांड्या जिकडे तिकडे पसरल्यामुळें जणू काय त्या हर्तींच्या दुसऱ्या शुंडाच होत असें भासत होतें; आणि तेथे सर्वत्र शेंकडों धडे, छत्रे, चामरें वगैरे पनन पावल्यामुळें जणू काय तें सेनावन फुललेंच आहे अशी शोभा दिसत होती ! राजा, त्या ठिकाणीं रुधिरानें न्हालेले योद्धे मोठ्या शौर्यांनै परिभ्रमण करीत असतां जणू काय फुललेले पळसाचे वृक्षच इतस्ततः धावत आहेत असें भासत होतें ! राजा, तेथें

शरतोमरांनीं छिन्नविच्छिन्न होत्साते जे हत्ती रणांगणांत जिकडे तिकडे पडत होते, ते पाहून जणू काय महान् महान् मेघच छिन्नभिन्न होऊन पडत आहेत असे वाटे ! राजा, तेथे शूर योद्ध्यांकडून गजसैन्याचा संहार होत असतां ते पळू लागले म्हणजे जणू काय वाऱ्यानें उधळून दिलेले मेघच दशादिशांस धावत आहेत असे भासे ! आणि ते मेघाकार हत्ती अखेरीस चोहों-कडे भूतलावर पडत तेव्हां जणू काय प्रलय-कालीं वज्रांनें विदीर्ण झालेले पर्वतच खाली पडत आहेत असे दिसे ! राजा, तेव्हां घोडे व घोडेस्वार हे रणांगणांत इतके मरून पडले कीं, त्यांच्या जिकडे तिकडे पर्वतप्राय राशी दिसू लागल्या ! त्या समयीं रणभूमीवर वीरांना पर-लोकाप्रत पोंचविणारी केवळ नदीच वाहू लागली ! त्या नदीमध्ये रुधिर हेंच उदक वहात असून रथ हे तिच्यामधले भोंबरे होते ! ध्वज हे तिच्यांतले वृक्ष असून हाडे हे तिच्यांतले दगड होते ! हत्ती हे तिच्यांतले खडक असून घोडे हे तिच्यांतले पाषाण होते ! मेद व मज्जा हा तिच्यांतला कर्दम असून छत्रे व गदा अनुक्रमे हंस व नावा होत्या ? कवचे व मंदिल ह्यांनीं ती नदी आच्छादित असून पताका हे तिच्यांतले सुंदर द्रुम होते ! आणि चक्रे हे तिच्या पृष्ठभागावर संचार करणारे चक्रवाक पक्षी असून, त्रिवेणु व दंड ह्यांनीं ती आच्छन्न होती ! राजा, अशी ती नदी पाहून शूरांना मोठी वीरश्री उत्पन्न होऊन भिड्यांची मोठी गाळण उडे ! राजा, कुरुमंजयांचे घोर युद्ध सुरू होऊन रणांगणांत अशी जी मोठी भयं-कर नदी वाहू लागली, तो परलोकाप्रत जाण्याचा मार्ग असल्यामुळे, परिघतुल्य बाहु धारण करणारे ते शूर वीर वाहननोकांच्या योगें ती नदी उतरून परलोकाप्रत गेले ! राजा, त्या समयीं रणांगणांत कुरुमंजयांचे अमर्याद

युद्ध चालू होऊन चतुरंग दळांचा घोर संहार होऊं लागला, तेव्हां जणू काय तें देवदानवांचेच युद्ध सुरू आहे असे भासले ! राजा, तेव्हां समरभूमीवर असा कांहीं रणसंमर्द मातला कीं, जिकडे तिकडे बांधवांना मोठमोठ्यांनें हाका मारण्यांत येऊं लागल्या; परंतु तेथे सर्वत्र मूर्ति-मंत भीति दिसू लागल्यामुळे आपल्या प्रिय बंधूंचा आक्रोश श्रवण करूनही त्यांच्या साहा-य्यार्थ कोणीही धाव घेईनात ! राजा, अशा प्रकारें समरांगणांत घनघोर संग्राम चालू असतां अर्जुन व भीमसेन ह्यांनीं असा कांहीं विलक्षण प्रताप गाजविला कीं, त्याच्यापुढें शत्रूंची मति अगदीं गुंग झाली ! राजा, त्या समयीं तुझ्या त्या प्रचंड सेनेंतले वीर शत्रूंच्या हस्ते हत होऊन रणांगणांत पडू लागले, तेव्हां जणू काय वारुणीच्या मदांनें धुंद झालेल्या प्रमदाच भू-तलावर इतस्ततः कोसळत आहेत असें दिसू लागले ! आणि अशा रीतीनें भीमसेन-धनं-जयांनीं तुझ्या सेनेची दुर्दशा उडविल्यानंतर ते दोघेही वीर पुनःपुनः शंख वाजवून मिंहनाद करू लागले ! राजा, मग तो भीमार्जुनांचा महान् शब्द श्रवण करून धृष्टद्युम्न-शिखंडी ह्यांनीं धर्मराजाला पुढें करून शल्यावर हल्ला केला ! तेव्हां मोठा भयंकर चमत्कार आमच्या दृष्टीस पडला तो हा कीं, ते सर्व पांडववीर एकत्रपणें व निरनिराळे शल्याशी युद्ध करू लागले ! राजा, तशांत त्या वेळीं अस्त्रविद्या-प्रवीण, रणधुरंधर व शूर असे माद्रीपुत्र नकुल-महदेव मोठ्या त्वरेनें विजयाची हाव धरून शल्यावर तटून पडले ! आणि मग विजयशाली पांडवांनीं शरप्रहारांनीं जर्जर करून सोडि-लेल्या त्या तुझ्या सैन्याचा अगदीं नाइलाज होऊन अखेरीस तें सैन्य युद्धापासून पराङ्मुख झाले व मार्गें वळले; परंतु इतक्यांत तुझ्या पुत्रांच्या समक्ष पांडवांनीं त्याचा घोर संहार

उडविला तेव्हां त्यांतील राहिलेसाहिले वीर दशदिशांस पळून गेले ! राजा, त्या वेळीं तुझ्या योद्ध्यांमध्ये महान् हाहाकार प्रवर्तेला ! तशांतही पळत सुटलेल्या त्या तुझ्या सैन्यांतले महात्मे जय मिळविण्याच्या इच्छेनें ' थांबा, थांबा ' म्हणून ओरडत होते; परंतु पांडवांनीं त्या सैन्याची फारच दाणादाण उडविल्यामुळे तें एकदां पळत सुटले तें पुनः युद्धार्थं मागें परतलें नाहीं ! राजा, त्या समयीं तुझ्या सैन्यांतले योद्धे आपल्या प्रिय पुत्रांना, भ्रात्यांना, पितामहांना, मातुलांना, भाच्यांना, मित्रांना, अध्यांना व गजांना रणांगणांत सोडून देऊन मोठ्या ल्गबर्गानें केवळ आपले प्राण जगविण्यासाठीं दशदिशांस पळून गेले !

अध्याय दहावा.

—:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्या प्रमाणें कौरवसैन्याची दाणादाण झालेली पाहून प्रतापशाली मद्राधिपति शल्य तावडतोब आपल्या सारख्याला म्हणाला. " हे सूता, महावेगवान् षोड्यांना लवकर चालव; तो पहा पांडुपुत्र धर्मराज युधिष्ठिर मस्तकावर शुभ्र छत्रानें विराजित असलेला आपल्या अग्रभागीं दृग्गोचर होत आहे ! सारथे, मला त्या स्थळीं लवकर घेऊन चल आणि माझ्या अंगां किती पराक्रम आहे तो पहा ! सूता, आज रणांगणांत युधिष्ठिर हा माझ्यापुढें उभा राहाण्यास मुळींच समर्थ होणार नाहीं ! " राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें भाषण श्रवण करितांच मद्राधिपति शल्याच्या सारथ्यानें तत्काळ तो रथ जेथें सत्यप्रतिज्ञ धर्मराज होता तेथें नेऊन पांडवांच्या प्रचंड सेनेशीं एकदम भिडविला; आणि समुद्राची सीमा जशी त्या उमळणाऱ्या समु-

द्राला मागें लोटिते, तमें त्या कौरवसेनापतीनें एकट्यानें पांडवांचें तें क्षुब्ध सैन्य मागें हटविलें ! त्या समयीं, राजा, ज्याप्रमाणें पर्वतशीं गांठ पडली असतां वेगवान् समुद्र एकदम स्तब्ध होतो, त्याप्रमाणें शल्याशीं गांठ पडतांच पांडवांचें तें प्रचंड सैन्य एकदम स्तब्ध झालें ! अशा प्रकारें मद्रराज शल्य रणांगणांत पांडवसैन्याशीं तोंड देऊन युद्ध करूं लागला, तेव्हां पुनः सर्व कौरव मारूं किंवा मरूं असा निर्धार ठरवून रणांगणांत परत आले; आणि मग आपआपल्या विभागीं व्यूह करून उभी राहिलेली तीं सैन्ये पांडवांशीं अत्यंत भयंकर संग्राम करूं लागलीं व रणभूमीवर रक्ताचे पाट चालू झाले ! राजा, त्या वेळीं युद्धधुरंधर नकुलानें कर्णाचा पुत्र चित्रसेन ह्याजवर हल्ला केला आणि नंतर ते विचित्र धनुष्यें धारण केलेले दोघेही योद्धे एकमेकांना गांठून समरांगणांत एकमेकांवर असा घोर शरवर्षाव करूं लागले कीं, जणू काय अंतरिक्षांत एक मेघ उत्तरेकडून येऊन व एक मेघ दक्षिणेकडून येऊन ते परस्परांवर जलवृष्टि करीत आहेत असें भासूं लागले ! राजा, त्या समयीं त्या दोन्ही वीरांनीं एकमेकांशीं इतकी लगट केली कीं, त्यांच्यामध्ये मुळींच अंतर दिसत नव्हतें ! ते दोघेही प्रबळ योद्धे शास्त्रांत प्रवीण असून एकमेकांवर रथ घालण्याच्या कामीं मोठे पटाईत होते ! आणि ते दोघेही परस्परांना ठार मारण्यास उद्युक्त झाले असून परस्परांचीं छिद्रे शोधण्यांत तत्पर होते ! राजा, अशा प्रकारें ते दोघे महान् वीर परस्परांशीं झुंजत असतां चित्रसेनानें सहाणें- वर धार दिलेला एक जलाल बाण नकुलाच्या धनुष्याच्या मुठीवर टाकिला व त्याचे तुकडे केले ! नंतर त्यानें तावडतोब मोठ्या धर्यानें तीन सुवर्णपुंख जलाल बाण नकुलाच्या भालप्रदेशीं सोडिले व नकुलाच्या

घोड्यांवर तीक्ष्ण बाण मारून त्यांना यमसदनीं पाठविलें आणि त्याप्रमाणेंच ध्वज व सारथि ह्यांजवर तीन तीन बाण सोडून त्यांचाही विध्वंस उडविला. तेव्हां तो नकुल भालप्रदेशीं चित्रसेनेनानें टाकिलेल्या तीन शरांच्या योगें त्रिशंग पर्वताप्रमाणेंच शोभूं लागला ! राजा, ह्याप्रमाणें रथहीन व धनुर्हान झाल्यावर नकुलानें हातांत ढालतलवार घेतली, आणि सिंह जमा पर्वतावरून खाली उतरतो तसा तो रथांतून खाली उतरला व चित्रसेनावर धावून गेला; पण इतक्यांत, पायीं चालून जाणाऱ्या त्या पांडुपुत्रावर चित्रसेनेनानें घोर शरवृष्टि चालविली; परंतु नकुलानें मोठ्या शिताफीनें त्या सर्व शरवृष्टीचा ढालीच्या योगें निरोध केला आणि तो महाबाहु वीर तसाच विचित्र युद्ध करीत मोठ्या त्वेषानें चित्रसेनाच्या रथाममीप जाऊन सर्व सैन्याच्या समक्ष त्याच्या रथावर चढला आणि त्यानें खड्यांनें त्याचें मस्तक छेदिलें ! तेव्हां सुंदर नामिका, विशाल नेत्र, तेजस्वी कुंडलें व दीप्तिमान् मुकुट ह्यांच्या योगें अतिशय शोभाणारें तें चित्रसेनाचें मस्तक त्याच्या देहापामून वियुक्त होऊन भूतलावर पडलें व दिवाकराप्रमाणें तेजःपुंज असा तो त्याचा देह रथांत धीरासनीं पतन पावला !

ह्याप्रमाणें नकुलानें चित्रसेनाचा वध केलेला अवलोकन करून महारथांनीं त्याचे मोठे धन्यवाद गाडले व एकसारखी सिंहगर्जना आरंभिली ! इतक्यांत चित्रसेनाचे आतें महारथ सुषेण व सत्यसेन ह्यांनीं नकुलावर विविध शरांचा भडिमार चालू केला; आणि महान् अरण्यांत दोन वाघ हत्तीचा प्राण घेण्याकरितां त्यावर तुटून पडावे तद्वत् ते दोघे वीर तत्काळ त्या रथश्रेष्ठ पांडुपुत्रावर मोठ्या त्वेषानें तुटून पडले ! राजा, त्या वेळीं त्या दोग्यांनीं त्या एकट्या महारथ नकुलावर अशी कांही भयंकर

शरवृष्टि केली कीं, जणू काय ते दोन प्रचंड मेघ जलवृष्टिच करीत आहेत असें दिसूं लागलें ! अशा रीतीनें नकुलाचा देह चोहोंकडून अतिशय बाणविद्ध झाला, तरी तो डगमगला नाहीं; त्यानें मोठ्या वीरश्रीनें दुसरें धनुष्य धारण केलें व तो ताबडतोब दुसऱ्या रथावर चढला आणि क्रोधायमान होऊन रणांगणांत यमाप्रमाणें उग्र प्रताप गाजवूं लागला ! नंतर चित्रसेनाच्या त्या भ्रात्यांनीं बांकदार पेच्यांच्या बाणांची घोर वृष्टि चालविली आणि नकुलाच्या रथाचा चुराडा उडविण्याचा प्रयत्न आरंभिला ! तेव्हां नकुलानें मोठ्यानें हंसून चार जलाल बाण सोडून सत्यसेनाचे चारी घोडे मारिले आणि एक सुवर्णपुंख निशित बाण टाकून त्याचें धनुष्यही छेदून टाकिलें ! राजा, नंतर ते सत्यसेन व सुषेण हे दुसऱ्या रथावर आरूढ झाले व पुनः नकुलावर धावून गेले ! तेव्हां प्रतापी नकुलानें मोठ्या धैर्यानें त्या घोर रणांत त्या दोग्यांही कर्णपुत्रांवर दोन दोन बाण सोडिले, त्यामुळें सुषेण हा अत्यंत संतापला आणि त्यानें हंसत हंसत रणांगणांत एका क्षुरप्र बाणानें नकुलाचें तें प्रचंड धनुष्य ! राजा, त्या समर्थी नकुल हा संतापानें नखशिखांत पेटला व त्यानें सुषेणाम पांच बाणांनीं विद्ध करून एका बाणानें त्याचा ध्वज उडविला आणि लागलेंच मोठ्या वेगानें सत्यसेनाचें धनुष्य व तलत्राण हीं तोडून टाकिलीं; तें पाहून सैन्यांत सर्वत्र महान् आक्रोश झाला ! नंतर सत्यसेनेनानें दुसरें वेगानें मारा करणारें व प्रचंड भार सहन करणारें असें धनुष्य घेतलें आणि बाणांचा भडिमार करून त्या पांडुपुत्राला चोहोंबाजूंनीं बाणांनीं झांकून काढिलें ! तेव्हां शत्रुमहारक नकुलानें त्या सर्व बाणांचें निवारण केलें; आणि त्या सुषेण-सत्यसेनांवर प्रत्येकीं दोन दोन बाण सोडून त्यांस विंधिलें !

त्या वेळी त्या दोघांही कर्णपुत्रांनी उलट नकुलावर पृथक् पृथक् सरळ चाल करणाऱ्या बाणांची वृष्टि आरंभिली आणि तीक्ष्ण बाणांनी त्याचा सारथि अतिशय विद्ध केला ! त्या समयी प्रतापशाली सत्यमेनानें नकुलाच्या रथाची ईषा छेदिली आणि दोन निराले बाण टाकून त्याने मोठ्या शिताफीनें नकुलाचें धनुष्यही तोडून टाकिलें ! तेव्हां रथांत अधिष्ठित असलेल्या त्या अतिरथ नकुलानें आतां आपल्या रथावरील कोणती शक्ति सोडावी ह्याचा विचार केला; आणि तत्काळ सुवर्णाच्या दांड्याची, तीक्ष्ण अग्राची, तेलपाणी देऊन लवळखीत केलेली, अतिशय चकाकणारी व जणू काय वारंवार जीम चाळवणारी महाविपारी नागीणच अशी एक महान् शक्ति उचलली आणि ती रणांत सत्यमेनावर फेंकिली ! राजा, त्या शक्तीनें सत्यमेनाच्या हृदयाचे शेंकडों तुकडे झाले व तो गतप्राण होऊन किंचित् वळवळ मात्र करीत रथावरून एकदम ग्वाली कोसळला ! राजा, ह्याप्रमाणें सत्यमेनाचा वध झालेला पाहून सुषेणाला अत्यंत क्रोध चढला आणि त्यानें तत्काळ पांडुनंदनाचा रथ भंग करून त्यास पादचारी केलें ! त्या समयी त्यानें चार बाणांनीं चार घोडे मारिले. एका बाणानें ध्वज तोडिला व तीन बाणांनीं सारथि मारिला ! राजा, अशा प्रकारें सुषेणानें नकुलाला विरथ केलेले पाहून त्याच्या मदतीसाठीं द्रौपदीचा पुत्र सुतसोम हा रणांगणांत त्याजकडे रथ घेऊन गेला, तेव्हां तत्काळ नकुल हा सुतसोमाच्या रथावर चढला आणि सिंह जसा पर्वतावर आरूढ झाला असतां शोभतो, तसा तो भरतश्रेष्ठ तेथें शोभला ! राजा, नंतर नकुलानें दुसरें धनुष्य धारण करून सुषेणाशीं युद्ध आरंभिलें ! त्या समयी ते दोघेही प्रबळ महारथ एकमेकांच्या वधाकरितां एकमेकांवर प्रचंड शरवर्षाव करूं लागले ! तेव्हां

सुषेणाला फारच संताप चढला व त्यानें पांडुपुत्रावर तीन व सुतसोमावर वीस बाण बाहु व वक्षस्थळ ह्यांच्या ठिकाणीं मारिले ! त्या समयी महाप्रतापी शत्रुसंहारक नकुलानें सुषेणावर घोर शरवृष्टि चालविली व सर्व दिशा बाणाच्छादित करून टाकिल्या ! राजा, नंतर नकुलानें तीक्ष्ण अग्राचा, धार देऊन अतिशय जलाल केलेला व महावेगानें शत्रूवर चालून जाणारा असा एक अर्धचंद्र बाण घेऊन तो रणांत कर्णपुत्रावर सोडिला आणि त्या बाणानें सुषेणाचें धड व मस्तक हीं पृथक् होऊन सर्व सैन्यासमक्ष तो वीर रणांगणांत पतन पावला व महात्म्या नकुलाचें तें अद्भुत कृत्य पाहून सर्वास मोठें आश्चर्य वाटलें ! राजा, तो वीरशाली सुषेण जेव्हां भूतलावर पडला, तेव्हां जणू काय नदीच्या वेगानें कांठावरचा प्रचंड व बळकट वृक्षच कोसळून खाली पडला असें भासलें ! ह्याप्रमाणें नकुलाचा घोर पराक्रम अवलोकन करून आणि कर्णपुत्राचा वध झालेला पाहून तुझ्या सेनेचा धीर सुटला व ती भयभीत होत्साती पळत सुटली ! परंतु तितक्यांत रणांगणामध्ये शत्रुसंहारक शूर सेनापति प्रतापशाली मद्रराज शल्य हा तिचें रक्षण करण्यास पुढें सरसावला. मग त्यानें तिला पुनः व्यवस्थितपणानें जागच्या जागीं अधिष्ठित करून निर्धास्तपणानें शत्रूंशीं लढण्यास तोंड दिलें व सिहनाद करून धनुष्याचा दारुण ध्वनि आरंभिला ! ह्याप्रमाणें शल्यानें पांडवांशीं घोर समर आरंभिलें, तेव्हां त्या दृढधन्याच्या सैनापत्याखाली युद्ध करीत असलेले सर्व कौरववीर भयरहित होत्साते चोहोंकडून पुनः त्याजपाशीं प्राप्त झाले व ते मोठ्या निकरानें पांडवांशीं युद्ध करण्यास पुढें सरले. असो; ह्याप्रमाणें त्या वेळीं महाधनुर्धर मद्राधिपतीच्या भोंवतालीं पांडवांशीं लढण्याकरितां प्रचंड कौरवसेना

जमली ! राजा, तिकडे पांडवसेनेत सात्यकि, भीमसेन, नकुल व सहदेव हे शत्रुसंहारक व विनयशाली धर्मराजास पुढें करून युद्ध करीत होते, ते रणांगणांत धर्मराजाच्या भोंवतालीं उभे राहिले, आणि त्यांनीं सिंहनाद करून शंखांचा व बाणांचा प्रचंड ध्वनि सुरू केला व ते नाना-प्रकारें मोठमोठ्यांनें ओरडूं लागले ! राजा, तेव्हां इकडे तुझ्या सेनेलाही पुनः युद्धासाठीं मोठा चेव आला व सर्व सैनिक मद्राधिपतीच्या भोंवतालीं गराडा घालून उभे राहिले ! राजा, मग दोन्ही सैन्यांचें फारच भयंकर युद्ध सुरू झालें ! त्या वेळीं तीं दोन्ही दळें मारूं किंवा मरूं असा संकल्प करून जेव्हां लडूं लागलीं, तेव्हां त्यांचें तें समर पाहून भिऱ्या लोकांना फारच भय वाटलें ! पूर्वीं देवदानवांमध्ये जसा घोर संग्राम झाला, तसाच तो त्या शूर वीरांचा संग्राम झाला, व त्यांत यमराष्ट्राला फारच भर पडली ! राजा, ह्याप्रमाणें भयंकर युद्ध चालू असतां कपिध्वज अर्जुन हा रणांगणांत सं-शप्तकांचा नाश करून परत आला व त्यानें त्या कौरवसेनेवर चाल केली ! त्याप्रमाणेंच धृष्ट-द्युम्नादिक पांडववीरही त्या सेनेवर जलाल बाणांची वृष्टि करीत धावून गेले ! आणि अशा प्रकारें चोहोंकडून एकच मारा सुरू झाला, तेव्हां कौरवसेना घाबरली व तिचें भान नष्ट झाले ! राजा, त्या वेळीं पांडवांनीं कौरवांवर इतका भयंकर बाणवर्षाव केला कीं, त्याच्या योगें सर्व अंतरिक्ष व्याप्त होऊन दिशा, उप-दिशा वगैरे काहीं एक कळनासें झालें ! तेव्हां तुझ्या सेनेतले महान् महान् वीर पडल्यामुळें पांडवांनीं तुझ्या सेनेची फारच दुर्दशा उड-विली व तिला पार उधळून लाविलें ! राजा, मग फारच घनघोर संग्राम चालू झाला. त्या वेळीं महारथ पांडवांनीं तुझी सेना ठार केली व त्याप्रमाणेंच तुझ्या पुत्रांनीं रणांत पांडवांवर

चोहोंकडून हल्ला करून त्यांचेही मोठें सैन्य मृत्यूच्या मुखांत लोटिलें ! ह्याप्रमाणें भयंकर शरवृष्टि करून उभयतां सैन्यांनीं उभयतांचे शतावधि व सहस्रावधि योद्धे रणांगणांत पाडिले, तेव्हां दोन्ही सैन्ये प्रावृत्कालांत नद्या क्षुब्ध होतात तद्वत् अतिशय क्षोभलीं; आणि त्या भयं-कर संग्रामांत दोन्ही सैन्यांना तीव्र भय उत्पन्न झालें.

अध्याय अकरावा.

—:०:—

भीमसेन व शल्य ह्यांचें युद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्या-प्रमाणें त्या दोन्ही दळांनीं परस्पराना अगदीं जर्जर करून परस्पराना ठार मारण्याचा क्रम आरंभिला, तेव्हां योद्धे पळावयाम लागले, हत्ती उधळत सुटले. त्या घोर रणकंदनांत पाय-दळांनीं आक्रोश करून ओरडण्यास प्रारंभ केला, घोड्यांचा भयंकर संहार उडाला, महान् प्राणहानि सुरू झाली, सर्व जीवांचा घोर क्षय उद्भवला, नानाविध आयुधांचे समुदाय रणांगणांत पडले, रथ व गज ह्यांचा एकच संमर्द झाला, युद्धप्रवीण वीरांना महान् वीरश्री चढली, भीरुजनांची पांचावर धारण बसली, परस्पराना ठार मारण्याच्या इच्छेनें वीरपुरु-षांनीं एकमेकांवर उड्या घातल्या, सर्वत्र घन-घोर प्राणघ्न चालू होऊन त्यांत यमराष्ट्राची भरती होऊं लागली, आणि पांडवांनीं कौर-वांना व कौरवांनीं पांडवांना जलाल बाणांच्या भडिमारांनें ठार मारिलें ! अशा प्रकारें भिऱ्या लोकांना भय उत्पन्न करणारा तो दारुण संग्राम चालू असतां प्रातःकालीं सूर्योदयाच्या सुमारासच हा असा भयंकर संहार घडला ! राजा, त्या समयीं महात्म्या धर्मराजांनें राक्षि-लेले व अचूक बाण मारणारे पांडवांकडील

योद्धे मारुं किंवा मरुं अशा निर्धारानें कौरव-सेनेशीं मोठ्या निकरानें लढू लागले; आणि मग त्या बलिष्ठ ईर्ष्येस चढलेल्या व नेमका वर्षाव करणाऱ्या पांडववीरांच्या हस्ते वणव्यांत सांपडलेल्या हरिणांप्रमाणें कौरवमेना नष्ट होऊं लागली! ह्याप्रमाणें त्रिवलांत रुतलेल्या गाईमारुची कौरवमेनेची अगदीं विपन्न अवस्था झालेली अवलोकन करून त्या प्राणसंकटांतून तिला मोडविण्यासाठीं त्या समर्थी कौरव-सेनापति शल्य ह्यानें पांडवांच्या सेनेवर एक-दम हल्ला केला! आणि अत्यंत क्षुब्ध होऊन कौरवचमूवर पांडव उमळून येत होते त्यांजवर त्यानें श्रेष्ठ धनुष्याच्या योगें महान् शरवृष्टि चालविली! राजा, त्या वेळीं पांडवही विजय-प्राप्तीच्या इच्छेनें रणांगणांत मद्राधिपतीवर तुटून पडले; आणि त्यांनीं त्याजवर घोर शरांचा वर्षाव केला!

राजा, नंतर महाराथ मद्राधिप शल्यानें शतावधि जलाल बाण मारून धर्मराजाच्या समक्ष पांडवांच्या सेनेयाला जर्जर करून सोडिलें; तेव्हां नानाप्रकारचीं अनेक दुश्चिन्हे होऊं लागलीं! पर्वतांसहवर्तमान सर्व पृथ्वी भयंकर शब्द करून कंपायमान झाली! चोहोंकडे सद्दंड शूलांच्या अग्रांप्रमाणें प्रज्वलित दिसणाऱ्या उल्का फुटून जाऊन अंतरिक्षांतून रवि-मंडळास स्पर्श करून भूतलावर कोमळू लागल्या! मृग, महिष आणि पक्षी हे तुझ्या मेनेला उजवी घालून जाऊं लागले! शुक्र, मंगळ व बुध हे धर्मराजाला मातने म्हणजे बलिष्ठ झाले, व त्यामुळे सर्व पांडव लवकरच अखिल पृथ्वीचे साम्राज्य भोगणार हें त्यांनीं सूचित केलें! शस्त्रांच्या अग्रांपामून ज्वाला निघू लागल्या व त्यामुळे डोळे दिपू लागले! आणि पुष्कळ कावळे व वृषभे वीरांच्या भस्तकांवर व ध्वजांच्या शेंड्यांवर बसू लागलीं! नंतर रणांगणांत

जमलेल्या त्या सर्व सैनिकांमध्ये अत्यंत घोर युद्ध झालें! कौरवांकडील महान् महान् योद्धे आपआपल्या सर्व सैन्यासहवर्तमान पांडवांच्या सैन्यावर तुटून पडले; आणि सहस्रनेत्र इंद्र जसा पर्वतावर पर्जन्यवृष्टि करितो, तशी त्या शूर शल्यानें कुंतीपुत्र युधिष्ठिरावर बाणांची घोर वृष्टि केली! राजा, त्या वेळीं महाबलवान् मद्राधिपानें भीमसेन, नकुल, सहदेव, द्रौपदीचे सर्व पुत्र, धृष्टद्युम्न, सात्याकि व शिखंडी ह्या सर्वांवर प्रत्येकीं दहा दहा सुवर्णपुंगव जलाल बाण टाकून त्या सर्वास बाणविद्ध करून सोडिलें; आणि मग, प्रावृत्कालाम प्रारंभ होण्याच्या वेळीं इंद्र ज्याप्रमाणें भयंकर जलवर्षाव करितो, त्या-प्रमाणें त्यानें एकंदर सर्व पांडवसेनेवर घोर शरवर्षाव केला! राजा, त्या समर्थी शल्याच्या बाणांनीं सहस्रावधि प्रभद्रक व सोमक रणांत पटापटां मरून पडले व पडत आहेत असें सर्वत्र दिसें लागलें! राजा, तेव्हां पांडवांच्या सैन्या-वर शल्यानें जी शरवृष्टि चालविली होती, ती पाहून जणू काय भ्रमराचे थवे किंवा टोळांच्या धाडीच अथवा पर्जन्याच्या सरीच कोसळत आहेत, असें भासत होतें! त्या वेळीं शल्याच्या बाणांनीं हत्ती, घोडे, रथी व पायदळ हीं सर्व अगदीं आर्त होऊन भ्रांत झालीं व मोठ-मोठ्यानें आक्रोश करूं लागलीं! जणू काय शल्याच्या सर्व देहांत संताप व वीरश्री हीं भरलीं अमून, प्रलयकाली यम हा जसा सर्वांना ग्रस्त करितो, तसें त्यानें रणभूमीवर सर्व शत्रूंना ग्रस्त करून टाकिलें होतें! राजा, त्या समर्थी महा-बल मद्राधिपति शल्यानें मेघाप्रमाणें महान् गर्जना करित पांडवसैन्यांचा असा दारुण संहार आरंभिला कीं, त्यांना अखेरीस आश्रया-साठीं अजातशत्रु धर्मराज युधिष्ठिर ह्याजपाशीं त्वरा करून जावे लागलें! तेव्हां शल्यानें मोठ्या शिताफीनें रणांगणांत पांडवसैन्यांवर जलाल

बाणांचा भडिमार करीत त्यांचा पाठलाग केला आणि शैवटी घोर शरवृष्टि करीत तो युधिष्ठिरावरही चालून गेला ! परंतु पायदळ व अश्व ह्यांसहवर्तमान शल्य हा क्रोधायमान होऊन आपणावर धावून आला असे पाहातांच, अंकुशांनी ज्याप्रमाणे मदोन्मत्त हत्तीचा निरोध करावा, तसा तीक्ष्ण शरांचा मारा करून युधिष्ठिरानें त्याचा एकदम निरोध केला ! राजा, त्या समर्थी शल्यानें धर्मराजावर सर्पाप्रमाणे प्राणघातकी अमा एक घोर बाण सोडिला व तो त्या महात्म्याच्या देहाचें विदारण करून वेगानें भूगहारांत शिरला ! तें पाहून वृकोदराला अतिशय संताप आला व त्यानें तत्काळ सात बाणांनीं शल्यास विधिलें ! राजा, शल्यानें युधिष्ठिराला विदीर्ण केलेले पाहून भीमसेनाप्रमाणे इतर पांडवीय वीरही अतिशय क्षुब्ध झाले व त्यांनीं मोठ्या आवेशानें शल्यावर बाण सोडिले ! तेव्हां शत्रुसंहारक शूर शल्यावर सहदेवानें पांच बाण मारिले; नकुलानें दहा बाण मारिले; आणि मेघ जसे पर्वतावर जलवृष्टि करितो, तशी द्रौपदीच्या पुत्रांनी त्याजवर घोर शरवृष्टि केली ! ह्याप्रमाणे चोहोंकडून पांडवांनीं शल्याचें निवारण केले, तेव्हां कृप व कृतवर्मा हे अगदीं क्षुब्ध होतमाते त्याचें संरक्षण करण्याकरितां त्या स्वर्गीं धावून गेले; नंतर महाबलवान् उलूक व सौबल शकुनि हेही त्यांस मिळाले; मग कांहीं वेळानें प्रबळ अश्वत्थामाही हंसत हंसत तेथें गेला; आणि इतक्यांत तुझे सर्व पुत्र तेथें जमून त्या सर्वांनीं त्या घोर समरांत शल्याचें संगोपन केले ! राजा, त्या वेळीं कृतवर्म्यानें तीन बाण भीमसेनावर सोडून त्यास विधिलें आणि मग त्याजवर बाणांचा पाऊस पाडून त्या क्षुब्ध झालेल्या भीमसेनाला खुंटवून टाकिलें; कृपाचार्यानें संतप्त होऊन धृष्टद्युम्नावर बाणांचा भडिमार चालविला;

शकुनीनें द्रौपदीच्या पुत्रांवर व अश्वत्थाम्यानें नकुलसहदेवांवर हल्ले केले; व समरांगणांत महाधनुर्धर प्रतापशाली प्रबळ दुर्योधनानें कृष्णार्जुनांवर चाल करून भयंकर शरांचा घोर वर्षाव आरंभिला ! ह्याप्रमाणे रणभूमीवर जिकडे तिकडे कौरव व पांडव ह्यांच्या शतावधि द्वंद्वांचें मोठें भयंकर व विचित्र युद्ध चालू झालें ! तेव्हां भोजराज कृतवर्म्यानें युद्धांत भीमसेनाचे ऋक्षवर्ण अश्व ठार मारिले; आणि त्यामुळे अश्वहीन झालेल्या रथांतून तो पांडुपुत्र खालीं उतरला व हातांत गदा धारण करून शत्रूंचा संहार करूं लागला; तेव्हां जणू काय दंडधर कालच प्राण्यांचा संहार करीत आहे, असें सर्वास भासलें ! मद्राविप शल्यानें अग्रभागीं सहदेवाचे अश्व वधिले व तें पाहून तत्काळ सहदेवानें तरवारीचा प्रहार करून शल्यपुत्राला यमलोकीं पाठविलें ! इकडे गौतम व धृष्टद्युम्न ह्यांचा पुनः मोठ्या निकराचा संग्राम सुरू झाला; त्या समर्थी ते दोघेही वीर मोठ्या शौर्यानें व धैर्यानें लढत असून एकमेकांना वधण्याविषयीं एकमेकांवर चढ करीत होते ! त्या वेळीं त्या घनघोर संग्रामांत अश्वत्थाम्यानें फारसें क्रुद्ध न होतां केवळ हंसत हंसत द्रौपदीच्या पुत्रांवर प्रत्येकीं दहा दहा बाण सोडून त्यांस विधिलें आणि फिरून भीमसेनाच्या अश्वाना ठार मारिलें ! तेव्हां फिरून तत्काळ तो बलिष्ठ पांडुतनय रथांतून उतरला आणि क्षुब्ध होऊन दंडपाणि अंतकाप्रमाणे शत्रूनाश करूं लागला ! राजा, त्या वेळीं भीमसेनानें गदेंचे प्रहार करून कृतवर्म्यांचा रथ तोडिला व त्याचे अश्व वधिले आणि मग अखेरीस निरुपाय होऊन कृतवर्म्यानें त्या रथांतून खालीं उडी टाकिली व पलायन केले ! इकडे शल्यही फार चवताळला आणि त्यानें सोमकपांडवांचा विध्वंस उडवून जलाळ बाणांच्या भडिमारांनें युधिष्ठिरा-

ला पीडिले! तेव्हां तें पाहून भीमसेनाला अतिशय क्रोध चढला व दांतओठ खाऊन मोठ्या अवेशानें त्यानें आपली गदा शल्याचे प्राण घेण्याकरितां उचलली! राजा, भीमसेनाच्या त्या घोर गदेचें काय वर्णन करावें? ती केवळ यमदंडाप्रमाणें झळकत असून कालरात्रीप्रमाणें शत्रूंचा संहार करण्यास समर्थ होती! गज, अश्व व नर ह्यांचा प्राण घेणारे तें अत्यंत उग्र शस्त्र होतें! त्या गदेवर चोहोंकडून मुवर्णाचे पट्टे बसविले असून ती जणू प्रज्वलित उल्काच भामत होती! ती टोंकदार असून नागिणीप्रमाणें अतिशय उग्र होती! ती लोहमय असून तिला केवळ वज्राप्रमाणें काठिन्य होतें! विलासी स्त्रीच्या देहाला चंदन व इतर सुगंधि पदार्थ ह्यांची उटी असते तद्वत् त्या गदेला वसा, मेद व रक्त ह्यांची उटी असून ती यमाच्या जिव्हेप्रमाणें लवलवत होती! तिला इंद्राच्या वज्राप्रमाणें शतावधि सुंदर घागऱ्या लाविल्या असून त्यांचा मोठा हृदयंगम ध्वनि होत होता! तिचा आकार कात टाकलेल्या भयंकर सर्पाप्रमाणें असून ती गजमदानें माखलेली होती! ती सर्व प्राण्यांना भय उत्पन्न करणारी असून स्वकीय सैन्याला अतिशय आनंदविणारी होती! ती पर्वतांची शिखरें विदारणारी असून मृत्युलोकांत प्रख्यात होती! ती गदा वर्ज्जासारखी प्रचंड असून तिला अनेक रत्ने व हिरे ह्यांचा जडाव केल्या होता. त्या गदेच्या जोरावर महाबल भीमसेनानें कैलासलोकीं शंकराचा सखा प्रतापी कुबेर ह्यास युद्धार्थ बोलाविलें आणि क्रुद्ध झालेल्या त्या प्रबल भीमसेनानें महान् गर्जना करीत अनेक दांडग्या मायावी गुह्यकांना—त्यांनीं पुष्कळ रोष केला असतांही द्रौपदीचे इष्ट हेतु सिद्धीस नेण्यासाठीं तिच्या योगें—अलकापुरींत ठार मारिलें! असो; राजा, ह्या प्रकारची ती दारुण गदा

उचलून महाबाहु भीमसेन रणांगणांत शल्यावर धावून गेला आणि त्या युद्धविशारद पांडुपुत्रानें दारुण शब्द करणाऱ्या त्या गदेच्या प्रहारांनीं शल्याचे महावेगवान् चारही अश्व बधिले! तें पाहून शल्याला अतिशय क्रोध चढला व त्यानें मोठ्यानें गर्जना करून भीमसेनाच्या सुदृढ वक्षस्थळीं तोमर फेंकिले; तेव्हां तें त्याचें कवच विदारून त्याच्या हृदयांत घुसलें! राजा, त्या समयीं वृकोदरानें शांतपणानें छातींत शिरलेलें तें तोमर उपटून काढिलें आणि लागलेंच मद्राधिपतीच्या सारथ्याचें हृदय भेदिलें! राजा, तेव्हां तो शल्यसारथी भिन्नकवच होत्साता रक्त ओकत अग्रभागीं दीन होऊन मूर्च्छित पडला! ह्याप्रमाणें भीमसेनानें आपल्या कृत्याचा प्रतिकार केलेला पाहून शल्यास मोठें आश्चर्य वाटले व तो तत्काळ एकीकडे झाला! आणि नंतर तो धर्मात्मा मद्राधीश हातांत गदा धारण करून भीमसेनाकडे पुनः पुनः पाहू लागला! असो; राजा, ह्याप्रमाणें रणांगणांत क्लेश न पावणाऱ्या अशा त्या भीमसेनाचें तें विलक्षण शौर्य पांडवांनीं पाहिलें. तेव्हां त्यांना मोठा आनंद झाला व त्यांनीं त्याची फार वाहवा केली!

अध्याय बारावा.

—:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा, आपला सारथि पडला तेव्हां शल्य हा तत्काळ संबंध पोलादाची अशी गदा धारण करून पर्वतासारखा अढळ उभा राहिला! त्या समयीं तो जणू प्रलयकालचा अग्निच भडकला आहे अथवा पादाधारी यमच क्षोभला आहे, किंवा शृंगासह कैलास पर्वतच उभा आहे, अगर वज्राधारी इंद्रच अथवा शूलधारी महादेवच युद्धार्थ सिद्ध

आहे, किंवा अरण्यांत मदनमत्त हत्तीच तुफान झालेला आहे, असें सर्वांस वाटलें ! नंतर त्याज-
वर भीमानें प्रचंड गदेसहवर्तमान मोठ्या आवे-
शानें हल्ला केला ! त्या वेळीं सहस्रावधि शंख
व तुर्यें ह्यांचा महान् ध्वनि मुरू झाला; योद्धे
मोठमोठ्यांचां सिंहनाद करूं लागले; त्या योगें
शूर वीरांना अतिशय वीरश्री चढली, आणि
मग जिकडे तिकडे एकच गडबड उडून जाऊन
दोन्ही दळांतील योद्धे सर्वत्र त्या शल्यभीम-
रूप प्रचंड गजांचा तो घनघोर संग्राम पाहून
त्या दोघांचीही वाहवा करूं लागले ! राजा,
रणांगणांत त्या भीमसेनाचा पराक्रम मद्राधिपति
शल्य किंवा यदुनंदन बलराम ह्यांशिवाय
अन्याला खचीत सहन झाला नसता; आणि
तसाच त्या महात्म्या मद्राधीशाचाही गदावेग
रणांगणांत सहन करण्यास एक वृकोदरच
तेवढा समर्थ होता ! अमो; नंतर शल्य व
भीम हे दोघेही प्रबल वृषभांप्रमाणें मोठमोठ्यांचें
दुरकण्या फोडीत मंडलाकार फिरूं लागले. व
त्यांनीं पुनःपुनः एकमेकांवर उड्या घालून
गदाप्रहार आरंभिले ! त्या समयीं त्या दोघां-
नींही नानाविध मंडलें करून परस्परांवर गदा
हाणिल्या, तेव्हां ते दोघेही समान पराक्रमी
आहेत असें दिसून आलें ! राजा, शल्याच्या
त्या गदेला तावलेल्या सुवर्णांप्रमाणें अळकणारीं
वखें गुंडाळलेलीं असल्यामुळें जणू काय तिज-
पासून अग्नीच्या ज्वाळाच चालल्या होत्या;
आणि त्यामुळें त्या गदेच्या योगें प्रेक्षकांना
अतिशय भीति उत्पन्न होत होती ! त्याप्रमाणेंच
तो महात्मा भीमसेन मंडलाकार परिभ्रमण
करीत असतां त्याची गदा पाहून जणू काय
मेघमंडलावर विद्युल्लाताच चमकत आहे असा
भास होई ! राजा, मद्रराज शल्यानें भीमसेनाच्या
गदेवर आपली गदा हाणिली म्हणजे जणू
काय ती पेट घेऊन अंतरिक्षांत निच्यापासून

ठिणग्यांचा फंवारा चालू होई; आणि त्या-
प्रमाणेंच भीमसेनानें शल्याच्या गदेवर आपल्या
गदेचा प्रहार केला म्हणजे केवळ अंगाराचाच
वर्षाव पडे ! ते दोन प्रचंड वीर झगडत असतां
जणू काय दोन महान् हत्ती एकमेकांवर दंत-
प्रहार करून एकमेकांशीं लढत आहेत, किंवा
दोन उन्नत बैल एकमेकांना शिंगें भोसकून
एकमेकांशीं झुंजत आहेत, असें भासे ! आणि
अवेरीस त्या उभयतांनीं एकमेकांवर तोषें
(गदाविशेष) हाणावीं तशीं त्या गदांचीं
अग्नि हाणिलीं व त्या योगें त्यांचीं गात्रें क्षणांत
छिन्नभिन्न होऊन त्यांतून रुधिराचे ओघ चालू
झाले ! राजा, त्या समयीं त्या दोघांही वीरांचे
ते रक्तबंबाळ झालेले देह पाहून जणू काय ते
फुललेले पळसाचे वृक्षच होत असा भास झाला
व त्यांची अद्वितीय कांति दिसूं लागली !
त्यांचें तें घोर गदायुद्ध चालू असतां मद्राधिप
शल्यानें भीमसेनाच्या डाव्या व उजव्या
कुशांवर बहुत गदाप्रहार केले, परंतु तो महा-
बाहु कुंतीपुत्र अणुरेणु न दळतां पर्वतामारखा
सुस्थिर राहिला ! त्याप्रमाणेंच भीमसेनानें पुनः
पुनः शल्यावर गदेचे मोठमोठे आघात केले; परंतु
हत्तीनें महान् पर्वताला कितीही धडका मारिल्या
तरी त्यावर जसा त्याचा कांहीच परिणाम
होत नाहीं, तसा तो वीरश्रेष्ठ शल्य मुळींच
व्यथा पावला नाहीं ! ते पुरुषमिंह परस्परांशीं
भयंकर युद्ध करीत असतां त्यांच्या गदांचे जे
आघात चालले होते, त्यांचा घोर शब्द दश-
दिशांच्या ठिकाणीं ऐकूं येई आणि जणू तीं
दोन वज्रेंच आदळत आहेत असें वाटे ! राजा,
नंतर ते दोघे महाप्रतापी वीर प्रचंड गदांमह
एकमेकांशीं अधिक भिडले आणि पुनः मंडलें
करीत एकमेकांवर गदा हाणूं लागले ! त्या
वेळीं प्रत्येकजण आठ पावले पुढें मरला;
आणि लोहदंड उचलून ते दोघेही युद्ध

करूं लागले, तेव्हां त्यांचा अगदीं अमानुष पराक्रम दृग्गोचर झाला! एकमेकांना ठार मारण्याच्या इच्छेने त्यांनी एकमेकांवर मंडलाकार परिभ्रमण करित हले केले आणि त्यांत त्यांनी आपल्या अंगचें अर्धे युद्धकौशल्य दाखविलें! नंतर त्यांनी आपल्या घोर गदा उंच केल्या, तेव्हां ते सशृंग पर्वताप्रमाणें दिसूं लागले. मग ते मंडलें करीत एकमेकांवर धावून गेले; परंतु चमत्कार असा कीं, ते रणशूर वीर रणांत एकमेकांना भिडल्यावर अगदीं पर्वतप्राय अदळ उभे राहिले! मग ते परस्परांवर मोठ्या क्रोधानें एकसारखे भयंकर गदाप्रहार करूं लागले; आणि अखेरीस अत्यंत घायाळ होऊन दोघेही इंद्रध्वजाप्रमाणें एकदम भूतलावर पतन पावले, तेव्हां दोन्ही सैन्यांत एकच हाहाकार झाला! त्या समयीं दोघांनाही मर्मस्थळीं अतिशय इजा झाली असून ते दोघेही अगदीं विव्हेल झाले होते! असा; मग रणांगणांत मद्राधिपतीला कृपाचार्याने ताबडतोब आपल्या रथांत घातलें व रणभूमींतून एकीकडे नेलें! इकडे रणांगणांत भीमसेन मूर्च्छित पडला होता तो मद्यप्राशन करणाऱ्या मनुष्याप्रमाणें क्षणांत पुनः सावध झाला; आणि त्यानें फिरून गदा धारण करून मद्राधिपतीला युद्धार्थ आवाहन केलें! राजा, तेव्हां तुझ्या सैन्यांतले दुर्योधनप्रभृति सर्व शूर योद्धे नानाविध शस्त्रास्त्रांसह रणवाद्यांचा भयंकर गजर चालू असतां पांडवसेनेवर धावून आले आणि ते मोठमोठ्यानें ओरडत व हात वर करीत आणि शस्त्रें उगारीत पांडवसेनेवर तुटून पडले! तेव्हां कौरवांचें तें सैन्य आपल्यावर धावून येत आहे असें पाहातांच पांडवांना विलक्षण वीरश्री चढली व ते सिंहासारखी गर्जना करीत दुर्योधनादिक कुलवीरांवर एकदम चालून गेले! ह्याप्रमाणें, हे भरतश्रेष्ठा, पांडवांचें सैन्य कौरवांवर उलट चाल करून जात असतां तुझ्या

पुत्रानें तितक्यांत अगदीं विलंब न करितां प्रासानें चेकितानाचें वक्षस्थळ अतिशय विद्ध केलें; आणि त्यामुळें तो पांडववीर रुधिरप्रवाहांनीं सुम्नात होत्साता रथांत वीरासनीं मूर्च्छित पडला व मेला! अशा प्रकारें चेकितान मरण पावला तेव्हां पांडवीय महारथांनीं आप- आपल्या पथकांतून कौरवसेनेवर एकसारखा भयंकर शरवर्षाव आरंभिला आणि ते सर्व रण-धुरंधर वीर मोठ्या शौर्यानें सर्वत्र तुझ्या सैन्यांतून संचार करीत असतां त्यांजवर अद्वितीय तेज झळाळूं लागलें! तेव्हां कृपाचार्य, कृतवर्मा व महारथ शकुनि हे मद्रराजाला पुढें करून धर्मराजाशीं युद्ध करूं लागले; द्रोणाचार्याचा वध करणारा जो महावीरशाली पराक्रमी धृष्टद्युम्न त्याशीं दुर्योधनानें युद्ध आरंभिलें; आणि, राजा, तुझ्या पुत्राच्या आज्ञेवरून तीन हजार रथी अश्वत्थाम्याला पुढें करून अर्जुनाशीं लढूं लागले! ह्या सर्व योद्ध्यांनीं विजय मिळविण्याचा पूर्ण संकल्प केला असून समरांगणांत आपले देह ठेवण्यास ते अगदीं सिद्ध होते. त्या वेळीं, राजा, महान् सरोवरांत प्रवेश करणाऱ्या हंसांप्रमाणें तुझ्या वीरांनीं पांडव-सैन्यांत प्रवेश केला! मग परस्परांना ठार मारण्याच्या इच्छेनें मोठें तुंबळ युद्ध प्रवर्तलें! एकमेकांनीं एकमेकांवर प्राणघातकी प्रहार चालू केले, तथापि त्यांची उमेद कमी न होतां उलट त्यांची वीरश्री अधिकाधिकच वाढत चालली.

राजा, ह्याप्रमाणें घोर संग्राम चालू होऊन त्यांत मोठमोठ्या योद्ध्यांचा वध होऊं लागला; तेव्हां इतका रणसंमर्द मातला कीं, वायुनें जिकडे तिकडे धूळच धूळ उडून कांहींच दिसेनासें झालें! पण त्या समयीं दोन्ही सैन्यांतील वीर एकमेकांची नांवे घेऊन लढत असतां त्यांची नांवे जीं आमच्या कानीं पडत, त्यांवरून मात्र ते मोठ्या वीरश्रीनें एकमेकांशीं

लढत आहेत असे आह्वांला समजे! असो; नंतर रणांगणांत जी चोहोंकडे धूळ पसरली होती ती सर्व पुढें रक्ताचा मडा पडल्यानें खाली बसली आणि सर्व अंधकार नष्ट झाल्यामुळें दिशा पुनः उजळल्या! राजा, इतका अनर्थकारक घोर संग्राम प्रवर्तला असतांही तुझ्या किंवा शत्रूंच्या सेनेपैकी कोणीही वीर युद्धविमुख झाला नाहीं! सर्वांनीं ब्रह्मलोकप्राप्तीविषयीं तत्पर होऊन रणांगणांत विजयश्रीची इच्छा धरिली! राजा, तेव्हां त्या पराक्रमी योद्ध्यांनीं उत्तम युद्ध करून स्वर्गाम जाण्याचा निर्धार केला! आपण ज्याचें अन्न खाल्लें त्याच्या ऋणांतून मुक्त होण्यासाठीं त्याचें कार्य सिद्धीस नेण्याचा त्यांनीं दृढसंकल्प योजिला आणि स्वर्गाम जाण्याविषयीं पूर्ण निर्धार ठरवून त्यांनीं मोठे घोर युद्ध चालविलें! तेव्हां दोन्ही सैन्यांतील महारथांनीं नानाविध शस्त्राखें एकमेकांवर टाकिली व मोठमोठ्यांनें गर्जना करित एकमेकांवर प्रचंड मारा आरंभिला; आणि “मारा, तोडा, धरा, हाणा, कापा” असे शब्द उभय सैन्यांतून कानीं पडूं लागले!

नंतर, हे महाराजा, मद्राधिपति शल्यानें महारथ धर्मराज युधिष्ठिराला ठार मारण्याच्या इच्छेनें त्याजवर जलाल बाणांचा भडिमार करून त्यास विद्ध केले! तेव्हां त्या मर्मज्ञ पृथापुत्रांनें सहज हंसत चौदा बाण शल्याच्या मर्मस्थळीं नेमके मारिले; पण महाबल शल्यानें तत्काळ त्या पृथापुत्राला वधण्याचा निश्चय करून मोठ्या क्रोधाने रणांगणांत त्यास अनेक कंकपत्र बाणांनीं विधिलें आणि पुनः एक बांकदार पेन्याचा बाण सर्व सैन्याच्या देखत त्या युधिष्ठिरावर जोराने सोडिला! राजा, तें पाहून धर्मराजालाही अतिशय क्रोध आला; व त्या महारथ महायशस्वी पांडुपुत्रांनें तत्काळ

भयंकर कंकपिच्छ व मयूरपिच्छ बाणांचा शल्यावर भडिमार चालवून त्यास विद्ध केले; आणि चंद्रसेनावर सत्तर, सारथ्यावर नऊ व द्रुमसेनावर चौमष्ट बाण टाकून त्यांस समरांगणांत ठार मारिलें! राजा, ह्याप्रमाणें महात्म्या धर्मराजाने चक्ररक्षकांचा वध केला तेव्हां शल्यानें पंचवीस चेदि वीरांना रणभूमीवर पाडिले; आणि त्यानें सात्यकीवर पंचवीस भीमसेनावर पांच व नकुलसहदेवांवर शंभर जलाल बाण सोडून त्यांस विद्ध केले! अशा प्रकारें, हे राजश्रेष्ठ, शल्य हा घोर पराक्रम गाजवीत रणांगणांत परिभ्रमण करित असतां युधिष्ठिराने त्याजवर विषारी सर्पाप्रमाणें प्राण घेणारे उग्र बाण सोडिले आणि एक भल्ल बाण टाकून सैन्याच्या अग्रभागी असणाऱ्या त्या वीरांचे ध्वजाग्र छेदिले; तेव्हां तो छिन्न ध्वज पर्वताच्या कड्याप्रमाणें तुटून धाडकन् खाली कोसळला! ह्याप्रमाणें, राजा, आपला ध्वज भद्र झाला व धर्मराज युधिष्ठिर न्यवस्थितपणें उभा आहे असें जेव्हां मद्राधिपतीने पाहिलें, तेव्हां त्यास अत्यंत क्रोध आला आणि त्यानें पांडवांवर बाणांचा पाऊस पाडण्यास आरंभ केला! राजा, त्या वेळीं वीर्यशाली क्षत्रियावतंस शल्यानें सात्यकि, भीमसेन, नकुल व सहदेव ह्यांजवर प्रत्येकीं पांच पांच बाण टाकिले, आणि युधिष्ठिराला शरवृष्टीनें अगदीं जर्जर करून सोडिले! राजा, त्या समयीं त्यानें धर्मराजाच्या वक्षस्थळावर जणू काय मेघपटलाप्रमाणें बाणांचें जाळेंच पसरलें आहे असें आह्वांस दिसलें! नंतर महारथ शल्यानें क्रोधायमान होऊन धर्मराजावर नतपर्व बाणांची घोर वृष्टि केली; आणि सर्व दिशा व उपदिशा बाणाच्छादित करून सोडिल्या! राजा, अशा प्रकारें बाणांनीं अगदीं झांकून जाऊन पीडित झाल्यावर अखे-

रीस इंद्रानें व्रस्त केलेल्या जंभासुराप्रमाणें तो पांडुपुत्र धर्मराज अगदीं हतवीर्य झाला !

अध्याय तेरावा.

—:०:—

शल्याचें युद्ध.

संजय सांगतो:—हे मारिषा, ह्याप्रमाणें मद्राज शल्यानें धर्मराजाला हीनवीर्य करून टाकिलें; तेव्हां सात्यकि, भीमसेन, नकुल व सहदेव हे रणांगणांत आपआपल्या रथांतून शल्यावर धावून गेले व त्यांनीं त्यास चोहोंकडून वेढा देऊन अगदीं पीडित केले ! अशा प्रकारें त्या एकट्या वीराला बहुत महारथ पांडववीरांनीं कोंडून धरून व्रस्त केलें, तेव्हां अंतरिक्षांत मिद्वाना मोठा आनंद झाला व त्यांनीं त्यांची फार फार वाहवा केली ! त्या वेळीं तो घोर संग्राम अवलोकन करण्यासाठीं ऋषिर्वर्य तेंथें जमला होता त्यासही तें भयंकर युद्ध पाहून मोठें आश्चर्य वाटलें ! राजा, शल्याचा पराक्रम म्हणजे शत्रूंच्या हृदयांतलें केवळ शल्यच होतें ! त्या समयीं रणभूमीवर भीमसेनानें प्रथम त्या शल्यभूत शल्यावर एक बाण टाकिला व नंतर आणखी सात बाण टाकिले; त्याप्रमाणेंच त्या कुरुवीरापासून धर्मपुत्र युधिष्ठिराचें संरक्षण करावें म्हणून त्याजवर सात्यकीनें शंभर बाण टाकिले आणि त्यास बाणाच्छादित करून तो सिंहनाद करूं लागला ! तसेच त्या वेळीं नकुल व सहदेव ह्यांनीं प्रत्येकीं पांच पांच बाण त्याजवर सोडिले आणि मग सहदेवानें फिरून सात बाण टाकून त्यास विद्ध केले ! ह्याप्रमाणें रणांगणांत त्या शूर सेनापतीवर पांडवीय महारथांनीं चोहोंकडून घोर वर्षाव चालविला असतां शल्यानें मग आपलें धनुष्य ताणिलें ! राजा, शल्याच्या त्या धनुष्याचें सामर्थ्य इतकें होतें कीं, त्यापासून

सुटलेले बाण मोठ्या वेगानें शत्रूला प्रहार करीत आणि कितीही दुर्भेद्य पदार्थ असला तरी तो त्यांच्या आटोक्यांत आला म्हणजे तेव्हांच सुभेद्य होई ! हे मारिषा, अशा त्या धनुष्याच्या योगें शल्यानें सात्यकीवर पंचवीस, भीमसेनावर सत्तर व नकुलावर सात बाण सोडून त्यांस विंधिलें आणि सहदेवाचें धनुष्य व बाण तोडून टाकून त्यानें त्याजवर एकवीस बाण सोडून त्यास विद्ध केलें ! राजा, त्या वेळीं सहदेवानें दुसरें धनुष्य सज्ज केलें; आणि रणांगणांत त्या आपल्या पहापरक्रामी मातुलावर विषारी सर्पाप्रमाणें प्राणघातकी व प्रज्वलित अग्नीप्रमाणें देदीप्यमान असे पांच बाण सोडिले व त्याच्या सारथ्यावर एक नतपर्व बाण टाकिला ! राजा, मग पुनः सहदेवानें मोठ्या त्वेषानें आणखी तीन बाण शल्यावर सोडिले; आणि नंतर घनघोर संग्राम सुरू होऊन त्यांत भीमसेनानें सत्तर, सात्यकीनें नऊ आणि धर्मराजानें साठ बाण सोडून शल्याचीं गात्रें छिन्न-भिन्न केलीं ! राजा, त्या समयीं शल्याची अवस्था मोठी कठीण झाली ! त्या पांडवीय महारथांनीं त्याचा सर्व देह नग्नशिखांत बाणांनीं विद्ध करून सोडिला; व कावेच्या पर्वतांतून जसे गेरूचे लोट वाहूं लागतात तसे त्यांतून रुधिराचे लोट वाहूं लागले ! पण इतकी जरी त्याची विपन्न दशा झाली, तरी तो डगमगला नाहीं; त्यानें तत्काळ त्या सर्व महारथांवर प्रत्येकीं पांच पांच बाण टाकिले आणि मग रणांगणांत एक भल्ल बाण सोडून धर्मराजाचें धनुष्य छेदिलें व तें सर्वांना मोठें नवल वाटलें ! नंतर राजा, धर्मराजानें दुसरें धनुष्य उचलून घोर शरांच्या भडिमारांनें अश्व, सारथि, ध्वज व रथ ह्यांसहवर्तमान त्या शल्याला बाणाच्छादित करून टाकिलें ! राजा, इतक्याउपरही शल्यानें उलट धर्मराजावर दहा जल्ल बाण

सोडून त्यास विंबिलें आणि त्यास अगदीं आर्त करून टाकिलें. पण धर्मराज शरार्दित झालेला पाहून सात्यकि अतिशय चवताळला व त्यानें त्या शूर मद्राधिपतीवर पांच बाण सोडून त्याचा वेध केला ! तेव्हां उलट शल्यानें तत्काळ सात्यकीचें तें प्रचंड धनुष्य क्षुरप्र बाणानें तोडिलें आणि भीमसेनादिक प्रबळ पांडववीरांना तीन तीन बाण मारिले ! तेव्हां, हे महाराजा, सत्यपराक्रमी सात्यकीला अतिशय क्रोध चढला आणि त्यानें सुवर्णाच्या दंडाचें व अत्यंत मूल्यवान् असें एक तोमर शल्यावर फेंकिलें ! त्याचप्रमाणें भीमसेनानें पद्मगाप्रमाणें उग्र असा एक देदीप्यमान नाराच बाण त्यावर टाकिला, नकुलानें शक्ति सोडली, सहदेवानें तेजस्वी गदा फेंकिली व धर्मराजानें त्याला ठार मारण्याच्या इच्छेनें त्याजवर रणांगणांत एक शतघ्नी सोडिली ! ह्याप्रमाणें त्या पांच पांडवयोद्ध्यांनीं सोडिलेलीं तीं शस्त्रें आपणावर येत आहेत असें पाहतांच समरांगणांत मद्राधिपतीनें उलट शस्त्र-संधांच्या योगें त्या सर्वांचें निवारण केलें ! सात्यकीनें सोडिलेलें तोमर शल्यानें भल्ल-बाणांनीं छेदिले, भीमसेनाचा सुवर्णमंडित बाण त्या रणकुशल प्रतापशाली कुरुवीरानें मोठ्या चलाखीनें बाणांचा घोर वर्षाव करून द्विधा भंगिला, नकुलानें टाकिलेली भयंकर हेमदंड शक्ति आणि सहदेवानें फेंकिलेली गदा ह्यांचाही त्यानें बाणवृष्टीनें समूळ उच्छेद केला; व दोन बाण सोडून धर्मराजाची शतघ्नी तोडिली आणि सर्व पांडवांच्या समक्ष तो मोठमोठ्यानें सिंहगर्जना करूं लागला ! पण अशा प्रकारें शल्यानें पांडवांचा प्रतिकार करून रणांगणांत आपलें वर्चस्व स्थापिलें तें सात्यकीला मुळीच खपलें नाहीं ! तो संतापानें नखाशिखांत पेटला व त्यानें दुसरे धनुष्य धारण करून दोन बाण मद्रेश्वरा-वर व तीन बाण त्याच्या सारथ्यावर मारिले.

तेव्हां शल्याला मनस्वी क्रोध चढला आणि महान् गजांवर जसे अंकुशप्रहार करावे, तसे त्यानें रणांगणांत त्या सर्व महारथांवर दहा दहा जलाल बाणांचे प्रहार केले ! ह्याप्रमाणें मद्र-राजानें त्या महारथांचें निवारण केलें तेव्हां ते शत्रुसंहारक महान् वीर मद्रराजाच्या समोर उभे राहू शकले नाहींत आणि एकदम मागे हटले ! अशा प्रकारें शल्याचा घोर प्रताप अव-लोकन करून दुर्योधनाला वाटलें कीं, आतां पांडव, पांचाल व सृंजय हे खचीत मेलेंच ! नंतर, राजा, महाबाहु प्रतापवान् भीमसेन हा जिवाची आशा सोडून मद्राधिपतीची लहू लागला ! तेव्हां नकुल, सहदेव व महारथ सात्यकि ह्यांनींही शल्याला वेढा घातला व सर्वांनीं चोहोंकडून त्याजवर घोर शरांचा भडिमार आरंभिला ! ह्याप्रमाणें शत्रूंकडील चार महारथांनीं अगदीं कोंडून टाकिले असतांही त्या प्रतापशाली कुरुसेनापतीला अणुमात्र भीति वाटली नाहीं आणि त्यानें एकट्यानें त्या सर्वांशीं घोर युद्ध चालविलें ! राजा, त्या समर्थी धर्मराजानें त्या दारुण संग्रामांत एक क्षुरप्र बाण सोडून शल्याच्या चक्ररक्षकाला हां हां म्हणतां वधिलें; पण तो शूर चक्ररक्षक रणांत पडतांच महाबल मद्रराजानेंही पांडवीय सैनिकांवर इतकी घोर शरवृष्टि करून त्यांस झांकून काढिलें कीं, ' आतां कसें करावें ' अशी धर्मराजाला एकाएकी चिंता उत्पन्न झाली ! आणि तो असा विचार करूं लागला कीं, ' कृष्णाचें तें महत् वचन समरांगणांत कसें तडीस जाणार ! मला तर असें वाटतें कीं, क्रुद्ध झालेल्या मद्रराजापुढें माझे सैन्य निवत रहाणार नाहीं ! "

राजा धृतराष्ट्रा, नंतर रथ, गज व अश्व ह्यांसह सर्व पांडव मद्रराज शल्याच्या समीप येऊन भिडले आणि त्यांनीं चोहोंकडून त्याज-

बर नानाशस्त्रौघ व घोर शरवृष्टि आरंभिली ! परंतु बारा जसा मोठमोठ्या मेघसमूहांचा संहार उडवितो, तसा त्या शल्यानें समरांगणांत पांडवांनीं केलेल्या त्या शस्त्रास्त्रांच्या ओघांचा संहार उडविला ! नंतर शल्यानें पांडवांवर इतके सुवर्णपुंख बाण मारिले कीं, जणू काय अंतरिक्षांत टोळघाडच उसळली आहे असें आह्वांस भासलें ! मद्राधिपतीनें त्या घोर संग्रामांत सोडिलेले बाण पांडवांवर येत असतां जणू काय शलभांचे समुदायच त्याजवर क्रोसळत आहेत असें दिसत होतें ! हे जनाधिपा, मद्रेश्वराच्या धनुष्यापासून सुटलेल्या सुवर्णभूषित शरांची अंतरिक्षांत इतकी गर्दी झाली कीं, त्यांत मुळीच रिती जागा राहिली नाही ! तेव्हां त्या महान युद्धांत सर्वत्र अतिशय बाणांधकार पडल्यामुळे पांडवांपैकीं किंवा आमच्यापैकीं कांहींएक दिसेनासें झाले ! आणि त्या प्रबळ मद्राधिपानें हस्तकौशल्यानें जिकडे तिकडे शरवृष्टि करून पांडवांचा सेनासागर प्रलुब्ध केला; तेव्हां देव, दानव व गंधर्व हे सर्व अतिशय विस्मयांत पडले ! ह्याप्रमाणें, राजा, आपआपल्यापरीं समरांगणांत पराकाष्ठा करून युद्ध करणाऱ्या त्या सर्व पांडववीरांना शल्यानें बाणांनीं झांकून काढिलें व धर्मराजावरही घोर शरवर्षाव करून तो पुनःपुनः मोठमोठ्यानें सिंहासारखा गर्जू लागला ! ह्याप्रमाणें शल्यानें सर्व पांडवांना बाणाच्छादित करून टाकिलें, तेव्हां पांडवांकडील महारथ शल्यावर चाल करून जाण्यास धजले नाहीत; परंतु धर्मराज व भीमसेनप्रमुख इतर प्रबळ रथी हे मात्र रणांगणास शोभविणाऱ्या त्या शूर शल्याशीं युद्ध करीत तसेच नेटानें समरांगणांत लडत राहिले !

अध्याय चौदावा.

—:३०:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, इकडे अर्जुनाचें व अश्वत्थाम्याचें युद्ध चाललें होतें, त्यांत अश्वत्थाम्यानें बहुत पोलादी बाणांचा भडिमार करून अर्जुनास विद्ध केले; आणि त्याचप्रमाणें त्या द्रोणपुत्राचे अनुयायी जे त्रिगर्ताचे शूर महारथ त्यांनींही त्याजवर घोर शरांची वृष्टि आरंभिली, तेव्हां अर्जुनानें समरांगणांत तीनच बाण अश्वत्थाम्यावर सोडिले; आणि इतर महाधनुर्धरांवर प्रत्येकीं दोन दोन बाण सोडिले व त्या सर्वास शरविद्ध करून मग सर्व शत्रुसैन्यांवर बाणांचा पाऊस पाडिला; राजा, त्या समर्थी ते सगळे कौरववीर नखशिखांत बाणकंटकांनीं व्याप्त झाले; व आणखी एकसारखा अर्जुनाच्या हस्तें त्यांजवर बाणांचा घोर भडिमार चाललाच होता, तरी ते कौरववीर अर्जुनाला सोडून रणांगणांतून पराङ्मुख झाले नाहीत ! तेव्हां द्रोणपुत्रप्रभृति सर्व कौरव महारथ प्रचंड रथसैन्यासमवेत अर्जुनावर तुटून पडले आणि त्यांनीं अर्जुनाला वेढा घालून त्याच्याशीं भयंकर युद्ध चालविलें ! राजा, त्या वेळीं कौरवांनीं सोडिलेल्या त्या सुवर्णभूषित शरांनीं अर्जुनाच्या रथावरील वीरासन अगदीं व्याप्त झाले; आणि त्या सर्वधनुर्धरांमणीं कृष्णार्जुनांचे देहही अत्यंत बाणविद्ध झाले ! राजा, ह्याप्रमाणें कृष्णार्जुनांचीं शरीरें विदीर्ण झालेलीं पाहून कौरवांकडील त्या युद्धधुरंधर योद्ध्यांना मोठा आनंद झाला; आणि मग त्यांनीं आणखी घोर शरांचा भडिमार करून अर्जुनाच्या रथाची धुरी, चाकें, ईषा, बंधनरज्यु, जूं व तुंबे हीं सर्व बाणमय करून टाकिलीं ! राजा, त्या समर्थी तुझ्या वीरांनीं अर्जुनाची जी दुर्दशा उडविली, तशी दुर्दशा

कोणाची उडालेली मी पूर्वी पाहिली नव्हती व ऐकिलीही नव्हती ! तेव्हां अर्जुनाचा तो रथ चोहोंकडून चित्रविचित्र पुंखांच्या जलाल बाणांनी ओतप्रोत भरून गेला; —जणू काय अंतरिक्षांतलें विमान भूतलावर उतरलें असून तें शतावधि उल्कांनी अत्यंत पेटलें आहे असें भासूं लागलें ! नंतर, राजा, मेघ जसा पर्वतावर जलवृष्टि करितो, तशी अर्जुनांनं त्या कौरवसेनेवर नतपर्व बाणांची घोर वृष्टि आरंभिली; तेव्हां जिकडे तिकडे पार्थनामांकित बाणांचा पाऊस पडूं लागून त्यानें समरांगणांत कौरवचमूचा भयंकर संहार घडूं लागला; आणि प्रेक्षकांना सर्व महीतल तशा प्रकारें पार्थमुद्रांकित दिसलें ! राजा, त्या समयीं पार्थरूप अग्नि तुझे सैन्य जाळीतच आहे असें वाटलें ! तो मोठ्या क्रोधानें जे बाण सोडीत होता, त्या जणू काय अग्नीच्या ज्वाळाच होत्या; त्याच्या धनुष्याचा महान् ध्वनि हा प्रचंड वारा सुटला होता; व कौरवांचें सैन्य ही त्या अग्नीचीं इंधनें होती ! असो; अशा प्रकारें अर्जुनांनं तुझे सैन्य क्षणांत दग्ध केलें ! राजा, त्या वेळीं रणांगणांत क्रुद्ध झालेल्या अर्जुनाच्या रथाच्या मार्गामध्ये सर्वत्र रथांचीं चाकें, जोखडें, बाणभाते, ध्वजपताका, रथ, ईषा, तुंबे, त्रिवेणु, आंस, बंधनें, चाबूक, कुंडलें व मंदिल ह्यांसहवर्तमान मस्तकें, भुज, खांदे, छत्रें, पंग्वे, मुकुट इत्यादिकांच्या राशींच्या राशीच पडल्या होत्या ! राजा, त्या समयीं पृथ्वीचें रूप स्पष्ट दिसत नसून तिजवर सर्वत्र मांस व शोणित ह्यांचा कंदेम मातल्यामुळें भिड्यांना फार भय वाटूं लागलें आणि शूरांची वीरश्री अधिकच वाढली ! त्या वेळीं जणू काय तें शंकराचें क्रीडास्थानच होय असा भास झाला ! राजा, शत्रुसंहारक अर्जुनांनं त्या समयीं समरांगणांत दोन हजार कवचधारी रथांचा विध्वंस उड-

विला; आणि भगवान् अग्नि स्थावरजंगम विश्वाला जाळून टाकिल्यावर विघ्न होत्साता जसा अतिशय दीप्तिमान् दिसतो, तसा तो पांडुपुत्र आपल्या प्रदीप्त कांतीनें झळाळूं लागला !

राजा, अशा प्रकारें अर्जुनाचा तो दिव्य पराक्रम अवलोकन करून, ज्याच्यावर पुष्कळ पताका फडकत होत्या अशा रथांतून अश्वत्थामा अर्जुनावर चालून गेला व त्यानें त्यास अडवून धरिलें ! तेव्हां त्या महाधनुर्धराचें घोर युद्ध जुंपलें ! ते दोघेही पुरुषन्याग्र एकमेकांला ठार मारण्याच्या इच्छेनें एकमेकांवर तुटून पडले ! त्या समयीं त्यांनीं परस्परांवर इतकी भयंकर शरवृष्टि केली कीं, जणू काय ग्रीष्म ऋतूच्या अखेरीस ते दोन महान् मेघ जलवर्षावच करीत आहेत असा भास झाला ! आणि ज्याप्रमाणें मदनमत्त वृषभ आपल्या शृंगांनीं एकमेकांना प्रहार करितात, त्याप्रमाणें ते दोन्ही योद्धे परस्परांच्या स्पर्धेनें परस्परांवर नतपर्व बाणांनीं प्रहार करूं लागले ! हे महाराजा, त्या उभय वीरांचें युद्ध बहुत काळपर्यंत अगदीं समसमान भासलें; आणि दोघांनींही रणांगणांत समसमान घोर शस्त्राखें एकमेकांवर सोडिलीं ! हे भारता, अशा प्रकारें त्यांचें तुंबळ युद्ध चालू असतां अश्वत्थाम्यानें सुवर्णाच्या पुंखांचे व अतिशय धारदेऊन जलाल केलेले बारा बाण अर्जुनावर आणि दहा बाण वासुदेवावर सोडून त्यांस विद्ध केलें ! तें पाहून बीभत्सूला विलक्षण वीरश्री चढली; आणि त्यानें क्षणभर अश्वत्थामा हा गुरुपुत्र आहे असें आदरपूर्वक मनांत आणिलें व मग गांडीव धनुष्याच्या योगें त्याजवर बाणांचा भडिमार चालवून त्याला अश्वहीन, सूतहीन व रथहीन करून टाकिलें आणि त्याजवर पुनःपुनः सौम्य बाणांची वृष्टि आरंभिली ! राजा, ह्याप्रमाणें अर्जुनांनं अश्वत्थाम्याचे घोडे मारून त्याचा रथ भग्न केला,

तेव्हां अश्वत्थाम्यानें त्या आपल्या भग्न रथावर उभें राहून एक परिघतुल्य लोहमय मुसळ त्या पांडुपुत्रावर फेंकिलें; पण तें हेमपट्टविभूषित मुसळ मोठ्या जोरानें आपणावर येत आहे असें पाहातांच त्या शत्रुसंहारक अर्जुनानें त्याजवर बाणांचा भडिमार करून त्याचे सात तुकडे उडविले ! अशा प्रकारें त्या मुसळाची वाट लागलेली पाहून युद्धनिपुण अश्वत्थाम्याला अनावर क्रोध चढला आणि महान् पर्वताच्या शिखराप्रमाणें प्रचंड असा एक घोर परिघ घेऊन त्यानें तो अर्जुनावर झुगारिला ! राजा, तो परिघ खवळलेल्या अंतकाप्रमाणें आपल्यावर उसळत येत आहे असें पाहातांच अर्जुनानें स्वरा करून त्याजवर पांच अत्यंत उग्र बाण टाकिले आणि त्याचा विध्वंस उडविला ! राजा, अश्वत्थाम्याचा तो दारुण परिघ अर्जुनाच्या शरानीं छिन्नभिन्न होऊन भूतलावर पडला, तेव्हां कौरवांकडील भूपाळांचीं मनें विदारण झालीं व आतां अर्जुनापुढें टिकाव लागणें कठीण असें त्यांना वाटलें ! राजा, नंतर वीर्यवान् प्रबळ अर्जुनानें आणखी तीन भल्ल बाण अश्वत्थाम्यावर सोडून त्यास अगदीं विद्ध करून टाकिलें; पण तो बिलकूल न डगमगतां स्वतः आपल्या स्वतःच्या हिंमतीवर मोठ्या शौर्यानें समरांगणांत अर्जुनाशीं लढत राहिला । मग अश्वत्थाम्यानें महारथ सुरथावर सर्व क्षत्रियांच्या देखत एकसारखे बाणांचे लोट चालवून त्यास झांकून काढिलें; आणि तें पाहून तो पांचालमहारथ सुरथ समरांगणांत भेषगर्जनेप्रमाणें घणघणाट करणाऱ्या रथांतून अश्वत्थाम्यावर चालून गेला व त्यानें आपल्या अतिशय भार सहन करणाऱ्या अत्यंत दृढ धनुष्याच्या योमें अग्नीप्रमाणें प्रदीप्त व विषारी सर्पाप्रमाणें भयंकर अशा बाणांचा वर्षाव करून त्यास झांकून काढिलें ! राजा, ह्याप्रमाणें तो

महारथ सुरथ क्रोधायमान होऊन शत्रुवृद्धि करीत अश्वत्थाम्यावर चालून गेला, तेव्हा दंडानें बडविलेल्या नागाप्रमाणें अश्वत्थामा चवताळला आणि त्यानें रणांगणांत कमाळाला आंठ्या घालून व दांतओठ चावून सुरथाकडे टौकारून पाहिलें; आणि धनुष्याच्या प्रत्येक वरून हात फिरवून यमदंडाप्रमाणें देदीप्यमान असा एक तीक्ष्ण नाराच बाण त्या सुरथावर सोडिला ! राजा, इंद्राच्या वज्राप्रमाणें घोर असा अश्वत्थाम्याचा तो बाण त्या पांचालवीरांचें हृदय विदारून मोठ्या वेगानें धरणीतलांत घुसला; आणि मग वज्रानें विदीर्ण होणाऱ्या पर्वताच्या शिखराप्रमाणें तो सुरथ धाडकन् भूतलावर पतन पावला ! राजा, ह्याप्रमाणें अश्वत्थाम्यानें सुरथाचा वध केला आणि मग तो महाधुरंधर महारथ तत्काळ त्याच रथावर आरूढ होऊन संशप्तकांनीं परिवेष्टित होत्साता अर्जुनाशीं पुनः लढू लागला ! त्या वेळीं मध्याह्नाच्या सुमारास अर्जुनाचें शत्रूशीं मोठें दारुण युद्ध झालें आणि त्यांत पुष्कळ वीर पडून यमराष्ट्राची वृद्धि झाली ! तेव्हां एकटा अर्जुन कौरवांच्या प्रबळ योद्ध्यांशीं लढत असतां त्या सर्व महान् महान् वीरांचा पराक्रम पाहून व त्याप्रमाणेंच त्या सर्वांचें त्या एकट्या अर्जुनानें जें निवारण केलें तें अवलोकन करून फारच मोठा चमत्कार वाटला ! राजा, पूर्वी इंद्रानें दैत्यांच्या प्रचंड सेनेशीं जसा घनघोर संग्राम केला, तसा अगदीं घनघो संग्राम एकट्या अर्जुनानें त्या प्रचंड कौरव सेनेशीं केला !

अध्याय पंधरावा.

—:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—हे महाराजा, इकडे

दुर्योधन व पार्षत धृष्टद्युम्न ह्यांचें अतिशय दारुण युद्ध झालें, त्यांत त्यांनीं एकमेकांवर शर-शक्तीचा प्रचंड मारा केला ! त्या वेळीं, राजा, ज्याप्रमाणें वर्षाकालारंभी चोहोंकडे पर्जन्याच्या धारा कोसळतात, त्याप्रमाणें त्या उभयतांच्या धनुष्यांपासून बाणांच्या सहस्रावधि धारा सर्वत्र कोसळू लागल्या ! राजा, त्या समयीं दुर्योधनानें द्रोणहन्त्या धृष्टद्युम्नाचा पांच महावेगवान् बाणांनीं वेध केला आणि तें पाहून धृष्टद्युम्नानें पुनः उग्र शरांची वृष्टि चालू करितांच पुनः त्याला सात बाणांनीं विंधिलें ! राजा, मग बलशाली व दृढविक्रमी धृष्टद्युम्नानें रणभूमीवर सत्तर जलाल बाण टाकून दुर्योधनाला जर्जर केलें. ह्याप्रमाणें धृष्टद्युम्नाच्या हस्तें दुर्योधन अगदीं पीडित झाला तेव्हां त्याचे भ्राते महान् सैन्यासहवर्तमान पार्षतावर धावून आले व त्यांनीं चोहोंकडून त्यास गराडा घातला ! हे भरतश्रेष्ठा, दुर्योधनाच्या त्या अतिरथ भ्रात्यांनीं जिकडून तिकडून त्या शर पांचालाला पार कोंडून टाकिलें तरी त्याचें शौर्य कमी झालें नाहीं; व तो आपलें अल्ललाघव व्यक्त करीत रणांगणांत मोठ्या त्वेषानें संचरूं लागला ! त्या वेळीं, राजा, शिखंडीनें प्रभद्रकांसहवर्तमान कृपाचार्य व कृतवर्मा ह्यांजवर हल्ला केला आणि त्या दोघां धनुर्धरांशीं तुंबळ युद्ध आरंभिलें ! राजा, त्या समयीं तेथें जो भयंकर रणसंमर्द मातला, त्याचें काय वर्णन करावें ! जणू काय रणभूमीवर देह ठेवण्यास सिद्ध झालेले ते वीर आपले प्राण पणास लावून घूतच खेळत आहेत, असें तेव्हां भासूं लागले ! त्या वेळीं शल्यानें सर्व दिशांकडे सायकांचा भयंकर मारा आरंभिला; आणि सात्यकि व वृकोदर यांमुद्धां सर्व पांडवांना अत्यंत पीडिलें ! आणि त्याप्रमाणेंच त्यानें समरांत यमधर्मासारखा घोर पराक्रम करणाऱ्या नकुलसहदेवांवर मोठ्या

शौर्यानें भयंकर अस्त्रांचा वर्षाव करून त्यांशीं दारुण युद्ध आरंभिलें ! राजा, त्या वेळीं त्या घोर संग्रामांत शल्यानें पांडवांवर अस्त्रां भयंकर बाणवर्षाव केला कीं, त्यांच्याकडील महारथाना कोणीही त्राता राहिला नाहीं ! अशा प्रकारें शल्यानें सर्व पांडवचमूची दुर्दशा उडविल्यावर मग धर्मराज युधिष्ठिराला फारच आर्त करून टाकिलें ! तेव्हां शूर नकुल मोठ्या त्वेषानें आपल्या मातुलावर धावून गेला आणि रणांगणांत त्याला बाणछन्न करून त्या शत्रुसंहारक नकुलानें त्याच्या वक्षस्थळीं हंसत हंसत दहा बाण मारून त्यास विद्ध केलें ! राजा, ते सर्व बाण तीक्ष्ण पोलादाचे असून लोहारांनीं धार देऊन सहाणेवर लाविलेले होते. ते सर्व तेलपाणी करून झगझगीत केलेले सुवर्णपुंज बाण नकुलानें आपल्या धनुर्ज्येचें आकर्षण करून शल्यावर सोडिले, तेव्हां शल्याला अतिशय पीडा झाली; आणि याप्रमाणें त्या बलशाली भाच्यानें त्रस्त करून सोडिलेला तो वीर शल्य मग फारच क्षोभला व त्यानें बांकदार पेण्यांचे बाणांचा भडिमार करून नकुलास जर्जर केलें ! राजा, मग धर्मराज युधिष्ठिर, भीमसेन, सात्यकि व माद्रीपुत्र सहदेव हे सर्व रथांच्या घणाघणाटांनें दशदिशा व्याप्त करीत व सर्व भूमंडळाला हादरून टाकीत शल्यावर धावले, परंतु ते आपल्यावर धावून येत आहेत असें पाहतांच तत्काळ शत्रुजित् सेनापति शल्यानें त्यांजवर उलट चाल केली; आणि त्यानें रणांगणांत युधिष्ठिरावर तीन, भीमसेनावर पांच, सात्यकिंवर शंभर व सहदेवावर तीन बाण टाकून महात्म्या नकुलाचें सशर धनुष्य एका क्षुरप्र बाणानें छेदिलें ! राजा, ह्याप्रमाणें शल्याच्या शरांनीं नकुलाचें धनुष्य विदीर्ण झालें तेव्हां त्यानें दुसरें धनुष्य उचलिलें व कत्वळ बाणांचा भडिमार चालवून मद्रेश्वराचा सर्व रथ

हां हां म्हणतां बाणांनीं भरून काढिला ! राजा, त्या समयी धर्मराजांनै व सहदेवांनै प्रत्येकीं दहा दहा बाण सोडून शल्याचें वक्षस्थळ विंधिलें; भीमसेन व सात्यकि हे मद्राधिपतींवर मोठ्या आवेशानें धावून गेले; आणि त्यांनीं अनुक्रमें साठ व दहा कंकपल बाण त्याजवर टाकिले ! तें पाहून मद्रराजाला फार क्रोध पडला व त्यानें सात्यकीला प्रथम नऊ बाण मारिले व नंतर बांकदार पेऱ्यांचे सत्तर बाण त्याजवर सोडून बाणासहित त्याचें धनुष्य मूठीच्या ठिकाणीं तोडिलें; आणि त्याच्या चारही घोड्यांना यमसदनीं पाठवून दिलें ! ह्याप्रमाणें सात्यकीला विरथ केल्यानंतर महारथ शल्यानें त्याजवर चोहोंकडून शंभर बाण मारिले आणि शुभ्य झालेले माद्रीपुत्र, भीमसेन व युधिष्ठिर ह्यांजवर प्रत्येकीं दहा दहा बाण सोडून त्यांस विद्ध केले ! राजा, त्या वेळीं शल्यानें असें कांहीं अपूर्व शौर्य दाखविलें कीं, रणांगणांत सर्व पांडववीर एकत्र होऊनही शल्यावर चाल करूं शकले नाहीत ! अशा प्रकारें पांडवयोद्धे मद्रराजाच्या पूर्ण कषाडीत सांपडले असतां सत्यपराक्रमी सात्यकि दुसऱ्या रथांत आरूढ झाला आणि मोठ्या वेगानें शल्यावर तुटून पडला ! पण सात्यकीचा तो रथ आपणावर मोठ्या आवेशानें येतो आहे असें अवलोकन करून रणांगणास शोभविणाऱ्या त्या कुरुसेनापतीनें आपला रथ मोठ्या त्वेषानें त्याजवर घातला आणि बग मदोन्मत्त कुंजरांप्रमाणें त्या उभय वीरांचें तुंबळ युद्ध चालू झालें ! राजा, त्या दोघां योद्ध्यांचा त्या समयी जो घनघोर संग्राम मातला त्याचें काय वर्णन करावें ! ते दोघेही शूर वीर एकमेकांशीं भुंजत असतां जणू काय शंभर व इंद्र हेच भुंजत आहेत असें जाणलें ! आपल्यापुढें मद्रराज शल्य रणांत बुडाला तोंड देऊन लढत आहे असें

पाहून सात्यकीनें त्याला दहा बाणांनीं विंधिलें आणि 'थांब, थांब' अशी मोठ्यानें आरोळी दिली ! ह्याप्रमाणें महात्म्या सात्यकीनें अगदीं विद्ध करून सोडिलें असतां मद्राधिपति शल्यानें उलट चित्रपुंख जलाल बाणांचा भडिमार करून सात्यकीस विंधिलें ! अशा रीतीनें त्या कुरुपांडववीरांचें भयंकर युद्ध जुंपलें असतां भीमसेनादिक महाधनुर्धर पांडव हे मातुल शल्य ह्याच्या वधार्थ तत्काळ आपआपले रथ घेऊन त्याजवर चालून गेले ! राजा, मग गर्जना करणाऱ्या सिंहांप्रमाणें रणभूमीवर त्या शूर योद्ध्यांचा भयंकर रणसंमर्द मातला व त्यांत शोणिताची केवळ नदीच वाहू लागली ! त्या वेळीं रणांगणांत ते योद्धे मोठमोठ्यानें आरोळ्या देऊन परस्परांशीं लढूं लागले, तेव्हां आभिषप्राप्त्यर्थ मोठमोठ्यानें गर्जत सिंहाच एकमेकांशीं लढत आहेत असें भासूं लागलें ! राजा, त्या वेळीं त्यांनीं समरांगणांत सहस्त्रावधि बाण सोडिले, त्यांच्या योगें सर्व वसुधातल बाणांनीं आकीर्ण होऊन सर्व अंतरिक्ष एकाएकीं बाणमय झालें ! राजा, तेव्हां त्या महात्म्या वीरांनीं जो बाणांचा भडिमार केला त्याच्या योगें जणू काय अंतरिक्ष अभ्रच्छन्न होऊन सर्वत्र अंधकार पडला ! त्या समयी जिकडे तिकडे सर्वत्र सुवर्णपुंख देदीप्यमान बाण प्रसृत झाले, तेव्हां जणू काय कात टाकलेले पन्नगच इतस्ततः विकीर्ण होतसाते झळाळत आहेत असें भासूं लागलें ! राजा, त्या वेळीं शत्रुसंहारक शल्यानें मोठा अद्भुत पराक्रम गाजविला. तो असा कीं, तो एकटा वीर समरांगणांत अनेक योद्ध्यांशीं लढूं लागला; आणि त्या मद्रराजाच्या भुज्वीर्यानें जे कंकपिच्छ व मयूरपिच्छ बाण बाहेर पडूं लागले, त्यांनीं सर्व मेदिनी आच्छादित झाली ! रामा, पूर्वी असुरांचा महान् हत्य झाला तेव्हां

इंद्राचा रथ जस्र महाकातिमान् दिसत होता, तसा त्या वेळीं त्या महान् संग्रामांत शल्याचा रथ परिभ्रमण करीत असतां महाकातिमान् विसूं लागला !

अध्याय सोळावा.

—:—

शल्य व युधिष्ठिर ह्यांचें युद्ध.

संजय सांगतो:—राजा, नंतर तुझी सैन्ये समरांगणांत मद्रराज शल्याला पुढें करून मोठ्या वेगानें पांडवांवर धावलीं. जरी तीं अगदीं जर्जर झालीं होतीं, तरी त्यांनीं मोठ्या स्वेषानें पांडवांवर चाल केली आणि त्यांची संख्या अधिक असल्यामुळें त्यांनी क्षणांत पांडवसेनेंत प्रवेश करून तिची दाणादाण उडविली ! तेव्हां कौरवांनी पांडवांचा घोर संहार आरंभिला; आणि भीमानें जरी त्यांना आवर घालण्याचा प्रयत्न केला, तरी अखेरीस कृष्णा-जुनांच्या देवत समरभूमीवरून त्यांनीं पळ काढिला ! तें पाहून धनंजय फार क्षुब्ध झाला आणि त्यानें कृपाचार्य व कृतवर्मा आणि त्यांचे अनुयायी ह्यांजवर शरांचा भडिमार चालवून त्या सर्वांस बाणांनीं झांकून काढिलें ! राजा, इकडे शकुनि व त्याची सेना ह्यांस सहदेवानें बाणाच्छादित केलें, आणि नकुलानें पार्श्वभार्गी उभें राहून मद्रराजाला नीट न्याहाळिलें ! द्रौपदीच्या पुत्रांनी महान् महान् भूपाळांचा निरोध केला; पांचाल्य शिखंडीनें अश्वत्थाम्यास खुंटविलें; भीमसेनानें गदाप्रहारांनीं खुद्द दुर्योधनाचें निवारण केलें; आणि कुंतीपुत्र युधिष्ठिरानें शल्य व त्याचें सैन्य ह्यांस अडवून धरिलें ! राजा, नंतर रणांगणांतून पराक्रमाने न होणाऱ्या कौरवपांडवयोद्ध्यांचा न्यामोजगम निकराचा संग्राम प्रवर्तला; आणि त्यां वेळीं मला समरांगणांत शल्याचा आश्चर्य-

कारक पराक्रम दृग्गोचर झाला. ते हा वीर, त्यानें एकट्यानें सर्वे पांडवीय सैन्याशीं भयंकर युद्ध केलें !

त्या वेळीं युधिष्ठिराच्या समीप शल्याला जेव्हां मी पाहिलें, तेव्हां चंद्राच्या समीप शनि-श्वरच आहे असा मला भास झाला ! नंतर शल्यानें सर्पतुल्य घोर बाणांनीं प्रथम युधिष्ठिराला पीडिलें आणि मग तो बाणांचा भयंकर भडिमार करीत पुनः भीमसेनावर धावून गेला ! राजा, त्या समयी शल्याचें अस्त्रविद्यानेपुण्य व बाणक्षेपणकौशल्य अवलोकन करून केवळ तुझ्याच सैन्यांनी त्याचा गौरव केला असें नाही, तर पांडवांच्या सैन्यांनीं सुद्धां त्याची वाहवा केली ! तेव्हां शल्यानें पांडवांना इतकें घायाळ केलें कीं, अखेरीस ते आक्रोश करणाऱ्या युधिष्ठिराला रणांगणांत सोडून युद्धविमुख होतसात पळून गेले ! इत्यप्रमाणें पांडव सैन्याची विपन्न अवस्था करून टाकून मग शल्यानें त्याचा घोर संहार आरंभिला; आणि तें पाहून युधिष्ठिरास मनस्वी क्रोध आला व त्यानें जय मिळो किंवा मरण येवो असा दंड निर्धार करून मोठ्या शौर्यानें मद्राधिपतीवर घोर शरवृष्टि केली ! त्या वेळीं त्यानें आपल्या सर्व आत्यांना व त्याप्रमाणेंच कृष्णाला ह्याक मारून म्हाटलें की, “ वीरहो, भीष्म, द्रोण व कर्ण आणि त्याप्रमाणेंच कौरवांच्या अर्थसिद्धीकरितां प्रताप गाजविणारे सर्व भूपाळ रणांत पडले आहेत; तुम्हांला जीं कामें नेमून दिलीं होती तीं सर्व तुम्हीं आपल्या शक्त्यनुसार शेवटास नेलीं आहेत; आतां एक ह्या महारथ शल्याला मात्र कथण्याचें काम अवशिष्ट आहे व तें मी स्वतःकडे घेतलें आहे; इत्यसार्थी आज मी मद्राधिपतीला रणांगणांत निकण्याची इच्छा करीत आहे ! परंतु ह्या कामीं माझी जी मनीषा आहे ती मी तुम्हांस विवेकाने करितों, वर ती

तुझी ऐकत. वीरहो, माझ्या रथचक्रांचें रक्षण यां नकुलसहदेवांनीं करावें; हे दोघे समरांगणात युद्ध करीत असतां इंद्रही ह्यांना जिकण्यांस समर्थ होणार नाही; हे दोघे शूरसंमत वीर क्षात्रधर्मानें वागणारे असून रणांत मातुल शल्याशीं संग्राम करण्यास योग्य आहेत; आज ह्या सत्यप्रतिज्ञे व सन्मान्य योद्ध्यांनीं मला मदत करण्याकरितां शत्रूंची लढावें; आज एक मी शल्याला ठार मारीन किंवा शल्य मली ठार मारील, हें पक्कें समजा. तुमचें कल्याण होवो ! प्रमुख वीरांनीं, हें माझे सत्य भाषण श्रवण करा. भूषहो, आज मी मातुलाशीं क्षात्रधर्मानें युद्ध करीन. शल्य हा माझा वांटा आहे, त्याला मारून मी एक विजयी तरी होईन किंवा स्वतः मरून तरी जाईन ! आतां रथयोजकांनीं युद्धशास्त्रांतील नियमानुसार ताबडतोब माझ्या रथावर शल्याच्या रथांतल्या-पेसां अधिक शस्त्राखें व इतर सर्व उपकरणें ह्यांचा पुरवठा करावा. शैनेयानें माझ्या रथाचें उजवें चाक राखावें व धृष्टद्युम्नानें डावें चाक राखावें; माझ्या पृष्ठभागाचें रक्षण आज अर्जुनानें करावें; आणि माझ्या अग्रभागीं आज महानाक्षधर भीमानें असावें ! वीरहो, अशीं सर्व व्यवस्था झाली म्हणजे भयंकर रणांत मी शल्याहून अधिक पराक्रम करीन ! ” राजा धृतराष्ट्रा, धर्मराजाची ह्याप्रमाणें आज्ञा होतांच त्याचें प्रिय करण्याविषयीं सदा दक्ष अशा त्या वीरांनीं तत्काळ तदनुसार सर्व व्यवस्था केली; आणि मग फिरून रणांगणांत सर्व पांडवसैन्यामध्ये जिकडे तिकडे महान् आनंद प्रवर्तला ! पांचाल, सोमक व मत्स्य ह्यांना तर विलक्षण वीरश्री चढली ! ह्याप्रमाणें प्रतिज्ञा केल्यावर मग धर्मराजा तत्काळ मद्राधिपतीवर चाल करून गेला; आणि नंतर पांचालांनीं सतावाधि दुद्रुभि व शंख वाजकिण्यांस प्रारंभ केला; आणि ते चवताळून

जाऊन मोठमोठ्यानें सिंहगर्जना करात त्या शूर मद्रेशावर तुटून पडले !

अशा प्रकारें पांडवांचें सैन्य कौरवांवर मोठ्या त्वेषानें चाल करून गेलें तेव्हां कौरवांनाही मोठा हर्ष झाला; आणि महान् महान् कौरव-वीर मोठमोठ्यानें वीरश्रीच्या आरोळ्या देऊं लागले, जिकडे तिकडे हत्तीचे समुदाय गर्जू लागले, शंखांचा प्रचंड ध्वनि होऊं लागला व रणवाद्यांचा घोर ध्वनि चालू होऊन सर्व भूमंडल दणाणून गेलें ! नंतर वीरशाली सेनापति शल्य व कुरुपति दुर्योधन ह्यांनीं आपल्या त्या प्रसूद्ध सैन्यानिशीं उलट पांडुवीरांवर चाल केली; आणि उदयास्तपर्वत जसे कितीही प्रचंड मेघ त्यांजवर चालून आले असतां त्यांची पर्वा करीत नाहींत; तशीं त्यांनीं त्या पांडवसैन्याची मुळीच पर्वा केली नाहीं ! राजा, तेव्हां समरांगणांत शोभणाऱ्या शल्यानें शत्रुसंहारक धर्मराजावर शरांचा अगदी पाऊस पडला; तेव्हां जणू काय देवेंद्रच शंबरासुराशीं लढत आहे असें भासलें ! त्याप्रमाणेंच महात्म्या युधिष्ठिरानेंही सुंदर धनुष्य धारण करून द्रोणाचार्यांनीं शिकविलेलीं विविध अस्त्रे प्रकट केलीं आणि तो शल्यावर एकसारखा शिताफीनें अशूक बाण सोडूं लागला ! राजा, तेव्हां रणांगणांत धर्मराजा संचार करीत असतां कोणालाही त्याच्या ठिकाणीं कांहीं एक व्यंग म्हणून दिसलें नाहीं ! त्या दोघांही महान् योद्ध्यांनीं नानाविध बाणांचा परस्परान्तर भडिमार चालवून परस्परान्तर अगदीं नखाशिखांत विद्ध केलें; त्या समर्थीं ते दोन शार्दूलच आमिषाच्या प्राप्तीसाठीं एकमेकांशीं मोठ्या शौर्यानें लढत आहेत असें भासलें ! राजा, त्या घोर समरांत भीमसेनानें तुझ्या युद्धविशारद पुत्राशीं लढा करून युद्ध आरंभिलें आणि धृष्टद्युम्न, सात्यकि, नकुल व सहदेव ह्यांनीं आसमंताद्वागीं शकुनि-

प्रमुख कौरवीरांना गांठिले ! राजा, नंतर पुनः त्या उभय सेनेंतील जयेच्छु वीरांचा घोर रणसंमर्द मातला आणि त्यांत भयंकर संहार झाला ! राजा, ह्या सर्व प्राणहानीचें कारण तूंच आहेस. जर तूं दुष्ट सल्ला दिली नसतीस, तर हा अनर्थ खचित घडला नसता !

असो; राजा, दुर्योधनानें बांकदार पेऱ्यांचा एक बाण नेमकाच मारिला व रणांगणांत भीमसेनाचा सुवर्णमंडित ध्वज छेदिला; तेव्हां घागऱ्यांचे समुदायांनी अत्यंत शोभणारा तो महान व मोहक असा ध्वज भीमसेन पाहात असतां रणभूमीवर कोसळला ! नंतर दुर्योधनानें पुनः भीमसेनावर एक तीक्ष्ण धारेचा क्षुर बाण टाकिला आणि त्याचें हत्तीच्या हुडेसारखें प्रचंड असे तें विचित्र धनुष्य तोडिले ! राजा, त्या वेळीं भीमसेनाला अनावर क्रोध चढला व त्या धनुष्यहीन वीर्यशाली पांडुपुत्रानें रथांतली शक्ति मोठ्या स्वेषानें तुझ्या पुत्रावर सोडिली आणि त्याचें हृदय विदारिले; तेव्हां तो एकदम वीरासनीं मटकून बसला व बेशुद्ध झाला ! राजा, मग भीमसेनानें पुनः एक क्षुरप्र बाण दुर्योधनाच्या सारख्यावर सोडिला आणि त्याचें मस्तक तोडून पाडिले. तेव्हां दुर्योधनाच्या त्या सूतहीन रथाचे घोडे उधळले आणि वाट मिळाली तिकडे रथ धेऊन पळत चालले. तेव्हां कौरवसेनेंत मोठा हाहाकार झाला ! राजा, त्या समयीं दुर्योधनाचें परित्राण करण्याकरितां महारथ अश्वत्थामा, कृप, कृतवर्मा वगैरे सर्व वीर दुर्योधनाच्या त्या रथामागें धावले; आणि भीमसेनानें कौरवसेनेची दाणादाण उडविल्यामुळे दुर्योधनाचे अनुयायी फार धाबरून गेले ! राजा, नंतर द्रोणपुत्रादिक कौरववीरांवर अर्जुनानें आपल्या गांडीव धनुष्याच्या योगें बाणांचा भडिमार चालविला; आणि युधिष्ठिरही अतिशय सुख होऊन स्वतः आपल्या रथाचे श्वेत

वर्णाचे व मनोवेगानें दौडत जाणारे अश्व चालवीत मद्राधिपतीवर धावून गेला ! राजा, त्या वेळीं कुंतीपुत्र युधिष्ठिराच्या ठिकाणीं मला मोठा आश्चर्यकारक गुण आढळला तो हा की, ज्याचें मन मोठें कोमल व ज्याच्या ठायीं इंद्रियनिग्रहशक्ति विलक्षण असा तो महासात्विक युधिष्ठिर राजा एकदम सुख झाला ! त्या समयीं त्यानें शल्याकडे डोळे बटारून पाहिले आणि क्रोधानें तो नखशिखांत पेटला व थरथर कांपू लागला ! राजा, त्या वेळीं कौरवसेनेवर धर्मराजानें एकसारखा जलाल बाणांचा घोर वर्षाव केला आणि शतावधि व सहस्रावधि वीरांस ठार मारिले ! त्या वेळीं धर्मराजानें ज्या ज्या सेनेवर चाल केली, त्या त्या सेनेला रणांगणांत त्यानें बाणांच्या भडिमारांनें बघिले व जणू काय वज्रप्रहारांनीं पर्वतांनाच कोसळून टाकण्याचा सपाटा चालविला ! राजा, त्या समयीं धर्मराजानें अश्व, सारथि, ध्वज व रथ ह्यांसह वर्तमान बहुत रथ्यांचें निर्दलन केले; आणि प्रबल प्रभंजन जसा महाभेषांशीं क्रीडा करितो, तसा तो एकटा कौरवसेनेशीं क्रीडत राहिला ! राजा, ज्याप्रमाणें क्रोधायमान झालेला रुद्र प्रलयकालीं प्राण्यांचा संहार उडवितो, त्याप्रमाणें त्या प्रतापशाली पांडुपुत्रानें रणांत घोडेस्वारांसहित घोड्यांना व सहस्रावधि पायदळाला ठार मारिले; आणि एकसारखा चोहोंकडे बाणांचा वर्षाव आरंभिला व सर्व रणभूमि शून्य करून टाकून अखेरीस तो मद्राधिपतीवर धावून गेला व त्यास ' थांब, थांब ' असें म्हणाला ! राजा, ह्याप्रमाणें संग्रामांत त्या कुंतीपुत्राचा भयंकर प्रताप अवलोकन करून तुझे सर्व सैनिक अतिशय भ्याले; तथापि शल्य मात्र मागें न सरतां धर्मराजाशीं लढण्यास तोंड देऊन पुढें झाला ! राजा, मग त्या शल्ययुधिष्ठिरांचा घोर संग्राम प्रवर्तला ! दोघेही अतिशय दोभले !

दोघांनीही शंख बाजविण्यास प्रारंभ केला ! व दोघेही एकमेकांना हाका मारून एकमेकांच्या उखाळ्यापाखाळ्या काढू लागले ! त्या समयी शल्याने बाणांचा पाऊस पाडून धर्मराजाला पीडिले आणि धर्मराजानेही शरांचा भडिमार करून मद्रराजाला झांकून काढिले ! राजा, तेव्हां ते दोघेही योद्धे कंकपत्र बाणांनी नख-शिखांत ओतप्रोत व्याप्त झाले; त्या शूरांच्या देहांतून रुधिराच्या चिलकांड्या उडू लागल्या; आणि वसंत ऋतूत फुललेले पळसाचे वृक्ष जसे अगदी आरक्त व लाल लाल दिसतात तसे ते दिप्त लागले ! राजा, त्या समयी ते दोघेही महावीर्यशाली रणधुरंधर योद्धे प्राणांची पैज लावून लढत असतां जेव्हां सर्व सैन्यांनी त्यांज-कडे पाहिले, तेव्हां त्यांपैकी कोण विजयी होईल ह्याची अटकळ कोणासच होईना ! ते म्हणाले की, 'आज युधिष्ठिर हा मद्राधिपतीला मारून पृथ्वीचे राज्य मिळवील किंवा मद्राधिपति शल्य हा युधिष्ठिराला वधून दुर्योधनाला पृथ्वीचे राज्य प्राप्त करून देईल.' राजा, ह्याप्रमाणे त्या वेळीं सर्व सैन्ये दोन्ही अनुमाने करीत होती; पण अमुक एक निश्चय म्हणून त्यांना करितां येईना !

असो; राजा, अशा प्रकारे ते दोन्ही वीर तुंबळ युद्ध करीत असतां धर्मराजाने आपले सैन्य उजवीकडे नेले; आणि मग शल्याने युधिष्ठिरावर शंभर शरांचा भडिमार करून त्याचे धनुष्य एका जलाल बाणाने छेदून टाकिले ! तेव्हां धर्मराजाने दुसरे धनुष्य धारण केले आणि त्याजवर तीनशे शर सोडिले आणि एका क्षुर बाणाने त्याचे धनुष्य तोडिले ! नंतर त्याने बांकदार पेच्याचे बाण सोडून शल्याचे चारही घोडे वधिले व दोन अत्यंत ज्वलाल अशा अग्नाचे बाण मारून त्याचे पार्श्वेस्तराचे द्वार मारिले ! राजा, मग धर्म-राजाने पीतवर्णाचा, धार दिलेला व देदीप्य-

मान असा एक भल्ल बाण त्यांच्या अग्रभागी शल्याचा ध्वज फडकत होता त्याजवर सोडिला व त्याचे तुकडे केले ! ह्याप्रमाणे शल्याचा ध्वज भग्न होताच कौरवसैन्याची फळी फुटली आणि ते पळू लागले ! राजा, नंतर अश्वत्थामा पुढे झाला; आणि विपन्न दशेस प्राप्त झालेल्या त्या मद्राधिपतीला आपल्या रथांत घेऊन मोठ्या त्वरेने पळून गेला ! राजा, ह्याप्रमाणे शल्याचा मोड झाला तेव्हां मग युधिष्ठिर मोठमोठ्याने गर्जना करू लागला; परंतु इतक्यांत लवकरच तो द्रोणपुत्र शल्याला घेऊन रणांगणांतून निघून जात असतां शल्याने त्याजकडे किंचित् हास्य करून पाहिले व तो तत्काळ दुसऱ्या रथावर आरूढ झाला ! राजा, तो रथ शुभ्र वर्णाचा असून यथाविधि सिद्ध केलेला होता; तो महान् मेघाप्रमाणे दणदणाट करीत असून त्याच्यावर शस्त्रास्त्रांची व इतर उपकरणांची उत्तम तरतूद केलेली होती; आणि तो रथ पाहून शत्रूंच्या अंगावर कांटा उभा रहात असे !

अध्याय सतरावा.

—:०:—

शल्यचा वध !

संजय सांगतो:—नंतर त्या महाबलिष्ठ मद्राधीश शल्याने पहिल्यापेक्षा अधिक वेग-वान असे दुसरे धनुष्य धारण केले आणि युधिष्ठिराचे भेदन करून त्याने सिंहासारखी गर्जना केली. मग त्या महाभार सन्नियुग्म-वाने एकसारखी शत्रूसैन्यावर बाणांची भयंकर वृष्टि सुरू केली; आणि त्याने सर्वांना अगदी 'ब्राहि भगवन्' करून सोडिले ! त्या वेळीं शल्याने सात्यकीवर दहा आणि भीमसेन व सहदेव ह्यांजवर तीन तीन बाण सोडून त्यांस वेधिले; आणि युधिष्ठिरावर बाणांचा अतिशय

भडिमार करून त्यासही जर्जर केलें ! त्या समर्थी जे जे दुसरे महाधनुर्धर रणांगणांत त्याच्याशीं लढण्यास सिद्ध झाले, त्या सर्वांना त्यांच्या अश्वसुद्धां व रथकूबारांसुद्धां त्या मद्राधिपतीनें बाणांच्या वर्षावाने आर्त करून सोडिलें, तेव्हां जणू काय कुंजरांवर उल्कांचीच वृष्टि होत आहे असा भास झाला ! त्या महारथ शल्यानें हत्ती व हत्तींवर बसलेले वीर, घोडे व घोडेस्वार, आणि रथ व रथी ह्या सर्वांना एकदम वधिलें ! त्यानें मोठ्या आवेशानें पांडवांकडील वीरांचे आयुधांसह बाहु तोडिले, त्यांचे ध्वज छेदिले आणि घोर संहार उडवून सर्व भूतल योद्ध्यांनीं आच्छादित केलें; तेव्हां जणू काय यज्ञवेदी दर्भानींच आच्छन्न झाली आहे असें दिसू लागलें ! राजा, अशा प्रकारें तो शल्य पांडवांच्या सैन्यांचा अंतकाप्रमाणें घोर संहार करीत असतां पांडव, पांचाल व सोमक ह्यांनीं अतिशय क्रोधायमान होऊन त्यास एकदम वेढा दिला; व तितक्यांत भीमसेन, सात्यकि, नकुल व सहदेव हेही त्या महाबलवान् धर्मराजाशीं लगट करून लढत असलेल्या शल्यावर चाल करून गेले; आणि मग ते प्रतिस्पर्धी एकमेकांना एकसारखे युद्धार्थ आह्वान करू लागले !

राजा, नंतर समरांगणांत पांडवांकडील शूर वीर व कौरवांकडील मद्राधिपति वीरश्रेष्ठ शल्य ह्यांचा घोर संग्राम चालू झाला ! त्या समर्थी पांडवांनीं शल्याला चोहोंकडून गराडा घातला आणि त्याजवर उग्र वेगाच्या बाणांची वृष्टि आरंभिली ! तेव्हां धर्मपुत्र युधिष्ठिर ह्याच्या संरक्षणासाठीं भीमसेन, नकुल, सहदेव व कृष्ण हे अगदीं तय्यर होते ! त्या समर्थी युधिष्ठिरानें मद्राधिपाच्या वक्षस्थळीं उग्र वेगानें चाल करून जाणाऱ्या बाणांचा मारा चालविडा अग्नि त्यास अत्यंत आर्त करून सोडिलें ! तेव्हां सम-

रांगणांत तुझ्या सैन्यांतले महान् महान् रथ्यांचे सुसज्ज समुदाय मद्रपतीला शरार्त पाहून दुर्योधनाच्या आज्ञेनें एकदम पुढें सरले व शल्याच्या भोंवतालीं जमा झाले ! नंतर तत्काळ मद्राधिपतीनें रणांगणांत युधिष्ठिरावर सात बाण सोडून त्यास विधिले; परंतु त्या महात्म्या कुंतीपुत्रानें त्या घोर समरांत लागलेच शल्यावर नऊ बाण टाकून त्यास विद्ध केलें. राजा, नंतर ते दोघेही वीर फारच निकारानें लढू लागले. तेव्हां त्या घनघोर रणांत दोघांनींही तेलपाणी करून लखलखीत केलेले भयंकर बाण आकर्षण खेंचून एकमेकांवर सोडिले; आणि एकमेकांना बाणांनीं झांकून टाकिलें ! राजा, मग ते दोघेही विजयशाली व प्रबळ असे महारथ नृपवर रणांगणांत परस्परांचें व्यंग कोंठें सांपडतें तें पाहू लागले आणि त्यांनीं लागलाच मोठ्या सपाट्यानें परस्परांवर बाणांचा अतिशय भडिमार चालू केला. ते दोघे महात्मे युधिष्ठिर व शल्य एकमेकांवर बाणांचे लोट सोडीत असतां त्यांच्या प्रत्यंचांचा जो प्रचंड ध्वनि होत होता, तो ऐकून जणू काय महेंद्राच्या वज्राचाच एकसारखा ध्वनि होत आहे असें वाटत होतें ! राजा, युधिष्ठिर व शल्य हे दोघे एकमेकांवर उड्या टाकीत एकमेकांशीं झुंजू लागले, तेव्हां जणू घोर अरण्यांत वाघाचे बक्षेच आमिषाकरितां झगडत आहेत किंवा मदनमत्त महान् हत्ती आपल्या दंतांनीं एकमेकांना प्रहार करून विदारित आहेत असें भासलें !

ह्याप्रमाणें त्या लोकोत्तर योद्ध्यांचें तुंबळ युद्ध चाललें असतां महात्म्या मद्राधिपतीनें महाबलवान् धर्मराजावर सूर्य किंवा अग्नि ह्यांसारखा देदीप्यमान असा एक बाण मोठ्या आवेशानें व वेगानें टाकिला व त्याचें वक्षस्थळ विधिलें. तेव्हां त्या बाणानें महात्मा कुत्श्रेष्ठ युधिष्ठिर अतिशय घायाळ झाला; परंतु त्यानें

तत्काळ उत्तम नेम धरून उलट मद्राधिपतीवर एक बाण मारिला व त्यास मूर्च्छित पाडिले; तेव्हां त्यास पुनः आनंद झाला ! नंतर क्षणांत पार्थिवेंद्र शल्य सावध होऊन देहभानावर आला, आणि त्यानें क्रोधानें आरक्त नेत्र करून महेंद्राप्रमाणें विलक्षण शौर्यानें ताबडतोब पांडुपुत्रावर शंभर बाण सोडिले; पण ते पाहून महात्म्या धर्मपुत्रानेंही तत्काळ शल्यावर नऊ बाण क्रोधानें टाकिले व त्याचें वक्षस्थळ विदीर्ण करून त्याचें सौवर्ण चर्म दुसऱ्या सहा बाणांनीं भंगिले. मग शल्यानें मोठ्या वीरश्रीनें धनुष्याचें आकर्षण केलें आणि धर्मराजावर बाणवर्षाव आरंभिला. त्या समर्थी त्यानें दोन बाण कुरुपुंगव युधिष्ठिरावर सोडिले व त्याचें धनुष्य तोडिले. नंतर महात्म्या धर्मराजानें समरांगणांत अधिक भयंकर धनुष्य उचलिलें आणि इंद्रानें जसा नमुचीवर चौहाकडून तीक्ष्ण शरांचा मारा केला, तसा त्यानें शल्यावर घोर मारा करून त्यास विद्ध केलें. मग शूर शल्यानें नऊ बाण सोडून धर्मराज व भीमसेन ह्यांच्या सुवर्णमय उत्कृष्ट ढाली तोडून टाकिल्या व त्यांचे भुज विदारिले ! नंतर त्यानें अग्नि व सूर्य ह्यांसारखा तेजस्वी असा दुसरा एक क्षुर बाण सोडून धर्मराजाचें धनुष्य छेदिले; ऋषाचार्यानें त्याच्या सारख्यावर सहा बाण टाकिले तेव्हां तो एकदम अग्रभागी रणांगणांत पडला; पुनः मद्राधिपतीनें चार बाण सोडून युधिष्ठिराचे चारही अश्व मारिले; आणि अखेरीस धर्मराजाच्या सैनिकांचा घोर संहार आरंभिला !

ह्याप्रमाणें शल्यानें जेव्हां धर्मराजाची दुर्दशा उडविली, तेव्हां प्रतापशाली भीमसेनानें महावेगवान् शर टाकून त्या कुरुवीराचें धनुष्य व आणखी दोन बाण सोडून त्याला अतिशय चायाळ केलें. नंतर त्या पांडुपुत्रानें दुसरा एक बाण शल्याच्या सारख्यावर टाकून,

ज्याचा मध्यभाग कवचानें सुरक्षित केलेला होता अशा त्या त्याच्या देहापासून त्याचें मस्तक तोडून निराळें केलें आणि तत्काळ त्याच्या रथाचे चारही अश्व यमसदनीं पाठविले ! राजा, अशा प्रकारचा भयंकर संताप भीमसेनाला उत्पन्न झाला; व त्या सर्व धनुष्यांच्या नायकानें रणांगणांत मोठ्या वेगानें संचार करणाऱ्या शल्यावर एकसारखे शंभर बाण सोडून त्यास झांकून काढिलें आणि ते पाहून माद्रीपुत्र सहदेवानेंही तोच क्रम चालविला व त्या कुरुवीरास बाणाच्छादित करून मूर्च्छित पाडिलें ! ह्याप्रमाणें कुरुसेनापति मूर्च्छित झाला असें जेव्हां भीमसेनानें पाहिलें, तेव्हां त्यानें आणखी बाण सोडून त्याची ढाल छेदिली. इतक्यांत तो मद्राधिप सावध झाला; आणि आपली ढाल भग्न झाली असें पाहून त्यानें सहस्र तारे बसविलेली दुसरी एक ढाल व खड्ग धारण केलें आणि तो महात्मा रथांतून उडी टाकून कुंतीपुत्रावर धावून गेला. मग त्यानें नकुलाच्या रथाची ईषा तोडिली आणि तो प्रतापवान् वीर युधिष्ठिरावर चालून गेला ! परंतु तो यमाप्रमाणें क्रोधायमान होऊन धर्मराजावर धावून जात असतां धृष्टद्युम्न, द्रौपदीपुत्र, शिखंडी व सात्यकि ह्यांनीं त्यास एकदम गराडा घालून अडविलें; आणि तितक्यांत महाशूर भीमसेनानें नऊ बाण सोडून त्याची ढाल तोडिली व आणखी भल्ल बाणांचा भडिमार करून त्याच्या खड्गाची मूठ छेदिली आणि तो मोठ्या आनंदानें सैन्यांत गर्जे लागला !

राजा, भीमसेनाचा तो घोर पराक्रम अवलोकन करून पांडवांच्या महान् महान् रथिसमुदायांना विलक्षण हर्ष झाला; आणि ते आनंदाच्या भरांत येऊन प्रचंड गर्जना करूं लागले व चंद्रासारखे शुभ्र झंख वाजविण्यास स्वानीं प्रारंभ केला. तो

भयंकर स्वन श्रवण करून कौरवांचें तें विनयशाली सैन्य अत्यंत भ्यालें; आपण कोठें आहों वीरे भानही त्यास नाहीसिं झालें; त्याला मनस्वी घाम सुटला; तें अतिशय खिन्न झालें व त्याला बहुतेक मूर्च्छाच आली ! राजा, नंतर भीमसेन आदिकरून प्रमुख पांडव-योध्यांनीं शल्यावर एकदम शरांचा घोर भडिमार केला; परंतु त्यास न जुमानितां, मृगाचा वध करण्याकरितां सिंह जसा त्यावर उडी घालितो तशी त्यानें युधिष्ठिराच्या वधासाठीं मोठ्या आवेशानें त्यावर उडी घातली आणि त्याचे अश्व व सूत ह्यांस ठार मारिलें ! राजा, त्या वेळीं धर्मराजाला मनस्वी क्रोध चढला. तो केवळ अग्नीप्रमाणें नवशिखांत भडकला आणि तत्काळ मोठ्या शौर्यानें त्या कुरुसेनापतीवर धावला ! राजा, त्या समर्थी धर्मराजाला गोविंदाच्या वचनाचें स्मरण झालें व त्यानें तत्काळ शल्याचा वध करण्याविषयीं अंतर्-र्यामीं निर्धार केला ! नंतर त्यानें अश्वहीन व सूतहीन अशा आपल्या रथावर उभें राहून त्यांतली एक शक्ति शल्यावर सोडण्याचें मनांत योजिलें; आणि शल्याचें तें कर्म अवलोकन करून व त्याच्या वधाचा पतकर आपण घेतला असून तें कार्य अद्यापि सिद्धीस नेंलें नाही हें अनुचित होय, अशी मनशी गांठ घालून, कृष्णाच्या सूचनेप्रमाणें त्यास आतां ठार मारिलेंच पाहिजे असा त्यानें दृढनिश्चय केला ! नंतर, राजा, जिचा दांडा सुवर्णाचा असून जिच्यावर रत्नें वसविलीं होती अशी कांचनाप्रमाणें झळाळणारी शक्ति त्या पांडु-पुत्रानें उचलली आणि मोठ्या क्रोधानें आपल्या अग्निप्रभ नेत्रांनीं एकदम शल्याकडे टोकारून पाहिलें ! राजा, ह्याप्रमाणें त्या पून-चित्त व निष्पाप अशा धर्मराजानें मद्राधिपती-कडे डोळे वटारून पाहिलें तेव्हां मला वाटलें

कीं, आतां हा कुरुसेनापति भस्मच होईल ! पण तसें जेव्हां झालें नाहीं, तेव्हां तें मला मोठें नवल भासलें. असो; नंतर महात्म्या धर्मराजानें ती महातेजःपुंज, भयंकर दांड्याची व अत्यंत कांतिमान् अशा रत्नाप्रमाणें झळकणारी प्रदीप्त शक्ती मोठ्या आवेशानें मद्राधिपतीवर सोडिली ! राजा, धर्मराजानें मोठ्या बळानें सोडिलेली ती शक्ति जेव्हां एकाएकी शल्यावर येऊं लागली, तेव्हां तिच्यांतून एकसारख्या ठिणभ्या पट्टे लागल्या आणि तें पाहून रणांगणांत जमलेल्या सर्व कौरवांना प्रलयकारी अंतरिक्षांतून प्रचंड उल्काच कोसळत आहेत, असें भासलें ! धर्मराजानें मोठ्या सावधानचित्तानें सोडिलेली ती शक्ति जणू काय पाशवारी कालरात्रि किंवा यम-धर्माची महाभयंकर दाईच होती; व तिच्या ठायीं ब्रह्मदांडाप्रमाणें अमोघ वीर्य वसत होतें ! सर्व पांडुपुत्र त्या शक्तीला मोठ्या प्रयत्नांनीं गंध, माला, श्रेष्ठासन, पान, भोजन इत्यादिकांनीं पूजित असत; व प्रलयकालच्या सार्वार्तिक अग्नी-सारखें तिच्या ठिकाणीं दुर्धर सामर्थ्य वसत असून अथर्वागिरीसी कृत्येप्रमाणें ती अत्यंत घोर-रूप होती ! त्वष्ट्यानें ती शंकराकरितां निर्माण केली असून शत्रूंचे प्राण आणि देह ह्यांना ती खाऊन टाकणारी होती; आणि तिच्या ठिकाणीं इतकें अगाध बळ वसत होतें कीं, ती पंचमहाभूतांचाही मोठ्या जोरानें नाश करण्यास ममर्थ होती ! त्या शक्तीला घंटा व पताका लाविलेल्या असून तिजवर हिरे, वैदूर्य वीरे रत्नांचा मुंदर जडाव केलेला होता; त्वष्ट्यानें मोठ्या दीर्घ प्रयत्नांनं व व्रतादिकांच्या बळानें ती घडविली होती; आणि त्यामुळें ब्रह्मद्वेष्यांचा हटकून नाश कर-ण्याचें अमोघ सामर्थ्य तिला प्राप्त झालें होतें ! राजा, अशा त्या लोकोत्तर शक्तीवर धर्म-राजानें मोठ्या तत्परतेनें घोर मंत्रांनीं त्या त्या

वेर देवतांचें आवाहन केलें; आणि आपल्या सर्वां जेवढें बल व ज्ञान होतें, तेवढें सर्व लक्षण तिजमध्ये उग्र वेग उत्पन्न केला; आणि त्यानें ती मद्रराजाच्या वधाकरितां श्रेष्ठ अंतरिक्षमार्गानें सोडिली व तो 'अधमा, मेलास, मेलास!' अशी मोठ्यानें गर्जना करित—पूर्वीं लोचकासुरावर प्राणघातकी बाण सोडिल्यावर शंकर जसा नाचूं लागला तसा—सुदृढ व सुंदर हात पुढें करून एकसारखा क्रोधानें नाचूं लागला ! राजा, ह्याप्रमाणें युधिष्ठिरानें आपल्या अंगच्या सर्व सामर्थ्यानें ती प्रचंड दुर्धर शक्ति शल्यावर सोडिली; तेव्हां होमकुंडांतील अग्नि उत्तम रीतीनें हुत केलेल्या घृतघारेचें ग्रहण करण्यास सिद्ध होतो तद्वत् तो कुरूवीर त्या भयंकर शक्तीचें ग्रहण करण्यास सिद्ध होऊन गर्जूं लागला ! राजा, त्या शक्तीनें शल्याचीं सर्व मर्मस्थळें विदारिलीं आणि ती त्याचें शुभ्र व विशाल वक्षस्थळ भेदून त्याच्या देहांतून एकदम बाहेर पडली ! आणि मद्राधिपतीचें विशाल यश दग्ध करित तिनें भूगह्वरांत अन्यासें—पाण्यांत जसा प्रवेश करावा तसा—प्रवेश केला ! त्या वेळीं, राजा, शल्याचें नाक, डोळे, कान व तोंड ह्यांतून आणि त्याप्रमाणें त्याला ज्या जखमा झाल्या त्यांतून एकसारखे रुधिराचे लोट वाहूं लागून त्याचीं सर्व गात्रें रुधिरानें माखलीं व तो कार्तिकेयानें विदीर्ण केलेल्या शौच नामक प्रचंड पर्वताप्रमाणें दिसूं लागला ! राजा, अखेरीस धर्मराजाच्या त्या जलाल शक्तीनें मद्राधिपतीला जी दुःसह पीडा उत्पन्न केली, ती त्यास सहन झाली नाही; आणि महेंद्राच्या ऐरावताप्रमाणें अवाढव्य देहाचा तो बलाढ्य योद्धा, अंगांतील चिलखत छिन्नभिन्न होऊन, कर्त्रानें विदीर्ण केलेल्या पर्वतशृंगप्रमाणें काढू पसरून प्रचंड इंद्रध्वजाप्रमाणें धर्मराजाच्या अश्वभासीं रथांतून धाडकन् धरणीवर कोसळला !

राजा, ह्याप्रमाणें सर्व अंगें छिन्नभिन्न झालेला व रक्तानें न्हालेला तो नरवीर मद्रराज भूतलवर पतन पावला, तेव्हां ज्याप्रमाणें क्रीडा करण्यास उद्युक्त झालेल्या भर्त्यांचें मोठ्या प्रेमानें त्याची प्रिय पत्नी स्वागत करिते, त्याप्रमाणें त्या मद्रराजपत्नी वसुंधरेनें मोठ्या प्रेमानें आपल्या पतीचें स्वागत केलें; आणि प्रिय भर्त्येप्रमाणें पृथ्वीचा पुष्कळ काळपर्यंत उपभोग घेऊन अखेरीस तिला सर्व गात्रांनीं आर्लग्न देऊन तो मद्रराज प्रसुप्त झाला असें भासलें ! ह्याप्रमाणें धर्मयुद्धांत धर्मपुत्र धर्मराजानें मद्राधिपतीचा वध केला तेव्हां जणू काय यथाविधि हवन केलेला यज्ञकुंडांतला अग्निच शांत झाला असें वाटलें ! असो; धर्मराजाच्या शक्तीनें हृदय विदारून आणि आयुधें व ध्वजपताका छेदून अखेरीस त्या मद्रेश्वराचा प्राणही जरी नष्ट केला, तरी त्याच्या देहावरील कांति नाहीशी झाली नाही ! अशा प्रकारें शल्याला वधिल्यावर धर्मराजानें इंद्रधनुष्याप्रमाणें देदीप्यमान् असें धनुष्य धारण केलें; आणि अत्यंत तीक्ष्ण अशा भल्ल बाणांचा भडिमार चालवून, पक्षिराज गरुड जसा पक्षगांचा संहार उडवितो तसा त्यानें कौरववीरांचा रणांगणांत क्षणांत संहार उडविला ! त्या समर्थी धर्मराजाच्या बाणांनीं तुझे सर्व सैनिक नखशिखांत आच्छन्न झाले आणि डोळे मिटून एकमेकांशीं निकरानें लढत असतां त्यांच्या देहांतून रुधिराचे लोट चालू होऊन व आयुधांची वगैरे वाताहत घडून ते अखेरीस मृत्युमुखीं पडले !

धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें मद्राधिपति शल्य रणांगणांत पतन पावला तेव्हां त्याचा धक्का भ्राता धर्मराजावर चालून गेला. तो तरुण वीर आपल्या वडील भ्रात्याप्रमाणेंच सर्वगुणसंपन्न अमून उत्कृष्ट रथी होता. त्या दुर्धर नरवीरानें

आपल्या भ्राताच्या कृपांतून मुक्त होण्यासाठी तत्काळ धर्मराजावर बहुत नाराच बाणांचा जोराचा वर्षाव आरंभिला; पण इतक्यांत धर्मराजांनै सहा महावेगवान् बाण त्याजवर सोडून त्यास घायाळ केले; दोन क्षुर बाणांनी त्याचें धनुष्य व ध्वज हीं छेदून टाकिलीं आणि एक धार दिलेला सुट्ट व तेजस्वी असा भल्ल बाण सोडून आपल्या अग्रभागीं असलेल्या त्या योद्ध्याचें मस्तक उडविलें; तेव्हां कुंडलांनीं विराजित असलेलें तें मस्तक रथांतून भूतलावर पडतांना दृग्गोचर झालें आणि स्वर्गांतून पतन पावणाऱ्या क्षीणपुण्य अमराप्रमाणें त्याचें तें भग्न शरीर हीं रथांतून खालीं पडलें! व तें रुधिरानें माखलेलें धड अवलोकन करून कौरवांच्या सैन्याची फळी फुटली आणि विचित्र कवच धारण करणारा तो मद्रपतीचा अनुज रणांगणांत मरण पावतांच जिकडे तिकडे हाहाकार उडून कौरवांची सेना चोहोंकडे पळत सुटली! राजा, शल्याचा भ्राता रणांगणांत पतन पावला असें पाहून तुझे सैनिक मृतप्राय झाले; आणि पांडवांच्या भीतीनें घडाघड भूतलावर कोसळून धुळीत अतिशय माखले! इतक्यांत त्या वाताहत झालेल्या सैन्यावर शैनेय सात्यकीनें बाणांचा भडिमार करित हल्ला केला, पण तो महाधनुर्धर अर्जिंक्य वीर आपल्यावर चालून येत आहे असें अवलोकन करून तत्काळ हार्दिक्य कृतवर्मा मोठ्या धैर्यानें त्याच्यावर उलट धावून गेला! राजा, नंतर ते दोघेही विजयशाली पादवकीर मोठ्या शौर्यानें एकमेकांशीं लढूं लागले, तेव्हां जणू काय ते दोन प्रबल सिंहच मुंजत आहेत असें भासलें! त्या समयीं त्यांनीं एकमेकांवर देदीप्यमान् बाण सोडून एकमेकांस सांकून टाकिले, तेव्हां जणू काय त्या सूर्यांनीं एकमेकांला सूर्यकिरणानींच आच्छादित केले असें वाटलें! नंतर त्या वृष्णि-

पुंगवांनीं आपापल्या धनुष्यांच्या योगें मोठ्या बळांनै व त्वेषानें बाणांचा इतका घोर भडिमार चालविला कीं, आम्हांला अंतरिक्षांत मोठ्या वेगानें पतंगांचे समुदायच भराऱ्या मारीत आहेत असें दिसूं लागलें! त्या घनघोर संग्रामांत कृतवर्मानें सात्यकीवर दहा बाण टाकून त्यास विंधिले; तीन बाणांनीं त्याचे घोडे भेदिले; आणि एका नतपर्व बाणानें त्याचें धनुष्य छेदिलें! परंतु तेव्हां सात्यकीनें आपल्या हातांतलें तें मोडकें श्रेष्ठ धनुष्य फेंकून दिलें आणि तत्काळ त्याहूनही अधिक वेगवान् असें दुसरें धनुष्य धारण केलें व त्याच्या योगें कृतवर्माच्या वक्षस्थळीं दहा बाण टाकून त्यास विंधिलें! नंतर त्यानें उत्कृष्ट भल्ल बाणांचा आणखी वर्षाव आरंभिला; आणि कृतवर्माचा रथ, जं, ईषा, घोडे भेदून, दोन्ही पांढिणसारथि ताबडतोब ठार मारिले! ह्याप्रमाणें कृतवर्मा विरथ होऊन अगदीं विपन्नावस्थेस पोचला तेव्हां वीर्यवान् शारद्वत कृपाचार्यानें त्यास आपल्या रथांत घेतलें व अगदीं बिलंब न करितां रणांगणांतून एकीकडे नेलें!

राजा, अशा प्रकारें मद्राधिपतीचा अंत झाला व कृतवर्माचा रथ भंगला, तेव्हां दुर्योधनाचें सर्व सैन्य पुनः रणांगणांतून पळत सुटलें! नंतर सैन्यांत अतिशय धुळ उठली, त्यामुळें पुढें त्याचें वर्तमान समजलें नाहीं! राजा, त्या समयीं कौरवांची बहुतेक सेना नष्ट झाली होती, आणि जे कोणी सैनिक उरले होते ते पळत होते! मग थोडक्याच वेळांत जमीनीपामुन उघळलेली ती सर्व धूळ नानाविध सैन्यांच्या रुधिरस्त्रावानें शांत होऊन खालीं बसली आणि कौरवसेनेचा भयंकर संहार झाला! ह्या प्रकारें आपल्यापार्शीं असलेल्या सर्व सैन्याचा विध्वंस उडाला असें पाहून दुर्योधनानें एकट्यानें आपल्यावर वेगानें चाल करून

येणाच्या सर्व पांडुपुत्रांना स्वतः निवारिले ! राजा, तेव्हां पांडव, पार्षत धृष्टद्युम्न व महाबलवान् आनर्त हे आपआपल्या रथांतून दुर्योधनावर चालून येत अमनां त्या सर्वांवर दुर्योधनांने जलाल बाणांचा मारा करून त्यांना मारो हटविले. तेव्हां मर्त्य प्राणी जसे मृत्यूपासून दूर रहातात, तसे ते सर्व पांडववीर दुर्योधनाला भिऊन त्याच्यापासून दूर राहिले ! राजा, इतक्यांत दुसऱ्या रथावर आरूढ होऊन कृतवर्माही तेथे आला ! परंतु इतक्यांत महारथ युधिष्ठिराने त्वरेने बाणवर्षाव आरंभिला आणि कृतवर्माचे चारही अश्व ठार मारिले आणि लागलेच अतिशय धार दिलेले महा भल्ल बाण सोडून गौतमाला घायाळ पाडिले ! राजा, तेव्हां अश्वत्थाम्याने धर्मराजाच्या हस्ते विरथ झालेल्या हाताश्व कृतवर्माला आपल्या रथांत घेतले व तो धर्मराजापासून एकीकडे निघून गेला ! नंतर इकडे शारद्वत कृपाचार्याने सहा बाणांनी युधिष्ठिराला विंधिले आणि आणखी आठ तीव्र बाण सोडून त्याने त्याचे अश्व विद्ध केले ! असो; राजा, मग ह्याप्रमाणे अल्पस्वरूप युद्ध अवशिष्ट राहिले ! राजा हा सर्व घोर अनर्थ होण्याचे कारण तुझी व तुझ्या पुत्रांची दुष्ट मसलत हेच होय ! असो; तो महाघनुर्धरांचा नायक मद्राधिपति शल्य रणांत कुरुश्रेष्ठ युधिष्ठिराच्या हस्ते मरण पावला तेव्हां सर्व पांडुपुत्र प्रमुदित होत्साते एकत्र जमले व मोठमोठ्याने शंख वाजवू लागले; आणि रणांगणांत इंद्राने वृत्रासुराला मारल्यानंतर देवांनी जशी त्याची स्तुति आरंभिली, तशी त्या सर्वांनी युधिष्ठिराची स्तुति आरंभिली. आणि नानाविध वाद्यांच्या ध्वनींनी सर्व भूतल दुमदुमून टाकिले !

अध्याय अठरावा.

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—राजा, मद्राधिप शल्याचा वध झाल्यावर त्याचे सातशें शूर पदानुयायी रथी मोठ्या आवेशाने पांडवांशी लढाई करण्यास निघाले; पण तेव्हां दुर्योधन राजा पर्वतासारख्या प्रचंड हत्तीवर आरूढ झाला, आणि ज्याच्या मस्तकावर छत्र धरिले होते व ज्यावर चवऱ्या ढाळण्यांत येत होत्या असा तो कौरवाधीश त्यांच्या समीप गेला आणि 'जाऊं नका, जाऊं नका !' असे म्हणून त्याने त्यांचे निवारण केले. पण त्या सर्व माद्रीरांना युधिष्ठिराला ठार मारण्याची प्रवळ इच्छा असल्यामुळे, दुर्योधनाने त्यांचे पुनःपुनः निवारण केले तरी त्यांनी युद्ध करण्याचा निश्चय ठरवून पांडवांच्या सैन्यांत प्रवेश केला आणि प्रत्यंचांचा प्रचंड शब्द करीत त्यांनी पांडवांशी घोर युद्ध आरंभिले ! इकडे, राजा, शल्य पडला व त्याचे प्रिय करण्याच्या उद्देशाने मद्रकमहारथांनी धर्मराजाला पीडिले, हे वर्तमान अर्जुनाच्या कानी पडतांच तो गांडीव धनुष्याचा टणत्कार करीत आणि रथाच्या ऋणघणाटाने सर्व दिशा दणाणून टाकीत त्या स्थळी येऊन धडकला ! इतक्यांत भीमसेन, नकुल, सहदेव, सात्यकि, द्रौपदीच पुत्र, धृष्टद्युम्न व शिखंडी हे महान् महान् योद्धे व त्याप्रमाणेच पांचाल व सोमक हे सर्व बलाढ्य वीरही त्या ठिकाणी आले; आणि मग त्या अर्जुन—भीमसेनादिक सर्व वीरांनी धर्मराजाचे संरक्षण करण्यासाठी त्याचे भोंवतालीं गराडा घातला ! राजा, ते नरपुंगव पांडवीय योद्धे धर्मराजाच्या भोंवतालीं एकत्र जमा झाल्यानंतर, मगर सागराला क्षुब्ध करितात तद्वत् त्यांनी ते कौरवसैन्य क्षुब्ध केले ! त्या

वेळीं, राजा, प्रचंड वारे वृक्षांना कांपवितात, तद्वत् त्यांनीं त्या कौरवसेनेला कांपविलें; आणि मग ती अतिशय चवताळून पांडवांवर धावली, व त्यामुळें, समोरून वायूचा ओघ आला असतां महानदी गंगा ज्याप्रमाणें खवळून जाते, त्याप्रमाणें पांडवांची ती प्रचंड सेना अतिशय खवळली आणि नंतर त्या उभय सेनांत भयंकर युद्ध सुरू झालें ! त्या समयीं मद्रकांकडील अनेक शूर महारथ पांडवांच्या महान् सैन्यावर धावून आले; आणि ' तो धर्मराज युधिष्ठिर कोठें आहे ? त्याचे ते शूर भ्राते कोणीही येथें दिसत नाहीत हें काय ? तमाच तो शैनेय सात्यकि, धृष्टद्युम्न, द्रौपदीचे पुत्र, ते पराक्रमी पांचाल व महारथ शिवंडी हे आहेत कोठें ? ' असें ते मोठमोठ्यांनें ओरडून विचारूं लागले ! राजा, अशा प्रकारें ते शूर मद्रकवीर मोठमोठ्यांनें गर्जत असतां त्यांजवर द्रौपदीच्या महारथ पुत्रांनीं व युयुधानांनें हल्ले केले आणि मग तुंबळ युद्ध होऊन त्यांत तुझ्या सैन्यापैकीं कित्येक वीर रथांच्या चाकांखालीं चुरडून मेले; व प्रचंड ध्वज तुटून पडले त्यांखालीं कित्येक सांपडून नष्ट झाले ! राजा, तेव्हां रणांत मद्रकवीरांचा पांडवांनीं चोहोंकडे संहार उडविण्याचा सपाटा लाविला असें पाहून दुर्योधनांनें सर्व मद्रकांना परत बोलाविले, तथापि ते पुनः पांडवांवर तुटून पडले ! राजा, नंतर दुर्योधनांनें फिरून त्यांना चार समजुतीच्या गोष्टी सांगून माघारें वळण्याविषयीं आग्रह केला; परंतु त्या माद्रमहारथांपैकीं कोणीही त्याची आज्ञा पाळिली नाही ! तेव्हां गांधारराजाचा पुत्र शकुनि हा समयावर लक्ष देऊन दुर्योधनाला म्हणाला, " राजश्रेष्ठा, आपल्या सर्वांच्या डोळ्यांदेखत मद्रकांचें सैन्य पांडवांच्या हातून नाश पावत आहे; रणांगणांत तूं सन्निध असतांना हें घडवें हें अगदीं अनुचित होय !

आपण प्रथम असा ठराव केल आहें कीं, सर्वांनीं एकवटून युद्ध करावें; आणि असें असतां शत्रूंनीं मद्रकांचा जो संहार चालविला आहे, तो तूं कसा वरें सहन करितोस ! "

दुर्योधन म्हणाला:—शकुने, मीं ह्यांना आधींच ' तुम्ही पांडवांशीं लढूं नका ' म्हणून सांगितलें असतां त्यांनीं माझ्या आज्ञेला जुमानिलें नाही व हें युद्ध आरंभिलें आहे. हे सर्व पांडवसेनेवर माझ्या अनुमतीवांचून चालून गेले व त्यामुळें मृत्यूच्या जबड्यांत सांपडले !

शकुनि म्हणाला:—राजा, शूर वीर संक्रुद्ध झाले म्हणजे रणांगणांत धन्याचें शासन ऐकत नाहीत. ह्यास्तव आतां त्यांजवर आणखी रागावूं नको. ह्या वेळीं त्यांची उपेक्षा करणें प्रशस्त नव्हे. म्हणून आपण सगळे रथ, अश्व व गज ह्यांसहवर्तमान एकत्र होऊन त्या महाधनुर्धर शल्यपदानुयायांना मदत करण्यास जाऊं आणि मोठ्या मावधगिरीनें परस्परांचें संरक्षण करूं.

संजय सांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें शकुनीनें भाषण केलें तें श्रवण करून सर्वांनीं तसें करण्याचें ठरविलें व मद्रकवीर जेथें लढत होते तेथें ते सर्वजण तत्काळ गेले. तेव्हां दुर्योधनांनें आपल्या बरोबर प्रचंड सैन्य घेतलें आणि तो सिंहासारखी गर्जना करून सर्व भेदिनीला दणाणून सोडीत समरांगणांत प्राप्त झाला. राजा, त्या समयीं तुझ्या सैन्यांत जिकडे तिकडे 'धरा मारा, तोडा, झोडा, कापा' असा एकसारखा महान् शब्द चालला होता ! ह्याप्रमाणें मग जेव्हां मद्रकवीरांनीं इतर कौरववीरांशीं एकत्र होऊन रणांगणांत पांडवांवर हल्ला केला, तेव्हां पांडवांनींही आपली पहिली युद्धरीति सोडिली व ते मध्यम नामक व्यूह रचून त्या सर्व कौरवसैन्यांवर चाल करून गेले ! राजा, मग मोठा घोर संग्राम मातला, आणि

त्यांत सर्व वीर हातघाईवर येऊन हां हां म्हणतां मद्रकसैन्यांचा संहार उडाला ! ह्या प्रकारें आर्क्षीं सर्व रणांगणांत असतां आम्हांसमक्ष जेव्हां ते शूर मद्रक रणांत पडले, तेव्हां सर्व पांडव एकत्र होऊन आनंदानें गर्जु लागले ! राजा, त्या समयी रणभूमीवर जिकडे तिकडे वीरांचीं कब्रें उठलीं; आदित्यमंडलाच्या मध्यापासून महान् उल्कांचा पात होऊं लागला; ज्यांची जोखडे व कणे मोडले होते अशा भय रथांनी त्याप्रमाणेंच महारथ्यांच्या शवांनी व मरून पडलेल्या घोड्यांच्या शरीरांनी मही झांकून गेली; आणि जुवांशीं बद्ध असलेले अश्व सारथिहीन होत्साते योद्ध्यांचा घेऊन वायुवेगानें रणांगणांत उधळत आहेत असेही सर्वत्र दृग्गोचर झालें ! राजा, त्या वेळीं कित्येक घोडे समरभूमीवर चाकें मोडलेलेच रथ ओढीत होते; कित्येक गळ्यांत दोरखडे लोंबत होती त्यांसुद्धां दौडत होते; आणि जे रथी युद्धांत पडत होते, ते पाहून जणू काय सिद्धच क्षीणपुण्य होत्साते अंतरिक्षांतून कोसळत आहेत असे भासे ! राजा, मद्राधिपतीचे शूर पदानुगामी रणांत हात झाले तेव्हां आर्क्षी महारथ पांडुपुत्रांवर चालून गेलो; आणि तें पाहून, आमचा नाश करून जय मिळविण्याच्या इच्छेनें उलट तेही आम्हांवर मोठ्यावेगानें तुटून पडले ! मग गाणांचा व शंखांचा महान् शब्द मुरू झाला; त्यांनीं आम्हांवर नेम धरून बाणप्रहार करायला आरंभ केला; आणि प्रत्यंच्यांचा शब्द सिंहनाद करून ते मोठमोठ्यानें ओरडू लागले ! राजा, नंतर आपल्या सैन्यांनीं सर्वे रिसिधतीचा विचार केला; त्यांनीं रणांगणांत द्राराजाला मरून पडलेले पाहिले व त्याप्रमाणेंच यांच्या पदानुगाम्यांच्या प्रचंड सैन्याची वाट पाहिलेली अवलोकन केली, तेव्हां त्यांची आर्क्षी युद्धाकरण्याची उत्तरी हार्दना व तीं

पुनः युद्धापासून पराङ्मुख होऊन पळू लागलीं ! राजा, तितक्यांत विजयशाली पांडवांनीं त्यांजवर हल्ला केला व त्यांचा घोर संहार आरंभिला; तेव्हां त्यांमध्ये मोठी धांदल उडून त्या दृढधनुष्यधारी पांडवांच्या हस्तांतून जे वीर उरले ते दशदिशांस पळून गेले !

अध्याय एकोणिसावा.

—:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो—राजा धृतराष्ट्रा, पांडवांनीं रणांगणांत विजयशाली महारथ मद्राधिपती शल्याला जेव्हां वधिलें, तेव्हां तुझ्या पुत्रांचें व त्याप्रमाणेंच तुझ्या सैनिकांचें मन प्रायः युद्धापासून परावृत्त झालें ! राजा, अगाध समुद्रांत नौका फुटून व्यापारी लोक आश्रयहीन झाले म्हणजे त्यांची जशी विपत्तावस्था होते, तशी त्यांची विपत्तावस्था झाली ! अगाध सागरांत बुडणाऱ्या प्राण्यांनीं परतीरास पांचण्याची इच्छा करणें जसें व्यर्थ, तसेंच पांडवांना जिंकण्याची इच्छा करणें व्यर्थ होय, अशी त्यांची खातरी झाली ! महात्म्या धर्मराज युधिष्ठिरानें शूर मद्राधिपतीचा वध केला तेव्हां पांडवांच्या शरांनीं घायाळ झाल्यामुळे अगदीं घाबरून जाऊन, सिंहानें आर्त करून सोडिलेल्या मृगांप्रमाणें किंवा भयशांग वृषभांप्रमाणें अथवा शीर्णदंत हत्तींप्रमाणें अगदीं दीन होत्साले 'आतां आमचें कोण रक्षण करील ! आतां आमचें कोण रक्षण करील !' असें ओरडत युधिष्ठिराच्या हस्ते पराभव पावून आम्ही मध्याह्नीं परत माघारे आलों ! राजा, शल्याचें निघन झाल्यावर आपलीं सैन्ये पुनः व्यवस्थितपणें एकत्र करावी किंवा कांहीं शौर्य दाखवून शत्रूवर जरब बसवावी, असें कोणाही योद्ध्याच्या मनांत येईना ! राजा, भीष्म,

द्रोण व कर्ण हे रणांत पडल्यानंतर तुझ्या योद्ध्यांना जसें अनावर दुःख झाले व भय पडले, तसेंच शल्याच्या मृत्यूमुळे पुनः आम्हां सर्वांना अनावर दुःख झाले व भय पडले! राजा, तो महारथ शल्य रणांगणांत पडतांच आमची सर्वांची जयाशा नष्ट झाली; आणि कौरवसेनेतील महान् महान् वीर अतिशय जलाल अशा बाणादिकांच्या प्रहारांनीं ठार मेल्यामुळे किंवा विध्वस्त अथवा छिन्नविछिन्न झाल्यामुळे बाकी राहिलेले तुझे योद्धे भयभीत होत्साते पळून गेले! राजा धृतराष्ट्रा, त्या समयीं कित्येक महारथ घोड्यांवर, कित्येक हत्तींवर व कित्येक रथांत बसून मोठ्या वेगानें रणांगणांतून निघून गेले आणि पायदळ्यांनींही तोच किता गिरविला! त्या समयीं पर्वतासारखे प्रचंड असे दोन हजार झुंजार हत्ती अंकुश व पायांचे अंगठे ह्यांनीं प्रेरित होत्साते समरांगणांतून पळून गेले! ह्याप्रमाणें तुझे सर्व योद्धे जिकडे वाट मिळाली तिकडे पळून गेले, आणि पळत असतां आधींच शरानीं तस्त झालेले ते सर्व वीर अगदीं धापा टाकीत चालले होते! असो; राजा, जेव्हां तुझ्या सैन्याचा पराभव होऊन तें निरुत्साह व भय होत्सातें पळून जात आहे असें पांडवांनीं अवलोकन केलें, तेव्हां त्यांनीं व पांचालांनीं जयाच्या इच्छेनें त्याजवर हल्ला केला आणि मग जिकडे तिकडे बाणांचा सणसणाट सुरू झाला; शूर वीर सिंहासारखे गर्जू लागले, व सर्वत्र घोर शंखनाद प्रवर्तला! राजा, कौरवांचें सर्व सैन्य भयभीत होत्सातें पळून जाऊं लागले, तेव्हां पांडव व पांचाल वीर हे आपसांत संभाषण करूं लागले! ते म्हणाले:—अहो, आज सत्यशील युधिष्ठिर राजाचे सर्व शत्रु नष्ट होऊन त्यास निष्कंठक राज्य प्राप्त झाले! आज दुर्योधनाची तेजःपुंज राजलक्ष्मी अस्तास गेली! आज धृतराष्ट्र राजा हा दुर्योधन

मेला असें ऐकून विह्वल होत्साता मूर्च्छित पडो! आज त्याला कौंतेय हा सर्व धनुर्धरांचा अग्रणी आहे हें विदित होईल! आज तो द्रुष्ट व पातकी पुरुष आपणा स्वतःला दोष देऊन हळूहळू लागेल! आज त्याला हितवादी विदुराच्या सत्य भाषणांचें स्मरण होईल! आजपासून त्याला पांडुपुत्राच्या आज्ञेत रहावें लागेल; व पांडुपुत्रांना जी दुःखें भोगावीं लागलीं त्यांचा त्याला अनुभव येईल! आज धृतराष्ट्र राजाला कृष्णाचें महात्म्य समजेल! रणांत अर्जुनाच्या धनुष्याचा घोर ध्वनि काय करितो ह्याची आज धृतराष्ट्राला कल्पना येईल! आज रणांत अर्जुनाचें अस्त्रबल व बाहुवीर्य कितपत आहे ह्याचें त्याला बरोबर ज्ञान होईल! इंद्रानें बल दैत्याला मारिलें तसें भीमसेनानें दुर्योधनाला आज ठार मारिलें म्हणजे धृतराष्ट्राला भीमाचा बाहुप्रताप व घोर शक्ति हीं यथार्थ कळतील! त्या वेळीं दुःशासनाचा वध करितांना भीमसेनानें जें अचाट कर्म केलें, तें ह्या भूतलावर त्या एकट्या महाशक्तिमान् भीमसेनावांचून दुसऱ्या कोणाच्याही हातून घडलें नसतें! आज देवांनाही अजिंक्य अशा त्या मद्राधिपतीच्या मरणाची वार्ता ऐकून धृतराष्ट्राला धर्मराजाचा पराक्रम समजून येईल! आज रणांत बलाढ्य माद्रीपुत्रांनीं शकुनीचा व दुसऱ्या महान् महान् सर्व वीरांचा वध केला म्हणजे धृतराष्ट्राला त्या माद्रीपुत्रांच्या बलाची कसोटी समजेल! धनंजय, सात्यकि, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, द्रौपदीचे पांचही पुत्र, माद्रीपुत्र नकुल-सहदेव, महाधनुर्धर शिखंडी व धर्मराज युधिष्ठिर ह्या महान् महान् वीरांनीं ज्या सैन्याचा आश्रय केला आहे, सर्व जगाचा स्वामी जो कृष्ण तो ज्यांचा शास्ता आहे, आणि धर्म हा ज्यांचा महान् आधार आहे, त्यांना जय कसा मिळणार नाहीं बरें? भीष्म, द्रोण,

करून, पळून जाण्यास सिद्ध झालेल्या भूपतींना मोठी उमेद आली; व त्यांनीं दुर्योधनाचा गौरव करून, पुनः आपणांवर चालून येणाऱ्या पांडवांवर हल्ला केला! राजा, नंतर तत्काळ पांडवांकडील योद्ध्यांना मोठा संताप आला व ते जय मिळविण्याच्या उत्कट इच्छेनें व्यूहरचना करून त्या कौरवसैन्यावर चालून गेले! राजा, तेव्हां वीर्यवान् धनंजय तिन्ही लोकांत प्रख्यात अशा त्या आपल्या गांडीव धनुष्याचें आस्फालन करून आपल्या रथांतून शत्रूवर धावून गेला; त्याप्रमाणेंच नकुलसहदेवांनीं शकुनीवर हल्ला केला; आणि महाबल सात्यकिही मोठ्या आवेशानें तुड्या सैन्यावर तुटून पडला!

अध्याय विसावा.

—:—

शाल्वाचा वध.

संजय सांगतो:— राजा, कौरवांचें सैन्य पुनः युद्धाला तयार होऊन मागे वळलें, तेव्हां म्लेच्छांचा अधिपति शाल्व हा क्रोधायमान होऊन पांडवांच्या अफाट सैन्यावर धावून गेला. त्या वेळीं तो एका पर्वतासारख्या प्रचंड अशा धुंद व मदोन्मत्त हत्तीवर आरूढ झाला असून, तो हत्ती ऐरावतासारखा प्रख्यात व शत्रूंचे समुदाय ठार करणारा होता. राजा, तो हत्ती मोठ्या प्रतापशाली कुलांत जन्मला असून दुर्योधन हा त्याची नेहमी पूजा करीत असे. त्याच्यावर सर्व प्रकारची युद्धसामग्री व इतर उपकरणें यथास्थित वातलीं होती; आणि युद्धकलाप्रवीण पुरुषांनीं त्यास उत्तम शिकवून तयार केलें होतें. ह्यास्तव समरामर्त्ये त्याजवर बसून शाल्व राजा हा नेहमी युद्ध करीत असे. राजा, रात्र संपण्याच्या सुमारास सूर्य जसा उदयपर्वनावर आरूढ होतो. तसा तो शाल्व

राजा त्या श्रेष्ठ हत्तीवर आरूढ झाला व तो रणांगणांत एकत्र जमलेल्या पांडुमुतांवर चालून गेला. राजा, नंतर त्या शाल्वाचें व पांडवांचें मोठें घनघोर युद्ध झालें. तेव्हां शाल्वानें महेंद्राच्या वज्राप्रमाणें कतिशय कठोर व धार देऊन तीक्ष्ण केलेले बाण पांडवांवर सोडून त्यांस विदीर्ण केलें; आणि त्यानें घोर समरांत बाणांचा भडिमार करून शत्रूंकडील योद्ध्यांना यमसदनीं पाठविण्याचा सपाटा लाविला, तेव्हां पूर्वीं देवदानवांच्या संग्रामांत ऐरावतावर आरूढ झालेला इंद्र घोर प्रताप गाजवीत असतां ज्याप्रमाणें देवांना किंवा दानवांना त्याच्या ठिकाणीं वेगुण्य म्हणून कांहींएक दिसलें नाहीं, त्याप्रमाणें शाल्व राजाच्या ठिकाणीं कौरवांना किंवा पांडवांना कांहींएक वेगुण्य दिसलें नाहीं. राजा धृतराष्ट्रा, त्या समर्थी पांडव, सोमक व मंजय ह्यांना हा एकच हत्ती महेंद्राच्या हत्तीप्रमाणें सहस्रावधि रूपें घेऊन सर्वत्र आपल्या समीप संचार करीत आहे असें दिसे. त्या हत्तीनें शत्रुसैन्याला क्षुब्ध केलें तेव्हां तें मृततुल्य भासलें. त्या वेळीं पांडवांचें सैन्य इतकें घाबरलें कीं, तें धूम ठोकून पळत सुटलें व पळत असतां त्यांतांल सैनिकांनीं परस्पराना पायांखालीं तुडवून ठार केलें! राजा, ह्याप्रमाणें त्या नरवीर शाल्वानें पांडवांची ती प्रचंड चमू उधळून लाविली आणि तिला त्या महान् हत्तीचा वेग सहन न झाल्यामुळें ती एकदम चारी दिशांस पळून गेली. अशा प्रकारें त्या वेगवान् सेनेचा शाल्व राजानें मोड केला. तेव्हां तुड्या सैन्यांतील प्रमुख वीरांना मोठा आनंद झाला व त्यांनीं शाल्व राजाची वाहवा करून चंद्रासारखे शुभ्र शंख वाजविण्यास प्रारंभ केला. ह्याप्रमाणें कौरवांना मोठा आनंद होऊन ते मोठमोठ्यानें गर्जावयास व शंख वाजवावयास लागले. तेव्हां पांडवमंजयांचा मेनापति

महात्मा पांचालराजपुत्र धृष्टद्युम्न हा अतिशय खवळला; आणि पूर्वी इंद्राची युद्ध करीत असतां इंद्राचें वाहन जो ऐरावत त्यावर जसा जंभामुर धावून गेला, तसा तो पांडवीय योद्धा तत्काळ शाल्वाच्या त्या हत्तीवर धावून गेला ! त्या समयीं रणांगणांत तो आपणावर मोठ्या वेगानें धावून येत आहे असें पाहून शाल्व राजानें तत्काळ त्याला ठार मारण्याकरितां आपला हत्ती त्याच्यावर घातला ! तेव्हां तो हत्ती आपल्यावर उमळून येत आहे असें अवलोकन करून धृष्टद्युम्नानें अशीमारखे जलाल व लोहाराकडून अतिशय धार दिलेले तीन अतिभयंकर नाराच बाण त्याजवर सोडून त्यास विद्ध केलें; आणि मग त्या महात्म्या पांडवीय वीरानें आणखी पांचशें उत्कृष्ट नाराच बाण त्याच्या गंडस्थळावर मारिले ! राजा, ह्याप्रमाणें धृष्टद्युम्नानें बाण-प्रहारानीं त्या शाल्व राजाच्या कुंजराला अतिशय बाणविद्ध केलें, तेव्हां तो महान् हत्ती मोहरा फिरवून अतिशय पळत सुटला ! राजा, ह्याप्रमाणें त्या पांचाल वीरानें बाणांनीं जर्जर करून शाल्व राजाचा तो हत्ती मोठ्या सपाट्यानें उधळून लाविला असतां शाल्व राजानें त्याला फिरून मागें परतविलें; आणि तत्काळ शूल व अंकुश ह्यांनीं त्यास चेंब आणून त्या पांचाल योद्ध्याच्या रथावर उडी घालण्याविषयीं त्यास इशारा दिला व त्याप्रमाणें त्यानें तत्काळ केलें ! तेव्हां धृष्टद्युम्न घाबरला आणि त्यानें तावडतोत्र रथातील गदा घेतली व तो रथांतून मोठ्या वेगानें भूतलावर उडी टाकून उभा राहिला ! इकडे तो हत्ती धृष्टद्युम्नाच्या रथावर तुटून पडला असतां त्यानें तो मुवर्ण-मंडित रथ घोडे व सारथि ह्यांसह आपल्या सोडेनें उचलून अंतरिक्षांत फेंकिला आणि भूतलावर आपटून त्याचें चूर्ण करून टाकिलें व

तो मोठमोठ्यानें गर्जू लागला ! ह्याप्रमाणें त्या महाद्विपानें धृष्टद्युम्नाला प्राणसंकटांत घातलें तेव्हां भीमसेन, शिवंडी व मात्यकि हे त्या हत्तीवर मोठ्या त्वेषानें धावले, त्या समयीं तो हत्ती कावराबावरा होऊन चोहोंकडे उड्या टाकीत असतां त्या भीमसेनादिक रथवीरांनीं त्याजवर एकदम घोर शरांचा भडिमार चालवून त्याचा वेग खुंटविला आणि मग तो रणांगणांत नुसता चालत राहिला ! तें पाहून, राजा, सूर्य जसा किरणजालांनीं दशदिशा भरून काढितो, तद्वत् शाल्व राजानें बाणांचा घोर वर्षाव आरंभून दशदिशा भरून काढिल्या; आणि त्यामुळे पांडवांचें रथमन्य भराभर मरू लागले व निकडे वाट सांपडेल तिकडे पळून गेले ! अशा प्रकारचें शाल्वाचें अनुपम सामर्थ्य अवलोकन करून पांडवसैन्यांत मोठा हाहाकार उडाला आणि मग महान् महान् पांचाल व सृजय ह्यांनीं रणांगणांत चोहोंकडून त्या हत्तीला काडून टाकिलें, मग शूर धृष्टद्युम्न हा तत्काळ आपली पर्वतशृंगतुल्य गदा उचलून मोठ्या आवेशानें त्या कुंजरश्रेष्ठावर धावून गेला; आणि पर्वतामारखा अवाढव्य व मेघामारखा मदस्त्राव करणारा अशा त्या गजावर गदाप्रहार करून त्यानें एकदम त्याचें गंडस्थळ भेदिलें, तेव्हां मग तो गज मुत्वावाटे रक्त ओकीत व आक्रोश करीत—धरणीकंप झाला असतां महान् गिरि जसा धाडकन् कोसळतो तसा—रणांगणांत धाडकन् कोसळला ! राजा, ह्याप्रमाणें तो पर्वता-मारखा प्रचंड हत्ती भूतलावर पडला तेव्हां तुझ्या सैन्यांत महान् आकांत झाला; आणि तितक्यांत मात्यकीनें एक जलाल भल्ल बाण सोडून शाल्व राजाचें मस्तक छेदिलें ! तेव्हां इंद्रानें वज्रप्रहार करून तोडून टाकिलेल्या पर्वताच्या शिखराप्रमाणें त्या शाल्व राजाचें धड भूमीवर पतन पावले !

अध्याय एकत्रिसावा.

—:०:—

सात्यकिं व कृतवर्मा ह्यांचें युद्ध.

भंजय मांगतो:—हे महाराजा, समरांगणास शोभविणारा तो शूर शाल्व राजा मरण पावल्यानंतर. वाच्याने जसा महान् वृक्ष भग्न होतो तसें तुझे सैन्य तत्काळ भग्न झालें ! ह्याप्रमाणें तुझे सैन्य विदीर्ण होऊन पळू लागलें तेव्हां शूर व बलाढ्य अशा महारथ कृतवर्म्याने त्यास थांबवून धरिलें; आणि शत्रूंनीं रणांगणांत घोर शरांचा भडिमार चालविला असतांही तो कृतवर्मा पर्वतासारखा अटळ राहिला आहे असें पाहून, पळून जात असलेले ते शूर कौरववीर एकदम मागे परतले; आणि मग कौरव व पांडव ह्यांचा घोर संग्राम चालू झाला ! राजा, त्या समर्थी कौरव हे रणांत मारूं किंवा मरूं असा निर्धार करून पांडवांशीं लढत होते. तेव्हां सात्वत कृतवर्म्याने पांडवांशीं आश्चर्यकारक युद्ध केलें. त्यानें एकट्यानें त्या दुर्धर पांडुसेनेचे निवारण केलें आणि ते पाहून मग उभयतांच्या मुहूर्ताना विलक्षण वीरश्री चढली व त्यांनीं घोर पराक्रम केला; परंतु त्यांतही अखेरीस कौरवदळाची सरशी झाली व त्यांजकडील त्या विजयी वीरांनीं अशी घोर गर्जना केली कीं, ती अगदीं स्वर्गमंडलाम जाऊन पोचली ! हे भरतश्रेष्ठा, त्या सिंहगर्जनेनें पांचाल घाबरले; पण इतक्यांत महाबाहु शैनेय सात्यकि त्या स्थळीं प्राप्त झाला आणि त्यानें महापराक्रमी क्षेमधूर्ति राजाला गांठून त्याजवर सात जलाल बाण सोडिले व त्यास यममदनी पाठवून तो कौरवांवर आणखी चाल करून गेला ! ह्याप्रमाणें तो विजयशाली सात्यकि जलाल बाणांचा भडिमार करीत आपणावर येत आहे असें पाहून महाबुद्धिमान् हार्दिकय कृतवर्म्यानें मोठ्या त्वेपानें त्याजवर उलट चाल

केली; आणि मग त्या महावीर्यशाली महारथ सात्वत योद्ध्यांचें दारुण युद्ध जुंपून त्यांनीं परस्परांवर महान् महान् शस्त्रास्त्रांचा मारा आरंभिला ! राजा, त्यांचें तें अद्वितीय रण-कौशल्य अवलोकन करून सर्व मंडळीं स्तब्ध झाली; आणि पांडव, पांचाल व दुसरे महान् महान् भूपाळ ते घोर रणकंदन पहात उभे राहिले ! त्या समर्थी मद्रोन्मत्त कुंजरांप्रमाणें त्या वृष्णि व अंधक ह्या कुलांतल्या महारथांनीं परस्परांवर मोठ्या शौर्यानें नाराच व वत्सदंत बाणांची उग्र वृष्टि आरंभिली आणि नाना-प्रकारचीं मंडलें करीत ते परस्परांस पुनः पुनः बाणाच्छादित करूं लागले ! राजा धृतराष्ट्रा, त्या वेळीं त्या उभयतांच्या धनुष्यांपासून मोठ्या वेगानें व बळानें जे बाणांचे लोट एकसारखे उमळत होते, ते पाहून जणू काय अंतरिक्षांत टोळाचे जमाव मोठ्या त्वरेनें धावत आहेत असें आह्वांस वाटलें. त्या प्रसंगीं त्या एकट्या मत्यपराकर्मी सात्यकीला कृतवर्म्यानें गांठलें आणि त्याजवर जलाल बाणांचा वर्षाव करून चार बाणांनीं त्याचे चारही घोडे मारिले ! तेव्हां त्या महाबाहु सात्यकीला विलक्षण क्रोध चढला ! जणू काय त्या वीरकुंजराला कृतवर्म्यानें अंकुशच टोंचला असे वाटलें आणि मग त्यानें तत्काळ आठ भयंकर बाणांनीं कृतवर्म्याला विंधिलें. नंतर कृतवर्म्यानें सहाणेवर धार लाविलेले तीन बाण सात्यकीवर सोडिले आणि आणखी एक बाण टाकून त्याचें धनुष्य छेदिलें ! राजा, तेव्हां त्या शिनिपुंगव सात्यकीनें तें छिन्न श्रेष्ठ धनुष्य फेंकून दिलें आणि तत्काळ दुसरे धनुष्य धारण करून त्यास बाण जोडिला; व तो अतिरथी मोठा क्षुब्ध होऊन तत्काळ कृतवर्म्यावर तुरून पडला ! नंतर त्यानें अतिशयित पाजविलेले दहा बाण कृतवर्म्यावर सोडून त्याचा सारथि,

अश्व व ध्वज ह्यांचा विध्वंस उडविला ! मग त्या महाधनुर्धर महारथ कृतवर्म्यांने आपला सुवर्णमंडित रथ अश्वहीन झाला असे पाहून मोठ्या क्रोधाने शूल उचलून बाहुबलांने तो सात्यकीला ठार मारण्याकरितां त्याजवर फेकिला ! परंतु रणांगणांत सात्यकींने त्याजवर घोर शरांचा भडिमार करून त्याचीं छकले उडविलीं आणि तें पाहून तो मधुकुल्येत्पन्न कृतवर्मा गांगरून गेला ! नंतर कृतवर्म्यांने पुनः रथारूढ होऊन सात्यकीच्या वक्षस्थळीं एक भल्ल बाण मारिला; पण इतक्यांत युयुधानांने त्याला पुनः अश्वहीन व मारथिहीन करून विरथ केले. मग कृतवर्मा भूतलावर उतरला; आणि ह्याप्रमाणें त्या द्वैरथयुद्धांत कृतवर्म्यांचा रथ पुनः भंग झाला असे पाहून सर्व कौरव-योद्ध्यांचीं धावीं दणाणून गेलीं व तुझा पुत्र दुर्योधन अत्यंत पावरला !

नंतर, राजा, कृतवर्म्यांची ती विपन्नावस्था पाहून सात्यकीला वधण्याच्या हेतूने कृपाचाधिपुढे झाला आणि कृतवर्म्यांला रथांत घालून सर्व धनुर्धरांच्या समक्ष रणांगणांतून निवृत्त गेला ! राजा, अशा प्रकारें कृतवर्मा विरथ होऊन अखेरीस रणांतून निवृत्त झाला तेव्हां चोहोंकडे सात्यकीचा पूर्ण दरारा बसला व मग दुर्योधनाच्या सर्व सेनेनें पळ काढिला ! त्या समयीं रणभूमीवर सर्वत्र धूळ उडून निविड अंधकार मातल्यामुळे कौरवांची सेना पळत आहे हें शत्रूंना दिसलें नाहीं; आणि त्यामुळे एकटा दुर्योधनशिवायकरून बाकीची सर्व कौरवचमूधूम ठोकून पळून गेली ! तेव्हां दुर्योधनाने आपलें सैन्य पळें लागलें असे पाहून त्या सर्वांना त्यानें एकट्यांने मोठ्या वेगानें धावून जाऊन थांबवून धरिलें आणि त्यानें मोठ्या क्रोधानें सर्व पांडवसैन्यावर भयंकर शरवर्षाव आरंभिला ! त्या समयीं त्यानें पार्षत धृष्टद्युम्न,

शिखंडी, द्रौपदीचे पुत्र, पांचाल, केकय, सोमक व संजय ह्यांचे समुदाय, ह्या सर्वांवर मोठ्या शौर्यानें जलालबाणांचा वर्षाव केला; आणि ज्याप्रमाणें यज्ञांत मंत्रांनीं पवित्र केलेला अग्नि आपल्या प्रदीप्त कांतीनें झळाळत असतो, त्याप्रमाणें तो महाबल धार्तराष्ट्र रणांगणांत, त्याजवर ते सर्व पांडववीर महान् शरवृष्टि करीत असतां, आपल्या दिव्य कांतीनें अत्यंत झळाळें लागला ! राजा, त्या समयीं पांडवांना तो दुर्योधन प्रति-अंतकच भामला व कोणालाही त्याजवर चाल करून जाण्याला छाती झाली नाहीं; इतक्यांत हार्दिक्य कृतवर्मा दुमन्या रथांत आरूढ होऊन त्या स्थळीं आला !

अध्याय बाविसावा.

—:—

संकुलद्वंद्वयुद्ध.

संजय सांगतो:— राजा धृतराष्ट्रा, त्या समयीं तुझा पुत्र महारथ दुर्योधन हा रथावर आरूढ होताना जिवावर अगदीं उदार होऊन लडूं लागला. तेव्हां जणू काय रणांगणांत प्रतापशाली रुद्रच युद्ध करीत आहे असें भामलें. तेव्हां त्यानें शत्रूवर घोर शरवर्षाव चालविला असतां जणू पर्वतावर पर्जन्याच्या सरीच कोमळत आहेत असें वाटलें ! त्या समयीं दुर्योधनानें पांडवचमूवर जो बाणांचा भडिमार केला, त्यानें सर्व भूतल झांकून गेलें. त्या वेळीं पांडवांच्या सैन्यमागारांत एकही नर, गज किंवा अश्व बाणविद्ध झाल्यावांचून राहिला नाहीं. जो जो वीर रणांगणांत माझ्या दृष्टीस पडला, तो तो तुझ्या पुत्राचे हस्ते नवशिव्यांत बाणांनीं खचून भरला होता ! त्या समयीं सैन्याच्या पावलांनीं रणभूमीवर जी धूळ माजली, तिनें ज्याप्रमाणें सर्व सैन्य अदृश्य झालें, त्याप्रमाणें महात्म्या दुर्योधनाच्या बाणांनीं,

सर्व रणांगण अदृश्य झाले. राजा, तेव्हां दुर्योधनाचे भराभरा जे बाण सोडिले, त्या बाणांनी सर्व पृथ्वी बाणमय झालेली दिसली! राजा, त्या वेळीं कौरवांचे व पांडवांचे हजारों योद्धे समरांगणांत होते, पण त्या सर्वांमध्ये एक दुर्योधन मात्र खरा वीर आहे, असा मात्रा समज झाला! त्या समयीं मला मोठा विलक्षण चमत्कार वाटला; तो हा कीं, त्या एकट्या दुर्योधनावर चालून जाण्याला त्या एकवटलेल्या सर्व पांडुपुत्रांना छाती झाली नाही! तेव्हां रणांगणांत दुर्योधनाचे युधिष्ठिरावर शंभर बाण सोडिले, भीमसेनावर सत्तर सोडिले. सहदेवावर सात सोडिले, नकुळावर चौसष्ट सोडिले, धृष्टद्युम्नावर पांच सोडिले, द्रौपदीच्या पुत्रांवर सात सोडिले व सात्यकीवर तीन सोडिले आणि त्यांचे एक भद्र बाण मारून सहदेवांचे धनुष्य छेदिले! राजा, त्या वेळीं त्या प्रतापशाली माद्रीपुत्रांचे तें छिन्न धनुष्य फेंकून दिले आणि दुसरे प्रचंड धनुष्य धारण करून तो दुर्योधनावर धावून गेला आणि त्यांचे रणांगणांत दुर्योधनाला दहा बाणांनीं विधिले! राजा, तितक्यांत महाधनुर्धर नकुलाने त्यावर भयंकर नऊ बाण टाकिले व तो मोठमोठ्यानें गर्जला गेला; आणि मग सर्व पांडवीय वीरांनीं दुर्योधनावर बाणांचा भडिमार चालू केला! तेव्हां सात्यकीनें बांकदार पेच्यांच्या एका बाणांचे दुर्योधन राजाला विधिले, द्रौपदीच्या पुत्रांनीं त्याजवर त्र्याहात्तर बाण सोडिले, धर्मराजांचे त्याला पांच बाण मारिले, आणि भीमसेनांचे त्याजवर ऐंशी बाण टाकून त्यास अगदीं जख्म केले! राजा, त्या वेळीं दुर्योधनावर सर्व अंगांनीं एकसारखा बाणांचा वर्षाव होत होता आणि सर्वे सैन्य त्याजकडे पहात होते, तरी तो स्वस्थानापामून अगुरेणु ढळला नाही! तेव्हां त्यांचे जे कांहीं हस्तकौशल्य, अस्त्रनेपुण्य व

अतुल बल व्यक्त केले, ते केवळ अद्भुत होय, असेच सर्वास वाटले! राजा, त्या समयीं कौरवांकडील वीर कांहीं फारसे लांब पळालेले नव्हते; त्यांनीं थोड्याशा अंतरावर जाऊन पाहिले तों त्यांस आपणांमध्ये दुर्योधन राजा दिसला नाही आणि त्यामुळे ते कवचधारी वीर तत्काळ परत आले. राजा, मग दोन्ही दळांचा भयंकर संग्राम चालू झाला; आणि बरसात सुरू होण्याच्या समयीं समुद्र खवळला म्हणजे तो जसा घोर गर्जना करितो, तशा त्या दोन्ही सेना घोर गर्जना करू लागल्या. राजा, कारवांचे योद्धे रणांगणांत परतल्यावर प्रथम त्या विजयशाली दुर्योधन राजाच्या समीप प्राप्त झाले; आणि मग ते सर्व महाधनुर्धर कौरववीर आपणांवर चालून येणाऱ्या पांडवांवर तुटून पडले. राजा, त्या समयीं द्रोणपुत्र अश्र्वत्थाम्यानें संक्रुद्ध झालेल्या भीमसेनाला मागे हटविले आणि मग दोन्ही सैन्यांनीं एकमेकांवर इतका दारुण शरवर्षाव आरंभिला कीं, त्या समयीं दिशा व उपदिशा मुळाच ओळखतनाशा झाल्या! तेव्हां ते दोन्ही दुर्योधन वीर भयंकर प्रताप गाजवीत रणांगणांत एकमेकांवर मोठ्या शौर्यानें चढ करू लागले आणि प्रत्येकेच्या आस्फालनांचे ज्यांच्या हातांच्या त्वचा कठीण झाल्या होत्या अशा त्या उभयतां योद्ध्यांचीं सर्व भूमंडल त्रस्त करून सोडिले. राजा, त्या वेळीं शकुनीनें रणांगणांत युधिष्ठिरावर हल्ला केला आणि त्या बलिष्ठ सुबलमुतांचे त्या पांडुपुत्रांचे चारही घोडे ठार मारून मोठ्यानें गर्जना आरंभिली व त्यामुळे पांडवांचीं सर्व सैन्ये प्रावरून गेलीं. इतक्यांत प्रतापशाली सहदेव समरांगणांत पुढे झाला आणि त्यांचे अजिंक्य धर्मराजाला आपल्या रथांत घेऊन रणभूमीवरून एकीकडे नेले! राजा, नंतर धर्मराज युधिष्ठिर दुसऱ्या

रथावर आरूढ झाला व त्याने शकुनीवर प्रथम नऊ व मग पुनः पांच बाण सोडिले आणि तो सर्वधनुर्धराग्रणी वीर मोठमोठ्याने गर्जू लागला. त्या समयी त्या दोघां वीरांचें अतिशय भयंकर व विचित्र युद्ध झालें आणि तें पाहून प्रेक्षकांना मोठें कौतुक वाटलें व सिद्धचारण तें पाहाण्यांत अगदीं गर्क झाले. राजा, तितक्यांत महाप्रतापी उलूक हा महाधनुर्धर व विजयशाली नकुलावर बाणांचा भडिमार करीत धावून गेला; परंतु तें पाहून शूर नकुलानें रणांगणांत त्या सौत्रलमुत उलूकावर चोहोंकडून शरांचा घोर वर्षाव चालविला आणि त्यास खुटवून टाकिलें! त्या वेळीं त्या दोघांही कुलवान शूर महारथांनीं भयंकर युद्ध आरंभिलें आणि ते परस्परांस धायाळ करूं लागले. त्याप्रमाणेंच त्या समयीं शूर शैनेय सात्यकीशीं कृतवर्मा लढूं लागला; व त्या उभयतांचा तो घोर संग्राम पाहून, जणू काय अमरराज इंद्र हा बल देत्याशींच लढत आहे असें भासलें! इकडे दुर्योधनानें घोर संग्रामांत धृष्टद्युम्नाचें धनुष्य छेदिलें आणि त्यास धनुर्हीन करून त्याजवर जलाळ बाणांचा भडिमार आरंभिला. तेव्हां धृष्टद्युम्नानें दुसरे प्रचंड धनुष्य धारण केलें आणि सर्व धनुर्धरांच्या समक्ष दुर्योधन राजाशीं घोर संग्राम चालविला! राजा, त्या समयीं त्या प्रबळ योद्ध्यांचें जें दारुण युद्ध झालें, तें पाहून, ज्यांच्या गंडस्थळांतून मदःखाव चालला आहे असे दोन मदोन्मत्त नवान हत्तीच एकमेकांशीं झगडत आहेत असें भासूं लागलें! राजा त्या समयीं गौतमानें क्षुब्ध होऊन रणांगणांत द्रौपदीच्या महाप्रतापी पुत्रांवर हल्ला केला आणि अनेक बांकदार पेऱ्यांचे बाण सोडून त्यांस विभिलें. तेव्हां द्रौपदीचे पांच पुत्र व कृपाचार्य ह्यांचें जें युद्ध झालें, तें पाहून, जणू पांच

व देही (प्राणी) ह्यांचेंच युद्ध चाललें आहे असा भास झाला! राजा, ह्याप्रमाणें कृपाचार्य व द्रौपदीपुत्र ह्यांचा भयंकर व अनिवार संग्राम झपाट्याने चालतां चालतां, अखेरीस, अज्ञान प्राणी ज्याप्रमाणें इंद्रियांकडून जर्जर होत्साता अतिदीन होतो, त्याप्रमाणें तो कृपाचार्य द्रौपदीपुत्रांच्या शरप्रहारांनीं जर्जर होऊन अतिदीन झाला; परंतु तशांतही त्याने पुनः द्रौपदीपुत्रांवर चढ केली व तो रणांगणांत त्यांशीं लढूं लागला! राजा, अशा प्रकारचें विचित्र युद्ध कृपाचार्य व द्रौपदीपुत्र ह्यांमध्ये झालें; आणि इंद्रियें जशीं पुनःपुनः उसळ्या मारून प्राण्यास पीडा देतात, तसे ते द्रौपदीचे पुत्र त्या कृपाचार्यास पीडा देऊं लागले; आणि विचारी प्राणी मनोनिग्रह करून इंद्रियांना आवारितो, तद्वत् तो कृपाचार्य त्या द्रौपदीमुतांना आवरूं लागला! राजा, तेव्हां दोन्ही मध्यें फारच निकरानें लढूं लागलीं! पायदळांनीं पायदळांशीं घोर युद्ध आरंभिलें; हत्तींनीं हत्तींवर हल्ले केले; घोडे घोड्यांवर तुटून पडले; आणि ग्न्याग्ण्यांचें निकरानें युद्ध सुरू झालें! त्या समयीं दोन्ही दळांत पुनः भयंकर व दारुण संग्राम चालू झाला, तेव्हां ते महापराक्रमी कुरुपांडववीर रणांगणांत एकमेकांना गांठून युद्ध करीत अमतां त्यांचें जें युद्ध चाललें होतें, तें पाहून केव्हां केव्हां मोठें आश्चर्य वाटे, केव्हां केव्हां भीति उत्पन्न होई, आणि केव्हां केव्हां तर धार्मिकीनें अगदीं ज्ञातीच फाटे! राजा, अशा रीतीनें घोर युद्ध चालतां चालतां त्यांत परस्परांनीं परस्परांना विद्ध केलें व ठार मारिलें! त्या वेळीं दोन्ही दळांत लगट होऊन घोर युद्ध झालें तेव्हां अश्रादिकांच्या पावलांनीं, रथांच्या चाकांनीं व हत्तींच्या श्वासोच्छ्वासांनीं अत्यंत धूळ उडाली आणि वाऱ्यानें ती आकाशभर पसरून मंत्र्याकालच्या अघ्राप्रमाणें सर्वत्र निविड

अंधःकार पडला व सूर्याची सर्व प्रभा लोपली. तेव्हां जिकडे तिकडे अतिशय काळोख झाल्यामुळे रणभूमि व तिच्यावर लढत असलेले शूर महारथ योद्धे दिमतनामे झाले; परंतु इतक्यांत असा चमत्कार झाला की, क्षणांत भृष्टावर वीरांच्या रुधिराचा सडा पडून सर्व धूळ खाली बसली आणि पुनः सर्व प्रदेश निर्मळ व स्वच्छ दिमू लागला! राजा, ह्याप्रमाणे ती भयंकर धूळ नाहीशी झाली तेव्हां मला फिरून महान् महान् वीरांचीं द्रव्हे मध्याह्न समयी आपआपल्या शक्त्यनुरूप व शौर्यानुरूप एकमेकांशीं दारुण युद्ध करीत आहेत असं आदळलें! त्या वेळीं जो भयंकर शस्त्रसंपात चालला होता, त्याच्या योगानें तें अतिशय तेज झळळत होतें; आणि अरण्यामध्ये कळकीच्या प्रचंड वेदाम आग लागली असतां जसा घोर शब्द चालू होतो, तसा तें शरप्रहारांनीं घोर शब्द चालला होता!

अध्याय तेविसावा.

—:०:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:— राजा, ह्याप्रमाणे कौरव-पांडवांचें अतिशय दारुण युद्ध चाललें असतां अश्वेरीस पांडवांनीं तुझ्या सेनेची दाणादाण उडविली. तेव्हां तुझ्या सेनेंतले महारथ पळून जाऊं लागले असतां तुझ्या पुत्रांनीं त्यांस मोठ्या प्रयत्नानें मागे परतविले आणि मग त्यांनीं पुनः पांडवांच्या सैन्यांशीं युद्ध आरंभिलें. राजा, ते सर्व त्वत्पक्षीय योद्धे तुझ्या पुत्राचे हेतु सिद्धीस नेण्यासाठीं अगदीं उत्सुक असल्यामुळे पुनः रणांगणांत एकाएकीं परतून आल्यानंतर त्यांचें पांडवसेनेशीं इतकें दारुण युद्ध झालें कीं, तें पाहून देवदानवांचेंच युद्ध चाललें आहे असा भास झाला! त्या वेळीं

तुझ्या सैन्यांतला किंवा शत्रूच्या सैन्यांतला कोणीही वीर युद्धापासून पराङ्मुख झाला नाही. त्या समयी उभय दळांमध्ये इतका विलक्षण रणसंमर्द मातला कीं, ते वीर एकमेकांशीं अनुमानानें व नावें घेऊन लढत होते! तेव्हां परस्परांनीं परस्परांचा महान् संहार केला आणि त्यांमध्ये अगदीं घनघोर संग्राम चालू झाला. राजा, त्या समयी युधिष्ठिर राजा अत्यंत चवताळला व रणांगणांत भूपालांसहवर्तमान धार्तराष्ट्रांना जिकण्याकरितां कौरवांवर शरवर्षाव करूं लागला! त्या वेळीं त्यानें सहाणेवर धार लावून जलाळ केलेले तीन सुवर्णपुंख बाण शारद्वतावर मोडिले आणि चार नाराच बाण टाकून त्यानें कृतवर्म्यांचे चारही घोडे यमसदनीं पाठविले असतां, अश्वत्याम्यानें त्या विजयशाली हार्दिक्याला आपल्या रथांत घेऊन रणांगणांतून एकीकडे नेलें! नंतर शारद्वतानें युधिष्ठिरावर आठ बाण सोडून त्यास सिद्ध केले आणि तितक्यांत दुर्योधन राजानें सातशें रथ युधिष्ठिरावर पाठविले! राजा, त्या समयी दुर्योधनाचे ते सातशें रथ मन किंवा मारुत ह्यांच्या वेगांनं हां हां म्हणतां रथ्यांसहवर्तमान युधिष्ठिराच्या रथावर तुटून पडले; आणि त्यांनीं चोहोंकडून त्याला गराडा घालून त्याजवर बाणांचा घोर भडिमार आरंभिला; व मेघ ज्याप्रमाणें दिवाकराला अदृश्य करितात त्याप्रमाणें त्यांनीं युधिष्ठिराला अदृश्य केले! राजा, तें पाहून शिखंडिप्रमुख पांडवीय योद्ध्यांना मनस्वी क्रोध चढला; आणि ज्यांना अत्यंत वेगवान् अश्व जोडिले होते व ज्यांवर लहान लहान घंटांच्या माळा टांगल्या होत्या अशा रथांतून मोठ्या त्वेषानें ते युधिष्ठिराच्या मदतीकरितां त्या स्थळीं तत्काळ प्राप्त झाले. राजा, नंतर मोठा भयंकर संग्राम प्रवर्तला आणि त्यांत रुधिराच्या नद्या चालू होऊन यमराष्ट्राची भरती झाली! राजा,

त्या समयीं पांडवांनीं आपल्यावर चालून आलेले सातशे कौरवीय रथ ठार केले आणि पुनः कौरवसेनेला पेंचांत घातले. त्या वेळीं तुझ्या पुत्राचें व पांडवाचें फारच घोर युद्ध झालें ! तशा प्रकारचें दारुण युद्ध मीं कधीं पाहिलें नाहीं व ऐकिलेंही नाहीं ! तेव्हां रणांगणांत जिकडे तिकडे अमर्याद संग्राम होऊं लागला. दोन्ही दळांत एकसारखे वीरपुरुष धारातीर्थीं पडूं लागले, चोहोंकडे योद्ध्यांनीं महान् शंखनाद आरंभिला, धनुर्धरांनीं सिंहासारखी गर्जना चालविली, उभय पक्षांच्या योद्ध्यांनीं एकमेकांचीं मर्मस्थळे छेदण्यास प्रारंभ केला. ते जयाच्या आशेनें एकमेकांवर उड्या घालूं लागले, सर्वत्र भयंकर संहार घडूं लागून पृथ्वीवर महान् अनर्थ गुदरला; आणि अनंत वीरांगनांवर वैधव्य भोगण्याचा प्रसंग आला ! राजा, ह्याप्रमाणें घनघोर संग्राम चालला असतां तशांत आणखी अनर्थसूचक भयंकर उत्पात होऊं लागले ! तेव्हां पर्वत व अरण्ये ह्यांसह-वर्तमान सर्व पृथ्वी कडकड शब्द करीत थरथर कांपूं लागली; अंतरिक्षांतून रविमंडलाच्या स्पर्श करून भूतलावर चोहोंकडे जळत्या कोलितांप्रमाणें उल्कांचा वर्षाव होऊं लागला, जिकडे तिकडे तुफान वारे वाहूं लागले, व त्यांनीं भूतलावरील धूळ अंतरिक्षभर उधळून देऊन दशविंशति धुंद केल्या; आणि हत्तींच्या नेत्रांतून अश्रु गळूं लागले व त्यांच्या देहांना कापें भरलें ! राजा, इतके घोर उत्पात झाल्यावर तरी क्षत्रियांनीं दूरवर दृष्टि देऊन युद्ध थांबवावयाचें होतें, पण त्यांनीं तमें केलें नाहीं; आणि पुनः मसलत करून ते त्या उत्पातांची पर्वा न करितां त्या पुण्यकारक रमणीय कुरूक्षेत्रामध्ये स्वर्गप्राप्तीच्या इच्छेनें युद्धाला तोंड देऊन उभे राहिले ! नंतर, राजा, गांधार-राजाचा पुत्र शकुनि हा कौरवांकडील वीरांना

म्हणाला, 'वीरहो, तुम्ही विनीवर युद्ध करा; मी पिछाडीस राहून पांडवांना वधितों !'

राजा धृतराष्ट्रा, त्या समयीं आपल्या पक्षाचे जे वीर युद्धासाठीं पुनः रणांगणांत प्राप्त झाले होते. त्यांपैकी पराक्रमी मद्रदेशीय वीरांना व दुसऱ्या वीरांना अतिशय वीरश्री चढली आणि ते एकसारखे गर्जू लागले ! तेव्हां अजिंक्य पांडव पुनः आम्हांवर तुटून पडले आणि त्यांनीं प्रत्यंचांचें आस्फालन करून एकसारखा आम्हांवर बाणांचा अचूक भडिमार चालविला ! तेव्हां पांडवांच्या वीरांनीं मद्रराजाचें सैन्य वधिलें आणि ते पाहून कौरवसैन्य पुनः युद्धापामून पराङ्मुख झालें ! राजा, त्या वेळीं बलाढ्य गांधारराज फिरून कौरवसैन्यास म्हणाला, 'वीरहो, युद्धाला सिद्ध व्हा. मागे फिरा; असे अगदीं मूर्ख कसे झालों ! युद्धांतून पळून गेल्यानें काय होणार आहे !' राजा धृतराष्ट्रा, गांधारराजाचें अश्र्वसैन्य दहा हजार असून त्या सर्व वीरांपाशीं जलाल प्राप्त होत. कौरवांच्या सेनेत जेव्हां महान् मंहार होऊं लागला, तेव्हां त्या अश्र्वसैन्यासहवर्तमान गांधारराजांनै पृष्ठभागाकडून पांडवसैन्यावर चाल करून जलाल बाणांचा भडिमार आरंभिला; आणि वाग जमा अश्र्वांची दाणादाण उडवितो, तशीं त्यांनीं पांडवांच्या प्रचंड सेनेची दाणादाण उडविली ! नंतर, राजा, आपल्या सेनेची वानाहत झाली असें पाहून धर्मराज युधिष्ठिरानें तत्काळ महाबलवान् सहदेवाला आज्ञा केली कीं, 'सहदेवा, हा दुष्ट कथंचधारी सुबलपुत्र शकुनि पृष्ठभागीं आपल्या सेनेचा संहार करीत आहे पहा ! ह्यासाठीं द्रौपदीपुत्रांसह तूं त्याजवर चाल करून जा व त्यास ठार मार ! इकडे पांचालांमह मी रथसेनेला जाळून टाकितों ! वा अनघा, सर्व कुंजर, घोडेस्वार व तीन हजार पायदळ इतकी

सेना बरोबर घे; आणि त्या सर्वासह तू शकुनी-
वर हल्ला करून त्यास ठार मार !'

धृतराष्ट्रा, नंतर वर आरूढ असलेल्या
धनुर्धरांसह सातशे हत्ती, त्याप्रमाणेच पांच
हजार घोडेस्वार, तीन हजार पायदळ व
द्रौपदीचे पुत्र, इतकी सेना बरोबर घेऊन महा-
विक्रमशाली सहदेव युद्धधुरंधर शकुनीवर
चालून गेला ! तेव्हां जयाच्या आशेने प्रतापी
सौबलाने वृष्टभागाकडून पांडवांवर मोठ्या निक-
राचा हल्ला केला असतां मोठे भयंकर युद्ध
सुरू झाले. राजा. त्या वेळीं पराक्रमी पांडवांचे
घोडेस्वार फारच चवताळले आणि त्यांनीं
कोरवांच्या रथसेनेची फळी फोडून तीत प्रवेश
केला. इतक्यांत त्या स्थळीं पांडवांचे गजसैन्यही
धावून आले आणि मग पांडवांचे ते घोडेस्वार
गजसैन्याच्या मध्यभागी उभे राहून सौबलाच्या
त्या प्रचंड सेनेवर चौहोंकडून एकसारखा
बाणवर्षाव करू लागले ! राजा, तुझ्या दुष्ट
मसलतीमुळे उत्पन्न झालेले हे युद्ध नंतर
फारच चेतले ! त्या समयीं महान् महान् योद्धे
मात्र गदा, प्राप्त इत्यादि आयुधानी युद्ध करीत
होते ! तेव्हां प्रत्येकाचा दणत्कार अगदी बंद
पडला होता; कारण रथी हे केवळ युद्धचमत्कार
पहात उभे राहिले होते. त्या समयीं दोन्ही
दळे अगदी एकसारखा प्रताप गाजवीत होती !
आपले सैन्य किंवा शत्रूंचे सैन्य अधिक
पराक्रमी आहे असे कांहीं दिसत नव्हते ! शूर
वीर बाहुबळाने ज्या शक्ति फेकीत होते. त्या
पाहून जणू काय अंतरिक्षांतून उल्काच खाली
पडत आहेत असे दोन्ही सैन्यांना वाटे ! त्या
वेळीं लखलखणाऱ्या ऋष्टि सैनिकांवर पडत
असतां त्यांच्या योगें सर्व आकाश व्याप्त होऊन
अतिशय शोभा दिसत होती ! तेव्हां दोन्ही
सैन्ये परस्परांवर प्रामांचा भडिमार करू लागली
असतां जणू काय अंतरिक्षांत टोळघाडच

आली आहे असे दिसत होते ! त्या समयीं
घोडेस्वार अगदी जखमी झाले होते, तरी
देखील त्यांनीं शत्रूंकडील घोड्यांना जखमी
करून त्यांच्या शरीरांतून रक्ताचे पाट वाहवून
शतावधि व सहस्रावधि घोड्यांना ठार मार-
ण्याचा सपाटा चालविला होता ! त्या वेळीं
कित्येक घोडे एकमेकांना गांठून ठार करीत
होते व कित्येक घोडे घायाळ होऊन रक्त
ओकतांना आदळत होते ! नंतर मनस्वी धूळ
उडून सर्व सैन्य धुळीने व्याप्त झाले तेव्हां
फारच अंधार पडला ! मग ते शत्रुसंहारक वीर
व घोडेस्वार तेथून निघून जाऊ लागले व
कित्येक अतिशय रक्त ओक्रीत भूतलावर पडले
असे मी पाहिले ! राजा, त्या वेळीं एकमेकांच्या
शेंड्या धरून कित्येक योद्धे झगडू लागले
असतां त्यांना अगदी हालचालही करितां येत
नव्हती ! कित्येक बलाढ्य वीर एकमेकांना
घोड्यांच्या पाठीवरून ओढून मल्लयुद्ध करू
लागले आणि अखेरीस त्यांत त्यांनीं एकमेकांना
ठार मारिले ! त्या वेळीं बहुत वीर घोड्यांवरच
गतप्राण झाले असतां त्यांच्यामुद्दामें ते घोडे
रणांगणांतून निघून गेले ! आणि दुसरे अनेक
शूर व अभिमानी वीर विजयप्राप्तीच्या इच्छेनें
लढत असतां रणांगणांत चौहोंकडे मरून पडत
आहेत असे आदळू लागले ! राजा, त्या समयीं
रणभूमीवर शतावधि व सहस्रावधि योद्धे पडले
असून त्यांच्या शरीरांतून रक्ताचे पाट वहात
होते व त्यांचे भुज तुटले असून त्यांच्या मस्तकां-
वरील केशकलाप विदीर्ण झाले होते ! त्या
वेळीं वसुधातलावर हत्ती, घोडे व घोडेस्वार
ह्यांचा संहार उडून सवैत्र प्रेतांचे दीग पडल्या-
मुळे त्यांतून दूरवर घोडा चालण्यालाही
मार्ग राहिला नव्हता ! त्या समयीं रणांगणांत
पडलेल्या त्या योद्ध्यांच्या अंगांतलीं चिलखते
रक्तानें माखलीं असून त्यांची आयुधे हातां-

तल्या हातांतच होती आणि नानाविध घोर शस्त्रास्त्रांनी परस्परांस ठार मारण्यास उद्युक्त होऊन रणांगणांत लगट करून लढत असतां ते बहुतेक वीर धारातीर्थी पतन पावले होते! राजा, नंतर कांहीं थोडा वेळपर्यंत सौबल शकुनीने युद्ध केले आणि मग तो उरलेल्या सहा हजार घोडेस्वारांसह रणांगणांतून निघून गेला; ते पाहून, रक्तांत न्हालेले पांडवांचे सैन्यही वाहनें थकून गेल्यामुळे उरलेल्या सहा हजार घोड्यांसह रणांतून निवृत्त झाले! राजा, त्या समयी त्या रणांत जिवावर उदार होऊन लढण्यास सिद्ध झालेले व रुधिराने न्हालेले असे ते पांडवांकडील घोडेस्वार म्हणाले की, 'अहो, ह्या स्थळी रथांनी देखील युद्ध करणे अशक्य झाले आहे, मग कुंजरांनी कसे युद्ध करितां येणार! ह्यासाठी आतां रथांनी रथांवर व कुंजरांनी कुंजरांवर हल्ला करावा! सांप्रत शकुनि आपले सैन्य घेऊन रणांतून निघून गेला आहे; तो आतां पुनः युद्धाला येणार नाही!'

धृतराष्ट्रा, नंतर द्रौपदीचे पुत्र व त्यांच्यासमवेत असलेले ते मदोन्मत्त प्रचंड हत्ती जेथे पांचाल्य महारथ धृष्टद्युम्न हा होता तेथे गेले; आणि सहदेवही, जिकडे तिकडे धुळीचे लोट उठले असतां, ज्या ठिकाणी एकटा धर्मराज होता त्या ठिकाणी गेला! पण, राजा, ह्या प्रमाणे ते द्रौपदीचे पुत्र व सहदेवादिक इतर योद्धे तेथून निघून जातांच सौबल शकुनि पुनः मार्गे वळला; आणि त्याने मोठ्या संतापाने धृष्टद्युम्नाच्या सेनेवर पाठीमागच्या बाजूने हल्ला करून तिचा संहार आरंभिला! राजा, त्या समयी फिरून दोन्ही दळांमध्ये भयंकर संग्राम चालू झाला आणि तुझ्या पक्षाचे व पांडवांचे वीर परस्परांना ठार मारण्याची हाव धरून जिवाची पर्वा न करतां मोठ्या आवे-

शाने लढू लागले! तेव्हां त्या भयंकर रणसंमर्दीत उभय सैन्यांतल्या योद्ध्यांनी प्रथम एकमेकांकडे टोकारून पाहिले आणि मग शतावधि व सहस्रावधि वीर एकमेकांवर धावून जाऊन तुटून पडले! राजा, मग ते खड्गांनी एकमेकांचीं मस्तकें तोडू लागले असतां—ताडाचे वृक्ष भूतलावर कोसळतांना जसा शब्द होतो तसा—भयंकर शब्द होऊं लागला! त्याप्रमाणेच त्या वेळीं छिन्नभिन्न झालेली तीं वीरांचीं आयुधांसहवर्तमान धडे, बाहु व मांड्या हीं घडाघड भूतलावर कोसळू लागलीं, तेव्हां देखील अतिशय भयंकर ध्वनी उद्भवला व त्याच्या योगें अंगावर कांठा उभा राहिला! त्या वेळीं रणांगणांत योद्ध्यांनीं त्राप, पुत्र व भ्राते ह्यांजवर जलाल शस्त्रांचा मारा चालविला, आणि आमिषाकरितां पक्षी जसे एकमेकांवर तुटून पडतात, तसे ते एकमेकांवर तुटून पडले. राजा, त्या वेळीं अतिशय क्षुब्ध होऊन सहस्रावधि कुरुपांडववीरांनीं परस्परांना गांठिले; आणि जो तो 'मी आधीं! मी आधीं!' असे म्हणून शत्रूवर शस्त्रप्रहार करू लागला! राजा, तेव्हां रणांगणांत इतके घोडेस्वार आसनांवरून मरून पडले कीं, त्यांच्या खालीं शेंकडां व हजारों दुमरे वीर सांपडून चेंगरून मेले! त्या घोर संग्रामांत शस्त्रप्रहारांनीं विद्ध झालेले वेगशाली अश्व मोठमोठ्याने विंकाळत होते आणि कवचधारी वीर गर्जत होते व तशांत आणवी तुझ्या दुष्ट मल्ल्यामुळे ते योद्धे परस्परांच्या मर्मस्थळाना भेदीत असतां शक्ति, ऋष्टि व प्राम ह्यांचा दारुण ध्वनि चालला होता! राजा, अशा प्रकारें दोन्ही दळांत युद्धप्रसंग चालतां चालतां अखेरीस तुझ्या सैन्यांतले ते क्षुब्ध वीर दमले, त्यांचीं वाहनें थकून गेलीं, त्यांना अतिशय तहान लागली, शस्त्रप्रहारांनीं ते चायाळ झाले आणि शेवटीं युद्धां-

तून मार्गे वळले ! राजा. त्या वेळीं रुधिराच्या गंधीनें बहुत वीरांना उन्माद चढला, त्यांचें देहभान नष्ट झालें, व जे जे म्हणून त्यांच्या समीप प्राप्त झाले त्या सर्वांना—ते मग शत्रु असोत कीं मित असोत—त्यांनीं ठार मारिलें ! राजा, तेव्हां जयाच्या आशेनें युद्ध करणारे बहुत क्षत्रिय शरवृष्टीनें नवशिशूंना व्यास होत्माने धरणीवर मरून पडले ! राजा, त्या वेळीं तुझ्या पुत्राच्या डोळ्यांदेवत तुझे प्रचंड सैन्य धारातीर्थीं पडून मोठा घोर अनर्थ झाला आणि लांडगे, कोल्हे व गिधाटे ह्यांची पोळी पिकली ! राजा, त्या समर्थी नर व अश्व ह्यांच्या शरीरांनीं सर्व मही आच्छादित झाली आणि सर्वत्र रुधिराचे प्रवाह सुरू होऊन भिच्या लोकांचें भ्रातें दणाणून गेलें ! राजा, मग फारच घोर रणसंमर्द झाला ! खड्ग, पट्टिश व शूल ह्यांनीं दोन्ही दळांतले योद्धे पुनःपुनः एकमेकांवर मारा करूं लागले आणि मग कोणीही एकमेकांच्या जवळ येईनासे झाले ! राजा, मग त्यांनीं फिरून आपल्या अंगीं जेवढी शक्ति होती तेवढी सगळी खर्च करून मरेपर्यंत शत्रूवर भयंकर मारा आरंभिला; आणि अखेरीस रक्त ओक्रीत ते रणांगणांत पतन पावले ! राजा, तेव्हां रणांगणांत वीरांचीं बहुत धडे एका हातांत केशकलापांनीं युक्त असें मस्तक व दुसऱ्या हातांत रुधिरानें माखलेलें तीक्ष्ण खड्ग घेऊन उठलेलीं दिसूं लागलीं, आणि शिवाय जिकडे तिकडे रुधिराचा दर्प सुरू झाला; त्यामुळे त्या समर्थी जे योद्धे रणांगणांत लढत होते ते सर्व भ्रांत होऊन मूर्च्छित पडले ! ह्याप्रमाणें समरांगणांतली गजबज शांत होतांच, पांडवांच्या त्या महासेनेवर सौबलानें आपल्या शिल्क राहिलेल्या थोड्याशा घोडेस्वारांनिशीं हल्ला केला; परंतु ते पाहून तत्काळ विजयप्राप्तीच्या इच्छेनें पांडवांकडील हत्ती, घोडे व पायदळ हे

शस्त्राखांसह त्या कुरुवीरावर धावून आले आणि एकदांचें शकुनीला ठार मारून तें युद्ध शेवटास न्यावें अशा हेतूनें त्या सर्व पांडवीय वीरांनीं त्याला चोहोंकडून गराडा घालून कोंडिलें व त्याजवर नानाविध आयुधांचा भडिमार चालविला ! राजा, ह्या प्रकारें तुझ्या सैनिकांना पांडवांनीं चोहोंकडून घेरिले तेव्हां तुझे चतुरंग सैन्य एकदम पांडवांवर चाल करून गेले. त्या वेळीं पायदळांतल्या कित्येक शूर वीरांनीं आपलीं आयुधें नष्ट झाल्यावर केवळ मुर्धनीं व पायांनींच समरांगणांत शत्रूंना ठार मारिलें व अखेरीस ते स्वतः पडले ! तेव्हां जें घोर समर मातलें, त्यांत, क्षीणपुण्य झालेले सिद्ध जसे विमानांतून खालीं पडतात, तसे रथी रथांतून व गजवीर गजांवरून खालीं पडले ! तेव्हां दोन्ही दळे एकमेकांचा भयंकर संहार करीत असतां त्यांत त्यांनीं बाप, पुत्र, मित्र व भ्राते ह्या सर्वांचा वध आरंभिला आणि प्राप्त, खड्ग, बाण इत्यादिकांच्या प्रहारांनीं दारुण संग्राम चालू होऊन अमर्याद युद्ध मातलें !

अध्याय चोविसावा.

—:—

अर्जुनाचा पराक्रम.

संजय सांगतो:—राजा, अखेरीस पांडवांनीं कौरवसैन्याचा विश्वस उडविला आणि युद्ध-भूमीवर जो कलकलट चालला होता तो सर्व शमला ! तेव्हां पुनः सौबल हा आपल्यापाशीं अवाशिष्ट राहिलेल्या सातशें अश्वसह रणांगणांत आला; आणि पुनःपुनः आपल्या सैनिकांजवळ त्वरेनें जाऊन त्यांस म्हणाला कीं, ' शत्रुनाशक वीरहो, वीरश्रीनें युद्ध करा. ' नंतर सौबल शकुनीनें ' महारथ दुर्योधन राजा कोठें आहे ? ' म्हणून तेथें असलेल्या क्षत्रियांस विचारिलें; तेव्हां शकुनीचें भाषण श्रवण करून

ते क्षत्रिय त्यास म्हणाले कीं, “ तो पहा महारथ कौरवाधिपति रणामध्ये उभा आहे; तें पहा त्याजवर पूर्णचंद्राप्रमाणें देदीप्यमान महान् छत्र विराजत आहे; ते पहा त्याच्या समीप अंगांत चिलखतें घालून रथी युद्धार्थ सिद्ध आहेत; आणि हा पहा तेथून जणू काय दुमरी भेष-गर्जनाच असा प्रचंड वीरघोष कानी पडत आहे! गांधारराज शकुने, तूं त्वरित त्या स्थळीं जा म्हणजे तेथें तुला तो कौरवेश्वर भेटेल.” राजा, ते शूर क्षत्रिय ह्याप्रमाणें म्हणाले तेव्हां सौबल शकुनि हा समरांगणांतून पराङ्मुख न होणाऱ्या कौरववीरांसहवर्तमान ज्या स्थळीं तुझा पुत्र होता त्या स्थळीं गेला आणि तेथें रथसेनेसह युद्धास सिद्ध असलेल्या दुर्योधनाला भेटला. राजा, शकुनि त्या ठिकाणीं जातांच तुझ्या सर्व रथ्यांना व इतर योद्ध्यांना हर्ष झाला आणि मग शकुनीनें जणू काय आपल्याला कृतार्थ मानून मोठ्या उल्हासानें दुर्योधन राजाला म्हटलें, “ राजा, मीं सर्व घोडेस्वार जिकले आहेत; आतां तूं रथसेना ठार मार म्हणजे झालें! रणांगणांत जिवावर उदार झाल्याशिवाय युधिष्ठिराला जिकणें शक्य नाही! राजा, ती पांडुपुत्रानें रक्षिलेली सेना वधिली म्हणजे आपण हे हत्ती, पायदळ व इतर सर्व सैन्य ह्यांम तेव्हांच ठार मारूं ! ”

राजा, ह्याप्रमाणें शकुनीचें भाषण श्रवण करून जयाच्या इच्छेनें क्षुब्ध झालेले सर्व कौरववीर मोठ्या वीरश्रीनें व वेगानें धनुष्यें, बाण व तूणीर ह्यांसह पांडवांच्या सैन्यावर तुटून पडले आणि त्यांनीं धनुष्यांचें आस्फालन करून मोठी सिंहगर्जना आरंभिली! राजा, मग पुनः प्रत्यंचांचा टणत्कार व बाणवृष्टीचा सणसणाट सुरू झाला आणि ते सर्व धनुर्धारी कौरव अगदीं पांडवसेनेच्या सन्निध मोठ्या वेगानें प्राप्त झाले; तेव्हां कुंतीपुत्र धनंजय हा

देवकीपुत्राला म्हणाला, “ हे कृष्णा, मोठ्या शौर्यानें शत्रूवर रथ सोड आणि ह्या कौरवांच्या सेनासमुद्रांत प्रविष्ट हो. आज मी जलाल बाणांचा भडिमार करून शत्रूंचा अंत करून टाकितों. हे जनार्दना, हें घोर युद्ध सुरू होऊन आज अठरा दिवस दोन्ही दळें परस्परांस गांठून परस्परांस वधीत आहेत! ह्या युद्धांत जे महात्मे युद्धाला सिद्ध झाले त्यांची केवळ अगणित सेना धारातीर्थी पतन पावली! तेव्हां देवघटना कशी आहे ती पहा! माधवा, युद्धांत दुर्योधनापार्शी केवळ सागराप्रमणें अफाट सैन्य होतें; परंतु त्याची व आमची गांठ पडली तेव्हां केवळ गोप्पदाप्रमाणें त्याची अवस्था झाली! कृष्णा, भीष्म पडल्यावर जर दुर्योधनानें संधि केला असता, तर खचित उत्तम झालें असतें व हा घोर अनर्थ टळला असता! परंतु त्या महामूर्ख दुर्योधनाला हा मार्ग रुचला नाही व त्यानें पुढें युद्ध चालविलें! कृष्णा, भीष्मानें जें कांहीं सांगितलें तें निःसंशय हिताचें व योग्य होतें; आणि असें असतां दुर्योधनानें तसें केलें नाही, तेव्हां त्याची वृद्धि भ्रष्टच झाली, असेंच म्हटलें पाहिजे! अरे, भीष्म हा रणांत हत होऊन भूतलावर पडल्यानंतर दुर्योधनानें काय म्हणून हें युद्ध पुढें चालविलें, हें मला समजत नाही! जनार्दना, शंतनूचा पुत्र रणांत पतन पावल्यावर ज्या धार्तराष्ट्रांनीं आणखी पुढें युद्ध चालविलें ते खचित मूर्ख व मंदमतिच असें मी मानितों! बरें अमो; पुढें महाब्रह्म-वेत्ते द्रोणाचार्य रणांत पडले! नंतर राधेय कर्ण व विकर्ण ह्यांनीही तोच पंथ स्वीकारिला! तरीही अजून ही जीवहत्या चालूच रहावीना? अरे कर्णासारखे वीर हयात असतां युद्ध पुढें चालविलें, ह्यांत एक आशा हें तरी प्रधान कारण होतें; पण तो नरव्याघ्र कर्ण पुत्रांसह धारातीर्थी देह ठेऊन निवून गेला आणि सैन्यही

अमर्दी अल्प अवशिष्ट राहिलें, तरीही घोर क्षय पुढें चालवावा ह्यांत काय अर्थ! कृष्णा, शूर श्रुतायुष रणांत पडला, पुरुकुलोत्पन्न शूर जलसंधर्ही वधिला गेला, आणि श्रुतायुष राजाचीही तीच वाट लागली; तरी देखील आणखी संहार चालूच रहावा हें आहे तरी काय? जनार्दना, भूरिश्रवा, शल्य, शाल्व व आवन्त्य वीर, त्याप्रमाणेंच जयद्रथ, अलायुध राक्षस, बाल्हीक, सोमदत्त, शूर भगदत्त, कांबोज सुदक्षिण व दुःशासन हे सर्व प्रतापशाली योद्धे हत झाल्यावर आणखी पुढें युद्ध चालवावें व जनसंहार घडवून आणावा हें खचित आश्चर्य होय! जनार्दना, अनेक शूर व बलिष्ठ मांडलिक राजे रणांगणांत पतन पावल्यावर युद्ध थांबविणें हेंच अवश्य नव्हतें काय? भीमसेनानें युद्धांत अक्षाहिणी सेना वधिल्यावर दुर्योधनानें युद्ध संपविलें नाहीं, ह्यावरून एक तर त्याची बुद्धि भ्रष्ट झाली असावी, किंवा त्यास भलतीच हाव सुटली असावी, असें मला वाटतें! कारण, दुर्योधनावांचून दुसरा कोणता बरें कुलवान् आणि तशांतही विशेषेकरून कुरुकुलोत्पन्न भूपती निरर्थक असलें मोठें वैर करील? कृष्णा, सुज्ञ पुरुष नेहमीं हिताहिताविषयीं विचार करितो; ह्यास्तव कोणीही विचारी पुरुष आपल्यापेक्षां बलानें, शौर्यानें व गुणांनीं अधिक अशा शत्रूंबरोबर युद्ध करणार नाहीं! कृष्णा, तूं स्वतः दुर्योधनाकडे जाऊन पांडवांबरोबर संधि करण्याविषयीं त्याजवळ शिष्टाई केलीस आणि असें असतां तुझ्या हितोपदेशाचा त्यानें अनादर केला, तेव्हां दुसऱ्या कोणाची सहा त्यानें ऐकिली असती असें मला वाटत नाहीं! अरे, शांतवनासारखा योद्धा, द्रोणासारखा गुरु व विदुरासारखा ज्ञानी साम कर म्हणून सांगत असतां ज्यानें त्या सर्वांना जुमानिलें नाहीं,

त्याला शुद्धीवर आणण्याला आणखी कोणता उपाय होता? कृष्णा, मूर्ख दुर्योधनानें वृद्ध पित्याची किंवा काकुळतीनें हितकारक भाषण करणाऱ्या मातेची देखील पर्वा केली नाहीं, आणि त्यांचा अनादर करून आह्मांशीं हा घोर कलह आरंभिला, तेव्हां त्याला कोणाचें भाषण रुचलें असतें? असो; जनार्दना, माझा तर असा समज आहे कीं, हा खचित कुलाचा अंत करण्यासाठींच जन्मला आहे ह्यांत संदेह नाहीं! ह्याचें वर्तन व ह्याची मसलत परिणामी हेंच घडवून आणतील! हा खचित आह्मांला राज्य देणार नाहीं असा माझा समज आहे! हे मानदा कृष्णा, महात्म्या विदुरानें मला अनेक वेळां सांगितलें आहे कीं, 'अर्जुना, जिवंत आहे तोंपर्यंत दुर्योधन तुह्यांस राज्यभाग देणार नाहीं; जोंवर त्याच्या कुडींत प्राण आहे तोंवर तो तुह्यां सत्पुरुषांना दुष्कृत्यें करून गांजील; आणि त्याला जिंकण्याला युद्धाशिवाय दुसरा मार्ग नाहीं!' कृष्णा, ह्याप्रमाणें अमोघदृष्टि विदुर मला नेहमीं जें कांहीं सांगत असे, तें सर्व आज माझ्या पूर्ण प्रत्ययास आलें; त्या दुरात्म्याचीं सर्व कृत्यें आज माझ्यापुढें मूर्तिमंत उभी आहेत! कृष्णा, ज्या मूर्खानें जामदग्न्याच्या यथार्थ व हितकारक भाषणाचा धिक्कार केला, तो खचित मृत्यूच्या मुखांतच उभा राहिला ह्यांत संदेह नाहीं! कृष्णा, दुर्योधनाचा जन्म होतांच अनेक सिद्ध पुरुषांनीं भविष्य ठरविले कीं, ह्या दुरात्म्याच्या योगानें सर्व क्षत्रियसंघ नष्ट होईल! जनार्दना, प्रस्तुत त्या सिद्ध पुरुषांचें भाषण सत्य होत आहे ह्यांत संशय नाहीं. कारण, दुर्योधनाच्या कृतीमुळें आधींच बहुत राजे मृत्युमुखी पडले आहेत! ह्यासाठीं माधवा, मी आज रणांगणांत कौरवांकडील सर्व योद्ध्यांना ठार मारितों म्हणजे सर्व क्षत्रिय

नष्ट होऊन सर्व शिविर शून्य झाल्यावर दुर्योधन हा स्वतः आपल्या नाशाकरितां आम्हां-बरोबर लढण्यास उद्युक्त होईल; आणि मग आर्क्षी त्याचा वध केला म्हणजे सर्व कलह संपेल असें मी तर्कोनें, स्वतःच्या बुद्धीनें, विदुराच्या भाषणानें व त्या दुष्ट दुरात्म्याच्या कृतीनें अनुमान बांधितों ! म्हणून, बा वीरा यदुपुंगवा, शत्रूवर रथ घेऊन चल, म्हणजे हा पहा मी रणांगणांत दुर्योधनावर व त्याच्या सेनेवर जलाल बाणांचा भडिमार चालवितों ! कृष्णा, आज दुर्योधनाच्या डोळ्यांदेखत त्याचें सर्व दुर्बल सैन्य मी वधीन व धर्मराजाचे मनोरथ सिद्धीस नेईन ! ”

संजय सांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणें अर्जुनाचें भाषण श्रवण करून दाशार्ह कृष्णानें चावूक हालवून अध्याना इषारा केला आणि मोठ्या धैर्यानें व शौर्यानें आपला तो रथ शत्रूच्या महान् सेनेत घुमविला ! राजा, कौरवांचें तें सैन्य म्हणजे केवळ महान् अरण्यच होतें ! भाले व खड्डगे हें त्या अरण्यांतलें तण होतें, नानाविध शक्ति हे त्यांतले कंटक होते, गदा व परिघ हे त्यांतले जणू मार्ग होते, रथ व हत्ती हे त्यांतले प्रचंड वृक्ष होते, आणि घोडे व पायदळ ह्या त्यांतल्या लता होत्या ! राजा, अशा प्रकारच्या कौरवसेनारूप अरण्यामध्ये महायशस्वी कृष्ण अतिशय पताका फडकत असलेला अमा तो रथ घेऊन संचार करीत असतां, रणांगणांत ज्यामध्ये अर्जुन हा विराजत होता अशा त्या रथाचे श्वेत अश्व कृष्णाच्या प्रेरणेप्रमाणें सर्व दिशांस दृग्मोचर होत होते ! राजा, अशा त्या दिव्य रथांतून ममरभूमीवर शत्रुसंहारक सव्यसाची अर्जुन शत्रूवर शरांचा पाऊस पाडीत परिभ्रमण करूं लागला, आणि बांकदार बाणांचा भयंकर मणमणाट मुरू होऊन सर्व अंतरिक्ष दणाणून

गेले ! राजा, तेव्हां समरांगणांत अर्जुनानें शत्रूवर बाणांची घोर वृष्टि करून त्यांस अगदीं झांकून काढिलें असतां ते बाण कौरवांकडील योद्ध्यांच्या चिलखतांत घुसून त्यांच्या अंगांतून बाहेर पडले व भूमीत शिरले ! राजा, गांडीव धनुष्यापासून सुटलेले ते बाण दणदणाट करणाऱ्या पक्ष्यांप्रमाणें रणांगणांत शत्रूंकडील घोडे, हत्ती व मनुष्ये ह्यांजवर पडले तेव्हां जणू काय त्यांजवर वज्रपातच झालासें वाटलें आणि सर्वत्र तिकडे तिकडे त्या बाणांनीं अंतरिक्ष व्याप्त होऊन निबिड अंधकार पसरला व दिशोपदिशांचें ज्ञान नष्ट झालें ! राजा, त्या वेळीं सर्व भूतल लोहारांनीं धार दिलेल्या व तेलपाणी करून पाजळलेल्या सुवर्णपुंव अशा पार्थनामांकित बाणांनीं अगदीं खचून भरलें; आणि त्या योगें कौरवांचे कुंजर तडफड करूं लागले तेव्हां ते जणू काय पार्थरूप पावकानें दग्ध होत आहेत असा भास झाला; आणि अखेरीस अर्जुनाच्या त्या जलाल शरांनीं ते पटापट मरूं लागले ! राजा, त्या समयीं तो धनुर्बाणधारी अर्जुन सूर्यासारखा तळपूं लागला; आणि अग्नि जमा तृणराशीला जाळितो, तसा त्यानें रणांगणांत कौरवांच्या सैन्याला जाळण्याचा मपाटा चालविला ! राजा, अरण्यामध्ये अरण्यवामी जनांनीं टाकिलेला अग्नि ज्याप्रमाणें वृक्षांनीं व वाळलेल्या लतापत्रांनीं गच्च भरलेल्या अरण्याम सों सों करीत मोठ्या जोरानें जाळून फस्त करितो, त्याप्रमाणें अर्जुनानें टाकिलेल्या त्या नाराचशररूप भयंकर अग्नीनें मोठ्या त्वेषानें तुड्या पुत्राच्या सर्व सेनेला जाळून फस्त केलें ! राजा, त्या वेळीं अर्जुनानें ते सुवर्णपुंव बाण इतक्या आवेशानें टाकिले कीं, कौरवांच्या सैनिकांच्या अंगांत चिलखतें होती तरी त्यांस न जुमानितां त्यांनीं न्याचे देह विदारण करून त्यांचे प्राण घेतले !

राजा, तेव्हां अर्जुनांनै नर, ह्य किंवा प्रचंड गज ह्यांजवर दुसरा म्हणून बाण टाकिला नाही; त्यांनै नानाविध आकारांचे बाण शत्रूवर सोडिले आणि एकेकट्या वीरावर एकेकच बाण टाकून, वज्रपाणि इंद्रांनै ज्याप्रमाणें दैत्यांना, त्याप्रमाणें महारथांच्या सर्व सैन्याला त्यांनै ठार मारिलें!

अध्याय पंचविंशत्वा.

—:०:—

संकुलयुद्ध.

संजय सांगतो:—धृतराष्ट्रा, संग्रामांत मारूं किंवा मरूं, पण पळून म्हणून जाणार नाही, असा संकल्प करून ते शूर कौरव पांडवांचा नाश करण्यासाठीं अतिशय प्रयत्न करीत असतां अखेरीस त्यांच्या डोळ्यांदेखत धनंजयानें गांडीव धनुष्याच्या योगें अशा प्रकारें त्यांचा संकल्प व्यर्थ घालविला! त्या समयीं, राजा, मेघ ज्याप्रमाणें पर्जन्याची वृष्टि करितो त्याप्रमाणें अर्जुन हा वज्रासारख्या कठोर, दुःसह व अत्यंत जलाल अशा बाणांची एकसारखी शत्रूवर वृष्टि करीत आहे असें दिसें लागलें; आणि अर्जुनाच्या शरप्रहारांनीं एकसारखा संहार होऊं लागला तेव्हां अखेरीस तें कौरवसैन्य तुझ्या पुत्राच्या समक्ष रणांगणांतून पळून गेलें! राजा, त्या वेळीं कित्येक कौरववीरांनीं बाप, बंधु व मित्र ह्यांना रणांत टाकून पळ काढिला, कित्येक रथांचे अश्व व सारथि मारले गेले, कित्येक रथांचीं चाक्रे, ईषा, कणे, जुवें भग्न झालीं, कित्येक योद्ध्यांच्या जवळचा बाणांचा पुरवठा संपला, कित्येक शरप्रहारांनीं घायाळ झाले, कित्येकांस कांहीं इजा वगैरे झाली नव्हती तरी त्यांस भीतीनें गांगरून सोडिल्यामुळें ते पळत सुटले, कित्येक आपल्या पुत्रांसह रणांगणांतून धावूं लागले, सर्व बंधु-वर्ग धारातीर्थी पडल्यामुळें कित्येक मोठ-

मोठ्यांनै आक्रोश करूं लागले आणि कित्येकांनीं आपल्या पित्यांना, कित्येकांनीं आपल्या मित्रांना, कित्येकांनीं आपल्या आसांना, कित्येकांनीं आपल्या भ्रात्यांना व कित्येकांनीं आपल्या सोयऱ्याधायऱ्यांना हाका मारण्याचा क्रम आरंभिला! तेव्हां जागोजाग कित्येक वीर आपल्या आससुहदांना सोडून पळून गेले! राजा, त्या समयीं बहुत महारथ बाणप्रहारांनीं घायाळ होतसाते केवळ श्वासोच्छ्वास मात्र करीत आहेत असें दिसलें; तेव्हां त्या मूर्च्छित महारथांना दुसऱ्या वीरांनीं आपल्या रथांत घेतलें आणि त्यांस लवकरच सावध करून त्यांनीं त्यांस थोडासा विसावा दिला व पाणी पाजिलें आणि नंतर ते सर्व पुनः युद्धास गेले! त्या वेळीं कित्येक युद्धधुरंधर कौरवयोद्ध्यांनीं तुझ्या पुत्राची आज्ञा श्रवण करून त्या घायाळ महारथांकडे पाहिलें मुद्धां नाही व ते त्यांस तसेच मरणोन्मुख अवस्थेंत टाकून देऊन पुनः युद्धासाठीं धावून गेले! कित्येकांनीं स्वतः उदकपान केलें आणि घोड्यांनाही पाणी पाजून त्यांस ताजेतवाने केल्यावर अंगांत चिलखतें चढविलीं व रणभूमीचा मार्ग धरिला! कित्येकांनीं शिबिरांत जाऊन आपल्या घायाळ भ्रात्यांची, पित्यांची व पुत्रांची नीट व्यवस्था करून त्यांस तेंथें ठेविलें आणि मग ते युद्धासाठीं पुनः रणभूमीवर परत आले! कित्येक वीरांनीं आपले रथ पुनः सज्ज केले आणि त्यांत कमीअधिक महत्त्वाच्या ज्या वस्तु पाहिजेत त्या सर्वांची तरतूद करून मग ते पुनः युद्ध करण्यासाठीं पांडवांच्या सेनेवर धावून गेले! राजा, त्या समयीं त्या शूर वीरांचे ते लहान लहान घंटांच्या माळांनीं झांकून गेलेले रथ समरभूमीवर दृग्गोचर झाले, तेव्हां जणू दैत्य व दानव हे त्रैलोक्य जिंकण्यासाठींच उद्युक्त झाले आहेत असें भासलें!

नंतर कौरवांकडील कित्येक रथी आपल्या सुवर्णभूषित रथांतून एकदम पांडवांच्या सैन्यावर तुटून पडले व त्यांनी धृष्टद्युम्नाशी युद्ध आरंभिले ! तेव्हां महारथ शिवंडी व नकुलपुत्र शतानीक हेही तत्काळ त्या कौरवांच्या रथसैन्याशी युद्ध करू लागले आणि मग मोठा घोर संग्राम मातला ! राजा, त्या समर्थी पांचाल्य धृष्टद्युन्न फारच क्षुब्ध झाला व प्रचंड सैन्यासह तुझ्या सैनिकांना ठार मारण्याकरिता त्यांजवर चालून गेला; तों तुझ्या पुत्रांनै त्याजवर एकसारखा बाणवर्षाव आरंभिला; आणि धार दिलेल्या व वेगवान अशा नाराच, अर्धनाराच व वत्सदंत बाणांनी त्यांनै त्यांचें वक्षस्थळ व भुजप्रदेश विंधून टाकिला; तेव्हां अंकुशांनी आर्त झालेल्या हत्तीप्रमाणें अतिशय क्षोभलेल्या त्या महाधनुर्धर पांचाल्य वीरानें बाणांचा भडिमार चालवून दुर्योधनाचे चारही अश्व यमसदनीं पाठविले आणि एक भल्ल बाण सोडून त्याच्या सारथ्यांचें मस्तक धडापामून वेगळें करून खाली पाडिलें ! राजा, नंतर तो रथहीन झालेला शत्रुसंहारक दुर्योधन राजा घोड्यावर बसला व आपलें सैन्य हतवर्थी झालेलें पाहून युद्धपराङ्मुख होतसाता जवळच मौबल शकुनि होता तिकडे निवृत्त गेला !

ह्याप्रमाणें कौरवांच्या रथसैन्याचा मोड झाला तेव्हां कौरवांच्या तीन हजार बलाढ्य हत्तींनी पांडवांच्या रथ्यांना वेढा दिला आणि त्यांत पांचही पांडव कोंडले गेले अमतां जणू काय ते पांच ग्रह मेघपटलांत अदृश्य झाले आहेत असें भासलें ! राजा, नंतर महाभुज अर्जुन हा श्वेताश्व व कृष्णमारथि अशा रथांतून शत्रूवर नेमके बाण मारीत चालू करून गेला ! तेव्हां त्याला कौरवांकडील पर्वतामारुच्या प्रचंड हत्तींनी चोहोंकडून घेरिलें. पण अर्जुनानें त्यांजवर लवळव्रीत जळाल अशा नाराच

बाणांचा भडिमार करून त्या महान् गजांचें एकेका बाणानें विदारण केलें असतां त्यांपैकी कांहीं रणांगणांत पडले व कांहीं पडत आहेत, असें आम्हीं पाहिलें ! इकडे, राजा, मदनोत्त कुंजराप्रमाणें बलाढ्य अशा भीमसेनानें कौरवांची ती गजसेना पाहून हातांत एक प्रचंड गदा घेतली; आणि तो त्वरेनें रथांतून उडी मारून भूतलावर उतरला व दंडधारी यमाप्रमाणें त्यांनै शत्रूसैन्याचा संहार आरंभिला ! राजा, पांडवांकडील तो महारथ भीमसेन हातांत गदा धारण करून भूमीवर उभा आहे असें पाहातांक्षणीच तुझ्या सैन्यांची धावीं दणाणलीं आणि त्यांनीं मलमूत्रविमर्जन आरंभिलें ! राजा, वृकोदर हा गदा उचलून युद्ध करू लागला असें पाहिल्याबरोबर तुझें सर्व सैन्य भयभीत झालें; आणि अवेरीस भीमसेनानें गदाप्रहारांनीं त्या हत्तींचीं गंडस्थळें भेदिलीं असतां रक्तांनै न्हालेले ते पर्वतोपम हत्ती सैरावेरा चोहोंकडे धावत सुटले असें आमच्या नजरेस आलें ! शेवटीं पळतां पळतां घायाळ झालेले कित्येक हत्ती आर्त स्वर काढीत छिन्नपक्ष पर्वतांप्रमाणें धरणीवर पडले व कित्येक पडण्याच्या रंगांत आले, आणि तें पाहून तुझे सैनिक अनिश्चय वाबरून गेले ! राजा, त्या समर्थी युधिष्ठिर व माद्रीपुत्र ह्यांमही अत्यंत क्रोध आला आणि त्यांनींही त्या गजसैन्यावर गृध्रपुत्र जलाल बाणांचा भडिमार चालवून तें यमसदनीं पाठविलें !

राजा धृतराष्ट्रा, इकडे धृष्टद्युम्न व दुर्योधन ह्यांचें युद्ध चालले होतें, त्यांत धृष्टद्युम्नानें दुर्योधनाचा पगभव केल्यावर दुर्योधन घोड्यावर बसून गणांतून पळून गेला व धृष्टद्युम्न हा आपल्या सैन्यासह पांडवांमिळण्याम निघाला. तों कौरवांच्या कुंजगंनीं सर्व पांडवांना अगदीं चोहोंकडून कोंडून टाकिलें

आहे असे त्याच्या दृष्टीस पडले ! तेव्हां तो त्या कुंजरांना ठार मारण्याकरितां एकदम त्यांजवर तुटून पडला. राजा, इकडे कौरवांच्या रथसेनेत शत्रूसंहारक दुर्योधन हा आढळला नाहीं तेव्हां अश्वत्थामा, कृपाचार्य व सात्वत कृतवर्मा ' हे दुर्योधन कोठें गेला ' म्हणून क्षत्रियांम विचारूं लागले ! राजा, त्या कुरुवीरांना जेव्हां दुर्योधन कोठें दिसेना, तेव्हां त्या घोर रणांत भयंकर जनक्षय चालू असतां त्यांत तो मारिला गेला असे त्या सर्व महारथांना वाटले ! राजा, त्या समयीं त्या तुड्या योद्ध्यांची मुद्रा अगदीं उतरली आणि ते दीनवदनानें ज्याम त्यास त्याजविषयीं विचारूं लागले ! तेव्हां त्यांस कित्येकांनीं सांगितलें कीं, ' दुर्योधन राजाचा सारथि रणांत पडल्यावर पांचालराज धृष्टद्युम्न ह्याच्या दुर्धर सैन्याशीं आणखी न लढतां निकडे सौबल शकुनि होता तिकडे तो निघून गेला ! राजा, त्या समयीं अत्यंत प्रायाळ झालेल्या कित्येक क्षत्रियांनीं त्या अश्वत्थामप्रभृति कुर्योद्ध्यांस सांगितलें कीं, ' अहो, तुम्हांस दुर्योधनाशीं काय कर्तव्य आहे ? जर तो जिवंत असेल तर तुम्हांस भेटेल ! तुम्ही सर्व एका जुटीनें शत्रूंची लढा; तुमचें राजा काय करणार आहे ! ' राजा, त्या वेळीं कित्येक क्षत्रियांचीं गात्रें बाणप्रहारांनीं अत्यंत भंग झालीं अमून त्यांचीं सर्व वाहनें वंगेरेही नष्ट झालीं होती, आणि तशांत त्यांजवर शत्रूंकडून बाणांचा वर्षाव होतच होता; ह्यास्तव त्यांना जेव्हां अश्वत्थामादिकांनीं विचारिलें, तेव्हां ते स्पष्ट वाणीनें म्हणाले कीं, ' अहो, ज्यांनीं आम्हांस वेढा दिला आहे त्या ह्या सर्व पांडवसैन्यांस आम्ही आधीं मारिलें पाहिजे; हे पहा सर्व पांडव गजसेनेचा वध करून आम्हांवर चालून येत आहेत ! ' राजा धृतराष्ट्रा, त्या कौरववीरांचें तें भाषण श्रवण करून महा-

बलवान् अश्वत्थाम्यानें पांचालराज धृष्टद्युम्नाच्या त्या दुर्धर सेनेची फळी फोडिली; आणि तो त्या रथसेनेशीं न लढतां, महाधनुर्धर व शूर अशा कृपाचार्य व कृतवर्मा ह्यांसहवर्तमान, जेथें सौबल होता तेथें निघून गेला ! राजा, ह्याप्रमाणें ते कौरवयोद्धे रणांगणांतून निघून गेल्यावर धृष्टद्युम्न आदिकरून पांडवांकडील वीरांनीं पुढें होऊन तुड्या सैन्याचा भयंकर संहार आरंभिला ! त्या वेळीं ते महारथ वीर मोठ्या वीरश्रीनें तुड्या सैनिकांशीं लढत असतां तुड्या सैनिकांनीं पराक्रमाची अगदीं पराकाष्ठा केली, आणि जिवाची आशा न धरितां पांडुसेनेशीं युद्ध केलें ! राजा, तेव्हां तुड्या सैनिकांची मुखश्री अगदींच म्लान झाली, लढतां लढतां त्यांचीं शस्त्रास्त्रें नाश पावलीं, व त्यांना पांडुयोद्ध्यांनीं चोहोंकडून कोंडून टाकिलें, असें पाहून सर्वतोपरी व्यंग अशा त्या तुड्या सैन्याच्या संरक्षणाकरितां मी पुढें झालें; आणि तुड्या सैन्यांतले चार योद्धे व पांचवा मी अशा आम्ही पांचजणांनीं जेथें कृपाचार्य होता तेथें उभें राहून पांचालाच्या सैन्याशीं युद्ध केलें ! परंतु, राजा, अर्जुनाच्या बाणप्रहारापुढें आमचा तग निघेना; आणि अखेरीस आम्ही पांचही जण अगदीं जर्जर झालें; तरी आम्ही त्या महाभयंकर धृष्टद्युम्नावर हल्ला केला आणि मग तेथें दारुण युद्ध मातलें ! शेवटीं त्या घोर रणांत धृष्टद्युम्नानें आम्हांस सर्वांना जिकलें आणि त्यामुळें आम्ही रणांतून पळून गेलें ! राजा, नंतर आम्हांवर तो महारथ सात्यकि चालून येत आहे असें आम्ही पाहिलें; तो त्यानें चारशें रथांसह रणांगणांत माझा पाठलागही केला ! राजा धृतराष्ट्रा, वास्तविक पाहातां धृष्टद्युम्नापासून माझी सुटका होणें कठीण होतें, पण त्याचे घोडे थकल्यामुळें मी कमावना त्याच्या कचाट्यांतून सुटलों !

परंतु तितक्यांत, पातकी मनुष्य जसा नरकांत पडतो, तसा मी पुनः माधवाच्या सैन्याच्या पेंचांत पडलों आणि मग क्षणभर मोठे भयंकर युद्ध जुंपलें! राजा, त्या वेळीं महाबाहु सात्यकीनें माझे तनुत्राण छेदिलें आणि मी भूमीवर मूर्च्छित पडलों असतां तो माझा प्राण घेण्यास उद्युक्त झाला! नंतर अल्प अवकाशांत भीमसेनानें गदाप्रहारांनीं व अर्जुनानें घोर शरवृष्टीनें कौरवांचें गजसैन्य वधिलें आणि ते पर्वतासारखे प्रचंड हत्ती छिन्नभिन्न होत्साते रणभूमीवर चोहोंकडे मरून पडले असतां पांडवांचा मार्ग बंद झाला! राजा, नंतर भीमसेनानें ते महान् महान् गज ओढून एकीकडे केले आणि पांडवांच्या रथांना मार्ग करून दिला! इकडे अश्वत्थामा, कृपाचार्य व सात्वत कृतवर्मा ह्यांस रथसेनेंत शत्रुसंहारक दुर्योधन कोठेही सांपडेना आणि ते त्यामुळें अतिशय विपन्न होत्साते त्या तुझ्या महारथ पुत्रास शोधण्यासाठीं त्या घोर रणांत धृष्टद्युम्नास सोडून जेथें सौबल होता तेथें निघून गेले!

अध्याय सव्विसावा.

—:—

धृतराष्ट्राच्या अकरा पुत्रांचा वध.

संजय सांगतो:—राजा, पांडुपुत्र भीमसेनानें कौरवांच्या त्या गजसेनेचा वध केला आणि मग त्यानें रणांगणांत तुझ्या सैन्याला ठार मारण्याचा सपाटा लाविला; तों इकडे तुझा पुत्र कौरवेश्वर दुर्योधन राजा ह्याला तुझे बाकीचे जिवंत राहिलेले पुत्र शोधीत असतां त्यांस तो कोठेही आढळला नाहीं; आणि रणभूमीवर भीमसेन हा गदा धारण करून खवळलेल्या दंडधारी यमाप्रमाणें संचार करीत कुरूसैन्याचा विध्वंस उडवीत आहे, असें पाहून ते सर्वजण एकत्र होत्साते रणांगणांत भीम-

सेनावर तुटून पडले! राजा, त्या समयीं दुर्मर्षण, श्रुतांत, जैत्र, भूरिबल, रवि, जयत्सेन, सुजात, शत्रुसंहारक दुर्विषह, दुर्विमोचन, दुष्प्र-
धर्ष व महाबाहु श्रुतर्वा हे तुझे सर्व युद्ध-
विशारद पुत्र एकत्र होऊन चोहोंकडून भीम-
सेनावर धावून गेले व त्यांनीं त्यांस सर्व बाजूनीं कोंडून टाकिलें! राजा, तें पाहून भीमसेन पुनः आपल्या रथावर चढला आणि त्यानें तुझ्या पुत्रांवर जलाल बाण सोडून त्यांचीं मर्मस्थळें विदारण केलीं! तेव्हां ते त्या घोर संग्रामांत फिरून भीमसेनावर चाल करून गेले; आणि कड्यावरून ज्याप्रमाणें हत्तीला खालीं लोटून ठार मारावें, त्याप्रमाणें त्यांनीं भीमसेनाला रथांतून खालीं लोटून ठार मारण्याचा प्रयत्न आरंभिला! राजा, त्या समयीं रणांगणांत भीमसेनाला अतिशय क्रोध चढला आणि त्यानें एक क्षुरप्र बाण सोडून दुर्मर्षणाचें मस्तक तत्काळ छेदून भूमीवर पाडिलें! नंतर महारथ भीमसेनानें तुझा पुत्र श्रुतांत ह्याजवर एक भल्ल बाण टाकिला आणि त्या योगें त्याचें सर्व कवच विदारून त्यास यमसदनीं पाठविलें! मग त्या शत्रुसंहारक कुंती-पुत्रानें आपल्या वीरासनावरून हंसत हंसत एक नाराच बाण सोडून जयत्सेनास विधिलें असतां तो तत्काळ रथांतून भूतलावर पडला व मेलाला! तें पाहून श्रुतव्याला फार क्रोध आला आणि त्यानें बांकदार पेन्याचे शंभर गृध्रपुंख बाण भीमसेनावर सोडिले! तेव्हां भीमसेन फारच चवताळला आणि त्यानें विषासारखे किंवा अग्नीसारखे प्राणघातकी असे तीन बाण सोडून जैत्र, भूरिबल व रवि ह्यांस विद्ध केलें असतां ते तिघेही महारथ गतप्राण होत्साते— वसंत ऋतूंत तोडिलेल्या प्रफुल्लित पळसाच्या वृक्षांप्रमाणें रक्तबंबाळ होऊन—आपआपल्या रथांवरून भूतलावर पडले! नंतर त्या शत्रु-

संहारक भीमसेनाने दुर्विभोचनावर एक जलाल भल्ल बाण टाकिला असतां तो महारथ योद्धा एकदम मरण पावला; आणि पर्वताच्या शिखरावर वाढलेला वृक्ष वाऱ्याने उन्मूलित झाला म्हणजे जसा एकाएकी कोसळतो, तसा तो आपल्या रथांतून एकाएकी कोसळून भूमीवर पडला! राजा, मग रणांगणांत सेनेच्या अग्रभार्गी भीमसेनाने तुझे पुत्र दुःप्रधर्ष व मुजात ह्यांजवर प्रत्येकीं दोन दोन बाण टाकिले असतां ते दोघेही महारथ बाणविद्ध होत्साने धारातीर्थी पतन पावले! नंतर तुझा पुत्र दुर्विषह हा रणांगणांत भीमसेनावर धावून गेला, पण तो आपणावर धावून येत आहे असें पहातांच भीमसेनाने त्याजवर एक भल्ल बाण सोडिला आणि त्याच्या योगें तो तुझा पुत्र गतप्राण होत्साता सर्व धनुर्धरांसमक्ष रथांतून खाली पडला!

राजा, ह्याप्रमाणें समरांत एकट्या भीमसेनाने आपल्या बहुत भ्रात्यांना वधिलें असें पाहून श्रुतव्याला अतिशय क्रोध चढला; आणि तो सुवर्णविभूषित अशा प्रचंड धनुष्याचें आस्फालन करून विष किंवा अग्नि ह्यांप्रमाणें प्राणसंहारक शरांचा एकमारवा भडिमार करित भीमसेनावर चालून गेला व त्यानें घोर युद्धांत त्या पांडुपुत्राचें धनुष्य तोडून त्या छिन्नचाप वीरावर वीम बाण टाकिले! राजा, मग त्या बलाढ्य भीमसेनाने दुसरे धनुष्य धारण केलें आणि तो तुझ्या पुत्रावर बाणांचा वर्षाव करून 'थांब थांब' असें त्यास म्हणाला! तेव्हां पूर्वी समरांगणांत जंभासुर व इंद्र ह्यांचें जसें युद्ध झालें होतें, तसें त्या दोघांचें मोठें घनघोर व विचित्र युद्ध झालें! त्या वेळीं त्यांनीं एकमेकांवर यमदंडाप्रमाणें भयंकर शरांचा जो मारा केला, त्याच्या योगें सर्व पृथ्वी, आकाश, दिशा व उपदिशा हीं सर्व आच्छादित झालीं! राजा,

तेव्हां श्रुतवा हा अतिशय संतापला आणि त्यानें धनुष्य उचलून भीमसेनाच्या वक्षस्थळावर व बाहूवर बहुत बाण टाकिले आणि त्यास अगदीं विद्ध करून सोडिलें! त्या वेळीं तुझ्या पुत्रानें अत्यंत विद्ध केलेला तो कुंतीपुत्र—महासागर पर्वकाळीं जसा खवळतो तसा—अतिशय खवळला आणि त्यानें मोठ्या क्रोधानें बाणांचा भडिमार चालवून तुझ्या पुत्राचे चारही अश्व व मारथि ह्यांस यमसदनीं पाठविलें व तो रथहीन झाला असें पाहून त्याजवर त्या अतुलप्रतापी भीमसेनाने लेमवाही बाणांचा अचूक भडिमार करून आपलें हस्तलाघव व्यक्त केलें! राजा, विरथ झालेल्या श्रुतव्यानें नंतर ढालतरवार हातांत घेतली, पण तितक्यांत भीमसेनानें तत्काळ एक क्षुरप्रबाण सोडून त्याचें शिर उडविलें आणि मग लागलेच तें त्या श्रुतव्याचें घड रथांतून धाडकन भूतलावर पडलें व त्यामुळें सर्व भूमंडळ दणाणून गेलें!

राजा, ह्याप्रमाणें तो शूरश्रुतवा रणांगणांत पडला अमतां तुझे मैत्रिक अतिशय भयभीत झाले; तरी त्यांनीं युद्धाची हाव धरून रणांगणांत भीमसेनावर हल्ला केला! राजा, कौरवांच्या मैन्यसगरांपैकीं अवशिष्ट राहिलेले ते योद्धे कवचें धारण करून आपल्यावर चालून येत आहेत असें पाहून प्रतापशाली भीमसेन त्यांजबरोबर युद्ध करण्यास पुढें सरसावला; आणि मग तत्काळ त्या सर्व कुरुवीरांनीं त्या पांडुपुत्राला चोहोंकडून वेढा दिला! राजा, मग तेथें दारुण युद्ध माजलें आणि त्यांत कुरुवीरांनीं कोंडिलेल्या त्या भीमसेनानें, सहस्राक्ष देवेंद्रानें ज्याप्रमाणें अमरांना जर्जर केलें त्याप्रमाणें त्या सर्व कुरुमैत्रिकांस जलाल बाणांचा भडिमार करून अगदीं जर्जर केलें! राजा धृतराष्ट्रा, नंतर भीमसेनानें कवचाचें अवगुंठित असे पांचशे महान् रथ छेदिले आणि पुनः

सातशें हत्ती रणांगणांत ठार मारिले! राजा, मग तो पांडुपुत्र भयंकर बाणांनीं दहा हजार पायदळ आणि आठशें घोडे वधून आपल्या दिव्य कांतीनें झळाळूं लागला व रणांगणांत तुझ्या पुत्रांना ठार मारल्याबद्दल त्यास मोठी कृतार्थता वाटली; आणि आपलें जन्म सफल झालें असें त्यानें मानिलें! राजा, ह्याप्रमाणें तो भीमसेन भयंकर युद्ध करित तुझ्या सैनिकांचा घोर संहार उडवूं लागला अमतां तुझ्यासेनेला वर मान करून त्याजकडे पाहाण्याचीही छाती होईना! तेव्हां भीमसेनानें तुझ्या सर्व सैनिकांम उधळून लाविलें जाणि त्यांस साहाय्य करण्यासाठीं कौरु जे कोणी आले त्यांस त्यानें ठार मारिलें व दंड ठोकून अमा प्रचंड शब्द केला कीं, त्याच्या योगानें महान् महान् हत्ती घाबरून गेले! नंतर, राजा, जिच्यांतील बहुतेक वीर मृत्युमुखी पडले होते अशी ती तुझी अल्प सेना अगदीं दीन झाली!

अध्याय सत्ताविसावा.

—:—

सुदर्शन व सुशर्मा यांचा वध.

संजय सांगतो:—राजा, ह्या वेळीं तुझे युद्धांत जिवंत राहिलेले पुत्र जे दुर्योधन व सुदर्शन ते रणांगणांत घोडेस्वारांमध्ये होते. पुढें दुर्योधन हा तेथें आहे असें पाहून देवकीपुत्र कृष्णानें कुंतीपुत्र अर्जुनाला म्हटलें, “अर्जुना, आतां बहुतेक सर्व शत्रु मृत्युमुखी पडले, आपण आपल्या बंधुवर्गाचें संरक्षण केलें, आणि तो शिनिपुंगव सात्याकि संजयाला बंदिवान करून घेऊन परत आला पहा! अर्जुना, रणभूमीवर पातकी धार्तराष्ट्र व त्यांचे अनुयायी ह्यांशीं लढल्यामुळें हे नकुलमहदेव किती दमून गेले तें अवलोकन कर. हे पहा कृप, कृतवर्मा व महारथ अश्वत्थामा हे तिघेही दुर्योधनाला

सोडून देऊन दुसरीकडेच आहेत! हा पहा! धृष्टद्युम्न रणांगणांत दुर्योधनाच्या सैन्याला वधून आपल्या सर्व प्रभद्रक वीरांसह दिव्य तेजानें झळाळत आहे! तो पहा तेथें अश्वसेनेमध्ये दुर्योधन हा पुनःपुनः सभोवतालीं पहात अमन त्याच्या मस्तकावर छत्र विराजत आहे! अर्जुना, त्यानें फिरून सर्व सैन्याची यथास्थित रचना केली व तो रणांगणांत युद्धास सिद्ध झाला! ह्यामाठीं तूं त्याला जलाल शरांनीं ठार मार आणि कृतार्थ हो! अर्जुना, आतां विलंब करण्यांत अर्थ नाही; गजसेनेचा वध झाला असें पाहून हे कौरववीर तुझ्यावर तुटून पडले नाहीत तोंच तूं त्या दुर्योधनाला ठार कर! अर्जुना, पांचाल्य धृष्टद्युम्नानें लवकर येथें यावें म्हणून कोणी तरी त्याजकडे जावें, वात्रारे, प्रस्तुत समर्थी कौरवांचें सैन्य अगदीं थकून गेलें आहे; ह्यास्तव ह्या वेळीं त्यादुरात्म्या दुर्योधनाची सुटका होतां उपयोगी नाही! अर्जुना, सध्या रणांगणांत दुर्योधन हा तुझें सर्व सैन्य मारून ‘आतां मी पांडवांना निकालेंच’ अशा डौलांत आहे! ह्यामाठीं आपलें सर्व सैन्य पांडवांनीं पीडिलें व वधिलें असें त्याच्या दृष्टीस पडलें म्हणजे तो रणांगणांत पुढें येईल व स्वतःच मृत्युमुखी पडेल!”

धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें कृष्णाचें भाषण श्रवण करून अर्जुनानें त्याम उत्तर दिलें, “माधवा, भीमसेनानें धृतराष्ट्राचे बहुतेक सर्व पुत्र ठार मारिले; आतां काय ते क्षीणे मात्र जिवंत उरले आहेत, पण तेही आज पतन पावतील! कृष्णा, भीष्म पडला, द्रोण मेला, विकर्तनपुत्र कर्णही यममदनीं गेला, मद्रराज शल्याची देखील तीच वाट लागली, तसाच जयद्रथही हत झाला, आणि आतां सौबल शकुनीचे पांचशें श्रेष्ठ घोडे, दोनशें श्रेष्ठ रथ, सारे शंभर बलाढ्य हत्ती व तीन हजार पायदळ उरलें आहे; आणि

कृष्णा, आतां अश्वत्थामा, कृप, त्रिगर्ताधिप, उलूक, शकुनि व सात्वत कृतवर्मा हे इतकेच काय ते दुर्योधनाचे प्रबळ योद्धे हयात आहेत! तेव्हां मला असे वाटते की, ह्या मृत्युलोकीं कालापामन खचित कोणाचीही सुटका नाही! कृष्णा, ह्याप्रमाणे कुरुसैन्याचा संहार झाला असताही अद्याप दुर्योधन हा युद्धार्थ सिद्ध आहेच! पण आज दिवस मावळण्यापूर्वीच महाराज युधिष्ठिर हा निःशत्रु होईल हे मी तुला खचित सांगते. कृष्णा, माझी अशी समजूत आहे की, आज शत्रूंकडील कितीही मद्रोन्मत्त योद्धे असले तरी ते येथे माझ्या हातून जिवंत सुटणार नाहीत! त्यांना जर जिवाची पर्वा असेल तर त्यांनी आज समरांगणांतून पळून जावे हेंच श्रेयस्कर आहे! कृष्णा, फार काय, ते जरी मनुष्यकोटीच्या वरच्या कोटीतले असले, तरीही मी त्यांचा आज वध केल्याशिवाय राहाणार नाही! कृष्णा, आज मी मोठ्या क्रोधाने जलाल शरांचा वर्षाव करून गांधारराज शकुनीला ठार मारीन आणि धर्मराजाला फार कालपर्यंत जी तळमळ लागलेली आहे ती एकदांची नष्ट करीन! कृष्णा, त्या अधम सौबलाने कुरुसभेत घृतामध्ये आह्वाला गांजून आमची जी महान् महान् सुंदर रत्ने इत्यादि हरण केली, तीं सर्व मी आज पुनः परत मिळवीन! आणि आज हस्तिनापुरांतील त्या सर्व स्त्रिया रणांगणांत आपल्या पतींना व पुत्रांना पांडवांनी वधिले असे ऐकून आक्रोश करितील! आणि आज एकदांचे सर्व कर्तव्य समाप्त होईल! आणि, ह्याउपर दुर्योधनाला जर जगण्याची इच्छा असेल, तर त्याने माझ्या भीतीने रणांगणांतून युद्धविमुख होऊन पळून जावे हेंच विहित होय; नाही तर देदीप्यमान राजलक्ष्मी व प्राण ह्यांस त्याला आज अंतः रावे लागेल! कृष्णा, कौरवांचे हे मुखे अध-

सैन्य आतां हत झालेच म्हणून समज; कारण, माझ्या प्रत्येका टण्टकारही ह्या सैनिकांना सहन होणार नाही; ह्यासाठी रथ चालव, मला त्याचा संहार करू दे!"

राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे विजयशाली अर्जुनाचे भाषण श्रवण करून दाशार्ह कृष्णाने दुर्योधनाच्या सैन्यावर अर्जुनाचा रथ चालविला; आणि मग पांडवांकडील दुसरे दोन महारथ भीमसेन व सहदेव हेही ते सैन्य पाहून त्याजवर चाल करून गेले! राजा, ह्याप्रमाणे ते तिथेही महारथ दुर्योधनाला ठार मारण्याच्या इच्छेने सिंहगर्जना करीत कुरुसैन्यावर धावून गेले आणि त्या सर्वांनी मोठ्या आवेशाने शत्रूवर बाणांचा भडिमार चालविला, तेव्हां आपणांवर तुटून पडणाऱ्या त्या पांडुवीरांवर सौबल शकुनीने उलट हल्ला केला! राजा, त्या वेळीं तुझा पुत्र सुदर्शन हा भीमसेनावर चालून गेला, सुशर्मा व शकुनि ह्यांनी अर्जुनाशी युद्ध आरंभिले आणि दुर्योधनाने घोड्यावर बसून सहदेवावर हल्ला केला व तत्काळ मोठ्या प्रयत्नाने त्याच्या मस्तकावर एक प्रास टाकून त्यास अतिशय विद्ध केले! राजा, तेव्हां तुझ्या पुत्राने ताडित केलेला तो पांडुपुत्र एकदम आपल्या रथांत वीरासनी बसला आणि त्याच्या सर्व देहांतून रक्ताचे पाट वाहू लागले व तो सर्वांप्रमाणे सुसकारे देऊं लागला! राजा, नंतर कांही वेळाने सहदेव सावध झाला आणि त्याने क्षुब्ध होऊन दुर्योधनावर तीक्ष्ण बाणांचा भडिमार चालविला! मग कुंतीपुत्र धनंजयानेही मोठा दिव्य पराक्रम गाजविला व रणांगणांत घोड्यांवर बसलेल्या शूर योद्ध्यांचीं शिरे छेदून टाकण्याचा सपाटा लाविला. राजा, त्या समयीं अर्जुनाने बहुत बाणांचा वर्षाव करून ते सैन्य वधिले आणि सर्व घोडेस्वारांना ठार मारून तो त्रिगर्ताच्या रथ्यांवर चालून

गेला ! राजा, तेव्हां त्रिगर्तीचे ते सर्व महारथ एकत्र झाले; आणि त्यांनी कृष्ण व अर्जुन ह्यांस बाणाच्छादित केले ! ते पाहून त्या महा-यशस्वी पांडुपुत्रानें सत्यकर्म्यावर एक क्षुरप्र बाण सोडिला आणि मग त्याच्या रथाची ईषा छेदून दुसऱ्या एका सहाणेवर धार दिलेल्या क्षुरप्र बाणानें देदीप्यमान कुंडलें तळपत असलेलें त्याचें मस्तक एकदम उडविलें ! राजा. नंतर, वनांत क्षुधित झालेला सिंह जसा हरणावर उसळून जातो, तसा तो सत्येषूवर उसळून गेला व त्यानें कुरुयोद्ध्यांच्या समक्ष त्याजवर बाण टाकून त्यास ठार मारिलें ! नंतर अर्जुनानें मुशर्मावर तीन बाण सोडून त्यास विंधिलें व सुवर्णमंडित सर्व रथांचा फडशा पाडिला ! राजा, मग अर्जुन हा तत्काळ दीर्घ कालपर्यंत सांठवून ठेविलेले जलाल क्रोधविष ओकीत प्रस्थलाधिपति मुशर्मावर धावून गेला आणि त्यानें त्याजवर शंभर बाण सोडून त्याचे घोडे वधिले व नंतर यमदंडाप्रमाणें भयंकर शर घेऊन तो हंसत हंसत तत्काळ मुशर्मावर टाकिला ! राजा, अत्यंत क्रोधायमान झालेल्या त्या शूर धनुर्धरानें सोडिलेला तो बाण मुशर्माला गांठून त्यानें त्याचें रणांत वक्षस्फळ विदारिलें; आणि तो कुरुवीर गतप्राण होऊन धरणीतलावर पडला असतां सर्व पांडवांना मोठा आनंद झाला आणि तुझ्या सैनिकांना अतिशय व्यथा उत्पन्न झाली ! राजा, नंतर अर्जुनानें मुशर्माच्या पंचे-चाळीस महारथ पुत्रांवर बाणवृष्टि करून त्यांस यममदनीं पाठविलें आणि आणखी जलाल बाण सोडून त्यांच्या सर्व अनुयायांना ठार मारिलें व तो महारथ पांडुपुत्र कौरवांच्या उर्वरितसेने-वर धावून गेला ! राजा, इकडे भीमसेनानें सम-रांगणांत क्रोधायमान होऊन हंसत हंसत तुझा पुत्र सुदर्शन ह्याजवर शरांचा भडिमार केला आणि त्यास शराच्छादित करून टाकून एका

सुतीष्ण क्षुरप्र बाणानें त्याचें मस्तक छेदिलें असतां तो एकदम भूतलावर मरून पडला ! राजा, ह्याप्रमाणें सुदर्शन हा मरण पावला तेव्हां रणांगणांत त्याच्या अनुयायांनीं भीमसेनावर विविध शरांचा पाऊस पाडीत त्यास सर्व अंगांनीं कोडिले, परंतु त्या वेळीं वृकोदरानें आसमंताद्वागीं तुझ्या सैन्यावर अतिशय घोर शरवृष्टि आरंभिली आणि इंद्राच्या वज्राप्रमाणें कठोर अशा त्या बाणांच्या योगें तुझे तें सर्व सैन्य क्षणांत मृत्युमुखी पडूं लागलें ! राजा, तेव्हां त्या सैन्यांतील प्रमुख महारथांनीं भीमसेनावर हल्ला करून त्याच्याशीं घोर संग्राम आरंभिला ! राजा, त्या समयीं पांडुपुत्रानें त्या सर्व कुरुवीरांवर घोर शरांची वृष्टि केली आणि त्या कुरुवीरांनींही उलट पांडवांकडील महारथांना प्रचंड शरवृष्टीनें झांकून काढिलें ! राजा, तेव्हां दोन्ही दळांत घोर रण मातलें आणि ती पर-स्पर्गांच्या शरप्रहारांनीं घायाळ होऊन रणांगणांत पडूं लागलीं असतां जिकडे तिकडे बंधु-वर्गाविषयीं महान् आकांत मुरू झाला !

अध्याय अष्टाविसावा.

—:०:—

शकुनि व उलूक ह्यांचा वध.

मंजय मांगतो:—राजा धृतराष्ट्रा, ह्या-प्रमाणें कुरुवीरांचा व पांडवांचा घोर संग्राम चालू होऊन त्यांत अश्व, गज व नर ह्यांचा महान् क्षय मुरू झाला असतां सौबल शकुनि हा महदेवावर धावून गेला ! तेव्हां तो आपल्या-वर चालून येत आहे असें पाहून तत्काळ प्रतापशाली महदेवानें त्याजवर वेगानें धावून जाणाऱ्या पक्ष्यांप्रमाणें बाणांचे लोट चालू केले. राजा, त्या समयीं उलूकानें रणांगणांत भीमसेनावर दहा बाण टाकून त्यास विद्ध केले; आणि शकुनीनें भीमाला तीन बाणांनीं विधुन

ज्वद बाणांनी सहदेवाला झांकून काढिले! राजा, त्या वेळीं दोन्ही दळांमध्ये मोठ्या निकराचा संग्राम झाला! त्या शूरांनी रणांगणांत एकमेकांना गांठून एकमेकांवर सहाणेवर धार दिलेल्या कंकपिच्छ व मयूरपिच्छ सुवर्ण-पुंख जलाल बाणांचा आकर्षण प्रत्यंचा ओढून भडिमार चालविला आणि त्या प्रतिस्पर्धी वीरांनी बाहुबलानें आपआपल्या धनुष्यांच्या योगें जो शरवर्षाव केला त्यानें पावसाच्या वृष्टीप्रमाणें सर्व दिशा आच्छादित झाल्या! राजा, नंतर रणांगणांत भीम व सहदेव ह्यांस मनस्वी क्रोध चढला आणि ते महाबलाढ्य योद्धे समरभूमीवर शत्रूंचें कंदन करीत संचरू लागले! राजा, त्या समयीं त्या दोघांनीं शतावधि बाणांचा भडिमार करून तुझे सैन्य झांकून टाकिलें; आणि अंतरिक्षांत जिकडे तिकडे निविड अंधःकार मातला! राजा, तेव्हां शरांनीं आच्छादित झालेले घोडे बहुत मृत वीरांसह-वर्तमान पळत सुटले आणि त्यामुळें जिकडे तिकडे मार्गाचा रोध झाला! त्या समयीं समरभूमीवर जे घोडे व घोडेस्वार मरून पडले होते त्यांच्या अंगांतलीं चिलखतें छिन्नविछिन्न होऊन चोहोंकडे पसरलीं होती, त्याप्रमाणेंच सर्वत्र तुटलेले प्रास, ऋषि, शक्ति, भाले, खड्ग, कुऱ्हाडी ह्यांचा खच पडला होता, आणि ह्यास्तव सर्व पृथ्वी आच्छादित होऊन जणू काय तिच्यावर इतस्ततः पुष्पें पसरल्यामुळेंच तिला चित्रविचित्रपणा आला होता! राजा, त्या वेळीं उभयसैन्यांतील वीर परास्परांवर तुटून पडले आणि मोठ्या क्रोधानें परस्परांना ठार मारीत रणांगणांत संचरू लागले! राजा, तेव्हां समरभूमीवर जिकडे तिकडे वीरांची मस्तकें दिमू लागलीं! त्यांच्या मुखचयेंवरून जणू काय ते वीर संतापानें डोळे फाडून पहात आहेत व दांतभोंठ खात आहेत असें दिसत होतें!

आणि त्यांच्या कर्णांत कुंडलें झळाळत असून कमळाच्या केसरांप्रमाणें सुंदर कांति विराजत होती! राजा, त्याप्रमाणेंच तेथें प्रचंड हत्तींच्या शुंडांसारखे वीरांचे छिन्न भुज अंगदांसह शोभत असून त्याशिवाय त्यांचीं चिलखतें, प्रास, खड्ग व कुऱ्हाडी ह्याही सर्वत्र पसरल्या होत्या! राजा, इतक्यांत त्या स्थळीं वीरांचीं तुटलेलीं धडें उठलीं व तीं एकमेकांसहवर्तमान रणभूमीवर नाचू लागलीं; आणि सर्वत्र मांस-भक्षक हिंसक प्राणी जमून रणांगणांत मोठा घोर देखावा दिमू लागला! राजा, अशा प्रकारें तुंबळ रण होऊन अगदीं अल्प सैन्य शिलक राहिल्यानंतर त्या भयंकर संग्रामांत पांडवांना मोठी वीरश्री चढली व त्यांनीं कौरवांना यमसदनीं पाठविण्याचा क्रम आरंभिला! राजा, इतक्यांत प्रतापवान शूर शकुनीनें सहदेवाच्या मस्तकावर प्रास टाकून त्यास अत्यंत पीडा दिली असतां तो विव्हल होऊन एकदम वीरसनीं बसला; आणि त्या पांडुपुत्राची ती अवस्था अवलोकन करून महाप्रतापी भीमसेनानें संतप्त होऊन कौरवांच्या सैन्याचें निवारण केले व नाराच बाणांचा भडिमार चालवून शत्रूंकडील शतावधि व सहस्रावधि योद्ध्यांना वधिलें आणि तो शत्रूसंहारक योद्धा सिंहासारखा गर्जू लागला असतां कौरवांचे नर, गज व हय धावरून जाऊन एकदम चोहोंकडे पळू लागले व शकुनीच्या अनुयायांचीही तीच वाट लागली! राजा, ह्याप्रमाणें आपल्या सैन्याची वाताहत झाली असें पाहून दुर्योधन राजा आपल्या सैनिकांस म्हणाला:—वीरहो, असे स्वधर्मापासून भ्रष्ट कसे झालां! अहो, युद्ध करा, पळून जाण्यांत लाभ तो कोणता बरें? अहो, जो धीर वीर रणांत पाठ न दाखवितां प्राण देतो, तो ह्या लोकीं कीर्ति मिळवून मेळ्यावर उत्तम लोकीं जातो! राजा धृतराष्ट्रा.

ह्याप्रमाणें दुर्योधनाचें भाषण ऐकून सौबलाचे ते अनुयायी मारूं किंवा मरूं असा निर्धार करून मोठमोठ्यांनै घोर गर्जना करीत पुनः पांडवां-
 वर चालून गेले आणि त्या सर्वांना सागरा-
 सारखा भयंकर क्षोभ उत्पन्न झाला ! राजा,
 अशा रीतीनें सौबलाचे अनुयायी आपणांवर
 चालून आले अमें पाहून त्यांना विक्रम्या-
 करितां पांडव हे त्यांजवर उलट चालून गेले
 आणि इकडे पराक्रमी सहदेवही जरा मातव
 होऊन पुनः युद्ध करूं लागला व त्यानें हंमत
 हंसत दहा बाणांनीं शकुनीला विधिलें, तीन
 बाणांनीं त्याचे अश्रु वधिले आणि आणखी
 बाण सोडून त्याचें धनुष्य छेदिलें ! राजा, नंतर
 युद्धयुद्धे शकुनीनें दुसरें धनुष्य धारण केलें
 आणि नकुलावर माठ व भीमसेनावर महा
 बाण सोडून त्यांम विधिलें ! राजा, त्या समयीं
 उलूकांनैही आपल्या पित्याचें दक्षण करण्या-
 साठीं भीमसेनावर मात व सहदेवावर सत्तर
 बाण टाकिले; परंतु तें पाहून रणांगणांत भीम-
 सेनानें उलूकावर नऊ, शकुनीवर चौपट आणि
 त्यांच्या पार्श्वभागीं युद्ध करणाऱ्या वीरांवर
 प्रत्येकीं तीन तीन बाण टाकून त्यांम विद्ध
 केलें ! राजा, ह्याप्रमाणें त्या पुरुवीरांवर
 भीमसेनानें तेलपाणी दिलेले नागच बाण टाकिले
 असतां ते फार चवताळले आणि ते रणां-
 गणांत—विद्युल्लतेनें महित असे मद्य ज्याप्रमाणें
 पर्वतावर पजेन्याची वृष्टि करितात त्याप्रमाणें
 —सहदेवावर वृष्टि करीत त्यावर चालून गेले !
 राजा, तेव्हां ते कौरवयोद्धे आपल्यावर धावून
 येत आहेत अमें पाहून शूर व प्रतापशाली
 अशा त्या सहदेवानें उलूकावर एक महल बाण
 सोडून त्याचें शिर उडविलें आणि त्यामुळें
 रुधिरांत न्हाळलें अमें तें त्याचें धड रथांतून
 भूतलावर पडलें व तें पाहून रणांगणांत सर्व
 पांडुवीरांना अतिशय आनंद झाला ! राजा,

ह्याप्रमाणें आपला पुत्र पडला अमें जेव्हां
 शकुनीनें पाहिलें, तेव्हां त्याचा कंठ दुःखानें
 भरून आला आणि सुसकारे देत असतां त्यास
 विदुराच्या भाषणाचें स्मरण झालें ! राजा, नंतर
 त्यानें क्षणभर विचार केला आणि डोळे
 अश्रूंनीं भरून आले असतां तसेच सुसकारे
 देत देत त्यानें सहदेवावर चाल केली, व त्यास
 तीन बाणांनीं विधिलें ! राजा, त्या समयीं
 प्रतापशाली सहदेवानें शकुनीनें सोडिलेले ते
 तीन बाण अंगांत रुतले होते ते उपटून फेंकून
 दिले व उलट शकुनीवर बाणांचा लोट सुरू करून
 ममरामध्यें त्याचें धनुष्य छेदून टाकिलें !
 राजा, ह्याप्रमाणें धनुष्यहीन झाल्यावर शकुनीनें
 मद्य उचलिलें व तें सहदेवावर फेंकिलें; परंतु
 तें घोर मद्य एकएकीं आपणावर येत आहे
 अमें पाहून सहदेवानें हंसत हंसत त्याचे
 दोन तुकडे केले ! राजा, नंतर सौबलानें एक
 प्रचंड गदा उचलिली व ती सहदेवावर फेंकिली;
 पण तीही व्यर्थ होऊन रणांगणांत भूमावर
 पडली ! राजा, तें पाहून शकुनीला अतिशय
 क्रोध चढला व त्यानें कालगतीप्रमाणें भयंकर
 अशी एक घोर शक्ति त्या पांडुपुत्रावर
 सोडिली; पण ती शक्ति आपणावर येत आहे
 अमें पाहून सहदेवानें हंसत हंसत रणांगणांत
 मुवर्णमंडित शरांचा भडिमार आरंभिला व त्या
 मुवर्णमंडित शक्तीचे तीन तुकडे करून ती
 भूतलावर पाडिली; आणि त्यामुळें, अंतर्गिक्षांतून
 भूतलावर विद्युल्लता येत असतां जमा प्रकाश
 पडता. तमा निकडे निकडे विवक्षण प्रकाश
 पडला ! राजा, ह्याप्रमाणें ती घोर शक्ति व्यर्थ
 झाली तेव्हां सौबलही फार चावग्या आणि तें
 पाहून सौबलासह सर्व कौरववीर भयभीत
 होतनाते पळूं लागले ! राजा, तेव्हां पांडवांना
 आपण आतां स्वाम विजयी झालों अमें वाटलें
 आणि ते मोठमोठ्यानें आरोळ्या देऊं लागले !

राजा, त्या समर्थी बहुतेक सर्व कौरव युद्धा-
पामून पराङ्मुख झाले आणि त्यांची ती
उद्विग्नता अवलोकन करून प्रतापशाली माद्री
पुत्राने त्यांजवर सहस्रावधि शरांचा वर्षाव
आरंभिला व रणांगणांत त्यांस उधळून
लाविले! राजा, नंतर गांधार देशांतल्या बळकट
श्रोदेश्वरांच्या बळावर अजूनही जयाची अशा
करणारा तो कुरूवीर सौबल शकुनि रणांगणांत
पांडुसेनेशी लढण्यास पुढे झाला असतां,
सहदेवाने तो आपला भाग अवशिष्ट आहे असे
मनांत आणून आपल्या सुवर्णमय रथांतून
त्याजवर हल्ला केला; आणि आपल्या प्रचंड
धनुष्यास प्रत्यंचा जोडून तिचे आस्फालन
आरंभिले! राजा, नंतर त्याने सहाणेवर धार
दिलेल्या गृध्रपुंख बाणांचा सौबलावर भडिमार
चालविला; आणि एखाद्या प्रचंड हत्तीला जसे
अंकुशांनी विद्ध करावे तसे त्याने क्रोधायमान
होऊन त्या गांधारराजाला बाणप्रहरांनी अति-
शय विद्ध केले, व तो ममयज्ञ पांडुपुत्र जण
काय त्या शकुनीला त्याच्या पूर्वकृत्यांचे
स्मरण देण्याच्या उद्देशाने त्यास म्हणाला:—
हे वीरा, क्षात्रधर्मात अदळ राहून मजशीं
शौर्याने युद्ध कर! हे अधमा, त्या वेळीं सभेंत
असांनीं द्यूत खेळत असतां जो तुला आनंद झाला
होता, त्या दुष्कृत्यांचे फळ आज तुला मिळेल!
बाबारे, जे दुष्ट दुरात्मे पूर्वीं आम्हांस हंसले
होते, ते सर्व ह्यापूर्वींच मृत्युमुखीं पडले
आहेत! आतां तो कुलांगार दुर्योधन व
त्याचा मामा तूं हे तुम्ही दोघे मात्र उरले
आहां! अरे, वृक्षावर कठीण काष्ठ्याचा प्रहार करू-
न जसे त्यांचे फळ पाडोवें, तसे मी आज ह्या
क्षुर बाणांचा प्रहार करून तुझे शिर तोडून
पाडितों! राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणे भाषण
करून तो रणधुरंधर महाबलवान्
सहदेव क्रोधायमान होऊन मोठ्या वेगाने

सौबलावर धावून गेला आणि संतापाने
नखशिखांत पेटलेल्या त्या पांडुपुत्राने प्रत्येचेचे
मोठ्या जोराने आकर्षण करून शकुनीला दहा
बाणांनीं विधिले, त्याचे चारही अध्यांना चार
बाणांनीं विधिले, आणि त्याचा ध्वज, छत्र व
धनुष्य तोडून टाकून सिंहासारखी गर्जना
आरंभिली! राजा, ह्याप्रमाणे सहदेवाने एक-
सारखा बाणवर्षाव करून शकुनीचीं सर्व मर्मस्थळे
भेदून त्याचा ध्वज, छत्र व धनुष्य हीं तोडून
टाकिल्यावर बाणांचा घोर भडिमार आणखी
तसाच चालविला; परंतु ते पाहून सुबलपुत्राला
मनस्वी क्रोध चढला आणि तो त्या रणसंम-
र्दांत सुवर्णमंडित प्रासासहित सहदेवाला ठार
मारण्याच्या हेतूने त्याजवर लागलाच तुटून
पडला! राजा, तेव्हां माद्रीसुताने शकुनीच्या
हातांतला तो प्रास व त्याचे दोन बळकट बाहु
ह्यांवर तीन भल्ल बाण सोडिले व त्यांस एक-
दम छेदून टाकून तो रणांगणांत मोठ्या आवे-
शाने गर्जू लागला! राजा, नंतर त्याने ताबड-
तोब नीट नेम धरून अतिशय कठोर अशा
पोलादाचा एक सुवर्णपुंख भल्ल बाण त्याजवर
टाकिला आणि त्याचे मस्तक तोडून अंतरिक्षांत
उडविले! राजा, अशा प्रकारे सूर्यासारख्या
देदीप्यमान् अशा सुवर्णमंडित बाणाने सहदेवा-
ने नेमकेच शकुनीचे मस्तक छेदिले, तेव्हां
रणांगणांत कौरवांच्या दुष्ट मसलतीचे मूळ
कारण असे तें शिर खाली पडत आहे तो
त्याजबरोबर त्या दुरात्म्या सौबलाचे धडही
एकदम भूतलावर कोसळले! राजा, ह्या प्रकारे
सहदेवाने प्रथम शकुनीचे बळकट बाहु तोडिले,
मग त्याचे मस्तक उडविले, आणि नंतर रुधि-
राने न्हालेले तें शकुनीचे धड थरथरत त्याच्या
रथांतून खाली पडले; व मग शकुनीचे तें रक्तांत
लडबडलेले शरीर मातींत लोळत आहे असे
पाहून तुझ्या योद्ध्यांची भीतीने पांचावर

धारण बसली आणि ते शस्त्रास्त्रांसह दशादिशांस
पळत सुटले ! राजा, त्या वेळी त्यांचीं मुखें
अगदीं सुकून गेलीं, ते देहभान विसरले,
गांडीवाच्या घोषानें त्यांना धडकी बसली,
आणि अत्यंत भयविह्वल होऊन तें कौरवांचें
चतुरंग दळ पळून गेलें ! असो; राजा, सह-
देवाच्या हस्तें शकुनि रथांतून भूतलावर पडला
तेव्हां कृष्णासहवर्तमान पांडवांना मोठा आनंद

झाला व ते रणांगणांत मोठ्या उत्साहानें शंख
वाजवूं लागले आणि त्यामुळे पांडवांच्या सर्व
सैनिकांना मोठा हर्ष वाटला ! नंतर सर्वेज्जण रणां-
गणांत सहदेवाच्या समीप प्राप्त झाले आणि
त्यांनी त्याचा गौरव करून त्यास म्हटलें:—
'वीरा तूं, सुदैवानें तो दुष्ट दुरात्मा शकुनी व
त्याचा पुत्र उलूक ह्यांस समरांगणांत वधिल्लेस
हें फार उत्तम केल्लेस !'



ऋदप्रवेशपर्व,

—*—

अध्याय एकोणतिसावा.

—:०:—

दुर्योधनाचा ऋदप्रवेश.

संजय सांगतो:—हे महा राजा, मग सैवलाचे अनुयायी अनिश्चय खवळले आणि त्यांनी प्राणांकडे न पहातां समरांगणांत पांडवांस घेरलें तेव्हां सहदेवाच्या जयार्थ तत्पर अमलेल्या अर्जुनांनं व चवताळलेल्या भुजंगाप्रमाणें दिम्पणाच्या तेजस्वी भीममेनांनं त्यांशीं तोंड दिलें; व शक्ति, ऋष्टि व प्राम हातांत घेऊन सहदेवाला खाऊं कीं गिळूं करीत आलेल्या त्या वीरांचा संकल्प अर्जुनांनं गांडीवाच्या योगानें फोल करून टाकला ! त्यांनं भल्ल बाणांनीं त्या धावून येत अमलेल्या योद्ध्यांचे शस्त्रें घेतलेले उजवे हात तोडले. मस्तकें कापलीं आणि त्यांच्या घोड्यांचींही छकलें उडविलीं. तेव्हां रणांत संचरणाच्या लोकेकवीर सव्यसाचींनं अतिविद्ध केलेले ते घोडे गतप्राण होऊन त्यांनीं जमीन गांठली ! मग आपल्या सैन्याचा अगदी फडशा उडालेला पाहून संतप्त झालेल्या दुर्योधनांनं उरलेले सर्व हत्ती, घोडे, पदाति आणि पुष्कळ रथांचे समुदाय एकत्र जमवून त्यांस म्हटलें, “ वीरहो, सुहृद्गणांसह सर्व पांडवांस रणांत गांठून ठार करा; आणि पांचाल्य धृष्टद्युम्नाला त्याच्या सैन्यासह कंठस्नान घालून सत्वर मार्गें परता. ”

राजा, दुर्योधनाचें तें भाषण त्या रणमस्त वीरांनीं शिरसा मान्य केलें आणि तुड्या पुत्राच्या आज्ञेप्रमाणें ते रणांगणांत पांडवांवर धावले. याप्रमाणें ते महायुद्धांतून वांचलेले लोक वेगानें चाल करून येत असतां पांडवांनीं त्यांवर सर्पाकार बाणांचा भडिमार केला; आणि

हे भरतश्रेष्ठा, दोन घटकांच्या अवकाशांत त्या महात्म्यांच्या हातून तें सर्व सैन्य धारातीर्थीं पतन पावलें. त्या वेळीं त्यांना तें कोणीच त्राता मिळाला नाहीं; पण पुढें सरसावलेल्या त्या निर्भारी सैन्यांनं भीतीनं विलकुल माघार घेतली नाहीं. तेव्हां घोड्यांचें धावणें व सैनिकांची चाल, यांमुळें सर्व आकाश धुळींनं व्यापून गेलें; आणि रणांगणांत दिशा, उपदिशा वगैरे कांहींच कळेनांमं झालें. राजा, नंतर पांडवांच्या सैन्यांतील पुष्कळ वीर बाहेर पडले; आणि त्यांनीं दोन घटकांपर्यंत तुड्या लोकांची सारखी कत्तल चालविली. तेव्हां मग तुड्या त्या सैन्यापैकीं कोणीच अवशिष्ट राहिला नाहीं—सर्वच ठार झाले ! प्रभो धृतराष्ट्रा, तुड्या पुत्राकडे जमा झालेलें अकराच्या अकरा अक्षौहिणी सैन्य पांडुसैन्यांच्या हातून युद्धांत निधन पावलें; आणि, हे राजा, तुड्या पक्षाकडील त्या एक हजार थोर राजापैकीं एकटा दुर्योधन तेवढा जिवंत होता—पण तोही अत्यंत जखमी झालेला दिमत्त होता ! मग त्यांनं चोहोंकडे पाहिलें तें सर्व पृथ्वी शून्याकार झालेली आहे, आपला एकही योद्धा जवळ नाहीं, आणि पांडव मात्र पुष्कळमे दिमत्ताहेत, त्यांना हर्षाच्या उकळ्या येत आहेत. ते वरचेवर गर्जना करिताहेत व अगदीं सज्ज राहिले आहेत, असें त्यांच्या दृष्टीस पडलें. तेव्हां, हे महाराजा, आपणाजवळ कोणी नाहीं आणि पांडवांची अशी तयारी आहे हें पाहून व त्या महात्म्यांचे बाणांचे सणसणाट ऐकून दुर्योधनास फार विषाद वाटला; त्याच्या चेहऱ्यावर खिन्नता पसरली; आणि आतां येथून निघून दूर जावें असें त्या बलवाहनहीन राजाच्या मनानें घेतलें !

धृतराष्ट्रांनं म्हटलें:—बरें सूता, मी तुला असें विचारितों, माझे सर्व सैन्य मरून शिबिर ओस पडलें त्या वेळीं पांडवांकडे किती सैन्य

शिल्क राहिलें होतें? संजया, तूं या कामीं मोठा कुशल आहेस; तेव्हां हें मला सांग. त्याचप्रमाणें तो सैन्यक्षय पाहून अगदीच एकाएकी राहिलेला माझा मतिमंद पुत्र राजा दुर्योधन यानें पुढें काय केलें, तेंही सांग.

संजय सांगतो:—राजा, दोन हजार रथ, सातशें हत्ती, पांच हजार घोडे आणि दहा हजार पायदळ इतकेंच काय तें पांडवांच्या त्या अफाट सैन्यापैकीं बाकी उरलें होतें. तथापि तें सैन्य घेऊन धृष्टद्युम्न व्यवस्थेनें रणांत उभा होता; आणि इकडे, हे भरतश्रेष्ठा, दुर्योधन केवळ एकटा व निराधार पडला! त्या रथिवराम रणांत आपला साह्यकर्ता कोणीच दिसेना! शत्रूंच्या तर गर्जना चालू होत्या! याप्रमाणें, राजा, आपल्या सैन्याचा पूर्ण संहार होऊन आपण केवळ एकटे पडलों असें जेव्हां त्यानें पाहिलें, तेव्हां त्याला भीति वाटून तो आपला मेलेला घोडा सोडून पूर्वेच्या बाजूम वेगानें पळून गेला! तो अकरा अक्षौहिणींचा अधिपति तुझा पुत्र तेजस्वी दुर्योधन गदा हातांत घेऊन पार्यांच सरोवराकडे निवृत्त गेला! तो पार्यांच जात असतां फार दूर गेला नाही तोंच त्याला धर्मशील व ज्ञानी विदुराचें भाकित आठवलें! 'खरोखर त्या महाप्रज्ञावंतानें रणांत आमची व सर्व क्षत्रियांची अशी होळी होणार म्हणून पूर्वीच जाणलें होतें!' असे विचार त्याच्या मनांत घोळूं लागले. तो सैन्यक्षय झालेला पाहून त्याचें हृदय दुःखानें करपून गेलें होतें आणि डोहांत प्रवेश करावा अशी त्याला इच्छा झाली होती.

इकडे, हे महाराजा, आतांच सांगितल्याप्रमाणें धृष्टद्युम्नप्रभृति पांडवांकडील वीर चवताळून तुझ्या सैन्यावर घमरले; शक्ति, ऋषि व प्राम हातांत घेतलेल्या व गर्जणाऱ्या तुझ्या त्या सैन्याचा संकल्प अर्जुनानें गांडीवाच्या योगानें

विकल केला; आणि अमात्यबांधवांसहवर्तमान त्या सर्वांम त्थानें तीक्ष्ण शरानां ठार केलें तेव्हां तो श्वेतवाहन अर्जुन फारच शोभू लागला. राजा, रथ, वाजी व कुंजर यांसहवर्तमान सुबलपुत्र शकुनि निघन पावला, तेव्हां खर्ची केलेल्या महावनाप्रमाणें तुझ्या सैन्याची अवस्था झाली; आणि दुर्योधनाच्या त्या लक्षावधि सैन्यापैकीं वीर अध्वत्यामा, कृतवर्मा, गौतम कृपाचार्य आणि तुझा पुत्र राजा दुर्योधन, यांन्यतिरिक्त दुसरा कोणीच महारथी जिवंत अमलेला दिमला नाही!

इकडे मला पहातांच धृष्टद्युम्न सात्यकीम म्हणाला, "ह्याला घेऊन काय करावयाचें आहे? हा जिवंत अमून नमून मारवाच आहे!" धृष्टद्युम्नाचें हें भाषण ऐकून तो महापराक्रमी शिनेय तीक्ष्ण खड्ग परजून मला मारण्यास उठला. इतक्यांत महाज्ञानी कृष्णद्वैपायन त्या ठिकाणीं प्रकट होऊन त्याला म्हणाले, "मंजयाला जिवंत सोड, त्याला कदापि मारूं नको!" द्वैपायनांचा शब्द ऐकतांच शिनिपौत्रानें हात जोडले आणि मग मला सोडून देऊन तो म्हणाला, "मंजया, जा, तुजें कल्याण असो."

याप्रमाणें त्याची अनुज्ञा मिळाल्यावर कवचहीन निःशस्त्र व रक्तबंबाळ झालेला अमा मी संन्याकाळचे वेळीं नगराकडे यावयास निघालों. मी ज्या रम्यानें चाललों होतो त्याच रम्यावर सुमारे एक कोम गेल्यानंतर अत्यंत प्रायाळ झालेला व हातांत गदा अमून एकटाच बसलेला दुर्योधन माझ्या दृष्टीस पडला! मला पाहतांच एकदम त्याचे डोळे पाण्यानें भरून आले व त्याच्यानें मजकडे पाहावेना. पण शेवटीं मला तमा दीनासारखा उभा पाहून त्यानें वर मान केली. तो रणांत एकटा राहिलेला व शोकाकुल झालेला पाहून मलाही दुःखाचें भरतें आलें

आणि मुहूर्तमात्र माझ्याही तोंडांतून शब्द निघाला नाही ! मग कांहीं वेळानें, मला शत्रूंनीं कसें धरलें, कृष्णद्वैपायनांच्या प्रसादानें माझी तेथून कशी सुटका झाली, वगैरे वृत्तांत मी त्याला सांगितला. पण, राजा, दुर्योधन नुसता ध्यानस्थामारवा बसला होता; तो मुहूर्ताभरानें शुद्धीवर आला, आणि आपले भाऊ व सर्व सैन्ये यांचा त्यानें मला समाचार विचारला. मीं सर्व प्रत्यक्ष पाहिलेंच होतें, तें त्याला सांगितलें. मीं म्हटलें, “ सर्व भाऊ व सैन्य नाश पावले, आणि तुझ्याकडचे फक्त तीन रथी शिल्लक उरले आहेत. असें निघतेवेळीं कृष्णद्वैपायनांनीं मला सांगितलें. ” हें ऐकून दुर्योधनानें एक मोठा उमासा टाकला; आणि तो पुनःपुनः मजकडे पाहूं लागला ! मग माझ्या खांद्यावर हात टाकून तो मला म्हणाला. “ संजया, तुझ्यावांचून ह्या संग्रामांत कोणाच वांचला नाही ! मला एकही जोडीदार दिसत नाही आणि पांडव तर सहायसंपन्न आहेत. असो; संजया, आतां प्रज्ञाचक्षु धृतराष्ट्र राजाला जाऊन सांग कीं, ‘ तुझा पुत्र दुर्योधन डोहांत शिरला ! ’ कर्णासारखे जिवाचे मित्र सोडून गेले, भाऊ, पुत्र यांचाही वियोग झाला, आणि पांडवांनीं राज्य हिरावून घेतलें, अशा स्थितींत माझ्यासारखा कोण प्राण धारण करील बरें ? घडलेला हा सर्व प्रकार तूं त्यांना सांग. तसेंच, महायुद्धांतून मी निभावलीं आहे, आणि अत्यंत प्रायाळ झालीं आहे, तथापि जिवंत असून या खोल पाण्याच्या सरोवरांत गुप्तपणें राहिलीं आहे, हेही कळीव ! ” हे महाराजा, असें म्हणून त्यानें त्या महाऱ्हादांत प्रवेश केला आणि माथेच्या योगानें उदक स्तंभित करून टाकलें. दुर्योधन उदकांत गुप्त झाल्यावर मी एकटाच तेथें बसलों होतो, तो ज्याचे घोडे थकून गेले आहेत असे तीन रथी एकत्र होऊन त्याच

ठिकाणाकडे येतांना मीं पाहिले. ते तीन रथी म्हणजे वीर कृपाचार्य, रथिश्रेष्ठ अश्वत्थामा आणि भोजाधिपति कृतवर्मा हेच होते. ते तिघेही बाणांनीं फारच जवळीं झाले होते. मला पाहतांच त्यांनीं त्वरेनें घोडे पिटाळले आणि माझ्या जवळ येऊन ते म्हणाले, ‘ संजया, तूं जिवंत सुटलास हें सुदैव होय ! ’ मग, हे जनाधिपा, त्या सर्वांनीं तुझ्या पुत्राविषयीं “ संजया, आमचा दुर्योधन राजा जिवंत आहे ना ? ” अशी मजजवळ चौकशी केली. तेव्हां ‘ राजा खुशाल आहे ’ म्हणून मीं त्यांना सांगितलें; आणि दुर्योधन मजजवळ जें बोलला होता तेंही सर्व कळवून, ज्या ऱ्हादांत राजानें प्रवेश केला तो मीं त्यांना दाखविला. राजा, माझे तें भाषण ऐकून अश्वत्थामा हा त्या ऱ्हादाकडे सारखी टक लावून फारच काकुळतीनें विलाप करूं लागला, “ अरे ! आम्ही जिवंत आहों हें राजाला माहीत नाही हें फार वाईट झालें. त्याच्या साह्यानें शत्रूंशीं लढण्याला आम्ही पुरेसे आहों ! ” अशा प्रकारें त्या महारथांनीं पुष्कळ वेळपर्यंत त्या ठिकाणीं विलाप केला; पण पांडव रणांत आलेले पाहून ते रथिश्रेष्ठ त्वरेनें पळून गेले; व कृपाचार्यांच्या सुपरिष्कृत रथावर मला बसवून ते कत्तलींतून वचावलेले तीन रथी शिविरांत आले. त्या ठिकाणीं भयतस्त झालेले लोकांचे थवे होते ते त्या सूर्यास्ताच्या वेळीं तुझ्या पुत्रांचा संहार उडालेला ऐकून सर्व मोठ्यानें आक्रोश करूं लागले ! मग, हे महाराजा, स्त्रियांच्या संरक्षणास असलेले वृद्ध लोक राजस्त्रियांस घेऊन नगराकडे निघाले. तेव्हां तेथें सर्व सैन्याचा निःपात झाल्याचें ऐकून त्या स्त्रियांमध्ये सर्वत्र आक्रोश व रडारड सुरू होऊन मोठा कळोळ माजला. राजा, एकसारख्या रडणाऱ्या त्या स्त्रियांनीं कुररीप्रमाणें सर्व भू-मंडल दणाणून सोडलें. त्या बोटें मोडीत होत्या,

हातांनीं मस्तकें पिटीत होत्या; जेथें तेथें आ-
क्रोश करीत होत्या, मोठ्यानें हाहाकार करीत
होत्या, उर बडवीत होत्या, आणि शोक
करीत व रडत ओरडत चालल्या होत्या !
राजा, दुर्योधनाच्या अमात्यांचेही कंठ भरून
येऊन ते अत्यंत व्याकूल झाले होते. त्यांनीं
मग राजस्त्रियांस घेऊन हस्तिनापुराकडे प्रयाण
केलें; हातांत सतत राजदंड वागविणाऱ्या
द्वारपालांचीही तशीच अवस्था झाली; स्त्रियांचे
रक्षक स्पर्धा वाटण्याजोगीं आस्त्ररणे वातलेले
शुभ्र विद्याने गोळा करून नगराकडे धावले
आणि दुसऱ्या कित्येकांनीं खेंचरें जोडलेल्या
रथांत बसून व आपआपल्या स्त्रियांस घेऊन
नगराम प्रयाण केलें. हायहाय ! पूर्वी
रस्त्यावरची तर गोष्टच नको, पण वाड्यामध्येही
प्रत्यक्ष सूर्याला देखील ज्यांचें नग्न कर्णें दृष्टीस
पडलें नव्हतें, त्याच स्त्रिया आज नगराप्रत
आलेल्या सामान्य लोकांनीं पाहिल्या ! अशा
प्रकारें त्या सौकुमार्यसंपन्न स्त्रिया, स्वजन-
बांधवांचा नाश झाल्यामुळें लग्नर्गांनीं आश्र-
यार्थ गांवांत येण्यास निघाल्या ! राजा, त्या
तर बोलूनचालून स्त्रियाच, पण त्या वेळीं
गुराखी-मंडपाळांपासून झडून मारे लोक
भीमसेनाच्या भयानें व्याकूल होऊन व भांवा-
वून जाऊन धूम ठोकून गांवाकडे धावले ! त्या
वेळीं पांडवांची त्यांना इतकी विलक्षण दह-
शत बमली होती की, ते एकमेकांकडे केविल-
वाण्यासारखे पहात धूम नगराकडे धावत होते !
याप्रमाणें ती अतिभयंकर पळापळ चालली अमतां
शोकमंमूढ झालेल्या युयुत्सुनें प्राप्तकालाविपर्या
विचार केला. तो आपल्याशीं म्हणाला, 'एका-
दश चमूंचा अधिपति दुर्योधन, परंतु त्यालाही
भीमपराक्रमी पांडवांनीं रणांत जिंकिलें, त्याचे
भाऊ ठार मारिले, आणि भीष्मद्रोणप्रभृति
झडून मारे कौरववीर यमलोकीं पाठविले !

माझ्या कांहीं भाग्ययोगानें मीच तेवढा चुकून
वांचलों. हीं सभोवतालचीं सर्व शिबिरे उध्वस्त
झालीं; हतनाथ व हततेज झालेले सेवक
चोहोंकडे पळत आहेत; कल्पनातीत दुःखानें
हे पोळले आहेत; भीतीनें त्यांचे डोळे कावरे-
बावरे झाले आहेत आणि जणू सिंहच पाठीस
लागल्याप्रमाणें भयभीत होऊन हे दशादिशांस
धावत सुटले आहेत ! दुर्योधनाचे जे थोडकेसे
साचिव अवशिष्ट राहिले होते ते राजस्त्रियांस
घेऊन नगराकडे जात आहेत; तेव्हां प्रभु
युधिष्ठिर व भीमसेन गांची अनुज्ञा घेऊन
आपणही यांच्याबरोबर नगरांत प्रवेश करावा
हेंच मांप्रत आपलें कालप्राप्त कर्तव्य होय,
अमें मला वाटलें.

नंतर, राजा, त्यानें आपला हा अभिप्राय
युधिष्ठिर व भीम ह्या दोघांस निवेदन केला.
तेव्हां नित्यकारुणिक अमा युधिष्ठिर राजा
त्यावर संतुष्ट झाला; आणि त्यानें त्याला
प्रेमानें आर्त्तान्न जाण्यास अनुज्ञा दिली. मग
युयुत्सुनें रथारूढ होऊन वेगानें घोडे पिटाळले
व लवकरच त्यानें त्या राजस्त्रियांस गांठलें; आणि
त्यांस नीट संभाळून नगरांत पांचविलें. सूर्यास्ता-
च्या सुमारास तो त्यांसह नगरांत शिरला.
त्यावेळीं त्याचा कंठ दाटून आला होता, आणि
डोळे पाण्यानें भरले होते. महाज्ञानी विदुर नुक-
ताच राजवाड्यांतून बाहेर आलेल्या त्याला भेटला,
त्याचेही डोळे अश्रुपूर्ण झाले होते, व हृदय
दुःखानें दुभंग झाले होते. त्याला पाहतांच युयु-
त्सुनें त्यास प्रणाम करून तो जवळच उभा
राहिला. तेव्हां तो मत्पश्रुति विदुर त्यास
म्हणाला, " बाळा, कौरवांचा एवढा मंहार
उडाला अमतां तुं जिवंत आहेस हें सुंदेव होय.
पण राजप्रवेशावरोंवर यावयाचें मोडून तुंच आधीं
थेंथें कां आलास वरें ? याचें जें कारण पडलें
अमेळ तें मला सविस्तर निवेदन कर. "

युयुत्सूने उत्तर दिलें:—भाऊबंद, पुत्र व भ्राते ह्या सर्वासहवर्तमान शकुनीचा घात झाला आणि राजाजवळ थोडा परिवार शिलक राहिला होता त्याचाही जेव्हां चक्काचूर उडाला, तेव्हां राजा आपल्या घोड्यावरून उतरून पूर्वेकडे तोंड करून पळून गेला. राजा निघून गेल्यावर छावणीतील सर्वच लोक भयचकित होऊन नगराकडे धावत सुटले; तेथील अधिकाारीही भयभीत झाले; आणि राजाच्या स्त्रिया व त्याच्या सर्व बंधूंचा स्त्रीपरिवार मिळालीं त्या वाहनांवर घालून त्यांसह भीतीनें तेथून पळाले. मग मी धर्मराज व श्रीकृष्ण यांची आज्ञा घेऊन त्या पळणाऱ्या लोकांचें रक्षण करित त्यांच्या बरोबर शहरांत आलों !

वैश्यापुत्र युयुत्सूचें तें भाषण ऐकून, आपद्धर्मादि सर्वे धर्मे जाणणाऱ्या विदुरांनं विचार केला कीं, ' हा म्हणतो हें वाजवी आहे. यानें केले असेंच करण्याची ही वेळ होय. ' असा विचार करून त्यानें युयुत्सूची प्रशंसा केली आणि म्हटलें, ' भरतांचा क्षय झाला. तेव्हां तूं केलेंस हें सर्व कालमानानुसार योग्य असेंच आहे. तूं खरा अनुक्रोशपूर्वक कुलधर्म पाळलास. आमच्या सर्वच वीरांचा निःपात उडाला असतां त्यांतून त्वाचून तूं परत नगरांत आलेला आम्ही पहात आहों हें आमचें भाग्य होय. अमावास्यानंतर प्रजांच्या दृष्टीस आल्हाद देणाऱ्या द्वितीयेच्या चंद्राप्रमाणें तूं आज आमच्या नजरेस पडलास. लोभी, अदूरदर्शी, पुष्कळ प्रकारें विनविलें असतांही न ऐकणारा,

दुर्दैवामुळें ज्याची विवेकबुद्धि नष्टप्राय झाली आणि म्हणून जो आज दुःखार्त होऊन गेला आहे अशा अंधाची काठी, पुत्रा, तूं नीट धरशील अशी मला आज्ञा आहे. आजची रात्र येथें विश्रांति घेऊन उदर्याक त्वां युधिष्ठिराकडे जावें. ' असें बोलून, ज्याचे नेत्र पाण्यानें भरून आले आहेत अशा त्या विदुरानें युयुत्सूस हातीं धरून राजनगरांत मोठ्या कष्टानें प्रवेश केला. त्या वेळची ती नगरची कळा काय पुसवी ! पौरजनांवर व सर्व देशावर ओढवलेल्या अतर्क्य दुःखामुळें त्यांत सर्वत्र सारखा हाहाकाराचा ध्वनि चालला आहे, तेथील आनंद व कळा पार मावळून गेली आहे, तें बहुतेक ओस व उन्वस्त झालिलें असून चोहोंकडे शुकशुकाट झाला आहे, आणि सभोवतींच्या उद्यानांचा विध्वंस झाल्यामुळें भयाण दिसणाऱ्या सरोवराप्रमाणें तें भयाण होऊन गेलें आहे, असा तेथील तो हृदयद्रावक देखावा पाहून, सर्व धर्माधर्म व तत्त्वज्ञान जाणणारा विदुर, तथापि त्याचेंही अंतःकरण अगदीं विव्हल होऊन गेलें, आणि, राजा, त्यानें राहून राहून दीर्घ निःश्वास सोडले. मग त्याच्या बोलण्यास मान देऊन युयुत्सु त्या रात्री आपल्या घरी राहिला. तेथें त्याच्या स्वजनांनीं त्याचें आदरातिथ्य केलें, परंतु तो अत्यंत दुःखित झाला असल्यामुळें व भरतकुलोत्पन्न वीरांचा एकमेकांकडून झालेला भयंकर संहार त्याच्या अंतःकरणांत सारखा घोळत असल्यामुळें त्यांत त्यास कांहींच गोडी वाटली नाहीं !



गदायुद्धपर्व.

अध्याय तिसावा.

—:—

दुर्योधनाचा शोध.

धृतराष्ट्र विचारितोः—संजया, पांडवांनी रणांगणांत माझी सर्व सैन्ये ठार केलीं अमतां त्यांनील अवशिष्ट वीरांनी म्हणजे कृतवर्मा, कृपाचार्य व वीर्यशाली द्रोणपुत्र यांनी व त्याच-प्रमाणें मंदमति दुर्योधन राजानें पुढें काय केलें ते मला सांग.

संजय सांगतोः— थोर थोर क्षत्रियांच्या स्त्रिया हस्तिनापुर गांठण्यामाठी वेगांन धावत सुटल्या, आणि शिविगांतील एकंदर सर्वच लोकांनी पळ काढल्यामुळें तें शून्य झालें. तेव्हां ते तीन रथी अतिशय उद्विग्न होऊन गेले; आणि विजयी पांडवांचे मिहनाद वंगरे जयशब्द ऐकून व आपला सर्व गोट उधळलेला पाहून त्या राजहितेच्छु वीरांना मायकाळच्या वेळीं तेथे राहाणें रुचलें नाहीं व मग ते पुनः व्हदाकडे गेले. तिकडे हर्षभरित झालेल्या धर्मशील युधिष्ठिरही दुर्योधनाम मारण्याची इच्छा धरून आपल्या भावांसहवर्तमान रणांगणांत चोहोंकडे हिंडत होता. राजा. तुझ्या पुत्राला जिंकण्याची इच्छा करणारे ते मंक्रुद्ध पांडव अतिशय यत्नपूर्वक शोध करीत हिंडत होते, तथापि दुर्योधन त्यांच्या दृष्टीम पडला नाहीं. कारण तो गदा हातांत घेऊन रणांतून जो लागवगीनें निघाला, तो त्या व्हदांतील उदक आपल्या मायेनें स्तंभित करून त्यांत शिरला होता. पांडवांनी त्याम पुष्कळ धुंडाळलें, परंतु तो सांपडला नाहीं. शेवटीं त्यांची वाहनें अतिशय थकून गेलीं, आणि मग तो नाद मोडून ते आपल्या सैनिकांसह आपल्या गोटांत जाऊन

स्वस्थ वसले. मग पांडवांची हालचाल बंद पडलेली पाहून ते कृपप्रभृति तिथेजण हळूहळू त्या व्हदाकडे जाऊं लागले; आणि राजा निजला होता त्या जलाशयाजवळ गेल्यावर ते त्या उदकसुप्त दुर्धर्ष राजाला उद्देशून म्हणाले, " राजा, उठ; आमच्यामहवर्तमान युधिष्ठिराशी युद्ध कर आणि पृथ्वी जिंकून तिचा उपभोग वे अथवा मरून स्वर्ग मिळव. दुर्योधना, आपलीच तेवढी सर्वस्वी हानि झाली आहे असें नाहीं. तर त्यांचेही सर्व सैन्य तूं ठार केलें आहेम ! आणि जे त्यांचे सैनिक शिल्क राहिले आहेत, त्यांशीं सामना देण्याम तूं समर्थ आहेम ! राजा, तुझी तडफ महन करण्याम ते समर्थ नाहींत; त्यांतून आम्ही तुजें रक्षण करीत अमतां तर मुळींच नाहींत ! यास्तव, हे भारता, उठ, बाहेर ये !

दुर्योधनानें उत्तर केलेंः— अशा भयंकर मनुष्यमंहारांतून तुम्हां पुरुर्षांभाम वांचलेलेमी पहात आहें हें माझे भाग्य होय. आपल्याला विश्रान्ति मिळाली आणि आपला शीण गेला, म्हणजे आपण सर्व मिळून त्यांम जिंकूं. तुम्हीही अतिशय थकलां आहां आणि आपल्याला अतिशयच जन्वमा झाल्या आहेत. शिवाय शत्रूंचें सैन्य अफाट आहे. यास्तव याच वेळीं युद्ध करणें मला रुचत नाहीं. वीरहो. जर तुमचें अंतःकरण इतकें थोर आहे. तर शत्रूंना जिंकणें ही कांही अद्भुत किंवा अशक्य गोष्ट नाहीं. आमच्या अर्गाही तशीच विलक्षण शक्ति आहे; परंतु मांप्रत पराक्रम करण्याचा हा काळ नव्हें. आजची एकच रात्र विश्रान्ति घेऊन उद्यांच तुम्हांमहवर्तमान रणांत टाकून शत्रूंची लढेन, याविषयी मला तर विलकूल मंदेह वाटत नाहीं !

संजय सांगतोः—यावर अश्वत्थामा त्या युद्धदुर्मद राजाला म्हणाला, " राजा, उठ. तुजें

कल्याण असो. आम्ही शत्रूस जिंकू. राजा, इष्टापूर्त, दान, सत्य व जय यांची शपथ घेऊन मी सांगतो की, मी आजच्या आज सोमकांस ठार करीन ! जर आजची रात्र संपण्यापूर्वी माझ्या हातून शत्रूंचा संहार झाला नाही, तर यज्ञादि पुण्यकर्मांचें मज्जनोचित फल मला प्राप्त न होवो ! आणि, हे जनाधिपा, सर्व पांचालांचा निःपात केल्याशिवाय मी आपलें हें कवच सोडणार नाही हें सत्य सांगतो, ऐकून ठेव ! ”

अशा प्रकारें त्यांचें संभाषण चाललें अमतां मांसाचीं ओझीं घेतलेले कांहीं थकलेले पारधी पाणी पिण्यासाठी त्याच डोहावर जरा पलीकडच्या बाजूला येऊन उतरले. हे महाराजा, ते पारधी दररोज परमभक्तिपूर्वक भीमसेनाला मांसाचीं ओझीं नेऊन देत असत. ते पलीकडे एकांतस्थलीं वसले होते, तेथून त्यांनी त्या तीन वीरांशीं चाललेलें दुर्योधनाचें भाषण श्रवण केलें; आणि कौरवेंद्राची युद्धाची इच्छा नाही असे पाहून, युद्धाची आकांक्षा करणाऱ्या त्या सर्व महाभनुर्धरांनी जी महान् प्रतिज्ञा केली, तीही त्यांनी ऐकिली. मग त्या कौरवांकडील तिघां महारथांना त्यांनी नीट न्याहाळून पाहिलें; आणि पाण्यांत असलेल्या व युद्धाची इच्छा न करणाऱ्या राजाविषयीं त्यांनी विचार केला; तेव्हां पाण्यातील राजा व बाहेरील ते तिघे वीर यांच्या भाषणांवरून तो उदकांत असलेला राजा म्हणजे दुर्योधनच असा त्यांचा निश्चय झाला. कारण, कांहीं वेळापूर्वी भीमसेन दुर्योधनास शोधीत फिरत असतां त्यास हे व्याध सहज भेटले होते, तेव्हां त्यानें ‘सुर्योधन कोठें पाहिला काय’ म्हणून त्यांस विचारिलें होतें. तेव्हां, राजा, भीमसेनाच्या त्या भाषणाचें त्यांस स्मरण होऊन ते परस्परांशीं हळूहळू बोलू लागले, “ दुर्योधन कोठें आहे तें

सांगितलें म्हणजे पंडुपुत्र भीमसेन आपल्याला द्रव्य देईल. या वेळीं दुर्योधन डोहांत आहे म्हणून आम्हीं त्यास वर्दी दिली, तर तो आम्हांला पुष्कळ द्रव्य देईल, हें अगदीं उघड दिमत आहे. यास्तव अमर्षीं दुर्योधन उदकांत निजला आहे. हें सांगण्यासाठीं चला आपण सर्वजण युधिष्ठिराकडे जाऊं आणि त्याला व भीमसेनाला दुर्योधन या डोहांत असल्याची बातमी देऊं. ती ऐकून तो खूप संतुष्ट होईल व आपणांस चांगलें बक्षीस देईल. चला आतां, हें रक्त जाटवणारें शुष्क व भिकार मांस आपणांस काय करावयाचें आहे ! आज आपल्या जन्माची दद्रात मिटणार ! ”

राजा, असें म्हणून ते अतिशय हर्षित झालेले धनार्थी लुब्धक मांसाचे भारे घेऊन शिविराम आले. इकडे त्या कपटी व पापी दुर्योधनाचा पुरता निकाल करूं इच्छिणाऱ्या वीर पांडवांस तो रणांगणांत कोठें सांपडेना, तेव्हां त्यांनीं चौहोंकडे त्यास शोधण्यास आपले सैनिक पाठविले. परंतु त्या सर्वांनीं परत येऊन ‘दुर्योधन सांपडत नाही’ असेंच धर्मराजास कळविलें. हे भरतर्षभा, चारांचें हें भाषण ऐकून धर्मराजा अतिशय चिंतित पडला, आणि उसासे टाकू लागला. राजा, याप्रमाणें पांडव दीनमुद्रेनें वसले असतां ते लुब्धक त्या सरोवराजवळून निघून त्वरेनें शिविराम आले. दुर्योधनास पाहिल्यामुळें त्यांस हर्ष झाला होता आणि त्यांत ते इतके गर्क झाले होते कीं, द्वारपालांनीं त्यांस प्रतिकार केला असतांही त्यांस न जुमानतां व हा प्रकार प्रत्यक्ष भीमसेन पहात असतांही तसेच आंत शिरले ! त्यांनीं त्वरेनें महाबली भीमसेनाजवळ जाऊन त्यास घडलेला व ऐकिलेला सर्व वृत्तांत निवेदन केला. तेव्हां परंतप भीमसेनानें त्यांस विपुल द्रव्य दिलें; आणि धर्मराजाच्या तें सर्व वर्तमान

सांगितले. तो म्हणाला, “ राजन्, माझ्या लुब्धकांनी त्या दुर्योधनाचा पत्ता लावला. ज्याच्याकरितां तुला चिंता पडली आहे, तो दुर्योधन जल स्तंभित करून आंत निजला आहे ! ”

राजा धृतराष्ट्रा, भीमसेनाच्या तोंडचे ते प्रिय भाषण ऐकून अजातशत्रु धर्मराजाला व त्याचे भावांना मोठा हर्ष झाला; व तो महाधनुर्धर डोहांत शिरला आहे असें ऐकतांच श्रीकृष्णाला बरोबर घेऊन तो मोठ्या लगबगीने त्या ठिकाणी गेला. राजेंद्रा, मग आनंदित झालेले पांडव व सर्व पांचाल यांमध्ये मोठी गडबड झाली; सिंहनाद होऊं लागले; भुजा वाजूं लागल्या; आणि हे भरतर्षभा, ते क्षत्रिय त्वरेने त्या द्वैपायन-हृदाकडे गेले. “ पापी दुर्योधन सांपडला ! ” “ दुर्योधन प्रत्यक्ष द्रिमला देखील ! ” इत्यादि प्रकारें ते सोमक मोठ्या हर्षानें चोहोंकडे ओरडूं लागले; आणि त्वरेनें बाहेर पडलेल्या त्यांच्या वेगवान् रथांचा प्रचंड शब्द आकाशाम जाऊन भिडेल असा होऊं लागला. त्यांचे घोडे थकले अमतांही ते मोठ्या त्वरेनें दुर्योधनाम गांठण्याच्या इच्छेनें युधिष्ठिर जाईल निकडे त्याच्या मागोमाग चालले. अर्जुन, भीमसेन माद्रीपुत्र नकुल-सहदेव, पांचाल्य धृष्टद्युम्न, अर्जिक्य शिखंडी, उत्तमौजा, युधामन्यु, महारथी सात्यकि, पांचालांतील अवशिष्ट वीर, त्याचप्रमाणें, राजा, द्रौपदीचे पुत्र, सर्व घोडे व हत्ती आणि शेंकडों पदाति याप्रमाणें चालले होते. नंतर, हे महाराजा, प्रतापी धर्मराजा हा जेथें दुर्योधन होता त्या घोर द्वैपायन-हृदावर येऊन पोचला. हे प्रभो भारता, तुझा पुत्र दैवदुर्विलसितामुळें अत्यंत अद्भुत विधीनें जलावरोध करून जेथें बसला होता, तें मरोवर अत्यंत मनोहर, शीत व स्वच्छ पाण्यानें भरलेंलें आणि दुसरा मागरच कीं काय असें गंभीर होतें; आणि. हे मनुजेंद्रा. तो गदापाणि राजा

तेथें खोल पाण्यांत शयन केला असल्यामुळें कोणाही मनुष्यास दृगोच्च होण्याजोगा नव्हता. याप्रमाणें तो तेथें असतां मेघांच्या गर्जनेप्रमाणें तुमुल शब्द त्याच्या कार्णी आला; आणि. हे राजेंद्रा, त्या शब्दांमागोमाग युधिष्ठिर राजाही आपल्या सोदरांसहवर्तमान प्रचंड शंभनादानें व रथांच्या नेमिघोषानें मेदिनी कंपायमान करीत व प्रचंड धूळ वर उडवीत तुझ्या पुत्राचा वध करण्यासाठीं तेथें आला. हे मह राजा, युधिष्ठिराच्या मेन्याचा शब्द कार्णी पडतांच कृतवर्मा, कृपाचार्य व अश्वत्थामा हे महारथी राजाला म्हणाले, “ हे अत्यंत हर्षित झालेले जयोन्मत्त पांडव इकडे येत आहेत. यास्तव आम्ही तृप्त येथून निघून जातों; त्याम आपण अनुज्ञा द्यावी. ”

त्या चलाख वीरांचें तें भाषण ऐकून दुर्योधनानें ‘ ठीक आहे ’ असें म्हणून मायेच्या योगानें हृदांतील उदक स्तंभित केलें, आणि हे महाराजा, अत्यंत शोकपरायण झालेले ते कृपप्रभृति तिघे रथी तेथून दूर निघून गेले; आणि, हे मारिषा, पुष्कळ लांब गेल्यावर एक पिंपळाचा वृक्ष पाहून ते अतिशय थकलेले योद्धे राजाविषयीं चिंता करीत तेथें बसले. इकडे महाबली दुर्योधन हृदाचें पाणी अगदीं स्तब्ध करून आंत निजून राहिला. इतक्यांत युद्धेच्छु पांडवही त्या ठिकाणीं येऊन पोचले; आणि, राजा, निकडे ते कृपप्रभृति तिघे रथी रथांचे घोडे सोडून, “ युद्ध कमं उपस्थित हाईल, राजाची स्थिति काय होईल, पांडवांना दुर्योधन कसा सांपडेल ! ” इत्यादि प्रकारें चिंत्न करीत तेथें बसले !

अध्याय एकतिसावा.

—:०:—

सुयोधनयुधिष्ठिरसंवाद.

संजय सांगतो:—ते तिघे रथी दूर गेले न गेले तोंच ते पांडव जेथें दुर्योधन होता त्या व्हदावर येऊन पोचले. हे कुरुश्रेष्ठा, त्या द्वैपायन-व्हदावर येतांच दुर्योधनानें मरगेवर स्तंभित केलेले पाहून धर्मराज वामुदेवाला म्हणाला, “कृष्णा, धार्तराष्ट्रांनें उदकावरही कशी माया टाकली आहे वय. उदक निश्चल करून हा निजला आहे. आतां त्याला मनुष्यापामून र्भाति नाही. अरे, ह्या दैवी मायेचा प्रयोग करून हा उदकांतर्गत झाला आहे, तथापि अशा लुच्चेगिरीनें हा कपटी माझ्या हातून जिवंत मुटणार नाही खाम! जरी आज स्वतः वज्रधारी इंद्र युद्धांत याचें माद्य करू लागला तरी. माधवा, आज हा युद्धांत मरून पडले-लाच लोकांच्या दृष्टीम पडेल !”

वामुदेव म्हणाला: - हे भारता. मायावी दुर्योधनाची ही माया मायेच्या योगानेंच हाणून पाड. युधिष्ठिरा, मायावी मायेनें मारावा हेंच खरें आहे. कपटाला कपट करणें हा राज-नीतीतील खरा व योग्य मार्ग होय. यास्तव, हे भरतश्रेष्ठा, अनेक धर्म्याधर्म्य उपायांनीं तूंही ह्या उदकावर मायाप्रयोग करून ह्या मायावी दुर्योधनाला जिंक. इंद्रानें युक्ति-प्रयुक्तीनेंच देवदानवांस जिंकिले; भगवान् विष्णूनें अनेक युक्ति लटवूनच बलीला वद्ध केले; महादैत्य हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु हे अशाच ऋषवर्णीनें प्राणांस मुकले; वृत्रामुरही अशा कपटकृत्यानेंच मारला गेला; आणि राजा. अशाच प्रकारांनीं श्रीरामचंद्रानें पौल-स्त्याचा पुत्र रावण गणपरिवारामहवर्तमान यमलोकीं पाठविला; तेव्हां तूंही कपटयोगाचा आश्रय करून शत्रूम जिंक. राजा, मीही पूर्वी

महादैत्य तारक व वीर्यवान् विप्रचित्ति हे पूर्व-कालीन दैत्य वाममार्गानेंच परलोकीं पाठविले. त्याचप्रमाणें वातापि, इल्वल, त्रिशिरा व मुंदोपमुंद राक्षस अशा क्रियेच्याच योगानें ठार मारिले. राजा, इंद्र स्वर्गाचा उपभोग घेत आहे तो तरी असल्या क्रिया व अभ्युपाय यांचा आश्रय केल्यामुळेंच! क्रिया ही मोठी बलवती आहे. तिजवांचून दुसरे कांहींच तिजप्रमाणें समर्थ नाही. दैत्य, दानव, राक्षस व राजे ह्या कपटक्रिया व अभ्युपाय यांच्या योगानेंच निहत झाले आहेत. यास्तव, युधिष्ठिरा, तूंही क्रिया (माया) कर.

संजय सांगतो:—हे भरतकुलोत्पन्ना महा-राजा. याप्रमाणें वामुदेवानें सांगितलें असतां संशितव्रत कुंतीपुत्र युधिष्ठिर तुझ्या जलस्थ पुत्राम हास्यपूर्वक म्हणाला, “सुयोधना, सर्वे क्षत्रियांचा व स्वकुल्याचाही घात करून तूं पाण्यांत दडण्याचा हा उपक्रम किमर्थ केल्यास बरें? केवळ जिवाची आशा धरून तूं आज जलाशयांत शिरला आहेस. पण हे योग्य नव्हे! यास्तव, वा सुयोधना, ऊठ आणि आम्हांबरोबर युद्ध कर. हे नरश्रेष्ठा, आज तूं जो भयभीत होऊन उदकांत लपला आहेस, त्या तुझा तो पूर्वीचा गर्व व ताठा कोणीकडे गेला? अरे. मभेमध्ये सर्व लोक तुला शूर, शूर, म्हणून म्हणतात. परंतु तूं तर आज उदकांत दडून बमलास. तेव्हां तुझी ते व्यर्थ प्रशंसा करतात असें मला वाटतें! तुझ्या अंगीं खरेंच शौर्य असेल तर ऊठ आणि युद्ध कर. तूं जात्या क्षत्रिय आहेस आणि त्यांतही विशेषकरून कौरवेय आहेस. तर आपलें कुल व जन्म यांचें तुला कांहीं तरी स्मरण असूं दे. अरे. कौरवांच्या थोर वंशांत आपलें जन्म झाल्याबद्दल तूं फुशारकी मारीत असतोस ना? मग आज युद्धांत भय पावून

येथें पाण्यांत शिरून कमा दडून वमतोम / करून शेवटीं अमें वर्तन करूं नये. अरे, जो
 अरे, युद्ध न करणें हें अयोग्य आहे; हा कांहीं तूं कांहीं कालापूर्वीं कर्ण व सोबल शकुनि
 सनातन धर्म नव्हे. राज्यांत किंवा स्वर्गांत स्थान यांच्या जिवार चढून जाऊन मूर्खपणांनें
 मिळविणें हें क्षत्रियाचें कर्तव्य होय. पण युद्ध आपणाम देव मानीत होतां व आपली खरी
 टाकण्यानें यांतील कांहींच प्राप्त होत नाहीं. योग्यता विमरला होतां. तोच तेव्हां तमें
 राजा, रणांतून पलायन करणें हें अनार्यामच महत्पाप करून आतां कां चुकारणा करतोम !
 शोभणारें व स्वर्गाम मुकविणारें आहे. हे पुत्र. लढाईला ये ! अरे, तुझ्यारमाख्यानें मोह पावून
 भाऊ, पिते, संबंधी, मित्र, मामा व मगेमोगेरे पलायनाविषयीं आवड धरावी हें कमें काय
 मरून पडलेले पहात अमतां युद्धाचा शेवट वाचा ! मृगोधना, तुझे पूर्वांचे ते आटोकाट
 करण्यापूर्वींच तुला जीविताचा लोभ कमा प्रयत्न, ता अभिमान, तें शौर्य आणि ती प्रचंड
 मुटला ? अरे वाचा. या मूर्खाचा घात करून गर्जना आज कोटें आहे ! अरे, तूं जलाशयांत
 सांप्रत तूं डोहांत वमला आहेस. तेव्हां तुला मर कां निजलाय ! तुझी ती कृताश्रिता गेली कोटें !
 प्याची इतकी भीति वाटत होती तर तूं यांचा हे भारता. स्वर्ग क्षत्रिय अमशील तर उठ
 तरी एवढा संहार कशाला केल्या ? तूं केवळ आणि क्षात्रधर्म पाळून लढाई कर. आमचा
 शूरपणाचा अभिमान भोगणाग आहेस. पण पराभव करून ह्या पृथ्वीवर मत्ता मारून;
 स्वरा शूर नव्हेस ! हे भारता. सर्व लोकां किंवा. हे भारता. आमचे हातून निघून पावून
 ममक्ष ' मी शूर ! मी शूर ! ' म्हणून तूं ग्वांतीच भूमिवर शयन कर ! हाच तुझा महात्म्या
 बलगना करितोम ! अरे, जे शूर अमतात ते विश्वात्यानें उत्पन्न केलेला परम धर्म होय. त्याचें
 शत्रूंम पाहून कधींच पलायन करीत नमतात ! पाळन कर; आणि हे महाराथा. आपले ' राजा '
 अथवा तूं जर शूर आहेस, तर, हे वीरा, तूं हे नांव यथार्थ कर ! ''
 कोणत्या हेतूनें युद्ध टाकून दिलेंस तें तरी मांग मंजय मांगताः— हे महाराजा. धर्मान्त
 पाहूं ! वानप्रस्थत्व, न्यस्तशस्त्रत्व किंवा पंडत्व या धर्मराजानें अमें भाषण केले तेव्हां तुझा उद-
 तीनच गोष्टी येथें संभवतात. तुला राज्याचा कांत वमलेला पुत्र तेथूनच बोलूं लागला.
 लोभ आहे, त्यापेक्षां वानप्रस्थ होण्यामाटीं दुर्गोधन म्हणालाः—महाराजा युधिष्ठिरा,
 कांहीं तूं युद्ध सोडले नाहींस स्वाम; तमेंच तूं मनुष्याथ भीति वाटली तर त्यांत काय आश्रय
 शस्त्रमंत्र्यासही केला नाहींस. कारण तुझे हातांत आहे ! तें तर स्वाभाविकच होय ! परंतु, हे
 गदा आहे ! राहतापैकी पंडत्व राहिलें ! परंतु, भारता. मी कांहीं जिवाच्या भीतीनें भिडून
 वीरा ' मी पंड अमल्यामुळें पळालों ! ' अमलें पळालों नाहीं. मजजवळ रथ नाहीं. भाता
 लज्जास्पद उत्तर तूं देऊं नये; तर उठ आणि नाहीं. माझा मारुथि मरून गेलेला, एकही
 आपल्या प्राणांची भीति सोडून युद्ध कर. मनुष्य माझ्याजवळ उरला नाहीं. आणि मी
 मृगोधना, सर्व मैत्र्याचा व आपले भावांचाही रणांत एकटा राहिलों ! अशा स्थितींत जग एकांत-
 घात करून सांप्रत तूं आपले प्राण वांचविण्याची स्थिती विश्रान्ति घेणें मला प्रशस्त वाटलें. राजा,
 बुद्धि धरावीस हें योग्य नाहीं. धर्माचरणाच्या मी जो ह्या जलांत शिरलों तो प्राण वांचविण्याच्या
 दृष्टीनेंही हें योग्य नव्हे. मृगोधना, तुझ्या हेतूनें नव्हे, भीतीनें नव्हे, किंवा विपादानेही
 मारख्यायन तरी प्रथम क्षात्रधर्माचा आश्रय नव्हे; तर केवळ श्रमांमुळें शिरलों. हे कौन्त्या.

तूही कांहीं वेळ विश्रांति घे; तशीच तुझ्या-
मागून आलेल्या त्या लोकांनाही विश्रांति घेऊं
दे; आणि मग उठून तुम्हां सर्वांबरोबर मी
रणांत लढेन !

युधिष्ठिर म्हणाला:—अरे, आम्ही अगदीं
ताजेतवानेच आहों, आणि केव्हांपासून तुला
शोधतो आहों. तर, सुयोधना, आतांच उठ
आणि येथेंच युद्ध कर. समरांत पांडवांना
मारून निष्कलंक राज्य मिळीव; अथवा रणांत
आमच्या हातून मरून वीरलोक प्राप्त करून घे!

दुर्योधन म्हणाला:—हे कुरुनंदा, हें
कारवाचें राज्य मी ज्यांच्यामाठीं इच्छीत होतो,
ते हे माझे मर्व भाऊ तर निधन पावले.
त्याचप्रमाणें, हे जनेश्वरा, सांप्रत ही क्षीण-
रत्ना, क्षत्रियपुंगवांनीं वियुक्त व गतधवा
स्त्रियेप्रमाणें झालेली पृथ्वी उपभोगावी असें
माझ्या मनांतही येत नाही. युधिष्ठिरा, मी
एकटा राहिलों आहे, तरी अजूनही सर्व
पांडव-पांचालांचा मोड करून तुला जिंक-
ण्याची माझी उमेद आहे, हें मी तुला सांगतो.
परंतु द्रोण व कर्ण संशांत झाले, आणि पिता-
महती निधन पावले. यामुळें आतां युद्ध
करून कांहींच कर्तव्य नाही असें मला वाटतें.
कारण, आतां तुला जिंकून मिळविलेलें राज्य
मला एकट्याला काय करावयाचें आहे? ही
केवळ निर्जन झालेली पृथ्वी आतां तुलाच
लखलाभ होवो. कारण, सहायहीन झालेला
कोणता राजा राज्य करूं इच्छील बरे? त्याच-
प्रमाणें, मला जिवाची आशा आहे असें म्हण-
तोस, तर कर्णशकुनीसारखे जिवाचे मित्र,
आणि पुत्र, भ्राते व वडील यांचा वियोग
झाला असतां आणि तुम्हीं राज्य हिरावून घेतलें
असतां माझ्यासारखा कोण वीर जगूं शकेल?
परंतु सांप्रत वस्तुस्थिति तशी नाही. तुम्हीं
राज्य हिरावून घेतलें नाही; व अजून तुम्हांस

जिंकण्याची माझी धमक आहे; पण मला आतां
तें कर्तव्य नाही. तेव्हां मी हरिणचर्म परिधान
करून वनांत निघून जाईन. कारण, हे भारता,
स्वपक्षाचा पूर्ण क्षय झाल्यामुळें मला राज्याची
प्रीति राहिली नाही. जीतून आपले बहुतक
आप्तवांधव नष्ट झाले आहेत, तसेच घोडे व
हत्तीही जीत उरले आहेत, अशी ही पृथ्वी,
राजा, तूं सुखेनैव भोग, मला तिची जरूरी
नाहीं. मी मृगचर्म घेऊन वनांतच जाईन!
कारण, माझे असे कोणीच माणूस न राहिल्या-
मुळें मला आतां जीविताची कांहीं किंमत
वाटत नाही. तर, राजेंद्रा, खुशाल जा आणि
राजहीन, योधहीन व नष्टरत्न झालेल्या या
भूमीचा—ज्याला उपजीविकेचें साधनच राहिलें
नाहीं अशा—तूं खुशाल उपभोग घे.

संजय सांगतो:—हें करुणाजनक भाषण
श्रवण करून महाकीर्तिमान् युधिष्ठिर उदकस्थ
दुर्योधनाशीं बोलूं लागला.

युधिष्ठिर म्हणाला:—अरे बाबा, पाण्यांत
बसून आर्तप्रलाप करूं नको. राजा, हें तुझे
भाषण माझ्या मनांतच उतरत नाही. मी ह्याला
केवळ कावळ्याची कावकाव समजतो. सुयो-
धना, यदाकदाचित् तूं पृथ्वीदान देण्यास समर्थ
असतास, तथापि तूं दिलेल्या पृथ्वीवर राज्य
करण्याचें मी मुळीच इच्छिलें नसतें. ही संपूर्ण
पृथ्वी तूं देतास तरी ती मी अधर्मानें घेतली
नसती. कारण, राजा, क्षत्रियाला येथें प्रतिग्रह
हा धर्म सांगितलेला नाही. ही अखिल पृथ्वी
तूं दान दिलेली व्यावी असें माझ्या मनांतही
थेणार नाही. कारण, तुला युद्धांत जिंकून
पृथ्वीचा उपभोग घेण्यास मी समर्थ आहे. शिवाय
तूं सांप्रत पृथ्वीचा मालक नसतांना तिचें दान
करण्याची कशी इच्छा करतोस? मग, राजा,
पूर्वीच आपल्या कुलाची शांति व्हावी, व्यर्थ तें
माजून नयेत म्हणून आम्ही धर्मतः याचना करीत

होतों तेव्हांच ही पृथ्वी कां नाही दिलीस ? राजा, प्रथम महाबलिष्ठ श्रीकृष्णाचा उपमर्द करून आतां राज्य कमें देतोस ? अरे, काय हा तुझ्या चित्ताला भ्रम झाला ! राज्यहार्ता असले तरी कोणता राजा तें सोडण्याची इच्छा करणार आहे ! आणि आज तर तूं पृथ्वी देण्याला किंवा स्वपराक्रमानें तिचें राज्य करण्याला—कशालाही समर्थ नाहीस. अमें असतां, हे कौरवा, तूं पृथ्वीदान करूं इच्छितोस हें काय ! मला रणांत जिंकून ह्या वसुंधरेचें पालन कर. हे भारता, पूर्वी जो तूं सुईच्या अग्राएवढीही भूमी मला देत नव्हतास तोच तूं आतां सर्व भूमी कशी देतोस ? तेव्हां तूं सुईच्या अग्राएवढ्या जमिनीचाही त्याग केला नाहीस. मग आतांच संपूर्ण भूमीचा त्याग कसा करतोस ? अरे, आजवर अशा प्रकारचें ऐश्वर्य संपादन व ह्या अखिल पृथ्वीचें राज्य करून कोणता मूर्ख शत्रूला पृथ्वी देईल ? तूं केवळ मूर्खपणानें हें बोलतोस. तूं अगदीं गांगरून गेला आहेस, आणि त्यामुळें तुला कांहींच कळत नाही. परंतु पृथ्वी देण्याची इच्छा केलीस तथापि तूं आतां वांचणार नाहीस. आमचा पराभव करून ह्या पृथ्वीवर आधिपत्य चालीव, अथवा आमच्या हातून निधन पावून सर्वोत्तम लोकीं गमन कर. राजा, आपण दोघे जिवंत आहों तोंपर्यंत आपल्यापैकीं कोणाचा विजय झाला, याविषयीं सर्व प्राण्यांना संशय पडेल. पण, हे दुर्बुद्धे, तुजें जीवित सांप्रत माझ्या हातांत आहे. मला वाटेत तितके दिवस मी स्वशाल जगूं शकेन, पण तूं तसा जगण्याला समर्थ नाहीस. अरे, तूं पूर्वी आम्हांला जाळण्याचा यत्न केलास, सर्प डसविलेस, पाण्यांत लोटलेंस; तसेंच, राजा, राज्य हरण करून तूं अनेक प्रकारें आमचा छल केलास, कडु भाषणें केलीस आणि द्रौपदीला फरफरां ओढलीस ! इतक्या प्रकारांनीं तूं

आमचे अपकार केले आहेस. या कारणास्तव, हे पापकर्मन्, तुझे प्राण आज राहाणार नाहीत. तर ऊठ, ऊठ जाणि युद्ध कर. युद्धांतच तुजें कल्याण होईल.

हे जनाधिपा, याप्रमाणें त्या वीरांनीं येथें पुनःपुनः आणखीही पुष्कळ प्रकारची वीरश्रीचीं भाषणें केलीं.

अध्याय बत्तिसावा.

—:०:—

युधिष्ठिरसुयोधनसंवाद.

भृतराष्ट्र विचारितोः—संजया, माझा पुत्र पृथ्वीपति दुर्योधन स्वभावतः कोपी असून तो शत्रूंम ताप देणारा व वीर आहे. त्याची अशी निर्भर्त्सना होऊं लागली तेव्हां त्याची काय अवस्था झाली ? कारण, त्यानें अशी निर्भर्त्सना कधींच ऐकलेली नाही,—तो सर्व लोकांपामून राजा याच नात्यानें मान पावला आहे. संजया, दुर्योधनाचा अभिमान कोठवर वर्णावा ? त्याला सीमाच नाही ! मूर्खाची प्रभा आणि स्वकीय छत्राची छाया या दोन्ही त्याला सारख्याच खेदजनक वाटत ! मूर्खाच्या प्रभेवर आपली सत्ता चालत नाही व ती आपणाम तप्त करते म्हणून त्याम विषाद वाटे, तर छत्राची छाया आतपापामून दुर्योधन राजांचें संरक्षण करते हा प्रवादही त्याला तितकाच जाचक होई ! इतकें ज्याचें अभिमानित्व, त्याला युधिष्ठिराचे ते प्रलाप कसे सहन व्हावे ? म्लेच्छदेशामुद्धां ह्या संपूर्ण पृथ्वीचें जीवित केवळ ज्याच्या प्रसादावर राहिलेलें होतें—आणि संजया, ही गोष्ट त्वां प्रत्यक्ष पाहिलीच आहे—त्याचा असा अधिसेप आणि तोही पांडवांकडून होत असतां, सर्व स्वकीय सेवकांनी विहीन झालेला व खोल उदकांत अंतर्हित झालेला माझा दुर्योधन तीं दिमाखाचीं व कडु

भाषणें वारंवार ऐकून पांडवांस काय म्हणाला, तें मला सांग.

संजय सांगतो:—राजा, तुझ्या उदकस्थ पुत्राची युधिष्ठिरानें व त्याच्या भावांनीं अशी अवहेलना चालविलीं अमतां, हे राजेंद्रा. तीं कटुतम वचनें श्रवण करून, तो विषम स्थितींत होता तथापि अगदीं संतप्त होऊन गेला. त्यानें पाण्यांत अमतांच पुनःपुनः दीर्घ निःश्वास सोडले; वरचेवर हात वळीत त्यानें युद्ध करण्याचा निश्चय केला; आणि तो युधिष्ठिरास म्हणाला, “ तुम्ही सर्व पांडव रथवाहनांनीं युक्त असून तुमचे सुहृज्जनही तुम्हांबरोबर आहेत. मी तर केवळ एकटा, परिश्रान्त, विरथ व वाहनहीन असा आहे. शस्त्रें घेतलेल्या अनेक रथस्थ वीरांचा गराडा पडला अमतां पादचारी व निःशस्त्र झालेला केवळ एकटा मनुष्य युद्धाचा उत्साह कसा धरील ! तेव्हां, युधिष्ठिरा, तुम्हांपैकीं एकेकानें प्राज्ञ्याशीं लढावे. कारण, एकानें रणांत अनेकांशीं लढणें न्याय्य नाहीं; आणि विशेषकरून कवचहीन, निःशस्त्र, अतिशय श्रान्त, आपद्धस्त, अत्यंत घायाळ झालेला व ज्याचे सैनिक व वाहनें मरून गेलीं आहेत अशां तर नाहींच नाहीं ! राजा, मला तुजपासून भीति नाहीं ! भीमसेनापासून नाहीं. अर्जुनापासून नाहीं, कृष्णापासून नाहीं, तशीच पांचालापासूनही काडीची भीति नाहीं. त्याचप्रमाणें युयुधान किंवा नकुलसहदेव हेही माझे काडीमात्र वांकडे करूं शकणार नाहींत. मी क्रुद्ध होऊन रणांत उभा राहिलों असतां हे तुम्ही सर्वजण व दुसरे जे तुझे सैनिक आहेत त्या सर्वांचें मी एकटा निवारण करीन. हे जनाधिपा, सज्जनांची कीर्ति धर्ममूलक असते म्हणजे ते जसा धर्म आचरितात, तशी त्यांची कीर्ति होते. तेव्हां येथें मी धर्म व कीर्ति या दोहोंचें पालन करीत असें म्हणतो कीं, एकेकाशींच

कशाला ? मागून आलेल्या सर्व ऋतूशीं जसा एकटा संवत्सर, तसा-मीही उठून एकटा तुम्हां सर्वाशीं लढेन. रात्रिसमाप्तीच्या वेळीं एकटा मृत्यु जसा सर्व नक्षत्रांचें तेज हरण करितो, तसा आज मी निःशस्त्र व विरथ असतांही सशस्त्र, मरथ व वाहनयुक्त अशा तुम्हां सर्वांचा एकटा स्वतेजानें नायनाट करून टाकितों. उभे रहा, पांडवहो उभे रहा ! युधिष्ठिरा, आज बांधवांमहवर्तमान तुला ठार करून बाल्हीक, द्रोण, भीष्म, महाश्वेतर कर्ण, शूर जयद्रथ, भगदत्त, मद्रपति शल्य, तमाच भूरिश्रवा आणि, हे भरतश्रेष्ठा, माझे पुत्र, सौबल शकुनि व दुसरे मित्र, तसेच सगोसोपरे व बांधव या सर्वांचे ऋणांतून मी आज मुक्त होईन ! ” इतकें बोलून तो थांबला.

मग युधिष्ठिर त्यास म्हणतो:—सुयोधना, सुदैवानें तूंही क्षात्रधर्म जाणत आहेस व सुदैवानें तुझी बुद्धि युद्ध करण्याकडेच प्रवृत्त होत आहे. कोरवा, भाग्ययोगानें तूं शूर आहेस; आणि ज्यापेशां आम्हां सर्वाशीं एकटा युद्ध करण्यास तयार झाला आहेस, त्यापेशां तूं युद्धकर्मही जाणत आहेस यांत संशय नाहीं. तथापि, सुयोधना, तूं एकटा आहेस, तर तुला वाटेल तें आयुध घेऊन तूं आम्हांपैकीं एकाशींच युद्ध कर; आम्ही बाकीचे लोक तुमचे प्रेक्षक होऊं. हे वीरा, मीच होऊन आणखीही तुला एक इष्ट गोष्ट सांगतो, ती ही कीं, तूं युद्धांत आम्हां पांचापैकीं एकाला मारलेंस म्हणजे तुला राज्य मिळेल; अथवा त्याचे हातून मरण पावलास तर स्वर्गप्राप्ति होईलच !

दुर्योधन म्हणाला:—रणांत माझ्याशीं लढावयास एकटाच इसम देणें असेल तर तुम्हांमध्ये जो अतिशय शूर असेल तोच द्या. आयुधांपैकीं ही गदा मी तुझ्या अनुमतीनें पसंत करितों. तुम्हांपैकीं जो कोणी एकटा



त्याला बोहेर नियाळला पाहून.....त्यांनी एकमेकांचे हातांवर हात मारिले. (शल्यपर्व पृष्ठ ९७.)

मला मारण्यास पूर्ण समर्थ आहे असें तुम्हांस वाटत असेल, त्यानेच पादचारी होऊन रणांत गदेंने माझ्याशी लढावें. ह्या महायुद्धांत विचित्र प्रकारची रथयुद्धे पदोपदी झाली आहेत; आज हें एक अद्भुत व महान् असें गदायुद्ध होऊं दे. एकच प्रकार फार वेळां झाला कीं कंगाला येत असतो अन्नाचाही पालट करण्याची मनुष्यांस इच्छा होते, तर आज तुझ्या संमतीनें युद्धाचाही पर्याय होऊं दे. हे महाबाहो, गदेंनें मी भावांसह तुला, पांचालांना, संजयांना व तुझे जे दुसरे सैनिक आहेत त्यांना जिंकून; आणि, युधिष्ठिरा, तुम्हांपामून काय, पण प्रत्यक्ष इंद्रापामूनही मला विलकूल कचर वाटणार नाही !

युधिष्ठिर म्हणाला:—हे गांधारे, उठ, उठ, माझ्याशीच लढ. सुयोधना, तूं मोठा बली आहेस, तर गदा घेऊन एकटा एकाशीच भिडून आपलें पुरुषत्व सिद्ध कर. गांधारे, अगदीं सावधानें लढ बरें का ! आज इंद्र जरी तुझ्या साहाय्यार्थ धावला, तरी तूं जगणार नाहीस !

संजय सांगतो:—राजा, हें बोलणें तुझ्या पुत्राला सहन झालें नाही. तो नरशार्दूल महानागाप्रमाणें फूत्कार सोडीत पाण्याच्या तळाशीं चळवळ करूं लागला. उत्तम घोड्याला चाबुकाचा फटकारा सहन होत नाही त्याप्रमाणेंच वाक्प्रतोदानें वरचेवर पीडित होणाऱ्या दुर्योधनाला तें भाषण सहन झालें नाही. तो वीर्यशाली दुर्योधन पाण्याची खळवळ उडवून मुवर्णागदांनीं मुशोभित केलेली लोहमय जड गदा घेऊन भुजगेंद्रासारखा फोंफावत खोल पाण्यांतून वेगानें उसळला; आणि स्तंभित केलेल्या जलाचा भेद करून व खांद्यावर लोखंडी गदा टाकून तो तुझा पुत्र सूर्याप्रमाणें तळपत वर आला ! नंतर त्या धैर्यशाली बलवंतानें मुवर्णानें मदविलेली टोकदार अशी अवजड पोलादी गदा

उंच केली, तेव्हां सशृंग पर्वताप्रमाणें त्या गदाधारीला पहातांच, हा प्रजांचा संहार करणारा संक्रुद्ध शूलपाणिच उभा आहे काय असा भास झाला ! राजा, गदा घेतलेला तो भरतकुलोत्पन्न वीर प्रखर ताप देणाऱ्या सूर्याप्रमाणें झळकूं लागला; तो शत्रुमर्दक महाबाहु जेव्हां गदा हातांत घेऊन सरोवराच्या बाहेर आला, तेव्हां हा यमच दंड हातांत घेऊन आला आहे असें सर्व प्राण्यांस वाटलें आणि हे जनाधिपा, सर्व पांचालांना तुझा पुत्र वज्रधारी इंद्र किंवा शूलपाणि हर ह्यांसारखा दिसला. त्याला बाहेर निघालेला पाहून सर्व पांचालांना व पांडवांना मोठा हर्ष झाला आणि त्यांनीं एकमेकांचे हातांवर हात मारिले ! पण तुझा पुत्र दुर्योधन याला तो मोठा उपहास वाटला. त्यानें संतापून, जणू पांडवांना दधच करतो कीं काय अशा रीतीनें डोळे बटारून, भुकुटी वांकड्या करून आणि ओंठ चावून मग कृष्णामह त्या पांडवांस प्रत्युत्तर दिलें.

दुर्योधन म्हणाला:—पांडवहो, तुम्ही मला हंसतां काय ? पण चिता नाही; याचें फळ तुम्हांला लवकरच मिळेल ! आतांच पांचालां-मुद्धां तुम्ही सर्वजण गतप्राण होऊन यमलोकची वाट धराल !

संजय सांगतो:—राजा, तो रक्तबंबाळ झालेला व त्या जलांतून वर आलेला तुझा पुत्र दुर्योधन हातांत गदा घेऊन उभा राहिला, तेव्हां त्या रक्तानें माखलेल्या वीराचें तें पाण्यानें भिजून पागळणारें शरीर—ज्यांतून जलधारा चालल्या आहेत अशा पर्वताप्रमाणें भामत होतें. त्यानें गदा उगारली असतां हा क्रुद्ध यमच गदा उगारून उभा आहे असें पांडवांस वाटलें. नंतर, राजा, ज्याचा शब्द भेदासारखा गंभीर आहे अशा त्या सुयोधनानें हर्षानें महोक्षाप्रमाणें दुरकण्या दिल्या; आणि

त्या वीर्यवंतानें पांडवांस गदा घेऊन रणांत येण्याविषयी आह्वान केलें.

दुर्योधन म्हणाला:—युधिष्ठिरा, तुम्ही एके-कट्टेच माझ्याशीं लढायला या. एकट्या वीरानें रणांत अनेकांशीं लढणें न्याय्य नाही; आणि विशेषकरून कवचहीन, अतिशय थकलेला, पाण्यांत बुडालेला, अत्यंत घायाळ आणि ज्याचे सर्व सैनिक व वाहनें मरून गेलीं आहेत असा तो असेल तर मुळीच नाही. तथापि तुम्हां सर्वांनींच माझ्याशीं अवश्यमेव लढावें असें तुमच्या मनांत असेल, तर तें अयुक्त आहे हें तूं नित्य जाणतच आहेस !

युधिष्ठिरानें उत्तर दिलें:—सुयोधना, जेव्हां अभिमन्यूला अनेक महारथांनीं मिळून रणांत मारिलें, तेव्हां तुझी ही धर्मबुद्धि अशाच कां नव्हती बरें ? क्षात्रधर्म हा अत्यंत कूर, कशाचीही अपेक्षा न करणारा आणि अतिशय निर्दय आहे. असें नसतं तर तुम्हीं अभिमन्यूला तशा शोचनीय स्थितींत कसे मारिलें असतें बरें ? तुम्हां सर्वजण धर्मज्ञ होतां, शूर होतां. जिवाची पर्वा न करणारे होतां. आणि न्यायानें लढणारांम उत्कृष्ट अशी इंद्रलोकाची गति मिळते असें सांगितलेलें आहे तेंही तुम्हांस माहीत होतें ! मग जर एकाला बहुतांनीं मारूं नये हा धर्म आहे, तर त्या वेळीं अभिमन्यूला बहुतांनीं आणि तेंही तुझ्या अनुमतीनें कसे बरें मारिलें ? सारांश, असा नियमच आहे कीं. संकटांत पडलेला मनुष्य धर्माला कवटाळतो आणि तोच मुस्थितींत असेल तर स्वर्गाचीं कवाडें जणू लावलेलीं आहेत असें त्याला दिसतें. अस्तु; वीरा, कवच बांध. शिरस्त्राण घालून केंस आवळ, आणि, हे भारता, तुला आणखी जें जें साहित्य नसेल तेंही घे. वीरा, मी तुला आणखी एक अशी प्रिय सवलत देतो कीं, पांच पांडवांपैकीं ज्याशीं

युद्ध करावें अशी तुझी इच्छा असेल, त्या एकाला मारलेंस तर तूं राजा आहेस, अथवा तूं मारला गेलास तर स्वर्ग तुझाच आहे. हे वीरा, एक जीवदानान्यतिरिक्त युद्धांत आम्हीं तुझे आणखी कोणतें प्रिय करावें ?

संजय सांगतो:—राजा, मग तुझ्या पुत्रानें सुवर्णाचें कवच धारण केलें आणि सोन्यानें मढविलेलें चित्रविचित्र शिरस्त्राण चढविलें. तेव्हां, राजा, तो कांचनाचें ऊज्वल कवच ल्यालेला व शिरस्त्राण घातलेला तुझा पुत्र सुवर्णपर्वता-मारखा झळकूं लागला. याप्रमाणें कवच वेगरे घालून व गदा हातांत घेऊन रणांगणाच्या शिरोभागीं सज्ज झालेला तुझा पुत्र दुर्योधन सर्व पांडवांस म्हणाला, “ तुम्हां भावांपैकीं कोणीही एकानें मजबरोबर गदायुद्ध करावें, मी आज सहदेव्याशीं, किंवा भीमसेनाशीं किंवा नकुलाशीं अथवा अर्जुनाशीं किंवा, हे नरषभा, तुजबरोबर लढेन. मी रणांत येऊन युद्ध करीन आणि त्यांत विजयीही होईन. हे पुरुषव्याघ्रा, सुवर्णाच्या पट्ट्यांनीं जखडलेल्या या गदेच्या साह्यानें मी आज ह्या वैराच्या अत्यंत दुर्गम अशा शेवटाला जाऊन पोचेंन. गदायुद्धांत माझी बरोबरी करणारा कोणीही नाही, अशी माझी समजूत आहे. तुम्ही सर्व एकदम आलां तथापि तुम्हां सर्वांना मी गदेनें ठार मारीन. न्यायानें युद्ध करावयाचें असल्यास तुम्ही सर्वजणही माझ्याशीं लढण्यास समर्थ नाहीं. स्वतःच गर्वोद्धत भाषण करणें युक्त नव्हे, तथापि मी हें आतांच तुमच्यापुढें खरें करून दाखवीन ! ह्याच घटकेला हें खरें किंवा खोटे याचा निवाडा होईल. आज माझ्याबरोबर जो कोणी लढणार असेल त्यानें गदा उचलावी ! ”

अध्याय तेहतिसावा.

—:—

भीमदुर्योधनाची युद्धाची तयारी.

संजय सांगतो:—राजा, ह्याप्रमाणें दुर्योधन वरचेवर गर्जत असतां वामुदेव युधिष्ठिरावर रागावून त्याला म्हणाला, “युधिष्ठिरा, हें काय केलेंस ? जरकरितां हा युद्धांत तुला, अर्जुनाला, नकुलाला किंवा सहदेवाला वरील, तर कसें होईल ! राजा, ‘युद्धांत एकाला मारून कुरुदेशाचा राजा हो.’ असें तूं म्हणालास हें केवढें साहस केलेंस ! त्या गदाधारी वीराच्या सामन्याला तुझी मुळीच समर्थ नाही, अशी माझी समजूत आहे. कारण गेल्या तेरा वर्षांत तुझाला गदायुद्धाचा विलकुल सराव नाही. राजा, भीमसेनाच्या वधार्थ लोखंडी प्रतिमा केली असतां म्हणजे त्याच्याच हातून हें कार्य करविण्याचें ठरलेलें असतां आपल्याकडून हें कार्य कसें होणार ! हे नृपोत्तमा, केवळ दयेमुळे तूं हें साहस केलेंस, पण येथें साफ घसरलास ! रणांत सुयोधनाला प्रतियोद्धा पृथापुत्र वृकोदरावांचून दुसरा मला कोणीच दिसत नाही; आणि तो देखील विशेष घटलेला नाहीच ! तेव्हां, राजा, मागें शकुनीशीं तूं जसें द्यूत केलेंस, तसेंच हें तूं पुनः मोठें अवघड द्यूत मांडलेस, दुसरे कांहीं नाही ! भीमसेन बलवान् व समर्थ आहे; आणि राजा, दुर्योधन हा कृती आहे म्हणजे घटलेला, चपळ, डावपेंच जाणणारा व मोठा कुशल आहे. राजा, बलवान् आणि कृती या दोघांविषयी विचार करतां कृतीच श्रेष्ठ ठरतो. कारण, डावपेंचांपुढें नुसत्या शक्तीची मात्रा चालत नाही. तेव्हां, राजा, तूं आपल्या शत्रूला फायदेशीर अशी अट देऊन त्याला चांगल्या जागेवर आणून ठेवलेस; आणि स्वतः मात्र खाड्यांत पडलास; असा या कृत्याचा

परिणाम झाला आहे ! एकंदरीत आपण पूर्ण विपत्तीत सांपडलों खरे. अहो, सर्व शत्रूला जिंकून हातीं आलेले राज्य मोठ्या मुक्कलीनें सांपडलेल्या एकट्या शत्रूकडून कोण हारवून घेईल ! केवळ एका पणाची पैज लावून असें युद्ध करणें कोणाला पसंत पडणार आहे ? जो आज रणांत गदापाणि दुर्योधनाला जिंकू शकेल असा वीर—मग तो देव कां असेना—त्रिभुवनांत मला कोणी दिसत नाही ! तूं, नकुल, सहदेव आणि अर्जुन ह्यांपैकीं कोणीही गद्दायुद्धनिपुण कृती दुर्योधन राजाला न्यायानें जिंकण्यास समर्थ नाही. असें असतां, हे भारता, ‘गदा वेऊन लट्ट’ आणगी. आह्मांपैकीं एकाला मारून राजा हो’ असें शत्रूला कसें सांगतोस ! भीमसेनाची व त्याची जुंपली तरीही धर्मयुद्धांत आपला जय होईल कीं नाही याची वानवाच आहे. कारण हा दुर्योधन मोठा बलाढ्य व गदायुद्धांत अतिशय वाकबगार व कसलेला आहे. असें असतां आह्मांपैकीं कोणाही एकाला मारून राजा हो असें तूं पुनः म्हणतोस, त्यापक्षां ही पंडुची व कुंतीची संतति राज्य-भागीच नाही—निरंतर वनवास व दारिद्र्य भोगण्यासाठीच हिचा जन्म आहे ! ”

भीमसेन म्हणाला:—हे मधुसूदना यदुनंदना, असा विषाद करू नको. वीराच्या अत्यंत दुर्गम अशा अंतिम भागी मी आज जाऊन थडकेन ! आज मी दुर्योधनाला युद्धांत निःसंशय ठार मारीन. कृष्णा, धर्मराजालाच विजय मिळणार, असें दिसत आहे. ही माझी गदा पहा,—दुर्योधनाच्या गदेंच्या दीडपट कार्य-कारी व तिजहून वजनदार आहे; त्याची गदा हिच्या तोडीची नाही. माघवा, तूं किमपि चिंता करू नको. सुयोधनाशीं गदायुद्ध करण्याचा मला हुरूप आला आहे. जनादेना, तुझी सर्वजण मी कसें काय युद्ध करतां तें

पहात बसा. कृष्णा, नानाप्रकारचीं शस्त्रें धारण करून देवांसुद्धां एकवटलेल्या तिन्ही भुवनांबरोबर मी रणांत युद्ध करीन; मग ह्या सुयोधनाची काय प्रतिष्ठा आहे !

संजय सांगतो:—ह्याप्रमाणें भीमसेनाचें हें भाषण ऐकून वामुदेव संतुष्ट झाला व त्यानें त्याची प्रशंसा करीत म्हटलें, “ हे महाबाहो, तुझ्याच आश्रयानें धर्मराज युधिष्ठिरानें सकल शत्रूंचा निःपात करून स्वकीय उज्ज्वल राज-लक्ष्मी मिळविली आहे, यांत संशय नाही. धृतराष्ट्राचे सर्व मुल्ये तूंच रणांत निजविलेस. त्याचप्रमाणें, हे पांडुनंदना, राजे, राजपुत्र व मोठमोठे हत्तीही ठार केलेस. कालिंग, मागध, प्राच्य, गांधार, तसेच कुरु हे रणांत तुझीं गांठ पडतांच मृत्युमुखी पडले. आज सुयोधनालाही ठार करून, ज्याप्रमाणें विष्णूनें शचीपतीला त्याप्रमाणें तू धर्मराजालाही समुद्रवलयोक्त पृथ्वी साध्य करून दे ! रणांत तुझी गांठ पडतांच पापी धार्तराष्ट्र नाश पावेल, आणि तंही त्याची मांडी फोडून आपल्या प्रतिज्ञेतून उत्तीर्ण होशील. वा भीमा. दुर्योधनाशीं सर्वदा फार दक्षतेनें व प्रयत्नपूर्वक लढेल पाहिजे. कारण तो मोठा कुशल व बलवान् असून सदेदीत मातबर लढाई करणारा आहे ! ”

राजा, मग सात्यकीनें भीमसेनाची स्तुति केली; त्याचप्रमाणें पांचाल व धर्मप्रभृति पांडव यांनीही त्यास वाखाणिलें; आणि त्याच्या त्या आवेशयुक्त भाषणाची सर्वांनीच तारीफ केली. मग भीमबली भीमसेन हा संजयांसह-वर्तमान उभा असलेल्या व सूर्याप्रमाणें प्रकाशमान् होत असलेल्या युधिष्ठिरास म्हणाला, “ मी ह्याशीं भिडून रणांत झगडेन. मला युद्धांत जिंकण्याला हा नराधम मुळीच समर्थ नाही. ज्याप्रमाणें अर्जुनानें खांडववनास अग्नि लावला, त्याप्रमाणें हृदयांत फार दिवस सांठवून

ठेविलेला क्रोध मी आज ह्या धार्तराष्ट्रसुयोधनावर काढीन; आणि गदेनें ह्या पाच्यास ठार करून पांडवांच्या हृदयांत घर करून राहिलेलें शल्य उपटून टाकीन. राजा, तूं स्वस्थ ऐस. हे अनघा, आज मी तुला कीर्तिरूप माला अर्पण करीन आणि दुर्योधन आज प्राण, वैभव व राज्य यांस मुकल; मी पुत्राला मारल्याचें ऐकून, शकुनीच्या बुद्धीला लागून केलेलें तें नीच कर्म आज धृतराष्ट्र राजाला आठवेल ! ”

असें बोलून तो वीर्यशाली भरतश्रेष्ठ गदा उचलून, वृत्राला आह्वान करणाऱ्या इंद्राप्रमाणें दुर्योधनास आह्वान करीत युद्धास उभा राहिला. तेव्हां तुझ्या अतिवीर्यवान् पुत्राला तें सहन न होऊन तो लोच मत्तहत्तीसमोर येणाऱ्या दुसऱ्या मत्तहत्तीप्रमाणें त्याच्यासमोर आला. तुझा गदापाणि पुत्र युद्धाला उभा राहिला तेव्हां सर्व पांडवांना तो शंगयुक्त कैलास पर्वतासारखा भासला. तो महाबली दुर्योधन कळपांतून चुकलेल्या हत्तीप्रमाणें एकटा सांपडल्यामुळे पांडवांना मोठा हर्ष झाला. दुर्योधनालाही मंत्रम, भीति, ग्लानि किंवा दुःख यांपैकी कांहींच होत असल्याचें दिसत नव्हतें, तो रणांत सिंहासारखा उभा होता. राजा, शंगी कैलास पर्वताप्रमाणें त्या गदाधारी दुर्योधनाला पाहून भीमसेन त्यास म्हणाला, “ दुर्योधना, धृतराष्ट्र राजानें व तूं आमचें किती अनहित केले आहे, त्याचें स्मरण कर. हे दुरात्मन्, वारणावतांत काय प्रकार घडला, रजस्वला द्रौपदीला भरसभेंत कसें छळिलें, शकुनीच्या कपटी बुद्धिबलानें द्यूतांत युधिष्ठिर राजाला कसें जिंकिलें. हीं व दुसरीं पुष्कळ पापकृत्यें तूं निरपराध पांडवांना पीडा देण्यासाठीं केलीस, त्यांचें महत्फल आज भोग ! महायशस्वी. भरतकुलावतंस व आपणां सर्वांचा पितामह जो गंगानंदन भीष्म, तो

केवळ तुजमुळें निधन पावला ! तुझ्याचमुळें गुरुवर्य द्रोण, कर्ण व प्रतापशाली शल्य मृत्यु-मुखीं पडले. वैराचा आद्यजनक जो शकुनि तोही रणांत निधन पावला. तुझे शूर शूर भाऊ व पुत्र आपआपल्या सैन्यांसह धुळीस मिळाले. अनेक राजे व समरांतून मागे न परतणारे शूर वीर गडप झाले. हे व यांबरोबरच दुसरेही मोठमोठे क्षत्रिय मारले गेले; आणि द्रौपदीला केश देणारा तो पापी प्रातिकामीही ठार झाला ! आतां तूच एक कुलघ्न नराधम शिलक उरला आहेस. पण आज मी गदेच्या योगानें तुलाही ठार मारीन, यांत संशय नाही. राजा, आज रणांत मी तुझा सर्व ताठा उतरणार; आणि त्याबरोबरच राज्याची अनिवार हाव व पांडवांविषयींची दुष्टबुद्धिही पार विलयास नेणार ! ”

यावर दुर्योधन म्हणाला:—वृकोदरा, फार बडबड कशाला करतोस ? आज प्रथम माझ्याशीं लढ तर खरा ! तुझी लढाईची खुमखुमच आज मी जिरवून टाकतो. पाप्या, हिमालयाच्या शिखराच्या आकाराची प्रचंड गदा घेऊन गदायुद्धाला तयार होऊन राहिलेला मी तुला दिसत नाही काय ? आज गदाधारी अशा मला मारण्याचा उत्साह धरणारा कोण शत्रु आहे ! न्यायानें लढत असतां देवाधिपति इंद्रही समर्थ नाही, मग इतरांची कथा काय ? हे कुंतीपुत्रा, शरत्कालीन निर्जल मेघाप्रमाणें व्यर्थ गर्जना करूं नको. आज रणांत मरून पार नाहीसें झालें नाही तोंपर्यंतच आपलें काय सामर्थ्य आहे तें युद्धांत दाखव !

राजा, मदोन्मत्त हत्तीप्रमाणें दिसणाऱ्या त्या दुर्योधनाचें हें भाषण ऐकतांच संजयांसह-वर्तमान सर्व विजयेच्छु पांडवांनीं अतिशय आनंदित होऊन त्याबद्दल त्याची टाळ्यांच्या गजरांत फार प्रशंसा केली. तेव्हां हत्ती मोठ्यानें

ओरडू लागले, घोडे हिसूं लागले आणि जयेच्छु पांडवांचीं शस्त्रे प्रदीप्त झालीं !

अध्याय चौतिसावा.

—:०:—

बलरामाचें आगमन.

संजय सांगतो:—हे महाराजा, मग अत्यंत दारुण युद्ध कडाक्यानें सुरू झाले आणि सर्व महात्मे पांडव तें पाहाण्यास खा नमले. इतक्यांत हें आपल्या शिष्यांचें युद्धाच्या वार्ता बलरामाच्या कानावर जाऊन तो तालध्वज हलायुध त्या ठिकाणीं प्राप्त झाले त्याला पाहातांच कृष्ण व पांडव परम हा होऊन त्याजवळ गेले; आणि त्याचें आदर तिथ्य करून त्यांनीं त्याची विधिवत् पूजा केली. राजा धृतराष्ट्रा, ह्याप्रमाणें विधिपूर्वक पूजन केल्यानंतर ते त्याला म्हणाले, “राजा आतां येथें बसून आपल्या शिष्यांचें युद्धनपु अवलोकन कर.” मग कृष्ण, पांडव व गणेश उभा राहिलेला कुरुपति दुर्योधन यांचे पाहून बलराम म्हणाला, “ मला प्रयाण कर आज बेचाळीस दिवस झाले. मीं पुण्य नक्षत्र वर गेलों, आणि श्रवण नक्षत्री परत आ आहें. माधवा, या शिष्यांचें गदायुद्ध पहाण्या माझी मनीषा आहे.”

राजा, तेव्हां मग ते युद्धभूमीवर उ राहिलेले दोघे गदाधारी वीर भीमदुर्योधन झळकू लागले. नंतर युधिष्ठिर राजानें बलराम आलिंगन देऊन त्याला नीटपणें कुशलप्रश्ने केले; महाधनुर्धर कृष्णार्जुनांनींही त्यास मोठ प्रेमामें व हर्षानें आलिंगन दिलें; शूर माद्रीपुत्र द्रौपदीचे पांच मुल्ये त्या महाबली रौहिणेया अभिवंदन करून जवळच उभे राहिले आणि त्याचप्रमाणें राजा, त्या गदा उ केलेल्या दोघां वीरांनीं म्हणजे बलवान् भीम

व तुभ्रा पुत्र ह्यानीं त्यास प्रणाम केला. याप्रमाणे सर्वांनी त्याचा आदरसत्कार व सन्मान केल्यावर, “हे महाबाहो, युद्ध अवलोकन कर.” असे ते रामास म्हणाले; आणि इतर राजांनीही त्याला तीच विनंती केली.

मग रामाने सृजयांस व पांडवांस आलिङ्गून त्या सर्व अमितपराक्रमी राजांचे कुशल विचारिले; व त्यांनीही त्यास भेटून खुशाली विचारली. मग बलरामाने त्या सर्व थोर क्षत्रियांचा उलट सन्मान करून व यथाधिकार कुशल-प्रश्न वगैरे करून कृष्ण व सात्यकि यांस प्रेमाने पोटाशी धरिले; त्यांच्या मस्तकांचे अवघ्राण केले; आणि ‘खुशल आहाना’ म्हणून विचारले. नंतर, राजा, ज्याप्रमाणे इंद्र व उपेंद्र हर्ष-भरित होऊन देवाधिपति ब्रह्मदेवांचे पूजन करतात, त्याप्रमाणे त्या कृष्णसात्यकींनीही त्या श्रेष्ठांचे विधिपूर्वक पूजन केले. मग, हे भारता, धर्मपुत्र युधिष्ठिर त्या शत्रु-मर्दक बलभद्राला “ हे राजा, हे भावा-भावांचे महायुद्ध पहा. ” असे म्हणाला. मग तो श्रीमान् महाबाहु केशवाग्रज परमहृष्ट होऊन त्यांच्यामध्ये जाऊन बसला. त्याला महारथांनी उत्थापन दिले; आणि त्या राजांच्या मध्यभागी तो नीलवस्त्र व अतितेजस्वी राम आकाशांतील नक्षत्रगणांनी परिवेष्टित निशाकराप्रमाणे शोभू लागला. राजा, मग तुझ्या पुत्रांच्या वैराचा शेवट करणारा व अंगावर रोमांच उठविणारा तो तुंबळ संग्राम सुरू झाला !

अध्याय पसतिसावा.

—:०:—

बलदेवतीर्थयात्रा.

प्रभासोत्पत्तिकथन.

जनमेजय प्रश्न करितो:—मुने, पूर्वी हे युद्ध उपस्थित झाले तेव्हांच प्रभु बलराम

कृष्णास सांगून वृष्णीसह निघून गेला होता. “केशवा, मी दुर्योधनाचे साहाय्य करणार नाही व पांडवांचेही करणार नाही, मी कोठे तरी निघून जाईन.” असे बोलून तेव्हां जो क्षत्रांतक राम बाहेर पडला, तो परत कसा आला ते आपण मला सांगावे. ब्रह्मन्, हे सत्तमा, आपण कुशल आहां, तेव्हां राम तेथे कसा प्राप्त झाला, आणि त्याने ते युद्ध कसे पाहिले, हे मला विस्तारपूर्वक कथन करावे.

वैशंपायन सांगतात:—महात्मे पांडव उप-प्लव्यास राहिले असता त्यांनी धृतराष्ट्राकडे कृष्णास शिष्टाईसाठी पाठविले. हे महाबाहो, कौरवपांडवांचा संधि व्हावा, व सर्व प्राण्यां-वरील संकट टळावे, या हेतूने कृष्ण हस्तिनापुरास जाऊन धृतराष्ट्रास भेटला; आणि त्याने तथ्य व विशेषकरून पथ्य असे भाषण केले. परंतु त्या वेळी धृतराष्ट्र राजाने त्याचे बोलणे मान्य केले नाही. शेवटी अकृतकार्य होत्साता कृष्ण माघारा येऊन पांडवांस म्हणाला, “पांडवेयहो, कौरवांवर कालाचा पगडा बसल्यामुळे ते माझ्या वचनाप्रमाणे वागत नाहीत. आतां दुसरी तिसरी गोष्ट नाही. याच पुण्य नक्षत्रावर माझ्या सह लढाईसाठी बाहेर पडा. ” नंतर, सैन्यांचे विभाग होऊं लागले तेव्हां बलिश्रेष्ठ महाशय बलराम आपल्या भावाला म्हणजे कृष्णास म्हणाला, “मधुसूदना, आपणाला पांडव व कौरव दोघेही सारखेच. तेव्हां, हे महाबाहो, तूं कौरवांचेही साह्य कर. ” असे तो म्हणाला, पण कृष्णाने त्याचे ऐकिले नाही. तेव्हां बल-राम रामाने संतप्त झाला; आणि तो महा-कीर्तिमान् यदुनंदन रागारागाने सर्व यादवांसह अनुराधा नक्षत्रावर सरस्वती नदीकडे तीर्थ-यात्रेस निघून गेला ! शत्रुदमन भोज दुर्यो-धनाच्या आश्रयास गेला आणि सात्यकीसह कृष्ण पांडवांस येऊन मिळाला. शूर बलराम

पुनश्च असतां पांडवांकडून निघून गेल्यावर म्हणून पांडवांस पुढें करून कौरवांसमोर गेला. तेकडे मार्गस्थ झालेला राम चालतां चालतांच वेवकांस म्हणाला, “ तीर्थयात्रेचे संभार, सर्व उपकरणें, अग्नि आणि याजक द्वारेकेहून घेऊन या; त्याचप्रमाणें सोनें, रुपें, धेनु, वस्त्रे, घोडे, हत्ती, रथ, गाढवें, उंट, वाहनें व तीर्थयात्रेस अवश्य असें सर्व साहित्य सत्वर आणा; जलद चालणारे लोक लवकर सरस्वतीच्या तीरीं पाठवा; आणि तेथून ऋत्विजांस व शेंकडों ब्रह्मवरांस आणवा. ”

राजा, कौरवांची लढाई उपस्थित झाली तेव्हां महाबली बलराम सेवकांस अशी आज्ञा करून सरस्वती नदीच्या प्रवाहास प्रदक्षिणा घालण्यासाठीं ऋत्विज, मित्र, दुसरे थोर थोर ब्राह्मण, रथ, हत्ती, घोडे, चाकरनोकर, आणि थकलेले, अशक्त, बाल व वृद्ध ज्यांत वमले आहेत अशीं बेल, गाढवें व उंट जोडलेलीं अनेक वाहनें एवढ्या परिवारानिशीं तीर्थयात्रेस निघाला. प्रत्येक ठिकाणीं जीं जीं नानाप्रकारचीं दानें करावयाचीं तीं तीं त्यानें केलीं; आणि हे भारता, याचकांच्या संतोपार्थ त्या त्या देशांतील चालीरीतीप्रमाणें पुष्कळ नवीं नवीं दानें त्यानें मुद्दाम तयार करविलीं. मुकेलेल्यांसाठीं चोहोंकडे अन्न तयार असे. जो जो ब्राह्मण तेथें ज्या पदार्थाची इच्छा करी, त्याला त्याला तेथेंच तो पदार्थ तत्काळ मिळे! असें इच्छा-भोजन बलरामानें केलें. जागोजागीं त्याच्या आज्ञेनें लोक उभे असत; आणि ते चोहोंकडे भक्ष्यपेयांच्या राशी घालीत. ज्या ब्राह्मणांना मुखाची इच्छा असे, त्यांस अर्पण करण्यासाठीं उंची उंची वस्त्रे व पलंगाविछानेही तेथें तयार असत. जनमेजया, फार काय सांगावें, कोणत्याही ब्राह्मणाचें किंवा क्षत्रियाचें मन ज्या ज्या ठिकाणीं रमत असे, तेथें तेथें त्याला आपणा-

साठीं सर्व प्रकारची तयारी असल्याचें आढळून येई! सर्व लोक आपल्या इच्छेस येईल त्याप्रमाणें चालूं लागत, किंवा तेथेंच थांबत. त्यांस दुसऱ्याच्या आज्ञेप्रमाणें वागावें लागत नसे. एखाद्याला जाण्याची इच्छा झाली कीं त्याचे पुढें मेणेपालख्या तयार! कोणाला तहान लागली कीं त्याचेपुढें सरबतें वगैरे हजर! आणि, हे भरत-पर्षभा, क्षुधितापुढें मिष्टमिष्ट अन्नही सिद्ध असत! असा प्रकार नित्य चाललेला असे. त्यांच्यासाठीं सेवक हातांत वस्त्रे व अलंकारही घेऊन उभे असत. अशा प्रकारें, राजा. तो मार्ग सर्व प्रवामी लोकांस स्वर्गामारखा मुखावह झाला. कारण, तो सर्वदा मुदित जनांनीं युक्त, रुचकर भक्ष्य पदार्थांनीं भरलेला, ज्यांत जागजागीं गुढ्यातोरणादि शुभसूचक गोष्टी आहेत असा, बाजारपेठा, बाजार व विक्रीचे पदार्थ यांनीं युक्त, हजारों लोकांनीं गजबजलेला, दोहों वाजुंच्या लतावृक्षांनीं व्याप्त आणि नानाप्रकारच्या रत्नादिकांनीं सुशोभित केलेला असा होता.

राजा, याप्रमाणें जातां जातां त्या स्थित-नियम महात्म्या यदुप्रवीर हलधरानें पवित्र तीर्थावर ब्राह्मणांस पुष्कळ द्रव्य दिलें; यज्ञांत देतात तशा विपुल दक्षिणा दिल्या; त्याचप्रमाणें ज्यांच्या शिंगांवर सुवर्णाचीं टोपणें घातलीं आहेत अशा हजारों सवत्स दुभत्या धेनु, नाना-देशांत जन्मलेले उंची घोडे वाहनें, चांगले चांगले दास, तशींच रत्नें, मोतीं, पोवळीं, वावनकरीं मोनें, शुद्ध रुपें आणि लोखंडी व तांब्याचीं भांडीं त्यानें द्विजवरांस अर्पण केलीं. याप्रमाणें त्या महात्म्यानें सरस्वतीतीरच्या श्रेष्ठ तीर्थांच्या ठिकाणीं अपार दानधर्म केला; आणि तो अनुत्पराक्रमी उदारधी, क्रमाक्रमानें अशी तीर्थं करीत कुक्षेत्वास येऊन पोचला.

जनमेजय विचारतो:—हे द्विजवरा, सरस्वतीतीरच्या तीर्थांचें सृष्टिसौंदर्यादिवर्णन,

त्यांची उत्पत्ति, तीर्थयात्राविधि वगैरे सर्व मला सांगा. हे भगवन्, क्रमानें सर्व तीर्थांबद्दल ही सर्व प्रकारची माहिती मला आपण कथन करा. हे ब्रह्मन्, ती ऐकण्याची मला फार उत्सुकता आहे.

वैशंपायन सांगतात:—राजा, या तीर्थांचें फल, त्यांचें गुणवर्णन, उत्पत्तिप्रकार वगैरे सर्व पुण्यकारक गोष्टी मी सांगतो, श्रवण कर. राजा, ऋत्विक्सुहृद्गणांसहवर्तमान तो यदुप्रवीर हलधर निघाला, तो प्रथम जेथें नक्षत्राधिपति चंद्र क्षयरोगानें ग्रस्त होऊन क्लेश भोगित पडला होता, त्या पवित्र प्रभासतीर्थाम गेला. हे नरेंद्रा, या ठिकाणीं चंद्राची शापापासून मुक्तता होऊन त्यास पुनः आपलें पूर्वतेज प्राप्त झालें; आणि तो सर्व जग प्रकाशमान करूं लागला. याप्रमाणें, हे राजेंद्रा, हें प्रभासतीर्थ पृथ्वीवरील तीर्थांत विशेष श्रेष्ठ असून तें प्रभास (तेजस्वी करणारे) असल्यामुळें त्याला ' प्रभास ' ही संज्ञा प्राप्त झाली आहे.

जनमेजय विचारितो:—भगवन्, चंद्राला क्षयरोगानें कसें ग्रस्त केलें; त्याचप्रमाणें, हे महामुने, त्यानें त्या श्रेष्ठ तीर्थांत कसें अवगाहन केलें, आणि त्यांत बुडी मारून तो पुनः कसा वृद्धिंगत झाला, तें सर्व मला सविस्तर सांगा.

वैशंपायन सांगतात:—हे राजेंद्रा, दक्ष-प्रजापतीला सत्तावीस मुली होत्या, त्या त्यांनें सोमास अर्पण केल्या. त्याच सत्तावीसजणीं-वरून सत्तावीस नक्षत्रांचीं नांवें पडलीं आहेत. त्या सदाचरणी चंद्राच्या भार्या होत. त्या सर्वांचे डोळे विशाल असून सर्वजणीं रूपानें पृथ्वीत केवळ अप्रतिम होत्या. तथापि त्यांतल्या त्यांत रोहिणीची रूपसंपत्ति कांहीं विशेष होती. त्यामुळें तिजवरच निशापति चंद्राची प्रीति बसली. ती त्याची अतिशय आवडती झाली आणि त्यामुळें तो सदोदित तिचाच उपभोग घेत असे. याप्रमाणें, राजा, चंद्र

रोहिणीकडेच अतिशय राहूं लागला, त्यामुळें बाकीच्या नक्षत्राख्यकन्या त्यावर रागावल्या; आणि सत्वर दक्षप्रजापतीकडे जाऊन त्या आपल्या पित्यास म्हणाल्या, “ चंद्र कांहीं आमच्या येथें रहात नाही. सदोदित रोहिणी-जवळच रहातो. यास्तव, हे प्रजानाथा, आम्ही सर्वजणी अन्नपाणी वर्ज करून तुमच्या सन्निध तप करीत बसतो ! ”

राजा, मुलींचें हें भाषण ऐकून दक्ष सोमास म्हणाला, “ सर्व भार्यांशीं सारख्याच भावानें वागत जा. तुला महान् अधर्माचा विटाळ होऊं नये. ”

सर्वजणींस सांगितलें, “ मुलींनो, आपल्या पतीकडे जा. तो माझ्या आज्ञेनें तुम्हां सर्वांचा सारखाच परामर्श घेईल. ” याप्रमाणें पित्यानें निरोप दिला, तेव्हां त्या चंद्राच्या घरीं गेल्या. तथापि, राजा, भगवान् चंद्राची रोहिणीवर असलेली अत्यंत प्रीति बिलकूल कमी न होतां तो तिचेच ठिकाणीं रममाण होऊन राहूं लागला; तेव्हां त्या सर्वजणी पुनः पित्याकडे जाऊन त्यास म्हणाल्या, “ बाबा, आम्ही तुमची सेवाचाकरी करीत तुम्हांपारींच रहातो. चंद्र कांहीं आमचे येथें रहात नाही; आणि आपण त्यास सांगितलें तेंही तो ऐकत नाही. ” त्यांचें असें बोलणें ऐकून दक्ष पुनः सोमास म्हणाला, “ विरोचना, मी तुला आतांच शापीत नाही. एकवार क्षमा करितो. पण या-पुढें तरी सर्व भार्यांचे ठिकाणीं समसमान रहात जा. ” राजा, दक्षाच्या या भाषणाचाही अना-दर करून भगवान् शशी रोहिणीसहच राहूं लागला. तेव्हां त्याच्या इतर स्त्रियांना पुनः कोप आला; आणि त्या लगेच पित्याकडे जाऊन त्यास शिरसा प्रणाम करून म्हणाल्या, “ अजून सोम कांहीं आमचे येथें येत नाही; यास्तव आपण आमचें रक्षण करा. भगवान् चंद्रमा

सदोदीत रोहिणीसच घेऊन बसतो. तो तुमच्या शब्दास मोजीत नाही व आम्हांकडे दुकूनही पाहू इच्छीत नाही. यास्तव, बावा, आम्हां सर्वजणींचे रक्षण करा; आणि जेणेकरून सोम आम्हांकडे येईल असे करा. ”

राजा, मुलींचे हें भाषण ऐकून भगवान् दक्षप्रजापतीला क्रोध आला आणि त्याने रागाने चंद्रावर क्षयरोग सोडला. तेव्हां त्या क्षयरोगाने तत्काळ चंद्रास पछाडून त्यास जर्जर केले आणि तो दिवसानुदिवस खंगत चालला. राजा, त्या यक्ष्यापासून मुक्तता व्हावी म्हणून चंद्राने नानाप्रकारचे यज्ञयागादि उपाय केले, परंतु कांहीं उपयोग झाला नाही. त्या दक्षशापापासून त्याची सुटका झाली नाही; आणि तो झिजत चालला. याप्रमाणे चंद्र क्षीण होऊं लागतांच औषधि उगवतनाशा झाल्या; ज्या औषधि होत्या त्यांचा आस्वाद व रस कमीकमी होऊं लागला; आणि त्या अगदीं बुकून गेल्या. या-प्रमाणे औषधींचा जसजसा क्षय होऊं लागला, तसतसा प्राण्यांचाही क्षय होऊं लागला; आणि एकंदरीत, चंद्र क्षीण होऊं लागल्यामुळे सर्व प्रजा कुश होऊन गेल्या ! राजा, मग सर्व देव एकत्र जमून सोमास म्हणाले, “ बाबारे, हें काय ? तुझे शरीर हें असे क्षीण कशांनें झाले ? तें मुळींच प्रकाशमान होत नाही हें काय ? बाबारे, तुजवर हें सर्व संकट कशांनें ओढवले. तें कारण आम्हांस सांग. तुझ्या तोंडून तें ऐकिलें म्हणजे आम्ही कांहीं तरी त्यावर उपाय योजूं. ” राजा, याप्रमाणे देव म्हणाले, तेव्हां शशलक्षण शशीनें आपल्याला शाप कसा झाला, आणि तेणेकरून कसा क्षयरोग लागला हें त्यांस सांगितलें. तें ऐकून देव दक्षाकडे जाऊन म्हणाले, “ भगवन्, सोमावर प्रमाद करा आणि आपल्या ह्या शापाची निवृत्ति

करा. हा चंद्र अगदी क्षीण झाला असून फारच थोडा अवशिष्ट आहे. हे देवेशा, याच्या क्षया-मुळे प्रजाही क्षीण झाल्या आहेत आणि लता, वेली, वृक्ष व नानाप्रकारचीं बीजे नष्टप्राय होण्याच्या वेतांत आलीं आहेत. यांचा पूर्ण नाश झाला म्हणजे आमचाही नाश होणार आणि आम्ही नष्ट झाल्यावर या जगाचे अस्तित्व तरी कसे राहील ! सारांश. सोमाच्या क्षीणते-मुळे सर्वसंहार होण्याची वेळ आली आहे. यास्तव, हे लोकगुरो, हें सर्व ध्यानीं आपून आपण चंद्रावर प्रसाद करणे योग्य आहे. ”

याप्रमाणे देवांनीं सर्व हकीगत निवेदन केली, तेव्हां प्रजापति त्यांस म्हणाला, “ माझे वचन सर्वथा फिरविणें शक्य नाही. तथापि, हे महाभागहो, तें कांहीं हेतूनें फिरू शकेल. चंद्राने सदोदीत सर्व भायांशीं सारस्वेषांनें वागावें. असें तो करूं लागला आणि सरस्वतीच्या श्रेष्ठ तीर्थांत त्यानें स्नान केले म्हणजे तो पुनः वृद्धिगत होईल. देवहो, हें माझे भाषण सत्य आहे. तुम्हांस कालजी नमावी. तथापि, यापुढेही नेहमीं चंद्र अर्धमासपर्यंत क्षीण होत जाईल आणि पुढील अर्धमासपर्यंत वृद्धि पावेल. असा हा क्रम यापुढे नित्य चालेल. आतां, पश्चिम समुद्राजवळ जेथें सरस्वतीचा समुद्राशीं संगम झाला आहे, तेथें जाऊन चंद्राने देवेशांचे आराधन करावें म्हणजे त्याची कांति पूर्ववत् होईल ! ”

नंतर दक्षप्रजापतीच्या या आज्ञेप्रमाणे चंद्र सरस्वती नदीवर गेल्या; आणि तिच्या कांठचे पहिले तीर्थ जें प्रभाम त्यावर प्राप्त झाल्या त्या वेळीं अमावास्या होती. त्यानें तेथें बुडी मारली आणि तो बाहेर निघाला, तें त्याला पुनः शीतांशुत्व प्राप्त झालें; आणि, तो आपल्या चंद्रिकेनें जग प्रकाशमान करूं लागला. हे गजेंद्रा. मग सर्व देवही प्रभामतीर्थी प्राप्त

झाले; आणि सोमासहवर्तमान दक्षकडे गेले. मग दक्षप्रजापतीनें सर्व देवतांस निरोप दिला आणि प्रसन्न होऊन तो चंद्रास म्हणाला, “पुत्र, स्त्रियांचा अवमान करूं नको. त्याचप्रमाणें ब्राह्मणांचाही कदापि अवमान करूं नको. जा, नित्य दक्ष राहून माझे आज्ञेप्रमाणें वाग. ”

मग, हे महाराजा, प्रजापतीचा निरोप घेऊन चंद्र आपले घरीं आला. तेव्हां सर्व प्रजा आनंदित झाल्या आणि पूर्ववत् सुखानें काल-क्रमणा करूं लागल्या. याप्रमाणें चंद्रास शाप कसा झाला आणि सर्व तीर्थांतील श्रेष्ठ व मोठें तीर्थ जें प्रभाम तें कोणत्या प्रकारचें आहे वगैरे सर्व तुला मांगितलें. हे महाराजा, अद्यापही नित्य प्रतिअमावास्येला चंद्र ह्या उत्तम प्रभास-तीर्थांत स्नान करून पुनः कांतिमान् होत असतो. त्यांत अक्काहन करून चंद्राला परमश्रेष्ठ अशी प्रभा प्राप्त होते. यास्तव, हे भूमिपा, या तीर्थास ‘प्रभास’ हे नांव पडलें आहे. अस्तु; नंतर तो बलादच राम ज्याला लोक ‘चमसोद्भेद’ असें म्हणतात त्या तीर्थावर गेला. त्या ठिकाणीं त्यानें विशिष्ट दानें दिलीं; विधिपूर्वक स्नान केलें; आणि एक रात्र राहून तो त्वरावान् कृष्णाग्रज पुढें उदपानास गेला. त्या ठिकाणीं त्याला प्रथमचें स्वस्तिवाचन आणि मोठें पुण्य प्राप्त झालें. जनमेजया, या ठिकाणच्या लतावृक्षांच्या हिरवेगारपणावरून व भूमीच्या स्निग्धपणावरून सिद्ध लोक नष्ट झालेली ही सरस्वती सहज ओळखूं शकतात.

अध्याय छत्तिसावा.

—:०:—

त्रिताख्यान.

वैशंपायन सांगतात:—हे महाराजा, त्या चमसोद्भेद तीर्थाहून बलराम कीर्तिमान्

त्रिताच्या नदीगत कृपावर गेला. तेथें त्यानें पुष्कळ दानधर्म केला; ब्राह्मणसंतर्पण केलें आणि स्नानादिकांच्या योगानें त्यास मोठा आनंद झाला; येथें धर्मपरायण महातपस्वी त्रितानें तो कृपांत पडलेला असतांच सोमदान केलें! येथेंच त्याला सोडून त्याचे भाऊ घरीं गेले; व त्यामुळें ब्राह्मणसत्तम त्रितानें त्यास शापिलें.

जनमेजय विचारितो:—ब्रह्मन्, तो कूप कोणत्या प्रकारचा आहे? त्यांत तो अत्यंत तपस्वी त्रित कसा पडला? त्याचप्रमाणें, हे द्विजसत्तमा, त्याचे भावांनीं त्याची कां उपेक्षा केली? त्रितानें तेथें कसा यज्ञ केला? व सोमप्राशन कसें केलें? ब्रह्मन्, हें सर्व श्रवणीय असें आपणास वाटत असल्यास—मला कथन करावें.

वैशंपायन सांगतात:—राजा, पूर्वयुगामध्ये एकत, द्वित आणि त्रित या नांवांचे तिथे भाऊ मुनि होते. ते सूर्यासारखे तेजःपुंज व प्रजापती-प्रमाणें कुटुंबवत्सल होते. ते मोठे ब्रह्मवादी व तपःप्रभावानें ब्रह्मलोक जिंकलेले असे होते. त्यांचें तप, नियम व दम पाहून त्यांचा पिता नित्य धर्मपरायण गौतम मुनि यास सद्गोदीत संतोष वाटत असे. पुढें कालेकरून भगवान् गौतम मुनि आत्मानुरूप अशा लोकीं गमन करिता झाला. तेव्हां राजा, गौतम ज्यांचे यज्ञ-याग करी, त्या राजांनीं मग त्याच्या मुलांस बहुमान देऊन त्यांकडून आपलीं कृत्ये कर-विण्यास सुरुवात केली. पुढें त्या तिघांमध्ये अध्ययन व आचरण यांच्या योगानें त्रित हा आपल्या पित्याप्रमाणें मोठेपणा पावला आणि सर्व महाभाग पुण्यशील मुनि त्याचा पित्या-प्रमाणें सन्मान करूं लागले. राजा याप्रमाणें चाललें असतां कोणे एकेकाळीं एकत व द्वित या दोघां भावांस यज्ञ करून वित्त मिळविण्याची इच्छा उत्पन्न होऊन त्याबद्दल

ध्यास लागला. मग, हे परंतपा, त्यांचे बुद्धीस वाटले कीं, त्रितास घेऊन, ज्यांना ज्यांना यज्ञ करावयाचे असतील त्या सर्वांस आपण गांठावे; म्हणजे आपणांस धेनु मिळतील, व एखादा महायज्ञ करावयास सांपडून सोमप्राशनही करावयाचा सुयोग येईल. राजा, याप्रमाणें त्या तिघां भावांचा विचार ठरून त्यांनीं त्याप्रमाणें केलें. धेनु मिळविण्यासाठीं, ज्यांना म्हणून यज्ञ करावयाचे होते, त्या सर्वांकडे ते हिंडले; आणि त्यांचे यज्ञ करून त्यांत विधिपूर्वक आचार्य दक्षिणा वगैरेच्या हेतूनें पुष्कळच गाई संपादन केल्या. मग ते महर्षि पूर्वदिशेकडे जाण्यास निघाले. त्या वेळीं त्रित मोठ्या हर्षानें त्यांच्यापुढें चालला होता, आणि एकत व द्वित हे गाई हांकीत मागून जात होते. राजा, मनुष्याची बुद्धि कशी फिरेल, याचा कांहीं नेम नाही! त्या दोघां पाण्यांनीं एकमेकांशीं काय भाषण केलें तें श्रवण कर. “ त्रित हा यज्ञ करण्यांत कुशल आहे, तो वेदांत पारंगत आहे, त्याला दुसऱ्या पुष्कळ गाई मिळतील; तेव्हां आपण दोघेजण एक होऊन या गाई घेऊन मागच्या मार्गें पळून जाऊं चला! आपण नागविलेल्या या त्रिताला पाहिजे तिकडे खुशाल जाऊं द्या ! ”

ह्याप्रमाणें विचार करित ते मार्गांनें चालले होते. ती रात्रीची वेळ होती; त्यांचा रस्ता सरस्वती नदीच्या तीरांनें जात होता; आणि रस्त्याच्या कडेलाच एक कूप होता, या दोघां भावांच्या मनांत असे विचार आले, इतक्यांत समोरून एक लांडगा आला. या वेळीं त्रित त्या कूपाच्या अगदीं जवळ पोचला होता. इतक्यांत त्यास समोरच रस्त्यांत लांडगा उभा आहे असें दिसलें. लांडग्यास पहातांच तो भीतीनें बाजूला सरला व एकदम त्या अत्यंत घोर व प्राणिमात्तास भयभीत करणाऱ्या अगाध

कूपांत पडला ! मग, हे महाराजा, कूपांतून मुनिश्रेष्ठ त्रितानें मोठ्यानें आरोळ्या मारल्या आणि त्या एकत व द्वित या दोघांनीं ऐकिल्या; पण आपला भाऊ कूपांत पडला हें जाणून लोभामुळे व कांहीं लांडग्याच्या भीतीमुळे ते त्यास तेथेंच टाकून निवून गेले ! आणि राजा, त्या पशुलुब्ध भावांनीं सोडलेला तो महातपस्वी त्रित त्या निर्जल व धुळीनें भरलेल्या त्या विहिरीत राहिला ! नंतर, हे भरतश्रेष्ठा, एखादा पापी मनुष्य नरककुंडांत निमग्न होतो, तद्वत् आपण या तृणलतावगुंठित कूपांत पडलों आहों असें अवलोकन करून त्रितानें असें कां झालें याचा शांत चिंतानें व बुद्धिपुरस्सर विचार केला. तेव्हां त्यास कळून आलें कीं, मृत्युभयामुळे आपण बाजूला सरलों व पडलों. तेव्हां मृत्यूची भीति नाहीशी झाली पाहिजे. ज्यानें सोमपान केलें नाही, त्यासच मृत्युभय असतें. सोमपान करणारास तें उरत नाही. तेव्हां येथें असतां आपल्याला सोमपान कसें करतां येईल ?

राजा, असा विचार करित असतां, त्या कूपांत लोंबत असलेल्या एका वेळीकडे सहज त्या महातपस्याची दृष्टि गेली. तेव्हां तत्काळ त्या तपोनिष्ठ मुनीनें यज्ञ करण्याचा निश्चय करून त्या धुळीमय कूपांत सुकी जागा पाहून तेथें अग्नीची कल्पना केली; स्वतःस होता कल्पिलें; त्या वेळीवर सोमाची कल्पना केली; आणि ऋचा, यजुःसूक्तं व सामें ह्यांचें मनानें चिंतन केलें. राजा, त्यानें तेथील लहान लहान गोट्यांचेच ग्रावे करून रस काढला; पाण्यालाच तूप मानिलें; देवांचे हविभाग तयार केले; सोमरस काढला; आणि मृप मोठ्यानें ध्वनि केला ! तेव्हां, राजा, ब्रह्मवादी जनांनीं निर्दिष्ट अशा पद्धतीनें तो यज्ञ करून त्रितानें पुनःपुनः केलेला तो प्रचंड शब्द स्वर्गास जाऊन पोचला ! महात्म्या त्रिताचा तो महायज्ञ चालू असतां

स्वर्गलोक भयाण होऊन गेला, कां तें कोणा-सच समजेना ! मग बृहस्पतीनें तो भयोत्पादक महाशब्द ऐकिला; आणि मग तो देवपुरोहित सर्व देवांस म्हणाला, “ सुरहो, त्रिताचा यज्ञ सुरू आहे. चला आपण तेथें जाऊं. आपण लवकर न गेल्यामुळें जर का तो रागावला तर आपल्या महातपःप्रभावानें दुसरे देवही निर्माण करील ! ”

राजन्, बृहस्पतीचें हें भाषण ऐकून सर्व देव एकत्र जमून त्रिताचा यज्ञ चालू होता तिकडे गेले. ज्या कृपांत तो होता त्यावर येऊन पांचतांच तेथें यज्ञकर्माची दीक्षा घेतलेला परम कांतिमान् महात्मा त्रित त्यांचे दृष्टीस पडला. त्या महाभागाची ती मूर्ति पाहून देव त्यास म्हणाले, “ आह्मी आपले भाग ग्रहण करण्याचे हेतूनें प्राप्त झालों आहों ! ” मग त्रित त्यांस म्हणाला, “ देवहो. ह्या अत्यंत भयंकर कृपांत पडलेल्या व हालचाल बहुतेक बंद झालेल्या मजकडे आपण कृपादृष्टीनें अवलोकन करा. ”

हे महाराजा, मग त्रितानें त्यांचे भाग त्यांस मंत्र म्हणून यथाविधि समर्पण केले, तेव्हां ते संतुष्ट झाले; आणि याप्रमाणें विधिपूर्वक भाग मिळून संतुष्ट झालेल्या देवांनीं नंतर त्यास इच्छित वर दिले. त्यानें देवांजवळ मागितलें, “ देवहो, मला येथून बाहेर काढावें; आणि या कृपाला जो स्पर्श करील त्यास देवलोक प्राप्त व्हावा ! ”

नंतर. राजा, लगेच त्या कृपांतून उर्मि-युक्त अशी सरस्वती नदी एकदम बाहेर पडली ! आणि तिनें आपल्या ओघाबरोबर बाहेर काढिलेला त्रित मुनि देवांची स्तुति करित त्यांचे सन्निध उभा राहिला ! राजा, मग देव ‘तथास्तु’ असें म्हणून आपल्या वाटेनें निघून गेले. आणि अत्यंत हर्षभरित झालेला त्रित मुनीही आपल्या घरीं गेला. तेथें आपल्या दोघां भावांस पहा-

तांच त्यास एकदम संताप झाला; व तो त्यांस पुष्कळ टाकून बोलला; आणि शेवटीं त्यानें त्यांस शापही दिला, “ ज्यापेक्षां पशूंच्या लोभानें तुह्मी मला सोडून पळून आलां, त्यापेक्षां तुह्मी या पापकर्माच्या योगानें माझ्या शापामुळें सभोवार संचार करणारे दंष्ट्रायुक्त भयंकर लांडगे व्हाल ! आणि तुमची संतति माकडें, अस्वलें व वानर होईल ! ”

राजा, त्याच्या तोंडून हीं अक्षरें निघालीं मात्र, तों तत्काळ ते तद्रूप झालेले दिसूं लागले ! असा त्या सत्यवादी त्रिताच्या वाणीचा प्रभाव होता ! असो, हे भारता, या ठिकाणींही अमित-विक्रांत हलधरानें उदकस्पर्श केला, विविध दानें दिलीं, ब्राह्मणांचें पूजन केलें, त्या कृपाकडे दृष्टि लावून पुनःपुनः त्याची स्तुति केली, आणि नंतर तेथून निघून तो उदारधी विनशन तीर्थावर प्राप्त झाला.

अध्याय सदतिसावा.

—:०:—

सारस्वतोपाख्यान.

वैशंपायन सांगतात:—राजा, मग बलराम विनशन तीर्थावर गेला. या ठिकाणीं शूद्राभीरांच्या द्वेषामुळें सरस्वती नदी नष्ट झाली, म्हणून ऋषि यास नित्य विनशन असें म्हणतात. या ठिकाणीं सरस्वतीचें स्नान करून बलराम तिच्या पुण्यकारक तीरावरील सुभूमिक तीर्थास गेला. या ठिकाणीं विमलानना शुभांगी अप्सरा मोठ्या हौसेनें नित्य विमलक्रीडा करीत असतात. येथें गंधर्वासह देव दर महिन्यास येतात. हें तीर्थ मोठें पवित्र व ब्राह्मणसेवित असें आहे. या ठिकाणीं, राजा, गंधर्व व अप्सरा यांच्या समुदायाच्या हरहमेशा गांठी पडून उभयतां यथेच्छ आनंद पावतात. त्याचप्रमाणें देव व पितर हेही येथें प्रमुदित होत असतात.

उत्तमोत्तम पुष्पांनी वरचेवर आकीर्ण होत असलेली ती अप्सरांची सरस्वतीतीरची क्रीडा-भूमि सुभूमिका या नांवाने विख्यात आहे. बलरामाने येथे स्नान करून, ब्राह्मणांस द्रव्य देऊन, वाद्यांचा मधुर ध्वनि व गीत श्रवण करून, आणि गंधर्वाप्सरांच्या पुष्कळ छाया अवलोकन करून गंधर्वतीर्थास प्रयाण केले. विश्वावसुप्रभृति तपोनिष्ठ गंधर्व तेथे अत्यंत मनोहर असे नाच, गाणेवजावणे करीत असतात. बलरामाने त्या ठिकाणी विप्रांस विविध मूल्यवान् पदार्थ अर्पण केले; शेंक्या, मेंढ्या, गाई, बैल, गर्दभ, उंट वगैरे प्राणी, सुवर्ण व रौप्य अर्पण केले; ब्राह्मणभोजन घातले; आणि पुष्कळ दक्षिणा देऊन त्यांस संतुष्ट केले. नंतर ज्याच्या सभोवती ब्राह्मणांचा घोळका स्तुति करीत चालला आहे असा तो राम त्या गंधर्व-तीर्थाहून निघून गर्गस्वत नामक महातीर्थावर प्राप्त झाला. त्या ठिकाणी, तपश्चर्येच्या योगाने ज्याचा आत्मा शुद्ध झाला आहे, अशा वृद्ध गर्गमुनीने सरस्वतीच्या पवित्र तीरावर काल-ज्ञानगति, ताऱ्यांची घडामोड, आणि दारुण व शुभकारक असे दोन्ही प्रकारचे उत्पात, यांचे ज्ञान संपादन केले. हे महाराजा, त्या श्वेतानुलेपन रामाने त्या ठिकाणी जाऊन तेथील आत्मप्रत्ययवान् मुनींस विधिपूर्वक द्रव्य अर्पिले आणि पक्काले व माधी अन्न यांचे ब्राह्मणभोजन घातले. नंतर तो नीलवस्त्र परिधान करणारा महायशस्वी बलराम तेथून शंख तीर्थास गेला. तेथे सरस्वतीच्या तीरावर वादलेला महामेरूप्रमाणे उंच, श्वेतपर्वतासारखा झळकणारा आणि ज्याच्याखाली पुष्कळ ऋषिसंघ जमले आहेत असा एक महाशंख नांवाचा वृक्ष त्याच्या दृष्टीस पडला. तेथे यक्ष, विद्याधर, अत्यंत ओजस्वी राक्षस, महाबलादय असे पिशाच आणि हजारों सिद्ध हे इतर आहार सोडून वेळो-

वेळी व्रते व नियम यांच्या योगाने प्राप्त झालेले त्या वृक्षाचे फळ खातात. ते अनेक प्रकारचे नियम ग्रहण करून पृथक् पृथक् संचार करीत असतात; परंतु, हे राजा, ते आपणास दिसत नाहीत. कारण, मनुष्यांस अदृश्य अशा रूपाने ते संचार करितात. याप्रमाणे, हे नरव्याघ्रा, तो वृक्ष या भूलेकी विख्यात आहे. पुढे सरस्वतीचे लोकविश्रुत असे पावनतीर्थ आहे; तेथे त्या यदु-शाईलाने पयस्विनी गाई, तांब्यालोखंडाची भांडी व विविध प्रकारची वस्त्रे दान केली; ब्राह्मणांचे पूजन केले; आणि उलट त्या तपो-धनांनीही त्याची प्रशंसा केली. राजा, मग हलायुध हा पुण्यकारक अशा द्वैतवनास प्राप्त झाला. तेथे नानावेप धारण केलेले मुनि त्याच्या दृष्टीस पडले. या ठिकाणीही त्याने उदक-निमज्जन करून ब्राह्मणपूजन केले; आणि त्यांस पृष्कळ उपभोग्य वस्तु अर्पण केल्या. नंतर, राजा, बलरामाने तेथून सरस्वतीस दक्षिणेकडे घालून प्रयाण केले; आणि तो महायशस्वी वीर फार दूर गेला नाही तोंच नागधन्वा नांवाच्या तीर्था-वर येऊन पोचला. या ठिकाणी, हे महाराजा, पुष्कळ पत्नगांनी युक्त अशा महातेजस्वी पत्नग-राज वासुकीचे निवासस्थान आहे. शिवाय या ठिकाणी नित्य चौदा हजार मुनींची वसति आहे. याच ठिकाणी देवांनी जमून पत्नगोत्तम वासुकीला सर्व सर्पीच्या राज्यपदावर यथाविधि अभिषेक केला. हे पौरवा, या ठिकाणी सर्पापासून विल-कृत भीति नाही. बलरामाने या ठिकाणीही ब्राह्मणांस रत्नांच्या राशी विधिपूर्वक दान केल्या आणि नंतर त्याने पूर्व दिशेस प्रयाण केले. या दिशेला पदोपदी प्रख्यात तीर्थे आहेत आणि त्यांची संख्या एक लक्ष आहे. या सर्व तीर्थांवर बलरामाने ऋषिप्रोक्त-विधिपूर्वक स्नान, उपवास, नियम व सर्व प्रकारची दाने करून व प्रत्येक ठिकाणच्या तीर्थनिवासी ऋषींस

अभिवंदन करून तो उद्दिष्ट मार्गानें सरस्वतीच्या पुढील प्रवाहाच्या अनुरोधानें चालला; परंतु जातां जातां, वायूनें मागें फिरविलेल्या वृष्टीप्रमाणें तो मागें परतला आणि नैमिषारण्यांतील महाथोर ऋषींची मनोकामना पूर्ण करण्यासाठीं सरस्वती तेथून मागें परतलेली पाहून, हे राजा, तो श्वेतानुलेपन लांगली बलराम विस्मित झाला !

जनमेजय विचारितोः—हे ब्रह्मन्, सरस्वती पूर्वाभिमुख जात होती ती कां मागें फिरली, हे सर्व स्पष्टपणें कळावें अशी माझी इच्छा आहे. हे अध्वर्युसत्तमा, यदुनंदन तेथें कोणत्या कारणामुळे विस्मित झाला, व त्याचप्रमाणें सारिद्वारा सरस्वती कोणत्या हेतूनें व कशी मागें परतली बरें ?

वैशंपायन सांगतातः—राजा, पूर्वयुगामध्ये अतिविशाल असें द्वादशवार्षिक सत्र चालू असतां नैमिषारण्यांतील तपस्वी व पुष्कळ ऋषि तेथें जमले होते. त्या महाभाग मुनींनीं तें सत्र चालू असतां तेथें यथाविधि वसति केली, आणि पुढें तें द्वादशवार्षिक सत्र समाप्त झाल्यानंतर पुष्कळ ऋषि तीर्थवासास्तव तेथें येऊन राहिले. याप्रमाणें, हे राजेंद्रा, ऋषि फार जमल्यामुळे त्या काळीं सरस्वतीच्या दक्षिण-तीरचीं तीर्थे म्हणजे मोठमोठीं नगरेंच बनलीं होती ! जेवढा म्हणून समंतपंचक देश आहे, तेवढ्या सगळ्याभर त्या द्विजसत्तमांनीं तीर्थ-लोभानें नदीकाठांनै सारखी वस्ती केली होती. तेथें हवन करणाऱ्या त्या शुद्धचित्त मुनींच्या अति प्रचंड स्वाध्यायघोषानें दिशा दुमदुमून जात. त्या महात्म्यांच्या अग्निहोत्रांचीं कुंडे चोहोंकडे पेटलेलीं असत, आणि त्यांच्या योगानें सरस्वती नदीस शोभा आलेली दिसे. वालखिल्य, तपस्वी अश्मकुट्ट, दंतोलूखली, तसेच दुसरे प्रसंख्यान वगैरे वायुभक्षण करणारे,

जलाहारी, पणाहारी, स्थंडिलांतच शयन करणारे व आणखी नानाप्रकारचे नियम पाळणारे तपस्वी मुनि तेथें सरस्वतीसमीप रहात असत. आणि देवांच्या योगानें जशी गंगा नदी तशी त्यांच्या योगानें सरिच्छ्रेष्ठ सरस्वती नदी शोभत असे. पुढें आणखी शेंकडों सत्रयाजी मुनि तेथें प्राप्त झाले. परंतु त्या महाव्रतांस सरस्वतीच्या तीरीं मुळींच जागा सांपडेना. तेव्हां त्यांनीं यज्ञसूत्रांनीं तें तीर्थ निर्माण करून, अग्निहोत्रांचें हवन व दुसऱ्या विविध क्रिया केल्या. पुढें सरस्वतीच्या तीरीं जागा न मिळाल्यामुळे तो ऋषींचा समुदाय निराश व संचित झाला आहे असे पाहून, हे राजेंद्रा, सरस्वतीस त्या पुण्यवान् तपस्व्यांची दया आली. आणि ती त्यांच्यासाठीं अनेक कुंज (डोह) उत्पन्न करून मागें परतली. राजेंद्रा, मग त्यांचे मनोरथ परिपूर्ण करण्यासाठीं सरस्वती मागें फिरली आणि पुनः पश्चिमाभिमुख वाहू लागली. “ अमोघ आगमन करून मी पुनः त्या मुनींकडे जाईन ” असें म्हणून राजा, त्या वेळीं त्या महानदीनें असें अद्भुत महत्कार्य केलें ! राजा, याप्रमाणें उत्पन्न झालेला तो कुंज नैमिषीय या नांवानें प्रख्यात आहे. हे कुरुश्रेष्ठा, त्या कुरुक्षेत्रांत मोठें अनुष्ठान कर. असो; तेथें ते बहुत कुंज व निवृत्त झालेली सरस्वती पाहून महानुभाव बलरामास तेथें विस्मय वाटला; आणि त्या ठिकाणींही त्या यदुनंदनानें विधिवत् स्नानादिक केलें; द्विजांस भांडीं, दुसरे नानाप्रकारचे जिन्नस व विविध भक्ष्यभोज्य पदार्थ दान केले; आणि नंतर, राजा, तो द्विजांकडून प्रशंसिला जाणारा बलराम नानाद्विजगणांनीं युक्त बेरी, उंडी, काश्मरी, औदुंबर, अध्रत्थ, विभीतक, कंकौल, पळस, करीर, पीलु, तसेच सरस्वतीच्या

१ प्रसिद्ध भारतीयुद्धाची रणभूमि कुरुक्षेत्र ते हें नव्हे.

कांठी उत्पन्न झालेले नानाप्रकारचे वृक्ष आणि करूप, विल्व, आम्नातक, अतिमुक्त (कुसरी). कर्षड व पारिजात यांनीं मुशोभित, ज्यावर जिकडे तिकडे केळींचीं बनेंच्या बनेंच लागून राहिलीं आहेत असें; डोळ्यांचें पारणें फेडणारें; मनोहर, फलाहारी, पर्णाहारी, जलाहारी व वायुहारी असे दंतोलूवली, अश्मकुट्ट, वानेय वगैरे बहुत मुनींनीं परिवारित; स्वाध्याय-घोषानें दुमदुमलेलें; शेंकडों मृगकुलांनीं गजबजलेलें आणि अहिंश्र्व व धर्मपर जनांनीं अतिशयें-करून सेवित असें जें सप्तसारस्वत नामक तीर्थ—जेथें मंकणक नांवाच्या सिद्ध महा-मुनीनें तपश्चर्या केली—त्या स्थलीं तो हला-युध प्राप्त झाला.

अध्याय अडतिसावा.

—०—

सप्तसारस्वतवर्णन.

जनमेजय विचारितोः—हे द्विजसत्तमा, सप्तसारस्वत तीर्थ कसें उत्पन्न झालें, मंकणक मुनि हा कोण, त्याला सिद्धि कशी प्राप्त झाली, त्याचा नियम काय होता, तो कोणाच्या वंशांत जन्मला आणि त्यानें काय अध्ययन केलें होतें, तें सर्व यथार्थ श्रवण करावें अशी माझी इच्छा आहे.

वैशंपायन सांगतातः—राजा, तेथें सात सरस्वती नद्या असून त्यांनीं तो प्रदेश व्यापिला आहे. थोर लोकांनीं आमंत्रण केल्यावरून त्या त्या ठिकाणीं सुप्रभा, कांचनाक्षी, विशाला, मनोरमा, ओघवती, सुरेणु आणि विमलोदका या सात रूपांनीं सरस्वती अवतीर्ण झाली. हे महाराजा, महाशय ब्रह्मदेवाचा महायज्ञ चालू असतां यज्ञमंडप पसरला, ब्राह्मण सिद्ध झाले, विमल असा पुण्याहघोष आणि वेदांचे उच्चार यांनीं त्या यज्ञविधींत देव व्यापून झाले. आणि

प्रपितामह ब्रह्मदेवांनीं यज्ञदीक्षा घेऊन सर्व-कामसमृद्ध अशा सत्राच्या योगानें यजन करण्याचा उपक्रम केला. त्या समयीं तेथें धर्मार्थकुशल अशा लोकांच्या मनांत जे जे अर्थ जेथें येत, तेथेंच ते ते उद्भूत होत असत, आणि आवश्यक त्या त्या ठिकाणीं द्विज तयार असत. तेथें गंधर्व गायन करूं लागले, अप्सरा नृत्य करूं लागल्या, आणि वादक त्वरेनें दिव्य वाद्यें वाजवूं लागले. त्या यज्ञाची साहित्यसंपत्ति पाहून देवताही तुष्ट झाल्या व अतिशय विस्मय पावल्या; मग सामान्य मनुष्यादिकांची गोष्ट कशाला? राजा, या-प्रमाणें पुष्करतीर्थावर पितामह असतां यज्ञ सुरू झाला, तेव्हां ऋषि म्हणाले, “ज्यापेक्षां येथें सरिद्धरा सरस्वती कोठें दिसत नाहीं, त्यापेक्षां हा यज्ञ कांहीं बहुगुण होणार नाही; आपला सामान्यच होईल!”

तें ऐकून भगवान् ब्रह्मदेवानें प्रसन्न चित्तानें सरस्वतीचें स्मरण केलें. तेव्हां, हे राजेंद्रा, यज्ञ करणाऱ्या पितामहानें पुष्करदेशीं आह्वान केलेली सरस्वती तेथें सुप्रभा या नांवानें प्राप्त झाली. राजा, पितामहास मान देऊन वेगानें आलेल्या त्या सरस्वतीस पाहून मुनि संतुष्ट झाले आणि त्या क्रतूस ते श्रेष्ठ मानूं लागले. याप्रमाणें ही सरस्वती पुष्करामऱ्यें पितामह ब्रह्मदेवासाठीं व मुनींच्या संतोषार्थ अवतीर्ण झाली.

राजा, एकदां ते नानास्वाध्याय जाणणारे असे पुष्कळ मुनि नैमिषारण्यांत येऊन एकत्र बसले होते. त्या वेळीं, राजा, त्यांच्यामऱ्यें वेदा-विषयीं पुष्कळ चमत्कारिक गोष्टी झाल्या. नंतर त्या सर्व मुनींनीं मिळून सरस्वतीचें स्मरण केलें. तेव्हां, हे महाराजा, सत्वयाजी मुनींनीं ध्यान केलेली महाभागा व पवित्र सरस्वती नदी त्या महात्म्यांच्या साहाय्यार्थ तेथें प्राप्त झाली! हे भारता, याप्रमाणें सरिच्छ्रेष्ठ कांचनाक्षी सत्रयाजी

मुनींसाठी आली; आणि तेथे त्यांनी तिची पूजा केली. गयदेशामध्ये गय राजा महायज्ञ करीत असतां त्यांत सरिद्वरा सरस्वतीला आमंत्रण झाले; आणि तेथे गयासाठीं प्रादुर्भूत झालेल्या सरस्वतीस संशितव्रत ऋषि विशाला असें म्हणू लागले. ही नदी हिमालयाच्या कुशीतून शीघ्र वेगाने बाहेर पडून तेथे आली होती. याचप्रमाणे, हे भारता, प्राचीन काळी पवित्र उत्तरकोसल देशामध्ये औदालकाच्या यज्ञांत तो महात्मा यजन करीत असतां, व सभोवार तेजस्वी मुनींचे मंडल जमले असतां यजन करणाऱ्या उदालकांने सरस्वतीचे ध्यान केले; आणि ती सरिद्वरा मुनींच्यासाठीं तेथे प्राप्त झाली असतां वल्कलाजिनधारी मुनिगणांनी तिचे पूजन केले व तिला मनोरमा असे नांव दिले. राजर्षिसेवित व पवित्र अशा ऋषभद्वीपांत महात्मा कुरु यजमान असतां महाभागा सरस्वती नदी कुरुक्षेत्रांत सुरेणु नांवांने प्राप्त झाली. राजेंद्रा, 'ओघवती' हीही महात्म्या वसिष्ठाने कुरुक्षेत्रांत निमंत्रिलेली दिव्यतोया सरस्वतीच होय. गंगाद्वारामध्ये यज्ञ करणाऱ्या दक्षाने पाचारण केले असतां तेथे शीघ्र गतीने वहात आलेली सरस्वती 'सुरेणु' या नांवांने विख्यात आहे. आणि पुनः पवित्र हिमालय पर्वतावर ब्रह्मदेव यज्ञ करीत असतां त्याच्या आमंत्रणावरून तेथे भगवती 'विमलोदका' प्राप्त झाली. नंतर या सात नद्या एकत्र होऊन त्या तीर्थांत प्रविष्ट झाल्या म्हणून ते तीर्थ 'सप्तसारस्वत' या नांवांने जगांत प्रसिद्ध झाले. याप्रमाणे सात सरस्वती नद्यांचीं नांवे व हकीकत आणि पवित्र असे सप्तसारस्वत तीर्थ मी तुला कथन केले. आतां गंगास्नान करणाऱ्या बालब्रह्मचारी मंकणकाचे महान् कृत्य श्रवण कर. हे भारता, तो स्नानास नदींत उतरला असतां तेथे जवळच

उदकांत स्नान करीत असलेली एक कुलशीलवती व सर्वांगसुंदर नग्न स्त्री सहज त्याच्या दृष्टीस पडली; आणि हे महाराजा, तत्काळ त्याचे वीर्य उदकांत स्वलित झाले; तेव्हां त्या महातपोनिष्ठाने ते रेत कलशांत धरले. तेथे त्याचे सात विभाग झाले. त्या विभागांपासून सात ऋषि उत्पन्न झाले आणि त्यांपासून मरुद्वणांची उत्पत्ति झाली. राजा, वायुवेग, वायुबल, वायुहा, वायुमंडल, वायुज्वाल, वायुरेता आणि वीर्यशाली वायुचक्र असे हे सात मरुतांचे जनिते उत्पन्न झाले. राजा, त्या मंकणक महर्षींचे त्रैलोक्यांत विश्रुत, अत्यंत अद्भुत व भूमीवर तर विशेष आश्चर्यकारक असे कृत्य श्रवण कर. आम्ही असे ऐकिले आहे की, पूर्वी एकदां मंकणक सिद्धाच्या हाताला दभोकुराने जखम झाली. तेव्हां, राजा, त्या जखमेतून शाकरस वाहू लागला! आणि तो शाकरस नजरेस पडतांच मंकणक हर्षाविष्ट होऊन अतिशय नाचू लागला. मग, हे वीरा, तो नाचू लागतांच स्थावरजंगम सर्वच जग त्याच्या तेजांने मोहित होऊन नाचू लागले! तेव्हां, राजा, ब्रह्मदेव वगैरे देव आणि तपोधन ऋषि यांनी त्या मंकणक ऋषीविषयी महादेवास विज्ञापना केली की, "देवा, हा मंकणक जेणेकरून नाचण्याचा थांबेल असे आपण

१ मरुद्वणांची उत्पत्ति दितीपासून झाली असा अन्यत्र उल्लेख असतां, येथे ह्या सप्तर्षीपासून झाल्याचे वर्णिले आहे, हा विरोध दिसतो; पण ह वर्णन कल्पांतरविषयक आहे. म्हणजे, ज्या कल्पांत मरुद्वणांची उत्पत्ति दितीपासून झाल्याचे वर्णन आहे, त्या कल्पाहून, ज्यामध्ये त्यांची उत्पत्ति ह्या सप्तर्षीपासून झाली तो हा कल्प भिन्न होय. मरुद्वणांची उत्पत्ति दितीपासून झाल्याविषयी सविस्तर वर्णन श्रीमद्भागवतांत आहे. पहा-आमचे "श्रीमद्भागवताचे मराठी सुरस भाषांतर" स्कंध ६, अध्याय १८.

करावें !” मग तो मुनि अत्यंत हर्षाविष्ट होऊन नाचत आहे असे पाहून देवांच्या हितबुद्धीने महादेव त्यास म्हणाले, “अरे ब्राह्मणा, हे धर्मज्ञा, तू कां बरें नाचतोस ? मुने. धर्म-मार्गानें वर्तणाऱ्या तुज शांत तपस्य्याला एवढा विलक्षण हर्ष कशामुळें झाला ?”

ऋषि म्हणाला, “ब्रह्मन्, माझ्या हातांतून शाकरस गळत आहे तो तुला दिसत नाही काय ? हाच पाहून मी मोठ्या हर्षानें नाचूं लागलों !” मग त्या प्रेममोहित मुनीला देव हंमून म्हणाले, “विप्रा, यांत काय मोठेंसें झालें ? मला तर याचिं कांहींच आश्चर्य वाटत नाही; मजकडे पहा !” हे राजेंद्रा, असें म्हणून धीमान् शंकरानें नखानें आपल्या अंगठ्यास क्षत केले. तेव्हां, राजा, त्यांतून बर्फाप्रमाणें पांढरें स्वच्छ असें भस्म बाहेर पडलें ! राजा. तें पाहून ऋषि लाजला आणि त्यानें त्यास साष्टांग प्रणिपात केला. महादेवाची थोरवी त्याच्या मनांत बिंबली आणि तो विस्मित होऊन म्हणाला, “रुद्रदेवापेक्षां दुसरें कांहींच श्रेष्ठ किंवा महत् नाही, असें मला वाटते. हे शूल-पाणे, सुरासुरांसह सर्व जगाची तूच गति होस. हें सर्व विश्व तूच उत्पन्न केलेस, असें मनीषी म्हणतात; आणि हें सर्व कल्पांती तुझ्यामध्येच प्रविष्ट होतें. तुझे स्वरूप जाणणें देवांसही शक्य नाही; मग माझा पाड काय ? जगामध्ये जे जे भाव आहेत, ते ते सर्व तुजमध्ये दिम-तात. हे अनया, ब्रह्मादिक देवांनीं वरद अशा तुझीच उपासना केली आहे. देवांचा कर्ताकर-विता सर्व कांहीं तूच आहेस. तुझ्याच प्रसादा-मुळें देव अकुतोभय होत्साते येथें आनंदानें राहातात !”

याप्रमाणें महादेवाची स्तुति करून ऋषीनें त्यास प्रणाम केला आणि म्हटले, “देवा, मीं जो गर्व वगैरे केला, तो केवळ अज्ञानामुळें

केला हें मला कळून आलें. आतां, देवा, जेणे-करून माझी तपश्चर्या भंग न पावेल असा आपण मजवर प्रसाद करा.” मग संतुष्ट झालेले महादेव पुनः त्यास म्हणाले, “विप्रा. माझ्या प्रसादानें तुझे तप सहस्रगुणित वाढेल. मी तुझ्यासह याच आश्रमांत राहातों. या सप्त-सारस्वतांत जो मनुष्य माझे अर्चन करील, त्याला इहपरलोकीं कांहींच दुर्लभ राहाणार नाही; आणि अती तो सारस्वतलोकीं गमन करील !”

राजा, अमिततेजस्वी मंकणकाची करणी अशा प्रकारची आहे. कारण तो यःकश्चित् क्रोणी तरी नमून मातरिश्यापामून सुकन्येच्या उदरीं जन्मलेला पुत्र होता.

अध्याय एकुणचाळिसावा.

—:—

सारस्वतोपाख्यान.

वैशंपायन मांगतात:—रामानें तेथें राहून आश्रमवासी मुनींची पूजा केली, आणि मंक-णकावर तर त्याची अकृत्रिम निष्ठा बसली. मुनिसंघांनीं पूजित अशा त्या लांगली बल-रामानें विप्रांस दांनें देऊन त्या रात्री उपोषण केलें; आणि प्रातःकालीं उठून सर्व मुनींची अनुज्ञा घेऊन व उदकस्पर्श करून आणखी तीर्थे पाहाण्याच्या हेतूनें तो त्वरेनें तेथून निघाला. नंतर तो ‘ओशनम’ तीर्थावर प्राप्त झाला. या तीर्थाच्या ‘कपालमोचन’ असेंही म्हणतात. काण्ण पूर्वीं गमानें उडविल्लें राक्ष-माचें प्रचंड मन्मक ज्याच्या पायाला चिकटले होतें. तो महोदर नामक महामुनि येथें मुक्त झाला. प्राचीन काळीं महानुभाव शुक्राचार्यानें याच ठिकाणीं तपश्चर्या केली. येथेंच त्या महात्म्याला अखिल नीति अवगत झाली, आणि येथेंच वमून त्यानें देवदानवांच्या युद्धाचे व्रत ठरविले. राजा, या श्रेष्ठतम तीर्थगजावर

येतांच बलरामानें थोर थोर ब्राह्मणांस विधिपूर्वक द्रव्य समर्पिलें.

जनमेजय विचारितोः—ब्रह्मन्, जेथें महामुनि मुक्त झाला; तें कपालमोचन तीर्थ कोणत्या प्रकारचें आहे, आणि त्याच्या अंगाला मस्तक कोणत्या कारणानें व कसें चिकटलें, तो प्रकार मला सांगावा.

वैशंपायन सांगतातः—हे राजशार्दूला, प्राचीन काली राक्षसांचा संहर्ता महात्मा रामचंद्र दंडकारण्यांत रहात असतां जनस्थानामध्ये त्यांनें एका दुष्ट राक्षसाचें मस्तक तोडलें. तें लखलखीत बाणाच्या योगानें थोर अरण्यांत उडालें; आणि, हे राजा, महोदर ऋषि त्या वनांत सहज हिंडत असतां, कर्मधर्मसंयोगानें तें त्याच्या पायास लागलें. त्याच्या तडाक्यानें पायाचें हाड मोडलें आणि तें मस्तक तेथेंच चिकटून स्फुरण पावत राहिलें. याप्रमाणें तें चिकटून बसल्यामुळें त्या महाप्राज्ञास तीर्थ किंवा देवालये करण्याचें सामर्थ्य राहिलें नाहीं. तथापि पायांतून लस गळत आहे आणि वेदनेनें व्याकूल झाला आहे अशा स्थितीतही त्या महामुनीनें तशीच पृथ्वीतील सर्व तीर्थ केलीं, असें आम्ही ऐकिलें आहे ! तो महातपस्वी सर्व नद्या व समुद्र हिंडला आणि त्या त्या ठिकाणच्या थोर थोर ऋषींना त्यानें आपलें भावित निवेदन केलें. परंतु सर्व तीर्थांत बुद्ध्या मारूनही त्या मस्तकापासून त्याची मुक्तता झाली नाहीं. राजेंद्रा, पुढें मुनींच्या तोंडून त्याला एक मोठी बातमी कळली कीं, सर्व पापांचें प्रशमन करणारें, सिद्धांचें वसतिस्थान व सर्वांहून उत्तम असें सरस्वतीच्या तीरीं ओशनस नामक एक प्रस्थान व श्रेष्ठ तीर्थ आहे. हें ऐकिल्यानंतर तो ब्राह्मण मग त्या तीर्थावर गेला आणि त्यानें त्यांत अवगाहन केलें. तेव्हां लोच तें शिर त्याच्या चरणापासून मुटून उदकांत पडलें.

त्या मस्तकापासून मुक्तता झाल्यामुळें त्याला मोठें सुख झालें, आणि, हे प्रभो, तें मस्तकही त्या जलांत अदृश्य झालें. नंतर तो मस्तकापासून मुक्त, प्रसन्नचित्त, नष्टदुःख, कृतकृत्य व संतुष्ट झालेला महोदर आपल्या आश्रमास गेला. तेथें पौंचतांच त्या मुक्त झालेल्या महातापसानें आत्मज्ञानी ऋषींना आपला तो सर्व वृत्तांत कथन केला. हे मानदा, त्याचें भाषण ऐकून त्या सर्व ऋषींनीं मिळून त्या तीर्थाचें नांव 'कपालमोचन' असें ठेविलें; आणि तो महामुनि पुनः त्या तीर्थावर येऊन व त्याचें अपार जल प्राशन करून मोठी सिद्धि पावला. वृष्णिवीर बलरामानें तेथें विप्रांस पुष्कळ दांनें दिलीं; आणि नंतर, जेथें आर्षिषणानें थोर तपश्चर्या केली त्या रुपंगच्या आश्रमास तो गेला. हे भारता, विश्वामित्र महामुनीनें येथेंच ब्राह्मणत्व संपादिलें. राजा, हें आश्रमस्थान फार मोठें असून ब्राह्मण व मुनि येथें नित्य रहात असतात आणि सर्व प्रकारचे मनोरथ पूर्ण करण्याजोगी येथें समृद्धि आहे. असो; राजेंद्रा, ब्राह्मणांच्या घोळक्यामध्ये शोभणारा तो हलधर नंतर जेथें रुपंगनें देह ठेविला त्या ठिकाणीं गेला. हे भारता, नित्य सारखें तप करणाऱ्या वृद्ध रुपंगु ब्राह्मणानें आपला देह गलितर्पण झाला असें पाहून, बहुत प्रकारें विचार करून देहत्याग करण्याचें ठरविलें; आणि नंतर आपल्या सर्व पुत्रांस जवळ बोलावून तो त्यांस म्हणाला, 'मला पृथूटकावर न्या !' रुपंगूचें आयुष्य संपलें असें जाणून ते तपोनिष्ठ पुत्र त्यास सरस्वतीकांडच्या त्या तीर्थाकडे घेऊन गेले. जीमध्ये शंकरांनीं असें ब्राह्मणांचे अनेक समुदाय जिचे कांठी राहातात, त्या पवित्र सरस्वती नदीवर मुलांनीं आणिलेल्या त्या ज्ञानसंपन्न तापसानें तेथें विधिपूर्वक स्नान केलें; आणि तीर्थमहिमा जाणून तो प्रसन्न झालेला

ऋषिसत्तम सर्व पुत्रांस जवळ बोलावून म्हणाला. "सरस्वतीच्या उत्तरतीरी या पृथूदक तीर्थांमध्ये ध्यानस्थ असतां जो आपले देहाचा त्याग करतो, त्यास पुनः मरणाचा ताप होत नाही." असे म्हणून त्यानें तेथें जलसमाधि घेतली. येथें धर्मशील व विप्रवत्सल हलधरानें बुड्या मारल्या, स्नान केलें, आणि ब्राह्मणांस बहुत दानें दिलीं. राजा जनमेजया, सर्व लोकांचा पिता-मह जो भगवान् ब्रह्मदेव त्यानें जेथें लोक उत्पन्न केले, सदाचरणीं आर्षिपेणानें जेथें महान् तपश्चर्या करून ब्राह्मण्य संपादन केलें. आणि राजर्षि सिंधुद्वीप, महातपस्वी देवापि आणि त्याचप्रमाणें महातपस्वी व उप्रतेजस्वी भगवान् विश्वामित्र मुनि यांसही जेथें ब्राह्मण्य प्राप्त झालें, त्या ह्या तीर्थावर प्रतापशाली व बलाढ्य बलभद्र आला.

अध्याय चाळिसावा.

—:—

सारस्वतोपारुखान.

जनमेजय विचारितोः—भगवान् आर्षिपेणानें मोठी तपश्चर्या करी केली ? सिंधुद्वीपाला तेव्हां ब्राह्मण्य कसें प्राप्त झालें ? त्याचप्रमाणें, हे ब्रह्मन्, देवापीला ब्राह्मणत्व कसें प्राप्त झालें; आणि, हे सत्तमा, विश्वामित्रालाही ब्राह्मण्य कसें मिळालें, तें, हे भगवन्, मला सांगा. त्या-विषयीं मला मोठी उत्सुकता आहे.

वैशंपायन सांगतातः—राजा, पूर्वीं कृत-युगांत आर्षिपेण नामक द्विजोत्तम गुरुगृहीं राहून नित्य अध्ययनांत तत्पर असे. राजा, गुरूच्या घरीं रहात असतां तो सदादीन इतक्या तत्परतेनें वागत असे, तथापि, हे राजेंद्रा, त्याची विद्या पूर्ण झाली नाही. इतकेंच नव्हे, तर त्यास वेदही अवगत झाले नाहीत. मग, राजा, तो अगदीं वैतागून त्यानें मोठी तप-

श्चर्या केली. आणि तिच्या योगानें त्यास वेदांचें उत्कृष्ट ज्ञान झालें. मग त्या विद्वान् वेदज्ञ, सिद्ध व अत्यंत तपस्वी अशा ऋषिसत्त-मानें त्या तीर्थाला तीन वर दिले. "महानदीच्या ह्या तीर्थांत आजपामून पुढें जो मनुष्य स्नान करील, त्यास अश्वमेधाचें महाफल प्राप्त होईल," "यापुढें येथें सर्पादिकांची वाधा होणार नाही" आणि "या ठिकाणीं अल्पकाळांत पुष्कळ मोठें फल मिळेल."

असें म्हणून तो महातेजस्वी मुनि स्वर्ग-लोकीं गेला. याप्रमाणें प्रतापशाली व सिद्ध अशा त्या भगवान् आर्षिपेणाची हकीकत आहे. पुढें याच तीर्थांत प्रतापी सिंधुद्वीपानें आणि हे महाराजा, देवापीनेंही महान् वेदसमूह प्राप्त करून घेतला; त्याचप्रमाणें, बाबारे, नित्य तप-श्चर्या करणारा जितेंद्रिय विश्वामित्र आपल्या उत्तम प्रकारें केलेल्या तपाच्या योगानें ब्राह्मण-त्वास जाऊन पोचला. ज्याची कीर्ति जगभर पसरली आहे, असा गाधि नामक एक महान् क्षत्रिय (राजा) होता. त्याला विश्वामित्र म्हणून एक प्रतापी पुत्र झाला. राजा, तो कुशिकपुत्र गाधि राजा पुढें महायोगी झाला. त्या महातपानें विश्वामित्रास गादीवर बसविलें आणि आपण देहत्याग करण्याचें मनांत योजिलें. तेव्हां त्याच्या प्रजा प्रणामपूर्वक त्यास म्हणाल्या, "हे महाप्राज्ञा, तूं आम्हांतून जाऊ नको; महाभयापामून आमचें रक्षण कर." असें प्रजा म्हणूं लागल्या तेव्हां गाधीनें त्यांस आश्वासन दिलें, "जनहो; चिंता करूं नका. माझा पुत्र सर्व जगाचा पालनकर्ता असा होईल." असें म्हणून गाधीनें प्रजांचें आश्वासन केलें आणि नंतर विश्वामित्रास गादीवर बस-वून तो स्वर्गास गेला; व हे राजा, विश्वामित्र राजा झाला. तो आपल्याकडून अतिशय झटत असे, परंतु पृथ्वीचें रक्षण करण्यास तो समर्थ

झाला नाही. पुढें त्या राजानें राक्षसांपासून मोठी भीति उत्पन्न झाल्याचें ऐकिलें, तेव्हां तो चतुरंग सैन्य घेऊन नगरांतून बाहेर पडला. तो बराच दूर गेल्यावर वांटेंत त्यास वसिष्ठांचा आश्रम लागला. तेव्हां, राजा. त्याच्या सैन्यानें तें फारच अत्याचार व नासधूस केली. नंतर कांहीं वेळांनें भगवान् वसिष्ठ मुनि आश्रमामें आले आणि सर्व महावन उत्वम्न होत आहे असें त्यांनीं पाहिलें. तेव्हां, हे महाराजा. वसिष्ठ मुनींस क्रोध घेऊन त्यांनीं “ भयंकर भिन्न उत्पन्न कर. ” म्हणून आपल्या धेनूम सांगितलें. वसिष्ठांची आज्ञा होतांच त्या गाईनें अतिशय उग्र दिसणारे पुरुष उत्पन्न केले आणि त्यांनीं त्या सैन्यास गांठून त्याची दाहीं दिशा दाणादाण उडविली!

राजा, गाधिपुत्र विश्वामित्रानें आपलें सैन्य पळाल्याचें ऐकिलें, तेव्हां त्याच्या मनाची खात्री झाली कीं, तप हेंच श्रेष्ठ होय. मग तप करण्याचें त्याच्या मनांत भरलें. राजा. मग सरस्वतीच्या ह्या श्रेष्ठ तीर्थावर घेऊन त्यानें एकाग्रतेनें नियम व उपवास यांनीं आपला देह झिजविला. तो कांहीं दिवस फक्त जलाहार. कांहीं काल पर्णाहार व कांहीं काल केवळ वायुभक्षण करून राहिला. तो स्थंडिलांत शयन करीत असे; आणि दुसरे जे जे म्हणून नियम आहेत, ते ते सर्व तो पृथक् पृथक् पाळीत असे. याप्रमाणें त्याची उग्र तपश्चर्या चालली असतां देवांनीं वारंवार त्याच्या व्रताला विघ्न केली; परंतु त्या महात्म्याचें मन नियमांपासून बिलकूल चळलें नाही. याप्रमाणें परम यत्नानें नानाप्रकारची तपश्चर्या करून विश्वामित्र तेजांनें केवळ सूर्यासारखा झाला! असें त्यानें तप केलें तेव्हां महातेजस्वी व वरद ब्रह्मदेव त्याजवर प्रसन्न होऊन त्यास वर देण्यास सिद्ध झाला. तेव्हां, राजा, “ मी ब्राह्मण व्हावें ” हाच त्यानें

वर मागितला. यावर सर्वलोकपितामह ब्रह्मदेवानें “ तथास्तु ” म्हटलें आणि तो पूर्णकाम झालेला महायशस्वी व देवतुल्य विश्वामित्र अखिल पृथ्वीवर संचार करिता झाला.

या उत्तम तीर्थावर बलरामानें पुष्कळ द्रव्य वांटलें आणि प्रेमानें ब्राह्मणांचें पूजन करून त्यांम दुभत्या गाई, यानें, शयनें, वस्त्रालंकार व उत्कृष्ट असे भक्ष्येपेय पदार्थ अर्पण केले. नंतर, राजा. तो बलराम. जें बक दाल्भ्यानें तीव्र तपश्चर्या केली म्हणून प्रसिद्ध आहे, त्याजवळच असलेल्या बकाच्या आश्रमास गेला.

अध्याय एकेचाळिसावा.

—:०:—

सारस्वतोपाख्यान.

वैशंपायन सांगतात:— राजा, मग बलराम त्या ब्रह्मयोनि तीर्थावरून, जें महातपस्वी, घोर तपश्चर्येनें आपलें शरीर क्षीण करणाऱ्या आणि अत्यंत क्रोधाविष्ट झालेल्या धर्मशील व प्रतापी दाल्भ्य बकानें आश्रमांत राहून विचित्र-वीर्यपुत्र धृतराष्ट्राचें राष्ट्र हवन केलें, त्या ठिकाणीं प्राप्त झाला. पूर्वी नैमिषीय ऋषींचें द्वादशवार्षिक सत्र व विश्वजित् यज्ञ संपल्यानंतर ऋषि तेथून निघून पंचाल देशास गेले. त्या ठिकाणीं त्यांनीं तेथील राजापाशीं दक्षिणा मागितली. तेव्हां त्यांस सशक्त, निरोगी व तरुण अशा एकवीस गाई मिळाल्या. मग दाल्भ्य बक बाकीच्या ऋषींस म्हणाला, “ हे पशु तुम्ही वांटून घ्या; मी यांतला भाग न घेतां सार्वभौमराजाकडे भिक्षा मागेन.” राजा, असें त्या सर्व ऋषींस सांगून तो प्रतापवंत ब्राह्मणोत्तम धृतराष्ट्र राजाकडे गेला; आणि राजाच्या समेंत जाऊन त्यानें त्याजवळ पशूंची याचना केली. तेव्हां कांहीं साहजिक मेलेलीं गुरें पाहून धृतराष्ट्र त्यास रोषानें म्हणाला, “ ब्रह्मन्,

तुला गुरें पाहिजेत तर हीं घे!" राजाचें तसें भाषण ऐकतांच तो धर्मज्ञ ऋषि मनांत म्हणाला, "अहो, भरसभेंत राजा मला असें दुर्भाषण बोलला अं!" राजा, तें ऐकून त्याला अतिशय संताप आला; आणि मुहूर्तमात्र विचार करून त्यानें धृतराष्ट्र राजाचा विनाश करण्याचें मनांत योजिलें. मग त्यानें ते मृत पशु नेले आणि त्यांचें मांस काढून धृतराष्ट्राच्या राष्ट्राचें हवन चालविलें. हे महाराजा. सरस्वतीतीरच्या अवाकीर्ण क्षेत्रीं अग्नि प्रज्वलित करून त्या परमव्रतस्थ महातपस्वी दारुभ्य बक मुनीनें त्या मांसाच्या आहुति देऊन धृतराष्ट्राच्या राष्ट्राचा विनाश करणारें हवन केलें. राजा, ह्याप्रमाणें तें अत्यंत दारुण सत्र विधिपूर्वक सुरू झालें, तेव्हां धृतराष्ट्राचें राष्ट्र क्षीण होत चाललें! हे विभो, उत्तरोत्तर क्षीण होत चाललेल्या त्या राष्ट्राची स्थिति कुऱ्हाडीनें तुटत असलेल्या अफाट वनासारखी झाली; आणि तें आपद्रस्त, जमीनदोस्त व चेतनाविहीन होऊन गेलें. राजा, राष्ट्र असें उध्वस्त होत चाललेलें पाहून धृतराष्ट्र राजाला फार वाईट वाटलें; आणि तो चिंता करूं लागला. त्यानें ब्राह्मणांचें साह्य घेऊन राष्ट्राच्या मुक्तेसाठीं पुष्कळ खटपट केली. परंतु कांहीं यश आलें नाहीं—राष्ट्र एकसारखें क्षीण होतच होतें. हे अनघा, याप्रमाणें जेव्हां राष्ट्राच्या मुक्तेचा कांहीं उपाय चालेना, तेव्हां तो राजा व ते ब्राह्मण अगदीं खिन्न झाले. पुढें, राजा जनमेजया, त्यानें ह्याविषयीं ज्योतिष्यांस प्रश्न विचारिला, तेव्हां ते म्हणाले, "राजा, तूं पशु देतांना ज्याचा अपकार केलास, तो बक मुनि मांसाच्या योगानें तुझ्या राष्ट्राचा होम करीत आहे; आणि त्याच्याकडून या राष्ट्राचें हवन चाललें असल्यामुळें त्याचा असा भयंकर संहार उडत आहे! बाबारे, तुझा हा जबरदस्त विनाश

चालला आहे, हें त्या बकाच्या तपश्चर्येचें फळ होय. राजा, सरस्वतीच्या डोहावर तो बसला आहे; त्याला तूं प्रसन्न कर!"

नंतर तो राजा सरस्वतीच्या तीरीं जाऊन बकापुढें साष्टांग नमस्कार घालून व हात जोडून त्यास म्हणाला, "भगवन्, प्रसन्न व्हा, प्रसन्न व्हा; माझ्या अपराधाची क्षमा करा. मी लोभी असून मला विचारशक्ति नाहीं. मूर्खपणामुळें माझ्या हातून तसें घडलें. परंतु महाराज, मज दीनाचे आपणच नाथ आहां. मला तुम्हांवांचून दुसरी गति नाहीं. यास्तव आपणच मजवर प्रसाद करण्यास योग्य आहां!"

राजा, याप्रमाणें तो विलाप करीत आहे आणि शोकानें त्याचें चित्त पोळलें आहे. असें पाहून ऋषीला त्याची दया आली; आणि त्यानें त्याचें राष्ट्र मोकळें केलें. तो ऋषि रोष सोडून त्यावर प्रसन्न झाला आणि त्यानें त्याच्या राष्ट्राच्या मोक्षासाठीं पुनः आहुति दिल्या. नंतर राष्ट्र मुक्त करून व राजापामून पुष्कळ पशु घेऊन तो हर्षभरित अंतःकरणानें पुनरपि नैमिषारण्यांत निघून गेला; आणि धर्मात्मा व थोर मनाचा धृतराष्ट्र राजाही स्वस्थ चित्तानें आपल्या समृद्ध नगरांत परत आला.

हे महाराजा, याच तीर्थाचे ठिकाणीं उदारधी वृहस्पतीनें अमुरांचा विनाश व्हावा आणि देवांची मुस्थिति व्हावी म्हणून मांसाच्या योगानें इष्टीचें हवन केलें आणि त्यामुळें देवांच्या हातून युद्धांत पराभव पावून दैत्य क्षय पावले. अमो; या ठिकाणींही महाकीर्तिमान् बलरामानें ब्राह्मणांस हत्ती, घोडे, खेचरे, रथ, अमृत्य रत्ने व पुष्कळ धनधान्य विधिपूर्वक समर्पण केलें; आणि नंतर, हे पृथ्वीपते, तो महाबाहु 'यायात' तीर्थावर गेला. हे महाराजा, त्या ठिकाणीं नहुषपुत्र महात्म्या ययातीच्या यज्ञांत सरस्वती दूष व पातळ तूप

स्ववली. त्या ठिकाणी पुरुषव्याघ्र ययाति राजानें यज्ञ करून आनंदित होऊन ऊर्ध्वमार्गानें प्रयाण केलें व उत्तम लोक मिळविले. या-शिवाय तेथें यज्ञ करीत असतां प्रभु ययाति राजानें आत्म्याचे ठिकाणीं शाश्वत भक्ति ठेऊन व परम औदार्य धारण करून, त्यानें जो जो ब्राह्मण जें जें पाहिजे म्हणून मनांत आणी तें तें त्यास अर्पण केलें. या यज्ञांत आमंत्रण केलेला जो जो ब्राह्मण जेथें जेथें उतरला होता, तेथें तेथें त्याला घरदार, अंधरूणपांवरूण, पडूस भोजन व नानाप्रकारचें दान सरिद्वारा सरस्वतीनें पुर-विलें; पण राजाचेंच हें उत्कृष्ट देणें आहे. असें त्या ब्राह्मणांम वाटलें; आणि ते संतुष्ट होऊन त्यांनीं राजाला शुभकारक आशीर्वाद देऊन तुष्ट केलें. तेथें यज्ञाची संपत्ति (साहित्याची विपुलता) पाहून गंधर्वांसुद्धां देवांसही संतोष वाटला आणि मनुष्य तर ती पाहून विस्मित झाले. अमोः नंतर तो महाधर्माचा केवळ ध्वज. अंतःकरणाचा थोर, आत्मज्ञानी, नित्य महा-दानें देणारा, कृतात्मा व मनोजयसंपन्न ताल-केतु बलराम—जेथील वेग महाभयंकर आहे अशा वसिष्ठापवाह तीर्थावर येऊन पोचला.

अध्याय वेचाळिसावा.

—:०:—

सारस्वतोपाख्यान.

जनमेजय विचारितोः—वसिष्ठाला वाहून नेणारा हा भयंकर वेगवान् प्रवाह कशा प्रकारचा आहे, तसेंच सरस्वतीनें त्या ऋषीस कां वाहून नेलें आणि तिचें त्याशीं कसें व कां वैर पडलें, तें, हे प्रभो, मी आपणांस विचारीत आहे. हे महाप्राज्ञा. आपण मला ही हकीकत सविस्तर सांगावी. आपण सांगितलें तेवढ्यानें कांहीं माझे समाधान होत नाही.

वैशंपायन सांगतातः—हे भारता, विश्वामित्र

व विप्रिर्षि वसिष्ठ यांजमध्ये तपश्चर्येविषयींच्या स्पर्धनें भयंकर हाडवैर पडलें होतें. राजा, स्थाणु-तीर्थावर वसिष्ठाचा मोठा आश्रम होता आणि त्याच्या बाजूला पूर्वेकडे धीमान् विश्वामित्राचा आश्रम होता. हे महाराजा, या तीर्थाला स्थाणुतीर्थ हें नांव पडण्याचें कारण असें की, येथें स्थाणूनें महान् तपश्चर्या केली. तेथें त्याच्या त्या घोर कृत्याविषयीं अजूनही तेथील मुनि कथा सांगतात. भगवान् स्थाणूनें तेथें यज्ञ करून सरस्वतीचें अर्चन केलें आणि स्थाणुतीर्थ म्हणून ह्या तीर्थाची स्थापना केली. हे नराधिपा, याच तीर्थावर देवांनीं सुरद्वेष्यांचा नायनाट करणाऱ्या स्कंदास आपल्या मोठ्या सेनापत्याचा अभिषेक केला. या सारस्वत तीर्था-वर विश्वामित्र महामुनीनें उग्र तपःसामर्थ्यानें वसिष्ठास दूर घालविलें. तो वृत्तांत श्रवण कर.

राजा, विश्वामित्र व वसिष्ठ या दोघां तपो-निष्ठांची दिवसानुदिवस तपाविषयीं भयंकर चुरस वाढत गेली. त्या दोघांमध्ये विश्वामित्र मुनि हा अधिक संतापी होता. त्याला वसिष्ठाचें तेज पाहून चिंता लागली. शेवटीं त्याला असा विचार सुचला कीं, “ही सरस्वती नदी तपोधन वसिष्ठाला आपल्या वेगाबरोबर त्वरित माझ्याजवळ आणील आणि येथें येतांच त्या द्विजश्रेष्ठास मी निःसंशय ठार मारीन !” भगवान् विश्वामित्र महामुनीनें असें करण्याचा निश्चय केला. त्याचे नेत्र रागांनें लाल झाले आणि त्यानें सरिच्छ्रेष्ठ सरस्वतीचें स्मरण केलें. मुनीनें ध्यान करितांच सरस्वती व्याकूल होऊन गेली.—विश्वामित्राचें विल-क्षण सामर्थ्य व अनावर क्रोध तिला माहीत होता. तिचा चेहरा उतरून गेला आणि ती कांपत कांपत विश्वामित्रापुढे येऊन हात जोडून उभी राहिली; व एखाद्या पति मेलेल्या स्त्रीप्रमाणें अत्यंत दुःखित झालेली ती सरस्वती त्या मुनि-

सत्तमास म्हणाली, “सांगा मी काय करावे !” तो क्रुद्ध मुनि तिला म्हणाला, “ वसिष्ठाला लवकर घेऊन ये म्हणजे मी आज त्याला ठार करितो ! ” ते ऐकून नदीचे हृदय फाटून गेले. तिने हात जोडले आणि ज्याप्रमाणे वायूने लता कंपित होते त्याप्रमाणे ती भयभीत झालेली पुंडरीकाक्षी धरधर कांपू लागली. त्या महानदीची अशी अवस्था झालेली पाहून तिला विश्वामित्र म्हणाला, “ तू कांहीएक विचार न करितां बेलाशक वसिष्ठाला माझ्या समीप आण. ” त्याचे भाषण ऐकून व त्याचा पापी मनोदय जाणून, वसिष्ठाचा जगांत अप्रतिम असा प्रभाव जाणणारी ती नदी वसिष्ठाजवळ गेली; आणि तिने विश्वामित्राच्या सांगण्यांतला अभिप्राय त्यास कळविला. दोघांचाही विलक्षण प्रभाव जाणत असल्यामुळे एक्रीकडे आड आणि दुसरीकडे विहीर अशी तिची अवस्था झाली होती. ह्याचा नाही तर त्याचा भयंकर शाप होईल म्हणून तिला भय पडले होते, आणि तेणेकरून ती एकसारखी कांपत होती. राजा पांढरी फटफटीत, कृश व चिंतायुक्त अशा त्या सरस्वतीला नरश्रेष्ठ धर्मात्मा वसिष्ठ म्हणाला. “ हे सरिच्छ्रेष्ठे, शीघ्रगामिनी होऊन मला वाहून ने आणि तू स्वतःचे रक्षण कर. कारण असे न करशील तर विश्वामित्र तुला शाप देईल. मला नेण्याविषयी तू विलकूल कांक करू नको. ”

हे कौरव्या, त्या कृपाशील्येचे तें भाषण ऐकून ती नदी विचार करू लागली की. “ कसे केले अमतां आपण नीट वागलों असे होईल. ” तिला चिंता पडली की, “ वसिष्ठ हा मजवर नित्य अत्यंत कृपा करीत आला आहे. तेव्हां त्याचे मला हितच केले पाहिजे. ” मग, राजा, मुनिश्रेष्ठ कौशिक आपल्या तीरावर हवन व जप करीत बसला आहे असे पाहून व

हीच संधि आहे असे जाणून तिने एकदम आपल्या वेगाने तीरे धुपविली. तेव्हां त्या लोंढ्याबरोबर मैत्रावरुणि वसिष्ठ वाहून गेला. राजा. याप्रमाणे वहात जात असतां त्याने सरस्वतीची स्तुति केली, “ हे सरस्वति, पितामह ब्रह्मदेवाच्या सरोवरापासून तुझी उत्पत्ति झाली आहे आणि तुझ्याच निर्मल उदकाने हें संपूर्ण जग व्यापून गेले आहे. हे देवि, तूच आकाशगंगा असून मेघांमध्ये जल्योत्पत्ति करतेस. सर्व उदकेही तूच आहेस आणि तुझ्यापासून आर्क्षी अध्ययन करतो. पुष्टि, द्युति, कीर्ति, सिद्धि, बुद्धि व उमा हीं तुझीच स्वरूपे असून, वाणी व स्वाहाही तूच आहेस आणि हे जग तुझ्यावरच अवलंबून आहे, कारण येथे सर्व भूतांचे ठिकाणी तू चतुर्विध रूपाने राहातेस. ”

राजा. याप्रमाणे तो महर्षि स्तुति करीत अमतां सरस्वतीने त्यास वेगाने विश्वामित्राच्या आश्रमाम आणून सोडले; आणि “ मुनीस आणले ” म्हणून विश्वामित्राम पुनःपुनः बजाविले. सरस्वतीने आणिलेल्या त्या वसिष्ठाम पाहातांच विश्वामित्र रागाने स्वळून जाऊन त्यास ठार मारण्यामाठी इकडे तिकडे कांहीं लांकूड वेगरे शोधू लागला. इतक्यांत, तो अतिशयच संतापला आहे असे पाहून ब्रह्महत्त्येच्या भीतीने नदीने लगवर्गाने वसिष्ठाम पूर्व दिशेकडे पाहावीत नेंले; आणि अशा प्रकारे तिने गाथिजाम फसवून उभयतांचे बोलणें पाळल्यासारखे केले. तिने वसिष्ठाम दूर वाहावीत नेंले, असे पाहातांच विश्वामित्राम दुःख झाले; आणि तेणेकरून तो अमाहिष्णु अधिकच संतापून म्हणाला, “ मरिद्वरे, ज्यापक्षां मला ठकवून तू पुनः निघून गेलीस, त्यापक्षां, हे कल्याणि, राक्षमादिकांना प्रिय अशा रक्ताचा प्रवाह वहा ! ” ह्याप्रमाणे विश्वामित्राने शापिलेल्या सरस्वतीचे

उदक त्याच वर्षीं रक्तमिश्रित झालें. मग सरस्वतीची ती स्थिति पाहून देव, ऋषि, गंधर्व व अप्सरा अतिशय दुःखित झाल्या. याप्रमाणें, हे जनाधिपा, वसिष्ठापवाह तीर्थ जगांत प्रसिद्ध झालें आणि तें निर्माण करून सरस्वती पुनः आपल्या पूर्वमार्गानें वाहूं लागली.

अध्याय त्रेचाळिसावा.

—:०:—

सारस्वतोपाख्यान.

वैशंपायन सांगतात:—संतप्त झालेल्या धीमान् विश्वामित्रानें शापिलेली ती सरस्वती त्या निर्मल व श्रेष्ठ तीर्थांत रक्त वाहूं लागली. पुढें, हे भारता, तेंथें राक्षस आले व तें रक्त नित्य प्राशन करीत तेंथेंच मुखानें राहिले. रक्तप्राशनानें ते तृप्त व सुखी झाले, आणि त्यांची रक्त मिळविण्याची काळजी नाहीशी होऊन जणू स्वर्गच हातीं आल्याप्रमाणें ते नाचूं लागले व हंसूं लागले ! अशा रीतीनें ते तेंथें आनंदांत रहात होते. राजा, पुढें कांहीं काळ लोटल्यावर, अत्यंत तपोधन असे कित्येक ऋषि सरस्वतीवर तीर्थयात्रेस आले. त्या तपोलुब्ध व विद्वान् मुनिश्रेष्ठांनीं मोठ्या प्रीतीनें सरस्वतीच्या सर्व तीर्थावर उत्तम प्रकारें स्नानादिक क्रिया केल्या; आणि, राजा, अशा प्रकारें तीर्थयात्रा करीत येतां येतां, ते ह्या रक्तवाही तीर्थावर येऊन पोचले. त्या अत्यंत दारुण तीर्थावर येऊन पाहातात तों सरस्वतीचें उदक रुधिरानें भरलेलें असून पुष्कळ राक्षस तें पीत असतात, असें त्या महाभागांच्या दृष्टीस पडलें. त्या राक्षसांना पाहून त्या संशितव्रत मुनींनीं सरस्वतीच्या परित्राणार्थ अतिशय यत्न केल्या. त्या सर्व महाव्रतस्थ महाभागांनीं एकत्र जमून सरिच्छ्रेष्ठ सरस्वतीला हाक मारून विचारिलें, " हे कल्याणि, तुझा हा डोह

असा रक्तमय कशानें झाला ? याचें कारण आम्हांस सांग, म्हणजे आम्ही त्याविषयीं कांहीं विचार करूं. " मग थरथर कांपत तिनें झालेला सर्व वृत्तांत त्यांस सांगितला. नंतर तिला दुःखित पाहून ते तपोधन म्हणाले, " हे सरस्वति, तुला झालेला शाप व त्याचें कारण आम्हीं ऐकिलें. हे सर्व तपोधन आतां पुढें जें करावयाचें तें करतील, तुला काळजी नको. "

राजा, असें सरस्वतीस सांगून त्यांनीं आपसांत मसलत करून ठरविलें कीं, " आपण सर्व मिळून ह्या सरस्वतीस शापमुक्त करूं. " मग त्या सर्व ब्राह्मणांनीं तपश्चर्या, नियम, उपवास, नानाप्रकारचे यम व कठीण कठीण व्रतें करून जगत्पालक पशुपति महादेवाचें आराधन करून त्या सरिच्छ्रेष्ठ सरस्वती देवीस मुक्त केलें. त्यांच्या प्रभावाच्या योगानें सरस्वती पुनः पूर्वस्थितीवर येऊन तिचें उदक पहिल्याप्रमाणें निर्मल झालें; आणि ती मुक्त झालेली सरस्वती पूर्वीप्रमाणें शोभूं लागली. सरस्वतीचें उदक मुनींनीं तसें स्वच्छ केलेलें पाहून तेथील क्षुधित राक्षस त्यांनाच शरण गेले; आणि, राजा, भुकेनें व्याकूल झालेले ते राक्षस हात जोडून त्या सर्व कृपालु मुनींस पुनःपुनः म्हणाले, " आम्हांस फार भूक लागली आहे. आम्ही सनातन धर्मापासून भ्रष्ट झालों आहों, परंतु आम्ही येथें पापकर्म करीत आहों त्या अवस्थेंतच राहावें अशी कांहीं आम्हांस आवड नाही. आम्ही आपल्या दुष्कृत्यामुळें व आपला प्रसाद न झाल्यामुळें ही अवस्था भोगीत आहों. आमचें पाप वाढत आहे आणि आम्ही ब्रह्म-राक्षस आहों. स्त्रियांच्या पापानें व व्यभिचारादिकांनीं ब्राह्मण ब्रह्मराक्षस होतात; याचप्रमाणें जे क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र ब्राह्मणांचा द्वेष करतात, तेही राक्षसयोगीम जातात; आणि

आचार्य, ऋत्विज् , गुरु व वृद्ध मनुष्ये यांचा जे अपमान करतात, तेही येथें राक्षम होतात. यास्तव, द्विजमत्तमहो, आमचें येथें तारण करा. आपण सर्व जगाचें तारण करण्यास समर्थ आहां ! ”

राजा, राक्षमांचें हें भाषण ऐकून त्या तपोधनांनीं त्यांच्या मुक्ततेसाठीं त्या महानदीची प्रार्थना केली आणि ते अंतःकरणपूर्वक म्हणाले. “ भोंक पडलेलें, किडलेलें, उच्छिष्टाणें भरलेलें. केशयुक्त, दूर उडालेलें व रुदितोपहत असें जें जें अन्न असेल तो तो राक्षमांचा भाग होय. यास्तव ज्ञान्यानें हें जाणून मदोदीत यत्नपूर्वक असे पदार्थ वर्ज्य करावे, जो अशा प्रकारचें अन्न भक्षण करतो, तो राक्षमांचेंच अन्न भक्षण करतो म्हणून समजावें. ” नंतर तीर्थ शुद्ध केल्यावर त्या तपोधनांनीं राक्षमांच्या मोक्षार्थ नदीची प्रार्थना केली. तेव्हां, हे पुरुषर्षभा, महर्षींचा तो अभिप्राय जाणून मरिद्वारा सरस्वतीनें आपल्या देहांत अरुणेस आणिले. मग त्या अरुणेत स्नान करून राक्षमांनीं आपल्या देहांचा त्याग केला व ते स्वर्गाम गेले. हे महाराजा, अरुणा ही ब्रह्महत्येचें पातक नाहीमें करणारी आहे असें जाणून शतकतु देवेंद्रानें त्या श्रेष्ठ तीर्थांत स्नान करून आपली पापासून मुक्तता करून घेतली !

जनमेजय विचारितोः—भगवान् इंद्राल्या ब्रह्महत्या कशी घडली ! आणि तो या तीर्थांत स्नान करून कमा निष्पाप झाला !

वैशंपायन सांगतातः—हे जनेश्वर. पूर्वी इंद्रानें नमुचीला दिलेले वचन कसे मोडले याविषयीचें हें आख्यान जसें घडलें तसें श्रवण कर. नमुचि वामवापासून भय पावून मृत्यु-किरणांत शिरला आणि त्यानें इंद्राशीं मधि केला. तेव्हां इंद्रानें त्याशीं करार केला की. “ हे अमरेश्वर मित्रा, मी तुला शपथपूर्वक मत्स्य

सांगतो कीं, मी तुला आर्द्र पदार्थांनं किंवा शुष्क पदार्थांनं मारणार नाहीं. त्याचप्रमाणें, रात्रीं मारणार नाहीं किंवा दिवसामही मारणार नाहीं. ” राजा, असें वचन देऊन इंद्रानें धुकें पडलें आहे असें पाहून पाण्याच्या फेंमानें त्याचें मस्तक तोडलें ! तेव्हां, हे राजा, तें नमुचीचें छिन्न मस्तक “ अरे मित्रवातक्या पाष्या ! ” असें म्हणत त्याच्या पाठीस लागलें. इंद्र कोठेही गेला तरी तें त्याची पाठ मोडीना ! शेवटीं त्यानें ब्रह्मदेवास हा घडलेला प्रकार निवेदन केला. तेव्हां लोकगुरु ब्रह्मदेवानें त्यास सांगितलें. “ देवेंद्रा, अरुणेवर यथाविधि हवन करून त्या पापमोचक तीर्थांत स्नान कर. शका, मुनीनीं या नदीचे उदकाम फारच पवित्रता आणिली आहे. पूर्वीं नमुचि गुप्तपणें येथें आला असून त्यानें अरुणेवर जाऊन तिच्या उदकांत स्नान केलें होतें. सरस्वती व अरुणा यांचा हा संगम महान् पुण्यकारक आहे. देवेंद्रा, येथें तूं यज्ञ कर आणि अनेक प्रकारचीं दानें दे. येथें स्नान करून तूं या अति घोर पातकापासून मुक्त होशील. ” जनमेजया. पितामहानें असें सांगतांच तो बलभित्तु इंद्र सरस्वतीच्या त्या तीर्थावर यथावत् यजन करून अरुणेत स्नान करिता झाला. तेव्हां त्या ब्रह्महत्येच्या पातकापासून त्याची मुक्तता झाली; आणि तो हर्षचित्त होत्साता स्वर्गलोकीं निघून गेला ! इकडे हे भारता. त्याच्या पाठीस लागलेलें तें नमुचीचें मस्तक त्याच तीर्थांत पडून नमुचीलाही अक्षय्य असें इच्छित लोक प्राप्त झाले !

वैशंपायन पुढें सांगतातः—परमार्थ माध्वणाग महात्मा बलराम येथें स्नान करून अनेक प्रकृतीचीं दानें देऊन व धर्ममाधन करून तेथून श्रेष्ठ अशा मोमतीर्थावर गेला; हे पार्थिवेंद्रा. येथेंच प्रार्थना काळीं भगवान् सोमोनें राजमृत्यु-यज्ञ केला. त्या श्रेष्ठ यज्ञांत ज्ञानमपन्न महात्मा

अत्रि मुनि 'होता' अमन, या यज्ञाच्या शेवटी दानव, दैत्य व राक्षस यांबरोबर देवांचे मोठे धनघोर युद्ध झाले. त्या युद्धात अतिक्रूर तारकामुराला स्कंदाने ठार मारिले. याच ठिकाणी दैन्यांतक स्कंदाला देवमैन्यांचे आधिपत्य प्राप्त झाले. येथेच तो मोठा वटवृक्ष अमून नित्य कुमारगवस्थेत राहाणारा तो कार्तिकेय स्कंद येथेच राहिला होता.

अध्याय चव्वेचाळिसावा.

—:०:—

कुमाराभिषेकोपक्रम.

जनमेजय विचारितो:—हे द्विजमत्तमा, मरुस्वतीचा हा प्रभाव तुम्ही मला सांगितला; परंतु हे ब्रह्मन्. कुमाराच्या त्या अभिषेकाचे आपण वर्णन करावे. हे वनत्यांतील वरिष्ठा. कोणत्या देशांत. कोणत्या काळीं. कोणीं, कोणत्या विधीनें भगवान् स्कंदाला अभिषेक केला. तमेंच त्या स्कंद प्रभूनें दैत्यांचा भयंकर संहार कसा उडविला. ते सर्व मला सांगा. ते ऐकण्याविषयी मला मोठे कौतुक वाटत आहे.

वैशंपायन सांगतात:— राजा. तुला उत्पन्न झालेले कौतुक तुझ्या कुरुकुलाम योग्यच आहे. जनमेजया. माझे भाषण हर्ष उत्पन्न करतेंच ! राजा. तू ऐकत आहेस तर ठीक आहे. मी तुला कुमाराचा अभिषेक व त्या महात्म्याचा प्रभाव कथन करतो; ऐक. पूर्वी एका वेळीं महेश्वराचे तेज स्वलित होऊन अशीत पडले. भगवान् अग्नि सर्वभक्षक आहे खरा; परंतु ते अमोघ वीर्य दहन करण्यास तो समर्थ झाला नाही. त्याच्या योगानें तो प्रदीप्त व अत्यंत तेजःपुंज झाला आणि त्या वेळीं त्यास तो तेजोमय गर्भ धारणही करवेना. मग त्या प्रभु अग्नीनें ब्रह्मदेवाच्या आज्ञेनें गंगेची संयोग करून तिच्या ठायीं त्या सूर्याममान तेजस्वी दिव्य गर्भाची

स्थापना केली. नंतर गंगेलाही तो गर्भ सहन न होऊन देवपूजित रम्य हिमालय पर्वतावर तिनें तो गर्भ टाकून दिला. तो अग्निपुत्र तेथें लोकांस व्यापून वाढू लागला, जनमेजया, पुढें अग्नीच्या स्त्रिया कृत्तिका यांनी तो शरवनांत पडलेला महात्मा अग्निपुत्र म्हणजे तो अग्निरूप गर्भ अवलोकन केला. तेव्हां " हा माझा बाळ " " हा माझा बाळ " असें त्या पुत्रार्थिनी मोठ्यानें ओरडल्या. तेव्हां भगवान् प्रभूनें (त्या गर्भानें) त्या मातांचा अभिप्राय जाणून, त्यांना पान्हा फुटल्यामुळे खवू लागलेले दुग्ध सहा मुखांनी प्राशन केले. हे भरतकुलोत्पन्ना, त्या बालाचा तो प्रभाव कृत्तिकांनी पाहिला, तेव्हां त्या दिव्य-देहधारी देवीम मोठा विस्मय वाटला. गंगेनें ज्या पर्वतशिखरावर त्या प्रभूस टाकिले. तें शिव्वर सर्व सोन्याचे होऊन अत्यंत झळकू लागले. तो गर्भ जमजमा वाढू लागला तम-तशी त्यानें आमपासची भूमि सुवर्णमय केली आणि म्हणूनच सर्व पर्वत सोन्याच्या खाणींनी युक्त असे झाले. त्या सुमहावीर्यशाली कुमाराला कृत्तिकांमंत्रेणें कार्तिकेय असें नांव पडले. पूर्वी त्याला गांगेय असें नांव होतें. असो; तो महान् योगबलानें युक्त. व शम, तप, वीर्य यांनी समन्वित होता; आणि, हे राजेंद्रा, तो सुमनोहर कुमार चंद्राप्रमाणें भराभर वाढू लागला. तो तेजःपुंज कार्तिकेय त्या दिव्य व सुवर्णमय दुर्भाच्या बेटावर सद्गोदीत पडलेला असे. तेथें गंधर्व व मुनि त्याची स्तुति करीत; आणि दिव्य नृत्यवादन जाणणाऱ्या हजारों सुंदर देवकन्या त्याची स्तुति गात त्याच्याजवळ नृत्य करीत. हे भारता, सरिच्छेष्ठ गंगा नदीही त्याजपाशीं उभी असे आणि पृथ्वी सुंदर रूप धारण करून त्याम उचलून घेई. तेथें प्रत्यक्ष वृहस्पतीनें त्याच्या जातकर्मादि क्रिया केल्या. चतुर्भूति वेद त्याजपुढें हान जोडून उभा

राहिला. चतुष्पाद धनुर्वेद व समग्रह शस्त्र-मंडळी त्या कुमाराकडे येऊं लागली, तेव्हां समुदाय त्यापुढें खडा राहिला. आणि साक्षात् तो महायोगबलान्वित बलवान् बालही, शल्यवाणी (सरस्वती) ही तेंथें त्याजपार्शी प्राप्त पाणि देवाधिदेव शंकराला सामोरा जाऊं झाली. शंकरां भूतगणांनी परिवारित अशा लागला. तो येत आहे अमें पाहातांच शंकर, पार्वतीसह बमलेल्या देवाधिदेव महावीर्यवंत पार्वती. गंगा व अग्नि या चौघांच्या मनांत उमापतीला त्यानें अवलोकन केलें. भूतगणांचे एकदम विचार आला कीं. "हा कुमार गौर-ते समुदाय फारच अद्भुत दिमत होते. त्यांचें वार्थ आधीं कोणाकडे बरें येईल!" "माझ्याच-रूप चमत्कारिक. आकार भयंकर आणि कडे येईल!" अमें प्रत्येकांनें आपल्या ध्वज व आभरणें हीं कांहीं विलक्षण होती. मनाशीं ठरविलें. त्या चौघांचा हा अभिप्राय कित्येकांचीं तोंडें वाघ, सिंह व अस्वलयांमारखीं जाणून स्फुटांनें एकदम योगसामर्थ्यानें निर-कित्येकांचीं मांजरामारखीं व मगरामारखीं निगळे देह उत्पन्न केले. क्षणांत त्या भगवान् आणि दुसऱ्या कित्येकांचीं काळमांजरामारखीं प्रभुनें आपल्या चार मूर्ति केल्या! आणि होती! त्याचप्रमाणें कित्येक गजमुखी. उष्ट्र- 'शाव' 'विशाख' व 'नैगमेय' अशा मूर्ति तीं त्याचे पाठीशीं दिवूं लागल्या! या-व मुक्ती व घुबडतोंडचे होते, तर कित्येक गिऱ्याडें प्रमाणें त्या भगवान् प्रभुनें स्वतःम चतुर्धा व कोल्हीं यांमारखे दिमत! कौंच, पारवे व केल्यावर त्यांपैकी अद्भुत दिमणारा स्फुट रुद्राकडे रांकव यांमारखीं कोणाचीं तोंडें होती; आणि गेल्या. ज्या बाजूनें देवी पार्वती येत होती त्या साळू, शल्यक, मुमर, बकरा, बोकड यांमारखे बाजूला विशाख वळला. वायुमूर्ति भगवान् शाख देह दुसऱ्या कित्येकांनीं धारण केले होते. अशीकडे गेल्या. आणि अशीप्रमाणें तेजस्वी कांहीं पर्वताएवढे तर कांहीं मेघाएवढाले होते. कुमार नैगमेय गंगेकडे गेला. त्या चौघांचेही त्यांनीं चक्रें व उगारलेल्या गदा घेतलेल्या देह मोटे तेजस्वी व अगदीं एकमारखे होते. ते होत्या; आणि कित्येक मशीच्या दिगामारखे जेव्हां त्या चौघांकडे जाऊं लागले तेव्हां काळेकुट्ट होते, तर कित्येक भ्रवलगिरीमारखे ती एक अद्भुतच गोष्ट घडली. ते रोमोद्गम शूभ्र होते! राजेंद्रा, सप्तमातृगणही तेंथें आले करणारें अदृष्टपूर्व महदाश्चर्य पाहून देवदानव होते. त्याचप्रमाणें साध्य, विश्वेदेव, मरुत, व राक्षस यांमध्ये मोठा गलबला झाला. नंतर वसु, पितर, रुद्र व आदित्य, तमेच सिद्ध, गंगेसहवर्तमान रुद्र. देवी पार्वती व अग्नि या भुजग, दानव व खग सर्व तेंथें गोळा झाले मर्वांनीं जगत्पति ब्रह्मदेवाम प्रणाम केल्या; होते. पुत्रामहवर्तमान व विष्णुमह भगवान् आणि. हे राजपुंगवा. विधिपूर्वक प्रणाम केल्यावर स्वयंभू ब्रह्मदेव आणि इंद्र हेत्या अच्युत कुमार कार्तिकेयाचें प्रिय करण्याच्या हेतूनें त्यांनीं वराम पाहाण्यामाठी तेंथें प्राप्त झाले हान. अशी प्रार्थना केली कीं, "भगवन्, या बाळाला नारदप्रभृति मोठमोठे देवगंधर्व, बृहस्पतिप्रभृति आपल्या इच्छेप्रमाणें आविषत्य द्यावें. हे देवर्षि व सिद्ध तेंथें जमले होते. इतकेंच नव्ह. देवेशा. आमचें प्रिय करण्यामाठी आपण याम तर जे, जगाचे श्रेष्ठ पितर व देवांचेही देव. योग्य अशी देणगी द्यावी." मग सर्व लोकांचा तेही तेंथें आले अमून सर्व यामें व धामें तेंथें पितामह जो बुद्धिमान् भगवान् ब्रह्मदेव त्यानें एकत्र झालीं होती!

याप्रमाणें शूलपाणि शंकरप्रभृति तीं सर्व मनाशीं विचार केला कीं, "याला काय मिळणें

योग्य आहे ?" राजा, देव, गंधर्व व राक्षस यांचीं सर्व ऐश्वर्ये व तशींच भूत, यक्ष, पक्षी व सर्प या सर्वांचीं ऐश्वर्ये या कुमाराच्या महात्म्यांच्या समुदायांत पूर्वीच मिळालेली होती. यास्तव महामति ब्रह्मदेवाला तो सर्वैश्वर्यसंपन्न आहे हें कळून आलें. हे भारता, नंतर देवांचें हित करण्यास तत्पर असलेल्या त्या ब्रह्मदेवांनो मूर्तमात्र विचार करून त्याला सर्व भूतांचें सेनापत्य दिलें; आणि देवलोकांतील जे जे राजे म्हणून श्रुत आहेत त्या सर्वांस त्यानें त्याच्या हाताखाली काम करण्याची आज्ञा केली. मग ते ब्रह्मपुरोगम सर्व देव कुमाराला घेऊन अभिषेक करण्यासाठीं शैलेन्द्र हिमालयावर आले; आणि ज्यांचे मनोरथ अगदीं परिपूर्ण झाले आहेत असे ते देव व गंधर्व तेथून हिमालयाची कन्या, सर्व नद्यांत श्रेष्ठ, व पवित्र आणि त्रैलोक्यांत विश्रुत अशी जी समंतपंचकांतील देवी सरस्वती नदी, तिच्या सर्वगुणसंपन्न व पुण्यकारक अशा तीरावर घेऊन बसले.

अध्याय पंचेचाळिसावा.

—:—
स्कंदाभिषेक.

वंशपायन सांगतात:—नंतर शास्त्राप्रमाणे अभिषेकाचें सर्व साहित्य सिद्ध करून बृहस्पतीनें प्रदीप्त अग्नीत यथाविधि अग्नीचें हवन केलें. नंतर पाच, माणीक वगैरे मौल्यवान् खड्यांनीं सुशोभित व दिव्य रत्नांनीं खचित अशा हिमालयांनो दिलेल्या पुण्यकारक सिंहामनावर तो कुमार बसला; आणि सर्व मंगलकारक साहित्याच्या योगानें अभिषेकोक्त विधि व मंत्र यांनीं सिद्ध केलेलें अभिषेकाचें द्रव्य घेऊन देवतांचे समुदाय त्याचे सभोवतीं उभे राहिले. महावीर्यशाली इंद्र व विष्णु, सूर्यचंद्र, धाता-विधाता, अनिलानल, पूषा, भग, अर्यमा, अंश,

विवस्वान्, मित्र व वरुण यांसहवर्तमान धीमान् रुद्र, त्याच्याच सभोवतीं अष्ट वसु, एकादश रुद्र, द्वादश आदित्य, उभय अश्विनीकुमार, तसेच विश्वेदेव, मरुत्, साध्य, पितर, गंधर्व, अप्सरा, यक्षराक्षस व पन्नग, असंख्य देवर्षि, ब्रह्मर्षि, वैश्वानस, वाल्मिविल्य, वायुहारी, मरीचिप, भृगु, अंगिरा व दुसरे थोर थोर यति; सर्प, विद्याधर तसेच पुण्यवंत योगसिद्ध हे उभे होते. दुसऱ्या बाजूला पितामह, पुलस्त्य मुनि, महातपस्वी पुलह, अंगिरा, कश्यप, अत्रि, मरीची, भृगु, ऋतु, हर, प्रचेता, मनु व दक्ष हे उभे होते. त्याचप्रमाणें, हे राजा, ऋतु, ग्रह व तारेही तेथें आले होते. नद्या स्त्रीरूपें धारण करून आल्या होत्या, तसेंच सनातन वेद, समुद्र, डोह, विविध तीर्थे, पृथ्वी, आकाश, दिशा व वृक्ष हीं सर्वजणें निरनिराळीं रूपें धारण करून तेथें एकत्र झालीं होती. देवमाता अदिति, ऋषी, श्री, स्वाहा, सरस्वती, उमा, शची, सिनिवाली, अनुमति, कुहू, राका, धिषणा व दुसऱ्या देवपत्नी, हिमालय, विंध्य, अनेक शृंगांचा मेरु, अनुचरांसह ऐरावत, कला, काष्ठा, मास, पक्ष, ऋतु आणि तसेंच, हे राजा, दिवस व रात्री हे तेथें हजर होते. हयश्रेष्ठ उच्चैःश्रवा, नागराज वामुकि, अरुण व गरुड, वृक्ष व ओषधि आणि भगवान् यमधर्म हे सर्वजण एकत्र होऊन तेथें आले होते; व काल, यम, मृत्यु व यमाचे अनुचरही तेथें हजर होते. राजा, हे व बहुत्वामुळें न सांगितलेले दुसरे नानाप्रकारचे देवतागण आपआपल्या ठिकाणांहून तेथें कुमाराच्या अभिषेकासाठीं जमले होते. राजा, त्या सर्व देवांनीं अभिषेकद्रव्यांचीं भांडीं व दुसरे सर्व प्रकारचे मंगल पदार्थ घेतले होते. देवांना मोठा हर्ष झाला होता. त्यांनीं उत्तम सुशोभित केलेल्या सुवर्णकलशांत दिव्य उदकाच्या सात पवित्र सरस्वती नद्यांचें जल

धेऊन, त्याच्या योगानें. अमुरांस भय उत्पन्न करणाऱ्या त्या महानुभाव कुमाराम सैन्यापत्याचा अभिषेक केला. हे महाराजा, पूर्वी जलेश्वर वरुणा- ला केलेल्या अभिषेकाप्रमाणें त्यांनीं स्कंदाम अभिषेक केला. त्याचप्रमाणें सर्वलोकपिता- मह ब्रह्मदेव, महातेजस्वी कश्यप मुनि. आणि दुसरे तेंथें जे जगत्प्रसिद्ध लोक होते. त्यांनीं- ही त्यावर अभिषेक केला. संतुष्ट झालेल्या प्रभु ब्रह्मदेवानें नंदिमेन. लोहिताक्ष. घंटाकर्ण आणि प्रख्यात कुमुदमाली हे आपले चार महाबलादच. इच्छेप्रमाणें पराक्रम करणारे. वायुवेगी व बल- वान् सेवक त्याच्या द्विमतीम दिले. महा- तेजस्वी प्रभु स्थापणें शंकरां माया जाणणारा. इच्छेप्रमाणें बल व पराक्रम करणारा आणि देवशत्रूंचा नायनाट करणारा असा एक 'काम' नामक महापारिषद् (मेवक) स्कंदाम दिला. हे राजेंद्रा. हा काम जेव्हां देवासुरांच्या युद्धांत मंक्रुद्ध झाला. तेव्हां त्यानें भीम परा- क्रमी दैत्यांची चौदा अयुते (एक कोटी चालीस लक्ष) केवळ आपल्या बाहूंच्या धडकांनीं ठार केली. त्याचप्रमाणें सर्व देवांनीं मिलून राक्षमांनीं व्याप्त, देवांच्या शत्रूंचा क्षय उडविणारी व विष्णुरूपिणी अशी अजिंक्य मेना त्याम दिली. इंद्रासहवर्तमान सर्व देवांनीं मिहनाद केला; आणि त्याचप्रमाणें गंधर्व, यक्ष, राक्षस, मुनि व पितर यांनींही जयाच्या गर्जना टोकल्या. नंतर महावीर्यशाली, मोठे तेजःपुंज व काल- तुल्य जे उन्माथ व प्रमाथ ते यमानें त्याम अर्पण केले; आणि प्रमत्त झालेल्या प्रतापवान् सूर्यानें आपले 'सुभ्राज' व 'भाम्बर' हे दोघे अनुयायी त्याच्या सेवेम मादर केले. सोमानें- ही आपले केलामशूंगांसारखे चमकणारे व शुभ्र पुष्पें व गंध धारण करणारे 'मणि' व 'सुमणि' हे दोघे अनुचर त्याम दिले. 'ज्वालजिह्व' व 'ज्योति' हे दोघे शूर व परमैच्याची राखरांगोळी उडविणारे मेवक अशांनै त्या आपल्या पुत्राच्या हवाली केले. अंशानैही 'परिषद्' व 'वट'. अत्यंत बलादच अमा 'भीम' आणि वीर्यवंतांम मान्य अस- लेले प्रचंडदेही 'दहति' व 'दहन' हे पांच मेवक धीमान् स्कंदाच्या स्वाधीन केले. पर- वीरांतक इंद्रानें 'उत्क्रोश' व 'पंचक' या नांवाचे दोन वज्रदंडधारी वीर त्या अनल- पुत्राम दिले. आणि त्या दोघांनीं रणांत इंद्राच्या पुष्कळ शत्रूंम ठार मारिलें. 'चक्र' 'विक्रमक' आणि महाबलादच 'संक्रम' हे तीन मेवक महाकीर्तिमान् विष्णुनें त्याम दिले. भिषम्बर जे अश्विनीकुमार त्यांनीं त्याम सर्व विद्यांत पारंगत झालेले 'वर्धन' आणि 'नंदन' हे मोठ्या प्रेमानें अर्पण केले. महायशस्वी धात्यानें 'कुंद' 'कुमुम' 'कुमुद' 'डंबर' व 'आडंबर' हे त्या महात्म्याच्या मेवक-गणांत समाविष्ट केले. मेघ हींच ज्यांची मंन्ये आहेत. असे 'चक्र' व 'अनुचक्र' नामक दोन फार मायावी व बलकट मरदार त्वष्ट्यानें आपल्या तर्फेनें त्याच्याकडे पाठविले. 'सुव्रत' आणि 'मत्यमंभ' हे दोन तपोविद्यासंपन्न महाथोर वीर मित्रानें त्या कुमाराम अर्पण केले. अत्यंत देवगण, वरप्रद आणि त्रैलोक्यांत प्रख्यात असलेले 'सुव्रत' व 'शुभकर्मा' हे विधात्यानें त्या कार्तिकेयाच्या सेवेम वाहिले. आणि हे भारता, पृथानैही त्याला महामायावी 'कालिक' व 'पारणांतक' हे दोन मेवक अर्पण केले. हे भरतमत्तमा जनमेजया, 'बल' आणि 'अति- बल' नांवाचे दोन विशाल तांडांचे महाबल- वान् अनुचर वायुनें त्याम दिले. मत्यप्रतिज्ञ वरुणानें महाबलादच व माशामारख्या मुखांचे राजा, महाथोर 'सुवर्चा' व तमाच 'अतिवर्चा' हे दोन हिमालयानें दिले. थोर 'कांचन'

आणि 'मेषमाली' हे मेरूनें त्यास दिले; आणि, हे भारता, 'स्थिर' व अतिस्थिर ' हे दुमरे दोन महाबल पराक्रमी सेवक मेरूनेंच त्यास अर्पण केले. विशाल पाषाण घेऊन लडणारे ' उच्छ्रंग ' व ' अतिश्रंग ' हे विऱ्याने दिले; आणि समुद्रानेही ' संग्रह ' व ' विग्रह ' हे दोघे मोठ्या योग्यतेचे सेवक त्या अग्निपुत्रास ममर्पण केले. जिचें दर्शन शुभकारक आहे अशा पार्वतीने ' उन्माद ' ' शंक्रुर्ण ' व ' पुष्पदंत ' यांस पाठविलें, आणि हे पुरुषव्याघ्रा, पन्नगेश्वर वामुकीने ' जय ' व ' महाजय ' या दोघां नागांस स्कंदाच्या सेवेस हजर राहण्यास आज्ञा केली.

याप्रमाणेंच साध्य, रुद्र, वसु, पितर, सागर, नद्या व मोठमोठे पर्वत या सर्वांनी आपापल्या वतीने शूल व पट्टे धारण करणारे, दिव्य आयुधें वापरणारे, व नानाप्रकारचे वेप व भूषणें घातलेले, सैन्याच्या तुकड्यांवरील अधिकारी त्याच्या सैन्यांत हजर केले. राजा, मी आतां सांगितले त्यांशिवाय हे दुमरे विविध आयुधांनी युक्त व चित्रविचित्र वस्त्रालंकारांनी विभूषित असे स्कंदाचे मोठमोठे सैनिक होते. त्यांचींही नावें ऐक. शंक्रुर्ण, निकुंभ, पद्म, कुमुद, अनंत, द्वादशभुज, कृष्ण व उपकृष्णक, घ्राणश्रवा, कापिस्कंध, कांचनाक्ष, जलंधम, अक्ष, संतर्जन, तसाच, हे राजा, कुनदीक, तमोतकृत, एकाक्ष, द्वादशाक्ष, तसाच प्रभु एकजट, सहस्त्रबाहु, विकट, व्याघ्राक्ष, शितिकंपन, पुण्यनामा, सुनामा, सुचक्र, प्रियदर्शन, परिभ्रुत, कोकनद, प्रियमाल्यालेपन, अजोदर, गजशिरा, स्कंधाक्ष, शतलोचन, ज्वालाजिह्व, करालाक्ष, शितिकेश, जटी, हरि, परिश्रुत, कोकनद, कृष्णकेश, जटाधर, चतुर्दंष्ट्राजिह्व, मेषनाद, पृथुश्रवा, विद्युताक्ष, धनुर्वक्र, जाठर, मारुताशन, उदाराक्ष, रथाक्ष, वज्रनाभ, वसुप्रभ, समुद्रवेग, तसाच हे राजेंद्रा, शैलकंपी, वृष, मेष, प्रवाह, त्याचप्रमाणें आनंद व उपनंदक,

धूम्र, श्वेत, कर्लिग, सिद्धार्थ व तसाच वरद, प्रियक, नंद, प्रतापी गानंद, आनंद, प्रमोद, स्वस्तिक आणि तसाच ध्रुवक, क्षेमवाह, सुवाह, आणि, हे भारता, सिद्धपत्र, गोब्रज, कनकापीड, महापरिषदेश्वर, गायन, हसन, बाण व वीर्यशाली खड्ग, बैताली, गतिताली, तसेच कथक व वादक, हंसज, पंकदिग्भाग, समुद्रोन्मादन, रणोत्कट, प्रहास, श्वेतासिद्ध, नंदन, कालकंठ, प्रभाम, तसाच कुंभांडकोदर, कालकक्ष, सित, तसाच भूतांचा मथन, यज्ञवाह, सुवाह, देवयाजी, सोमप, मज्जान, महातेजा, आणि, भारता, क्रथ व क्राथ, तुहर, तुहार व वीर्यवंत चित्रदेव, मधुर, सुप्रसाद, महाबली किरीटी, वत्सल, मधुवर्ण, कलशोदर धर्मद, मन्मथकर व वीर्यवंत सूचीवक्र; तसाच श्वेतवक्र, सुवक्र, व पांडुरवर्णाचा चारुवक्र; दंडबाहु, सुबाहु, रज व कोकिलक; अचल, कनकाक्ष, बालांचा प्रभु, संचारक, कोकनद्ध, गृध्रपत्र, जंबूक, लोहाजवक्र, जवन, कुंभवक्र, कुंभक, स्वर्णप्रवि, कृष्णौजा, हंसवक्र, चंद्रभ, पाणिक्ूर्चा, शंक्रु, पंचवक्र, शिक्षक, चाषवक्र, जंबूक, शाकवक्र, आणि कुंजल हे सर्वजण व योगी, महात्मे, सतत ब्राह्मणांवर प्रेम करणारे, ब्रह्मदेवाचे आश्रित व मोठमोठे मानकरी—कित्येक तरुण, कित्येक बाल, तर कित्येक वृद्ध, असे सर्व प्रकारचे हजारों सभासद, हे जनमेजया, त्या कुमाराज्वल जमले. याशिवाय, हे राजा, जे कित्येक नानाप्रकारच्या तोंडांचे लोक तेथें गोळा झाले होते, ते श्रवण कर. कासव व कोंबडा यांप्रमाणें ज्यांचीं मुखें आहेत असे; ससा व मुबड यांसारख्या तोंडांचे; खरमुखी व उष्ट्रमुखी; तसेच डुकरतोंडचे; मांजर व ससे यांसारख्या मुखांचे; तसेंच, हे भारता, दीर्घमुखी; नकुल व उलूक यांचीं तोंडें धारण करणारे; तसेच दुसरे

कावळ्यामारख्या तोंडाचे, उंदीर, चातक व ज्यांना गुडघ्याशीच मुखें आहेत असेही कित्येक मोर यांसारखीं मुखें अमलेले; दुमरे कित्येक होते ! पुष्कळांचीं तोंडे कुशीस होती, व मत्स्यमुखी व मेषमुखी, शेळी, मेंढी व म्हैम तशींच पुष्कळांना अनेक अनिराख्या भागीं यांच्याप्रमाणें मस्तकें अमलेले; अम्बलमुखी, होती ! त्याचप्रमाणें कित्येक तुकड्यांवरील व्याघ्रमुखी; चित्यासारखे तोंडाचे; सिंहमुखी; अधिकाऱ्यांचीं तोंडे क्रीट पतंगासारखीं होती. भयंकर गजमुखी; नक्रमुखी; गरुड, कंकपक्षी. दुमऱ्यांचीं तोंडे अनिराख्या जातींच्या सर्पा- लांडगा व कावळा यांच्यासारख्या तोंडाचे; दुमरे प्रमाणें होती. कित्येकांना अनेक हात व अनेक मस्तकें होती. नानाप्रकारचे वृक्ष कोणाच्या हातांत होते; व तमेच दुमरे कित्येक कमरेजवळ मस्तकें अमलेले असे होते ! कित्येक भुजंगाच्या शरीरामारख्या तोंडाचे, नानाप्रकारच्या दोळीत व कपारीत राहणारे, वखानें देह झांकून घेत- व ल्यालेले, नानाप्रकारचीं सुवर्णाचीं वस्त्रे (चिलखतें) केलेले, अनेक प्रकारचीं वस्त्रे परिधान केलेले, मुंद्र माना अमलेले, मोठे तेजःपुंज दिमणारे. तमेच चर्मधारी, पागोटी व मुगट घातलेले, व किराट धारण केलेले होते. कित्येकांचे कंम सोन्यामारखे होते. कांहींजणांस पांच शेंड्या. कांहींम तीन, कांहींम दोन आणि दुमऱ्या कित्येकांस मात मात शेंड्या राखिलेल्या होत्या. कांहींनीं झुलपें राखिलीं होती; कांहींनीं टोप घातले होते; कित्येकांनीं मुंडन केलें होतें व कांहींनीं पांटे मोठी, कांहींनीं कृश, कित्येकांचे हातपाय भले लड्ड, तर कित्येकांचे अगदीं बारीक; कोणाच्या माना वमलेल्या तर कोणाचे कान भले लांब, असे त्यांचे आकार कांहीं विलक्षण होते. कित्येकांनीं अनेक जातींचे साप भूषणांदाखल धारण केले होते ! कोणीं गजचर्म परिधान केले हातें; आणि दुमऱ्या कित्येकांनीं कृष्णाजिनें परिधान केलीं होती. हे महाराजा, कित्येकांना खांद्याशीं तोंडे होती व कित्येकांस पोटावरच होती ! त्याप्रमाणें पाठी- वर तोंडे असलेले, हनुवटीशीं तोंडे असलेले, व अंम. मुजे व कुवडे. आणि ज्यांच्या फक्त मांड्याच

आखूड आहेत असे अनेक प्रकारचे लोक त्यांत होते. कित्येकांचे कान व मस्तकेंच हत्तीसारखी होती. कांहींचीं नाकें हत्तीसारखी, कांहींचीं कामवासारखी व दुसऱ्या कांहींचीं लांडग्यांसारखी होती. कित्येकांचे उच्छ्राम दीर्घ चालले होते; कित्येकांच्या मांड्या लांब होत्या; कित्येक अक्राळविकाळ होते; व कांहीं खाली तोंडे घातलेले होते. मोठमोठ्या दादा असलेले. आखूड दादांचे, व तसेच दुसरे चार चार दादांचे होते. त्याचप्रमाणे, हे राजा, दुसरे हजारोजण मोठे भयंकर व गजेंद्रासारखे पुष्ट दिमत होते. त्यांचे अवयव चांगले बाहेर निघालेले, तेजःपुंज व उत्तम मुशोभित केलेले होते. हे भारता, पिंगट नेत्रांचे, शंकुसारख्या कानांचे व लाल नाकें असलेले लोक तेथे होते. लहान दादांचे, मोठमोठ्या दादांचे, जाड ओठांचे व हिरवट केंस असलेले असे कित्येक होते. हे भारता, त्यांचे पाय, ओठ, दादा, हात व केंस यामध्ये अनेक प्रकारे भिन्नता होती; अनेक निरनिराळ्या प्रकारच्या चर्मांनी त्यांनी आपले अंग आच्छादिलेले होते व त्यांच्या भाषाही नानाप्रकारच्या होत्या. त्या तुकड्यांवरील अधिपतींना देशभाषा उत्तम येत होत्या आणि ते त्या भाषांत एकमेकांशी बोलत होते. अशा प्रकारचे ते महापारिषद तेथे मधोवार हृष्ट होत्सामते घिरट्या घालीत होते. कांहींच्या माना उंच होत्या, कित्येकांचीं नखें लांब लांब होती. कोणाचे हात, पाय व मस्तकें लांबट होती. कोणाचे डोळे पिंगट. दुसऱ्यांचे कंठ निळे, आणि, हे भारता, आणिकांचे कानच लांबलांब होते. कांहींजण वृकोदरासारखे दिमत होते, तर कोणी काजळासारखे काळे कुट्ट होते. कांहींचे नेत्र स्वच्छ होते. कांहींच्या माना लाल होत्या, आणि दुसऱ्यांचे नेत्र पिंगट होते. तसेंच, हे भारता. पुष्कळांचे अंगावर त्रिपके

टिपके होते; आणि, हे राजा, त्यांचे वर्णही चित्रविचित्र होते; चवऱ्या धारण करणारांप्रमाणे दिमणाऱ्या, व मोरासारख्या कांतिमान् अशा त्यांच्या रंगविरंगी व एकरंगीही तांबड्या व पांढऱ्या पंक्ति दिमत होत्या.

राजा, आणखी यांची आयुधें मी सांगत आहे ती श्रवण कर. कोणी हातांत पाश घेऊन मज्ज झाले होते. कोणी आपली गर्दभासारखी मुखें पसरली होती. त्याचप्रमाणे पृष्ठाक्ष व नीलकंठ यांनी हातांत परित्र घेतले होते. कोणाचे हातांत शतघ्नी होत्या. कोणी चक्रे घेतली होती व कित्येकांचे हातांत मुसळें होती. कित्येकांनी तरवारी व मोगर घेतले होते. आणि, हे भारता, कांहींचे हातांत काठ्याच होत्या आणि कितीएकांचे हातांत गदा व भुशुंडी असून दुसऱ्यांचे हातांत तोमर होते. याप्रमाणे विविध प्रकारचीं शोर आयुधें घेतलेले ते महानुभाव, महावेगी, महाबलाढ्य व रणप्रिय पारिषद कुमाराचा अभिषेक पाहून हृष्ट झाले; आणि अंगास शृंगुरमाळा बांधलेले ते महाबलाढ्य वीर आनंदाने नाचूं लागले. राजा, हे व दुसरे पुष्कळ महापारिषद त्या महात्म्या यशस्वी कार्तिकेयाजवळ प्राप्त झाले होते. यांशिवाय, दुसरे अंतरिक्षांतल अनिलसदृश, शूर व दिव्य राजे देवतांच्या आज्ञेप्रमाणे स्कंदाचे सेवक झाले; आणि अशा प्रकारचे हे हजारों लाखों वीर त्या अभिषिक्त महात्म्यामधोवतीं गराडा देऊन उभे राहिले!

अध्याय शेचाळिसावा.

—:—

तारकाचा वध.

वेशपायन सांगतात:—राजा, शत्रुगणांचा निःपात करणारे जे मातृगण कुमाराचे अनुचर झाले होते. ते मी तुला सांगतां. श्रवण कर.

वीरा जनमेजया, ज्या कल्याणीनीं भागशः हें त्रैलोक्य व्यापिलें आहे, त्या यशस्विनी मातांचीं नांवें सांगतो, ऐक. प्रभावती, विशालाक्षी. पालिता, तशीच गोस्तनी, श्रीमती, बहुला. तशीच बहुपुत्रिका, अप्पुजाता, गोपाली, तशीच बृहदंबालिका, जयावती, मालतिका, ध्रुवरत्ना. अभयंकरी, वसुदामा, दामा, विशोका. तशीच नंदिनी, एकजूडा, महाजूडा, चक्रमेमि. उत्तेजनी, जयत्सेना, कमलाक्षी, शोभना, शत्रुंजया. तशीच क्रोधना, शलभी, खरी, माधवी. शुभवक्रा, तीर्थमेनि, गीतप्रिया, कल्याणी, रुद्रोमा, अमिताशना, मेघस्वना, भोगवती, सुभ्रू, कनकावती, अलाताक्षी, वीर्यवती, विद्युज्जिह्वा, पद्मावती, सुनक्षत्रा, कंदरा, बहुयोजना, संतानिका, तशीच कमला, महाबला, सुदामा, बहुदामा, सुप्रभा, यशस्विनी, नृत्यप्रिया, शतोलूखल-मेखला, शतघंटा, शतानंदा, भगनंदा, भाविनी, वपुष्मती, चंद्रशीता, भद्रकाली, ऋक्षा, अंबिका. निष्कुटिका, वामा, चत्वरवासिनी, सुमंगला, स्वस्तिमती, बुद्धिकामा, जयप्रिया, धनदा, सुप्रसादा, भवदा, जलेश्वरी, एडी, भेडी, समेडी. तशीच वेतालजननी, कंडूति, कालिका. देवमित्रा, वसुश्री, कोटरा, चित्तसेना, तशीच अचला, कुतकुटिका. शंखलिका. तशीच शकुनिका, कुंडारिका, शंखलिका, कुंभिका, शनोदरी. उत्क्राथिनी, जलेला, महावेगा. कंकणा, मनोजवा, कंठकिनी. प्रथमा, तशीच पतना, केशयंत्री, त्रुटि, वामा, कोशना व तडित्प्रभा, मंदोदरी, मुंडी, कोटरा, मेघवाहिनी, मुभगा, लंबिनी, लंबा, ताम्रजूडा, विकाशिनी, उखैवेणीधरा, पिंगाक्षी, लोहमेखला, पृथुवस्त्रा, मधुलिका, तशीच मधुकुंभा, पक्षालिका, मत्कुलिका, जरायु, जर्जरानना, ख्याता व दहदहा, तशीच धमधमा, खंडखंडा, पूषणा, मणिकुट्टिका, अमोघा, तशीच लंबपयोधरा, वेणुवीणाधरा.

पिंगाक्षी, लोहमेखला. शशोलूकमुखी. कृष्णा, खरंजघा. महाजवा. शिशुमारमुखी. श्रेता, लोहिताक्षी, विभीषणा. जटालिका. कामचरी. दीर्घजिह्वा. बलेष्कटा. कालेहिका. वामनिका. मुकुटा. लोहिताक्षी. महाकाया. हरिपिंडा. एकत्वचा. मुकुमुमा. कृष्णकर्णी. धुरकर्णी. चतुष्कर्णी. तशीच कर्णप्रावरणा. चतुष्पथनिकेता. गोकर्णी. महिषानना. खरकर्णी. महाकर्णी. भेरीम्बना. महाम्बना. शंखकुंभश्रवा. भगदा. महाबला. गणा. मुगणा. तशीच अर्भानि व कामदा, चतुष्पथरता. भूमितीर्था. अन्यगोचरी. पशुदा. वित्तदा. सुवदा. महायशा. पयोदा. गोमहिषदा, मुविशाला, प्रतिष्ठा, सुप्रतिष्ठा, रोचमाना. सुरोचना, नौकर्णी, मुखकर्णी, विशिरा, तशीच मंथिनी, एकचंद्रा, मेघकर्णी, मेघमाला, विरोचना, ह्या व दुमन्या पुष्कळ माना कार्ति-केयाच्या अनुयायी झाल्या होत्या. हे भरत-पभा, त्या हजारां अमून त्यांचीं रूपेही नाना-प्रकारचीं होती. कित्येक दीर्घनस्वी होत्या, कित्येक दीर्घदंती होत्या; आणि हे भूपते, कित्येकींचीं तोंडें लांब होती. कित्येक भर-तारुण्यांत आलेल्या उत्तम दागदागिने घालून सजलेल्या व सशक्त अमून त्यांचीं आकृतिही मधुर होती. त्या इच्छित रूप धारण करणाऱ्या अमून त्या प्रत्येकींचे कांही पृथक् महान्म्य होते. दुमन्या कित्येक अगदीं हाडकुळ्या होत्या. कांही पांढऱ्या, कांही सुवर्णगौर, कांही कृष्ण-मेघाप्रमाणें श्याम, व इतर कांही धुरकट रंगाच्या होत्या; आणि, जनमेजया. कांही अरुण-वर्णाच्या होत्या. त्या महाभोगी, दीर्घकेशी व स्वच्छ वस्त्र परिधान केलेल्या होत्या. किती-एकींच्या वेषा वर उचलेल्या होत्या. नेत्र पिंगट होते, आणि मेखला लांबलांब होत्या. कित्येकींचीं पोटे मोटमोठी होती. कांहींचे कान लांब होते आणि कित्येकजणींचे मन लंबाय

मान होते. कांहींचे डोळे लाल होते, कित्येकींच्या सर्वत्र शरीराचा रंग तांबडा होता, आणि दुसऱ्यांचे नेत्र हिरवट होते! त्या वरदायिनी, कामचारिणी व नित्यप्रमुदित अशा होत्या. याम्या, रौद्रा, सौम्या, महाबलाद्या कांबेरी, वारुणी, तशीच माहेंद्री, आग्नेयी, वायवी व कामारी यांच्याप्रमाणेच, हे भरतर्षभा, ब्राह्मी, वैष्णवी, सौरी आणि महाबला वाराही, ह्या सर्वजणी रूपांनीं अप्सरांच्या तोडीच्या तशाच मनोहारिणी व मनोरम होत्या. त्यांची वाणी कोकिलेमारखी; तशाच त्या संपत्तीत कुबेराच्या बरोवरीच्या; युद्धांत इंद्राप्रमाणे पराक्रमी व तेजांनीं अशितुल्य होत्या. शत्रूशीं युद्ध चालू असतां त्या सद्योदीत त्यांस चळचळां कांपवीत! त्या इच्छित रूप धारण करणाऱ्या अमून वेगांनीं वायूच्या बरोवरीच्या होत्या. त्यांचें बल व वीर्य अचिंत्य होतें; आणि पराक्रमही तसाच होता. त्या वृक्षचत्वारवर राहाणाऱ्या, चवाठ्यावर राहाणाऱ्या, गुहांत व स्मशानांत वास करणाऱ्या आणि शैल व पाणवटा यांवर असणाऱ्या अशा होत्या. त्या नानाभूषणें ल्यायल्या होत्या, त्यांनीं नानाप्रकारचीं फुलें व वस्त्रें धारण केलीं होती, विविध प्रकारचे चित्रविचित्र पोषाक त्यांनीं घातले होते, आणि त्यांच्या भाषाही नानाप्रकारच्या होत्या. हे नृपश्रेष्ठा, अशा प्रकारचे हे व शत्रूस भयभीत करणारे पुष्कळ दुसरेही समूह त्रिदशेंद्राच्या अनुमतीनें त्या महात्म्या कुमाराच्या मागून चालले होते.

हें राजशादूला, मग भगवान् पाकशासनानें सुरद्वेष्यांच्या विनाशार्थं गुहास शक्ति व अस्त्र दिलें; एक मोठ्या आवाजाची, पांढरी स्वच्छ व चमकणारी अशी प्रचंड घंटा दिली; आणि हे भरतर्षभा, अरुणादित्य रंगाचीं एक पताकाही दिली. पशुपतीनें त्याला एक सर्व भूतांची प्रचंड सेना दिली. ती उग्र, नानाआयुधें वापरणारी,

तप, वीर्य व बल यांनीं युक्त व अजिंक्य अमून तिजबरोबर शांकरगणही होते. त्या सेनेचें नांव ' धनंजया ' असें होतें. तीमध्ये रुद्रासारखे बलाढ्य असे तीन अयुत योद्धे होते! आणि रणांतून मार्गें फिरणें हें त्यांस मुळीं माहीतच नव्हतें! बलवर्धक अशी वैजयंती माला विष्णूनें त्यास दिली. उमेनें सूर्यासारखी उज्ज्वल अशीं दोन स्वच्छ वस्त्रें दिलीं. ज्यांतून अमृताचा उद्भव झाला आहे, असा एक उत्तम दिव्य कमंडलु गंगेनें त्यास अर्पण केला; आणि बृहस्पतीनें प्रीतीनें त्या कुमाराला एक दंड दिला. गरुडानें आपला लाडका पुत्र जो चित्रविचित्र पिच्छांचा मोर तो त्याच्या सेवेस वाहिला; अरुणांनें ताम्रचूड व चरणायुध दिलें; जलराज वरुणांनें एक बलवीर्यसमन्वित नाग त्यास अर्पण केला; आणि प्रभु ब्रह्मदेवानें त्या ब्राह्मणप्रियास कृष्णाजिन दिलें व त्या लोकभावनांनें त्यास रणांगणांत विजय अर्पण केला.

याप्रमाणें, राजा, देवगणांचें सेनापत्य मिळाल्यावर तो स्कंद म्हणजे दुसरा प्रदीप्त व ज्वालामाली अग्निच कीं काय असा शोभूं लागला. नंतर पारिषद व मातृगण यांसह तो स्कंद देवांस हर्षवीत दैत्यांचा नाश करण्यासाठीं निघाला. जीत घंटा वाजत आहेत, ध्वज उभारले आहेत, आणि भेरी, शंख व मुरज यांचे शब्द चालले आहेत, अशी ती आयुधें व पताका यांनीं युक्त असलेली प्रचंड व भयंकर सेना—नक्षत्रांनीं सुशोभित दिसणाऱ्या शरदतुंतल्या आकाशाप्रमाणें शोभत होती. नंतर ते देवसमुदाय व विविध भूतगण एकसारखे भेरी, पुष्कळसे शंख, पटह, झांज, क्रकच, गोविषाणिक, आडंबर, गोमुख आणि मोठ्या शब्दाचे डिंडिम वाजवूं लागले, तसेच ते इंद्रासुद्धां सर्व देव त्या कुमारास तृष्ट करूं लागले, देव व

गंधर्व गायन करूं लागले; आणि अप्सरांच्या ताप्यांनीं नृत्य आरंभिलें. नंतर त्या संतुष्ट झालेल्या महासेनानें देवांस वरप्रदान केलें कीं, “जे तुमचा वध करूं पहात आहेत, त्या तुमच्या शत्रूंचा मी रणांत वध करीन !”

जनमेजया, त्या विबुधश्रेष्ठापामून असा वर मिळतांच देवांस हर्ष झाला; आणि ‘आतां शत्रु निघन पावलेच !’ असें ते महात्मे मानूं लागले. त्या महात्म्यांनें तो वर दिल्या, तेव्हां सर्व भूतसंघांनीं हर्षानें ज्या आरोळ्या टोकिल्या त्यांच्या ध्वनींनिं तिन्ही लोक दुमदुमून गेले. नंतर, राजा, ज्याच्याभोवतीं महान् सैन्याचा वेढा पडला आहे, असा तो महामेन देवांच्या रक्षणासाठीं व युद्धांत दैत्यांचा वध करण्यासाठीं बाहेर पडला. हे जनाविषा, व्यवसाय, जय, धर्म, सिद्धि, लक्ष्मी, धृति व स्मृति ह्या त्या महासेनाच्या सैन्याचे अग्रभागीं चालल्या होत्या. जिनें हातांत शूल, मोगर व अलात-चक्रे घेतलीं आहेत, अंगांत चित्रविचित्र आभरणें व कवचें चढविलीं आहेत, गदा, मुमळें, बाण, शक्ति व तोमर हीं हातांत घेतलीं आहेत. आणि जी मद्रोन्मत्त सिंहाप्रमाणें गर्जना करीत आहे, अशा त्या भयंकर सेनेसहवर्तमान तो गुह स्वतः गर्जना टोकून बाहेर पडला. त्यास पाहातांच सर्व दैत्य, राक्षस व दानव भयभीत होऊन सर्व दिशांस पळूं लागले; आणि विविध आयुधें उगारून देव त्यांचा पाठलाग करूं लागले. मग दैत्यांस पाहातांच संतप्त झालेल्या त्या तेजस्वी व बलाढ्य अशा भगवान् स्कंदानें पुनःपुनः भयंकर शक्त्यस्त्राचा प्रयोग चालविला; आणि हविर्द्रव्यांनें समिद्ध झालेल्या अग्नीप्रमाणें आपलें तेज प्रकट केलें. याप्रमाणें अमिततेजस्वी स्कंद एकसारखा त्या शक्त्यस्त्राचा प्रयोग करूं लागला, तेव्हां, हे महाराजा, प्रज्वलित उल्का भूमीवर पडूं लागल्या,

त्यांचे भयंकर शब्द होऊं लागले, आणि जमिनीवर प्रलयकालच्याप्रमाणें अत्यंत भयंकर धुकें बसूं लागले. हे भरतर्षभा, त्या अग्निपुत्रानें तेव्हां एकच शक्ति फेंकली, परंतु तिजपासून कोट्यवधि शक्ति उत्पन्न झाल्या ! मग त्या संतुष्ट झालेल्या भगवान् स्कंद प्रभूनें महाबलाढ्य व महापराक्रमी जो दैत्येंद्र तारक, त्याचा, बलाढ्य व वीर्यशाली अशा दहा अयुत दैत्यांसहवर्तमान वध केला ! महिषामुरासभोवतीं आठ पद्मे दैत्यांचा गराडा होता, तथापि त्याचाही त्या सर्वांमह युद्धांत निःपात उडविला ! एक हजार अयुत दैत्यांनीं युक्त असलेल्या त्रिपादाम टार केलें ! आणि दहा निखर्वे दैत्यांनीं परिवारित अशा ह्येन्द्रोराम-विविध आयुधें हातांत घेतलेल्या त्याच्या अनुचरांसह-परलोक दाखविला. राजा, याप्रमाणें शत्रूंचा वध होऊं लागला, तेव्हां कुमाराचे अनुचर दशदिशा दणाणवीत प्रचंड गर्जना करूं लागले, नाचूं लागले, क्लाना करूं लागले, आणि हर्षभरित होत्माते मोठ्यानें हसूं लागले. राजेंद्रा, मग त्या शक्त्यस्त्राच्या तेजानें सर्व त्रैलोक्य त्रस्त झाले ! दुसरे हजारें दैत्य स्कंदच्या नुसत्या शब्दांनेच दग्ध झाले ! कित्येक सुरद्वेषे पताकेच्या वाऱ्यांने दूर उडविले गेले व टार झाले ! कित्येक वंशनादानें त्रस्त होऊन भूतलावर पडले ! आणि कित्येक शस्त्रांनीं छिन्नभिन्न होऊन गतप्राण होऊन पडले ! याप्रमाणें त्या बलवान् वीर कान्तिकेयांने अनेक आतनायी देवशत्रूंम समरांगणांत टार केलें.

राजा जनमेजया, बलीचा पुत्र बाण म्हणून एक महाबलाढ्य दैत्य होता. तो कौरव पर्वताच्या आश्रयानें देवगणांस पीडा देत असे. त्या देवशत्रूवर मग उदारधी कान्तिकेयांने चाल केली असतां तो त्याच्या भीतीनें कौरव पर्वताम शरण जाऊन त्याच्या पोटांत दडून बसला.

तेव्हां मग भगवान् कार्तिकेयानें तो क्रींच पक्ष्यांच्या किलविलाटानें भरलेला क्रींच पर्वतच अग्निदत्त शक्तीच्या योगानें भद्र केला. त्या वेळीं त्या पर्वतावरील शालवृक्षांच्या मोडून पडलेल्या फांद्या त्या सर्व पर्वतभर विखुरल्या; त्यावरील वानर व हत्ती त्रस्त झाले; पक्षी भयभीत होऊन दूर उडून गेले; भुजंग विळांतून बाहेर पडले; माकडें व अस्वले यांचे थवेचे थवे चीं चीं करीत पळत सुटल्यामुळें तो पर्वत दणाणून गेला; आणि कुरंगांच्या शब्दानें सर्व वन दुमदुमून गेलें; शरभ बाहेर पडूं लागले आणि सिंहाही एकाएकी पळत सुटले! राजा, अशी सर्व प्रकारें देना उडाली असतांही तो पर्वत शोभतच होता. त्याच्या शिखरांवर राहाणारे विद्याधर दूर उडून गेले, आणि किन्नरही त्या शक्तिपाताच्या शब्दानें दचकून अतिशय उद्विग्न झाले. मग जेव्हां तो पर्वत पटूं लागला, तेव्हां त्यांतून विलक्षण प्रकारचीं आभरणें व माळा घातलेले शेंकडों हजारां दैत्य बाहेर पडले; आणि कुमाराच्या अनुचरांनीं त्या सर्वांचा रणांत पराभव करून त्यांस ठार मारिलें. आणि द्रैवेंद्रानें वृत्रास मारिलें तद्वत् स्वतः त्या कुद्ध भगवान् स्कंदानें तो दैत्येंद्राचा पुत्र पाठच्या भावांसहवर्तमान त्वरित ठार केला! अशा प्रकारें, राजा, परवीरांतक स्कंदानें शक्तीच्या योगानें मोठ्या जोरानें त्या क्रींच पर्वताचे अनेक तुकडे उडविले. त्यानें रणांत फेंकलेली शक्ति पुनःपुनः त्याचे हातांत येत असे,—असा त्याचा प्रभाव असल्यामुळें व तो तेज, शौर्य, यश व श्री यांनीं इतरांपेक्षां द्विगुणित संपन्न असल्यामुळें त्यानें क्रींच पर्वताच्या ठिकच्या उडविल्या आणि शेंकडों दैत्य मारिले!

याप्रमाणें त्या भगवान् स्कंदानें देवशत्रूस ठार केलें, तेव्हां देव त्याचें भजन करूं लागले व त्यांस परम हर्ष झाला. नंतर, हे भरत-

कुलोत्पन्ना राजा, दुंदुभि व शंख वाजूं लागले, शेंकडों हजारां देवस्त्रिया त्या योगिराजावर सर्वोत्तम अशी पुष्पवृष्टि करूं लागल्या, सुगंधानें भरलेला पुण्यवायु वाहूं लागला, आणि गंधर्व व यजन करणारे महर्षि त्याची स्तुति करूं लागले! कोणी त्याला 'पितामहाचा पुत्र' 'ब्रह्मयोनि' 'सर्वांचा अग्रज' व 'सनत्कुमार' असें म्हणूं लागले, कोणी त्यास महादेवाचा पुत्र, कोणी अग्नीचा, कोणी उमेचा, कोणी कृत्तिकांचा व कोणी गंगेचा पुत्र म्हणून म्हणूं लागले. इतकेंच नव्हे, तर ते त्या महाबलादच योगेश्वरास एक, दोन, चारच काय—पण शेंकडों हजारां नांवांनीं संबोधूं लागले. राजा, या-प्रमाणें मी तुला स्कंदाभिषेकाची कथा सांगितली. आतां या सरस्वतीच्या श्रेष्ठ तीर्थांचें पावित्र्य कसें आहे तें श्रवण कर. हे महाराजा, कुमारांन देवशत्रूंचा निःपात केला असतां, दुसरा स्वर्गच कीं काय असें हें श्रेष्ठ तीर्थ उत्पन्न झालें. या ठिकाणीं असतांना प्रभु कार्तिकेयानें पृथक् पृथक् ऐश्वर्य वांटून दिली, आणि देवांस त्रैलोक्य अर्पण केलें. असो; या-प्रमाणें, हे महाराजा, त्या दैत्यकुलांतक भगवान् देवसेनापतीला या तीर्थावर देवांनीं अभिषेक केला. हे भरतर्षभा, या तीर्थाचें नांव तेजस असें असून येथेच पूर्वीं सुरगणांनीं वरुणाला जलपतित्वाचा अभिषेक केला!

या श्रेष्ठ तीर्थांत बलरामानें स्नान केलें, स्कंदाचें पूजन केलें, आणि ब्राह्मणांस सोनें, वस्त्रें व अलंकार अर्पण केले. मग तो परवीरांतक माधव एक रात्र तेथें राहिला, आणि त्या तीर्थराजाचें पूजन व स्नान घडल्यामुळें; त्या माधवोत्तमास मोठा हर्ष व समाधान झालें, राजा, तूं विचारिल्याप्रमाणें, भगवान् स्कंदाला एकत्र जमलेल्या देवांनीं कसा अभिषेक केला, तो सर्व वृत्तांत मीं कथन केला आहे.

अध्याय सत्तेचाळिसावा.

—:०:—

सारस्वतोपाख्यान.

जनमेजय विचारतो:—ब्रह्मन्, आपणापासून मी हा जो कुमाराचा यथाविधि अभिषेक विस्तारपूर्वक ऐकिला, तो अत्यंत अद्भुत खरा. हे तपोधना, याच्या श्रवणानें मी पुनीत झालों असें समजतो. माझे प्रत्येक रोम हर्षपूर्ण व मन प्रसन्न झालें आहे. कुमाराचा अभिषेक व तसाच देत्यांचा वध ऐकून मला समाधान वाटलें. तथापि त्याचरोबरच आणखी एक उत्मुक्ता उत्पन्न झाली आहे. तेव्हां, हे महाप्राज्ञा, येथें पूर्वी देवांनीं जलराज वरुणाच्या कशा प्रकारें अभिषेक केला, तें मला कथन करा. हे सत्तमा, आपण सांगण्याविषयीं कुशल आहां.

वैशंपायन सांगतात:—राजा, पूर्वकल्पांतील हा आश्चर्यकारक कथाभाग यथातथ्य श्रवण कर. राजा, पहिल्यानें ऋतयुग नीटपणें चाललें असतांना, सर्व देवता वरुणासन्निध जमून त्यास व्हाणाल्या, “ज्याप्रमाणें मुरपति इंद्र आमचें भयापासून सर्वदा रक्षण करितो, त्याप्रमाणें तूं सर्व नद्यांचा भयापासून रक्षण करणारा पति हो. हे देवा, तुजें राहाणें नित्य मकरालयसागरांत असावें. हा नदीपति समुद्र तुझ्या आज्ञेत रहात जाईल. सोमाचरोबरच तुलाही क्षयवृद्धि होतील. ” यावर “ठीक आहे. असें होऊं द्या.” असें वरुण त्या देवांस म्हणाल्या. तेव्हां मग ते सर्व देव त्या सागरनिवासी वरुणासभोवतीं जमा झाले; आणि त्रिधिप्रयुक्त कर्माच्या योगानें त्यांनीं त्यास जलचा राजा केले. नंतर जलचरांचा अधिपति म्हणून वरुणास अभिषेक करून व त्याची पूजा करून देव स्वस्थानीं गेले; आणि मग तो देवगणाभिषिक्त महायशस्वी वरुण—देवांचें जसें

शतक्रतु तसें—नद्या, सागर, नद व सरोवरे यांचें यथाविधि पालन करूं लागला.

राजा, महाप्राज्ञ बलरामानें या तीर्थातही ज्ञान करून नानाप्रकारचें द्रव्य दान केले; आणि नंतर तो प्रलंबारि येथून अग्नितीर्थास गेला. या ठिकाणीं शमीगर्भात शिरलेला अग्नि आंतल्या आंत नाहीसा होऊन दिसेनासा झाला. आणि सर्व लोकांचा विनाश होण्याची वेळ येऊन टपली. तेव्हां सर्व देव हे सर्वलोकपितामह जो ब्रह्मदेव त्याकडे गेले आणि म्हणाले. “ भगवान्, अग्नि नाहीसा झाला आणि कारण तर कांहींच दिसत नाही. महाराज, सांप्रत सर्व भूतांचा क्षय होण्याचा समय प्राप्त झाला आहे. तर, हे प्रभो, कसेंही करून अग्नीचा शोध लावा. ” राजा, जेथें हा प्रकार घडला तेच हें अग्नितीर्थ.

जनमेजय विचारतो:—लोकांची स्थिति ज्यावर अवलंबून आहे, असा तो भगवान् अग्नि: कां नष्ट झाल्या, आणि पुढें देवांस तो कसा सांपडला, तें मला तत्त्वतः स्पष्ट करून सांगा.

वैशंपायन सांगतात:—प्रतापी अग्नि भृगूच्या शापापासून अत्यंत भय पावून शमीगर्भात शिरला आणि नाहीसा झाला. नंतर अग्नि नष्ट झाल्या असतां इंद्रामुद्धां सर्व देव अत्यंत दुःखित होऊन त्याचा शोध करूं लागले; शोधतां शोधतां ते या अग्नितीर्थावर आले; आणि तेथें त्यांस अग्नि शमीगर्भात यथाविधि रहात अमल्याचें दिग्भूत आले. हे नरव्याघ्रा, वृहस्पति व इंद्र यांमह ते सर्व देव अग्नि सांडपतांच मंनष्ट झाले आणि आल्या वाटेनें परत गेले. नंतर, हे महाभागा, तो अग्नि पूर्ववत् प्रकट झाला; पण भृगूच्या शापामुळे— तो ब्रह्मवादी बोलल्याप्रमाणें तो सर्वभक्षक

१ हे अग्निवासाचें वृत्त आदिपर्व अध्याय ५, ६, ७ यांत सविस्तर दिले आहे ते पहावे.

झाला. जनमेजय राजा, येथें स्नान वगैरे करून बुद्धिमान् बलराम हा, सर्व लोकांचा पितामह भगवान् ब्रह्मदेव यांनै पूर्वीं जेथें उत्पत्ति केली त्या ब्रह्मयोगिनीर्थास गेला. तेथेंच पूर्वीं देवांसहवर्तमान प्रभु ब्रह्मदेवानें स्नान करून देवतांचीं तीर्थें यथाविधि निर्माण केलीं. या ठिकाणीं स्नान व पुष्कळ द्रव्य दान करून बलराम मग कौबेरतीर्थास गेला. त्या ठिकाणीं, राजा, प्रभु कुबेरानें मोठी तपश्चर्या केली आणि धनाधिपतित्व मिळविलें. राजा, तो तेथेंच असतांना त्याजपार्शीं द्रव्य व निधि प्राप्त झाले. हे नरश्रेष्ठा, हलधर बलरामानें त्या तीर्थावर जाऊन व विधिवर्क स्नान करून ब्राह्मणांस द्रव्य वांटलें; आणि महाभोर यक्षपति कुबेरानें पूर्वीं ज्या ठिकाणीं मोठी तपश्चर्या करून पुष्कळ वर, धनाधिपतित्व, महातेजस्वी रुद्राशीं सरस्य, देवपणा, लोकपालाची जागा आणि नलकृवर नामक पुत्र मिळविला, तें कौबेर वनांतील ठिकाण बलरामानें पाहिलें. हे महाबाहो, ज्या ठिकाणीं धनाधिपतीनें वरादिकांची प्राप्ति करून घेतली, त्याच ठिकाणीं देवगणांनीं जमून त्याला अभिषेक केला; आणि हंस जोडलेलें व मनाप्रमाणें वेगवान् असें तें वाहन म्हणजे पुष्कळ नामक दिव्य विमान आणि देवांचें ऐश्वर्य त्यास दिलें. राजा, या ठिकाणीं स्नान, दान वगैरे करून तो श्वेतानुलेपन बलराम त्वरेनें 'बदरपाचन' नामक शुभ तीर्थास गेला. राजा, या ठिकाणीं नांदुरकीच्या झाडांचीं बनें अमून हें फलपुष्पांनीं मदादीत भरलेलें असतें आणि येथें सर्व प्रकारचे प्राणी राहातात.

अध्याय अष्टेचाळिसावा.

—:०:—

बदरपाचनतीर्थवर्णन.

वैशंपायन सांगतात:—नंतर, राजा,

तपस्वी व सिद्ध यांनीं सेवित अशा बदरपाचन नामक श्रेष्ठ तीर्थास राम गेला. राजा, सौंदर्यानें पृथ्वीत अप्रतिम असलेल्या श्रुतावती नामक भरद्वाजांच्या मुलीनें व्रत धारण करून, ब्रह्मचारिणी कुमारी राहून व अनेक नियम पाळून त्या ठिकाणीं अतिशय उग्र तपश्चर्या केली. 'देवराज इंद्रच पति मिळाला पाहिजे' असा निश्चय करून तत्प्राप्त्यर्थ त्या भामिनीनें ही तपश्चर्या केली. जनमेजया, स्त्रियांना आचरण्यास केवळ दुरापास्त असे भयंकर नियम पाळीत असतां तिचीं पुष्कळ वर्षें निघून गेलीं. शेवटीं, राजा, तिची ती निर्भारी वृत्ति. तपश्चर्या व परमभक्ति यांच्या योगानें भगवान् इंद्र संतुष्ट झाला; आणि तो देवांचा राजा महात्म्या वसिष्ठ मुनींचें रूप घेऊन तिच्या आश्रमास प्राप्त झाला. हे भारता, तप करणारांत श्रेष्ठ, उग्र तपश्चर्या करणारे, आणि मुनिदृष्ट आचार पाळणारे ते वसिष्ठ मुनिपाहातांच तिनें त्यांची पूजा केली; आणि ती वर्तननियम जाणणारी मधुरभाषिणी कल्याणी त्यांस म्हणाली, "हे भगवन्, हे मुनिशार्दूला, आपली काय आज्ञा आहे? महाराज, एक या हाताशिवाय मी आज आपणांस आपल्या शक्तीप्रमाणें सर्व कांहीं अर्पण करीन. हे सुव्रता, माझी इंद्रावर भक्ति बसली असल्यामुळे मी आपला हात मात्र तुम्हांला कदापि देणार नाहीं! त्रिभुवनाचा अधिपति जो इंद्र त्यास व्रतें, नियम व तपश्चर्या यांच्या योगें मला संतुष्ट करावयाचें आहे!"

राजा, असें ती बोलतांच भगवान् इंद्रानें तिजकडे निरखून पाहिलें; आणि तिचा निर्भर जाणून तिला आश्वासन देत तो म्हणाला, "हे सुव्रते, तू उग्र तपश्चर्या करीत आहेस, हें मी जाणतों. हे कल्याणि, ज्या उद्देशानें तूं हें आरंभिलें आहेस, तो तुझा

मनोदय पूर्ण होईल; आणि हे वरानने, तुला पाहिजे आहे तसें सर्व घडून येईल. अगे, तपश्चर्येनें सर्व कांहीं प्राप्त होतें; आणि पुनः, जसें पाहिजे तसें होतें. हे शुभानने, देवांची जी दिव्य स्थाने आहेत, ती तपानेच प्राप्त होतात; व महत्सुख हें तपोमूलकच आहे, तें तपावांचून मिळत नाही, हें मनांत जाणून मनुष्य घोर तपश्चर्या करून व देहत्याग करून देवत्व पावतात. अस्तु, हे कल्याणि, माझे एक लहानसें काम आहे तें ऐक. हे सुभगे शुभत्रते, मजपाशीं हीं पांच बोरें आहेत, एवढीं शिजवून दे. "

जनमेजया, असें म्हणून तो भगवान् बलसूदन तिचा निरोप घेऊन थोड्या अंतरावर गेला आणि जप करीत बसला. हे मानदा. इंद्र तेथें बसल्यामुळें, या कन्येच्या आश्रमापासून जवळच तें त्याचें ब्रम्हण्याचें ठिकाण 'इंद्रतीर्थ' म्हणून त्रैलोक्यांत विख्यात झालें. भरद्वाजकन्येच्या सत्त्वाची परीक्षा पहावी, अशी इंद्राला जिज्ञासा असल्यामुळें त्यानें ती बोरें शिजूच नयेत असें केलें ! मग राजा, जिनें मोठी तपश्चर्या केली आहे, वाणीचा निग्रह केला आहे, श्रम जिकिले आहेत, आणि जी उद्दिष्ट कार्यांत तत्पर असे. अशा त्या पावित्र्यानें शोभणाऱ्या श्रुतावर्तानें ती बोरें विस्तवावर ठेविली आणि ती महाव्रता ती शिजवूं लागली. हे राजशाठूला पुरुषर्षभा. शिजवितां शिजवितां तिचा किती तरी वेळ गेला, तथापि ती मुळीच शिजली नाहीत ! शेवटीं दिवसही मावळला, तिच्या आश्रमांत असलेलीं सर्व लांकडे जळून संपलीं, आणि चुलींत लांकडाचा तुकडाही राहिला नाही. शेवटीं आतां लांकडावांचून अग्नि विझेल, असें पाहून तिनें आपलें शरीर जाळून घेतलें, हे अनया. त्या सुंदरीनें आपले पाय चुलींत घातले; आणि

ते जसजसे जळूं लागले तसतशी ती ते अधिक अधिक आंत सारूं लागली ! पाय जळत असतांही त्या निष्कलकेनें त्यांची पर्वा केली नाही ! तिला त्यावद्दल कांहींच वाटलें नाही ! अशा प्रकारें महर्षीनें प्रिय करण्याच्या बुद्धीनें ती दुष्कर कर्म करीत असतां तिच्या मनाला वाईट वाटलें नाही. किंवा तोंडावरही दुःखाचा कांहीं विकार झाला नाही ! शरीर अग्नीनें पेटवून जणू पाण्यांतच उभी असल्याप्रमाणें ती हर्षभरित होती ! हे भारता, तिची निराशा तर झाली नाहीच, पण " काय पाहिजे तें होवो, बोरें शिजवावयाचीच ! "

अमा तिच्या मनाचा निर्धार उत्तरोत्तर वाढतच गेला ! एक " बोरें शिजवून दे " हें ऋषीचें वाक्य मनांत घट्ट धरून ती शुभांगी माग्वी बोरें शिजवीत बसली; परंतु, राजा, ती शिजलीच नाहीत ! भगवान् अग्नीनें तिचे दोन्ही पाय जाळून स्वाक केले, परंतु तिच्या मनाला यात्किंचितही दुःख झालें नाही ! नंतर तिचें हें कृत्य पाहून त्रिभुवनेश्वर इंद्र संतुष्ट झाला; आणि त्या कन्येला आपलें स्वयं रूप दाखवून तो त्या अत्यंत दृढतेनें व्रताचरण करणाऱ्या कन्येकडे म्हणाला, " हे शुभे, तुझ्या भक्तीनें, तपानें व नियमाचरणानें मी संतुष्ट झालों आहे. तेव्हां हे शुभांगि, तुझा जो इच्छित मनोग्रह आहे तो परिपूर्ण होईल. तू हा देह त्यागून स्वर्गांत मजसमागमे वास्तव्य करशील. मग पातके भस्म करणारे, त्रैलोक्यांत प्रख्यात व ब्रह्मर्षींनीं सेविलेले असें हें तुझे वदरपाचन नामक उत्कृष्ट तीर्थ यावच्छंद्रदिवाकरा जगांत कायम राहील. हे महाभगे, हे निष्पाप सुंदरि, याच तीर्थवराचे ठिकाणीं अरुंधतीचा त्याग करून सप्तर्षि हिमालयावर गेले. ते महापुण्यशील महाभाग येथें राहात असतां उदरनिवाहासाठीं फळे आणण्यास जात असत. याप्रमाणें

ते वृत्त्यर्थी हिमालयाचे अरण्यांत गेले अमतां बारा वर्षे अवर्षण पडले. तेव्हां त्या तपस्यांनी त्या वनांतच आश्रम करून तेथे वसति केली; आणि त्याच वेळीं इकडे अरुंधतीही ह्या तीर्थावर नित्य तपश्चर्येत मग्न राहिली. पुढे अरुंधती कडक नियम पाळीत आहे असे पाहून वरदायक त्रिनेत्रधारी महादेव मुप्रीत झाला; आणि मग ब्राह्मणाचा वेप धारण करून तिच्या जवळ येऊन म्हणाला, “ हे शुभांगि, मला भिक्षा घाल. ” त्या चारुमुंदरीने त्या ब्राह्मणास प्रत्युत्तर दिले, “ हे विप्रा, अन्नाचा मांडा तर सर्व संपून गेला आहे, तेव्हां ही बोरें खा. ” मग महादेव म्हणाला, “ ठीक आहे; हे मुत्रते, हीच शिजव. ” ते ऐकून ब्राह्मणाचे प्रिय करण्याच्या हेतूने त्या यशस्विनीने ती बोरें प्रदीप्त अग्नीवर ठेवून शिजत ठेविली; आणि ती शिजत तोंपयत तिने त्या ब्राह्मणापामून मनोरम व पुण्यकारक अशा दिव्य कथा श्रवण केल्या. याप्रमाणे ती बोरें शिजवीत व पवित्र कथा ऐकत निराहार बसली अमतां ती बारा वर्षांची घोर अनावृष्टि निवून गेली. बारा वर्षेपर्यंत ती तशीच बसली होती, परंतु हा एवढा अतिदारुण कालही निला केवळ एका दिवसासारखाच वाटला ! नंतर ते मुनि पर्वतांनून फळे घेऊन तेथे आले. तेव्हां भगवान् महादेव अरुंधतीवर प्रसन्न होऊन तीस म्हणाला. “ हे धर्मज्ञे, पूर्वाच्या तुझ्या नियमाप्रमाणे या ऋषीस सामोरी हो. हे धर्मज्ञे, मी तुझ्या तपाने व नियमाने संतुष्ट झालों आहे ! ”

“ मग शंकराने आपले स्वरूप प्रकट केले आणि त्या ऋषीस अरुंधतीचे सर्व चरित्र सांगून तो म्हणाला, “ विप्रहो, तुम्ही हिमालयावर जें तप संपादन केले, तें अरुंधतीच्या तपाच्या मुळीच बरोबरीचे नाही, असे माझे मत आहे. ह्या तपस्विनीने येथे कांहीं एक न खातां ही

बोरें शिजविण्यांत संपूर्ण बारा वर्षे घालवून अत्यंत दुश्चर असे तप केले आहे. ” मग भगवान् पुनः अरुंधतीला म्हणाला, “ हे कल्याणि, तुझ्या हृदयांत जो मनोरथ अमेलतो वर माग. ” तेव्हां ते सप्तर्षि भोवती बसले असतांना ती पृथुताम्राक्षी देवास म्हणाली. “ भगवन्, जर आपण मजवर संतुष्ट झालां आहां, तर हें एक अद्भुत तीर्थ व्हावें. याचें नांव ‘ बदरपाचन ’ असें अमावें. हें देव, ऋषि व सिद्ध यांस प्रिय व्हावें; आणि तसेंच, हे देवदेवेशा, जो कोणी शुद्धपणे येथें त्रिरात्रपर्यंत राहिल, त्याला बारा वर्षे उपोषण केल्याचें पुण्य प्राप्त व्हावें ” तिचे हें भाषण ऐकून, ‘ तथास्तु ’ असे महादेवाने त्या तपस्विनीस प्रत्युत्तर दिले. नंतर सप्तर्षींनी त्याची स्तुति केली आणि मग तो देव आपल्या लोकां निवून गेला. हे कल्याणि, एवढ्या तपश्चर्येनेही अरुंधती विलकूल थकलेली, तोंड उतरलेली किंवा तहानमुकेने व्याकूल झालेली दिसत नाही, असे पाहून त्या ऋषीस मोठे आश्चर्य वाटले. अमो; याप्रमाणे त्या अतिपवित्र अरुंधतीने परम सिद्धि संपादिली होती. हे महाभागे पतिव्रते, ज्याप्रमाणे तूं मजसाठीं आचरण केलेस, तसेंच त्या अरुंधतीने केले. परंतु, हे कल्याणि, तूं ह्या व्रतांत तिजपेक्षांही ताण केलीस. त्यापेक्षां, हे कल्याणि, मीही आज तुझ्या नियमाने अतिसंतुष्ट होऊन तुला विशेष वर देतो. हे कल्याणि, अरुंधतीला त्या महान्म्याने दिलेल्या वराचा प्रभाव आणि तुझे तेज यांच्या योगाने मी या तीर्थास आणखी एक वर यथाविधि देतो. तो असा की, जो मनुष्य केवळ एक रात्र येथे पवित्रपणे राहिल, व स्नान करील, त्याला देहत्यागानंतर अत्यंत दुर्लभ असे लोक मिळतील ! ”

राजा, तो भगवान् प्रतापी सहस्राक्ष त्या पुण्यशील श्रुतावतीला असे सांगून पुनः स्वर्गास

गेल्या. हे भरतश्रेष्ठा राजा, वज्रधारी इंद्र गेल्या-
नंतर तेथें उत्तम सुवामिक अशा दिव्य पुष्पांची
वृष्टि झाली; देवांच्या तुंडुभी मोठ्याने वाजं
लागल्या; आणि पुण्यगंध वहाणाग पवित्र
वारही मुरू झाल्या. मग. राजा. ती कल्याणी
देहत्याग करून इंद्राची भार्या झाली. हे
भारता, उग्र तपश्चर्येनें तिनें इंद्र पति जोडला
आणि ती त्यासमागें रममाण झाली.

जनमेजय विचारितो:—त्या श्रुतावतीची
माता कोण. व ती शोभना कोठें वाटली हें
मी ऐकूं इच्छितों. हे विप्रा. याविषयी मला मोठें
कौतुक वाटत आहे.

वैशंपायन सांगतात:—विशालाक्षी वृताची
नामक अप्सरा येतांना पाहून महाभाग भर-
द्वाज विप्रर्षिचें रत स्वलन पावले. ते त्या
तपोनिष्ठानें हातांत धरले; परंतु ते खाली पर्ण-
पुटांत पडले व तेथें ती मुलगी उत्पन्न झाली.
तपोधन भरद्वाजांनी तिचे जातकर्मादि सर्व
संस्कार केले आणि देवर्षिगणांच्या मभेन त्या
धर्मात्म्यानें तिचे नामकर्म करून श्रुतावती असें
नांव ठेविलें. मग तिच्या आपल्या आश्रमांत
ठेवून तो हिमालयाचे अरण्यांत गेला. अस्तु:
या तीर्थावरही स्नान व ब्राह्मणांम द्रव्यदान
करून तो अतिपवित्र अंतःकरणचा महानुभाव
वृष्णिवीर पुढें शकतीर्थास गेला.

अध्याय एकुणपन्नासावा.

—:—

इंद्रतीर्थादिवर्णन.

वैशंपायन सांगतात: राजा, मग इंद्र-
तीर्थास गेल्यावर तो यदूंचा अधिपति बलराम तेथें
यथाविधि स्नान करून ब्राह्मणांम द्रव्य व रत्नें
देता झाला. त्याच तीर्थाचे ठिकाणीं अमरराज
इंद्रानें शंभर अश्वमेध केले आणि बृहस्पतीम
विपुल द्रव्य समर्पण केले. त्यानें तेथें सर्व यज्ञ

वेदपासंगतांनीं मागितलेल्या पद्धतीम धरून. पूर्ण
समृद्ध व विविध दक्षिणांनी युक्त असे निर्विघ्न-
पूर्ण पार पाडिले. हे भरतश्रेष्ठा. ते शंभर क्रतु
करून त्या महातेजस्य्यानें त्यांची विधिपूर्वक
मांगता केली; यामुलें त्याला शतक्रतु असें
नांव प्राप्त झालें. ते पवित्र. मंगल व मनातन
तीर्थ त्याच्या नांवामुलें इंद्रतीर्थ याच नांवानें
प्रख्यात झालें. हें सर्व पापांपासून मुक्त करणारें
आहे. राजा. मुमलायुध बलरामानें येथेही
यथोक्त स्नान केले. ब्राह्मणांम उत्तम वस्त्रे व
भोजन घालून संतुष्ट केले. आणि मग तेथून
तो सर्व तीर्थांत वरिष्ठ असें जें शुभकारक राम-
तीर्थ त्याकडे निवून गेला. या ठिकाणीं मुमहा-
तपस्वी महाभाग भार्गवानें पृथ्वीवरील सर्व मोठ-
मोठ्या क्षत्रियांची कत्तल उडवून व वारंवार
पृथ्वी जिंकून. आपल्या उपायाय जो मुनिश्रेष्ठ
कश्यप. त्याच्या अनुमतानें एक वाजपेय यज्ञ
व शंभर अश्वमेध केले; आणि त्या आचार्यांम
समृद्धवल्यांकित सर्व पृथ्वी हीच दक्षिणा दिली !
त्यानें नानाप्रकारचीं रत्नें. गाई. हत्ती, दामी,
शेळ्यांमंदेद्या वगैरेंमुद्धां विविध दानें दिली.
आणि तो वनांत निवून गेला. राजा. देवर्षि व
ब्रह्मर्षि ज्याचें मेवन करतात अशा ह्या पुण्य-
कारक श्रेष्ठ तीर्थावर तीर्थनिवासि मुनींम अभि-
वादन करून बलराम यमुनातीर्थास जाता
झाला. राजा. ज्याची कांति स्वच्छ आहे. असा
अर्तिर्ताचा पुत्र महाभाग वरुण यानें प्राचीन
काळीं या ठिकाणीं राजसूय यज्ञ करण्यासाठीं
मुनींम आणिलें होतें. परवीरांतक वरुणानें
मनुष्य व देव ह्यांम मंत्रांम जिंकून तेथें
मोठा (राजसूय) यज्ञ केल्या. तो यज्ञ झाल्या-
नंतर देवदानवांचा त्रयोक्त्याम भय उत्पन्न
करणारा मंत्राम झाला. जनमेजया, क्रतूंत श्रेष्ठ
असा राजसूय यज्ञ झाला असतां क्षत्रियांचा
अत्यंत घोर असा मंत्राम होत असतो. याचा

अनुभव पांडवांच्या राजमूर्त्यांतही आलेलाच आहे. असो; या ठिकाणी बलरामानें ऋषींची पूजा केली आणि त्या उदारानें इतरही याचकांस द्रव्य देऊन संतुष्ट केलें. नंतर, महापिण्याची स्तुति करीत आहेत व जो हर्षभरित झाला आहे, असा तो वनमाली कमलनयन बलराम तेथून आदित्यतीर्थामें गेला. हे राजसत्तमा, यथेच यजन करून भगवान् भास्करानें नक्षत्रादिक तेजस्वी पदार्थांचें आधिपत्य व मोठा प्रभाव संपादन केला. हे राजसत्तमा, इंद्रामुद्धां सर्व देव, मरुतांमह विश्वेदेव, गंधर्व व अप्सरा, द्वैपायन व्याम, शुक मुनि, मधुमूदन कृष्ण, यक्ष, राक्षस, पिशाच हे व दुसरे पुष्कळ हजारों योगसिद्ध सरस्वतीच्या याच मंगल व पुण्यकारक तीर्थाच्या सेवनानें श्रेष्ठत्व पावले आहेत. हे भरतश्रेष्ठा, याच श्रेष्ठ तीर्थावर स्नान करून पूर्वी विष्णूनें मधु व कैटभ नांवांचे दोन अमुर मारिले. धर्मशील द्वैपायनास यथेच स्नान करून परम योग प्राप्त झाला, व ते परम सिद्धीस पोचले; आणि महातपस्वी अमितदेवलांनें यथेच अचल भक्तिभावानें योग संपादिला.

अध्याय पन्नासावा.

—:०:—

जैगीपण्यवृत्तांत.

वैशाखायन सांगतात:—त्याच ठिकाणी पूर्वी तपोधन व धर्मशील असितदेवला मुनि गृहस्थाश्रमानें रहात असे. तो, संदेव धर्मपरायण, शुचिभूत, इंद्रियें स्वाधीन ठेविलेला, ब्रह्मचर्याचे अंती दंडन्यास केलेला व महातपस्वी होता. त्याची वाणी, मन व कृति एकरूप असून, तो प्राणिमात्रांचे ठिकाणी समतेनें वागत असे. हे महाराजा, त्याला क्रोध कसा तो मुळीच येत नसे; निंदा व स्तुति दोन्ही तो समानच लेखी; प्रिय व अप्रिय दोन्ही प्रकारच्या वस्तूविषयी

त्याची वृत्ति तुल्य असे; तो यमासारखा समदर्शी होता; त्या महात्म्यास कांचन व मुक्तिका मारखीच दिसत; तो नित्य द्विज, अतिथि व देव यांचें पूजन करी; आणि मदीदीत ब्रह्मचर्य-तत्पर व धर्मपरायण असा असे.

हे महाभागा, एकदां जैगीपण्य नामक एक ज्ञानसंपन्न व शुद्धाचरणी मुनि भिक्षुकाच्या वेपानें त्या तीर्थावर येऊन देवलाच्या आश्रमांत राहिला. तो मोठा तेजःसंपन्न, नित्ययोगी व सिद्धीप्रत पोचलेला महातपस्वी होता. याप्रमाणें जैगीपण्य महामुनि तेथें रहात असतां देवलांनें त्यास पहात असूनही त्याचें धर्मतः जें आतिथ्य करावयाचें तें कांहींच केलें नाहीं. याप्रमाणें, हे महाराजा, पुष्कळ काळ लोटला. नंतर एकदां, राजा, पवित्राड व बुद्धिमान् देवलाला तो जैगीपण्य महामुनि भोजनाचे वेळीं दिसला नाहीं; तो धर्मज्ञ देवलाकडे भिक्षेच्या वेळीं प्राप्त झाला. तो महामुनि भिक्षुरूपांनें आलेला पाहून देवलांनें त्याचा उत्तम गौरव केला. हे भारता, त्याचेविषयी त्याचे मनांत अपार प्रेम उद्भवले; आणि त्यानें त्याचें पुष्कळ वर्षेपर्यंत ऋषिदृष्ट विधीप्रमाणें यथाशक्ति पूजन केलें. पुढें त्या महातेजस्वी मुनीस पाहून महात्म्या देवलाला मोठी हुरहूर लागली. एकदां “ मी पुष्कळ वर्षेपर्यंत मारखें पूजन करीत आहे, परंतु हा आळशी भिक्षु चकार शब्दही बोलत नाहीं ! ” अशी मनांत त्याची अवहेलना करीत, तो अंतरिक्षांतून चालणारा श्रीमान् देवला वागर घेऊन महोदधीवर गेला. परंतु, हे भारता, तो धर्मात्मा सरित्वाति सागरावर पोचतो तों जैगीपण्य तेथें पूर्वांच जाऊन बसला आहे असें त्याच्या दृष्टीस पडलें ! तेव्हां त्या अमिततेजस्वी देवलास मोठा विस्मय वाटला आणि त्याच्या मनांत त्याविषयी विचार घोलूं लागले, “ इतक्यांत हा भिक्षु येथें येऊन ममुद्रांत स्नानही

केला, हे कमें काय ? ” अमें तो अमित महर्षि परंतु इतक्यांत महामुनि जैगीपव्य एकांतयाग तेव्हां मनांत चिंतन करूं लागला. मग करणारांच्या लोकीं गेला. अमित तेथें जातो देवलांनं समुद्रांत विधिवत् स्नान करून तो हा अभिहोत्र्यांचे लोकीं गेला. तेथून दर्श- करावयाचा तो जप केला आणि जप. पौर्णमासयजन करणारांचे लोकाम गेला; आह्निक वगैरे आटोपल्यावर तो कळश. आणि तेथून धीमान् अमितानें त्या देवपूजित भरून घेऊन आपल्या आश्रमाम आला. पण निष्पाप मुनीम पशुयाजीचे लोकीं जातांना जनमेजया, आपल्या आश्रमांत पाय ठेवतो न पाहिलें ! मग अनेक प्रकारचे चातुर्मास्ययाग ठेवतो तोंच जैगीपव्य तेथें आश्रमांत वमलेला करणाऱ्या तपोधनांचे लोकीं; तेथून अग्नि- त्यास दिमला ! जैगीपव्य त्याशीं अवाक्षरही टोम यज्ञ करणारांचे लोकीं. आणि तेथून बोलत नसे.—तो महातपस्वी आपला काष्ठवत् अग्निष्टुत करणाऱ्या तपोधनांचे लोकीं तो गेलेला आश्रमांत वमलेला अमें. राजा. मागराप्रमाणें अमितानें पाहिला. मग. जे महाप्राज्ञ वाजपेय गंधीर अशा त्या मुनीनं आपल्यापूर्वीच महायज्ञ करतात. तमेच जे दुसरे बहुमुवर्णक समुद्रावर पाण्यांत बुडी मारली. आणि येथें नामक यज्ञ करतात. त्यांच्या लोकांमध्ये अमि- आश्रमांतही तो पूर्वीच येऊन वमला हें अमित तानें त्या जैगीपव्याम पाहिलें. याचप्रमाणें, जे देवलांनं पाहिलें; आणि त्याच्या मनांत विचा- गजमय किंवा पुंडरीक यज्ञ करतात. त्यांचे रांचें काहूर उडलें. तेव्हां, हे राजेंद्रा. जैगीप- लोकांतही तो अमिताम दिमला. तेथून मग, व्याच्या तपाचा व योगाभ्यासाचा प्रभाव पाहून जे सर्वश्रेष्ठ अश्वमेध करतात. तमेच जे नर- त्या मुनिमत्तमाम चिंता लागली. राजा. मेध करतात. त्या नश्वश्रेष्ठांचे लोकीं तो गेल्याचें ‘ ह्याला मी समुद्रावर व आश्रमांतही पाहिले आढळून आलें. अति अवघड सर्वमेध. तमाच हें कमें ? ’ असा विचार करीत तो मंत्रपारंगत सांतामणि हे यज्ञ करणारांचे लोकीं देवलांनं मुनि, जैगीपव्य भिक्षुविपर्यांची जिज्ञासा पूर्ण जैगीपव्याम अवलोकन केलें. राजा. याप्रमाणेंच करण्यासाठीं आपल्या आश्रमांतून उंच अंतरि- विविध प्रकारचीं द्वादशाह मंत्रे करणारांचे लोकीं- क्षांत उडाला. तेथें अंतरिक्षांत चालणारे ही त्याम देवलांनं पाहिलें. नंतर मित्र. वरुण व आदित्य यांच्या लोकीं त्याम मलोकता प्राप्त मिद्ध मोठ्या तत्परतेनं एकत्र झालेले त्यानं झाली आहे, अमें त्याच्या दृष्टीम पडलें. रुद्र, पाहिले. ते सिद्ध तेथें जैगीपव्यांचेच पूजन वसु व बृहस्पति यांचीं सर्व स्थानें उल्लंघन तो करीत आहेत अमें त्याम दिमलें. मग पुढें गेल्याचें त्याम आढळून आलें. मग अमित त्या अगदीं भांबावून गेलेल्या, उद्योगी व देवत्व मुनि गोलोकीं आंगरुण करून तेथून ब्रह्म- दृढनिश्चयी अमितानें जैगीपव्य तेथून गेल्याचें मंत्र करणारांचे लोकाम निघाला. त्यानं ते सर्व पाहिलें. तेथून तो पितृलोकीं जात आहे अमें लोक पाहिले; तेव्हां जैगीपव्य पुढेंच चालला त्यानं पाहिले आणि पितृलोकाहून तो त्याम आहे, आणि स्वनेत्रांबलांनं दुसरे तीन लोक यमलोकाम गेलेला दिमला. अमित त्याचा उल्लंघन जात आहे. अमें त्याच्या दृष्टीम पडलें ! पाठलाग करीत होताच, पण तो यमलोकीं पुढें तो पतिव्रतांच्या लोकीं जात असतां त्यांनं जातो न जातो तोंच जैगीपव्यांनं उडुण करून पाहिला; परंतु. हे आरंभदा. तेथून जैगीपव्य सोमलोक गांठला; आणि तेथें तो मंचार जा कोटें गुप्त झाला तो पुनः अमिताच्या करीत आहे अमें अमिताच्या दृष्टीम पडलें.

कोठेंच दृष्टीस पडेना. तेव्हां तो महाभाग देवल जैगीपव्याचा प्रभाव, सुव्रतत्व व योगाची अतुल मिद्धि यांविषयीच्या विचारानें थक्क होऊन गेला. नंतर अमितानें त्या लोकांनील श्रेष्ठतम सिद्धांजवळ त्याविषयी चौकशी केली. तो श्रीमान् व निग्रही मुनि हान जोडून त्या ब्रह्मसत्र करणाऱ्या सिद्धांस म्हणाला, “ महाराज, मला जैगीपव्य कोठें दिसत नाही. तो विलक्षण सामर्थ्याचा मुनि कोठें आहे तें मला सांगावें. मला त्याविषयी मोठें आश्चर्य वाटत आहे आणि तें केंद्र करून त्याचें वर्तमान ऐकण्याची मला इच्छा उत्पन्न झाली आहे. ”

सिद्धांनी उत्तर दिलें:—देवला, हे दृढव्रता, आम्ही झालेला प्रकार सांगतो, ऐक. तो जैगीपव्य शाश्वत अशा ब्रह्मलोकी गेला आहे!”

वैशंपायन सांगतात:— राजा, ब्रह्मसत्री सिद्धांचें भाषण ऐकतांच अमितानें त्वरेनें उंच उडी मारली, परंतु तो ग्वाली पडला! तेव्हां ते सिद्ध पुनः देवलास म्हणाले. “ देवला, तूं तपोधन आहेस खरा; परंतु विप्रा, जैगीपव्य जेथें गेला आहे त्या ब्रह्मलोकी जाण्याचें तुला सामर्थ्य नाही. उगाच धडपड करूं नको!”

वैशंपायन सांगतात:—जनमेजया, त्या सिद्धांचें हें बोलणें ऐकून देवलानें तो नाद सोडला; आणि तो ज्या क्रमानें वर गेला होता त्याच क्रमानें एकेक लोक ग्वाली उतरत उतरत सर्व लोक उतरून पद्याप्रमाणें पुनः आपल्या पवित्र आश्रमास आला; आणि आंत शिरतो तों तें जैगीपव्य त्याच्या दृष्टीस पडला! तेव्हां तो जैगीपव्याचा योगसामर्थ्यानें प्राप्त झालेला व तपाचा प्रभाव पाहून देवलानें धर्मयुक्त बुद्धीनें त्याचा विचार केला; आणि, राजा, विनयानें नम्र होत्साता तो त्या महात्म्याजवळ जाऊन त्यास म्हणाला, “भगवन्, मोक्षधर्म जाणण्याची माझी इच्छा आहे, ती आपण

पूर्ण करावी.” त्याचें तें भाषण ऐकून जैगीपव्यानें त्यास उपदेश दिला. राजा, योगाचा श्रेष्ठ विधि व काय करावें, काय काय करूं नये, वगैरे नियम शास्त्राप्रमाणें त्यानें त्यास उपदेशिले; आणि संन्यास ग्रहण करावा अशी त्याची बुद्धि झालेली जाणून त्या महातपःव्यानें संन्यास घेतांना कराव्या लागतात त्या सर्वकिया विधीप्रमाणें करून त्यास संन्यास दिला. त्यानें संन्यासाचा विचार केला. असे पाहून पितर व भूतें “ आतां आम्हांस अन्नोदकांचे विषा कोण देईल!” असा आक्रोश करूं लागली राजा. देवलानें त्यांचे असे दाही दिशांस चाललेले हाहाकार ऐकिले, तेव्हां त्याचें मन द्रवळें आणि “संन्यास सोडून पुनः पूर्वाश्रम स्वीकारावा,” असें त्याच्या मनानें घेतलें. तेव्हां, हे भारता, पवित्र फलमूळें, पुष्पें व हजारों वनस्पति हीं आक्रोश करूं लागलीं कीं, “ हा दुष्ट व हलक्या बुद्धीचा देवल पुनः आमचा छेद करणार! अहो, सर्व भूतांना अभय वचन देऊन तें हा विमरला आहे!” मग मुनिश्रेष्ठ देवलानें पुनः विचार केला कीं, “ संन्यास व गृहस्थाश्रम यांपैकी अधिक श्रेयस्कर कोणता?” हे राजसत्तमा, असा विचार करून शेवटीं त्यानें गृहस्थाश्रमाचा त्याग करून मोक्षधर्म (संन्यास) हाच पतकरला. अशा प्रकारें विचार करून केलेल्या निश्चयामुळें मग देवलाला परम सिद्धि व श्रेष्ठ असा योग प्राप्त झाला. राजा, नंतर बृहस्पतिप्रभृति देव तेथें जमले आणि त्यांनी तपस्वी जैगीपव्याची व त्याच्या तपाची प्रशंसा केली. मग ऋषिवर नारद देवांस म्हणाला, “ अहो, ज्यानें अमितस विस्मित केलें, त्या जैगीपव्याचे जवळ कांहींच तप उरलें नाही!” तेव्हां लोच ‘ छे छे, असें नव्हे?’ असें म्हणत व जैगीपव्य महामुनीची स्तुति करीत देवांनी त्यास उत्तर दिलें, “ या जैगीपव्याचा प्रभाव,

तेज, तप व योग यांपैकी एकाही गोष्टीत कोणी याची बरोबरी करणारा नाही; मग याहून अधिक प्रभावादिकांची गोष्ट दृग्च राहिली! महात्म्या जैगीपट्याचा असा प्रभाव आहे आणि त्याचप्रमाणे अमितही लोकोत्तर महात्मा आहे!" अमो; राजा, हे तीर्थ त्या दोघां महात्म्यांचे श्रेष्ठ स्थान होय. महानुभाव हलधरांचे येथे स्नान केले; ब्राह्मणांस दक्षिणा दिल्या; धर्म जोडला आणि मग तो परमार्थमात्रक हलधर महातीर्थात ज्याची गणना होते अशा सोम-तीर्थास गेला.

अध्याय एकावन्नावा.

सारस्वतोपाख्यान.

वैशंपायन सांगतात:—राजा जनमेजया. या सोमतीर्थावर नक्षत्राधिपति चंद्रांचे राजमय याग केला. व तेथेच तारकामुगशी मोठा संग्राम झाला. या ठिकाणी आत्मज्ञानी बलरामांचे स्नानादानादिक केले; आणि मग तो धर्मान्मा सारस्वत मुनींच्या तीर्थास गेला. त्या ठिकाणी पूर्वी सारस्वत मुनींचे बाग वर्षांचे अवर्षण संपल्यानंतर ब्राह्मणांस वेद पढविल्या.

जनमेजय विचारिता:—मुने. पूर्वी द्वादश-वार्षिक अनावृष्टीनंतर मारस्वत मुनींचे द्विज-श्रेष्ठांस वेद शिकविल्या. हा कथाभाग कसा आहे?

वैशंपायन सांगतात:— हे महाराजा. पूर्वी दधीचि नामक एक महातपस्वी मुनि होता. तो मोठा ज्ञानी, ब्रह्मचारी व जितन्द्रिय असे. राजा, त्याच्या अति मोठ्या तपश्चर्या इंद्र मद्दोदित भीत असे. अनेक प्रकारच्या फलाशेने त्यास भुलवितां येईना. तेव्हां मग इंद्रांचे त्यास भुलविण्यासाठी अलंब्रुपा म्हणून एक सुंदर, पवित्र व दिव्य अप्सरा पाठविली.

जनमेजया. महात्मा दधीचि मरुस्वतीवर देव-तर्पण करीत होता. त्याच्या समीप घेऊन ती सुंदरी उभी राहिली. तेव्हां तिचे ते दिव्यरूप पाहून त्या आत्मज्ञानी मुनींचे रेत म्बलन पावले. तेव्हां. हे पुरुषर्षभा. तें रेत मरुस्वती नदीने ग्रहण केले. आणि त्यास आपल्या उदरांत ठेविले. राजा. त्या महानदीने पुत्र-कामनेने तो गर्भ धारण केला आणि योग्य समय प्राप्त होताने ती पुत्र प्रसवली. मग, हे राजा. ती मरिच्छेष्ट मरुस्वती त्या पुत्रास घेऊन दधीचि ऋषीकडे गेली. त्या वेळी तो मुनिश्रेष्ठ ऋषींच्या मभेत बसला होता. राजा. त्यास पाहून तिने तो मुल्या त्याचे हाती देत म्हटले. " हे ब्रह्मर्षे. हा तुझा पुत्र आहे. तुझ्या भक्तीने मी याचे धारण केले.

अलंब्रुपा नामक अप्सरेस पाहून तुझे रेत म्बलन पावले; तेव्हां. हे ब्रह्मर्षे. तुजवरील प्रेमानुळे. तुझे हे तेज व्यर्थ जाऊ नये असे मनांत ठरवून मी ते आपल्या उदरी धारण केले. हा तुझा शुद्ध पुत्र मी तुझ्या स्वाधीन केला आहे; त्याचा स्वीकार कर!"

राजा. असे ती त्या ऋषीस म्हणाली, तेव्हां त्याने मुल्यास जवळ घेतले. त्या वेळी त्या-विषयी त्याचे मनांत अपार प्रेम उद्भवले व त्याने प्रेमामें त्या पुत्राचे मस्तक हुंगले; आणि त्यास पुष्कळ वेळपर्यंत पोटाशी कवटाळून धरले. नंतर. हे भरतमत्तमा. प्रमत्त झालेल्या महामुनीने मरुस्वतीस वर दिल्या की, " हे सुभगे. तुझ्या उदकांचे तर्पण केल्यास विश्वेदेव, पितर व गंधर्वाप्सरांचे समुदाय तूच होतील!" राजा. असे बोलून. त्या परमर्हापित झालेल्या मुनीने पुनः त्या महानदीची जी स्तुति केली. ती श्रवण कर. तो म्हणाला. " हे महाभाग. तू पूर्वी ब्रह्ममगेवगपामून वाहून त्यागलीस. तेथेच तुझी उत्पत्ति झाली. मोठमोठे वनाचारी

मुनि तुझा महिमा जाणतात. हे प्रियदर्शने, तूं सद्गोदीत माझे प्रिय करीत अमतेस. यास्तव, हे वरवर्णनि, तुझा हा महाथोर व लोकपालक पुत्र तुझ्याच नांवाने प्रसिद्ध होईल. हा महा-तपस्वी होईल व सारस्वत ह्या नांवाने विख्यात होईल. हे महाभाग, पुढें बारा वर्षांची अनावृष्टि झाली अमतां हा सारस्वत मोठमोठ्या ब्राह्मणांम वेद शिकवील; आणि, हे शोभने, माझ्या प्रसादाने तूंही सद्गोदीत सर्व पवित्र नद्यांमध्ये अतिशय पुण्यकारक होशील !”

हे भरतर्षभा, अशी त्यानें स्तुति केल्या-नंतर व त्याचेकडून वर मिळाल्यानंतर ती हर्ष-भरित झालेली महानदी मुलाम घेऊन निघून गेली. याच सुमाराम तिकडे देवदानवांचा विरोध झाला होता. तेव्हां आयुध शोधण्या-साठी इंद्र तिन्ही लोक हिंडला, परंतु दानवांस मारण्यास उपयोगी पडेल, असें आयुध त्यास मुळींच मिळालें नाहीं. मग तो इंद्र देवांस म्हणाला, “ देवांचे शत्रु जे मोठमोठे राक्षस आहेत, ते दधीचि ऋषीच्या अस्थीवांचून इतर कशांहींही मला मारतां येणें शक्य नाहीं. यास्तव, मुरश्रेष्ठो, त्या ऋषीजवळ जाऊन त्याच्या अस्थि मागून आणा. ” राजा, मग देव त्याजवळ गेले; आणि, हे कुरुश्रेष्ठा, “ हे दधीचा, आपल्या अस्थि आम्हांस दे. म्हणजे त्यांनीं आम्ही शत्रूस ठार करूं. ” या प्रमाणें त्यांनीं मोठ्या मिनतवारीनें त्याजपाशीं याचना केली. तेव्हां त्यानें कांहीएक कांकू न करतां प्राणत्याग केला; आणि अशा प्रकारें त्या देवांचें प्रिय करणाऱ्या दधीचास अक्षय्य लोक प्राप्त झाले. मग, राजा, मनांत अत्यंत हर्षित झालेल्या इंद्राने त्याच्या अस्थीची गदा-वज्रें, चक्रें व पुष्कळ जड जड दंड अशी नानाप्रकारची दिव्य आयुधें करविली. राजा, त्या महाथोर ऋषीनें तीव्र तपश्चर्या करून

आपला देह कमाविला होता; प्रजापतिपुत्र भूगनें तो जगाचें कल्याण करणारा, मोठा धिप्पाड, तेजस्वी व सर्व लोकांहून कणम्वर असा बनविला होता; तो पर्वतासारखा उंच व दृढ अमून आपल्या मोठेपणानें प्रख्यात झाला होता; आणि त्याच्या तेजामुळें पाक-शासन इंद्र नित्य उद्विग्न होत असे. असो; हे भारता, भगवान् इंद्रानें तें ब्रह्मतेजापामून निर्माण झालेलें वज्र मंत्रपूर्वक व अत्यंत क्रोधानें सोडून त्याच्या योगानें दैत्यदानवांपैकीं आठशें दहा वीर ठार मारिले ! असो; राजा, पुढें अति भयंकर असा मोठा काल निघून गेल्यावर बारा वर्षे अवर्षण पडलें. तेव्हां, राजा, मोठ-मोठे ऋषिही क्षुधार्ते होऊन उद्वरभरणार्थ सर्व दिशांस भटकूं लागले. ते निघून गेलेले पाहून सारस्वत मुनींहीं जाण्याचा विचार केला; परंतु इतक्यांत सरस्वती त्यास म्हणाली, “ पुत्रा, येथून जाऊं नको. मी तुला आहारार्थ नेहमीं उत्तमोत्तम मत्स्य देत जाईन. तूं येथेंच रहा. ”

हे भारता, याप्रमाणें त्या सारस्वताने तेंथेंच राहून पितर व देव यांचें तर्पण चालविलें; आणि तो प्राण व वेद धारण करून नित्य सरस्वतीदत्त आहार करीत असे. पुढें ती अनावृष्टि संपल्यावर महर्षि अध्ययन करण्या-साठी पुनः एकमेकांस ‘मला शिकवाल काय ?’ असें विचारूं लागले. कारण, हे राजेंद्रा, क्षुधाकूल होऊन भटकण्यांत व पोटाच्या विवंचनेंत वर्षेच्या वर्षे निघून गेल्यामुळें, ते सर्वजण वेद विसरून गेले होते; ज्याला सर्व वेद वागत आहेत, असा त्यांत एकही नव्हता. पुढें त्यांतील एक ऋषि सहज सारस्वताच्या आश्रमाम आला, आणि त्यानें तो शुद्धात्मा ऋषिश्रेष्ठ वेदस्वाध्याय करीत आहे असें अव-लोकन केलें. तेव्हां लगेच तो त्या महर्षीकडे गेला; आणि विजन अरण्यांत कोणी एक

सारस्वत नामक देवतुल्य व अत्यंत तेजस्वी मुनि उत्तम वेदघोष करीत आहे, म्हणून त्यांम सांगितले. मग, राजा, ते सर्व महर्षि सारस्वता-कडे गेले आणि “ आम्हांम वेद शिकव ” असे त्या मुनिश्रेष्ठास म्हणाले. तेव्हां त्या मुनीं उत्तर दिले, “ तुम्ही माझे यथाशास्त्र शिष्यत्व पतकरा, मग मी तुम्हांम शिकवीन. ” नंतर ते महर्षिंनी समुदाय त्यास म्हणाले, “ पुत्रा, तू केवळ बालक आहेस, यास्तव आम्ही तुझे शिष्य व्हावे हें योग्य नाही. ” यावर सारस्वत ऋषि पुनः त्या मुनींस म्हणाला, “ माझा धर्म नष्ट होऊं नये, जो अधर्मानें उपदेश करील, व जो अधर्मानें उपदेश घेईल, ते उभयतांही नाश पावतात, किंवा एकमेकांचे शत्रु होतात. ऋषींनी अमा धर्म सांगितला आहे कीं, पुष्कळ वय, पांढरे केंम, संपत्ति किंवा बांधव (महाय) यांच्या योगानें मोठेपणा येत नाही, तर जो अनुचान् म्हणजे विद्वान् असेल तोच मोठा होय. ” हें त्यांचे भाषण ऐकून त्या मुनींनी त्याच्या-पामून विद्यानपूर्वक वेदग्रहण केलें आणि पुनः आपला धर्म सुरू केल्या. राजा, स्वाध्याया-साठी साठ हजार मुनींनी विप्रर्षि सारस्वतांचे शिष्यत्व पतकरले; आणि तो बाल होता तथापि त्याचे आज्ञांकित राहून त्याच्या आत्मनासाठी मृतमृत दर्भ आणिले (त्याची सेवा केली) !

असो; राजा, कृष्णाचा वडील भाऊ जो महाबलादृच बलराम त्यांनं येथेही दानधर्म केल्या; आणि हर्षित होन्माता. जेथे अत्यंत वृद्ध अशी एक कन्या तप करीत होती. त्या पुढीलच प्रख्यात तीर्थाम तो जाता झाला.

अध्याय बावन्नावा.

—:०:—

दृढकन्याख्यान.

जनमेजय विचारितोः— भगवन्, प्राचीन काळीं ती कुमारी कशी तपोयुक्त झाली ! तिनें कशामाठी तप केलें ? आणि तिचा नियम कशा प्रकारचा होता वरें ? ब्रह्मन्, आपल्या मुखांतून ही एक अत्यंत दुष्कर व श्रेष्ठ गोष्ट मी ऐकिली, परंतु ती कां व कशी तपश्चर्या करूं लागली. तें अग्निल वर्तमान मला यथार्थ कथन करावें.

वैशंपायन सांगतातः— राजा, कुणिर्गर्ग नामक एक महायशस्वी व महावीर्यशाली ऋषि होता. त्या तपस्वीवरांनं अतिशय तपश्चर्या केल्यांनंतर एक लावण्यवती मानमकन्या उत्पन्न केली. राजा, नित्या पाहून त्या महाकर्तमान् कुणिर्गर्ग मुनीला समाधान वाटले; आणि त्यांनं देह ठेवून स्वर्गागहण केलें. मग, जिचे नेत्र पुंडरीक कमलामारगे तजस्वी आहेत, व भ्रुकुटी शोभायमान आहेत. अशी ती निर्मल कन्या तेंथेच आश्रम करून, उग्र तपश्चर्या व उपवास यांच्या योगानें देव व पितर यांचें आराधन करूं लागली. राजा, उग्र तपश्चर्या करतां करतां तिचा पुष्कळ मोठा काळ निवून गेला. पूर्वी पित्यानें नित्या एका टिकाणीं देऊं केली होती, परंतु त्या पुण्यवतीला तें स्थल आवडलें नाहीं, व नित्या अनुरूप अमा पति मिळाला नाहीं. यामुळे ती विजन अगण्यांत उग्र तपश्चर्येनें आपला देह भिनवून पितृदेवांचनांत निमग्न राहिली. पुढे आपण कृतकृत्य झालों असें नरी नित्या वाटत होतें. तथापि ती तशीच श्रम करीत राहिली; परंतु, राजेंद्रा, जेव्हां वाद्धकन्या-मुळे व तपाच्या योगानें ती अगदीं क्षीण झाली, व नित्या आपल्या आपण एक पाउलभरही चाल-

ण्याची शक्ति उरली नाही, तेव्हां तिने पर-
लोकी जाण्याचा विचार केला. याप्रमाणे ती
देहत्याग करण्याचा विचार करीत आहे इत-
क्यांत नारद तिला म्हणाले, “ हे निष्पाप तप-
स्विनि, संस्कार न झालेल्या तुज कन्धेव्य उत्तम
लोक कोठून मिळणार ! हे महाव्रते, आम्ही
देवलोकी असे ऐकिले आहे की, तू मोठी तप-
श्चर्या केलीस स्वर्ग, पण कांहीं पुण्यलोक
जिकिले नाहीस ! ”

राजा, नारदांचें तें भाषण ऐकून ती ऋषीच्या
संभेत जाऊन म्हणाली, “ श्रेष्ठहो ” जो माझे
पाणिग्रहण करील, त्याम मी आपलें अर्थे तप
देईन. ” तें ऐकून गालवाचा पुत्र प्राक्शृंगवान्
नामक ऋषि होता त्यानें तिचें पाणिग्रहण केले
आणि अशी अट मांगितली कीं, “ हे शोभने.
तुझ्यासह मी फक्त एकच रात्र राहीन. ह्या
अठीवर पाहिजे तर मी आज तुझे पाणिग्रहण
करतो. ” तेव्हां “ ठीक आहे ” असें म्हणून
ती त्याशीं विवाह करण्यास कबूल झाली. मग
त्या गालवीनें विधिपूर्वक होम वेगरे करून व
तिचें यथाशास्त्र पाणिग्रहण करून, तिशीं
विवाह लावला. नंतर राजा, रात्री ती वर-
वर्णिनी तपस्विनी दिव्य वस्त्राभरणें धारण केलेली
व उत्तम मुग्धि काजळकुंकू ल्यालेली व उठी
लाविलेली अशी सुंदर तरुणी झाली ! अशा
प्रकारें, राजा, जणू लावण्यानें प्रकाशणाच्या अशा
तीस पाहातांच गालवि संतुष्ट झाला. पुढें रात्र
संपल्यावर ती कन्या त्यास म्हणाली, “ हे
तपस्विवरा विप्रा, आपण अट घातली होती
तीप्रमाणें मी एक रात्र आपणामागमें राहिलें.
आतां मी जाते. आपलें कल्याण असो. ”
राजा, ती तेथून निघून जातांना आणखी
म्हणाली, “ जो कोणी या तीर्थावर देवतर्पण
करून एक रात्र वसति करील, त्यास अष्टावक्र
वर्षे ब्रह्मचर्य करणाराइतकें फल प्राप्त होईल. ”

राजा, असें बोलून ती साध्वी देह टाकून
स्वर्गस गेली. इकडे तिचें रूप आठवून तो
ऋषिही दीन झाला; व त्यानें तिच्या प्रतिज्ञे-
प्रमाणें संपूर्ण अर्थे तप ग्रहण करून आत्म-
माधन केले; आणि हे भारतश्रेष्ठा, तिच्या
अनुपम रूपानें मोहित व दुःखित होऊन
तिच्यामागून लवकरच तो स्वर्गांत तिला भेट-
ण्यास गेला. राजा, याप्रमाणें हें वृद्ध कन्धेचें
मोठें चरित्र, तसेंच ब्रह्मचर्य व उत्तम स्वर्गगति
तुला कथन केली. बलराम या तीर्थास अस-
तांना शल्यमेल्याची बातमी त्यानें ऐकिली. येथें
त्यानें ब्रह्मणांस दांनें दिली; तेव्हां पांडवांनीं
युद्धांत शल्यास मारिल्याचें त्यास समजलें.
मग तो समंतपंचकाच्या द्वारांतून बाहेर
पडला; आणि त्यानें ऋषिगणांस कुरुक्षेत्राचें
फल विचारिलें. तेव्हां, हे विभो, त्या महा-
त्म्यांनीं त्यास सर्व याथातथ्य सांगितलें.

अध्याय त्रेपन्नावा.

—:—

कुरुक्षेत्रमाहात्म्य.

ऋषि म्हणाले:—रामा, सनातन समंतपंच-
काला प्रजापतीची उत्तरवेदि म्हणतात. येथेंच
महावरदायक अशा देवांनीं मोठें सत्र करून
यजन केले. राजर्षीत वरिष्ठ, धीमान् व अभित-
तेजस्वी असा जो महात्मा कुरु त्यानें पुष्कळ
वर्षपर्यंत हें प्रयत्नपूर्वक नांगरिलें, म्हणून याला
कुरुक्षेत्र असें नांव पडलें.

रामानें विचारिलें:—हे तपोधनहो, महात्म्या
कुरुनें हें क्षेत्र कां नांगरलें, तें आपल्या मुखें
ऐकण्याची माझी इच्छा आहे.

ऋषि सांगूं लागले:—रामा, पूर्वीं कुरुराजा
सतत तत्परतेनें तें क्षेत्र नांगरीत असतां इंद्र
स्वर्गांतून खाली आला आणि त्यानें त्यास
त्याविषयीचें कारण विचारिलें. इंद्र म्हणाला,

“ राजा. हा अतिशय मोठा खटाटोप कशाचा चालला आहे ! हे राजपें, तू कोणत्या उद्देशानें ही जमीन नांगरीत आहेस ! ” कुरु म्हणाला. “ हे शतक्रतो. या क्षेत्रांत जे लोक मरतील ते पापविवाजित अशा पुण्यलोकी जातील. ” यावर उपहामपूर्वक हंसून इंद्र स्वर्गाम गेला. पण तो राजापि विलकूल विषाद न पावतां सारखा पृथ्वी नांगरीतच होता. इंद्र पुनःपुनः तेथें येऊन त्या उत्साहपूर्ण राजाम “ काय चालले आहे ! ” म्हणून विचारी व थट्टें हंसून निघून जाई. याप्रमाणें पुष्कळ वेळां झाले; तथापि कुरुराजाचा नित्यक्रम चाललाच होता. पुढे जेव्हां त्या राजानें उग्र तपश्चर्येच्या योगानें पृथ्वी नांगरिली, तेव्हां इंद्रानें त्याचें कृत्य देवांस सांगितलें. ते ऐकून देव इंद्राम म्हणाले. “ इंद्रा, शक्य असेल तर त्या राजर्षीस वर देऊन स्वस्थ वसवावें. जर येथें मेल्ले सर्वच लोक यज्ञयागांनीं आमचें यजन केल्याशिवायही स्वर्गाम येतील. तर मग आपणांस हविर्भाग मिळणारच नाहीत. ” मग इंद्र ग्वालीं उतरून त्या राजर्षीला म्हणाला, “ राजा, खेद करू नको; माझे ऐक. येथें जे मनुष्य उपोषित अमतां मावश्चित्तानें देह ठेवतील ते व युद्धांत ममोर लढत अमतां जे प्राणी मरतील—मग ते निर्यग्योनींतील कां असेनात—ते सर्व हे राजेंद्रा. स्वर्गाचें अधिकारी होतील. ” यावर “ तथास्तु ” असें तो कुरुराजा इंद्राम म्हणाला. तेव्हां बलमूदन इंद्र त्यास आशीर्वाद देऊन मनुष्य अंतःकरणानें पुनः मत्वर स्वर्गाम गेला.

हे यदुश्रेष्ठा, अशा प्रकारें हें क्षेत्र प्राचीन कालीं कुरुराजानें निर्माण केलें आणि त्यास इंद्रानें व ब्रह्मप्रभृति देवांनीं अशी मंमति दिली कीं, “ पृथ्वीवर याहून अधिक पुण्यकारक असे स्थान अमणार नाही. येथें जे मनुष्य परम

तपश्चर्या करतील ते देहत्यागोत्तर ब्रह्मलोकीं जातील. जे पुण्यवान् पुरुष येथें दानें देतील, त्यांस ते ते पदार्थ महस्वगणित व मत्वर प्राप्त होतील. जे शुभचिंतक मनुष्य येथें नित्य रहातील, ते यमलोक कधीही पाहाणार नाहीत. जे राजे मोठमोठे यज्ञ करतील, त्यांचें, ही पृथ्वी असेपर्यंत स्वर्गाम वास्तव्य होईल. येथें स्वतः सुरपति इंद्रानें कुरुक्षेत्राविषयीं गाथा गाडली आहे, ती. हे हलायुधा, श्रवण कर. “ कुरुक्षेत्रांतून वायूनें उडून आलेले रजःकरणही पाप्यांना देवींल परम गतीस नेतात. ” बलराम, मोठमोठे देव. थोर ब्राह्मण व नृगप्रभृति विख्यात राजे येथें मोठमोठे यज्ञ करून व देह ठेवून उत्तम गतीस पांचले. तरंतुकापामून अरंतुकापर्यंत आणि रामन्हदांपामून मत्तुकापर्यंतचा भाग हें कुरुक्षेत्र-ममंतपंचक होय. याला प्रजापतीची उत्तरवेदि म्हणतात. हें स्थान कल्याणकारक, महापुण्यप्रद, देवांना मुमंमंत आणि सर्व गुणांनीं युक्त असे आहे. याम्बव येथें रणांत निधन पावलेले सर्व राजे मद्दोदीत पवित्र व अक्षय्य गतीस जातात. ” जनमेजया, ब्रह्मादिकांसह स्वतः इंद्रानें तेव्हां असें अभिवचन दिलें, आणि ब्रह्माविष्णु-महेश्वरांनीं त्या सर्वांस अनुमोदन दिलें !

अध्याय चौपन्नावा.

—:—

सारस्वतोपाख्यानसमाप्ति.

वैशंपायन सांगतात: राजा जनमेजया, मग कुरुक्षेत्र पाहून व दानें वंगेर देऊन बलगम निवाला. तो अतिविशाल व दिव्य अशा एका आश्रमाम येऊन पांचला. राजा, मधुक व आप्त या वृक्षांचीं जेथें वनें लागून राहिली आहेत. वडांपपळांची गर्दी झालेली आहे. मधून मधून चिर व चिक्क वृक्ष दिसताहेत.

आणि फणस व अर्जुन वृक्षांनी जो व्यापून गेला आहे, असा तो पुण्यलक्षणांनी युक्त अमलेला श्रेष्ठ व पवित्र आश्रम पाहून, यादवश्रेष्ठ हलायुधानें 'हा कोणाचा आश्रम?' म्हणून तेथील सर्व ऋषींस विचारिलें. तेव्हां, राजा, ते सर्व त्या महात्म्यास म्हणाले, "रामा, पूर्वी हा आश्रम कोणाचा होता, हें विस्तारपूर्वक श्रवण कर. प्राचीन काळीं येथें विष्णुदेवांन उत्तम तपाचरण केलें. येथेंच त्याचे सर्व मनातन यज्ञ विधिवत् पूर्ण झाले. येथेंच एक ब्राह्मण जातीची ब्रह्मचारिणी कुमारी स्वर्गस्थ झाली. ती योगसंपन्न, मिद्धीस पांचलेली व मोठी तपस्विनी होती. तप करणें म्हणजे तिला कांहींच अवघड वाटत नसे—तें तिच्या अगदीं अंगवळणी पडलें होतें. राजा, ती श्रीमती महात्म्या शांडिल्याची कन्या होय. ती साध्वी, व्रत उत्कृष्ट पाळणारी, इंद्रियें स्वाधीन राखिलेली आणि ब्रह्मचारिणी होती. स्त्रीजनांस करण्यास अति अवघड अशी घोर तपश्चर्या करून. ती देवब्राह्मणांकडून धन्यता पावलेली महाभागा येथें स्वर्गस्थ झाली ! "

राजा, ऋषींचें हें भाषण ऐकून बलराम त्या आश्रमांत गेला. मग त्या ऋषींस अभिवंदन करून. व हिमालयाच्या पार्श्वभागीं सर्व संन्यासिंदनादि कृत्यें उरकून तो पर्वतावर चढला; आणि फारसा दूर गेला नाहीं तोंच त्याम एक उत्कृष्ट तीर्थ दिसेलें. तें प्लक्षप्रस्त्रवणतीर्थ व सरस्वतीचा प्रभाव पाहून बलारामास मोठा विस्मय वाटला. मग तेथून तो कारपवन नामक श्रेष्ठ व उत्कृष्ट तीर्थावर येऊन पोचला. राजा. महाबली हलायुधानें येथेंही दानधर्म केला; पवित्र, निर्मल, आरशाप्रमाणें स्वच्छ व बर्फाप्रमाणें थंडगार अशा त्या तीर्थजलांत स्नान केलें; आणि देवपितरांचें त्या तीर्थोदकानें तर्पण केलें. मग ब्राह्मण व यति यांच्यासह तो तेथें एक रात्र राहिला; आणि नंतर मित्रावरुणांच्या पुण्यकारक आश्रमास

गेला. प्राचीन काळीं जेथें इंद्र, अग्नि व सूर्य यांचीं मेत्रीं जडलीं, त्या यमुनातीराच्या ठिकाणीं तो कारपवनाहून गेला. तेथें त्या महात्म्यांन स्नान केलें, तेणेंकरून त्याच्या अंतःकरणांत प्रेम उद्भवलें; आणि तो महाबलाद्य बलराम तेथें ऋषि व सिद्ध यांच्या मंडळांत बसून त्यांच्या मुखांतून चांगल्या चांगल्या कथा श्रवण करिता झाला.

राजा, याप्रमाणें ते तेथें गाष्टी सांगत बसले अमतां भगवान् नारद मुनि बलरामाजवळ प्राप्त झाला. ज्याच्या मस्तकावर जटाभार आहे, ज्याची वस्त्रे अत्यंत स्वच्छ आहेत, सुवर्णाचा दंड व कमंडलु ज्याचे हातांत आहे, देव व ब्राह्मणही ज्याची पूजा करितात, आणि ज्याला कलहाची नित्य आवड असून जो मुद्दाम भांडणें लावून देतो, तो नृत्यगीतांत प्रवीण असलेला महातपस्वी नारद मुनि मधुर शब्द करणारी मनोहर कच्छपी वीणा हातांत घेऊन, श्रीमान् बसला होता त्या ठिकाणीं प्राप्त झाला. त्याला पहातांच बलराम उभा राहिला; त्यानें त्या व्रतस्थ मुनींचें यथासांग पूजन केलें; आणि त्या देवर्षींस " कौरवांकडील वर्तमान कसें काय आहे ? " म्हणून विचारलें. मग, राजा, कौरवांचा भयंकर संहार वगैरे झालेला सर्व प्रकार त्या धर्मवेत्त्या मुनीनें त्याम सांगितला. नंतर बलरामानें दीन वाणीनें त्याम विचारलें, " त्या क्षेत्राची काय स्थिति आहे, व तेथें कोण कोण राजे होते, हें सर्व सामान्यपणें मी पूर्वीच ऐकिलें आहे परंतु, हे तपोधना, इत्थंभूत हकीकत ऐकण्याची मला उत्कंठा झाली आहे. "

नारद सांगतात:--भीष्म तर आरंभीच पडले; मग द्रोण. तसाच जयद्रथ, वैकर्तन कर्ण व त्याचे महारथी पुत्र निधन पावले. त्याचप्रमाणें, रामा. भूरिश्रवा व वीर्यशाली मद्रराजाही मरण पावला. हे व युद्धांत मात्र न वेणारे दुसरे

महाबलाद्य राजे व राजपुत्र दुर्योधनाच्या विजयार्थ आपले प्रिय प्राण मोडून जागजागी पतन पावले. हे महाबाहो माधवा. ह्या मृतांची नांवनिशी मांगण्यापेक्षां जिवंत राहिलेल्यांचीच मांगतां. म्हणजे किती मंहार झाला हे तुला कळेल. दुर्योधनाच्या सैन्यापैकी कृपाचार्य, कृतवर्मा व वीर्यवान् अश्वत्थामा हे तिथेच काय ते महावीर जिवंत राहिले आहेत: आणि, रामा, ते तरी काय ! त्या वेळीं भीतीनें दशदिशांम पळून गेले आहेत ! शल्य निघून पावला. आणि कृपाचार्य वेगरे पळून गेले. हे दुर्योधनांनं पाहिले. तेव्हां तो अत्यंत दुःखित होऊन द्वेषायन नामक न्हदांत शिरला; आणि तेथे जल स्तंभित करून त्यांत तो निजून राहिला अमतां पांडवांनीं व कृष्णांनं अनेक प्रकारे कटोर भाषणें करून त्यास मत्ताविष्यास मुरुवात केली. रामा, ते चेहोंकटून वाक्शरानीं प्रहार करूं लागले. तेव्हां तो बलाद्यच वीर प्रचंड गदा घेऊन डोहांतून वर आला; आणि सांप्रत तो भीमावरोवर लढण्यास पुढे सरमावला आहे. रामा, आज त्या दोषांचें मोठें भयंकर युद्ध होईल; तुला पाहाण्याची उत्सुकता अमेल. तर, माधवा, लवकर तेथे जा. उगाच दिरंगाई करूं नको; आणि मनांत येत अमेल तर आपल्या शिष्यांचें घनघोर युद्ध पहा. "

वेशंपायन सांगतात:—राजा, नारदांचें भाषण ऐकून बलरामानें त्या द्विजर्षभांची पूजा वेगरे केली; जे त्याच्यावरोवर आले होत. त्यांस अनुज्ञा दिली; आणि आपल्या मेवकांसही द्वारकेंम जाण्याची आज्ञा केली. मग तो त्या पृक्षप्रस्त्रवण नामक पवित्र पर्वतावरून स्वार्थी उतरला; आणि महान् तीर्थमाहिमा श्रवण करून मनांत मंतुष्ट झालेल्या त्या रामानें विप्रांच्या सन्निध हा श्लोक गाडला.—

सरस्वतीवाससमा कुतो रतिः

सरस्वतीवामसमाः कुतो गुणाः ।
सरस्वतीं प्राप्य दिवं गता जनाः
सदा स्मरिष्यन्ति नदीं सरस्वतीं ॥
सरस्वती मर्वेनदीषु पुण्या
सरस्वती लोकशुभावहा सदा ।
सरस्वतीं प्राप्य जनाः मुदुष्कृतं
सदा न शोचन्ति परत्र चेह च ॥

(सरस्वतीवर वाम करीत अमतां त्या स्थानाविपर्याी मनांत जमंप्रेम उत्पन्न होतें. तमें ते इतरत्र कोटून होणार ! सरस्वतीवामांत जे गुण आहेत. ते इतरत्र कोटून आढळणार ! फार काय मांगावें. सरस्वतीवर ज्यांना एकदां रहाण्यास सांपडले आहे, ते लोक स्वर्गांत गेले तरी त्यांस एकमागमें सरस्वती नदींचें स्मरण होत राहिल. सरस्वती ही मर्व नद्यांत पवित्र आहे. ती सदांतीत जनांचें कल्याण करीत अमंत. सरस्वतीची प्राप्ति झाल्यानंतर, लोकांस इहलोककी अथवा परलोककीही आपल्या अत्यंत भयंकर अशाही पातकाबद्दल शोक करण्याचा प्रसंग येत नाही; ते मर्व येथें भस्म होतें !)
राजा, मग वरचेवर प्रेमानें सरस्वतीकडे पहात तो परंतप राम घोडे जोडून मज्ज अमलेल्या रथांत बसला आणि त्या शीघ्रगामी रथाच्या योगानें, उपस्थित झालेले आपल्या शिष्यांचें युद्ध पाहाण्यास उत्सुक झालेला तो बलराम जेथें तें युद्ध चालले होतें तेथें प्राप्त झाला.

अध्याय पंचावन्नाव.

—:०:—

समंतपंचकगमन.

वेशंपायन सांगतात:—जनमेजया, अशा प्रकारें तें तुमुल युद्ध उपस्थित झालें. तेव्हां त्याविपर्याी दुःख पावलेल्या धृतराष्ट्र राजानें अमें विचारिलें.

धृतराष्ट्र म्हणाला:--संजया, गदायुद्धास
सुरुवात झाल्यावर राम जवळ आलेला पाहून
माझा पुत्र भीमार्शी कमा काय लढला वरें ?

संजय सांगतो:--हे भरतकुलोत्पन्ना. राम
सन्निध येतांच तुझा महाबलिष्ठ, वीर्यशाली व
युद्धाची इच्छा करणारा पुत्र दुर्योधन याम
माठा हर्ष झाला. धृतराष्ट्रा. बलरामास पाहातांच
युधिष्ठिरानें त्यास अभ्युत्थान दिलें. परम
प्रीतीनें त्याचें यथाविधि पूजन केलें, आणि
त्यास बसावयास आसन देऊन कुशल विचारिलें.
मग रामानें युधिष्ठिराशीं मधुर, धर्मयुक्त व
शूरांच्या हिताचें असें भाषण केलें. तो म्हणाला,
“ हे राजसत्तमा, ऋषींच्या तांडून मीं असें
ऐकिलें आहे कीं, कुरुक्षेत्र हें परम श्रेष्ठ, पुण्य-
कारक, पवित्र व स्वर्गादायक असें अमृ-
त देवता, ऋषि व थोर थोर ब्राह्मण यांनीं त्याचा
आश्रय केलेला होता. जे युद्धेच्छु वीर तेथें
देह ठेवतील, त्यांचा इंद्राबरोबर स्वर्गांत वास
होत असतो, हें निश्चित होय. यास्तव, राजा,
आपण येथून समंतपंचकाम जाऊं. देवलोकांत
ती भूमि प्रजापतीची उत्तरवेदि म्हणून प्रसिद्ध
आहे. राजा, त्रैलोक्यांत सर्वापेक्षां महापुण्यप्रद
अशा त्या सनातन क्षेत्रांत युद्ध करीत असतां
निधन पावले म्हणजे निश्चयानें स्वर्गलोक
मिळत असतो. ”

हे महाराजा. यावर कुंतीपुत्र युधिष्ठिर
“ ठीक आहे ” असें म्हणाला; आणि तो वीर्य-
वान् राजा समंतपंचकाकडे जाऊं लागला. मग
अमर्षी व तेजस्वी दुर्योधन राजा प्रचंड गदा
खांचावर टाकून पांडवांसहवर्तमान पार्थीच
चालूं लागला. याप्रमाणें तो चिलखत ल्यालेला
व गदा हातांत घेतलेला वीर ऐंटीनें जात असतां
अंतरिक्षांतून संचार करणाऱ्या देवांनीं 'शाबास'
'शाबास' असें म्हणून त्याची प्रशंसा केली.
आणि जे वातिक व चारण तेथें जमले होते,

त्यांनाही दुर्योधनास पाहून हर्ष झाला. धृ-
तराष्ट्रा, पांडवांनीं घेरलेला असतांही, तो तुझा
पुत्र कुरुपति दुर्योधन मत्तगजेंद्राप्रमाणें धिमे-
पणानें चालला होता ! मग शंखांचे ध्वनि, भेरींचे
प्रचंड शब्द आणि वीरांचे सिंहनाद यांच्या
योगानें दशदिशा दुमदुमून गेल्या. नंतर ते श्रेष्ठ
नरवीर कुरुक्षेत्रास येऊन पोचले. तेथें ते तुझ्या
पुत्राच्या इच्छेप्रमाणें जरा पश्चिमेकडच्या
भागीं गेले. तेथें सरस्वतीच्या दक्षिणतीरावर
'स्वयन' नामक उत्तम तीर्थ आहे; तेथील
जगेंत खांचखळगे नसल्यामुळें तीच त्यांनीं
युद्धासाठीं पसंत केली. मग कवचधारी भीमसे-
नानें, जिला लांब लांब तीक्ष्ण धारा आहेत अशी
गदा उचलली; तेव्हां, हे महाराजा, तो गरुडा-
सारखा दिसूं लागला. त्याचप्रमाणें, राजा,
ज्यानें शिरस्त्राण बांधलें अमृण सुवर्णाचें कवच
अंगांत चढविलें होतें, असा तो तुझा पुत्रही
तेथें रणांगणांत सुवर्णाच्या मेरुपर्वतासारखा
अलकत होता. समरांगणामध्यें ते चिलखतांनीं
तकडबंद झालेले उभयतां वीर भीमदुर्योधन
शोभ पावलेल्या गजांसारखे भासत होते. हे
महाराजा, रणमंडलाच्या मध्यभागीं उभे अस-
लेले ते नरश्रेष्ठ भ्राते उदय पावलेल्या चंद्रसूर्या-
सारखे शोभले. राजा धृतराष्ट्रा, ते क्रुद्ध गजेंद्रां-
प्रमाणें एकमेकांकडे टक्कारून पहात होते;
ते दोघेही भयंकर पराक्रमी असून
उभयतांसही अत्यंत क्रोध चढला होता;
ते दोघेही गदायुद्धांत धीमान् बलरामाचे वेळे
होते; आणि इंद्र व यम यांप्रमाणें त्या उभय-
तांचा पराक्रम अगदीं समान होता. दोघेही
महाबलाढ्य असून त्यांचें युद्धनैपुण्य वरुणा-
सारखें होतें. हे महाराजा, ते युद्धामध्यें वासु-
देव, बलराम आणि तसाच कुवेर यांच्या
बरोबरीचे होते. राजा, मधु आणि कैटभ
तसेच सुंद व उपसुंद, राम व रावण आणि

वाल्लि व मुध्रीव या जोड्या जशा समान. तमेच ते सर्व प्रकारें समान होते. शत्रूंम पीडित करणारे ते वीर कालव मृत्यु यांच्या बरोबरीचे होते. ज्याप्रमाणें शरद्वतुंत एका तरुण हत्तिणीच्या संगमप्रसंगी मदींमत्त व बेफाम झालेले दोन प्रचंड हत्ती एकमेकांकडे पहात परस्परांवर धावून जाताना तसे ते एकमेकांच्या अंगावर धावत होते. जणू काय ते दोघेही क्रोधरूपी जहर विप ओकणारे भुजंगच एकमेकांकडे संतापानें पहात अहित असा भास झाल्या भरतकुलास ललामभूत अमलेले ते दोघेजण पराक्रमसंपन्न व गदायुद्धविशारद असून. मिहाच्या अंगावर चालून जाणें जमें दुघ्वट असतें, तमेच त्यांच्यावरही हल्ला करणें दुघ्वट होतें. ते अतिभयंकर उत्साही वीर—ज्यांना नगें व दांत एवढीच आयुधे आहेत. असे वाघच भासत. जणू काय प्रलयकालीं क्षोभलेले ते दोन दुस्तर सागरच होते. राजा. रागानें मंगळामाग्वे लाल होऊन तळपत असलेले ते महारथी म्हणजे वर्षाकालीं भयंकर गर्जना व वृष्टि करणार पूर्वपश्चिममेघच एकमेकांवर आदळले. ते महाबली तेजस्वी महात्मे भीमदुर्योधन म्हणजे दोन सहस्ररश्मि कालमूर्यच उदय पावलेले दिमत होते. ते वाघांसारखे खवळलेले व मेघांसारखे गर्जणारे महावीर—दोन मिह एकमेकांवर तुटून पडत असतां हर्ष पावतात तद्वत् हर्षभरित झाले होते. ते महात्मे म्हणजे अतिशय संतापलेले दोन हत्तीच किंवा पेटलेले दोन अश्विच. अथवा शृंगयुक्त पर्वतच कीं काय असे दिमत होते. कौशवेशामुळें त्यांचे आंठ अतिशय हालत होते; आणि ते परस्परांकडे तीक्ष्ण दृष्टीनें पहात होते. मग ते गदाधारी थोर नरवीर एकमेकांशीं भिडले. राजा. त्या वेळीं प्रत्येकास अतिशय हुरूप चढल्या होता व ते दोघेही परममान्य होते. धृतराष्ट्रा, जातिवत

अश्रांप्रमाणें हिमणारे. हत्तींप्रमाणें गर्जना करणारे व वृषभांप्रमाणें डुरकण्या फोडणारे ते नरश्रेष्ठ भीमदुर्योधन एकमेकांशीं भिडले. तेव्हां ते दोन बल्योन्मत्त झालेले दैत्यच भासले. मग. राजा. महात्मा कृष्ण. अमितपराक्रमी राम. केकय. संजय. महात्मे पांचाल व आपले भाऊ. यांनी युक्त अमलेल्या व विजयामुळें चढून गेलेल्या युधिष्ठिरास दुर्योधन असें सगळे म्हणाला. " पांडवहो. जमलेल्या राजांसहवर्तमान तुम्ही सर्वजण जवळच स्वस्थ बसून मी व भीम यांचें मुरू झालेंलें हें युद्ध पहा!"

राजा. दुर्योधनाचें हें भाषण ऐकून त्यांनी त्याप्रमाणें केलें. मग ते खाली बसलेले अति मोठें राजमंडल आकाशातील सूर्यमंडलासारखें विराजमान दिसें लागलें. हे महाराजा. सर्वत्र पृजिल्या जाणारा महाबाहु श्रीमान् बलराम त्या सर्वांच्या मध्यभागी बसल्या होता. राजांच्या मध्यभागी बसलेल्या तो नीलवस्त्र परिधान करणारा तेजस्वी राम—रात्री नक्षत्रांच्या योगें शोभणाऱ्या पूर्णनिशाकरासारखा शोभला. हे महाराजा. मग ते अत्यंत दुःमह असलेले व मज्ज झालेले गदाधारी वीर उग्र वाग्बाणांनीं परस्परांस ताडन करूं लागले. मग एकमेकांस पुष्कळ दुरुत्तरें बोलल्यावर ते दोघे कुरुश्रेष्ठ एकमेकांकडे टक्कारून पहात वृत्र व इंद्र यांमाग्वे रणांत उभे राहिले !

अध्याय छप्पन्नावा.

—०:—

गदायुद्धारंभ.

वंशपायन सांगतात:— जनमेजया, नंतर भयंकर वाग्बुद्ध झालें. त्याची हकीकत सांगण्यापूर्वी. दुःस्वविह्वल झालेल्या धृतराष्ट्र राजा काय म्हणाला, तें एक. धृतराष्ट्र म्हणाला:—वा संजया, ज्याचा हा

असा परिणाम होतो, त्या मनुष्यत्वाला धिःकार असो ! एकादश चमूंचा अधिपति माझा पुत्र— जो सर्व राजांना आज्ञा करीत असे व या संपूर्ण वसुंधरेचा ज्याने उपभोग घेतला, तो गदा घेऊन रणांत पायीच धावत गेला अं ! अरे, माझा पुत्र एकदां जगाचा नाथ होऊनही आज जर केवळ अनाथासारखा पायीच गदा उंच करून चालला आहे, तर हा त्याचा देवयोगच, दुसरे काय ! वा संजया, माझ्या पुत्रास हें मोठेंच दुःख प्राप्त झाले ! असें बोलून तो दुःस्वार्त राजा थांबला.

संजय सांगतो:— ज्याचा आवाज मेघा-प्रमाणें गंभीर आहे. अशा त्या वीर्यावान् दुःयो-धनानें तेव्हां हर्षानें बलाप्रमाणें दुरकण्या देत पृथापुत्रास समरांगणांत युद्धास बोलाविलें. राजा, महात्मा कुरुपति भीमास आह्वान करीत असतां नानाप्रकारचीं अति घोर दुश्चिन्हें झालीं. निर्घातांसह वारे वाहूं लागले. धुळीची वृष्टि झाली, सर्व दिशा अंधकारानें व्याप्त झाल्या. अंगावर रोमांच उठविणारे मोठ्या सोमाच्याचे भयंकर वारे सुटले. तशाच फडाफड फुटणाऱ्या शेंकडों उल्का आकाशांतून खाली पडल्या; राजा, अमावास्या नसतांही राहून सूर्यास ग्रासिलें, वृक्ष व अरण्ये यांमुद्धां सर्व पृथ्वी अति-शय कांपूं लागली; जमिनीजवळ इतके जोराचे वारे सुटले कीं, त्यांच्याबरोबर दगडगोटेही उडूं लागले; पर्वतांचीं शिखरेही भूमीवर कोस-ळून पडलीं; अनेक जातीचे मृग दशदिशांस वेगानें पळत सुटले; अतिभीषण स्वरूपाच्या, भयंकर व खवळलेल्या कोलह्या ओरडूं लागल्या.

१ वायुना निहतो वायुर्गगनाच्च पतत्यधः । प्रचण्ड-घोरनिर्घोषो निर्घोत इति कथ्यते ॥ वाऱ्यावर वारा आपटून आकाशांतून खाली आला असतां जो प्रचंड व भयंकर नाद होतो, त्याला 'निर्घोत' असें म्हणतात.

अंगावर रोमांच उठतील असे अतिभयंकर निर्घात होऊं लागले; त्या भयंकर दिवशीं. ज्यांना अशुभ गोष्टी कळतात असे मृग बाहेर पडले; चोहोंकडील विहिरांचें पाणी वाढलें; आणि राजा, त्या वेळीं आपोआप अंतरिक्षांत वंगरे झालेले प्रचंड ध्वनि ऐकूं येऊं लागले !

राजा, अशा प्रकारचीं चिन्हें झालेली पाहून, आपला ज्येष्ठ भाऊ जो धर्मराजा युधिष्ठिर त्यास भीमसेन म्हणाला, धर्मराजा, हा मंदात्मा दुःयोधन रणांत मला जिंकण्यास मुळीच समर्थ नाही. खांडववनावर सोड-लेल्या अशीप्रमाणें, हृदयांत चिरकाल सांठलेला क्रोध मी आज कौरवेंद्र दुःयोधनावर सोडीन. युधिष्ठिरा, आज या पापी कुरुकुलाधमास गदेनें ठार करून, मी तुझ्या हृदयांतील शल्य उपटून काढीन. रणांगणाच्या अग्रभागी या पापकर्मास गदेनें ठार करून, आज मी तुझ्या गळ्यांत कीर्तिरूप माळ घालीन. या गदेनें मी आज त्याचा देह शतधा भिल करून टाकीन ! हे अनघा, हा कांहीं पुनः हस्तिनापुरांत जिवंत प्रवेश करणार नाही. विज्यान्यावर सर्प सोडण्याचें, अन्नांत विष घालण्याचें, प्रमाणकोटीवर पाण्यांत लेटण्याचें, जतुगृहांत जाळण्याचें, सभेंत केलेल्या उपहासाचें, सर्वस्वहरणाचें, वर्षभर अज्ञातवासाचें व बारा वर्षे वनवासाचें, या सर्व दुःखांचा मी आज शेवट करीन. हे भारता, यानें जीं हीं दुःखें आम्हांस दिलीं, त्यांचा प्रतिकार न घडल्यामुळें एक प्रकारचें स्वतःचेंच ऋण आम्हांस झालें आहे. तें फेडण्याला आतां फक्त आजच्याच एका दिवसाचा अवकाश आहे. यास ठार करून मी आज आत्मऋणांतून मुक्त होणार ! हे भरत-श्रेष्ठा, आज या अकृतात्म्या दुष्ट धार्तराष्ट्राचें आयुष्य संपलें आहे आणि मातापितरांचें दर्शनही ह्यास पुनश्च होणार नाही. राजेंद्रा, आज दुर्मति कुरुपतीचें सौख्य संपलें आणि स्त्री-

जनांचें दर्शनही आटोपलें ! कुरुराज शंतनूच्या वंशास कलंक लावणारा हा पातकी आज आपले प्राण, ऐश्वर्य व राज्य सोडून भूतलावर शयन करील ! आज मीं दुर्योधनाला मारिल्याचें ऐकतांच, धृतराष्ट्र राजाला तें शकुनीच्या तुद्धीस लागून केलें अशुभ कर्म आठवेल !”

हे राजशाह्या, असें बोलून तो वर्यशाही भीम गदा हातांत घेऊन वृत्रास आह्वान करणाऱ्या इंद्रामागवा युद्धास उभा राहिला. इकडे दुर्योधनही गदा सरसावून पुढें आला. तेव्हां गदा उंच केल्यामुळे सशूंगकलामाप्रमाणें दिमणाच्या दुर्योधनास पाहून भवलेल्या भीम सेन पुनः त्यास म्हणाला, “ राजा धृतराष्ट्राचें व तूं आपलेही वारणावतांतील तें अत्यंत दृष्टपणाचें कर्म आठव. रजस्वला द्रोपदीस मध्ये मध्ये तुम्ही जे अत्यंत क्लेश दिले. तूं आणि शकुनीनें घृतांत धर्मराजास जे ठकविले. तुझ्यामुळे आम्हांस अगण्यांत जे महद्दुःख भोगावें लागले, आणि विराटनगरांत वेप पालवून राहणाऱ्यांत आम्हांस जे कष्ट झाले, त्या सर्वांचे, हे दुर्मते, मी आज तुजवर उमनें काढीन ! वग मांपडला आहेम ! अरे. तुझ्यामाठी हा रथिश्रेष्ठ प्रतापी गंगानंदन शिवंडीच्या हातून निघन पावून शरशय्येवर पडला ! तुझ्याचमाठी द्रोण, व कर्ण व तमाच प्रतापशाली शल्य ठार झाला ! वैराशीचा आदिजनक जो मुचलपुत्र शकुनि तोही मरून गेला ! द्रोपदीच्या क्लेश देणारा पापी प्रतिकार्माही ठार झाला ! आणि प्रस्थान लढवय्ये व शूर असे तुझे सर्व भाऊ निघन पावले; हे व दुसरे पुष्कळ राजे तुजमाठी वळी पडले; आणि तुलाही मी आज या गदेंनें निःसंशय ठार करणार !”

राजेंद्रा, याप्रमाणें उच्चस्वरांनें बोलणाऱ्या त्या वृकोदरगम तुझा मत्यपगक्रमी पुत्रनिर्धास्तपणें म्हणाला, “ अरे वृकोदर, पुष्कळ बडबड

कशाला ! लढायला लाग. कुलाधमा. मी आज तुझी युद्धाची रगच जिरवून टाकतां ! अरे, तुझ्यामारग्या यःकश्चित् मनुष्यानें मोठमोठ्यानें आरडून आरडून भिवविण्याजोगा हा दुर्योधन शुद्र नाही. समजलास ! व्यर्थ बडबडीला भिणारे सामान्य पुरुष निराळेच असतात. देवांपामुन मंपादिल्लें गदायुद्ध एकदां तुजचरोवर खेळावें. ही माझी फार दिवसांपामुन इच्छा आहे; आणि माझ्या हृदयांत ताम करणारी ही इच्छा सुदैवानें आज पूर्ण होण्याची संधि आली आहे ! दुर्मते, पुष्कळ बडबड व आत्मश्लाघा कशाला करतोस ! या बोलण्याप्रमाणें कृति करून दाखव, उगाच वेळ दवडूं नको !” राजा, त्याचें तें भाषण ऐकून तेथे जमलेल्या सर्व राजांनी व सोमकांनी त्याची प्रशंसा केली. याप्रमाणें सर्वांनी अतिशय स्तुति केली असतां, कुरुनंदन दुर्योधनाचा गेमनूंगेस स्फुरण पावून, त्यानें युद्धाचा दट निवारण केला. तेव्हां त्या मातंगाप्रमाणें उन्मत्त झालेल्या अमाहिष्णु दुर्योधनास पुनः शाल्यांच्या गजरांनें राजांनी अतिशय भेव आणिला, उतऱ्यांत इकडून महात्मा पंडुपुत्र भीमसेन त्या महायोग धातेंद्राष्टावर वेगानें धावला; तेव्हां ल्यांच हत्ती गर्ज लागले, घोडे हिंस लागले, आणि जयपी पांडवांची शस्त्रेही प्रदीप्त दिसूं लागली !

अध्याय सत्तावन्नावा

—:०:—

गदायुद्ध.

संजय सांगतो:—नेतर, राजा, भीमसेन याप्रमाणें चालून आलेल्या पाहून योग मनाचा दुर्योधन गर्जना करीत मोठ्या वेगानें त्यास सामोरा झाला; आणि मग ते दोघेजण शूंगयुक्त वृषभांप्रमाणें एकमेकांवर तुटून पडले असतां त्यांनीं एकमेकांवर जे प्रहार केले,

त्यांपासून निर्घातध्वनीसारखा भयंकर आवाज झाला. राजा धृतराष्ट्रा, इंद्रप्रल्हादांप्रमाणे एकमेकांस जिंकू पहाणाऱ्या त्या उभयतांचे अंगावर कांठा उठेल असें तुंबळ युद्ध जुंपले; आणि ते उदार मनाचे गदाधारी महात्मे नव-शिखांत रक्तानें माखून फुलेल्या पळसांसारखे दिसूं लागले. याप्रमाणे त्यांचे तें अतिदारुण महायुद्ध सुरू झालें असतां गदांच्या आघातांबरोबर एकसारख्या ठिणभ्या उडूं लागल्या; व त्या योगें आकाश जसें कांहीं काजव्यांच्या थव्यांनीच सुशोभित झाल्यासारखें दिसूं लागलें. याप्रमाणे तें अत्यंत तुंबळ व हातघाईचें युद्ध चाललें असतां, ते दोघेही अरिंदम लढतां लढतां अगदीं थकून गेले, आणि मुहूर्तपर्यंत विसावा घेत स्वस्थ बसले. मग किंचित् विसावा मिळतांच पुनः आपल्या उत्कृष्ट गदा उचलून ते एकमेकांशीं भिडले. राजा, ते दोघेही महावीर्यशाली नरर्षभ चांगले ताजेतवाने झाले होते; दोघांचेही हातांत गदा असून त्यांचा पराक्रमही समान होता; आणि एका तरुण हत्तिर्णाच्या हेतूनें परस्परांवर तुटून पडणाऱ्या दोन बलाढ्य व मदोन्मत्त गजांसारखे ते दिसत होते. त्यांस पाहून देव, गंधर्व व मानव या सर्वांसच परम विस्मय वाटला. राजा, त्या भीमदुर्योधनांनीं गदा उचलल्या आहेत अशा स्थितींत त्यांस पाहून, यापैकी कोण विजयी होईल, याविषयी सर्वांसच संशय पडला. मग, बलवंतांत वरिष्ठ असे ते भाऊ पुनः एकमेकांशीं भिडले; आणि एकमेकांस मारण्याची संधि पहात पवित्रे करूं लागले. राजा, भीमसेनाची ती अवजड व केवळ यमदंडोपम प्राणघातक अशी भयंकर गदा म्हणजे इंद्राचें उगारलेलें वज्रच आहे असें पहाणारांस भासलें. भीमसेन रणांत गदा फिरवीत. असतां मुहूर्तपर्यंत घोर व अति-

तुंबळ शब्द चालला होता. राजा, तो गदा फिरविणारा शत्रु भीमसेन व त्याची ती अतुल वेगानें फिरणारी गदा पाहून क्षणभर दुर्योधनही विस्मित झाला; आणि हे भारता, एकंदरीत तो नानाप्रकारचीं मंडले व मार्ग करणारा वीर वृकोदर त्या वेळीं फारच शोभला.

नंतर, राजा, ज्याप्रमाणे दोन मांजरे भक्ष्यार्थे एकमेकांवर तुटून पडतात, त्याप्रमाणे ते वीर आपआपल्या रक्षणाविषयीं दक्ष राहून एकमेकांशीं भिडले व परस्परांवर वरचेवर प्रहार करूं लागले. भीमसेनानें पुष्कळ प्रकारचे मार्ग दाखविले; तशींच विचित्र प्रकारचीं मंडले व पुढें चाल, पीछेहाट वेगरे प्रकार मोठ्या सफाईनें चालविले. चमत्कारिक अस्त्रयंत्रे, निरनिराळीं स्थाने, शस्त्रांची फेक, शस्त्र चुकविणे, डावी किंवा उजवी घालणे, वेगानें समोर धावून येणे, प्रतिरोध करणे, स्थिर उभें रहाणे, पुनः युद्ध करणे, शत्रूवर प्रहार करण्यासाठीं चोहोंकडून धावणे, शत्रूच्या धावण्यास अवरोध करणे, प्रहार चुकविण्यासाठीं खालीं पडणे किंवा उंच उडी मारणे, पुढें येऊन प्रहार करणे, मागे वळून मागच्या हातानेंच फटका लगावणे, इत्यादि प्रकार ते गदायुद्धविशारद वीर एकसारखे करीत होते. राजा, ते परस्परांस जोरानें हाणीत एकमेकांचे प्रहार चुकवीत, प्रतिपक्ष्यास चकवीत आणि पुनः संचार करूं लागत. त्या दोघांसही युद्धाचा अतिशय सराव असून अंगांत उत्तम ताकत असल्यामुळे त्यांनीं पुष्कळ मंडले केलीं. याप्रमाणे रणांगणांत चोहोंकडे युद्धचमत्कार दाखवितां दाखवितां त्यांनीं एकदम एकमेकांवर गदाप्रहार केले. त्या वेळीं, हे महाराजा, ते रक्ताची आंधोळ झालेले वीर—

१ शत्रूस वर किंवा बाजूस फेकण्याचे प्रकार.

२ निरनिराळे पवित्रे.

एकमेकांशीं भिद्युतं शुंडाप्रहार करणाऽन्या दोन गजांप्रमाणें शोभले. हे परंतप. याप्रमाणें त्या मायंकालच्या वेळीं त्यांचें इंद्रवृत्रांमारखें घोर युद्ध झालें. राजा. मग ते बलाढ्य गदाधारी पुनः मंडलें घेऊं लागले. दुर्योधन उजव्या वाजूनें मंडल करूं लागला आणि भीम डाव्या वाजूनें वळला. हे महाराजा, भीममेन याप्रमाणें रणांत डावें मंडल फिरत अमतां, दुर्योधनाने त्याच्या कुशीत प्रहार केला. परंतु भीमानें तिकडे लक्षही दिलें नाहीं ! तो प्रहार आपल्या विमगणतीतही नाहीं, असें दाखवीत भीममेन आपली अवजड गदा फिरवूं लागला. हे महाराजा, त्या वेळीं भीममेनाची ती गदा इंद्रधनुष्याप्रमाणें घोर व उगारलेल्या कालंदंडासारखी भामली. भीममेन गदा फिरवीत आहे असें पाहून तुझ्या परंतप पुत्रानेंही आपली भयंकर गदा फिरविण्यास सुरुवात करून तिनें भीमाच्या गदेवर टोला दिला ! तेव्हां, राजा, तुझ्या पुत्राची गदा गरगर फिरत अमतां तिजमुळें जो वायु उत्पन्न झाला, त्याच्या वेगामुळें अत्यंत तुंबळ असा शब्द व तेजही उत्पन्न झालें. सुयोधन विविध मार्ग व मंडलें भागशः करीत होता; त्या वेळीं तो तेजस्वी वीर भीममेनाहूनही विशेष शोभला. राजा. भीममेन हांती नव्हती तेवढ्या शक्तीनें आपली प्रचंड गदा फिरवूं लागला; आणि अत्यंत भयंकर व मोठा आवाज करणाऽन्या त्या गदेनें आपल्या घुमण्याच्या वेगानें धूर व उजाला यांनीं युक्त असा अग्नि उत्पन्न केला ! राजा, भीममेन गदा फिरवीत आहे असें पाहून सुयोधनही आपली पोलादी अवजड गदा फिरवूं लागला; तेव्हां तो फारच शोभला. त्या महात्म्याच्या गदा-मारुताचा वेग पाहून पांडवांस व सर्व मोमकांस मोठें भय पडलें. मग रणांगणांत चोहोंकडे युद्धक्रीडा दाखवितां दाखवितां त्या अग्नि-

मांनीं एकाएकीं एकमेकांवर गदांचे प्रहार केले. त्याबरोबर त्यांच्या अंगावर रक्ताचा शिडकाव झाला; आणि. हे महाराजा. ते वीर दांतांनीं लढणाऽन्या हत्तींप्रमाणें शोभले. याप्रमाणें त्या मंथ्याकालच्या वेळीं त्यांचें ते इंद्रवृत्रांच्या युद्धामाग्वें क्रूर. घनघोर व अनिवार युद्ध झालें. मग. राजा. भीम व्यक्थेनें उभा आहे असें पाहून तुझा महाबली पुत्र फारच आश्चर्यकारक मार्ग करीत त्याजवर धावला. त्या वेळीं त्याला अत्यंत संताप चढला होता. राजा. इकडे भीमही खवळला होताच. त्यानें सुयोधनाच्या त्या मोठ्याचा मुलामा दिलेल्या व मोठ्या वेगानें फिरणाऽन्या गदेवर तडाका मारला ! तेव्हां, हे महाराजा, त्यांच्या आघाताबरोबर, फेंकलेल्या दोन वज्रांचाच आघात झाल्याप्रमाणें त्या ठिकाणीं ठिणभ्या उडाल्या आणि प्रचंड गडगडाटही झाला. हे महाराजा, भीममेनानें जागनें फेंकलेली ती गदा जेव्हां वेगानें खाली पडूं लागली, तेव्हां पृथ्वीही कंपित झाली. पण आपल्या गदेचा रणांत पाडाव झाला हे दुर्योधनास खपलें नाहीं. एक मत्त हत्ती दुसऱ्या मत्त हत्तीस पाहातांच जमा खवळून जातां तसा तो खवळला; आणि त्यानें त्याचें उमनें फेडण्याचा निश्चय केला; व लगेच उजवें मंडल घेऊन उडी मारली आणि भयंकर वेगानें भीमाच्या डोक्यांत गदा घातली ! परंतु, राजा, आश्चर्य हें कीं, तुझ्या पुत्रानें गदेचा एवढा तडाका दिल्या तरी त्या पंडुपुत्रानें नुमती मानही हालविली नाहीं ! गदेचा तो आघात झाला अमतां भीममेन एक पाऊलभरही चळला नाहीं, हें पाहून सर्वांस विस्मय वाटला आणि त्यांनीं त्याची प्रशंसा केली. मग भीमपराक्रमी भीममेनानें अधिक जड अशी आपली सुवर्णपरिष्कृत उज्वळ गदा दुर्योधनावर फेंकली. परंतु महाबली दुर्योधनानें बिलकूलन गडबडतां मोठ्या चलाखीनें

तो प्रहार चुकविला ! तेव्हां तेही एक आश्व- काय असा भाम झाला ! मग भीमपराक्रमी
 र्यच झाले ! राजा, भीमाने फेंकलेली व मोठा सुयोधनाने त्याच्या आंखावर तडाका दिला,
 गडगडाट करीत येणारी ती गदा व्यर्थ जाऊन परंतु तो पर्वततुल्य वीर नुसता चळलाही नाही !
 जेव्हां जमिनीवर पडली, तेव्हां पृथ्वी हादरून गदेच्या प्रहाराने त्याच्या मस्तकांतून रक्ताचा
 गेली. मग, गदा म्वाली पडली आणि भीमसेन प्रवाह निघाला; आणि तेंणेंकरून, ज्याच्या
 फमला गेल्या असे जाणून, दुर्योधनाने जेणेंकरून गंडस्थलांतून मद गळत आहे अशा हत्ती-
 प्रतिपक्ष्याम चीड येईल अशा पुनःपुनः उड्या प्रमाणें तो पृथापुत्र अधिकच शोभला ! मग त्या
 मारिल्या; आणि अशा प्रकारें भीमाम अगदीं शत्रुकर्षक पार्थाग्रजानें वीरांम ठार करणारी व
 बेफाम करून त्याच्या वक्षःस्थलावर मोठ्या इंद्रधनुष्याप्रमाणें शब्द करणारी आपली
 जोराने व संतापाने गदाप्रहार केला ! गदेचा लोखंडी गदा घेऊन मोठ्या बलानें शत्रूम चीत
 तडाका व्रमतांच भीमसेन रणांगणांत भांबावून करून त्यावर प्रहार केला. तेव्हां, राजा, वनांत
 गेला आणि पुढे काय करावयाचें हेंही त्यास प्रफुल्लित शालवृक्ष वायुवेगानें उलथून पडावा
 क्षणभर सुचेनासें झाले. राजा, अशी त्याची त्याप्रमाणें तुझ्या पुत्राचें चिलखत खिळखिळें
 अवस्था होतांच सोमक व पांडव यांच्या आशा होऊन तो जमिनीवर पडला ! मग काय
 बहुतेक मावळल्या आणि त्यांची अंतःकरणें विचारनां ! तुझा पुत्र जमिनीवर पडलेला पाहून
 उदास होऊन गेली. परंतु इतक्यांत, त्या प्रहा- पांडव मोठ्याने गर्जना करूं लागले व हंसूं
 रानें बेफाम झालेल्या हत्तीमारखा तो वृकोदर- लागले ! परंतु इतक्यांत तुझा पुत्र पुनः शुद्धी-
 —एक हत्ती दुसऱ्या हत्तीवर धावतो त्याप्रमाणें— वर येऊन डोहांतून बाहेर येणाऱ्या हत्ती-
 तुझ्या पुत्रावर धावून आला; आणि, राजा, सारखा एकदम उभा राहिला. राजा दुर्यो-
 वनगजावर झडप घालणाऱ्या मिहाप्रमाणें वेगानें धनाचा देहस्वभावाच असा होता की, त्यास
 तुझ्या पुत्रावर झडप घालून, गदेची फेंक कर- कोणाचीच वरचढ सहन व्हावयाची नाही. शिवाय
 ण्यांत कुशल अमलेल्या त्या पंडुपुत्रानें दुर्यो- तो तमाच पराक्रमीही होता. त्यानें लगेच
 धन राजाजवळ येऊन त्याच्या कुशीवर नेम निष्णात वीराप्रमाणें घेर घेऊन समोरच अस-
 धरून गदा हाणली. त्या वेळीं, राजा, दुर्योधन लेल्या वृकोदरावर प्रहार केला. त्याबरोबर
 त्या तडाक्यानें विह्वल झाला. आणि त्यानें त्याचें शरीर विह्वल होऊन तो भूमीवर पडला !
 भूमीवर गुदघे टेकले ! हे जगत्पते. कुरुकुलश्रेष्ठ याप्रमाणें स्वसामर्थ्यानें भीमास जमिनीवर पाडून
 दुर्योधन गुदघ्यांवर येतांच मंजयमंडळीत मोठा कौरवाधिपति सुयोधनानें सिंहानाद केला आणि
 हंशा पिकला. परंतु, हे भरतश्रेष्ठा. मंजयांचा गदेच्या तडाक्यानें त्याचें वज्रतुल्य चिलखतही
 तो हर्षशब्द ऐकतांच तुझ्या पुत्राचा संताप फोडिलें ! तेव्हां अंतरिक्षांत देव व अप्सरा यांचा
 झाला. तो लगेच उठला; आणि महाभुजंगा- मोठा गलका होऊं लागला आणि त्यांनीं सुयो-
 प्रमाणें फूत्कार टाकीत जणू भीमसेनास जाळ- धनावर चित्रविचित्र पुष्पांची उत्तम वृष्टि केली.
 तोच की काय अशा प्रकारें डोळे लाल करून ते वेळीं, राजा,, नरश्रेष्ठ वृकोदर भूमीवर अमुन
 त्याकडे पाहूं लागला. मग तो गदा घेतलेला भरत- त्याच्या अत्यंत बळकट चिलखताचाही भेद
 श्रेष्ठ एकदम भीमसेनावर धावला. तेव्हां जणू काय झाला आहे, आणि दुर्योधनाचें बल बिलकूल
 हा त्याचें मस्तक चूर्णच करून टाकणार की क्षीण होत नाही, असे पाहून शत्रूम भयार्ची

घडकी बमली. नंतर मुहुर्तभरांत वृकोदर शुद्धी-
वर आला; त्याने आपले रक्ताने भरलेले तोंड
पुमले. धैर्याचा अवलंब केला, डोळे बटांगले आणि
बळांत शरीर मावरून तो उभा राहिला !

अध्याय अष्टावन्नावा.

—:—

दुर्योधनबध !

संजय सांगतो:—राजा. याप्रमाणें त्या
कुरुमुख्यांचा संग्राम अमा चांगला रंगाम आलेला
पाहून अर्जुन हा यशस्वी कृष्णाम म्हणाला.
“ जनार्दना. या द्रोघां वीरांच्या युद्धामध्ये तुला
अधिक कोण वाटतो, अथवा कोणाचा कोणता
गुण अधिक आहे, तें मला मांग. ”

वामुदेवानें उत्तर दिलें:—द्रोघांचें शिक्षण
मारखेंच आहे; परंतु भीम अधिक बलवान्
आहे आणि दुर्योधन हा त्याच्यापेक्षा अधिक
घटलेला व प्रयत्नशील आहे. भीमसेन जर
धर्मानें लढेल, तर त्याम जय मिळणार नाही.
परंतु जर अन्यायानें युद्ध करील, तर खात्रीनें
सुर्योधनाम ठार करील. देवांनीं मुद्दां कपटानेंच
दैत्यांस जिंकिले. म्हणून आह्मी ऐकिले आहे.
इंद्रानें विगोचनाम मायेनेंच जिंकिले आणि त्यानें
वृत्राचें तेज देखील मायेनेंच लोपविले ! म्हणून
म्हणतो. भीमानेंही कपटप्रचुर अमा पराक्रम
करावा ! शिवाय. धनंजया. धृतांचे वेळीं
भीमानें तशी प्रतिज्ञाही केली आहे की.
“ युद्धांत मी तुझी मांडी गदनें चूर्ण करीन ! ”
अर्जुना. असें तो तेव्हां सुर्योधनाम म्हणाला
होता. तर या वेळीं शत्रुकर्षक वृकोदरानें ना
आपली प्रतिज्ञा पूर्ण करावी. म्हणजे झाले.
राजा दुर्योधन तरी मायावीच आहे. तेव्हां
उल्हट भीमानेंही त्याचे मायेनेंच तुकडे उडविले
पाहिजेत. जर भीम हा केवळ आपल्या बळा-
वर भिस्त ठेऊन न्यायानें लढूं लागेल, तर

राजा युद्धिष्ठिर संकटांत पडेल. यांत मंशय
नाहीं. अर्जुना. मी तुला पुनः मांगतो. ऐक.
धर्मराजाच्या अपराधामुळेच पुनश्च आपणांम
भय उत्पन्न झाले आहे. एवढा थोर उद्योग
केला. भीष्मप्रभृति कौरवांचा निःपात उडविला.
जय मिळविला. उज्जल कीर्ति पसरली. आणि
वेगळें उमनें पुरापुर उगवून निघाले. एवढें सर्व
होऊन विजय अगदीं हातांत आल्यामारगवा
झाला अमतां धर्मानें तो मंशयांत घातला !
स्वरोत्सर्ग अर्जुना. धर्माला ही मोठीच दुर्बुद्धि
आठवली. अशा प्रकारचें हें थोर युद्ध करून
जें मिळविलें, तें केवळ एकाला जिंकलें अमतां
हारवीन ' असें म्हणून त्यानें हें युद्ध पणाम
ल्याविलें ! तेव्हां काय म्हणावें ! दुर्योधन हा
मोठा घटलेला वीर आहे. शिवाय त्याचें काय !
तो आज जिवावर उदार आहे ! अर्जुना. पुरातन-
कालीं भार्गव शुक्राचार्यानें तत्त्वार्थानें भरलेला
अमा एक श्लोक म्हटला आहे. तो मी
तुला सांगतो.

पुनरावर्तमानानां भ्रशानां जीषितैपिणाम् ।

भेतव्यं अरिशेषाणामेकायनगता हि ते ॥ १ ॥

जिवाची इच्छा करणारे पण एकदां भय
पावले अमून पुनः उलटून येणारे असे जे
शत्रुकडील उरल्ले लोक. ते थोडे अमले तरी
त्यांचें भय भगवें. त्यांकडे दुर्लक्ष करूं नये.
कारण. त्यांचें सर्व लोक मेल्यामुळे त्यांम
कोणाचीही आशा राहिलेली नमने. एक मारीन
किंवा मरेन. एवढाच विषय त्यांच्या दृष्टीपुढें
अमतो. आणि जिवावर उदार अमल्यामुळे. ते
थोडे अमले तरी बहुतांम भारीं अमतात.
ज्यांनीं घाटमानें उडी घातली आहे व जें
जिवावर उदार आहेत. त्यांच्या पुढें उभा राह-
ण्याम इंद्रही ममर्थ नाही. बाबारे. सुर्योधनाची
मांप्रत अशीच स्थिति आहे. त्याचें सर्व मन्य
मरून गेलें; आणि हताश होऊन तो डोहांत

शिरला; तो पराभव पावला, राज्य मिळविण्याची त्याची पूर्ण निराशा झाली, आणि ज्यासाठी जगावें अशी कोणतीच गोष्ट न राहून, आयुष्याचे उरलेले दिवस कंठण्यासाठी तो वनांत जाण्याची इच्छा करूं लागला. अशा स्थितींत कोणता शहाणा मनुष्य त्यास द्वंद्वयुद्धास आह्वान करील बरें? ज्यानें त्रयोदश वर्षेपर्यंत सारखा गदायुद्धाचा सराव चालविला आहे, आणि भीमसेनास ठार मारण्याच्या हेतूनें जो सांप्रत ऊर्ध्वमार्गानें व तिर्यग्मार्गानें संचार करीत आहे, त्या ह्या सुयोधनांन आपल्या हातीं आलेले राज्य परत हिसकून न घ्यावें म्हणजे झालें! छे छे, पार्था, जर महाबाहु भीम यास अन्यायानें न मारील, तर हा कौरव दुर्योधनच आपला राजा होईल!

राजा धृतराष्ट्रा, महात्म्या केशवाचे हे शब्द ऐकून, भीमाचें लक्ष आहे असें पाहून अर्जुनानें आपली डावी मांडी हातानें ठोकली! तेव्हां भीमानें लगेच ती खूण जाणली; आणि तो गदा घेऊन रणांत संचार करूं लागला. त्यानें विचित्र प्रकारचीं मंडळें व दुसरीं यमकें केली; डावें, उजवें व गोमूत्रक मंडळ केलें; आणि तो जसा काहीं प्रतिपक्षास भूल पाडीतच रणांत संचार करूं लागला. राजा, तुझा गदामार्ग-विशारद पुत्रही भीमास ठार करण्याच्या हेतूनें चित्रविचित्र व चलाखीचे मार्ग दाखवूं लागला. त्या वेळीं, राजा, चंद्रनागरु चर्चिलेल्या घोर गदा फिरविणारे, वैराचा अंत करूं पाहाणारे. रणांत यमाप्रमाणें खवळलेले आणि परस्परांस ठार करूं इच्छिणारे ते नाणावलेले वीर—नागरूपी आमिषासाठीं भांडणाऱ्या दोन गरुडांप्रमाणें घिरट्या घालूं लागले. राजा, विचित्र मंडळें घेणाऱ्या त्या भीमदुर्योधनांच्या गदा एकमेकांवर आदळून उंच ज्वाला उठत; वादळांन खवळलेले दोन समुद्र एकदम एकमेकांवर

आदळतात त्याप्रमाणें ते दोघे शूर व बलवान् वीर तेथें रणांगणांत एकदम एकमेकांशीं भिडून प्रहार करीत; त्यांच्या गदा एकमेकांवर आपटत; आणि ते दोघेही मत्तमातंगतुल्य वीर अगदीं बरोबरचे असल्यामुळें प्रहाराबरोबर गदांच्या आघातांचा भयंकर गडगडाट होई! याप्रमाणें तेव्हां अत्यंत भयंकर व हातघाईची हाणामारी चालली असतां, शत्रूस दमविणारे ते दोघेही वीर लढतां लढतां अगदीं थकून गेले. मग, परंतपा, मुहूर्तमात्र विसावा घेऊन ते पुनः आपल्या मोठ्या गदा घेऊन त्वेषानें एकमेकांशीं भिडले. नंतर, राजेंद्रा त्यांचें भयंकर स्वरूपाचें व अनिवार युद्ध झालें. ते गदांच्या तडाक्यांनीं परस्परांस घायाळ करीत होते. ज्यांचे नेत्र वृषभांसारखे आहेत, असे ते चपल वीर वेगानें रणांत धावले; आणि चिखलांत उभे असलेले दोन रेडे परस्परांवर तुटून पडतात, त्याप्रमाणें त्यांनीं एकमेकांवर शिस्त धरली. त्यांचे सर्व अवयव प्रतिपक्ष्याच्या प्रहारांनीं जर्जर झाले; ते रक्तानें न्हाऊन निघाले; आणि हिमालयावरील प्रफुल्ल पळसांसारखे दिमूं लागले. मग भीमानें अवाधिदेतांच दुर्योधन कांहींसा हर्ष पावून एकदम पुढें सरसावला. पण तो रणांत जवळ आला असें पाहातांच शहाण्या व बलवंत वृकोदरानें त्यावर मोठ्या वेगानें गदा फेंकली! परंतु, राजा दुर्योधनही कर्मी नव्हता! भीम गदा फेंकतो आहे असें पाहातांच तो तेथून चलाखीनें बाजूला सरला, त्यामुळें ती गदा विफल होऊन भूमीवर पडली! हे कुरुसत्तमा, याप्रमाणें तो प्रहार चुकवून तुझ्या पुत्रानें मोठ्या लगबगीनें भीमावर गदेचा टोला दिला! त्याबरोबर जो रक्ताचा प्रवाह चालला त्यामुळें व प्रहाराच्या जोरामुळें त्या अमितसामर्थ्यावान् भीमालाही मूर्च्छा आल्यासारखें झालें, परंतु त्याची तशी अवस्था झाल्याचें दुर्योधनाचे लक्षांत

आलें नाही; व भीमसेन आपलें तें अत्यंत पीडित झालेलें शरीर तसेंच संभाळून उभा होता, तेव्हां तो जणू आतां आपणावर रणांत प्रहार करण्याचेच विचारांत आहे, असें दुर्योधनास वाटलें आणि त्यामुळें त्यानें त्यावर पुनः मारा केला नाही. नंतर मुहूर्तेपर्यंत तसाच विसावा घेऊन प्रतापी भीमसेन समोरच उभा असलेल्या दुर्योधनावर वेगानें धावला. हे भरतर्षभा, तो अमित-पराक्रमी वीर स्ववळून धावत येत आहे असें पहातांच तुझ्या पुत्रानें त्यास झुकांडी देण्याचा विचार केला; आणि. राजा, वृकोदर अगदीं जवळ येतांच त्यास फसविण्यासाठीं उंच उडी मारण्याचा त्यानें बेत योजिला. परंतु एकंदर धोरणावरून वृकोदरानें तो बेत ताडला; व एकदम जोरानें धावून त्यानें मिहामारखी मोठी गर्जना केली. आणि इकडे तिकडे वळून प्रहार चुकविणाऱ्या व आतां उंच उडी मारूं पाहाणाऱ्या दुर्योधनाचे मांड्यांवर जोरानें गदा फेंकली. राजा, भीमानें झुगारलेल्या त्या वज्रतुल्य गदेनें दुर्योधनाच्या दोन्ही मुंदर मांड्या मोडून गेल्या! आणि याप्रमाणें भीमसेनाच्या हातून मांड्या चूर्ण झालेला तो तुझा नरव्याघ्र पुत्र पृथ्वी दणाणवीत तीवर पडला! तो पडतांच निर्घातांसह वारे जोरानें वाहूं लागले; धुळीची वृष्टि झाली; आणि वृक्ष, झुडपें व पर्वत यांसुद्धां सर्व पृथ्वी कंपित झाली! तो सर्व राजांचा अधिराज पतन पावतांच एक प्रदीप्त. भयंकर व मोठी उल्का जोरानें कडाडत येऊन धाडकन् जमिनीवर पडली! त्याचप्रमाणें, हे भारता, तो पृथ्वीपति पडला असतां इंद्रानें धुळीची व रक्ताची वृष्टि केली; अंतरिक्षांत यक्ष, राक्षस व पिशाच यांचा मोठा गलबला चाललेला ऐकूं येऊं लागला; आणि, राजा, त्या घोर शब्दांत चौहोंकडे चाललेले श्वापदांचे व पक्ष्यांचे शब्द मिसळून सर्वत्र अतिभयंकर असा एकच

कोलाहल माजला. हे भारता, तुझा पुत्र पडतांच तेथें अवशिष्ट असलेले घोडे, हत्ती व मनुष्ये मोठ्यानें आक्रोश करूं लागलीं, आणि त्यांबरोबरच भेरी, शंख व मुद्दंग यांचा प्रचंड ध्वनि सुरू झाला. तो भूमीच्या आंतील बाजूसही कोंदाटला. ज्यांना पुष्कळ पाय व पुष्कळ हात असून जीं दिमण्यांत अक्राळविक्राळ आहेत. अर्शा भयंकर कबंधे नाचूं लागून, त्यांनीं तें रणांगण सर्व दिशांनीं व्यापिलें. ध्वज-युक्त (स्थांत बसलेले), अस्त्रसंपन्न व शस्त्रधारी वीरही, राजा, तुझा पुत्र पतन पावला असतां चळचळां कांपूं लागले! विहिरी व डोह यांतून रक्ताचे फवारे उडूं लागले! नद्या फारच वेगानें व खळखळाट करीत वाहूं लागल्या, आणि स्त्रिया पुरुषांमारग्न्या व पुरुष स्त्रियांसारखे झाले! राजा, तुझा पुत्र दुर्योधन पडला त्या वेळीं ते अद्भुत उत्पात पाहून पंचाल व पांडव या सर्वांचीच मनें उद्विग्न होऊन गेलीं. हे भारता, मग गंधर्व, अप्सरा व देव तुझ्या पुत्रांचें ते अद्भुत युद्ध वर्णन करीत आपआपल्या उद्दिष्ट स्थलीं जाते झाले; आणि तसेच, राजेंद्रा, सिद्ध, वातीक व चागण हेही त्या नरश्रेष्ठांची प्रशंसा करीत आपल्या वाटेनें निघून गेले!

अध्याय एकुणसाठावा.

—:—

युधिष्ठिराविलाप !

मंजय मांगता: —राजा, उंच वाढलेल्या शालवृक्षाप्रमाणें त्यास पाडिलेले पाहातांच सर्व पांडव मनांत अतिशय हर्ष पावून तिकडे अवलोकन करूं लागले; आणि सर्व सोमकही हर्षभरित होऊन, मिहानें पाडलेल्या उन्मत्त मानंगामारग्न्या त्या दुर्योधनाकडे पाहूं लागले. इकडे, दुर्योधनास मारिल्यानंतर प्रतापी भीमसेन त्या लोळविलेल्या कोरवाधिपतीजवळ

जाऊन म्हणाला, “ मंदा, पूर्वी सभेंत एकवखा द्रौपदीस उद्देशून “गायरे गाय” असें तूं हास्यपूर्वक आम्हांस म्हणाला होतास. तें आठवतें काय? दुर्मते, त्या अवहासाचें फळ आज पुरापर भोग!” असें म्हणून तेथें त्यानें डाव्या पायांनै दुर्योधनाचे मस्तकावर लाथ मारिली, आणि त्या राजपभांचें मस्तक पायांनै उलथेंपालथें केलें! त्याचप्रमाणें, राजा, तो क्रोधानें लाल झालेला परबलमर्दक भीमसेन पुनः त्यास जें बोलला तें श्रवण कर. तो म्हणाला, “ मूढा, पूर्वी जे गायरे गाय करीत आम्हांपुढें नाचत होते, त्यांचेचपुढें आज आम्ही ‘गायरे गाय’ म्हणत मिरवत आहों! कपटाचा घाला, अग्नि, अक्षयूत किंवा ठकबाजी यांपैकीं कशाचाही आम्ही उपयोग केला नाही. तर केवळ स्वतःचे बाहुबलच्या जोरानें शत्रूची रग जिरविली!” नंतर, राजा, तो वैराचे अगदीं शेवटाम जाऊन पोचलेला वृकोदर पुनः सावकाश हंसून युधिष्ठिर, कृष्ण, संजय, अर्जुन व नकुलसहदेव ह्यांस म्हणाला, “ ज्यांनीं रजस्वला द्रौपदीस सभेंत आणिलें, आणि तेथें तीस भरसभेंत वख्खहीन केलें, ते धार्तराष्ट्र याज्ञमेनीच्या तपःप्रभावेकरून पांडवांनीं रणांत ठार केले आहेत पहा! धृतराष्ट्र राजाच्या ज्या क्रूर पुत्रांनीं पूर्वी आम्हांस ‘पोंचट तीळ’ म्हणून हिणविले, ते तर आम्ही सगण सपरिवार ठार मारिले! आतां आम्हांस स्वर्ग मिळेल किंवा पाहिजे तर आम्ही नरकास जाऊं. तो भाग निराळा!” मग, राजा, भूमीवर पडलेल्या त्या दुर्योधन राजाचे खांद्यावरील गदा हिंसकून त्यानें पुनः त्याचें मस्तक डाव्या पायांनै तुडविलें! आणि तो त्यास टोंचून बोलला! राजा, हर्षवेश चढलेल्या क्षुद्र मनाच्या भीमसेनानें कुरुश्रेष्ठ दुर्योधन राजाचे मस्तकावर पाय दिलेला पाहून पांडवांकडील मंडळीत जे

धर्मात्मे होते त्यांनीं कांहीं त्यास चांगलें म्हटलें नाही. याप्रमाणें भीमसेन तुझ्या पुत्रास ठार करून अहंपणाचीं भाषणें करीत अनेक प्रकारें नाचत असतां धर्मेराजत्यास म्हणाला, “ अरे, चांगल्या अथवा वाईट—कशाही प्रकारचीं कृत्यें करून तूं एकदांचा वैराचा मूड उगविलास, आणि कशी तरी प्रतिज्ञा शेवटाम नेलीस. पण आतां पुरे कर! याचें मस्तक पायांनै तुडवूं नको. तेंणेंकरून तूं धर्म उलथिला असें होईल. हे निप्पापा, हा राजा व आपला भाऊवंद आहे. याची अशी विटंबना करणें न्याय्य नाही. अरे, हा एकादश चमूचा स्वामी व कौरवांचा अधिपति आहे. या राजाचे व आपल्या भावाचे मस्तकास पादस्पर्श करूं नको. भीमा, या राजेश्वराचे बंधु मेले, अपत्य मेले, सर्व सैन्य नष्ट झालें आणि अशा स्थितीत हा युद्धांत मरण पावला आहे! त्यापेक्षां सर्व प्रकारें याबद्दल कळवळा येणें योग्य आहे. हा उपहासास बिलकूल पात्र नाही. ज्याचे मंत्री, भ्राते व पुत्र मरून गेले, आणि सर्व प्रकारें ज्याचा विश्वास उडाला, असा हा आपला विकलांग झालेला भ्राता आहे. याचा तूं अवमान केलास, हें कांहीं तूं बरोबर केले नाहीस. अरे पूर्वी ‘हा भीमसेन धर्मात्मा’ असें तुला लोक म्हणत असत; आणि, भीमा, तोच तूं राजाचे मस्तकावर पाय देऊन उभा आहेस हें काय? ”

राजा. याप्रमाणें युधिष्ठिर भीमसेनास म्हणाला व मग त्याचा कंठ दाटून आला; आणि तो शत्रूंचीं हाडें मऊ करणाऱ्या दुर्योधनाजवळ जाऊन त्यास लीनपणें म्हणाला, “ वा दुर्योधना, आमचा राग मानूं नको, किंवा तूं स्वतःसही दूषण देणें बरोबर नाही. अरे, हें खडतर पूर्वसंचितच भोगावें लागत आहे! हे कुरुसत्तमा, तूं आमचें आणि आम्ही तुझें जें हाडवैर धरलें होतें, तें दुष्ट व खडतर फळ



ल्यानें हाच्या पायांनें दुर्योधनांचे मन्मकातर लाथ मारिल्ली. (शाल्यपर्व पृष्ठ १३८.)

ब्रह्मदेवानेंच आपल्या भाळीं लिहिलें होतें. हे भारता, लोभ, गर्व व बालिशता या गुणांनी आणि केवळ स्वतःच्या अपराधामुळे तुला हें अशा प्रकारचें महत्संकट प्राप्त झालें. तूं प्रथम आपले मित्र, भाऊ, वडील, पुत्र, पौत्र व दुसरे साथीदार यांचा वात करविलास, आणि मग मरण पावलास. तुझ्याच अपराधामुळे आम्हांम तुझ्या भावांस मारणें भाग पडलें; आणि दुसरे भाऊबंद वगैरे ठार झाले ते तरी तुझ्याच अपराधामुळे ! हें जरी खरें आहे, तरी त्यास कांहीं उपाय नव्हता. कशांनहीं हें टळलें नसतें, अशी माझी समजूत आहे. यास्तव याबद्दल वाईट वाटून घेऊं नको. शिवाय, हे निष्पापा, तूं स्वतःबद्दलही शोक करण्याचें कारण नाही. कारण, तुला अभिनंदनीय अशा प्रकारचें मरण आलें आहे. हे कुरुकुलोत्पन्ना. मांप्रत आमची स्थितिच सर्व प्रकारें शोचनीय आहे. प्रियवांधवांवांचून आतां आम्हांस मदोदीत मुनें मुनें होणार ! पुत्र व बांधव यांच्या शोकांनीं विह्वल झालेल्या व धाय मोकळून रडणाऱ्या त्या विधवांना आतां मी कसें तोंड दाखवूं ? राजा, खरोखर तुझीच एकट्याची स्थिति उत्तम आहे ! तुला स्वर्गांत स्थान मिळणार, हें निश्चित आहे. आम्ही मात्र येथेंच नरकामारगें दाखून दुःख भोगणार ! आणि धृतराष्ट्राच्या विह्वल झालेल्या शोकग्रस्त व विधवा सुना आणि तशाच नातसुना आमची खरोखर निंदा करणार ! ”

संजय सांगतो:—राजा, असें म्हणून त्या धर्मपुत्र युधिष्ठिर राजानें अत्यंत दुःस्वार्त होऊन निःश्वास सोडला आणि पुष्कळ वेळ विलापही केला.

अध्याय साठावा.

—:०:—

बलदेवक्रोधसात्वन.

धृतराष्ट्र विचारितो:—सुना, राजा दुर्योधन

अधर्मानें मारिला गेला हें पाहून यादवश्रेष्ठ महाबलाद्वय बलराम त्या वेळीं काय म्हणाला ! तो गदायुद्धांत वाकन्नगर आहे इतकेंच केवळ नव्हे. तर त्यांतील एकूणएक खांचीखोची तो जाणतो. तेव्हां, संजया, या प्रसंगीं त्या रोहिणीपुत्रानें काय केलें, तें मला सांग.

संजय सांगतो:—राजा, भीमसेनानें तुझ्या पुत्राचे मस्तकावर लत्ताप्रहार केला असें पाहतांच तो वीराप्रणी बलवान् राम फारच कोपला; आणि सर्व राजांच्या मध्यभागीं एकदम हात उंच करून व भयंकर आरोळी टोकून म्हणाला, “ धिःकार, धिःकार असो ह्या भीमाला ! अहो, धर्मयुद्ध चाललें असतां यानें बेंबीच्या खालच्या भागीं प्रहार केला, त्यापेक्षा धिःकार असो याला ! भीमानें केले असलें नीच कृत्य गदायुद्धांत कोणी केलेलें आजवर कधींच अवलोकनांत नाही. ‘ बेंबीचे खालचे वाज्रम प्रहार करूं नये ’ हा शास्त्राचा नियम आहे. हा भीम केवळ अडाणी—याला शास्त्राचें बिलकूल ज्ञान नाही. हा मनमोक्त वर्तन करितो ! ”

राजा, असें बोलतां बोलतां त्याला फारच संताप चढला. मग, हे महाराजा, तो दुर्योधनाकडे पाहून व गोपानें डोळे लाल करून बोलू लागला, “ कृष्णा, हा केवळ माझ्या तोडीचा शत्रु, हा पडला असें समजूं नको. आश्रिताचे द्रुबल्येमुळे यजमानाची निंदा होते. यास्तव मला तिचें निराकरण केलेंच पाहिजे ! ”

राजा, असें बोलून तो बलराम नांगर उचलून भीमावर धावला. तेव्हां हात उंच केलेल्या त्या महात्म्याचें रूप फारच विचित्र अशा विशाल श्वेतपर्वतासारगें दिसलें. याप्रमाणें तो धावत येत असतां केशवानें विनयानें पुढें येऊन मोठ्या प्रयत्नानें आपल्या पुष्ट बाहुंनीं त्याम वृष्ट धरलें. त्या वेळीं एक गौर व दुसरा श्यामवर्ण असे ते दोघे यादवश्रेष्ठ,

पौर्णिमेच्या दिवशीं सूर्यास्तसमयीं आकाशांत दिस्पणाच्या चंद्रसूर्योप्रमाणें फारच शोभिवंत दिसले. मग कृष्ण त्या संतप्त बलरामास शांत करीत म्हणाला, “ दादा, हें काय ? अहो. वृद्धि सहा प्रकारची मानतात. (१) आपली स्वतःची वृद्धि, (२) आपल्या शत्रूचा नाश, (३) आपल्या मित्राचा उत्कर्ष, (४) त्याच्या शत्रूची हानि, (५) आपल्या मित्राच्या मित्राचा उदय आणि (६) त्या मित्र-मित्राच्या शत्रूचा विनाश, असे आपल्या उत्कर्षाचे सहा प्रकार आहेत. आतां याच्या उलट जेव्हां आपली किंवा आपल्या मित्राची स्थिति होते, तेव्हां मन उद्दिग्ध व्हावें. परंतु या वेळीं तसें काय आहे ! हा प्रकार आपणांस लवकर शांतिकारक होवो. शुद्ध पौरुषाचे पांडव हे स्वाभाविकच आपले मित्र आहेत; शिवाय ते आपले आप्त—आतिभाऊ—आहेत; आणि त्यांस शत्रूंनीं अतिशयच वाईट रितीनें वागविलें आहे. येथें प्रतिज्ञा पाळणें हाच मी क्षत्रियांचा धर्म समजतो. ‘ महायुद्धांत सुयोधनाच्या मांड्या गदेनें चूर्ण करीन ! ’ अशी पूर्वीच सभेमध्यें भीमानें प्रतिज्ञा केली होती. शिवाय मैत्रेय महर्षांनीं ‘ हे परंतपा, भीमसेन गदेनें तुझ्या मांड्या फोडील ! ’ असा दुयोधनास शाप दिला होता. यास्तव, हे प्रलंबार, यांत कांहीं दोष झाला, असें मला वाटत नाही. आणि तशांतून कांहीं झाला असला, तरी रागावणें आपणांस बरें नाही. कारण, पांडवांचे मातामह व आपले पितामह एक असल्यामुळे त्यांचा-आपला एका रक्तामांसाचा संबंध आहे; तसाच अर्जुन हा आपला मेहुणा, हा दुसरा निकट संबंध; आणि ते व आपण एकमेकांस सुख देणारे अकृत्रिम स्नेही, हा तिसरा निकट संबंध; अशा अनेक प्रकारें त्यांचा व आपला इतका निकट संबंध जडलेला आहे.

कीं, त्यांचा उत्कर्ष झाला असतां तें केंद्रून आपलाही उत्कर्ष होणार आहे. यास्तव, दादा, शांत व्हा, रागावूं नका ! ”

राजा, वामुदेवाचें भाषण ऐकून धर्मवेत्ता बलराम म्हणाला, “ संत धर्माचें आचरण करितात. तो धर्म दोन गोष्टींनीं हीन होत असतो. एक अर्थानें आणि दुसरा कामानें. अतिलोभ्याचा अर्थ व अतिविषयी मनुष्याचा काम हे धर्मबाधक होतात. जो मनुष्य सुख-लालसेनें (कामानें) धर्माचा धक्का लागू देत नाही, अर्थ साधण्यासाठीं धर्मकाम बुडवीत नाही, आणि केवळ धर्माचे पाठीस लागून कामार्थावर पाणी सोडीत नाही, तर धर्म, अर्थ व काम या तिघांचेही एकसमयावच्छेदकून समसमान सेवन करितो, तोच आत्यंतिक सुख भोगतो. येथें तर भीमानें धर्माची पायमल्ली करून सर्वच घोंटाळा उडविला आहे. गोविंदा, तूं कांहीं तरी लटपटपंची करून आपले म्हणणें सिद्ध करीत आहेस; बाकी हें तुझें बोलणें बिलकूल धर्मास अनुसरून नाही ! ”

कृष्ण म्हणाला:—दादा, तुम्ही धर्मात्मे व धर्माचे मोठे केवारी असून तुम्हांला राग कर्षाच येत नाही, अशी तुमची लोकांत प्रसिद्धि आहे. यास्तव, दादा, या वेळींही आपण क्रोध करूं नका, शांत व्हा. आतां कलियुग प्राप्त झालें आहे, हें मनांत आणा, व भीमाची प्रतिज्ञाही लक्षांत घ्या. म्हणजे त्याचें कृत्य वाईट व पापाचें असलें तरी तितकें संतापकारक नाही, असें आपणासही वाटे. असे; झालें तें झालें ! भीमाची प्रतिज्ञा तरी एकदांची शेवटास जावो आणि तो या वैराच्या सुडांतून पार पडो ! ”

संजय सांगतो:—राजा, केशवाचे तोंडून धर्माची पायमल्ली झालेली ऐकून रामास बरें वाटलें नाही आणि तो त्या सभेंत म्हणाला, “ धर्मात्म्या सुयोधन राजास मारून हा भीम

जगांत ' कपटयोधी ' म्हणून प्रसिद्ध होईल ! याची निद्रा होईल ! आणि धर्मशील दुर्योधन राजास शाश्वत गति प्राप्त होईल ! राजा दुर्योधन सरळ मार्गाने लढतां लढतां मारला गेला आहे. त्यानें युद्धदीक्षा घेऊन. रणांत प्रवेश करून. मोठा रणयज्ञ विभारून व शेवटीं शत्रुरूप अर्शांत स्वतःचेही हवन करून कीर्तिरूपी अवभथ जोडले ! " इतकें बोलून तो प्रतापी राहिलेय रथांत वृमून द्वारकेकडे निवून गेला ! राजा, राम द्वारकेकडे गेला तेव्हां वाष्ण्यांसह पांचाल व पांडव ह्यांस जरा वाईट वाटलें; युधिष्ठिर तर दीनासारखा खाली मान घालून चिंता करीत बसला होता; आणि शोकामुळे त्याचा निश्चय पार दासळला होता. अशी त्याची स्थिति पाहून वामुदेव त्यास असें बोलला.

वामुदेव म्हणाला:—धर्मराजा, अरे, तूं अधर्माला कशी संमति दिलीस ? ज्याचा कोणी वाली उरला नाही, अशा या निश्चेष्ट पडलेल्या दुर्योधनाचें मस्तक भीम पायानें तुडवीत अमतां, राजा, तूं मोठा धर्मज्ञ अमतांना नुमता पहात कसा राहिलास ?

युधिष्ठिर म्हणाला:—कृष्णा, भीमानें कोप्रावेशांत जो राजाचे मस्तकास पादस्पर्श केला. तो मला आवडला असें मुळीच नाही ! हा असा कुलक्षय झाला अमतां मला तरी कांहीं हर्ष होत नाही ! तथापि मी भीमाची जरा उपेक्षा केली, त्यास तसेंच कारण होतें. धृतराष्ट्राच्या पुत्रांनीं आम्हांस कपटांनं नित्य उल्लेख आणि पुष्कळ कठोर भाषणें करून वनांत धाडले. ते दुःख भीमसेनाच्या मनांत अतिशय डांचत होतें आणि त्यामुळेच त्याचा संताप अनावर झाला होता; हें मनांत आणून मीं तेव्हां त्याची उपेक्षा केली इतकेंच ! बाकी मला तें मुळीच मानवले नाही ! कृष्णा. या मूर्ख, कामी व लोभी दुर्यो-

धनास ठार करून भीमास जो काय धर्म किंवा अधर्म घडला असेल तो असो !

धृतराष्ट्रा, धर्मराजा असें म्हणाला तेव्हां यदुकुलाग्रणी वामुदेव मोठ्या संकटांनं .. बरे, असें कां होईना ! " इतकेंच बोलला. भीमानें प्रिय व हित करावें अशी इच्छा करणाऱ्या त्या वामुदेवानें असें म्हटलें; आणि त्यानें रणांत जें जें कांहीं केलें. त्या मर्वांस अनुमोदन दिलें. राजा, भीमसेन तुझ्या पुत्रास रणांत ठार करून हर्षभंगित झाला होता; त्याचे डोळे हर्षानें टवटवीत झाले होते; आणि स्वतःच्या विजयाचा त्यास अभिमान होता. मग तो पुढें येऊन धर्मराजासमोर प्रणाम करून व हात जोडून म्हणाला. .. महाराज, आज मुखमय व निष्कंठक झालेली ही संपूर्ण पृथ्वी आपली आहे; तीवर राज्य करा आणि स्वधर्माचें परिपालन करा. हे पृथ्वीपते, या वेगळा आदिजनक जो कपटप्रिय दुर्योधन, तो हा येथें जमिनीवर मरून पडला आहे. भयंकर दुर्भाषणें करणारे ते दुःशासनप्रभृति सर्व भाऊ, व कर्ण, शकुनि वगैरे आपले सर्व शत्रु ठार झाले; आणि, महाराज, रत्नांनी भरलेली ही वनपर्वतांमुद्धां अग्निल पृथ्वी निःशत्रु झालेल्या आपल्या ताब्यांत आली आहे ! "

युधिष्ठिर म्हणाला: राजा दुर्योधन मेल्या, आणि त्याचे बरोबर वेगळाही अंत झाला ! श्रीकृष्णाच्या मल्लममलर्ताप्रमाणें वागून आम्ही ही वसुंधरा जिंकली. भीमा, मुंदवानें तूं मातेच्या व द्रौपदीच्या अशा उभयतांच्या कोपांतून अन्वणी झालास ! मुंदवानें तुझा शत्रु मारला गेला आणि तुला जय मिळाला !

अध्याय एकसष्टावा.

—:—

पांडव व कृष्ण आणि दुर्योधन यांचा संवाद.

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, भीमसेनानें युद्धांत दुर्योधनास मारिल्लें पाहून पांडव व संजय यांनी काय केलें ?

संजय सांगतो:—हे महाराजा, सिंहाणें मत्तवनगज मारावा, त्याप्रमाणें भीमानें रणांत दुर्योधनास मारिल्याचें पाहातांच कृष्णासह पांडव, पांचाल व संजय हे मनांत अतिशय हर्ष पावले; तो कुरुराज पडतांच त्यांचा हर्ष हृदयांत मावेनासा होऊन ते उत्तरीय वस्त्रें फडकावूं लागले; सिंहानाद करूं लागले; आणि त्या हर्षाच्या भरांत आलेल्या वीरांस धारण करणें ह्या पृथ्वीस जड वाटूं लागलें ! कोणी धनुष्यें हालवूं लागले, कांहीं ज्या ओढूं लागले, कित्येक मोठमोठे शंख फुंकूं लागले, कांहीं जणांनीं दुंदुभि वाजविण्यास सुरुवात केली, दुसरे कित्येक उड्या मारूं लागले, आणि, राजा, तुझे कित्येक शत्रु मोठ्यानें हंसूं लागले ! ते वीर भीमास वारंवार म्हणाले, “ भीमसेना, अतिशय वटलेल्या अशा या कौरवेंद्रास रणांत गदेनें ठार करून तूं आज एक फारच मोठें व दुष्कर कर्म केलेंस ! वनघोर लढाईत इंद्रानें वृत्राचा वध केला त्याच तोंडीचें हें तुजें कृत्य—हा शत्रूचा वध—होय, असें लोकांस वाटलें ! दुर्योधन काय सामान्य वीर होता ! विविधमार्ग व सर्व प्रकारचीं मंडलें करणाऱ्या त्या शूराम वृकोदरावांचून दुसरा कोण मारता ! इतरांस अतिशय दुर्गम असा जो वेराचा अंत, तेथें तूं जाऊन पोचिलास ! खरोखर, हे वीरा, संग्रामाच्या शिरोभागी तूं जो मत्तगजेंद्रासारखा पराक्रम केलास, असला पराक्रम इतरांच्या हातून होणें अशक्य आहे ! तूं मुदेवानें दुर्योधनाचें मस्तक पायानें ठेंबलेस;

आणि, हे अनघा, सिंहाणें टोणग्याचें रक्त प्राशन करावें, त्याप्रमाणें तूं उत्कृष्ट संग्राम करून मुदेवानें दुःशासनाचें रक्त प्यालास ! भीमा, थोर भाग्यायोगें तुझी अतिशय मोठी कीर्ति जगभर पसरली आहे. वृत्रासुर मारला गेला तेव्हां बंदिजनांनीं इंद्राची अशीच स्तुति केली होती; आणि हे भारता. शत्रूचा निःपात करून मोकळा झालेल्या तुझीही आम्ही तसेंच अभिनंदन करित आहों ! भीमा, दुर्योधनाचा वध झाल्यामुळे, आमच्या रोमनूरोमास जो आनंद झाला आहे, तो अजूनही मावळत नाही पहा ! ”

राजा, हर्षानें बहूकून गेलेले जे लोक भीमास भोवतीं जमले होते ते त्यास असें म्हणाले. याप्रमाणें पांडवांसह सर्व नरश्रेष्ठ पांचाल हर्षानें वेडे होऊन भलभलतें बडबडत असतां कृष्ण त्यांस म्हणाला, “ नराधिपहो, मेलेल्या शत्रूवर आणखी प्रहार करणें न्याय्य नाही. वारंवार केलेल्या भयंकर दुर्भाषणांनीं हा दुर्योधन आधींच मेल्या आहे. ज्याचे साह्यकर्तेही दुष्टच होते, असा हा इष्टमित्रांचा उपदेश न ऐकणारा, निलाजरा, लोभी व पातकी जेव्हां विदुर, द्रोण, कृपाचार्य व भीष्म परोपरी विनवीत असतांही त्यांचें न ऐकतां, पांडवांस वडिलांजित राज्याचा हिस्सा साफ देत नाही म्हणाला, तेव्हांच हा दुष्ट ठार झाला आहे ! ह्या अत्यंत दीन झालेल्या व केवळ काष्ठवत् पडलेल्या पातक्याशीं बोलून काय करावयाचें आहे ? नृपहो, चला. रथावर आरूढ व्हा. आपण सत्वर जाऊं चला. आपल्या थोर पूर्वपुण्याईनें हा पापात्मा अमात्य, ज्ञातिबंधव वगैरे सर्वांसह ठार झाला ! चला, निघा लवकर ! ”

राजा, कृष्णानें आपली अशा प्रकारें अवहेलना केलेली ऐकून दुर्योधन राजाच्या अंगाचा तिलपापड झाला आणि तो एकदम उठला !

त्याने कमर टेकून व कोपरांवर जोर घेऊन मान वर उचलली आणि भिवया चढवून तो वामु-देवाकडे डोळे वटारून पाहू लागला. त्या वेळी, राजा, शेषथी तुटलेला सर्प जसा दिमतो तसेच त्या अर्धवट बमला राहिलेल्या क्रुद्ध राजाचे रूप दिसले, त्याला प्राणांतिक घोर वेदना होत होती, तथापि क्रोधावेशांत तीही विमरून तो वामुदेवास उग्र वाणीने म्हणाला, “ अरे कम-दासाच्या पोरा, तूं मला जें अधर्मानें युद्धांत मारविलें, त्याची तुला लज वाटत नाही ? ‘ मांड्यावर प्रहार कर ’ अशी भीमास लबाडीनें आठवण देण्यामाठीं तूं अजुनाशीं जें बोललास. तें मला कळलें नाही असें तूं समजतोस काय ? सरळ सरळ मार्गानें लटणाऱ्या हजारां राजांस अनेक कुटिल उपायांनीं मारूनसवरून तुला लज्जा वाटत नाही, आणि रोजरोज अशीच ठकवाणीनें शूर वीरांची भयंकर कत्तल करतांना तुला दयामायाही येत नाही, त्या तुला काय म्हणावें ? लज्जा व दया यांची तुला ओळखही नाही. शिखंडीला पुढें करून पितामह भीष्माला मारविलें; त्याचप्रमाणें, हे सुदुर्मते, अश्रुत्यामा नांवाचा एक हत्ती मारून आचार्याकडून शस्त्र खाली ठेवविलें, हें काय मला माहित नाही ! हा घातकी घृष्टद्युम्न वीरशाली आचार्याचा शिर-च्छेद करीत असतां तूं उघड्या डोळ्यांनीं चांगला पहात होतास. पण कांहीं त्याचें निवारण केलें नाही ! पंडुपुत्र अजुनाचे वधामाठीच म्हणून मागून घेतलेली शक्ति ज्या तूं घटोत्क-चावर व्यर्थ दवडविलीस, त्या तुजपेशां अधिक पापी कोण असणार आहे ? तसाच तो बलाढ्य भूरिश्रवा हात तुटून जाऊन प्रायोपवेशन करून बसला होता, पण तुझ्याकडेच पाठविलेल्या महात्म्या सात्यकीनें त्याचा घात केला ! पाथाम जिंकण्याच्या हेतूनें घोर पराक्रम करणाऱ्या कर्णाच्या भात्यांतील पन्नगेंद्र अथसेत व्यर्थ

घालवून, त्याचें चाक रुतलें अमतां व तो तें उचलण्यांत गुंतला अमतां तूं त्या नराग्रणींम रणांत पाडविलें ! जर मी, कर्ण आणि भीष्म-द्रोण या चौघांशीं तूं सरळ मार्गानें लढला असतास, तर तुझा विजय कदापि होता ना ! परंतु त्वां अनार्यानें स्वधर्मानें वागणाऱ्या आमचा, राजांचा व इतरही वीरांचा कुटिल मार्गानें घात करविलास ! ”

वामुदेव म्हणाला:—हे गांधारीपुत्रा, पाप-मार्गानें चालणारा तूं भाऊ, मुलगे, आप्त-इष्ट, मित्र व सर्व सैन्ये यांसह ठार झालास ! तुझ्याच दुष्कृत्यामुळे वीर भीष्मद्रोण मारले गेले; आणि तुझ्या मताप्रमाणें वागणारा कर्णही तुझ्याचमुळे रणांत पडला ! मदा, मी याचना करीत असतां तूं लोभामुळे व शकुनीच्या बुद्धीनें पांडवांस त्यांचें स्वतःचें राज्य व वडिलार्जित राज्याचा हिस्सा दिला नाही ! तूं भीमसेनाला विष चारलेंस आणि सर्व पांडवांना त्यांच्या मातेसह जतु-गृहांत जाळण्याचा प्रयत्न केलास ! हे सुदु-र्मते, घृताचे वेळीं रजम्बला द्रौपदीस तूं जेव्हां भरसभेंत ओढलेंस, तेव्हांच, दुष्टां निलज्जा, तुला ठार करावयास पाहिजे होतें ! धर्म-राजास अज्ञान नमतां त्यास अक्षपटु शकुनी-कडून कपटानें जिंकिलेंस, यामाठीं तुला युद्धांत मारिलें ! पांडव वनांत तूणचिद्रूच्या आश्रमांत रहात असतां, ते सृगयेस गेल्यावर पापी जय-द्रथानें द्रौपदीस क्लेश दिले आणि एकट्या बाल अभिमन्यूस तुझ्या दोषांमुळे बहुतांनीं रणांत मारिलें, म्हणून तुझा वध कला ! नीं जीं अकार्ये आम्हीं केलीं म्हणून म्हणतोस, तीं तीं सर्व तुझ्या अत्यंत नीचपणामुळेच आह्मांस करणें प्राप्त झालें. अर्थात् तें सर्व तुझ्या दोषांनींच घडवून आणलें ! उशना वृहस्पतीचा उपदेश त्वां ऐकिला नाही. वृद्धांचा मन्मान ठेविला नाही, व त्यांचें योग्य सांगणेंही मानिलें नाही ! तुला अत्यंत

बलवान् अशा लोभाने व तृष्णेनें ग्रासलें होतें; म्हणून तूं पुष्कळ वाईट कृत्ये केलीस, त्यांचें आतां फळ भोग ! ”

यावर दुर्योधनानें उत्तर दिलें:—मी अन्ध-यन केलें आहे, विधिपूर्वक दानधर्म केला आहे, समुद्रवलयंकित पृथ्वीवर अधिकार गाजवीत होतो, आणि शत्रूच्या मस्तकावर पाय दिला होता ! अशा माझ्याहून उत्तम प्रकारें मरणारा कोण आहे ? स्वधर्माने वागणाऱ्या क्षत्रियांना इष्ट असें हें युद्धांत मरण मला प्राप्त झालें आहे; याहून उत्तम प्रकारें मरणारा कोण आहे ? राजांसही दुर्लभ असे मनुष्यलोकाचे व केवळ देवांस योग्य असेही सर्व भोग आणि उत्कृष्ट ऐश्वर्य मी उपभोगिलें; त्या मजहून उत्तम प्रकारचें मरण कोणाला प्राप्त होणार आहे ? अच्युता, मी तर आपले इष्टमित्र व सर्व चाकरनोकर यांसुद्धां स्वर्गास जाणार ! विफल-मनोरथ झालेले तुम्ही खुशाल येथें रडत रहा !

संजय सांगतो:—राजा, धीमान् कुरु-राजाचें हें निधनकालचें भाषण होताच त्यावर पुण्यगंधी पुष्पांची फारच मोठी वृष्टि झाली ! गंधर्व अति मनोहर वाद्यें वाजवूं लागले ! अप्सरा त्या राजाचें उत्कृष्ट यश गाऊं लागल्या ! आणि, राजेंद्रा, सिद्धही त्यास “ उत्तम उत्तम ” असें म्हणूं लागले ! पुण्यगंधानें युक्त व सुखकारक असा वारा झुळझुळ वाहूं लागला ! दिशा प्रसन्न झाल्या ! आणि आकाशा स्वच्छ होऊन वैदूर्यरत्नासारखें झळकूं लागलें !

राजा, ह्या अत्यंत अद्भुत गोष्टी व सुयोधनाची देवांनीं केलेली स्तुति पाहून ते वासुदेवपुरोगम सर्व पांडव लज्जित झाले ! आणि भीष्म, द्रोण, कर्ण व तसाच भूरिश्रवा अध-मर्मानें मारला गेला, हें ऐकून ते शोकार्त होऊन त्यांबद्दल शोक करूं लागले. याप्रमाणें पांडव दीन होत्साते चिंता करीत आहेत असें पाहून,

मेघ किंवा दुंदुभि यांसारख्या आवाजाचा कृष्ण त्यांस म्हणाला, “ पांडवहो, हा अति जल-अखें सोडणारा दुर्योधन आणि ते सर्व महा-पराक्रमी महारथी समरांगणांत सरळ युद्धांत तुम्हांकडून मारले जाणें केवळ अशक्य होतें या दुर्योधन राजाला धर्मयुद्धानें मारणें मुळीं शक्य नव्हतें; आणि तसेच ते भीष्मप्रभृती सर्व महाधनुर्धर महारथी तुम्हांस केवळ अजिक होते. यामाठीच मी वारंवार अनेक युक्ति प्रयुक्ति योजून नानाउपायांनीं तुमच्या हिता-त्या सर्वांचा रणांत वध करविला. जर रणांत अस हा कुटिलमार्ग मी अंगीकारिला नसता, तर तुमचा विजय कोठून होता ? आणि मग तुम्हांस राज-व धन तरी कोठचें मिळालें असतें ? भीष्मप्रभृति चारही महात्मे या लोकांचे अतिर-होते ! लोकपाल जरी खालीं उतरते, तरी धर्म युद्धानें त्यांस मारण्यास समर्थ न होते ! म-तुमची काय कथा ? तसाच हा कधीही दमणारा गदाधारी दुर्योधन—याला प्रत्यक्ष दं-धारी यमाच्यानेंही धर्मयुद्धांत जिंकवेलें नसतें या शत्रूस असें मारविलें ही गोष्ट तुमचा मनास लागून राहाण्याचें कांहीं कारण नाह तुम्ही हें मनांत आणूच नका. शत्रु पुष्कळ अधिक बलवान् असले म्हणजे ते अश-उपायांनीं मारावे लागतात ! असुरांस मारणा-देवांपासून हा असाच मार्ग चालत आ-आहे, आणि याच संतसंमत मार्गानें चालतात. चला, आपण कृतकृत्य झाले संख्याकाळही झाला आहे, तेव्हां आतां आ-शिबिरास जाऊं आणि नृपहो, घोडे, ह-व रथ यांसुद्धां आपण सर्वजण विश्रान्ति घेऊं. हे भरतर्षभा, वासुदेवाचें भाषण ऐ-तेव्हां पांडवांसह पांचालास अतिशय हर्ष झ-सिंहांच्या कळपांत गर्जना चालाव्या त-प्रमाणें ते गर्जना करूं लागले; आणि दुर्यो



अनेन महामत्या. "मोविदा. हे भगवन्. हा मय अस्तीवांचून कमा
 अद्या या ... मन्थारव पृष्ठ १३५

मेलला पाहून आनंदित झालेल्या त्या लोकांनी मग शंख वाजविले, व माघवानेही पांचजन्य फुंकला !

अध्याय बासष्टावा.

—:०:—

अर्जुनरथज्वलन !

संजय सांगतो:—मग, राजा, हर्षभरित झालेले ते सर्व दीर्घबाहु वीर शंख वाजवीत राजाच्या शिबिरास जाऊं लागले. हे पृथ्वीपते, पांडव आपल्या शिबिराकडे येत असतां महाधनुर्धर युयुत्सु व सान्याकि त्यांचे मागून चालले होते; पण धृष्टद्युम्न, शिखंडी, सर्व द्रौपदीपुत्र आणि इतर सारे वीर इकडे न येतां ते आपल्या शिबिरास गेले. मग, राजा, जेथील मगर बाहेर काढला आहे अशा डोहाप्रमाणें निर्भय, उत्सव बंद पडलेल्या नगराप्रमाणें उदास, प्रेक्षक निघून गेलेल्या रंगभूमीप्रमाणें भयाण, आणि निस्तेज व राजहीन अशा दुर्योधनाच्या गोटांत पांडव येऊन पोचले. त्या वेळीं तेथें स्त्रिया व बंडूच मरुयत्वे होते आणि कांहीं वृद्ध मंत्री होते. राजा, पांडव तेथें जातांच, दुर्योधनापुढें चालणारे बंदिजन हात जोडून त्यांच्या सेवेस सादर झाले. हे महाराजा, आंत जातांच रथिश्रेष्ठ पांडव आपआपल्या रथांखालीं उतरले. मग गांडीवधारी पार्थाचें प्रिय व हित करण्यास अतिशय झटणारा कृष्ण त्यास म्हणाला, “हे निष्पापा पार्था, आपलें गांडीव धनुष्य व अक्षय्य असे हे दोन मोठे भाते रथाखालीं काढ, म्हणजे मग मी खालीं उतरेन, हे भरतसत्तमा, तूंही आधींच खालीं उतर. तेंच तुला हितावह आहे.” राजा, तेव्हां पांडुपुत्र वीर धनंजयांनं तसें केलें; आणि मग बुद्धिमान् श्रीकृष्णही घोड्यांचे लगाम सोडून देऊन अर्जुनाच्या रथाखालीं उतरला.

राजा, तो घोर महात्मा भूतनाथ श्रीहरि खालीं उतरतांच पार्थाच्या ध्वजावरील हनुमान् गुप्त झाला; तों लोच द्रोण व कर्ण यांनी दिव्य अस्त्रांनी दग्ध केलेल तो रथ अग्नीवाचूनच एकदम पेटला ! आणि, राजा, भाता, घोडे, लगाम, जूं व दांड्या यांसुद्धां तो अर्जुनाचा रथ सर्व भस्म होऊन जमिनीवर पडला ! हे प्रभो, याप्रमाणें तो रथ भस्म झालेला पाहून पांडव विस्मित झाले; आणि, राजा कृष्णापुढें साष्टांग प्रणिपात करून व हात जोडून अर्जुन विनयपूर्वक असें म्हणाला, “गोविंदा, हे भगवन्, हा रथ अग्नीवाचून कसा जळला ? हे महानाहो, हें मोठें आश्चर्य कसें घडलें तें मला ऐकण्यायोग्य आहे असें तुला वाटल्यास सांग. मला ऐकण्याची उत्कंठा लागली आहे.”

वासुदेव म्हणाला:—अर्जुना, बहुविध अस्त्रांच्या योगानें हा रथ पूर्वीच दग्ध झाला होता. परंतु, हे परंतपा, मी वर बसलों असल्यामुळें रणांतच हा नाश पावला नाहीं. सांप्रत, हे कौंतिया, तूं कृतकार्य झालास, तेव्हां मी खालीं उतरलों; आणि मी खालीं उतरतांच हा ब्रह्मास्त्रतेजानें दग्ध झालेला रथ नाश पावला !” मग किंचित् हंमून व युधिष्ठिर राजास आलिंगन देऊन तो शत्रुनाशक भगवान् केशव म्हणाला, “हे कुंतिपुत्रा, सुदेवानें तुझा जयजयकार होत आहे; थोर पूर्वपुण्याईमुळेंच तुझे शत्रु जिंकिले गेले; आणि त्याचप्रमाणें, राजा, गांडीवधारी अर्जुन, भीमसेन, तूं आणि उभय माद्रीपुत्र हे तुम्ही सर्वजण खुशाल आहां, हें तरी तुमचें मोठें सुदेवच समजलें पाहिजे. तुम्ही एकदांचे वीरांच्या भयंकर संहारांतून निःशत्रु होतसाते सुखरूप राहिलां ! आतां, हे भारता, यापुढील प्राप्त कार्यें सत्वर कर. मी पूर्वी अर्जुनाबरोबर उपप्लव्यास येत असतां मजपुढें तूं मधुपर्क घेऊन आलास, तेव्हां तूं म्हणाला होतास कीं, ‘कृष्णा,

हा माझा भाऊ अर्जुन तुझा मित्र आहे. हे प्रभो, हे महानाहो, सर्व आपत्तीतून त्वां याचें रक्षण केलें पाहिजे. ' असें तूं म्हणालास, तेव्हां मी ' ठीक आहे ' असें म्हटलें होतें. त्याप्रमाणें, हे जनेश्वरा, मी विजयी सत्यसाचीचें संरक्षण केलें. राजेंद्रा, तो शूर व सत्यपराक्रमी वीर आपल्या भावांसहवर्तमान या अंगावर शहारे आणणाऱ्या व वीरांची सारखी कत्तल उडविणाऱ्या घोर संग्रामांतून मुक्त झाला आहे ! ”

धृतराष्ट्रा, धर्मराज युधिष्ठिराला कृष्ण असें म्हणाला असतां त्याचे अंगावर हर्षानें रोमांच उभे राहून त्यानें जनार्दनास प्रत्युत्तर केलें. धर्मराज म्हणाला, “ हे अरिमर्दना, द्रोण व कर्ण यांनीं सोडलेलें ब्रह्मास्त्र तुझ्याशिवाय दुसऱ्या कोणास सहन होणार आहे ? साक्षात् वज्रधारी इंद्राचीही तें सोसण्याची प्राज्ञा नाही. कृष्णा, तुझ्याच प्रसादानें संशयकण जिकिले गेले. महारणांत शिरल्यावर पार्थ पराङ्मुख झाला नाही तो तुझ्याचमुळ ! तसेंच, हे महाबाहो, मी देखील अनेक निरनिराळ्या प्रसंगांतून व अनेक पराक्रमी लोकांच्या कचाट्यांतून तुझ्याच प्रसादानें मुक्त झालों ! उपप्लव्यांत कृष्ण-द्वैपायन महर्षि मला म्हणाले, जेथें धर्म असेल तेथें कृष्ण असतो व कृष्ण असेल तेथें जय असतो ! ”

वासुदेवप्रेषण.

धृतराष्ट्रा, इतकें बोलणें झाल्यावर ते वीर तुझ्या (दुर्योधनाच्या) शिबिरांत शिरले. तेव्हां भांडागारांतील रत्नादिकांच्या राशी त्यांचे हस्तगत झाल्या. त्याचप्रमाणें सोनें, रुपें, रत्नें, मोतीं, उंची उंची अलंकार, शालजोड्या व चर्म-वस्त्रें, असंख्यात दासदासी आणि राज्योपयोगी इतर सामान त्यांस मिळालें. याप्रमाणें, हे भरतर्षभा, कधीही संपणार नाही इतकें विपुल द्रव्य त्यांचे ताब्यांत येतांच, ते महाभाग्यवान् विजयी वीर हर्षानें आरोळ्या देऊं लागले.

राजेंद्रा, याप्रमाणें फार हर्षित होऊन त्या वीरांनीं घोडे सोडले, आणि सर्व पांडव व सात्याकि खालीं उतरून वारंवार तेथें द्रव्याजवळ उभे राहिले. हे महाराजा, मग महायशस्वी वासुदेव त्यांस म्हणाला, ‘ मंगल (इष्ट) हेतूसाठीं आपण शिबिराच्या बाहेरच राहिलें पाहिजे. ’ यावर ‘ ठीक आहे ’ असें म्हणून ते सर्व पांडव व सात्याकि वासुदेवासह मंगलार्थ बाहेर गेले; आणि, राजा, ज्यांचे शत्रु नष्ट झाले आहेत, असे ते पांडव पुण्यकारक व ओघयुक्त अशा नदीवर जाऊन ती रात्र तेथेंच राहिले. त्या ठिकाणीं गेल्यावर युधिष्ठिरानें पुढील कर्तव्याचा विचार केला. तो म्हणाला, “ माधवा, गांधारी क्रोधानें लाल झाली असेल; तिच्या सांत्वनार्थ तुलाच जाणें प्राप्त आहे असें मला वाटतें. हे अरिर्दमा, महेतुक, सकारण व कालानुरूप भाषणें करून तूं गांधारीस त्वरित शांत करशील. हे महाभागा, भगवान् पिता-मह व्यासही या वेळीं तेथें असतील. ”

राजा, मग धर्मानें वासुदेवास हस्तिनापुरास पाठविलें. तो प्रतापी वासुदेवही तत्काळ दारुकास रथावर बसवून त्वरेंन धृतराष्ट्राकडे जावयाम निघाला. शैब्य व सुग्रीव हे ज्याचे घोडे आहेत, अशा त्या निघालेल्या श्रीकृष्णास पांडव म्हणाले, “ कीर्तिमती गांधारीचे पुत्र मेले असल्यामुळें तिला फार शोक झाला असेल; यासाठीं तूं तिचें उत्तम सांत्वन कर. ” पांडवांनीं असें म्हटल्यावर त्या सात्वतश्रेष्ठानें हस्तिनापुराकडे प्रयाण केलें; आणि मग तो लवकरच हतपुत्रा गांधारीसमीप येऊन पोंचला.

अध्याय त्रेसष्टावा.

—:—

धृतराष्ट्र व गांधारी यांचें सांत्वन.

जनमेजय विचारितोः—द्विजश्रेष्ठा, धर्म-

राज युधिष्ठिरानें परंतप वासुदेवाला गांधारीकडे कशासाठी पाठविलें ? पूर्वी कौरवांशी साम करण्यास कृष्ण गेला होता; परंतु त्याचा तो मनोरथ सिद्धीस गेला नाही आणि मग हें युद्ध झालें. आतां सर्व योद्धे मरून गेले, दुर्योधनही निघत पावला, पृथ्वी युद्धांत निःसपत्न होऊन पांडवांस प्राप्त झाली, कौरवांच्या सेनेची पळापळ होऊन त्यांचें शिबिरही ओम पडलें, आणि पांडवांस उत्तम प्रकारचें यश प्राप्त झालें ! अशा वेळीं, हे ब्रह्मन्, कृष्ण पुनः तिकडे गेला याचें कारण मला सांगा. ज्यापेक्षां ब्रह्मांडनायक जनार्दन स्वतः गेला, त्यापेक्षां तें कारण यःकश्चित् नसावें, असें मला वाटतें. यामाठी, हे अश्वर्यु-मत्तमा, 'कृष्णानेच तिकडे जावें,' असें जे ठरलें त्याचें काय कारण, तें मला तत्त्वतः स्पष्ट करून सांगा.

वैशंपायन सांगतातः—राजा, तूं मला विचारतोम हा प्रश्न तुला येणें युक्त आहे. हे भरतर्षभा, मी तुला तें सर्व नीट सांगतां, ऐक. राजा, भीमसेनानें रणांत आर्षी केलेल्या उठावाचें उलंघन करून महाबली दुर्योधनास मारिलें, आणि विशेषकरून गदायुद्धांत अन्यायानें मारिलें हें पाहून. हे महाराजा, युधिष्ठिराम तेव्हां मोठें भय पडलें आणि महाभागा गांधारीविषयी त्यास चिंता लागली. तो मनांत म्हणाला, त्या तपस्विनीचें तप मोठें उग्र आहे. तेंणेंकरून ती त्रैलोक्यही दग्ध करूं शकेल. मग आमची काय कथा ! राजा, अशी चिंता करीत अमतां त्याचे मनांत आलें कीं, 'क्रोधानें लाल झालेल्या गांधारीचें आर्षी व सांत्वन झालें पाहिजे. आर्षी अशा प्रकारें पुत्रवध केला हें ऐकून ती संतप्त होईल; आणि अशा वेळीं आम्ही तिचे पुढें गेलों तर तत्काळ मानसिक अग्नीं ती आमचें भस्म करील. सरळ युद्ध करणाऱ्या आपल्या पुत्रास

(दुर्योधनास) केवळ कपटानें मारिल्याचें ऐकून तें तीव्र दुःख गांधारीस कसे सहन होईल ?' राजा, भय व शोक यांनी युक्त होऊन धर्मराजानें याप्रमाणें पुष्कळ चिंतन केलें आणि मग तो वासुदेवास म्हणाला, "गोविंदा, हें राज्य मिळविण्याची गोष्ट मनांतही आणणें केवळ दुर्धर होतें; परंतु, हे अच्युता, तुझ्या प्रसादानें तें आह्मांस निष्कण्टक असें प्राप्त झालें ! हे महाबाहो यादवनंदना, प्रत्यक्ष माझ्या देखत तूं अंगावर शहारे आणणाऱ्या घोर युद्धांत फारच मोठा संहार उडविलाम ! पूर्वी देव व अमुर यांचे युद्धप्रमंगी देवशत्रूंच्या वधार्थ तूं जसें देवांस साह्य केलें व अमुरांस मारिलेंस, त्याचप्रमाणें, हे महाबाहो अच्युता, तूं आह्मांस साह्य दिलेंस. हे वाष्ण्या, स्वतः सारथ्य करून तूं आमचें रक्षण केलेंस. जर महायुद्धांत अर्जुनाचा तूं पाठीराखा नसतास, तर तो बलार्णव शत्रूस जिंकण्यास कसा समर्थ होता ? कृष्णा, पुष्कळ गदाप्रहार, परिचांचे तडाके, आणि परशु, मिदिपाल, तोमर, शक्ति इत्यादि शस्त्रांचे प्रहार तुला केवळ आमचेमाठी सोमावे लागले ! पुष्कळ कठोर भाषणें ऐकून घ्यावीं लागलीं ! आणि केवळ वज्रासारखे तीव्र असे शस्त्रपात रणांत म्हण करावे लागले ! हे अच्युता, दुर्योधन मेला तेव्हां या सर्वांचें साफल्य झालें आहे; परंतु, कृष्णा, जेणेंकरून हें सर्व फुकट जाणार नाही, अशी तजवीज आतां कर ! कृष्णा, आपला विजय झाला खरा, पण माझे चित्त अद्याप संशयानें हेळकावे खात आहे ! हे महाबाहो माधवा. गांधारीचा कोप कसा काय आहे, हें मनांत आण. ती महाभागा नित्य उग्र तपश्चर्येनें आपला देह झिजवीत आली आहे. तिनें पुत्रपौत्रांचा वध झाल्याचें ऐकिलें म्हणजे आम्हांस ती जाळून भस्म करील हें निश्चित होय !

यास्तव, हे वीरा, तिला आधी प्रसन्न केले पाहिजे, असें मला वाटते. हे पुरुषोत्तमा, पुत्रशोकाने दुःखित झालेल्या व क्रोधाने लाल झालेल्या तिज-कडे पाहाण्यास तुजवांचून दुसरा कोण समर्थ आहे ? यास्तव, हे पुरुषोत्तमा माधवा, क्रोधाने लाल झालेल्या गांधारीचे सांत्वन करण्यास तूच तेथे जावेस, हे मला बरे दिसते ! हे अरिंदमा, देवा, तू लोकांचा कर्ताकरविता असून प्रभव व अव्यय आहेस. तू हेतु व कारणे दाखवून आणि कालानुरूप भाषण करून गांधारीला तेव्हांच शांत करशील. भगवान् पितामह व्यासही या वेळीं तेथे असतील. हे सात्वतश्रेष्ठा, तू पांडवांचे हित पाहाणारा आहेस; तेव्हां त्वां गांधारीचा राग पार नाहीसा करून टाकावा ! ”

धर्मराजाचे हे भाषण ऐकून यदुमुख्य कृष्णाने दारुकास हाक मारून रथ सज्ज करण्यास सांगितले. त्याच्या आज्ञेप्रमाणे दारुकाने लग्नागाने रथ तयार करून त्याविषयी महात्म्या केशवास वर्दी दिली. मग त्या रथांत बसून शत्रुतापन यादवराजप्रभु केशव त्वरेने हस्तिनापुरास गेला. मग, हे महाराजा, रथांत बसलेला तो भगवान् माधव हस्तिनापुरास पोचून रथघोषाने नगर दणाणवीत आंत शिरला; तेव्हां धृतराष्ट्रासही तो आल्याचे समजले. इतक्यांत कृष्ण त्या उत्तम रथांतून उतरून धृतराष्ट्राचे राजवाड्यांत शिरला, तो कृष्णद्वैपायन मुनि तेथे आधीच येऊन बसलेले त्याने पाहिले. मग आंत जातांच जनार्दमाने व्यासांचे व धृतराष्ट्राचे पाय धरले आणि विलकूल न गडबडतां गांधारीसही अभिवंदन केले. राजा, लोच त्या यादवश्रेष्ठ अशोकाने धृतराष्ट्राचा हात धरून मोठ्याने रडण्यास सुरुवात केली. याप्रमाणे सुमारे दोन घटकांपर्यंत सारखा शोक करून आसवे गाळल्यावर मग त्याने डोळे पाण्याने

धुऊन चूळ वगैरे भरली; आणि मग धृतराष्ट्रास तो प्रस्तुत-प्रसंगानुरूप असें म्हणाला, “हे भारता, तू वृद्ध आहेस; तुला सर्व कांहीं कळतच आहे. प्रभो, काळाचे खेळ सर्व तुला विदित आहेत. हे भारता, तुझ्या मनाप्रमाणे वागणाऱ्या सर्व पांडवांनी कुलक्षय व क्षत्रियांचा उच्छेद होऊं नये म्हणून पुष्कळ खटपट केली. धर्मवत्सल धर्मराजाने आपल्या भावांस शपथ घालून सर्वांची क्षमा केली; आणि द्यूतांत कपटाने जिंकिले गेलेल्या त्या पुण्यशील भ्रात्यांसह वनवास पतकरला. नानाप्रकारचे वेप धारण करून त्यांनी अज्ञातवास कंठिला आणि दुसरेही पुष्कळ क्लेश नित्य सोसेले;—जणू त्यांस प्रतिकाराचे सामर्थ्य नव्हतेच ! पुढे युद्धाची वेळ आली असतां मी स्वतः येऊन तुजपाशीं सर्व लोकांच्या समक्ष पांच गांव मागितले; परंतु “ बुद्धिः कालानुसारिणी ” म्हणतात तशी गत होऊन तुम्हीं लोभा-मुळे तितके देखील सोडले नाहीत ! राजा, तुझ्या अपराधामुळे सर्व क्षात्रकुलाचा क्षय झाला. भीष्म, सोमदत्त, वाल्हीक, कृपाचार्य, द्रोण व त्यांचा पुत्र आणि धीमान् विदुर यांनी नित्य साम करण्याविषयी तुझी प्रार्थना केली; परंतु त्वां तसें केले नाही. हे भारता, तू तरी काय करशील ! कालानुरूप बुद्धि होऊन मर्वास मोह पडत असतो ! अरे, तुझ्यासारख्या शहाण्याने एवढ्या मोठ्या दळदळीत गोष्टीत मूढपणा केला; तेव्हां हा कालयोगच, दुसरे काय ? बाबारे, हे अगतिक प्राक्तन बरे ! राजा, तू मोठा ज्ञानी आहेस; झाल्या गोष्टींचे खापर पांडवांवर उगाच फोडूं नको. खरोखर, हे परंतपा, महाभाग पांडवांचे वर्तन धर्म, नीति व स्नेह यांपासून लवमात्र देखील चळलेले नाही. आतां झाले हे केवळ तुझ्या दोषांचे फळ आहे असें जाण; आणि, धृतराष्ट्रा, पांडवांची अमृता करूं नको;

तें तुला योग्य नाही. पांडव हे तुझ्या कुळांतले, एका वंशांतले व एका पिंडाचे आहेत, हें मनांत आण. तमेंच तुझ्या पुत्राच्या कृतीचें व गांधारी आणि तूं यांच्या चुकीचें फळ पांडवांच्या माथीं आलें आहे. हेंही लक्षांत घे. हे कुरुशार्दूला. पांडवांस नसता दोष लावून तूं व कीर्तिमती गांधारी शोक करूं नका. हा सर्व आपल्या चुकीचा परिणाम आहे हें ध्यानांत वागवून. हे भरतर्षभा, तूं पांडवांकडे कृपादृष्टीनें पहा. मी तुझ्या पायां पडतों ! हे महाबाहो. धर्मराजाचा स्वाभाविकच तुजकडे किती ओढा आहे आणि तुजवर त्याची किती भक्ति आहे हें तूं जाण-तोमच. अपकारक शत्रूंचाही संहार करून त्यास ममाधान वाटलें नाही. इतकेंच नव्हे. तर तो अहर्निश दुःखानें जळत आहे. त्याला मुळींच सुख वाटत नाही ! तमेंच. हे नरशार्दूला. तुज-विषयी व यशस्विनी गांधारीविषयी त्याचे मनाला एकमारखी तळमळ लागली अमल्या-मुळें त्याला शांति कशी ती मुळींच मिलत नाही. पुत्रशोकानें मंतस झालेल्या व मन आणि बुद्धि व्याकृळ झालेल्या तुजकडे यांचें अमें त्यास फार वाटतें; परंतु तो अत्यंत लज्जायमान झाला अमल्यामुळें त्याच्यानें येवत नाही ! ”

हे महाराजा. याप्रमाणें धृतराष्ट्राशी बोलून त्या यादवराजानें शोकविह्वल गांधारी-जवळही उत्तम भाषण केलें. तो म्हणाला. “ हे सुबलकन्ये, मी काय म्हणतों तें चित्त स्थिर करून नीट ऐकून घे. हे शुभे. तुझ्या-सारखी सीमंतिनी (स्त्री) आज या जगांत नाही. हे राज्ञि. सभेमध्ये माझ्या समक्ष तूं उभयपक्षांस हितकारक व धर्मार्थयुक्त असं भाषण केलेंस, तें तुला आठवत असेलच. तूं चांगला उपदेश केलास, परंतु तुझ्या मुळांनीं

तमें वर्तन केलें नाही. जयार्थी दुर्योधनास तूं अमेंही रागानें म्हणालीस की, ‘ मूर्खा. माझे भाषण ऐक. जिकडे धर्म निकडेच जय व्हाव-याचा, हें लक्षांत ठेव. ’ हे नृपात्मजे. तुझे तेंच वाक्य हें मांप्रत प्रत्ययाम आलें आहे अमें जाणून. हे कल्याणि, तूं शोक करूं नको. पांड-वांचा विनाश करण्याचें तुझ्या बुद्धीत कदापि न यावें. हे महाभागे. पांडवांची कथा काय, पण ही सचराचर सर्व पृथ्वी केवळ क्रोधानें लाल झालेल्या एका दृष्टिपाताबरोबर दग्ध कर-ण्याचें मामर्श्य तपोव्रताच्या योगानें तुझ्या अंगी आहे. परंतु विवेक कर व पांडवांवर व्यर्थ आग पाववूं नको ! ”

वामुदेवाचें भाषण ऐकून गांधारी म्हणाली. “ हे महाबाहो केशवा. तूं म्हणतोस त्याप्रमाणेंच मानमिक दुःखांनीं दग्ध होणाऱ्या माझी बुद्धि चळली होती; परंतु. जनार्दना. तुझे भाषण ऐकून ती ताळ्यावर आली. केशवा. आतां या पुत्रहीन. वृद्ध व अंध राजाला. हे नरश्रेष्ठा. तूं व पांडववीर हेच आधार आहां ! ”

इतकें बोलतांच तिला रड्याचा हुंदका आला आणि पुत्रशोकानें व्याप्त झालेली ती तोंडाम पदर लावून मोठ्यानें रडूं लागली. मग शोकानें विह्वल झालेल्या त्या गांधारीचें केश-वानें कार्यकारणयुक्त भाषणांनीं ममाधान केलें. याप्रमाणें. राजेंद्रा. तो धृतराष्ट्र व गांधारी यांचें सांत्वन करीत आहे तोंच त्याला अश्वत्थाम्यानें ठरविलेल्या बेतानें स्मरण झालें. तेव्हां तो त्वरित उठला व व्यासांचे पायांवर मस्तक ठेवून धृतराष्ट्रास म्हणाला. “ हे कुरुश्रेष्ठा. मी तुझी अनुज्ञा मागतों. तूं मुळींच शोक करूं नको. अश्वत्थाम्याचा कांहीं दुष्ट बेत आहे. त्यामुळें मी एकदम उठलों. पांडवांचा रात्रीं वध करण्याविषयीं विचार त्यानें व्यक्त

केल होता ! ” हे ऐकून गांधारी व महाबाहु धृतराष्ट्र ही एकदम म्हणाली, “ हे केशिसूदना केशवा, जा, जा लवकर व पांडवांचें रक्षण कर. जनार्दना, तुला पुनः इकडे त्वरित येतां येईल ! ”

मग तो अच्युत दारुकासहवर्तमान त्वरेनें निघून गेला. राजा, वामुदेव गेल्यावर ज्यांस सर्व लोक वंदन करितात त्या महात्म्या व्यासांनीं धृतराष्ट्र राजाचें आश्वासन केलें. इकडे धर्मशील वामुदेवही कृतकृत्य होत्साता पांडवांस भेटण्यासाठीं हस्तिनापुराहून शिबिराकडे निघाला, तो रातोरात गोटास येऊन पांडवांकडे गेला; आणि झालेलें वर्तमान त्यांस सांगून त्यांसह दक्षतेनें राहिला.

अध्याय चौसठावा.

—:०:—

दुर्योधनाचा विलाप !

धृतराष्ट्र विचारितो:—संजया, शत्रूनें मस्तकावर पाय दिलेला व मांड्या मोडून जमिनीवर पडलेला माझा शौर्याभिमानी पुत्र तेव्हां काय म्हणाला ! राजा दुर्योधन अत्यंत कोपी अमन पांडवांशीं त्याचें हाडवैर होतें. तो हें प्राणसंकट आल्यावर महारणांगणांत काय बोलला बरें ?

संजय सांगतो:—राजा, हे नराधिपा, झालेला प्रकार मी जमाच्या तसा मांगतो. मांड्या मोडून तें संकट प्राप्त झालें असतां राजा दुर्योधन जें बोलला तें श्रवण कर. राजा, ज्याच्या मांड्यांचे पार तुकडे झाले आहेत, व अंग धुळीनें माखलें आहे, अशा त्या दुर्योधनानें तेंथें केंस आवळतां आवळतां सभोंवार गरगर दृष्टि फेंकली आणि मोठ्या प्रयासानें केंस आवरून सर्पाप्रमाणें मुसकारे टाकीत त्वेषामुळे अश्रुपूर्ण झालेल्या नेत्रांनीं मजकडे पाहिलें. इतक्यांत एकदम अत्यंत माज चढलेल्या हत्ती-

प्रमाणें बेफाम होऊन त्यानें दोन्ही हात जमिनीवर चोळले ! आणि दीर्घ निःश्वास सोडून तो आपले विस्कलित झालेले केंस हालवीत, दांतओंठ चावीत व ज्येष्ठ पांडव जो धर्मराज त्याची निर्भर्त्सना करीत म्हणाला, “ शांतनव भीष्म, शस्त्रधरांत अग्रेसर असा कर्ण, गौतम, शकुनि, प्रत्यक्ष अस्त्रधराग्रणी द्रोणाचार्य, तसाच अध्वत्यामा, शल्य आणि शूर कृतवर्मा हे माझे पाठीराखे असतांना मला ही स्थिति प्राप्त झाली, त्यापेक्षां कालाचा महिमा अगाध आहे ! काल खरोग्वर दुरतिक्रम होय ! ज्याच्या पदरीं अकरा असौहिणी सैन्य होतें. त्या माझीच आज अशी दशा झाली ! तेव्हां, हे महाबाहो, काल प्राप्त झाला असतां कोणामही त्याचें अतिक्रमण करतां यावयाचें नाहीं हेंच खरें ! अमो; या युद्धांतून माझ्याकडील जे कोणी जिवंत राहिले असतील त्यांस, भीमसेनानें प्रतिज्ञा मोडून मला कसें मारलें हें सांग. खरोग्वर पांडवांनीं भूरिश्रवा, कर्ण, भीष्म, श्रीमान् द्रोणाचार्य, इत्यादिकांसंबंधी पुष्कळच राक्षसी कृत्ये केलीं; त्यांतलेंच आजचें हें एक दुष्कीर्तिकारक कृत्य त्या नराधमांनीं केलें ! त्याच्या योगानें मज्जनांच्या सभेत त्यांचा धिक्कारच होईल अशी माझी बुद्धि मला सांगते ! जो खरा सत्वशील अमेल. त्याम अशा कपटानें मिळविलेल्या जयाबद्दल काय प्रेम वाटणार आहे ? अथवा कोणता ज्ञाता करार मोडणाराम चांगलें म्हणणार आहे ? ज्याप्रमाणें पापी पांडुपुत्र वृकोदरास सांप्रत हर्ष झाला आहे, त्याप्रमाणें कोणता पंडित अधर्मानें जय मिळवून हर्ष पावेल बरें ? आज मी मांड्या मोडून पडलों असतां माझे प्रत्यक्ष आपल्या भावाचें—कातीनें झळकणारें व देदीप्यमान मस्तक क्रुद्ध भीमसेनानें पायानें

तुडविलें, याहून चमत्कारिक कृत्य काय आहे ? संजया, विशेष आश्चर्य हें की, अशा प्रकारचें नीच कृत्य करणारा जो पुरुष त्याचा येथें जयजयकार झाला ! माझी माता व पिता युद्धधर्म चांगले जाणतात. संजया, त्या दुःखातीना तूं माझ्या वचनावरून अमें सांग की, मी यजन केलें, आश्रितांचें उत्तम भरण केलें, समुद्रवलयंकित पृथ्वीवर अधिकार गाजविला, आणि शत्रु जिवंत-चांगले धेट्टे-कट्टे-अमतांना त्यांचे मस्तकावर उभा राहिलों. मी यथाशक्ति दानधर्म केला. मित्रांचें प्रिय केलें, आणि सर्व शत्रूंम दे माय धरणी ठाय करून सोडलें ! अशा प्रकारें सर्व ऐहिक कृत्यें उत्कृष्ट पार पाडल्यानंतर मला मरण आलें, त्यापेक्षां मजहून उत्तम मरण कोणाम येणार आहे ? मी सर्व बांधवांचा चांगला मानमरातव ठेविला, आज्ञांकित राहाणारांची चांगली संभावना केली, आणि त्रिविध पुरुषार्थांचें-धर्म, अर्थ व काम यांचें-उत्तम सेवन केलें. तेव्हां मजहून अधिक चांगलें मरण कोणाम प्राप्त होणार आहे ? मोठमोठे राजे-महाराजे यांज-वर मी हुकूम बजावले, अत्या दुर्लभ अमा मान मिळविला, आणि उत्तम जातिवंत (अजानेय) अध्यांच्या वाहनांतून हिंडलों; तेव्हां मजहून उत्तम स्थितींत मरणारा कोण आहे ? मी परराष्ट्रें पादाक्रांत केली, राजांकडून दासाप्रमाणें सेवा घेतली, आणि प्रिय मित्रांचें उत्तम कोड पुरविलें ! अशा मजपेक्षां उत्तम मरण कोणाम मिळणार आहे ? मी अव्ययन केलें, विधिपूर्वक दानधर्म केला, निरोगी आयुष्य संपादिलें आणि स्वधर्मानें जग जिंकिलें; तेव्हां आज मजपेक्षां उत्तम प्रकारें मरणारा अमा कोण असणार आहे ? सुदैवानें मी समरांत जिंकिला जाऊन शत्रूंचा गुलाम होऊन राहिलों

नाहीं; आणि मेल्यावरही मला माझ्या घोर दैवानें अन्य लोकचें विपुल ऐश्वर्य मिळेल ! स्वधर्मानें वागणाऱ्या क्षत्रियांम जें इष्ट तेंच (युद्धांत मन्मुख) मरण मला प्राप्त झालें; मजहून उत्कृष्ट स्थितींत मरणारा कोण आहे ? एखाद्या सामान्य मनुष्याप्रमाणें मी जिंकिला जाऊन वेर सोडून शत्रूपुढें लाळ घोटूं लागलों नाहीं, किंवा सुदैवानें कोणतीही दुर्बुद्धि स्वीकारून पराभव पावलों नाहीं ! निजलेल्याम किंवा बेफाम अमलेल्याम मारावें किंवा एखाद्याम विषप्रयोग करावा, त्याप्रमाणेंच ठरावाचें उल्लंघन होऊन मी अधर्मानें मारला गेलों ! महा-भाग अश्वत्थामा, मात्वत कृतवर्मा व शरद्वतीपुत्र कृपाचार्य, यांम माझा अमा निरोप मांग की, अनेक प्रकारें अधर्मांम प्रवृत्त झालेल्या व प्रतिज्ञाभंग करणाऱ्या पांडवांवर तुम्ही बिलकूल विश्राम ठेवूं नका ! "

राजा धृतराष्ट्रा, मग तुझा तो मत्यपराक्रमी पुत्र दुर्योधन राजा हेरांम म्हणाला. " भीम-सेनानें मला अधर्मानें रणांत मारिल्यामुळें द्रोण, कर्ण व शल्य, महावीर्यशाली वृषसेन, सुबल-पुत्र शकुनि, महावीर्यवान् जलसेन, राजा भग-दत्त, महाधनुर्धर सोमदत्त, सिंधुपति जयद्रथ, दुःशासनप्रभृति स्वतःच्या बरोबरीचे भाऊ, पराक्रमी दौःशामनि व लक्ष्मण तमेच दोषे पुत्र हे व दुमरे पुष्कळच हजारां आसस्वकीय यांच्या मागून मी कळपांतून मागें राहिलेल्या पांथस्थाप्रमाणें जाईन. माझी बहीण दुःशला ही भावांम व भत्यांम मारल्याचें ऐकून दुःखार्त होऊन टाहो फोडील. हाय हाय ! माझा वृद्ध पिता राजा धृतराष्ट्र व गांधारी यांचे सभोवतीं मुना व नातमुना जमल्यावर त्यांची काय अवस्था हेईल ! खरोखर ती लक्ष्मणाची माता, जिचा पुत्र व पति निघन पावला आहे अशी ती विशा-

लाक्षी कल्याणी, लवकरच दुःखानें प्राण सोडील ! वाक्पटु चावीक परिव्राजकाला हें समजेल तर तो महाभाग निश्चयानें याचा सूड उगवील ! त्रैलोक्यांत प्रख्यात अशा पवित्र समंतपंचकांत निघन पावून मी शाश्वत लोक मिळविणार खाम ! ”

मग, हे महाराजा, तेथील ते हजारों लोक राजाचे हे उद्गार ऐकून डोळ्यांतून आसवें गाळीत दशदिशांस निघून गेले. या वेळीं सागर, वनें व सर्व चराचर पदार्थ यांमुद्धां पृथ्वी कांपू लागली; ती घोर दिंभू लागली; तिजमध्ये भयंकर घरघराट होऊं लागला, आणि दिशाही उदास झाल्या. मग तेथून गेलेल्या लोकांनीं द्रोणपुत्रास गांठून गदायुद्धांत घडलेला प्रकार, राजाचा पाडाव वगैरे सर्व गोष्टी त्यास निवेदन केल्या; आणि ते सर्वजण बराच वेळ तेथेंच संचितपणें उभे राहून मग व्याकुल होत्साते आपआपल्या वाटेनें निघून गेले !

अध्याय पांसष्टावा.

—:—

अश्वत्थाम्यास सैनापत्याचा अभिषेक.

संजय सांगतो:—राजा, हेरांकडून दुर्योधन मेल्याची वार्ता ऐकून कौरवांकडील अवशिष्ट राहिलेले परंतु तीक्ष्ण बाण, गदा, तोमर, शक्ति, इत्यादिकांनीं अतिशय जखमी झालेले महारथी अश्वत्थामा, कृपाचार्य व सात्वत कृतवर्मा हे त्वरेनें घेडे पिटाळीत रणांगणांत प्राप्त झाले. तेथें, वनांत बायुवेगानें मोडून पडलेल्या मोठ्या शालवृक्षाप्रमाणें पतन पावलेला महात्मा दुर्योधन तत्रेंच दृष्टीस पडला. तो अरण्यांत व्याधानें पाडलेल्या महागजासारखा रक्तचंबाळ झाला असून जमिनीवर लोळत होता. त्याच्या अंगांतून वहाणाऱ्या रक्तानें त्यास सचेल खान झालें होतें; आणि तो अनेक प्रकारें विवळत

होता. तो धुळीनें भरलेला गर्जेद्रोपम पराक्रमी महाबाहु वीर आकाशांतून यदच्छेनें खालीं पडलेल्या सूर्यमंडलासारखा, प्रचंड वावटळीनें शुष्क केलेल्या सागरासारखा, अथवा किंचित् अन्नपटलानें आच्छादिलेल्या आकाशातील पूर्णचंद्रासारखा दिसत होता. राजा धृतराष्ट्रा, ज्याप्रमाणें धनेच्छु सेवकांचा राजेंद्राभोवतीं गराडा असतो, त्याप्रमाणें दुर्योधनाचे सभोवतीं भयंकर भुतांचे समुदाय व क्रूर धापदें जमलीं होतीं; त्याच्या भुकुटी वक्र झाल्या होत्या; रागानें डोळे विस्तीर्ण झाले होते; आणि तो घ्रायाळ पाडलेल्या वाघाप्रमाणें आंतल्या आंत जळफळत होता. जमिनीवर पडलेल्या त्या महाधनुर्धर राजास पाहातांच त्या कृपप्रभृति सर्व महारथांस एकदम भडभडून आलें; आणि ते त्याच्याजवळ जाऊन जमिनीवर बसले. नंतर हे महाराजा, ज्याचे डोळे पाण्यानें भरून आले होते, असा अश्वत्थामा सुमकारे टाकीत त्या भरतश्रेष्ठ राजराजेश्वराम म्हणाला. “ हे पुरुषन्याया, ज्यापेक्षां तूं येथें धुळीनें माखून पडला आहेस, त्यापेक्षां मनुष्यलोकींचे काहीं एक सत्य नाही हेंच खरें ! अरे, एवढा धोर राजा असून व सर्व पृथ्वीवर सत्ता गाजवून आज या निर्जन अरण्यांत तूं एकटा कसा राहिल्यास ? हे राजेंद्रा. मला येथें दुःशासन दिसत नाही; महारथी कर्ण दिसत नाही; तमेंच, हे भरतर्षभा, सदादित तुजबरोबर असणारे ते सर्व इष्टमित्रही कोठें दृष्टीस पडत नाहीत हें काय ? तूं येथें असा धुळीत लोळत पडशील असें पूर्वीं कोणाम तरी वाटलें होतें काय ? खरोखर काल्याति लोकांस समजणें सर्वथा कठीण आहे ! हा परंतप मूर्धाभिषिक्त राजाचें एकदां अग्नेसरत्व पटकावून आज येथें गवत व धूळ खात पडला आहे ! कालाचा

फेरा कसा आहे पहा ! राजा, तुम्हें तें विमल छत्र आणि चामर कोठें आहे ? तशीच, राजेंद्रा, तुम्ही ती प्रचंड सेना कोठें गेली ? हाय हाय ! आपण काय काय कायें करावयाचीं ठरवितों, व तीं सर्व सिद्ध होतील अशी दृश्य गोष्टींवरून आपली खात्री असते. परंतु अदृष्ट कांहीं निराळेंच घडवितें ! अदृष्ट कारणांनी त्या दृष्ट गोष्टींचा व कार्यांचा शेवट काय होणार हें कळणें खरोखर महाकठीण आहे ! सर्व लोकांहून श्रेष्ठ अशा तुम्ही ही दशा झाली याच गोष्टींवरून हें स्पष्ट होत आहे. साक्षात् इंद्राशीं अतिशय स्पर्धा करणाऱ्या तुम्हें हें दुःख पाहून सर्व मर्त्यांचें ऐश्वर्य पूर्ण अशाश्चन आहे हेंच दिमून येतें ! ”

राजा, त्यांचें तें भाषण ऐकून व विशेषें-करून तो दुःखित झाला आहे असें पाहून तुझ्या पुत्रानें दोहां हातांनी डोळे पुमून शौकोत्पन्न उज्ज्वल आमवें गाळीत त्या कृपप्रभृति सर्व वीरांस असें कालानुरूप भाषण केलें, “ अहो, कालाचा फेरा आला अमतां सर्वच प्राण्यांचा विनाश व्हावयाचा, अशा प्रकारची ही जगाची रहाटी ब्रह्मदेवांनंच लावून दिली आहे. तोच हा अवश्य येणारा मृत्यु आज तुमच्या देखत मला प्राप्त झाला आहे इतकेंच । यांत अघटित असें काय आहे ! पृथ्वीचें परिपालन करून मला ही अवस्था प्राप्त झाली आहे. सुदैवानें मी युद्धांत कशाही आपत्तीचे वेळीं माघार घेऊन पळालों नाहीं. सुदैवानें पापी अधमांनी मला विशेषें-करून कपटानें मारिलें आहे. मी लडत अमतां नित्य उत्साहच धरित गेलों,—कधीही हात-पाय गाळले नाहींत. मी या युद्धांत सर्व ज्ञाति-बांधवांचा नाश झाल्यानंतर पडलों ! या सर्व गोष्टीं माझ्या पूर्वपुण्याईनेंच घडून आल्या. या लोकसंख्यांतून तुम्ही जिवंत मुटल्याचें मी पहात

आहे हें माझें भाग्य होय. तुम्हीं क्षेमरूप व सुखरूप असावें, यापरतें मला अधिक प्रिय असें कांहींच नाहीं. माझ्या मरणान्दल तुम्हीं जेहा-मुळें दुःख करीत बसूं नका. त्यांत काय आहे ! जर वेद हे तुम्हांस प्रमाण वाटत असतील, तर मी अक्षय्य असे लोक जिंकिले आहेत, हें पकें समजा. अमिततेजस्वी कृष्णाचा प्रभाव मी जाणून आहे. त्यानें जंगजंग पछाडलें तरी उत्तम प्रकारें आचरिलेल्या क्षात्रधर्मापामून मला च्युत करणें त्याच्यानें घडलें नाहीं ! मी क्षात्रधर्म बरोबर पाळला आहे. अर्थात् कोण-त्याही प्रकारें माझी स्थिति शोचनीय नाहीं. तुम्हींही आपापल्यापरी शिकस्त करून माझ्या विजयार्थ फार यत्न केला, परंतु देवाचें अतिक्रमण करणें दुरापास्त आहे ! ”

राजेंद्रा, इतकें बोलून तो थांबला. कारण, त्याचे नेत्र भरून आले होते व वेदनेनें तो अतिशय विह्वल झाला होता. अशा प्रकारें तो शोकाकुल होऊन आमवें गाळीत आहे, असें पाहून अश्वत्थामा कल्पांतकाळच्या अग्नीप्रमाणें क्रोधानें जळूं लागला. त्यानें संतापाच्या भरांत हातावर हात चोळून योग्या आवाजानें राजास म्हटलें, “ राजेंद्रा, त्या चांडाळांनी अति नीच-पणांनें माझ्या पित्याचा घात केला या गोष्टीनें-ही मला जितकें दुःख झालें नव्हतें, तितकें आज तुजमुळें झालें आहे ! हे प्रभो, मी सत्य-पूर्वक सांगतां तें श्रवण कर. मी इष्टापूर्त, दान-धर्म व सुकृत यांच्या शपथेनें सांगतों कीं, आज वामुदेवाच्या समक्ष हरप्रयत्नानें सर्व पांचालांस यमलोकीं पाठवीन ! हे महाराजा, मला तुम्ही अनुज्ञा मात्र असावी ! ”

द्रोणपुत्राचें हें मनास आल्हाद देणारें भाषण ऐकतांच राजा कृपाचार्यीस म्हणाला, “ आचार्य, जलांन भरलेला कलश लवकर आणा. ”

राजाची आज्ञा होतांच ब्राह्मणश्रेष्ठ कृपाचार्य
एक महत्त्व कल्प घेऊन त्याच्याजवळ
गेले. तेव्हां, हे महाराजा, तुझा पुत्र त्यांस
म्हणजे, “ द्विजश्रेष्ठा, तुमचें कल्याण असो.
माझे प्रिय करावें अशी तुमची इच्छा असेल
तर माझ्या आज्ञेनें द्रोणपुत्रास सैनापत्याचा
अभिषेक करा. सर्वांनीं व विशेषेकरून क्षात्र-
धर्मानें वागणाऱ्या ब्राह्मणांनीं राजाज्ञेनें लढावें
अशी शास्त्रमर्यादा धर्मज्ञ समजतात ! ”

राजाचें भाषण ऐकून शारद्वत कृपाचार्यांनीं
राजाज्ञेवरून अश्वत्थाम्यास सैनापत्याभिषेक
केल्य. हे महाराजा, अभिषेक होतांच अश्व-
त्थामा राजास आलिंगन देऊन सिंहनादानें
सर्व दिशा दणाणवीत निघून गेला ! आणि,
राजेंद्रा, रक्तानें माखलेला दुर्योधनही, सर्व
भूतांस भयावह वाटणाऱ्या त्या रात्रीं तेथेंच पडून
राहिला ! इकडे, राजा, ते कृपप्रभृति वीर
त्वरेनें रणांगणांत दूर जाऊन शोकांन उद्विग्न-
चित्त होत्साते विचार करीत संचित बसले !



शल्यपर्व समाप्त.



THE THREE PRINCES OF THE KINGDOM OF KASHMIR



उद्युक्तोपदेशग्रहण (मोतिकपर्ण पृष्ठ ?)



श्रीमन्महाभारत.

सौप्तिकपर्व.

अध्याय पहिला.

मंगलाचरण.



नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

ह्या अखिल ब्रह्मांडांतील यज्ञयावत् स्थावर-जंगम पदार्थांच्या ठिकाणी चिदाभासरूपानें प्रत्ययास येणारा जो नरसंज्ञक जीवात्मा, नरसंज्ञक जीवात्म्यास मदामर्वकाळ आश्रय देणारा जो नारायण नामक कारणात्मा, आणि नरनारायणात्मक कार्यकारणसृष्टीहून पृथक् व श्रेष्ठ असा जो नरोत्तमसंज्ञक सच्चिदानंदरूप परमात्मा, त्या सर्वास मी अभिवंदन करितों; तसेच, नर, नारायण व नरोत्तम ह्या तीन तत्त्वांचें यथार्थ ज्ञान करून देणारी देवी जी सरस्वती, तिलाही मी अभिवंदन करितों; आणि त्या परमकारुणिक जगन्मातेनें लोकहित करण्याविषयीं माझ्या अंतःकरणांत जी स्फूर्ति उत्पन्न केली आहे. तिच्या साहाय्यानें ह्या भव-

बंधविमोचक जय म्हणजे महाभारत ग्रंथाच्या सौप्तिकपर्वास आरंभ करितों. प्रत्येक धर्मशील पुरुषानें सर्वपुरुषार्थप्रतिपादक अशा शास्त्राचें विवेचन करितांना प्रथम नर, नारायण आणि नरोत्तम ह्या भगवन्मूर्तींचें ध्यान करून नंतर प्रतिपाद्य विषयाचें निरूपण करण्यास प्रवृत्त व्हावें हें सर्वथैव इष्ट होय.

उत्सृष्टोपदेशग्रहण.

संजय सांगतो:—मग ते सगळे वीर मिलून दक्षिणाभिमुख चालले आणि सूर्यास्ताचे वेळीं छावणीजवळ येऊन पोहोंचले. राजा, ते भयभीत झाले असल्यामुळें मोठ्या त्वरेनें गर्द झाडीची जागा पाहून तेथें रथांचे घोडे सोडून लपून बसले. त्यांच्या अंगांवर तीक्ष्ण शस्त्रांनीं जिकडेतिकडे

जखमा झाल्या होत्या. तशाच स्थितीत सैन्याच्या छावणीभोवती जवळच छपून राहिलेले हे वीर पांडवांबद्दलच्याच विचारांत गर्क झाले आणि मोठ्या दुःखानें उसासे टाकूं लागले. राजा, अधिकाधिक विजय मिळविण्याच्या उत्सुकतेनें पांडव भयंकर गर्जना करीत सुटले, तेव्हां ती त्यांची गर्जना ऐकून पुनः हे आपल्याच पाठोपाठ आले कीं काय न कळे, अशा भयानें ते वीर पूर्वदिशेकडे पळत सुटले ! आणि थोड्या वेळानें तेथून दुसऱ्या एका जागीं जाऊन कांहीं वेळ थांबले. त्या वेळीं त्यांचे घोडे अगदींच थकून गेलेले असून ते स्वतः तहानेनें व्याकूळ होऊन गेले होते; तशांत राजा दुर्योधन मारला गेला म्हणून मनांत तळमळ चाललेली; मग काय विचारावें ! त्या महाशूर वीरांच्या पोटांत क्रोधाग्नि भडकून जाऊन एकंदर स्थिति त्यांना दुःसह वाटूं लागली !

धृतराष्ट्र बोलतो:—अरे संजया, हजारों हत्तींचे बळ ज्याचे अंगी, अशा माझ्या मुलाला भीमानें मारिलें म्हणून सांगतोस, हें त्यानें केलेलें कृत्य खरें देखील वाटण्यासारखें नाही ! संजया, संपूर्ण प्राण्यांना अवध्य, वज्रदेही व तारुण्यसंपन्न अशा माझ्या मुलाला समरांगणांत मारिलें असेंच ना तूं म्हणतोस ? कुंतीच्या मुलांनीं मिळून रणांत माझ्या मुलाला ज्यापेक्षां मारलें, त्यापेक्षां संसारामध्यें देवमंकल्प टाळणें हें माणसांना शक्य नाही खचित ! अरे संजया, शंभर मुलगे मेलेले कानांनीं ऐकून माझे हृदय फुटून त्याचे हजारों तुकडे व्हावयास पाहिजे होते ! पण तसें झालें नाही त्यापेक्षां हें माझे हृदय दगडाचेंच केलेलें असावें ! आतां हे शंभर मुलगे मेल्यावर ह्या पुत्रशोकांत आह्वां वृद्ध नवरावायकोची काय बरें अवस्था होईल ? कारण, ह्या पांडुपुत्रांच्या राज्यांत राहाण्याला तर माझे मन घेणार नाही ! संजया, स्वतः

राजपद भोगून व नंतर राजाचा पिता ह्या नात्यानें राहून आतां नोकरासारखा होऊन पांडवांच्या आज्ञेत म्यां कसें बरें रहावें ? अरे, ह्याच ना पांडवानें (भीमानें) माझे पुरे शंभरचे शंभर मुलगे मारून टाकिले ? व आतां सर्वांच्या डोक्यांवर पाय देऊन सर्व पृथ्वीभर हात ना अंमल चालविणार ? संजया, माझ्या मुलांनें महात्त्या विदुराचा उपदेश न ऐकून त्यानें सांगितलेलें सर्व भविष्य खरें करून दाखविलें ! आतां या भीमाचा गुलाम होऊन त्या स्थितीत जें दुर्मरण घेणार तें मी कसें बरें पतकरूं ? आणि त्या भीमाचीं वर्मां लागणारीं एकेक भाषणें माझ्यानें कशीं बरें कानांनीं एकवतील ! असो; संजया, अधर्मयुद्धानें माझा बाळ दुर्योधन मारला गेला, त्या वेळीं कृतवर्मा, कृप व अश्वत्थामा ह्यांनीं काय बरें केले ?

संजय सांगतो:—राजा, तुझ्या बाजूचे वीर निघून जाऊन जवळच थांबून पाहूं लागले, तों वृक्षलतांनीं युक्त असें एक निविड अरण्य त्यांचे दृष्टीस पडलें. मग तेथें क्षणभर विश्रांति घेऊन घोड्यांना पाणी वंगरे मिळाल्यावर ते सूर्यास्ताचे वेळीं दुसऱ्या एका मोठ्या अरण्यांत येऊन पोहोचले. तेथें नानाप्रकारचीं झाडेझुडपें यांची गर्दी असून कित्येक निरनिराळ्या धापदांचे कळप होते; तशींच अमंज्य पांखरे होती व निरनिराळ्या सर्पजातींचीही तेथें वस्ती होती; जागजागीं लहानमोठे पाण्याचे झरे व डबकीं होती; तऱ्हेतऱ्हेचीं कमळांचीं व इतर फुलें जिकडे तिकडे दिमत असून त्यांनीं सर्व प्रदेशाला विशेष शोभा आली होती. मग त्या घोर अरण्यांत शिरून सभोवतीं पहातात तों हजारों फांद्या अमलेलें एक अफाट वडाचें झाड त्या वीरांच्या दृष्टीस पडलें. तेव्हां हे महारथ, वृक्षांमध्यें राजाप्रमाणें शोभणाऱ्या त्या

वडाच्या झाडाजवळ गेले आणि त्यांनी ते जळफळत असलेल्या द्रोणपुत्र अश्वत्थामा याला झाड न्याहाळून पाहिले. मात्र झोप येईना; तो मर्षाप्रमाणे उभासे मग, राजा. ते सर्व रथांवरून ग्यालीं टाकीत बसून राहिला. तो नवशिक्षांत संतापाने उतरले आणि वांडे मोडून यथाशास्त्र मुग्घ- पेटून गेला असल्यामुळे त्याला झोप येईचना. मार्जन करून त्यांनी संन्योषामन केलें. मग मग त्या भयंकर अरण्याकडे त्यानें एकदां भगवान् मृत्यु अस्तात्रलाप्रत प्राप्त झाल्यावर. नजर फेंकली. राजा. नानाप्रकारच्या श्वापदांची प्राणिमात्राला मानेप्रमाणें जपणारी जीं रात्र जेंथें बसनी, अशा त्या अरण्याकडे अवलोकन तीं येऊन पोहोचली. वर पहारें तीं जिकडे कर्गितां कर्गितां त्या वडाच्या झाडावर महस्त्रा- निकडे ग्रह, नक्षत्रें, तांर उदय पावले अमून वधि कावळे पडून राहिलेले त्याचे नजरेम त्यामुळें चित्रविचित्र कशिदा काढलेल्या नाजूक पडले. राजा. हे महस्त्रावधि कावळे आपापल्या नीलवस्त्राप्रमाणें नभोमंडलाची अपूर्व शोभा वेगवेगळ्या जागीं पडून स्वस्थ झोप घेत रात्र दिग्ं लागली आहे. रात्रीं संचार करणारे कार्दात होत. याप्रमाणें मर्षावनीं जिकडे निकडे प्राणी मनःपूत शब्द करूं लागले व दिवमाम ते कावळे खुशाल निर्भयपणानें निजून राहिले संचार करणारे प्राणी निद्रावश झाले; रात्रीं अमनां. अकस्मात् दिमण्यांत उग्र अशी हिंडणाऱ्या श्वापदांची गर्जनना अधिकाधिक एक घुबडाची स्वारी चाललेली त्यानें पाहिली. भयंकर होऊं लागली; आणि हिंस्र पशूंना हे घुबड आकारानें चांगले मोठें अमून त्याच्या उन्माद्द येऊन रात्र फार भयप्रद वाटूं लागली. डोळ्यांचीं बुचुळें हिरवींचार होती; अंगवर्ण राजा, त्या भयंकर रात्रिममयी. दुःखानें व धुळकट पिंगटमर होना. चोंच व नवें लांब- शोकांने विह्वल होऊन गेलेले कृप. अश्वत्थामा लांब होती; त्याचा धूत्कार भयंकर होना आणि आणि कृतवर्मा हे तिथे शेजारी शेजारी बसले. मामश्रयानें तें गरुडामारुं दिमत होतें. मग तेंथें त्या वडाच्या झाडाजवळ बसून ते आतां एखाद्या गरिब दवा धरून बसलेल्या पांवरा- पर्यंत झालेला पांडवांचा व कौरवांचा संहार प्रमाणें हळू शब्द करून त्या वटवृक्षाच्या आठवून आठवून शोक करूं लागले. नंतर त्या शाखेची प्रार्थना करून मग तें घुबड त्या नानाप्रकारच्या बाणांनीं जखमा झाल्या असल्या- खांदीवर तुटून पडलें; आणि कावळ्यांचा कर्दन- मुळें अगोदरच थकवा आलेल्या, त्यांत काळ अशा त्या घुबडानें झोपी गेलेल्या आतां झोपेनें घेरल्यामुळें आळसावून ते जमिनी- अनेक कावळ्यांचा अंत केला ! त्यानें कांहींचे वर आडवे झाले ! राजा. महारथी कृपाचार्य पंग्व उपटले. कांहींचीं मुंडकीं तोडलीं व कांहींचे व भोज—ज्यांना सुखांत राहाण्याची संवय. पाय मोडले ! अशा रीतीनें. पंजेच त्याचें आयुध. दुःख कधीं माहीत नाही. ते आज जमिनीवर त्या आयुधानें संहार करण्याचा त्यानें सपाटा पडून राहिले अमनां त्यांना झोपेनें पड्डाडलें. चालविला आणि पहातां पहातां त्या शक्ति- मग, राजा, श्रमानें व शोकांने व्याप्त झाले मान् पश्रयानें जे जे कावळे नजरेम पडले ते अमल्यामुळें, नेहमीं जरी मऊ, मऊ, बिछान्यां- सर्वें मारून टाकिले ! मग, राजा, त्या काव- वर निजण्याचा अभ्यास, तरी आज अनाथां- ल्यांच्या प्रेतानीं व छिन्नविच्छिन्न होऊन पड- प्रमाणें भुईला पाठ टेंकूनच ते दोघेही झोपी गेले ! लेल्या अवयवांनीं त्या वडाच्या झाडाखालचा राजा. त्यांना झोप लागली. परंतु मनांत सर्व प्रदेश व्यापून गेला; आणि अशा रीतीनें

ते कावळे मारून टाकल्यावर त्या घुबडाला आनंद झाला !

ह्याप्रमाणें त्या घुबडाचें शत्रूवर यथेच्छ सूड उगवण्याचें काम संपल्यावर, तें त्याचें कपटाचरण रात्रीचे समयी पाहून त्याचा गुण उचलण्याचा निश्चय करून अश्वत्थामा विचार करितो, " ह्या आणिवानीच्या प्रमंजी य. पक्ष्याने मला चांगली अकल शिकविली ! शत्रूचा अंत करण्याला योग्य वेळ ही आतांच होय असें मला वाटूं लागलें आहे. हे पांडव मोठे बलशाली आहेत, हिंमतवान् आहेत. नेम मारण्यांत कुशल आहेत, आणि अमह्य प्रहार करणारे आहेत; तेव्हां ह्यांना मारून टाकण्याचें काम आज माझ्या हातून होण्यामारखें नाहीं ! इकडे तर ' त्यांना मारून टाकतों ' अशी प्रतिज्ञा मी राजाचे समक्ष करून बसलों आहे. धर्मयुद्ध करावें तर दिव्यासमोर पतंगाचें जमें आत्मघातक वर्तन होऊन त्याची अवस्था होते तशी माझी होणार आणि मी प्राणाला मुकणार, ह्यांत मुळीच संशय नको ! तेव्हां आतां कपट करूनच कार्ये साधलें पाहिजे व शत्रूचा संहार केला पाहिजे. ज्यांत धोका आहे अशा मार्गापेक्षां धोका नमलेला मार्गच चांगला असें शहाण्या शहाण्या लोकांचें देखील मत आहे. शिवाय अशा प्रमंजी, शास्त्रांत ज्याला दृषण दिलें असेल व लोकांत ज्याला नांवें ठेवितात असा उपाय अमला तरी तो देखील क्षत्रिय-धर्म पतकरल्यावर माणमानें खुशाल योजावा ! ह्या दुष्ट पांडवांनीं देखील सर्व प्रकारचीं वाईट-लाजिरवाणीं व दुगलवाजीचीं कृत्यें पावले-पावलीं केलीं आहेत. प्राचीन काळीं धर्माधर्म पहाणारे व न्याय-अन्याय शोधणारे जे मोठे विचारी तत्त्ववेत्ते होऊन गेले, त्यांनीं ह्याच विषयावर वचनें लिहून ठेविली आहेत. त्यांनींल तात्पर्य कीं, शत्रु थकलेला असेल, जेरीला

आला असेल, भोजन करीत असेल. बाहेर कोठें निघाला असेल, किंवा घरांत प्रवेश करीत असेल. तर अशा कोणत्याही वेळीं त्याजवर खुशाल घाला घालावा; तमेंच शत्रूचें मन्य मध्यरात्री निद्रेच्या अधीन झालें असेल. त्याचा अधिपति नाहींमा झाला असेल. त्यांनींल योद्ध्यांची फुटाफुट झाली असेल. किंवा त्या सैन्यांत दुही झाली असेल. तर अमली संधि साधून त्या सैन्यावर खुशाल छाप घालून कत्तल उडवावी ! "

राजा, असा विचार करून. अश्वत्थामा पराक्रमी स्वर्ग-तर्ग त्यानें पांडव पांचालांमह-वर्तमान निजलेले अमतांना रात्रीचे वेळीं छाप घालून त्यांना ठार मारण्याचा निश्चय केला. ही कृम कल्पना मनांत आणून. ती तडीम नेण्याचा निश्चय वरचेवर विचार करीत करीत पक्का करून मग आपला मामा कृपाचार्य व भोज ह्या दोघांना त्यानें जांपेंतून उठविले. ते महात्मे कृप व भोज जोग झाल्यावर. प्राप्त स्थितीची त्यांना शरम वाटून ते अश्वत्थाम्याचे म्हणण्याला नीटमें उत्तर देईनात. मग क्षणभर डोळे मिटून विचार करून अश्रु दाळीत अश्व-त्थामा म्हणतो, " वीरांमध्ये वीर असा जो बलिष्ठ दुर्योधन राजा. त्याच्याकडितां आपण पांडवांशीं वीर आरंभिले; त्या अकग अक्षो-हिणीं सैन्याच्या पराक्रमी अधिपतीला युद्धांत एकटा गांठून ह्या नीच पांडवांनीं सर्वांनीं मिळून भीमाला पुढें करून त्याचें हातून मारून टाकिलें ! राज्याभिषेकांने पवित्र झालेल्या दुर्यो-धन राजाच्या मस्तकावर त्या नीच भीमसेना-नेच पाय देऊन हें दुष्ट कृत्य केले ! आतां पांचा-लांना इतका आनंद होऊन गेला आहे कीं, ते हंसत आहेत, ओरडत आहेत. नाचत आहेत, शेंकडों शंभ फुकीत आहेत व दंडुभि वाजवीत आहेत ! शंभ्यांचा ध्वनि व वाद्यांचा गजर एकांत एक

मिमळून जो एकच भयंकर घोष चालला आहे, तो वाऱ्याने चोहोकडे पसरून त्याने दिशा गजबजून गेल्या आहेत ! घोडे विकळत आहेत, हत्ती मोठ्याने ओरडत आहेत, व घोडे गर्जना करित आहेत, त्यांचा हा केवढा गळका ऐकू येत आहे ! पूर्वदिशेकडे मोर्चा फिरवून आनंदाच्या भरात खुशाल रथांतून चाललेले जे घोडे, त्यांच्या रथांचा शब्द ऐकून अंगावर कांटा उभा रहातो. पांडवांनी दुर्योधन वगैरे धार्तराष्ट्रांची ही जी कत्तल उडविली, तीतून ह्या घोर प्रसंगी आपणच काय ते निघे उरले. शेंकडो हत्तींचे वळ अमलेले कित्येक वीर आणि अस्त्रविद्येत मी मी म्हणणारे कित्येक वीर ह्या पांडवांनी मारून टाकिले. त्यापेक्षा काळज फिरवला असे मला वाटते ! कारण, ह्या काळाचा महिमा असा आहे की, अमुक एक गोष्ट अशा रीतीने व्हावयास पाहिजे असा त्याचा संकल्प एकदां झाला. म्हणजे मग ती कितीही दुष्कर अमली तरी तशी व्हावयाचीच, तरी पण आतां ह्या आर्णावणीचे प्रसंगी मन गांगरून जाऊन तुमची अकळ गुंग झाली नसेल तर आतां कोणता मार्ग आपल्याला श्रेयस्कर होईल ते सांगा. "

अध्याय दुसरा.

—:—

कृपाचार्याचा अश्वत्थाम्याला उपदेश.

कृपाचार्य म्हणाले: ओरे शूरा, तू जें जें बोललास तें सर्व मी ऐकून घेतले; आतां मला ही थोडे सांगावयाचे आहे तें ऐकून घे. सर्व माणसे दोन प्रकारच्या कर्मांनी गुंफटून जाऊन बांधली गेली आहेत. एक देव (जन्मांतरी केलेली कर्मे) व दुसरा प्रयत्न. ह्या दोहोंच्या पलीकडे निमरे कांहीं नाही. भल्या माणसा तुला एक सांगून ठेवितो, कीं नुसत्या

देवाने कामें होत नमतात किंवा नुसत्या एका उद्योगानेही होत नमतात; तर दोहोंच्या संयोगाने कोणतेही काम माघत असते. महत्त्वाच्या काय किंवा किरकोळ काय, सर्व गोष्टी देव आणि उद्योग ह्या दोहोंच्या अर्धीन असून त्यांच्याच तंत्राने चालू अमलेल्या किंवा बंद पडलेल्या सर्वत्र दृष्टीस पडतात. पाऊस डोंगरावर पुष्कळ पडला तरी काय फल देतो ? बरे, तोच नांगरलेल्या शेतावर पडला. तर किती तरी फलद्रूप होतो ! देव सबळ अमल्यावर उद्योगाची कांहीं प्रतिष्ठा नको; तथापि उद्योगाचीच नुसते देवही फुकटच जाते; हा मिद्धांत पूर्वापामून सर्वत्र टरलेला आहे. शेत चांगले नांगरून पेरून ठेविलेले असावे व देवाने पर्जन्यवृष्टि भरपूर द्यावी. क्षणजे मग जसे पीक विपुल येते. तशीच माणसाने आरंभिलेल्या कोणत्याही कामाची स्थिति समजावी. आतां, त्यांतल्या त्यांत देवाचा प्रभाव इतका आहे की, अमुक एक गोष्ट घडवून आणावयाची असा त्याने संकल्प केला क्षणजे त्याच्या एकट्याच्या जोगवर ती तडीस जाते, तरी पण शहाणे लोक प्रयत्नवरच भरोसा ठेवून चालतात. कारण, मनुष्यमात्वाचीं सर्व कार्ये दोहोंच्याही तंत्राने चाललेली किंवा बंद पडलेली दृष्टीस पडतात. खटपट केली असता ती देवाने माघून खटपट करणाऱ्याचा हेतु तडीस नेते. तसेच मोठ्या तत्परने उद्योग करणाऱ्याचाही उद्योग चांगला व्यवस्थित रीतीने झालेला असला तरी फुकट गेलेला आपण पहातो. मग नेवड्यावरून, जें लोक स्वभावतः आळशी व सर्व असतात ते उद्योगाची थट्टा करू लागतात; ते अर्थात् शहाण्या लोकांना आवडत नाही. परंतु लोकांत फार करून उद्योग केला असता तो अगदीच फुकट गेलेला दिमत नाही; तसेच दुसरे पक्षी उद्योग न केला तर माणसाला फारकरून दुःखच प्राप्त

होतें. आतां जर एखाद्या माणसाला प्रयत्न न करितां आपोआप विलक्षण लाभ होऊन गेला. किंवा एखाद्याला उद्योग पुष्कळ करून कांहींच लाभ झाला नाही असें झालें. तर हे दोन्ही प्रकार विरळा घडणारे आहेत असें समजावें. तत्पर राहून काम करणारा मनुष्य उपाशी मरत नाही; आणि आळशी मनुष्याला सुख झणून मिळत नाही. या दुनियेंत उद्योगी लोकांचें कल्याणच झालेलें पहाण्यांत येतें. जर उद्योगी माणसानें उद्योग आरंभून त्या-पामून त्याचें कार्य साधलें नाही, तर त्याचेकडे बोल तरी कांहीं रहात नाही; साधलें तर हवीं अमलेंली वस्तु मिळून जाते. खटपट न करितां दुनियेंत ज्याला देवाच्या जोरावर कांहीं तरी मिळून जातें. त्याचीं बहुतकरून निंदा होते आणि तो दुसऱ्यांच्या द्रोणापासून पात्र होतो. तेव्हां ह्या सर्व गोष्टीं श्यानांत न आणितां तिकडे दुर्लक्ष करून भलत्या धोरणांत जो मनुष्य चालतो. तो आपल्यावर संकट ओढवून घेतो असें शहाण्या लोकांचें मत आहे. उद्योग व देव ह्या दोहोंतून एक कर्मा पडेल तर कोणत्याही कामाला यश येणार नाही. उद्योगाची वाजू लंगडी पडल्यावर नुसतें देव कांहीं करू शकत नाही. झणून कार्यांरंभी देवतांचें स्मरण करून खटपट करण्याची उमेद धरून जो उद्योगी मनुष्य चांगल्या शिस्तीनें कोणत्याही कार्याला हात घालील. त्याला अपयशाचे प्रसंग कधी येणार नाहीत. शिस्तीनें कार्य आरंभजे झणजे असें की. वृद्ध व वडील माणसें असतील त्यांचेकडे मर्यादेनें जाऊन. कार्य करणें श्रेयस्कर होईल हे विचारणें; व आपल्या पश्यांचें झणून जें कार्य ते मांगतील तें करावें. उद्योग चालू असतां पदोपदीं जाऊन वडील माणसांची मला विचारावी. कारण इच्छित वस्तु मिळण्याला तेंच उत्कृष्ट साधन

होय व कोठेंही यश येण्याला तेंच मूळ होय. वृद्ध माणसांची ममलत घेऊन जो प्रयत्नाची दिशा ठरवितो. त्याच्या खटपटीचें उत्तम चीज होतें व वेळ देखील न लागतां काम होतें. उत्कृष्टत्व मनाचा व उपाची त्याची मानसंडना करणारा असा जो एखादा पुरुष उल्लूपणानें किंवा मतापानें अथवा भीतीनें किंवा लोभीपणानें कोणत्याही वस्तूवर मन ठेवून खटपट चालवितो तो लवकरच वैभवाला मुक्तो. तर हा अशाच तऱ्हेचा न साधण्यामागता वेडगळ उद्योग ह्या महालोभी आणि अदूरदर्शी दुःखांधनां पुढचा विचार न करितां आरंभिला. आपले जे हित मांगणारे त्यांचेकडे ह्यानें लक्ष दिलें नाही व वाईट लोकांची मला घेऊन वागला; नको नको म्हणून मगळे मांगत असतां आपल्यापेक्षां सर्व गुणांनी अधिक अशा पांडवांशीं वैर केव्हे; त्याचें शीलच वाईट. म्हणूनच वैर आरंभल्यावरही अगोदर हातून कांहींच नेटानें काम झालें नाही व मागून संकटांत सांपडल्यावर तो संताप करून घेऊं लागला; व मित्रांची मलाच घेईना. त्या पापी पुरुषाची वाजू घेऊन आढी चाललें, त्यामुळे आमच्यावर असा भयंकर प्रसंग येऊन गुदरला ! ह्या संकटामध्ये माझे मस्तक इतकें तापून गेलें आहे की. कितीही विचार केला तरी हिताचा मार्ग श्यानांत येत नाही. माणसाच्या बुद्धीला मोह पडल्या झणजे इष्टमित्रांची मला विचारावी; कारण. ह्याला ह्या अमलेला कल्पकपणा व शोणणीपणा त्यांच्यामध्ये सांपडतो आणि ह्याला तरणोपाय दिसें लागते. अशा शहाण्या शहाण्या इष्टमित्रांना विचारगल्यावर ते ह्या माणसाचा कार्यभाग साधण्याचें रहस्य कशांत आहे ह्याचा नीट विचार करून जो युक्ति मांगतील तिला अनुसरून त्यानें वागावें. म्हणून आपण सर्व मिळून धृतराष्ट्र गांधारी व बुद्धिशाली विदूर यांकडे जाऊन

त्यांचें मत विचारू आणि विचारल्यावर पुढें ते आमच्या हिताचा म्हणून जो उपाय मांगनीला तो आपण करावा हेंच मला फार बरें वाटतें. उद्योगच आरंभिला नाही तर कधीही काम व्हावयाचें नाही. आतां, उद्योग केल्यावरही ज्यांचें काम होणार नाही. ते हतभागीच होत हें ठरलेलें; तेव्हां ह्याबद्दल ज्ञान विचारच नको!

अध्याय तिसरा.

—:०:—

अश्वत्थाम्याची मसलत.

संजय मांगतो:—हे महाराजा. कृपाचार्यांचें हें सरळ व सुनीतीचें भाषण ऐकून, दुःखानें व्याकूल झालेल्या व शोकानें नवशिवानें पेटून गेलेल्या अश्वत्थामा मन निष्ठुर करून त्या उभयतांम म्हणतो. .. प्रत्येक माणसामध्ये जो म्हणून अकलेचा भाग असतो. तेवढ्यावर जो तो आपल्या ठिकाणी खुप असतो. अशा सर्वांची स्थिति आहे. दुर्नियंत प्रत्येकजण आपल्याला अकलवान् समजतो, आणि जो तो आपल्यालाच धन्य मानून आपलीच प्रशंसा करित असतो. अशा रीतीने प्रत्येकाची बुद्धि आपली वाहवा करून घेण्यांत स्वर्च होत असत. सर्वजण दुःखान्याच्या अकलेला नांवें ठेवून आपलीच शेखी मिरवीत असतात. कारण, प्रसंगांनं एकदिल करून एकाच धोरणानें सुयंत्रपणानें जे कांहीं कालपर्यंत चाललेले असतात आणि एकमेकांवर खुप राहून परस्परांबद्दल आदर दाखवितात. त्यांचीच बुद्धि पुढें कालांतरानें पालटून ते एकमेकांला विरोध करून नडवूं लागतात. मूर्ति तितक्या प्रकृति; त्यांतून विशेषकरून प्रसंगांनं मन गोंधळून गेलें म्हणजे त्या घटकेंत एकाला एक व दुसऱ्याला दुसरी अशी प्रत्येकाला कांहीं तरी अकल मुत्ते. ज्याप्रमाणें एखादा चतुर वैद्य रोगाची परीक्षा

करून यथाशास्त्र उपचार करितो, त्याप्रमाणें आपलें इष्ट कार्य माधण्याकरितां म्हणून माणसें युक्ति योजित असतात; व ज्याची जेवढी अकल तेवढी तो स्वर्च करित असतो; मग दुसरी माणसें मात्र त्याच्या अकलेला नांवें ठेवितात. माणसाची आपल्या इतिकतेव्यते-बद्दलची बुद्धि तारुण्यांत एक तऱ्हेची बनते. मध्यम वयांत दुसऱ्या तऱ्हेची बनते व वृद्धपणीं निमरंच एखादें धोरण त्याला पसंत पडूं लागतें. एकदम एखादें मांडें संकट येऊन गुदरल अथवा एकदम मोठा भाग्यादय झाला, म्हणजे माणसाच्या बुद्धींत पालट होतो. एकाच माणसामध्ये देखील समयानुरूप जी जी बुद्धि उत्पन्न होऊं लागते. तीच पुढें त्यालाच नापसंत वाटूं लागते. आपल्या अकलेप्रमाणें आपल्याच मनाशीं योजून पाहिल्यावर जी युक्ति जांगली वाटेल. त्या युक्तिनें माणूस आपलें कार्य करूं लागतो आणि हीच उद्योग करण्याची खरी दिशा. भोजा. प्रत्येक मनुष्य हेंच चांगलें असें एकदां मनाशीं ठरवून मग उमदीनें कंवर बांधून जिवाकडेही न पहातां उद्योगाला लागतो. आपलें धोरण आपल्याशीं कायम करून आपल्या चानुर्यानें माणसें निरानिराळ्या खटपटी करित असतात व त्यांतच आपलें हित आहे. असें मानीत असतात!

.. तर आतां या प्रसंगांत मला जी युक्ति मुचून हुपारी वाटत आहे व शोकाचाही विमर पडत आहे. ती तुम्हांला मांगतो. ब्रह्मदेवांनं सर्व प्रजा निर्माण करून व त्यांच्या पाठीमागे कांहीं तरी कर्तव्य लावून देऊन ब्राह्मण. क्षत्रिय वगैरे जाति करून वर्णपरत्वे एकेक गुण ठरवून दिला आहे. ब्राह्मणामध्ये उत्तम प्रकारची विद्या असावी, क्षत्रियामध्ये उत्तम पराक्रम असावा, वैश्यामध्ये उद्योगाविषयी दक्षता असावी व शूद्रामध्ये वरच्या तीन वर्णांना

साहाय्य करण्याबद्दलची तत्परता अमावी. काम-
क्रोधादिक मनोविकार ज्यानें जिकले नाहीत.
तो ब्राह्मण कुचक्रामाचा; पराक्रम ज्याच्या-
मध्ये नाही तो क्षत्रिय कशाचा? वैश्य आळशी
अमेल तर तो निंद्य होय; व शूद्र प्रतिकूल-
पणानें वागेल तर तो नीच समजावा !

“ आतां मी ब्राह्मणाच्या एका श्रेष्ठ व पूज्य
अशा कुळांत जन्म घेतला आणि कम-
नशीबाचा म्हणून क्षत्रियधर्मांत शिगळें आहे.
तर क्षत्रियधर्म एकदां पतकरल्यावर जर
मी ब्राह्मणधर्माला अनुसरून शमदमादिक
मोठमोठीं साधनें करित बसेन, तर तें कांहीं
बरे नव्हे असें माझे मत आहे. दिव्य धनुष्य
व उत्तम उत्तम अस्त्रें जवळ बाळगून मीं
युद्धांत पित्याचा वध झालेला डाळ्यांनीं
पाहिला तर आतां मंडळींत दुमरे तिमरे काय
बरे सांगत बसण्याला मला तोंड आहे? म्हणून
आज मी यथेच्छ क्षत्रियधर्माचें आचरण
करणार आणि दुर्योधन राजाची व माझ्या
महात्म्या पित्याची जी गति झाली त्याच
गतीला जाऊन पोहोंचणार व त्यांचा उतराई
होणार! आज पंचालमैत्र्यांतील सर्व योद्धे
कवचकुंडलादिक काढून ठेवून आनंद करीत
मोठ्या भरंवशानें झोपीं जातील; कारण त्यांना
मेहनत फार झाली अमल्यामुळे ते थकले-
भागलेले अमणार व त्यांत आतां विजय
झाला म्हणून ते त्याच मतेपांत अमणार!
तेव्हां अर्थात् आपल्या छावणींत आज रात्री
बिनबोरोपणें ते गाढ निद्रा घेणार; तर ही मंधि
साधून त्यांच्या छावणीवर आपण अमा
नेटाचा छापा घालणार कीं. एका मपाट्यांत
त्यांच्यावर तुटून पडून, इंद्रानें दैत्यांचा मंहार
केला त्या मामल्याचा पराक्रम करून सर्वांची
कत्तल करून प्रेतांचा दीग पाडणार! पेटलेला
वणवा ज्याप्रमाणें संबंध रान जाळून खाक

करितो, त्या तऱ्हेची कर्तवगारी करून धृष्ट-
द्युम्न वगैरे सर्वच योद्ध्यांचा मी एकदम
समाचार घेतों! या पंचालीरांना ठार
करूनच मनाची शांति करून घेणार! पिनाक-
पाणी शंकर आपला रुद्रावतार प्रकट करून
ज्याप्रमाणें पशुंमध्ये मंहार करीत अमतां
शोभतो, त्याप्रमाणें आजच्या दंगलीत पांचालां-
मध्ये कत्तल करितांना उग्र स्वरूप मी प्रकट
करणार! आज मी रणामध्ये या पांचालांना
व पांडुपुत्रांनाही ठार करून मोठ्या मतेपातें
त्यांचीं प्रेतें ओढून टाकून तुडवून काढणार!
आज पांचालांच्या प्रेतांनीं भ्रमांतला मी शरीर-
दान करणार! आणि त्यांच्यामध्ये एकेकाम
ठार करीत करीत आपल्या पित्याच्या ऋणांतून
मुक्त होणार! व दुर्योधन, कर्ण, भीष्म आणि
जयद्रथ ह्या मंडळींचाही उतराई होणार!
मी पांचालांची आज दुर्देशा करून मोडणार!
आजच्या रात्री तो पांचालांचा राजा धृष्टद्युम्न
ह्याचें एखाद्या पशुप्रमाणें मस्तक फोडून
क्षणांत चक्काचूर करून टाकणार! आज
पांचालांची व पांडवांचीं पोरें रात्री निजलेलीं
अमतील तीं ह्या तीक्ष्ण मुद्गानें कत्तलीत
ठेंचून काढणार! तात्पर्य, आज रात्री त्या
पांचालमेनेची झोंपेंत कत्तल उडवून मी
कृतकृत्य व धन्य होऊन दुःखांतल्या जीव
मुखांत नेणार !”

अध्याय चौथा.

—:०:—

कृपाचार्यांचें भाषण.

कृपाचार्य म्हणतात: “हे शूरा, शत्रूंवर
मूढ उगवण्याची जी ममलत तू काढलीम.
ती अभिनंदनीय आहे. तुझे निवारण करण्याला
प्रत्यक्ष इंद्र देखील ममर्थ होणार नाही. आम्ही-
ही पहाटे उठून तुला मदत करण्याकरितां बरो-

बर येऊं. आतां कवच वगैरे काढून तूं रातोरान
 विश्रान्ति घे. उद्यां तूं शत्रूंवर चाल करून
 जाण्याकरितां निवालयाम म्हणजे मी व कृत-
 वर्मा उभयतां रथांवर बसून कवच घालून
 तुझ्याचरोवर निघू. मग आझाला वगेवर घेऊन
 उद्यां पराक्रम करून पंचालवीर व त्यांचे अनु-
 यायी या सर्वांम तूं ठार करूं शकशील; कारण.
 तूं तमाच महारथी योद्धा आहेस. तर एवढी रात्र
 विश्रान्तीमध्ये काढ. तुझा फार वेळ झोंपवांचून
 गेला आहे, म्हणून एवढी रात्र स्वस्थ झोंप घे.
 हे मानदा. झोंप चांगली मिळून थकवा गेला
 आणि निवाला आगम वाटूं लागला. म्हणजे
 अ.झालाही वगेवर घेऊन युद्ध करून तूं
 शत्रूंना मारून टाकशील ह्यांत मंशय नाही.
 कत्मा. वीरांमध्ये महावीर असा तूं एकदां
 आयुधे घेऊन मज्ज झाल्यावर प्रत्यक्ष देवांचा
 राजा इंद्रही तुला जिंकू शकणार नाही. अंग.
 हा कृपाचार्य वगेवर अमल्यावर आणि कृत-
 वर्मा पाटीराखा अमल्यावर युद्धांत अश्वत्यामा
 चवताळून पुढें मरमावला असतां त्याच्या-
 पुढें माझातू इंद्रांचे देग्वील कांहीं चालणार
 नाही ! तर. वावागे. एवढी रात्र विश्रान्ति घेऊन
 झोंप संपून आझाला हुषारी वाटूं दे. कीं
 पहाटे थोडी रात्र अमतांनाच देग्वील चालून
 जाऊन आपण शत्रूंना मारून टाकूं. तुझ्या-
 जवळ उत्कृष्ट अस्त्र आहेत. तर्शाच माझ्या-
 जवळही आहेत आणि कृतवर्माही मोठा धनु-
 र्धारी असून युद्धांत कुशल आहे, तर आपण
 निघे एकजुटीने जाऊन रणांत गोळा झालेल्या
 सर्व शत्रूंना निकारानें लढून मारून टाकूं व
 आनंदाच्या शिखरावर जाऊन बसूं ! तूं आपलें
 मन स्थिर करून विश्रान्ति घे आणि रात्रभर तुला
 स्वस्थ झोंप मिळूं दे. हे नरश्रेष्ठा, मी व कृतवर्मा
 दोघे शत्रूंची खोड काढणारे असेच धनुर्धारी
 वीर आहां; तेव्हां तूं रथांत बसून आवेशानें

निवालयाम म्हणजे आम्हीही कवच धारण करून
 रथांत बसून तुझ्याचरोवर चलूं. व नंतर तूं
 त्यांच्या छावणीत जाऊन आपलें नांव मांगून
 उचड उचड मामना करून शत्रूंची चांगली
 कत्तल उडीव; आणि मग मोटमोठ्या असुरांना
 मारल्यावर इंद्रानें जमा आनंद केला तसा तूं
 आनंद कर. कारण. तो देव्यांवर जमा संतापल्या-
 वर सर्व देव्यांना जिंकू शकला, तमाच तूं
 ही ममरांगणांत शिखल्यावर पांचालांची सर्व
 मेना जिंकू शकशील. युद्धांत मी वगेवर
 अमल्यें आणि कृतवर्मांचाही पाठिंबा असला
 म्हणजे. एवढा शक्तिमान् प्रभु इंद्र स्वरा. पण
 तो जरी उतरून आला तरी त्याचा देखील
 तुझ्यापुढें निभाव लागणार नाही. वावागे.
 आणखी तुला असेही मांगून ठेवितां कीं.
 रणांत पाऊल टाकल्यावर मी काय किंवा कृत-
 वर्मा काय. पांडवांना निकल्यावांचून म्हणून
 तेथून हालणारच नाही ! युद्धांत चिडून गेले-
 ल्या पंचालांना आणि त्यांचरोवरच पांडवांना
 ठार करूं तेव्हांच मावागे फिरूं; किंवा हें जर
 न होईल तर स्वतः धारगतीहीं देह ठेवून
 स्वर्गाला जाऊं. वा शूर वीर, उदयीक प्रातः-
 काळीं युक्तिप्रयुक्तींनीं आम्ही तुला मदत करूं
 हें मी तुला खरें खरें मांगतो !

अश्वत्थाम्याचा कोप.

राजा. मामानें हिताचें म्हणून जें हें भाषण
 केलें, तें ऐकून अश्वत्थामा संतापून डोळे लाल
 करून आपल्या मामाला उत्तर करितो. "मनुष्य
 दुःखानें व्याकूल झालेला असला, किंवा संतापा-
 च्या आवेशांत असला. अथवा एखादी गोष्ट
 मनांत आणून आणून विचारांत गर्क झालेला
 असला. अगर कांहीं तरी माधण्याच्या नादानें
 लागला असला. तर त्याला झोंप कशाची येणार ?
 तर आज हे चारही प्रकार मजमध्ये आहेत. हें
 ध्यानांत आणा. या चौकडीपैकी एक जो

संताप, तो माझ्या झोंपेवर क्षणांत घाला घालील. पित्याचा वध झालेला राहून राहून मनांत आल्यावर किती तरी माझ्या मनाला दुःख होत असेल ! माझ्या अंतःकरणांत जो आज भडका झाला आहे, तो रात्रंदिवस केव्हांच म्हणून शांत होत नाही. त्यांत विशेषकरून त्या चांडाळांनीं माझ्या डोळ्यांमधून माझ्या पित्याचा वध केला ही गोष्ट मनांत घोळून घोळून माझे अंतःकरण तिळतिळ तुटते आहे ! माझ्यासारखा मनुष्य जगांत एक क्षणभर देखील जगू नये, तो मी जगलों कसा ? आणि द्रोणाचार्य मारला गेला, हे पांचालांचे आनंदाचे उद्गार ऐकून घेतों कसा ? धृष्टद्युम्नाची सरशी झाल्यामुळे आतां जगांत देखील जिवंत राहू नयेसं मला वाटू लागले आहे. त्यांनें माझ्या पित्याचा वध केला त्यापेक्षां तो ठार व्हावयास पाहिजे आणि सर्वच पंचालवीर ठार व्हावयास पाहिजेत !

“ भीमाच्या गदेच्या प्रहारानें मांडी फुटल्यावर दुर्योधन राजानें जो विलाप केलेला मी कानांनीं ऐकला, तो ऐकल्यावर, कितीही कृपण माणूस असला तरी त्याचें देखील अंतःकरण फुटलें असतें, आणि कितीही निर्दय जरी माणूस असला; तरी त्याच्या डोळ्यांतून टप-टप अश्रु गळले असते ! ऊरुभंगानें जीव कासावीस होऊन त्या वेदनेंत दुर्योधनाचे तोंडून जे उद्गार निघाले, ते कानांवर पडलेले असल्यावर, आणि माझ्या जिवांत जीव अमतांच आमच्या पक्षाचा पुरा मोड झालेला मनांत आल्यावर, उमळणाऱ्या लाटांनीं जमा समुद्र फुगत जातो तसें माझ्या शोकाला भरतें येऊन तो अनावर होतो ! मग एकांत सांपडून मनाचे विचार सुरू झाल्यावर मला झोंप मिळावी कशी ? आणि जिवाला स्वस्थपणा यावा कसा ? त्या शत्रूंना जोंपर्यंत श्रीकृष्ण

व अर्जुन यांचें रक्षण आहे, तोंपर्यंत इंद्राला देखील ते भारी आहेत अशी माझी समजूत आहे. तरी पण संतापाभि जो आंत पेटला आहे तोही माझ्यानें आवरून धरवत नाहीं. हा माझा आवेश कमी करून मला थांबवून धरील असा माणूस एकही मला जगांत दिसत नाहीं. या संतापांत जो माझ्या मनाचा निश्चय ठरला तोच मला पसंत आहे. आपल्या पक्षांतील लोकांचा पराभव होऊन पांडवांचा जय झाला ही वार्ता जामुदांचे तोंडून ऐकल्यापामून माझ्या मनाची जळजळ अनिश्चय तीव्र होत आहे. म्हणून मी आज शत्रु निजले अमतांच त्यांची कत्तल करून मग विश्रान्ति घेणार आणि स्वस्थपणानें झोंप घेणार ! ”

अध्याय पांचवा.

—:०:—

शिविरद्वारीं आगमन.

कृपाचार्य म्हणतात:— जो मनुष्य स्वभावतः मंदबुद्धीचा असून मनोविकारांच्या ताब्यांत राहिलेला असतो. त्यानें धर्माचें व नीतीचें रहस्य समजून घेण्याचें मनांत जरी आणिलें, तरी त्याला तें कधीही पूर्ण समजू शकणार नाहीं असें माझे मत आहे. त्याचप्रमाणें, मनुष्य बुद्धिशाली जरी असला. तरी ज्याच्या मनाला वळण चांगलें लागलें नाही त्याला धर्माची व नीतीची तसें कधीही समजणार नाहीत. जो बुद्धीचा जड, तो धिमेपणानें फार दिवस जरी एखाद्या पंडितानजवळ राहिला, तरी पक्षात्रांच्या रमांत पळा पुष्कळ बुद्धि निघूनही जशी त्यांची गोडी त्याला समजत नाही, तसा या माणसाला धर्मतत्त्वांचा बोध म्हणून होत नाही; पण तोच बुद्धिमान् पुरुष पंडिताजवळ येऊन थोडाच वेळ जरी त्याच्या सहवासांत राहिला. तरी तेव्हांच सर्व धर्म-

रहस्य ग्रहण करितो, याला दृष्टांत जिव्हा, तिला पकात्रांना स्पर्श केल्याबरोबर त्यांची गोडी पुरी समजून जाते ! माणमाची बुद्धि तीव्र अमून व मनाला शिस्त लागलेली अमून ज्ञान संपादण्याचे अगत्यही जर त्यामध्ये अंमेल तर तो सर्व शास्त्रे आपलीशी करून टाकील आणि त्यापैकी जो उचलण्यासारखा भाग अंमेल त्यासंबंधाने विनंद्वाद घालीत ब्रमणार नाही. परंतु कोणाची किंमत न ठेवणारा, हेकड, हलकट असा जो अंमेल, तो हिताची गोष्ट कोणी सांगितल्यास ती टाकून पापकर्म करीत मुटतो. ज्याला हितचिंतक व इष्टमित्र अमतात, त्यालाच ते पापमार्गापासून परतवू पहातात; मग त्याची ग्रहदशा चांगली अमली तर तो उद्देशाने मात्रा फिरतो, व ती फिरली अमली तर त्याला विपरीत बुद्धि आठवते. ज्याप्रमाणे भांबावून गेलेल्या माणमाला इकडच्या तिकडच्या चार गोष्टी सांगून ताळ्यावर आणिता येते, त्याचप्रमाणे कुमार्गात शिरणाऱ्याला त्याच्या मित्राने मन्मार्गावर आणणे शक्य असते; आणि ते जर शक्य नमले, तर त्या माणमाचा घातच होतो. ह्मणून पापकर्माला प्रवृत्त होणाऱ्या मुजाण मिताला शहाणे लोक आपली अकल सर्वे गर्व करून वरचेवर मार्गे ओढीत असतात !

तर, बाबारे, हिताकडे दृष्टि ठेवून व आपल्याशी विचार करून मन आवरून धर आणि मी सांगतो ते ऐक, ह्मणजे तुला मागून पश्चात्तापांत पडण्याचा प्रसंग येणार नाही. **कोणी असतील त्यांचा वध करणे हे शास्त्राच्या दृष्टीने प्रशस्त नाही.** त्याचप्रमाणे, हातचे शस्त्र ज्यांनी टाकून दिले, अथवा ज्यांचे रथ, अश्व वगैरे कोणतेही वाहन नाहीसे झाले, किंवा ज्यांनी 'मी आपला आहे' असे ह्मणून धारा मागितला, अगर जे शरण आले, किंवा

ज्यांचे शिरस्त्राण उडून गेले, अगर घोडा मारला गेला, अशा कोणाचाही वध करणे शास्त्राने अगदी अप्रशस्त गणले आहे; आणि आज तर ते पांचाल कवच काढून ठेवून निःशंकपणाने प्रताप्रमाणे निजून रहाणार; अशा स्थितीत जो कोणी कपटाने त्यांचा घात करण्यास प्रवृत्त होईल तो अफाट, घोर आणि दुस्तर नरकांत जाऊन बुडेल हे अगदी उघड आहे ! जगांत जेवढे अस्त्रवेत्ते आहेत त्यांत तू अग्रगण्य व विख्यात आहेस आणि ह्या लोकां आजपर्यंत तुला पातक तिळभर देखील शिवलेले नाही. ह्मणून सूर्यासारखा तेजस्वी असा तू ज्यां सूर्यादय झाल्यावर पंचमहाभूतांना माक्षी ठेवून उघड रीतीने शत्रूंना जिंकून टाकशील, कोणतेही निन्द्यकर्म तू करावे हे तुझ्या प्रतिष्ठितपणाला अगदी शोभणार नाही; पहा—निर्मल व शुभ्र पटलावर रक्तकलंक कसा दिसतो ? तर हे असे माझे मत आहे !

अश्वत्थामा उत्तर करितो:—मामा, तुझी जे आतां सांगितले ते सर्व खरे आहे ह्यांत मंशय नाही. परंतु हा शास्त्राचा बंधारा शत्रूंनी शेंकडों वेळां फोडून टाकिला आहे. सर्व राजे लोकांच्या नजरेदेखत व तुझी देखील जवळ अमतांना. हातचे शस्त्र टाकल्या वेळीं माझ्या पित्याचा वध घृष्ट्युद्धाने केला ! महारथी कर्ण याच्या रथाचे चाक निमटून तो परमावधीच्या संकटांत पडलेला पाहून अर्जुनाने त्याला मारले ! त्याचप्रमाणे शतनुपुत्र भीष्म शस्त्रायुधे सर्व टाकून स्वस्थ उभा असतां तशी वेळ साधून—शिखंडीला पुढे केलेलाच होता—त्याच्या आडून अर्जुनाने भीष्माला बाण-प्रहाराने मारले. तसेच महाधनुर्धारी भूरिश्रवा रणांत सहज सांपडला तेव्हां राजे लोक हाहाकार करीत असतां त्याचे ममक्ष सात्यकीने त्याला मारून पाडले. पुढे आणखी भीमाने

गदा घेऊन समरांगणांत येऊन राजे लोक तडस्थपणानें पहात उभे असतां अधर्मयुद्ध करूनच दुर्योधनाला चीत केलें ! दुर्योधन एकदा पाहून महारथी योद्धे बरोबर घेऊन त्या कर्दनकाळ भीमानें त्याला वेढून अधर्मानेंच मारून टाकलें नाहीं तर काय ? मांडी फोडली गेल्यावर दुर्योधनाचा जो विलप जासुदांचे तोंडून मी ऐकला, तो मनांत येऊन माझे अंतःकरण तिळतिळ तुटतें आहे. अशा रीतीनें त्या दुष्ट, अधम, पापी पांचाळांनीं वारंवार धर्माचा आळा मोडून टाकला व मर्यादा टाकली; असें असतां तुम्ही त्यांची कां निर्दा करीत नाहीं ? माझ्या पित्याचा वध ज्यांचे हातून झाला, त्या पांचाळांना मी आज रात्री झोंपेत मारून टाकणार ! मग त्या पातकानें मला किडा किंवा पांखरूं अशा क्षुद्र योनींत जन्म घ्यावा लागेल हें कबूल; तरी पण हें जें काम करण्याचें माझ्या मनांत येऊन चुकलें तें केव्हां माझे हातून होईल अशी हुरहुर मला लागून राहिली आहे; मग ती मला झोंप कशाची लागू देणार ? व मला स्वस्थपणा तरी कमा मिळू देणार ? त्यांना मारून टाकण्याचा जो हा माझा संकल्प झाला आहे, तो फिरविणारा माणूस जगांत झालेला नाहीं व होणारही नाहीं !

संजय सांगतो:—हे महाराजा, याप्रमाणें बोलून तो प्रतापी अश्वत्थामा एकांतांत मुकाट्यानें रथाला घोडे जोडून शत्रूंवर हला करण्याकरितां निघाला, तेव्हां पोक्त बुद्धीचे जे कृपाचार्य आणि कृतवर्मा ते दोघे त्याला विचारितात, “ रथ काय उद्देशानें जोडलास, काय करण्याचें मनांत आणिलें आहेम ? अरे नरवरा, तुझे जे प्रयत्न आणि उपाय तेच आमचे; तुझे जें सुख आणि दुःख तेंच आमचें; या संबन्धानें मुळीं मुद्धां कितु मनांत आणूं नको. ” तेव्हां पित्याचा वध झालेला आठ-

वून आठवून संतापून गेलेला अश्वत्थ आपल्या मनांत जें करण्याचें आलें होतें सर्व त्यांना खरें खरें सांगू लागला, “ पाणांनीं लक्षावधि योद्धे मारून मग ह शस्त्र खालीं टाकून दिल्यावर माझ्या पित् वृष्टद्युम्नानें मारलें; तर अमा अधर्म करणा त्या पापी पांचालराजपुत्राला मीही उपायानेंच मारणार ! मग माझ्या हातून चांडाळाला एखाद्या यज्ञांतल्या पशूप्रमरण आल्यावर धारातीर्थीं देह टाकणा वीरांना मिळणारी उत्तम गति त्याला कश मिळणार ? मिळणारच नाहीं, अशी मला ख आहे. तर तुम्ही उभयतां महारथी वीरहो, तु कवच धारण करून खड्ग व धनुष्य हात घेऊन माझ्या पाठोपाठ रहा !

राजा, इतकें झणून रथावर बसून अ त्यामा शत्रूंवर चाल करून निघाला. त्याच्या मागोमाग कृप व कृतवर्मा हेही निघा अशा रीतीनें शत्रूंवर चालले तेव्हां ते यज्ञांत आहुति पडून पेटलेल्या तीन अ प्रमाणें देदीप्यमान दिमले. मग शत्रूंकडे लोक छावणींत गाढ झोंपी गेले होते टिकाणीं ते येऊन पोचले, तेव्हां तो शूर अ त्यामा छावणीच्या दाराशीं येऊन थंबकला.

अध्याय सहावा.

—:०:—

महद्भूतदर्शन.

धृतराष्ट्र प्रश्न करितो:—संजया, दाराजव अश्वत्थामा थांबला तें पाहून कृप व कृतव या उभयतांनीं काय केलें तें सांग पाहू !

संजय सांगतो:—कृप व कृतवर्मा यां ममलन करून अश्वत्थामा संतापाच्या आं शांत वेगानें दाराच्या अगदीं तोंडाशीं येऊन ठेपलाच. मग तेथें दार अडवून ब



अथयाम्याग्नें त्यावर् दित्य अस्त्रांनी वृष्टि केली. मंत्रिकरुपे वृष्ट १३० ।

लेला जो एक प्राणी त्याने पाहिला त्याचे काय वर्णन करावे ? तो किती तरी धिप्पाड अमून चंद्रमूर्याप्रमाणे त्याचे तेज होतें; त्याचे अंगावर व्याघ्रचर्म होतें; रक्ताचे पाट त्याच्या अंगावरून वहात होते; त्याने कृष्णाजिन पांघरले होते; नागांचे यज्ञोपवीत त्याने धारण केले होते; त्याचे हात किती तरी लांबलचक आणि लठ्ठ अमून नानाप्रकारची शस्त्रां घेऊन प्रहार करण्याला तयार असे होते; बाहुभूषणांच्या ऐवजी मोठमोठे सर्प त्याने बांधले होते; आणि त्याचे तोंड ज्वाळांच्या लोळांनी व्यापून गेले होते; त्याचा जबडा पसरमेला अमल्यामुळे दांत बाहेर दिमत अमून तोंड अक्राळविक्राळ दिमत होतें; त्यांत चित्रविचित्र हजारों डोळ्यांचा चमत्कार; मिळून अंगावर कांटा येण्यासारखे भेमूर एकंदर ध्यान होतें,—त्या रूपाचे आणि वैषाचे वर्णन करावे तितके थोडेच ! ते पाहिल्यावर खचित डोंगर सुद्धा भीतीने दुभंगतील ! त्याच्या तोंडांतून, नाकांतून, कानांतून आणि त्या हजारों डोळ्यांतून जिकडे तिकडे आगचे लोट बाहेर निघत होते. त्याजप्रमाणे त्याच्या तेजाच्या किरणांतून शंख, चक्र, गदा हातांत धारण केलेल्या कृष्ण-परमात्म्याच्या मूर्ति शंकरां दिसें लागल्या; पहातां पहातां हजारों दिसें लागल्या !

राजा, असा तो महाभयंकर व अद्भुत प्राणी पाहिल्यावरही गांगरून न जातां अश्व-त्थाम्याने त्यावर दिव्य अस्त्रांची वृष्टि केली, परंतु समुद्रांत वडवानल ज्याप्रमाणे पाण्याचे ओष पोटांत घेऊन गडप करून टाकतो, त्या-प्रमाणे अश्वत्थाम्याने सोडलेले सहस्रावधि बाण त्या अत्राद्वय प्राण्याने गिळून टाकिले ! आपण सोडलेले बाणांचे वर्षाव त्याने गिळून टाकले आणि त्यांपामून काम कांहींच झाले नाही असे पाहून अश्वत्थाम्याने आगीच्या

लोळाप्रमाणे लकलकणारी आपली रथशक्ति त्याच्यावर सोडली; परंतु टोंकाशीं जळत अम-लेली ती रथशक्ति त्या प्राण्याच्या अंगावर धडकून भंगून गेली ! राजा, मिथुनराशीवरून कर्कराशी-वर जाऊन मूर्याचे तेज अतिप्रखर झाले असतां त्या स्थितीत सूर्यमंडलावर आकाशांतून निघून एखादी मोठी उल्का येऊन पडावी आणि फुटून म्हाक व्हावी, तसा प्रकार त्या वेळीं झाला ! मग अश्वत्थाम्याने म्यानांतून सोन्याची मूठ अमलेले अति तेजःपुंज खड्ग झटकून उपमून काढले, तेव्हां जणू तीव्र विषाणे जळणारा एक सापच बिळांतून बाहेर ओढून काढला काय असे वाटले. नंतर ते दिव्य खड्ग त्या घोरणी अश्वत्थाम्याने त्या प्राण्यावर सोडले, परंतु मुंगूस जसा बिळांत सहज शिरतो तसे ते खड्ग येऊन त्या प्राण्याच्या अंगांत कोठें शिरले ते समजले देखील नाही ! तेव्हां अगदी संतापून जाऊन अश्वत्थाम्याने विद्युल्लेपप्रमाणे झळकणारी गदा त्या प्राण्याचे अंगावर फेंकली, परंतु त्याने तीही गिळून टाकली !

अश्वत्थाम्याचा पश्चात्ताप.

राजा, इतके झाल्यावर नवळचीं सर्व आयुधे संपलीं, तेव्हां अश्वत्थामा इकडे तिकडे पाहूं लागला. तो आकाश सर्व जनार्दनाच्या मूर्तींनी व्यापून जाऊन रिती जागाच उरली नाही असे झालेले त्याच्या नजरेस पडले. राजा, अगोदरच निःशस्त्र झालेला, त्यांत तो चमत्कार पाहिल्यावर अश्वत्थामा चरफडून कृपाचार्यांचे भाषण आठवून झणतो, आर्षी कडू परंतु परिणामी हितकर असा उपदेश मित्रमंडळी करीत असतां जो मनुष्य ऐकत नाही, तो संकटांत सांपडला म्हणजे पस्ताण्यांत पडतो; झाला मामाच दाखला पहा. त्या दोघांनी सांगितलेले मी ऐकले नाही झणून मला अशी वेळ आली. ज्यांना मारूं नये

म्हणून शास्त्रांत सांगितलेले आहे, त्यांना दांड-
गाईने शास्त्र न जुमानतां जो मारूं पहातो तो
सन्मार्गांतून कुमार्गांत शिरल्यामुळे शेवटीं आ-
पला घात करून घेतो ! गाई, ब्राह्मण, राजा,
स्त्रिया, मित्र, माता, पिता, दुबळे, मूर्ख, अपळे,
झोंपी गेलेले, भयाने दचकून उठलेले, माथेफिरू,
हर्षवायु झालेले, इत्यादि प्रकाराच्या माणसां-
वर कधीही शस्त्र उगारूं नये; याप्रमाणें वाड-
वडिलांनीं सर्व माणसांना बोध करून ठेविला आहे.
तो पुरातनचा सशास्त्र मार्ग सोडून अनीतीनें
हें काम आरंभून मी या भयंकर संकटांत येऊन
पडलों ! एखादें मोठें कृत्य आरंभून पराक्रमानें
तें काम शेवटाला नेण्याचें न साधून माणसानें
भीतीनें माघार खावी ही फार भयंकर आपत्ति
होय अमें शास्त्रवेत्त्यांचें मत आहे. देवापुढें
माणसाच्या पराक्रमानें कांहीं चालत नाही अमें
सांगितलें आहे. मनुष्याच्या हातून शक्य तो
प्रयत्न तो करीत असतां जर तो देवानें साधत
नाहींसें झालें, तर त्या माणसानें मुकृत संपलेंच
हणून समजावें; आणि तो निःसंशय संकटांत
पडतो, मी अमुक गोष्ट करीनच करीन अशी
प्रतिज्ञा करणें हा केवळ मूर्खपणा आहे अमें
शाहण्या लोकांचें मत आहे. कारण, उमेदीनें
मोठें कार्य आरंभून पुढें भिऊन मार्गें परतण्याची
वेळ येते. तर तात्पर्य काय कीं, अधर्माचरणानें
हें भय मला प्राप्त झालें आहे. अधृत्यामा लडा-
ईत जाऊन मार्गें फिरला अमें कधीही होऊं
नये; परंतु पहा कमें हें प्रचंड धूड काळदंडा-
प्रमाणें आडवें आलें आहे तें ! कितीही विचार
केला तरी हें काय असावें तें ध्यानांतच येत
नाहीं. एवढें स्वचित कीं, ही माझी चळलेली
बुद्धि जी अधर्माकडे वळली तिचें हें भयंकर
फळ असून याचा शेवट फार घातक होणार.
तर आज मी लडाईत मार्गें फिरावें असा देवा-
चाच संकल्प दिसतो. देवसंकेताविरुद्ध कोणा-

च्याही हातून कांहीं होणें शक्य नाही. तर
मी आतां सर्वशक्तिमान् प्रभु जो महादेव
त्यालाच शरण जातो; म्हणजे हा मला आडवा
आलेला देवदंड तो नाहीसा करून टाकील !
देवांचा देव, जटाधारी, कपालमाला धारण
करणारा, उमापति जो शंकर तोच तपोबलानें
व पराक्रमानें सर्व देवांहून श्रेष्ठ आहे, तेव्हां
त्या शूलपाणि गिरिशाल्याच मी शरण जाणार !"

अध्याय सातवा.

—:—

अश्वत्थाम्याचें ईशस्तवन.

संजय सांगतो:—हे महाराजा, असा
विचार ठरवून अश्वत्थामा रथावरून खालीं
उतरला आणि हात जोडून शंकराचें ध्यान
करीत उभा राहिला. तें अमें:—

उग्रं स्थाणुं शिवं रुद्रं शर्वमीशानमीश्वरं ।
गिरिशं वरदं देवं भवभावनमीश्वरं ॥ १ ॥
शितिकंठमजं शुक्रं दक्षकतुहरं हरं ।
विश्वरूपं विरूपाक्षं बहुरूपमुमापतिं ॥ २ ॥
इमशानवासिनं द्रुपं महागणपतिं विशुं ।
खट्वांगधारेणं रुद्रं जटिलं ब्रह्मचारिणं ॥ ३ ॥
मनसा सुविशुद्धेन दुष्करेणालपचेतसा ।
सोऽहमात्मापहारेण यक्ष्ये त्रिपुरघातिनं ॥ ४ ॥
स्तुतं स्तुत्यं स्तुयमानममोघं कृत्तिवाससं ।
विलोहितं नीलकंठमसह्यं दुर्निवारणं ॥ ५ ॥
शक्रं ब्रह्मसृजं ब्रह्म ब्रह्मचारिणमेव च ।
व्रतव्रतं तपोनिष्ठमनंतं तपतां गतिं ॥ ६ ॥
बहुरूपं गणाध्यक्षं त्र्यक्षं पारिपदाप्रियं ।
धनाध्यक्षं क्षितिमुखं गौरीहृदयवल्लभं ॥ ७ ॥
कुमारपितरं पिंगं गावृषोत्तमवाहनं ।
तनुवाससमत्युग्रामुमाभूषणतत्परं ॥ ८ ॥
परं परेभ्यः परमं परं यस्मान्न विद्यते ।
श्वस्त्रोत्तमभर्तारं दिगंतं देशरक्षिणं ॥ ९ ॥
हिरण्यकवचं देवं चंद्रमौलिबिभूषणं ।
प्रपद्ये शरणं देवं परमेण समाधिना ॥ १० ॥
राजा, याप्रमाणें स्तवन करून अधृत्यामा
पुढें हणतो, " हें जें माझ्यावर घोर, दुस्तर
संकट येऊन पडलें आहे, यांतून जर मी

पार पडलों, तर मी त्या पवित्र महादेवा-
प्रीत्यर्थ याग करून परम पवित्र असा सर्व-
भूतबलि अर्पण करीन ! ”

शंकराच्या गणांचें दर्शन.

राजा, त्या पुण्यवान् अश्वत्थाम्याचा तो
निर्धार योगमामर्श्यानें जाणून शंकराने जी
माया प्रकट केली, तिच्या योगाने त्या महात्म्या
अश्वत्थाम्यासमोर एक सुवर्णमय वेदी प्राप्त
झाली; आणि त्या वेदीवर तत्काळ अग्नि
प्रज्वलित होऊन त्याच्या ज्वालांनी दिशा-
उपदिशा, अंतरिक्ष सर्व व्यापून गेलें; आणि
त्या अर्धातून दीपामारखे आणि पर्वतामारखे
मोठमोठे शिवगण प्रकट झाले. त्यांच्या तोंडां-
तून व डोळ्यांतून ज्वाळा निघत होत्या;
प्रत्येकाला किती तरी पाय, डोकी आणि
हात होते; चित्तविचित्र रत्नवचिन बाहुभूषणें
घातलीं अमून त्यांनीं हात वर केले होते;
त्यांपैकीं कित्येकांचें कुड्यांप्रमाणें रूप होतें;
कित्येकांचें दुकरांप्रमाणें होतें; कित्येकांचें उंट-
सारखें होतें; कित्येकांचीं घोड्यांसारखीं तोंडें
होतीं; कित्येकांचीं केल्यांसारखीं होतीं;
कित्येकांचीं बैलांसारखीं होतीं; अश्वलांसारखीं
कांहींचीं तर मांजरांसारखीं कांहींचीं; वाघां-
सारखीं कांहींचीं तर हत्तींसारखीं कांहींचीं;
कांहीं कावळ्यांसारख्या तोंडांचे तर कांहीं
पोपटतोंड्ये व कांहीं माकडतोंड्ये होते; प्रचंड
अजगरांसारखे कांहीं होते; कांहीं शुद्ध श्वेत-
वर्णाचे व हंसांसारखे होते; कांहीं चापपक्ष्यां-
सारखे होते; कांहीं कामवतोंड्ये होते; कांहीं
सुसरतोंड्ये होते; कांहींचीं लहान पौरांप्रमाणें
तोंडें होतीं; कांहींचीं मोठ्या माणसांप्रमाणें
होतीं; कांहीं मधरांसारखे व कांहीं देवमाशां-
सारखे होते; कांहीं वानरांसारखे. कांहीं कौच-
पक्ष्यांसारखे, कांहीं कपोतांसारखे व कांहीं
पारव्यांसारखे होते; कांहींचे हातांस कान

होते; कांहींना हजारों डोळे होते; कांहींचीं
रूप मोठीं पोटीं होतीं; कांहीं केवळ अस्थिपञ्जर
होते; कांहीं काकमुखी व कांहीं श्येनमुखी
होते; कांहींना डोकींच नव्हतीं; कांहींचे डोळे
आणि जिभा पेटलेल्या होत्या; कांहींच्या
केंसांतून ज्वाळा चालल्या होत्या; कांहींचे
चारही हात आणि अंगांवरील रोम पेटलेले होते;
कांहींचें सर्वांग ज्वाळांप्रमाणें होतें; कांहींचीं
तोंडें मंड्यांसारखी व कांहींचीं हरणांसारखीं
होतीं; कांहींचीं शंखांसारखीं तोंडें, शंखांसारखा
अंगवर्ण व शंखासारखा शब्द अमून शंखांच्या
माळा त्यांनीं अंगांवर घातल्या होत्या; कांहीं
जटाधारी होते; कांहीं पांच शेंड्यांचे होते;
कांहीं बोडके होते; कांहीं अगदी लहान
पोटांचे, तर कांहींना चार चार मुळे, व
कांहींना चार चार जिभा; कांहीं शंकूसारख्या
कानांचे व कांहीं किरीट घातलेले होते; कांहीं
मोजी धारण केलेले तर कांहीं आंवूड केंसांचे
होते; कांहीं मुकुट घातलेले होते, परंतु कांहीं
नुमता चूडामणि धारण केलेले होते; कांहीं
सुंदर तोंडांचे अमून चांगले अलंकार घातलेले
होते; कांहींनीं कमळांच्या माळा घातल्या
होत्या; आणि. राजा. मगळ्यांचें सामर्थ्य
फार अद्भुत होतें. याप्रमाणें. हे भारता, असे
ते शंकडो हजारों गण दिग्गू लागले. कांहींचे
हातांत शतघ्नी नांवाच्या शक्ति होत्या; कांहींचे
हातांत वज्र होतीं; कांहींच्या हातांत एकेक
मुमळ तर कांहींच्या हातांत भुशुंडी आणि
कांहींच्या हातांत पाश व कांहींच्या काठ्या;
कांहींच्या पाठीस नानाप्रकारच्या चित्रविचित्र
वाणांनीं भरलेले भाते लटकलेले होते आणि
कांहींजवळ निशाणें व बाहुटे फडकत होते;
तशांत घंटांचा शब्द चाललाच होता;
कोणाच्या हातांत परश्वध नांवाचें शस्त्र होतें;
कोणी महापाश हातांत घेऊन सज्ज होते;

कोणीं दांडकीं घेतलीं होतीं; कोणीं मोठाले खांब घेतले होते; कोणीं खडे घेतलीं होतीं; कोणाच्या डोक्यावर मोठमोठ्या सर्पांचेच किरिट होते व सर्पांचीच बाहुभूषणे होतीं; शिवाय इतरही चित्रविचित्र भूषणे त्यांच्या अंगांवर होतीं; कोणाच्या निशाणांभोंवतीं जिकडे तिकडे धूळच धूळ झाली होती आणि कोणाचीं अंगे चिखलाने भरली होतीं; कोणाचीं वस्त्रे शुभ्र व माळाही शुभ्र होत्या; कांहींचा अंगवर्ण निळा होता व कांहींचा पिंगट होता. राजा, त्या दिव्यकांतीच्या गणापैकीं कांहींजण मोठ्या आनंदाने नगारे, शंख, मृदंग, झांजा, तबले, शिंगे वगैरे वाद्ये वाजवू लागले; कांहीं गाऊं लागले व कांहीं नाचू लागले. कांहीं खूब लांब लांब टांगा टाकीत चालले, कांहीं उड्या मारीत चालले व कांहीं रथांतून भरघाव चालले; कांहीं वेगाने धावत होते; कांहींचीं डोक्यां अगदीं बोडकीं होतीं व कांहींचे केंस वाऱ्याने उडत होते; व कांहीं माजलेल्या हत्तीप्रमाणे वरचेवर भयंकर शब्द करीत होते. राजा, एकेकाचे रूप पहिले तर भयंकर व अकाळविकाळ अमून हातांत शूळ आणि भाले होते; निरनिराळ्या रंगांचे पोषाख त्यांच्या अंगांवर होते आणि निरनिराळ्या प्रकारच्या उड्या त्यांनीं लावल्या होत्या. कांहींनीं रत्नखचित भूषणे हातांत घालून हात वर केले होते; शत्रूंना जेर करून सहज मारून टाकणारे असे ते एकापेक्षां एक शूर आणि पराक्रमी होते; ते रक्ताचे व चरबीचे पाटचे पाट पिऊन टाकणारे आणि मांस व आंतडीं हींच अन्न म्हणून खाणारे होते; कांहींच्या टाळूवरच तेवढे तुऱ्यामारखे केंस होते; कांहींच्या कानांसच कर्णभूषणांप्रमाणे भूषणे होतीं; कांहींचीं पोटे खोल जाऊन वाटीसारखीं दिसत होतीं; कांहीं फार टेंगणे होते, कांहीं फारच उंच होते, कांहींचे हातपाय लांबच लांब होते; मिळून एकेक तऱ्हेनें एकेक असे सर्व भेसूर दिमत होते. कांहींचे ओंठ काळेभोर व लांबने अमून अगदीं हिडीस दिमत होते; कांहींच्या पायांच्या पोटाच्याच मात्र लड्ड; आणि कांहींचे वृषण तर कांहींचे दुसरे एखादेच मात्र इंद्रिय खूब मोठे होते!

राजा! त्यांचा महिमा काय मांगावा? भूतलावर सूर्य, चंद्र, नक्षत्रे यांमुद्धां आकाश निर्माण करून दाग्विण्यामार्गेने त्यांचे सामर्थ्य; चतुर्विध भूतग्रामाचा क्षणांत नायनाट करून टाकण्यामार्गवी त्यांची उमेद; प्रत्यक्ष शंकराची स्वारी क्रुद्ध होऊन रुद्ररूप दाखवू लागली अमतां ते पाहूनही त्यांच्या मनाला भय नाही. उलट मदा त्यांच्या मनाला आनंद व संतोष अमून कधीही अम्या टाऊक नाही; वाग्देवता त्यांना वशच आणि आठही प्रकारचे ऐश्वर्य स्वाधीन अमून त्याबद्दल त्यांना गर्व नाही; त्यांची अद्भुत कृत्ये पाहून शंकरालाच नेहमी कौतुक वाटते ! हे भारता, असे हे शिवगण नेहमी कायावाचामनेंकरून शंकराचे आराधन करीत असतात; आणि शंकराची कायावाचामनेंकरून अगदीं पाटाच्या पोरांप्रमाणे त्यांचा मांभाळ करीत असतो. हे गगनवले अमतां, ब्रह्मद्वेषे जे अमुरंदत्यादिक त्यांचे रक्तमांस वगैरे खाऊन टाकून यज्ञयागांत हविर्भाग घेऊन चतुर्विध मोम भक्षण करितात ! स्वाध्याय, ब्रह्मचर्य, तपश्चर्या, शमदम वगैरे साधनांनीं त्या शूलीची उपासना करून ते त्याच्या मायुज्याला येऊन पोहोचलेले ! राजा, पार्वतीमहवर्तमान भगवान् पगत्पर प्रभु श्रीशंकर हा आपल्या मायुज्याला येऊन मिळालेल्या या आपल्या अंशभूत गणांच्याच साहाय्यानें चराचर विश्वाचे परिपालन करीत असतो. असो !

अश्वत्थाम्यास शिवदर्शन व खड्गप्राप्ति !

हे भारता, याप्रमाणें निरनिराळीं वाद्यें वाजवीत, हंसत, गर्जना करीत, मंतापत, ओरडत असे नानाप्रकार करून जगाला भयभीत करून सोडणारे हे गण चित्रविचित्र तेज प्रकट करीत व शंकराचें स्तवन करीत करीत अश्वत्थाम्याचे जवळ आले. त्या महात्म्या अश्वत्थाम्याचा महिमा वादविण्याकरितां. त्याचें तेज पाहाण्याकरितां आणि त्याचे हातून होणारा सौप्तिकयुद्धाचा चमत्कार पाहाण्याकरितां ते गणांचे थवेचे थवे उग्ररूप धारण करून खड्ग, शूल वगैरे विविध शस्त्रें घेऊन तेंचें गोळा झाले होते. ज्यांचें दर्शन झालें अमतां संपूर्ण त्रिभुवन भयानें गडबडून जावें. ते अगदीं जवळ आलेले पाहूनही त्या बलशाली अश्वत्थाम्याच्या चित्ताला यत्किंचित् देखील पीडा झाली नाही. उलट हातांत धनुष्यबाण घेऊन व बोटांना वगैरे अंगुलित्त्र घालून मज्ज अमलेल्या त्या वीरानें आपण होऊन आपल्या देहाचा बलि समर्पण केला ! राजा. त्या बलिकर्माच्या विधीला धनुष्याच्या समिधा आणि शुभ्र बाणांचे दर्भ होते; आणि शंकराला आहुति पाहिजे तर ती याचें शरीरच; अशी सामग्री होती ! मग त्या प्रतापी अश्वत्थाम्यानें आपला रागीट स्वभाव अगदीं विमरून जाऊन एक सौम्य मंत्र म्हणून आपला देह समर्पण केला; आणि नंतर, राजा. एकापेशां एक भयंकर करामत करून दाग्विपारा अविनाशीस्वरूप जो रुद्रावतारी शंकर. त्याचें स्तवन करून व हात जोडून तो बोल्ले लागला.

अश्वत्थामा म्हणाला. "हे प्रभो. हा अंगिरसाच्या कुळांत उत्पन्न झालेला देह आज मी या अग्नीमध्ये आहुतिस्थानीं समर्पण करीत आहे त्वाचा तूं स्वीकार कर. हे चराचरव्यापी महादेवा, या घोर संकटांत भक्तीनें चित्तानीं

एकाग्रता करून तुझ्यामोर मी आत्म्याचें निवेदन करितों, जडाजड विश्व सर्व तुजमध्ये आहे आणि सर्व भूतांचे ठायीं तूं आहेस; तमेंच मत्त, रज, तम, हे तिन्हीगुण तुजमध्ये एक-त्वाला पावलेले आहेत; प्राणिमात्राला तूंच आधार आहेस; व तूं विश्वाचा नाथ आहेस. तेव्हां, हे देवा, शत्रु जर मला अजिंक्य झाले आहेत तर हा अमाच माझा स्वीकार कर ! "

राजा. इतकें बोलून, ज्या वेदीमध्ये अग्नि प्रज्वलित झाला होता त्या वेदीवरून अग्नीमध्ये उडी टाकून अश्वत्थामा खुशाल तेंचें चढून बसला. मग, हात वर करून निश्चेष्टपणें बसलेल्या त्या अश्वत्थाम्याची आहुति घेऊन पडलेली पाहून तो प्रत्यक्ष भगवान् श्रीशंकर मंदहास्य करून ह्मणतो, " मत्त, शौच, आर्जव, दान, तप, नियम, क्षमा, भक्ति, धृति, बुद्धि, वाणी वगैरे सर्व माधनांनीं त्या पुण्यशाली कृष्णानें यथाविधि माझे आराधन ज्यापेशां केलें आहे. त्यापेशां त्याच्याहून अधिक प्रिय मला कोणीही नाही. ह्मणून, बाबागे. त्याचा बहुमान करण्याकरितां आणि तुझी परीक्षा पाहाण्याकरितां मी एकदम ते पांचाल गुप्त केले आणि नानाप्रकारची माया करून दागविली. पांचालाचें रक्षण करून मी केवळ त्यांचाच बहुमान केला; पण आज काळानें त्यांना गांठले अमून आतां ते जिवंत राहूं शकत नाहीत ! "

त्या महात्म्या अश्वत्थाम्याला इतकें सांगून आणि दिव्य खड्ग घेऊन शंकरांनीं त्याच्या तनूमध्ये प्रवेश केला. मग साक्षात् शंकराचा संचार अंगांत झाल्यावर अश्वत्थाम्यावर पुनः तेज चढलें आणि तो देदीप्यमान दिप्त लागून त्या परमेश्वरी तेजामुळें त्याला युद्धाचा फारच आवेश चढला; आणि तो शत्रूंच्या छावणीवर साक्षात् शंकराप्रमाणें वेगानें चालून जाऊं

लागला, तेव्हां राक्षस, भूतें वीरे अदृश्य प्राणी त्यांच्या सभोवतीं संचार करूं लागले !

अध्याय आठवा.

—:०:—

रात्रियुद्ध व सर्वसंहार !

धृतराष्ट्र विचारतो:—संजया, अशा रीतीनें महारथी अश्वत्थामा छावणीवर चालून गेला, तेव्हां कृप व कृतवर्मा हे उभयतां भीतीनें गांगरून माघारे परतले नाहीत ना ? यःकश्चित् कोणी तरी नजरेनें त्यांना पाहिलें नाहीं ना ? आणि त्यांस कोणी अडविलें नाहीं ना ? त्या शूरांना तो एकंदर प्रकार दुःमह वाटला नाहीं ना ? व ते माघारे तर फिरले नाहीत ना ? शत्रूंची छावणी तुडवून काढून पांचाल व पांडव यांची कत्तल उडवून रणांत एकदांचे ते उभयतां दुर्योधनाचे उतराई झाले काय रे ? पांचालांनीं मोड केलेला आठवून, ते जमिनीवर पडून झोप घेत अमतां त्यांचा समाचार त्या दोघांनीं चांगला घेतला ना रे ? संजया, हें सर्व तूं मला सांग.

संजय सांगतो:—हे महाराजा, तो महात्मा अश्वत्थामा शत्रूंच्या छावणीकडे निघाला तेव्हां कृप आणि कृतवर्मा हे दाराशीच उभे राहिले. मग, ते शूर योद्धे नेटानें लढण्यास तयार अमलेले पाहून मनांत संतोष पावून अश्वत्थामा हळूहळू त्यांस द्वागतो. .. तुझी अशी कंबर बांधून तयार झाल्यावर मगळ्या क्षत्रियांचा उच्छेद करण्यास मुद्धां दोगेच पुरेमे आहां, मग हे कोठें लढाईतून उरलेले थोडे योद्धे, तेही आतां झोपीं अमलेले, तेव्हां त्यांचा तर सहज समाचार घ्याल ? तेव्हां आतां मी छावणीत शिरून प्रत्यक्ष काळ पुरुषाप्रमाणें संचार करितों, तोंपर्यंत तुमच्या बाजूला जो कोणी येईल तो तुमच्या हातून जिवंत

मुटून जाऊं नये एवढें करा; असाच माझा बेत उरला ! "

राजा, इतकें बोलून अश्वत्थामा पांडवांच्या त्या विस्तीर्ण छावणीत शिरला. मगळ वाट मोडून कोणाकडून तरी घुमून तो वीर वेधडक जो आंत शिरला. तो धृष्टद्युम्न ज्या ठिकाणी असल्याचें त्याला ठाऊक होतें तेंच बेताबेतानें घेऊन ठेपला. इकडे छावणीतले लोक दिवसभर पराक्रमावर पराक्रम करून अगदीं थकून गेलेले होते, कित्येकांची दाणादाण होऊन कर्मे तरी पळून आलेले होते, व आतां त्या श्रमानें मगळे गाढ झोपीं गेलेले होते. मग, राजा, धृष्टद्युम्नाच्या महालांत शिरून पहातो तो धृष्टद्युम्न स्वस्थ निजलेला त्याच्या दृष्टीस पडला. तो ज्या विद्यान्यावर निजला होता तो शुभ्र रेशमाप्रमाणें मऊ व स्वच्छ अमुन त्यावर नाजूक पलंगपोस पमरलेला होता; सभोवतीं फुलें पमरलीं होती; मुग्धांघि द्रव्यांचा धूर चालला होता; व अष्टगंधामारख्या पदार्थांचा घमघमाट मुटला होता.

राजा, तो थोर धृष्टद्युम्न निर्धाम्तपणें खुशाल विद्यान्यापर निजला अमतां त्याला अश्वत्थाम्यानें लथ देऊन जगें केलें. तेव्हां लगेच पायाच्या धक्क्यानें तो मोठा हिंमतदार व रणमन् वीर धृष्टद्युम्न उठला व त्यानें तत्काळ त्या शूर अश्वत्थाम्याला ओळखिलें. पण तो विद्यान्यावरून उठून उभा रहात आहे तोंच त्या बलिष्ठ अश्वत्थाम्यानें दोहों हातांनीं त्याची शेंडी धरून त्याला जमिनीवर लोळविलें. मग, त्याच्याकडून जागें वुक्क्यांचा मार होऊं लागला तेव्हां कांहीमा श्रावरल्यामुळें आणि कांहीमा झोंपेंत अमल्यामुळें धृष्टद्युम्नाच्या हातून कांही प्रतिकार होईना. मग, राजा, त्याला पायांखाली दाबून आणि गळा व छाती दोन्ही घेपून, तो ओरडूं लागला व धडपड करूं

लागला तरी अश्वत्थाम्याने तमाच जनावग-
प्रमाणें त्याचा जीव घेतला ! तथापि त्याला
नगनांनी ओरवाडीत शेवटी शेवटी अस्पष्ट
शब्दांनी तो अश्वत्थाम्याला म्हणाला, “ अरे
गुरुपुत्रा, तूं मला शस्त्रप्रहारानें तरी मारून
टाक. उशीर करूं नको. म्हणजे, हे ब्राह्मण-
श्रेष्ठा, तुझ्यामुळें पुण्यलोक तरी मला लाभेल !”
राजा, इतकें बोलून त्या शूर अश्वत्थाम्यानें
व्याकूळ करून टाकल्यावर धृष्टद्युम्न थांबला,
आणि तें त्याचें अस्पष्ट भाषण ऐकून अश्व-
त्थाम्यानें उत्तर केलें, “अरे कुलकलंका, गुरु-
हत्या करणाऱ्यांना मद्रति मिळत नमते. म्हणून
मूर्खा, शस्त्रप्रहारानें तुझा वध होणें योग्य नाहीं !”
हे महाराजा, इतकें बोलतां बोलतां मिह ज्या-
प्रमाणें माजलेल्या हत्तीला दावून मारतो त्या-
प्रमाणें त्या संतापलेल्या अश्वत्थाम्यानें गुड-
ध्यांनीं जोरानें त्याच्या मर्मस्थळीं दावून दावून
धृष्टद्युम्नाला ठार केलें ! मरतां मरतां त्या
वीरानें ज्या किंकाळ्या फोडल्या, त्या ऐकून
शिविरांतल्या सर्व स्त्रिया व त्याचे हुजरे जागे
झाले. तेव्हां हा अमानुष पगक्रम करणारा
प्राणी पाहून तो कोणी तरी भूतच अमला
पाहिजे असें मनाशीं ठरवून भीतीनें ते सर्व
आरडाओरड करूं लागले. इकडे अशा रीतीनें
धृष्टद्युम्नाला यममदनाला पाठवून तो तेजस्वी
अश्वत्थामा परतून आपल्या सुंदर रथावर चढून
बसला; आणि धृष्टद्युम्नाच्या शिविरांतून बाहेर
पडतांना गर्जना करून त्यानें दाही दिशा
दणाणून टाकिल्या. नंतर आणवी राहिलेल्या
शत्रूंना मारावें अशा उद्देशानें रथांत व्रमून
तो बलशाली वीर पुनः छावणीत शिरला.

इकडे, अश्वत्थामा बाहेर निघून गेल्यावर
त्या स्त्रिया आणि ते हुजरे आकांत करूं
लागले; आणि राजा धृष्टद्युम्न मरून पडलेला
पाहून परमावधीच्या शोकांनं धृष्टद्युम्नाच्या

पदरचे सर्व क्षत्रिय योद्धे हाहाकार करूं
लागले. त्या स्त्रियांच्या आगेच्या ऐकून जव-
ळचे क्षत्रिय वीर झटकन् उठून मज्ज होऊन
' ही काय गडबड आहे ! ' अशी चौकशी
करूं लागले. तेव्हां, राजा, अश्वत्थाम्याला पाहून
अगदीच घाबरून गेलेल्या त्या स्त्रिया, ' लवकर
धावा हो ! हा कोण राक्षस आहे का मनुष्य
आहे हेंच आह्वांम ममजत नाहीं; परंतु धृष्ट-
द्युम्नाला मारून टाकून हा पुनः रथावर चढून
बसला आहे ! ' असें दीनपणानें भाकूं लागल्या !
मग एका क्षणांत ते पुढारी योद्धे तेंथें गोळा
झाले; आणि जेव्हां सर्वजण हल्ला करूं लागले
तेव्हां अश्वत्थाम्यानें रुद्रास्त्र मोडून त्या सर्वांचा
ममाचार घेतला. अशा रीतीनें धृष्टद्युम्नाला
आणि त्याच्या अनुयायांना ठार केल्यावर
त्यानें जवळच दुसऱ्या विद्यान्यावर निजलेला
उत्तमोजा नांवाचा वीर पाहिला. तेव्हां त्यानें
त्यालाही खाली पाडून त्याचा गळा आणि ऊर
जोरानें पायांवाली दडपून तो ओरडत अमतां
तमेंच मारून टाकिले. इतक्यांत युधामन्यु तेंथें
आला आणि तो मेलेला पाहातांच कोणी तरी
राक्षसानें याला मारिले अमावें अमा तर्क
करून त्यानें गदा उगारून ती जोरानें अश्व-
त्थाम्याच्या छातीवर फेंकली. तेव्हां अश्व-
त्थाम्यानें त्याच्या अंगावर धावून जाऊन
त्याला जमिनीवर पाडलें. आणि त्याचें अंग
लटलट कांपत अमतां त्यालाही पूर्वाप्रमाणेंच
—जनावराला मारावें तमें—मारून टाकलें ! या-
प्रमाणें त्याला मारून मग तेथून तो दुसऱ्या
योद्ध्यांच्या अंगावर धावून गेला. राजा, हे
एकापेक्षां एक रथी-महारथी वीर सर्व झोंपेंत
होते. ते आतां थरथर कांपूं लागले; तरी
यज्ञामध्ये शाभिन्नकर्मकर्ता ज्याप्रमाणें पशूंचा
संहार करतो त्याप्रमाणें अश्वत्थामा त्यांचा
संहार करूं लागला. पुढें हानी खड्ग घेऊन

दुसऱ्या कांहीं वीरांना ते ज्या ज्या भागांत होते त्या त्या भागांत क्रमाक्रमानें प्रवेश करून अमि-
युद्धांत प्रवीण असलेल्या अश्वत्थाम्यानें मारून टाकिले ! त्याचप्रमाणें छावणीच्या आणखी
एका भागांत मधोमधच्या सैन्याच्या तुकडी-
तले लोक धकून आयुधें टाकून निजलेले होते त्या सर्वांचा एका क्षणांत त्यानें जीव घेतला.
योद्धे काय, घोडे काय, हत्ती काय, सर्व त्यानें आपल्या उत्कृष्ट तरवारीनें कापून काढले. तेव्हां
रक्तानें त्याचें सर्वांग भरून जाऊन तो प्रत्यक्ष यमदूतांसारखा दिमू लागला. राजा, लखलखीत
अस्त्रांनीं, तरवारीनें व दुसऱ्या शस्त्रांनीं प्रहार करून करून अश्वत्थाम्याचें अंग तीन प्रकारांनीं
रक्तानें मावून गेलें होतें. तशा स्थितीत तो देदीप्यमान खड्ग घेऊन युद्ध करित अमतां
तो अक्रालविक्राल दैत्याप्रमाणें भामूं लागला. हे राजा, त्यांतून जे वीर जागे झाले, तेही
याच्या गर्जनेनें भांबावून जाऊन एकमेकांकडे टकटाक पाहूं लागले आणि भीतीनें व्याकूल
झाले. तें त्याचें उग्र स्वरूप पाहून, ते वीर मोठे कर्दनकाळ होते तरी पण हा कोणी तरी राक्षस-
च आहे असें त्यांना वाटून त्यांनीं चटकन डोळेच मिटले. इकडे तो उग्ररूपी अश्वत्थामा
छावणींत काळाप्रमाणें संचार करितच राहिला. इतक्यांत द्रौपदीचे मुलगे आणि शिल्पक राहि-
लेले पांचालयोद्धे त्याच्या दृष्टीम पडले. तेव्हां ते मोठे शूर राजपुत्र त्याची गर्जना ऐकून
अम्बस्थ झाले, आणि धृष्टद्युम्न मारला गेल्याचें ऐकून डगमगल्यामारग्वें न दाखवितां त्यांनीं
अश्वत्थाम्यावर बाणांचा वर्षाव केला. नंतर त्या गलत्रवत्यानें जागे होऊन कित्येक पांचाल-
वीर आणि शिखंडी यांनीं बाणांनीं अश्व-
त्थाम्याला पुरे पुरे केलें. अशा प्रकारें राजा, ते महारथी योद्धे बाणांची वृष्टि करित ओहत
हैं पाहून त्यांना मार्गण्याच्या तयारीनें अगोदर

अश्वत्थाम्यानें मोठ्यानें सिंहनाद केला; आणि आपल्या बापाचा वधप्रसंग आटवून अतिशय
चवताळलेला तो वीर रथावरून खाली उतरून वेगानें त्यांच्यावर चाल करून गेला; आणि
महस्त्रचंद्राप्रमाणें उज्वल अशी ढाल घेऊन व तमेंच लखलखणारें उत्कृष्ट खडू घेऊन तो
द्रौपदीच्या मुलांवर तुटून पडला. तेव्हां त्याला अतोनात स्फुरण चढलें; मग त्या भयंकर चक-
मकांत त्या नरव्याघ्रानें प्रतिविऱ्याच्या चर-
गडींत वार केला, त्याचरोबर तो भुईवर मरून पडला ! इतक्यांत पराक्रमी सुतमोम हा अश्व-
त्थाम्यावर शक्ति फेकून पुनः खड्ग उगारून त्याच्या अंगावर गेला. तेव्हां त्या सुतमोमाचा खड्गामहित हातच तोडून टाकून अश्वत्थाम्यानें पुनः त्याला वार केला. त्याचरोबर त्याची छाती फुटून तोही बाजूला मरून पडला ! तेव्हां शूर नकुलपुत्र शतानिक यांनं दोन्ही हातांनीं रथचक्र उचलून वेगानें अश्वत्थाम्याच्या छातीवर प्रहार केला, पण त्याचे हातून तें रथचक्र सुटतांच या ब्राह्मणानें शतानिकावर उलट प्रहार केला. तेव्हां तो कामार्गीम होऊन जमिनीवर पडला; तो लगेच त्यानें त्याचें शिर धडापामून वेगळें केलें ! इतक्यांत श्रुतकर्म्यानें परिघ घेऊन त्यानें अश्वत्थाम्याला प्रहार केला, परंतु तो परिघ उजव्या बाजूम अश्वत्थाम्याच्या दालीवर जोगानें आपटून बाजूला निमटला. तेव्हां त्यानें आपल्या दिव्य खड्गानें श्रुतकर्म्याच्या तोंडावर तडाखा दिला. त्यानें त्याचें तोंड वेडेंवाकडें होऊन तो वेदुद्ध होत्वाता जमिनीवर पडला ! ती गडबड ऐकून शूर महारथी जो श्रुतकीर्ति त्यानें अश्वत्थाम्याला गांठून त्याच्यावर बाणांची वृष्टि केली. तेव्हां त्याचीही ती बाणवृष्टि आपल्या दालीवर घेऊन अश्वत्थाम्यानें त्याचें तें कर्णकुंडलांनीं शोभणारें तेजःपुंज शिर धडा-
वेगळें केलें ! मग शिखंडीला आणि त्याच्या-

बरोबर आणव्हीही राहिलेल्या वीरांना त्या अश्र्वत्थामा हीं त्यांच्या नजरेपुढें मूर्तिमंत उभीं बहादुरांनं नानाप्रकारच्या आयुधानीं मारून असत. त्या सर्वांचाच घडा भरून ते मेल्या-टाकिलें. त्या मंतापलेल्या अवमानदार अश्र्व-त्थाम्यांनं शेवटीं शेवटीं एक नीत्र बाण प्याला केवळ निमित्तमात्र झाला ! तो भयंकर शिखंडीच्या भिंत्यांच्या मधोमध माग्या अमून गर्जना करून प्राणिमात्राला भिववीत अमलेल्या जवळ येऊन त्यांचें शिर तरवारीनं घडापामून दिमत होता. तेव्हां तो सर्व मागचा देवावा तोडून वेगळें केले होतें ! नंतर त्याच अविशांत आहां नजरेममोग खराच आला अमें त्या तो निकरानें प्रभद्रकांवर तुटून पडल्या आणि काळानें गांठलेल्या वीरांना वाटूं लागलें; आणि विगटाच्याही राहिलेल्या सैन्यावर त्वेषानें त्या त्याच्या गर्जेनें पांडवांच्या छावणींतील चालून गेला ! त्याचप्रमाणें द्रुपदाचेही मुलगे, शेंकडें हजारां धनुर्धारी योद्धे एकामागून एक नातू व स्नेही जमजमे भेटले तमतशी तो जागे होऊ लागले ! इकडे, राजा, प्रत्यक्ष यमांनंच पाठविलेल्या दूताप्रमाणें तो कोणाचे बलिष्ठ योद्धा त्यांची भयंकर कत्तल करीत पाय तोडूं लागला. कोणाच्या मांड्या मोडूं मुट्या. याशिवाय दुमन्याही लोकांवर धावून लागला व कांहीच्या बगड्या फोडूं लागला. जाऊन हा खट्टगयुद्धामयें निपुण अमा अश्र्व-मग छिन्नविच्छिन्न झालेल्या. कामावीम होऊन त्थामा तरवारीनं त्यांना तोडीत मुट्या ! ओरडत अमलेल्या. आणि हत्ती व घोडे यांच्या पायांवालीं चिरडून गेलेल्या वीरांनीं पृथ्वी व्यापून गेली ! हें काय ! हा कोण ! हीं कमली गर्जना ! हा काय अनर्थ ! ' अमें यावरून ओरडतां ओरडतां अश्र्वत्थाम्यांनं त्यांचा अंतकेला ! शस्त्रांनं घेऊन आणि कवच घालून मज्ज अमलेल्या पांडवीय संजयांना निःशस्त्र व उघडे करून अश्र्वत्थाम्यांनं मृत्युलोकीं पाठविलें; तेव्हां त्याच्या शस्त्रांचा प्रभाव पाहून भिऊन दचकून जागे झालेले व अर्धवट झोंपेंत अमलेले कित्येक वीर बांबा-वून जाऊन जागच्या जागी लपूं लागले; व त्यांचें पाप भरलें अमल्यामुळें अगदींच उत्साह-शून्य व हातपाय हालेनातमे होऊन ते नुमते ओरडत दीनवाणें तोंड करून एकमेकांकडे पाहूं लागले. तेव्हां भयंकर आवाज करीत जाणाऱ्या आपल्या रथांत बसून चाल-लेला धनुष्पाणि अश्र्वत्थामा बाण सोडून त्या वीरांपैकीं कित्येकांना यममदनाला पाठवूं शालें, तेव्हांपामूनच ही काली आणि हा लागला ! त्यांपैकीं कित्येक एकापेक्षां एक

राजा, मूर्तिमंत काली आपल्या गणांसह-वर्तमान गात गात जवळ येऊन उभी राहिलेली त्या वीरांच्या दृष्टीम पडली होती; तिचें तोंड व डोळे लाल अमून तांबड्या फुलांच्या माळा तिनें अंगावर घातल्या होत्या आणि तांबडी उठी लाविली होती; रक्तवस्त्र परिधान केलें होतें; हातांत पाश घेतले होते; त्या भयंकर पाशांनीं ती माणमें, घोडे व हत्ती बांधवांधून चालली होती; त्याचप्रमाणें मुकुटाशिवाय बोटक्याच वीरांचीं नानाप्रकारचीं प्रेतें, व शस्त्रें हातांत नमलेल्या मोठमोठ्या शूर वीरांचीं प्रेतें आणि तमेंच झोंपेंत ठार झालेल्या योद्ध्यांचीं प्रेतें आपल्या पाशांनीं आवळून बांधून ती घेऊन चालली होती. हा चमत्कार पुढारी पुढारी वीरांना पूर्वीं कित्येक रात्रीं स्वप्नांत दिसें लागला होता आणि मदा संहार करीत असलेल्या अश्र्वत्थाम्याची मूर्ति पुढें दिसें लागली होती. जेव्हापामून कोरव व पांडव यांच्या सैन्यांमधील हें घनघोर युद्ध सुरू झालें, तेव्हांपामूनच ही काली आणि हा

लागला ! त्यांपैकीं कित्येक एकापेक्षां एक

मोठे वीर लांबून उड्या मारीत हहा करीत येत होते; त्या मर्वांना तो कालीच्या म्वाधीन करू लागला. एका बाजूला शत्रूंना रथाखाली चिरडू लागला; आणि दुसऱ्या बाजूला बाणांचा वर्षाव करू लागला. पुनः तो धनुष्यबाण ठेवून व आपली विचित्र ढाल आणि खळखणारी तरवार हातांत घेऊन संचार करी ! राजा, ज्याप्रमाणे माजलेला हत्ती मोठा तलाव खळखळून टाकतो, त्याप्रमाणे कोणालाही न आवरणान्या त्या अश्वत्थाम्याने त्यांच्या छावणीमध्ये एकच गडबड उडवून दिली ! त्याच्या त्या दंग्याने झोंपेंतून दचकून जागे झालेले वीर भीतीने गांगरून सैरावैरा धावू लागले; आणि कांहीं तर वेडीवांकडी बडबड करीत मोठमोठ्याने ओरडू लागले; परंतु कोणीही वस्त्र नेमेना किंवा शस्त्र हातांत घेईना. त्यांचे केंस विमकटलेले असल्यामुळे ते एकमेकांना ओळखूही येईनात. धावरून सैरावैरा उड्या मारतां मारतां थकून जाऊन कांहींजण जमिनीवर पडले आणि कांहीं तमच भ्रमण करीत राहिले. कांहीं तर जागच्या जागीच मूत्रपुरीषोत्सर्ग करू लागले. त्याप्रमाणेच घोडे व हत्ती माखळदंड तोडतोडून एकदम मोकळे सुटून धुमाकूळ करू लागले. कांहीं माणसें भीतीने जागोजाग लपू लागली. तीं माणसें काय व ते हत्तीघोडे काय, तो अश्वत्थामा मर्वांची कत्तल करीत सुटला ! त्याचा हा अमा क्रम चालला असतां राक्षम व भूते यांना अतिशय आनंद होऊन तीं ओरडू लागली; आणि त्यांच्या त्या गलक्याने व आनंदाच्या धुमाकूळीने दशदिशा भरून गेल्या ! राजा, त्यांचा तो दंगा आभाळापर्यंत देखील घुमत गेला असेल ! योद्ध्यांच्या दानपणाच्या आरोळ्या ऐकून जे हत्तीघोडे बुजून जाऊन मोकळे सुटले, ते छावणीतील लोकांना पायांखाली चिरडीतच चालले ! असे ते पळत सुटले असतां त्यांच्या

पायांनी उडालेल्या भुळीने छावणीतील तो रात्रीचा अंधकार पहिल्यापेक्षां दुणावला. इतका अंधकार झाल्यावर जिकडे तिकडे माणसें वेड्यासारखी होऊन गेलीं आणि बाणांना मुल्लो व भावांना भाऊ ओळखू येईनातसे झाले ! मोकळे हत्ती व घोडे एकमेकांना थडकून चालले असतां एकमेकांच्या अंगांवर आदळून एकमेकांचीं हाडे मोडू लागले व एकमेकांना चेंगरू लागले ! त्याचप्रमाणे, ही दणादाण उडाल्यामुळे मनुष्येही पळतां पळतां एकमेकांवर आपटून पडू लागली. कांहींना जमिनीवर लोळवावे आणि कांहींना लोळवून तुडवावे असा प्रकार त्या अर्धवट झोंपी असलेल्या भांबावून गेलेल्या लोकांमध्ये त्या काळाखांत चालला. प्रत्यक्ष काळाच्याच प्रेरणेने आपल्याच पक्षांतील लोकांना ते ठार करू लागले. वेशीतील आपापलीं ठिकाणे मोडून द्वारपाल लोक व सैन्यव्यूह मोडून सैन्यातील लोक दिशेचेंही भान न राहून होईल तितकें करून जल्द पळत सुटले. अशा रीतीने जे नाहीतसे झाले ते एकमेकांना पुनः मांपडेनात. देवच फिरले म्हणून अकल जाऊन वेड्याप्रमाणे कोणी बाबाहो ! कोणी मुलारे ! ' अशा आरोळ्या टोकीत आपल्या इष्टवांधवांना सुद्धां मोडून देऊन पळत सुटले; आणि त्या लोकांना त्यांची दुसरी माणसें गोत्रनामांनीं हाका मारू लागली व कांहीं हाय हाय करीत जमिनीवरच पडून राहिली ! त्यांना ओळखून अश्वत्थामा त्या रणरंगी त्यांचा संहार करू लागला. याप्रमाणे तो कत्तल करीत असतां कांहीं वीर मधून मधून भिऊन भिऊन छावणीतून जीव घेऊन बाहेर पडू लागले, तो दाराशीं कूनवर्मा आणि कृप हे त्यांना मारू लागले ! राजा, अंगावरील कवच वंगरे गळून जाऊन, व केंस मोकळे सुटून ते धावरपणांनं कांपत कांपत हात जोडून पुढे

आले अमतांही त्यांना कृतवर्मा आणि कृप हे जिवंत मोडीनात! छावणीतून जो म्हणून बाहेर पडू पाहिजे, तो त्यांच्या तडाख्यातून जिवंत सुटतच नसे! हे महाराजा, तो कृप व तो निर्दय कृतवर्मा ह्या उभयतांनी पुनः अश्वत्थाम्याचें कल्याण करण्याची इच्छा धरून छावणीला तीन ठिकाणी आग लावली. तेव्हां छावणीत निकडे निकडे उजेड होऊन त्या उजेडांत हा अश्वत्थामा अधिकच चल्यावी नें संचार करूं लागला; व कांहीं वीर अंगावर धावून आले त्यांना व कांहीं पळून जाऊ लागले त्यांना तरवारीनें ठार करूं लागला, तो कांहींना तरवारीनें मधोमध कापून मारून पाडी व कांहींना त्वेषांनं तोडून त्यांचे निळा एवढाले तुकडे करून टाकी! त्या वेळीं व्याकूल होऊन आरडत ओरडत पडलेलीं माणसें, घोडे व हत्ती यांनीं सर्व जमीन व्यापून गेली. त्या मरून पडलेल्या हजारों माणसांमध्ये कित्येकांची धडे पुनः उठून उभी राहून तुटून पडत. तसेंच शस्त्राखे व भूषणें यांमुद्धां मबंध हात व कांहींचीं शिरे तो अश्वत्थामा तोडी; हत्तीच्या मोठेमारखे एकेकाचे जंगी हात आणि पाय तोडी, कांहींच्या पाठीवर वार करी. कांहींच्या बरगड्या फोडी व शिरच्छेद करी; कांहीं जे परत फिरत त्यांची कंबर तोडी; कांहींचे कान तोडी; कांहींच्या खांद्यांवर वार करी; आणि, राजा, कांहींच्या धडांमध्ये त्यांचीच शिरे खुपशी! याप्रमाणें अमर्याद लोक मारीत मारीत तो संचार करीत अमतां अगोदरच काळोखांनं भयंकर दिमणारी ती फारच भयाण दिसूं लागली! थोडीशी भुमी राहिलेले हजारों लोक व अगदीं गेलेले हजारों लोक, शिवाय घोडे व हत्ती पृथ्वी अगदीं छावून गेल्यामुळें ती भेसूर दिसूं लागली! यक्ष, राक्षस

जिकडे तिकडे फिरूं लागले. त्या मंतापलेल्या अश्वत्थाम्याचा वार लागून जमजमे भूमीवर वीर पडूं लागले तमतमे कोणी भावांना, कोणी बापांना व कोणी मुलांना हाका मारूं लागले! कांहींजण तळमळत म्हणाले, "आज या कूर राक्षसांनीं आम्हांला झोंपें गांठून जी अवस्था करून टाकली आहे. ती चवताळलेल्या धार्तराष्ट्रांनीं देखील केली नव्हती! पांडव आज जवळ नाहींत म्हणूनच ही आमची कत्तल होत आहे! माक्षातु श्रीकृष्ण ज्याचा पाठीगमवा, त्या अर्जुनाला निकण्याचें मामर्थ्य अमुरांमध्ये नाहीं, गंधर्वांमध्ये नाहीं, यक्षांमध्ये नाहीं किंवा राक्षसांमध्येही नाहीं! ब्राह्मणांचा केवारी, सत्यवक्ता, संयमी आणि सर्व भूतांचे ठायीं दया करणाऱा अमा जो कुंतीपुत्र अर्जुन, तो कधीही निजलेल्याला, भांवालेल्याला, निःशस्त्र असणाऱ्याला, हात जोडून शरण येणाऱ्याला, जीव घेऊन पळणाऱ्याला किंवा शिरच्छाण निमटून केम मोकळ मुटलेल्याला मारीत नमतो, पण हें अमलें कूर कृत्य हे निर्दय राक्षस आमच्यामध्ये येऊन करीत आहेत!" अमा विलाप करीत कित्येक लोक पडले होते, कित्येक किकाळ्या फोडीत होत. व कित्येक कण्हत होते, पण, राजा, पुढें त्यांचा तो कल्होळ एका क्षणांत थांबला; आणि पृथ्वीवर जी भयंकर धूळ उडालेली होती तीही रक्ताचा मडा पडल्यामुळें क्षणांत नाहींशी झाली. त्या वेळीं कांहीं हातपाय हलवीत होते. कांहीं नाउमेद होऊन धडपड करण्याचें सोडून देऊन पडले होते, कांहीं एकमेकांना कवटाळीत पडले होते, कांहीं तेथून निमटूं पहात होते, कांहीं लपत होते व कांहीं लढत होते; अशा हजारों लोकांचा अश्वत्थाम्यानें प्राण घेतला, एकीकडून आर्गिनें ते भाजू लागले व दुसरीकडून अश्वत्थामा त्यांना मारीत सुटला, तेव्हां ते योद्धे आपा-

पसांत एकमेकांचाच जीव घेऊं लागले. अशा प्रकारें, राजा, रात्र अर्धी लोटली अमेल, इतक्या अवधीत पांडवांचें एवढें अफाट मेन्य अश्र्वत्थाम्यानें परलोकीं पाठविलें! माणमें, हती, घोडे यांच्या प्रेतांनीं अनिशय भयंकर झालेलीं ती काळरात्र राक्षसभूतादिकांना फार आनंददायक झाली. त्या ठिकाणीं हे नानाविध राक्षस व हीं भूतें मांस खात असलेलीं व रक्त पीत असलेलीं जिकडे तिकडे दिमूं लागलीं. या प्राण्यांत कांहीं अगदीं कुरूप, कांहीं पिंगट रंगांचे, कांहीं मोठ्या दांतांचे, कांहीं अगदीं धूलियूमर, कांहीं जरा वाढविलेले, कांहीं लांब लांब शंख हातीं घेतलेले, कांहीं पांच पांच पायांचे आणि कांहीं मोठ्या पोटांचे असे होते. तसेच कोणी मागच्या बाजूम बोटें अमलेले, कोणी रजःसांमारग्ये वाळलेले, कोणी भयंकर शब्द करणारे, कोणी घांटांच्या माळा घातलेले, व कोणी निळमर गळ्यांचे—असे चित्रविचित्र रूप अमलेले निर्दय, क्रूर आणि भयंकर राक्षस मुलांचायकांच्या मुद्धां दृष्टीस पडूं लागले! रक्त पिउन आनंद पावून ते टोळ्याटोळ्यांनीं नाचूं लागले! 'हें मोठें उंची खाद्य आहे! हें फार पवित्र आहे! हें अतिशय गोड आहे!' असें म्हणत म्हणत ते मेद, स्नायु, अस्थि, रक्त यथेच्छ खाऊं लागले! त्यांत कोणी मांसावर उपजीविका करणारे होते ते मांसच खाऊं लागले! दुसरे कोणी चरबी वगैरेचा स्वाहा करून इकडे तिकडे धावूं लागले! पुष्कळ बरगड्या अमलेले, पुष्कळ तोंडें अमलेले असे ते मांसाहारी भयंकर राक्षस सहस्रावधि, लक्षावधि व कोट्यवधि एके ठिकाणीं मिळालेले त्या भयंकर प्रसंगीं आनंदित होऊन तृप्त झालेले दिमूं लागले!

नंतर, हे प्रभो, पहाट झाली तेव्हां छावणीतून निघून जाण्याचें अश्र्वत्थाम्याचे मनांत आलें. या वेळीं तो रक्तानें अगदीं न्हालेला असल्यामुळे

त्यानें हातांत धरलेली तरवार आणि त्याचा हात हीं दोन्ही एकत्र वाटूं लागलीं. इतक्या लोकांचा मंदार झाल्यानंतर दुप्कर असें कृत्य करून अश्र्वत्थामा एकदांचा कृतकृत्य होऊन शोभूं लागला! प्रलयकार्यें संपूर्ण सृष्टि जाळून भस्म केल्यास प्रलयाशि ज्योत्समाणि आपोआप शमतो त्याप्रमाणें प्रतिज्ञानुरूप तें कृत्य आटोपल्यावर पित्याच्या ऋणांतून मोठ्या कष्टानें मुक्त झाल्याप्रमाणें अश्र्वत्थाम्याला वाटून त्याचा संतापाशि शांत झाला! मग, हे जनाधिपा, माणमें गाढ निजलीं अमतां रात्रीच्या काळोखांत छावणीमध्ये तो जमा प्रवेश करून गेला होता. तमाच सर्वांची कत्तल उडवून जिकडे तिकडे सामसूम अमतां पुनः बोहेर आला आणि छावणींतून बाहेर पडतांच कूप व कृतवर्मा. यांच्या जवळ येऊन मोठ्या संतोषानें आपला सर्व पराक्रम कळवून त्यांना आनंदवूं लागला; मग तेही त्याम आपण त्याचें केलेले काम म्हणजे पांचाल आणि मंजय हजारां मारून पाडल्याचें वृत्त सांगूं लागले. नंतर ते तिथेही मोठ्या संतोषानें ओरडूं लागले व टाळ्या वाजवूं लागले! अशा रीतीनें, हे जनाधिपा, निजलेल्या व वेडे झालेल्या पांचालांचा समूळ उच्छेद होऊन त्यांची ती रात्र भयंकर रीतीनें गेली!

राजा, काळाचा फेराच फार कठीण ह्यांत मंशय नाही. क्षणनच शत्रूकडील तमले एक एक वार आमच्याकडील लोकांचा समूळ मंदार केल्यावर शेवटीं आपणही मरून पडले!

धृतराष्ट्र प्रश्न करतो:—मंजया, माझ्या मुलाचा जय व्हावा असा अभिमान अश्र्वत्थाम्याला वाटून अमतां त्या पराक्रमी वीरांन अमा अपूर्व प्रताप आर्षीच कां बरे केला नाही? तां माझा मुलगा मारला गेल्यावर मग त्या महात्म्यानें अमा पराक्रम करावा अमा क्षुद्रपणा त्याचे हातून कां झाला, तें मला सांग.

संजय सांगतो:—राजा, पांडव, धीमान् श्रीकृष्ण आणि मान्यकि यांच्या भयानेच अश्व-
त्थाम्याचे हातून आर्षी काही झाले नाही, व
ते जवळ नमल्या वेळीच त्यांन हे काम
साधले ! ते त्या वेळीं अमते तर त्यांच्याममक्ष
अमा मंहार करण्याचें कोणाच्या हातून झालें
असतें ? प्रत्यक्ष रुद्राच्या हातूनही नमते !
अमो; याप्रमाणें त्या पांडवांच्या निजलेल्या
सैन्यांत अमा दुर्घट मंहार केल्यावर ते तिघे
महारथी योद्धे एकत्र जमून परस्परानें अभि-
नंदन करूं लागले. कृप व कृतवर्मा अश्व-
त्थाम्याचा धन्यवाद करूं लागले; आणि
अश्वत्थाम्याने त्यांना आलिंगन दिलें. मग
पोटांत आनंद मानेनामा होऊन तो क्षणतो,
“ द्रौपदीचे मुलगे, तमेच पांचाल, मोमक आणि
मत्स्य हे सर्व निकडे निकडे माझ्या हातून
मरून पडले आहेत ! आणि आपण कृतकृत्य
झालों आहां ! तेव्हां आतां राजा निवंत
अभेल तर आपण निकडे लवकर जाऊं आणि
त्याला हा सर्व वृत्तांत मांगूं ! ”

अध्याय नववा.

—:—

दुर्योधनाला सौप्तिककथन.

संजय सांगतो:—राजा, अशा रीतीने द्रौपदी-
च्या मुलांना आणि सर्व पांचालांना मारिल्या-
वर, जेथें दुर्योधन पडला होता तेथें ते तिघेही
येऊन पोहोचले. मग जवळ जाऊन पहातात
तों राजाच्या शरीरांत थोडी धुगधुगी राहिली
होती. नंतर ते रथावरून खाली उतरून त्या
तुड्या मुलाच्या सभोवतीं उभे राहिले. धृतराष्ट्र,
दुर्योधनाची अवस्था काय विचारावी ! त्याच्या
मांडीच्या हाडाचा चुराडा झाला अमून तो
मोठ्या कष्टानें श्वाभोच्छ्वास करीत होता, त्याला
शुद्धिही नव्हती, तो तोंडांतून रक्त ओकत होता.

सभोवतीं भयंकर लांडगे व इतर श्वापदे यांच्या
टोळ्या जमल्या अमून दुर्योधनाचें प्रेत फाडून
खाण्याकरितां वाट पहात होता आणि तो मोठ्या
कष्टानें त्या टपलेल्या श्वापदांचें निवारण करीत
होता ! त्याला प्राणांतिक यातना होत असल्या-
मुळे तो भुईवर गडबडां लोळत होता; आणि त्याचें
सर्वांग रक्तानें भरून गेलें होतें ! राजा, तशा
स्थितींत तो भूमीवर पडलेला पाहून हे उरलेले
तीन वीर शोकाकुल होऊन सभोवतीं उभे राहिले.
त्या वेळीं, राजा, मध्यें दुर्योधन आणि त्याच्या
सभोवतीं हे रक्तानें मागून गेलेले तिघे महारथ
अश्वत्थामा, कृप आणि कृतवर्मा म्हणजे जणू
काय वेदीच्या सभोवतीं तीन वाजंम तीन अश्विज
आहेत असें भागलें ! नंतर हे भारता, अशा
वाईट अवस्थेंत दुर्योधन त्या ठिकाणीं पडलेला
पाहून दुःख न आवरून ते तिघे रडूं लागले;
मग हातांनी त्याच्या तोंडावरील रक्त पुसून ते
रणांत पडलेल्या त्या राजाबद्दल दीनमुद्देनें
शोक करूं लागले !

कृप म्हणतो:—देवाच्या प्रभावापुढें कांहीही

अशक्त्य नाही. पहा—हा अकरा अक्षौहिणी
सेनेचा नायक दुर्योधन रक्तानें मागून मरत
पडला आहे ! त्याची कांति सोन्यासारखी
अमून मोन्यानें मढविलेली त्याची गदा त्याच्याच
जवळ भुईवर पडली आहे ! या गदेनें या
शूराला एकाही युद्धप्रसंगांत मोडलें नाही !
आणि आतां मुद्धां हा यशस्वी पुरुष स्वर्गाला
निघाला असतांही ती त्याला मोडीत नाही !
पहा ही सुवर्णानें शृंगारलेली गदा अस्यंत प्रेम
करणाऱ्या भायेंप्रमाणें कशी या वीराजवळ जणू
शय्येवरच शयन करीत आहे ! मूर्धाभिषिक्त
राजांमध्ये जो हा अग्रगण्य असे, तोच हा
आतां कशी धूळ खात पडला आहे ! पहा ही
केवढी काळाची विपरीत गति ! ज्यानें लढाईत
मारलेले शत्रु रणांत पडलेले दृष्टीम पडावे, तोच

हा कौरवांचा राजा शत्रूंचे हातून मरून कमा भुईवर पडला आहे! ज्याच्यापुढे भयाने हात जोडून शेंकडें राजांनी उभे राहावें, तो हा धारातीर्थी पडला अमून सभोवती हिंन्न पशु जमले आहेत! पूर्वी द्रव्य मिलण्याच्या इच्छेने ज्या या राजाधिराजाच्या सभोवती ब्राह्मण वाट पहात रहात, त्याच्याच सभोवती आज मांसेच्छेने मांसभक्षक श्रापदे वाट पहात उभी आहेत!

संजय सांगतो:—नंतर, राजा, तें पडलेल्या त्या कौरवश्रेष्ठ दुर्योधनाकडे अवलोकन करीत करीत अश्रुत्यात्मा करुणस्वराने शोक करितो, “ हे नरव्याघ्रा, तूं सर्व धनुर्धारी वीरांमध्ये श्रेष्ठ अमून युद्धांत कुबेरासारखा आहेस आणि बलरामासारख्याचा शिष्य आहेस. असें सर्वजण म्हणतात. मग, हे अनघा, त्या भीमसेनाने तुझे छिद्र कसे बरे जाणलें? राजा, त्या पापात्म्या भीमसेनाने बलिष्ठ आणि वैभवशाली अशा तुला कसे बरे मारलें? ह्या संमारी काळाचा प्रभाव विलक्षण आहे, म्हणूनच भीमसेनाचे हातून तुला मरण आलेलें आम्ही पहात आहों! तूं मोठा धर्मात्मा अमतां तुला त्या नीच पापी भीमसेनाने कसे बरे प्रहार करून मारून टाकलें? कालगतच अनिवार हें खचित! धर्मयुद्ध चाललें अमतां त्यांत अधर्म करून उन्मत्तपणाने तुला युद्धांत ओढून भीमसेनाने आपल्या गदेनें तुझ्या मांड्या फोडल्या! आणि अशा रीतीनें तुला अधर्माने मारून पाडल्यावर रणांत त्यानें तुझे मस्तक पायांवाली तुडविलेले पाहूनही ज्या नीच कृष्णाने आणि धर्मराजाने त्या भीमाची उपेक्षा केली, त्यांस धिक्कार असो! ज्यापेक्षां भीमसेनाने अन्यायाने तुझा वध केला आहे, त्यापेक्षां, जोपर्यंत हें चराचर विश्व राहिल तोंपर्यंत युद्धाची गोष्ट निघाली अमतां योद्धे लोक भीमसेनाची निंदाच करतील! यदुकुलश्रेष्ठ बलराम नेहमी

तुझ्यासंबंधाने असें ह्मणे कीं, ‘ गदायुद्धांमध्ये दुर्योधनासारखा पराक्रमी कोणी नाही! ’ राजा, तो यादववीरमणि मभेमध्ये बुद्धिवाद करण्यांतही तुझी फार प्रशंसा करित असे. गदायुद्धांत तर कौरवांमध्ये हाच एक माझा शिष्य असें तो ह्मणे. क्षत्रियांना जी गति श्रेष्ठ म्हणून मोठमोठ्या ऋषींचे म्हणणे आहे, तीच मद्दति तूं आज समरांगणाच्या अग्रभागी पडल्यामुळें तुला मिळाली आहे! हे वीरश्रेष्ठा दुर्योधना, तुझ्याबद्दल मला दुःख वाटत नाही, परंतु पुत्रशोक झालेल्या तुझ्या मातापितरांबद्दल मला फार दुःख होत आहे! आतां ते मातापितर अनाथ होऊन शोक करीत पृथ्वीच्या पाठीवर भटकून रहातील! धिक्कार असो त्या गोपालकृष्णाला आणि त्या दुष्ट अर्जुनाला, कीं जे धर्मज्ञपणाचा अभिमान बाळगीत अमून प्रत्यक्ष डोळ्यांदेवत अधर्माने तुझा वध होत अमतां स्वस्थ बसले! राजा, ते सर्व पांडवही लाज सोडून ह्मणतील कीं, ‘ पहा आम्ही कसे दुर्योधनाला मारून टाकलें! ’ परंतु, दुर्योधना, धारातीर्थी पडलेला तूं धन्यच आहेस! कारण, क्षत्रियधर्माचा अनुसरून शत्रुपर्यंत शत्रूंना पाठ न दाखवितां तूं ममोरच लढत राहिल्यास. तथापि सर्व मुलगे मेल्यावर आणि ज्ञानिवांधवही निःशेष झाल्यावर त्या गांधागीची आणि त्या मानी धृतराष्ट्राची काय बरे गति होईल? कृतवर्मा, कृप आणि मी तुझ्या पाठोपाठ स्वर्गाला ज्या अर्थी चाललों नाही, त्या अर्थी आम्हांला धिक्कार असो! सर्व कामना पूर्ण करणारा व प्रजेचे हित माधून परिपालन करणारा असा तूं परलोकाला निघाल्यावर आम्ही तुझ्या पाठोपाठ येऊ नये ही आम्हांला केवटी शरमेची गोष्ट आहे! राजा, तुझ्या, कृपाच्या, माझ्या पित्याच्या व माझ्या पराक्रमाने आपली व आपल्या पदराच्या नोकर माणसांची-

ही घरे संपूर्ण ऐश्वर्याने भरलेली असत. तुझ्या प्रमादामुळे आम्हांस इष्ट, मित्र, बांधव यांमह-वर्तमान तू पुष्कळ द्रव्य स्वर्चून चालविलेल्या मोठमोठ्या यज्ञांचा लाभ होत असे ! मग आम्हां पाप्यांची मात्र अर्शा कां बरे प्रवृत्ति होत आहे, कीं सर्व राजे लोकांना बरोबर घेऊन तू निघून चालल्यास आणि तुला मद्रति मिळणार तरी आम्ही मात्र तुझे मागे रहात आहो ! राजा, हीच गोष्ट मनांत घेऊन आमचें मन हळहळत आहे; आणि स्वर्गाला मुकून कोणताही पुरु-पार्थ न साधतां आम्ही तुझे पुण्य आटवीत वमलों आहो ! असें काय बरें आमचें पूर्वकर्म असेल, कीं ज्यामुळे आम्ही तुझ्याबरोबर येऊं शकत नाही ? हे कौरवश्रेष्ठा, आतां आम्ही दुःस्वार्थाने या पृथ्वीवर भटकत रहाणार खचित ! राजा, तू आम्हांला सोडून गेल्यावर आतां आमच्या मनाला कशाची स्वस्थता आणि कशाचें सुख ! राजा, येथून गेल्यावर तू स्वर्गा रथीमहारथी वीरांना जाऊन भेटशील तेव्हां वडीलपणाच्या आणि श्रेष्ठपणाच्या अनुक्रमाने त्यांना माझे नमस्कार मांग. सर्वधनुंधराग्रणी गुरु द्रोणाचार्य यांना माझे वंदन करून मांग कीं, आज मी धृष्टद्युम्नाला मारून टाकिलें ! त्याचप्रमाणें महारथि बाल्हिक, जयद्रथ, सोम-दत्त, भूरिश्रवा, तसेच आजपर्यंत स्वर्गलोकीं गेलेले दुसरेही श्रेष्ठ श्रेष्ठ राजे यांना आमचा प्रेम-पूर्वक नमस्कार सांगून कुशल विचार ! ”

संजय सांगतो:—राजा, भशोर व वेशुद्ध पडलेल्या दुर्योधन राजाला असें बोलून अध-त्थाम्याने त्याच्याकडे अवलोकन केलें आणि पुनः म्हटलें, “ दुर्योधना, तू जिवंत आहेस तोच तुझे कान तृप्त करणारे हें माझे भाषण ऐक. पांडवांच्या बाजूचे सात असामी उरले आहेत आणि धृतराष्ट्राच्या पक्षाचे हे आम्ही

तिघे उरलों आहो. ते सात म्हणजे पांच भाऊ, महावा श्रीकृष्ण व सातवा सात्याकि; आणि इकडे मी, कृतवर्मा व कृप ! द्रोपदीचे मुल्ये, धृष्टद्युम्नाचे मुल्ये आणि राहिलेले सर्व पांचालवार पार मारले गेले ! त्यांनीं अनर्थ केला तरी त्यांवर मूडही कसा उगविला तो पहा ! कारण, पांडवांचे सर्व मुल्ये नाहीतसे झाले; सौप्तिकयुद्ध करून राहिलेल्या माणसां-सहित व वाहनांसहित मी त्यांची सगळीं छाव-णीच नाहीशी करून टाकिली ! राजा, त्या पापात्म्या धृष्टद्युम्नाला मीं ठार केलें ! मीं रात्रीची वेळ साधून त्यांच्या छावणींत शिरलों, आणि खाटीक जनावरें कापून मारतो त्याप्रमाणें सर्व लोक कापून काढले ! ”

धृतराष्ट्रा, ती अतिशय आवडती बातमी ऐकून दुर्योधनाला पुनः शुद्धि आली आणि तो उत्तर करतो, “ जें काम भीष्माचे हातून झालें नाही, कर्णाचे हातून झालें नाही आणि तुझ्या पित्याचेही हातून झालें नाही, तें आज कृप आणि कृतवर्मा यांना बरोबर घेऊन तू केलेंस ! तो नीच मेनापति धृष्टद्युम्न शिखंडी-सह एकदांचा ठार झाला, त्यामुळे इंद्राच्याच बरोबरीला आज मी जाऊन पोहोचलों कीं काय असें मला वाटतें ! तुमचें कल्याण होवो ! स्वर्गलोकीं पुनः आपली गांठ पडेल ! ”

दुर्योधनप्राणत्याग !

राजा, इतकें बोलून तो उदार दुर्योधन स्तब्ध झाला; आणि त्या वीरानें प्राण सोडून मित्रवर्गाला दुःस्वांत लोटलें ! त्याचा आत्मा शुभ अशा स्वर्गलोकीं जाऊन त्याचें शरीर मृत्तिकेला मिळालें ! राजा, अशा रीतीनें तुझ-शूर पुत्र दुर्योधन समरांगणांत सरसावून मागून शत्रूंकडून मारला जाऊन त्याचा अंत झाला ! मग पुनःपुनः राजाला आलिंगन देऊन आणि

त्याच्याकडे अवलोकन करून ते तिथे आपापल्या रथांवर चढले. राजा, त्या वेळीं अश्व-
त्थाम्यानें करुणस्वरानें विलाप केला तो ऐकून
कृप व कृतवर्मा हे अतिशय शोकार्त झाले. मग
पहाट झाली तेव्हां ते तिथेही उदासीनतेनें
नगराकडे गेले !

राजा, अशा रीतीनें कौरवपांडवसैन्यांचा
भयंकर संहार झाला ! बाबारे, तुझ्या दुष्ट सल्ले-
मुळें हा सर्व घोर अनर्थ ओढवला ! अमो;

हे अनघा, आतां तुझा पुत्र स्वर्गलोकीं गेल्या-
मुळें मलाही शोकाचा उमाळा येत असून, भग-
वान् व्यासांनीं दिलेली दिव्य दृष्टि आतां पार
मावळून गेली आहे.

वैशंपायन सांगतात:—जनमेजया, धृत-
राष्ट्रांनें आपल्या पुत्राचा तो मरणवृत्तांत ऐकून
एक लांब मुस्कारा टाकला व तो चिंताकुल
होऊन बसला !



ऐषीकपर्व.

अध्याय दहावा.

—:०:—

युधिष्ठिराचा शोक !

वेशंपायन सांगतात:—राजा जनमेजया, ती रात्र निघून गेल्यावर धृष्टद्युम्नाच्या सारथ्याने सौप्तिकयुद्धांत झालेल्या सर्व संहार धर्मराजाला कळविला.

सारथि म्हणाला:—महाराज, द्रौपदीचे मुल्यो द्रुपदाच्या मुलांमह रात्री आपल्या शिविरांत बेमावधपणें खुशाल निजले असतां कृतवर्मा, कृप व अश्रुत्यामा या त्रिघां दुष्टांनी त्यांचा वध करून झवणी सवंध पार उडविली ! प्रास, शक्ति वगैरे नानाप्रकारच्या आयुधांनी माणसें, हत्ती, घोडे हजारों तोडतोडून त्यांनी सैन्याचा समूळ नाश करून टाकला ! एखाद्या मोठ्या अरण्यांतल्या झाडांची कुऱ्हाडींनी तोड चालली असतां जशी गडबड ऐकू येते तशी आपल्या सैन्यांत ऐकू आली ! महाराज, त्या सर्व सैन्यांतून मी एकटा उरलों आणि कृतवर्मा दुसरीकडे गुंतला असतां त्याला चुकवून कसा तरी निसटलों !

राजा, ही वाईट बातमी ऐकून कुंतीपुत्र धर्मराजा युधिष्ठिर पुत्रशोकानें गर्हिवरून मूर्च्छा येऊन भूमीवर पडला ! पडतां पडतां सात्यकीनें त्याला सावरून धरलें; आणि भीमसेन, अर्जुन, नकुल व सहदेव हेही जवळ आले. मग थोड्या वेळानें धर्मराज शुद्धीवर आला; आणि अतिशय दुःखार्त होत्साता, प्रथम शत्रूंना जिंकून मागून पाडाव झाल्यावर तळमळणाऱ्या वीराप्रमाणें शोक करूं लागला. तो म्हणाला, “जे दिव्यज्ञानी आहेत त्यांना देखील काल्गति समजण्यास कठीण आहे ! पहा—शत्रूंचा पाडाव झाल्या-

वरही त्यांची आतां सरशी झाली व आमचा जय झाल्यावरही आतां हा आमचा मोड झाला ! भाऊवंद, इष्टमित्र, बाप, आज्ञे, मुल्यो, नातू, बांधव व मंत्रिजन या सर्वांना जिंकून शेवटीं आमचाच पाडाव झाला ! जेथें अनर्थ दिसत होता, तेथें उत्कृष्ट कार्यभाग साधलेला दिसत आहे; आणि जेथें उत्कृष्ट कार्यभाग साधलेला वरवर दिसला, तेथें शेवटीं पहातां अनर्थ ! यशालाच परिणामी अपयशाचें रूप आलें, तेव्हां हा जय कशाचा ? पराजय ! जय मिळविल्यानंतर विपत्तींत पडलेल्या मूर्खाप्रमाणें जर पश्चात्ताप करण्याचा प्रसंग येतो, आणि शत्रूंकडून शेवटीं अधिकच पाडाव होतो, तर तो विजय कसा मानावा ? आर्क्षी सावध राहून, विजयी म्हणाविणाऱ्यांनाही ज्यांच्याकरितां जिंकून टाकिलें, व इष्टमित्रांचाही वध होऊं दिला, आणि अशा रीतीनें पातक शिरावर घेऊन विजय संपादिला, व जे कर्णासारख्या चवताळलेल्या मिहाचे हातून मुटले, तेच आमच्या बेमावधपणामुळें आतां मारले गेले ! तो कर्ण खरोखर मिहासारखाच होता. कारण, त्याचे चित्रविचित्र बाण हे दंष्ट्रांप्रमाणें होते, त्याची तरवार जिन्हेप्रमाणें होती, त्याचें धनुष्य पसरलेल्या जबड्याप्रमाणें होतें, त्याच्या धनुष्याचा टणत्कार गर्जनेसारखा होता आणि त्याचें तें समरांगणांतील एकंदर स्वरूप सिंहाप्रमाणें भयंकर होतें ! मोठमोठे रथ हेच ज्या ठिकाणीं डोह, बाणांच्या वृष्टि ह्याच ज्या ठिकाणीं लाटा, घोडे व इतर वाहनें हींच ज्या ठिकाणीं रत्नें, भाले, बर्च्या वगैरे आयुधें हेच ज्या ठिकाणीं मासे, हत्ती हे ज्या ठिकाणीं मगर, धनुष्यें हीं ज्या ठिकाणीं भोंवरे, बाण हाच ज्या ठिकाणीं फेंस, युद्धप्रसंग हाच ज्या ठिकाणीं चंद्रोदय, आणि धनुष्यांचा

टणत्कार हाच ज्या ठिकाणी घोष, असा द्रोणाचार्यस्वरूपी समुद्र नानाविध-शस्त्ररूपी नौकांनी जे तरून गेले, तेच आमच्या बेसावधपणामुळे कसे मारले गेले हो! या जगांत माणसांचें मरण बेफिकीरपणांत जसे असते तसे दुसऱ्या कशांतही नसतें; कारण, बेफिकीर असणाऱ्या माणसाला चोहोंकडून सुयोग सोडून जातात, आणि त्याच्यावर अनर्थ येऊन कोसळतात! अहो, उत्कृष्ट अशा उंच उभारलेल्या ध्वजाचें अग्र हा जेथें धुराचा लोट, विविध बाण ह्या जेथें ज्वाला, रागाचा आवेश हा जेथें सोसाट्याचा वारा, धनुष्याचा टणत्कार हा जेथें फडफड शब्द, आणि कवच व नाना-प्रकारचीं शस्त्रे ही ज्या ठिकाणीं अह्नुति असा भीष्मस्वरूपी दवानल—जो प्रचंड—सैन्यस्वरूपी अरण्यांत भडकला होता, तो ज्यांनीं सहन केला, ते राजपुत्र आमच्या प्रमादामुळे कीं हो मारले गेले! जो पुरुष मत्त झाला, त्याच्या हातून विद्या साधणार नाही, तपश्चर्या साधणार नाही, लक्ष्मी साधणार नाही, किंवा विपुल कीर्ति जोडणें होणार नाही! पहा, सावध राहून सर्व शत्रूंना मारून टाकून इंद्र कसा मुख भोगीत आहे तो! पण इंद्रासारखे शूर शूर राजपुत्र केवळ बेपरवाईनें सरसकट मारले गेले कीं हो! ऐश्वर्यसंपन्न वैश्य लोक ज्याप्रमाणें समुद्र तरून जाऊन त्या घमंटी-मध्ये लहानशा एखाद्या नदीमध्ये बुडून नष्ट व्हावे त्याप्रमाणेंच ही अवस्था झाली! ते शोषित असतां ज्या अर्थी त्यांना त्या क्रूर निर्दय लोकांनीं मारून टाकिलें, त्या अर्थी ते स्वर्गलोकीं गेले यांत शंका नाही! परंतु ही साध्वी द्रौपदी आज ह्या शोकसमुद्रामध्यें न डगमगतां कशी प्रवेश करील हेंच मनांत येऊन मला फार दुःख होत आहे! तिचा वृद्ध पिता, हे तिचे भाऊ आणि तिचे मुलगे ह्या सर्वांचा वध

झाल्याचा वृत्तांत ऐकून ती स्वचित्त मूर्च्छा येऊन पडेल आणि पुढें शोकांनं झिन्नून् झिन्नून् अगदीं कृश होईल! हा शोक सहन करून त्यांतून ती पार न पडली तर तिला मुक्तोपभोगाचें नांव कशाला! पुत्रशोकांनं व भ्रातृशोकांनं ती पिळून निघेल, आणि शोकाग्नि जळत राहून त्यानें ती पोळून जाईल! "

राजा, याप्रमाणें त्या कुरुकुलनायक धर्म-राजांनं विह्वल होऊन विलाप केला आणि मग तो नकुलाला म्हणाला. " जा आणि त्या विचाऱ्या द्रौपदीला व तिच्या मातृपंथाकडील माणसांना जेथें घेऊन ये! " राजा, त्या साक्षात् धर्म-स्वरूपी राजाचें तें भाषण नकुलानें मर्यादेनें शिरसा वंघ करून, द्रौपदीच्या महात्मांत द्रौपदी व द्रुपदाच्या राण्या होत्या तिकडे तो रथांत बसून गेला. याप्रमाणें नकुलाला द्रौपदीस आणण्याकरितां पाठवून शोकांनं विह्वल झालेला धर्मराज हा मित्रमंडळीसह मुलगे जेथें युद्धांत पडले होते आणि भोंवतीं राक्षसपिशाचा-दिकांचा घोळका जमलेला होता तेथें रोदन करीत करीत गेला! नंतर त्या अमंगळ व भयंकर स्थलीं प्रवेश करून पुत्र, मित्र, इष्ट, बांधव वंगरे सर्व भूमीवर पडलेले त्यानें पाहिले! त्यांचीं अंगे रक्तानें चिंब झालेलीं होती, हात-पाय छिन्नविच्छिन्न झाले होते, आणि त्यांच्या मस्तकांवर प्रहार झालेले होते. तशा स्थितींत त्यांना पहातांच त्याला अतिशय दुःख दाटून आलें; आणि तो महाधर्मात्मा युधिष्ठिर परिवारासहवर्तमान आक्रोश करू लागला व देह-मान सुटून जमिनीवर पडला!

अध्याय अकरावा.

—:—

भीमाचें मणिहरणार्थ गमन.
वैशंपायन सांगतात:—जनमेजया, युद्धांत

पुत्रपौत्र, इष्टमित्र सर्वे मरून पडलेले पाहून तो राजा दुःखाने लळमळू लागला. पुत्रपौत्रांची, बांधवांची व स्वजनांची मागची आठवण काढून तो महात्मा अतिशय विलाप करू लागला. त्याचे डोळे अश्रूंनी भरून आले, अंग थरथर कांपू लागले आणि देहभानही नाहीसे झाले. तेव्हां मितवमंडळी संचित होऊन त्यांचे ममाधान करू लागली. इतक्यांत नकुल हा देदीप्यमान रथांत बसून दुःखित द्रौपदीला बरोबर घेऊन आला. तो बरोबर अनर्थ ऐकून आधीच द्रौपदी व्याकूल झाली होती. त्यांतून आतां सर्व मुलांचा नाश झालेला प्रत्यक्ष पाहून ती अत्यंत विह्वल झाली; आणि सोमाट्याचा वारा लागून केळ थरथर कांपावी त्याप्रमाणे कांपत कांपत शोकाने दीन होऊन तिने धर्मराजाजवळ येऊन धाडकनू बुईवर अंग टाकले ! राजा. शोकाने व्याप्त झालेले त्या कमळाक्षी द्रौपदीचे मुख एकाएकी राहून ग्रामून टाकलेल्या चेद्राप्रमाणे दिमू लागले ! मग ती मूर्च्छित पाहातांच भीमाने लग्नगीने एकदम उठून हातांनी तिला सावरून धरले. मग भीमसनाने आश्वामन दिल्यावर ती माध्वी रडत रडत त्याला झगाली, “ फार चांगली गोष्ट झाली. की क्षत्रियधर्माला अनुसरून आपले मुल्यो मृत्युमुखी देऊन आतां हे हातीं आलेले पृथ्वीचे संपूर्ण राज्य आपण भोगित रहाल ! फार सुदैवाची गोष्ट आहे की, आपण सुखरूप राहून आपल्याला पृथ्वीचे राज्य व गजान्त लक्ष्मी मिळाली ! आणि आतां सुभद्रेचा तनय अभिमन्यु याची आठवणही होणार नाही ! क्षत्रियधर्माप्रमाणे ते आपले हार पुत्र धारातीर्थी पडलेले ऐकून असल्या प्रसंगांतही आपण माझ्यामहवर्तमान सुखाने त्या मुलांची कधी आठवण न काढतां रहाल ही फार आनंदाची गोष्ट आहे !

“अहो प्राणनाथ, त्या चांडाल अश्वत्थाम्याने

झोंपेत आमचेकडील लोकांचा वध केलेला ऐकून, अग्नि ज्याप्रमाणे आपल्या आश्रयाला जाळतो त्याप्रमाणे हा शोक मला जाळीत आहे ! तर युद्धांत पराक्रम करून त्या दुष्ट अश्वत्थाम्याचा आणि त्याच्या अनुयायांचा प्राण जर आपण आजच न घ्याल आणि अश्वत्थाम्याला त्याच्या पापकर्मांचे फळ न द्याल, तर कांहीं न खातांपितां मी ही अश्ली बसून राहून प्राण सोडीन, हे पक्के समजा ! ”

जनमेजया, इतके बोलून द्रौपदी माउली धर्मराजापुढे येऊन बसली ! ती आपली पट्टराणी तशी हड्डाने पुढे येऊन बसलेली पाहून तो धर्मात्मा युधिष्ठिर तिला म्हणतो, “ हे कल्याणि, तुला धर्म सर्व अवगतच आहे आणि हे तुझे पुत्र व भ्राते यांना क्षत्रियधर्माला साजे असेच मरण आलेले आहे, म्हणून त्यांच्याबद्दल तू शोक करू नये. सुंदरी, तो अश्वत्थामा येथून दूर एखाद्या निविड अरण्यामध्ये निघून गेला असेल; तर आतां युद्धांत त्याचा वध झालेला तुझ्या कानांवर येणे कसे वरें शक्य होईल ! ”

द्रौपदी क्षणितेः—अश्वत्थाम्याच्या मस्तकांत जन्मापासून एक मणि आहे असे मी ऐकले आहे. तर त्या चांडाळाला युद्धांत मारून तो मणि तुमच्या मस्तकावर जर मी पाहीन, तरच मी प्राण ठेवीन असा माझा निश्चय आहे ! राजा, धर्मराजाला इतके सांगून सुंदरी द्रौपदी भीमसेनाजवळ आली आणि काकुळतीस येऊन त्याला झगाली. “ अहो भीमसेन, आपल्या क्षत्रियधर्माला जागून या वेळीं माझे रक्षण करा ! इंद्राने शंवरामुराला मारले त्याप्रमाणे त्या पापी चांडाळाला मारून टाका ! तुमच्यासारखा पराक्रमी पुरुष दुसरा कोणी नाही अशी त्रैलोक्यांत ख्याती आहे. वारणावतांत सर्वेच पांडवांवर मोठे संकट आले त्या वेळीं तुमच्याच

आश्रयानें त्यांची त्यांतून सुटका झाली; हिडिंब राक्षसाची गांठ पडली तेव्हां तुळी निदानीला उपयोगी पडला ! त्याचप्रमाणे इंद्रानें जसे पौलोमीला संकटांतून सोडविलें, तसेच विराट नगरीं कीचकानें मला अतिशय छळले तेव्हां तुळीं मला सोडविलें, हीं जशीं एकापेक्षां एक कामें पूर्वीं तुळीं केलीं, तसाच आतांही या घातकी अश्वत्थाम्याचा वध करून तुळी कृतकृत्य व्हा ! ”

राजा, याप्रमाणें तिचे नानाप्रकारचे विलाप ऐकून त्या बलिष्ठ भीमसेनाला संतापाचा आवेश आवरेना. मग आपल्या सुवर्णमय दिव्य रथावर चढून, सुंदर धनुष्य, बाण वगैरे सामग्री घेऊन, नकुलाला सारथि करून, अश्वत्थाम्याचा वध करण्याच्या निर्धारानें बाण जोडून व प्रत्यंचा ओढून त्यानें जलद घोडे हांकले ! ते वाऱ्यासारखे चपळ घोडे निघाले ते वेगानें भरधाव चालले. अशा रीतीनें तो शूर पुरुष आपल्या छावणींतून रथ घेऊन तर निघून गेला !

अध्याय बारावा.

—:०:—

अश्वत्थाम्याचा एक अविचार !

वैशंपायन सांगतात:—तो निघून गेल्यावर यदुकुलश्रेष्ठ राजीवाक्ष श्रीकृष्ण कुंतीपुत्र युधिष्ठिराला म्हणाला, “ युधिष्ठिरा, पुत्रशोकानें व्याकूल झालेला तुझा भाऊ भीमसेन संग्रामांत अश्वत्थाम्याचा वध करावा या इराद्यानें एकटाच निघून जात आहे. राजा, सर्व भ्रातृवर्गांत हा भीमच तुला विशेष प्रिय असें अमून, तो आज अशा संकटांत सांपडला असतां तूं त्याचे संरक्षणाचा प्रयत्न करित नाहीस हें काय ! आहे, वीरश्रेष्ठ द्रोणानें आपल्या मुलाला जें ब्रह्मशिर नांवाचें अस्त्र शिकवून ठेविलें आहे; तें संपूर्ण भूलोकाला जाळून टाकील इतकें उग्र

आहे ! तेंच अस्त्र त्या महाधनुर्धारी महात्म्या द्रोणगुरूनें प्रसन्न होऊन अजुनालाही देऊन ठेविलें आहे ! राजा, एकदां त्या द्रोणपुत्रानें एकांती आपल्या बापाजवळ उतावीळपणानें तें अस्त्र मागितलें, परंतु द्रोणाचार्याला आपल्या मुलाचा निर्दयपणा व अविचारीपणा ठाऊक होता; म्हणून त्याचें मागणें फारसें न आवडून त्या युक्तायुक्तविचार पाहाणाऱ्या द्रोणानें मुलाला नीट वजावून असें मागितलें की, बावारे, युद्धांत आणीबाणीचा प्रसंग जरी आला तरी तूं या अस्त्राचा प्रयोग करू नको. आणि त्यांत विशेषकरून माणसांवर तें अस्त्र करीच मोटूं नको ! इतकें मागून तो आणखी पुढें मुलाला म्हणाला, तूं चांगल्या मार्गानें चालणार नाहीस ! ” युधिष्ठिरा, तें बापाचें कष्ट लागणारें बोलणें ऐकून त्या दृष्ट अश्वत्थाम्याची आपले हातून काणतेंही मत्कार्य होण्यासंबंधानें निराशा होऊन तो उदासपणानें पृथ्वीवर भटकूं लागला. तेव्हां, हे कुरुश्रेष्ठा, तूं वनांत रहात असतां तो द्वारकेत येऊन यादवामध्ये पृज्य होऊन राहिला. याप्रमाणें ममुद्रकिनार्यावर द्वागवतीचे तीरीं रहात असतां एकदां एकांती मला गांदून तो हंसत हंसत म्हणाला, “ कृष्णा, उग्र तपश्चर्या करून माझ्या पगकमी पित्याला अगस्त्यापासून जें ब्रह्मशिर नांवाचें देवगंधर्वांनाही पृज्य असें अस्त्र मिळालें, तें जसें त्या भारतांच्या आचार्यांजवळ सिद्ध आहे तसेंच माझ्याजवळही सिद्ध आहे. तर, हे यदुकुलश्रेष्ठ, तें अस्त्र माझ्यापासून घेऊन त्याच्या भोवदळ रणांत शत्रूंचा संहार करणारें तुझे सुदर्शन चक्र मला दे. ” धर्मराजा, याप्रमाणें तो हात जोडून माझ्यापाशीं माझे अस्त्र हरप्रयत्न करून मागूं लागला; तेव्हां मीही न रागावतां संतोषानें त्याला म्हटलें, “ देव, दैत्य, गंधर्व, मानव,

पक्षी व सर्प सर्व एकत्र जरी केले, तरी त्यांच्याने माझ्या पराक्रमाची बरोबरी शंभराव्या हिश्रानें देखील होणार नाही. तेव्हां, हें माझे धनुष्य आहे, ही शक्ति आहे, हें चक्र आहे, ही गदा आहे; ह्यांपैकी माझ्यापासून तुला जें जें हवें असेल तें तें मी तुला देतो. यांतून जें तुला पेलतां येईल व रणांत शत्रूवर चालवितां येईल तें खुशाल घे; शिवाय, तूं मला आपलें अस्त्र देऊं करीत आहेस तेंही मला नको !'

“ युधिष्ठिरा, त्या स्वारीनें माझ्याशीच स्पर्धा धरून पुढें ठेविलेल्या त्या शस्त्राखांतून तें सुंदर, सहस्त्रार, वज्रनाभ चक्र मागितलें. तेव्हां 'बरे तर घे !' असें मी म्हटलें असतां एकदम त्या चक्रावर झडप घालून त्यानें डाव्या हातांत तें धरलें; परंतु त्याला तें जाग्यावरून नुसतें हलेना देखील ! तेव्हां तो त्याला उजवा हात लावून व आपलें सर्व ऋतू खर्चून उचलूं लागला, तरीही तें हलेना, मग पेलतें कशाचें ? तेव्हां खटपट करून करून शेवटीं थकून हिरमुसला होऊन तो माघारा वळला ! याप्रमाणें तो अश्वत्थामा तो नादच सोडून देऊन व खट्टू होऊन अस्वस्थपणें बसला, तेव्हां त्याला मीच हाक मारून म्हटलें, 'अरे, जो अर्जुन मानवांमध्ये परमावधीच्या योग्यतेला जाऊन पोहोंचला आहे; ज्याच्याजवळ गांडीवासारखें धनुष्य; ज्याच्याजवळ विख्यात श्वेतवर्णाचे अश्व; ज्याच्या निशाणावर प्रत्यक्ष मारुतीचा निरंतर वास; ज्यानें देवाधिदेव जो उमापति शंकर त्यालाही साक्षात् युद्धामध्ये पुरे पुरे करून प्रसन्न केले; ज्याहून भूलोकीं मला अधिक प्रिय वाटणारा माणूस दुसरा नाहीच; ज्यानें मागितलें असतां मी देणार नाही अशी वस्तुच नाही,—प्रत्यक्ष बायकामुलें देखील मी ज्याला देईन, तो माझा परम मित्र पुण्यशाली अर्जुन

यानें मुद्दां तूं आतां माझ्याजवळ केलेस असें भाषण कधीं केले नव्हतें ! त्याचप्रमाणें, अरे, बारा वर्षे घोर ब्रह्मचर्यव्रत पाळून हिमाचलावर राहून तपोबलानें जो पुत्र मी संपादिला व जो माझ्याचप्रमाणें व्रतस्थ राहिलेल्या रुक्मिणीचे उदरीं जन्माला आला, तो माझा तेजस्वी पुत्र प्रद्युम्न यानेही हें माझे दिव्य आणि अप्रतिम चक्र कधींही मागितलें नव्हतें; तें, मूर्खा, तूं आज मागितलेंस ! आतां तूं केलेलें मागणें यापूर्वीं माझ्यापाशीं बलशाली बलरामानेही केले नाही; किंवा गद यादवानेही केले नाही; अथवा सांब नामक यादवानें केले नाही; अगर वृष्णि, अंधक वगैरे द्वारकेतील जे मोठमोठे महारथी योद्धे त्यांपैकीं देखील कोणीही माझ्याजवळ असले मागणें केले नाही ! बा वीरश्रेष्ठा, सर्व, भारतांचा गुरु द्रोणाचार्य त्याचा तूं मुलगा, तुलाही सर्व यादव फार मानतात; असें असतां, हें चक्र घेऊन तूं कोणाशीं युद्ध करूं पहातोस ?'

“ राजा, हें माझे भाषण ऐकून अश्वत्थामा यानें उत्तर दिलें, 'कृष्णा, तुझी पूजा करून तुझ्याचबरोबर पाहिजे असल्यास मी करीन. प्रभो, मी अगदीं खरें सांगतो कीं, देवांना काय किंवा दैत्यांना काय, पणार पूज्य वाटणारे तुझे हें चक्र मी जें मागितलें, तें मी सर्वत्र अजिंक्य व्हावें म्हणून मागितलें. आतां, केशवा, दुर्मौळ अशी वस्तु मी मागितली व ती मला मिळाली नाही, तेव्हां आलेस तसा मी परत जातो ! परंतु, गोविंदा, आतां तरी माझ्याशीं नीट बोल. तुझ्याशीं स्पर्धा करणारा कोणी शत्रुच नाही असा तूं वीरश्रेष्ठ आहेस आणि तूं धारण केलेलें हें सर्व भयंकर अस्त्रांमध्ये भयंकर असें चक्र या भूतलावर दुसऱ्या कोणालाही मिळण्यासारखें नाही.' इतकें माझ्याशीं बोलून गेल्यावर अश्वत्थाम्यानें चांगले चांगले रथाला जोडण्या-

सारखे घोडे, पुष्कळ द्रव्य व नानाप्रकारची वस्तू बरोबर घेऊन गमन केले. तो कालेकरून पुनः येऊन पोहोचला आहे. तो फार अविचारी आहे, दुष्ट आहे, खोडसाळ आहे, निर्दय आहे व त्याला ब्रह्माशिर अस्त्र चांगले अवगत आहे. म्हणून त्यापासून भीमाचे रक्षण करणे अवश्य आहे ! ”

अध्याय तेरावा.

—:—

अश्वत्थामकृत अस्त्रप्रयोग.

वैशंपायन सांगतात:—इतके बोलून तो सर्व यादवांना संतोष देणारा वीरनायक श्रीकृष्ण संपूर्ण उत्कृष्ट आयुधांनी सज्ज केलेल्या अशा आपल्या उत्तम रथावर आरूढ झाला, त्या रथाला सुवर्णाच्या माळांनी शृंगारलेले कांबोज देशचे निवडक घोडे जोडलेले असून, उदय-कालच्या रवीप्रमाणे देदीप्यमान दिमणाच्या त्या रथाच्या जुंवाची उजवी बाजू शैव्याने व डावी बाजू सुप्रीवाने संभाळली होती; आणि त्यांच्या मार्गे अनुक्रमे मेघपुष्प व बलाहक हे होते. रथाच्या शिरोभागी विश्वकर्माने तयार केलेला व रत्नादिकांनी मढविलेला दिव्य ध्वज उंच फडकत होता. त्या ध्वजावर तेजःपुंज असा साक्षात् सर्पांचा शत्रु जो गरुड तो उभा अमलेला दिसत होता. अशा त्या रथावर सर्व धनुर्धारी योद्ध्यांचा अग्रणी श्रीकृष्ण हा चढून बसला; आणि अर्जुन व कुरूंचा राजा मत्स्य-शील धर्म हे उभयतां महात्मे श्रीकृष्णाच्या दोन बाजूला विराजमान झाले. त्या वेळी, जनमेजया, शाड्ग्व धनुष्य धारण करणारा इंद्र आपल्या रथावर बसला असता त्याच्या पाश्चिमाग्री आश्विनकुमार बसलेले जमे शोभतात, तसे ते शोभले. अशा रीतीने आपल्या लोकमान्य रथावर त्या दोघांना आपल्या शेजारी

बसून घेतल्यावर श्रीकृष्णाने चाचूक हाती घेऊन ते वेगांनी धावणारे उत्कृष्ट घोडे हांकले. तेव्हां ते दोन पांडव व यादवश्रेष्ठ श्रीकृष्ण हे त्रिवर्ग ज्यांत बसले आहेत असा तो ग्य घेऊन ते घोडे एकदम भरधाव सुटले; आणि याप्रमाणे त्या शाड्ग्वधर श्रीकृष्णाला घेऊन जेव्हां ते घोडे भरधाव चालले, तेव्हां अनेक पक्षा उडत अमल्याप्रमाणे मोठा शब्द होऊ लागला. हे भरतश्रेष्ठ, मग ते तिथे वीरश्रेष्ठ उग्र धनुष्य धारण करणाऱ्या भीमसेनाच्या मागोमाग जाता जाता एका क्षणांत त्याला गांठीत आले; परंतु त्यांनी त्याला गांठले तरीही मंतापाच्या आवेशाने शत्रूंचा पाठलाग करणाऱ्या त्या भीमसेनाला त्या महावीरांच्याने आवरून धरवना ! हे तिथे युद्धविशारद वीर पहात असताही त्यांना न जुमानतां, ज्या टिकाणी महात्म्या पांडवांच्या पुत्रांचा वध करणाऱा अश्वत्थामा अमल्याची वार्ता समजली होती त्या भागीरथीतीराकडे तो भीमसेन घोडे वेगांनी हाकीत तसाच चालला ! मग भागीरथीतीरी ऋषीमहवर्तमान बसलेले महात्मे भगवान् कृष्ण द्वैपायन व्यास त्याच्या दृष्टीम पडले; व तेथेच शेजारी तो कर कर्म करणारा अश्वत्थामा तुपांने मागलेला, दर्भवस्त्र धारण केलेला व घुळीने भरलेला असा बसलेला दिसला ! तेव्हां त्यांच भीमसेन धनुष्यबाण घेऊन त्याच्या अंगावर धावला आणि .. अरे थांब थांब ! ” असे ओरडून म्हणाला ! तेव्हां, राजा, हाती उग्र धनुष्य घेऊन येत अमलेल्या त्या भीमाला पाहून व त्याच्या पाठीमागे श्रीकृष्णाच्या रथावर बसलेले त्यांचे दोन भाऊ पाहून अश्वत्थामा भयभीत झाला; आणि आतां मात्र आपल्या प्राणावर प्रमंग घेऊन गुदरला असे त्याला वाटले ! मग न डगमगतां धैर्य धरून त्याने आपल्या दिव्य व श्रेष्ठ अस्त्रांचे स्मरण केले;

आणि उजव्या हातानें दर्भाची एक लांब काडी घेऊन त्या विकट प्रसंगी तें अख्त्र मोडले! हे पांडव शूर आहेत, त्यांच्याजवळ दिव्य आयुधें आहेत, वंगेरे कांहीं विचार त्यांन मनांत आणिला नाही; व अख्त्र मोडते वेळीं “ अख्त्रा, जा, पांडवांचा निःपात कर ! ” असे शब्द रागाच्या आवेशानें उच्चारले. अशा रीतीनें त्या महाप्रतापी द्रोणपुत्रानें सर्व लोकांना मोहून टाकण्याकरितां अख्त्र मोडलें. त्या वेळीं त्या अख्त्रमंलित काडीतून जो अग्नि उत्पन्न झाला तो प्रलय करणाऱ्या कृतांताप्रमाणें संपूर्ण लोक जालून टाकील कीं काय असे वाटलें !

अध्याय चौदावा.

—:०:—

अर्जुनकृत अस्त्रप्रयोग.

वैशंपायन सांगतात:—राजा, आजानुवाहू श्रीकृष्ण यानें तो अश्वत्थाम्याचा विचार अगोदरच घोरणानें ओळखिला व अर्जुनाला म्हटलें “ अर्जुना, ए अर्जुना, द्रोणाचार्यांनीं तुला दिलेलें जें दिव्य अस्त्र तुजजवळ आहे, तें मोडण्याची ही वेळ आहे. म्हणून, हे भगत-कुलश्रेष्ठा, आपल्या व आपल्या भावांच्या रक्षणाकरितां, शत्रूकडील कमल्याही अस्त्राचें निवारण करणारें तें तुझें अस्त्र या युद्धप्रसंगी मोड. ”

जनमेजया, हें श्रीकृष्णाचें भाषण ऐकल्यावर शत्रूंना त्राहि त्राहि करून मोडणारा तो अर्जुन धनुष्यबाण घेऊन सत्वर रथांतून उतरला; आणि ‘ कल्याण अमो ! ’ असे शब्द प्रथम अश्वत्थाम्याला उद्देशून व नंतर आपल्याला व आपल्या भावांना उद्देशून त्यानें उच्चारले आणि देवतांना व सर्व वडील माणसांना नमस्कार करून तें अस्त्र मोडलें. सोडते वेळीं त्यानें ‘ या अस्त्रानें शत्रूच्या अस्त्राचा परिहार होवो ! ’ असें शुभ मनांत चिंतिलें. मग अर्जु-

नानें एकदम सोडलेलें तें अस्त्र प्रज्वलित झालें व भयंकर जाळ होऊन तें प्रलयकालच्या अग्नीप्रमाणें दिमूं लागलें. त्याचप्रमाणें अश्वत्थाम्याचेंही अस्त्र पेटून भयंकर बंबाळ होऊन जिकडे तिकडे जाळा दिमूं लागल्या; अतिशय निर्घात होऊन हजारों उल्का पतन पावल्या; सर्व प्राणी भयानें गर्भगळीत होऊन गेले; आकाश आगीच्या लोळांनीं व्यापून जाऊन शब्दमय होऊन गेलें; आणि पर्वत, अरण्ये व झाडे यांसहवर्तमान पृथ्वी थरथर कांपूं लागली ! याप्रमाणें ती दोन्ही पेटलेली अस्त्रे लोकांना जळीत राहिलीं, तेव्हां सर्वभूतात्मा नारद मुनि व भारतांचा पितामह व्यास मुनि या दोन्ही महर्षींनीं त्या ठिकाणीं बरोबर येऊन तें अवलोकन केलें; आणि प्राणिमात्राची दया करणारे व महाज्ञानी असे ते उभयतां तेजस्वी मुनि अश्वत्थामा व अर्जुन या दोन्ही वीरांना शांत करण्याकरितां त्या पेटलेल्या अस्त्रांच्या मध्ये उभे राहिले. राजा, प्रज्वलित अग्नीप्रमाणें तेजस्वी अशा त्या मुनींना कशापामून भय अमणार ? तेव्हां ते त्या दोन अस्त्रांच्या मध्यदेशीं तमचे उभे राहिले ! देव आणि दानव हे उभयतां ज्यांना पूज्य मानतात, त्यांच्यापुढें कोणाचें काय चालणार ? त्यांचा हेतु हा होता कीं, दोन्ही अस्त्रांचें शमन करून प्राण्यांचें रक्षण करावें. नंतर ते ऋषि म्हणाले, “ पूर्वीं शस्त्रास्त्रविद्येंत महाप्रवीण असे महारथी होऊन गेले, पण असें अस्त्र माणसांमध्ये त्यांनीं केव्हांही सोडलें नाही ! परंतु, वीरांनो, तुम्हीं हें काय घोर साहस करून ठेविलें आहे ? ”

अध्याय पंधरावा.

—:०:—

अर्जुनकृत अस्त्रोपसंहार.

वैशंपायन सांगतात:—हे पुरुषव्याघ्रा, त्या अग्नीमारुत्या तेजस्वी मुनींना पाहतांच अर्जु-

नानें लग्नगीनें आपलें दिव्य अस्त्र माघारें घेतलें. नंतर हात जोडून तो त्या ऋषींम म्हणाला, “ या अस्त्रानें शत्रूच्या अस्त्रांचें शमन व्हावें म्हणून मीं तें मोडलें होतें व आतां हें आवरून घेतलें! तर हा पापाला न भिणारा अश्वत्थामा खाम आम्हां मर्वांना आपल्या अस्त्राच्या तेजांनें जाळून टाकील. तेव्हां अशा स्थितींत जेणेंकरून आमचें व सर्व लोकांचें सर्व प्रकारें रक्षण होईल अशी आज्ञा आपणच उभयतांनीं करावी. कारण. आपण देवांप्रमाणें सर्वांम वंद्य आहां. ” इतकें बोलून अर्जुनांन पुनः आपल्या अस्त्राचा उपसंहार केल्या युद्धामध्ये अशा रीतीनें अस्त्राचा उपसंहार करणें हे देवा-दिकांनाही साधण्यासारखें नाहीं. तमलें उग्र अस्त्र एकदां रणामध्ये मोडल्यावर तें माघारें घेण्याला एका अर्जुनावांचून दुसऱ्या कोणामध्ये सामर्थ्यच नाहीं. — प्रत्यक्ष इंद्रामध्ये देखील नाहीं! ब्रह्मदेवाच्या तेजापामून त्या अस्त्राची उत्पत्ति; तेव्हां तें अस्त्र जर कोणी अविचारांन सोडलें, तर तें माघारें घेणें कडकडीत ब्रह्म-चारी असेल त्यावांचून इतरांना शक्यच नाहीं. ब्रह्मचर्यव्रत बरोबर रीतीनें न पाळतां जर कोणी तें अस्त्र मोडलें व पुनः तो तें माघारें काढून घेऊं लागला. तर तें अस्त्र त्याचें व त्याच्या परिवाराचें ममत्कच छेदून टाकील! ब्रह्मचर्य न दळूं देतां कडकडीत धत पाळीत असून मोठ्या संकटाच्या ममयीं सुद्धां अर्जुनांन तें अस्त्र कधीं मोडलें नव्हतें. असा तो अर्जुन मृत्य व ब्रह्मचर्य पाळणारा. शूर व गुरूची आज्ञा शिरमा वंद्य करणारा असल्यामुळेच पुनः तें अस्त्र त्याला माघारें काढून घेतां आलें. ममोर वेऊन उभे राहिल्या त्या उभयतां मुनींना अश्वत्थाम्यांनही पाहिलें, परंतु आपण मोडलेलें घोर अस्त्र आपल्या सामर्थ्यांन माघारें काढून घेण्याचें

त्याच्या हातून होईना. रणांत तें उग्र अस्त्र परत घेतां येईना; तेव्हां. राजा, तो अश्वत्थामा निगश होऊन व्याम मुनींम म्हणाला. “ मुनि वर्य, भीममेनांचें भय वाटून परमावधीच्या संकटांतच आपल्या प्राणांचें रक्षण करण्याच्या हेतूनें मीं हें अस्त्र मोडलें; आणि आपणच पहा कीं, युद्धामध्ये भीममेनांन कपटाचरण करून दुयेंधनाचा वध केला हा मोठाच अधर्म त्याचें हातून घडला आहे! म्हणूनच मीं हें अस्त्र परिणामाचाही विचार न करितां मोडलें आहे. तें आतां पुनः माघारें घेण्याचें माझ्या हातून होणार नाहीं. अशींमार्गें प्रत्येक व दुर्माळ अमं हें दिव्य अस्त्र पांडवांप्रीत्यर्थ याची योजना अमं मंत्रून मीं मोडलें आहे. तर पांडवांच्या वधाच्या उद्देशानें मोडलेलें हें अस्त्र आज सर्व पांडवांचा प्राण घेतल्यावांचून राहाणार नाहीं. रगाच्या आवेशामध्ये पांडवांचा अंत व्हावा असा हेतु धरून मीं हें अस्त्र रणामध्ये मोडण्याचें पातक केलें आहे! ”

व्याम मुनि म्हणतात: — बावोर, धनुर्विद्येंत पंडित अमा जो अर्जुन. त्यांन ब्रह्मशिर अस्त्र मोडलें तें रगाच्या आवेशानें मोडलें नाहीं. किंवा युद्धांत तुझा नाश व्हावा म्हणून मोडलें नाहीं; तर त्या अस्त्रानें तुझ्या अस्त्राचें रणांगणीं शमन व्हावें असा उद्देश धरून त्यांन तें अस्त्र मोडलें व पुनः माघारेंही घेतलें. असलें ब्रह्मास्त्र तुझ्या पित्याच्या उपदेशानें मिळालें अमुनही या घोर अर्जुनांन आपल्या क्षत्रियधर्म मोडला नाहीं. सर्व अस्त्रविद्या अवगत असून मनाची ममता न दळूं देणारा असा मज्जन हा अर्जुन आहे; अमं असून त्याच्या भावांमहर्वर्तमान त्याचा अंत करवा अशी इच्छा तूं मनांत कां वागवितास! ज्या ठिकाणीं ब्रह्मास्त्राचा ब्रह्मा-स्त्रानेंच परिहार होतो, त्या ठिकाणीं बारा वर्षे-पर्यंत पर्जन्यदेवता वृष्टि करीत नाहीं; म्हणून. व

अर्जुनामध्ये सामर्थ्य अमूनही तो महात्मा प्रजेचें कल्याण करण्याकरितां तुझ्या अन्नाचा पाडाव करीत नाही. पांडव, तू व संपूर्ण राष्ट्र या सर्वांचें रक्षण हाणें इष्ट आहे. म्हणून, भल्या गृहस्था. हें दिव्य अन्न तू माघारें घे. तुझाही राग शांत होवो व पांडवही सुखरूप अमोत. राज्यां अर्जुन हा अधर्मानें तुला जिंकू इच्छीत नाही. तुझ्या मन्तकी जो मणि आहे तोही आज पांडवांच्या स्वाधीन कर, म्हणजे तो घेऊन तुला पांडव प्राणदान करील !

अश्वत्थामा म्हणाला:—पांडवांनी जीं जीं रत्नें व दुसऱ्या कोणत्याही प्रकारची संपत्ति आजपर्यंत मिळविली असेल, त्या सर्वांहून माझा हा मणि अधिक योग्यतेचा आहे. तो एकदां मन्तकी धारण केला कीं. शत्रूंचें भय नाही, रोगाईंचें भय नाही, भुकेची चिंता नाही, व देवांपामून म्हणा, देत्यांपामून म्हणा, नागांपामून म्हणा, भीति कमलीही नाही; त्याचप्रमाणें राक्षसांची किंवा तस्करांचीही भीति नको. अशा प्रकारचें ज्या मण्याचें सामर्थ्य तो मी कधीही हातागेळा करणार नाही. तथापि, हे महर्ष, आपण जें म्हणतां तें तत्काळ करणें मला प्राप्त आहे. हा मणि आहे व हा मी आहे. परंतु अन्नयष्टि मात्र पांडवांच्या गर्भावर जाऊन पडणारच, कारण ती फुकट जाणार नाही; व एकदां हातून सुटलेलें हें अन्न पुनः माघारें घेण्यास मी असमर्थ आहे. तर त्याची योजना मी गर्भावर करितां. मुनिश्रेष्ठा, आपण सांगितलेलें मी मोडतां असें नाही !

व्यास म्हणतात:—बरे तर, तसें कर. मात्र आतां बुद्धि पालटू देऊं नको. पांडवांच्या गर्भाकडे या अन्नाची योजना करून तरी स्वस्थ रहा.

वैशंपायन सांगतात:—नंतर तें रणांगणीं सुटलेलें श्रेष्ठ अन्न अश्वत्थाम्यानें व्यासमुनींच्या सांगण्यावरून गर्भावर सोडलें !

अध्याय सोळावा.

—:०:—

अश्वत्थाम्याला कृष्णज्ञाप.

वैशंपायन सांगतात:—राजा, त्या पापी अश्वत्थाम्यानें तें अन्न सोडलें असें पाहून श्रीकृष्ण आनंदानें अश्वत्थाम्याला म्हणाला, “ विराटाची मुलगी—अर्जुनाची सून ही एका वेळीं उपहृत्यांत अमतां एका थोर ब्राह्मणानें तिला म्हटलें आहे कीं, ‘कुरुकुलांतले सर्व पुरुष परिक्षीण (नष्ट) होतील अशा समयीं तुला पुत्र होईल व या कारणानें तो गर्भांत अमतांना त्याला परिक्षित् ही संज्ञा प्राप्त होईल. ’ तें त्या मत्पुरुषाचें भाषण खरें होण्याचा हा योग आहे. तेव्हां ह्या पांडवांना पुनः वंशवृद्धि करणारा हा परिक्षित् मुलगा होणारच ! ”

राजा. श्रीकृष्णाचे हे शब्द ऐकतांच अश्वत्थामा रगानें लाल होऊन म्हणाला. “केशवा, तू हें जें पक्षपातानें म्हणत आहेस तें तमें नाही. कृष्णा. माझ्या तोंडून निघालेले शब्द खोटे होणार नाहीत. विराटाच्या मुलीच्या ज्या गर्भाचें रक्षण तू करूं पहात आहेस. त्या गर्भावर मी सोडलेलें अन्न जाऊन पडणार ! ”

श्रीकृष्णानें उत्तर दिलें:—हें अन्न परमश्रेष्ठ. तेव्हां तें पडलें म्हणजे फुकट तर जाणारच नाही; परंतु मूल जें मेलेलें जन्माला येईल तें जिवंत होऊन दीर्घायुषी होईल ! तुला मात्र सर्वे ज्ञाने पुरुष दुष्ट व पापी समजतील; आणि हा घोर कर्म करणारा—बालहत्या करणारा आहे असें मानतील. म्हणून तू या पापकर्माचें फळ भोगीत रहा ! अरे. तीन हजार वर्षे या भूमंडळावर तू भ्रमण करीत राहाशील. कोणाशीं कधीही तुझें संभाषण देखील न होतां तू एकटाच निर्जन प्रदेशांत फिरत राहाशील. अरे नीचा, माणसांमध्ये तुझें रहाणें कधीं होणार नाही;—निबिड अरण्यांत कोठें

तरी राहून रक्त-पू यांच्या दुर्गंधीने शरीर वेळी इकडे ती मानी खी जलपानही न करित
 व्यापून जाऊन नानाप्रकारचे रोग मोशीत तू प्राणत्याग करण्याच्या निर्धाराने बमली होती !
 पापी रानोरान हिडशील ! हा परिस्ति राजा वैशापायन पुढे सांगतातः- ते शूरा पांडव
 मात्र मोठा होऊन कृपाचार्यापामून वेदोपदेश निवाले ते वाच्यामारगे भावणारे उत्कृष्ट घोडे
 घेऊन संपूर्ण अस्त्रविद्या ग्रहण करील; आणि रथाला जोडून लवाजम्यानिशी पुनः आपल्या
 उत्कृष्ट अस्त्रे सर्व संपादन केल्यावर तो महात्मा शिविगपार्शा येऊन पाहोचले; आणि ते महा-
 क्षत्रियधर्म योग्य रीतीने पाळीत साठ वर्षेपर्यंत रथी योद्धे लगवर्गाने रथांतून उतरून त्यांनी
 पृथ्वीचे राज्य करील. तर, अरे दुष्टा, तुझ्या द्रौपदीची भेट घेतली; तेव्हां ती अश्रुत्याम्या-
 देखत हा मुलक्षणी कुमार कुरुवंशाचा अधि- च्या पराभवामुळे संतुष्ट. पण पुत्रादिकांच्या
 पति होऊन परिस्ति राजा या नांवाने प्रसिद्ध मरणामुळे कष्टी झालेली आहे असे पाहून
 होईल ! कारण, नीचा, शस्त्राग्नीने दग्ध झालेल्या तेही फार कष्टी झाले. असा; मग मनाला
 ह्या बालकाला मी जिवंत करीनच करीन ! उद्दाम मुळी नमून दुःखाने व शोकाने व्याकूल
 माझी तपश्चर्या खरी अमून तिचे सामर्थ्य काय झालेल्या स्थितीत तिच्याजवळ जाऊन ते
 आहे तें तू पहा ! पांडव तिच्यामभोवती श्रीकृष्णामहवर्तमान

मग व्यास म्हणालेः—द्रोणपुत्रा, आम्हांला-
 ही न जुमानतां ज्यापेक्षां तूं असे घोर कर्म
 केलेस व तूं ब्राह्मण जातीचा अमूनही ज्या-
 पेक्षां असले वर्तन तुझ्या हातून झाले त्या-
 पेक्षां श्रीकृष्णाने जे आतां तुला मागितले ते
 योग्य सांगितले व त्याचप्रमाणे सर्व घडून
 येणार आहे ह्यांत तिळमात्र संशय नाही.
 कारण तूं क्षत्रियधर्म स्वीकारिल्यास !

अश्रुत्यामा उत्तर करितोः—मुनिवर्य,
 आपल्या सहवर्तमान ह्या लोकीं मानवांमध्ये
 मी वास करीन; आणि अशा रीतीने भगवान्
 श्रीकृष्णाची वाणी खरी होऊं ह्या म्हणजे झाले !

मणिहरण व द्रौपदीसात्वतन.

वैशापायन सांगतातः—नंतर महात्म्या पांड-
 वाना तो मणि देऊन टाकून ग्विल होत्माना
 सर्वांच्या देखत तो अश्रुत्यामा वनांत निवून
 गेला. आतां पांडवांना वैरी कोणी उरली
 नाहीच, तेव्हां तेही श्रीकृष्णाला, व्यासमुनीना
 व नारद महामुनीना पुढे करून अश्रुत्याम्याचा
 तो जन्मादारभ्य अंगावर असलेला मणि वरो-
 वर घेऊन त्वरेने द्रौपदीकडे धावत निवाले. त्या

श्रीकृष्ण शिष्टाई करण्याकरितां निवाला त्या
 वेळीं तूं जे भाषण केलेस, कीं मला पति
 नाहीत; पुत्र नाहीत. भ्राते नाहीत. आणि
 कृष्णा. तूंही माझा नव्हस; असे जे जे
 कठोर पण क्षत्रियधर्माच्या शाभणारे उद्गार
 धर्मराजा शत्रुर्शा मलाखा करू पहात वेळीं तूं
 श्रीकृष्णानजळ काढिलेस. ते आतां तूं आठव
 वेंग ! राज्यप्राप्तीला आड आलेला जो पापी
 दुःखांधन. तो तर मारला गेलाच ! मानलेल्या
 दुःशामनाचे रक्तप्राशन मी केलेच ! वन्यांचा
 मूड उगवावयाचा तो सर्व आतां अस्त्री
 उगवला ! दोष देणाऱ्यांना आम्हांला दोष
 लावण्यास जागा ठेविली नाही ! अश्रुत्याम्याला
 निकून मगच हा ब्राह्मण म्हणून तेवढी मर्यादा

रावून त्याम सोडून दिलें ! प्रिये, त्याचें तेज तर नाहीमें झालेंच व शरीर मात्र राहिलें आहे; त्याचा मणि काढून घेतला व त्याला आयुष्ये खाली देण्याम लाविलें ! ”

त्यावर द्रौपदी ह्मणाली:—माझे वैर माधा-
वयाचें तेवढें माधवलेंच. गुरुपुत्र अश्वत्थामा मला गुरूमारखा आहे. अमो; आतां हा मणि धर्मराजांनं आपल्या मस्तकावर धारण करावा ह्मणजे झालें !

नंतर गुरु द्रोणाचार्य यांचा प्रमाद ह्मणून व द्रौपदीनेंही मांगितलें ह्मणून धर्मराजांनं तो मणि घेऊन मस्तकीं धारण केला. तो दिव्य मणि मस्तकावर धारण करितांच धर्मराजा शिरोभागी चंद्र अमलेल्या पर्वताप्रमाणें शोभूं लागला. मग पुत्रशोकांनं त्याम झालेली ती मानी द्रौपदी उठली; व नंतर धर्मराजा श्री-
कृष्णाला प्रश्न करितां झाला.

अध्याय सतरावा.

—:०:—

कृष्णकथित शिवमाहात्म्य.

वैशंपायन मांगतात:—मौक्तिकयुद्धांत त्या तीन रथ्यांनीं सर्व मैत्र्याचा संहार केल्यावर धर्मराजा शोकाकुल होऊन श्रीकृष्णाला म्हणाला, “ कृष्णा, ज्याच्या पदरीं मुकृत लेशमात्रही नाही अशा ह्या पापी व नीच अश्वत्थाम्यानें माझ्या सर्व महारथी पुत्रांचा कमा बरें वध केला ? त्याचप्रमाणें अस्त्रविद्येंत प्रवीण आणि शूर अशा सहस्रावधि द्रुपद राजाच्या मुलांचा संहार ह्या अश्वत्थाम्याचे हातून कमा बरें झाला ? एवढे धनुर्धारी द्रोणाचार्य, परंतु त्यांनीं देखील ज्या धृष्टद्युम्ना-
समोर उभें राहाण्याचें टाळिलें, त्या वीरश्रेष्ठ धृष्टद्युम्नाचाही प्राण कसा बरें ह्यानें घेतला ? पुरुषोत्तमा, असें काय बरें अपूर्व पुण्यकर्म

त्या द्रोणपुत्रांनं केलें होतें म्हणून रणांत त्याचे एकट्याचे हातून सर्वांचा वध व्हावा ? ”

श्रीकृष्ण मांगतात:—त्रावारे, देवाधिदेव माझातु जो शंकर, त्याला तो अश्वत्थामा शरण गेला, ह्मणून त्या एकट्याचे हातून अनेकांचा वध झाला. कारण, तो महादेव प्रमत्त झाल्या-
वर अमरत्व देवांल देईल. तो कैलासनाथ असें सामर्थ्य देऊं शकेल कीं, ज्याच्या योगांनं इंद्राचाही नाश करितां येईल. हे भरतश्रेष्ठा, त्या महादेवाचें खरें स्वरूप काय आहे व प्राचीनकालीं त्यानें काय काय अद्भुत कर्मे केलीं आहेत. हे सर्व मी जाणतो. तो सर्व भूतांचा आदि, मध्य व अंत आहे. त्याच्याच सामर्थ्यानें ह्या सर्व जगाची हालचाल होत आहे. एके समयीं भूतांची सृष्टि करण्याचें मनांत आणून ब्रह्मदेव प्रथम शंकराचें दर्शन घेऊन त्याम म्हणाला कीं, ‘ आपण पुष्कळ कालपर्यंत प्रजा उत्पन्न करूं नका. ’ तेव्हां बरें ह्मणून, भूतमात्रांचे ठायीं दोष भरलेले आहेत असें पाहून पाण्यांत बुडी मारून फार काल-
पर्यंत शंकर तप करीत राहिला. नंतर फार वेळ वाट पाहून ब्रह्मदेवांनं मनापामून दुसरा एक प्रजापति उत्पन्न केला. शंकर पाण्यांत निद्रित अमलेला पाहून हा प्रजापति आपल्या पित्याला म्हणतो, “ जर माझ्याहून वडील कोणी नमेल तर मी प्रजा उत्पन्न करितों. ” तेव्हां त्याच्या पित्यानें मांगितलें कीं. ‘ तुझ्या-
पक्षां मोठा अमा कोणीही पुरुष नाही. हा शंकर पाण्यांत बुडी मारून बसला आहे. तर तूं खुशाल मृष्टि कर. ’ तेव्हां त्यानें दक्ष वंगरे सात प्रजापति करून त्यांजकडून ही चार प्रकारची संपूर्ण भूतसृष्टि उत्पन्न करविली. राजा, उत्पत्ति होतांक्षणींच सर्व प्राणी प्रजापतीला खाण्याकरितां एकदम धावून आले. ते आपल्याला खाणार असें पाहून जीव वांच-

विण्याकरितां तो पितामहाकडे (हिरण्यगर्भा-
कडे) गेला व म्हणाला कीं, ' आपण मला
ह्यांच्या हातून सोडवा व ह्यांच्या जीवनाचें
साधन कांहीं तरी उत्पन्न करा. ' नंतर त्यानें
तृणधान्यवृक्षादिक वनस्पतिकोटींतलें अन्न
व बलिष्ठांकरितां दुर्बल प्राण्याच्या रूपांनें
मांसान्न असें दोन प्रकारचें अन्न उत्पन्न केलें.
याप्रमाणें अन्नाची योजना होतांच सर्व उत्पन्न
केलेले प्राणी आले तसे परत गेले. मग. राजा.
प्रजा सर्व संतुष्ट होऊन आपआपल्या योर्नामध्ये
वृद्धि पावूं लागल्या. अशा रीतीनें प्राण्यांची
सृष्टि वाटली व हिरण्यगर्भालाही आनंद झाला.
नंतर सर्वांत मोठा जो परमेश्वर तो पाण्यांतून
वर आला, तो संपूर्ण प्रजा त्याच्या दृष्टीस
पडली. ती प्रजा नानाप्रकारची असून आप-
आपल्या सामर्थ्यानें वृद्धिंगत झालेली होती. ते
पाहातांच शंकर रागावला व त्यानें आपले लिंग
छाटले, तेव्हां तें छाटलेलें लिंग तसेच भुईमध्ये
रोवून राहिलें ! मग त्याचें मांतवन करण्या-
करितां म्हणून तो अविनाशी ब्रह्मदेव म्हणाला.
“ हे शंकरा, पाण्यांत इतका वेळ राहून काय
केलें ? आणि आतां हें लिंग उत्पन्न करून
जमिनीत कशाकरितां रोवून ठेविलें ? ” तेव्हां
संपूर्ण विश्वाचा नायक तो परमेश्वर संतापून
ब्रह्मदेवाला उत्तर करितो, “ हे प्राणी दुसऱ्या
कोणीं उत्पन्न केले आहेत, तेव्हां आतां मला
ह्या लिंगाचा काय उपयोग ! आणि. हे ब्रह्म-
देवा, त्या प्राण्यांकरितां अन्नही तपोवत्यांनें
उत्पन्न करून ठेविलें आहे. या ओषधिवनस्प-
तींची उत्पत्ति परंपरेनें अध्याहत चालणार व
त्यांबरोबर प्राण्यांचीही उत्पत्ति निरंतर चाल-
णार ! ” राजा, याप्रमाणें बोलून रागाच्या
अवेशांत शंकर विन्न मनानें तेवून निवाला,
तो मूजवान् पर्वताच्या पायथ्याशी तपश्चर्या
करण्याकरितां गेला !

अध्याय अठरावा.

—:०:—

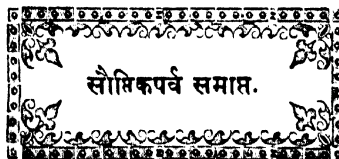
कृष्णकथित शिवमाहात्म्य.

श्रीकृष्ण मांगतात:—नंतर कृतयुग संपल्यावर
वेदाच्या आधारेनें विधियुक्त यागादिक कर्मे
करण्याच्या संकल्पानें देवांनी यज्ञ निर्माण
केला; व त्या यज्ञकर्माला साधनभूत जे हवि
भाग ते ठरविले: आणि त्या त्या हविर्भागां-
करितां निरग्निकाच्या देवताही ठरवून होम-
द्रव्यांची योजना केली. हे राजा. त्या पर-
मेश्वराचें सर्व स्वरूप न ओळखितां देवतांची
योजना केलेली असल्यामुळें अर्थात् त्या शंकरा-
करितां त्यांनी हविर्भाग ठेविला नाहीं. देवांनी
यज्ञामध्ये आपल्याकरितां हविर्भाग ठेविला नाहीं
असे पाहून त्या शंकरानें त्यांच्या यज्ञाचा उच्छेद
करण्याचा उद्देश मनांत धरून आरंभी एक धनुष्य
उत्पन्न केलें. लोकयज्ञ, क्रियायज्ञ, गृहयज्ञ व मनु-
ष्ययज्ञ. या चार यज्ञांनी हें जग चाललें होत.
त्यांपैकी लोकयज्ञ व मनुष्ययज्ञ यांहीकरून
(इतर दोन यज्ञांचा क्षणज क्रियायज्ञ व गृह-
यज्ञ यांचा नाश करण्याकरितां) शंकरानें
धनुष्य निर्माण केलें. त्या धनुष्याचें माप पांच
विनी झालें: त्याच्या दारीच्या टिकार्णा वपुः
कागाची योजना झाली; व यज्ञाची जी चार ओं
नी त्या धनुष्याची दारी बांधण्याला साधन झाली.
नंतर ते धनुष्य घेऊन तो क्रुद्ध झालेला
शंकर. ज्या टिकार्णा देव यज्ञ करीत बसले

१ ' लोकयज्ञ ' म्हणजे लोकांना आपल्याला धरं
क्षणानें असे लोकमत्ताबद्दल अगत्य व नांवालांकि-
काची चाड: ' मनुष्ययज्ञ ' (यालाच सुद्धांत ' पंच-
भूतयज्ञ ' असें झटले आहे.) क्षणजे पंचमहाभूता-
त्मक जे विषय त्यांपासून मनुष्यमात्राला होणाऱ्या
सुखाची लालसा: ' क्रियायज्ञ ' क्षणजे गर्भाधानादि-
संस्कार: व ' गृहयज्ञ ' क्षणजे विवाहानंतर पत्नी-
सहयर्तमान करण्याची अभिहोत्रादि कर्मे. याप्रमाणें
या शब्दांचा अर्थ ठीकेंत केला आहे.

होते तेथे येऊन पांचला. तो तेजःपुंज ब्रह्म-
चारी शंकर हातांत धनुष्य घेऊन आलेला
पहातांच भुंवेवी भयभीत होऊन गेली, पर्वत
धरथर कांपू लागले, वाग वाहीनामा झाला,
पेटविलेला अग्नि जळेनामा झाला, आकाशांत
नक्षत्रमंडळ व्याकूळ होऊन जागच्या जागी
भ्रमण पावू लागले. सूर्याचा प्रकाश लोपला,
चंद्रविंब इतकें सुंदर परंतु तें निम्नेज झाले,
संपूर्ण आकाश अंधःकारानें भरून गेले. देवही
हवालदिल झाले व त्यांचा ऐपआगम नाहीसा
झाला, यज्ञ कोटें झळकेनामा झाला व देवतांची
तेषा उडाली. मग शंकरानें आपल्या तीव्र
बाणांनें यज्ञाला काळजांत प्रहार केला ! नंतर
सर्वांना पुनीत करणारा यज्ञपुरुष सृगरूप पावून
तेथून नाहीसा झाला आणि त्याच रूपानें
स्वर्गां जाऊन नभोमंडळांत तो पुढें व त्याच्या
मागोमाग शंकर असे चालले अमतां अपूर्व
शोभा दिमूं लागली. यज्ञपुरुष तेथून नाहीसा
होतांच देवांची ज्ञानाची ज्योत मावळली व ती
मावळतांच देव सर्व मूढ होऊन गेले. शंकरानें
रागाच्या आवेशांत आपल्या धनुष्याच्या योगानें
सवित्याचे हात छेदून टाकले, भगाचे डोळे
काढिले व पूपाचे दांत पाडिले. मग ते देव व
यज्ञांगें मेरावेरा धावू लागली; व काहीं जागच्या
जागी तडफड करून मेल्यासारखे पडले ! अशा
रीतीनें शंकरानें सर्व काहीं तेथून नाहीसें करून
तिरस्कारपूर्वक हास्य केले आणि धनुष्याची
कोटि दाबून देवांची हालचाल बंद पाडली !

मग देवांनी जी वाणी उच्चारिली तिच्यासरशी
धनुष्याची दोरी गळून पडली. मग, राजा, दोरी
एकदम तुटून पडल्यावर धनुष्य दोरीवाचूनच
झळकू लागले. अशा रीतीनें धनुष्य नाहीसें
होतांच ते सर्व देव यज्ञपुरुषामहवर्तमान शंकरा-
ला शरण गेले व शंकरानें त्यांच्यावर कृपा
केली. परमेश्वर प्रमत्त झाला तेव्हां आपला
क्रोध त्यानें उदकांत ठेवून दिला. राजा, तोच
शंकराचा क्रोध अशिरूप होऊन ममुद्राचें पाणी
रात्रंदिवस शोषून टाकीत अमतो. मग शंकरानें
भगाला डोळे दिले, सवित्याला हात दिले व
पूपाला दांत दिले आणि पूर्वाप्रमाणें यज्ञ
चालण्यास मोकळीक दिली. इतकें झाल्यावर
पुनः जिकडे तिकडे स्थिरस्थायी झाले आणि
देवांनीही तेव्हांपासून शंकराला यथास्थित
हविर्भाग टरवून दिला. राजा, तो शंकर रागा
वला तेव्हां संपूर्ण विश्व अस्वस्थ होऊन गेले व
तो प्रमत्त झाला तेव्हां सर्वत्र शांतता झाली
नर, युधिष्ठिरा, अशा त्या शंकराच्या कृपेनें
तुझ्या सर्व महारथी पुतांना व धृष्टद्युम्नाच्या
पदरच्या असंख्यात शूरयोद्ध्यांना रणांत मार-
ण्याचें काम त्या अश्वत्थाम्याचे हातून झाले.
तें तू अगदीं मनांत आणू नको; कारण त्याचें
श्रेय अश्वत्थाम्याकडे मुळीच नाही; शंकराच्या
कृपेमुळे तें सर्व घडून आलें ! तेव्हां त्याच
परमेश्वराची कृपा भाकून तू आपल्या
पुढील कार्यास लाग.





श्रीमन्महाभारत.

स्त्रीपर्व.

अध्याय पहिला.

मंगलाचरण.



नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयद्युदीरयेत् ॥

ह्या अखिल ब्रह्मांडांतील यच्चयावत् स्थावर-जंगम पदार्थांच्या ठिकाणी चिदाभासरूपानें प्रत्यायास येणारा जो नरसंज्ञक जीवात्मा, नरसंज्ञक जीवात्म्यास सदासर्वकाल आश्रय देणारा जो नारायण नामक कारणात्मा, आणि नरनारायणात्मक कार्यकारणसृष्टीहून पृथक् व श्रेष्ठ असा जो नरोत्तमसंज्ञक सच्चिदानंदरूप परमात्मा, त्या सर्वांस मी अभिवंदन करितों; तसेंच, नर, नारायण व नरोत्तम ह्या तीन तत्त्वांचें यथार्थ ज्ञान करून देणारी देवी जी सरस्वती, तिलाही मी अभिवंदन करितों; आणि त्या परमकारुणिक जगन्मातेनें लोकहित करण्याविषयी माझ्या अंतःकरणांत जी स्फूर्ति उत्पन्न केली आहे. तिच्या

साहाय्यानें ह्या भवबंधविमोक्षक जय म्हणजे महाभारत ग्रंथाच्या स्त्रीपर्वाम आरंभ करितों. प्रत्येक धर्मशील पुरुषानें सर्वपुरुषार्थ-प्रतिपादक अशा शास्त्रांचें विवेचन करितांना प्रथम नर. नारायण आणि नरोत्तम ह्या भगवन्मूर्तींचें ध्यान करून नंतर प्रतिपाद्य विषयाचें निरूपण करण्यास प्रवृत्त व्हावें, हें सर्वथैव इष्ट होय.

धृतराष्ट्राचा श्लोक.

जनमेजय विचारतो:—मुनिमहाराज, दुयो-धन मारला गेला आणि सर्व सैन्याची वाताहत झाली. तेव्हां तें ऐकून धृतराष्ट्रानें काय केलें? त्याचप्रमाणें, थोर अंतःकरणाचा धर्मपुत्र युधिष्ठिर राजा आणि कौरवसैन्यांतील अवशिष्ट राहिलेले ते कृपप्रभृति तीन 'वीर' यांनी

पुढें काय केलें ? अश्वत्थाम्याचें तें घोर कृत्य मीं श्रवण केलें आहे. अश्वत्थामा व कृष्ण यांनीं परस्परांसं शाप दिल्याच्या हकीकतीनंतर-चा संजयानें सांगितलेला वृत्तांत आपण मला कथन करा.

वैशंपायन सांगतातः—जनमेजया, शंभर पुत्र मेल्यामुळें जो फांद्या तोडलेल्या वृक्षा-प्रमाणें दीन झाला आहे, पुत्रशोकानें ज्याच्या शरीराचा दाह होत आहे. विचारमग्न होऊन जो मुक्यासारखा स्तब्ध वमला आहे, आणि ज्याला चित्तें अगदीं घेरून टाकिलें आहे, अशा त्या पृथ्वीपति धृतराष्ट्र राजाजवळ जाऊन संजय त्यास म्हणाला, "हे महाराजा. अमा शोक काय करतोस ? शोक करून कधींच फायदा होत नसतो. अठराही अक्षोहिणींचा संहार झाला असून ही पृथ्वी मांप्रत निर्जन. राजहीन आणि अगदीं शून्याकार झाली आहे ! नानादेशचे राजे नानादिशांकडून येऊन यथ एकत्र झाले, आणि तुझ्या पुत्राबरोबर सर्वजण निघन पावले; आतां त्यांजवढल शोक करून काय उपयोग होणार आहे ? तेव्हां आतां. राजा, पिते, पुत्र, पौत्र, ज्ञानिवांधव. मित्र आणि गुरु हे समरांगणांत ज्या क्रमानें पतन पावले त्या क्रमानें त्यांचीं और्ध्वदेहिक कार्ये करीव !"

वैशंपायन सांगतातः—मुल्लो व नातू यांच्या मृत्युने व्याकूल झालेला धृतराष्ट्र भंजयाचें तें कठोर भाषण ऐकतांच वायुने उन्मूलित झालेल्या वृक्षाप्रमाणें धाडकून जमिनीवर पडला आणि शोक करूं लागला.

धृतराष्ट्र म्हणालाः—माझे पुत्र. अमात्य आणि सर्व इष्टमित्र मरून गेले; आतां मी या

पृथ्वीवर संचार करूं लागलों म्हणजे मला खरो-खर पदोपदीं दुःख होईल ! बंधुविहीन झालेल्या मला आतां जगून तरी काय करावयाचें आहे ! ज्याचे पंख गळून गेले आहेत आणि शरीर जरेनें अगदीं जीर्ण झालें आहे, अशा पक्ष्या-प्रमाणें माझे जीवित व्यर्थ झालें आहे ! माझे राज्य गेलें. बंधु गेले आणि माझी दृष्टिही गेली आहे; तेव्हां. हे महाप्राज्ञा. मावळत्या सूर्याप्रमाणें-च माझेही आतां विलकूल तेज पडणार नाही. मी आपल्या मित्रांच्या बोलण्याकडे लक्ष दिलें नाही. नामदग्ध परशुरामाचा उपदेश ऐकिला नाही. देवर्षि नारद व कृष्णद्वैपायन व्यासमुनि यांच्याही भाषणाप्रमाणें वागलों नाही; आणि श्रीकृष्णांन मभेमः ॥ राजा. वर पुढे कर. आपल्या पुत्रांम आवरून घर." वगैरे माझ्या कल्याणाची ममलन दिली असतां तीही मी ऐकिली नाही; आणि त्याच्या त्या उपदेशा-प्रमाणें न वागल्यामुळेच मज मूर्खाला आतां हा विलक्षण ताप होत आहे ! पितामह भक्ति-चें तें धर्मयुक्त भाषणही मी ऐकिलें नाही ! हाय हाय ! वृषभाप्रमाणें गर्जणाच्या दुर्घोषना-चा अंत. दुःशामनाचा वध, कर्णाची विप-रीत स्थिति आणि द्रोणसूर्याम लागलेले ग्रहण, या गोष्टींनीं माझे हृदय कम विदीर्ण होत आहे ! बा संजया, ज्याचें हें इतकें भयंकर फळ मज मृदाला भोगावें लागत आहे, असें कांहीं दुष्कृत्य या जन्मीं तरी मागे कधीं केलेलें मला स्मरत नाही; तेव्हां मी पूर्वजन्मींच कांहीं तरी दुष्कर्म केले असले पाहिजे; आणि त्या-मुळेच ब्रह्मदेवानें मजवर असे दुःखाचे प्रसंग आणले असावे ! आधींच माझे अगदीं उतारवय झालें आणि त्यांत दुर्दैवानें सर्व मुलाबाळांचा आणि इष्टमित्रांचा नाश होत आहे ! हाय हाय ! माझ्या मनाचा दुःखा मनुष्य ह्या जगांत दुसरा कोणी तरी अमेल का ? तेव्हां आतां

१ टीकाकारांनीं याचें स्पष्टीकरण—' पांडवांच्या गमांचे ठिकाणीं हें अन्न पडें.' हा अश्वत्थाम्याचा शाप, आणि 'तू गलितकृष्ट होशील' वगैरे शाप. (संक्षिप्त) असा आहे.

आजच मी ब्रह्मलोकच्या विस्तीर्ण व दीर्घ
मागीत प्रवेश केल्याचें सदाचरणी पांडव पाहोत !

संजयकृत धृतराष्ट्रासांत्वन.

वैशंपायन सांगतात:—राजा, याप्रमाणें
धृतराष्ट्र शोकाकुल होऊन नानाप्रकारें विलाप
करीत असतां संजय त्याचें सांत्वन करीत
ह्मणतो, “ राजन् शोक सोडून दे. त्वां वेदांतील
सिद्धांत श्रवण केले आहेत; आणि, हे नृप-
सत्तमा, वृद्धांच्या तोंडून अनेक प्रकारचे शास्त्रा-
गमही ऐकिले आहेत. पूर्वी संजय राजा पुत्र-
शोकांत झाला असतां त्याला ऋषींनी केलेला
उपदेश तूं श्रवण केला आहेस; आणि, राजा,
प्रत्यक्ष तुम्हा पुत्र तारुण्यमदानें धुंद होऊन अन-
न्वित कृत्यांस प्रवृत्त झाला असतां त्यास वृद्धांनी
केलेला उपदेशही तुला श्रुत आहे. परंतु, धृ-
तराष्ट्रा, तुम्हे सुहृद् तुला परोपरी सांगत असतां
त्वां त्यांचे मुळीच ऐकिले नाही; आणि भलत्याच
आशेला गुंतून आपला स्वार्थही साधला नाहीस !
एकधारेच्या तरवारीप्रमाणें केवळ आपल्या
कुटिल बुद्धीस वाटलें तसा तूं वागलास; आणि
बहुतकरून दुराचरणी लोकांचेच नेहमीं देव्होर
माजविलेस. अरे, दुःशासन, दुरात्मा कर्ण, दुष्ट-
पणाचा पुतळाच असा शकुनि, दुर्मति चित्रसेन
आणि सगळ्या जगास शल्याप्रमाणें बोंचत अस-
लेला शल्य हे ज्याचे मंत्री, त्या तुझ्या पुत्रां
कुरुवृद्ध भीष्माचार्य, माता गांधारी, विदुर, महात्मा
द्रोणाचार्य, शारद्वत कृपाचार्य, भगवान् श्रीकृष्ण,
त्रिकालदर्शी नारद व दुसरे मुनि यांचेचसें
काय—पण अमिततेजस्वी साक्षात् व्यासांचेही
भाषण मानिले नाही ! त्यानें धर्म कसा तो
कधीच जुमानला नाही ! त्याला सदोदीत
कुळाची सुमसुम ! तो कोस्या बुद्धीचा व गर्विष्ठ
असा मुळें नेहमीं ‘ युद्ध युद्ध ’ हेंच ह्मणाव-
याचा ! आणि तो वीथशाली होता तरी क्रूर,

कोपिष्ठ आणि नित्य असंतुष्ट असे ! राजा, तूं
वेदांतज्ञ आणि बुद्धिमान् असून सदोदीत सत्य-
परायण असतोस; असे तुझ्यासारखे बुद्धिमान्
साधुपुरुष कधीही मोह पावत नाहीत ! हे
मारिषा, तुझ्या पुत्रांनें सद्धर्माचा कधीच सत्कार
केला नाही. त्यानें सर्व क्षत्रियांचा संहार केला.
आणि शत्रूंची मात्र कीर्ति वाढविली ! राजा,
पूर्वी तूंही तटस्थ राहिलास, त्यांना योग्य असे
काहीच सांगितलें नाहीस. अरे, तुला त्या वेळीं
तराजूची दांडी समतोल धरतां आली नाही !
बाबारे, जेणेंकरून अर्थनाश होऊन पश्चात्तापास
कारण होणार नाही, अशा प्रकारची यथायोग्य
वर्तणूक मनुष्यानें आधीच ठेविली पाहिजे.
राजा, आपल्या पुत्रांस मोठेपणा मिळावा म्हणून
तूं दुर्योधनाच्या मनाप्रमाणें वागलास आणि
त्यामुळेच शेवटीं पन्तावलास ! आतां मागून
शोक करण्यांत काय अर्थ आहे ? अरे, ज्याला
तुटलेल्या कड्यास लटकणारें मधाचें पोळें मात्र
दिसतें, पण तो तुटलेला भयंकर कडा व
खालची खोल दरी दिसत नाही, तो मधाच्या
लोभाने पुढें जाऊन खालीं घसरतो; आणि हल्लीं
तूं शोक करीत आहेस असाच मागून पश्चात्ताप
करीत बसतो ! परंतु, धृतराष्ट्रा, शोक केल्यानें
अर्थ प्राप्त होत नाही, कांहीं फल प्राप्त होत
नाहीं, संपत्ति मिळत नाही किंवा मोक्षप्राप्तिही
होत नाही ! अरे, स्वतः अग्नि पेटवून तो वस्त्रां
गुंडाळें लागलें कीं अंग भाजावयाचेंच ! अंग
भाजू लागल्यावर मग ज्याला पश्चात्ताप होतो
तो पंडित नव्हे ! आतां तूं आपली स्थिति पहा.
पुत्रांसहवर्तमान तूं स्वतःच पार्थकोपरूपी अग्नि
उत्पन्न केलास; दुर्भाषणरूप बायूनें तुझीच त्याला
चेवतला आणि त्यांत लोभरूपी तूप ओतलें,
तेव्हां तो भडकला; मग त्या अतिप्रदीप्त झालेल्या
अग्नीत पतंगांप्रमाणें तुम्हे पुत्र जाऊन पडले !
अशा रीतीनें ते शररूप ज्वालांनीं दग्ध होऊन

गेले आहेत; यास्तव त्यांबद्दल शोक करणें तुला योग्य नाही. राजा, सांप्रत तुझ्या नेत्रांतून सारस्वा अश्रुपात होत असल्यामुळे त्याचे ओघळ येऊन तुझे तोंड अगदी ओंगळ झालेलें आहे. असें तोंड असणें हें खरोखर अशास्त्रयुक्त होय. पंडित कांहीं याला चांगलें ह्मणत नाहीत, शोक हा निखाऱ्याप्रमाणें मनुष्यास भाजून काढतो. यास्तव, हे विचारी राजा, विवेकाऱें हा शोक आवर आणि धैर्यानें चित्ताचा निरोध कर. "

वैशंपायन सांगतात:—राजा, महात्म्या संजयानें अशा प्रकारें त्याचें सांत्वन केल्यानंतर परंतप विदुरानेही त्यास मोठ्या शहाणपणाचा उपदेश केला.

अध्याय दुसरा.

—:०:—

विदुरकृत धृतराष्ट्रसांत्वन.

वैशंपायन सांगतात:—जनमेजया. मग विदुरानें बोलण्यास प्रारंभ केला. नेव्हां त्याच्या अमृततुल्य गोड वचनांनीं धृतराष्ट्राचा शोक कमी होऊं लागला, आणि त्याच्या अंतःकरणांत समाधान व आनंद यांचा उगम होऊं लागला. आतां विदुराचें तें भाषण मी तुला सांगतो, श्रवण कर.

विदुर म्हणाला:—राजा, उठ, असा निजतोस काय? जरा विवेक करून आपलें मन आवरून घर. बाबारे, सर्व प्राण्यांना देवानें हीच गति लावून दिली आहे. भांडारें कितीही भरलेली असोत, तीं शेवटीं रिकामी व्हावयाचीच; सर्व सांठ्यांचा शेवटीं क्षयच व्हावयाचा; जे जे वर आले असतील ते ते सर्व पडावयाचे; संयुक्त असतील त्यांचा वियोग व्हावयाचा; आणि उपजले असतील ते मरावयाचे! अरे, संचय होण्याबरोबरच त्याचा क्षय होणार हें ठरलेलें आहे; उंच उभारणी होण्याबरोबरच

त्याचें पतन होणार हें ठरलेलें आहे; संयोग होण्याबरोबरच वियोग निश्चित झाला आहे; त्याचप्रमाणें, प्रत्येक जीवाचा मृत्यु हा शेवट ठरलेला आहे! हे भारता, शूर आणि भिन्ना या दोघांसही यम आकर्षण करितो. अशी जर स्थिति आहे. तर, हे क्षत्रियश्रेष्ठा. स्वरे क्षत्रिय कां लटणार नाहीत बरें! रणांत पाऊल न टाकणाराही मरतो. आणि घनघोर रण कंदनांतूनही मनुष्य जिवंत राहू शकतो, हें आपण पहात नाही काय? सारांश. ज्याची वेळ भरली तो कोठेही अमला तरी त्याम मृत्यु चुकवितां यावयाचा नाही, हा मिद्धांत होय. धृतराष्ट्रा. हें जग म्हणजे स्वरोस्वर स्वप्न आहे, स्वप्नांत आपणांम जें ऐश्वर्य मिळतें तें तत्पूर्वी कोठें अमनें? आणि मग तरी कोठें जातें? वास्तविक तें नमतेच,—आद्यंती त्याचा सर्वथा अभावच असतो; मध्येच मात्र क्षणभर आपणांम त्याचा भाम होतो! त्याचप्रमाणें प्राणिमात्राची स्थिति आहे. उत्पत्ति होण्यापूर्वी त्यांचा अभाव असतो, आणि अंतीही त्यांचा अभावच होतो. मध्यंतरी स्वप्नमूर्तीप्रमाणें त्यांचा आपणांम भाम होतो इतकेंच! अशी जर स्थिति आहे. आणि स्वप्नांतील ऐश्वर्याच्या नाशानें जर जागृतावस्थेंत आपणांम शोक होत नाही, तर तत्पेढश अशा या वेळीं तरी तुला कां बरें शोक व्हावा! शोक करण्यानें मनुष्य कांहीं मृताच्या मागून जाऊं शकत नाही, किंवा कोणी शोक करण्यानें मरतो अशीही गोष्ट नाही. अशी स्वभावसिद्ध स्थिति असतां उगाच शोक कां करतोस बरें? नानाप्रकारच्या सर्व प्राण्यांम व यक्षयाकत् स्थावरजंगम पदार्थांम काल आकर्षण करितो; तेथें आपला पाड काय! हे कुस्मत्तमा, कालाचा कोणी आवडता नाही व कोणी नावडताही नाही. हे भरतर्षभा, ज्याप्रमाणें बायु गवताचे

सर्व शेंडे हालविनो, त्याप्रमाणेंच सर्व प्राणी कालवश होतात. राजा, आपण सर्वजण एकाच भेळ्यांतले आहां; सर्वांनी त्याच ठिकाणी जावयाचें आहे; फरक इतकाच की, ज्याची वेळ येते तो पुढें जातो ! तेव्हां येथें शोक करण्यास कोठें जागा आहे ! शिवाय, राजा, तुझे पुत्रपौत्र वगैरे सर्व युद्धांत मरण पावले आहेत; त्यांच्याबद्दल तर शोक करण्याचें मुळीच कारण नाही ! जर तुला शास्त्रें प्रमाण वाटत अमतील, तर ते सर्वजण स्वचित्त उत्तमगतीला गेले आहेत ! कारण, सर्वजणांनी यथासांग वेदाध्ययन केलें आहे; सर्वांनी योग्य कालपर्यंत ब्रह्मचर्य व्रत पाळिल्लें आहे; आणि सर्वही सन्मुख मरण पावले आहेत ! याप्रमाणें जर ते उत्तम गतीला गेले आहेत, तर शोक करण्यास स्थल कोठें राहिलें ? आपल्याला दिसत नाही अशा स्थलापामून ते उत्पन्न झाले, आणि आपल्याला दिसत नाही अशा स्थली ते पुनः गेले ! वास्तविक ते तुझे कोणी नव्हत किंवा तूं त्यांचा कोणी नाहीस; मग शोक कमला करावयाचा ? अरे, आपणां क्षत्रियांना युद्धासारखें श्रेयस्कर दुसरें काय आहे ? मरण आलें तर स्वर्ग मिळतो, शत्रूम मारलें तर यश मिळते, दोन्ही आपणांस इष्टच आहेत. यास्तव कांहीं झालें तरी युद्ध हें निष्फल होत नाही ! हे भरतर्षभा, तुझ्या मुलांना इंद्र फार श्रेष्ठ प्रतीचे म्हणजे जेथें इच्छित वस्तु तत्काल प्राप्त होतात असे लोक देईल; आणि त्या ठिकाणी ते सर्वजण इंद्राच्या घरचे पाहुणे होऊन रहातील ! राजा, रणांत मरणाच्या शूरांना जी गति मिळते तशी उत्तम गति मोठमोठ्या यज्ञांनी किंवा तपश्चर्येनें अथवा मोठ्या विद्येनेंही प्राप्त होत नाही ! धन्य आहे त्या शूरांची ! शूरांच्या शरीररूपी अशीवर त्यांनी शराहुतीचें हवन केलें आणि याप्रमाणें परस्परांकडून

हविले जाणारे बाण त्या तेजस्वी वीरांनी सहन केले ! अशा प्रकारें, राजा, युद्ध हाच स्वर्गाचा उत्तम मार्ग आहे, हें मी तुला सांगून ठेवितों. क्षत्रियांना या जगांत युद्धाहून अधिक योग्यतेचें कांहींएक नाही ! सांप्रतच्या युद्धांत पतन पावलेले ते क्षत्रिय महाथोर, शूर व सभेंत शोभायमान होणारे पंडित होते; आणि मरणापूर्वी त्यांना उत्तम आशीर्वाद मिळालेले होते; यास्तव त्यांबद्दल शोक करण्याचें कांहींच कारण नाही. तेव्हां, हे पुरुषर्षभा, विवेक कर आणि मन आवरून धर; शोक करूं नको. आज शोकविह्वल होऊन देहत्याग करणें तुला उचित नाही. अरे, आजपर्यंत आपण हजारों जन्म घेतले आहेत व त्यामध्ये हजारों मातापितरें, शेंकडों मुल्ये व बायका यांचा अनुभव घेतला आहे; त्यापैकी आपले कोण ? आणि आपण तरी कोणाकोणाचे ? सारांश, जो मूर्ख असतो त्याला दररोज हजारों शोकाच्या जागा व शेंकडों भयोत्पादक स्थलें दिसतात; परंतु जो शहाणा आहे, त्याला यापैकी कशांचीच बाधा होत नाही. हे कुरुमत्तमा, कालाचा कोणी प्रिय नाही व कोणी शत्रुही नाही; किंवा एखाद्याकडे काल दुर्लक्ष करतो असेही घडत नाही. तो सर्वासच आकर्षण करितो. काल भूतांचा नाश करितो, सर्व प्रजांचा संहार करितो आणि प्राणी निजले तरी तो जागृत असतो,—त्याचा कोणासही अतिक्रम करतां यावयाचा नाही ! बाबारे, तारुण्य, सौंदर्य, आयुष्य, द्रव्यसंचय, आरोग्य व प्रियांचा महवास हीं सर्व अनित्य आहेत; यांच्या ठिकाणी पंडित लुब्ध होत नाहीत. शिवाय, सांप्रत सर्व देशाला दुःखाचा प्रसंग आलेला आहे, त्याबद्दल त्वां एकट्यानेंच शोक करावा हें योग्य नाही ! आतां असें समज कीं, तूं आपला प्राणांत केलास, म्हणून तें दुःख नाहीसें व्हावयाचें आहे काय ? कदापि होणार नाही !

तेव्हां शोक न करितां त्याचा प्रतिकार करावा हेंच योग्य होय ! अशा प्रकारचें दुःख नाहीसं करण्यास एकच औषध आहे. तें हें कीं, दुःखकारक गोष्टीचें मुळीच चिंतन करूं नये. चिंतन करूं लागलें असतां दुःखाचा नाश तर होत नाहीच, पण उलट तें वाढतें मात्र ! अनिष्ट गोष्टी घडल्या, किंवा प्रिय वस्तूचा वियोग झाला, म्हणजे अल्पबुद्धीचे मनुष्य मानसिक दुःखांनीं होरपळूं लागतात,—बुद्धिमान् कांहीं होरपळत नाहीत. अरे, तूं हा जो शोक करीत आहेस, यांत कांहीं अर्थ साधतो आहे, कांहीं धर्म घडत आहे किंवा कांहीं सुख होत आहे काय ? कांहींएक नाही. यापासून कोणाचा कांहीं फायदा तर होत नाहीच; पण मनुष्य धर्म, अर्थ व काम या त्रिवर्गांस आंचवतो मात्र ! कमजास्त मानाची सांपत्तिक स्थिति प्राप्त झाली असतां कित्येक असंतुष्ट होतात व मोह पावतात; परंतु पंडित सर्व अवस्थांत संतुष्ट रहातात. अरे, बुद्धीनें मानसिक दुःख नाहीसं करावें, व औषधानें शारीरिक दुःख दूरकरावें हा नियम होय. अशा रीतीनें दुःखाचा उपशम करणें हेंच ज्ञानाचें कार्य होय. राजा, तूं सज्ञान आहेस,—शोक करून अज्ञान बालांच्या पंक्तीस बसूं नको. बाबारे, हें प्राक्तन आहे; तें कोणासही सुटत नाही; मनुष्य निजला तर तें त्याबरोबर निजतें, तो उठला कीं त्याबरोबर उभें रहातें, आणि तो धावूं लागला तर त्याच्यामागून धावूं लागतें ! ज्या ज्या अवस्थेंत मनुष्य जें जें कर्म करतो, त्याचें त्याचें फळ त्या त्या अवस्थेंत त्यास प्राप्त होतें. तसेंच, ज्या ज्या शरीरांनें जें जें कर्म करितो, त्या त्या शरीरांनें तें त्यास भोगावें लागतें. उदाहरणार्थ असें पहा कीं, या स्थूल देहांनें केलेल्या कर्माचें फळ या स्थूल देहासच भोगावें लागतें. त्याप्रमाणें तुझ्या मुखांस तें भोगावें

लागलें आणि तूं मनांनें वाईट आचरण केल्यामुळें तुला मानसिक दुःख प्राप्त झालें आहे ! बाबारे, हें ज्याच्या त्याच्या कर्माचें फळ आहे. तेथें दुसऱ्याचा उपाय नाही. आपणच आपले हितकर्ते आहां; आपणच आपले शत्रू आहां; आणि आपण जें काय बरें वाईट केलें असेल त्याचे साक्षीही आपले आपणच आहां ! शुभकर्मनिं सौख्य मिळतें व पापकर्मांनिं दुःख मिळतें, सर्वत्र चांगल्या किंवा वाईट क्रिया चाललेल्याच असतात. कांहीं घडत नाही असें कोठेंही अमत नाही. ज्याच्या हातून जमें कर्म घडतें तसें त्याला फळ मिळतें. या सर्व गोष्टी मनांत आणून तुझ्यासारखे बुद्धिमान् लोक विवेक करतात; आणि आत्मज्ञानास विरुद्ध व अतिशय अपायकारक अशा देहत्यागाच्या कृत्यास कधीच तयार होत नाहीत !

अध्याय तिसरा.

—:—

धृतराष्ट्रविशोककरण.

धृतराष्ट्रांनं विचारलें:—हे महाप्राज्ञा, तुझ्या मुंदर भाषणांनं माझा हा शोक दूर झाला. तथापि तुझ्या मुखान्तून आणखी कांहीं तात्त्विक भाषण श्रवण करण्याची माझी इच्छा आहे. विदुरा, अनिष्ट गोष्टी प्राप्त झाल्या असतां आणि दुष्ट गोष्टी नष्ट झाल्या असतां होणाऱ्या मानसिक दुःखापासून ज्ञातें कसे मुक्त होतात ?

विदुर सांगतो:—हे नरपंथा, जसजसें मन दुःखापासून किंवा सुखापासून परावृत्त होत जाईल, तसतसें त्याचें नियमन करून शहाणे शांति पावतात. आपण ज्याचें चिंतन करितों, आणि ज्याबद्दल आपल्या मनास दुःख बरे होतें, तें हें सर्व जग अगदी अशाश्वत आहे. याची स्थिति केळीसारखी आहे; म्हणजे, केळीचीं सोपटें काढीत गेलें असतां शेवटीं गाभा

(सार) म्हणून कांहीच उरत नाही, त्या-
प्रमाणे ह्या जगांतही सार कांहीच नाही. हें
तत्त्व समजलें म्हणजे तत्काळ शांति प्राप्त होते.
राजा, येथे जे सुखदुःखांचे प्रमंग येतात,
त्यांचा पुढेमागे कांहीच संबंध नाही असें
आहे काय ? हें पहा—जर शहाणे व मूर्ख

यमलोकी

गेल्यावर तापरहित होत्साते सुखानें निद्रा करीत
असते, तर मग सर्वच पंचाईत टळली असती.
पण तसें अमेल तर मग तपस्विजन तपश्चर्येच्या
योगानें शरीरशोषण करून अवयव, मांसरहित,
अगदीं अस्थिपञ्जर, केवळ स्नायूंच्या योगानेंच
एकमेकांस चिकटून राहिलेले असे क्षीण कर-
ण्यांत कोणता अर्थ पहातात बरें ? आणि जर
तपश्चर्येंत कांहीं अर्थ अमेल, तर मरणोत्तरही
समविषम गति प्राप्त होत असल्या पाहिजेत.
राजा, ह्या जन्मीं केलेल्या कर्मांचा संबंध
पुढें आहे, तसाच मांप्तच्या सुखदुःखाशीं
पूर्वसंचिताचा संबंध आहे. आपणाम विशिष्ट
कुल, रूप इत्यादि जें प्राप्त होतें त्या
सर्वांचा संबंध अदृष्टाशीं आहे; आणि केवळ
त्याच्या अनुरोधानेंच पुत्रांचा संयोग, वियोग
वगैरे सर्व गोष्टी घडत असतात. असें जर आहे,
तर पंडित एकमेकांची आशा कशाला धरतील
बरें ? धृतराष्ट्रा, जशीं निरनिराळीं घरे असतात
त्याचप्रमाणें प्राण्यांचीं शरीरें आहेत असें पंडित
म्हणतात, व एक घर सोडून दुसऱ्या घरीं
जावें त्याप्रमाणेंच जीव यथाकालीं एक देह
टाकून दुसऱ्यांत प्रवेश करतो. हे देह कांहीं
शाश्वत नाहीत, जीव मात्र शाश्वत आहे.
ज्याप्रमाणें मनुष्य जीर्ण झालेले किंवा कधीं
कधीं नवेंही वस्त्र टाकून देऊन दुसरें ग्रहण
करतो, त्याचप्रमाणें शरीरी जो जीव तो
देहाचा त्याग करितो. राजा, प्राणिमात्रास जें
सुख किंवा दुःख प्राप्त होतें, तें त्यास केवळ

स्वतः केलेल्या कर्मानेंच मिळतें. हे भारता,
कर्मानें स्वर्ग मिळतो, आणि सुखदुःखही
त्याच्याच योगानें प्राप्त होतें. मग त्याची सुधीं
असो किंवा नसो; त्याला तो भार सहन करावा-
च लागतो,—त्यावांचून गत्यंतर नाही. आतां
कोणी बाल्यावस्थेंत तर कोणी तारुण्यांतच मरण
पावतात हें कसें ह्मणशील, तर एक. कुंबाराच्या
घरीं एखादें मडकें चाकावर असतांच मोडतें,
एखादें नीटनेटकें करीत असतां किंवा एखादें
तयार झाल्यावरच मोडतें ! तेथें झांकून ठेवल्या-
वर एखादें फुटतें, एखादें चक्रावरून खालीं उत-
रतांना आणि एखादें उतरल्यावरही छिन्नभिन्न
होतें ! ओलीं असतांना कित्येक मोडतात,
कित्येक सुकल्यावर तडकतात. भड्डीत घालून
आंच देतांना कांहीं फुटतात, आणि कांहीं भड्डी-
तून काढतांना, कांहीं काढल्यावर आणि कांहीं
घांशीत असतां फुटतात ! जशीं कुंबाराकडचीं
मडकीं तशींच हीं प्राण्यांचीं शरीरें आहेत !
गर्भांत असतां, प्रसूत झाल्याबरोबर, चारदोन
दिवसांनीं, पंधरा दिवसांनीं, महिन्याचें झाल्यावर,
एक वर्षाचें किंवा दोन वर्षांचें असतांना, भर-
तारुण्यांत, मध्यमवयांत किंवा वृद्धावस्थेंत केव्हां
तरी ह्याचा नाश होतो; आणि पूर्वकर्मानुरोधानें
कित्येक प्राणी पुनः जन्मास येतात व कित्येक
ज्ञानसंपन्न झालेले येतही नाहीत. अशा प्रकार-
ची ही जगाची रहाटी स्वभावसिद्ध असतांना
व्यर्थ अनुताप कां करतोस बरें ? राजा, ज्या-
प्रमाणें एखादें जनावर सहज क्रीडेसाठीं उदकांत
पोहत असतां खालीं बुडी मारतें किंवा वर मान
काढतें, तद्वत् या संसारसागरांत जीवांचें उन्म-
ज्जननिमज्जन चाललेलें आहे. यामध्यें अल्प-
बुद्धीचे पुरुष कर्मभोगांनीं बद्ध होऊन क्लेश
पावतात; परंतु जे ज्ञानी असतात, ज्यांना
खऱ्या हिताची कळकळ असते, व ज्यांना

प्राण्यांचा समागमवियोग कसा होतो यांतील रहस्य कळते, ते परमगतीला जातात.

अध्याय चौथा.

—:०:—

भूतोत्पत्त्यादिकथन.

धृतराष्ट्र विचारितो:—हे वाक्पटो. संसार-रूप अरण्य कसे जाणावे हें श्रवण करण्याची माझी इच्छा आहे, तर मला यांतील तत्त्व निवेदन कर.

विदुर सांगतो:—राजा, गर्भोत्पत्ति झाल्यापासूनच प्राण्याच्या एकंदर क्रियांस प्रारंभ होतो. शुक्रशोणितांचा संयोग होताच गर्भोत्पत्ति होते. ते शुक्रशोणित एकरात्र राहिले ह्मणजे त्याला कलिल म्हणतात. त्यांत एका रात्रीतच कांहीं फरक पडलेला असतो. व त्यांतच (सत्तामात्र) जीव रहातो. पुढे पांचवा महिना संपला ह्मणजे त्यांत चैतन्याचा आविर्भाव होतो. मग दहाव्या महिन्यापर्यंत सर्वावयवसंपूर्ण असा गर्भ तयार होतो. या वेळी हा गर्भ—ज्यावर रक्तमांसांचा लेप आहे, अशा अमंगल पदार्थांत गुरफटलेला असतो. मग पुढे तो वायुवेगाच्या योगाने खाली मस्तक व वर पाय असा उलटा योनिद्वाराशी येतो व तेथे आवळला जाऊन आपल्या प्राक्तनानुसार फार क्लेश पावतो. तेथून एकदांची सुटका झाली म्हणजे तो संसारांत येऊन पडतो, आणि तेथे त्यास दुसरे पुष्कळ उपद्रव होतात. ज्याप्रमाणे कुत्रे आमिषाच्या मार्गे लागतात, त्याप्रमाणे ग्रह त्याच्या मार्गे लागतात; आणि पुढे स्वकर्मांनी बद्ध असलेल्या त्या जीवामार्गे अनेक प्रकारचे व्याधि लागतात. पुढे राजा, ज्यांना विषयसंग फार प्रिय आहे अशा इंद्रियरूप पाशांत तो बद्ध होतो; आणि एकदां का तो इंद्रियांच्या लढाईतून संपडला, म्हणजे मग त्याला नाना-

प्रकारची व्यसनं जडतात. बरे. त्या व्यसनांत गुंग झाल्यावर तरी त्याला तृप्ति होते काय? मुळीच नाही. पुढे पुढे अशी स्थिति होते की. आपण करतो ते चांगले का वाईट, याचाही विचार त्याच्या मनांत येईनासा होतो. जरी मूर्खाची अशी स्थिति होते, तरी ध्यानधारणा-निष्ठ साधुपुरुष यथाशास्त्र वर्तन करून दुराचरणांपासून स्वतःचे संरक्षण करतात. मूर्खाला मात्र प्रत्यक्ष यमलोक मन्निध आला असताही उमज पडत नाही. पुढे कालांतराने यमदूत त्याला आकर्षण करतात व तो मृत्यु पावतो. सर्व इंद्रिये विकल झाली आहेत. व यमदूत आकर्षण करीत आहेत. अशा वेळी तरी तो सावध होतो काय? मुळीच नाही. पूर्वी केलेल्या बऱ्यावाईट गोष्टींबद्दल त्याची वामना रहाते; आणि तेंपेकळून पुनः गर्भवासादि बंधनांत मांपडत असताही तो आपली उपेक्षा करितो! अहा, हें जग अगदी हीन स्थितीस पोचले अमन त्यावर लोभाचा पूर्ण पगडा बसला आहे. लोभ, क्रोध व भय यांनी उन्मत्त झाल्यामुळे स्वस्वरूपाची ओळख कोणामच राहिली नाही. ते कुलीनपणाचा अभिमान बाळगतात आणि नीचकुलोत्पन्नांची निंदा करतात! ऐश्वर्यमदाने स्वतः भुंज होतात आणि गरीबांचा उपहास करतात! दुःमन्यास बेधडक मृत्यु म्हणतात. पण स्वस्वरूपाविषयी मुळीच विचार करीत नाहीत! दुःमन्याचे दोष बाहेर काढतात, पण आपले दोष काढून टाकण्याची त्यांस इच्छा नसते! परंतु जेव्हां शहाणे व मूर्ख, श्रमंत व दरिद्री, कुलीन व कुलहीन गर्विष्ठ व साधेभोळे—सर्वच लोक मांसहीन, अस्थिमय व केवळ म्नायुमय अशा अवयवांनी युक्त होताना पितृवनांत येऊन कांहींएक पांघरल्याशिवाय उघडे पडतात, तेव्हां त्या ठिकणी त्यांच्यामध्ये 'हा श्रीमंत व हा दरिद्री'

अशा प्रकारचा फरक स्वर्गस्थ लोकांम मुळीच दिसत नाही; सर्व मागवेच दिसतात ! कारण, कुल, रूप इत्यादि गोष्टीकडे त्यांची दृष्टिच नसते ! अरेरे ! सर्वांचे देह एकमागवेच जमिनीवर पडतात हे प्रत्यक्ष पहात असतां व ऐकत असतां मला ही भार्या अन्य जन्मी मिळू दे; मला हा पुत्र मिळू दे. ' इत्यादि प्रकारे एकमेक मिळण्याविषयी सर्व लोक कां इच्छितात बरे ! स्वर्गावर या क्षणभंगुर मर्त्यलोकी जो जन्मापासून धर्माचे पालन करून तदनुसार परमार्थ साधन करील. तोच अंती परमगति पावेल. राजा, याप्रमाणे सर्व गोष्टी जाणून जो तत्त्वाम अनुसरतो. तो अधोगतीचे सर्व मार्ग सोडून उत्थ्वमागतीचे गमन करितो !

अध्याय पांचवा.

संसाररूपक.

धृतराष्ट्र म्हणाला:—विदुरा, जर ह्या धर्मरूपा अरण्यांत बुद्धीने प्रवेश करावयाचा आहे, तर त्यांत तिने कोणत्या मार्गांत प्रवेश करावा, ते मला विस्तारपूर्वक कथन कर.

विदुर म्हणाला:—ठीक आहे. प्रथम स्वायंभुव ब्रह्मदेवाम नमस्कार करून, मोठमोठ ऋषि या संमाराळा ' अरण्य ' कां म्हणतात. ते तुला समजून सांगतो.

एक द्विज एका महान् अरण्यांत फिरत असतां वाट चुकून हिंश्र पशूंनी गजवजलेल्या अशा एका अतिगहन वनांत येऊन पांचला. त्या अति घोर वनांत सिंह, वाघ, हत्ती, अश्वले वगैरे मांसाहारी श्वापदांचे थवेच्या थवे चौहोकडे फिरत होते. ते पशू मोठे भयंकर व अक्रालविक्राल असून माठमोठ्याने गर्जना करीत होते. यामुळे ते वन इतके भीतिदायक झाले होते की, ते पाहून माक्षात यमधर्मही भिऊन जाईल !

ते अरण्य पहातांच या ब्राह्मणांचे हृदय तर अगदीच भेदरून गेले ! राजा, त्यांचे अंगावर गेमांच उभे गहिले आणि तो थरथरा कांपू लागला ! मग आतां कोणाला शरण जावे ! असे म्हणत व दाही दिशांकडे धावत्या धावत्या पहात तो त्या वनांत इतस्ततः धावू लागला. तो भयभीत झालेला ब्राह्मण कोठे वाट सांपडते काय म्हणून पहात एकमागवा धावत होता, परंतु त्या वनांतून त्याम वाहेर पडतां आले नाही. किंवा त्या भयंकर श्वापदांपासूनही त्याची सुटका झाली नाही ! पुढे धावतां धावतां त्याने मभोवार पाहिले तो त्या घोर अरण्यांत जिकडे तिकडे सांपळे व पाश मांडले आहेत, एका अतिभयंकर स्त्रीने आपल्या हातांनी त्याम मगरमिठी मागिली आहे. पांचपांच फडांचे पर्वतप्राय नाग सर्वत्र दिसत आहेत. आणि गगनाम भेदून जाणाऱ्या प्रचंड वृक्षांनी ते महावन व्यापून गेले आहे. असे त्याच्या दृष्टीम पडले ! ज्या वनामध्ये हा मनुष्य होता तेथेच एक खोल विहीर होती. तिच्या मभोवार वेळीची गुंतागुंत झाली असून त्यांतच पुष्कळ गवत रुजलेले होते; आणि त्या वेळीनी त्या भयंकर विहिरीचे कांठ अगदी झांकून गेले होते. धावतां धावतां तो विचारा ब्राह्मण त्या खोल व झांकलेल्या जलाशयांत पडला ! परंतु नशिताने एका वेळीच्या गुंतागुंतीत त्याचे पाय अडकले; आणि फणमांचे मोठे फळ लोंबते त्याप्रमाणे तो खाली डोंके वर पाय होऊन त्या जलाशयांत उलटा लोंबू लागला ! याप्रमाणे सांप्रत तो तेथे लोंबत आहे, परंतु, राजा, त्याचे दुर्दैव एवढ्यानेच संपले नाही.—तेथे त्याला आणखी उपद्रव आहे. त्या कृपामये एक महाबलाट्ट व भयंकर मर्ष त्याच्या नजरेम पडत आहे. व वर विहिरीच्या कांठावरच एक भला मोठा हत्ती आहे. त्या हत्तीला

सहा तोंडे आहेत: आणि अंधे काळे व अंधे माण होतें. व त्याला कसे ममाधान होत आहे. पांढरे असे बारा पाय आहेत ! ज्या वृक्षावरून हें मला मांग. वा विदुरा, तो ब्राह्मण जेथे या खाली लोंबलेल्या वेळीत हा मनुष्य अडकला अशा भयंकर संकटांत पडला आहे. तें ठिकाण आहे, तोच वृक्ष मोडून खाण्यामाठी तो हत्ती कोटे आहे, तसेच त्याला या संकटांतून त्याकडे हळूहळू येत आहे. त्या वृक्षाच्या कोणत्या उपायांने मुक्त करतां येईल. हें सर्व खांद्यांवर नानाप्रकारचे घोर स्वरूपांचे व भीति-कारक भुंगे घोंगावत आहेत. ते त्या वृक्षा-वरील मधाभोंवतीं गराडा देऊन वमले आहेत: आणि हे भरतर्षभा वरचेवर तो मध चाटीत आहेत. जो प्राणिमात्रास गोड लागतो व विशेषकरून बालक ज्यास लुब्ध होतो त्या मधाची एक धार खाली गळत आहे आणि तो लोंबणारा पुरुष ती एकमागवा पीत आहे. याप्रमाणे तो संकटांत पडला आहे. तरी मध पिण्याची त्याची तृष्णा नाहीशी होत नाही. तो नित्य अतृप्तच असून एकमागवा मधाची इच्छा करीत आहे: आणि राजा, त्याला जीविताबद्दलही निवेद उत्पन्न झाला नाही ! त्या मधावर त्याची जीविताशा गुंतून राहिली आहे. काहीं काळे व पांढरे उंदीर त्या वृक्षाचीं मुळे कुरतुडीत आहेत ! भयंकर वनां-तील सर्प व ती अत्युग्र स्त्री, कृपांतील नाग, तीरावरील हत्ती, वृक्ष पडण्याचे भय. उंदीर-पामूनचे पांचवे भय, आणि भुंगे मध खात आहेत तो भंपण्याचे महावे भय, अशा महा प्रकार-च्या भीतींत तो तेंथें भवमागसांत पडला आहे. तथापि त्याची जीविताशा विलकूल सुटत नाही !

अध्याय सहावा.

—:—

रूपकाचा स्पष्टार्थ.

धृतराष्ट्र म्हणाला:—अरे ! त्या विनाय्याला स्वर्गावर फारच दुःख प्राप्त झाले. या वेळीं तर तो विलक्षण पेंचांत मांपडला आहे. असें अमनां. हे वाक्यटो, त्या ठिकाणीं त्याचे मन कसें रम-

तीरावरील हत्ती, वृक्ष पडण्याचे भय. उंदीर-पामूनचे पांचवे भय, आणि भुंगे मध खात आहेत तो भंपण्याचे महावे भय, अशा महा प्रकार-च्या भीतींत तो तेंथें भवमागसांत पडला आहे. तथापि त्याची जीविताशा विलकूल सुटत नाही ! तीरावरील हत्ती, वृक्ष पडण्याचे भय. उंदीर-पामूनचे पांचवे भय, आणि भुंगे मध खात आहेत तो भंपण्याचे महावे भय, अशा महा प्रकार-च्या भीतींत तो तेंथें भवमागसांत पडला आहे. तथापि त्याची जीविताशा विलकूल सुटत नाही !

जाणावीं. या विषयमौख्यांतच मानव गर्क झालेले असतात ! धृतराष्ट्रा, संसारचक्राचें रूपक अशा प्रकारचें आहे. ज्ञाते हें जाणतात आणि तेणेंकरून ते भवपाश छेदून टाकतात !

अध्याय सातवा.

—:—

संसारनिवृत्त्यर्थं तत्त्वोपदेश.

धृतराष्ट्र म्हणाला:—अहा विदुरा ! खरोखर तू फारच मनोहर आख्यान मांगितलेस. तूं खरा तत्त्वज्ञ आहेस. तुझे हें अमृततुल्य भाषण श्रवण करून माझी तृप्ति होतां आणखी पुनः हेंच ऐकण्याची मला फार इच्छा उत्पन्न झाली आहे. हेंच आख्यान तूं पुनः मांग.

विदुर म्हणाला:—राजा. हाच मार्ग मी पुनः विस्तारपूर्वक मांगतां. श्रवण कर. तो ऐकिल्याच्या योगानें विचक्षण पुरुष संसारापासून मुक्त होतात. राजा. ज्याप्रमाणें एखादा मनुष्य फार लांब रमता चालत असतां थकून वाटत जागजागी विश्रांतीस्तव वमतो. त्याप्रमाणेंच, हे भारता, संमूर्तीच्या फेऱ्यांत मांपडलेले जीव निरनिराळ्या गर्भस्थानांत वाम करितात: पण मूर्त जन तेथें राहिल्यावर पुढें जायचें विसरून तेथेंच अडकून पडतात, आणि ज्ञानी जन त्यांतून मुक्त होतात. म्हणूनच शास्त्ररहस्य जाणणारे पुरुष या संसारचक्राला मार्ग असें म्हणतात; आणि तो मार्ग आक्रमीत असतां ज्या ह्या संसारांत जीव पडतो, त्यास मनन-शील पंडित वन असें म्हणतात. हे भरतर्षभा. स्थावरजंगम प्राण्यांस भ्रमविणारा हा एक विलक्षण भोंवरा आहे; पंडित मात्र त्यांत अडकत नाहीत. प्रत्यक्ष व परोक्ष असे जे अनुक्रमें शारीरिक व मानसिक व्याधि या मर्त्यांना जडतात, त्यांना पंडित व्याल असें म्हणतात. हे भारता, त्यांच्या योगानें अज्ञ लोक नित्य

पुष्कळ क्लेश पावत असतात; व त्यांचें निवारण करण्यासाठीं धडपडत असतात; परंतु पूर्वकर्मा-मुळे या महाव्यालांपासून त्यांची मुटका होत नाहीं ! राजा, यदाकदाचित् मनुष्य या व्याधीपासून मुटला, तथापि पुढें शरीर विरूप करणारी जरा त्याला घेरतेच. राजा, जेथें मज्जामांमरूप चिग्वल आहे अशा देहरूप कृपांत निगावार पडला असतांही शब्दस्पर्शादि विविध विषयांत हा गुंग होतो; आणि संवत्सर, मास, पक्ष, अहोरात्र व संधिकाल हे क्रमाक्रमानें त्याचें रूप व आयुष्य हरण करीत असतात. संवत्सर, मास वगैरे हे कालाचे निधि आहेत. ते एकसारखे आयुष्य हरण करीत असतात, हें मूर्तांच्या ध्यानांत येत नाही. राजा. सर्व प्राणी कर्मरूप विधात्यानं उत्पन्न केले आहेत असें ज्ञाने म्हणतात. शरीर हा जीवांचा रथ होय, बुद्धि मार्गथि होय. इंद्रियें घोडे होत आणि मन हा लगाम होय. जो मनुष्य हा मनरूपी लगाम सैल मोडून इंद्रियरूपी अश्र्वांस पाहिजे तसे भडकू देतो. व त्यांच्या वेगाप्रमाणें आपला देहरूप रथ जाऊ देतो. तो या संसारचक्रांत चक्रवत् फिरत रहातो; आणि जो बुद्धिरूप मारश्याकडून मनरूप लगाम खेंचून इंद्रियरूप अश्र्वांस आवरून धरतो. तो मृत झाल्यावर पुनः संसारांत पडत नाही. चाक्राप्रमाणें गरगर फिरणाऱ्या या संसारचक्रांत फिरत असतां जे मोह पावत नाहीत. त्यांस त्याबरोबर फिरावें लागत नाही; त्यांची लवकर मुटका होते. आतां कोणी म्हणेल कीं. यांत फिरले म्हणून काय झालें ? तर हें क्षणें बरोबर नाही. कारण, त्यापासून मुख तर नाहीच, पण दुःख मात्र निश्चयानें होतें. यामाठीं शहाण्यानें त्यांतून मुटण्याविषयी अवश्यमेव यत्न करावा,—बिलकूल उपेक्षा करूं नये; कारण तेणेंकरून या संसारवृक्षाची वाढ होते. राजा, ज्यानें इंद्रियांचें नियमन केलें

आहे. क्रोध व लोभ यांचें निराकरण केलें आहे. आणि जो सदोदीत संतुष्ट व सत्यवादी आहे त्याला शांति प्राप्त होते. राजा. ज्याच्या योगानें अज्ञ लोक मोहून जातात. त्या ह्या संसाराला याम्य म्हणजे यमलोकी पांचविणारा रथ असें म्हणतात. या रथाच्या योगानें. तुला प्राप्त झाली आहे तीच स्थिति प्राप्त व्हावयाची ! परंतु, हे मारिषा. राज्यनाश. पुत्रनाश. मित्रनाश यांच्या योगानें तृष्णाशीलाम मात्र दुःख होतें; समाधानी पुरुषाम दुःख होत नाही. शहाण्यानें कितीही भयंकर दुःखे आली तरी त्यांवर दुःखे घालविण्याचा जो खरा उपाय तोच करावा. आत्मसंयमी मनुष्यानें ब्रह्मज्ञानरूपी दिव्य औपधि मिळवून तिच्या योगानें दुःखरूप महारोग नाहीसा करवा. स्थिरसंयमी पुरुष जसा आपल्या आपण दुःखापासून पूर्ण मुक्त होतो. तसे कांहीं त्याम पराक्रम. द्रव्य. मित्र किंवा आस हे मुक्त करूं शकत नाहीत. यास्तव, हे भारता. मी मित्रभावानें सांगत आहे त्यावर भरंवसा देवून तूं शील संपादन कर. दम. त्याग व अप्रमाद हे तीन ब्रह्मलोकी पांचविणारे घोडे आहेत. राजा. शीलरूप लगाम धरून जो मनोरूप रथांत आरूढ होतो. तो मृत्यूची भीति सोडून ब्रह्मलोकीं जातो. हे महीपते. प्राणिमात्राम जो अभय देतो त्याम सत्यलोकीं निरागम्य व सर्वश्रेष्ठ असें स्थान प्राप्त होतें. अभयप्रदानानें मनुष्यास जें फल प्राप्त होतें तें हजारों यज्ञ केल्यानें किंवा नित्य उपवाम केल्यानेंही प्राप्त होत नाही ! प्राणिमात्राम स्वतःचा जीव प्यारा आहे. त्याहून अधिक प्रिय असें दुसरे कांहीं एक नाही. हा मिद्धांत होय: आणि म्हणूनच मरण हे कोणामच नको असतें. सर्व त्याम भीत असतात. यास्तव. राजा, मुक्त मनुष्यानें प्राणिमात्रावर दया करावी. राजा. नाना-

प्रकारच्या मोहांत मांडलेले व अज्ञानपटलां आच्छादिलेले स्थूलदृष्टीने मंद शोक समागचक्रांत टिकटिकार्णी भ्रमण करितात; परंतु. धृतराष्ट्रा. जे अत्यंत सूक्ष्मदृष्टीचे लोक भ्रमतात. ते मनातन. ब्रह्मपदी गमन करतात.

अध्याय आठवा.

—०—

व्यासांचा उपदेश.

वेशंपायन सांगतात: जनमजया. विदुःगर्भे नै भाषण एकुन. कुरुश्रेष्ठ धृतराष्ट्र राजा हा पुत्रशोकानें अनिशय व्याकूल हात्माता भूमिवर मूर्च्छित पडला. तो तसा वेशुद्ध पडलेला पाहातांच त्याचे आस. कृष्णद्वैपायन त्याम. विदुः. संजय. दुसरे इष्टमित्र. द्वापरपाल. वंगेर सर्वजण त्याच्या भोंवतार्थी जमले; व कोणी त्याच्या मस्तकावर गार पाणी शिंपडले. कोणी ताडाच्या पंस्यांनी वाग घालूं लागले. आणि कोणी त्याच्या अंगावरून हळूहळू हात फिरवूं लागले. त्याप्रमाणे त्यांनी पुष्कळ वेळपर्यंत प्रयत्न चालविले; तेव्हां वत्याच वेळानें धृतराष्ट्र राजा एकदांचा शुद्धीवर आल्या: आणि पुत्रशोकविह्वल होउन फार वेळपर्यंत विलाप करीत बसला. तो म्हणाला. ... प्रभो. या मनुष्यजन्मांत वारंवार दुःखें उत्पन्न होतात. तस्मात् या मनुष्यत्वामच धिःकार असा ! या मनुष्ययोनींत पुत्रनाश. द्रव्यनाश आणि आसम्बकीयांचा नाश यांपासून विप किंवा अशि यांप्रमाणें जात्रवलय व अपार दुःख होत असतें, त्याच्या योगें सर्वांगाचा भडका होतो. बुद्धि नष्ट होते आणि त्या दुःखानें होरपळून गेलेल्या त्या मनुष्याम. मरण यईल तर फार बरे ! असें वाटूं लागतें ! अशाच प्रकारचें भयंकर दुःख दुर्भाग्यामुळे मला प्राप्त झाले आहे. त्याचा शवट हाण्याचा उपाय प्राणांतावांचन

दुमरा तर मला कांहीच दिमत नाही. तेव्हां, हे द्विजमत्तमा, आजच मी प्राणांत करून या दुःखापामून मोकळा होणार ! ”

जनेमंजया. आपला पिता ब्रह्मजवर व्याम मुनि यास इतकें म्हटल्यावर धृतराष्ट्राच्याने पुढें बोलवेंना. शोकाचा मोठा उमाळा येऊन तो मोहित झाला; आणि मनांत त्याचें चिंतन करीत अगदीं स्तब्ध बसला. मग, त्याचें तें भाषण ऐकून, भगवान् कृष्णद्रोणाने मुनि हे पुत्रशोकाकडून झालेल्या त्या आपल्या पुत्राम उपदेश करूं लागले.

व्याम म्हणाले:—हे महाबाहो धृतराष्ट्रा. मी तुला जें मागत आहे, तें लक्ष देऊन एक. तुला वेदग्रहस्थ माहींत आहे; तमाच तूं बुद्धि-पान् आहेम; धर्म व अर्थ माधण्याविषयी कुशल आहेम; आणि, हे परंतपा, जें जें मनुष्या-म अवगत पाहिजे तें तें सर्व तुला अवगत आहे. त्याचप्रमाणें, सर्व मर्त्य प्राणी अनित्य आहेत. हंही तूं निःसंशय जाणतोम. तमेंच. राजा. इहलोक व परलोक दोन्ही अशाश्रित आहेत हे तूं जाणत अमून निष्कारण शोक कां करतोम? राजेंद्रा, तुझ्या मुलाच्या निमित्तमात्र करून भवितव्यानें तुझ्या ममक्ष हें वर उत्पन्न केलें. राजा, कांहीं कलें तरी ज्या गोष्टी अवश्य व्हावयाच्याच अशा अमतात, त्यांपैकीच कौरव-पांडवांचें युद्ध एक अमतांना, त्या उत्तम लोकीं गेलेल्या शूरांचेदल तूं कां शोक करतोम? राजा, ज्ञानी विदुसांनें हें सर्व भविष्य जाणून शम करण्यामाठी पुष्कळ प्रयत्न केला; परंतु देवांनें ज्या गोष्टी ठरविल्या अमतात, त्या अन्यथा करण्याम मनुष्य-कितीही इतत अमला तरी-ममर्थ नाही असें माझे मत आहे. शिवाय, या युद्धामंबंधानें देवांचें जें कार्य मी प्रत्यक्ष ऐकिलें आहे, तें मी तुला सांगतां. तेंणेंकरून तुझे अंतःकरण स्थिर होईल.

राजा, पूर्वी मी एकदां महज इंद्रसभेंत गेलों अमतां तेंथें सर्व देव जमलेले पाहिले. तेंथें नारदप्रभृति सर्व देवांपिं आले होते; आणि त्या ठिकाणीं पृथ्वीही आलेली माझ्या दृष्टीम पडली. ती कांही कार्यामन्तव तेंथें देवांकडे आर्य्य होती. मग जरा जवळ जाऊन ती त्या एकत्र जमलेल्या देवांम म्हणाली, “ हे महा-भागहो, माणें ब्रह्मलोकीं तुम्हीं माझे जें कार्य करण्याविषयी कवूल केलें आहे, तें कार्य मन्वर करा. ”

तिचें तें भाषण श्रवण करून लोकश्रेष्ठ भगवान् विष्णु किंचित् हंमून त्या देवसभेंत पृथ्वीम म्हणा-ला. “ धृतराष्ट्राच्या शंभर पुत्रांपैकीं वडील पुत्र—ज्याला दुर्योधन म्हणतात, तो तुझे कार्य करील. तो राजा झाला म्हणजे तुझे इच्छित पूर्ण होईल. त्याच्यामाठीं राजे कुरुक्षेत्रांत एकत्र होतील; आणि ते झुंजार वीर तीक्ष्ण शस्त्रांनीं परस्परांचा नाश करतील, त्या वेळीं, हे देवि, युद्धामध्यें तुझा भाग उतरेल. हे शाभने, आतां तूं मत्वर स्वस्थानीं जा आणि आपलें लोकधारणाचें कर्तव्य करा. ”

धृतराष्ट्रा, तुझा पुत्र दुर्योधन हा कलीच्या अंशापामून गांधारीच्या उदरीं जन्मला असल्या-मुळें तो अमहिष्णु, अस्थिरबुद्धि व रागीट अमून, त्याम उपदेशानें वाटेवर आणणें शक्य नव्हतें. देवयोगानें त्याचे भाऊही त्यासारखेच झाले. त्याचप्रमाणें त्याचा मामा शकुनि, परम-सखा कर्ण, आणि पृथ्वीवरील दुसरे राजे हे सर्वजण विनाशामाठीं समगुणीच उत्पन्न झाले! अमा नियमच आहे कीं, यथा राजा तथा प्रजा ! स्वामी धार्मिक असेल तर सेवक अधर्मी असला तरी धार्मिक होतो. धन्याच्या गुणदोषांप्रमाणें चाकराचे गुणदोष अमतात, हें निःसंशय होय. राजा, दुष्ट राजा मिळाल्यामुळें ते सर्वजण अस्तंगत झाले. हे महाबाहो, मी देवसभेंतील

मी ही हकीकत सांगितली, ती तत्वज्ञानी नारदा-
सही विदित आहे. हे पृथ्वीपते. केवळ स्वाप-
राधांमुळे तुझे पुत्र नष्ट झाले आहेत. यास्तव,
राजेंद्रा, त्याबद्दल शोक करू नको. शोक कर-
ण्यास वास्तविक कांहींच कारण नाही. शिवाय,
हे भारता, पांडवांनी तुझा कांहीं अपराध
केलेला नाही; तुझे पुत्रच दुष्ट होते व त्यांनीच
सर्व पृथ्वीचा घात केला. राजा. तुझे कल्याण
असो. पूर्वीच नारदानें राजसूय यज्ञाचे वेळीं
मयसभेंत धर्मराजाला हें भविष्य सांगितलें होतें
की, ' पांडव व कौरव एकमेकांशी युद्ध करून
नाश पावणार आहेत. यास्तव कौंतेया, तूं आपलें
कर्तव्य कर. ' नारदाचें तें भाषण ऐकून त्या
वेळीं पांडवांस फार वाईट वाटलें. याप्रमाणें
राजा, देवांचें काय कार्य होतें व तें तुझ्या
मुलांनीं कसें बजाविलें, हें सर्व मीं तुला निवे-
दन केलें आहे; आणि माझी अशी खात्री
आहे कीं, याच्या श्रवणानें तुझा शोक नाहीमा
होऊन, तुजें चित्त प्राणत्यागापासून पगडमुग्न
होईल; आणि ह्या देवाधीन गोष्टी आहेत. हें
जाणून पांडवांविषयीं तुझ्या मनांत स्नेहबुद्धि
उत्पन्न होईल. हे महाबाहो. असें होणार म्हणून
मीं पूर्वीच ऐकिलें होतें; आणि राजसूय यज्ञाचे
वेळीं मीं धर्मराजाला हें सर्व सांगितलेंही होतें.
मीं हें गुह्य सांगितल्यावर, कौरवपांडवांची
लढाई न व्हावी म्हणून धर्मराजानें होते नव्हते
तेवढे प्रयत्न केले; परंतु त्यांचा उपयोग झाला
नाहीं; तस्मात् देव बलवत्तर होय. राजा, ब्रह्म-
लिखिताचा अतिक्रम करणें स्थावरजंगम सर्व
भूतांस मुळींच शक्य नाही. हे भारता. तूं
इतका धर्मनिष्ठ व ज्ञानी अमून व प्राण्यांची
स्थितिगति सर्व जाणूनही जर अमा मोह
पावतोस, तर तूं अमा शोकाकुल झाला आहेस
व वारंवार बेशुद्ध पडत आहेस हें समजल्यावर
मला वाटतें, युधिष्ठिर राजा प्राणत्याग सुद्धां

करील ! राजेंद्रा. तो वीर कुमिकीटकांशीही
मर्वदा मद्यतेनें वागतो. त्याला तुमी दया येणार
नाहीं असें कसें होईल ! हे भारता. तूं माझ्या
आजेंनें. देव अनतिक्रमणीय असल्यामुळे. आणि
पांडवांच्या कारण्यास्तव प्राणत्याग करू नको.
बाबारे. अशा गीतीनें तूं वागलास. म्हणजे या
लोकी तुमी कीर्ति होईल. तुला फार मोठा धर्म
व अर्थ प्राप्त होईल. आणि चिरकाल तपश्चर्या
केल्यामागवें घडेल. प्रवृत्ति अतीमागवा भयं
कर पुत्रशोक तुला प्राप्त झाला आहे खरा;
तथापि. हे महाभाग. मीं आतां तुला जो उप-
देश केला त्या उपदेशरूप उदकानें त्याला
कायमचा विग्नवन टाक !

वेशंपायन सांगतात:— अमितेजस्वी व्यासांचें
हें भाषण श्रवण करून धृतराष्ट्रांनें मुहूर्तमात्र
मनाशीं विचार केला. आणि नेत्र तो म्हणाला.
" द्विजवरग. महान् शोकजात्यनें मीं अगदीं
जन्म झालों आहे. वरचेवर मला मोह उत्पन्न
होतो आणि स्वस्वरूपांचे भान रहात नाही !
तथापि आपलें हें देवयोगपर भाषण श्रवण
केल्यामुळे मीं प्राणधारण करीन; आणि शोक
न करण्याविषयीं प्रयत्न करीन. " जनमेजया.
धृतराष्ट्रांचें हें भाषण श्रवण करतांच मत्यवती-
पुत्र व्यास मुनि तेंच अंतर्धान पावले !

अध्याय नववा.

विदुराचें सांत्वनपर भाषण.

जनमेजय विचारतो:— विप्रपं, भगवान्
व्यास अंतर्धान पावल्यावर धृतराष्ट्र राजानें
काय केलें. तें मला आपण सांगावें. त्याचप्रमाणें.
कुरुकुल्याधिपति थोर युधिष्ठिर राजा आणि
कृपाचार्यप्रभृति ते त्रिभंजन यांनीं पुढें काय
केलें. हंही कथन करणें. अश्वत्थाम्याचें कृत्य
आणि एकमेकांनीं दिलेले शाप मीं ऐकिले

आहेत; तर पुढें संजयानें जो वृत्तांत मांगितला तो मला निरुद्ध करा.

वैशंपायन सांगतात:—दुर्योधन पडल्यानंतर आणि सर्व संन्याचा नाश झाल्यावर, संजयाची व्यामदत दिव्यज्ञानशक्ति नष्ट झाली. मग तो धृतराष्ट्राजवळ येऊन त्याम वडलेलें वर्तमान सांगू लागला.

संजय सांगतो:—राजा, नानादेशचे राजे आपापल्या देशांतून येऊन तुझ्या मुलांमहवर्तमान धारातीर्थी पतन पावले आणि पितृलोकां गेले. हे भारता, सर्वजण नको नको ढणत अमतां तुझ्या मुलांनें वेगचा शेवट करण्याचा हेतु धरून सर्व पृथ्वीचा घात केला! अमोः झाल्या गोष्टीम उपाय नाही. आतां पुत्र, पौत्र व वडील यांचीं यथाक्रमानें उत्तर कार्ये करीव!

वैशंपायन सांगतात:—संजयाचें तें घोर भाषण श्रवण करून धृतराष्ट्र जमिनीवर मेल्यामारुवा निश्चल पडला! याप्रमाणें तो पडला अमतां सर्व धर्म जाणणारा ज्ञानी विदुष त्याजवळ जाऊन ढणाला, .. राजा, ऊठ, निजनीम काय? हे भरतर्षभा, शोक करू नको: सर्व प्राण्यांची शेवटीं हीच गत आहे. प्राणिमात्र ब्रह्मापामून उत्पन्न होतो व शेवटीं त्यांतच लय पावतो; मध्यें मात्र तो उगाच भाममान होतो; वास्तविक तेही मिथ्याच आहे. मग शोक कां करावा बरें? शोक करणारा शोक केल्यानें मृतामागून जाऊ शकत नाही किंवा शोक करून कोणी मरत नाही. अशा प्रकारची वस्तुस्थिति अमतां तूं कशासाठी शोक करतोम बरें? मनुष्य लढाईम न जातां घरीं बिछान्यावर पडला असला तरी तेथेही त्याला मृत्यु येतो. आणि घनघोर रणकंदनांतही एखादा जिवंत निभावतो. हे महाराजा, वेळ भरली म्हणजे ती कोणासच टाळतां येत नाही; काल सर्वास आकर्षितो,—त्याला कोणी प्रिय नाही व द्वेष्यही

नाही. हे कुरुमत्तमा, ज्याप्रमाणें वायु सर्वच तृणांचे शेंडे हालवितो, त्याप्रमाणेंच मज भूतांम मृत्युपुढें मान वांकवावी लागते. हे भरतर्षभा, आपण सर्वजण एकाच घोळक्यांतले अमून सर्वास त्याच एका ठिकाणीं जावयाचें आहे; त्यांत ज्याची वेळ भरते तो आधीं जातो इतकेंच. असें जर आहे, तर याबद्दल शोक तो कमला करावयाचा? राजा, युद्धांत मरण पावलेल्या ज्या वीरांबद्दल तूं शोक करीत आहेस, ते महात्मे तर स्वर्गाम पांचले आहेत. अर्थात् त्यांबद्दल शोक करण्याचें कांहींच कारण नाही. मोठमोठे दक्षिणायुक्त यज्ञ, उत्तम तपश्चर्या किंवा विद्या यांच्या योगानेंही युद्धांत मरणारांप्रमाणें उत्तम गति प्राप्त होत नाही! ते सर्वजण वेदज्ञ, शूर व व्रतानुष्ठानें केलेले असे थोर योग्यतेचे अमून सर्वमनुष्य मरण पावले आहेत. मग त्यांबद्दल शोक करण्याम कोठें जागा राहिली? शूरांच्या शरीररूप अर्शात त्यांनीं शररूप आहुति दिल्या आणि शत्रूंनीं हवन केलेले बाण त्या श्रेष्ठांनीं महन केले! राजा, याप्रमाणें युद्धांत मरणें हा स्वर्गाम जाण्याचा उत्तम मार्ग मी तुला सांगितला. खरोखर इहलोकां क्षत्रियाम युद्धापरतें श्रेष्ठ कांहीं नाही. ते क्षत्रिय महाथोर, शूर व मभेंत शोभायमान होणारे अमून त्यांनीं उत्तम आशीर्वाद मिळविलेले आहेत. त्यांपैकीं कोणाबद्दलही शोक करण्याचें कांहीं कारण नाही. तेव्हां, हे पुरुषर्षभा, आपलें आपणच मन आवरून धर व शोक करू नको. आज शोकविहल होऊन प्राप्त कार्य मोडणें तुला उचित नव्हे.

अध्याय दहावा.

—:—

धृतराष्ट्रनिर्गमन.

वैशंपायन सांगतात:—विदुराचें तें भाषण ऐकून धृतराष्ट्रानें रथ जोडण्याम सांगितलें आणि

तो पुनः ह्यणाला, गांधारीला व सर्व भरतस्त्रियांम अश्वशावकी धांवत जातात. त्याप्रमाणे त्या लवकर घेऊन ये. त्याचप्रमाणे कुंती व तिच्या शोकांत झालेल्या स्त्रियांचे अनेक समुदाय येथे असलेल्या सर्वस्त्रिया यांसही लवकर आण. मोठ्याने आक्रोश करीत धावू लागले. आपले याप्रमाणे धर्मज्ञवर विदुराला मांगून तो हात आंबळून कोणी पुवांच्या नांवाने, कोणी शोकमूढ झालेला धर्मशील राजा मोठ्या कष्टाने भावांच्या नांवाने आणि कोणी पित्यांच्या रथावर बसला. मग, पुत्रशोकांनै विह्वल झालेली नांवाने आक्रोश करीत चालल्या होत्या; गांधारीही केवळ पतीच्या आज्ञेम मान दिला आणि त्यांची ती स्थिति पाहून जण काय प्रत्य- पाहिजे म्हणून, कुंती व इतर स्त्रिया यांमह, कालचा लोकमंहाग्न झाला आहे अमा भाम जेथे धृतराष्ट्र राजा होता तेथे त्वरित प्राप्त झाली. होत होता! त्या मोठमोठ्याने विलाप करीत त्या अत्यंत शोकाकुल झालेल्या स्त्रिया धाय व रडतओरडत पुढेपुढे धांवत होत्या; आणि मोकळीत तेथे आल्या; आणि एकमेकींम हाका शोकांनै त्यांचे देहभान मुट्यामुळे आपण मारून व रडून त्यांनी एकच गोंधळ करून कोण व आपणांम करावयाचे काय, ह्यांचे सोडला. त्यांची ती स्थिति पाहून विदुराला ज्ञान त्यांम राहिले नव्हते. ज्या स्त्रियांना पूर्वी त्यांच्यापेशांही अधिक दुःख झाले; परंतु विचारांम मर्वाजनांचीही त्याज वाटत अंम. त्याच या करतो काय! तमेंच दुःख गिळून त्याने त्यांचे वेळी एक वस्त्र धागण केले अमतांही माम् समाधान केले आणि कंठ दाटून आलेल्या त्या मामऱ्यांपुढे मुद्धां त्याजत नव्हत्या! राजा. स्त्रिया त्यांतल्या त्यांत एकमेकींच्या स्थिती त्या स्त्रिया त्यांतल्या त्यांत एकमेकींचे ममाधान तील सूक्ष्म भेद काढून एकमेकींचे समाधान करीत होत्या; आणि शोकविह्वल होत्यात्या दीनवदनांनै एकमेकींकडे पहात होत्या.

अमो; याप्रमाणे हजारों प्रकारांनी विलाप करणाऱ्या त्या स्त्रियांमहवतमान तो दीन धृतराष्ट्र राजा त्वरने नगरवाहेर पडून रणांगणा कडे जाऊं लागला. त्या वेळी कारगीर, वाणी, शेतकरी व इतर सर्व वर्गांचे लोक राजापाठीमागून नगरवाहेर पडले. राजा; कारवांच्या मृत्यूमुळे व्याकूल झालेल्या त्या स्त्रियांनी जो भयंकर टाहा चालविला होता. त्याच्या प्रचंड शब्दांनै चतुर्दशभुवनै व्यथित होऊं लागली! युगांतकाली प्राणिमात्र दग्ध होऊं लागतात तशाच प्रकारचा हा प्रलय प्राप्त झाला आहे अंमै सर्वांम वाटले. राजा. कारवांचा क्षय झाला अमतां त्यांवर अत्यंत अनुरक्त अम- लेल्या सर्व पौरजनांचीं अंतःकरणे अत्यंत व्यथित झाली आणि ते मोठमोठ्यांनै हंबरडे फोडू लागले!

राजा, यूथपति मरून गेल्यावर अनाथ झालेल्या हरिणी ज्याप्रमाणे पर्वताच्या गुहांतून बाहेर पडल्या, त्याप्रमाणे त्या कारवास्त्रिया स्फटिकाचे जणू शुभ्र पर्वतच अशा आपल्या मंदिरांतून बाहेर पडल्या. राजा जनमेजया, नृत्य शिकविण्याच्या पटांगणावर लहान लहान

अध्याय अकरावा.

—:—

कृप-द्रोणि-भोज-दर्शन.

वैशंपायन सांगतात:—याप्रमाण तो घोळका नगरापासून सुमार एक कोस गेल्यावर त्यांस शारद्वत कृपाचार्य, द्रोणपुत्र अश्वत्थामा आणि कृतवर्मा हे तिघे भेटले. प्रज्ञाचक्षु धृतराष्ट्र राजास पहातांच त्यांचे कंठ दाटून आले, त्यांनीं दीर्घ निःश्राम सोडले, आणि शोक करीत असलेल्या त्या राजास ते म्हणाले, “हे महाराजा, आपल्या पुत्रांनै इतरांस अत्यंत दुष्कर असा अग्रतिन पराक्रम केला आणि नंतर तो आपल्या अनुचारांसमवेत इंद्रलोकीं गेला. दुर्योधनाच्या सर्वै सैन्यापैकीं आम्हीं तिघेच काय ते वांचलों आहां! हे भरतर्षभा, आपले बाकींचें सर्व सैन्य पतन पावेलं.

याप्रमाणें राजाला सांगितल्यावर शारद्वत कृपाचार्य हे पुत्रशोकांत गांधारीला उद्देशून बोलं लागले. ते ह्मणाले, “राज्ञि, तुझे पुत्र अगदीं निर्भयपणें लढले. त्यांनीं अनेक शत्रुसंघांस ठार मारिलें आणि पराक्रमाचीं कृत्यें करतां करतां शेवटीं ते निधन पावले. त्यांस शस्त्रप्रतापानें मिळणारे निर्मल लोक मिळून ते तेंथें देदीप्यमान देह धारण करून देवांप्रमाणें विहार करतील, यांत बिलकूल संदेह नाही. त्या शूरांपैकीं एकांनैही लढत असतां पाठ दाखविली नाही किंवा एकही शत्रूस शरण गेला नाही! सर्वजण लढतां लढतां मनुष्य शस्त्रानें मरण पावले! अशा प्रकारच्या श्रेष्ठ क्षत्रियांना परम-गति प्राप्त होते असें प्राचीन ऋषिवर्य म्हणतात; आणि म्हणूनच रणांगणांत शस्त्रानें मरण आलें असतां त्याबद्दल शोक करणें योग्य नाही. शिवाय, हे राज्ञि, त्यांच्या शत्रूंची ह्मणजे मोठीशी वंशवृद्धि होणार आहे असें मुळीच नाही. अश्वत्थामप्रभूति आम्हीं जें कृत्य केले

तें श्रवण कर. भीमसेनानें तुझ्या मुलाला अधर्मानें मारल्याचें ऐकून, पांडव रात्री शिविरांत निजले असतां आम्हीं त्यांच्यावर बालाघातला. त्यांत धृष्टद्युम्नप्रभृति झाडून मारे पांचाल ठार केले; आणि द्रुपदाचे सर्व पुत्र व द्रौपदीचे पांचही मुलगे यममदनीं पाठविले. याप्रमाणें तुझ्या मुलाच्या शत्रूंचा नाश करून आम्हीं तेथून पळालों. आम्हीं केवळ तिघेच अमल्यामुळें आम्हांस रणांगणांत उभें रहावत नाही; कारण ते शूर व महाधनुर्धर पांडव रागांनै लाल होऊन सुड उगविण्यासाठीं लवकरच येथें येतील! आपले मुलगे मारले हें ऐकून त्या पुरुषश्रेष्ठांचें रागांनै देहभान सुटलें असेल, आणि आमचा माग काढीत ते शूर वेगांनै येत असतील! हे यशस्विनि, पांडवपुत्रांचें निर्दलन केल्यामुळें पांडवांपुढें रणांत उभें रहाण्याचें आम्हांस धैर्य होत नाही. याम्बव आह्वांस जावयाम अनुज्ञा दे; आणि, हे राज्ञि, तूं असा शोक करूं नको. हे धृतराष्ट्र राजा, तूंही आह्वांस रजा दे. राजा, उत्तम धैर्य धारण कर आणि विचार करून पहा, ह्मणजे तुला कळून येईल कीं. मरण हाच एक क्षत्रियांचा स्वरा धर्म (कर्तव्यकर्म) होय!”

राजा जनमेजया, याप्रमाणें बोलून कृपाचार्य, कृतवर्मा व अश्वत्थामा यांनीं धृतराष्ट्रास प्रदक्षिणा केली; आणि त्या मननशील राजाकडे पहात त्यांनीं आपल्या घोड्यांस टांच मारली व त्वरेंनै गंगेच्या अनुरोधानें घोडे पिटाळले. याप्रमाणें ते तिघे महारथी धृतराष्ट्रास सोडून दूर गेल्यावर परस्परंशीं काहीं मसलत करून उद्विग्नचित्तानें तिघे तीन वाटांनीं निघून गेले. शारद्वत कृपाचार्य हस्तिनापुरांत गेले, हार्दिक्य कृतवर्म्यांनै आपल्या राज्याची वाट धरली, आणि द्रोणपुत्र व्यासांच्या आश्रमाम निघून गेला. महात्म्या पांडवांचा अपराध केल्यामुळें त्यांच्या भयानें व्याकूल झालेले ते

वीर याप्रमाणें एकमेकांकडे पहात दर नियून मेहुणा जयद्रथ यांना मारून तुझे मन शानत
गेले. त्यांनी धृतराष्ट्र राजाचीही गांठ मुर्या- झाले ना? अरे. आपले वडील व भाऊ. कोठे
दय होण्यापूर्वीच घेतली; आणि मग त्या दिमत नमतांना आणि त्याचप्रमाणें अभिमन्यु
महात्म्यांनी इच्छेस येईल तिकडे गमन केलें. हे व सर्व द्रौपदीपुत्र अस्तंगत झाले अमतांना
राजा, पुढें महापराक्रमी पांडवांनी अश्व- तुला राज्य घेउन काय करावयाचें आहे
त्याम्यास गांठलें आणि मोठ्या पराक्रमांनं हे भारता. तुला कमा रे एवढा राज्य
त्यास जिंकलें, हें वृत्त तुला विदित आहेच ! लोभ मुटला !

अध्याय वारावा.

—:—

लोहभीमसंग !

वेशपायन सांगतात:—जनमेजया. सर्व आपापली नांवें मांगितली. युधिष्ठिरामुळे
सैन्यांचा नाश झाल्यानंतर आपला वृद्ध जुलता धृतराष्ट्राच्या सर्व पुत्रांचा अंत झाला अमल्या
हस्तिनापुरांतून बाहेर पडल्याची खबर धर्म- मुळें युधिष्ठिराम भेटण्याने त्याच्या मनांत
राजास कळली. तेव्हां पुत्रशोकानें आत माठमं प्रेम उत्पन्न होण्याचा मुळाच संभव
झालेला तो युधिष्ठिर पुत्रशोकानें दुःख करीत नव्हता. तथापि त्या शोकविकल राजानें
असलेल्या धृतराष्ट्राकडे आपल्या भावांसहवर्त- मोठ्या नास्तुर्याने परंतु शिष्टाचाराम अनुसरून
मान गेला. धर्मराज निवाल्याबरोबर दाशाह धर्मस आलिंगन दिलें. त्याने धर्मस आलि
श्रीकृष्ण, युयुधान आणि युयुत्सु हेही गन देउन त्याचें समाधान केलें. परंतु
त्याच्या मागून निघाले. त्यांच्या मागून. पुत्र- जनमेजया. त्याच्या अंतःकरणानें एकदम पेट
शोकानें अत्यंत दुःखित व आत झालेली घेतला आणि भीमाम टांग मागण्याची दृष्ट
द्रौपदी तेथें जमलेल्या पांचालांच्या स्त्रियांमह वामना त्यास उत्पन्न झाली. हे भारता. शोक
शोक करीत चालली. हे भरतमत्तमा. या- रूप वायूने प्रज्वलित झालेला त्याचा तो कोप
प्रमाणें जातां जातां, गंगेच्या तीरी, अत्यंत आत रूप अग्नि भीममेनरूप वनाची रक्षा करूं पहात
झालेल्या कुररींप्रमाणें आक्रोश करणाऱ्या भरत- आहे असें भासले ! पण याप्रमाणें भीमाचा
स्त्रियांचे समुदायचे समुदाय त्यांच्या दृष्टीम घात करण्याविषयी त्याचा संकल्प झाला आहे
गसडा पडला होता. त्या हजारों प्रकारें हें त्याच्या चेहऱ्यावरून तन्काळ ताडून. भीम
विलाप करीत होत्या आणि वर हात करून त्याला भेटावयास जात अमतां श्रीकृष्णानें
वेडेंवांकडें बोलत रुदन करीत होत्या. “हाय हातांनीं भीमाम मागें टकलून भीमाचा
हाय ! धर्मराजाची धर्मनीति कोठें गेली ? आहे असें समजून बलाढ्य धृतराष्ट्रानें त्याचा
ती त्याची दयाशीलता आज कोणाकडे आहे ? चुराडा केला ! धृतराष्ट्राम दहा हजार हत्तींनीं
अहो, आपले वडील, भाऊ, गुरुपुत्र व बळ होतें, क्षणानुच त्यास लोखंडी भीमाचा
मित्र यांचा घात त्यानें कसा हो केला ? हे चूर करतां आला ! तथापि या कृत्यानें त्याची
धर्मराजा, द्रोणाचार्य, पितामह भीष्म आणि छाती फाटून मुखांतून रक्त वाहूं लागलें; आणि



श्रीकृष्णानि हातानि भीमाम मां दकल्युन भीमाचा योगंधी पुतळा पुढें केला ! (स्त्रीपर्व पृष्ठ १८.)

तो रक्तानें न्हाऊन भूमीवर पडला व फुललेल्या पारिजातकासारखा शोभू लागला. मग विद्वान् संजय त्याच्याजवळ जाऊन ' राजा, हें काय ? ' वगैरे बोलून त्याचें ममाधान व मांत्वन करूं लागला, तेव्हां त्याचा क्रोध शमला; आणि मग त्या थोर मनाच्या राजास फार पश्चात्ताप होऊन तो ' हायरे भीमा ' असें ह्मणून आक्रोश करूं लागला ! याप्रमाणें त्याचा क्रोध नाहीसा झाला आहे, आणि भीमसेनाचा वध झाला असें वाटून त्यास शोक झाला आहे, असें पाहून नरश्रेष्ठ वामुदेव त्यास म्हणाला, " धृतराष्ट्रा, शोक करूं नको. तूं कांहीं हा भीम मारला नाहीस ! राजा, ही भीमाची लोखंडी प्रतिमा तूं भंग केलीस ! हे भरतर्षभा. तूं क्रोधवश झाला आहेस. असें जाणून मी काळाच्या दांडेंत गेलेला भीम मागे ओढला आणि ही लोहप्रतिमा पुढें केली. हे राजशार्दूल्य, तुझ्या बगवतीचा बलादच दुमरा कोणाच नाही. हे महाबाहो. तुझ्या हातांची मगरमिठी कोणाम बरे महन होईल ! यमाच्या हातून कोणीही जिवंत मुटून नाही. तद्गत तुझ्या मगरमिठींत मापडून कोणीही जिवंत रहावयाचा नाही ! याम्मव, हे राजा, तुझ्या मुलांनं भीमाची जी लोहमूर्ति केली होती तीच मी तुझ्या पुढें केली. पुत्रशोकानें तुझें अंतःकरण संतप्त होऊन त्यांत धर्माधर्मविचार येईनासा झाला; आणि त्यामुळेच, हे राजेंद्रा, भीमाम ठार मारवें अशी इच्छा तुला झाली. परंतु, राजा, वृकोदराला ठार मारणें तुला योग्य नाही. कारण, तुझ्या मुलांची आयुर्मर्यादाच संपली असल्यामुळे ते आतां जिवंत रहाणें शक्य नव्हतें. त्यांस मारण्यास भीमसेन हा निमित्त-मात्र होय. तेव्हां आर्षी जें केलें त्या सर्वांस तुम्ही संमति द्या आणि शोक आवरून घरा ! "

अध्याय तेरावा.

—:—

धृतराष्ट्रकोपविमोचन.

वैशंपायन सांगतात:—इतक्यांत परिचारिका हस्तपादप्रक्षालनाची तयारी करून धृतराष्ट्राजवळ उभ्या राहिल्या. मग मुखमार्जन वगैरे झाल्यावर पुनः कृष्ण त्यास म्हणाला, " राजा, तूं वेद व विविध शास्त्रें यांचें अध्ययन केलें आहेस, पुराणें श्रवण केलीं आहेस, आणि संपूर्ण राजधर्मही ऐकिले आहेस. असा तूं विद्वान्, महाबुद्धिमान् व स्वपरबलाबल जाणण्यास समर्थ असून आपल्या अपराधाचा असा दुसऱ्यावर राग कां करतोस बरें ? त्याच-वेळीं मी, भीष्मद्रोणांनीं, विदुरानें व संजयानें तुला परोपरीनें सांगितलें; पण, राजा, तूं आमच्या भाषणाचा अनादर केलास. आर्षी नको नको ह्मणत असतां आणि पांडव बलांनं व शौर्यानें आपल्या पुत्रांहून अधिक आहेत हें जाणत असतां-ही तूं आमच्या सांगण्याप्रमाणें तेव्हां वागला नाहीस. राजा, जो स्थिरप्रज्ञ स्वतः दोष जाणतो, व देशकालवर्तमान जाणून वागतो. त्यास उत्तम श्रेय प्राप्त होतें. श्रेय कशांत आहे, आणि हित कोणतें व अहित कोणतें, हें दुसरे सांगत असतांही जो ऐकत नाही, व अन्याया-नें वागतो. तो विपत्तींत पडून शोकच करितो. तेव्हां, हे भारता, या दोहोपैकीं तूं दुसऱ्याच प्रकारानें वागलास, हें विचारांतीं तुझें तुलाच समजेल. राजा, तुझ्या अंगी स्वतःचें कर्तृत्व कमें तें मुळीच नाही. दुर्योधन नाचवील तसा तूं नाचलास; आणि आपल्याच अपराधामुळे खाड्यांत पडलास. मग भीमास मारण्याची व्यर्थ कां बरें इच्छा करतोस ? बाबारे, आपला कोप आवरून घर आणि आपलेच पूर्वींचें दुष्कृत आठव. अरे, ज्या नीचानें स्पर्धेनें पांचाली-स सभेंत आणविलें, त्यालाच वैरास प्रतिवैर

करणाच्या भीमानें ठार मारलें ! या कामांत आपल्या दुष्ट पुत्रानेंच मूळ किती अमर्यादा केलेली आहे याचा तूं विचार कर; आणि त्याचप्रमाणें निरपराध पांडवांचा त्याग करण्यांत तुझी किती चूक झाली याचाही विचार कर. "

वैशंपायन सांगतात:—जनमेजया. या प्रमाणें कृष्णानें खरें खरें सांगितलें, तेव्हां धृतराष्ट्र राजा त्या देवकीपुत्रास ह्मणाला, "हे महाबाहो माधवा, तूं ह्मणतोस तें अक्षरशः खरें आहे. बलवान् पुत्रब्रह्महानें मला नीतिधैर्यापासून भ्रष्ट केलें. परंतु, कृष्णा. खरा पराक्रमी. मोठा बलवान् व केवळ तुझ्या योग्यतेचा असा तो पुरुषश्रेष्ठ भीमसेन माझ्या बाहुपाशांतून सुटला ही मोठ्या सुदैवाची गोष्ट झाली, नाहीपेक्षां मोठा घात झाला अमता ! हल्लीं माझे चित्त स्थिर झालें आहे. माझा राग आणि दुःखही शांत झालें आहे. माधवा, आतां मध्यम पांडव जो वीर अर्जुन त्यास पहारें अशी माझी इच्छा आहे. सर्व राजे व महाराजे नष्ट झाले आणि माझे पुत्रही नाश पावले; आतां पांडुपुत्रांचें कल्याण व्हावें, अशी माझी इच्छा असून त्यांविषयी प्रेमही माझ्या अंतःकरणांत वसत आहे ! "

राजा, मग धृतराष्ट्रानें भीम, अर्जुन व माद्रीपुत्र नकुलसहदेव यांस रडत रडत दृढालिंगन देऊन आश्वासन दिलें; आणि त्यांस कल्याणकारक आशीर्वादही दिले !

अध्याय चौदावा.

—:—

व्यासकृत गांधारीसांत्वन.

वैशंपायन सांगतात:—धृतराष्ट्राची आज्ञा घेऊन कृष्णासहवर्तमान सर्व पांडव गांधारीकडे गेले. तेव्हां ज्यानें आपल्या सर्व शत्रूंस

ठार मारिलें आहे असा तो युधिष्ठिर राजा येत आहे असें समजतांच पुत्रशोकानें विह्वल झालेल्या पतिव्रता गांधारीनें त्यास शाप देण्याचा विचार केला. परंतु पांडवांस शापण्याचा तिचा इरादा सत्यवतीपुत्र व्यास मुनीनीं आधींच जाणला; आणि लगेच गंगेच्या पुण्यगंधी पवित्र उदकाम स्पर्श करून ते मनोवेगानें गांधारीमगीप प्राप्त झाले. सर्व प्राण्यांच्या अंतःकरणांनीच अभिप्राय दिव्यदृष्टीनें जाणणाऱ्या त्या मुनीनीं गांधारीचा भाव जाणला; आणि त्या हितवादी महातापसानें " ही शाप देण्याची वेळ नव्हे, शांत होण्याची वेळ आहे. " असें म्हणून आपल्या मुनेम योग्य वेळीं उपदेश केला. व्यास म्हणाले, " गांधारि. शांत हो. शांत हो. पांडवांवर कोप करूं नको. तूं बोल्यवयाचें योजलें आहेम तें आवरून धर आणि माझे भाषण ऐक. अगे. आपणाम जय मिळावा म्हणून तुझ्या पुत्रानें मते, मी शत्रूंशी लढत अमतां मला जयसूचक आशीर्वाद दे ' म्हणून तुला अठराही दिवस मांगून ठेविलें होतें; आणि त्याप्रमाणें तूंही त्याचा जय व्हावा ह्या इच्छेनें वारंवार ' निकडे धर्म अमेल निकडे जय असो ! ' ' धर्म अमेल निकडे जय असो ! ' असें ह्मणत असम. गांधारि. तुझ्या तोंडून स्वमतोषानें निघालेली वाक्ये कधीही अन्यथा झालेलीं मला स्मरत नाहीत; मग या वेळींच तीं अन्यथा कशीं होतील ? आतां ज्यापेक्षां मोठमोठ्या राजांशी तुमुळ रणकंदन झालें अमतां पांडव त्यांतून पृणपणें पार पडून विजयी झाले, त्यापेक्षां त्यांचीं बाजू अधिक न्यायाची आहे हें निर्विवाद होय. गांधारि, आजवर तूं क्षमारूप व्रत पाळलेस, मग आतांच कशी क्षमा करित नाहीस ? तूं मोठी धर्मज्ञ आहेस, यास्तव तुझ्या अंतःकरणांत आलेला अधर्मयुक्त विचार दाबून टाक; आणि ' निकडे धर्म तिकडे जय '

ही खूणगांठ घाल. हे मनास्विनि, तूं स्वतःचें कर्तव्य आणि पूर्वीचें भाषण स्मरून आपला कोप आवरून धर; आणि, हे सत्यवादिनि, अशी शापाम प्रवृत्त होऊं नको ! ”

गांधारीनें उत्तर केलें:—भगवान्. मी पांडवांचा मत्सर करीत नाही, किंवा त्यांचा नाश व्हावा अशीही माझी इच्छा नाही. तथापि पुत्रशोकानें माझे मन फारच विह्वल झालें होतें ! कुंतीप्रमाणेंच मीही पांडवांचें रक्षण करावें; आणि त्यांचें रक्षण करणें धृतराष्ट्राचें कर्तव्य आहे नितकेंच तें माझेही कर्तव्य आहे. दुर्योधन. सौवल शकुनि, कर्ण व दुःशामन यांच्याच अपराधामुळे हा कुलकुलाचा संहार झाला ! यांत अर्जुनाचा अपराध नाही. भीमसेनाचा नाही. नकुलमह-देवांचा कांहीं दोष नाही. किंवा राजा युधिष्ठिराचीही कांहींएक चूक नाही. शिवाय. कारव-माझे पुत्र-माठ्या आंभेमानानें लटन अमतां सर्व इष्टमित्रांमह पतन पावले. यावद्दल ही मला कांहीं वाईट वाटत नाही. परंतु. महाराज. कृष्णासमक्ष भीमानें जें निघ कृत्य केले, त्यानें माझ्या अंतःकरणाम कसे घेरे पडत आहेत ! त्या महाथोर क्षणविणारानें दुर्योधनाला गदायुद्धास बोलाविलें; आणि तो रणांत नानाप्रकारें संचार करीत आहे व विद्येनें आपणाहून अधिक आहे असें पाहून वेंवीच्या ग्वाली प्रहार केला. या कृत्यानें मला अति-शय संताप आला ! अहो. हे शूरक्षत्रिय क्षण-वितात; आणि यांनीं रणांत यःकश्चित् प्राण वांचविण्यासाठी. धर्मज्ञ महात्म्यांनीं घालून दिलेल्या धर्माची अशी पायमल्ली करावी काय ?

अध्याय पंधरावा.

—०:—

गांधारीकोपशमन.

वैशंपायन सांगतात:—गांधारीचें तें भाषण

ऐकून भीमसेनानें निर्भयपणें परंतु नम्रतेनें तिला असें प्रत्युत्तर दिलें, “ माते, त्याठिकाणीं भीती-मुळे आपलें संरक्षण करण्यासाठीं मीं धर्म किंवा अधर्म जो काय केला असेल, त्याची तूं मला क्षमा कर. तुझ्या पुत्राचें बल अपार त्याला धर्मयुद्धानें निकण्यास कोणीच समर्थ नव्हता; यास्तव मी विपमाचरण केलें. शिवाय पूर्वीं दृतांत त्यानें धर्मराजास अधर्मानेंच जिंकिलें व आम्हांम सदैव झळिलें; यास्तव मीही अध-र्माचा अवलंब केला. सर्व मैत्र्यापैकीं एकटाच उरलेला जो हा प्रतापी वीर, त्यानें गदायुद्धांत मला मारून राज्य हरण करूं नये यास्तव मीं तसें केलें. माते. राजपुत्री पांचाली रजस्वला व एकवस्त्रा अमतांना तिला तो तुझा मुलगा काय काय दुरुस्तरें बोलला, तीं सर्व तुला विदितच आहेत. मुर्योधनास जिंकिल्यावांचून ही समुद्रबलयाकित पृथ्वी आह्वांस निष्कंटक भोगावयास सांपडणें शक्य नव्हतें. यास्तव मी तमा वागलों. माते गांधारी, तुझ्या पुत्रानें आमच्या काळजाला झोबणारी थोडीथोडकी कृत्ये केलीं आहेत काय ? त्यानें भरसभेंत द्रोपदीला आपली डावी मांडी दाखविली, त्याच वेळीं त्या दुराचान्यास ठार करावयाचें; परंतु धर्मराजाच्या आज्ञेमुळे आम्हीं तेव्हां गय केली आणि स्वस्थ बसलों. हे राज्ञि. तुझ्या मुलानें असें हें हाडवैर पेटविलें. आणि वनांतही आह्वांस नित्य क्लेश दिले. यास्तव मीं असें केलें ! दुर्योधनास ठार मारून आम्ही एकदांचे ह्या भांडणतेंट्यांतून सुटलों; युधिष्ठिरास राज्य प्राप्त झालें, आणि आमच्या अंतःकरणांतील जळजळही शांत झाली ! ”

गांधारी क्षणाली:—तूं माझ्या मुलाची सामर्थ्याबद्दल प्रशंसा करीत आहेस, त्यापेक्षां त्याचा वध झालाच नाहीं असें मी समजतें ! शिवाय तूं मला सांगितलीं इतकीं सर्व कृत्ये

त्याने केली खरी. तेव्हां तुझे हे कृत्य एकवेळ बरोबर मानले, तरी रणांत वृषसेनाने नकुलाचे घोडे मारून त्यास पेंचांत आणले अमतांही त्याच्या साह्यास जावयाचें सोडून तूं भररणांगणांत दुःशासनाचें रक्त प्यालास ! अरेरे. भीमा. सज्जनांनीं निंद्य मानलेले, अत्यंत घोर व अनार्यासच शोभणारें अमें हें क्रूर कर्म तूं केलेंस, तें तर अगदींच अयोग्य होय !

भीमसेन म्हणालाः—छी छी ! माते, दुमऱ्याचेंही रक्त पिऊं नये. मग आपले आपण कसें प्यावें ? जसा हा माझा देह तमाच माझा भाऊ दुःशासन ! ह्यांत दुजाभाव कांहींएक नाही. मग मी त्याचें रक्त कसें बरें पिईन ! माते, शोक करूं नको. रक्त ओठाच्या वर बिलकूल गेलें नाही, हें एक त्या यमधर्माला ठाऊक आहे. माझे हात मात्र रक्ताने भरले होते. ते तरी काय ? वृषसेनाने नकुलाचे घोडे मारिल्यामुळे कौरवांना अनिश्चय ह्मण झालेला पाहून माझ्या अंगाची आग आग झाली होती. आणि द्यूताच्या वेळीं द्रौपदीच्या केंमांना त्यानें हिंसेडे दिले, त्या वेळीं संतापांनें माझ्या तोंडून जें निघालें होतें, तें माझ्या अंतःकरणांत एकसारखें घोळत होतें. तेव्हां ती प्रतिज्ञा जर पूर्ण केली नसती, तर माझ्या क्षात्रधर्मास जो कायमचा बट्टा लागला असता, तो लागूं नये एवढ्याच कारितांच मी तमें केलें ! गांधारि, मी अगदींच कांहीं गैर वागलों असेन, अशी शंकाही तूं मनांत आणूं नये. पूर्वीं तुझे पुत्र आह्वांस छळीत असतां त्यांस न आवरूनमवरून आतां आम्हांला कां बरें दोष लावूं पाहातेस ?

गांधारी ह्मणालीः—तें अमो. पण, बाबा, या म्हाताऱ्याचे शंभरचे शंभर पुत्र मारून तूं जो विजयी झालास, तो, ज्यांने कमी अपराध केला असेल, असा एखादा तरी कां नाही वगळलास ? आह्वां राज्यभ्रष्ट झालेल्या वृद्धांचा

एक तरी तंतु—उभयतां आंध्रज्यांची एक तरी काठी—तूं कशी रे नाहीं शिल्पक ठेविलींम ! अरे, एखादा मुलगा तरी जिवंत असता, आणि तूं धर्माला जागला अमतास, तर मला अमें दुःख झालें नसतें !

वैशंपायन मांगतातः—अमें क्षण. पुत्र-पौत्रांच्या वधानें पीडित झालेली गांधारी रागारागानें 'तो धर्म कोठें आहे !' अशी युधिष्ठिराची चौकशी करूं लागली. तेव्हां मार्तण्डाम युधिष्ठिर राजा हात जोडून कांपत कांपत तिच्या जवळ गेला; आणि अमें मधुग भाषण करता झाला. "हे देवि, मी युधिष्ठिर तुझ्या मुलांना मारणारा नीच राक्षस आहे. मी शापाम पात्र आहे. पृथ्वीच्या नाशाला मी कारण झालों; मला शापून टाक ! इष्टमित्रांचा असा भयंकर मंहाग करून मी मृदांतें मित्र-द्रोहाचें पातक पदरी बांधलें. आतां मला राज्य नको. धन नको व जीवितही नकोमें झालें आहे ! " जनमेजया. युधिष्ठिर राजा भिऊन गेला होता. परंतु तो जवळ जाऊन अमें बोलूं लागला तेव्हां गांधारी कांहींच बोलली नाही. ती एकमाग्यवा मोठमोठे मुमकांग टाकीत होती. युधिष्ठिरानें म्वालीं बांकून तिच्या पायांवर हात ठेविले. तेव्हां डोळ्यांम बांधलेल्या पट्ट्याच्या फटीतून त्याच्या हातांचीं बोटें गांधाराच्या दृष्टीम पडलीं. त्यावेगेवर ती तेजस्वी व मुदेंर नखें निस्तेज व हीन होऊन गेली ! तिच्या दृष्टीचा तो प्रभाव पाहातांच अर्जुन कृष्णाच्या आड लपला; न जाणों कदाचित् आपणावर दृष्टि पडून अमाच प्रकार व्हावयाचा अमें त्याला वाटलें ! नंतर, हे भारता. ह्याप्रमाणें पांडव इकडून तिकडे जात व लपत अमतां कांहीं वेळांनें गांधारीचा राग शांत होऊन मग तिनें त्यांचे मानेप्रमाणें समाधान केलें.

पृथापुत्रदर्शन.

नंतर तिची आज्ञा घेऊन ते विशालवक्ष पांडव वीरमाता कुंतीकडे गेले. राजा. फार दिवसांनी ही मातापुत्रांची गांठ पडली ! त्या वेळी मुलांम आलेल्या पीडेमुळे तिचे हृदय भरून आले आणि तोंडाम पदर लावून ती अश्रु टाळू लागली. मग डोळे पुमून तिने मुलांकडे न्याहाळून पाहिले. तीं शम्भान्नांनी त्यांच्या अंगांची अगदी चालण होऊन गेलेली पाहून त्या माउलीचे अंतःकरण काळवून गेले ! व तिने एककाम जवळ घेऊन पुनःपुनः कु- वाळले. द्रौपदीचे मुलगे मेल्यामुळे निजविपर्या कुंतीला फारच वाडट वाटून तिच्या डोळ्यांना खळकन पाणी आले आणि पलीकडे जमी- नीवर पडून आक्रोश करणाऱ्या द्रौपदीकडे तिची दृष्टि गेली. न्यावगेवर द्रौपदी बोलू लागली. " अहो माम्बाई ! अभिमन्यु व माझे मगले बाल कोठे हो गेले ! तुम्हांला सोडून गेल्याला पुष्कळ वेळ झाला तरी ते आज अजून तुम्हांजवळ कसे येत नाहीत ! माझ्या नान्हल्या- वांचून मला हे राज्य काय करावयाचे आहे ! " मग कुंतीने आपले डोळे पुमले आणि द्रौपदीचे मान्वन केले. द्रौपदीला पुत्रशोकांनं रड्याचे हृदक्यांवर हृदके येतच होते. तरी तमेंच तिला उठविले. आणि तिला व आपल्या मुलांना

घेऊन ती गांधारीकडे गेली. गांधारीला शोक झालाच होता; पण कुंती निजपेक्षांही अधिक शोकाकुल झाली होती !

वेशपायन मांगतानः—राजा, त्या वेळी आनंदांत अमें कोणीच नव्हते. सर्वास बहुतेक मारस्वाच शोक झाला होता; आणि अशा शोकाकुल माणसांनीच आपले दुःख क्षणभंग वाजूला ठेवून दुमन्यांचे मान्वन करण्याचा प्रसंग आला होता. कुंती व द्रौपदी फारच शोक करीत आहेत, अमें पाहून गांधारी त्यांम म्हणाली, " मुली, उगी; अमें काय बरे करतेम ? माझ्या- कडे पहा. मला वाईट नाही का वाटत ? पण करायचे काय ! काळाचा फेरा आला आणि अमा हा अंगावर कांटा उठविणाग मंहार उडाला ! न्हायचेच ते कोटून चुकणार ! कृष्णाची शिष्टाई व्यर्थ झाली, तेव्हां महाज्ञानी विदुगने मांगितले ते कमें अक्षरन् अक्षर दत्त म्हणून पुढे उमें राहिले. काय करायचे ? अप- रिहाय गोष्ट आणि तीही होऊन चुकली ! कुंति, अशी रडू नको. तुझे नातू तरी युद्धांतच मेले. त्यांच्याबद्दल शोक नको करायला ! अग. जशी तू तशीच मी ! आपणच दोघी रडू लागलों तर आपले कोण बरे समाधान करील ? माझ्याच अपराधामुळे आपल्या श्रेष्ठ कुलाचा सर्वस्वी नाश झाला ! "



स्त्रीविलापपर्व.

—*—

अध्याय सोळावा.

—:—

गांधारीस रणभूदर्शन.

वैशंपायन सांगतात:—राजा, इतकें बोलल्यावर गांधारीनें तेथूनच दिव्यदृष्टीनें कौरवांची समरभूमि अवलोकन केली. गांधारी मोठी पतिव्रता, थोर व खरी सहधर्मचारिणी असून नित्य सत्यच भाषण करीत असे; शिवाय तिनें उग्र तपश्चर्या केली होती; आणि पुण्यवान् कृष्णद्वैपायन मुनींच्या वरदानानें तिला जागच्या जागीं विविध गोष्टीं दिमूं लागल्या. अशा प्रकारचें ज्ञान झाल्यामुळे, तें अंगावर रोमांच उठविणारें वीरांचें अद्भुत रणांगण वास्तविक पुष्कळ दूर असतांही अगदीं जवळच असल्याप्रमाणें तिला स्पष्ट दिमूं लागलें. जनमेजया, जें अस्थि, केश व वसा यांनीं व्यापून गेलें आहे; जेथें रक्ताचे पाट चालले आहेत; छिन्नविच्छिन्न झालेलीं शरीरें जिकडे निकडे पसरली आहेत; हत्ती, घोडे व वीर यांचीं रक्तानें भरलेलीं मस्तकहीन कबंधें आणि तुटलेलीं मस्तकें यांचे जागजागीं दोग पडले आहेत; घायाळ झालेले हत्ती, घोडे, योद्धे आणि तेथें जमलेल्या स्त्रिया यांच्या दीन किंकाळ्यांनीं जें दणाणून गेलें आहे; कोल्हे, वगळे, करकोंचे, डोमकावळे व कावळे ह्यांची जेथें गर्दी झाली आहे; मनुष्यभक्षक राक्षसांना मोठा हर्ष झाला आहे; आणि अमंगल कोल्हीं व गिधाडें जेथें चहूंकडे बसली आहेत, अशा प्रकारचें तें भयंकर रणमैदान तिनें अवलोकन केलें. मग ज्यामांच्या आज्ञेनें धर्मप्रभृति पांडवांसहवर्तमान धृतराष्ट्र राजा कृष्णास पुढें करून व कुरुस्त्रियांस वगे-

बर घेऊन रणांगणांत गेला. तेथें जातांच त्या गतभर्तृका स्त्रियांनीं आपले पति, पुत्र, भ्राते व पिते मरून पडलेले पाहिले. त्या ठिकाणीं कोल्हे, वगळे, कावळे हे कित्येकांचे लक्षकें तोडीत होते; आणि भूतें, पिशाच्चें, राक्षम व नानाप्रकारचें निशाचर प्राणी यांनींही तोच सपाटा चालविला होता! याप्रमाणें ती रुद्राच्या क्रांडाम्यानामारखी युद्धभूमि—तो अदृष्टपूर्व देखावा पहातांच त्या भरतस्त्रियांम शोकाचें भरणें आढें; आणि मोठ्यानें हंबरडे फोडीत त्यांनीं रथावाली उच्च्य घेतल्या! त्यांपैकीं कित्येक प्रेतांम अडगळल्या आणि दुमच्या कित्येक तर खालीं पडल्या! राजा, अनाथ झाल्यामुळे आर्षाच त्यांची कंवर खचली होती. आणि त्यांत श्रांत झाल्यामुळे त्यांची चेतनाही नष्टप्राय झाली. विशेषेंकरून पांचाल व कौरव यांच्या स्त्रियांची फारच भयंकर अवस्था झाली. राजा, ज्यांची चित्तें दुःखानें पोळली आहेत. अशा त्या स्त्रियांचे चो- हांकडे आक्रोश चालल्यामुळे अति भीषण झालेले तें आयोधन पाहून धर्मवती गांधारी पुरुषोत्तम श्रीकृष्णाम जवळ बोलावून व कौरवांच्या त्या मंहाराकडे दृष्टि फिरवून असें ह्मणाली. " हे पुंडरीकाक्षा, ह्या माझ्या गतधवा मुनांकडे पहा. माधवा. यांचे कंम अन्ताव्यस्त झाले आहेत आणि कुरुरीप्रमाणें ह्या आक्रोश करीत आहेत. मर्त्यांचीं प्रेतें पाहून यांम त्यांचे गुण व भाषणें आठवत आहेत; आणि पुत्र, भ्राते, पिते व पति ह्यांकडे या कशा पृथक्पृथक् धाव घेत आहेत पहा! कृष्णा, ज्यांचे पुत्र मेले आहेत अशा वीरमातांनीं आणि ज्यांचे वीर पति निधन पावले आहेत अशा वीरपत्नींनीं सांप्रत हें रणांगण कंम फुलून निघालें आहे! कर्मगति कशी विचित्र आहे पहा- कर्ण, भीष्म, द्रोण, अभिमन्यु, द्रुपद, शल्य अशा अशा प्रदीप्त अशीप्रमाणें अलकणाच्या

नरशार्दूलान्चीं प्रेतै येथें इतस्ततः पडलीं आहेत ! त्या महात्म्यांचीं मुवर्णकवचें, निष्क, मणि, अंगदें, केयूर, माळा वगैरे अलंकारांनीं ही रणभूमि अलंकृत झाली आहे ! वीरांच्या हातांतून सुटलेल्या शक्ति, परिघ, नानाप्रकारचे तीक्ष्ण खड्ग व मज्ज धनुष्यबाण चोहोंकडे पसरले आहेत ! हे पहा हिंस्र पशूंचे कळप हर्षानें कसे नाचताहेत, कोठें एकत्र जमून उभे आहेत, व कोठें सुवानें लोळत आहेत ! वीरा कृष्णा, अशा प्रकारच्या या रणांगणाकडे एकदां दृष्टि फेंक. हें पाहून, हे जनार्दना, मी शोकानें कशी जळून जात आहे ! मधु-सूदना, पांचाल व कौरव यांचा निःपात झाला त्यापेक्षां पांचही महाभूतांचा अर्थात् सर्व जगाचाच वध झाला असें मी समजतें ! शिव शिव ! अशा या धनुर्धरांना आज गरुड व गिधाडें फरफरां ओदीत आहेत ! आणि एकेकावर हजारहजारांच्या टोळ्या पडून ते पायांनीं विचकटून मांस भस्मीत आहेत ! हाय हाय ! जयद्रथ, कर्ण, तमेच भीष्म, द्रोण व अभिमन्यु यांचा असा नाश होईल, हें कोणाच्या स्वप्नांत तरी येत होतें काय ? खरोखर जवळ जवळ अवध्यच भासणारे हे वीर आज निधन पावले आहेत आणि गतप्राण होत्साते निपचीत पडले आहेत ! आणि गृध्र, कंक, वट, श्येन, श्वान, शृगाल यांनीं त्यांचे लचके तोडले आहेत ! दुर्योधनाच्या आज्ञेत राहिलेले व क्रोधास पेटलेले हे नरव्याघ्र सांप्रत विझालेल्या अग्नीप्रमाणें कसे शांत झाले आहेत पहा ! अहो, जे सर्व पूर्वीं मऊमऊ, बिन्नान्यांवर निजावयाचे. तेच आज विपन्न होऊन मोकळ्या जमीनींवर कीं हो पडले आहेत ! ज्यांपुढें नित्य वेळो-वेळीं बंदिजन ललकारत असावयाचे, त्यांच्या सभोवतीं आज अमंगल शिवांनीं कोल्हेकुई चालविली आहे ! जे यजस्वी वीर पूर्वीं

मंचकांवर पडत व ज्यांच्या अंगाला कृष्णा-गरूची उठी लागलेली अमे, तेच आज धुळीत लोळत आहेत. त्यांचे अलंकार, हे गृध्र, गोमायु व वायस फोडीत आहेत आणि कोल्हीं त्यांचे सभोवतीं वरचेवर कुई करिताहेत. तीक्ष्ण बाण, पाणी दिलेले निखिशा, आणि लखलखीत गदा या युद्धाभिमानी वीरांच्या हातांत अजून जशाच्या तशाच उगारलेल्या आहेत; यामुळें वाटतें कीं, जणू हे जिवंतच आहेत ! बहुतेकांचे सुंदर देह हिंस्र पशूंनीं विरूप केले आहेत, पाचेच्या माळा घातलेले हे वीर दोंरासारखे पडले आहेत; आणि दुसरे कित्येक महाबाहु प्रिय कांतांप्रमाणें गदांस आलिंगन देऊन त्यांकडे तोंडें करून आडवे पडले आहेत ! हे जनार्दना, कित्येकांच्या अंगांत कवचें व हातांत लखल-खीत शस्त्रें तशींच आहेत, यामुळें ते जिवंतच आहेत असें समजून श्रापदें त्यांच्या वाटेस जाण्याम धजत नाहीत ! कित्येक महात्म्यांना श्रापदें फरफरां ओदीत आहेत. त्यांच्या कंठचा तुटून त्यांतील मणि चोहोंकडे पडले आहेत ! हे भयंकर गोमायु मेलेल्या यशस्वी वीरांच्या गळ्यांतील हारांचे चावून चावून तुकडे करीत आहेत पहा ! केशवा, परवां रात्रीं शिक्षित बंदी ज्यांची स्तुति गात होते, आणि ज्यांस उत्तम उपचार करीत होते, त्यांच्याचजवळ सांप्रत दुःखार्ता झालेल्या त्यांच्या पट्टारण्या शोकविह्वल होऊन दीन हंबरडा फोडीत आहेत ! केशवा, या श्रेष्ठ स्त्रियांचीं सुंदर मुखें नित्य रक्तकमलांप्रमाणें प्रफुल्ल असात. तींच आज अगदीं मुकलेलीं दिसत आहेत. ह्या पहा कित्येक स्त्रिया रडावयाच्या थांबल्या आणि डोळ्यांस पदर लावून ध्यान करीत बसल्या ! त्या पहा कौरवांच्या स्त्रिया दुःख करीत आपआपल्या पतींजवळ जात आहेत ! ह्या कुरुस्त्रियांचीं मुखें अरुणवर्णांचीं, सुवर्णा-

सारस्वी, रागानें लाल आणि रडण्यानें गोरी-
मोरी झाली आहेत ! केशवा, एक वस्त्र परिधान
केलेल्या. व श्याम, गौर वगैरे श्रेष्ठ वर्णाच्या
दुर्योधनाच्या राण्यांचे हे समुदाय व्र ! यांचे
हे तुटक तुटक विलाप कानांवर पडत आहेत.
परंतु इतरांच्या कोलाहलांत यांचे शब्द कोणास
उमजत नाहीत ! ह्यांच्याकडे पाहून कित्येक
धुगधुगी असलेले वीर दीर्घ जांभई देऊन.
डोळ्यांत पाणी आणून व विलाप करून दुःखा-
तेनें प्राण सोडीत आहेत ! पतीच्या कले-
वरांकडे पाहून पुष्कळजणी आक्रोश व
विलाप करीत आहेत ! दुमन्या मृदु हस्ताच्या
स्त्रिया हातांनी मस्तक पिटीत आहेत ! तुटून
पडलेलीं मस्तकें, हात, पाय व शरीरें एक-
मेकांवर पडून त्यांचे डिंगांनी पृथ्वी व्याप्त झाली
आहे ! कीर्तिमान् वीरांचीं नुमतीं शिरग्रहित
धडे व दूर पडलेलीं नुमतीं मस्तकें पाहून.
ह्यांतील आपल्या पतीचें कोणतें. ह्याविपर्यी
स्त्रियांना मंशय पडत आहे. शिर एका धडाला
जोडावें आणि कांहीं वेळ शून्य अंतःकरणानें
त्याकडे टक लावावी, पण लोच हें आपल्या
पतीचें नव्हे असें दिसतांच, दुःखित होऊन
दुसरें धड धुंडाळावें असें चाल्ले आहे ! कित्येक
दुःखावहल स्त्रिया शरांनीं छिन्नभिन्न झालेले
हात व पाय धडाम जोडून पहात आहेत व
वरचेवर मूर्च्छित होताहेत ! पशुपत्यांनीं कित्येक
मस्तकांचे लचके तोडून खाळे असल्यामुळे
कित्येक भरतस्त्रियांस पती समोर दिसत अम-
तांही ओळखूं येत नाहीत ! हे मधुसूदना,
भ्राते, पुत्र, पिते व पति शत्रूंनीं मारलेले पाहून
कित्येक कपाळावर हात मारून घेत आहेत !
सखड्ग बाहु, सकुंडल शिरकमलें आणि गतप्राण
झालेले प्राणी चाहोकेडे विस्वरले आहेत ! आणि
रक्तमांसांचा सडा झाला आहे. यामुळे या
रणभूमीवरून फिरणेंही जवळ जवळ अशक्य

झालें आहे ! कृष्णा. या स्त्रियांना आजवर
दुःखाचा जरा देखील अनुभव नाही. आणि
आज त्याच पतिव्रता दुःखसागरांत गतंगळ्या
कीं रे स्वात आहेत ! कारण, ह्यांचे भाऊ, पति
व पुत्र यांच्या प्रेतांनीं भूमि कशी व्याप्त होऊन
गेली आहे ! जनार्दना. किशोरीच्या गृथां-
प्रमाणें धृतराष्ट्राच्या मुकेशी मुनांचे हे अनेक
समुदाय कसे दुःखित झाले आहेत पहा !
केशवा, या अशी वेडीवाकडीं तांडं करीत
आहेत, हें पाहाण्यापेक्षां मला अधिक दुःख-
दायक असें काय आहे ! स्वोत्तर. माधवा.
पूर्वजन्मी मी वोर पातक केले ह्मणूनच पुत्रपौत्र
व भ्राते मरून पडलेले आज पहात आहे !"
जनमेजया. आत झालेल्या गांधारीनें असें
विलाप करीत कृष्णाशीं पुष्कळ भाषण केले. तीं
त्या पुत्रशोकांत झालेल्या मातेनें आपल्या मृत
पुत्राम पाहिले !

अध्याय सतरावा.

—:—

गांधारीचा दुर्योधनाविपर्यी विलाप !

वेशपायन मांगनातः—नी शोकाकृष्ट गांधारी
दुर्योधनाचें प्रेत पाहातांच वनांत मोडलेल्या
केळीप्रमाणें धाडकन जमीनीवर पडली. मग
थोड्या वेळानें ती शुद्धीवर आली; व रक्त-
बंबाळ होऊन पडलेल्या दुर्योधनाकडे पहात
निनें मोठ्यानें आक्रोश व विलाप केला; आणि
मग त्याला पोटाशीं कवटाळून त्या विकलेंद्रिय
व शोकांत गांधारीनें ' हा पुत्रा ! ' वगैरे विलाप
करीत फारच आकांत केला. मग. हारांनीं व
निष्कमालांनीं मुशोभित असलेले त्याचें पुष्ट व
विशाल वक्षःस्थल डोळ्यांनींल आमवांनीं भिज-
वीत ती शोकनस गांधारी जवळच असलेल्या
कृष्णाम ह्मणाली. " हे प्रभो वाण्या. हा ज्ञानि-
क्षयकारक मंत्राम उपस्थित झाला नेह्नां दुर्यो-

धन राजा हात जोडून मला म्हणाला, ' माते, या भयंकर संग्रामांत माझा जय असा व्हाणून मला आशीर्वाद दे. ' वा पुरुषव्याघ्रा. असे तो म्हणाला, तेव्हां हे पुढील आमचे दुर्दैव माहीत असल्यामुळे मी त्याला म्हटले— निकडे धर्म निकडे जय होईल. परंतु. पुत्रा, लढत असतां तूं जर मोह पावला नाहीस, तर, हे राजा, स्वशस्त्रप्रभावाने देवांच्यासारखे श्रेष्ठ लोक तुला मिळतील, यांत संशय नाही.

“ कृष्णा. पूर्वी मी असे म्हटले होते. अर्थात्च दुर्योधन मला याबद्दल मी शोक करीत नाही. परंतु ह्या हतवांधव व दून धृतराष्ट्राबद्दल मला फार वाईट वाटते. माधवा. अमर्षण. वीरश्रेष्ठ. अस्त्रमंपन्न व युद्धांत प्रसक्त होणारा असा माझा हा पुत्र वीरशयनावर पडला आहे वय. अरे. जो हा परंतप पूर्वी मूर्धाभिपिक्त राजांच्या अग्रभागी चालत असे. तोच आज धुळीत कां रे लोळत आहे ! कालाचा फेरा कसा आहे पहा ! हा वीरोचित शय्येवर असा सन्मुख पडला आहे. त्यापेक्षा या वीराला हलकीमलकी गति मिळाली नाही खास ! पूर्वी उत्तम उत्तम स्त्रिया मभोवती जमून ज्याला रिझवीत, त्या ह्या वीरशय्येवर निजलेल्या वीरस आज अमंगळ कोल्हा रिझवीत आहेत ! मोठमोठे राजे मभोवती वमून ज्यांचे मनोरंजन करीत, त्याच ह्या मरून भूतलावर पडलेल्या वीरगची गिधाडे सेवा करीत आहेत ! अहो, ज्याला पूर्वी स्त्रिया मुंदर पंख्यांनी वारा घालीत, त्यालाच आज पक्षी आपल्या पंखांचा वारा घालताहेत ! जसा मिहाने हत्ती तसा भीमाने रणांत पाडिलेला हा महाबाहु. महाबली व मत्स्यपराक्रमी वीर असा पडला आहे ! कृष्णा, भीमभेनाने गदेने मारलेला हा दुर्योधन कसा रक्तबंबाळ होऊन पडला आहे बघ ! केशवा, ज्याने पूर्वी अकरा अक्षौहिणी

रणांगणावर उभ्या केल्या, तो शेवटी अन्यायाने मारला गेला रे ! मिहाने मारलेल्या शांभूला प्रमाणे भीमाने पाडलेला हा महाबली व महाधनुष्ये दुर्योधन असा निजला आहे ! शिव शिव ! ह्या मंदभाष्याने विदुराचा व प्रत्यक्ष आपल्या पित्याचाही अवमान केला; आणि शेवटी वृद्धांच्या अपमानामुळे हा मूर्ख पोर मृत्युमुर्खी पडला ! ज्याने त्रयोदश वर्षेपर्यंत ही संपूर्ण पृथ्वी निष्कण्टक उपभोगिली, तोच माझा हा पृथ्वीपति पुत्र भूमीवर मरून पडला ! कृष्णा. ही पृथ्वी थोडे वेळापूर्वी धार्तराष्ट्राची आज्ञांकित व हत्ती, बैल व घोडे यांनी समृद्ध अशी मी पहात होते; परंतु. वाण्यांया, तेचिरकाल कोट्टन टिकणार ? त्याच पृथ्वीवर, हे महाबाहो. आज दुर्मन्याची मत्ता झालेली, आणि हत्ती, बैल व घोडे यांनी ती शून्य झालेली मी पहात आहे ! माधवा, आतां मी कोणत्या आशेवर प्राणधारण करावे ! अरे, ह्या पहा स्त्रिया रणांत मृत भर्त्यांची परिचर्या करीत आहेत. वा कृष्णा, ह्यांना पाहिले म्हणजे मला पुत्रवधापेक्षाही अधिक कष्ट होतात ! कृष्णा, सुवर्णवेदीप्रमाणे जिची कांति. अशी ही लक्ष्मणाची माता सुश्रोणी भानुमती पहा ! दुर्योधनाचे अंकावर वसणाऱ्या ह्या भानुमतीचे केंस वय कसे विंगुरले आहेत ! खरोखर पूर्वी राजा जिवंत असतांना ही मनस्विनी बाला त्या सुभुजाचे बाहुपाशांत शिरून रममाण होत असे; आणि आज—हाय हाय ! काय विपरीत प्रकार मी पहाते आहे ! बाल लक्ष्मणासह पुत्र दुर्योधन रणांत पडलेला पहात असतांही माझे हे हृदय शतधा विदीर्ण कसे होत नाही ! ही वामोरु भानुमती एकीकडे रक्ताने भरलेल्या मुलाचे अवघाण करीत आहे. आणि दुसरीकडे हाताने दुर्योधनाम कुरवाळीत आहे ! शिव शिव ! ही मनस्विनी पतीबद्दल व पुत्राबद्दल मोठमोठ्याने

शोक करीत आहे काय ? छे ! पुत्राकडे टक लावून ती तशी निश्चल बसलेली दिसत आहे. अरे ती पहा, माधवा, दोन्ही हात कपाळावर मारून घेऊन वीर कुरुराजाच्या वक्षःस्थलावर पडली ! पुंडरीकासारखी हिची गौर कांति, परंतु ही त्याहूनही म्हणजे पुंडरीकाच्या आंतील भागाप्रमाणे पांढरी फटफटीत पडली ! व ही तपस्विनी पुत्राच्या व पतीच्या तोंडांवरून हात फिरवून स्तब्ध झाली ! शिव शिव ! जर वेद व श्रुति खऱ्या असतील, तर खचित राजा दुःयोधनाने बाहुबलाजित पुण्यलोक मिळविले आहेत ! "

अध्याय अठरावा.

—:—

गांधारीचा दुःशासनादिकांविषयी विलाप !

गांधारी आणखी म्हणते:—माधवा, ज्यांना थकवा कसा तो माहीत नव्हता, असे हे माझे शंभर पुत्र पहा. ह्यांना भीमानें बहुतकरून गदेनेच रणांत ठार केले आहे. यांचेही मला इतके दुःख होत नाही; पण ज्यांचे मुलगेही मरून गेले आहेत अशा ह्या माझ्या सुना केंस मोकळे सोडून आक्रोश करीत रणांगणांत धावत आहेत ह्यामुळे मला विशेष दुःख होतें ! अरे, पायांत नूपुरादिक भूषणें घालून ज्या राजवाड्यांतील गुळगुळीत जमीनीवरून मंदमंद पावले टाकीत चालावयाच्या, त्याच आज विपत्तावस्थेत पडून ह्या रक्तांने भिजलेल्या जमिनीवरून कीरे चालताहेत, सभोंवार धिरट्या घालणारे गृध्र, गोमायु व वायस मोठ्या कष्टांने हाकलीत आहेत, आणि दुःखात होऊन रुदन करीत वेहोप झाल्याप्रमाणे इकडून तिकडे संचार करीत आहेत ! ही पहा एक कामलांगी—हिची कमर हातभर वारीक आहे, ही घोर रणांगण पाहून दुःखातिशयाने खाली पडली ! हे महाबाही, ह्या लक्ष्मणाच्या मातेकडे पाहिले म्हणजे

माझ्या अंतःकरणांत कशी कालवाकालव होते. अरे, ह्या पहा इकडे कित्येक आपल्या भावांना, पित्यांना व पुत्रांना भूमीवर मृत पडलेले पाहून त्यांचे सडक लांब हात धरून धरणीवर अंग टाकीत आहेत. ना, अपराजिता, ह्या दारुण संहारांत ज्यांचे आप्त-इष्ट ठार झाले. अशा तरुण व वृद्ध स्त्रियांचे सर्वत्र आक्रोश चालले आहेत ऐक ! कित्येक श्रमित व मोहित झालेल्या स्त्रिया रथनीडांच्या किंवा मेलेल्या हत्तीघोड्यांच्या आश्रयानें कशा उभ्या आहेत वध ! कृष्णा, ती पहा पलीकडे एकजण आपल्या बंधूने—देहापासून उडविलेले व ज्यांचे नाक तरतरीत अमून कानांत मनोहर कुंडले लटकत आहेत असे—मस्तक पोटाशी धरून उभी आहे ! हे अनघा केशवा, त्या अभागी स्त्रिया आणि मंदबुद्धि मी यांनी पूर्वजन्मी केलेले पातक कांहीं थोडेथोडेकें नाही. असे मला वाटते; आणि त्याच पातकांचे हे फळ यमधर्म आम्हांकडून भोगवीत आहे ! खरोखर, वाष्ण्या, पापकर्म किंवा पुण्यकर्म—कशाचाच नाश होत नाही; ते भोगिलेच पाहिजे. माधवा, ऐन-तारुण्याचे भरांत आलेल्या लावण्याच्या केवळ खाणी, कुलवती, मर्यादशील, ज्यांचे केश, डोळ्यांच्या पापण्या व चुबुळे काळींभोर आहेत आणि हंमामारवा ज्यांचा शब्द आहे, अशा ह्या स्त्रिया दुःखशोकांने प्रमोहित होऊन हरिणीप्रमाणे पडल्या आहेत पहा ! हे पुंडरीकासा. यांची प्रफुल्ल पद्मांप्रमाणे तेजस्वी व निर्दोष मुग्धकमले हा रश्मिभान सूर्य उन्हांने तप्त करीत आहे. हाय हाय ! वामुदेवा, अरे, मत्तमातंगाप्रमाणे स्वाभिमान व दुर्वा बालगणाच्या माझ्या मुलांच्या जनानग्वान्याकडे आज हलकेसलके लोकही पहात आहेतना ! गोविंदा, ही पहा माझ्या मुलांची सुवर्ण कवचें, शेंकडों टिकल्या लाविलेल्या ह्या दाली, हे सूर्यासारखे तेजस्वी

ध्वज, ते सुवर्णाचे निष्क, आणि तशीच ही शिर-
स्त्राणें सर्व रणांगणभर समिद्ध अग्नीप्रमाणें कशी
प्रदीप्त दिमताहेत ! हा येथें माझा बाळ दुःशा-
सन पडला आहे. शत्रुघानक शूर भीमानें
ह्याला युद्धांत पाडलें आणि ह्याच्या सर्वांगां-
तील रक्त शोषण केलें. हे माधवा, घृतांत
दिलेले क्लेश स्मरून व द्रौपदीच्या प्रोत्साहना-
मुळें भीमानें गर्देनं माझ्या मुलाची कशी वाट
लाविली बघ ! जनार्दना, आपल्या ज्येष्ठ
भ्रात्याचें व कर्णाचें प्रिय करावें ह्मणून हा
नकुल, सहदेव, अर्जुन वगैरेच्या समक्ष समेंत
पांचालीस ह्मणाला, “ तूं घृतांत जिकिली
गेली आहेम. पांचालि, तूं आमची दामी झाली
आहेम. आतां आमच्या घरांत चल ! ”

कृष्णा, त्याच वेळीं मीं दुर्योधन राजाला
सांगितलें, बाळा, ह्या शकुनीच्या गळ्यांत
मृत्यूचा पाश पडला आहे, असें दिमतें.
ह्याच्यापामून तूं दूर रहा. हा तुझा मामा
अत्यंत दुष्टबुद्धीचा व कलहप्रिय आहे. बाळा,
ह्याचें हें स्वरूप ओळखून ह्याला त्वरित दूर
कर आणि पांडवांशीं सख्य कर. अरे, तुला
ही दुर्बुद्धि आठवली आहे आणि हत्तीला अकु-
शांनीं टोंचावें. त्याप्रमाणें तूं वाक्शरांनीं भीमाम
टोंचात आहेम ! परंतु, बाळा, ह्या अमर्षी
वीराला तूं पुरतें ओळखलें नाहीस रे !

माधवा, ह्याप्रमाणें मी त्याला एकीकडे
पुष्कळ बोललें, पण कांहीं उपयोग झाला
नाहीं. सभेंत क्रुद्ध भीमसेनांनें त्या वेळीं तीं
सर्व वाक्शल्यें सहन केलीं; आणि आतां वैज्यांस
सर्प डसावा त्याप्रमाणें त्यांनें माझ्या सर्व मुद्यां-
वर तो राग काढला. सिंहांनें मोठा हत्ती
मारावा त्याप्रमाणें भीमानें पाडलेला हा दुःशा-
सन आपले प्रचंड हात पसरून निजला आहे !
हाय हाय ! कृष्णा, तामसी भीमसेनांनें रागा-

रागांनें रणांत दुःशामनाचें रक्त प्राशन केलें !
अरेरे ! हें त्यांनें अत्यंत अघोर कृत्य केलें !

अध्याय एकोणिसावा.

—:—

गांधारीचा विकर्णादिकांविषयीं विलाप.

गांधारी ह्मणाली:—मधुसूदना, हा माझा
विद्वन्मान्य पुत्र विकर्ण भूमीवर मरून पडला
आहे. अरेरे ! भीमानें ह्याच्या शेंकडों ठिकच्या
उडविल्या आहेत. मधुसूदना, शरदंतून अनेक
नीलमेघांच्या मध्यें सूर्य चमकावा, तसा हा
हत्तीच्या मध्यभागीं पडला आहे ! धनुष्य
धरून धरून षट् झालेला ह्याचा प्रचंड हात हीं
खादाड गिधाडें मोठ्या प्रयामांनें छेदीत आहेत.
माधवा, ती बघ त्याची पतिव्रता स्त्री मांसेच्छु
गिधाडांना व कावळ्यांना एकमारखी हांकीत
आहे, पण तिच्यांनें त्याचें निवारण करवत
नाहीं ! हे पुरुषर्षभा, हा तरुण, सुंदर व
शूर विकर्ण मुखांत वाढला असून मुख भोग-
ण्यामच योग्य आहे. परंतु, माधवा, तो आज
धुळींत कीं रे निजला आहे ! कर्णि, नालीक,
नाराच वगैरे बाणांनीं रणांत ह्याचीं मर्मनूतमर्मे
भेदलीं आहेत, तथापि ह्या भरतसत्तमाचें तेज
अद्याप उतरत नाहीं ! तसाच इकडे हा प्रतिज्ञा
पाळणाऱ्या त्या संग्रामशूरांनें मारलेला शत्रु
गणांतक दुर्मुख सन्मुख पडला आहे ! कृष्णा,
अरे, ह्याचें हें मस्तक तर श्वापदांनीं अर्धें
भक्षण केलें, तरी मप्तमीच्या चंद्राप्रमाणें तें
अधिकच शोभत आहे ! वा कृष्णा, ह्या नर-
वीराचें अशा प्रकारचें हें मुखकमल अवलोकन
कर. याला शत्रूंनीं कसें हो मारलें ? कृष्णा, हा
माझा मुलगा धूळ खात रे कसा पडला ! अरे,
युद्धाच्या आरंभीं आरंभीं ज्याच्या समोर उभा
राहाणारा कोणीच नव्हता. तो माझा देवलोक
जिकणारा दुर्मुख शत्रूच्या हातून कसा रे

मेल ! मधुसूदना, धरणीवर मरून पडलेला हा चित्रसेन पहा ! अरे, हा धृतराष्ट्रपुत्र ह्यणजे धनुर्धरांचा सर्वोत्कृष्ट नमुना होय. याच्या शोककर्षित स्त्रिया श्वापदसंघासह चित्र-विचित्र पुष्पे व अलंकार घातलेल्या या वीरा-सभोवतीं बसून रडत ओरडत आहेत. कृष्णा, स्त्रियांच्या रड्याचा कल्लोळ व श्वापदांच्या गर्जना यांनीं रणांगण दुष्णाणून गेले आहे आणि हे ऐकून मला कसेसेंच होत आहे ! ज्या तरुण मुंदराची नित्य उच्च प्रतीच्या स्त्रिया सेवा करीत, तोच हा विविंशति धुळीत अस्ताव्यस्त पडला आहे. कृष्णा, ज्यांचे कवच बाणांनीं फुटून गेले आहे, अशा या युद्धांत पडलेल्या वीर विविंशतीसभोवतीं गिधाडे कशीं गराडा देऊन बसलीं आहेत बघ ! हा शूर समरांगणांत पांडवांच्या सैन्यांत प्रवेश करून सत्पुरुषोचित वीरशय्येवर शयन केल्या आहे. कृष्णा, विविंशतीच्या मुखाकडे दृष्टि दे. त्यांचे नाक किती तरतरीत, भिवया कशा रेवलेल्या. तारकाधिपति चंद्रासारखा गोल व अतिशय स्वच्छ चेहरा, आणि मुखावर ते बघ कसे स्मित झळकत आहे ! बहुतकरून नेहमीं वरस्त्रिया याच्या सभोवतीं अमावयाच्या, आणि हजारों देवकन्यांसह क्रीडा करणाऱ्या गंधर्वा-सारखा हा शोभावयाचा; पण त्याची आज काय स्थिति झाली आहे ! शत्रूंचीं सैन्ये तुडविणारा, अतिशय शूर, सभेने शोभाणारा आणि शत्रूंचीं पाळेमुळे खणणारा हा माझा दुःसह-याच्या समोर कोण उभा राहू शकेल ? पण हाय हाय ! त्याच बाळ दुःसहाचे शरीर बाणांनीं कसे व्यापून गेले आहे; आणि हा प्रफुल्ल कर्णिकार वृक्षांनीं भरलेल्या पर्वताप्रमाणे दिसत आहे ! हा गतप्राण झाला आहे तथापि सुवर्णाची माळ व चक्रवर्तीत कवच यांमुळे

अग्नीनें देदीप्यमान दिग्गणाऱ्या श्वेतपर्वता-सारखा झळकत आहे !

अध्याय विसावा.

—:०:—

गांधारीचा अभिमन्युविषयी विलाप !

गांधारी ह्यणाली:— केशवा, जे शौर्यांत व बलांत आपल्या बापाच्या व तुझ्याही दीडपट होता ह्यणून ह्यणतात, व ज्यांने एकट्यानें माझ्या पुत्रांची ही दुःभयमेना भेदिली, तो मत्त सिंहाप्रमाणे अभिमानी अभिमन्यु, अनेक शत्रूंचा काळ होऊन शेवटी स्वतःही कालमुग्धी पडला ! कृष्णा, हा अभिमन्यु निधन पावला आहे, तथापि त्या अमिततनूची वीराची कांति लवभरही उतरलेली मला दिमन नाही. ही पहा विराटाची मुलगी व गांडीवधारी अर्जुनाची मून पतिव्रता उत्तम आर्तदृष्टीनें आपल्या अगदीं तरुण परंतु शूर पतीकडे पाहून शोक करीत आहे ! कृष्णा, ती बघ आपल्या भर्त्या-जवळ जाऊन बसली आणि हाताने त्याला कुरवाळें लागली ! अरे, ह्या कमनीय रूपवती भाभिनीनें सौभद्राचे ते प्रफुल्ल कमलाच्या आकाराचे व शंखाच्या पाठीप्रमाणे मुंदर मस्तकांने युक्त असें मुक्कमल उचलून त्याचे चुंबन घेऊन त्याम आलिंगन दिले बघ ! कृष्णा, ही उत्तरा पूर्वी मधुमेवानांने धुंद झाली अमताही अभिमन्यूम लाजत असे, परंतु आज दुःस्वाने कांही बाकी ठेविली आहे काय ? ते पहा, कृष्णा, तिनें त्याचे जखमांतील रक्ताने लडबडलेले सुवर्णविभाषित चिल्लवत मोडले; आणि आतां ती त्याचे शरीर निरखून पहात आहे. कृष्णा, ऐक, आपल्या पतीकडे पहात तुला उद्देशून ती काय ह्यणत आहे तें ! ती ह्यणते ... हे पुंडरी-काक्षा श्रीकृष्णा, तुझ्याचसारखे ज्याचे नेत्र आहेत असा हा अभिमन्यु येथे पडला आहे !

तुमने डोळ्यांचे काय. पण ह्यांचे सर्व रूप अगदी हुबेहुब तुझ्यासारखे आहे. इतकेंच नव्हे, तर बळ, पराक्रम व तेजही अगदी त्वत्तुल्य आहे. केशवा, अमा हा तुझ्या बरोबरीचा तुझा भाचा भूमीवर मरून पडला आहे! प्राणनाथा, आपले शरीर अत्यंत मुकुमार, मऊमऊ गादीही आपल्याला खुपावयाची, म्हणून आपण रंकु नामक हरणांचे अति मऊ अग्नि तीवर धरून मग निजत अमां; आणि आज अमे उग्रड्या जमीनीवर हो कां पडलां? ही जमीन आपल्याला खुपत नाही का हो? महाराज, धनुष्याची दोरी लागून लागून कठीण झालेले व सुवर्णाची अंगठे घातलेले हे आपले हतीच्या मोडेच्या आकाराचे लांब सडक हात खाली मोडून आपण निजलां आहां. खरोखर फार वेळ लढाई खेळल्यामुळे श्रमानेच आपणाला अशी माठ झोप लागली वाटते! पण, नाथा. मी आत्मस्वराने अशी विलाप करित अमतां आपण माझ्याशी मुळीच बोलत नाही. माझ्यावर रागावलां काय? कां हो बोलत नाही? अमा अबोला धरण्याला मी कांही अपला अपराध केल्यांचे तर मला स्मरत नाही. खरोखर पूर्वी मला दुरून पाहातांच आपण माझ्याशी बोलू लागत असा आणि आतांच कां हो एक अक्षर देखील बोलत नाही? प्राणनाथ, माझा एवढा काय अपराध तो मला कांही आठवत नाही! आर्य, देवी मुभद्रेला, देवांसारख्या ह्या आपल्या पित्यांना आणि मज अभागिणीला दुःखसागरांत टकलून आपण कोठें हो चाललां?"

कृष्णा, ती बघ, त्याचे रक्ताने माखलेले केंस हाताने सावरून त्याचे मस्तक मांडीवर घेऊन जणू तो जिवंतच आहे असे समजून त्याम विचारीत आहे—“ महाराज, आपण वामदेवाचे भाचे आणि गांडीवधारी अर्जु-

नाचे पुत्र असून, ह्या महाराथांनी रणाच्या मध्यभागी आपल्याला कसे हो मारले? ज्यांनी मला वैधव्य आणले, त्या कर्णकूप-जयद्रथप्रभृति क्रूरकर्म्यांना आणि द्रोण व अश्वत्थामा या उभयतांमही विःकार असो! अल्पवयस्क अशा तुझाला एकट्याला वेरून मला दुःख देण्यासाठीं ठार करते वेळीं त्या सर्व महाराथांचे अंतःकरण होतें तरी कसे? त्यांच्या पापाणहृदयाला कांहींच दया कशी आली नाही! तसेंच हें अघोर कर्म पाहाणाऱ्या पांडव-पांचालांच्या मनाला कांहींच वाटलें नाही काय? वीरा, तुमचे चुलते, बाप, मामा हे बलाढ्य अमतां व आपण चांगले सनाथ असतां, ज्याला कोणी वाली नाही अशा अनाथा-मारवा आपल्याला मृत्यु यावा ना! हाय हाय! आपला पिता मोठा नरशार्दूल वीर आहे. आपण धुमश्चक्रीत अनेकांच्या हातून मरण पावल्याचें पाहून तो नरश्रेष्ठ प्राण कसे धारण करील हो? हे पुष्करेक्षणा. मोठा राज्यलाभ, किंवा शत्रूंचा पराभव यांच्या योगाने आपणांचाचून पांडवांना मुळीच आनंद होणार नाही. महाराज, आपण आपल्या धर्माचरणाने, आत्मसंयमनाच्या योगाने आणि शस्त्रप्रतापाने जे लोक मिळविले असतील, तेथे मी लवकरच आपल्या मागून येईन. त्या ठिकाणी आपण माझे परिपालन करावे. हाय हाय! नाथा. आपणास रणांत मरून पडलेले प्रत्यक्ष आपल्या डोळ्यांनी पाहून मी दुर्दैवी अजून जिवंत आहेना? वेळ आल्याचाचून कोणी मरत नाही झणताच तेंच खरे! हे नरव्याघ्रा, त्या पितृलोकांत आपण आपल्या सुवीदार व सस्मित वाणीने मजव्यतिरिक्त दुसऱ्या कोणाशी गुजगोष्टी कराल बरे! अथवा आपणाला काय कर्मा आहे! खरोखर आपण आपल्या मदनतुल्य स्वरूपाने आणि स्मित-

पूर्वक भाषणानें स्वर्गांत अप्सरांचीं मनें मोहित कराळ. सौभद्रा, पुण्यवंतांचे लोकीं जाऊन आपण अप्सरांशीं रममाण होऊन विहार करीत असतां, या दीन दासीच्या अल्प सेवेची आपणास आठवण तरी होईल का? हाय हाय! येथें आपला व माझा एवढाच समागम होता. सहा महिनेच काय ते पूर्ण झाले; आणि, वीरा, सातव्याच महिन्यांत आपण निधन पावलां कीं हो! ”

कृष्णा, असें ती बोलली, इतक्यांत पहा मत्स्यराजाच्या स्त्रियांनीं तिला मागें ओढिलें! जिचे सर्व मनोरथ निष्फल झाले आहेत अशा ह्या दुःखार्त झालेल्या उत्तरेला मागें सारतात न सारतात तोंच त्या बघ स्वतः विराटाचें प्रेत पाहातांच तिच्यापेक्षांही अधिक व्याकूल होऊन आक्रोश व विलाप करीत आहेत! द्रोणाच्या अस्त्रमंत्रित शरांनीं छिन्नविच्छिन्न व रक्त-बंबाळ होऊन पडलेल्या ह्या विराटराजाला हीं गिधाडें, कोलहीं व कावळे टोंचीत आहेत. या असितेक्षणा स्त्रियांचें काळीज तिळतिळ तुटत आहे व त्या आपली पराकाष्ठा करीत आहेत. परंतु—अरेरे! त्यांच्याच्यानें पक्ष्यांपासून विराटाचें निवारण करवत नाहीं! या स्त्रियांचीं दुःखानें निस्तेज झालेलीं तोंडें उन्हांनें तप्त व श्रमामुळें विवर्ण झालीं असून त्यांची कव्वा अगदींच लोपून गेली आहे. माधवा, हा उत्तर, हा अभिमन्यु; पलीकडे तो कांबोजाधिपति सुदक्षिण, आणि तसाच तो सौंदर्यशाली लक्ष्मण हे लहान लहान बालक मरून पडले आहेत बघ! माधवा, एवढ्या लहान वयांत असतांही यांनीं रणभूमीच्या अगदीं शिरोभागीं शयन केलें आहे पहा!

अध्याय एकविसावा.

—:—

गांधारीचा कर्णाविषयी विलाप!

गांधारी ह्मणाली:—हा येथें महाधनुर्धर व महारथी वैकर्तेन कर्ण शांत झालेल्या अग्नी-प्रमाणें रणांत निजला आहे! हा प्रदीप्त अग्नि पार्थपराक्रमरूप उदकानें अगदीं विमृगन गेला आहे! कृष्णा, अनेक अतिरथांस ठार करून जमीनीवर शयन केलेल्या या कर्णाकडे पहा. रक्तप्रवाहांनीं ह्याचें सर्व अंग भरून गेलें आहे. अरे, हा अतिशय तापट, दीर्घद्वेषी, बांका धनुर्धर व महाबलादच वीर गांडीवधारी अर्जुनाच्या हातून रणांत मरून असा निजला आहे! हत्ती आपल्या यथपतीला पुढें करून शत्रूंशीं भुंजतात. तद्वत् माझ्या महारथी पुत्रांनीं पांडवांच्या भीतीनें ज्याला पुढें करून लढाई केली, तोच हा वीर कर्ण मिहांनें मारलेल्या शार्दूलासारखा किंवा एका मत्त मातंगानें ठार केलेल्या दुमच्या मातंगसारखा अर्जुनानें रणांत पाडला! हे नर-श्रेष्ठा, युद्धांत निधन पावलेल्या ह्या शूराच्या स्त्रिया पहा त्याच्या भोवतीं गराडा घालून केंस अस्ताव्यस्त मोडून रडत बसल्या आहेत! कृष्णा, ज्याच्या भीतीमुळें धर्मराज युधिष्ठिराचें मन सदादीत उद्विग्न असे, व तेरा वर्षेपर्यंत ज्याच्या चित्तमुळें त्याला धड झोंपही आली नाही, जो इंद्रप्रमाणें रणांत शत्रूम हार जात नसे, युगांतीच्या अग्नीसारवें ज्याचें तेज, आणि हिमालय पर्वताप्रमाणें ज्याचें धैर्य, तो हा वीर कर्ण कौरवांस आधारभूत होऊन, हे माधवा वातभद्र वृक्षाप्रमाणें जमीनीवर मरून पडला आहे! कृष्णा, ही पहा कर्णाची पत्नी व वृषसेनाची माता दीनविलाप करीत व रडत धरणीवर पडली आहे! बाकर्णा, खरोखर हा गुरु परशुरामाचा शापच तुला भोंवला—त्यामुळेंच भूमीनें चाक गिळलें आणि मग रणांत आहवशोभी

पार्थानें बाणानें तुझें मस्तक उडविलें ! हाय हाय ! ही मूषेणाची माता सुवर्णकवच घातलेल्या ह्या महाधर्मवान् व महाबलादच कर्णाकडे पाहून अत्यंत आर्ति होऊन रुदन करतां करतां बेशुद्ध पडली ! मांसभक्षक पशुपध्यांनीं या महात्माच्या अंगाचे लचके तोडून तोडून ह्याला अगदीं क्षीण केलें आहे, तथापि कृष्णचतुर्दशीच्या चंद्राप्रमाणें अद्यापही आत्मांस ह्याकडे पहावत नाही ! ती पहा कांहीं वेळानें पुनः सावध होऊन उठली आणि पुत्रवधानें तस झालेली ती दीन माता कर्णाचें मुख हुंघान पुनः हळूहळू विलाप करीत आहे !

अध्याय वाविसावा.

—०:—

गांधारीचा जवद्रथाविषयी विलाप !

गांधारी ह्मणाली:—भीमसेनानें पाडलेल्या त्या शूर अवंतिपतीला पुष्कळ भाऊबंध अमतां ही एखाद्या निराश्रिताप्रमाणें ह्याला कोल्हीं-कुर्ची खात आहेत ! हे मधुमुदना, शराम निर्दळून शेवटीं रक्तानें माग्वलेला अमा हा वीरशय्येवर पडाला आहे वध. ते पहा कोल्हे, करकोंचे व दुसरे पुष्कळ प्रकारचे मांसाहारो प्राणी त्याला इकडून तिकडे ओढीत आहेत ! कृष्णा, कालाचा फेरा कसा आहे पहा ! घनघोर संग्राम करणाऱ्या व वीरशय्येवर पहुडलेल्या ह्या शूर अवंतिनाथासभोवतीं बसून त्याच्या स्त्रिया धाय मोकळीत आहेत. तसाच, कृष्णा, हा थोर अंतःकरणाचा महाधनुर्धर प्रतीपपुत्र बाल्हीक एका भलानें गतप्राण होऊन निजलेल्या वाघासारखा आडवा झाला आहे पहा ! हा गतप्राण झाला आहे तथापि याच्या चेहऱ्यावर पाणिमेच्या उदयोन्मुख पूर्णचंद्राप्रमाणें फारच तेज खेळत आहे. पुत्रशोकानें अतिसंतप्त झालेल्या व प्रतिज्ञा पाळणाऱ्या

पार्थानें इकडे रणांत हा जयद्रथ लोळविला आहे. या जयद्रथाच्या रक्षणाम अकरा अक्षो-हिणी सैन्य होतें, परंतु तेवढ्याचाही भेद करून त्या महावीरानें याम ठार केलें ! हे जनार्दना, मिथुमौवीराधिपति, अत्यंत गर्विष्ठ व मनस्वी अशा या जयद्रथास कोल्हीं व गिधाडें कीरे भक्षण करीत आहेत ! हे अच्युता, याच्या भार्या याचें रक्षण करीत आहेत तरी त्यांना भिववून हीं याच्या खोल बेंबीचे जवळचा भाग ओढीत आहेत ! कांबोज व यवन देशच्या स्त्रिया या महाबलादच मिथुमौवीर-राजाचें रक्षण करीत त्याच्याभोवतीं बसल्या आहेत ! हे जनार्दना, जेव्हां हा द्रौपदीला घेऊन केकयांसह पळाला, तेव्हांच याला पांडवांनीं मारणें योग्य होतें; परंतु आपली बहीण दुःशाला इकडे पाहून व तिला मान देऊन त्यांनीं ह्याला तेव्हां सोडलें. मग, कृष्णा, आजच हे पांडव दुःशालेला क्रमे विमरले बरें ! आज ते तिला पुनः कां मान देत नाहीत ! ही पहा माझी मुलगी बाला दुःशाला दुःभानें विलाप करीत व पांडवांच्या नांवानें आक्रोश करीत उर बडवून घेत आहे ! कृष्णा, माझी मुलगी विधवा झाली आणि सर्व मुनांचेही नवरे भेले, यापरतें मला अधिक दुःख कोणतें व्हायचें राहिलें ! हाय हाय ! ही पहा दुःशाला भत्यांचें मस्तक न सांपडल्यामुळें इतस्ततः धावत आहे ! हिचा शोक व भीति हीं पार नष्ट झालीं आहेत. अभिमन्यु चक्रव्युहांत शिरला असतां ज्यानें सर्व पुत्रवत्सल पांडवांना अडवून धरलें, तो वीर जयद्रथ पुष्कळ सैन्याचा फडशा पाडून स्वतःही मृत्युवश झाला. त्या मातंगाप्रमाणें उन्मत्त व अत्यंत दुर्जय वीराला वेदून त्या चंद्रमुखी स्त्रिया सारखा आक्रोश करीत आहेत; हाय हाय !

अध्याय तेविसावा.

—:०:—

गांधारीचा भीष्मद्रोणादिकांविषयी विलाप.

गांधारी ह्मणते:—बा केशवा. हा प्रत्यक्ष नकुलाचा मामा शल्य येथे मरून पडला आहे. ह्याला तर, बाबा, धर्मज्ञ धर्मराजांनैच लढाईत मारलें! हे पुरुषर्षभा. जो सदासर्वदा प्रत्येक गोष्टीत तुझी बरोबरी करूं पहात असे. तोच हा महाबली मद्रराज येथे गतप्राण होऊन निजला आहे! बा कृष्णा, यानें युद्धांत कर्णाचें मारथ्य करीत अमतां पाडवांचा जय व्हावा म्हणून कर्णाचा तेजोवध केला. तस्मात् धिक्कार अमो याला! कृष्णा. याचें हें पद्मपत्रप्रमाणें हिरव्या रंगाच्या डोळ्यांनीं युक्त, पूर्णचंद्रामारगें शोभिवंत व अगदीं व्रणहीन मुखकमल कावळे टोंचीत आहेत! कृष्णा, ह्या मुवर्णगौराची तोंडांतून बाहेर पडलेली ही तप्तकांचनामारखी लाल जंभ पक्षी भक्षीत आहेत! युधिष्ठिरानें मारलेल्या या सभेंत झळकणाऱ्या मद्रराजामर्भोवतीं त्याच्या कुलस्त्रिया रडत बसल्या आहेत. झिरझिरीत पातळें नेमलेल्या ह्या क्षत्रियस्त्रियांनीं नरश्रेष्ठ शल्याजवळ कमा हलकळोल चालविला आहे! पंकांत रुतलेल्या यूथपति गजाभोवतीं तरुण हत्तिणी जमाव्या त्याप्रमाणें ह्या स्त्रिया निधन पावलेल्या शल्याला चोहेंकडून गराडा देऊन बसल्या आहेत! हे वृष्णिनेंद्रना, शरणांगतांम अभय देणाऱ्या ह्या शूर शल्याकडे पहा— बाणांनीं याचीं खांडकें झालीं असून वीरशय्या जी समरभूमि तिजवर हा पहुडला आहे! तसाच पलीकडे हा अंकुश घेऊन हत्तीवर बसणारा व डोंगराळ प्रदेशांत राहाणारा प्रतापी व श्रीमान् भगदत्त राजा भूतलावर आडवा झाला आहे! ह्याची ती मुवर्णमाला मस्तकावर तशीच लटकत आहे. श्वापदीकडून मासिल्या जाणाऱ्या

ह्या वीराच्या केशांम ती कशी शोभवीत आहे पहा! कृष्णा. वज्राशी इंद्राचें युद्ध झालें त्याप्रमाणें ह्याशीं अर्जुनाचे अंगावर रोमांच उठविणारें फारच घनघोर युद्ध झालें. हा महाबाहु घनजय पार्थाशीं लढून व त्याम अगदीं पुरेपुरे करून शेवटीं त्याच्या हातून पतन पावला! अहो! शौर्य व वीर्य ह्यांमध्ये ज्याच्या बरोबरीचा वीर सर्व पृथ्वीत कोणीच नाही. तो हा भीष्म रणांत भयंकर पराक्रम गाजवून असा शरशय्येवर पडला आहे! कृष्णा. ह्या निजलेल्या शांतनवाकडे दृष्टि दे! हा सूर्यामारवा तेजस्वी दिमत आहे.—जण कल्पानीं कालयोगे करून मूर्ध्निच खालीं पडला! ह्या वीर्यवानें अस्त्रतेजानें रणांत शत्रूंम नप्त करून मोडलें; आणि. केशवा. मायकाळच्या सूर्याप्रमाणें हा नर्मूर्ध्नि मांप्रत हलके हलके अस्ताचलाचा मार्ग आक्रमीत आहे. कृष्णा. शूरमेवित अशा शय्येवर (शरतल्यावर) पडलेला व निघड्या छातीचा असा हा उर्वरेता भीष्म अवलोकन कर! पूर्वी भगवान् स्कंद शरवनांत निजला होता. तद्धत् हा भीष्म कर्णा. नालीक व नागच बाणांचा उत्तम विद्याना पमरून त्या विनकापमाच्या विद्यान्यावर निजला आहे आणि गांडीवधारी अर्जुनांन ह्याला हीं तीन बाणांची उत्तम उर्शी करून दिलेली आहे! हे माधवा, पिन्याची आज्ञा पाळण्यामाठी ज्यांन आमरण ब्रह्मचर्य व्रत आचरिलें, तो हा महाकीर्तिमान् व युद्धांत केवळ अप्रतिम अमलेला शांतनव येथें शयन केल्या आहे! बाबारे, हा खरा धर्मात्मा व सर्वज्ञ आहे आणि ह्मणूनच इहपरलोक-विषयक सर्व मिद्धांतज्ञानाच्या बळानें त्यांन मर्त्य अमतांही अमरप्रमाणें अजून प्राण धारण केले आहेत! ज्यापेक्षां शांतनवन भीष्म आज शरहत होऊन पडले आहेत, त्यापेक्षां संपूर्ण भूतलावर युद्धांत

खरी कृती, विद्वान् व पराक्रमी अमा वीर कोणीच नाही ! माधवा. पांडवांनी विचारल्या-वरून त्या धर्मज्ञ व सत्यवादी शूरांनं आपणाम रणांत कमा मृत्यु येईल हें स्वनः त्यांम सांगितलें ! धन्य त्या वीराची ! अहो, नष्टप्राय झालेला कुरुवंश ज्यांनं पुनः चांगला नांवारूपाम आणला. तो महाबुद्धिमान् भीष्म-कौरवांसमवेत आज पराभूत झाला ! माधवा, हे देवासारखे देवव्रत भीष्माचार्य परलोकवासी झाल्यावर कुरुकुलांतील लोक धर्माधर्माविषयी कोणाची रे मद्दा घेतील ? कृष्णा, अर्जुनाचा व तमाच सात्यकीचा आचार्य आणि सर्व कौरवांचा श्रेष्ठ गुरु द्रोणाचार्यही येथें मरून पडला आहे बघ ! माधवा, चतुर्विध अस्त्रे जर्षी त्रिदशेश्वर इंद्राला व महापरा-क्रमी भार्गवगामाला मारहीन आहेत, तशींच तीं सर्व द्रोणाळाही अवगत होनीं ! अरे. पंडु-पुत्र अर्जुनाला केवळ ज्याच्या प्रमादामुळें अमा अद्भुत पराक्रम करण्याचें सामर्थ्य आलें. तो गुरु द्रोणाचार्य मरून पडला ना ? एवढीं अस्त्रे, पण त्यांनीं कांहीं त्यांचें रक्षण केले नाहीं. कौरव ज्याच्या बलावर पांडवांस युद्धार्थ आह्वान करीत, त्या ह्या शस्त्रधराग्रणी द्रोणाचें शरीर बाणांनीं क्षतमय झालें आहे. जो वीर सेना दग्ध करूं लागला ह्यणजे अशीप्रमाणें अवंड मंडलाकार गमन करी, तो द्रोणाचार्य निधन पावून ज्वाला शांत झालेल्या अग्नी-प्रमाणें भूतलावर पडला आहे. माधवा, द्रोणा-चार्यांच्या धनुष्याची ती मूठ व हें हस्तावरण कसें अभंग आहे पहा. ह्याला त्रिलकूल धक्का लागला नाही; आणि हीं मृत द्रोणांच्या हातांत आहेत, तथापि एखाद्या जिवंत योद्ध्याच्या हातांत अमल्याप्रमाणें दिसत आहेत. माधवा. प्रारंभी विश्वकर्त्या ब्रह्मदेवापामून वेद निर्माण होऊन सर्वांस प्राप्त झाले, त्याचप्रमाणें सांप्रत

कार्ळी येथील सर्व ब्राह्मणसत्त्वियांना चारही वेद व सर्व अस्त्रे ज्यापामून प्राप्त झालीं, त्या द्रोणाचार्यांचे हे वंदन करण्यास योग्य, ज्यांना बंदिजन नित्य प्रणाम करीत ते व शेंकडें शिष्य ज्यांवर मन्त्रकें ठेवीत असे पूज्य चरण कोळ्हीं कीं रे ओढीत आहेत ! हे मधुमूदना, ती दुःस्वमूढ कृपा धृष्टद्युम्नानें ठार केलेल्या द्रोणाजवळ उदासवाणी बसली आहे बघ ! कृष्णा, पहा तिनें केंम मोकळे सोडले आहेत, मान खालीं घातली आहे, अत्यंत आर्ते झालेल्या तिच्या डोळ्यांतून पाणी गळत आहे. व अशा प्रकारें ती आपल्या मृत पतीची— शस्त्रधराग्रणी द्रोणाचार्यांची उपासना करीत आहे व त्यांच्या अंगावरून हात फिरवीत आहे ! केशवा, धृष्टद्युम्नानें ज्यांचें कवच बाणांनीं फोडलें आहे अशा त्या ह्या द्रोणाची भार्या ही जटिले व ब्रह्मचारिणी कृपा रणांगणांत पतीची सेवा करीत आहे ! ती पहा ती मुकु-मारी यशस्विनी अत्यंत आतुरतेनं पतीच्या प्रेतकार्याच्या खटपटीला लागली. माधवा, हे जटिल ब्रह्मचारी धनुष्ये, शक्ति व रथांचे मोडकेतोडके भाग यांची चिता रचीत आहेत. ह्या सामवेद्यांनीं विधिपूर्वक अग्न्याधान करून व सर्व बाजूंनीं चिता चांगली पेटवून तीवर द्रोणाम निजविलें; आणि आतां ते तीन सामें ह्यणत आहेत ! नानाप्रकारचे बाण व इतर पदार्थ ह्यांच्या योगानें हे अमिततेजस्वी आचार्यांचें दहन करून कोणी त्यांची प्रशंसा करीत आहेत, कोणी रडत आहेत, आणि दुसरे कित्येक मरणकालोचित तीन सामांनीं

१ वेणाला फणां वगैरे न लावल्यामुळें जिचे केंस जटसारखे गुंतले आहेत अशी. २ गृहस्थाश्रमी स्त्री-पुरुषांनीं योग्य कार्ळी संभोग केला असतां तें त्यांचें ब्रह्मचर्यच होय अशा अर्थानें ब्रह्मचारिणी हें विशेषण यांजिलें आहे. यापामून ' व्रताचरणां ' एव-दाच तात्पर्यार्थ घ्यावयाचा.

त्यांना स्तवीत आहेत ! ते पहा द्रोणाचे ब्राह्मण
जातीचे सर्व शिष्य चितेला अपसव्य घालून
व कृपीस पुढे करून गंगेच्या अनुरोधाने चालले !

अध्याय चोविसावा.

—:०:—

गांधारीचा भूरिश्रव्याविषयी विलाप !

गांधारी म्हणाली:—माधवा, हा जवळच
युयुधानाने पाडलेला सोमदत्ताचा पुत्र अव-
लोकन कर. ह्याला पक्षी अनेक प्रकारे इजा
देत आहेत. जनार्दना, हा इकडे पुत्रशोकाने
संतप्त झालेला सोमदत्त राजा धनुर्धर युयुधा-
नाची जणू निर्भर्त्सनाच करीत आहे असे
भामसे. ही शोकमागरांत बुडालेली भूरिश्रव्याची
माता आपल्या पतीचे—सोमदत्ताचे—आश्रामन
करीत आहे. “ महाराज, हा भरतकुलाचा घोर
संहार, ही कौरवांची भयंकर कत्तल, आणि
हा सर्व प्रलय पाहाण्यास आपण मुद्देवाने जिवंत
नाहीं. उदार हस्ताने हजारों माहोरा धर्म
करणारा व अनेक यज्ञ करणारा हा आपला
यूपकेतु पुत्र मृत झाल्याचे पाहाण्यास आपण
मागे राहिल्या नाही, ही आपली पूर्वपुण्याई
होय. महाराज, आपण मोठे मुद्देवाचे, म्हणून
सागरांत बुडत अमतां तडफडणाऱ्या हंसी-
प्रमाणे या रणमागरांत आक्रोश करणाऱ्या
मुनांचे घोर व दीर्घ विलाप आपणाम ऐकू येत
नाहींत. प्राणेश्वरा, ज्यांचे पुत्र व पति निधन
पावले आहेत, अशा त्या आपल्या स्नुषा
एका वस्त्राने अर्धवट अंग झांकून व आपले काले-
भोर केश अस्ताव्यस्त मोडून इतस्ततः धावत
आहेत. अहो, अर्जुनाने ज्याचा हात छेदला
त्या आपल्या नरव्याघ्र पुत्राला श्वापदे भस्मीत
आहेत, हे मुद्देवाने आपणाम द्रिप्त
नाहीं ! हा रणांत मरून पडलेला शल व
भूरिश्रवा आणि तशाच ह्या सर्व मुना देवयो-

गाने आपणाम पहाल्या लागत नाहीत ! नाभा,
महात्म्या यूपकेतूचे ते सुवर्णचक्र ग्योपम्भावर
मोडून तोडून पडलेले पाहाण्यास मुद्देवाने
आपले डोळे मिटलेले आहेत ! अहो, मात्य-
कांनी मारलेल्या भूरिश्रव्याच्या ह्या अमितेक्षणा
स्त्रिया भर्त्यासभोंवतीं बसून शोक करीत आहेत.
पतिशोकाने व्याकृत झालेल्या ह्या अतिशय
विलाप करून भूर्मावर बेद्दुद्ध पडत आहेत !
हाय हाय ! त्यांम पाहून माझे हृदय कसे
उल्लत आहे. तो बीभत्सु ह्यणजे अति शुद्ध
कर्म करणारा ना ? मग त्याने हे असे अध-
र्माचे व अत्यंत बीभत्स कृत्य कसे केले ? हा
यजनशील वीर दुःमन्यार्यांचे लडण्यांत गुंतला
अमतां त्याने याचा बाहु कमा तोडला ? हाय
हाय ! मात्यकांनी तर याहूनही अधिक पाप-
कर्म केले. कारण तो शुद्धात्मा प्रायोपवेशन
करून बसला अमतां त्याने त्यास प्रहार केला !
हे धार्मिक सोमदत्ते, अर माझा बाळा, तुला
दोषांनी मिळून मारले, त्यापेक्षा खरोखर तू
अधर्मानेच निधन पावलास. मंडळीत चांगल्या
चांगल्या गोष्टी निवाल्या अमतां किंवा सभा-
मध्ये वादविवाद निघाला अमतां ह्या पापमय
व दुष्क्रीतिकारक कृत्यांचे मात्यकि स्वतः तरी
कसे ममथन करील ? ”

माधवा, यूपचक्र भूरिश्रव्याच्या ह्या स्त्रियाही
अमाच टाहो फोडीत आहेत. ही पहा त्या
सोमदत्ताची पट्टराणी—हिची कमर केवळ एक
हातभर वारीक आहे, ही भर्त्याचा तो हात
मांडीवर घेऊन फारच आकांत करीत आहे—
“ अहो, शत्रूस टार करणारा व मित्रांस अभय
देणारा हाच तो हात ! ह्याच हाताने हजारों
गाई दान केल्या आणि क्षत्रियांचा अंत केला !
कमरपट्टा वर ओढणारा, पीनस्तनांचे मर्दन कर-
णारा, नाभी, उरु व जघन यांम स्पर्श कर-
णारा आणि वमनग्रंथी मोडणारा हाच तो

हात ! हाय हाय ! महाराज, आपण दुमन्याशी लढण्यांत गुंग अमतां, थोर कर्मे करणाग ह्मणून टेंभा मिरविणाऱ्या पार्थानें प्रत्यक्ष श्री-कृष्णामसम हा हात छेदिला ! हे जनार्दना, सभामध्ये किंवा मंडळींत निघालेल्या गोष्टींत ही गोष्ट तूं कशी मानरी करशील ? किंवा स्वतः अर्जुन तरी हिचें काय समर्थन करील ? ”

कृष्णा, अशी निंदा करून ती वारांगना स्तब्ध बमली आहे आणि मुनेबद्दल शोक करावा तद्गत तिच्या सवती तिजविषयी शोक करीत आहेत ! माधवा, गांधार देशचा राजा बलवान् व मत्स्यपराक्रमी शकुनि हा येथें पडला आहे ! ह्याला महदेवानें ह्मणजे भाच्यानें मामाम ठार मारिलें ! अहो, मुवर्णाच्या दांड्यांचीं दोन मोरचेले ज्यावर वारिलीं जात अमत, त्याच येथें निजलेल्या वीराम आज पक्षी आपल्या पंखांनीं वारा घालीत आहेत ! जो मायावी शेंकडों हजारां सांगें करी, त्या या शकुनीच्या सर्व माया पंडुपुत्राच्या प्रतापानें दग्ध झाल्या ! ह्या कपटपट्टेनं पूर्वीं सभेंत धर्मराजाचें अफाट राज्य हिरावून घेतलें, परंतु येथें तोच आज आपलें जीवित हरवून बसला ! कृष्णा, ह्या शकुनीसभेंवतीं शकुंत (पक्षी) त्रिरथ्या घालीत आहेत. माझ्या पुत्राच्या विनाशास हेतुभूत झालेलें कपट ह्यानेंच त्यास पदविलें; आणि यानेंच पांडवांशीं हें हाडवैर पाडलें, कशासाठी ! तर माझ्या पुत्रांच्या व गणगोतांसह आपल्या स्वतःच्या नाशामाठीं ! प्रभो कृष्णा, माझ्या पुत्रांना स्वर्गनिर्जित पुण्यलोक प्राप्त झाले आहेत व हा दुष्टही तेथेंच गेला आहे. तेव्हां, हे मधुसूदना, तेथें तरी हा दुर्बुद्धि माझ्या सरळ बुद्धीच्या मुलांस भावांशीं वैर करावयास न लावील यास काय बरें उपाय करावा ?

अध्याय पंचविंसावा.

—:—

गांधारीचा शोकातिरेक !

गांधारी ह्मणाली:—माधवा, शालजोडीवर पडावयास योग्य असा हा वृषस्कंध दुर्धर्ष कांबोज मरून धुळींत पडला आहे बघ ! ह्याचे हे चंद्रनदिग्ध हात रक्तानें माखलेले पाहून अति दुःखित झालेली त्याची भार्या कशी करुणा भाक्रीत आहे ऐक.—“ पूर्वीं ज्यांची मिठी पडली अमतां तींत किती वेळ असलें तरी माझी तृप्तताच होत नसे, तेच हे परिचांसारखे बाहु ! ह्यांच्या अंगुली व तळहात किती मुंदर आहेत. प्राणेश्वरा, आपल्यावांचून माझी कशी अवस्था होईल ! ”

कृष्णा, ही अनाथ व बंधुहीन झालेली मधुर-भाषिणी बघ कशी थरथर कांपत आहे ती ! उन्हांत चकाकणाऱ्या विविध रत्नमालांप्रमाणेंच ह्या क्रांत स्त्रियांचेही तेज बिलकूल उतरत नाही. मधुसूदना, सन्मुख शयन केलेल्या ह्या कालिगाकडे दृष्टि फेंक. ह्याच्या दोन्ही हातांना लखलखीत अंगद बांधिलेले आहेत. तसाच, जनार्दना, इकडे हा मागधांचा अधिपति जय-त्मेन पहा ! अत्यंत विह्वल झालेल्या स्त्रिया त्याला सर्व बाजूंनीं घेरून आक्रोश करीत आहेत. ह्या विशालाक्षीचे आवाज फारच गोड आहेत. मनमोहक व कर्णमधुर आवाजांनीं ह्या माझ्या मनाला जणूं मोहच पाडीत आहेत. कृष्णा, ज्यांचीं वस्त्रें व अलंकार अस्ताव्यस्त झाली आहेत, व ज्या शोककर्षित होऊन धाय मोकलीत आहेत, अशा ह्या मागधाख्या—पसरलेले उत्तमोत्तम विछाने सोडून जमीनीवर कीं रे पडल्या आहेत ! तो कोसल देशचा अधि-पति राजपुत्र बृहद्दल पहा. त्याच्या भार्या आपल्या पतीच्या शवाभेंवतीं जमून पृथक् पृथक् विलाप करीत आहेत ! सौभद्रानें जोरां

फेंकलेले जे बाण ह्याच्या शरीरांत खोल रुतून मरून गेला अमून मध्या पक्षी घ्यास टोंचीत बसले आहेत, ते ह्या अस्वस्थचित्तानें उपरीत आहेत व स्त्रिया त्याच्याभोवतीं जमल्या आहेत. असें करीत असतां दुःखानें ह्यांस आहेत. हा दाशार्ह राजाच्या मुलीचा मुलगा. वरचेवर घेरी येत आहे ! माधवा, ह्याचीं सर्व- ह्या चेदिराजाच्या थोर थोर स्त्रिया ह्या सत्य- सुंदर मुखें सूर्याच्या उन्हांन व परिश्रमामुळें पराक्रमी वीराम अंकावर घेऊन रुदन करीत कोमेजलेल्या कमलासारखीं म्लान दिमत आहेत. हृषीकेशा, भृष्टकेतूच्या मुलाचें सुंदर आहेत व येथें हे सुंदर अंगद ल्यालेले भृष्टद्युम्नाचे मुख मनोहर कुंडलांनीं कमें शोभत आहे पहा. शूर पुत्र द्रोणांच्या हातून मरून पडले आहेत ! ह्याचे तर द्रोणांन बाणांनीं अनेक तुकडे उड- हे अगदीं लहान लहान शिशु सोन्याच्या दागि- विले आहेत. ह्या पितृभक्तांन ममरांगणांत न्यानीं जसे भरलेले आहेत. रथ हें ज्याचें शत्रूंशीं लढत अमतांचेंम काय-पण अद्यापही स्थंडिल, धनुष्य हीच ज्याची ज्वाला, आणि पित्याम सोडलें नाहीं ! मधुमूदना. माम्ना नातू बाण, शक्ति, गदा वगैरे ज्याचीं इंधनें. अशा लक्ष्मण अमाच आपल्या पित्याच्या-दुयोधना- त्या द्रोणरूप अग्नीत सांपडून हे टोळांमारखे च्या अगदीं पाठीशीं असे ! माधवा, हिंवा- होरपळले ! तमेंच हे सुंदर अंगदें घातलेले व्याचे शेवटीं वाच्यांन मोडलेल्या प्रफुल्ल शाल- केकय देशचे राजपुत्र पांचही भाऊ. द्रोणांच्या वृक्षामारखे हे अवंतीचे विद्वानुविद येथे पडले हातून सन्मुख पतन पावले. ह्या वीरांची आहेत. यांकडे अवलोकन कर. यांचे अंगद सुवर्णाचीं चिलखतें उन्हांन तापली आहेत; व चिलखतें सोन्याचीं आहेत; यांचे हातांत आणि तेंणेंकरून, माधवा, हे जण पडलेले खडग व धनुर्बाण तमेंच आहेत; यांचे डोळे अग्निच आपल्या तेजांन रणभूमि प्रकाशमान् वृषभांच्यासारखे टपोरे अमून यांच्या गळ्यांत करीत आहेत ! माधवा, प्रचंड मिहानें अर- लयलखीत माळा आहेत; आणि अशा रीतींन प्यांत मारलेल्या महागजाप्रमाणें द्रोणांन हे येथें निजले आहेत ! बा कृष्णा, तुझ्यासह युद्धांत ठार केलेला हा द्रुपद राजा पहा ! ह्या पांचही पांडव-जे भीष्म, द्रोण, वैकर्तन कर्ण, पंचालराजाचें पुंडरीकामारखे स्वच्छ व निर्मल कृपाचार्य. दुयोधन. अध्वत्यामा, मिथुपति छत्र शरदत्तील चंद्राप्रमाणें फारच शोभत जयद्रथ, सोमदत्त, विकर्ण व शूर कृतवर्मा आहे ! वृद्ध द्रुपदाला दग्ध करून ह्या त्याच्या ह्यांच्या हातून जिवंत सुटले, त्यांम कोणापामून- खिन्न स्त्रिया व मुना त्यास अपमव्य प्रदक्षिणा हीं मरण नाहीं. अरे, ज्या नरश्रेष्ठांनीं शस्त्र- घालून निघाल्या वय ! द्रोणांन यमलोकीं प्रभावानें देवांमही ठार करावें, ते हे वीर रणांत निधन पावले ! कालचक्रच फिरलें, दुसरें पांचविलेल्या शूर चेदिपति भृष्टकेतूचें प्रेत त्याच्या रणानें काय ? स्वरावर, माधवा, देवाला म्हणजे दुःखानें भांबावलेल्या स्त्रिया उचलून नेत आहेत ! मधुमूदना, ह्या महावीरांन द्रोणांचें कोणतीं गोष्ट अवघड आहे असें मुळीच नाहीं, अन्न भय केलें; आणि नंतर हा नदीप्रवाहांन कारण देवशातू हे एवढाले शूर क्षत्रिय श्रेष्ठ उन्मळून पडलेल्या वृक्षाप्रमाणें हाणामारीत दुमच्या क्षत्रियांच्या हातून मारले गेले ! बा मृत्यु पावला ! हा चेदिपति भृष्टकेतु ह्यणजे कृष्णा, तुझा हेतु तडीस न जाऊन तूं पुनः माठाच शूर महारथी-हा हजारौ शत्रूंम मारून उपप्लव्यास परतलाम, तेव्हांच माझे हे कपटी व रणांत पडला ! हृषीकेशा, सैन्यबांधवांसह हा चपळ पुत्र निधन पावले ! शांतनव भीष्मांनीं

व ज्ञानी विदुरानें तेव्हांच मला मांगितलें कीं, 'आपल्या पुत्रार्ची माया धरूं नको.' त्यांचें तें भाकित खोटें कोटून होणार ! त्यानंतर थोड्याच दिवसांत माझे पुत्र भस्ममात झाले !

गांधारीचा श्रीकृष्णास शाप.

वैशंपायन मांगतातः—हे भारता, इतकें बोलतां बोलतांच गांधारीस शोकाचा झटका आला, त्याचरोबर दुःखानें तिचें देहभान व आत्मज्ञान लुप्त झाले. धैर्य गळालें, आणि तिनें धरणीवर अंग टाकलें ! तिच्या अंगाचा संताप झाला, गात्रें व्यथित झालीं. आणि शोकमागगां निमग्न होऊन ती कृष्णाम दृषणें देऊं लागली.

गांधारी म्हणालीः—अरे कृष्णा, पांडव व कौरव परस्पर दग्ध झाले; पण. जनार्दना. ते नाश पावत अमतां तूं त्यांची काय म्हणून उपेक्षा केलीस ! तुझ्या अंगीं सामर्थ्य होतें, तुझ्या पदरीं पुष्कळ लोक होते, व पुष्कळ सैन्यही होतें. शिवाय तूं मोठा बहुश्रुत व चतुर असून दोहींकडे तुझ्या शब्दाला मान होता. तूं मनावर घेतास तर हें भांडण केव्हांच मिटलें अमते. पण, मधुसूदना, तूं ज्यापेक्षां कौरवांचा नाश होत अमतां मुद्दाम जाणून-बुजून त्यांची उपेक्षा केलीस, त्यापेक्षां, हे महाबाहो, याचें तुला फळ मिळेल ! पतिमेवेनें मीं जें कांहीं थोडेंसें सुकृत जोडलें असेल. त्या दुर्मिळ सुकृताच्या योगानें तुज चक्र-गदाधराला मीं शाप देतें, ऐक. ज्यापेक्षां

सगेसोयरे कौरवपांडव एकमेकांच्या हातून नाश पावत अमतां, हे गोविंदा, तूं त्यांची उपेक्षा केलीस, त्यापेक्षां, तूंही आपल्या जात-भाईचा वध करशील ! कृष्णा, आजपासून अस्तिमाव्या वर्षीं—ज्याचे ज्ञातिवांधव, अमात्य व पुत्र निधन पावले आहेत अमा तूं अनाथा-मागखा अगदीं अप्रमिद्ध व ज्याकडे कोणी दुकूनही लक्ष देत नाहीं अमा वनांत मंचार करीत अमतां निद्यमार्गांनिं निधन पावशील ! आणि ज्यांचे पुत्र व ज्ञातिवांधव मरून गेले आहेत अशा तुझ्या स्त्रियाही या भरतस्त्रियां-मागख्याच धरणीवर अंग टाकतील ! "

वैशंपायन मांगतातः—तिचें तें भयंकर भाषण ऐकून तो उदारशीं वामुदेव किंचित् हंमल्यामारखेंच करून देवीं गांधारीस ह्मणाला, " हे क्षत्रिये, हें सर्व असें होणार म्हणून मला टाऊकच आहे ! हें तूं पिष्टपेण मात्र केलेंस ! देवयोगानें वृष्णिही असेच नाश पावतील, यांत मंशय नाहीं. ह्या वृष्णिमेनेस मारणारा माझ्या-वांचून दुसरा कोणीच नाही. हे शुभांगि, ते नरांनाच काय. पण दुसऱ्या देवदानवांनाही अवध्य आहेत; आणि ह्मणूनच यादव परस्प-रांच्या हातूनच नाश पावणार आहेत ! "

राजा, दाशार्ह कृष्णाचे तोंडून असे शब्द निघतांच पांडव मनांत एकदम दचकले. ते अतिशय उद्विग्न झाले आणि त्यांस जीविताची आशा उरली नाही !



श्राद्धपर्व.

अध्याय सव्विसावा.

और्ध्वदेहिक.

श्रीभगवान् ह्यणाले:—गांधारि, उठ उठ, शोकाकडे मनाची प्रवृत्ति करूं नको. तुझ्याच अपराधामुळे कौरव निधन पावले. कारण, ईर्ष्या बाळगणारा, अत्यंत अभिमानी व दुष्ट-बुद्धीचा जो पुत्र दुर्योधन त्याचा पुरस्कार करून तूच त्याच्या वाईट आचरणाम मान दिलास. दुर्योधन हा केवळ पाषाणहृदयी. वैराचा मूर्तिमंत पुतळा व वयोवृद्धांच्या आज्ञेस न जुमानणारा असा असून, तू त्याचा पाठ-पुरावा केलास. असें अमतां ह्या आपल्या दोषाचें खापर माझ्या डोक्यावर कसे फोडूं पहातेस? शिवाय असें पहा कीं, मृत व नष्ट ह्यांबद्दल जो मागून शोक करित बसतो, तो दुहेरी दुःख पावतो. नष्ट गोष्ट पुनः येतं तर नाहीच; पण उलट दुःखाने दुःख वाढतें मात्र. अगे गांधारि, तू जरा विचार करून पहा—ह्या मर्त्यलोकांत ब्राह्मणस्त्री जो गर्भ धारण करते, तो तपोर्थीय ह्यणजे तप करण्यास योग्य असतो. तशीच धेनु नांगर ओढणारा, घोडी धावणारा, शूद्री दास, वैश्या गुरें वळणारा आणि तुझ्यासारखी क्षत्रिया राजकन्या वधार्थी गर्भ धारण करते. मुलगे मेले त्याबद्दल तुला एवढें वाईट कां वाटतें? रणांत मरून जाण्यासाठीच तर क्षत्रिय जन्मास येतात !

वैशंपायन सांगतात:—वामुदेवानें पुनः केलेलें तें अप्रिय भाषण ऐकून, जिचे नेत्र शोकानें व्याकूल झाले आहेत अशी ती गांधारी स्तब्ध बसली. मग राजर्षि धृतराष्ट्र हा अवि-वेकापासून होणारें अज्ञानरूप तम आवरून

धर्मराज युधिष्ठिराम विचारूं लागला. तो ह्यणाला, ' हे पंडुपुत्रा, या सैन्यापैकी कोण-कोण जिवंत आहेत हें तर तुला माहीत असेलच. पण येथें एकंदर कितीजण मेले ह्याचें परिमाण तुला ठाऊक असल्यास तें मला सांग.'

युधिष्ठिर सांगतो:—राजेंद्रा, ह्या संग्रामांत एकंदर सहामष्ट कोटि, एक लक्ष, तीस हजार लोक पडले.

यावर धृतराष्ट्र ह्यणाला:—हे पुरुषमत्तमा युधिष्ठिरा, ते वीर कोणकोणत्या गतीला गेले हें मला सांग. हे महाबाहो, तुला सर्व कांहीं समजतें अशी माझी समजूत आहे.

युधिष्ठिर सांगतो:—ज्यांनी मोठ्या हर्षानें यमघोर संग्रामांत शरीरें हवन केलीं त्या मृत्यु-पराकमी वीरांस अमरावतीच्या बरोबरीचे लोक मिळाले; जे कित्येक उदारमान चित्तानें मरणें भाग आहे ह्यणून लढत अमतां रणांत पडले. ते गांधर्वांच्या मंडळींत मिळाले; समरांगणांत शत्रु आह्वान करित अमतांही तेथून जे तोंडें फिरवून पळूं लागले व पळतां पळतां पण शस्त्रप्रहारानें मरण पावले. ते गुह्यकांमऱ्ये गेले; शत्रु खाली पाडीत आहेत, शक्ति क्षीण होत आहे, जवळ शस्त्र मुळीच उरलें नाही, व शत्रु तीक्ष्ण शरानीं सारखे जखमी करित आहेत, अशा स्थितीतही जे क्षत्रधर्मपरायण महात्मे लज्जायमान होऊन रणांत शत्रुसन्मुखच पतन पावले, ते ब्रह्मलोकीं जाऊन पांचले; याबद्दल मला मुळीच संशय नाही. त्याचप्रमाणें, राजा, जे येनकेनप्रकारेण रणांगणाच्या हद्दींत मरण पावले, ते सर्व उत्तरकुरुंत प्रविष्ट झाले !

१ दशायुतानामयुतं सहस्राणि च विंशतिः ।
कोट्यः पष्टिध पदंचैव त्स्मिन् राजन मधे हताः ॥'
असें मूळ आहे. परंतु मागे आदिपर्वीत जें अक्षा-
ह्णिर्णाचें परिमाण दिले आहे, त्याच्याशा याचा मेळ
बसत नाही. शिवाय, ह्या श्लोकाचा पाठही बरोबर
आहेसें दिसत नाही.

धृतराष्ट्र विचारतोः—वन्मा. असें मिद्ध पुरुषामाग्ये हे तूला कोणत्या ज्ञानवत्याने मम-जते ! हे महाबाहा. काही हरकत नमेल तर ते मला मांग.

युधिष्ठिर मांगतोः राजन्. आपल्या आज्ञे-प्रमाणे आर्षी पृथ्वी वनांत मंचार करीत अमनां तीर्थयात्राप्रसंगाने मला हा मिद्धानुग्रह झाला. देवापि लोमशांचे मला दर्शन वडले आणि त्यांचे प्रमादाने मला अनुष्मन्ति. व ही दिव्य दृष्टि प्राप्त झाली !

धृतराष्ट्र लगालाः—हे भारता. आतां अनाथ व मनाथ अशा ह्या सर्वांची शर्गें तुझी विधिपूर्वक दहन करणार काय ! ज्यांचा कोणा-च संस्कार नाही व जे आहिताशिही नव्हत. अशांची फारच मोठी संख्या आहे. तेव्हां. बाबा. आपण योजनेण कोणकोणाच्या दहन-किया करणार ! वा युधिष्ठिरा. ज्यांना गरुड व गिधाडे निकडे निकडे ओढून नेत आहेत. त्यांना कोटवर शोधणार ! युधिष्ठिरा. त्यांना त्यांच्या त्यांच्या कर्मानुसारं भिल्लवयाची अमेल ती गति मिलेल !

वेशपायन मांगतातः—हे महाराजा जन-मेजया. कुंतीपुत्र युधिष्ठिराला धृतराष्ट्राने असें मांगितल्यावर त्याने दुय्योधनाचा पुगेहित सुधर्मा, धौम्य. मृतपुत्र. संजय. महाज्ञानी विदुर. कुरुकुलोत्पन्न युयुत्सु. आणि तमेच इंद्रमेत आदिकरून सर्व चाकर व मारथि यांम आज्ञा केली की. "तुझी ह्या सर्वांची प्रेतकार्ये करा. आणि एकाही वीर अनाथाप्रमाणे तमाच पडून राहून कुंते नये. अशी तजवीज करा." राजा. मग युधिष्ठिराच्या आज्ञेप्रमाणे विदुर. संजय. सुधर्मा. धौम्य आणि ते इंद्रमेतप्रभृति भृत्य यांनी चंद्रनागरुची व कालीयक चंद्रनाची लांकडे. तूप. तेल. कर्पूरादि सुवासिक पदार्थ. मोठी मौल्यवान् रेशमी वस्त्रे आणि लांकडांचे

मोठमोठे पुष्कळ ढीग जमविले; मोडेके रथ व नानाप्रकारचीं आयुधें गोळा केली; आणि मोठ्या प्रयामाने त्यांच्या चिंता रचून प्रथम मोठमोठे, व त्यांच्या मागून त्याहून कमी योग्यतेचे. अशा क्रमाने त्यांनीं शांतचित्ताने शास्त्रोक्त-विधिपूर्वक त्यांचें दहन केले. दुय्यो-धन राजा. त्यांचे शंभर भाऊ, शल्य राजा, शल. भृगुश्रवा, राजा जयद्रथ. तमाच अभिमन्यु. द्रौशामनि लक्ष्मण, पृथ्वीपति धृष्टकेतु. बृहंत सोमदत्त, शंभरगहन अधिक संजय. राजा क्षेमवन्ता. विगट व द्रुपद, पांचालपुत्र शिवंडी. पार्षत धृष्टद्युम्न, पराकर्मी युधामन्यु व उत्तमोजा. कोमलदशचा राजा, द्रौपदीचे पुत्र. मौवल शकुनि. अचल, वृषक, भगदत्त राजा. पुत्रामहवर्तमान अमर्षी कर्ण, महाधनुर्धर केकय. महारथी त्रिगर्त, राक्षसेंद्र वयोत्कच. वकामुगचा भाऊ राक्षसेंद्र अल-वृष. जलबंध राजा, हे व दुमरे हजारां राजे—ज्यांवर तुपाच्या धाग धरल्या आहेत अशा प्रदीप्त अशीत दग्ध केले. मग कित्येक महान्म्यांचे पितृयज्ञ मुरू झाले. कित्येकांजवळ सामें पटन होऊं लागलीं. आणि दुसऱ्या कित्येकांजवळ शोक चालू झाला. तो साम-क्रुचांचा घोष व तें स्त्रियांचें तें रुदन यांच्या योगाने त्या रात्रीच्या वेळीं प्राणिमात्राम उद्धि-शता प्राप्त झाली; व धडधडून पेटलेले ते धूमरहित प्रदीप्त अग्नि आकाशातील तुरळक अभ्रांनीं आच्छादिलेल्या ताऱ्यांप्रमाणें शोभूं लागले. यांशिवाय, नानादेशांहून गोळा झालेल्या ज्या लोकांचे कोणाच वारस तेथें नव्हते. त्यांच्या प्रेतांचे विदुराने राजाज्ञे-वरून हजारां ढीग करविले, त्यांच्या सभो-वतीं पुष्कळ लांकडे रचविलीं, आणि वर पुष्कळसें तूप ओतून त्या सर्वांचें दहन कर-विलें ! याप्रमाणें त्यांचा प्रेतसंस्कार करून

कुरुराज युधिष्ठिर धृतराष्ट्राम पुढें करून त्या-
सह गंगेवर निघून गेला.

अध्याय सत्ताविसावा.

—:—

कर्णगूढजत्वकथन.

वैशंपायन सांगतात:—जिचें पात्र अफाट

अमून आंत पुष्कळ डोह आहेत व पाण्याला
अतिशय वेग आहे. तथापि जी प्रमत्त व
शुभकारक अमून जिचें जल पवित्र आहे.
अशा त्या गंगेच्या कांठी पांचल्यावर कुरु-
स्त्रियांनी आपले अलंकार. अंगावरील शाली व
बुरखे वगैरे उतरून ठेवले; आणि मग पिते.
भ्राते, पौत्र, आसजन, पुत्र. मामे व पति ह्यांना
सर्वांनी अत्यंत दुःखित होऊन रडत रडत उदक-
प्रदान केलें; आणि त्या धर्मज्ञांनी दृष्टमित्रां
सही जलांजलि दिले. याप्रमाणें त्या वीर-
पत्नींनी उदकक्रिया केली तेव्हां गंगेचें जल
अगदी खळबळून जाऊन गढूळ झालें; आणि
मग कांहीं वेळांनी पुनः पहिल्यामाग्यें वाहूं
लागलें. मग तें वीरपत्नींनी भगलेंलें. आनेदे-
त्सहरहित व महोदधीमारग्यें विस्मर्ण गंगातीर
फारच उदासवाणें व भयाण दिसें लागलें. मग
हे महाराजा, कुंतीला एकाएकी शोकाचा
उमाळा आला आणि ती रडत रडत मंद-
वाणीनें पुत्रांम म्हणाली. "अहो. तो ग्ययूथ-
पांचा नायक वीरलक्षणांनी भगलेला महाधनुष्य
वीर—ज्याला अर्जुनानें रणांत जिंकिलें आणि.
पांडवहो, ज्याला तुझी राधापुत्र म्हणून सम-
जतां; जो प्रतापी वीर मेनेमऱ्ये सूर्यामाग्या
झळकत असे; अनुयायांमह तुझां सर्वांबरोबर
जो पूर्वीं झगडला; दुर्योधनाच्या सर्व सैन्यांत
जो ठळकपणें झळकत असे; पराक्रमांत ज्याच्या
तोडीचा पृथ्वींत एकही राजा नव्हता; आणि
ज्या शूरानें येथें नित्य प्राणाचीही पर्वा न

वाळगतां निष्कलंक कीर्ति जोडली. तो मर्त्य-
प्रतिज्ञ संग्रामांत पराङ्मुख न होणारा व थोर
वागणुकीचा तुमचा भाऊ. कर्ण ज्याम जलां-
जलि द्या! तो तुमचा थोरला भाऊ आहे!
जन्मतःच कवचकुंडल्यांनी युक्त व दिवाकरा-
माग्या तो तेजःपुत्र वीर सूर्यापासून माडया
ठिकाणी जन्म पावला!"

जन्मेजया. मानेंचें तें हृदयद्रावक भाषण
ऐकून पांडव कर्णाविषयी शोक करूं लागले
व त्यांम ह्या बातमीनें फारच दुःख झालें. मग
थाड्या वेळांनी कुंतीपुत्र युधिष्ठिर सर्वाप्रमाणें
दीर्घ निःश्याम मोटीत मानेंम म्हणाला. "महा-
रथी कर्ण म्हणजे शर ह्या ज्याच्या लाथा
आहेत. वज्र हा ज्याचा भोंवरा आहे. त्याच प्रचंड
बाहु हेच ज्यांनील मकर आहेत; आणि ज्यात
तल्लशाब्दाचा खळबळाय चालत्या आहे. अमा
प्रचंड डोहच होय. माने. ज्याच्या बाणांच्या
दृष्ट्यांत धनेजयावांचून दुमरा कोणाच उभा
गहू शकत नसे. तो तुझा देवगर्भ पुत्र पूर्वांच
कमा उन्वळ झाला; ज्याच्या बाहुप्रतापानें आर्षी
सर्व प्रकारें तम झालों. त्याला. वस्त्रांनें अग्नि
झांकावा तद्रत तूं लपवून कसें ठेवलेम? तो
आमचा भाऊ आहे हे पूर्वांच कां नाही मागि-
तलेम? आर्षी गांठीवधारी अर्जुनाच्या बलाचा
आश्रय केला. त्याप्रमाणें कांश्यांनी नित्य कर्णा-
च्याच बळाची काम धरली होती. एवढे सर्व
गजें होत. परंतु दुर्योधन गजाल्या कुंतीपुत्र
कर्णावांचून दुमऱ्या कोणाच्याच बळाचा भगवसा
नव्हता. माने. तो सर्व शस्त्रधरांत अग्रमर कर्ण
आमचा वडील भाऊ हणनेम. तर लक्षापूर्वांच
तो अद्भुतपराकर्मी वीर तूं कमा प्रमवलीम बरे!
हाय हाय! तूं हे वृत्त गुप्त ठेवून आमचा पात
केलाम! कर्णाच्या वधामुळे आर्षां सर्वांम
फारच दुःख होत आहे. अभिमन्यूचा अंत
झाला. द्रापदीपुत्र मागले गेले. त्याचप्रमाणें

पांचाल व विशेषतः कौरव पतन पावले, या-
मुलें माझे अंतःकरण पोळल्याप्रमाणें झालें
आहे; परंतु या गोष्टीनें मला त्याच्या शत-
गुणित अधिक दुःख होत आहे ! हल्लीं मला फक्त
कर्णाबद्दलचा शोक होत आहे. पण तो इतका
की, जणू जिवंतपर्णाच अशीत पडल्याप्रमाणें
मी शोकांनें दग्ध होत आहे ! हायहाय ! कर्ण
आमचा भाऊ आहे हें आधीं कळतें तर मग
काय ! स्वर्गांतलीही कोणती वस्तु आह्मांस
दुर्लभ नमती; आणि कौरवांचा अंत करणारे
हें घोर युद्धही मग झालें नमते ! ”

राजा, याप्रमाणें धर्मराज युधिष्ठिरांनें
पुष्कळ विलाप करून फारच आकांत केला.
नंतर वन्याच वेळानें त्यानें कर्णाची उत्तर-
क्रिया केला. कर्णाचें जन्मवृत्त कळतांच पाणी

देण्यामाठीं तेंथें पुढें बमल्लेल्या मर्वे स्त्रिया
एकाएकीं फारच आक्रोश करूं लागल्या. मग
ज्ञानसंपन्न युधिष्ठिरांनें बंधुप्रेमानें कर्णाच्या
स्त्रिया बुरग्यांमह तेंथें आणविल्या आणि त्यां-
महवर्तमान धर्मशील उत्तरक्रिया केली. मग तो
हणाला, “ ह्या कुंतीच्या लबाडीमुलें माझ्या
हातून वडील भावाचा अंत झाला, त्यापेक्षां
यापुढें स्त्रियांचे मनांत कांहींएक गोष्ट गुप्त
राहणार नाही ! ”

राजा जनमेजया, इतकें बोलून तो विकलें-
द्रिय झालेला धर्मराजा गंगेंतून बाहेर निघाला;
आणि आपले भाऊ व इतर मर्वे मंडळी यांसह
तीरावर येऊन बसला.

